मध्यएसिया का इतिहास

खण्ड २

राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्,
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद
पटना

प्रथम संस्करण
वि० सं० २०१४ शकाब्द १८७९, सन १९५७ ई०

मूल्य सजिल्द 8.50

मुद्रक
एच० एम० कामथ
नेशनल हेराल्ड प्रेस,
लखनऊ

समर्पण

परगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको

जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके बाद भी

मेरे जीवन की प्रिय निधि है

वक्तव्य

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड के 'वक्तव्य' मे यह निवेदन किया जा चुका है कि परिषद् ने इसका प्रकाशन किस परिस्थिति में क्यो स्वीकृत किया था और इसकी मुद्रणशैली में परिषद् की नियम-परम्परा से कुछ भिन्नता होने का कारण क्या है ,

प्रस्तुत खंड की छपाई १९५४ ई० में ही शुरू हो गई थी। पहला खंड इसके बाद छपने लगा और इससे एक वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो गया। इस खंड के प्रकाशन में अनिवार्य कारणो से विलम्ब तो हुआ, पर कठिनाइयो को देखते हुए विलम्ब स्वाभाविक जान पड़ता है। विज्ञ पाठक इस बात का अनुमान कर सकते है।

पहले खण्ड से इस खण्ड का आकार ड्‌योढ़ा है। दोनो खण्ड मिलकर यह इतिहास एक हजार पृष्ठों से अधिक का हुआ है। इसकी विशालता के अनुसार लेखक की श्रमशीलता का अनुमान भी पाठक अनायास कर सकते है।

श्री राहुल जी की साहित्यसेवा पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होने साहित्य के विभिन्न विषयों पर जितना अधिक लिखा है, उतना दूसरा कोई एक साहित्यसेवी अबतक नहीं लिख सका है। उन्हें केवल उद्भट लेखक न मानकर एक सुप्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ही मानना उपयुक्त होगा। उनकी नई खोज और नई प्रतिभा की न देखे हुई हिन्दी-साहित्य की समृद्धि सादर उल्लेखनीय है।

वर्तमान युग की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में एसिया का महत्त्व दिन-दिन बढ़ रहा है। उसमें भी मध्य एसिया के साथ भारत के ऐतिहासिक सम्पर्क की प्राचीनता पर ध्यान देने से इस इतिहास की उपादेयता और भी बढ जाती है। इसकी प्रामाणिकता का अनुभव स्वयं पाठक ही कर सकते है, क्योकि श्री राहुलजी के बहुवर्षव्यापी मौलिक अनुसंधान के परिणाम स्वरूप यह इतिहास तैयार हुआ है। अत आशा है कि इससे हिन्दी के चिरकालानुभूत अभाव की पूर्ति होगी।

कार्तिक-पूर्णिमा, शकाब्द १८७९
नवम्बर १९५८ ई०

शिवपूजन सहाय
(संचालक)

प्रस्तावना

पुस्तकके अंतिम खडको पाठकोके हाथ में जाते देखकर, मालूम होता है, एक बडा भार सिर से उतर गया। इस सारे समयमे कई बार आशा और निराशाके बीचमें भटकना पडा था। बाधाये कभी प्रकाशककी ओरसे और कभी प्रेसकी ओरस आ जाती थी। एक प्रेसमे प्रथम खडके आठ-दस फार्म कपोज हो जानेके बाद काम रुक गया, और अतमें प्रकाशक बदलने पर ही गाडी आगे चली। द्वितीय खडको मैने स्वय कागज दे कर अपनी जिम्मेवारीपर प्रेसमें दे दिया, पर प्रेसकी गडबडी इतनी हो गई, कि आशा नही थी, नैया पार होगी। खैर, "कुफ टूटा खुदा-खुदा करके"। ऐसी बाधाये उपस्थित न हुई होती, तो ग्रथ तीन साल पहले ही प्रकाशित हो गया होता।

मध्य-एसियाके इतिहासपर किसी भी भाषामें कोई विस्तृत ग्रथ नही है। जो एकाध है भी, वह बहुत सक्षिप्त तथा कालमें बहुत दूरतक हमे नही ले जाते, और न वह आधुनिकतम सामग्रीपर आधारित है। मध्य-एसियाके इतिहासकी सामग्रीकी गवेषणा सोवियत रूसमें बहुत हुई है। किसी-किसी कालपर ग्रथ भी लिखे गये, पर सपूर्ण कालके ऊपर लिखनेको आगेके लिये छोड दिया गया। इन बातो से लेखककी कठिनाई मालूम होगी। इस ग्रथमें अनेक त्रुटिया होनी बिल्कुल सभव है। १९४७ के बाद की उपलब्ध सामग्रीका बहुत कम उपयोग मैंने कर पाया है। भारत में सोवियतमें प्रकाशित ग्रथ और अनुसधान-पत्रिकायें सुलभ नही है।

मध्य-एसियामे चीनी मध्य-एसिया भी शामिल है। जिसके किसी-किसी कालपर इस ग्रथमें काफी विवेचन हुआ है, पर पूरी तौरसे लिखना बाकी है। मेरी इच्छा तिब्बत को लेते चीनके इतिहासपर एक विस्तृत ग्रथ लिखनेकी है। यदि उसके लिखनेमें सफल हुआ, तो यह कमी पूरी हो जायगी। पर, इसमें आयु और भौतिक बाधायें ही रास्ता रोके नही है, बल्कि हमारे स्वतत्र देशकी नौकरशाही भी पूरी तौरसे रोडा अटकाने के लिये तैयार है। अग्रेजी शासनमें सिर्फ पहली बार मुझे छिपकर तिब्बत जानेकी जरूरत पडी थी। मेरे राजनीतिक विचार उस वक्त भी वही थे, जो आज है। पर, अग्रेजी सरकार और अग्रेज नौकरशाहोने सास्कृतिक कार्यके महत्वको समझते बाधा नही दी।

१९३४ ई० में मैं दूसरी बार तिब्बत जानेके लिये ब्रिटिश पोलेटिकल एजेंट के पास गतोकमें आज्ञापत्र लेने गया। नाम मालूम होते ही वह बडे हपके साथ मिले। और आज्ञापत्र ही नही दिया, बल्कि अधिक आत्मीयता दिखलाने के लिये तिब्बतमें अपने लिय हुए फोटो दिखलाये, कितनी ही बातें पूछी। उसीके स्थानपर १९५० में जो भारतीय सज्जन थे, वह मिलनेपर बिलकुल दूसरे ही साबित हुए। उन्हें तिब्बतके बारेमें कोई जिज्ञासा नही थी, और शिष्टाचारके नाते ही एक-दो मिनटके लिये मिले। नौकरशाही ने एक बार पासपोट देनेसे इन्कार किया, खैर, दूसरी बार कोशिश करने पर वह मिल गया। उसके लिये बडी उत्सुकता इसी कारण है, कि तिब्बतमें भारतीय सस्कृत-ग्रथोकी नई तालप्रतियोके मिलनेकी सभावना है।

ग्रंथके प्रकाशित होनेका सबसे अधिक श्रेय श्रीजगदीशचंद्र माथुर (तत्कालीन शिक्षा-सचिव, बिहार) और श्री शिवपूजन सहाय को है। शिवपूजन बाबू तो ग्रंथको प्रकाशित देखनेके लिये मुझसे भी अधिक उतावले थे।

मसूरी,

२०-९-५७

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

भाग ३

उत्तरापथ (१५९-१८०१ ई०)

मध्य एसिया का इतिहास

खण्ड २

भाग १

उत्तरापथ (१२००–१५५० ई०)

अध्याय १

चीनमें मंगोल-वंश

(१२००-१३६८ ई०)

१ छिङ-गिस् (१२०६-२७ ई०)

मध्य-एसियामें मगोलोका राज्य कोई अलग-थलग नही था, वल्कि कितने ही समय तक चीनपर शासन करनेवाले मगोल हगान (खाकान, खआन, खान) को ही सभी मगोलखान अपना अधिराज मानते थे। १३ वी सदीमे कोरियामे पोलद और साइवेरियासे पजाव तक मगोलोका साम्राज्य फैला हुआ था। छिङ-गिस्ने अपने विशाल साम्राज्यको अपने जीवन हीमें चारो पुत्रोमें वाट दिया था, लेकिन साथ ही यह व्यवस्था की थी, कि सभी खान अपनेमेंसे एकको अपने ऊपर मानते हुये साम्राज्यमे एक तरहकी एकता कायम रक्खें। घुमन्तू जातियोमें एक तरहकी जनतत्रता स्वाभाविक है। घुमन्तू राजा घुमन्तुओकी अपनी जिस सेनाके वलपर देश-विजय करते है, उसे अपने पक्षमें रखनेके लिये सैनिक जनतत्रता कायम रखना जरूरी है। अपने पूर्वज घुमन्तु-राज्योकी भाति छिङ-गिस्के साम्राज्यमें भी सैनिक जनतत्रता थी। कोई वडे सवालका हल, या खानका निर्वाचन कूरिल्ताईमे होता था, जो सभी राजकुमारो, सैनिक सरदारो और जन-नायकोसे मिलकर वनी थी।

मध्य-एसियामें मगोलोके शासनके इतिहासके समझनेके लिये जरूरी है, कि हम चीनके मगोल-राजवशके इतिहासको भी समझें, साथ ही सुवर्ण-ओर्दू, और ईरानके हुलागू-वशको भी हम नही छोड सकते। इन सवका मैत्री या शत्रुताके रूपमें वहुत घनिष्ठ सम्वन्ध रहा। तगुत नगरके विजयके वक्त छिङ-गिस् आहत हुआ था, जिससे ही अपने चलते-फिरते प्रासाद या महा-गाडीपर ही वह १८ अगस्त १२२७ ई० को मर गया। दुनियामें और राजाओको भी अपने पुत्रोमें राजका वटवारा करते हम देखते हैं, लेकिन उसका एकमात्र परिणाम उनका जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो नष्ट होनेके सिवा और कुछ नही होता। छिङ-गिस् युद्ध और शासनकी व्यवस्थामें अद्भुत प्रतिभा रखता था, इसलिये उसके वटवारेने कोई उस तरहका दुष्परिणाम तुरत नही दिखलाया और करीव-करीव १२९४ ई० तक खुविलेके शासनके अन्त तक मगोल-साम्राज्य बहुत शक्तिशाली और एकतावद्ध रहा, जिसमें छिङ-गिस्की दूरदर्शिताका हाथ भी था, इसमें सदेह नही। छिङ-गिस्के मरनेके वादही मगोल-विजययात्रा मन्द नही हुई। १२७९ ई० से सम्पूर्ण चीन, हिन्द-चीन और वर्मापर खुविले (कुविलेइ) का शासन स्थापित हुआ। पश्चिम-दक्षिणमे कितना राज्य-विस्तार हुआ, उसके वारेमें हम आगे कहेंगे। छिङ-गिस्के मरनेके एक साल वाद (१२२८ ई० में) मगोल-सेना ईरानमें अस्पहान तक पहुची थी।

छिङ-गिस्की मृत्युके वाद तुरत ही नये हगान (खान) का चुनाव नही हुआ। दो साल (१२२९-ई०) तक छिङ-गिस्-पुत्र तू-लुइ और उसकी रानीकी देख-रेखमें शासन होता रहा और इस सारे समयमें मगोलोकी शक्ति घटनेकी जगह वढती ही रही, यह छिङ-गीसी व्यवस्थाका चमत्कार था।

चीनमें निम्न मगोल खाकान हुये—

१	छिङ-गिस् (चिङ्ग-गीस, ताइ-चुङ)	१२०६-२७ ई०
२	उगेताइ (ताइ-चुङ छिङ-गिस्)-पुत्र	१२२९-४६ "
३	गू-युग (गोदन, उगेताइ-पुत्र चिङ-चुङ)	१२४६-५१ "
४	मुङ-ग्के (मङ-गू थोलोइ-पुत्र स्यान्-चुङ)	१२५१-५९ "
५	खुविलइ (ह्वो-लिन्द तू-लोइ-पुत्र, छिङ गिस्-पौत्र शिचुङ)	१२६०-९४ "

६	थु-त्रू-येमुर (ह्वो-विलइ-पौत्र छिङ-येन्-पुत्र चेङ-चुङ)	१२९४-१३०७ "
७	खू-लुग (धमपाल-पुत्र त्रू-चुङ)	१३०७ ११ ,,
८	वोयन्-थू (धमपाल-पुत्र जुन्-चुङ)	१३११-२० ,,
९	गे-गेन् (शुद्धफल, वोयन्-थू-पुत्र यिङ-चुङ)	१३२०-२३ ई०
१०	यि-सु-थेमुर, (ताइ-चिङ-ती कमल-पुत्र)	१३२३-२८ ,,
११	रिन्-ठेन्-फग् (यिसु-पुत्र यू-चू)	१३२८ ,,
१२	कुसलइ, (मिङ-चुङ खू-लुग-पुत्र)	१३२८-२९ ,,
१३	थुग्-थेमुर, (वेङ-चुङ वोयन्-थू-पुत्र)	१३२९-३२ ,,
१४	रिन्-छेन्-पल् (कुशल-पुत्र मिङ-चुङ)	१३३२-३३ ,,
१५	थेगन्-थेमुर, (शुङ-त थुग्-थेमुर-पुत्र)	१३३३-६८ ,,
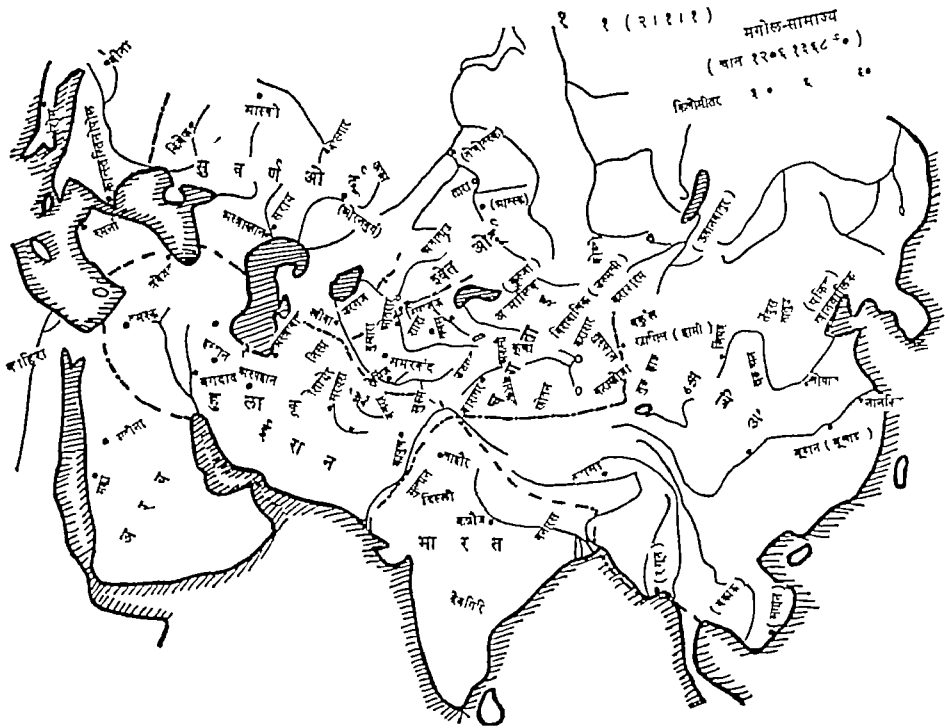
२ उगेताइ, ओगोताइ, ताइ-चुङ (१२२९-४६ ई०)

१२२९ ई० मे नये हगानके चुननेके लिये कूरिल्ताई (महापरिषद्) वैठी। तीन दिन तक खूब भोजन-पान होता रहा। कूरिल्ताई एक रायमे उगेताइको हगान निर्वाचित करना चाहती थी, लेकिन उगेताइ इसके लिये तैयार नही था। ज्येष्ठ-पुत्र जू-छिके मर जानेसे द्वितीय पुत्र चगताइ अपनेको उत्तराधिकारी समझता था, इसलिये वह उगेताइको क्यो पसद करता ? लेकिन कूरिल्ताईके निर्णयके विरुद्ध जाना उसके मानकी बात नही थी। अन्तमें उगेताइको हगान निर्वाचित कर उसे नम्देके ऊपर बैठा सरदारोने कधेपर उठाकर घुमाते हुये राजगद्दी देनेकी रसम अदा की। खूब घोडेके मास और कमिस पान की दावत हुई, विजयकी अपार धन-राशिको उत्तराधिकारियोंमें बाटा गया। कूरिल्ताईने येल्यु चुत्साइको कोषाध्यक्ष बनाया, जो खितन-राजवशी तथा बडा ही प्रतिभाशाली व्यक्ति था। योग्य राजनीतिज्ञ होते हुये वह ज्योतिष, गणित, भूगोल और वैद्यकका भी अच्छा पडित था, और पहले ही पेकिङ नगरका

वह राज्यपाल रह चुका था। येल्युका जन्म ११९० ई० मे हुआ था, इस प्रकार राज्य-शासकके इस सर्वोच्च पदपर वह ३९ वर्षके उमरमें पहुंच गया। कूरिल्ताईने जू-छि-पुन सुन्ताइको वातूके साथ यूरोप-विजयके लिये भेजा। मध्य-एसियाकी मगोल-सेनाने आगे वढकर मेसोपोतामिया, दियारबेकर, और आसपासकी भूमिका सर्वसंहार किया। चीनमें अपने वचे-खुचे राज्यके लिये खैरियत मनाते किन्-सम्राट्ने मगोलोसे सुलह करनी चाही, लेकिन मगोल एक समय दो सम्राट् माननेके खिलाफ थे। किनोने जानपर खेलकर मुकाबिला किया और मगोलोको १२३० ई० में दो वार करारी हार दी। किन्-खतरा इतना बढ़ गया, कि उगेताइ और उसके भाई तू-लुइने स्वय सेनाकी वागडोर अपने हाथमे ली। इस समय शेन्सी सारा मगोलोंके हाथमें था और किन् (सुवण) केवल होनान्के शासक रह गये थे। मगोल कोरियापर भी हाथ साफ करना चाहते थे, इसलिये वहाके राजाने मगोल-राजदूतको मार डाला। इसपर मगोल-सेनाने आक्रमण करके १२३२ ई० में कोरियापर अधिकार कर लिया। १२३२ ई० में सफल अभियानके वाद दोनो भाई मगोलिया लौट आये, वही अक्तूवरमे तू-लुइका देहात हो गया। अव छिङ्-गिस्-पुत्रोमें जगतइ और चीन-सम्राट् उगेतइ वच रहे थे।

छिङ्-गिस् (चगेज) के जीवनमें ही एक बार मगोल्-सेना रूसके भीतर तक विजय-यात्रा कर आई थी। लेकिन वह वहुत कुछ लूट-मारका अभियान था। अव वह विजय करके वहा अपना दृढ शासन स्थापित करनेके लिये वढी थी। सुन्ताइने वोल्गाके किनारे अवस्थित वोल्गारोकी राजधानी वोल्गार नगरको जीतना चाहा। वोलगारोंसे पश्चिममें रहनेवाले रूसी खतरेको समझ गये थे वोल्गार-ध्वसके वाद मगोल हमपर पड़ेंगे। इसीलिये कियेफ और स्मोलेन्स्कके रावलो (राजुलो) ने वोलगारोकी मदद की, जिससे उनकी राजधानी वच गई।

१२३४ ई० के मई महीनेमें चीनमें ११८ वर्ष शासन करनेके वाद किन्-राजवश समाप्त हुआ। अव दक्षिणी चीनमें सुङ-वश वच रहा था, जो काफी शक्तिशाली था, इसलिये मगोल उससे जल्दी छेड़-खानी करनेके लिये तैयार नही थे। किनोपर आक्रमण करते समय उन्होने वचन दिया था, कि इस विजय के वाद हम सुङ-वश के लिये होनान खाली कर देंगे, लेकिन उन्होने वैसा नही किया। अदूरदर्शी दरवारियो ने मगोल-शक्तिका ठीक अदाजा नही लगा सुङ-सम्राट्को भडकाया। छङ-अन् (सि-यन-फू, शेन्सीमे), लोयाङ (होनान्) और पेन-किङ (नानकिङ) यह तीन सुङ-वशकी राजधानिया थी। सुङ-सेनापति-ने आक्रमण करके लोयाङ और पेन-किङको मगोलोंके हाथसे मुक्त करा लिया। यह "आ वैल मुझे मार" वाली कहावत थी। मगोलोको अव सुङ-वशकी ओर ध्यान देना जरूरी था। इतने वडे निर्णयको हगान स्वय नही कर सकता था, इसके लिये उसने १२३५ ई० में महा-कूरिल्ताई वुलाई। जिसने सुङ-वशको खतम करनेका निश्चय किया। दक्षिणी चीनके विरुद्ध तीन सेनायें भेजी गई, जिनमें एकको सेनापति ओगोताइ-द्वितीय-पुत्र कू-तन तथा जेनरल तेंगरीके नेतृत्वमें सूचाउकी ओर वढना था। दूसरी सेना तुमूताइ और चाङ-जूके अधीन हू-कुङके ऊपर चढी, ओगोताइका तृतीय पुत्र कू-चू, राजकुमार सुन-वुका और जेनरल चागनके नेतृत्वमें तीसरी सेना क्याङ-नान्की ओर वढी। इसी समय जू-छीके पुत्र वा-तूको पश्चिम-दिग्विजयका काम सौंपा गया।

मार्च, १२३६ ई० में कू-चूने सुङ-राज्यकी प्रधान नगरी सियाङ-याङपर अधिकार कर लिया। मगोल-साम्राज्यकी सीमा दक्षिणमें अव याङ-ची तक पहुंच गई।

खु-विले (कुविलेइ) के पहले मगोल-साम्राज्यकी राजधानी मगोलियामें ओरखोन् और तुला नदियोके वीच कराकोरम थी। राजधानी कहनेसे यह न समझना चाहिये, कि वहा कोई नगर वसा हुआ था। राजधानीका मतलव इतना ही था, खान सरदारोके साथ मीलोतक लगे नम्दे और दूसरे प्रकारके तम्बुओमें अपने घोडो और पशुओके साथ रहता था। ओगोताइने पहलेपहल वहा एक विशाल प्रासाद वनवाया, जिसका उद्घाटन १२३६ई० में हुआ। इस प्रासादके वनानेमें वहुत परिश्रम किया गया था। चीनी कलाकारो ने मूर्तियो और चित्रोंसे उसे अलकृत किया था। इसके चारो तरफ वगीचे लगे थे, और चारो दिशाओमें चार वडे-वडे दरवाजे थे, जिनमेंसे एक हगान (सम्राट्) के लिये, दूसरा राज-कुमारो, तीसरा अन्त पुरिकाओ के लिये था, चौथे दरवाजेसे साधारण जनता जा सकती थी। महलके चारो ओर वडे-वडे सरदारोंके अपने महल थे, जिनके वाद वडा नगर था, जिसको ओर्दू-वालिक या

केराकोरम कहते थे। नगरके चारों ओर ऊची प्राकार थी । कराकोरममे सम्राट्के निजी पारिवारिक खर्चेके लिये प्रतिदिन पाचसौ गाडी भोजन-सामग्री आती थी। उसमेंसे कुछ वह अपने परिवारके लिये खर्च करता, बाकी दूसरोंमे वितरित करता। इसी समयसे मगोल घुमन्तुओंका सादा जीवन खतम होने लगा और वह हर बातमें दुनियाकी सभ्य जातियोंकी नकल करने लगे।

ईरान और काकेशसकी ओर अब मगोल अपना हाथ-पैर बडी दृढ़तासे बढा रहे थे। १२२७ ई० मे अरास और कुरा नदी तक अरमेनियापर उनका अधिकार हो गया। उसी साल उन्होंने जार्जिया (गुर्जी) को विजय करते अरमेनियाकी राजधानी अनीका सहार किया। इसी साल २१ दिसम्बरको साइबेरियाके कीमती समूरोके सबसे बडे बाजार बोलगारपर बा-तूने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया, सो भी ऐसा कि जिसके देखनेके लिये नगरमे एक भी आख नही बच रही। पाच वर्ष पहले आत्मरक्षा करके बोलगार नगरीने जो गुस्ताखी दिखलाई थी, मगोलोने उसका इस तरह बदला लिया। सिर-दरिया और अराल के उत्तर दूर तक फैली किपचक भूमिके हणवशधर घुमन्तू लडनेमे मगोलोंसे कम नही थे, इसलिये उनपर अधिकार करना मगोलोंके लिये टेढी खीर था। १२३८ ई० मे तू-लुइ (थो-लोइ) के पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) ने अपने भाई बुद् जेकके साथ कास्पियनके किपचकोपर आक्रमण कर उन्हे जीत लिया। किपचक-राजा पचीमन और असेत (ओसेत)-राजा कचर ओगोला मारे गये। कोलाम्ना नगर भी मगोलोंके हाथमे चला गया और उसका राजा रोमन ईगरपुत्र वीरगतिको प्राप्त हुआ। १५ फवरीको मास्को लेते उन्होने ब्लादिमिर नगरपर अधिकार कर, पुरोहितोको छोडकर मगोलोने किसीको प्राणदान देना पसद नही किया। वह वस्तुत किसी देशमें भी युद्धको केवल राजनीतिक युद्ध रखना चाहते थे और उसे धार्मिक युद्धका रूप न लेने देनेके लिये हर तरहकी कोशिश करते थे।

ओगोताइको राज्य करते ११ साल हो गये थे, जब कि दिसम्बर १२४० ई० में बा-तूकी सेनाने कियेफ नगरका सवसहार किया, वहा की सारी कलाकृतिया और इमारते अग्निसात् कर दी। तबसे १५ वी सदी तकके लिये कियेफ नगर उजाड हो गया। इसी साल अरमनीका राजा आवक अपनी बहिन तमता के साथ ओगोताइके दरबारमे सम्मान प्रकट करनेके लिये गया। उसी साल किपचक-राजा ओतियक मलदावियाकी ओर भागा।

१२४१ ई० में मगोल-सेना लुबलिन नगरमे दाखिल हुई और उसने विस्तुला तकके प्रदेशको लूटा तथा जलाया। मार्चमे मगोल क्राकोफ नगरमे थे, फिर लूटते-मारते आग लगाते सेलिसियाकी ओर बढे। ओडेर नदीको रतिबरके पास पार कर वह ब्रेसलाके सामने पहुचे। आगे भी योजना बना वह लूटते-पाटते लिग्निट्ज नगरकी ओर बढे, जहापर बीस हजार सेनाके साथ ड्यूक हेनरी द्वितीय मुकाबिलेके लिये तैयार था। मगोल-सेना एक लाख बतलाई जाती है, जिसमें सदेह है। काइड नदीके तटपर अवस्थित उस मैदानमें—जहा पीछे वाल-स्टाट (युद्धक्षेत्र) गाव बसा—९ अप्रैल १२४१ ई० को वह युद्ध हुआ, जिसने यूरोपके भाग्यका फैसला किया। मगोल विजय नही प्राप्त कर सके, और खिसियाये हुये वहासे एक लीगपर अवस्थित लिग्निट्ज नगरको जलाते पीछे हटे। इस युद्धमें मरे लोगोंके कान ९ बोरे हुये थे।

इससे पहले ही १२ मार्चको बा-तूने पेस्तसे साढे तीन दिनके रास्तेपर हुगरीको हराया था। लिग्निट्जसे लौटकर उसने दलमासियाको लेते अद्रियातिक समुद्रके तटपर क्रोसियन (यूगोस्लाविया) तककी विजय-यात्रा की।

इस प्रकार ११ दिसम्बर १२४६ ई० मे अपनी मृत्युके समयसे पाच मास पहले ही ओगोताइने अपने साम्राज्यको पश्चिममे अद्रियातिक समुद्र और ओदेर नदीके पास तक फैला दिया। मगोलोका कोई अपना सामन्तवादी धर्म नही था, इसलिये धर्मके बारेमे वह बडी उदारता और तटस्थता दिखलाते थे, जिससे फायदा उठानेके लिये १२४५ ई० में ईसाइयो की ल्योन परिषद् ने मगोलियाम मिशनरी (धर्मदूत) भेजनेका निश्चय किया।

३ गू-युग, कू-युक, गो-दन, चिङ-चुङ (१२५१-५९ ई०)

गू-युग ओगोताइ अर्थात् बडे खानका पुत्र था, जिसे कूरिल्ताइने अगस्त महीनेमे खान निर्वाचित किया। यद्यपि बगु (आमदरिया) के दक्षिण दिग्विजयके (तुआपसी अभियान) गुप्तचरि रूपमे हाथोंमें अभी तीन सालो दे थी, लेकिन मगोल-सेनाये गुरगान और अफगानिस्तानपर जोर

हुई थी। १२५१ ई० में मगोलोने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरू था।

४ मुङ्-खे, मङ्-गू, स्यान्-चुङ् (१२५१-५९ ई०)

मुङ्-खे थो (तो) लोइका पुत्र तथाखु-वि-लेई (कुविलेइ) का अग्रज था। अबने एक तरह सिंहासन थो-लोइकी सतानमें चला गया। इन्ही दोनो भाइयोका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी सतानो के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० मे ही, जिस साल कि लाहौर का सवसहार हुआ, मगोल-सेनायें मेसोपोतामियामे प्रविष्ट हुई, जहा उन्होने दियारवेकर और मेयाफरकिनका सर्वसहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगडेका परिणाम मगोल-राज-कुमारोमें वैमनस्यके रूपमें दिखलाई पडा, जिसके लिये १२५२ ई० में कूरिल्ताई वुलाई गई। इसी कूरिल्ताईने जहा राजकुमारोके मुकदमोका फैसला किया, वहा जागीरो और अधिकारोका वटवारा भी किया। तुङ्-कुङ्-चुङ्-फू (शेन्सी), होनान् कुविलेइ (हूविलेइ) को जागीरमे मिले। उसे सुङ्-वशके खिलाफ दक्षिण-चीन में अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर बढनेका काम सौंपा गया, जिसकी सहायताके लिये कितू-बुकाको नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एसियाके पहाडो ही तक सीमित थी।

सवसे कडा सघर्ष दक्षिणी चीनमे सुङ्-वशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुविलेने वडी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमें उसने एक वडी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढनेमें जल्दी नही की—मगोल-सेनायें पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थी। १२५३ ई० में ही मगोल-सेनाओने पूर्वी तिव्वत ले लिया, और उसी साल मुलतान भी उनके हाथमे चला गया। इसी साल ईसाई मिश्नरी रुवरिक मुङ्-खेके दरवारमें कराकोरम पहुचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमें मगोल-साम्राज्य, उसके राजपथो और राजधानीका वहुत अच्छा वणन किया है। उसके लिखनेसे मालूम होता है, कि राज परिवारके लोग ईसाई, वौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओमे शामिल हुआ करते थे। मार्को पोलोकी महान् यात्रा मुङ्-खेके भाई कुविलेके समय हुई, लेकिन रुवरिकका यात्रा-विवरण भी कम महत्त्व नही रखता।

फवरी १२५४ ई० मे खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर वढा। ससारमें चारो तरफ मगोलोकी धाक जमी हुई थी। "एक वार खूनके कीचड और खोपडि-योंके वडे-वडे मीनार खडा कर गावो और नगरोको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहा कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मगोलोंके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नही करेगा"—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूव-दक्षिणी तिव्वत और आवा (वर्मा) के राजाओने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदशन करने के लिये स्वय हगान (खाकान) के दरवारमें पहुचा। अगले साल (१२५७ ई० में) तोङ्-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मगोलोको अपना स्वामी स्वीकार किया। सुङ्-राज पूरी तौरसे खतम नही हो पाया था, लेकिन कुविलेइके प्रहारोसे अव वह कुछ ही दिनोका मेहमान था। कुविलेइकी इस सफलतापर मुङ्-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरवारियोने उसे भडकाया, कि कुविलेइ स्वय खाकान वनना चाहता है। कुविलेइको जव यह खवर लगी, तो वह जल्दी-जल्दी अपने भाईके दरवारमें पहुचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदशनसे मुङ्-खे वहुत प्रसन्न हुआ और कुविलेइके साथ स्वय सुङ्-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फवरी (१२५९ ई०) को मुङ्-खे चुङ्-कुये (सू-चाउ) मे मर गया। इस समय तक सारा मगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोने अपनी स्वतत्रता घोषित नही की थी।

५ कुविलेइ, ह्वोविलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

ह्वोविलेइ कुविलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके बाद इसने कूरिल्ताईके निर्वाचन-की प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्ताईकी रसमको वह हटाना नही

कराकोरम कहते थे। नगरके चारो ओर ऊची प्राकार थी । कराकोरममे सम्राट्के निजी पारिवारिक खर्चेके लिये प्रतिदिन पाचसौ गाडी भोजन-सामग्री आती थी। उसमेंसे कुछ वह अपने परिवारके लिये खर्च करता, बाकी दूसरोमें वितरित करता। इसी समयसे मगोल घुमन्तुओंका सादा जीवन खतम होने लगा और वह हर बातमें दुनियाकी सभ्य जातियोकी नकल करने लगे।

ईरान और काकेशसकी ओर अब मगोल अपना हाथ-पैर बडी दृढतासे बढा रहे थे। १२२७ ई० मे अरास और कुरा नदी तक अरमेनियापर उनका अधिकार हो गया। उसी साल उन्होने जार्जिया (गुर्जी) को विजय करते अरमेनियाकी राजधानी अनीका सहार किया। इसी साल २१ दिसम्बरको साइबेरियाके कीमती समूराके सबसे बडे बाजार बोल्गारपर वा-तूने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया, सो भी ऐसा कि जिसके देखनेके लिये नगरमे एक भी आख नही बच रही। पाच वर्ष पहले आत्मरक्षा करके बोलगार नगरीने जो गुस्ताखी दिखलाई थी, मगोलोने उसका इस तरह बदला लिया। सिर-दरिया और अराल के उत्तर दूर तक फैली किपचक भूमिके हूणवशधर घुमन्तू लडनेमें मगोलोसे कम नही थे, इसलिये उनपर अधिकार करना मगोलोंके लिये टेढी खीर था। १२३८ ई० में तू-लुइ (थो-लोइ) के पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) ने अपने भाई बुद्-जेकके साथ कास्पियनके किपचकोपर आक्रमण कर उन्हे जीत लिया। किपचक-राजा पतचीमन और असेन (ओसेन)-राजा कचर ओगोला मारे गये। कोलोम्ना नगर भी मगोलोके हाथमे चला गया और उसका राजा रोमन ईगरपुत्र वीरगतिको प्राप्त हुआ। १५ फवरीको मास्को लेते उन्होने व्लादिमिर नगरपर अधिकार कर, पुरोहितोको छोडकर मगोलोने किसीको प्राणदान देना पसद नही किया। वह वस्तुत किसी देशमें भी युद्धको केवल राजनीतिक युद्ध रखना चाहते थे और उसे धार्मिक युद्धका रूप न लेने देनेके लिये हर तरहकी कोशिश करते थे।

ओगोताइको राज्य करते ११ साल हो गये थे, जब कि दिसम्बर १२४० ई० में बा-तूकी सेनाने कियेफ नगरका सवसहार किया, वहा की सारी कलाकृतिया और इमारतें अग्निसात् कर दी। तबसे १५ वी सदी तकके लिये कियेफ नगर उजाड हो गया। इसी साल अरमनीका राजा आवक अपनी बहिन तमता के साथ ओगोताइके दरबारमें सम्मान प्रकट करनेके लिये गया। उसी साल किपचक-राजा ओनियक मलदावियाकी ओर भागा।

१२४१ ई० मे मगोल-सेना लुबलिन नगरमे दाखिल हुई और उसने विस्तुला तकके प्रदेशको लूटा तथा जलाया। मार्चमें मगोल क्राकोफ नगरमे थे, फिर लूटते-मारते आग लगाते सेलिसियाकी ओर बढे। ओडर नदीको रतिवरके पास पार कर वह ब्रेसलाके सामने पहुचे। आगे भी योजना बना वह लूटते-पाटते लिग्नित्ज नगरकी ओर बढे, जहापर तीस हजार सेनाके साथ ड्यूक हेनरी द्वितीय मुकाबिलेके लिये तैयार था। मगोल-सेना एक लाख बतलाई जाती है, जिसमे सदेह है। काइड नदीके तटपर अवस्थित उस मैदानमे—जहा पीछे वाल-स्टाट (युद्धक्षेत्र) गाव बसा—९ अप्रैल १२४१ ई० को वह युद्ध हुआ, जिसने यूरापके भाग्यका फैसला किया। मगोल विजय नही प्राप्त कर सके, और खिसियाये हुये वहासे एक लीगपर अवस्थित लिग्नित्ज नगरको जलाते पीछे हटे। इस युद्धमे मरे लोगोके कान ९ बोरे हुये थे।

इससे पहले ही १२ मार्चको बा-तूने पेस्तमे साढे तीन दिनके रास्तेपर हुगराको हराया था। लिग्नित्जसे लौटकर उसने दलमाशियाको लेते अद्रियातिक समुद्रके तटपर कोसियन (यूगोस्लाविया) तककी विजय-यात्रा की।

इस प्रकार ११ दिसम्बर १२४६ ई० मे अपनी मृत्युके समयसे पाच साल पहले ही ओगोताइने अपने साम्राज्यको पश्चिममे अद्रियातिक समुद्र और ओदेर नदीके पास तक फैला दिया। मगोलोका कोई अपना सामन्तवादी धर्म नही था, इसलिये धर्मके बारेमें वह बडी उदारता और तटस्थता दिखलाते थे, जिससे फायदा उठानेके लिये १२४५ ई० मे ईसाइयो की ल्योन-परिषद् ने मगोलियामें मिशनरी (धर्मदूत) भेजने का निश्चय किया।

३ गू-युग, कू-युक, गो-दन, चिङ-चुङ (१२५१-५९ ई०)

गू-युग ओगोताइ अर्थात् बडे हानका पुत्र था, जिसे कुबिलाइने अगस्त महीनेमे खान निर्वाचित किया। यद्यपि य (आमूदरिया) के दक्षिण दिग्विजयके (गुआकृती अधीनतामे) गुप्त स्थित रूपसे हाथोमें अभी तीन सालकी देर थी, लेकिन मगोल-सेनाये खुरासान और अफगानिस्तानपर छाई

हुई थी। १२५१ ई० मे मगोलोने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरू था ।

४ मुङ-खे, मङ-गू, स्यान्-चुङ (१२५१-५९ ई०)

मुङ-खे थो (तो) लोइका पुत्र तथा खु-बि-लेई (कुबिलेइ) का अग्रज था। अवसे एक तरह सिंहासन थो-लोइकी सतानमें चला गया। इन्ही दोनो भाइयोका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी सतानो के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० मे ही, जिस साल कि लाहौर का सवसहार हुआ, मगोल-सेनाये मेसोपोतामियामे प्रविष्ट हुई, जहा उन्होने दियारवेकर और मेयाफरकिनका सवसहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगडेका परिणाम मगोल-राज-कुमारोमें वैमनस्यके रूपमें दिखलाई पडा, जिसके लिये १२५२ ई० मे कूरिल्ताई बुलाई गई। इसी कूरिल्ताईने जहा राजकुमारोके मुकदमोका फैसला किया, वहा जागीरो और अधिकारोका बटवारा भी किया। तुङ-कुङ-चुङ-फू (शेन्सी), होनान् कुविलेइ (हूबिलेइ) को जागीरमें मिले। उसे सुङ-वशके खिलाफ दक्षिण-चीन में अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर वढनेका काम सौंपा गया, जिसकी सहायताके लिये कितू-बुकाको नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एसियाके पहाडो ही तक सीमित थी।

सवसे कडा सघर्ष दक्षिणी चीनमे सुङ-वशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुविलेने वडी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमे उसने एक वडी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढनेमे जल्दी नही की—मगोल-सेनाये पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थी। १२५३ ई० मे ही मगोल-सेनाओने पूर्वी तिव्वत ले लिया, और उसी साल मुल्तान भी उनके हाथमे चला गया। इसी साल ईसाई मिश्नरी रुवरिक मुङ-खेके दरवारमें कराकोरम पहुचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमे मगोल-साम्राज्य, उसके राजपथो और राजधानीका बहुत अच्छा वणन किया है। उसके लिखनेसे मालूम होता है, कि राजपरिवारके लोग ईसाई, वौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओमें शामिल हुआ करते थे। मार्को पोलोकी महान् यात्रा मुङ-खेके भाई कुविलेके समय हुई, लेकिन रुवरिकका यात्रा-विवरण भी कम महत्त्व नही रखता।

फर्वरी १२५४ ई० में खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर वढा। ससारमे चारो तरफ मगोलोकी धाक जमी हुई थी। "एक वार खूनके कीचड और खोपडि-योंके वडे-वडे मीनार खडा कर गावों और नगरोको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहा कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मगोलोके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नही करेगा"—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूव-दक्षिणी तिव्वत और आवा (वर्मा) के राजाओने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये स्वय हगान (खाकान) के दरवारमें पहुचा। अगले साल (१२५७ ई० में) तोङ-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मगोलोको अपना स्वामी स्वीकार किया। सुङ-राज पूरी तौरसे खतम नही हो पाया था, लेकिन कुविलेइके प्रहारोसे अव वह कुछ ही दिनोका मेहमान था। कुबिलेइकी इस सफलतापर मुङ-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरवारियोने उसे भडकाया, कि कुविलेइ स्वय खाकान वनना चाहता है। कुविलेइको जव यह खवर लगी, तो वह जल्दी-जल्दी अपने भाईके दरवारमें पहुचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदशनसे मुङ-खे वहुत प्रसन्न हुआ और कुविलेइके साथ स्वय सुङ-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फवरी (१२५९ ई०) को मुङ-खे चुङ-कुये (सू-चाउ) मे मर गया। इस समय तक सारा मगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोने अपनी स्वतत्रता घोषित नही की थी।

५ कुबिलेइ, ह्वोबिलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

ह्वोबिलेइ कुबिलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके वाद इसने कूरिल्ताईके निर्वाचन-की प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्ताईकी रसमको वह हटाना नही

चाहता था। इसी साल उसने शाङ-तू ([illegible]) में अपने लिये एक प्रासाद तथा कितने ही बौद्ध मन्दिर बनवाये। मंगोल सम्राटोंमें यही सबसे पहला सम्राट था, जिसने सांस्कृतिक बातोंके महत्त्वको समझा। उसने जहाँ सांस्कृतिक जीवनकी बहुत-सी बातें चीनसे लीं, वहाँ धर्मके रूपमें बौद्धधर्मको स्वीकार किया। गद्दीपर बैठनेके बाद ही उसने शाङ-तूमें कुरिल्ताई बुलवाई, जिसने कुबिलेइको खाकान घोषित किया। फिर सरदारों, सामन्तों, एशियाके सैनिकों और हजारों सरदारोंकी चार दिन तक भारी दावत चलती रही, बड़ा महोत्सव मनाया गया। इतना सब होनेके बाद भी गृहयुद्धकी आग भड़क उठी, जिसमें कुबिलेइके अपने भाईने भी हाथ बटाया। कुबिलेइका छोटा भाई हुलाकू दूर ईरानमें था। वह आखिर तक अपने भाईका अनुगामी हो अपने राज्यको बृहत् मंगोल साम्राज्यका अंग मानता रहा। इसका प्रभाव एक यह भी हुआ, कि ईरान और मेसोपोतामिया जैसे मुस्लिम दुनियाके गढ़में हुलाकू वंश पीढ़ियों तक अपनेको बौद्ध रखनेकी कोशिश करता रहा। १२ सितम्बर १२५९ ई० को प्रस्थान कर हुलाकूने दियारबेकर, जजीरा (मेसोपोतामिया), रोहा, एदेस्सा, अजरम और निसिबीनपर अधिकार कर लिया। रोहाके पास उसने भारी सैनिक प्रदर्शन किया, जिसमें अरमेनिया, रूम (सल्जूकी) आदिके राजा भी उपस्थित थे। प्रतिरोध करनेके अपराधमें हलब (अलेप्पो) का सर्वसंहार हुआ। दमिश्कने आसानीसे मंगोल-जूआ स्वीकार कर लिया। इसी समय १२६० ई० में कुबिलेइके नामसे हुलाकूने नोट चलाया, जो दुनियाका सबसे पुराना कागजी नोट था।

दो वर्षके शासनमें गृह-युद्ध इतना भयंकर रूप ले चुका था, कि उसे दबानेके लिये १२६१ ई० में कुबिलेइको स्वयं मंगोलियापर धावा करना पड़ा। इस लड़ाईमें उसका प्रतिद्वंद्वी अरिगबूका पराजित हो कुछ दिनों बाद मर गया। कुबिलेइ अब अपनी स्थितिको ज्यादा मजबूत समझता था। यद्यपि चीनमें भी बौद्ध-धर्मका प्रचार था, लेकिन कुबिलेइने उसे तिब्बतसे स्वीकार किया। जिस समय मंगोल-सेनायें देश-विजयमें लगी हुई थीं, उसी समय तिब्बतके एक दूरदर्शी तथा अद्वितीय विद्वान् सस्क्या महापंडित आनन्दध्वजने—जो सक्यापण्छेन्के नामसे अधिक प्रसिद्ध है—मंगोलियामें अपने धर्मप्रचारक भेजे। ईसाई एवरिक और मुल्ला-आका अपने काममें उतनी सफलता नहीं मिली, जितना कि गुमनाम तिब्बतसे आये बौद्ध-धर्मदूतोंको। सस्क्या पण्छेन्के उत्तराधिकारी तथा भतीजे लो डा-ग्यल्-छेन्को कुबिलेइके गुरु बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। १२६१ ई० में कुबिलेइने अपने गुरुको फग्-पा लामा (आर्यगुरु) की उपाधि दी, जिसके ही नामसे वह आजकल तिब्बतमें मशहूर है। कुबिलेइको दूर मंगोलियाका कराकोरम राजधानीके लिये अनुकूल नहीं मालूम हुआ। पितृदेश होनेके कारण मंगोलियासे साथ चाहे जितना ही सद्भाव हो, लेकिन एक विशाल साम्राज्यके शासनके लिये उपयुक्त स्थान वही हो सकता था, जहाँसे यातायातकी सुविधा हो। पे-किङको ऐसा ही स्थान कुबिलेइने समझा और वही उसकी राजधानी बनी। १२६३ ई० में कुबिलेइने पितरोंकी पूजाके लिये वहाँ एक विशाल ताइ-म्याउ (धर्मशाला) बनवाई।

सुङ-राज्यका अभी खातमा नहीं हुआ था। १२६४ ई० में सुङ-सम्राट ली-चुङके मरनेपर उसका भतीजा तू-चुङ गद्दीपर बैठा। मंगोलोंने सुङ-शक्तिको इतना सीमित कर दिया गया था, कि कुबिलेइको उससे बहुत खतरा नहीं था, अतएव उसे जल्दी नहीं थी। १२६५ ई० में जगताइ खान मुबारकशाह मर गया, कुबिलेइने उसकी जगह बोरकको खान बनाया। अभी कुबिलेइका प्रतिद्वंद्वी अरिगबूका जिंदा था और १२६६ ई० में उसके मर जानेपर ही कुबिलेइको भारी खतरेसे मुक्ति मिली। इसी साल कई और मंगोल-खानोंकी मृत्यु हुई। सुवर्ण-ओर्दू खान बेरेक, जगताइ खान अलगू और मुबारकशाह, ईरानका खान हुलाकू मर चुके थे। हुलाकूकी जगह अबका ईरानका, मेंगू तेमूर सुवर्ण-ओर्दूका और जगताइका मुबारकशाह खान बनाये गये। मुबारकशाहके जल्दी ही मर जानेपर कुबिलेइने बोरकको उसके स्थानपर नियुक्त किया।

१२६७ ई० में कुबिलेइने सुङ वंशका उच्छेद करनेके लिये दक्षिणी चीनके बचे हिस्सेपर आक्रमण किया। सबसे कड़ी लड़ाई सियाङ-याङ (सियाङ-फू) में हुई। १२६८ ई० में मंगोल-सेनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया, लेकिन उसे तीन साल तक नगरपर अधिकार करनेमें सफलता नहीं मिली। १२६९ ई० में कुबिलेइने जापानको अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिखा, लेकिन अभिमानी जापानियोंने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। सियाङ-याङके मुहासरेके आरम्भके साथ-साथ कुबिलेइने जापानपर आक्र-

मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरू की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनामे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारो जगी जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नही शब्द-सकेतका उपयोग होता है, जिसमे अकोकी तरह कुछ सुभीते भी हैं, लेकिन उसमे उच्चारण-सकेतके लिये कोई स्थान नही है। मगोल-भाषा उइगुर (सिरियावाली) लिपिमें लिखी जाती थी, जिसमें डेढ दजन भी अक्षर न होनेमे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नही था। कुबिलेइके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिमे सुपरिचित होनेके कारण फग्पाने १२६९ ई० मे मगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इमी माल उसे कुबिलेइने ता-पाउ-फा-वङकी उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० में कुबिलेइने अपने वशका नया नाम यु-अन रक्खा, जिस नामसे वह वश आज भी चीनमें प्रसिद्ध है। इमी साल वर्मा (मी-थन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मगोल-सेना भेजी गई। १२७८ ई० में जहा सिआङ-याङके विजयसे सम्राट्को बडी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मगोल नौसेना चु-सिमाकी खाडी में जापानियो द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक बेडा नष्ट हो गया। इसमें शक नही उस समय जापानियोमे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमें हुई चु-सीमाकी हार कुबिलेइके विशाल साम्राज्य में उसकी धाकके कम होनेका कारण नही हो सकती थी। हा, जापानियोमें यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियो तक जापान बाहरी शत्रुओसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वी शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोकी आखें नही खोल दी। अगले साल १२७५ ई० में सेनापति बायनने चिङ-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोकी निर्मम हत्या की गई। इसी साल लिङ-अन् राजधानी-पर भी मगोलोने अधिकार कर लिया। तरुण सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमें राजसिंहासनको भेजा, लेकिन सेनापति बायनको यह अधिकार नही था, कि वह सुङ-वशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबधके लिये चीनियो और मगोलोकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मगोलोंके हाथमें था, इसलिये मगोल-भक्त चीनियोकी कमी नही थी। चार मगोल-अफसर राजधानीकी चीजोके सग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होने भिन्न-भिन्न राज्यविभागो की मुद्रायें जमा की। अभिलेखा-गारमें उन्हें बहुत-सी किताबें, बही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिङ-अन् (हङ-चाउ) चीनकी सबसे बडी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोंके लिये नगरमे बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोमें विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमें बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमे बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकडीके थे। राजप्रासादमें बीस बडे-बडे हाल थे। सबसे बडी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तो सिर्फ रग्रेजोके घर थे। सात सौ मदिर थे। सेनापति बायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुङ और उसके अनुचरोको खानके पास भेज दिया। महल छोडनेमे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दडवत् करनी पडी। कुबिलेइकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा बर्ताव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पडी। वह इस प्राचीन राजवशके ध्वसमें मगोल-राजवशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, "उस समय मेरे बच्चो की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह बेइज्जत हो बदी बनना पडेगा।" लेकिन, मगोल-वशका अत सुङकी तरह नही हुआ, क्योकि मगोलिया इस वशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुबिलेइका राज्यकाल केवल राजसी तडक-भडक और दिग्विजयोंके लिये ही प्रसिद्ध नही था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० में राजाज्ञा पाकर ह्वाङ-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

चाहता था। इसी साल उसने शाङ-तू (कै-पिङ-हू) में अपने लिये एक प्रासाद तथा कितने ही बौद्ध मंदिर बनवाये। मंगोल-सम्राटोंमें यही सबसे पहला सम्राट् था, जिसने सांस्कृतिक बातोंके महत्त्वको समझा। इसने जहां सांस्कृतिक जीवनकी बहुत-सी बाहरी बातें चीनसे ली, वहां धर्मके रूपमें बौद्धधर्मको स्वीकार किया। गद्दी पर बैठनेके साल ही इसने शाङ-तूमें कुरिल्ताई बुलवाई, जिसने कुबिलेइको खाकान घोषित किया। फिर लाखोंकी संख्यामें एकत्रित सैनिकों और हजारों सरदारोंकी चार दिन तक भारी दावत चलती रही, बड़ा महोत्सव मनाया गया। इतना सब होनेके बाद भी गृहयुद्धकी आग भड़क उठी, जिसमें कुबिलेइके एक अपने भाईने भी हाथ बटाया। कुबिलेइका छोटा भाई हुलाकू दूर ईरानमें था। वह आखिर तक अपने भाईका अनुगामी हो अपने राज्यको बृहत् मंगोल-साम्राज्यका अंग मानता रहा। इसका प्रभाव एक यह भी हुआ, कि ईरान और मेसोपोतामिया जैसे मुस्लिम दुनियाके गढ़में हुलाकू-वंश पीढ़ियों तक अपनेको बौद्ध रखनेका कोशिश करता रहा। १२ सितम्बर १२५९ ई० को प्रस्थान कर हुलाकूने दियारबेकर, जजीरत (मेसोपोतामिया), रोहा, एदेसूसा, अजरुम और निसिबीपर अधिकार कर लिया। रोहाके पास उसने भारी सैनिक प्रदर्शन किया, जिसमें अरमेनिया, रूम (सल्जूकी) आदिके राजा भी उपस्थित थे। प्रतिरोध करनेके अपराध में हलब (अलेप्पो) का सर्वसंहार हुआ। दमिश्कने आसानीसे मंगोल-जूआ स्वीकार कर लिया। इसी समय १२६० ई० में कुबिलेइके नामसे हुलाकूने नोट चलाया, जो दुनियाका सबसे पुराना कागजी नोट था।

दो वर्षके शासनमें गृह-युद्ध इतना भयंकर रूप ले चुका था, कि उसे दबानेके लिये १२६१ ई० में कुबिलेइको स्वयं मंगोलियापर धावा करना पड़ा। इस लड़ाईमें उसका प्रतिद्वंद्वी अरिगबूका पराजित हो कुछ दिनों बाद मर गया। कुबिलेइ अब अपनी स्थितिको ज्यादा मजबूत समझता था। यद्यपि चीनमें भी बौद्ध-धर्मका प्रचार था, लेकिन कुबिलेइने उसे तिब्बतसे स्वीकार किया। जिस समय मंगोल-सेनायें देश-विजयमें लगी हुई थी, उसी समय तिब्बतके एक दूरदर्शी तथा अद्वितीय विद्वान् सक्या महापंडित आनन्दध्वजने—जो सक्यापण्छेन्के नामसे अधिक प्रसिद्ध है—मंगोलियामें अपने धर्मप्रचारक भेजे। ईसाई खवरिक और मुल्लाओंको अपने काममें उतनी सफलता नहीं मिली, जितना कि गुमनाम तिब्बतसे आये बौद्ध-धर्मदूतोंको। सक्या पण्-छेन्के उत्तराधिकारी तथा भतीजे लो-डो-ग्यल्-छेन्को कुबिलेइके गुरु बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। १२६१ ई० में कुबिलेइने अपने गुरुको फग्-पा लामा (आर्यगुरु) की उपाधि दी, जिसके ही नामसे वह आजकल तिब्बतमें मशहूर है। कुबिलेइको दूर मंगोलियाका कराकोरम राजधानीके लिये अनुकूल नहीं मालूम हुआ। पितृदेश होनेके कारण मंगोलियाके साथ चाहे जितना ही सद्भाव हो, लेकिन एक विशाल साम्राज्यके शासनके लिये उपयुक्त स्थान वहीं हो सकता था, जहांसे यातायातकी सुविधा हो। पे-किङको ऐसा ही स्थान कुबिलेइने समझा और वही उसकी राजधानी बनी। १२६३ ई० में कुबिलेइने पितरोंकी पूजाके लिये वहां एक विशाल ताइ-म्याउ (धर्मशाला) बनवाई।

सुङ-राज्यका अभी खातमा नहीं हुआ था। १२६४ ई० में सुङ-सम्राट ली-चुङके मरनेपर उसका भतीजा तू-चुङ गद्दीपर बैठा। मंगोलोंने सुङ-शक्तिको इतना सीमित कर दिया गया था, कि कुबिलेइको उससे बहुत खतरा नहीं था, अतएव उसे जल्दी नहीं थी। १२६५ ई० में जगताइ खान मुबारकशाह मर गया, कुबिलेइने उसकी जगह बोरकको खान बनाया। अभी कुबिलेइका प्रतिद्वंद्वी अरिगबूका जिंदा था और १२६६ ई० में उसके मर जानेपर ही कुबिलेइको भारी खतरेसे मुक्ति मिली। इसी साल कई और मंगोल-खानोंकी मृत्यु हुई। सुवर्ण-ओर्दू खान बेरेक, जगताइ खान अलगू और मुबारकशाह, ईरानका खान हुलाकू मर चुके थे। हुलाकूकी जगह अबका ईरानका, मेंगू तेमूर सुवर्ण-ओर्दूका और जगताइका मुबारकशाह खान बनाये गये। मुबारकशाहके जल्दी ही मर जानेपर कुबिलेइने बोरकको उसके स्थान पर नियुक्त किया।

१२६७ ई० में कुबिलेइने सुङ-वंशका उच्छेद करनेके लिये दक्षिणी चीनके बचे हिस्सेपर आक्रमण किया। सबसे कड़ी लड़ाई सियाङ-याङ (सियाङ-फू) में हुई। १२६८ ई० में मंगोल-सेनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया, लेकिन उसे तीन साल तक नगरपर अधिकार करनेमें सफलता नहीं मिली। १२६९ ई० में कुबिलेइने जापानको अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिखा, लेकिन अभिमानी जापानियोंने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। सियाङ-याङके मुहासरेके आरम्भके साथ-साथ कुबिलेइने जापानपर आक्र-

मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरू की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनासे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारो जगी जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नही शब्द-सकेतका उपयोग होता है जिसमे अकोकी तरह कुछ सुभीते भी है, लेकिन उसमें उच्चारण-सकेतके लिये कोई स्थान नही है। मगोल भाषा उइगुर (सिरियावाली) लिपिमें लिखी जाती थी, जिसमे डेढ दजन भी अक्षर न होनेसे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नही था। कुबिलेइके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिमे सुपरिचित होनेके कारण फग्पाने १२६९ ई० में मगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इसी साल उसे कुबिलेइने ता-पाउ-फा-वड्की उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० में कुबिलेइने अपने वशका नया नाम यु-अन रक्खा, जिस नामसे वह वश आज भी चीनमें प्रसिद्ध है। इसी साल बर्मा (मी-थेन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मगोल-सेना भेजी गई। १२७४ ई० में जहा सियाङ्-याङ्के विजयसे सम्राट्को बडी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मगोल नौसेना चु-सिमाकी खाडी में जापानियो द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक बेडा नष्ट हो गया। इसमें शक नही उस समय जापानियोंमे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमें हुई चु-सीमाकी हार कुबिलेइके विशाल साम्राज्य मे उसकी धाकके कम होनेका कारण नही हो सकती थी। हा, जापानियोमें यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियो तक जापान बाहरी शत्रुओसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वी शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोकी आखें नही खोल दी। अगले साल १२७५ ई० में सेनापति बायनने चिङ्-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोकी निर्मम हत्या की गई। इसी साल लिङ्-अन् राजधानी-पर भी मगोलोने अधिकार कर लिया। तरुण सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमें राजसिंहासनको भेजा, लेकिन सेनापति बायनको यह अधिकार नही था, कि वह सुङ्-वशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबधके लिये चीनियो और मगोलोकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मगोलोंके हाथमें था, इसलिये मगोल-भक्त चीनियोकी कमी नही थी। चार मगोल-अफसर राजधानीकी चीजोके सग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होने भिन्न-भिन्न राज्यविभागो की मुद्राये जमा की। अभिलेखा-गारमें उन्हें बहुत-सी किताबें, बही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिङ्-अन् (हङ्-चाउ) चीनकी सबसे बडी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोंके लिये नगरमें बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोमें विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमें बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमें बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकडीके थे। राजप्रासादमें बीस बडे-बडे हाल थे। सबसे बडी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तोसिफ रग्रेजोंके घर थे। सात सौ मदिर थे। सेनापति बायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुङ् और उसके अनुचरोको खानके पास भेज दिया। महल छोडनेसे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दडवत् करनी पडी। कुबिलेइकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा बर्ताव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पडी। वह इस प्राचीन राजवशके ध्वसमें मगोल-राजवशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, "उस समय मेरे बच्चो की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह बेइज्जत हो बदी बनना पडेगा।" लेकिन, मगोल-वशका अत सुङ्की तरह नही हुआ, क्योकि मगोलिया इस वशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुबिलेइका राज्यकाल केवल राजसी तडक-भडक और दिग्विजयोंके लिये ही प्रसिद्ध नही था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० में राजाज्ञा पाकर ह्वाङ्-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

चाहता था। इसी साल उसने शाङ-तू (फ पिङ-ह) में अपने लिये एक प्रासाद तथा कितने ही बौद्ध मंदिर बनवाये। मंगोल-सम्राटोंमें यही सबसे पहला सम्राट् था, जिसने सांस्कृतिक बातोंके महत्त्वको समझा। इसने जहां सांस्कृतिक जीवनकी बहुत-सी बाहरी बातें चीनसे ली, वहां धर्मके रूपमें बौद्धधर्मको स्वीकार किया। गद्दी पर बैठनेके साल ही इसने गाङ-चुन हृरिहनाई जुटवाई, जिसने कुबिलेइको खाकान घोषित किया। फिर लाखोंकी संख्यामें एकत्रित सैनिकों और हजारों सरदारोंकी चार दिन तक भारी दावत चलती रही, बड़ा महोत्सव मनाया गया। इतना सब होनेके बाद भी गृहयुद्धकी आग भड़क उठी, जिसमें कुबिलेइके एक अपने भाईने भी हाथ बटाया। कुबिलेइका छोटा भाई हुलाकू दूर ईरानमें था। वह आखिर तक अपने भाईका अनुगामी हो अपने राज्यको बृहत् मंगोल-साम्राज्यका अंग मानता रहा। इसका प्रभाव एक यह भी हुआ, कि ईरान और मेसोपोतामिया जैसे मुस्लिम दुनियाके गढ़में हुलाकू-वंश पीढ़ियों तक अपनेको बौद्ध रखनेकी कोशिश करता रहा। १२ सितम्बर १२५९ ई० को प्रस्थान कर हुलाकूने दियारबेकर, जजीरत (मेसोपोतामिया), रोहा, एदेस्सा, अजरुम और निसिबीपर अधिकार कर लिया। रोहाके पास उसने भारी सैनिक प्रदर्शन किया, जिसमें अरमेनिया, रूम (सल्जूकी) आदिके राजा भी उपस्थित थे। प्रतिरोध करनेके अपराध में हलब (अलेप्पो) का सर्वसंहार हुआ। दमिश्कने आसानीसे मंगोल जूआ स्वीकार कर लिया। इसी समय १२६० ई० में कुबिलेइके नामसे हुलाकूने नोट चलाया, जो दुनियाका सबसे पुराना कागजी नोट था।

दो वर्षके शासनमें गृह-युद्ध इतना भयंकर रूप ले चुका था, कि उसे दबानेके लिये १२६१ ई० में कुबिलेइको स्वयं मंगोलियापर धावा करना पड़ा। इस लड़ाईमें उसका प्रतिद्वंद्वी अरिगबूका पराजित हो कुछ दिनों बाद मर गया। कुबिलेइ अब अपनी स्थितिको ज्यादा मजबूत समझता था। यद्यपि चीनमें भी बौद्ध-धर्मका प्रचार था, लेकिन कुबिलेइने उसे तिब्बतसे स्वीकार किया। जिस समय मंगोल-सेनायें देश-विजयमें लगी हुई थीं, उसी समय तिब्बतके एक दूरदर्शी तथा अद्वितीय विद्वान् सक्या महापंडित आनन्दध्वजने—जो सक्यापण्छेन्के नामसे अधिक प्रसिद्ध हैं—मंगोलियामें अपने धर्मप्रचारक भेजे। ईसाई स्वरिक और मुल्लाओंको अपने काममें उतनी सफलता नहीं मिली, जितनी कि गुमनाम तिब्बतसे आये बौद्ध-धर्मदूतोंको। सक्या पण्-छेन्के उत्तराधिकारी तथा भतीजे लो-डो-ग्यल्-छेन्को कुबिलेइके गुरु बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। १२६१ ई० में कुबिलेइने अपने गुरुको फग्-पा लामा (आर्यगुरु) की उपाधि दी, जिसके ही नामसे वह आजकल तिब्बतमें मशहूर हैं। कुबिलेइको दूर मंगोलियाका कराकोरम राजधानीके लिये अनुकूल नहीं मालूम हुआ। पितृदेश होनेके कारण मंगोलियाके साथ चाहे जितना ही सद्भाव हो, लेकिन एक विशाल साम्राज्यके शासनके लिये उपयुक्त स्थान वही हो सकता था, जहांसे यातायातकी सुविधा हो। पे-किङको ऐसा ही स्थान कुबिलेइने समझा और वही उसकी राजधानी बनी। १२६३ ई० में कुबिलेइने पितरोंकी पूजाके लिये वहां एक विशाल ताइ-म्याउ (धर्मशाला) बनवाई।

सुङ-राज्यका अभी खातमा नहीं हुआ था। १२६४ ई० में सुङ-सम्राट ली-चुङके मरनेपर उसका भतीजा तू-चुङ गद्दीपर बैठा। मंगोलोंने सुङ-शक्तिको इतना सीमित कर दिया गया था, कि कुबिलेइको उससे बहुत खतरा नहीं था, अतएव उसे जल्दी नहीं थी। १२६५ ई० में जगताइ खान मुबारकशाह मर गया, कुबिलेइने उसकी जगह बोरकको खान बनाया। अभी कुबिलेइका प्रतिद्वंद्वी अरिगबूका जिंदा था और १२६६ ई० में उसके मर जानेपर ही कुबिलेइको भारी खतरेसे मुक्ति मिली। इसी साल कई और मंगोल-खानोंकी मृत्यु हुई। सुवर्ण-ओर्दू खान बेरेक, जगताइ खान अलगू और मुबारकशाह, ईरानका खान हुलाकू मर चुके थे। हुलाकूकी जगह अबका ईरानका, मेंगू तेमूर सुवर्ण-ओर्दूका और जगताइका मुबारकशाह खान बनाये गये। मुबारकशाहके जल्दी ही मर जानेपर कुबिलेइने बोरकको उसके स्थान पर नियुक्त किया।

१२६७ ई० में कुबिलेइने सुङ-वंशका उच्छेद करनेके लिये दक्षिणी चीनके बचे हिस्सेपर आक्रमण किया। सबसे कड़ी लड़ाई सियाङ-याङ (सियाङ-फू) में हुई। १२६८ ई० में मंगोल-सेनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया, लेकिन उसे तीन साल तक नगरपर अधिकार करनेमें सफलता नहीं मिली। १२६६ ई० में कुबिलेइने जापानको अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिखा, लेकिन अभिमानी जापानियोंने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। सियाङ-याङके मुहासरेके आरम्भके साथ-साथ कुबिलेइने जापानपर आक्र-

मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरू की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनासे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारो जंगी जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नही शब्द-संकेतका उपयोग होता है, जिसमे अकोंकी तरह कुछ सुभीते भी है, लेकिन उसमें उच्चारण-संकेतके लिये कोई स्थान नही है। मगोल भाषा उइगुर (सिरियावाली) लिपिमें लिखी जाती थी, जिसमें डेढ दजन भी अक्षर न होनेसे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नही था। कुबिलेइके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिमे सुपरिचित होनेके कारण फगपाने १२६९ ई० में मगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इसी साल उसे कुबिलेइने ता-पाउ-फा-वङकी उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० में कुबिलेइने अपने वशका नया नाम यु-अन रखा, जिस नामसे वह वश आज भी चीनमें प्रसिद्ध है। इसी साल वर्मा (मी-येन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मगोल-सेना भेजी गई। १२७४ ई० में जहा सियाङ-याङके विजयसे सम्राट्को बडी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मगोल नौसेना चु-सिमाकी खाडी में जापानियो द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक बेडा नष्ट हो गया। इसमें शक नही उस समय जापानियोंसे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमें हुई चु-सीमाकी हार कुबिलेइके विशाल साम्राज्य मे उसकी धाकके कम होनेका कारण नही हो सकती थी। हा, जापानियोमें यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियो तक जापान बाहरी शत्रुओंसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वी शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोकी आखें नही खोल दी। अगले साल १२७५ ई० में सेनापति बायनने चिङ-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोकी निमम हत्या की गई। इसी साल लिङ-अन् राजधानी-पर भी मगोलोने अधिकार कर लिया। तरुण सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमें राजसिंहासनको भेजा, लेकिन सेनापति बायनको यह अधिकार नही था, कि वह सुङ-वशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबधके लिये चीनियो और मगोलोकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मगोलोंके हाथमें था, इसलिये मगोल-भक्त चीनियोकी कमी नही थी। चार मगोल-अफसर राजधानीकी चीजोंके सग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होने भिन्न-भिन्न राज्यविभागो की मुद्रायें जमा की। अभिलेखागारमें उन्हें बहुत-सी किताबें, वही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिङ-अन् (हङ-चाउ) चीनकी सबसे बडी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोके लिये नगरमें बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोमें विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमें बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमें बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकडीके थे। राजप्रासादमें बीस बडे-बडे हाल थे। सबसे बडी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तोसिर्फ रग्रेजोंके घर थे। सात सौ मदिर थे। सेनापति बायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुङ और उसके अनुचरोको खानके पास भेज दिया। महल छोडनेसे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दडवत् करनी पडी। कुबिलेइकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा बर्ताव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पडी। वह इस प्राचीन राजवशके ध्वसमें मगोल-राजवशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, "उस समय मेरे बच्चो की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह बेइज्जत हो बदी बनना पडेगा।" लेकिन, मगोल-वशका अत सुङकी तरह नही हुआ, क्योकि मगोलिया इस वशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुबिलेइका राज्यकाल केवल राजसी तडक-भडक और दिग्विजयोंके लिये ही प्रसिद्ध नही था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० में राजाज्ञा पाकर ह्वाङ-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

चाहता था। इसी साल उसने शाङ-तू (क-पिङ-ह) में अपने लिये एक प्रासाद तथा कितने ही बौद्ध मंदिर बनवाये। मगोल-सम्राटोंमें यही सबसे पहला सम्राट था, जिसने सांस्कृतिक बातोंके महत्त्वको समझा। इसने जहां सांस्कृतिक जीवनकी बहुत-सी बाहरी बातें चीनसे ली, वहां धर्मके रूपमें बौद्धधर्मको स्वीकार किया। गद्दी पर बैठनेके साथ ही इसने शाङ-तूमें कूरिल्ताई बुलवाई, जिसने कुबिलेइको खाकान घोषित किया। फिर लाखोंकी संख्यामें एकत्रित सैनिकों और हजारों सरदारोंकी चार दिन तक भारी दावत चलती रही, बड़ा महोत्सव मनाया गया। इतना सब होनेके बाद भी गृहयुद्धकी आग भड़क उठी, जिसमें कुबिलेइके एक अपने भाईने भी हाथ बटाया। कुबिलेइका छोटा भाई खुलाकू दूर ईरानमें था। वह आखिर तक अपने भाईका अनुगामी हो अपने राज्यको बृहत् मगोल साम्राज्यका अंग मानता रहा। इसका प्रभाव एक यह भी हुआ, कि ईरान और मेसोपोतामिया जैसे मुस्लिम दुनियाके गढमें हुलाकू-वंश पीढियों तक अपनेको बौद्ध रखनेकी कोशिश करता रहा। १२ सितम्बर १२५९ ई० को प्रस्थान कर हुलाकूने दियारबेकर, जजीरत (मेसोपोतामिया), रोहा, एदेस्सा, अजरुम और निसिबीपर अधिकार कर लिया। रोहाके पास उसने भारी सैनिक प्रदर्शन किया, जिसमें अरमेनिया, रूम (सल्जूकी) आदिके राजा भी उपस्थित थे। प्रतिरोध करनेके अपराध में हलब (अलेप्पो) का सर्वसंहार हुआ। दमिश्कने आसानीसे मगोल-जूआ स्वीकार कर लिया। इसी समय १२६० ई० में कुबिलेइके नामसे हुलाकूने नोट चलाया, जो दुनियाका सबसे पुराना कागजी नोट था।

दो वर्षके शासनमें गृह-युद्ध इतना भयंकर रूप ले चुका था, कि उसे दबानेके लिये १२६१ ई० में कुबिलेइको स्वयं मगोलियापर धावा करना पड़ा। इस लडाईमें उसका प्रतिद्वन्द्वी अरिगबूका पराजित हो कुछ दिनों बाद मर गया। कुबिलेइ अब अपनी स्थितिको ज्यादा मजबूत समझता था। यद्यपि चीनमें भी बौद्ध-धर्मका प्रचार था, लेकिन कुबिलेइने उसे तिब्बतसे स्वीकार किया। जिस समय मगोल-सेनायें देश-विजयमें लगी हुई थीं, उसी समय तिब्बतके एक दूरदर्शी तथा अद्वितीय विद्वान् सक्या महापंडित आनन्दध्वजने—जो सक्यापण्छेन्के नामसे अधिक प्रसिद्ध है—मगोलियामें अपने धर्मप्रचारक भेजे। ईसाई खवरिक और मुल्लाओंको अपने काममें उतनी सफलता नहीं मिली, जितना कि गुमनाम तिब्बतसे आये बौद्ध-धर्मदूतोंको। सक्या पण्-छेन्के उत्तराधिकारी तथा भतीजे लो-ड़ो-ग्यल्-छेन्को कुबिलेइके गुरु बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। १२६१ ई० में कुबिलेइने अपने गुरुको फग्-पा लामा (आर्यगुरु) की उपाधि दी, जिसके ही नामसे वह आजकल तिब्बतमें मशहूर है। कुबिलेइको दूर मगोलियाका कराकोरम राजधानीके लिये अनुकूल नहीं मालूम हुआ। पितृदेश होनेके कारण मगोलियाके साथ चाहे जितना ही सद्भाव हो, लेकिन एक विशाल साम्राज्यके शासनके लिये उपयुक्त स्थान वही हो सकता था, जहांसे यातायातकी सुविधा हो। पे-किङको ऐसा ही स्थान कुबिलेइने समझा और वही उसकी राजधानी बनी। १२६३ ई० में कुबिलेइने पितरोंकी पूजाके लिये वहां एक विशाल ताइ-म्याउ (धर्मशाला) बनवाई।

सुङ-राज्यका अभी खातमा नहीं हुआ था। १२६४ ई० में सुङ-सम्राट ली-चुङके मरनेपर उसका भतीजा तू-चुङ गद्दीपर बैठा। मगोलोंने सुङ-शक्तिको इतना सीमित कर दिया गया था, कि कुबिलेइको उससे बहुत खतरा नहीं था, अतएव उसे जल्दी नहीं थी। १२६५ ई० में जगताइ खान मुबारकशाह मर गया, कुबिलेइने उसकी जगह बोरकको खान बनाया। अभी कुबिलेइका प्रतिद्वन्द्वी अरिगबूका जिंदा था और १२६६ ई० में उसके मर जानेपर ही कुबिलेइको भारी खतरेसे मुक्ति मिली। इसी साल कई और मगोल-खानोंकी मृत्यु हुई। सुवर्ण-ओर्दू खान बेरेक, जगताइ खान अलगू और मुबारकशाह, ईरानका खान हुलाकू मर चुके थे। हुलाकूकी जगह अबका ईरानका, मेंगू तेमूर सुवर्ण-ओर्दूका और जगताइका मुबारकशाह खान बनाये गये। मुबारकशाहके जल्दी ही मर जानेपर कुबिलेइने बोरकको उसके स्थान पर नियुक्त किया।

१२६७ ई० में कुबिलेइने सुङ वंशका उच्छेद करनेके लिये दक्षिणी चीनके बचे हिस्सेपर आक्रमण किया। सबसे कड़ी लड़ाई सियाङ-याङ (सियाङ-फू) में हुई। १२६८ ई० में मगोल-सेनाने उसे चारों ओरसे घेर लिया, लेकिन उसे तीन साल तक नगरपर अधिकार करनेमें सफलता नहीं मिली। १२६६ ई० में कुबिलेइने जापानको अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिखा, लेकिन अभिमानी जापानियोंने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। सियाङ-याङके मुहासरेके आरम्भके साथ-साथ कुबिलेइने जापानपर आक्र-

"ये घोडसवार-दूत बहुत अच्छा वेतन पाते है। वह इतने मुश्किल कामको विना अपने पेट, सिर और छातीको मजबूत पट्टीसे बाघे नही कर सकते। वह अपने साथ एक अकिन पट्टिका ले चलते है, जो इस बातको प्रकट करती है, कि वह बहुत जरूरी कामके लिये जा रहे है। इसीलिये यदि सयोगसे कही घोडेके अग-भग होने या गिर जाने से दूत सडकपर पड जाये, तो वह दूसरा घोडा ले सकता है। कोई उसकी मागसे इन्कार नही कर सकता।"

मार्को पोलोने बतलाया है, कि उस समय प्रत्येक बडे शहरमें एक दारोगा रहता था, जिसका काम था रास्तेकी देख-भाल करना।

(२) **जाति-व्यवस्था**—चाहे भारतकी तरहकी कडी जाति-व्यवस्था न हो, किन्तु सभी सामन्ती शासनोमें जातिभेदका होना आवश्यक देखा जाता है। ६ठी-७वी शताब्दीमें ईरानमे जातिभेद करीब-करीब उसी तरहका था, जैसा भारतमें। मगोलोंसे पहले चीनमें भी जातिभेद था। मगोलोने भी अपनी प्रजाको चार वर्गोमे बाटा था, जिनमे प्रथममे उनके अपने मगोल आते थे, द्वितीय वर्गमें से-मू (तुर्क मुसलमान), तूफान (तिब्बती), तुगुत, मध्य-एसिया तथा पश्चिमी एसिया के दूसरे वह लोग थे, जो मगोलोंके साथ नस्ली या सास्कृतिक समीपता रखते थे। तीसरे वर्गमें उत्तरी चीनवाले थे, जो कि किन्-शासनके बाद मगोल-शासन में आये थे। चौथे वर्ग में सुङ-साम्राज्यमे रहनेवाले दक्षिणी चीनी थे, जिन्होने मगोलोका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था, इसीलिये उन्हें सबसे निचले वर्गमें रखा गया था। पहले इन्हें किसी राजकीय सेवामें भरती होनेका अधिकार भी नही था। चीनमे पहलेसे चली आती अधिकारियोकी परीक्षाओमें यद्यपि चीनियोके सम्मिलित होनेमें कोई रुकावट नही थी, लेकिन चाहे चीनी परीक्षामें उच्चसे उच्च स्थान पाये, तब भी बाई ओरकी सूचीमे उसका नाम लिखा जाता था, जब कि मगोल और से-मू दक्षिणी सूचीमें स्थान पाते थे। नौकरीमें ले लेनेपर भी चीनियोको मगोल-भाषा सीखने और मगोलोंके धर्मके प्रति सम्मान दिखानेके लिये मजबूर होना पडता। दड देनेमें भी भेद-भाव रक्खा जाता। यदि कोई चीनी चोरी करता, तो पहले अपराधके लिये उसकी बाई बाहमें गोदना गोद दिया जाता, दूसरी बार अपराध करनेपर दाहिनी बाहमें, तीसरी बार गर्दनपर, जिसे देखकर कोई भी आदमी अपराधीको पहिचान सकता था। लेकिन, उसी अपराधके लिये मगोलोको इस तरहका दड नही दे मामूली जुर्माना लेकर छोड दिया जाता था। अगर कोई चीनी किसी मगोल या से-मू को मार डालता, तो उसे मृत्यु-दड मिलता और हत्यारेके परिवारसे धन वसूल करके मृत व्यक्तिकी अन्त्येष्टि आदिका खर्च दिलवाया जाता। अगर हत्यारा मगोल होता, तो उसे शराब के नशे, या झगडेके पागलपनको कारण बतलाकर जुर्माना या निर्वासनका दडभर करके छोड दिया जाता था। १२७९ ई० की एक मगोल-राजाज्ञाके अनुसार चीनियोको हथियार रखनेका अधिकार नही था। धनुष-बाण भी न रख पानेके कारण वह शिकार नही कर सकते थे। भारतके अग्रेज शासकोंकी तरह चीनमे मगोल-शासकोने भी जगह-जगह मगोल-छावनिया कायम की थी।

और भी विस्तृत वर्गीकरण करते हुये मगोलोने अपनी प्रजाको निम्न दस श्रेणियो में बाटा था—

(१) उच्च दरबारी, (२) अधीनस्थ या स्थानीय अफसर, (३) लामा (साधु), (४) ताउ-साधु, (५) वैद्य, (६) कारीगर और मजूर, (७) शिकारी, (८) पेशावर लोग, (९) कन्फूसी पुरोहित और (१०) भिखमगे। मगोल कन्फूसी आचार्योको बहुत नीची दृष्टिसे देखते थे, जब कि पुराने चीनी शासनमें कन्फूसी विद्वानो का स्थान राजवशके बाद ही आता था। इसमें शक नही, चीनी विद्या और सस्कृतिके निधिरक्षकोको उनके अनुरूप स्थान न दे मगोलोने बुरा किया था, लेकिन वह यह भी जानते थे, कि चीनी सस्कृति और सामन्तवादके इन अधे पुजारियोंसे अपने लिये, हम कोई भलाईकी आशा नही रख सकते थे। कन्फूसी यदि केवल चीनी सस्कृति और कलाके ही नेता होते, तो समझौता हो जाता, अथवा यदि मगोल पूरी तौरसे चीनी बननेके लिये तैयार होते, तब भी कन्फूसी विद्वानोको भिखारियोंके पास बैठनेकी जरूरत नही पडती। कन्फूसी शिक्षा और विद्वानोंके प्रभावको चीनके सभी सामन्ती शासक अपने लाभके लिये इस्तेमाल करते रहे। अभी हालमें चाङ्-काइ-शकने भी इस हथियारका पूरी तौरसे उपयोग करना चाहा। शासकके प्रति आख मूदकर सद्भावना और आज्ञाकारिता प्रदर्शित करना कन्फूसी शिक्षाका एक मुख्य अग है, इसीलिये शासकोकी उनपर विशेष अनुकम्पा

भाविक है। लेकिन कन्फूसी साहित्य और शिक्षामे एकमात्र दास-मनोवृत्ति सिखलाना ही नही है, उसमे कितनेही और भी उच्च सांस्कृतिक तत्त्व है, जिनको छोडा नही जा सकता, लेकिन इसका नीर-क्षीर-विवेक करते उपयोग करना नवीन चीनमें ही सम्भव हो सकता है।

मगोल खाकान गैर-मगोल जातियोके लिये स्वेच्छाचारी और कितनी ही बार अतिनिष्ठुर शासक थे, लेकिन उस निष्ठुरताका प्रयोग वह हर वक्त नही करते थे। यद्यपि मगोलोंके साथ उनका खास पक्षपात था, लेकिन अधीनस्थ जातियोको भी वह अधिकारोसे सर्वथा वचित नही रखते थे। प्राय सभी विजित देशोमें उन्होने पुराने राजाओ और सुल्तानोको अपने अधीन शासक बनाकर रख छोडा, सिवाय उन देशोंके जहाके लोगोने उनका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था। कुबिलेइने यद्यपि खानबालिग (पेकिङ) को अपनी राजधानी बना उसे भव्य प्रासादोवाली समृद्ध नगरीमे परिणत कर दिया था, लेकिन उसका भी अधिक समय तम्बुओके भीतर बीतता था। मगोल अपने घुमतू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझते थे, इसीलिये चीन या दूसरे देशो पर शासन करनेवाले सभी मगोल-खाकानोकी राजधानिया चिडिया-रैनबसेरा जैसी ही थी। मगोल-भाषामें राजधानी और प्रासादो को सराय कहते है। उसका अर्थ मुसाफि-रोकी सरायका हर्गिज नही था। मार्को पोलोके अनुसार राजपथोके हर मजिलपर "सराय" (प्रासाद) थी, शायद उसीके कारण मुसाफिरोकी टिकानको भी सराय कहा जाने लगा। राजकुमारो और बडे-बडे सैनिक अफसरोको राज्यके भीतर अपने-अपने भूखण्ड मिले हुये थे, जिनपर वह अपनी मर्जीके मुताबिक शासन करते थे। यद्यपि छिङ-गिस्ने मध्य-एसियाके मुसलमानोंके साथ बडी क्रूरताका वर्ताव किया था, बलख, मेव, तूस जैसे कितने ही समृद्ध नगरोकी वस्तुत उसने ईंटसे ईंट बजा दी थी, जिसके कारण वह फिर नही उठ सके, लेकिन, पीछे मगोलोका वर्ताव मुस्लिम जातियोसे अधिक सहानुभूति-पूर्ण था, यह इसीसे पता लगता है, कि इन जातियोको उन्होने चारो वर्गोंमेंसे द्वितीय वर्गमें रक्खा था। कुबिले खानकी बर्मा और बगालपर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनापति नासिरुद्दीन भी इसका स्पष्ट उदाहरण है—मगोल ऊंचे सैनिक पद को भी मुसलमानोको देनेके लिये तैयार थे। इसका एक और भी कारण था—चाहे मध्य-एसियाके तुर्क मुसलमान हो गये हो, लेकिन जातित वह मगोलोके भाई-बन्द थे। रूसियो और पश्चिमी जातियोंके खिलाफ अभियान करते समय मगोलोने किपचक तुर्कोंसे भाईचारा लगाकर उन्हें अपनी ओर कर लिया था, जिससे उन्हें एक लडाकू जाति सहायक मिल गई।

मगोल-भाषाके प्रति मगोल-शासकोका अधिक पक्षपात स्वाभाविक था। उनके आज्ञापत्र उइगुर लिपिमें लिखी मगोल-भाषामें हुआ करते थे। १३वी शताब्दीके आरम्भमे चली हुई यह परिपाटी १५वी शताब्दीके आरम्भ तक तेमूरलग और उसके पुत्रोके समय तक जारी रही। कट्टर मुसलमान होते भी यह लोग छिङ-गिस् की वरासतको छोडनेके लिये तैयार नही थे। लेकिन, मगोल-भाषाका विकास जितना होना चाहिये था, उतना नही हो सका। "मगोल-उन्-निगुचा" (तोपचिया), "युवान-चाउ-बि-शी" जैसे कुछ इतिहास या दूसरे विषयोंके ग्रथ उस समय मगोल-भाषामें लिखे गये। पीछेके मगोल-शासकोके लिये ग्रथ अधिकतर चीनी या पारसीमें लिखे गये, जो प्राय इतिहाससे सबध रखते थे। चीनमें मगोल-भाषामे जो ग्रथ लिखे गये, उनके अनुवाद चीनीमें भी हुये थे, पीछे मूल (मगोल) ग्रथ लुप्त हो गये और उनके चीनी अनुवाद भर बच रहे। कुबिलेइ खानने अपना ही नही अपने वशका भी धर्म बौद्ध-धर्मको घोषित किया और अपने गुरु फग्पा लामाको तिब्बतका राज्य प्रदान किया, किन्तु उसने बौद्ध-ग्रथोंके मगोल-अनुवादका काम बहुत आगे नही बढाया। १५ महाभारतोंके बराबर भारतीय ग्रथोंके अनुवाद कन्जुर (बुद्ध-वचनानुवाद) और तन्जुर (शास्त्रानुवाद) के नामसे तिब्बती भाषामे मौजूद थे। उनमें (तिब्बती) कन्जुरको कुबिलेइ खानने स्वय सोनेके अक्षरो में लिखवाया था, लेकिन उनका मगोल-अनुवाद उस समय हुआ, जब चीनसे मगोल-शासन खतम हो गया। मगोल शायद संस्कृतकी तरह तिब्बती भाषामें ही धर्म-ग्रथो का पढना ज्यादा पुण्यदायक समझते थे। आज भी मगोलियामे कन्जुर और तन्जुरके मगोल-भाषामें हो जानेपर भी उन्हे तिब्बती भाषामें पढना ज्यादा पुण्यकार्य समझा जाता है। शायद यह भी कारण रहा हो, लेकिन उस समय आजकी तरह मगोलोमें तिब्बती भाषाका प्रचार नही था, इसलिये अधिकाश लोग तिब्बती ग्रथोको विना समझे ही पढ सकते थे।

चीनके मगोल खाकानोके समय पहले घनिष्ठतापूर्वक किंतु पीछे शिथिलताके साथ चगताइ, जू-छि, हुलाकू आदिके राजवशोका सबध रहा, इसका वर्णन आगे हम करेंगे। तू-लुइ-वश के वर्णन के बाद अब हम जू-छि-वशको लेते है जिसके शासनमें उत्तरी मध्य-एसिया और रूस बहुत समय तक रहे।
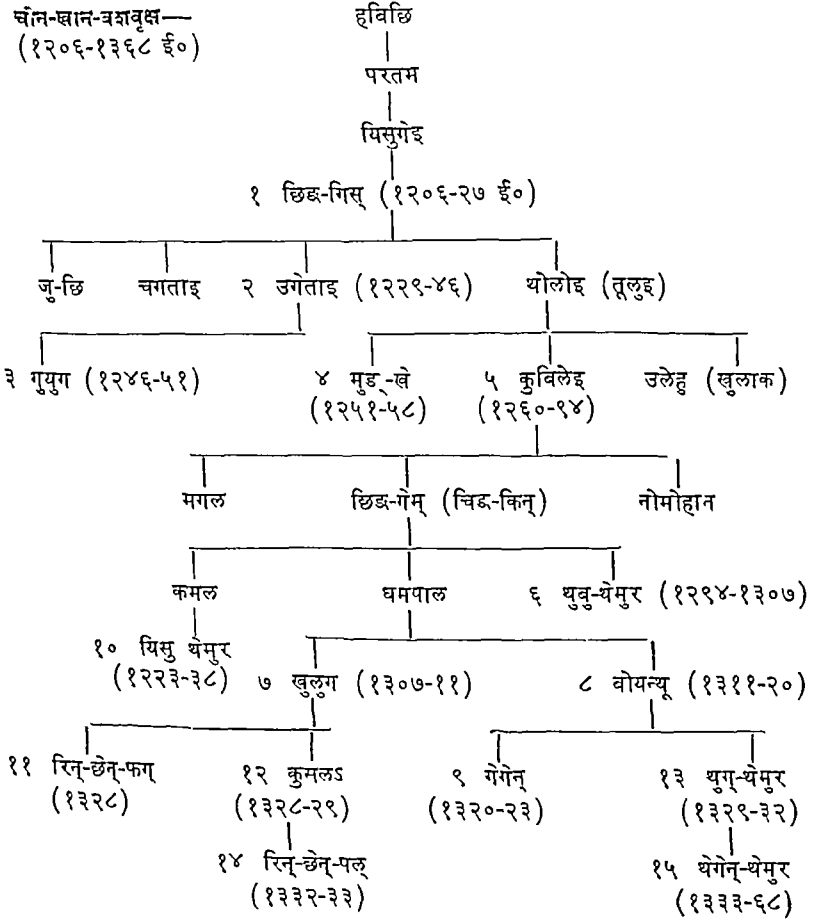
अध्याय २

सुवर्ण-ओर्दू

(१२२४-१४०० ई०)

छिङ्ग-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके ओर्दूको "सुवर्ण-ओर्दू" के नामसे पुकारा जाता है, यद्यपि मुसलमान इतिहासकार इसे अधिकतर कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू) के नामसे याद करते है, और जू-छिके ज्येष्ठ पुत्र ओर्दाके उलुसको अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) कहते हैं। रूसी प्रजा इन्हे जोल्तोय (सुवर्ण-ओर्दू) के नामसे जानती है ।

१ जू-छि, तू-शि (म० १२२४ ई०)

छिङ्ग-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि या तू-शिकी मृत्यु बापसे छ महीने पहले हुई थी, यह हम कह आये है। ज-छिके बारेमें एक मुसलमान गुमनाम लेखककी कृति "शज्रतुल्-अतराक" (तुर्कवश-वृक्ष) में कितनी ही बातें कही गई है। मगोलियासे दूर चले गये मगोल तुर्क-समुद्रमें चद बूदोकी तरह थे, और वह उनके भीतर हजम भी हो गये। इसीलिये इस लेखकने मगोल-वशवृक्षको तुर्क-वशवृक्ष कहा। इस तथा दूसरे ग्रथोंके अनुसार भी छिङ्ग-गिस्को अनुपस्थित देखकर उसके प्रतिद्वद्वी मरकितोने छिङ्ग-गिसी उलुसको मार भगाया और वह उसकी ज्येष्ठ पत्नी बुर्ते-फूजिन्को और बहुतसे आदमियोके साथ पकड ले गये। बुर्ते-फूजिन् ककुरत कबीलेके सरदार दाई-नोयन्की पुत्री थी। यही छिङ्ग-गिस्के चार प्रधान पुत्रो और पाच पुत्रियोकी मा थी। बुर्ते-फूजिन्के पकडे जानेके समय जू-छि माके पेटमें ६ मासके गर्भके रूपमें था। केरइत खान ओङ्ग-खान छिङ्ग-गिस्का बडा समर्थक था। वह छिङ्ग-गिस्को अपना पुत्र मानता था। जब इस घटनाका पता लगा, तो उसने मरकितोपर आक्रमण कर बुर्ते-फूजिन् तथा उसके आदमियोको छुडा लिया, और अपनी धर्म-वधूको फिर छिङ्ग-गिस्के पास भेज दिया। इसी समय रास्ते मे जू-छि पैदा हुआ। पथमें पैदा होनेके कारण ही उसका नाम जू-छि (पथक) पडा। पीछे चगताइ खानोका जू-छि-वशके कोक-ओर्दू और अक-ओर्दूसे सदा झगडा होता रहा। इसीलिये चगताइ विद्वानोंके इतिहास-ग्रथोमें जू-छिको कलकित करते हुये यह साबित करनेकी कोशिश की गई, कि जू-छि छिङ्ग-गिस्का पुत्र ही नही था। समर्थक इस बातके साबित करनेका प्रयत्न करते है, कि जू-छिकी मा केवल चार महीने छिङ्ग्-गिस्से दूर रही, जब कि रास्तेमें जू-छि पैदा हुआ। "तुर्कवश-वृक्ष" का लेखक यह भी कहता है—"चाहे पुत्र कितना ही अच्छा हो, असली और नकलीके प्रति पिताके प्रेममें जमीन-आसमानका अन्तर होता है। साइन् (छिङ्ग्-गिस्) जू-छि खानके ऊपर हदसे ज्यादा प्रेम और स्नेह रखता था।" जू-छि खानके मृत्युकी खबर जब उलुसमें पहुची, तो उसे बापतक पहुचानेकी किसीको हिम्मत न हुई। यह काम दरबारी कवि उलुग-दुर्जीके सिरपर रखा गया। कविने हिम्मत करके पद्यमें उपमाके रूपमें यह खबर सुनाई, जिसे सुनकर छिङ्ग-गिस् बहुत दुखी हुआ। कवि और छिङ्ग-गिस्के दुखोको तुर्की भाषाके पद्यमें प्रकट किया गया है, यद्यपि यह निश्चय है, कि छिङ्ग-गिस् तुर्की नही बोलता था, इसलिये यह पद्य पीछे बनाये गये है। तो भी इसमें सदेह नही, कि छिङ्ग-गिस्को अपने ज्येष्ठ पुत्रकी सरकसीके बाद भी उसके साथ असाधारण प्रेम था, इसीलिये उसे बहुत दुख हुआ।

ख्वारेज्म-विजयके समय छिङ्ग-गिस्ने जू-छिको पूर्वमें कयालिकसे पश्चिममें सकसीनतकी दश्ते-किपचक (वर्तमान कजाकस्तान), बोल्गारो, आलानो, बश्किरो, उरुसो और चेरकासोंके देशोंके साथ वह भूमि भी प्रदान की, जहा कि तातारो (मगोलो) के घोडोकी टापें पडें। जू-छिका ओर्दू यद्यपि जेष्ठ पुत्र ओर्दा और द्वितीय पुत्र बा-तूके अधीन पहले हीसे दो उलुसोमें बट गया था, लेकिन श्वेत-ओर्दूके सस्थापक ओर्दाने जिस तरह अपने छोटे भाई बा-तूको अपना अधिपति स्वीकार किया, वैसे ही उसका श्वेत-ओर्दू भी अपनेको बा-तूके सुवर्ण-ओर्दूके अधीन मानता रहा। जू-छि ओर्दूका पूर्वी

भाग (किपचक-भूमि) श्वेत-ओर्दूकी माना जाता था। सुवण-ओर्दूके ३९ शासक हुये—

१	जू-छि, तू-शि छिङ्ग-गिस्-पुत्र	१२२४ ई०
२	बा-तू जू-छि-पुत्र	१२२४-५५ „
३	सेर-तक बा-तू-पुत्र	१२५५ „
४	उलकची बा-तू-पुत्र	१२५५ „
५	बेरेके, बरका, जू-छि-पुत्र	१२५५-६५ „
६	मुङ्ग-खे थे-मुर, मगू-थेमुर तोगोन-पुत्र	१२६५-८० „
७	तू-दा-मगू तोगन-पुत्र	१२८०-८९ „
८	तोगू-ताइ, तोक्-तोगू, मगू-थेमुर-पुत्र	१२८९-१३१३ „
९	उज्बेक तोक्-तोगूका भतीजा	१३१३-४२ „
१०	तिनी (दिनी) वेग उज्बेक-पुत्र	१३४२ „
११	जानी-वेग उज्बेक-पुत्र	१३४२-५७ „
१२	वेर्दी-वेग जानी-पुत्र	१३५७-५९ „
१३	कुलदी (कुल्या) वेग, जानी-पुत्र	१३५९ „
१४	नौरोज (नूरुस) वेग जानी-पुत्र	१३५९-६० „
१५	चेरकेस-वेग जानी-पुत्र	१३६० „
१६	ओरदा शेख	
१७	खिजिर	
१८	कुलफा	
१९	तेमूर खोजा	
२०	मुरीद	
२१	अजीज, बाजारची	
२२	हाजी एरजन-पुत्र	
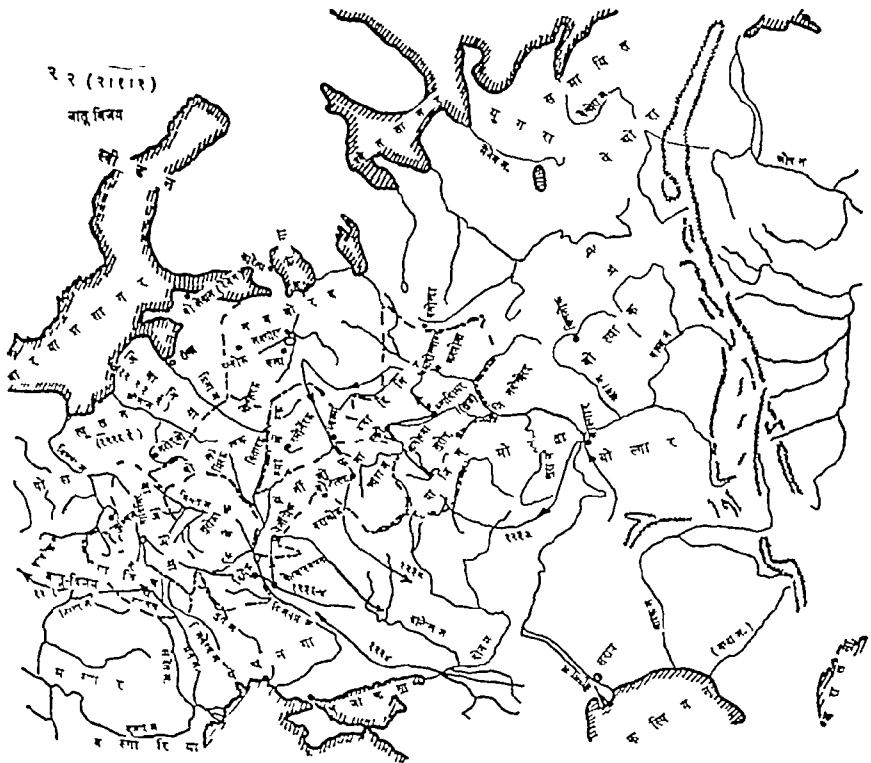
२ बा-तू खान, सायन खान जू-छि-पुत्र (१२२४-५५ ई०)

छिङ्-गिस्के पोतोंमें बा-तू पहला था, जिसने चारो उलुसोंमेंसे एकके खानपद को दादाके जीवनमें ही प्राप्त किया। इसकी मा यू-जिन खातून कुङरत-कवीलेके सरदार अची नोयनकी लडकी थी। यद्यपि बातूसे वडा एक और भी भाई उर्दा (ओर्दा) था, लेकिन दादाने इसे ही अधिक योग्य समझा। छिङ्-गिस् पश्चिम दिशाके महत्त्वको समझता था, इसलिये द्वितीय पुत्र होनेपर भी समझ समझ बा-तू को बापका स्थान दिया। वडे भाई ओर्दाने भी दादाके निणय को दिलसे स्वीकार किया, तथा उसके उलुसने भी बातूके उत्तराधिकारियो को अपना प्रधान माना। यद्यपि रूसियोमें बा-तूका ओर्दू सुवर्ण-ओर्दूके नामसे प्रसिद्ध है, किन्तु पूर्वी इतिहासकार उसे कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू)के नामसे ज्यादा जानते है—ओर्दाका उलुस अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) के नामसे प्रसिद्ध था। जू-छि ओर्दू, हम जानते है, लटाकू घुमन्तुओका समूह था, जो जू-छिके मरनेपर बा-तू और ओर्दामें आधा-आधा वट गया। ओर्दाके उलुसको वाम-दल और बा-तू को दक्षिण-दल भी कहा जाता था। वाम-दलमें वैसे बा-तूके भाई ओर्दा, तुकातेमुर, सिङ्-कुर और सिङ्-कुङ भी शामिल थे। समकालीन इतिहासकार मिनहाजुद्दीन जुजजानी (११९३-१२२६) ने दिल्लीमें रहते अपने सरक्षक नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह (१२४६-६५ई०) के नामसे प्रसिद्ध "तवारीखे-नासिरी" में लिखा है, कि जू-छिके मरनेपर छिङ्-गिस्ने बा-तूको जू-छिका स्थानापन्न बनाते हुये उसे किपचको, कर्गलियो, ऐमको, इलबारो, अलानो, असियो, रूसियो, चेरकासोकी भूमि प्रदान की, और वह सभी भूमि भी, जहापर मगोल घोडसवारोकी टापें पडी। यह हम देखेंगे, कि आगे खजार-दवन्द—जिसे मगोल थिमुर-कखलखा (लौहद्वार) कहते है—भी बा-तूके हाथमें था। इस प्रकार काकेशसमें उसके और उसके चचेरे भाई ईरानके खान खु-ला-गूकी सीमा मिलती थी। जुजजानीके अनुसार बा-तू मुसलमानोंका मित्र था। उसने छावनियो और डेरोंमें मस्जिदें बनवा इमाम और मुअज्जिन नियुक्त किये थे। उसकी मुसलमानी प्रजामें सवत्र शाति और समृद्धि देखी जाती थी। इसका अर्थ यही है, कि बा-तू धमके बारेमें अपने दादाकी नीतिका अनुगमन करता था। लेकिन ख्वारेज्म, किपचक और काकेशसमें ही उसकी मुसलमान प्रजा रहती थी। वशगिर ईसाई थे। वही बात रूसी तथा दूसरे लोगोकी थी। ऐसी हालतमें बा-तू यदि स्वय ईसाई हो, तो कोई विचित्र बात नही थी। बहुसख्यक जनताको अधिक अनुकूल बनानेके लिये यह अच्छा ढग था। अभी उस समय तक मगोल-राजवशने बौद्ध-धमको जातीय धम नही बनाया था। एक तरह ससारके बडे-बडे धर्मोकी वह परीक्षा कर रहा था। खुबिलेइ (कुबिले) कआनने बौद्ध-धम स्वीकार कर यद्यपि वह कदम बढ़ाया, जिससे बौद्ध-धम मगोलोंका राष्ट्रीय धम बन गया, किन्तु खुबिलेइके निणयको उन्ही जगहोमें मगोलोने माना, जहा बौद्ध-धमकी प्रधानता थी, अथवा जहा कोई गैर-कबीली देशी धम प्रचलित नही था। बा-तूके उत्तराधिकारी तथा अनुज बरकाने अपने आपको खुल्लमखुल्ला मसलमान घोषित किया, जिसका उसके अपने मगोलोपर बुरा प्रभाव पडा, जो ही पीछे पूर्वी और पश्चिमी मगोल-साम्राज्यमे मतभेदका एक कारण भी हो पडा। सुवण-ओर्दू ऐसी स्थितिमें था, कि यदि उसने ईसाई धम को स्वीकार किया होता, तो शायद आगे चलकर रूसियोको उनके विरुद्ध धमयुद्धका ख्याल न आता। चगताइ और खुलाकू-वशकी साधारण प्रजा सारी मुसलमान थी, जिसके कारण राजनीतिक लाभके ख्यालसे उन्हे इस्लामको स्वीकार करना पडा। चगताइ खान तमछेरिङ—जो कि मुहम्मद तुगलकका समकालीन था—का नाम बौद्ध था, लेकिन पीछे वह कट्टर मुसलमान हो गया। इसके कारण भारतके तुगलक सुलतान तथा चगताइ खानमें बडी घनिष्ठता स्थापित हो गई। ईरानी खान गज्जन (१२९५-१३०४) ने पहले अपनी राजधानीमें एक सुन्दर बौद्ध विहार बनवाया, लेकिन अतमें राजनीतिक-दाव-पेंचके लिये उसे इस्लाम स्वीकार करना पडा। धम किस तरह राजनीतिक चालके लिये इस्तेमाल होता है, इसका यह स्पष्ट उदाहरण है। ईसाइयतको न ले सुवण-ओर्दूके खानोने इस्लामको क्यो स्वीकार किया, इसमें एक कारण था—मुसलमान तुर्क-लडाकुओंसे अपने शासनको मजबूत करनेका ख्याल। वोल्गाको उस समय इतिलके नामसे पुकारा जाता था। वोल्गार जातिके इस उपत्यकामें रहनेके कारण

पीछे इसी नदीका वोलगा नाम पडा। वोलगाके वायें तटपर अस्त्राखानमे उत्तर वा-तूने अपनी राजधानी वनवाई, जिसका नाम सराय, वा-तू-सराय (या वरका-सराय भी) पड गया। गू-युक कआनके मरने के समय (१२५१ ई०) मगोलोने वा-तूको अपना कआन वनाना चाहा, लेकिन तवतक उसके घोडोकी टापें जर्मनीकी सीमातक पहुच चुकी थी, इसलिये पश्चिम-विजेताने पूव जाना पसद नही किया और उसके समयनपर छिङ्-गिस्-पुन तू-लुइके पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) को कआन वनाया गया।

दिग्विजय—१२२४ ई० में वापकी जगह वैठनेके वाद वा-तू ख्वारेज्म और उसके पश्चिमकी भूमि का शासक वना। मगोलो की प्रथम पश्चिमी विजय स्थायी नही थी, इसलिये वा-तूको फिर लडकर अपनी स्थितिको मजवूत करना पडा। ख्वारेज्म और किपचकके वहुत से भागोने वा-तूके शासनको जल्दी स्वीकार कर लिया, किन्तु सुवर्ण-ओर्दूके आगेके विस्तारके लिये उसे वहुत सघप करना पडा। इसके लिये शायद वा-तू राजी न होता, यदि १२३५ ई० की अपनी दूसरी कूरिल्ताइ (महाससद) मे उगेताइने प्रोत्साहन न दिया होता। इसी कुरिल्ताइमें दक्षिणी चीन तथा और भी दक्षिणके देशोंके विजयका निश्चय हुआ था, और वा-तूको वोल्गारो, असो और रूसियोपर अधिकार करनेका काम सौपा गया था। उसकी मददके लिये उगेताइने अपने पुत्रो गू-युक और कदगन, तु-लुइके पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) और मोकू, एव जू-छिके पुत्रो ओर्दा, और तङ्-गुतको सहायताथ दिया। इनके अतिरिक्त कुछ और खान-जादो (राजकुमारो) के साथ प्रसिद्ध सेनापति सु-वे-नाइ वहादुर भी साथ था।

वा-तूकी सेना केलरोको विजय करके वाश्किरोपर पडी। वाश्किरोंके वारेमें १२३६ ई० में साधु जूलियनने लिखा था—"पूर्वी मगयार (हुगेरियन) या वाश्किर काफिर है। उन्हे न सच्चे ईश्वर-का ज्ञान है और न वह दूसरे देवताओको पूजते है। वह जगली जानवरोकी तरह रहते है, खेती नही करते, घोडो और भेडोका मास खाते, दूध, दूधकी शराव (कूमिस) और खून पीते है। उनके पास घोडे और हथियार प्रचुर परिमाणमें है और वह वडे लडाकू है। उनमे एक कथा मशहूर है, कि मगयार हमारे देशसे गये, किंतु कहा गये, यह नही जानते।" लेकिन जहातक वाश्किर सरदारो और सामन्तोका सवध था, वह अधिकतर ईसाई थे, यह पूर्वी इतिहासकारो के लेखोसे भी मालूम होता है।

(क) **वाश्किर-विजय**—महाकूरिल्ताइके निणयके वाद जो महाअभियान शुरू हुआ, उसके अनुसार १२३८ ई० में यायिक (कराल) नदीके तटपर वा-तूकी साढे चार लाख सेना एकत्रित हुई। इसमें ककली (कगली), नैमन, कराखिताई आदि कवीलोंके सैनिक अधिक थे। सेनाको तीन भागो में वाटा गया—(१) मुङ-खे और वे-चुकके अधीन एक सेना सकसिन (निम्न वोल्गा उपत्यका) के सरदार पचिमान (राजधानी सुमरकद) के विरुद्ध भेजी गई, (२) दूसरी सेना सुवोताइके अधीन वोल्गारोंके विरुद्ध। (३) स्वय वा-तूने दुश्मनकी सख्या और शक्तिका पता लगानेके लिये अपने भाई सेवानको दस हजार सैनिकोंके साथ आगे भेजा। सेवानने हफ्तेके भीतर लौटकर दुश्मनकी जवदस्त शक्ति का पता दिया। दोनो ओरकी सेनायें एक नदीके किनारे आमने-सामने खडी हुई। इतिहासकार जुवैनी (१२२६-८३ ई०) के अनुसार वाश्किर सेनाको देख वा-तू अपने शिविरमें चला गया और किसीसे एक शब्द भी न कह वस भगवान्से प्राथना करते खूव रोता रहा। उसने सभी मुसलमानोको भी एकत्रित करके दुआ मागनेके लिये कहा। दूसरे दिन युद्ध करनेका निश्चय हुआ। मगोल सेना रात-को ही नदी पार करनेमें सफल हुई और उसके प्रहारसे केलरोंके पैर उखड गये। वा-तूकी जवदस्त विजय हुई, दुश्मन भारी सख्यामें काम आये, उनकी वहुत-सी सपत्ति हाथ आई। उसी जाडेमें वा-तूके सेनापति सुवोताइने खवान उपत्यकापर अधिकार किया।

(ख) **वोल्गार-विजय**—१२३८ ई० में सुवोताइ (सुङ-नाइ) ने वोलगा-उपत्यकाके तटपर अवस्थित वोल्गारोकी राजधानीपर आक्रमण किया। वोल्गारोने व्लादिमिरके महारावल द्वितीय जार्ज व्सेवोलद-पुनसे सहायता मागी। उसका भाई नवोग्रादका शासक तथा अभी-अभी कियेफके सिंहासनपर वैठनेवाला था, जिसके वाद नवोग्रादका शासक प्रसिद्ध रूसी वीर तथा कियेफ-रावलका पुत्र अलेक्सी नेव्स्की हुआ। इस प्रकार कियेफ, नवोग्राद और व्लादिमिर तीनो राज्य एक ही परिवारके हाथमें थे। रूसियो और वोल्गारोकी सम्मिलित सेनाने मगोलोका जवर्दस्त मुकाविला किया।

(ग) **सकसिन-विजय**—मङ्ग-गने सकसिनोको हराया। पचिमानने अपने अनुयायियोंके साथ जगलमें शरण ली। लेकिन मगोल भगोडोको फिरसे मुकाबला करने लायक क्यो छोडने लगे? मुङ्ग-खेने जगह-जगह अपनी सैनिक चौकिया स्थापित की और अतमें पीछा करते-करते वोल्गा नदीके टापूमें उसे जा दबाया। पचिमानके अनुयायियोंमें बहुतसे मारे गये। बदियोमे स्त्री-बच्चे तथा स्वय पचिमान हाथ आया और गुस्ताखीके अपराधमें मुङ्ग-खेके हुक्मसे उसके सामने ही पचिमान-के दो टुकडे कर दिये गये।

(घ) **मास्को-विजय**—उसी ग्रीष्म (१२३७ या १२३८ ई०) मे खानजादो (राजकुमारो) ने रूसियो के नगर अरपान (र्‍याजन) पर आक्रमण किया। तीन दिनमें ही नगरने अधीनता स्वीकार कर ली। उस समय सिम्बिर्स्क, पेनूजा, तम्बोफ नामसे पीछे प्रसिद्ध स्थानोमे मोदवीन लोग बसते थे, जिनका अपने पडोसी रूसियोंसे अच्छा सबध नही था। उन्होने मगोलोंके लिये गुप्तचरका काम किया। उनसे पता पाकर मुङ्ग-खे और बा-तूकी सम्मिलित सेनाने सीमान्ती नगर र्‍याजनके ऊपर आक्रमण किया था। र्‍याजनके रावल जाजने मगोलोसे लडनेमें सफलता न पा अपने पुत्र फ्योदरको भेंटके साथ बा-तूके पास भेजा। बा-तूने भेंट स्वीकार की, लेकिन साथ ही फ्योदरसे उसकी बहन और बेटियोको भेजनेके लिये कहा और यह भी, कि वह अपनी सुन्दरी भार्या एउफ्रेसिया को दिखलावे। फ्योदरने कहा—ईसाई राजकुमार अपनी स्त्रियोको काफिरोको नहीं दिखाया करते। इसपर बा-तूके हुक्मसे वह वही मार दिया गया, जिसकी खबर पा अपना सतीत्व बचाने के लिये उसकी स्त्रीने अपने पुत्रके साथ छतसे गिरकर जान दे दी। अब भी वर्तमान र्‍याजनसे दस लीगपर पुराने (स्तारया) र्‍याजन का ध्वस मौजूद है।

(१) र्‍याजन-विजयके बाद बा-तूकी सेना ओकाके किनारे-किनारे कलोम्ना पहुची और उसपर अधिकार कर मास्को (मकस) जा उसे लूटा-जलाया। फिर वह सुज्दलकी राजधानी व्लादिमिरके ऊपर पडी। नवगोरद जाते १४ मार्च १२३८ ई० को वोलोखोन्स्की (त्वेर) और तोरयकपर भी कब्जा किया, लेकिन मगोल वोल्गाके उद्गम सेलिगोरसे आगे नही बढे। मगोलोंके सामने "ग्राम लुप्त हो गये, रूसियोंके मुड हसियेके सामने घासकी तरह गिरते गये।"

(२) दूसरी सेना इसी समय बा-तूके भाई बेरेकके नेतृत्वमें वोल्गा और दोनके बीचके किपचकोंके ऊपर पडी। किपचक-सरदार कोतियक देश छोड अपने बधुओ (मग्यारो) के पास हुगरीकी ओर भगा।

(३) तीसरी सेना सेवान, बूजक और बूरीके नेतृत्वमें मारी लोगोंके ऊपर पडी, जो कि उस समय दक्षिण-पश्चिमी रूसमें रहते थे।

(४) चौथी सेना काकेशसकी पहाडियोकी ओर चेरकासियोंके पीछे पडी। १२३८ ई० की शरद्‌में चेरकास-राजा तुकान मारा गया और १२३९ ई० में मगोलोने काकेशसके दरवदपर आक्रमण किया।

मास्कोकी तरफ बढ़ते समय रूसी राजुल रोमनने प्रतिरोध करते मगोलोंके हाथ अपने प्राण खोये। तीन दिनोके सघर्षके बाद मगोलोने मास्को (मकस) को ले लिया और वहाके राजुल (क्न्याज) व्लादिमिर (उलयतमुर) को मार डाला। फिर वह लोगोको कत्ल करके नगरोको बिल्कुल लूटते-जलाते चीजोको नष्ट करते आगे बढे, जिसमें पीछेसे उनपर प्रहार करनेवाला कोई न रह जाय। उस समय सारा रूस छोटे-छोटे राजुलोमें बटा हुआ था। वह भला कैसे मगोलोंके टिड्डी-दलका मुकाबिला कर सकते थे? रूसी जगलोंमें भागते, लेकिन वहासे भी पकडकर मारे जाते।

बा-तूके दो महीनेके मुहासिरेके बाद भी कोजेल्स्क सर नहीं हुआ, कदन तथा बूरीकी सेनाओंके आनेपर तीन दिनके सघर्षके बाद ही उसपर अधिकार हो पाया। मुस्लिम इतिहासकारोंके अनुसार चेर-कासोके ऊपर ६३५ हिजरी (१२३६-३८ ई०) के जाडोमें मुङ्ग-खे और कदनने आक्रमण किया, और वहाका राजा तुकर मारा गया।

(ङ) **कियेफ-विजय**—१२३९ ई० के बसतमें बा-तूके नेतृत्वमें प्रधान सेना द्नियेपर-उपत्यकाके निवासियोंके ऊपर पडी। राजुलाकी आपसी शत्रुताके कारण दक्षिण-पश्चिमी रूसियाने भी एक होकर

मुकाविला नहीं कर पाया। मगोल रूसी राजुलोको भगाते कियेफ पहुचे। ६३७ हिजरी (१२४० ई०) की शरदमें कआन * ओगोताइ का बुलावा आनेसे गो-युक और मुङ-खे किपचक-भूमिके रास्ते मगोलिया लौट गये, लेकिन वा-तूकी विजय-यात्राका सबसे बडा कदम अब उठनेवाला था।

वा-तू अपने भाइयो कदन, बूरी और बू-चेकके साथ रूसियो और कालीटोपियो (स्याहकुलाह) की ओर बढा। इसी समय दिसबरमें नौ दिनो के मुहासिरेके बाद उसने महानगर मनकेरकानको ले लिया। मनकेरकान रूसका सबसे पुराना और वैभवशाली नगर कियेफका ही नाम था, मगोलोने नगरकी होली जला दी, जिसमें शताब्दियोंसे जमा होती कलाकी वस्तुयें तथा भव्य इमारतें नष्ट हो गई। तबसे १५वी शताब्दी तक कियेफ उजाड रहा।

१२४१ ई० (६३८ हि०) मे ओगोताइ मरा, वसतमें बाकी खानजादे भी बाश्किरोकी भूमि होते मगोलिया लौट गये। इसी साल वा-तूने बाश्किर-राजाको नष्ट किया।

(च) युरोप-विजय—१२३८ ई० से १२४० ई० के वसततककी वा-तूकी विजय-यात्रा अभूतपूर्व है। इसी समय उसने वोल्गाके कबीलोको परास्त किया, रूसी नगरोको जीता, काला सागरके मैदानो-को अपने हाथमें किया, कियेफको ध्वस्त किया, और फिर अपने सैनिक दलोको दक्षिणी पोलैंड (रुथे-निया) की ओर भेजा। उस समय रूसकी तरह पोलैंद भी बहुत-से छोटेछोटे राज्योमें बटा हुआ था। मार्च १२४१ ई० में जब जाडोकी बर्फ पिघली, तो मगोलोके सैनिक शिविर कारपेथीय पर्वतमालाके ऊपर लेम्बरमें थे।

जनवरी १२४१ ई० में मगोल गोलेनियामें लूट-मार मचाते पोलैंदकी राजधानी क्राकोके पास पहुचे। १८ मार्चको पोलोको पराजित कर २४ मार्चको मगोल-सेनापति वैदरने क्राकोको जलाया। मगोल फिर सिलेसिया और रतिवरमें ओडर नदीको पार कर दब्रेस्जव नगरके सामने पहुचे। ९ अप्रैलको मगोलोने पोलो और त्युतानिक सरदारो (राजुल हेनरी आदि) की सेनाओको लिग्निट्जके पास वालस्टाट (युद्धक्षेत्र) नामक स्थानमें हराया। लिग्निट्ज, ओत्माखन, वोलातीजको लूटते-जलाते मईमें वह मोरावियामें पहुचे। वहा ओपनके इलाके तथा दूसरे स्थानोका उन्होंने सहार किया। फ्रासके राजा लुईके पास पत्र लिखते हुये इस ध्वस-लीलाका वर्णन एक ईसाई पादरीने इस प्रकार किया है—"जर्मनीके सभी राजुल, राजा तथा पुरोहित एव हगरीके भी लोगोने हाथमें सलीब लेकर तातारोंके खिलाफ अभियान किया। हमारे भाइयोने जो बतलाया है, यदि वह ठीक है, और भगवान्‌की इच्छा-से वह पराजित हो गये, तो तुम्हारे देश (फ्रास) तक कोई ऐसा नही है, जो तातारोंके मुकाबिलेमें खडा हो सके।"

वा-तूके दुश्मनको मग्यार-राजा बेलाने शरण दी थी। मगोलोंके लिये यह भी एक बहाना मिला। चालीस हजार बदी वा-तूकी सेनाके लिये रास्ता बनाते थे। वा-तूकी एक सेना मोलदाविया, कुमा-सिया, ग्रान्सिल्वानियाको नष्ट करते ओरसोवा पहुची, उसने नगरको मलियामेट करदिया। बेलाकी सेनाको १२ मार्चको रुथेनियन दर्रेके पास हार खानी पडी थी। सरबिया होते बोलगारिया में दाखिल हो २५ दिसबरको मगोलोने वहाके ग्रामो-नगरोका सर्वसहार किया। प्लातेन झीलसे होते मगोल क्रोसि-याकी ओर बढ़कर स्पाल्त्रो समुद्रतट पर पहुचे और कतारोको ध्वस करते अलबानियामें जा दाखिल हुये। वहासे मईमें कदनकी सेना बोलगारिया होते लौटकर वा-तूके पास पहुची। उनकी गति कितनी तेज थी, यह इसीमें मालूम होगा, कि वह तीन दिनमें सत्तर मीलकी यात्रा करके पेस्त (बुदापेस्त) नगर पहुच गये।

सुबोदाइ और वा-तू तीन सेनाओंके साथ कारपेथीय पर्वतमालाके भीतरसे दुश्मनके दक्षिणी पक्षकी ओर बढे थे। गलीसियासे हगरीमें घुसकर सुबोदाइकी सेना मलदावियाकी ओर लौट पडी। रास्तेमें जो भी प्रतिरोधी सैनिक-टुकडिया मिली, उनका सफाया करते उसकी सेना पेस्तमें प्रधान सेनासे अप्रैल-के आरभमें—लिग्निट्जके युद्धके जरा-सा ही पहले—आ मिली। इस सेनाको यह पता नही था, कि उत्तरमें क्या हो रहा है। उसने ओडेरके तटपर अवस्थित मगोल-सेनप कैदू और उसके भाइयोंके साथ सबध

* कआन=कगान=खाकान=खान-खान=राजाधिराज (सम्राट्)

स्थापित करनेके लिये एक सेना भेजी। उगोलिनके विशपकी छोटी सेना हारी, और विशप अपने तीन साथियोंके साथ जान बचाकर किसी तरह निकल भागा। मगोलोंका अभियान प्रलयकी ध्वस-लीला जैसा था, जिससे सारे युरोपमें उनका आतंक मचा हुआ था। सभी मुकाबिला करनेकी तैयारी कर रहे थे। सुदूर-फ्रांस भी सैनिक सहायतायें भेज रहा था। हुंगरीके राजा बेला चतुर्थने एक लाखकी सेना तैयार की थी, जिसमें मगयार (हुंगेरियन), क्रोत, जर्मन तथा फ्रेंच सैनिक भी शामिल थे। मगोलोंकी सैनिक चाल वही थी, जो कि उनके पूर्वज हूणोंकी, और उससे वे अक्सर सफल होते रहे, शत्रु-सेना-के सामने मगोल पीछे हटने लगते। जब शत्रु इसे पराजय समझकर बेखटके खदेड़ना शुरू करते, तो मगोल चारो तरफसे उन्हे घेर लेते। निर्णायक युद्ध-स्थल के एक तरफ सायो नदी थी, दूसरी तरफ द्राक्षालताओंसे ढका तोकय पर्वत, तीसरी तरफ लोमनिद्जके घने जंगलो से ढके बड़े पहाड़। सूर्योदयके समय बा-तूकी सेना पुलकी ओर आगे बढ़ी और उसने वहाकी रक्षक सेना पर एकाएक आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया। अब मगोलोंकी प्रधान सेना पुलके पार दौड़ी। शत्रु-सेनामें भगदड़ मच गई। युद्ध बड़े जोरका हुआ और दोपहरके करीब ही उसकी समाप्ति हो सकी। इसी समय सुबोताई बेलाकी सेनाके पीछे पहुचा। हुंगेरियन जान लेकर भगे और मगोल उनका पीछा करने लगे। दो दिनके रास्तेतक सड़को-पर युरोपियनोंकी लाशें पड़ी हुई थी—चालीस हजार आदमी मारे गये थे। बेलाका भाग्य था, जो कि अपने तेज दौड़नेवाले घोड़ेकी सहायतासे वह बच निकला। वह दुनाइ (दन्यूब) के किनारे-किनारे छिपता भागता रहा और मगोल उसकी तलाशमें फिरते रहे। अन्तमें बेला कारपेथीय पर्वतमालामें पहुचा। मगोलोंने मग्यार राजधानी पेस्तमें आग लगा दी। वह बढ़ते हुये आस्ट्रियामें न्यूस्टाट तक पहुचे। भगोड़े जर्मनों और बोहेमियो (चेको) को एक ओर छोड़ते वह दक्षिणकी ओर मुड़ अद्रियातिक समुद्रतटपर पहुचे और केवल रगूसा को छोड़कर समुद्रतटके सभी नगरोको उन्होने लूटा-जलाया। दो महीनेके भीतर मगोल घोड़ोने युरोपको एलबा नदीके उद्गमसे अद्रियातिकके समुद्रतटतक रौंद डाला। उन्होंने तीन महासेनाओ, एक दर्जन छोटी सेनाओको हराया और ओलमुत्ज छोड़कर इस भूभागके सारे नगरोंको पराजित किया। स्टर्नबर्गके यारोस्लावने अपने बारह हजार सैनिकोंके साथ ओलमुत्जकी बड़ी बहादुरीसे रक्षा की थी। युरोपके तत्कालीन राजा हुंगरीका बेला और फ्रांसका संत लुई दोनोही योग्य थे, लेकिन सुबोदाइ, मङ-गू, कै-दू और बा-तू जैसे महान् सेनापतियोंके सामने उनकी एक भी न चली।

जिस वक्त मगोल दावानलकी तरह युरोपकी ओर बढ़ रहे थे, उसी वक्त कैसर फ्रेडरिक द्वितीय और पोप ग्रेगरी नवम का द्वंद्व चल रहा था। दोनोंने तुरत अपने संघर्षको बंद कर दिया। धर्मयुद्धका प्रचार होने लगा। कैसर नेपल्स और सिसिलीका स्वामी था। वह अल्प्स पर्वतमालाके पारके सभी देशोंपर अधिकार जमाना चाहता था। पोप इसके लिये तैयार नही था। अगस्त १२४० ई० से अप्रैल १२४१ तक—जब कि मगोल युरोपको रौंद रहे थे—फ्रेडरिकने महंतराज (पोप) के नगर फायनजाको घेर रक्खा था, जिसे अंतमें उसने अपने हाथमे कर लिया। दूसरी ओर पोपने २० मार्च १२३९ ई० को फ्रेड्रिकको धर्म-बहिष्कृत कर दिया। साल भर बाद फ्रेड्रिकके विरुद्ध पोपने धर्मयुद्धकी घोषणा की और जर्मन राजुलोंके एक समुदायको फ्रेड्रिकके खिलाफ लड़नेके लिये तैयार किया। युरोपकी यह कमजोरी बतला रही थी कि बा-तूके संकल्प करनेकी देर थी, फिर इंग्लिश-चैनेल तक कोई भी शक्ति उसकी सेनाको रोक नही सकती थी।

मगोल हथियार—साधु कारपीनी दूत बनाकर जिस वक्त मगोलिया भेजा गया, उससे थोड़ा ही पहले मगोलोंकी १२३८-४२ ई० वाली विजय-यात्रा हुई थी। कारपीनी दरबारमें इसीलिये भेजा गया था, कि खाकानसे ईसाइयोकी निर्मम हत्या बंद करनेके लिये प्रार्थना करे। कारपीनीने अपने यात्रा-विवरणमें मगोलोंकी अजेय शक्तिके बारेमें लिखा है—

"कोई भी अकेला राज्य या देश तारतारो (मगोलो) का मुकाबिला नही कर सकता। तारतारोंकी लड़ाई केवल बलकी नही, बल्कि दाव-पेंचकी होती है। युरोपवालोंकी अपेक्षा तारतारोकी संख्या कम है और शारीरिक डीलडौल और शक्तिमें भी वह छोटे है। हमारी सेनाओंको भी तारतारोके नियमके अनुसार शिक्षित करने, और उन्हींके युद्ध-नियमोंको कड़ाईके साथ पालनेकी जरूरत है।

जहा तक सभव हो युद्धक्षेत्र ऐसा चुनना चाहिये, जहा चारो ओरकी चीजे दिखलाई पडती हो। सेनाको एक निकायमें नही लाकर खडा करना चाहिये, बल्कि उसे कई विभागोमें विभक्त करके रखना चाहिये। पता लगानेके लिये चारो तरफ चर भेजने चाहिये। हमारे सेनापतियोको रात-दिन अपनी सेनाओको सजग, सदा हथियारबद तथा युद्धके लिये तैयार रखना चाहिये। तारतार शैतानकी तरह सजग रहते है।

"अगर ईसाई दुनियाके राजा और शासक मगोलोंके बढावको रोकना चाहते है, तो उन्हें एक सयुक्त परिषद् बनाकर एक उद्देश्यके साथ प्रतिरोध करना चाहिये। ईसाई-राजाओको चाहिये, कि वह अपने सिपाहियोको मजबूत धनुषो, लबी कमानो और तोपो से हथियारबद करें। यही हथियार है, जिनसे तारतार लडते है। इनके अतिरिक्त सैनिकोको अच्छे लोहेकी गदाओ अथवा लबे बेंटवाले गडासोको रखना चाहिये। बाणके फौलादी फलोको तारतारोंके ढगसे खूब लाल रहते नमक-मिले पानीमें डुबाकर तैयार करना चाहिये। इस तरह वह कवचके भीतरतक घुस सकते है। हमारे आदमियोंके पास अच्छे शिरस्त्राण तथा कवच होने चाहिये, जिसमें उनकी रक्षा हो सके। घोडोके लिये भी यही बात है। जो इतने हथियारबद नही है, उन्हे पीछेकी पाती में रखना चाहिये।"

आस्ट्रियामें न्यूस्टाटपर पहुचकर मगोलसेना अपनी जन्मभूमि (मगोलिया) से ६ हजार मील दूर पहुची थी, और यहापर भी अजेय साबित हुई।

साधु सेवलरीने मगोलोके हथियारोके बारे में लिखा था—

"उनके कवच भैसके चमडोंके बने होते है, जिनके ऊपर जजीरें खिची रहती है। वह अभेद्य होते है जिसके कारण सैनिकका अग सुरक्षित रहता है। वह अपने सिरपर लोहे या चमडेके शिरस्त्राण पहनते है। टेढी तलवार, धनुष-बाण उनके हथियार है। उनके बाणोंके फल चार अगुल चौडे—हमारे फलोंसे अधिक लबे और लोहे, हड्डी या सीगके बने होते है। उनके दात इतने छोटे होते है, कि वह धनुषकी प्रत्यचाओंके ऊपर नही लग सकते। उनकी ध्वजायें छोटी तथा चमरीके काले या सफेद पूछोकी होती है, जिनके सिरेपर ऊनका गुच्छा रहता है। उनके घोडे छोटे, सुडौल और मेहनती तथा सभी तरहकी कठिनाइयो को सहनेके लिये तैयार होते है। वह बिना रिकाबके सवार हो उन्हें चट्टानो या दीवारोपर हरिनकी तरह कुदा सकते है।"

यह सभी स्वीकार करते है, कि तत्कालीन जगत्में सेना-सबधी इजिनियरी-निपुणता जितनी मगोलोंके पास थी, वैसी उस समय युरोपमें कही नही थी। उनके पाषाण-क्षेपक (कतापुल्त) और बारुदकी तोपें गजब ढाती थी।

जर्मन सीमात नगर लिग्निट्जसे लेकर वोल्गाके किनारे तक शायद ही कोई नगर हो, जो बा-तूकी ध्वस-लीलासे बचा हो। नगर मगोलोकी आखोमें काटेकी तरह चुभते थे। यही नही, कि वहा उनके लिये प्रतिरोधकी सभावना थी, बल्कि स्थिर वासी लोग जिस भूमिको जोतते-बोते थे, वह मगोल सैनिकोको अपने घोडो और पशुओंके चरनेके लिये आवश्यक थी। इसीलिये वह नगरो और बस्तियोको उजाड उन्हे घासका मैदान बना देना चाहते थे। बा-तूका युद्ध मगोलो और युरोपियोका ही नही बल्कि घुमन्तू-पशुपालो और स्थिर बस्तीवाले किसानोंका भी युद्ध था। यदि इसी समय ओगोताइ न मर गया होता और मगोल-सेनापतियोको लौटनेका बुलावा न आता, तो इसमें कोई शक नही, कि युरोपकी चप्पा-चप्पा भूमिको मगोल-सवारोने रौंद डाला होता, सारे नगरोको जला दिया होता। उनकी सफलताका कारण बतलाते हुये एक इतिहासकारने लिखा है—"घुमन्तू जातिया यद्यपि अनियमित सेना है, किंतु उन्हे बहुत आसानीसे गतिशील किया जा सकता है। वह सजग हो तैयार खडी रहती है। जो कुछ उनके पास है, उसे बूढो, स्त्रियो और बच्चोकी रक्षामें छोडकर वह हर समय कूच करनेके लिये तैयार रहते है। ऐसी जातिके लिये युद्ध कोई विशेष घटना नही है। घुमन्तुओंके लिये लबी यात्रायें थोडेसे परिवर्तनके सिवा और कुछ नही हैं। उनके घोडे और रसद सब साथ-साथ होती है।"

मगोल आखिरतक घुमतू रहे। जहा यह उनकी शक्तिका एक बहुत भारी कारण था, वहा यही उनकी कमजोरीका भी मुख्य कारण था। रूसी इतिहासकार करमाजिन (१७६५–१८२६ ई०) के अनुसार—"अगर वे कृषिजीवी बन गये होते, तो शायद रूस अभी भी मगोलोंके अधीन होता।"

वा-तूने विजय-यात्रासे लौटकर मास्कोके महाराजुल यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्रको सारे रूसी राजुलोका सरदार वना दिया। इसी समयसे मास्कोकी प्रधानता शुरू हुई। दो साल बाद गु-युक कआनके राज्याभिषेकके समय यारोस्लावको मगोलिया भेजा गया, जहासे वह लौट नही सका। इसी महोत्सवमें फ्रासिस्कन साधु जान प्लानो कारपीनी (११८२-१२४६ ई०) भी शामिल हुआ था, जो पोप इन्नोसेंत-द्वारा मगोल-सम्राट्को ईसाई वनानेके लिये भी भेजा गया था। वह १६ अप्रैल १२८४ ई० को ल्योन्ससे चला और जर्मनी, वोहीमिया, व्रेस्लो, क्राको, वोल्दमीर (वोल्हूनिया), कियेफ (४ फवरी १२८६ ई०), तारतार-राज्य कानियेफ, ओरेन्जा (द्नियेपर दक्षिणतट), दोन, वोल्गा (वातूसराय), यायिक (उराल नदी), कोमानियाकी पूर्वी सीमा, कग-ली, दुश, यानीकेन्त (सिरतट), तलस (तरस), इमिल, ओगोताइ-शिविर, नेमन (२८ जून) होते राजधानी कराकोरममे पहुचा। कारपीनीने अपनी यात्राका जो वणन किया है, उससे उसके रास्तेके देशोका अच्छा परिचय मिलता है। वा-तूके दरवारमें उसने पत्नियोसहित खानको तख्तपर वैठे देखा। खानजादे (राजकुमार) वेंचोपर वैठे थे, जिनमें पुरुष तरतकी दाहिनी ओर और स्त्रिया बाईं ओर थी। उसके वणनसे यह भी मालूम होता है, कि मुङ्ग-खेके कआन चुने जानेमें वा-तूका खास हाथ था। उस समय छिङ्ग-गिन्-वशका वही सवसे वडा और सम्मानित राजकुमार था, इसलिये उसकी वातको कोई नही काटता था। मुङ्ग-खेने पश्चिमकी दिग्विजय में वा-तूकी वडी सहायता भी की थी। मगोल वा-तूको कितने सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे, यह उसके सायन (भले राजा) के नामसे सिद्ध है।

१२५५ ई० मे मुङ्ग-खेके राज्याभिषेकके समय वा-तू स्वय नही जा सका। उसने अपनी जगह अपने पुत्र सरतकको भेजा था। इसी समय (१२५५ ई०) इतिल (वोल्गा) के तटपर वा-तूका देहान्त हो गया।

३ सरतक वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

वा-तूने अपन ज्येष्ठ पुत्र सरतकको मुङ्ग-खे कआनके सिंहासन-महोत्सवमें भेजा था। वही वा-तूके मरनेकी खवर पा मुङ्ग-खे कआनने उसे सुवण-ओर्दूके खानकी यारलिक (शासनपत्र) प्रदान करके भेजा। लेकिन वह अधिक दिनोतक नही जिया। समकालीन मगोल इतिहास-लेखक रशी-दुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०) के इतिहास 'जामेउत्-तवारीख' के अनुसार वा-तूके मुख्य पुत्र चार थे—सरतक, तुकात, अदगान और उल्कची। सरतक निस्सतान मरा और उसकी जगहपर उसके भाई उलकचीको गद्दी मिली।

४ उलकची वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

कआनके यारलिकके अनुसार वा-तूकी जेठी रानी वोरकचिन खातूनने उलकचीको गद्दीपर वैठाया, लेकिन यह भी जल्दी ही मर गया। अव वा-तूके मनस्वी भाई वेरेकके लिये रास्ता साफ था।

५ वेरेक (वरका) जू-छि-पुत्र (१२५५-६५ ई०)

वेरेक अपने भाईके समान ही दृढ़ योद्धा और शासक था। वह भाईके मरनेके साल ही पश्चिममें फैले विशाल मगोल-राज्यका खान वना। वेरेकने भाईके समयमें (१२३८ ई०) ही किपचकोकी भूमिमें विजय प्राप्त कर अपनी योग्यताका परिचय दिया था। कुछ इतिहासकाराके अनुसार वेरेक प्रथम मगोल राजकुमार था, जिसने इस्लाम-धम कवूल किया, यद्यपि उसका यह अथ नही, कि उसके समय हीसे सुवण-ओर्दूके खानोमें इस्लामकी परपरा चल गई। इसके लिये अभी आठवें उत्तराधिकारी उज्वेक (१३१३–४० ई०) के आनेकी प्रतीक्षा थी, जो वा-तूकी पाचवी पीढ़ीमें पैदा हुआ था। 'शजरतुल्-अतराक' के अनुसार वरका खान मुसल्मान था। कुछ इतिहासोमें लिखा है, कि वह मुसलमान-मासे पैदा हुआ था। दूसरी परपरा कहती है—पैदा होनेपर वहुत चाहा, कि वरकाकी माका दूध उसे दें, लेकिन उसने तवतक दूध नही पिया, जवतक कि एक मुसलमान औरतको उसे दूध पिलानेके लिये रख नही दिया गया। वडा होनेपर वह अपने भाईके हुकुमके अनुसार जव चारो ओर घूमता सैर कर रहा था, उसी समय सयोगसे वह इस्लामके पुण्यतीर्थ वुखारामें पहुचा, जहा उसे एक मुस्लिम सतसे शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य

मिला, कहते हैं, "वह महान् संत (शेख) बुजुरगवार हजरत शेख सैफुद्दीन बाखरजी थे, जोकि महान् हजरत शेख नजमुद्दीन कुबराके उत्तराधिकारी थे । महान् शेखके हुकुमसे वह दश्ते-किपचकमे हाजी तुरकानकी ओर गया, जहा ईतल नदीके तटपर खुलाकू खान (तुलिखान-पुत्र) की विशाल सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। दरवेशोंके पुण्य-प्रतापसे खुलाकूको हार खानी पड़ी ।*

दूसरी कहावत—जिसमें सच्चाईका अंश ज्यादा मालूम होता है—जुजजानी द्वारा उद्धृत है, जिसके अनुसार बेरेकके पैदा होनेपर उसके बाप जू-ठिने—"इस लड़केको मैं मुसलमान बनाऊंगा" यह निश्चय कर उसके लिये मुसलमान धाय रक्खी खोजदमें उसे इमामों और मौलवियोंसे कुरान पढ़वाया। बा-तूका बेरेकके ऊपर विशेष प्रेम था। भाईके युद्धोंमें उसके तीस हजार मुसलमान सवार घोड़ोंकी पीठपर नमाजकी आसनी (जायनमाज) बांधे हुये चलते थे। वहा शरीयतकी सख्त पाबन्दी होती थी। मुसलमानों में कोई शराब नही पीता था। जुजजानी यद्यपि मूलतः ईरानका रहनेवाला था, लेकिन वह गुलामोंके शासनके अंतमें नासिरुद्दीन मोहम्मदशाहके समय (१२४०-६५ ई०) दिल्ली आकर रहने लगा था। उसने अपने इतिहासमें बेरेकके सबधमें तत्कालीन कथाका उल्लेख करते हुये लिखा है—"६५७ हि० (१२५८ ई०) में समरकंदसे नूरुद्दीन सूफीके महन्त जलालुद्दीन सूफीके पुत्र अशरफउद्दीन दिल्लीमें व्यापारके लिये आये। वह अपने साथ इस्लामके बादशाह नासिरुद्दीनके लिये बेरेककी भेंट भी लाये थे। वह बेरेकके पक्के मुसलमान बादशाह होनेके बारेमें बातें करते थे, जिनमेंसे दोको जुजजानीने अपने ग्रंथ "तबकाते-नासिरी" में उद्धृत किया है—(१) समरकंदमें किसी ईसाईका बेटा मुसलमान हो गया। बापने हाकिमोंके दरबारमें फरियाद की, कि मेरे बेटेको बहकाकर मुसलमान बनाया गया है। स्थानीय हाकिमने भी उसका पक्ष लिया। जब इसका पता बेरेकको लगा, तो उसने मुल्लोंके पक्षमें निर्णय दिया। यह याद ही है, कि मगोल-शासक धर्मके बारेमें बिलकुल तटस्थ रहते थे, जिसका बहुत कुछ पालन उनके अधीन मुसलमान अफसरोंको भी करना पड़ता था। गद्दीपर बैठनेके तीसरे सालकी यह बात बेरेकके कट्टर मुसलमान होनेका पता देती है। हो सकता है, इसीलिये उसने हिंदुस्तानके इस्लामी बादशाहके साथ संबंध स्थापित करना चाहा। (२) दूसरी बात—बा-तूके बाद सरतक गद्दीपर बैठा। वह अपने मुसलमान चाचा (बेरेक) को उसके अनुरूप सम्मान नही प्रदान करता था। इसके बारेमें कहनेपर सरतकने जवाब दिया—"तू मुसलमान है, और मैं ईसाई-धर्मका माननेवाला हू। मेरे लिये मुसलमानका मुह देखना भी ठीक नही है।" बेरेकने इस अपमानसे दुखित हो रोते-रोते रातभर अल्लाहसे प्रार्थना की और अल्लाहने दुआ सुनकर सरतकको मार दिया। जुजजानीके अनुसार बेरेकका राज्य किपचको, सकसिनो, बोल्गारो शकलाओ, रूसियोंकी भूमि तथा रूमके उत्तर-पूरबतक फैला हुआ था—जेन्द और ख्वारेज्म उसके राज्यमें थे।

बेरेकके गद्दीपर बैठनेके समय नवोग्राद (० गोरद) गणराज्यके महाराजुल अलक्सान्द्र नेव्स्की तथा उसके भाई सुज्दलके राजुल आन्द्रेइने बधाई और भेंट भेजी थी। बा-तूकी पश्चिमकी विजय-यात्राको फिरसे जारी करनेका बेरेकको ख्याल आया, लेकिन पीछे खुलाकू (ईरान) खानके साथ झगड़ा हो जानेसे वह वहीं उलझा रहा और पश्चिमी युरोपको मगोल-खतरेसे मुक्ति मिली। तो भी १२५९ ई० मे बेरेकने अपने सेनापतियों बुरुन्दे, नोगाई और तुतुबुगाको दिग्विजयके लिये भेजा था। वह लुब्लिन होते विस्तुला नदी पार कर २ फर्वरी १२५९ ई० को सेन्दोमीर पहुचे। और जगहोंमें लूट-मार और अधीनता स्वीकार करानेमें कोई दिक्कत नही हुई, लेकिन सेन्दोमीरवालोंने प्रतिरोध किया, जिसपर मगोलोंने वहाके लोगोंका कत्ले-आम कर दिया। पोलैंडकी तत्कालीन राजधानी क्राको फिर नष्ट हुई। मगोल-सेना ओप्पेलनतक पहुची, जहासे लूटके साथ भारी सख्यामें ईसाई दासोंको लिये लौट गई। बेरेककी दो राजधानिया थीं—बा-तूसराय और बुल्गारी, जिनमें बुल्गारी बुल्गारो (बोल्गारो) की पुरानी राजधानी वर्तमान कजानके आसपास बोल्गा और कामा नदियोंके सगमपर अवस्थित थी।

खुलाकूसे सघर्ष—"तारीख-शेखेउवेस" (१३५६-७४ ई०) के अनुसार "उस समयके रवाजके अनुसार बेरेकके कितने ही अमीर, खानजादे (राजकुमार) और सैनिक गर्मियोंको आजुर-बाइजानमें

* "स्योनिक मतेरियलोफ भ्रत्नोदचेरस्या क इस्तोरी जोल्तोइ ओर्दी" पृष्ठ—२६४-६५।

बा-तूने विजय-यात्रासे लौटकर मास्कोके महाराजुल यारोस्लाव न्येवोल्द पुत्रका सारे रूसी राजुलोंका सरदार बना दिया। इसी समयसे मास्कोकी प्रधानता शुरू हुई। दो साल बाद गु-युक् कआनके राज्याभिषेकके समय यारोस्लावको मगोलिया भेजा गया, जहांसे वह लौट नही सका। इसी महोत्सवमें फ्रांसिस्कन साधु जान प्लानो कारपीनी (११८२-१२८६ ई०) भी शामिल हुआ था, जो पोप इन्नोसत-द्वारा मगोल-सम्राट्को ईसाई बनानेके लिये भी भेजा गया था। वह १६ अप्रैल १२८८ ई० को ल्योन्ससे चला और जर्मनी, बोहीमिया, ब्रेस्लो, क्राको, वोल्दमीर (वोल्हूनिया), कियेफ (८ फर्वरी १२८६ ई०), तारतार-राज्य कानियेफ, ओरेजा (द्नियेपर दक्षिणतट), दोन, वोल्गा (बातूसराय), यायिक (उराल-नदी), कोमानियाकी पूर्वी सीमा, कराक्री, दुश, यानीकेन्त (सिर्तट), तलस (तरस), इमिल, ओगोताइ-शिविर, नेमन (२८ जून) होते राजधानी कराकोरममें पहुंचा। कारपीनीने अपनी यात्राका जो वर्णन किया है, उससे उसके रास्तेके देशोंका अच्छा परिचय मिलता है। बा-तूके दरबारमें उसने पत्नियोसहित खानको तख्तपर बैठे देखा। खानजादे (राजकुमार) बेंचोंपर बैठे थे, जिनमें पुरुष तख्तकी दाहिनी ओर और स्त्रियां बाई ओर थीं। उसके वर्णनसे यह भी मालूम होता है, कि मुड्-खेके कआन चुने जानेमें बा-तूका खास हाथ था। उस समय छिङ्-गिन्-वंशका वही सबसे बडा और सम्मानित राजकुमार था, इसलिये उसकी बातको कोई नही काटता था। मुड्-खेने पश्चिमकी दिग्विजय में बा-तूकी बडी सहायता भी की थी। मगोल बा-तूको कितने सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे, यह उसके सायन (भले राजा) के नामसे सिद्ध है।

१२५५ ई० में मुङ-खेके राज्याभिषेकके समय बा-तू स्वयं नही जा सका। उसने अपनी जगह अपने पुत्र सरतकको भेजा था। इसी समय (१२५५ ई०) इतिल (वोल्गा) के तटपर बा-तूका देहान्त हो गया।

३ सरतक बा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

बा-तूने अपने ज्येष्ठ पुत्र सरतकको मुङ-खे कआनके सिंहासन-महोत्सवमें भेजा था। वहीं बा-तूके मरनेकी खबर पा मुङ-खे कआनने उसे सुवर्ण-ओर्दूके खानकी यारलिक (शासनपत्र) प्रदान करके भेजा। लेकिन वह अधिक दिनोंतक नहीं जिया। समकालीन मगोल इतिहास-लेखक रशी-दुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०) के इतिहास 'जामेउत्-तवारीख' के अनुसार बा-तूके मुख्य पुत्र चार थे—सरतक, तुकात, अदगान और उल्कची। सरतक निस्सतान मरा और उसकी जगहपर उसके भाई उलकचीको गद्दी मिली।

४ उलकची बा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

कआनके यारलिकके अनुसार बा-तूकी जेठी रानी बोरकचिन खातूनने उल्कचीको गद्दीपर बैठाया, लेकिन यह भी जल्दी ही मर गया। अब बा-तूके मनस्वी भाई बेरेकके लिये रास्ता साफ था।

५ बेरेक (बरका) जू-छि-पुत्र (१२५५-६५ ई०)

बेरेक अपने भाईके समान ही दृढ़ योद्धा और शासक था। वह भाईके मरनेके साल ही पश्चिममें फैले विशाल मगोल-राज्यका खान बना। बेरेकने भाईके समयमें (१२३८ ई०) ही किपचकोंकी भूमिमें विजय प्राप्त कर अपनी योग्यताका परिचय दिया था। कुछ इतिहासकारोंके अनुसार बेरेक प्रथम मगोल राजकुमार था, जिसने इस्लाम-धर्म कबूल किया, यद्यपि उसका यह अर्थ नही, कि उसके समय हीसे सुवर्ण-ओर्दूके खानोंमें इस्लामकी परंपरा चल गई। इसके लिये अभी आठवें उत्तराधिकारी उज्बेक (१३१३–४० ई०) के आनेकी प्रतीक्षा थी, जो कि बा-तूकी पांचवी पीढ़ीमें पैदा हुआ था। 'शज्रतुल्-अतराक' के अनुसार बरका खान मुसलमान था। कुछ इतिहासोंमें लिखा है, कि वह मुसलमान-मांसे पैदा हुआ था। दूसरी परंपरा कहती है—पैदा होनेपर बहुत चाहा, कि बरकाकी मांका दूध उसे दें, लेकिन उसने तबतक दूध नहीं पिया, जबतक कि एक मुसलमान औरतको उसे दूध पिलानेके लिये रख नहीं दिया गया। बड़ा होनेपर वह अपने भाईके हुकुमके अनुसार जब चारो ओर घूमता सैर कर रहा था, उसी समय सयोगसे वह इस्लामके पुण्यतीर्थ बुखारामें पहुंचा, जहां उसे एक मुस्लिम सतसे शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य

मिला, कहते है, "वह महान् सत (शेख) बुजुरगवार हजरत शेख सैफुद्दीन बाखरजी थे, जोकि महान् हजरत शेख नजमुद्दीन कुबराके उत्तराधिकारी थे । महान् शेखके हुकुमसे वह दश्त-किपचकमें हाजी तुरकानकी ओर गया, जहा ईतल नदीके तटपर खुलाकू खान (तुलिखान-पुत्र) की विशाल सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ । दरवेशोंके पुण्य-प्रतापसे खुलाकूको हार खानी पडी ।"

दूसरी कहावत—जिसमें सच्चाईका अश ज्यादा मालूम होता है—जुजजानी द्वारा उद्धृत है, जिसके अनुसार बेरेकके पैदा होनेपर उसके बाप जू-छिने—"इस लडकेको मैं मुसलमान बनाऊगा" यह निश्चय कर उसके लिये मुसलमान धाय रक्खी खोजदमे उसे इमामो और मौलवियोसे कुरान पढवाया । बा-तूका बेरेकके ऊपर विशेष प्रेम था । भाईके युद्धोमें उसके तीस हजार मुसलमान सवार घोडोकी पीठपर नमाजकी आसनी (जायनमाज) बाधे हुये चलते थे । वहा शरीयतकी सख्त पाबन्दी होती थी । मुसलमानो में कोई शराब नही पीता था । जुजजानी यद्यपि मूलत ईरानका रहनेवाला था, लेकिन वह गुलामोंके शासनके अतमें नासिरुद्दीन मोहम्मदशाहके समय (१२४०-६५ ई०) दिल्ली आकर रहने लगा था । उसने अपने इतिहासमें बेरेकके सबधमें तत्कालीन कथाका उल्लेख करते हुये लिखा है—"६५७ हि० (१२५८ ई०) में समरकदसे नूरुद्दीन सूफीके महन्त जलालुद्दीन सूफीके पुत्र अशरफउद्दीन दिल्लीमें व्यापारके लिये आये । वह अपने साथ इस्लामके बादशाह नासिरुद्दीनके लिये बेरेकाकी भेंट भी लाये थे । वह बेरेकके पक्के मुसलमान बादशाह होनेके बारेमें बातें करते थे, जिनमेंसे दोको जुजजानीने अपने ग्रथ "तबकाते-नासिरी" में उद्धृत किया है—(१) समरकदमें किसी ईसाईका बेटा मुसलमान हो गया । बापने हाकिमोंके दरबारमें फरियाद की, कि मेरे बेटेको बहकाकर मुसलमान बनाया गया है । स्थानीय हाकिमने भी उसका पक्ष लिया । जब इसका पता बेरेकको लगा, तो उसने मुल्लोके पक्षमे निर्णय दिया । यह याद ही है, कि मगोल-शासक धर्मके बारेमें बिलकुल तटस्थ रहते थे, जिसका बहुत कुछ पालन उनके अधीन मुसलमान अफसरोको भी करना पडता था । गद्दीपर बैठनेके तीसरे सालकी यह बात बेरेकके कट्टर मुसलमान होनेका पता देती है । हो सकता है, इसीलिये उसने हिंदुस्तानके इस्लामी बादशाहके साथ सबध स्थापित करना चाहा ।* (२) दूसरी बात—बा-तूके बाद सरतक गद्दीपर बैठा । वह अपने मुसलमान चाचा (बेरेक) को उसके अनुरूप सम्मान नही प्रदान करता था । इसके बारेमें कहनेपर सरतकने जवाब दिया—"तू मुसलमान है, और मैं ईसाई-धर्मका माननेवाला हू । मेरे लिये मुसलमानका मुह देखना भी ठीक नही है ।" बेरेकने इस अपमानसे दु खित हो रोते-रोते रातभर अल्लाहसे प्रार्थना की और अल्लाहने दुआ सुनकर सरतकको मार दिया । जुजजानीके अनुसार बेरेकका राज्य किपचको, सकसिनो, बोल्गारो शकलाओ, रूसियोकी भूमि तथा रूमके उत्तर-पूरबतक फैला हुआ था—जेन्द और ख्वारेज्म उसके राज्यमें थे ।

बेरेकके गद्दीपर बैठनेके समय नवोग्राद (० गोरद) गणराज्यके महाराजुल अलक्सान्द्र नेव्स्की तथा उसके भाई सुज्दलके राजुल आन्द्रेइने बधाई और भेंट भेजी थी । बा-तूकी पश्चिमकी विजय-यात्राको फिरसे जारी करनेका बेरेकको ख्याल आया, लेकिन पीछे खुलाकू (ईरान) खानके साथ झगडा हो जाने-से वह वही उलझा रहा और पश्चिमी युरोपको मगोल-खतरेसे मुक्ति मिली । तो भी १२५९ ई० में बेरेकने अपने सेनापतियों बुरुन्दे, नोगाई और तुतुबुगाको दिग्विजयके लिये भेजा था । वह लुब्लिन होते विस्तुला नदी पार कर २ फर्वरी १२५९ ई० को सेन्दोमीर पहुचे । और जगहोमें लूट-मार और अधीनता स्वीकार करानेमें कोई दिक्कत नही हुई, लेकिन सेन्दोमीरवालोने प्रतिरोध किया, जिसपर मगोलोने वहाके लोगोका कत्ले-आम कर दिया । पोलेंडकी तत्कालीन राजधानी क्राको फिर नष्ट हुई । मगोल-सेना ओप्पेलनतक पहुची, जहासे लूटके साथ भारी सख्यामें ईसाई दासोको लिये लौट गई । बेरेककी दो राजधानिया थी—बा-तूसराय और बुलगारी, जिनमें बुल्गारी बुल्गारो (वोल्गारो) की पुरानी राजधानी वर्तमान कजानके आसपास वोल्गा और कामा नदियोंके सगमपर अवस्थित थी ।

खुलाकूसे सघर्ष—"तारीख-शेखेउवेस" (१३५६-७८ ई०) के अनुसार "उस समयके रवाजके अनुसार बेरेकके कितने ही अमीर, खानजादे (राजकुमार) और सैनिक गर्मियोको आजुर-बाइजानमें

* "स्वोनिक मतेरियलोफ अत्नोस्यश्चिख्स्या क इस्तोरी ओल्तोइ ओर्दी" पृष्ठ—२६४-६५ ।

विताया करते थे। इलखान (हुलाकू) भी जाडोमें चगातू और गर्मियोमे अलदकम रहता था। सराय-बेरेकसे मुहम्मदाबाद (अर्रान) होते गुश्तास्क तक वह अरावो (गाडियो) पर आते।" आजुर-बाइजान आजकी तरह उस समय भी दो राज्यो मे बटा था—उत्तरी भाग सुवर्ण-ओर्दूके हाथमें था और दक्षिणी भाग इलखान (हुलाकू-वश) के हाथमे। मगोल ओर्दू अपने-अपने पशुओके साथ चरवाहीके लिये सारी भूमिमे बिखरा रहता, उसका जाडा और गर्मी वितानेका अर्थ, केवल एक जगहपर रहकर मनोविनोद करना नही था। झगडेके लिये वहा कोई भी कारण पैदा होना आसान था। वेरेकके भाई वुआल (बोवाल) के पुत्र तुतार (ततार)ने कुछ गुस्ताखी की, जिसके लिये उसे हुलाकूके पास लाया गया। हुलाकूने उसे उसके चचा—वेरेक (वरका) के पास भेज दिया। वेरेकने फिर उसे हुलाकूके पास कान मलनेके लिये भेजा। उसे यह ख्याल नही था, कि भतीजेको हुलाकू मौतका दण्ड देगा, लेकिन हुलाकूसे सबध कुछ पहले ही खराब हो चुका था। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरोने कुछ छेड-छाड की, और हुलाकूको उन्हे दड देनेके लिये सेना भेजनी पडी थी। अमीर हारे। उनमें से अमीर निकुदेरके अधीन कुछ मगोल-सेना खुरा-सानके रास्ते भागी। उसने गजनी और विनिकके पहाडोको लेते मुलतान और लाहौरतक अपना अधिकार जमाया। कुमार ततारके मारे जानेके बाद अब दोनो वशोमें शत्रुताकी आग जोरसे भडक उठी। वेरेक इस्लामका बादशाह था और खुविले खानका भाई हुलाकू काफिर। वेरेकने उसके ऊपर इल्जाम लगाया—[1] "उस (हुलाकू) ने मुसलमान नगरोको नष्ट किया, इस्लामी वशोको खतम किया, अकारण ही खिलाफतका जड-मूलसे उच्छेद किया।" भतीजेका बदला लेनेके लिये वेरेकने ततारके पुत्र नोगाइको तीन तुमान[2] (तीस हजार) सेना देकर बापके खूनका बदला लेनेके लिये भेजा। वह शिरवान पहुचा। खबर पाकर हुलाकूने सारे ईरानसे सेना जमा कर तीन तुमान सेना शिरामून नोयन, अवताइ नोयन और समगरके नेतृत्वमें भेजी। २० अगस्त १२६२ ई० को स्वय हुलाकूने भी अलतगासे प्रस्थान किया। अक्तूबर-नवम्बर १२६२ ई० (जुलहिजा ६६० हि०) मे दोनो ओरकी भारी लडाई हुई। अवताइ नोयनने शिरवानसे एक फरसख (कोस) पर सुलतानचुका नदीके किनारे नोगाइको बुरी तरहसे हराया। नोगाइ जान लेकर भागा। इलखानकी सेनाने २० नवम्बर १२६२ ई० (६ मुहर्रम ६६० हि०) आगे प्रस्थान किया। दरबन्दके घाटेमें—जहा काकेशस पहाड तथा कास्पियन समुद्र एक दूसरेके बिल्कुल नजदीक आ जाते हैं—फिर जमकर जबर्दस्त लडाई हुई। वेरेककी सेना फिर हारी। हुलाकूकी सेनाने दरबन्द पार हो किपचक भूमिको लूटा-बरबाद किया। तो भी सुवर्ण-ओर्दूके खानकी शक्ति अभी क्षीण नही हुई थी। वह सेना एकत्रित करते अवसर ढूढ़ता रहा। इलखानकी सेना लौटते हुये तेरक नदीके तटपर पहुची। जाडोंके कारण नदीका पानी जम गया था। १३ जनवरी १२६३ ई० को सवेरेसे शाम-तक इलखानी सेना उसपरसे पार होती रही। यकायक नदीकी जमी बर्फ टूट गई, जिससे बहुत-से लोग पानीमें डूब मरे। हुलाकूकी सेना सुवर्ण-ओर्दू सैनिकोकी मार खाती पीछे हटी। इसी समय २२ अप्रैल १२६३ को हुलाकू युद्धमें घायल हो गया, जिससे ८ फर्वरी १२६४ ई० को वह मराग-जगातमें मर गया। लेकिन अब बापके कामको उसके योग्य बेटे अबका खान (आरिक बूगाखान) ने अपने हाथमे ले लिया।

१९ जुलाई १२६५ ई० में अबकाखानने राजकुमार यशमूतके नेतृत्वमें एक बडी सेना शिरवानकी ओर भेजी। खान स्वय जाडोमें माजन्दरानमें रहा। उधर उत्तरसे राजकुमार नोगाइ भी सेना ले शिरवान-की ओर चलकर अक्सू नदीके तटपर पहुचा। यशमूत कुरा नदी पार हो गया। १४ नवम्बर १२६५ ई० को दोनो सेनाओमें लडाई हुई, जिसमें तुगाचारका बाप कायर बूगा मारा गया। सेनापति नोगाइ भी सिरमें आहत हुआ। सुवर्ण-ओर्दूकी सेना तितर-बितर हो शिरवानकी ओर लौटी। अब वेरेक स्वय तीस तुमान[2] (तीन लाख) सेनाके साथ आया और दक्षिणसे अबकाखान भी मुकाबिलेके लिये चला। दोनो सेनाये कुरा नदीके दोनो तटोपर आमने-सामने पक्तिबद्ध हुई। १४ दिनतक यही हालत रही। वेरेक नदी पार होनेका कोई अवसर न देख ऊपर पहाडमें कही पार होनेके ख्यालसे नदीके किनारे-किनारे तिफलिसकी ओर चला, लेकिन असफल-मनोरथ हो रास्तेमें ही उदरशूल (कुल्ज) की बीमारीसे मर

---

१ "जामे-उत्-तवारीख" (रशीदुद्दीन) २ १ तुमान = १० हजार।

गया। दोनो प्रतिद्वद्वी वेरेक और खुलाकू मर गये, लेकिन उनकी दुश्मनी खतम नही हुई। वेरेककी लाशको सदूकमें वदकर वा-तूसरायमें ले जा भाईके पास ही दफन कर दिया गया।

वेरेककी सेना खुलाकूसे उलझनेके पहले इस्ताम्बूल (कन्स्तन्तिनोपोल) तककी भी विजय-यात्रा कर चुकी थी, जबकि वहाके राजाने क्रिम नगरको सुवण-ओर्दूके खाकानको प्रदान किया था।

वेरेककी मृत्युके वाद फिर वा-तूकी सतानोमें गद्दी चली गई और तोगोन-पुत्र मङ-गू तेमूर खान वना।

६ मङ-गू तेमूर, मुङ-खे तेमूर (१२६५-८० ई०)

खुविले खाकानने वेरेकके वाद मुङ-खे तेमूरको खानपदकी यारलिक भेजी। यद्यपि उस समय मङ-गू तेमूर खुविलेका कृपापात्र था, लेकिन पीछे उसके विरोधी ओगोनाइ-वशी कैदू खानका समर्थक वन गया, जिससे खुविले उसका विरोधी हो गया। रूसके राजुल मङ-गू तेमूरके आज्ञाकारी सामत थे। सुवण-ओर्दू की राजधानी सराय (सराय चिक) में युरोपीय राजा और राजकुमार भी भेट लेकर कोर्निस वजानेके लिये आते थे। अव मगोल-वश सभ्यता और सस्कृतिका प्रतीक समझा जाता था। रूसके राजुल और महाराजुल मगोल पोशाक और दरवारी रीति-रवाजोको अपने लिये आदर्श मानते थे। इस आदश का अनुगमन १८वीं सदीके आरभतक किया जाता रहा, जब कि प्रथम पीतरने इन पुराने तरीकोको तुच्छ समझ रूसका युरोपीकरण शुरू किया। मङ-गू तेमूरके १५ सालके शासनमे सुवण-ओर्दूकी शक्ति और राज्यविस्तारमे कमी नही हुई। हा, खुलाकू-पुत्र अवकाखानके साथ चलते झगडेके कारण वह कोई नया काम नही कर सका। मङ-गू तेमूर अपने न्याय और वुद्धिमानीके लिये प्रसिद्ध था, जिसके लिये ही उसे लोगोने केलेकखानका नाम दे रक्खा था।

७ तुदा-मङगू तोगनपुत्र (१२८०-८४ ?)

तुदा-मङ्गू तुकूकान (तोगोन) का तृतीय पुत्र तथा मङ-गू तेमूरका भाई था। इसकी रानी तुरे कुतुलुक और दादी वा-तूकी प्रभावशाली रानी वोरकचीन दोनो—अलची तातार कवीलेकी थी। तुदा-मङ्ग-गू निर्बल शासक था। जिससे लाभ उठाकर मङ्ग-गू तेमूरके पुत्रो—अलगू और तुगरल एव तोगनके ज्येष्ठ पुत्र तरवू (दरतू) के पुत्रो कुनचोग और तुला वुकाने मिलकर खानको पागल कहकर उसे गद्दीसे उतार पाच सालतक सम्मिलित राज्य किया।

यस्सू-मङ्ग-गू (–१२८९ ई०)—"शजरतुल-अतराक" ने यस्सू-मङ-गूको तुदा-मङ्ग-गूका उत्तराधिकारी कहते—"यस्सू मुङ्ग-गू-खान विन-तोगान विन-वातू-खान विन-जोजी-खान विन-चगिस-खान"—पाचवा खान लिखा है। सुवर्ण-ओर्दूके ये पाच साल ऐसे गृह-कलहके थे, जिसमे जहा-तहा अनेक खान वने हो, यह सभव है। इस अव्यवस्थाका अत तोकतोगूके खान वननेके साथ हुआ।

८ तोगताइ, तोकतोगू, मगूतेमुर-पुत्र (१२८९-१३१३)

सेनापति नोगाइ अपने ओर्दूकी इस दुरवस्थाको चुपचाप देख नही सकता था। अतमें उसकी नजर मङ-गू तेमूरके पुत्र तोकतोगूके ऊपर पडी। तोकतोगूकी मा उलजइ खातून केलमिश अकाखातूनकी पोती या नतिनी थी। अराजकताके समय राजकुमारोकी हत्या आम वात थी, जिसके डरके मारे तोकतोगू भाग गया। वेरेकचरके पुत्र विलिकचीने उसकी सहायता की। उसने वा-तू और वेरेकके समयके प्रसिद्ध सेनापति नोगाइको वुलवाया। अका (ज्येष्ठ) कहकर तोगताइने वहुत लल्लो-चप्पो करके उसे अपनी ओर कर लिया। नोगाइका ओर्दू उजी (दूनियेपर) की उपत्यकामें रहता था। वही सेना और सेनपोंको एकत्रित कर नोगाइने समझाते हुये कहा, कि मुझे सायन (वा-तू) खानने आज्ञा दी थी, कि उलुस (ओर्दू) को छिन्न-भिन्न होनेसे वचाना। नोगाइको अपने विरुद्ध होते देख तरवू और मङ्ग-गू-तेमूर के पुत्र पितामह नोगाइके साथ हो गये। नोगाइने कहा—अपने झगडेका फैसला उलुसको छिन्न-भिन्न करके नही, वल्कि कूरिल्ताई (महाससद) के निश्चयके अनुसार करो। तोगताइने इसी वीच सेना जमा कर इतिल (वोल्गा) उपत्यका में पहुच राजधानीको ले लिया। लेकिन नोगाइ तोगाताइके हाथमें खेलना

नही चाहता था। तोगताइने उसे बहुत सी भेट-पूजा देकर अपनी ओर मिलानेका असफल प्रयत्न किया, तो भी अभी दोनोका सबध बहुत बिगडा नही था। इसी बीच धमको लेकर दोनोमें भयानक अनबन हो गई।

नोगाइके साथ सघर्ष—तोगताइका ससुर सलजीदइ कुरगान प्रसिद्ध ककुरत कबीलेका पुराना अमीर था। उसकी बीबी केलमिश अकाखातूनकी पुत्री अलजई खातून तोगताइकी प्रभावशाली रानी थी। केलमिश अकाने अपने पुत्र याइलगका व्याह नोगाइकी पुत्री कबकसे करना चाहा। नोगाइने इसे स्वीकार किया और दोनोका व्याह हो गया। व्याहके थोडे ही समय बाद कबक खातून मुसलमान बन गई। उसका पति तथा ससुर-परिवार बौद्ध (उइगुर) था, इसलिये कबकके साथ याइलग और उसके माता-पिता घृणा करने लगे। लडकीने अपने मा-बाप और भाईको इसके बारेमे कहा। नोगाइ बेटीका अपमान नही देख सका और उसने तोगताइसे माग की—यदि मेरे और अपने बीच पिता-पुत्रका सबध कायम रखना चाहता है, तो सलजीदइ करजूको मेरे हाथमें दे दे। तोगताइ अपने ससुरके साथ ऐसा बर्ताव कैसे कर सकता था? उसने समझानेकी कोशिश की—"वह मेरा पिता और सरक्षक रहा है। पुराना अमीर है। कैसे उसे शत्रुके हाथमें दे दू?" नोगाइकी बीबी चबी बडी चतुर स्त्री थी। उसके तीनो पुत्र—जूके, तेके और तूरी—सरकारी सेनाके कुछ हजार आदमियोको बहका कर इतिल (वोल्गा) पार भाग गये। तोगताइने नोगाइसे हजारी सेनाको लौटा देनेके लिये कहा, लेकिन उसने तबतक वैसा करनेसे इन्कार कर दिया, जबतक कि सलजीदइ या उसका पुत्र याइलग उसके पास नही भेज दिया जाता। अब सीधे सघर्ष होना निश्चित हो गया।

तोगताइ नोगाइकी शक्तिको जानता था। उसने उससे भिडनेके लिय अक्तूबर-नवम्बर १२८९ ई० (६९८ हि०) मे उजी (द्नियेपर) के तटपर तीस तुमान (तीन लाख) सेना जमा की। उस साल जाडोमें द्नियेपरकी धार नही जमी, इसलिये सेनाको पार ले जाना सभव नही हो सका। नोगाइ अपनी जगह बैठा रहा। सन् १३०० ई० के वसतमे तोगताइके ओर्दूने तान नदीके तटपर गर्मी बिताई। सीधी लडाई करनेकी जगह खुर्राट सेनापति कल-बल-छलसे काम लेना चाहता था। ऊपरसे उसने खानको कहला भेजा—मै चाहता हू, करिल्ताई बुलाकर फैसला किया जाय। लेकिन, दूसरी ओर धोखा देकर वह तोगताइके ऊपर आक्रमण करना चाहता था। खानको यह पता लगते देर न हुई। उसने जल्दी-जल्दी सेना जमाकर तान-उपत्यकाके बखतियारी (तजीमागी) स्थानपर लडाई की। तोगताइको हारकर सराय की ओर भागना पडा। इसी समय अमीर माजी, सुतान (सुबान) और सगूर तीन अमीर नोगाइका साथ छोड अपने खानके पास चले गये। तोगताइ फिर तैयारी करने लगा। उसने बहुत कालसे दरबदके घट्टपाल रहते आये बलग-पुत्र तमातोकतूको बुला भेजा और उसके नेतृत्वमें एक बडी सेना नोगाइके विरुद्ध भेजी। नोगाइको लडनेकी हिम्मत नही हुई। वह उजी (द्नियेपर) नदीकी ओर लौट गया। क्रिम नगरमें पहुचकर उसने बहुतसे लोगोको दासके रूपमें बेंचनेके लिये बदी बनाया। लोगोने तोगताइके पास सदेश भेजा—"हम इलखान (तोगताइ खान) के सेवक और अनुचर है। यदि स्वामीकी आज्ञा हो, तो हम नोगाइको पकडकर भेज दें।" नोगाइके पुत्रोको इसकी भनक लग गई और उन्होने एक हजार सेना उनके ऊपर भेजी। हजारी सेनापतिने नोगाइके दूसरे पुत्र तेकेको खान बनानेका लोभ देकर धोखा रचा। इसपर तेकेने आक्रमण कर हजारी सेनाको हराया और उसके अमीरका सिर कटवा लिया। नोगाइ दलके भीतरके झगडोकी खबर तोगताइको बराबर मिल रही थी। वह साठ तुमान (६ लाख) सेनाके साथ उजी पार हो तरकू (बरकू?) नदीके तटपर पहुचा, जहापर कि पहले नोगाइका ओर्दू रहा करता था। नोगाइके पास तीस तुमान थे, लेकिन वह स्वय बीमार था। उसने आदमी-द्वारा तोगताइके पास सदेश भेजा—"तेरे सेवक (मैं) ने नही जाना, कि स्वय स्वामी पधारा है। उसकी सरदारी तथा सेना तेरी (इलखानकी) है। सेवक बूढा निर्बल आदमी है। उसने सारे जीवन तेरे पिताकी सेवा की।" ऊपरसे इस तरहकी बाते करते भी नोगाइने अपने पुत्र जूकेको एक बडी सेना ले तरकू नदी पार हो तोगताइपर आक्रमण करनेके लिये कहा। यह मालूम होनेपर तोगताइने भी प्रहार करनेका हुकुम दिया। युद्धमें नोगाइ और उसके पुत्रोकी पूरी तौरसे हार हुई। हजार सवारोंके साथ

नोगाइके पुत्र भागकर केलारो और वाशकिरोमे चले गये । घायल नोगाइ सत्तर सवारोंके साथ भागा जा रहा था, जब कि तोगताइके रूसी सैनिकोने उसे रास्तेमें पकड़ लिया । नोगाइने कह दिया—"मै नोगाइ हू, मुझे तोगताइ खानके पास ले चलो ।" रूसी सैनिक उसे ले चले, लेकिन नोगाइ रास्तेमे ही मर गया ।

विजयके बाद तोगताइ वा-तूसराय लौटा । नोगाइ-पुत्रोको कही त्राण नही दिखाई पड़ा । यह हालत देखकर उसकी मा चबी और तूरीकी मा बाइलकने सलाह दी, कि खानके शरणमे चले चलो । इसमे नाराज होकर पुत्रोने उनको मार डाला ।

नोगाइ केवल एक सफल महासेनापति ही नही था, बल्कि वह कुटिल नीतिका पक्का खिलाड़ी था । शायद धमकी बात बीचमें न आ गई होती, तो बात यहातक न पहुचती । १३वी सदीके अत होते-होते मगोल-सरदार और सैनिक बौद्ध धमको पूरी तौर से अपना चुके थे और इस्लामके प्रति उनका रुख सहानुभूतिका नही था, यद्यपि राजकाजमें अब भी वह तटस्थताका व्यवहार करते थे । वह नही चाहते थे, कि राजवंश और सामतवशमे अरबोका धर्म फैले । यद्यपि सुवर्ण-ओर्दू और खुलाकूके वशमे घोर शत्रुता थी, लेकिन खुलाकूका इस्लामके ऊपर अत्याचार और खलीफा-वंशका उच्छेद करना मगोलोमे अभिमानकी बात समझी जाती थी । वह क्यो पसद करते, कि उनके घरमे ही विभीषण पैदा हो ।

नोगाइने जब तोगताइ खानसे झगड़ा मोल लिया, तो उसने अपने पुराने शत्रु तथा बापके घातक खुलाकू-वशसे भी सहायता लेनेकी कोशिश की । उसने खुलाकूके पुत्र अबका खानके पास अपने पुत्र तुरी तथा पत्नी चूबी (चबी) के साथ अपनी एक लड़कीको भी व्याहके लिये भेज दिया । अबकाने भी तुरीको अपनी कन्या प्रदान की । वह कुछ समयतक ईरानमे रहकर नोगाइके पास लौट आये । झगड़ा और बढ़नेपर नोगाइने ईरानके खान गजन (१२९५-१३०४ ई०) से मदद मागी, लेकिन गजन इसके लिये तैयार नही था । उसने मदद देने हीसे नही इन्कार कर दिया, बल्कि तोगताइको सदेह न हो, इसके लिये जाड़ा अर्रान (दक्षिणी काकेशस) में न बिता बगदादमें बिताया । वह बराबर नोगाइको तोगताइसे मिलकर रहनेके लिये कहता रहा ।

तोगताइने तुलाबुगाका पक्ष लेनेके अपराधमें अपने भाई तुगरलको मरवा दिया था । फिर भाईकी विधवाको अपनी रानी बना तुगरलके बेटे उज्बेकको खतरनाक चेरकासोके देशमें भेज दिया । चौबीस वर्षके सघर्षमय जीवनके बाद उसके हृदयमें पश्चात्ताप होने लगा था । उसने यह बात अपनी रानीको बतला दी और दो बेगोको राजकुमार उज्बेकको बुलानेके लिये भेजा । अभी उज्बेक नही आया था, इसी बीच (९ जुलाई १३१२ ई० *) इतिल (वोल्गा) नदीमें नौका-विहार करते तोगताइ डूबकर मर गया । तोगताई-पुत्र तुगल जानता था, कि उज्बेक अपनी माके प्रभावसे गद्दीका मालिक बन जायगा, इसलिये उसने उसके मारनेका षड्यत्र रचा । उज्बेकको यह बात मालूम हो गई । सरायमे आनेके बाद उसने महलमें घुसकर तुगलको मार डाला ।

९ उज्बेक खान तुगरल-पुत्र (१३१३-४० ई०)

उज्बेकका शासन इसलिये भी महत्त्वपूर्ण है, कि इसके समयसे सुवर्ण-ओर्दू पूरीतौरसे मुसलमान बनने लगा ।

(१) आपसी सघर्ष—उज्बेकके शासनारभके समय जो षड्यत्र हुआ था, उसके बारे मे "तारीख-हैदरी" (हैदर राजी १६११-१८ ई०) के अनुसार तोगताइके बाद अमीरो और नोयनोने बादशाह चुननेके बारेमें एक सभा की, जिसमें वह उज्बेकको गिरफ्तार कर उससे पूछनेवाले थे, कि क्यो तुमने छिड्-गिस्के यस्सकको छोड़कर अरबोके धमको अपनाया । इसी समय एक अमीरने आखसे इशारा किया, और उज्बेक पेशाब-पाखानेका बहाना करके सभासे निकलकर भाग गया । फिर सेना जमाकर लड़कर उसने बीस राजकुमारो और तोगताइके दो पुत्रोका कतल कर १३२२ ई० (७२२ हि०) में अपने राज्यको निष्कटक किया । तबसे जू-छि खानाका उलुस "उज्बेक-उलुस" कहा जाने लगा । आरभिक सहायताओके लिये उज्बेकने कुतुलुक तेमूरको खुरासान बख्श दिया ।

* "जेल-जामे-उत्-तवारीख"—मबूसईद

खानके अपने परिवार तथा अमीरोंके परिवारोंमें अब धमको लेकर झगडा और भी ज्यादा बढ़ चला। नोगाइकी लडकीका मुसलमान होना एक अलग-थलग घटना नही थी। हमे मालूम है, सुवण-ओर्दू और दूसरे मगोल खानोंकी सेनाओंमें भी मगोल-सैनिक दालमें नमकके बराबर थे। सारे मध्य-एसिया और उसके उत्तरके घुमतू तुर्क एक बार अवश्य मगोलोके खिलाफ खूब लडे, किंतु परास्त होनेके बाद वह लुढकती बर्फकी गेंदकी तरह मगोल ओर्दूका अग बनते गये। विजयोंमें उनका पहले हीसे बहुत हाथ था, और उनकी लूटको वह अपना उचित हक समझते थे। तब भी मगोल और अ-मगोलमे अतर रक्खा जाता था, यह हम चीनके बारेमे लिखते वक्त बतला चुके हैं। यद्यपि मगोल खान दूसरोकी लडकिया लेनेमें एतराज नही करते थे, उनके हरम देश-देशकी सुन्दरियोंसे भरे थे, लेकिन वहा भी प्रधानता मगोल रानियोकी ही थी—बापकी ओरसे छिङ्ग-गिस्का रक्त और माकी ओरसे शुद्ध मगोल सामतका रक्त होना आवश्यक समझा जाता था। शक्तिशाली खानो के समय चाहे बहुसख्यक तुर्क सैनिक इस भेदभावको बर्दाश्त करते हो, लेकिन अब परिवर्तित अवस्थामे वह बराबरीका दावा करने लगे थे। समरकद हो या तबरेज, सराय-बातू हो या काशगर, सभी जगह मगोलोकी अलग सत्ता बनाये रखनेकी बराबर कोशिश की गई, किंतु आखिर वह बूद बनकर तुर्कसमुद्रमे मिल गये और उनके शासनके अत होनेके कुछ ही समय बाद यह जानना भी मुश्किल हो गया, कि कौन मगोल है। और तो और, स्वय "शरजतुल-अतराक" जसे इतिहासकारने भी तुर्क और मगोलका भेद भुलाकर मगोल-वश-वृक्षको तुर्क-वश-वृक्ष लिखा।

अपने बौद्ध पक्षपाती सेनापतियोको हराकर उज्बेकने यह दिखला दिया, कि अब मगोलो की नही, बल्कि तुर्कोंकी तूती बोलेगी। १३१५ ई० मे सुवण-ओर्दूके विद्रोही सेनापति बाबाने अपने ओर्दूके साथ ईरानमें जा उल्जैतू खान (१३०४–१७ ई०) के पास शरण ली। अभी ईरानी इलखान मुसलमान नही हुए थे, इसलिये उलजैतू बाबाकी मददके लिये तैयार था। बाबाने ईरानसे ख्वारेजमके ऊपर आक्रमण किया और उज्बेकके कृपापात्र कुतुलुक तेमूरको मार भगाया। चगताइ खान इस्सन "जेल-जामे-उत्तवारीख" के अनुसार बाबा ओगुलकी घटना सितबर १३१५ ई० (जमादी II अतिम ७१५ हि०) को हुई, जब कि वह अपने तुमान (दस हजार सेना) के साथ उज्बेकसे नाराज होकर खुलाकू-वशी खान उलजैतू के पास चला गया। फिर वहासे डेढ़ हजार सवारोको लेकर उज्बेकके सामत कुतुलुकके ऊपर प्रहार करने ख्वारेज्म गया। कुतुलुककी हार हुई और उसकी सारी सेना बाबा ओगुलकी ओर हो गई। ख्वारेज्मके शहरो—जमशबर, गरबीन, हजारास्प, हजारजमीन, कात, केरमारोन, शावकान आदिको लूटकर उसने उजाड दिया, लोगोंपर बडे जुल्म किये। बाबा ओगुलके सैनिकोने पतियोंके सामने उनकी बीबियोंके साथ व्यभिचार करनेमे भी आनाकानी नही की। ७०० के करीब इमाम और अशरफ (कुलीन लोग) जान बचानेके लिये मीनारपर चढगये थे। बाबाने लकडी जमाकर आग लगानेका हुकुम दिया। सासतसे मरनेकी जगह बापोने अपने बेटोको मीनारसे नीचे गिरा दिया। बाबाके हाथमें पचास हजार कैदी और लूटकी अपार सपत्ति आई। जब इसकी खबर चगताइ खान एसेनबुगाको खोजन्दमें मिली, तो उस (इस्सन बुगा या यस्साबुर १३०९–१८ ई०)ने अपने पडोसमें बाबाकी सफलता देखना पसद नही-किया। वह बीस हजार सवारोंके साथ एक महीनेके रास्तेको हफ्तेमें पूरा करके ख्वारेजम पहुचा। बाबा ओगुलसे जबदस्त लडाई हुई, जिसमें उसके बहुतसे आदमी मारे गये। बाबाने बदियोको छोड दिया। लूटकी सपत्तिसे भी उसे हाथ धोना पडा और वह कुछ सवारोंके साथ जान बचाकर मेवकी ओर भागते चद शाहजादोंके साथ उलजैतूके पास पहुचा। चगताइ और बा-तूके वशोंमें अब दोस्ती हो गई थी।

अपने ख्वारेज्मके उज्बेकका बहुत नाराज होना स्वाभाविक था। उसने इसमें उलजैतूका हाथ समझा। फिर दोनो ओरसे दूतोका आना-जाना होने लगा। यह खबर जब चगताइ खान इस्सनबुगा ने सुनी, तो उसने उज्बेकको अपनी ओर खीचनेका प्रयत्न करते हुये सदेश भेजा—"तेमूर कआन (चीन) कहता है, कि उज्बेक क्या बादशाह है? मैं उसकी बादशाही दूसरे उलुस (ओर्दू) को दे दूगा।" इस पर उज्बेक भी कआनसे बिगड उठा।

सघर्षकी खबरसे पहले ही सितबर १३१५ ई० (जमादी अतिम ७१५ हि०) को चीनसे कआनका महादूत कियात-वशी अकबुका ईरानकी राजधानी तबरेजमें पहुचा। अमीर हुसेन गुरगान ईरानी-खानका

प्रसिद्ध अमीर था। वह उस समय उज्बेकके सीमातके प्रदेश अर्रानमे तबरेजमें आया हुआ था। उसने महादूतकी जियाफत की और खानेके समय प्यालेको बैठे-बैठे अकबुकाके हाथमें देना चाहा। अकबुका इसपर नाराज हो दुत्कारते हुये बोला—"तू सामत और दुर्गपाल होने मेरे सामने बैठा चाहता है, कि मैं तेरे हाथसे प्याला ले लूं। तू छिङ्-गिसी यास्सा और पुराने शिष्टाचारको भूल गया?" अमीर हुसेनने भी उसका सीधा जवाब दिया—"अमीर इस समय दूत होकर आया है, न कि छिङ्गिसी यास्साका शिक्षक बनकर।" महादूत चुप हो गया।

कआनके दूत ने सुलतानियोमें जा उलजैतू खानसे कआन का सदेश कहा—"यदि बाबा ओगुल स्वय ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया, तो उसे मेरे पास भेज दो।" खानने कहा—"मुझे खबर नहीं, मैं ऐसे बुरे कामकी हरगिज इजाजत नही दे सकता था।" उलजैतू नही चाहता था, कि बौद्ध धर्मके पक्षपाती बाबाका समर्थन कर उज्बेक खानको जहाद घोषित करनेका मौका दे। आखिर वह स्वय इस्लामके केंद्र (ईरान, इराक, शाम) का शासक था, जहादकी हवा उसके देशमें भी घातक साबित होती। उसने उज्बेकके दूतके सामने बाबाको मरवा डाला और भारी भेंटके साथ स्नेहपूर्ण सदेश देकर महादूतको लौटा दिया।

१३१७ ई० (७१८ हि०) में उलजैतू मरा। उस समय अभी उसका उत्तराधिकारी अबू-सईद छोटी उमरका था। यह खबर जब दश्ते-किपचक गई, तो उज्बेकके मुहमें पानी भर आया। बेशुमार सेनाके साथ वह दरबदके रास्ते ईरानकी ओर बढा। खान अबू-सईद (१३१७-३४ ई०) भी अपने अमीरोंके साथ कराबागकी ओर चला। अमीर चोबान एक बडी सेना ले गुर्जिस्तान (जार्जिया) के रास्ते उज्बेकके मकाबिलेके लिये बढा। अमीर ईसन कुतुलुक भी एक बडी सेना ले तबरेजमे अर्रान (शिरवान) की ओर रवाना हुआ। दरबदसे खबर आई, कि उज्बेक दश्तेखिजिर (खजारोका मैदान) पार हो आगे बढ दरबद पहुच गया है। शिरवानको लूटते-पाटते उज्बेक कुरा नदीके तटपर पहुचा। कुरा नदी जहा चीनके व्यापारके लिये कास्पियन समुद्रतटसे कालासागरके पास तक व्यापार-धाराका काम देती थी, वहा वह खुलाकू और बा-तू-वशोके सघर्षका मुख्य स्थान रही। अमीर चोबानने उज्बेकके ऊपर इतने कौशलसे आक्रमण किया, कि उसे हार खानी पडी।

अमीर चोबान हुसेनका सितारा अब बहुत ओजपर चढा। अबू-सईदकी नाबालिगीका लाभ उठाकर उसने सारे राज्यको अपने हाथमें ले लिया। उसका मन बहुत बढ गया, और वह उज्बेकको और भी कडा सबक सिखानेकी तैयारी करने लगा। भारी सेना जमाकर फिर वह शिरवान पहुचा। सेनाके एक भागको दरबद पार तेरक नदीकी ओर भेजा और स्वय अपने पुत्रोंके साथ पहलेके परिचित गुर्जिस्तानके रास्ते आगे बढा। लेकिन अबके उज्बेकके सामने उसकी नही चली और उसे खाली हाथ लौटना पडा। चीनमें कआन [बोयन्-थू—१३११-२० ई० या गेगेन १३२०-२३ ई०] को खुलाकू-वश और बा-तू-वशके खानोमे इस पारस्परिक खूनी सघर्षसे बहुत चिंता हो रही थी। उसने अपना एलची (जनदूत, महादूत) भेजा, जो पहले उज्बेकके पास गया। फिर उसके एलचीको भी साथ लेते बगदादमें अबूसईदके पास पहुचा। अमीर चोबानने उनका बडा सत्कार-सम्मान किया और चीनी राजदूतको हमदानके रास्ते विदा किया और उसके कराबाग पहुचनेसे पहले ही जाकर आरामका सब तरहसे प्रबध किया। कआनके एलचीपर इसका बहुत प्रभाव पडा और उसने अपने मालिकसे जाकर अमीर चोबान हुसेनकी बडी तारीफ की। कआनने खुश होकर अमीर चोबानको चारो उलुसो (बातू, खुलाकू, चगताइ और चीन) का अमीर बनाते हुये उसके नाम चार यारलिक (शासन-पत्र) भेजे। अमीर चोबानका जिस समय इस तरह सम्मान और शक्तिवर्धन हुआ, उसी समय उसके अपने पुत्र हसन और तालिश बापसे नाराज हो ख्वारेज्म भाग गये, जहासे वह उज्बेक खानके पास पहुचे। उज्बेकने उनका बडा सम्मान किया और अच्छे-अच्छे दर्जे दिये। पीछे हसन चेरकासो द्वारा युद्धमें मारा गया और तालिश अपनी मौत मरा।

अक्तूबर १३३० ई० (७३१ हि०=१५ अक्तूबर १३३०-३ अक्तूबर १३३१ ई०) को अमीर हुसेन (चोबान) के पुत्र अमीर शेख अलीकी पुत्री अनुशिरवान खातूनका ब्याह उज्बेकके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दिनीबेकके साथ हुआ।

(२) **युरोपपर अभियान (१३२३-२४)**—ईरानमे फसनेसे पहले उज्वेक युरोपकी खबर लेना चाहता था। ईरानके साथ बराबर अनिर्णीत युद्ध होते रहनेसे बहुत लाभ नही था, जब कि युरोपके समृद्ध नगर लाभके खास साधन थे। १३२३ ई० में उज्वेककी सेनाने लियुवानियापर आक्रमण किया। कन्स्तन्तिनोपोलके विजतीन "सम्राटो" के लिये भी यह बहुत सकट का समय था। मगोलोको प्रसन्न रखनेके लिये कस्तन्तिनोपोलके सम्राटो और उनके सरदारोने अपनी सुदर कन्याये भेंट की, तो भी वह जान नही बचा पाये। १३२४ ई० मे मगोल अद्रियानोपोलपर एक लाख बीस हजार सेनाके साथ चढ आये। उन्होने थ्रेस प्रदेश (युरोपीय तुर्की और बुल्गारिया) को चालीस दिनोतक लूटा, बहुत-सी सपत्ति और दासोकी तरह बेचने के लिये भारी सख्यामें वदी उनके हाथ आये। जब थ्रेसवालो ने चोरोकी तरह आकर हमला करनेकी निंदा की, तो मगोल-सेनापति तासबुगा (ताशबेग) ने जवाब दिया—"हम ऐसे शासक के अधीन हैं, जिसकी आज्ञा जब होती है, उसी वक्त हम आगे बढते, पीछे हटते अथवा उसी जगहपर जमे रहते है।"

(३) **मास्को राजुल**—रूसी राजुलोके अब भी अलग-अलग राज्य थे। मगोलोने शासनके सुभीतेके लिये मास्कोके महाराजुलको सबका मुखिया बना दिया था, किंतु वह यह नही चाहते थे कि, सारा रूस एक राजनीतिक इकाई बन जाये। सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। इस्लामने शक्तिशाली बनानेकी जगह आपसी झगडे पैदा करके मगोलोको निर्बल करना शुरू कर दिया, जिससे रूसी फायदा उठा सकते थे और मास्कोके महाराजुल जाजने फायदा उठाया भी। उसने अपने चचा त्वेर्के महाराजुल मिखाईलके खिलाफ खानका कान भरा और उसे २२ नवम्बर १३१९ ई० को अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। उज्वेक बौद्धोका शत्रु था और इस्लामका कट्टर पक्षपाती, लेकिन ईसाई पादरियोंके साथ उसका वर्ताव अच्छा था। मास्कोके ऊपर उसकी विशेष कृपा थी। मास्कोके राजुलने र्‍याजनके राजुलको अपने अधीन बनाया। चचेरे भाई दिमित्र (त्वेर) ने इसीमें अच्छा समझा, कि दो हजार रूबल* वार्षिक पर अपने महाराजुल पदसे इस्तीफा दे दे, लेकिन वह बापके हत्यारेको क्षमा नही कर सकता था, इसलिये २१ नवम्बर १३२५ ई० मे उसने मास्को-राजुलके पेटमें तलवार घुसेडकर उसका बदला लिया। इवान खलीता (१३२५-४१ ई०) अब मास्कोका राजुल बना। वह उज्वेकका और भी कृपापात्र था। उसके बाप यूरीकी हत्याको उज्वेकने एक राजभक्तका बलिदान माना। लेकिन इवान केवल राजभक्त नही रहना चाहता था, वह घृणास्पद मगोलोके जुयेको हटाकर सारे रूसको एकतावद्ध करना चाहता था। इसीके शासनकालमे मास्को सारे रूसकी राजधानी बनने लगा, और इसीके समय तातारो (मगोलो) को निकाल बाहर करनेके लिये रूसमें सगठन होने लगा। लेकिन साथ ही, इसी वक्त दक्षिणी और उत्तरी रूसमें भेदकी खाई ज्यादा हो चली। इवानने व्लादिमिरको केवल कुछ समयके लिये ही राजधानी माना, तब भी वह अक्सर मास्कोमें रहता था। थोडे ही समय बाद उसने राजधानीको बिल्कुल मास्कोमें बदल दिया। यही नही उसने रूसी ईसाई सप्रदाय (ग्रीक चर्च) के महासघराज (मेत्रोपोलितन) को भी अपना केंद्र व्लादिमिरसे हटाकर मास्को लानेके लिये तैयार किया, और ४ अगस्त १३२६ ई०को मेत्रोपोलितन मास्को चला आया। इवानने मास्कोमें पत्थरका पहला गिर्जा बनवाया। उसने खानके दरबारकी कई यात्रायें की। १३३३ ई० में उज्वेकने उसे बहुतसे सम्मान प्रदान किये। अगले साल १३३४ ई० में वह फिर खानके ओर्दूमे था। इवानका प्रतिद्वद्वी राजुल अलेक्सान्द्र (त्वेर) जगह-जगह धक्के खाता उकता गया। उसने सोचा—"ओह, अगर मैं इसी तरह निर्वासित रहूगा, तो मेरे बच्चे उत्तराधिकारविहीन रह जायेंगे।" अन्तमे उसने उज्वेकको यह कहकर आत्म-समर्पण किया—"महान् खान, मैं तुम्हारे क्रोधका पात्र हू। मै अपने भाग्यको तुम्हारे हाथोमें देता हू। भगवान और तुम्हारा हृदय जो चाहता हो, वही मेरे साथ करो। तुम्हें मुझे क्षमा करने या दड देनेका अधिकार है। क्षमा करनेपर मै तुम्हारी दया-के लिये भगवान्से प्रार्थना करूगा और दड देना है, तो उसके लिये मैं अपने सिरको अर्पण करता हू।" उज्वेकने उसे क्षमा कर दिया और त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का राज्य देकर सम्मानित किया।

* उस समय रूबल तीन-चार इच लबा एक अगुल चौडा चादीका टुकडा होता था।

लेकिन चालाक इवान इतनेसे हार माननेवाला नही था। उसने तरह-तरहकी चुगलिया खाई। अलेक्सान्द्रको फिर बुलाया गया और २८ अक्तूबर १३३९ ई० को पुत्र-सहित उसे मार डाला गया। उज्बेकद्वारा कत्ल किये गये रूसी राजुलोमें ये दोनो छठे और सातवें थे।

एक तरफ इवान खानकी चापलूसी करनेमे सभी दरबारियोका कान काटता था, दूसरी तरफ वह नही चाहता था, कि उसकी जाति मगोलोंके सामने इस तरह सिज्दा करते नाक रगड़ती रहे। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था, कि जबतक अनेको राजुलोमे बटी रूसी जातिको एक नही किया जाता, तबतक मगोलोका जुआ हटाना सभव नही। अलेक्सान्द्रको खतम करवानेसे पहले १३२३ ई० मे सुज्दलके राजुलके निस्सतान मरनेपर उसके राज्यको उसने अपने राज्यमे मिला लिया। वह दृढ शासक था। उसने अपने राज्यमें व्यवस्था स्थापित की, और सबको आज्ञा पालन करनेके लिये मजबूर किया। रूसियोने देखा महाराजुल और दूसरे राजुलोके राज्यो मे कितना अतर है। उसने पहलेसे मौजूद दुर्ग (क्रेमल, क्रेमलिन) को फिरसे बनवाया, मास्कोको लकडीके प्राकारसे घिरवाया। क्रेमलिनके अतिरिक्त उसने कई गिर्जे बनवाये, जिनमे सत मिखाइल राजदेवदूत भी एक है, जिसमें आगे रूसी राजुल दफन किये जाने लगे। शाति और सुव्यवस्थाके कारण मास्कोका व्यापार भी बढ चला। उत्तरके देशोंके माल हान्स-सघके व्यापारी लाते और दक्षिणके मालको अजोफ समुद्रके रास्ते गेनोवाके व्यापारी। उसने मोलोगा नदीके मुहानेपर खोलोपगोरोदकमे पहला व्यापारी मेला लगवाया, लोगोंके ठहरनेके लिये सग्रह यात्रिगृह बनवाये। इस मेलेमे साढे तीन हजार चादीका रूबल इवानको मिला। देश और महाराजुल दोनोकी सपत्ति और समृद्धि बढ रही थी। इवानने अपने रुपयेसे नवगोरोद, ब्लादिमिर, कोस्त्रोमा और रोस्तोफमें मिल्कियत खरीदी। खानके लिये अपनी प्रजासे कर उगाहना आसान काम नही था। कर उगाहनेवाले अधिकारी ही बीचमें बहुत-सा पैसा खा जाते थे। इवान तुरत कर बेबाक करनेके लिये तैयार था, फिर खानको और क्या चाहिये? १८ वी सदीमें भारतमें प्रचलित नीतिको दुहराते उसने कर उगाहनेका अधिकार इवानको दे दिया। रूसी जनताको भी यह पसद आया, क्योकि तातारोंके नामसे रूसियोमें आतक छा जाता था। खानके कर उगाहनेवाले जब हथियारबद मगोलोंके साथ करके लिये घूमते, तो लोगोका प्राण निकलने लगता। इवान अब इस कामको बडी चतुरतासे करने लगा, जिसके कारण रूसियोंके एकताबद्ध होनेमें बडी सहायता मिली। उसने क्रेमलिनसे घोषणा की, कि अबसे हमारे परिवार तथा प्रजाके भीतरके झगडोको हमारे बायर (अमीर) निपटाया करेंगे। अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके ऊपर वह जरा भी दया दिखानेके लिये तैयार नही था। एक ओर रूसमें वह यह चाल चलते अपनेको मजबूत करनेके लिये साम और दाम दोनो तरीकोको अख्तियार कर रहा था, दूसरी ओर वह जानता था, कि उज्बेकको भी अपने हाथमें रखनेकी आवश्यकता है। वह बीच-बीचमें दौडकर खानके दरबारमें पहुचता और उसे बडी-बडी भेटो और चापलूसियोसे मुग्ध किये रहता। महाराजुल और खानमें कभी वैमनस्य नही हुआ, तथा दोनो एक ही साल (१३४० ई०) मरे।

इसमें शक नही, उज्बेक अपने ओर्दूको मुसलमान बनानेमें ही बडा सहायक नही हुआ, बल्कि चाहे अनिच्छासे ही सही सारे रूसपर मास्कोके एकाधिकारको कायम करानेमें भी उसका बडा हाथ था। उज्बेककी इस कारवाईसे मास्कोके महाराजुलकी ही शक्ति नही बढी, बल्कि रूसी चर्चने भी उससे लाभ उठाया। रूसियोंके ऊपर अब चर्चका एकच्छत्र प्रभाव था। चर्चकी सपत्ति विशाल हो गई, उज्बेकके दिये हुये गावोने चर्चकी भू-सपत्तिको और बढा दिया। जैसे मास्को महाराजुलके हाथमें शक्तिका केंद्रीकरण हुआ, उसी तरह चर्चके महासघराजने पादरियोपर अपना एकाधिपत्य जमाया, जिसके लिये कि रोमन कैथलिक चर्चने पहले हीसे उदाहरण स्थापित कर दिया था।

महाराजुल और महासघराजके लिये उज्बेकने छूट कर दी थी। व्यापार और लोगोंके परिश्रमसे समृद्ध रूसकी सपत्ति उसे चाहिये थी, जो बिना तरद्दुदके खानके पास पहुच रही थी। पर जहातक रूसी जनसाधारणका सबध है, उसकी अवस्था पशुओंसे भी बदतर थी। मगोल सैनिकों और अफसरोंके सामने पहले हीसे जहा उन्हे दात निकालना और पूछ हिलाना पडता था, वहा अब वह महा-

राजुलके वायरोंके भी शिकार थे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार—"क्रिमिया और कूवानके यहूदी सारी जातिके जीवन-रक्तको जोंकोंकी तरह पी रहे थे।

१३३४ ई० में ईरानपर फिर आक्रमण करनेके लिये उज्वेकने अभियान किया। अव-सईद मुकाविलाके लिये आनेवाला था, लेकिन इसी बीचमें वह मर गया। उसके उत्तराधिकारी अरपा खानने आगे बढकर सामना करना चाहा, लेकिन दोनो ही पक्ष अपने ऊपर पूरा भरोसा नही रखते थे, इसलिये उन्होने विना लडे ही लौट जाना पसद किया।

उज्वेकका शासन-काल किपचक (सुवर्ण-ओर्दू) के इतिहासमें समृद्धिकी चरम सीमाका है। उज्वेकने अपने राज्यमे शाति और व्यवस्थाको इतनी अच्छी तरहसे कायम किया था, कि पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारो तरफसे व्यापारियोका ताता लगा रहता था। उसकी सेना भी बडी जवदस्त थी। लेकिन उससे भी अधिक वह अपनी कूटनीति और भेदनीतिसे काम लेता था। ईरानके खुलाकू-वशसे झगडा चलते रहनेके कारण युरोपके देश उसकी चोटसे वहुत कुछ बचे रहे। छिङ्-गिस् खानके समयसे ही मगोल अतर्राष्ट्रीय व्यापारको प्रोत्साहन देते आये थे। काला सागरके तटपर जहा कभी ग्रीक और रोमक व्यापारियोंके बडे-बडे दुर्गबद्ध केंद्र थे, अव वहा वेनिस, गेनोआ और दूसरे स्थानोंके युरोपीय व्यापारी उसी कामको कर रहे थे। अगस्त १३३५ ई० में उज्वेकके प्रतिनिधि कुतुलुक वेगने वेनिसके वाणिज्य-दूतके साथ सधि की और अम्पताली गिर्जेके पीछे बाजारके लिये वेनिसके व्यापारियोको जगह दी। विक्रयके ऊपर ३ सैकडा कर सरकारको मिलना निश्चित हुआ था।

तीस साल राज्य करनेके वाद १३४२ ई० मे उज्वेक मरा। उज्वेकके सिक्कोपर उसका नाम निम्न रूपमें लिखा मिलता है—"गयाजुद्दीन उज्वक खान", "महम्मद उज्वक खान", "उज्वक खान आदिल"।

(४) **इस्लामसे सहानुभूति**—"शजरतुल् अतराक" के अनुसार उज्वेक खानने मुसलमान होनेसे पहले आठ साल राज्य किया और मुसलमान होनेके वाद तीस सालतक। लेकिन इस बातमें सदेह है, जैसा कि पहलेके वर्णनसे मालूम है। उज्वेक खानको आठ सालतक काफिर रखनेसे इस लेखकका मतलव यही मालूम होता है, कि कुतुवुद्-दुनिया (जगत्-ध्रुव) महात्मा जगी अताके उत्तराधिकारी महात्मा सैयद अताकी महिमाको वढाया जाय। वह यह भी लिखता है, * कि उज्वेक अपने सारे उलुसके साथ सैयद अताके हाथ मुसलमान हुआ। तवसे किसीके पूछनेपर उसके उलुसके लोग अपने सरदार (वादशाह)के उलुसका नाम लेते है, इसीसे उलुसका नाम उज्वेक-उलुस पड गया।

१३१४ ई० में ही उज्वेकने वेमुल्कके राजा और कठपुतली खलीफा नासिरके पास मिस्रमें भेंटके साथ पत्र भेजा था, जिसमे उसने लिखा था—"मेरे राज्यमें अव सिर्फ मुसलमान है। गद्दीपर वैठते ही मैंने उत्तरी कवीलोको कह दिया, कि या तो इस्लाम स्वीकार करो या लडाई लो। जिन्होने स्वीकार नही किया, उन्हे मैंने लडकर अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजवूर किया ।" लेकिन उज्वेकके राज्यमें रूसी भी थे, जो मुसलमान नही हुये, इसलिये उज्वेकके अपने राज्यमे सिर्फ मुसलमानोंके होनेकी बातका यही अर्थ है, कि अव सुदूर उत्तरके थोडे-से वाशिदोंके सिवाय उसकी सारी एसियाई प्रजा इस्लामको स्वीकार कर चुकी थी।

उज्वेकने इस्लामिक शासकोंके साथ घनिष्ठता स्थापित करनेकी वडी कोशिश की। उसने अपनी एक लडकीका व्याह मिस्रके शासक मलिक नासिरसे किया था। मुस्लिम इतिहासकारोका कहना—"वह वडा वहादुर और दयालु था", जो उज्वेकके अपने कार्योंसे गलत सावित होता है। उसका राज्य ६०० फरसख (योजन) लवा था, यह ख्वारेज्मसे पोलैन्दकी सीमाकी दूरीसे मालूम है।

(५) **इब्न-वतूता**—मशहूर पर्यटक इब्न-वतूता १३३३ ई० में क्रिमिया होते दश्ते-किपचक (सुवर्ण-ओर्दू भूमि) पहुचा। वह इस देशके वारेमें लिखता है—"वृक्ष-वनस्पतिहीन मैदान है, जहा न पहाड है न

---

* "हर कसे कि अज ईशा मीपुर्सद कि ई आयन्दा कीस्त। नाम सरदार व पादशाह खुदारा कि उज्वक वूद, मी-गुफतद, वदा सवव अज़आजमा मरदुम् आमद मौसूम व-उज्वक शुदअद।"
—शजरतुल्-अतराक ज० ओ० पृष्ठ २६६।

जंगल। लोग कंडेको ईंधनके तौरपर इस्तेमाल करते हैं। खानकी राजधानी (सराय) एक चलती-फिरती नगरी है, जिसमें सड़कें हैं, मस्जिदें हैं, भोजनगृह हैं, जिनका धूआ उनके चलते-फिरते समय ऊपर उठता रहता है। उज्बेक दुनियाके सात बड़े राजाओंमें है—कुस्तुन्तुनियाके तकफीर (सम्राट्), मिस्रका सुलतान, उभय-ईराकका राजा (इलखान), तुर्किस्तान-अन्तर्वेदका शासक, भारतका महाराजा और चीनका फग्फूर (भगपुत्र, देवपुत्र)।" बतूताने खानके बारेमें लिखा है—"प्रत्येक शुक्रवारको नमाजके बाद खान एक सुनहले चँदवेके नीचे सोने-चांदी और कीमती जवाहिरोंसे जड़े सिंहासनपर बैठता है। उसकी बगलमें उसकी एक-एक तरफ दो-दो चारों बीबियां बैठती हैं। सिंहासनके सामने उसके दो पुत्र खड़े होते हैं—एक दाहिने और एक बायें। खानके सामने उसकी लड़कियां बैठ गईं। जब कोई रानी आई तो खानने खड़ा हो उसका हाथ पकड़कर बैठनेका स्थान बतलाया। वह कभी परदा नहीं करती। इसके बाद बड़े अमीर आये, जो कि सिंहासनके दाहिने और बायें कुर्सियोंपर बैठते हैं। उनके बाद खानके भतीजे तथा दूसरे राजवंशी शाहजादे खड़े हुये। उसके बाद बड़े अमीरोंके पुत्रोंने अपने दर्जेके अनुसार स्थान ग्रहण किया। जब सब बैठ गये, तो दूसरे लोग भीतर आकर खानको सलाम करके अपने दर्जेके अनुसार अपनी जगहोंपर जा बैठे। शामकी नमाजके बाद पटरानी लौट चली। उसके पीछे सुंदर-सुंदर दासियां और परिचारिकायें चल रही थीं। वह गाड़ियोंपर बैठी थीं। आगे-आगे सवार और पीछे-पीछे सुंदर ममलूक (राजदास) रथका अनुगमन कर रहे थे। सुलतान (खान) की बीबियोंका बहुत भारी सम्मान किया जाता है। उनमेंसे प्रत्येकका अलग महल होता था, जिनमें उनके अपने अनुचर और सेवक रहते हैं। ओर्दूमें आकर हरएक भेंट करनेवालेसे आशा की जाती है, कि वह खानकी हर एक रानीके सामने जाकर सम्मान प्रदर्शित करेगा।

बुल्गार नगरी (कजान) सुवर्ण-ओर्दूकी दूसरी राजधानी होनेके कारण अपने पुराने वैभवसे वंचित नहीं हुई। उसकी प्रसिद्धि सुनकर इब्न-बतूता खानके शिविरसे दस दिनके रास्तेको तीन दिनमें पारकर वहां पहुंचा। उसने लिखा है—"यहां रात इतनी छोटी होती थी, कि रात्रिकी नमाज आरम्भ करनेसे पहले बहुत थोड़ा समय मुझे शामकी नमाज पढ़नेके लिये मिला। मध्य-रात्रिके बाद जल्दी ही सुबहकी लाली छा गई। अंधेरेकी भूमि यहांसे चालीस दिनके रास्तेपर और उत्तरमें है, जहां कुत्तोंवाली बेपहियेकी गाड़ियोंपर यात्रा की जाती है। सारा रास्ता बर्फसे ढका रहता है, जिसपर आदमी या जानवरका पैर नहीं टिकता। कुत्तेका नाखून बर्फमें चुभकर उसे फिसलनेसे रोकता है। इस अंधकार-भूमिमें व्यापारी छोड़ कोई दूसरा आदमी नहीं जाता। व्यापारी सैकड़ों बेपहियेकी गाड़ियोंमें रसद, पानी, ईंधन आदि लेकर जाते हैं। वहां न वृक्ष है न पत्थर न घोड़े। उनका पथ-प्रदर्शक एक अनुभवी कुत्ता होता है, जिसके लिये हजार दीनार देना पड़ता है। नेता-कुत्तेके खड़ा होते ही सारे कुत्ते खड़े हो जाते हैं। नेता-कुत्तेका मालिक भी उसे कभी दंड नहीं देता। खानेके समय कुत्तोंको पहले खाना दिया जाता है। वहां व्यापार बदलेन द्वारा होता है। व्यापारी अपने मालको निश्चित स्थान-पर रखकर हट जाते हैं। दूसरे दिन जानेपर अपने मालकी जगह उन्हें सेबल, एरमिनके मृग-छाले और सिंजाबके समूर मिलते हैं। वह यदि संतुष्ट हुये, तो ले आते हैं नहीं तो छोड़कर हट आते हैं, फिर और माल बढ़ाकर रक्खा जाता है। न पसंद आनेपर व्यापारीका माल छोड़ देते हैं। व्यापारियोंको भी यह मालूम नहीं है, कि यह देनेवाले कौन हैं—आदमजाद या राक्षस।"

लम्बे दिनोंका वर्णन तेमूरलंगकी विजय-यात्रामें भी आता है। कजान ५६ उत्तरी अक्षांशके पास होनेसे वहां दिन और रातका बहुत अधिक बड़ा होना स्वाभाविक है। यह उस समयके सभ्य जगत्का सीमांत नगर था, जिसके बाद साइबेरियाकी जन-जातियोंका देश शुरू होता था, जिनके वंशज कोमी और खान्ती आदि अब भी वहीं रहते हैं, लेकिन अब वह बतूता और दूसरोंके देवदानव नहीं, बल्कि सभ्य और शिक्षित आदमजाद हैं।

उज्बेकने ग्रीक राजा अन्द्रोनिकसकी लड़की (बेइलुन खातून) से ब्याह किया था। इस ब्याहको रूसके महासंघराज थेओगोनोसने कुस्तुन्तिनोपोल जाकर स्वयं करवाया था। इसी रानीके साथ बतूता उसके बापके घर भी गया था। बतूता बालूसरायमें ख्वारेज्म और अफगानिस्तान होते भारतकी ओर

आया। उसने लिखा है, कि किपचक-तुर्कोंका सबसे बडा नगर ख्वारेज्म है, जिसपर उज्बेकका शासन है, जिसका अमीर खानके उपराजके तौरपर वहा रहता था। बतूताने ख्वारेज्मकी बडी प्रशसा की है--"ख्वारेज्मियो जैसे सस्कृत और उदार आदमी मैने कही नही पाये और न उनके-जैसे परदेशीके साथ स्नेह रखनेवाले। अगर कोई मस्जिदमें नमाजके समय अनुपस्थित होता, तो मस्जिदके सामने ही इमाम उसे पीटता। इस कामके लिये हरएक मस्जिदमें एक कोडा रहता है।" उज्बेकके इस्लामिक धर्मराज्यका यह अच्छा नमूना है--लोगोंसे जबदस्ती अल्लाहकी बदगी करवाई जाती थी। यद्यपि पुराने मुसलमानोंके साथ इस तरहकी कडाई थी और--अपनी प्रजाको उज्बेकने जबर्दस्ती मुसलमान बनाया, लेकिन जहातक ईसाई प्रजाका सम्बन्ध था, वह उनके साथ धर्मान्धता नही दिखलाता था।

१० दिनीबेग, तिनीबेग, उज्बेक-पुत्र (१३४२ ई०)

उज्बेकके बाद उसका पुत्र दिनीबेग गद्दीपर बैठा। उसके दो और भाई जानीबेग तथा खिजिरबेग थे। जानीबेगने भाईके खिलाफ विद्रोह किया। लडाईमे दिनीबेगकी हार हुई। जानीबेगने उसे पकडकर मार डाला और खुद गद्दीपर बैठ गया। अपने दूसरे भाई खिजिरबेगसे भी खतरा देखकर उसे भी उसने मरवा दिया।

११ जानीबेग, उज्बेक-पुत्र (१३४२--५७ ई०)

जानीबेगने सोलह साल राज्य किया। बातू-वशका यह अन्तिम शक्तिशाली खान था। नियम और व्यवस्थाका वह अपने बापकी तरह ही बहुत पाबन्द था। इसीके समय खुलाकू वशके पतनसे ईरानमे अशाति और अव्यवस्था मची हुई थी, जिसके कारण बहुत से धनी-मानी तबरेज सराह, अदबील, बेलगान, नखचवान आदि शहरोको छोड-छोडकर इधर आ बसे। अभी भी सुवर्ण-ओर्दू केवल एसिया हीतक सीमित नही था। १३४३ ई०में खानकी सेनाने पोलैंदपर आक्रमण किया---उसी साल पोलैंद टिड्डियोका शिकार हो चुका था। लूट-पाट करते हुये किपचकोने लुबलिन नगरको जा घेरा, लेकिन वह उसे सर नही कर सके।

१३४६ ई०मे मास्कोका महाराजुल सिमओन (१३४२--५३ ई०) जानीबेगके दरबारमें पहुचा। उसने भारी भेंट खान और उसके परिवारके सामने पेश की। जानीबेगने भी प्रसन्न होकर महाराजुलको बहुत उपहार और खलअत दी। लिथुवानिया अब भी ईसाई नही हुआ था। अब भी वहा कुछ पुराने वेदोकेसे देवताओकी पूजा होती थी। वहाका राजा ओलगद मास्को-महाराजुलका भारी प्रतिद्वद्वी था। ओलगदपर जर्मनोंने आक्रमण शुरू कर दिया। उसने अपने भाई कोरिअदको खानके पास मदद मागनेके लिये भेजा। सिमओनने चुगली खाई, जिसपर खानने लियुवानी कुमारको उसके हाथमें दे दिया। उधर महाराजुलका दूसरा प्रतिद्वद्वी पोलैंदका राजा कसिमिर था, जिसने १३३९ ई०मे गलिसियाको लेते पडोसके वोल्हुनिया प्रदेशको भी अपने हाथमें कर लिया था। रूसी महाराजुल इसे कैसे पसद करता? वह सनातनी ईसाई सम्प्रदाय (अर्थोदक्स चर्च) का अनुयायी था और कसिमिर कट्टर रोमन कथलिक। कसिमिर स्लाव ईसाई पादरियोको अपने धार्मिक रीति-रवाजोको छुडाकर जबदस्ती कैथलिक बनाता था। इसके कारण लोग उससे बिगडकर लियुवानियोंके पक्षपाती हो गये और उन्होने रूसी महामघराजको भी प्रेरित किया, कि महाराजुल सिमओनको कहकर लियुवानी कुमार कोरिअदको मुक्त करा दें। इसके लिये उन्होने मुक्ति-धन भी दिया। महाराजुलने अपने वशकी राजकुमारी दुल्यानाको लियुवानियाके काफिर राजा ओलगदसे इस शतके साथ ब्याह दिया, कि उसकी सतान ईसाई बनाई जायें। ओलगदने इस प्रकार शक्ति सचय करके पोलोंको वोल्हुनियासे मार भगाया। १५ फवरी १३४७ ई०में जानीबेगने वेनिसियोंके साथ सधि की और उन्हें तानामें बाजारके लिये एक जगह प्रदान की।

(१) **प्लेग महामारी**--१३४५ ई०में एसिया और युरोपके देशोमे भयकर काले प्लेगकी महामारी आई थी। इसका आरम्भ चीनमें हुआ था, जहा उससे एक करोड तीस लाख आदमी मर गये। कास्पियन समुद्रके दोनो तरफके प्रदेश इस प्लेगके मारे उजाड हो गये। तुर्किस्तान, ख्वारेज्म, सराय--सबमें हाहा-

कार मच गया। आरमेनिया, अवखाजिया, चिरकासके लोग, क्रिमियामे वसे यहूदी, गेनोवा और वेनिस-वाले भी तबाह हो गये। आगे वह ग्रीस, सिरिया (शाम) और मिस्रमें भी फैली। गेनोवावाले व्यापारियो-के जहाज उसे अपने साथ इताली, फ्रास, इगलैड और जर्मनीमे ले गये। लदनमे इसके प्रकोपमे एक कब्रिस्तानमें पचास हजार मुर्दे गाडे गये। पेरिसके आतकित लोग गुस्सेके मारे यहूदियोका सहार करने-के लिये तैयार हो गये। वह समझते थे, प्लेग लानेवाले यही यहूदी है। १३४९ ई० में वह स्कदनेवियामे पहुची, फिर प्स्कोफ और नवोग्रादके रूसी नगरोमे भी। प्स्कोफके एक-तिहाई आदमी मर गये, शहरका शहर बीमार हो गया था। पैसा खर्च करनेपर भी धनियोको नर्से नही मिलती थी। भयके मारे बीमार मा-बापको छोड बच्चे भाग जाते थे। लोग बहुत अधिक धार्मिकता दिखलाने लगे थे और धनी लोग धार्मिक कार्योमें बडी उदारतासे खर्च करते थे। उस सालके जाडोमे प्लेग तो वद हुई, लेकिन उसके बाद पेचिश (हैजा) तथा खूनके कैकी बीमारी शुरू हुई, जिसमें आदमी मुश्किलसे दो-तीन दिन जी पाता। घुमन्तुओपर प्लेगका प्रभाव और भी भयकर हुआ था।

१३५१ ई०में भारी अकालसे पीडित ब्रातिस्लावापर मगोलोने आक्रमण किया। वहाके राजुलने हुगरीके राजा लुईसे मदद मागी और उसकी सहायतासे वह मगोलोको भगानेमे सफल हुआ—पोल राजा कसिमिरने भी इस समय उसकी सहायता की थी। द्नियेपर नदी अभी भी कुछ समयके लिये मगोलोंके हाथमें थी, लेकिन गेलेसिया पोलोंके हाथमें चली गई थी। लघुरूस (आधुनिक उक्रइन) लिथुवानियाके हाथ में तबसे १६वी सदी तक रहा। इस प्रकार लघु-रूसी छिन्न-भिन्न होकर शक्तिहीन हो रहे थे। पडोसी युरोपीय राजाओ तथा मगोलोंके अत्याचारोंसे पीडित पूर्वी स्लावोकी सहानुभूति अब और अधिक मास्कोकी ओर होती जा रही थी। इसके दो परिणाम हुये—(१) कितने ही लोगो ने द्नियेपर और दोनके तटपर जा घुमन्तू राज्यके रूपमें वहा अपने जापोरोशियान और दोन कसाकके दो गणराज्य स्थापित किये, और (२) दूसरे लोगोने हुगरीके रोमन कैथलिकोंके अत्याचारसे भागकर पहिले मगोलोकी भूमिमें, फिर वहा भी पीडित होनेके बाद मोल्दाविया और वलाचियामे जाकर अपनी रियासतें कायम की।

मास्कोके महाराजुल सिमओनने अब पहली बार "सबरूसमहाराजुल" की उपाधि धारण की। १३५३ ई० में उसके मरनेके बाद उसके भाई इवानको जानीवेगने उसका उत्तराधिकारी बनाया।

१३५५ ई०में ईरानके इलखान-वशका नाश हो चुका था। इससे फायदा उठाकर सेनापति चोवान तेमूरताशके पुत्र मलिक अशरफने आजुरबाईजानपर अधिकार कर लिया। मलिक अशरफके अत्या-चारोंसे लोग परेशान हो देश छोडकर भागने लगे। ख्वाजा शेख कही (कुजी) शीराजकी ओर भागा और वहासे फिर शामको। दूसरे प्रसिद्ध सत ख्वाजा सदरुद्दीन अदबेली ने गेलानका रास्ता लिया। काजी मोहीउद्दीन बुरदइ सरायबरका भागा और वहा अपने उपदेशोंके लिये मशहूर हुआ। उसके उपदेशोमें जानीवेग भी शामिल होता था। उस वक्तकी मलिक अशरफ गरदी (राक्षसी)का बडा साफ चित्र शेखशादीने खीचा था, जिसे "तारीख शेख-उवेस" (ज० ओ० पृष्ठ २३०) के लेखकने उद्धृत किया है—"ईरानसे चगताइ देशमें जा उसने उस देशको अपने अधीन किया। कुछ समय अपनी जगह रही। फिर कहते हैं, तीन रोजसे अधिक कही नही बैठी और तरक नदी पार हो दरवन्द आई। वहासे शिरवान पहुँची। उसने अपना एलची मलिक अशरफके पास भेजकर कहलवाया कि मैं खुलाकूके उलुसको जब्त करनेके लिये आ रही हूँ, तू चोवानका पुत्र है, जिसका नाम चारो उलुसोमें तथा यारलिकमें था। अब तीन उलुस मेरे हुकूममें है। मै चाहती हू, कि जूजी (तूती) के उलुसका अमीर तुझे बनाऊ, इसलिये खडा हो जा और मेरा स्वागत कर।' मलिक अशरफने जवाब दिया—'हे उलुस-ब्रकाके बादशाह, मेरा सम्बन्ध अबका (हुलाकू-पुत्र) के उलुससे नही है। यहाका बादशाह गजन है, जिसके अमीरका पद मेरे पास है।"

(२) ईरानपर आक्रमण—मोहीउद्दीनने एक दिन अपने उपदेशके बीचमें तबरेज और मलिक अशरफ-के अत्याचारोका ऐसे शब्दोंमें चित्रण किया, कि श्रोता रोने लगे, जानीवेग स्वय रो पडा। मोहीउद्दीनने यह भी कहा, कि बादशाहको हस्तावलम्ब देना चाहिये, जिसमें प्रजाके ऊपर होते इन अत्याचारोका

अन्त हो। अगर बादशाह ऐसा नही करता, तो कयामतके दिन अल्लाह उससे जवाब तलब करेगा। जानी वेगके मनमें बातके ममानेके लिये मोहीउद्दीनके उपदेशसे भी ज्यादा ईरानके समृद्ध राज्यका लोभ था।

जानीवेगने एक महीनेम सौ तुमान (दस लाख) सेना तैयार कर ली और वह सन ७५८ हिजरी में (२५ दिसम्बर १३५६ ई०–१३ दिसम्बर १३५७ ई०) तबरेजकी ओर रवाना हुआ। कुरा नदी पार करनेकी खबर मलिक अशरफके पास पहुंची, तो पहले उसने इसपर विश्वास नही किया, फिर अपने सैनिकोको जमा किया। लेकिन उसके अत्याचारोंके कारण लोग अब उसकी आगमें कूदनेके लिये तैयार नही थे। वह शम्बेगाजानी पहुचा। इससे पहले उसने अपनी खातूनो (रानियो), लडकियो, खजाने, सोना-चादी और जवाहर तथा दूसरी चीजोको आलिजकके किलेमें भेज दिया था, जिन्हे उसने चार सौ ऊटों और हजार खजानेके ऊटोंपर लदवाकर मगवा लिया। शम्बेगाजानीम बहुतसे लोग जमा हुये थे, जिनमे एक बडी सेना तैयार करके उसने कूजानकी ओर भेजा। फिर खबर मिली, कि बादशाह जानीवेग अदबील पहुच गया। लोग कह रहे थे—बादशाहके फौजकी रिकाब लकडोकी है, उसके घोडोकी लगामे रस्सियोकी है।

जानीवेगके बारेमें पहुचती इन खबरोको सुनकर मलिक अशरफ बहुत डर गया। उसने ख्वाजा लूलू साजलू और ख्वाजा शकर खाजिन (कोषाध्यक्ष) को बुलाकर कहा—"खातूनो (रानियो) और खजानोको लेकर ख्वाजा रशीदके चश्मेपर पहुचाओ और वहा मेरा इन्तजार करो। मै उजान जा रहा हू। अगर मनोरथ सफल हुआ, तो तबरेज आना। अगर बात उल्टी हुई, तो खुईकी ओर जाना, मै वहा आकर मिल जाऊगा।" उन्हें भेजकर वह खुद उजानकी ओर रवाना हुआ। पहले दिन मेहरानरूद नदीके तटपर मुमताबादमें डेरा डाल उसने दो दिन विश्राम किया। कितने ही अमीर, जो साबाकी ओर चले गय थे, यहा मलिक अशरफके पास आ गये। उसने उन्हें सोना, घोडा, हथियार आदि देकर रवाना किया। अखीजूक सेनप भी उनमेंसे था, जो अगले दिन कूच करके सईदाबाद (अबदाबाद) गया। उसने वहा लोगोंसे सैनिकोंके लिये अपने घरोको खाली कर देनेके लिये कहा। उसके नौकरोंमें दो हजार मद थे। वह खाने-पीने-रहनेकी तैयारी कर रहे थे, तभी जबदस्त आबी-पानी आई।

उजानमें अशरफके भेजे हुये सैनिक एकत्रित हो गये थे, इसी समय जानीबेग सराहकी ओरसे आ पहुचा। विरोधी सेनाको देखकर उसने हुकुम दिया, कि छिङ्-गिस्के शिकार खेलकी तरह इन्हें चारो ओरसे घेर लो। अशरफके अमीरोने जब यह हालत देखी तो वह अपनी जान लेकर भाग निकले। मलिक अशरफ अब भी सईदाबादके पुश्तेपर खडा था। इसी समय शेख जलकी (बालखजी) ने उसके कानमें कुछ कहा। उसने समझ लिया, कि लडनेमें कोई फायदा नही और वह तबरेजकी ओर भाग चला। उस रात वह शम्बेगाजानीमें ठहरा, फिर सबेरे अपनी खातूनोंके साथ खजानेको लिये रवाना हुआ। लेकिन खजाने-पर उसके रखवाले ही हाथ साफ करने लगे। खातूने भी इधर-उधर बिखर गईं। मलिक अशरफ यह हालत देखकर खुईकी ओर चला। महम्मद बालखजीका घर इसी इलाकेमें था। उसने एक ओर मलिक अशरफका स्वागत करते हुये अपने घरमे उसे ले जाकर ठहराया और दूसरी ओर जानीवेगके पास इसकी खबर भेज दी। जानीबेगने अमीर बयासको इस कामके लिये भेजा, लेकिन घरको घेरकर ढूढनेपर अशरफ वहा नही मिला। इसपर अमीर बयास और उसके साथी ख्वाजा महमूदने लोगोकी सभी चीजें जब्त कर ली। फिर अमीर बयास मलिक अशरफका पकडनेके लिये तबरेज गया। सडक-से गुजरते वक्त लोगोने उसके ऊपर राख फेंककर बडी बेइज्जती की, और उसे ख्वाजा शेख कुर्जीकी सा मोवैयदबेके घर ले गये। अमीर काऊस शिरवानी वहा मौजूद था। मौलाना मोहीउद्दीन बेरदईके हाथको चूमकर अशरफ रोने लगा। काऊसने उसे ढारस दिया। इसके बाद उसे बादशाह जानीबेगके पास ले गये। बादशाहने पूछा—"इस देशको तूने क्यो बरबाद किया?" उसने जवाब दिया—"नौकरोंने बरबाद किया, उन्होने मेरी बात नही मानी।"

बादशाह जानीवेग उजानसे हश्तरूद (अष्टनद) की ओर रवाना हो क्मुक (कूफी) के नजदीक पहुच वहासे लौट पडा। उस साल लोगाने खेती बहुत की थी। जब यह बडी सेना उधरसे गुजरी, तो

खेतोंमें एक बाल भी न रह गई। कविके कथनानुसार "जालिम गया और उसका जुल्मका कायदा रह गया। आदिल गया और उसके नेक नामकी याद रह गई।"

जानीबेगने चाहा, कि मलिक अशरफको मृत्यु-दंड न दे अपने साथ अपने देश ले जाये, लेकिन काऊस और काजी मोहीउद्दीनने बतलाया—"अगर वह जिंदा रहेगा, तो इस मुल्कके लोग कभी चैनसे नही रह सकेंगे।" जानीबेगको उनकी सलाह माननी पडी। मलिक अशरफको घोडेसे नीचे उतारते समय उसकी दोनो तरफ तलवारें खडी कर दी गईं, जो उसकी बगलो में घुस गईं। उसके शिरको काटकर तबरेज ले जा मस्जिद-मरागियानके दरवाजे पर टाग दिया गया। तबरेज-निवासी खुशी मनाते दान-पुण्य करने लगे। जानीबेग दस हजार सवारोंके साथ वहा दौलतखाना में उतरा। एक रात रहकर सबेरेकी नमाज उसने मस्जिद ख्वाजा अलीशाहमे पढी। उसके साथ आये हुये सैनिक सडको और नदियोके किनारे ठहरे थे। इनमेंसे कोई किसी मुसलमानके घरमे नही घुसा।

अशरफकी लोलपतापर एक पद्य मशहूर है—

"देखो कैसे अशरफ गदहा अपने भाग्यको उघाड रहा है।

अपने लिये मृत्यु और जानीबेगके लिये अपना सोना बटोरता ।।"

इस प्रकार १३ सालमें अशरफने जुल्म और अत्याचार करके जो खजाना जमा किया था, उसे जानीबेग ले गया।

ईरानमें इस प्रकार व्यवस्था कायम कर जानीबेग अपने बडे बेटे बरदीबेगको पचास हजार सेना देकर वहाका शासक नियुक्त कर अली अशरफकी लडकी सुलतानबख्त और उसके पुत्र तेमूर-ताशको साथ ले किपचकभूमि लौटा। महमूद दीवानने बडा महोत्सव मनाते बरदीबेगको तब्रेजके तख्तपर बैठाया। अमीर जारुकके पुत्र सराय तेमूरको वजीर बना महमूद भी जानीबेगके पीछे-पीछे रवाना हो गया।

जानीबेग लौटकर बीमार पड गया। मरणासन्न देखकर उसके खैरख्वाहोने बरदीबेगके पास इसकी खबर भेजी। बरदीबेग जानता था, कि तब्रेजका तख्त किसी समय भी हमारे हाथसे छिन जायेगा, इसलिये तथा सबसे बडा पुत्र होनेके ख्यालसे भी वह तब्रेजसे जल्दी-जल्दी दरबन्दकी ओर रवाना हुआ और दस सेवकोंके साथ आधी रातको चुपचाप तुगलुबाईके घरपर पहुचा। सयोग ऐसा हुआ, कि जानीबेग बीमारी से अच्छा हो गया और उसे खबर मिली, कि बरदीबेग आ गया है। उसने तोगाय तुग्लु खातूनसे इसके बारेमें पूछा। खातूनने बेटेकी मुहब्बतसे झूठ बोल दिया। जानीबेगने तुबलुबाईको एकान्तमें बुलाकर चाहा कि उससे भेद लें। तुबलुबाई झूठ बोल बाहर आ बरदीकी सलाहसे उसी समय लोगोको लेकर भीतर घुसा, और एक फर्राश द्वारा जानीबेग खानको २१ जुलाई १३५७ ई० को उसके बिस्तरेपर मरवा डाला।

रूसी उसे "भला" जानीबेग कहते थे, जिससे मालूम होता है, कि रूसियोके साथ उसका बर्ताव अच्छा रहा। इसका यह भी अर्थ है, कि मास्कोके महाराजुलोंकी अपनी शक्ति बढाने और सारी रूसी जातिको एकताबद्ध करनेके मनसूबेमें जानीबेगकी ओरसे कोई बाधा नहीं हुई। जानीबेगके सिक्के १३४० से १३५७ ई० तकके मिलते है, जो सराय गुलिस्ता, नई सराय, नयागुलिस्ता, नया ओर्दू, ख्वारेज्म, मोक्सी, बरचिन और तब्रेजकी टकसालोमें ढाले गये थे।

जानीबेगके इस्लामप्रेमको मुस्लिम इतिहासकारोने स्वीकार किया है। उज्बेकके मरनेके चद ही महीने बाद गद्दी सभालते उसने अपने बापके कामको आगे बढाया और सारे उज्बेक-उलुसको मुसलमान बनाया, तमाम बौद्ध मदिरो (बुत-खानो) को धराशायी कराया, बहुत-सी मस्जिदो और मदरसो को बनवा मुसलमानोंके फायदेके लिये सभी तरहकी बाते की। चारो तरफसे मौलवी और विद्वान् उसके यहा आते थे। दश्ते-किपचकके अमीरोंके पुत्र इस समय बहुत विद्याव्यसनी हो गये थे। अनुनीम अस-कन्दरके अनुसार "उनकी महिमा आज भी मजलिसो और महफिलोमें गाई जाती है, और उस मुल्कका हरएक रस्म-रवाज इस्लामी देशोंके बाशिन्दो जैसा है।"

१२ बरदीबेग जानी-पुत्र (१३५७–५९ ई०)

बरदीने अपने बापको ही मरवाकर सतोष नही किया, बल्कि जिस बिस्तरेपर वह मारा गया था, उसीपर उसने बापके घातक फ़र्राशिको बैठा आज्ञा माननेसे इन्कारियोको मरवाने का इरादा किया। तुगलुबाईने उसकी बालको पसन्द किया और आज्ञा स्वीकार करानेके बहाने वह सारे ही बारह शाहजादोंको वहा जमा करवा मरवाने लगा। बरदीका आठ महीनेका एक सहोदर भाई था। तायदोलू खातूनने उसे गोदमें लिये आकर बहुत मिन्नत की, कि इस मासूम बच्चेको क्षमा कर दे। बेरदीबेगने उसे हाथसे छीन जमीनपर पटकर वही मार दिया। उसने तीन साल तक दृढ़तापूर्वक शासन किया।

जहातक रूसी राजुलोका सम्बन्ध है, महाराजुल इवान (मास्को), राजुल वासिली (त्वेर), उसके भतीजे वृसेवोलोद (खोल्म) के पदोंके लिये बरदीबेगने अपनी स्वीकृति दी।

१३५६ ई० में मास्कोका महाराजुल इवान मर गया, इसी साल किलदीबेग (कुलफा) ने बरदीबेगको कत्ल कर दिया।

१३ किलदीबेग, कुलफा (१३५९ ई०)

किलदीबेगने बरदीबेगके कत्लके साथ उसके शुरू किये वशोच्छेदके कामको पूरा कर दिया। अब कोक (सुवर्ण)-ओर्दू राजवशका एक भी नामलेवा नही रह गया। सारे ओर्दू में गडबडी मच गई। अमीरोने अधिकारको अपने हाथमें रखनेके लिये बेरदीबेगके हत्यारेको जानीबेगका पुत्र कहकर गद्दीपर बैठाया। हर अमीर अपनी शक्तिको बढानेके लिये पीठ पीछे षड्यत्र रच रहा था। इसी षड्यत्रमें अमीर यर्गालबुगा, अमीर अहमद और अमीर नाङ्-गू-दाई निर्वासित हुये। इसी समय सरकारके एक बडे अधिकारी नग्लसबाई (?) ने किलदीबेगको मार एक दूसरे आदमीको गद्दीपर बैठाया, जो कि तीन रोज बाद मारा गया।

१४ नौरोजबेग, १५ चेरकेसबेग (१३७४ ई०)

ये दोनो भी इसी तरह कुछ दिनोके लिये सिंहासनपर बैठे। फिर कोक (सुवण) ओर्दूके अमीरोने श्वेतओर्दूके खान चिमताईके पास जा गद्दी सभालनेके लिये बहुत निमत्रण और आवेदन किया, लेकिन उसने उसे न स्वीकार कर अपने भाई ओर्दाशेखको भेजा।

१६ ओर्दाशेख

श्वेत-ओर्दूका यह राजकुमार बातूके सिंहासनपर बहुत दिनोतक नही टिक सका। किसीने "कसे ओक-ओर्दूके सिंहासनपर अक-ओर्दूका आदमी बैठेगा" कह एक रात तलवारसे ओर्दाशेखका काम तमाम कर दिया। इसपर अमीरोने कुछ बेगुनाह आदमियोके ऊपर अपराध लगाकर मरवाया।

१७ खिजिर ससीबूगा-पुत्र

अब ओर्दाशेखके भाई खिजिर ओगलानको गद्दीपर बैठाया गया, जो भी नौ महीना राज्य करनेके बाद खतम हुआ।

आगे इतिहासकार अनूनीम अस्वन्दरने निम्न खानोका होना बतलाया है—

१८ कुलफा, ससीबूगा-पुत्र

खिजिरके एक साल भी बादशाही न करके मर जानेके बाद उसके भाई कुलफाको गद्दीपर बैठाकर नौ महीने बाद उसे भी कत्ल कर दिया गया।

१९ तेमूरखोजा, ओर्दाशेख-पुत्र

फिर तेमूरखोजा अमीरोका खिलौना बना। वह बडा ही व्यभिचारी निकला। लोग दो साल तक उसे बर्दाश्त करते रहे। एक रात किसी स्त्री के साथ बलात्कार करनेके लिये घरमें घुसा देख, पतिने अनजाने ही उसे तलवारके घाट उतार दिया।

२० मुरीद ओर्दशेख-पुत्र

इसने तीन सालतक राज्य किया, लेकिन अब इन खानोगे बदचलनी विशेषकर अप्राकृतिक व्यभिचारका मर्ज बहुत फैल गया था। अपने अमीरुल्-उमरा (अमीरोके अमीर) मोगलबक पुत्र इलियासके सुदर लडकेपर मुग्ध हो मुरीदने चाहा, कि बापको मारकर उसका स्थान बेटेको दे दे। यह भेद मुरीद-खानकी खातूनको मालूम हो गया। उसने ईर्ष्या या बेवकूफीसे यह खबर इलियासके पास भेज दी। उसने अवसर न दे खानको ही मार डाला।

२१ अजीज तेमूरखोजा-पुत्र

इसकी आदत भी अपने पूर्वगामियो जैसी थी और इसने प्रसिद्ध सत सैयद अताके वशवाले एक लडकेको भ्रष्ट किया। भेद खुलनेपर पश्चात्ताप करके उस लडकेसे इसने अपनी लडकी ब्याह दी, लेकिन तीन साल बाद फिर वही चाल चलने लगा, जिसके कारण उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा।

२२ हाजी खा एर्जन-पुत्र

श्वेत-ओर्दूके खान एर्जन (१३१९-४४ ई०) के पुत्रको अब बलिका बकरा बनानेके लिये लाया गया। वह कुछ दिनो तक अच्छा रहा, फिर खानदानी बदचलनी का भूत इसके सिरपर भी सवार हुआ। एक बार तोबा की, लेकिन फिर वही रफ्तारे-बेढगी। अन्तमें वह आधी रातको अपने सोनेके वस्त्रोमें ही मार डाला गया।

अनुनीम अस्कन्दरके अनुसार हिजरी सन् ७५१* मे ७६५ के बारह सालोमें आठ बादशाह हुये। इसके बाद श्वेत-ओर्दूके खान उरुसखानने श्वेत-ओर्दू और कोक-ओर्दूको इकट्ठा करके शासन करना शुरू किया, जिसका परिणाम तोकतामिशके रूपमें एक बार जू-छिके वशका चरम उत्कर्ष तथा तेमूर-लगके प्रहारके कारण उसका सत्यानाश हुआ।

सुवर्ण (कोक)-ओर्दूके रूपमें मगोल-शक्ति आधे युरोपतक छा गई। रूसके तो सभी शासक उसके अधीन दाससे थे। यद्यपि मगोलोने अपने इन अधीन लोगोपर बहुत अत्याचार किये, लेकिन तब्रेज और दूसरी जगहोंके निर्मम हत्याकाडोंके सामने वह कुछ नही थे। मगोलोंके शासनके साथ ही वाणिज्य और शिल्पकी बडी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जहा मगोल शासकोको बहुत लाभ हुआ, वहा मास्कोको आगे बढनेका मौका मिला और धीरे-धीरे पुरानी बुल्गार नगरीका स्थान मास्कोने ले लिया। व्यापार द्वारा प्राप्त प्रचुर धन-राशिके बलपर मास्कोके महाराजुलोंने सुवर्ण-ओर्दूके खानोको अपने वशमें कर अपनी शक्ति बढाई, रूसका एकीकरण करना शुरू किया और अन्तमें रूसकी शक्तिके उत्कर्ष तथा जू-छि-वशके आतरिक कलहके कारण सुवर्ण-ओर्दूका अस्तित्व खतम हो गया। इसी कालमें मास्कोके महाराजुलोने खानकी ओरसे कर उगाहनेका अधिकार पा अपनी ओरसे इस कामपर अपने अधीनस्थ बायरोको लगाया—रूसी प्रजा अब बायर, महाराजुल और खान तीनोके उत्पीडन तथा शोषणके नीचे दबकर कराहने लगी। उसका स्वतत्रता-प्रेम और जनतान्त्रिकताकी भावना लुप्त हो चली, और अत्याचारके मारे कितने ही रूसी भाग-भागकर दूसरी जगहोमें जाकर बसने लगे।

* ७५१ हि० (११मार्च १३५०–२७फर्वरी १३५१ ई०), ७६५ हि० (१०अक्तूबर–२७ सितबर १३६३ ई०)

सुवर्ण-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष
(१२२४–१३७४ ई०)
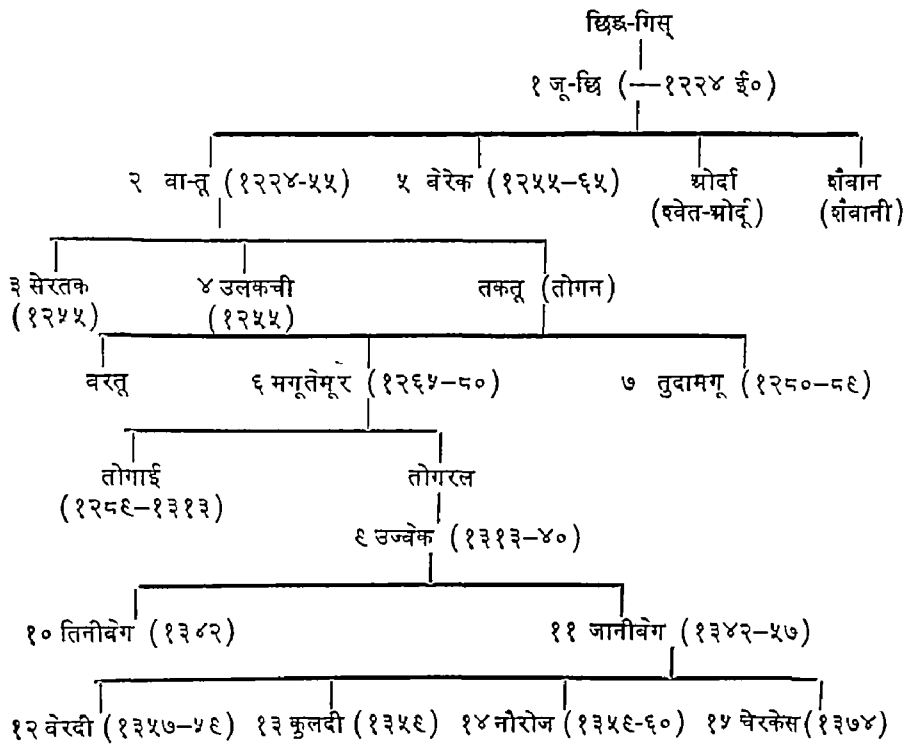
श्वेत-ओर्दू

(१२२४-१४२५ ई०)

१ जू-छि (तू-शी) खान

छिङ्-गिसूके ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके बारेमें हम पहले बतला चुके है। उसके मरनेके बाद उसका सिंहासन ज्येष्ठ पुत्र ओरदाको न मिलकर बा-तूको मिला। ओरदाको बापके राज्यका पूर्वी भाग मिला, लेकिन उसने अपने वंशको बा-तूके सिंहासनके अधीन माना। ओरदाका उलुस श्वेत-ओर्दू (अक-ओर्दू) नामसे प्रसिद्ध हुआ, जिसके खान निम्न प्रकार थे —

		काल
		–१२२४ ई०
१	जू-छि, छिङ्-गिस्-पुत्र	१२२४ "
२	ओरदा जू-छि-पुत्र	–१३०१ "
३	कोनिचि ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र	१३०१ "
४	बायन कोनिचि-पुत्र	१३९९ "
५	ससीबूगा बायन-पुत्र	१३९९–४४ "
६	एर्जन ससीबूगा-पुत्र	१३४४ "
७	मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र	१३४४–१३६१ "
८	चिमतई एर्जन-पुत्र	१३६१–७० "
९	उरुस चिमतई-पुत्र	१३७० "
१०	तोकताकिया उरुस-पुत्र	१३७०–७५ "
११	तेमूरबेग उरुस-पुत्र	१३७५–९७ "
१२	तोकतामिश तुलि-पुत्र	१३९५
१३	नूजी ओगलान	१३९५–१४०० "
१४	तेमूरकुतुलुक, तेमूरबेग-पुत्र	१४००–८ "
१५	शादीबेग, तेमूरबेग-पुत्र	१४०८–१० "
१६	पूलाद तेमूरबेग-पुत्र	–१४११ "
१७	तेमूर कुतुलुक-पुत्र	१४११–१२ "
१८	जलालुद्दीन तोकतामिश-पुत्र	१४१२–
१९	करीमबरदी तोकतामिश-पुत्र	
२०	कपक, किबेक	
२१	चिङ-गिज	१४१७ "
२२	जब्बारबरदी तोकतामिश-पुत्र	"
२३	मुहम्मद	१४२२–३८ "
२४	बोराक, बुराक, बुर्गक	१४२५–२८ "
२५	मैयत अहमद	
२६	दरवीस	
२७	किबेक	–१४२२
२८	उलुग मोहम्मद	१४३७

२ ओरदा, एसन, एछन जू-छि-पुत्र (१२२४–)

ओरदाके राज्यके भीतर सिगनाक, तरस, उतरार जैसे प्रसिद्ध वाणिज्य-नगर थे। इसके ओर्दूके दक्षिण और दक्षिण-पूवमें चगताई, पूर्वमें ओगोताई तथा पश्चिममें बा-तूका ओर्दू था, जिसका कि यह अग माना जाता था। उत्तरमें वह साइबेरियाके भीतरतक घुसा हुआ था। ओरदाका ओर्दू (पशुपाल सैनिक परिवार-समूह) गमिया बलकाश समुद्रके पासकी चरागाहोमें विताता और जाडोमें सिर नदीपर चला आता था। ओरदाका पुत्र कूली खुलाकूके ईरान-विजयमें शामिल होनेके लिये ख्वारेज्मसे दहिस्तान और माजदरान गया था।

३ कोनिचि, कोची ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र (–१३०१ ई०)

मगोल इतिहासकर रशीदुद्दीन*(१२४७–१३१७ ई०) के अनुसार यह ओरदा (श्वेत) उलुसका बहुत समयतक शासक रहा। अरगून खान (१२८४–९२ ई०) और गजनखान (१२९५–१३०४ ई०) के साथ इसका बहुत अच्छा सम्बन्ध था और उनसे सौगातो और दूतोका आदाना-प्रदान होता था। कोनिचि असाधारण मोटा था, कोई घोडा उसे ढो नही सकता था, इसलिये वह गाडी पर एक जगहसे दूसरी जगह जाता था। इसके पुत्रोमे मुख्य चार थे—बायन, बचकरतइ, चगुनबुका, मकुदई। मारको पोलोने इसके बारेमें लिखा है —

"सुदूर उत्तरमे एक खान ह, जिसका नाम कोनिचि है। वह तारतार (मगोल) है और उसके सारे लोग तारतार है, जो नियमपूवक तारतार धमको मानते है। यह बडा ही पाशविक धम है, लेकिन वह *उसका उसी तरह पालन करते है, जैसे कि छिङ-गिस् और दूसरे मुख्य तारतार। खान किसीके अधीन* नही है, यद्यपि वह छिङ-गिस् खानके शाही वशका तथा महान् कआन (कुबिले खान) का नजदीकी सबधी है। इस खानके पास न नगर है न महल। वह और उसके लोग सदा या तो खुले मैदानोमें रहते है या बडे पहाडों और उपत्यकाओमें। वह अपने जानवरोंके दूध और मासपर गुजारा करते है। उनके पास अनाज नही होता। खानके पास बहुसख्यक लोग है, लेकिन वह किसीके साथ युद्ध नही करता। उसकी प्रजा बडी शानिसे रहती है। उनके पास भारी सख्या में पशु—ऊट, घोडे, बैल, गाय, भेडें आदि है।

"उनके देशमें तुम्हें बीस मुट्ठीसे अधिक लम्बे तथा बिल्कुल सफेद विशालकाय भालू मिलेंगे। वहा बडी-बडी काली लोमडिया, जगली गदहे और भारी सख्यामें सेवल होते है। यही सेवल वह जन्तु है, *जिनके चमडेकी बहुमूल्य पोशाक बनती है, एक-एकका दाम हजार बेजत (सिक्के) होते है।* वहापर वेयर (समूरी जतु) भी बहुतायतसे होते है और फरऊनी चूहे भी। इन्हीके शिकारपर लोग सारी गमिया जीते है। वस्तुत वहा सब तरहके जगली जानवर बहुतायतसे होते ह, क्योकि उनका देश बहुत दुगम और वन्य है।

"इस खानका देश ऐसा है, जहा घोडे नही जा सकते, क्योकि वहापर बहुतायतसे झीलें और चश्मे है, साथ ही बहुत बफ, कीचड और दलदल भी है, जिसपर घोडे नही चल सकते। यह कठिन मुल्क तेरह दिनोंके रास्तेतक फैला हुआ है। हर दिनकी यात्राके बाद एक टिकान है, जहापर कि सब तरहका इतिजाम है। प्रत्येक टिकानपर घर बने हुये है, जिनमें चालीस कुत्ते तैयार रहते है। यह कुत्ते आकारमें गदहोंसे कम नही होते। यही कुत्ते एक टिकानसे दूसरी टिकानतक सवारी-गाडियोको खीचते है। इनकी गाडिया बिना पहियेकी होती है। गाडीके ऊपर भालूका चमडा रखकर सवार बैठ जाता है। हरेक गाडीको ६ कुत्ते खीचते है। कुत्तोका कोई कोचवान नही होता। अगली टिकानपर नय कुत्ते और गाडी तैयार मिलती है।

* "जाम-उत्-तवारीख" ज० ओ० पृष्ठ ४२

"तेरह दिनकी यात्राके अन्तपर आसपासके पहाड़ो और उपत्यकाओ के रहनेवाले लोग बड़े शिकारी होते है। वह उन बहुमूल्य छोटे-छोटे जन्तुओको पकड़ते है, जिनमे कि उनको भारी लाभ होता है। यह जन्तु है-सेवल, एरमिल, वेयर, एरकुलिन, काली लोमड़ी तथा और बहुत-से प्राणी। इन्हीके चमड़ेका बहुमूल्य समूर बनाया जाता है। शिकारी जाल इस्तेमाल करते है । उस प्रदेशमें सर्दी इतनी अधिक है, कि लोगोंके सारे निवास धरतीके भीतर होते है, वह सदा भूघरे हीमें रहते है।"[1]

मार्को पोलोने यहा जिस देशका वर्णन किया है, वह साइबेरिया है, इसमे सन्देह नही। उसे यह खबर कुबिलेके दरबारमें गये कोनिचिके दूतमडलसे मिली होगी।

इतिहासकार अबुल्-फेदाके अनुसार कोनिचि बामियान और गजनी तथा कुछ काबुलके पासवाले प्रदेशोंका भी शासक था। हुलाकूके ईरान-विजयके समय उसकी मददके लिये आये अक-ओर्दूवालोंने यह स्थान अपने हाथमें कर लिये थे, इस प्रकार अक-ओर्दूका यह दक्षिणी भाग उत्तरी भागसे बिल्कुल अलग-थलग था, बीचमें चगताई-वशकी भूमि थी। ओरदा-पुत्र कुलीने हुलाकूकी मदद करते समय अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिमवाले इस प्रदेशपर अपना शासन स्थापित करके भी उसे श्वेत-ओर्दूके अधीन ही रखा। हुलाकूको पीछे कुलीसे इतना भय लगा, कि उसने उसे जहर दिलवा दिया।

१२९३ ई० में कोनिचि (कुवी) का दूतमडल इलखान (ईरानी शासक) जयखातूके दरबारमें आया था। कोनिचि हिजरी सन् ७०१ (१३०१-१३०२ ई०) में मरा।

४ बायन कोनिचि-पुत्र (१३०१-९)

बायनको पिताका राज्य कुछ समयके बाद मिला। शायद इसे उत्तरवाला भाग ही मिला, बामियान-गजनाको उसके भाई कुबलुक (क्यूलुक) ने ले लिया। बायनके हाथमें यह दक्षिणी भाग न जाने पाये, इसके लिये चगताई खान दावा और ओगोताइखान कैदूने भी कुबुलुककी मदद की थी। बायनका दूसरा भाई मङ-ताई था। इसकी बीबी तुकुलुन खातून प्रभावशाली ककुरत कबीलेकी थी। पिताके मरनेपर मगोल प्रथाके अनुसार तीन सौतेली मायें तरकुजिन, जिकमूत् और अलतानू भी इसकी बीबियां बनी। इन चारोंके अतिरिक्त उसकी तीन और बीबियोका भी पता लगता है। श्वेत-ओर्दूका दूसरा खानजादा-कुतुकू-पौत्र, तेमूरबूका-पुत्र कुबुलुक (कोवलेक, क्यूलुक)से बायनका जबर्दस्त सघर्ष रहा। १३०९ ई० में कुबुलुकने दक्षिणी राज्य (बामियान-गजना) छीना था। थोड़े दिनो बाद बायनने फिर उसपर अधिकार कर लिया। कैदू और दावा कुबलुककी पीठपर थे और बायनका राज्यकेंद्र चगताई राज्यके पार दूर पड़ता था, तो भी ख्वारेज्मसे इलखानके इलाकामें होते श्वेत-ओर्दूकी सेनायें गजनी पहुंच सकती थी। सुवर्ण-ओर्दूके साथ बायनका बहुत अच्छा सबध था, लेकिन तोगताइ खान नोगाइकी लड़ाइयोमे फसे होनेसे कोई बड़ी मदद करनेमें असमर्थ था। बायनने इलखान गजनको मदद देनेके लिये लिखा, और उसने मदद भी दी। समकालीन इतिहासकार रशीदुद्दीन लिखता है-"हमारे काल में अठारह बार बायनने कुबुलुकसे लड़ाई की।" कुबुलुकके साथ हो कैदू और दावाकी भी सेनायें लड़ती रहीं। कैदूके मरनेके बाद जब उसका पुत्र चापर ओगोदाइ-उलुसका खान बना, तो तोगताईने उसे कई बार लिखा, कि दावा खानको कुबुलुककी मदद करनेसे रोको, लेकिन बापकी तरह वह भी कुबुलुककी पीठपर था। उसने जवाब दिया-"गजनसे लड़ते समय कुबुलुकने हमारी सहायता की, इसलिये हम उसकी मदद करते है।" हिजरी सन् ७०२[2] में बायनने अपने बापके समयके अमीर केलस तथा तुकतेमूरके नेतृत्वमें एक बड़ी भेंट भेज, गजनको कहलवाया कि हम चापर और दावाके विरुद्ध लड़ने जा रहे है, तोगताई खान हमारा सहायक है। उसने दो तुमान (बीस हजार) सेना हमारे पास भेजी। सेना आगे बढ़ी, लेकिन कैदू और चगताईके उलुसोने बीच में पड़कर कजानकी सेनासे उसे

[1] यूल-सम्पादित मार्को पोलो २ ४१०-१२। [2] २६ अगस्त १३०२--१४ जुलाई १३०३ ई०।

२ ओरदा, एसन, एछन जू-छि-पुत्र (१२२४–)

ओरदाके राज्यके भीतर सिगनाक, तरस, उतरार जैसे प्रसिद्ध वाणिज्य-नगर थे। इसके ओर्दूके दक्षिण और दक्षिण-पूवमें चगताई, पूर्वमें ओगोताई तथा पश्चिममें बा-तूका ओर्दू था, जिसका कि यह भग माना जाता था। उत्तरमें वह साइबेरियाके भीतरतक घुसा हुआ था। ओरदाका ओर्दू (पशुपाल सैनिक परिवार-समूह) गर्मिया बलकाश समुद्रके पासकी चरागाहोंमें बिताता और जाडोंमें सिर नदीपर चला आता था। ओरदाका पुत्र कूली खुलाकूके ईरान-विजयमें शामिल होनेके लिये ख्वारेज्मसे दहिस्तान और माजदरान गया था।

३ कोनिचि, कोची ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र (–१३०१ ई०)

मगोल इतिहासकर रशीदुद्दीन*(१२४७–१३१७ ई०) के अनुसार यह ओरदा (श्वेत) उलुसका बहुत समयतक शासक रहा। अरगून खान (१२८४–९२ ई०) और गजनखान (१२९५–१३०४ ई०) के साथ इसका बहुत अच्छा सम्बन्ध था और उनसे सौगातो और दूतोका आदाना-प्रदान होता था। कोनिचि असाधारण मोटा था, कोई घोडा उसे ढो नही सकता था, इसलिये वह गाडी पर एक जगहसे दूसरी जगह जाता था। इसके पुत्रोमें मुख्य चार थे—बायन, बचकरतड, चगुनबुका, मकुदई। मारको पोलोने इसके बारेमें लिखा है —

"सुदूर उत्तरमे एक खान ह, जिसका नाम कोनिचि है। वह तारतार (मगोल) है और उसके सारे लोग तारतार है, जो नियमपूवक तारतार धमको मानते है। यह बडा ही पाशविक धम है, लेकिन वह उसका उसी तरह पालन करते है, जैसे कि छिङ्ग-गिस् और दूसरे मुख्य तारतार। खान किसीके अधीन नही है, यद्यपि वह छिङ्ग-गिस् खानके शाही वशका तथा महान् कआन (कुबिले खान) का नजदीकी सबधी है। इस खानके पास न नगर है न महल। वह और उसके लोग सदा या तो खुले मैदानोमें रहते है या बडे पहाडों और उपत्यकाओमें। वह अपने जानवरोंके दूध और मासपर गुजारा करते है। उनके पास अनाज नही होता। खानके पास बहुसख्यक लोग है, लेकिन वह किसीके साथ युद्ध नहीं करता। उसकी प्रजा बडी शातिसे रहती है। उनके पास भारी सख्या में पशु—ऊट, घोडे, बैल, गाय, भेडें आदि है।

"उनके देशमे तुम्हे बीस मुट्ठीसे अधिक लम्बे तथा बिल्कुल सफेद विशालकाय भालू मिलेंगे। यहा बडी-बडी काली लोमडिया, जगली गदहे और भारी सख्यामें सेबल होते है। यही सेबल वह जन्तु ह, जिनके चमडेकी बहुमूल्य पोशाक बनती है, एक-एकका दाम हजार बेजत (सिक्के) होते ह। वहापर वेयर (समूरी जतु) भी बहुतायतसे होते है और फरऊनी चूहे भी। इन्हींके शिकारपर लोग सारी गर्मिया जीते है। वस्तुत वहा सब तरहके जगली जानवर बहुतायतसे होते हैं, क्योंकि उनका देश बहुत दुगम और वन्य है।

"इस खानका देश ऐसा है, जहा घोडे नही जा सकते, क्याकि वहापर बहुतायतसे झील और चश्मे है, साथ ही बहुत बर्फ, कीचड और दलदल भी है, जिसपर घोडे नही चल सकते। यह कठिन मुल्क तेरह दिनोंके रास्तेतक फैला हुआ है। हर दिनकी यात्राके बाद एक टिकान है, जहापर कि सब तरहका इतिजाम है। प्रत्येक टिकानपर घर बने हुये है, जिनमें चालीस कुत्ते तैयार रहते है। यह कुत्ते आकारमे गदहोंसे कम नही होते। यही कुत्ते एक टिकानसे दूसरी टिकानतक सवारी-गाडियोको खीचते है। इनकी गाडिया बिना पहियेकी होती है। गाडीके ऊपर भालूका चमडा रखकर सवार बैठ जाता है। हरेक गाडीको ६ कुत्ते खीचते है। कुत्तोका कोई कोचवान नही होता। अगली टिकानपर नये कुत्ते और गाडी तैयार मिलती है।

* "जाम-उत्-तवारीख" ज० ओ० पृष्ठ ८२

"तेरह दिनकी यात्राके अन्तपर आसपासके पहाड़ों और उपत्यकाओं के रहनेवाले लोग बड़े शिकारी होते हैं। वह उन बहुमूल्य छोटे-छोटे जन्तुओंको पकड़ते हैं, जिनसे कि उनको भारी लाभ होता है। यह जन्तु हैं—सेवल, एरमिन, वेयर, एरकुलिन, काली लोमड़ी तथा और बहुत-से प्राणी। इन्हींके चमड़ेका बहुमूल्य समूर बनाया जाता है। शिकारी जाल इस्तेमाल करते हैं। उस प्रदेशमें सर्दी इतनी अधिक है, कि लोगोंके सारे निवास धरतीके भीतर होते हैं, वह सदा भूधरे हीमें रहते हैं।"[1]

मार्को पोलोने यहा जिस देशका वर्णन किया है, वह साइबेरिया है, इसमें सन्देह नहीं। उमे यह खबर कुबिलेके दरबारमें गये कोनिचिके दूतमंडलसे मिली होगी।

इतिहासकार अबुल-फेदाके अनुसार कोनिचि बामियान और गजनी तथा कुछ काबुलके पासवाले प्रदेशोंका भी शासक था। खुलाकूके ईरान-विजयके समय उसकी मददके लिये आये अक-ओर्दूवालोंने यह स्थान अपने हाथमें कर लिये थे, इस प्रकार अक-ओर्दूका यह दक्षिणी भाग उत्तरी भागसे बिल्कुल अलग-थलग था, बीचमें चगताई-वंशकी भूमि थी। ओरदा-पुत्र कुलीने खुलाकूकी मदद करते समय अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिमवाले इस प्रदेशपर अपना शासन स्थापित करके भी उसे श्वेत-ओर्दूके अधीन ही रखा। खुलाकूको पीछे कुलीसे इतना भय लगा, कि उसने उसे जहर दिलवा दिया।

१२९३ ई० में कोनिचि (कुबी) का दूतमंडल इलखान (ईरानी शासक) जयखातूके दरबारमें आया था। कोनिचि हिजरी सन् ७०१ (१३०१-१३०२ ई०) में मरा।

४ बायन कोनिचि-पुत्र (१३०१-९)

बायनको पिताका राज्य कुछ संघर्षके बाद मिला। शायद इसे उत्तरवाला भाग ही मिला, बामियान-गजनाको उसके भाई कुवलुक (क्यूलुक) ने ले लिया। बायनके हाथमें यह दक्षिणी भाग न जाने पाये, इसके लिये चगताई खान दावा और ओगोताइखान कैदूने भी कुवलुककी मदद की थी। बायनका दूसरा भाई मङ-ताई था। इसकी बीबी नुकुलुन खातून प्रभावशाली ककुरत कबीलेकी थी। पिताके मरनेपर मंगोल प्रथाके अनुसार तीन सौतेली मायें तरकुजिन, जिकपुन् और अलताचू भी इसकी बीबियां बनी। इन चारोंके अतिरिक्त उसकी तीन और बीबियोंका भी पता लगता है। श्वेत-ओर्दूका दूसरा खानजादा-कुतुकू-पौत्र, तेमूरबूका-पुत्र कुबुलुक (कोवलेक, क्यूलुक)से बायनका जबर्दस्त संघर्ष रहा। १३०९ ई० में कुबुलुकने दक्षिणी राज्य (बामियान-गजना) छीना था। थोड़े दिनों बाद बायनने फिर उसपर अधिकार कर लिया। कैदू और दावा कुबलुककी पीठपर थे और बायनका राज्यकेंद्र चगताई राज्यके पार दूर पड़ता था, तो भी ख्वारेज्मसे इलखानके इलाकामें होते श्वेत-ओर्दूकी सेनायें गजनी पहुंच सकती थीं। सुवर्ण-ओर्दूके साथ बायनका बहुत अच्छा संबंध था, लेकिन तोगताइ खान नोगाइकी लड़ाइयोंमें फंसे होनेसे कोई बड़ी मदद करनेमें असमर्थ था। बायनने इलखान गजनको मदद देनेके लिये लिखा, और उसने मदद भी दी। समकालीन इतिहासकार रशीदुद्दीन लिखता है—"हमारे काल में अठारह बार बायनने कुबुलुकसे लड़ाई की।" कुबुलुकके साथ हो कैदू और दावाकी भी सेनायें लड़ती रहीं। कैदूके मरनेके बाद जब उसका पुत्र चापर ओगोदाइ-उलुसका खान बना, तो तोगताईने उसे कई बार लिखा, कि दावा खानको कुबुलुककी मदद करनेसे रोको, लेकिन बापकी तरह वह भी कुबुलुककी पीठपर था। उसने जवाब दिया—"गजनसे लड़ते समय कुबुलुकने हमारी सहायता की, इसलिये हम उसकी मदद करते हैं।" हिजरी सन् ७०२[2] में बायनने अपने बापके समयके अमीर केलस तथा तुक्तेमूरके नेतृत्वमें एक बड़ी भेंट भेज, गजनको कहलवाया कि हम चापर और दावाके विरुद्ध लड़ने जा रहे हैं, तोगताई खान हमारा सहायक है। उसने दो तुमान (बीस हजार) सेना हमारे पास भेजी। सेना आगे बढ़ी, लेकिन कैदू और चगताईके उलुसोंने बीच में पड़कर कआनकी सेनासे उसे

१ यूल-सम्पादित मार्को पोलो २ ४१०-१२। २ २६ अगस्त १३०२—१४ जुलाई १३०३ ई०।

मिलने नही दिया। कुबुलुकने उनकी सहायतासे हमारा कुछ इलाका छीन लिया। ओरदा-उलुसका अधिक भाग हमारे साथ है, आदमियोकी हमें कमी नही है। हा, पैसेकी जरूरत है। इसपर गजनने वायन और उसके खातूनोंके लिये बहुत-से बहुमूल्य उपहार तथा काफी सोना भेजा।

१३०९ ई० मे कुबुलुक शक्तिशाली था। उसने उसी समय गजना और वामियानको छीन लिया था। उसके बाद उसका पुत्र कसतिमूर वहा का शासक बना। श्वेत-ओर्दूके लोग वायनके भाई मुङ्-ताईकी ओर थे।

५ ससीबूगा बायन-पुत्र (१३१९ ई०)

वायनके बाद उसका पुत्र ससीबूगा सिरपारवाले राज्यका स्वामी बना और गजना वामियान अब कोनिचि-पुत्र मुङ्-ताईके हाथमें चला गया। ससीबूगाकी मा कुतुलुन (नुकुलुन) खातून थी। काजी अहमद गफ्फारी (मृत्यु १५७७-७८ ई०) ने अपने ग्रंथ "नस्खजहानारा" मे ससीको नौकाका पुत्र बतलाया है और कहा है, कि वह अपने भाईके बाद गद्दीपर बैठा, लेकिन रशीदुद्दीन जैसे समसामयिक तथा मगोल-वशके एक प्रामाणिक इतिहासकारके सामने गफ्फारीकी बातका मूल्य नही है।

६ एर्जन, एबिजन, ससीबूगा-पुत्र (१३१९-४४)

एर्जनका पचीस सालका शासन श्वेत-ओर्दूकी शक्ति और समृद्धिकी चरमसीमाका था। अपनी योग्यताके कारण वह उज्बेक खानका बहुत ही कृपापात्र था। राज-काजमें चतुर होते हुये, वह बडा विद्याप्रेमी था। उसने उतरार, सावरान,जद, बारजकद नगरोमें बहुतसे मदरसे, खानकाहे (मठ) और मस्जिदें बनवाईं। मार्को पोलो द्वारा वर्णित, कोनिचिकी बबर प्रजाके समयसे अब अक-ओर्दू कहासे कहा चला गया था? छिङ्-गिन्के तारतारो के पुराने धर्म छोडकर अब वह कट्टर मुसलमान हो चुके थे। इतिहासकार अनुनीम अस्क दरके[१] अनुसार "एजनने सारे तुर्किस्तान (अक-ओर्दू) को स्वर्गोपम (खुल्दबरी) बना दिया"। श्वेत-ओर्दूको ऐसी समृद्धि फिर स्वप्नमे भी नही मिली। उज्बेकके खानन एजनको गद्दीपर बैठाया था। पीछे इसके लडके खिजिर ओगलान और खुलफा उज्बेकके सिंहासनपर बैठे, यह हम पहले बतला चुके हं।

पचीस साल राज्य करनके बाद ७४५ हि०[२] में एजन मरा और सिगनाक नगरमें इसकी कब्र बनाई गई।

७ मुबारक खोजा एर्जन-पुत्र (१३४४ई०-)

यह भले बापका नालायक लडका निकला। अपने लोभ और बदमाशीके कारण ६ महीने मुश्किलसे राज्य कर पाया। इसके बाद दो सालतक अलताईके पहाडो और किरगिजो की भूमिमें मारा-मारा फिरता रहा। मरनेके बाद इसे भी सिगनाकमे दफनाया गया।

८ चिमताई एर्जन-पुत्र (१३४४-६२ ई०)

जानीवेगने इस भलेमानुस खान को गद्दीपर बिठाया। सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनके खाली होनेपर वहाके अमीरोने बहुत चाहा, कि चिमताई वातूके सिंहासनपर बैठे, लेकिन उसने स्वीकार नही किया। इसीके समय बरदीबेग, जानीबेग और किलदीबेगके दुराचार और अन्यायपूर्ण शासन हुये थे। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरो (शासको) के चरम पतनको देखते हुये उसने अपने सिंहासनपर ही सतुष्ट रहना पसन्द किया। बहुत जोर देनेपर उसने अपने भाई ओरदा शेखको वहा भेज दिया।

९ उरुस खान चिमताई-पुत्र (१३६१-७० ई०)

यह बडा ही मनस्वी खान था। सुवर्ण-ओर्दूकी नैयाके डगमगानेके समय इसने अपने बापपर बहुत जोर दिया, कि कोक-ओर्दूको भी अक-ओर्दूमें मिला लिया जाय, लेकिन चिमताईने नहीं माना। अब

१ ज० ओ० पृष्ठ २७०। २ १५ मई १३४४-३ मई १३४५ ई०।

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने सकल्प किया, कि सुवण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूको मिलाकर छिङ-गिम्‌के पुत्र जुछि और पौत्र बा-तूके समयके वैभवको पुन स्थापित किया जाय। इसने गद्दीके महोत्सवके समय ही जल्से में अपने इन विचारोको प्रकट किया। अमीरोने उसे पसद किया। उन्हे बडे-बडे इनाम दिये गये। लेकिन उसके अपने वशके तुका-तेमूर परिवारवाले तुईख्वाजा (तुलीख्वाजा)ने इसका विरोध किया, जिसके लिये उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा—तुइख्वाजा मनकिशलकका शासक था। पिताकी इस हत्याका बदला लेनेकी भावनाने उसके पुत्र तोकतामिशको उत्तेजित किया। लेकिन, अभी वह कम उमरका था, इसलिये क्या कर सकता था? तोकतामिश एक वार ओर्दूसे भाग गया, लेकिन लौटके आनेपर उसकी उमरका ख्याल करके क्षमा कर दिया गया। जब उरुस खान कोक-ओर्दूका भी स्वामी बन गया, तो तोकतामिश फिर भागकर विश्वविजेता तेमूरलग (१३०७–१४०४ ई०)के पास गया। उस समय तेमूरलग चगताई ओर्दूके दक्षिणी राज्यको अपने हाथमें करके उत्तरी राज्य (मुगोलिस्तानपर) पाचवा आक्रमण करना चाहता था। तेमूरने अपने सेनापति तेमूर उज्बेकको खानजादा तोकतामिशका स्वागत करनेके लिये भेजा। समरकन्द पहुचनेपर तेमूर उज्बेकने खानजादेको तेमूरके सामने पेश किया। तेमूरने तोकतामिशका राजसी स्वागत करते हुये सोना, जवाहरात, हथियार, बहुमूल्य पोशाक, घोडे, ऊट, तम्बू-ध्वजा-पताका, नगाडे तथा दास-दासी प्रदान किये और विदा करते वक्त उसे "पुत्र" कहकर सम्बोधित किया। तेमूरने उसे साबरान, उतरार, सिगनक, सैरान, सेराय तथा किपचकके दूसरे नगरोका स्वामी (शासक) बनाते यायिक (उराल) और सिर नदीके बीचके प्रदेशका राज्य प्रदान किया। यह भूभाग उरुस खानके अधीन था, इसलिये यह मान-प्रदान केवल मौखिक ही हो सकता था। उरुस खान चुप नही रह सकता था। उसने अपने पुत्र कुतुलुकबूगाको तोकतामिशका मुकाबिला करनेके लिये भेजा। कुतुलुकबूगा लडाईमें घायल होकर दूसरे दिन मर गया, तो भी तोकतामिशकी हार हुई और उसे फिर भागकर तेमूर लग की शरण लेनी पडी। लगडे तेमूरने फिर उसका पहले ही जैसा सम्मान करके फिर नई सेना दी। उरुस खानके ज्येष्ठ पुत्र तेगूताकियाने फिर तोकतामिशको हराया। तोकतामिश बडी मुश्किलसे सिर नदी तैरकर पार हुआ। उसका पीछा करते हुये कजनजी बहादुरने तीरसे उसके हाथको घायल कर दिया था। घासमें पडे तोकतामिशको अकस्मात् तेमूर लग द्वारा दिये मत्री इतिगू बेरलसने देखा। फिर वह उसे लेकर बुखारामें तेमूरके पास पहुचा। तेमूरने फिर उसे और भी बडे साजोसामान तथा सेनाके साथ भेजा। इस समय यदकू (मङ्गुत या तिमिर कुतुलुकका पुत्र) तोकतामिशका समर्थक बनकर बुखारा चला आया था। उसने खबर दी, कि उरुस खान बडी सेना लेकर लडनेके लिये आ रहा है। केपेक मङ्गुत और तुलजियानने तेमूरके दरबारमें जाकर उरुस खानके सदेशको कहा—"तोकतामिश मेरे पुत्रको मारकर तुम्हारी शरणमें चला आया है। तुम मेरे शत्रुको मेरे हाथमें अर्पण कर दो, यदि इन्कारी हो तो मै युद्ध घोषित करता हू। हमें अब युद्धक्षेत्र चुनना होगा।"

तेमूर लगने उत्तर दिया—"तोकतामिशने अपनेको मेरी शरणमे दे दिया है। मै उसकी रक्षा करूगा। जाकर उरुस खानसे कह दो, कि उसकी ललकारको ही स्वीकार नही करता, बल्कि मै और मेरे सिपाही सिहकी तरह—जो कि जगलमें नहीं बल्कि युद्धक्षेत्रमें बास करते है—लडनेके लिये तैयार है।"

तेमूर लगने अमीर यदकूकोइको समरकन्दका शासक नियुक्त कर १३७६ ई०के अन्तमें प्रस्थान कर उतरारके मैदानमें डेरा डाला। उरुस खान अपनी सेनाके साथ वहासे चौबीस फरसक दूर सिगनाकमें था। एक जबर्दस्त आधी-पानी आया, जिसके बाद भयकर सर्दी हो गई। इसकी वजह से तीन महीनेतक कोई सैनिक कार्रवाई नही हो सकी। फिर तेमूरने कताई बहादुर और मोहम्मद सुलतानशाहको रातमें आक्रमण करनेका हुक्म दिया। जबर्दस्त सघर्ष हुआ। उरुस खान-पुत्र तेमूर मलिक ओगलानने तीन हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया। कताई बहादुर और एरेक तेमूर मारे गये, तेमूर मलिक भी आहत हुआ। तेमूर लगकी विजय हुई। उसने अबू-मोहम्मद सुलतानशाह और अमीर मवशेरको भी पता लगानेके लिये भेजा।

लडाई आगे नही हो सकी। उरुस खान दश्तेकिपचक लौट गया और तेमूर लग केश (शहरसब्ज) की ओर। नौ साल राज्य करनेके बाद १३७० ई० में उरुस खान स्वाभाविक मृत्युसे मर गया।

अनुकूल समय देखकर तेमूर फिर दश्तेकिपचककी ओर रवाना हुआ। उसके सेनाग्रका सेनापति तोकतामिश था, जो बडी तेजीसे बढ़ते हुये पद्रह दिनमें सैरामकामिश (हरिनोके नरकट) में पहुच गया और एकाएक आक्रमण करके उसने शहरको लूट लिया। वहासे उसे वहुतसे घोडे, ऊट और भेडे हाथ लगी।

१० तोगुताकिया, उरुस-पुत्र (१३७०--   )

पिताकी जगहपर यह गद्दीपर वैठा, लेकिन दो ही महीने वाद मर गया। इसके वाद इसके भाई तेमूरवेग (तेमूर मलिक) को गद्दी मिली।

११ तेमूरवेग, तेमूरमलिक उरुस-पुत्र, मोहम्मदखान-पुत्र (१३७०-७५ ई०)

यद्यपि सिंहासनके लिये उसका प्रतिद्वद्वी तेमूर लग जैसे विख्यात विजेता की सहायता-प्राप्त तोकतामिश था,लेकिन तेमूरवेगको इसकी परवाह नही थी। वह हद दर्जेका ऐशपसद था, रात-दिन शरावमें मस्त रहता। उसके अत्याचारोंसे लोग परेशान थे। तो भी तोकतामिशने इसके ऊपर आक्रमण करके फिर एक वार हार खाई। लेकिन तेमूरवेकके अत्याचारोंसे उसके वडे-वडे अमीर भी परेशान थे। उनको विश्वास होने लगा था, कि इसके रहते श्वेत-ओर्दूको अच्छे दिनोकी आशा नही हो सकती। एक प्रसिद्ध अमीर औरग तेमूरने तेमूर लगके पास भागकर उसे और उभाडा। तेमूरने अवके गयासुद्दीन, तरखन, तोमन तिमूरके वख्शी खोजाके साथ भेजा। जागीर मागनेपर न देनेसे नाराज होकर एक और अमीर उज्वेक तेमूर भी तेमूर लगके पास भाग आया, जिसने उससे कहा—"तेमूर मलिक दिन-रात शरावमें मस्त पडा रहता है। पहर भर दिनतक सोता रहता है, जो कि भोजनका समय है। किसीकी हिम्मत नही, कि उसे जगाये। लोग अव उससे उकता गये है, और चाहते है, कि तोकतामिश आवे।" उस समय तोकतामिश सिगनकमें था। तेमूरने तोकतामिशको खवर दी। तेमूरवेकने जाडो (१३७७ ई०) को करातागमें विताया। १३७७ ई० में तेमूर लगने तोकतामिशको हमला करनेके लिये हुक्म दिया। इसी जाडेमें तेमूरवेकका एक वडा भारी दरवारी कापवहादुर भी उसका साथ छोडकर तोकतामिशके पास चला आया। तोकतामिशने आक्रमण करके तेमूरवेकको पूरी तौरसे हरा दिया और उरुसखोजा द्वारा विजयका समाचार तेमूरलगके पास भेजा। तेमूरने भारी खुशी मनाई, उरुसखोजाको खलअत और सुनहला कमरवन्द दिया, लौटनेके समय धन और घोडे प्रदान किये।

जाडोमें फिर तोकतामिश सिगनकमें रहा तेमूरवेकका पीछा करते पश्चिमी किपचकके मेमक स्थानकी ओर वढा।

इसपर भी तेमूरवेकको होश नही आया। वह ७८५ हिजरी (६ माच १३८३–२३ फवरी १३८४) में निर्णायिक लडाई लडनेके लिये करातालकी ओर वढने लगा। तेमूरवेकने गद्दीपर वैठते समय वेवकूफीसे अक-ओर्दूके एक तुमान (सेराय सोलकुल) को अपने चचेरे भाई मोहम्मद ओगलानको दे दिया था। अव उसने मोहम्मदको तोकतामिशके विरुद्ध लडनेके लिये कहा। मोहम्मद जानता था, कि ओरदा-उलुस तोकतामिशके पक्षमे है। उसने तेमूरवेकको मना किया, जिसपर तेमूरवेकने उसे तोकतामिशका पक्षपाती कहकर भरी सभामे मरवा डाला और वही उसने सौगद खाई, कि जो भी मेरी इच्छाके विरुद्ध जायेगा, उसकी यही हालत होगी।

तोकतामिश और तेमूरवेकमें करातालके पास ममाइम लडाई हुई। तेमूरवेकने हारके साथ प्राण भी गवाये। इसी लडाईमें एक स्वामिभक्त अमीर वलिजक पकडकर विजेता तोकतामिशके पास लाया गया। तोकतामिश वलिजककी ईमानदारीपर पूरा विश्वास रखता था। उसने उससे कहा—"अगर तू मुझे अपना वादशाह मान ले, तो म तेरे सम्मान और अधिकारको जरा भी कमी नही करूगा, वल्कि राज्यकी वागडोर तेरे हाथमें सुपुर्द कर दूगा।" वलिजकने जवाव दिया—"मने अपने जीवनका सवसे अच्छा भाग तेमूरवेककी सेवामें विताया। मे इसे सहन नही कर सकूगा, कि उसके सिंहासनपर कोई दूसरा वैठे। जो तुझे तेमूरवेककी गद्दीपर वैठा देखना चाहे, उसकी आखें फूट जाय। अगर तू मेरे ऊपर

कृपा करना चाहता है, तो मेरा सिर काटकर तेमूरके सिरके नीचे रख दे, और उसकी लाशको मेरी लाशपर लिटा दे, जिसमें उसका कोमल शरीर धूलमें न लिपटे।" तोकतामिशने उसकी इच्छा पूरी की।

१२ तोकतामिश तूलि-पुत्र (१३७५-९७ ई०)

तोकतामिश बापकी हत्याका बदला ले सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूके सम्मिलित सिंहासनपर बैठा। उसकी मा कुतन कुनचेक प्रसिद्ध ककुरत कबीलेकी अमीरजादी तथा मनस्विनी स्त्री थी। इतिहासकार अनुनीम असकदर के अनुसार तोकतामिश बहुत ही मुस्तैद, प्रतापी, सुदर तथा स्वभावसे भी सुदर बादशाह था। वह अपने न्याय और सदाचारके लिये प्रसिद्ध था। अस्कन्दरके अनुसार उसमें दोष यही था, कि उसने अपने उपकारक तेमूरलगसे कृतघ्नता की। तेमूरबेकपर विजयप्राप्त करते ही तोकतामिशने अपने सारे उलुसको सुव्यवस्थित किया।

तोकतामिशने बेरेकसरायको अपनी राजधानी बनाया। बा-तूने अस्त्राखानके पास वर्तमान से-ली अेन्नोय गावकी जगह अपनी राजधानी—बातू-सराय बनाई थी। उसके भाई बेरक (१२५५-६६ ई०) ने वोल्गाकी शाखा अखतूबे नदीके तटपर आधुनिक स्तालिनग्रादके समीप सराय-बेरेकके नामसे नई नगरी बसाई, लेकिन बातू सरायसे हटाकर बेरेक सरायमें राजधानी ले जाना उज्बेक खानका काम था। तोकतामिशके समय सुवर्ण-ओर्दू राज्य एक बार फिर ख्वारेज्मसे पश्चिममें रूसी राजुलोंके भीतर, तथा क्रिमिया, काकेशसके दरबन्द तथा बाकूतक फैल गया। पश्चिममें राज्यसीमा द्नियेस्तर नदी, और पूरबमें तबोल-इरतिश-सगम एव मध्य सिर-दरिया थी। तोकतामिशने सत्रह साल (१३९२ ई०) तक अच्छी तरह शासन किया, फिर इतिहासकारोके अनुसार उसे शरारत सूझी और वह तेमूरलगसे छेड़खानी कर बैठा।

१३८० ई० मे तोकतामिशके क्रिमिया-शासक रमजनने वेनिसगणके प्रतिनिधि अन्द्रेय बेनेरिसके साथ व्यापारिक समझौता किया।

मास्को-ध्वस (१३८२ ई०)—तोकतामिश जू-छिके पुत्र ओरदाके वशका नही था, बल्कि उसका पूवज चिङ्ग-गिस्वशी राजकुमार तुका-तिमुर था। ममाइ (करातालके पास) की विजयके बाद वह पूर्वी और पश्चिमी दोनो किपचकों—सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दू—का स्वामी बना। विजयकी खबर सुनते ही रूसी राजुल जल्दी-जल्दी अपनी भेंट और तलवार चढानेके लिये उसके दरबारमें पहुचे। मास्को-महाराजुल दिमित्रिके दो कवचधार कुतुलुकबुगा और मोकस दूसरे खड्गधारियोंके साथ भिन्न-भिन्न राजुलोकी राजधानियोमें खानकी सुनहली मोहरलगी यारलिकके साथ गये। लेकिन तोकतामिश इतनेसे सतुष्ट नही होनेवाला था। वह कर लेते हुए खानोंकी प्रभुताको पूर्ववत् स्थापित करना चाहता था, जिसे उठा फेंकनेकी रूसी राजुलोने इधर कोशिश की थी। उसने खानजादा अकखोजाको सात सौ सिपाहियोंके साथ यह कहला भेजा, कि रूसी राजुल भेंट और तलवार ही नही भेजें, बल्कि खुद बेरेक सरायमें हाजिरी देनेके लिये आयें। अकखोजाने स्वय निजूनीनवोगोरद (निचला नवीन नगर) में ठहर दूसरे दूतको सदेशके साथ मास्को भेजा। हालहीमें दोनके तटपर महाराजुल दिमित्रिको जो विजय प्राप्त हुई थी, उससे गर्व करते उसने जानेमें आनाकानी की। सालभरकी तैयारीके बाद उसे एकाएक खबर मिली कि सेना पार करनेके लिये तारतारोने बुल्गारोकी नावें पकड ली है, र्याजनका राजुल पथप्रदर्शक बन उन्हें ओका नदी पार करानेके लिये रास्ता दिखला रहा है। इस खबरको सुनकर बहुतसे राजुलाने हिम्मत हार दी। महाराजुलके धर्मपिता निज्नीनवोगोरदके राजुल दिमित्रिने अपने दो पुत्रोको खानके दरबारमें भेज भी दिया। उस समय खानका शिविर सिरनागमें था, जहा वह तोकतामिशसे मिले।

मास्को-महाराजुल दिमित्रि राजधानीको बायरोंके हाथमे छोड सेना-सग्रहके लिये कोस्त्रोमाकी ओर गया। ओका नदीपर अवस्थित सेपूकोफ नगरको लेकर तोकतामिश मास्कोपर चढा। गिर्जोंके घटे बजाकर नागरिकोको इकट्ठा कर एक बडी सभा की गई, पुराने रूसी रवाजके मुताबिक प्रति-

रक्षाके लिये बहुमतके अनुसार फसला लेना था। तबतक कितने ही लोग शहर छोडकर भाग चुके थे, जिनमे महासघनायक कुब्रियान भी था, जो त्वेर चला गया था—कुब्रियान रूसी नही था, इसलिये उसकी कायरताको लोगोने विशेष तौरसे बुरा माना। शहरमे खलबली मची हुई थी। इसी समय एक तरुण लिथुवानी राजकुमार ओसतेइको दिमित्रिने मास्को भेजा—ओसतेइ प्रसिद्ध लिथुवानी राजा ओलगदका पौत्र था। उसके कामोको देखकर लोगोके दिल कुछ मजबूत हुये। पासके गावोंके किसान भी अपने सामान और परिवारोके साथ मास्कामें शरण लेने चले आये थे। उन्होने भी ओसतेइकी पुकारको सुना। नगरकी रक्षाके लिये साधुओने भी हथियार मागे। इस प्रकार अप्रशिक्षित किन्तु बहादुर नागरिकोकी कई पल्टने प्राकारकी रक्षाके लिये तैयार हो गई। बहुत समय नही बीता, कि जलते गावोके धूयेंने तार-तारोके आनकी सूचना दी। २३ अगस्त १३८२ई० को तारतार उपनगरमें पहुच गये। आक्रमणकारियो म कितने ही रूसी भाषा जानते थे। उन्होने महाराजुलके बारेमे पूछा। जवाब मिला—वह मास्कोमें नही है। नगरको घेरकर तारतारोने बाणोकी वर्षा करते बहुतसे नगर-निवासियोको मार डाला, लेकिन रूसियोने भी जो भी हाथ आया उसीसे तारतारोका मुकाबिला किया—उन्होने उनपर उबलते पानीको फेंका, बडे-बडे पत्थर गिराकर तारतारोको चकनाचूर किया। तीन दिनतक जबदस्त आक्रमण होता रहा—खैरियत यही थी, कि विपचकोंके पास तोपखाना नही था। इस तरह काम न चलते देख तोकता-मिशने छलसे काम लेना चाहा। उसने अपने कुछ सरदारा तथा निजनीनवोगोरदके दोनो राजुलपुत्रोको भेजकर कहलाया खान लोगोको अपनी आज्ञाकारी प्रजा समझता है। उनके प्रति उसका कोई दुर्भाव नही है। वह केवल अपने शत्रु महाराजुलको चाहता है। वह तुरत नगरको छोड जानेके लिये तैयार है, यदि उसके पास भेंट भेजी जाये और भीतर आकर नगरको देख लेनेका मौका दिया जाय। ओसतेइने साधुओ, बायरो और लोगोंसे सलाह ली। उन्होने निज्नीनवोगोरदके राजुलके दोनो पुत्रो वासिली और सिमेओनकी इस बातपर विश्वास किया, कि खान अपने वचनको नही तोडेगा। नगरके फाटक खोल दिये गये। मूल्यवान भेंटें लिये ओसतेइ आगे-आगे, उसके पीछे सलीब लिये हुये साधु, फिर बायर और साधारण जनता चली। ओसतेइको सीधे खानके तम्बूमें ले जाकर मार डाला गया। फिर सकेत पाते ही हजारो तारतारोने नगी तलवारें ले लोगो को जबह करना शुरू किया। फिर वह नगरमें घुस पडे। बिना नेताके सिपाहियोमे भगदड मचनी ही थी। वह औरतोकी तरह रोते-कादते सडकोपर इधर उधर भागने लगे। तारतारोने बूढ़ो, बच्चो, स्त्रियो और साधुओमें कोई भेद न कर सबको तलवारके घाट उतारा। गिर्जाके दरवाजाको खोलनेपर वहा रक्खी हुई गावके लोगोकी सम्पत्ति मिली, जिसे तारतारोने लूट लिया। वहा चादी सोनकी मूर्तिया, बहुमूल्य भाड तथा दूसरी चीजें बडे भारी परिमाण म मिली। महाराजुलका खजाना, बायरो (सामन्तो) और धनी व्यापारियोकी चिरकालसे जमा होती सम्पत्ति तारतारोके हाथ लगी। इसके साथ सबसे बडी हानि जो हुई, वह थी पुरानी पुस्तको और हस्तलेखोकी तारतारो द्वारा होली जलाना। सम्पत्ति लूटनेके बाद उन्होने घरोमें आग लगा दी, फिर तरुण रूसियोके झुडको आगे आगे हाकते पासके खेतोमें जाकर उन्होने भोज किया।

तोकतामिशकी सेना सारे रूसमें फैल गई। व्लादिमिर, ज्वेनीगोरद, यूरियेफ, मोजाइस्क, दिमि-त्रियेफ आदि रूसी नगरोकी भी वही गति हुई, जो मास्कोकी। पेरेइस्लाव (यारोस्लाव्ल) नगर आगकी भेंट हुआ, लेकिन लोग नावसे भाग निकलनेमें सफल हुये। कलोम्नापर भी अधिकार करके तोकतामिश लौट गया। ओका पार हो अपने पथप्रदर्शक जातिद्रोही र्याजन-राजुलके राज्यको उसने बडी निदयताके साथ लूटा और नष्ट-भ्रष्ट किया।

रूसकी एकताका जो काम इतने दिनोसे हो रहा था, उसपर भारी चोट पहुची। इवान और सेमि योनने खानोकी चापलूसी करके देशमें जो समृद्धि पैदा की थी, उसका सवनाश हो गया। लोग कहने लगे—"तारतारोपर न विजयी होनेवाले 'हमारे पुरखा' भी हमारे जैसे अभागे नही थे।"

यद्यपि तोकतामिशने महाराजुल और उसकी राजधानी मास्कोका सवनाश कर दिया, लेकिन उसने देखा, कि बिना महाराजुलकी सहायताके पहलेकी तरह रूसियोंसे कर उगाहने और अपनी आज्ञा मनवानेमें सफलता नही प्राप्त कर सकता, इसलिये उसने फिर अपने पूवगामियोका रास्ता स्वीकार

किया। अपने एक मुरजा (मिर्जा) के द्वारा उसने दिमित्रिके पास सहृदयता दिखलाते हुये संदेश भेजा—अब भी तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर पहलेकी तरह काम करो। दिमित्रिने अपने पुत्र वासिलीको भेजा। मास्कोके नष्ट हो जानेपर मूल्यवान् भेंट कहासे भेजी जा सकती थी? तो भी तोकतामिशने वासिलीके साथ अच्छा वरताव किया। उसने महाराजुलकुमारको दरवारमें जामिनके तौरपर रक्खा और मास्कोके ऊपर नये कर लगाये।

खानोकी शक्तिको क्षीण हो जानेपर रूसका प्रतिद्वन्द्वी लिथुवानियाका राजा समझा जाता था। अवतक लिथुवानी ईसाई धर्मको न स्वीकार कर वैदिक देवताओंके भाईवन्दोको ही अपना इष्टदेव मान रहे थे। उनकी वीरताके कारण ईसाई समुद्र इन काफिरोके द्वीपको अपने भीतर वर्दाश्त कर रहा था। एक इतिहासकार लिखता है—"वहुतसे लोग शायद यह नही जानते, कि १४ वी सदीके अंततक मध्य-युरोपके इतना नजदीक विलेनुस नगरीमें काफिरोका धर्म राजधर्म था।" *लिथुवानी राजा लादिस्लाउस (ह्लादश्रवा) ने पोल-राज्यकी उत्तराधिकारिणी कुमारी हेदविगके साथ ईसाई धर्म स्वीकार करते हुये व्याह किया। इसी समय राजाके साथ उसके साथियोने भी वपतिस्मा लिया। युरोपके धर्मपरिवर्तनवाली कहानी लिथुवानियामें भी दुहराई गई और विलनामें काफिरोकी जितनी मूर्तिया और पवित्र वृक्षस्थल थे, सवको एक ओरसे ईसाई पादरियोने नष्ट कर दिया। पुराने पुरोहितोको उनकी मृगछालाकी पोशाकके वदलेमें सफेद पोशाक वाटी गई। लिथुवानियाके राजाको इसकी जरूरत क्यो पडी? अपने पडोसियो को देखते हुये ग्रीक और रोमन संस्कृतिसे लिथुवानियाके सरदार भी प्रभावित हुये विना नही रहे। भीतर ही भीतर संस्कृतिके साथ धर्मका भी प्रभाव उनमेंसे कितनो हीपर पडता जा रहा था, जिससे आगे चलकर काफिर और ईसाईका सवाल सिंहासनके लिये खतरेका कारण हो सकता था। उधर लादिस्लाउसने देखा, कि ईसाई धर्म स्वीकार करनेपर मैं पोल राजकुमारीके साथ पाणिग्रहण कर पोलन्दका भी स्वामी वन जाऊगा, इसलिये हजारो वर्षोसे चली आई लिथुवानी सभ्यता और धर्मके वहुतसे चिह्नोको मिटा देनेमें उसने हाथ वटाया। महराजुल दिमित्रिका तोकतामिशके साथ फिर अच्छा संवध स्थापित हो गया, इसलिये लिथुवानियन राजाके आक्रमण करनेपर उसे तोकतामिशका एक भारी सहारा मिल गया। १३८९ ई० में दिमित्रिके मरनेपर उसका पुत्र वासिली महाराजुल वना।

पश्चिमकी दिग्विजयके वाद तोकतामिशने अपने राज्यके पूर्वी भागकी व्यवस्थामें हाथ लगाया। उसने विरोधियोको वडी निष्ठुरतासे पीस डाला, जिसमें उसकी अपनी वीवी तावलुइने भी अपने प्राण खोये। तेमूर लंगसे झगड पडना अकारण नही था। जू-छिके समयसे ही ख्वारेज्म उसके उलुसका था, जिसे तेमूरने जवदस्ती छीन लिया था। उरुस खानके समय, जो राज्यमें गडवडी मची थी, उससे फायदा उठाकर हुसेन सूफी यङ्ग-हदाई-पुत्र (ककुरत) ने ख्वारेज्मके कात और खीवा जिले हडप लिये। तेमूरने देखा, कि हुसेनकी पीठपर कोई नही है, इसलिये 'ख्वारेज्म जगताई-उलुसका है' कहकर उसे मागा। तेमूर यद्यपि एक वडी सल्तनतका स्वतंत्र शासक था, लेकिन उसने जगताई वंशके खानको समरकंदकी गद्दीमे नही उतारा और अपने लिये केवल अमीरकी साधारणसी पदवी स्वीकार की थी। इस प्रकार उसने जगताई खानकी ओरसे ख्वारेज्मपर दावा किया। हुसेन सूफीने उसका जवाव दिया—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तेमूर दौड पडा। कातमें कुछ थोडेसे प्रतिरोध के वाद शहरपर तेमूर लंगका अधिकार हो गया। निर्मम हत्या हुई, स्त्री-वच्चो सहित वहुतसे लोग दास वनकर विकने के लिये वंदी वनाये गये। हरे-भरे ख्वारेज्मको तेमूरकी आगमें जलना पडा। कातसे हुसेन सूफी भाग गया, और थोडे दिनो वाद मर गया। तेमूर लंगने दया दिखाते हुये हुसेन सूफीके पुत्र युसुफ सूफीको इस शर्तपर वहाका शासक वनाया, कि वह अपनी चचेरी वहिन तथा सुन्दरताके लिये सर्वत्र प्रसिद्ध सेविनवेईको तेमूर-पुत्र जहागीरके साथ व्याह दे। युसुफने पहले तो वात मान ली, लेकिन जल्दी ही उसने शर्तको तोडकर कातको लूटना और लोगोको भगाना शुरू कर दिया। दंड देनेके लिये १३७२ ई० में तेमूर फिर

*ज० मो० पृ० ३३७

आया। युसुफने आत्मसमर्पण किया। सेविनबेइ (खानजादी) का व्याह जहांगीरके साथ हुआ और युसुफको क्षमा मिली। दो साल बाद १३७४ ई० में फिर तेमूरको कातके रास्ते ख्वारेज्मकी ओर बढना पडा, लेकिन अपने किसी अमीरकी ओरसे समरकदपर खतरा होनेकी खबर सुनकर वह लौट गया। इसी साल उसने तोकतामिशको किपचकोका खान स्वीकृत किया था।

जिस समय तेमूर-लग उतरारमें उरुस खानसे लडनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय युसुफ सूफीने वुखारा जिलेपर आक्रमण करके लूट-मार मचानी शुरू की। तेमूरने उसे हिदायत करनेके लिये दूत भेजा, जिसे युसुफने जेलमें डाल दिया। इसके बाद एक दूसरे दरबारी दूतको तेमूरने रेशमपर ताजी कस्तूरीसे लिखा शासनपत्र देकर भेजा। युसुफने इस दूतकी भी वही गति की। वुखाराके पास उसने कुछ तुर्कमानोके ऊट लूट लिये। १३७८ ई० के वसतमें राजधानीके सामने पहुचकर युसुफने कहा—"इतने मुसलमानोको मरवानेकी जगह यही अच्छा है, कि आओ हम दोनो द्वद्व-युद्ध करके हार-जीत का फैसला कर ले।" तेमूर ने इसे स्वीकर किया। मित्रोके वर्जित करनेपर भी शाही कवच और शिरस्त्राण पहनकर तेमूरने द्वद्व-युद्धके लिये नगरद्वारसे बाहर जा युसुफको ललकारा, लेकिन वह लडनेके लिये सामने नही आया। उसी समय तेरमिजसे कुछ ताजे खरबूजे (सरदे) आये, जिनमें से कुछको सोनेकी थालमें रखकर, तेमूरने अपने दुश्मनके पास भेजा, लेकिन युसुफने उन्हें मोरीमें फेंक दिया और लानेवालेको थाल बख्श दिया। फिर दोनोमें घमासान लडाई शुरू हुई। नगरका मुहासिरा करके युसुफने उस समयके पुराने ढगके तोप-खानेसे प्राकारको तोडनेकी कोशिश की। मुहासिरा तीन महीने छ दिन रहा। युसुफ सूफी इसी बीचमें असफल होकर मर गया। तेमूरके हाथ भारी हीरा-मोतीका खजाना आया। उसने सभी शरीफो, हकीमो और विद्वानोको स्त्रियो-बच्चोके एक बडे समूहके साथ ख्वारेज्मसे पकडकर केश (शहरसब्ज) भेज दिया। इस प्रकार १३७९ ई० में ख्वारेज्मपर तेमूर-लगका अधिकार हुआ।

पूरब और पश्चिमकी सफलताओके कारण तोकतामिशको अपनी शक्तिपर विश्वास हो गया था। इधर युसुफ सूफीकी लडाइयोंसे वह यह भी समझता था, कि तेमूर-लग अजेय नहीं है। जू-चिके सिहासनका मालिक और चिङ्-गिसी शाहजादा होकर वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था, कि ख्वारेज्म एक मामूली तुर्क सरदारके हाथमें चला जाय। वह जानता था, कि चगताई खान केवल गुडिया बनाकर समरकदके सिहासनपर रखा गया है। तोकतामिशने ख्वारेज्म मागा, लेकिन मुहसे वैसा न कहकर भी तेमूर-लगका जवाब भी हुसैन सूफी जैसा ही था—"तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।" तोकतामिश तेमूरके विरुद्ध सिर-दरिया पार हो सीधे समरकदकी ओर बढ सकता था, अथवा ख्वारेज्मपर आक्रमण कर सकता था, लेकिन उसे तेमूर-लगका निवलस्थान वहा नही मालूम हुआ। उसने खुलाकूकी राजधानी तबरेज—जोकि अब तेमूर-लगके हाथमें थी—को लक्ष्य कर काकेशीय दरबन्दके रास्ते अभियान किया। उसके साथ बेक बुलाद, ऐसाबेक, यागलीबेक, गजनवी आदि बारह ओगलान (राजकुमार) थे, जिनका मुखिया पुलादबेक था। तोकतामिशकी सेनाने सिरवान होते हुये आजुरबाइजानके भीतर घुसकर तबरेजको घेर लिया। लोगोको जब यह खबर मिली, तो वे अपने कूचो और मुहल्लोमें दरख्तोको डाल मोर्चाबिदी कर हथियारबद हो अपने-अपने मुहल्लोकी हिफाजत करने लगे। आक्रमणकारियोने नागरिकोके प्रतिरोधको बहुत मजबूत देखा। वह शम्बेगाजानीमें उतरे और कमजोर स्थान ढूढनेके लिये आठ दिनतक नगरका चक्कर लगाते रहे। जब कोई वैसा स्थान या अवसर नही मिला, तो उन्होने आदमी भेजकर अमीर वलीको सुलह करनेके लिये बुलाया। अतमे तै हुआ, कि अमीर वली शहरसे दो सौ पचास तुमान सोना दिलवा दे, जो कि तोकतामिशकी सेनाके घोडोकी नालो का दामभर ही था। बृहस्पतिवार १३८५-८६ ई० (७८७ हि०) को शहरके मालिको और ख्वाजाओको जमाकर निश्चय किया गया कि हर मालिक एक तुमान नकद दे। ढाई सौ तुमान भेज देनेके बाद लोग निश्चित हो गये। उन्होने तैयारी ढीली कर दी और बहुतोने हथियार भी उतार दिये। इसी समय तोक-तामिशकी सेना शहरके ऊपर टूट पडी और कतल तथा लूटका बाजार गरम हो गया। प्रतिरोधकी शक्तिया तितर-बितर हो गई थी। तोकतामिशकी सेनाने तेमूर-लगके तबरेजको आठ दिनतक लूटा और

कतल किया, जिसमें करीब एक लाख आदमी बडी निर्दयतासे मारे गये। किपचकोंने किसीपर दया नही दिखलाई। उन्होंने लोगोको नगा मादरजाद करके सडको, कूचो, मुहल्लोमें बर्फपर बैठा दिया। स्त्रियों, लडकियो और छोकरोमे जिन्हें सुन्दर देखा, उन्हें लिया, बहुतसे आदमियोको भी बदी बनाया, फिर घरोमें आग लगा दी। तोकतामिशने मास्कोमें जो किया था, उसीकी आवृत्ति उसकी सेनाने तबरीजमें की, और यही बात पीछे तेमूर-लगने दिल्लीमे दुहराई। एक इतिहासकार ने लिखा है—"काफिरोने लोगोपर वह जुल्म किया, कि लिखनेवाला यदि एक सालतक लिखता रहे, तो नही पूरा कर सकता। इस शहर और इन मुसलमानोपर क्या-क्या नही बीती ?"

अमीर वली सुलतानियासे जा चुका है, यह सुनकर उनको उसपर विश्वासघाती होनेका सदेह हुआ। तोकतामिशी सेनाने सुलतानिया और दूसरी जगहोको भी उसी तरह लूटा-पाटा। इसके बादभी तबरीजके लोगोमें कुछ सुगबुगाहट देख फिर दो दिन दो रात उसे कतल और लूटका शिकार बनाया। फिर कितने ही किपचक नखजवानकी ओर अर्रानके प्रदेशमें जा लूट-मार करने लगे, कुछ इसी कामके लिये कराबाग चले गये। जाडा खतम होने से पहले ही दो लाख बदी बना तोकतामिश आये रास्ते लौट गया। तेमूर इस समय ईरानके झगडोमें फसा था, इसलिये आजुरबाइजानके सर्वसहारकी बातको सुनकर भी दिल मसोसकर रह गया। तोकतामिश अपने साथ प्रसिद्ध कवि कमालको लेता गया था, जिसने चार सालतक राजधानी बेरेकसारायमें रहकर उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

तेमूरके साथ लडाइया

प्रथम युद्ध—ईरानके झगडेसे छुट्टी पाकर १३८७-८८ ई० (७८६ हि०) के बसतमें तेमूर-लग उरुस नदीके तटपर था, जबकि उसने सुना कि तोकतामिश दूसरी बार दरबदकी ओरसे आकर आक्रमण करना चाहता है। तोकतामिशके अमीरोने मना किया, कि तेमूर अब भीतरी झगडोसे छुट्टी पाकर मुकाबिलेके लिये तैयार है, इसलिये लडनेके लिये नहीं जाना चाहिये। लेकिन, तोकतामिशने उनकी बात नही मानी। खुलाकू-वशियो और बातू-वशियोके पुराने युद्धोकी तरह फिर उत्तरसे तोकतामिशी सेना कुरा नदीके तटपर पहुची और दक्षिणसे तेमूर भी बेरदआ होते वहा पहुचा। उसने नदीपार की खबर जाननेके लिये गुप्तचर भेजे, जिन्होने लडाई करके भारी क्षति उठाई। फिर कुमकके लिये आई तेमूरी सेनाने तोकतामिशकी विजयिनी सेनापर आक्रमण करके उसे बुरी तरह हराकर दरबदतक उसका पीछा करके बहुतसे बदी बनाये। तेमूरने कृतघ्नताके लिये बहुत फटकारकर तोकतामिशके बदी अमीरो-को खलअत और धन देकर घर भेज दिया।

इस विजयके बाद तेमूरने सरकश तुर्कमान सरदार करामोहम्मदसे लोहा लिया और फिर फारस-पर आक्रमण कर उसे अपने राज्यमें मिला लिया। इसी समय डाकियाने आकर खबर दी, कि तोक-तामिश अतर्वेद (मावरा-उन्नह्र) की ओर बढ रहा है। तोकतामिशने सिगनकसे प्रस्थान कर साबरानपर आक्रमण किया, लेकिन तेमूरी सेनापतिके जबर्दस्त प्रतिरोधके कारण उसे मुहासिरा उठा लेना पडा। इसके बाद तोकतामिश दूसरे इलाकोको तबाह करने लगा। प्रतिरोध करनेके लिये तेमूर-पुत्र शाहजादा उमरशेख मिर्जाने एक बडी सेना ले सिर-दरिया पार हो आगे बढते उतरारसे पाच फरसक पूरब युकलिक स्थानमें तोकतामिशकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। अदिजानमें पहुचकर उसने अपनी बिखरी सेनाको फिरसे एकत्रित किया। इसी समय पता लगा, कि मुगोलिस्तानके शासक अका-तूराने भी विश्वासघात करके चढाई कर दी है और वह सैराम तथा ताश्कदके नजदीक पहुच गया है। उमरशेखने अकातूराको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। तोकतामिशके किपचक समृद्ध सोग्द-देशको लूटनेके लिये आगे बढ रहे थे, जिनका एक दल बुखाराके सामने पहुच गया था, जिसने वहाके सुन्दर प्रासाद जेंदगिर-सरायको जला दिया। तेमूर उनकी ओर लपका। नजदीक आनेपर शत्रुकी सेना-मेंसे कुछ दश्तेकिपचक (कजाकस्तान) की ओर कुछ ख्वारेज्मकी ओर भागे। तेमूरने अपने अफसरो—बेरातखोजा और कुकिलताशको युकलिककी पराजयके लिये दड दिया—"कुकिलताशको दाढी-मूछ मुडवा चेहरेको काले-लाल रगसे रगा, सिरको स्त्रीकी तरह सजा शहरमें नगे पैर दौडाया गया।"

युसुफके मरनेके बाद ख्वारेज्म उसके भाई सुलेमान सूफी तथा बहनोई इलिकमिस ओगलान (किपचक राजकुमार) के हाथमें था। यह दोनो तोकतामिशको अपना प्रभु मानने लगे, इसपर तैमूरने उनके विरुद्ध चढाई की। तैमूरी सेनाके हरावलके सचालक शरणागत श्वेत-ओर्दू राजकुमार तैमूर कुतुलुक ओगलान और कुजी ओगलान थे। बगदादके ओर शेदरिस नदीके पार होनेके बाद पता लगा, कि दोनो राजकुमार तोकतामिशके पास भाग गये। शाहजादा मीराशाह (तैमूर-पुत्र)ने पीछा करके उनको पकड लिया। तैमूर ख्वारेज्मकी राजधानी उरगज पहुचा। उसे नगर और निवासियोपर इतना गुस्सा आया था कि उसने नगरको गिरवाकर वहा जौ बुवा दिया और निवासियो को समरकद भेज दिया। फिर तीन साल बाद ही नगरके पुन स्थापनाके लिये हुकुम दे इस कामपर उसने मुसिकी यदकि कुचीन-पुत्रको नियुक्त किया। मुमिकीने नगरको फिरसे बनवाकर लोगोको बसाया, उरगज, कात और खीवाके चारो ओर नगर-प्राकार बनवाये।

तोकतामिशने देख लिया, कि अब तैमूर-लगके साथ मामूली छेडखानीसे काम नही चलेगा। उसने १३८८ ई० (७९० हि०) में अपने महाअभियान शुरु करनेके पहले बहुत भारी सेना जमा की। इस सेनामें चिरकासी, बुल्गार, किपचक, क्रिमियावासी, कफा, अलानिया, अजक, बाश्किर और रूसी सभी जातियोके सैनिक थे। पता लगनेपर तैमूर भी भारी सेना ले समरकदमे ६ फरसख पर अवस्थित सगरूज स्थानमें मुकाम किया। वहासे उसने अपने सारे राज्यमें सेना जमा करनेके लिये तवाची भेजे। उस साल जाडा बहुत सख्त रहा। चारो ओर जमीन बर्फसे ढकी हुई थी। पता लगा, कि किपचक हरावल इलिकमिश ओगलानके नेतृत्वमें सिर-दरियापार हो ओतरार (उतरार)के पास अजक-जैरनुकमे डेरा डाले हुये है। तैमूरने तुरत हमला करना चाहा, लेकिन उसके अमीरोंने घुटने टेककर प्राथना की, कि और सेनाके आनेतक प्रतीक्षा की जाय। तैमूरने नही माना। बर्फ कही-कही घोडोके छातीतक थी। उसीमें स्थानीय सेना ले वह रात-दिन कूच करने लगा। रास्तेमें उमरशेख मिर्जा अपनी सेना ले आ मिला। पीछेसे रास्ता काटनेके लिये सेना भेजकर दूसरे दिन तैलम्वार पहाड पार करनेपर दुश्मन सामने दिखाई पडा। भयकर युद्ध हुआ। तोकतामिशकी बुरी तरह हार हुई। सिर-दरिया पार करके उसने जो गलती की थी, उसके कारण बहुत-से सैनिक डूब गये और अधिक सख्याको तैमूरने घेरकर मार डाला। तोकतामिशका राज्य-सचिव ऐरदीबरदी बदी बनाकर तैमूरके पास लाया गया। तैमूरने उसका बहुत सम्मान कर बहुत-से उपहार दे लौटा दिया। तैमूरने स्वय लौटकर फबरी ७९१ हि० (३१ दिसबर १३८८–२१ नवबर १३८९ ई०) में समरकदके पास अकारमें डेरा डाला।

बसत (१३८९) शुरू होते-होते खुरासान, बलख, कुन्दुज, बतलान, बदख्शा, ख्तलान, हिसार, सादुमान आदि नाना देशोंसे सेनायें आ पहुची। खोजन्दके सामने दूसरी भी ओर कितनी ही जगहोमें सिर-दरियाके ऊपर नावोके पुल बनाये गये। १३८९ ई० (७९१ हि०) के प्रारभमें अभियान शुरू हुआ। आरिस (आच) नदीके किनारे दुश्मनके हरावलपर तैमूरी सेनाने एकाएक आक्रमण कर दिया। तोकतामिशकी सेनाने सावरानपर असफल आक्रमण किया और उसे यस्सी (तुर्किस्तान) की ओर हटनेके लिये मजबूर होना पडा। यही खुली जगहमें तोकतामिशकी सारी सेना पडी हुई थी। तैमूरको सामने आता देखकर तोकतामिशकी सेना भाग चली। तैमूरने पीछा किया और कुछको पकड लिया। अब तैमूर-लगने अलकुसुनामें जाकर डेरा डाला। तैमूरके सामने इस वक्त दो शत्रु थे, एक तोकतामिश और दूसरा चगताइकी उत्तरी शाखा मुगोलिस्तान (राजधानी अलमालिक) का खान। दोनोमें मुगोलिस्तानका खान कम बलिष्ठ मालूम हुआ, इसलिये उसीको पहले खतम करनेके ख्यालसे तोकतामिशके पीछे न बढकर तैमूर समरकद लौट आया।

प्रथम महाभियान (१३९०ई०)

तैमूरने अच्छी तरह समझ लिया, कि दश्तेकिपचक (तोकतामिशके राज्य) का अभियान खेल नही है, इसलिये उसने बडी तैयारी की—तुर्को और ताजिकोंकी भारी सेना जमा की, सालभरके लिये

रसद इकट्ठा की। हर एक आदमीको हुकुम दिया कि वह एक धनुष, तीस वाण, एक प्रत्यचा और एक कमरबद जमा करे। सारी सेना घोडसवार थी। हरएक घोडसवारको एक घोडा फाजिल अपने साथ रखना था। दस आदमियोके ऊपर एक तवू, दो वेल्चे, एक फरसा, एक हसिया, एक आरा, एक कुल्हाडा, एक हखानी, सौ सुइया, सवा चार सेर रस्सी, एक वैलका चमडा और एक मजवूत तवा दिया गया। सेनाको सरकारी घोडोंके साथ शिरस्त्राण, कवच और नकद पैसा भी दिया गया था। ताश्कद छोडनेके वाद तेमूरने हुकुम दिया, कि महीनेमें प्रतिव्यक्ति साढे आठ सेर आटा मिलेगा। रोटी, कुल्चा (विस्कुट) आदि शिविरमें किसीको नही मिलेगा। खानेके लिये जल्दी-जल्दी आटेकी लपसी वना लेनी होगी। तेमूरने वृश्चिक राशिमें समरकद छोड जाडेको समरकद जिलेमें ही विताया। आगेके लिये प्रस्थानसे पहले खोजन्दमें उसने वहाके प्रतापी सत शेख मस्लहतके मकवरेका दर्शन करके उसपर दस हजार दीनार चढाये। ताश्कदमें तेमूर चालीस दिनतक सख्त बीमार पडा रहा। उसकी सेनाके पथप्रदर्शक तमूर कुतुलुक ओगलान, तेमूर मलिकखान, गूनेजी ओगलान, इदिकू उज्वेक थे, जिनमेंसे पहले तीन किपचक राजकुमार थे। १९ जनवरी १३९१ ई० को अपनी प्रियतमा भार्या तथा मुगोलिस्तानके हाजीवेक इरखानकी पुत्री चुलपान मलिक आगाके साथ तेमूरने प्रस्थान किया।

कुछ दिनोतक सेना कारासमनमें ठहरी। यहा तोकतामिशके दूत तेमूरके दरवारमें आये। उन्होने शाहवाज और नौ घोडे भेंटकर दडवत् पड धरतीपर ललाट रगडकर सम्मान प्रकट करते अपने मालिक-की प्रार्थना दुहराते हुये कहा—"बुरी सलाहमें पडकर तोकतामिशने विद्रोह किया, अव वह क्षमा मागता है।" तेमूरने वाजको अपने हाथपर बैठाकर कहा—"सारी दुनिया जानती है, कि मैंने तोकतामिशकी रक्षा की, कितनी कुर्बानिया करके उसे तख्तपर बैठाया, लेकिन मुझे अनुपस्थित देख उसने तवरीजपर आक्रमण कर दिया। मैं अफसोस प्रकट करनेपर क्षमादानके लिये तैयार था, फिर भी उसने दुष्ट काफिरो को साथ ले मेरे सीमातपर आक्रमण किया। काफिरोने दूर-दूरतक लूट-मार की। जव मैं अपनी प्रजाकी सहायताके लिये पहुचा, तो वह नीचता दिखलाते हुये हट गया। अव वह फिर मुझे झूठे वचनोद्वारा धोखा देना चाहता है। उसने बहुत बार विश्वासघात कर लिया है, अव वह मुझे फिर धोखा नही दे सकता। मैं उसे दड देनेके मसूवेसे आया हू, और उसे बिना पूरा किये नही छोडूगा। तो भी अगर वह ईमानदारीसे अपनी सदिच्छा दिखलाना चाहता है, तो अपने प्रथम-मत्री अलीबेकको मेरे पास भेज दे। मैं राज्यका हित देखते वुद्धिके अनुसार कारवाई करूगा।"

तेमूरने दूतोके लिये भारी दावत दी। उन्हें कमखावके कफतान (जामे) भेंट किये, साथ ही खास स्थानमें टिकाकर निगाह रखनेके लिये ताकीद भी कर दी।

२१ फवरी १३९१ ई० को युद्ध-महापरिषद् बैठी। युद्धके पक्षमें निणय करके ज्योतिषियोसे शुभमुहूर्त ठीक करवाया गया। तोकतामिशके दूत लौटा दिये गये। तेमूरी सेनाने कूच किया। उसकी सेना यस्सी (आधुनिक तुर्किस्तानशहर), कराचुक (तुर्किस्तानसे पाच फरसखपर सिर नदीमें गिरने-वाली नदीके ऊपर), और सावरानके रास्ते आगे बढ़ते उत्तरकी ओर मुडकर ६ सप्ताह वृक्ष-वनस्पति-हीन मैदानमें चली। बहुतसे घोडे रास्तेमें चारे विना मर गये। ६ अप्रैल १३९१ ई० को तेमूरी सेना नीले पानीवाली नदी (सरूक उजेन, सरीसू) के तटपर पहुची। नदी वढ़ी हुई थी, इसलिये थके हुये घोडोको कुछ दिनो विश्राम दिया गया। २६ अप्रैलको प्रसिद्ध मैदान (कुनचुकताग=लघु-पर्वत) पर पहुचा। दो दिन और चलनेपर इस प्रदेशका सवसे वडा पहाड उलुगताग (महापर्वत) आया—पहिले इन पर्वतोका नाम ओरताग (उच्च पर्वत) और करताग (गदा पर्वत) था। आगज तुर्कोके खान अपनी गर्मिया यहीं विताते थे। इन पहाडोंसे बहुत-सी नदिया निकलती हैं। तेमूर-लग उलुगतागके ऊपर चढा और वहांपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई० को शिला-लेख खुदवाकर एक पाषाणस्तभ स्थापित करवाया।

यह शिलालेख आजकल लेनिनग्रादके एरमिताज-सग्रहालयमें है। अभिलेखमें ऊपर तीन पक्तिया अरवीमें, फिर आठ पक्तिया उइगुर-लिपि तथा तुर्की भाषामें है। उइगुर लिपिके कायदेके

अनुसार इस लेखकी पक्तिया ऊपरसे नीचे न हो वायेंसे दाहिने तथा अरबी पक्तियोंके समानान्तर हैं। तुर्की भाषामें मूल लेख निम्न प्रकार है —

१ तरिक येती यूज तोकसन उचन्दा कोइ

२ यिल याज़निग अरा ए तूरान निग सुल्तान इ

३ तेमूर वेग इकी युज मिग सेरगि विलए इसमी उचुन तोकतामिश कान निग

४ कनिगा योइरिदी वू येरगे येतिप वेलगू वोलसुन तेप

५ वू श्रोवा-नी कोपरदी

६ तङ-री निसफत वेरगेई इन्शाल्ला

७ तङ-री इस किशीगे रहमत किलगे विज-नी दुश्रा विलाये

८ याद किलगे ।

["७९३ हि० सन् (१३९१ ई०) के वसत के मध्यमें तूरान-सुल्तान तेमूरवेग दो लाख सेनाके साथ तोकतामिश-खानसे लडनेके लिये आया । यहा पहुचकर (उसने) इस स्तभ (चिह्न) को स्थापित किया। यदि भगवान् चाहे, तो वह लोगोको सौहार्द देवे और हमें आशीर्वादपूर्वक याद कराये ।"]

आगे प्रस्थान करते सेना दूसरे दिन इलान्चुक (सप-सदृश) नदीपर पहुची। आठ दिन और चलनेके बाद अताकरागुई (अनाकरागुई, करातुरगई) नदीपर पहुची। अबतक ताश्कद छोडे चार मास हो चुके थे। रसद कम होने लगी थी। एक भेडका दाम सौ कुवेक (दीनार) हो गया था, अन्न भी उसी तरह महगा था। तेमूरी सेना जगली चिडियोंके अडे, सभी तरहके जानवरोंके मास, यहातक कि घास भी खानेके लिये मजबूर हुई। उसके लिये तोकतामिशसे भी अधिक निष्ठुर उसके देशकी प्रकृति साबित हुई। रसदमें सिर्फ आटा, बाजरा और घास मिला हुआ सूप (रस) मिलता था। सिपाहियोका ही खाना अफसर भी खाते थे। इस बयाबानमें शिकारोकी कमी नहीं थी। छिङ-गिस्‌के महाशिकारकी प्रणाली लोगोको भूली नही थी। ६ मई १३९१ ई० को उसी शिकारको रचा गया। आदमियोंने दूर तककी भूमि घेर ली। घिरावेमें पडे हरिन तथा दूसरे जानवर बडी सख्यामें मारे गये। वह इतने अधिक फसे थे, कि उनमेंसे सिर्फ मोटे-मोटे जानवरोको ही मारा गया। तेमूरकी भारी सेनाके लिये कितने ही दिनोके वास्ते मास मिल गया। आगे बढती हुई वह तोबोल नदीके उद्गमके पास पहुची। यही तेमूरने अपनी सेनाकी परेड देखी—भालो, तलवारो, खाडो, गदाओ, चमकी ढालोंसे सज्जित बाघका चमडा डाले घोडोपर सवार सैनिक अफसर उसके साथ थे। तेमूरने स्वय अपने सिरपर पद्मराग-जटित एक मुकुट पहिना था। उसके हाथमें गदा थी, जिसके सिरे पर बैलका चेहरा था। तेमूरने अपनी सेनामें इनाम बाटा। सेना "सुरिम" (धावो) का नारा बुलन्द करते बाजेकी आवाज-पर अपने बादशाहके सामनेसे सलामी देती निकली।

फिर ज्योतिषियोने शुभमुहूर्त देखा और १२ मईको मिर्जा मुहम्मद सुल्तान बहादुर (तेमूर-पौत्र) की अधीनतामें हरावल सेना आगे बढी। दो दिन जानेपर दुश्मनका पता उसके छोडे डेरोंसे लगा, जिनमें अब भी आग मौजूद थी। अन्तमें वह तोबोल (छोटा वृक्ष)–जो कजाकोकी तौबुल और रूसियोकी ताबूला नदी है—के तटपर पहुचे। पार होनेके बाद पता लगानेवाली टुकडीने लौटकर बतलाया, कि सत्तर जगहोमें आग मिली, किन्तु दुश्मनका कही पता नही। यह सुनकर तेमूर भी जल्दी-जल्दी तोबोलतट-पर पहुचा। उसके तुर्कमान सरदार शेख दाऊदके दलने लगातार जल्दी-जल्दी दो दिन-रातके कूचके बाद कुछ झोपडोको देखा। वह प्रतीक्षा करने लगे। जब उनमेंसे एक सवार निकला, तो उसे पकड-कर तेमूरके पास ले आये। पूछनेपर बदीने कहा—"मैंने एक महीने पहले तोकतामिशके देशको छोडा। कुछ दिन हुये दस कवचधारी सैनिक मैंने पासके जगलमें छिपे देखे।" तेमूरने उनके पीछे सिपाही भेजे, जो कुछको मार बाकीको बदी बनाकर ले आये। उनसे निश्चित खबर पा फिर सेनाने जल्दी-जल्दी कूच करना शुरू किया। २९ मईको तेमूर यायिक (उराल) नदीके तटपर था। नदीके ऊपरकी ओर पार

कर ६ दिन चलनेके बाद सेमुर नदीके तटपर जाकर सेनाने डेरा डाला। वहा पता लगा, कि तोकतामिश-की सेना हाल हीमें यहासे हटी है। तेमूरने हुकुम दिया—"चुपचाप आगे बढो और रातको आग मत जलाओ।"

४ जून १३९१ ई० को तेमूर इक (शकमाराकी शाखा) के तटपर था। तोकतामिश उस समय केक अथवा कोरुक (सूखा)-गुल नामक झीलके ऊपर डेरा डाले बलगार (कजान) और अजक क्रिमिया के ओर्दूके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, साथ ही उसने यायिक (उराल) के घाटोंपर छापामार तैनात कर रक्खे थे। अब भूमि दलदलवाली थी, जिसमे चलना तेमूरके सवारोके लिये बहुत मुश्किल था। जल्दी ही खबर आई, कि शत्रुकी तीन पल्टनें आगे पडी है। तेमूरने युद्धव्यूह रचनेका हुकुम दिया और ढाल, तूणीर और पैसे बाटे। एक बदीसे—जिसे पीछे मार डाला गया—पता लगा, कि तोकतामिश गहरी चाल चलकर अपने शत्रुओको फसाना चाहता है। सैनिक अफसर मुबश्शिर बहादुरद्वारा पकडे चालीस बदियोको भी बडी निष्ठुरतापूर्वक मारा गया—शायद साथमे बदी लेकर आगे बढना तेमूर पसद नही करता था। इन बदियोने कहा, कि हम केर्कगुलमें तोकतामिशके पास जा रहे थे, लेकिन उसे नही पा सके। अतमें शत्रुकी एक सेनाका पता लगा। ऐकू तिमूर बरलस अपने दलको लेकर आगे पता लगानेके लिये बढा। शत्रुकी बडी सेना देखकर सात-आठ आदमियोंके साथ स्वय पृष्ठरक्षा करता वह पीछे लौटा। देखते ही शत्रु उसकी ओर दौडे। एक तीरसे बरलसका घोडा घायल हो गया और दूसरे तीरसे वह स्वय भी आहत हुआ, लेकिन वह खबर देनेके लिये बेतहाशा घोडेको दौडाता रहा। घोडा गिर गया, तो उसने दूसरे घोडेको लिया। उस घोडेको भी शत्रुओने तीरसे घायल किया और वे घेरकर मुबश्शिरका सिर काटकर साथ ले लौट गये, कुछ साथी भी उनके हाथ लगे। इसी समय एक दूसरी तेमूरी सेना आ गई, जिसके कारण शत्रुओने पीछा करना छोड दिया।

तेमूरके यहा अमीर-पुत्रोको तरखनकी उपाधि थी, जिन्हे शाही तबूमें किसी वक्त भी आनेकी इजाजत थी। छिङ्गिस्के समय भी तरखनकी पदवी प्रचलित थी। तेमूरने तरखनो और उनके वशजोके नौ कसूर माफ कर रक्खे थे।

चलते-चलते तेमूरी सेना ५४° अक्षाशमें पहुची, जहा गर्मियोमे असली रात नही होती और गोधूली-के बाद ही उषा चली आती है। इसके कारण यह सवाल पैदा हो गया, कि रातके अभावमें चौबीस घटेमें पाच बार नमाज पढनेकी व्यवस्था कैसे की जाये। इमामने फतवा देकर रातकी नमाजसे लोगोको छुट्टी दे दी। तोकतामिशकी यही नीति थी, कि पीछे हटते-हटते शत्रुको उसके मुख्य स्थानसे दूर खीचते ऐसी जगह लाओ, जहा रसद-पानी दुर्लभ हो जाय। तेमूरने युद्ध-परिषद् बुलाई और सेनापतियोसे सलाह करके बीस हजार सेनाके साथ उमरशेख मिर्जाको आगे शत्रुके ऊपर भेजा। इसी समय ५-६ दिन बर्फ पडती रही, जिसके कारण सर्दी बहुत बढ गई। सोमवार १८ जून (१३९१ ई०) को आसमान साफ हुआ। अब बुल्गारोंके देशमें कन्दुच स्थानमें पहुचकर तेमूरने अपनी सेनाको व्यवस्थित करते हुये कुरानके फातेहा सूरा (अध्याय) की सात आयतो (पक्तियो) के अनुसार उसे सात डिवीजनोमें बाटा। थकी होनेपर भी सेनाका उत्साह मद नही था। तेमूरने रिश्वत देकर काम लेना चाहा और तोकतामिशके झडाबरदारसे ठहरा लिया, कि युद्धके समय वह झडेको गिरा देगा। जब अमीर अकतागको वामपक्षका सेनापति बन युद्ध छेडनेको कहा, तो उसने तोकतामिशसे माग की, कि हमारे सबधीके हत्यारे अमीरको इसी वक्त मेरे हवाले किया जाय। तोकतामिशने युद्धके बाद देनेका वचन दिया, लेकिन वह इससे सतुष्ट नही हुआ और अपने सारे अकताग (श्वेत-पर्वत) कबीले तथा कितने ही दूसरे आदमियोके साथ चला गया। तेमूरके क्षुद्र-एसियापर आक्रमण करते समय यह अकताग कबीला दोबरूजामें रहता था। हालमें वह दन्यूबपार अद्रियानोपोलमें बस गया था।

युद्ध आरभ करनेसे पहले तेमूरने घोडेसे उतरकर दो रकअ (नमस्कार) नमाज पढी। सेनाने "अल्लाह अकबर" और "सुरन" का नारा लगाया। ढोल और लोहेके झाझ बजे। इसी समय अलीके वगज तथा शरीफोके मुखिया सैयद बरकाने विजयकी भविष्यद्वाणी करते सिर नगा करके हाथ उठा दुआ की। शेखुल्-इस्लाम (इस्लामके महागुरु) महमदजानके वशज इमाम ख्वाजा जियाउद्दीन युसुफ

और शेख इस्माइल कुरानकी आयत पढ रहे थे—"ओ मुसलमानो, अल्लाहके आशीर्वादको याद रखो। वही है, जो कि तुम्हारे ऊपर हथियार चलानेवाले शत्रुओंके हथियारोको रोक देता है। अल्लाहसे डरो। विश्वासियोको उसपर विश्वास करना चाहिये।" मुट्ठीभर ककडिया लेकर दुश्मनकी ओर फेंकते हुये इमामने चिल्लाकर कहा—"उनके चेहरे काले हो जायें।" फिर तेमूरकी ओर मुह करके इमाम बोला—"जहा चाहे जा, अल्लाह तेरी रक्षा करेगा।"

चतुथ सेनाके कमाडर अमीर सैफुद्दीनने सबसे पहले आक्रमण किया और शत्रुके वाम-पक्षको तोड दिया। तोकतामिशके आदमियोने चारो ओर फैलकर उसे घेरना चाहा, लेकिन उन्हें रोककर पीछे ढकेल दिया गया। वामपक्ष कुछ नष्ट हो गया और कुछ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुआ। इसके बाद दूसरे सेनापति अपनी सेना लेकर आगे बढे। भयकर हत्याकाड होने लगा। तोकतामिशने तेमूरके केंद्र—दक्षिणपक्षके प्रहारको रोकना असम्भव समझकर उसके वाम-पक्षपर प्रचड प्रहार किया। वामपक्ष टूट गया और मुख्य भागसे उसके कितने ही अश अलग हो गये। तोकतामिशने वस्तुत बीचसे चीरकर पीछा जा धरा। बडी भयकर अवस्था थी। तेमूरने आदमियोको विश्वास पैदा करनेके लिये अपने पोते अबूबकरको हुकुम दिया। उसने गारदके दस हजार सवारोको ले वहा जा घोडेसे उतरकर कहा—"तबू गाडो, आग जलाओ, खाना तैयार करो।" इसका प्रभाव तोकतामिशके ऊपर पडा और जब तेमूरकी रिश्वतके कारण उसके झडाबरदारने झडेको नीचा कर दिया, तो उसकी रही-सही हिम्मत भी टूट गई। वह पीछे हटकर गुरजी या लिथुवा-नियाके राजा वितुत (वियोल्द) के पास भागा। युद्ध तीन दिनतक होता रहा, जिसमें एक लाख किपचक मारे गये। तेमूरको भारी परिमाणमें रसद और दूसरी चीजें मिली।

युद्ध क्षेत्रमे ही डेरा डलवा विजयके लिये अल्लाहको धन्यवाद देते तेमूरने सेनामें इनाम बाटे और हर दस आदमीमेंसे सातको शत्रुका पीछा करनेका हुकुम दिया। वह बोल्गातक गये, जिसमें कतलसे बच गये शत्रुओमेंसे कितने ही डूब गये और थोडेसे ही प्राण बचाकर निकल पाये, जिनके भी बीवी-बच्चे, गुलाम और धन-सपत्ति तेमूरी सेनाके हाथ लगे। तोकतामिशका रनिवास भी पकडा गया। तेमूरी-सेनाने अजक (त्रिमिया), सेराय, सेरायचुक, हाजीतरखन (अस्त्राखान) तक लट-मार और ध्वसलीला मचाई। सुवण ओर्दूके लिये यह इतना जबदस्त प्रहार था, कि उसके बाद वह फिर अपनी पुरानी स्थिति में नही पहुच सका। उसकी जनसख्या बहुत कम हो गई, बोल्गातट उजाड हो गया और शताब्दियोंके परिश्रमसे बनी वहाकी समृद्धि खतम हो गई। तेमूरने उरतुपा (स्तावरोपोल) जिलेके कदुरताके नजदीक अपना शिविर गाडा। योद्धाओने यहा विश्राम किया। उनके साथ घोडो, ऊटो, ढोरो, भेडो और तरुण दास दासियोकी भारी सख्या थी। रूप-रगमें अत्यत सुन्दर पाच हजार तरुण-तरुणिया तेमूरकी सेवामें गई। लूटका माल इतना मिला कि सारी सेना सतुष्ट हो गई। उरतुपामें छब्बीस दिन रहकर तेमूरने विजयोत्सव मनाया। यहीपर लघुविजय (फतेहनामा-कुचुक) लिखा गया।

इसके बाद तेमूर समरकदकी ओर लौटा। अक्तूबरमें वह साबरानमें था, फिर उतरार होते राजधानी समरकद पहुचा।

यागलानमें लिय उइगुर अक्षर तथा मगोल भाषा में २० मई १३९३ ई० की लिखी हुई तोकतामिश-की यारलिक (शासनपत्र) मास्कोमें अब भी मौजूद है, जिससे मालूम होता है, कि १३९१ ई० की भारी पराजयके बाद फिर वह अपनेको सभालने लगा था और तीन-चार वर्षोंमें इतना सभल गया, कि तेमूरका फिर उसकी तरफ ध्यान देना पडा।

द्वितीय अभियान (१३९५ ई०)—२८ फवरी १३९५ ई० को फिर तेमूरने तोकतामिशके विरुद्ध प्रस्थान किया। उसके अन्त पुरकी कुछ रानिया सुलतानिया (ईरान) भेज दी गईं और कुछ समरकदमें रखी गईं। शम्शुद्दीन अलमालिगीको दूत भेज तेमूरने तोकतामिशको समझाने-बुझानेकी कोशिश की, लेकिन उसका उत्तर बडा उद्धततापूण था। दूत लौटकर काकेशसके सानुओपर कास्पियन

समुद्रसे पाच फरसख (लीग) दूर अपने स्वामीसे आकर मिला। उस वक्त वाम-पक्ष समुद्र-तटसे पहाड़के ऊपरतक बिखरा पड़ा था। अबकी तेमूरी सेनाने काकेशसके चरणोंमें कास्पियनके पश्चिमी किनारेका रास्ता लिया था। सेनाको दरबदके दुगम घाटीको पार करनेमे दिक्कत नहीं हुई। तोकतामिशकी प्रजा काइतकने छेड़खानी की, जिन्हें तेमूरने भयकर हत्या करके खतम कर दिया, उनके गावोको नष्ट कर दिया। सेना आगे बढती चली। तोकतामिश तेरेक नदीके किनारे मुकाबिलेकी प्रतीक्षामें बैठा हुआ था, लेकिन तेमूरी सेनाको देखते ही वहासे भाग चला। पहिले कुरापर और तेरेकपर तेमूर तथा तोकतामिश एकत्रित हुये थे। २२ अप्रैल १३९५ ई० को दोनोमें युद्ध हुआ। शत्रुके सेनापतियोके आगे बढनेकी खबर पाकर तेमूरने अपनी सत्ताईस सेनाओंके साथ आक्रमण कर शत्रुको पीछे हटा दिया। पीछा करते हुये उसके आदमी अधिक दूरतक चले गये, जिसके कारण तोकतामिशकी सेनाने मुड़कर जब हमला किया, तो उन्हें तितर-बितर होकर पीछे भागना पड़ा। यह खबर सुनकर शत्रुने और भी पीछा किया। तेमूर उनपर बाणोंकी वर्षा करने लगा। उसका तरकश खाली हो गया। तलवार और भाला भी टूट गये। इसी समय तोकतामिशके सैनिकोने उसे घेर लिया। इस समय शेख नूरुद्दीन और उसके पचास बहादुरोने घोड़ेसे उतरकर बाणवर्षा करके तेमूरको आड दिया। दूसरे अमीर भी दुश्मनकी तीन गाडियोको पकडने-में सफल हुये, जिनकी मददसे उन्होने मोर्चा-बदी कर दी। सेना आसपास जमा होने लगी, बाजे बजने लगे। शत्रुने समझ लिया, कि उसका प्रधान शिकार कहा है, किन्तु वह इस मोर्चाबन्दीको नही तोड सका। इसी सम य शत्रुकेदक्षिणपक्षको तेमूरी सेनाने ध्वस्त कर दिया। तो भी तेमूरके वामपक्षकी स्थिति अच्छी नही थी। शत्रुने उसे तोडकर चारो ओरसे घेर लिया था। अपने कमाडरके हुकुमपर सैनिक घोडेसे उतर अपनी-अपनी ढालोके नीचे घुटने समेटकर बैठ गये। चारो ओरसे वर्षाकी बूदोकी तरह हथियारोके प्रहार होने लगे। इसी समय जहानशाह बहादुर अपने घोड़सवारोको लेकर दौड़ा, और प्रहार करनेवाली शत्रुसेनाके दोनो पक्षोपर टूट पड़ा। पलड़ा पलट गया। वह और उसके साथी दूसरे सेनापतिने मिलकर शत्रुके वामपक्षको मार भगाया। फिर केंद्रके साथ सघर्ष आरभ हुआ। किपचक सेनापति यागलिबीने तेमूरी सेनापति उसमान बहादुरको द्वंद्वयुद्धके लिये ललकारा। दोनो मैदानमें उतरे। उनके अनुयायियोने भी अपने सेनापतियोका अनुकरण किया। यागलि ि शायद पोलराजा यागेलोन था। सघर्ष भयकर हुआ, किंतु अतमें किपचक सेनाको हारना पड़ा। तोकतामिश ओगलानो (राजकुमारो) और नोयनों (अमीरो) के साथ भागा। तेमूरी सेनाने उसका पीछा करके भारी सख्यामें किपचकोको तलवारके घाट उतारा। जो बदी हाथमें आये, उन्हे भी पीछे प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। इस विजयमें प्रसन्न हो तेमूरने सिर नगा करके घुटने टेक अल्लाहके सामने दुआ पढी। अमीरोने तेमूरके ऊपर रत्नोकी वरसा की। तेमूरने लूटके माल और अपने पासके धनमेंसे भी सैनिकोंमें खूब उदारतापूर्वक इनाम बाटा।

तोकतामिशका पीछा करते हुये वोल्गाके किनारे-किनारे तेमूर उकाकतक गया और वोल्गाके तुरातू घाटपर थोडी देर ठहरा। उसने उरुस खानके पुत्र तथा अपने शरणागत कोइरिअक ओगलान को सुनहली खलअत और कीमती कमरबद प्रदान करके उज्बेक रिसालेके साथ किपचकोंका खान बनाया। तोकतामिश वोल्गारोके जगलोमें भागा। पहले ही अभियानवाले घाटसे वोल्गा-पार हो तेमूर सोने, चादी, समूर और दूसरे बहुमूल्य मृगछालो, रत्न-मणि, मोतीकी अपार राशि तथा भारी सख्यामें सुन्दर लड़के-लड़कियोको लिये दनियेपरकी ओर चला। उसके किनारे मढकिरमान स्थानमें जाकर बरकियारोक ओगलानके डेरेपर जा पड़ा और उसे बिल्कुल नष्ट कर दिया। बरकियारोक मुश्किलसे जान बचाकर भागा। पीछा करते तेमूरी सेनाने दोनके तटपर उसके रनिवासको जा पकड़ा, लेकिन बरकियारोक भाग निकला। तेमूरने ओगलानके रनिवासके साथ अच्छा बर्ताव किया, और घोड तथा दूसरी भेंटें दे उसे बरकियारोकके पास भेज दिया। मीराशाह अपनी सेना लेकर दूसरी ओर गया हुआ था। उसने एलात्ज किलेको सर किया। मास्कोका तरुण महाराजुल वासिली अपने चचा व्लादिमिरको राज-धानी सौंप ओका नदीके पीछे कलोम्नाकी ओर भाग गया। वहासे उसने महासघराजको लिखा, कि कुमारी (मरियम) देवीकी प्राचीन मूर्तिको मास्को ले जाओ, जिसमें देवीके प्रतापसे नगरकी रक्षा हो।

भक्तोकी दो पातियोके बीचमे मूर्ति लाई गई। लोग चिल्ला रहे थे—"भगवान्‌की मा, रूसको बचाओ।" मास्कोके एसम्प्सन गिर्जेमें कुमारीका बडा स्वागत किया गया। तेमूर दोनसे कुछ दूर आगे बढकर लौट गया। भगवान्‌की माने मास्कोको बचा लिया, नही तो तेमूरने उसकी वही दशा की होती, जो कि उसने चार वर्ष बाद १३९८-९९ ई० म दिल्लीकी की। तेमूरने कुमारीके प्रतापसे नही, बल्कि शरद् और हेमन्तके कठोर जाडेके भयसे वहा और रहना पसद नही किया। वह दक्षिणमें चलकर अजक (क्रिमिया) पहुचा। लोगोकी सारी प्रार्थना व्यर्थ गई। उसने मुसलमानोको अलग करके बाकी लोगोको एक ओरसे कटवा दिया और शहरमें आग लगवा दी। फिर कूबान और जार्जियामें सत्यानाश मचाते आगे बढा। काकेशसके युद्धको उसने धर्मयुद्ध (जहाद) घोषित किया था। भारतकी भाति ही उसने इस देशको भी काफिरोको मिटाकर शुद्ध करना चाहा। उनकी बस्तियोको तेमूरी सेनाने जला दिया, उनके गिर्जो और मूर्त्तियोको नष्ट कर दिया। हाजीतरखन (अस्त्राखान) नगरमें विश्वासघातकी खबर पा जाडोमें तेमूर वहा पहुचा। लोगोने वोल्गाके पानीकी बर्फ जमाकर शहरके चारो ओर प्राकार बना दरवाजे काट रक्खे थे, लेकिन तेमूरके सामने बर्फका मोटा दुर्ग नही ठहर सका। भीतर घुस मनुष्यो, पशुओ और सपत्तिको हटानेका हुकुम दे उसने नगरमें आग लगा दी। वहा से तेमूर किपचकोकी राजधानी सराय-बेरेकमें पहुचा। वहा भी नागरिकोको भेडोकी तरह जबह करके शहरमें आग लगा दी।

इस प्रकार किपचक देशको पूरी तौरसे बरबाद करके तेमूर दरबद और आजुरबाइजानके रास्ते लौटा। वह अपने साथ बहुतसे किपचकोको भी ले आया था, जिनमें बोलगारीके पासवाले बोल्गातटके निवासी कराकल्पक (काली टोपी) भी थे, जिनकी सतानें आज अराल-समुद्रके पास कराकल्पकियो के स्वायत्त-गणराज्यमें बसी हुई है।

इसके बाद तेमूर बहुत नही जिया, और १३९९ ई० में मर गया। इसका वर्णन हम यथास्थान करेंगे।

तेमूरके लौट जानेपर तोकतामिश फिर १३९८ ई० में सरायबेरेक पहुचा, लेकिन तेमूर कुतुलुकने तबतक उसे सभाल लिया था। कुतुलुकने तोकतामिशको मार भगाया। वहासे अपनी बीबी, दो पुत्रो, खजाने और बहुतसे अनुयायियोंके साथ भागकर वह कियेफ गया। सुवर्ण-ओर्दूका वह अतिम महान् शासक था। जिस तरह उसके वैभवका सितारा चमका, उसी तरह वह अस्त भी हो गया।

१३ कोइरिअक ओगलान नूजी, ओगलान, उरुस-पुत्र (१३९६ ?)

नूजी भागकर उस समय तेमूर-लगके दरबारमें रहता था, जबकि तेमूरने किपचकोपर द्वितीय अभियान किया। एक इतिहासकारके अनुसार तोकतामिशकी पराजयके बाद तेमूरने उसे जू-छिका उलुस ७७७ हि० (२ जून १३७५–२० मई १३७६ ई०) में दे दिया, लेकिन इस सन्‌में गलती मालूम होती है, क्योकि तेमूरका दूसरा अभियान १३९५ ई०में और पहला अभियान १३९० ई० में हुआ था।

१४ तेमूर कुतुलुक, तेमूरबेक-पुत्र (१३९५–१४०० ई०)

तेमूर-लगके सबसे पहले आक्रमणके समय ७८९ हि०, (१० जून १३७७ ई०–२९ जून १३७८ ई०) यह तेमूर-लगके साथ था और तोकतामिशकी प्रथम पराजय होनेके बाद ७९३ हि० (९ दिसम्बर १३९० ई०–२८ नवम्बर) में तेमूरने इसे उसके उलुसका खान बनाया। द्वितीय अभियानमें तेमूरके किपचकसे हटते ही तोकतामिशसे इसका सघर्ष हुआ। तोगाई सरदार इदिकु कुतुलुकके पक्षमें था। वह तोकतामिशको तो मार भगानेमें सफल हुआ, लेकिन उसके पूर्वी भागपर कोइरिअक उरुस-पुत्रका अधिकार बना रहा। १३९७ ई०में लियुवानी राजा वितूतने तेमूर कुतुलुकके ऊपर आक्रमण किया और कई हजार तारतारोको उनके स्त्री-बच्चोके साथ पकड ले गया। ये तारतार पीछे वोलना और ओकके बीचमें बस गये। ईसाइयोंके बीचमें इस्लामको कायम रखना उनके लिये मुश्किल था, इसलिये वह दूसरी पडोसी जातियोमें मिश्रित होकर ईसाई बन गये, और केवल तारतार उनका नाममर रह गया। तेमूर कुतुलुकने बडी जल्दी फिर अपनी शक्तिको इतनी मजबूत कर ली, कि उसने वितूतसे

माग की, कि अपने राज्यके कियेफ नगरमें भागे तोकतामिशको मेरे पास भेज दो। वितूतके इन्कार करनेपर उसने आक्रमण कर दिया और ५ अगस्त १३९९ ई० को लिथुवानी और किपचक सेनाओ मे भारी लडाई हुई। वितूतको अपने बारूदी हथियारोपर बहुत भरोसा था, जिनका आविष्कार मगोलोके बारूदी हथियारोके सहारे हालमें ही युरोपमें किया गया था। लेकिन उस समयकी तोपें अभी बहुत आरभिक अवस्थामें थी, दागनेसे पैदा हुई गर्मीको उनकी धातु बर्दाश्त नही कर सकती थी। कुतुलुकको सेनाने पीछे जाकर लिथुवानी पक्तिको तोड दिया। लेकिन, तोकतामिश वहासे निकल चुका था, वितूतको भी जान लेकर भागना पडा। लिथुवानी सेना नष्ट हो गई। किपचकोने भगोडोका पीछा कर कितनो हीको मारा और कितनोको बदी बनाया। तारतारोने लुत्स्कतक लिथुवानी राज्यको लूटा। उन्होने कियेफ नगरपर भारी जुरमाना लगाया। इसके बाद सात सालतक और तोकतामिश इधर-उधर भटकता फिरा। अन्तमें वह पश्चिमी साइबेरियाके तुमान-जिलेमे शादीबेकके हुकुमसे इदिकूके हाथो मारा गया।

कुतुलुक ८०२ हि० (३ सितंबर १३९९ ई०–१२ अगस्त १४०० ई०) मे वोल्गाके किनारे कजान नगरमें मरा।

१५ शादीबेक, तेमूरबेक-पुत्र (१४००-१४०८ ई०)

किपचकोका पूर्वी भाग अब भी कोइरिअकके हाथमें था। उसके पश्चिमी भागपर शादीबेक शासन करने लगा। बीचमें हुई गडबडीके कारण शोख होकर मास्कोके महाराजुल वासिलीने कई सालोसे कर नहीं भेजा था। १४०५ ई० में कर उगाहनेके लिये खानका दूत मास्को पहुचा। तेमूर कुतुलुकने लिथुवानी राजाका पाठ पढाकर अपनी काफी धाक जमा ली थी, इसलिये महाराजुलने दूतकी भी भेंट-पूजा की और कर भी बेबाक कर दिया। ८०८ हि० (२३ दिसबर १४०५–२१ जनवरी १४०६ ई०) में शादीबेक का अमीर इदिकू ख्वारेज्मको तेमूरियोसे छीन अमीर अकाको वहाका राज्यपाल बना लौट गया। शायद इसी साल ईद-रमजानके दिन इराकियोकी एक बडी जमात तेमूरी मिर्जा खलील सुल्तानसे नाराज हो गई और समरकद छोडकर ख्वारेज्म चली गई। तुगा तेमूरखानके पौत्र दुकमान बादशाहके पुत्र पीरबाद-शाह तेमूरी सुल्तान अबूसईदके डरसे भागकर माजन्दरान (ईरान) में भाग गया था। वह वहासे ख्वारेज्ममें आ गया, जब उसने देखा कि वह तेमूरियोके हाथसे निकल गया है। इपीर बादशाहको इराकियोने ख्वारेज्मका बादशाह बनाया और मिर्जा खलीलके दिये हुये धनको उसे भेंट दे वह माज दरान चले गये। ख्वारेज्मका हाकिम अब भी अका था।

शादीबेक ८११ हि० (२७ मई १४०८–१५ मई १४०९ ई०) में मर गया।

१६ पूलाद खान, तेमूरबेक-पुत्र (१४०८–१४१० ई०)

भाईकी जगहपर पूलाद गद्दीपर बैठा और अमीर इदिकू सारी सल्तनतका वजीर-आजम बना। उसने अकाको लौटा उसकी जगह बगजलेको ख्वारेज्मका राज्यपाल बनाया।

पश्चिमी राजा कही खानोकी शक्तिको कमजोर न समझ लें, इसलिये १४०९ ई०की शरद्में तारतारोने दक्षिणसे द्नियेपरकी ओर बढते लिथुवानियापर आक्रमण किया। मास्कोके महाराजुलने कर बाकी रखखा था और ऊपरसे तोकतामिशके पुत्रको भी शरण दी थी। पूलादने इस अपराधके लिये दड देनेके वास्ते एक बडी सेना मास्कोके विरुद्ध भेजी। महाराजुल वासिली केवल तोपो और जाडेपर भरोसा कर सकता था, इसलिये रानीको लेकर वह कस्त्रोमा भाग गया। दिसबर १४१० को तारतार सेना मास्कोके सामने पहुची। तीस हजार सेना महाराजुलके पीछे पडी, और उसने पेरियेस्लाव्ल, ज्ञालेस्की, रोस्तोफ, दिमित्रोफ, सेरपूकोफ, निजनी-नवोग्राद और गोरदेत्स नगरोको लूटकर जला दिया। एक बार फिर रूसियोको बातू और तोकतामिशके दिन याद आने लगे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार— "अभागे रूसी प्रतिरोध करनेकी जगह भेडोके झुडकी तरह भेडियोद्वारा पीछा किये जा रहे थे।" उनमेंसे कुछ कतल किये गये, कुछ तारतार धनुर्धारियोंके बाणोंसे बिंधे। तरुण दास बनाने-बेंचने के लिये पकड

लिये गये, सयान कपडे छीनकर नगे करके जाडेमे मरने के लिये छोड दिये गये। आदमियोको एक दूसरेके साथ जजीरोमें बाध दिया गया और एक तारतार चालीससे अधिक आदमियोको काबूमें रख सकता था। लेकिन, मास्कोका मुहासिरा सफल नही रहा। दूसरा चारा न देखकर इदिकू तीन हजार रूबल जुरमाना लेकर लौट गया। लौटने वक्त उसने र्याजन नगरको लूटा। इदिकूने इसी समय महाराजुलको पत्रमें लिखा था —

"इदिकू, राजुल-पुत्रो और राजकुमारोंसे सलाह लेनेके बाद वासिलीको अभिनदन भेजता है। यह मालूम करके, कि तुमने तोकतामिशके पुत्रोको शरण दी है, महान् खानने मुझे आज्ञा दी, कि तुम्हारे विरुद्ध चढाई करू। तुम हमारे व्यापारियोके साथ ही दुर्व्यवहार नही करते, बल्कि तुमने हमारे दूतोका भी बडा अपमान किया है। अपने बूढे आदमियोसे पूछो, कि क्या पहले कभी ऐसा होता था। उस समय रूस अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर था। वह खानका पवित्र सम्मान करता था और नियमपूर्वक कर अदा करता था। हमारे व्यापारियो और दूसरोके प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था। इसकी जगह तुमने क्या किया? जब तेमूर कुतुलुक सिंहासनपर बैठा, तो क्या तुम स्वय आय या तुमने अपने राजकुमारो या अपने एक बायरको भी भेजा? तेमूरके मरनेके बाद शादीबेकके आठ वर्षोंके शासनकाल में क्या तुमने एक बार भी आज्ञाकारिताका कोई भी काम किया? और अतमें पूलाद खानके तीन वर्षोंके सिंहासनपर बैठनेके कालमें क्या तुम या जेठे रूसी राजपुत्रोमेंसे कोई अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये ओर्दूमें गया? तुम्हारे सारे काम अपराधपूर्ण हुये। जब फेदोर कोसका जीता था, तो सारे रूसी उसकी सलाह मानकर अच्छा बर्ताव करते थे, लेकिन तुम अब उसके पुत्र जानकी बात नही मानते, जो कि तुम्हारा कोषाध्यक्ष और मित्र है। तुम बडोकी सलाह माननेमे इन्कार करते हो, जिसका परिणाम देख ही रहे हो, तुम्हारे देशकी बरबादी हो रही है। अगर तुम इससे बचना चाहते हो, तो अपने सबसे बुद्धिमान् बायरो—इलिया, पीतर, जान निकितिच आदिकी बात मानो और अपने किसी बडे अमीरके साथ वह भेंट भेजो, जिसे रूस जानीबेकके पास भेजा करता था। रूसी लोगोकी गरीबीकी बातें बताकर तुमने जो खानको बहलाना चाहा है, वह सब झूठ है। हम तुहारे देशके कोने-कोनेको देख चुके हैं। हम जानते है कि हर दो हलके ऊपर तुम्हें एक रूबल कर मिलता है। यह पैसा कहा जाता है? हम तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नही करना चाहते। तुम क्यो एक अभागे भगोडेकी तरह काम कर रहे हो? सोचो और अकलकी बात मानो।"

लेकिन महाराजुलके ऊपर इदिकूके उपदेशका कोई असर नही हुआ, क्योकि वह किपचकोकी भीतरी हालतको अच्छी तरह जानता था।

८१३ हि० (६ मई १४१०—२४ अप्रैल १४११ ई०) में पूलाद खानको तेमूर खानने मार भगाया।

१७ तेमूर खान, तेमूर कुतुलुक-पुत्र (१४१०-१४११ ई०)

इतिहासकार अब्दुरजाक समरकदी (१४२२ ई०) के अनुसार * यह तेमूर कुतुलुक खानका पुत्र था, लेकिन गफ्फारीने इसे शादीबेकका पुत्र कहा है। शायद यह तेमूर कुतुलुकका ही पुत्र था। पूलाद खानके वक्त राज्यका हर्ता-कर्ता अमीर इदिकू था, इसलिये उसको दबाये बिना तेमूर अपनेको सुरक्षित नही समझता था। इदिकू भागकर ख्वारेजम जा तैयारी करने लगा। तेमूरने अजक बहादुर और गजनके नेतृत्वमें सेना भेजी। ख्वारेजम-शहर (उरगज) से दस दिनके रास्तेपर साम नामक स्थानमें लडाई हुई। ख्वारेजमका राज्यपाल बगजले मारा गया और इदिकू हारकर ख्वारेजम भाग गया—यह शायद ८१४ हि० (२५ अप्रैल १४११—अप्रैल १४१२ ई०) के आरभकी बात है। तेमूरके सेनापति दकिना और गजन भी पीछा करते हुये ख्वारेजम पहुचे। उन्होने ६ महीना इदिकूको मुहासिरेमें रक्खा। इसी समय पता लगा, कि तोकतामिश-पुत्र जलालुद्दीनने तेमूरको हराकर गद्दी छीन ली।

* "मतल-उस्-सादैन-व-मजम-उल्-बहरैन्"

१८ जलालुद्दीन, जलाबेर्दी, सेलेनी, तोकतामिशका ज्येष्ठ पुत्र (१४१४ ई०)

जलालुद्दीनने गद्दी सभालते ही ख्वारेज्ममे लडते किपचक सेनापतिके पास पैगाम भेजा, कि इदिकू हमारा दुश्मन है, उसे पकड लाओ। फिर उसने दूसरा सदेश भेजा, कि अगर इदिकू अपने पुत्र सुल्तान महमूद तथा उसकी पत्नी (जो कि जलालकी बहन भी थी) को मेरे पास भेज दे और सिक्का तथा खुतबा मेरे नामसे जारी करे, तो उससे लडाई मत करो। अमीर गजन भी जलालुद्दीनका बहनोई था। उसने सुलह करनी चाही। उधर दकिना तेमूर खानका बहनोई था, इसलिये उसने दूसरे सदेशकी ओर ध्यान नही दिया। इसी समय तेमूरखानके फिर लौट आनेकी खबर मिली। गजनने दकिनाको शराब पिला मतवाला कर अपने नौकर जान ख्वाजाको भेज तेमूरको मरवा दिया। यह खबर सुनकर जलालुद्दीनने अमीर गजनको बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुये सदेश भेजा, कि गजन खा मेरा अमीर है, उसका हुकुम मानो। अमीर दकिनाने तेमूरके लिये लोगोको बहकाया। लेकिन ख्वारेज्मका मुहासिरा और जोरका हुआ। अमीर खिजिर ओगलान राजकुमार होनेसे दर्जेमें सबसे बडा था। उसके बाद दकिना फिर गजनका दर्जा था। किपचक सेनापतियोने अमीर इदिकूसे सुलह कर लेना ही अच्छा समझा, क्योंकि जलालुद्दीन खानकी वैसी ही आज्ञा थी। अमीर इदिकू सुलह करनेके बाद शहरसे बाहर निकल आया। खूब एक दूसरेकी जियाफतें होने लगी। सेनापति मुहासिरा हटाकर किपचक भूमिकी ओर लौटे जा रहे थे। इसी समय बलूकिया गावमें उनकी कजुलई बहादुरसे मुलाकात हुई। उसने बिना सर किये ही लौटनेकी बात लेकर ताना मारा—"ख्वारेज्मको दखल किये बिना कैसे लौटे जा रहे हो?" अमीरोंने कहा—"हमने सात महीना मुहासिरा करके युद्ध किया, लेकिन शहर सर नही कर सके, तेरे पास तो चार हजारसे बेशी मर्द भी नहीं है। लौटनेकी सलाह हुई। हमने सुलह कर ली। इदिकू अपने पुत्रको खानके पास (जामिन) भेजेगा।"

कजुलईने उत्तर दिया—"मै अकेला ही इदिकूके लिये काफी हू" और वह गर्वके साथ ख्वारेज्मकी ओर चल पडा। अमीर इदिकूको भी खबर लग गई। सेना कम होनेसे वह चालसे काम लेना चाहता था। वह दिनमें छिपा रहता और केवल रातको सफर करता। नजदीक आनेपर इदिकूने अपनी सेनाको दो भागोमें बाटकर एक भागसे कहा, कि तुम थोडा लड करके पीछे हटो और रास्तेमे पुराने नम्दोंके बचे बोगचोको फेंकते आओ। युक्ति काम कर गई। कजुलईकी सेना बोगचोको बटोरनेके लिये बिखर गई, इसी समय इदिकू टूट पडा। कजुलई मारा गया। इदिकूने उसके सिरको झडे-पताके आदिके साथ ख्वारेज्म भेजा। कजुलईके भगे हुये आदमियोने जब अपने सेनापतिके झडेको चलते देखा, तो समझा कि वह विजय-यात्रा करते हुये ख्वारेज्म जा रहा है, तो वह छिपी जगहोंसे आकर वहा पहुचे और इदिकूके जालमें हजारो आदमी फस गये।

इतिहासकार गफ्फारी (मृत्यु १५७६ ई०) के अनुसार* "जलालुद्दीन और करीमबरदी कपक जब्बारबर्दी, मोहम्मदखान और दूसरे राजकुमारो जैसोने कुछ समयतक हकूमत की।" इस तरह अब किपचककी राजावली जल्दी जल्दी बदलते खानोके कारण गडबडीमें पड गई। कुछको छोड-कर यह कहना मुश्किल है, कि कौन खान किसके बाद गद्दीपर बैठा।

१९ करीमबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१४ ई०)

करीमबर्दी कुछ दिनोतक गद्दीपर रहा। शायद इसे जब्बारबर्दीने मार डाला, जिसका भी शासन थोडे ही दिनोतक रहा।

२० चिङ्-गिज ओगलान (१४१४ ई०)

समरकदीके अनुसार चिङ्-गिज ओगलानको जब्बारबर्दीने हराकर स्वय गद्दी सभाली।

* "नस्ख जहानारा"।

लिये गये, सयान कपडे छीनकर नगे करके जाडेमे मरने के लिय छोड दिय गय। आदमियोका एक दूसरेके साथ जजीरोमें बाध दिया गया और एक तारतार चालीससे अधिक आदमियोको बाध रख सकता था। लेकिन, मास्कोका मुहासिरा सफल नही रहा। दूसरा चारा न देखकर इदिकू तीन हजार रूबल जुरमाना लेकर लौट गया। लौटते वक्त उसने र्याजन नगरको लूटा। इदिकूने इसी समय महाराजुलको पत्रमें लिखा था ——

"इदिकू, राजुल-पुत्रो और राजकुमारोंसे सलाह लेनेके बाद वासिलीको अभिनदन भजता ह। यह मालूम करके, कि तुमने तोकतामिशके पुत्रोको शरण दी ह, महान् खानने मुझे आज्ञा दी, कि तुम्हार विरुद्ध चढाई करु। तुम हमारे व्यापारियोंके साथ ही दुर्व्यवहार नही करते, बल्कि तुमने हमारे दूतोका भी बडा अपमान किया है। अपने बूढे आदमियोंसे पूछो, कि क्या पहले कभी ऐसा होता था। उस समय रूस अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर था। वह खानका पवित्र सम्मान करता था और नियमपूर्वक कर अदा करता था। हमारे व्यापारियो और दूसरोके प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था। इसकी जगह तुमने क्या किया ? जब तेमूर कुतुलुक सिंहासनपर बैठा, तो क्या तुम स्वय आय या तुमने अपने राजकुमारो या अपने एक बायरको भी भेजा ? तेमूरके मरनेके बाद शादीबेकके आठ वर्षोंके शासनकाल में क्या तुमने एक बार भी आज्ञाकारिताका कोई भी काम किया ? और अतमें पूलाद खानके तीन वर्षोंके सिंहासनपर बैठनेके कालमें क्या तुम या जेठे रूसी राजपुत्रोमेंसे कोई अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये ओर्दूमें गया ? तुम्हारे सारे काम अपराधपूर्ण हुये। जब फेदोर कोमका जीता था, तो सारे रूसी उसकी सलाह मानकर अच्छा बर्ताव करते थे, लेकिन तुम अब उसके पुत्र जानकी बात नहीं मानते, जो कि तुम्हारा कोषाध्यक्ष और मित्र है। तुम बडोकी सलाह माननेसे इन्कार करते हो, जिसका परिणाम देख ही रहे हो, तुम्हारे देशकी बरबादी हो रही है। अगर तुम इससे बचना चाहते हो, तो अपने सबसे बुद्धिमान् बायरो—इलिया, पीतर, जान निकितिच आदिकी बात मानो और अपने किसी बडे अमीरके साथ वह भेंट भेजो, जिसे रूस जानीबेकके पास भेजा करता था। रूसी लोगोकी गरीबीकी बातें बताकर तुमने जो खानको बहलाना चाहा है, वह सब झूठ है। हम तुहारे देशके कोने-कोनेको देख चुके हैं। हम जानते हैं कि हर दो हलके ऊपर तुम्हें एक रूबल कर मिलता है। यह पैसा कहा जाता है ? हम तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नही करना चाहते। तुम क्यो एक अभागे भगोड़ेकी तरह काम कर रहे हो ? सोचो और अक्लकी बात मानो।"

लेकिन महाराजुलके ऊपर इदिकूके उपदेशका कोई असर नही हुआ, क्योकि वह किपचकोकी भीतरी हालतको अच्छी तरह जानता था।

८१३ हि० (६ मई १४१०—२४ अप्रैल १४११ ई०) में पूलाद खानको तेमूर खानने मार भगाया।

१७ तेमूर खान, तेमूर कुतुलुक-पुत्र (१४१०-१४११ ई०)

इतिहासकार अब्दुर्रजाक समरकदी (१४२२ ई०) के अनुसार * यह तेमूर कुतुलुक खानका पुत्र था, लेकिन गफ्फारीने इसे शादीबेकका पुत्र कहा है। शायद यह तेमूर कुतुलुकका ही पुत्र था। पूलाद खानके वक्त राज्यका हर्ता-कर्ता अमीर इदिकू था, इसलिये उसको दबाये बिना तेमूर अपनेको सुरक्षित नही समझता था। इदिकू भागकर ख्वारेज्म जा तैयारी करने लगा। तेमूरने अजक बहादुर और गजनके नेतृत्वमें सेना भेजी। ख्वारेज्म-शहर (उरगज) से दस दिनके रास्तेपर साम नामक स्थानमें लड़ाई हुई। ख्वारेज्मका राज्यपाल बगजले मारा गया और इदिकू हारकर ख्वारेज्म भाग गया——यह शायद ८१४ हि० (२५ अप्रैल १४११—अप्रैल १४१ ई०) के आरभकी बात है। तेमूरके सेनापति दकिना और गजन भी पीछा करते हुये ख्वारेज्म पहुचे। उन्होने ६ महीना इदिकूको मुहासिरेमें रक्खा। इसी समय पता लगा, कि तोकतामिश-पुत्र जलालुद्दीनने तेमूरको हराकर गद्दी छीन ली।

* "मतल-उस्-सादैन-व-मजम-उल्-बहरैन्"

१८ जलालुद्दीन, जलावेर्दी, सेलेनी, तोकतामिशका ज्येष्ठ पुत्र (१४१४ ई०)

जलालुद्दीनने गद्दी सभालते ही ख्वारेज्ममे लडते सिपहसालार सेनापतिके पास पैगाम भेजा, कि इदिकू हमारा दुश्मन है, उसे पकड लाओ। फिर उसने दूसरा सदेश भेजा, कि अगर इदिकू अपने पुत्र सुल्तान महमूद तथा उसकी पत्नी (जो कि जलालकी बहन भी थी) को मेरे पास भेज दे और सिक्का तथा खुतवा मेरे नामसे जारी करे, तो उससे लडाई मत करो। अमीर गजन भी जलालुद्दीनका बहनोई था। उसने सुलह करनी चाही। उधर दकिना तेमूर खानका बहनोई था, इसलिये उसने दूसरे मतलबकी ओर ध्यान नही दिया। इसी समय तेमूरखानके फिर लौट आनेकी खबर मिली। गजनने दकिनाको शराव पिला मतवाला कर अपने नौकर जान ख्वाजाको भेज तेमरको मरवा दिया। यह खबर सुनकर जलालुद्दीनने अमीर गजनको बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुये सदेश भेजा, कि गजन सबसे बडा अमीर है, उसका हुकुम मानो। अमीर दकिनाने तेमरके लिये लोगोको बहकाया। लेकिन ख्वारेज्मका मुहासिरा और जोरका हुआ। अमीर खिजिर ओगलान राजकुमार होनेसे दर्जेमें सबसे बडा था। उसके बाद दकिना फिर गजनका दर्जा था। किपचक सेनापतियोने अमीर इदिकूसे सुलह कर लेना ही अच्छा समझा, क्योकि जलालुद्दीन खानकी वैसी ही आज्ञा थी। अमीर इदिकू सुलह करनेके बाद शहरसे बाहर निकल आया। खूब एक दूसरे की जियाफतें होने लगी। सेनापति मुहासिरा हटाकर किपचक भूमिकी ओर लौटे जा रहे थे। इसी समय बलूकिया गावमें उनकी कजुलई बहादुरसे मुलाकात हुई। उसने बिना सर किये ही लौटनेकी बात लेकर ताना मारा—"ख्वारेज्मको दखल किये बिना कैसे लौटे जा रहे हो?" अमीरोने कहा—"हमने सात महीना मुहासिरा करके युद्ध किया, लेकिन शहर सर नही कर सके, तेरे पास तो चार हजारसे बेशी मर्द भी नही है। लौटनेकी सलाह हुई। हमने सुलह कर ली। इदिकू अपने पुत्रको खानके पास (जामिन) भेजेगा।"

कजुलईने उत्तर दिया—"मै अकेला ही इदिकूके लिये काफी हू" और वह सबके साथ ख्वारेज्मकी ओर चल पडा। अमीर इदिकूको भी खबर लग गई। सेना कम होनेसे वह चालसे काम लेना चाहता था। वह दिनमें छिपा रहता और केवल रातको सफर करता। नजदीक आनेपर इदिकूने अपनी सेनाको दो भागोमें बाटकर एक भागसे कहा, कि तुम थोडा लड करके पीछे हटो और रास्तेमे पुराने नम्दोके बचे बोगचोको फेंकते आओ। युक्ति काम कर गई। कजुलईकी सेना बोगचोको बटोरनेके लिये बिखर गई, इसी समय इदिकू टूट पडा। कजुलई मारा गया। इदिकूने उसके सिरको झडे-पताके आदिके साथ ख्वारेज्म भेजा। कजुलईके भगे हुये आदमियोने जब अपने सेनापतिके झडेको चलते देखा, तो समझा कि वह विजय-यात्रा करते हुये ख्वारेज्म जा रहा है, तो वह छिपी जगहोंसे आकर वहा पहुचे और इदिकूके जालमें हजारो आदमी फस गये।

इतिहासकार गफ्फारी (मृत्यु १५७६ ई०) के अनुसार* "जलालुद्दीन और करीमबरदी कपक जब्बारबर्दी, मोहम्मदखान और दूसरे राजकुमारो जैसोने कुछ समयतक हकूमत की।" इस तरह अब किपचककी राजावली जल्दी-जल्दी बदलते खानोंके कारण गडबडीमें पड गई। कुछको छोड-कर यह कहना मुश्किल है, कि कौन खान किसके बाद गद्दीपर बैठा।

१९ करीमबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१४ ई०)

करीमबर्दी कुछ दिनोतक गद्दीपर रहा। शायद इसे जब्बारबर्दीने मार डाला, जिसका भी शासन थोडे ही दिनोतक रहा।

२० चिङ-गिज ओगलान (१४१४ ई०)

समरकदीके अनुसार चिङ-गिज ओगलानको जब्बारबर्दीने हराकर स्वय गद्दी सभाली।

* "नस्ख जहानारा"।

२१ जव्वारवर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१७ ई०)

इसीके समय ८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२–२ अप्रैल १४१५ ई०) में तेमूर-नाशके पुत्र शाहरुख ने ख्वारेज्मके ऊपर सेना भेजी, जिसमें खुरासानके अमीर अली, और अमीर इलियासख्वोजा दोनों सेनापति थे। अन्तर्वेदसे भी पाच हजारकी सवार सेना ले सेनापति मूसा आया। दोनों सेनायें ख्वारेज्म में आकर मिल गई। इस समय इदिकूका पुत्र मुवारकशाह ख्वारेज्मका राज्यपाल था, जिसने सेनाकी खवर पाकर डरके मारे वापके पास भाग जाना पसन्द किया। मुल्लाओ और नगरके वडे-बडे लोगोने नगरको शाहरुखकी सेनाके हाथमे समर्पण कर दिया। दूसरे सेनापति लौट गये, अमीर शाह-मुल्क कुछ समयतक देशके सुप्रवन्धके लिये ठहरकर ८१४ हि० (३ अप्रैल १४१३—२२ मार्च १४१४ ई०) को राजधानी हिरात चला गया।

२२ दर्विस खान

शायद यह उरुसखान वंशज था। इसने थोडे ही दिनो राज किया।

२३ चकरा खान (१४१६ ई०)

यह उरुस खानका वंशज था। यह कुछ समयतक तेमूर-पुत्र मीराशाह और पौत्र अबूबकरके दरबारमें रहा था। अमीर इदिकूने इसे किपचक बुलाया। अबूबकरने ६ हजार सवार साथ कर दिये, जिनके साथ सिल्ट बरगर नामक एक युरोपीय सैनिक भी था। गुरजी, शेरवान, दरबद, अस्त्राखान होते यह सेना सेतजुल्ते सराय (?) पहुची। वहा कितने ही ईसाई रहते थे, जिनका एक विशप भी था। सिल्ट बरगर ने लिखा है, कि वहाके पादरी लैटिन जानते थे, लेकिन प्रार्थना और गीत तारतार भाषामें करते थे। इदिकूके साथ चकरे और सिल्ट बरगर भी इपबिस (सिबिर) की ओर गये—यही साइबेरिया नाम का सबसे पुराना उल्लेख मिलता है। सिल्ट बरगरका कहना था, कि साइबेरियामें तीस दिन लंबा एक पहाड है (शायद उसका अभिप्राय उराल पर्वतसे है)। उसके आगे निर्जन भूमि पृथिवीके छोरतक चली गई है। इस पहाडके निवासी जंगली तथा दूसरोंसे भिन्न है। केवल उनके हाथ और चेहरोपर केश नही होते, नही तो सारा शरीर केशोंसे ढका होता है। वह पहाडोमें जानवरोका शिकार करते हैं और पत्ता तथा घास जो भी मिलता है, उसीपर गुजारा करते है। इलाकेके शासकने इस जंगली जातिकी एक स्त्री, एक पुरुष एवं गदहेसे-वडे-नहीं एक जंगली घोडे तथा दूसरे जानवर इदिकूके पास भेजे थे। मार्कोपोलोकी तरह सिल्ट बरगरने लिखा है, कि वहां कुत्ते हैं, जो गाडी खीचते है। इन गाडियोमें समूरी छाले भरे रहते हैं। ये कुत्ते गदहोंके बराबर होते है और जंगली लोग इन्हें खाते भी हैं। निवासियोको उगिने (उगरी) कहा जाता है। जब उनमें कोई अविवाहित तरुण मर जाता है, तो उसे बढिया कपडा पहनाते है, भोज करते है, फिर लाशको अर्थीपर रखकर ऊपर सुन्दर चदवा टागकर जलूस निकालते है। आगे आगे तरुण-जन सुन्दर पोशाक पहने चलते हैं, पीछे-पीछे मा-बाप और दूसरे सबधी रोते हुये अनुगमन करते हैं। खाने-पीनेकी चीजोको कब्र पर ले जा वही श्राद्ध-भोज करते हैं। चारो ओर बैठे तरुण खाते-पीते हैं, और सबधी रोते रहते हैं। उस भूमिके आदमी रोटी नही खाते, मटर छोडकर वहा कोई अनाज नही होता।

चकरा नौ मास ही गद्दीपर रहा, फिर उलुक मोहम्मदने आक्रमण करके उसे भगा इदिकूको भी बंदी बना लिया।

२४ किवेक, कपक, तोकतामिश-पुत्र (१४२२ ई०)

उलुक मोहम्मद स्वय गद्दीपर न बैठकर दूसरोको राजा बनाता रहा, इसीसे किवेकको भी पश्चिमी किपचककी गद्दीपर बैठनेका मौका मिला। इसी समय अपने पिता कोइरियकके मरनेपर बोरक पूर्वी किपचक- सिंहासनपर बैठा। १४२२ ई० में उसने किवेकको हराया, लेकिन दूसरे साल नई सेना एकत्रित कर किवेक फिर लडनेके लिये लौटा।

२५ उलुक मोहम्मद खान

यह तूका-तैमूर-परिवारका और उरुसखानियोंका विरोधी था। इसीने [illegible]

२६ सैयद अहमद खान

शायद यह उलुक मोहम्मदके बाद गद्दीपर बैठा। बच्चा ही था, जबकि अमीरोंने इसे खान बनाया, जिस पदपर वह सिर्फ पैंतालीस दिन रहा।

१७ मार्च १४१६ ई० को मुगीसुद्दीन उलुगबेग (शाहरुख-पुत्र) का डेरा याजर्त नदी (सिरदरिया) के तटपर शाहरुखिया नगरके सामने था। इसी समय ख्वारेज्मसे खबर मिली, कि जब्बारबर्दीने चिङ-गिज ओगलानको भगा उज्बेक—उलुसको अपने हाथमें कर लिया है। मिर्जा उलुगबेक सिर-दरिया (सेहून) पर पुल बनवा सफर महीने (३१ मार्च—२८ अप्रैल १४१६ ई०) के अन्तमें समरकंद पहुंच गया। उज्बेक-देश (दश्तेकिपचक) से भागकर आये ख्वाजा [illegible] पुत्रोंने प्रार्थना की, कि उज्बेक-देश बरबाद हो रहा है, उसे बचायें।

२७ मोहम्मद खान तोकतामिश-पुत्र (१४२२-१४२५ ई०)

शायद ८२२ हि० (२८ जनवरी १४१६—१६ जनवरी १४२० ई०) में (छिङ गिज् ओगलानका संबंधी) बोराक ओगलानने उज्बेक (किपचक) राज्यसे भागकर मिर्जा उलुगबेग गूरगानके पास आ "हस्तचुम्बन" का सौभाग्य प्राप्त किया। उलुगबेकने उसपर बहुत कृपा दरसाई। कुछ समय वह समरकंदमें उसके पास रहकर फिर अपने देश लौट गया। मिर्जा उलुगबेक भी ताशकंदसे आगे कूच करके बूरलकके पास पहुंचा। वहां उसे उज्बेकोंकी ओरसे भागकर आये बलखू नामक आदमी ने उज्बेक-राज्यकी बरबादीकी खबर दी, जिसका समर्थन वहांसे आये व्यापारियोंने भी किया। इससे मालूम होगा, ज-छि-उलुस या दश्तेकिपचक अब उज्बेक देश कहा जाने लगा था।

अब्दुर्रजाक समरकंदी शाहरुखके समय "वकाया-निगार" (घटना-लेखक) था। उसने ८२४ हि० (६ जनवरी—२५ दिसंबर १४२१ ई०) के "वकाया" (घटनाओं) को लिखते हुये बतलाया है—"सुल्तान केशजीने कराबाग (ईरान) से दश्तेकिपचकमें जा मुहम्मदखानकी अधीनता स्वीकार की। खानने उसके साथ बड़ा अच्छा बरताव किया और शाहरुखकी सल्तनतके प्रति अपना सद्भाव प्रकट किया। सुल्तान केशजी वहांसे जीकदा महीने (२८ अक्तूबर—२६ नवम्बर) को लौटा। यद्यपि उत्तरी घुमन्तुओं-में आपसमें खूनी गृह-कलह छिड़ा हुआ था, लेकिन उसके कारण दक्षिणके ग्रामों-नगरोंके निवासी निश्चिन्त नहीं रह सकते थे।" गृह-युद्धोंके कारण भी उत्तरके घुमन्तुओंका टिड्डीदल दक्षिणकी ओर प्रस्थान कर सकता था। समरकंदीने ८८५ हि० (२६ दिसंबर १४२१—१४ दिसंबर १४२२ ई०) के "वकाया" में फिर लिखा है—"दश्तेकिपचकसे उज्बेक विलायतके बादशाह मुहम्मदखानके पाससे आलमशेख ओगलान और पूलाद अपने साथ शिकारी बाज, घोड़े आदि उपहार लेकर आये। शाहरुखने प्रति-उपहार रूपमें उन्हें सोना, घोड़े, कुलाह, कमरबंद आदि खानके लिये तथा एलचियोंके लिये भी उचित इनाम दिये।" इससे मालूम होता है, कि मुहम्मदखान और शाहरुख दोनों आपसमें अच्छा संबंध बनाये रखनेकी कोशिश कर रहे थे। ८२६ हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है—शाहरुख कुछ दिनों ग्रीष्म-निवासके वास्ते बदगिस इलाकेमें गया था, इसी बीचमें शाहरुखका नौकर ख्वारेज्म-राज्यपाल (अमीर) ने ख्वारेज्मसे आकर निवेदन किया, कि बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूको अपने हाथमें कर लिया, उज्बेक उलुसका अधिकांश बोरककी ओर हो गया। लेकिन जान पड़ता है, १४२५ ई० में भी अभी मुहम्मदखानके शासनका बिल्कुल अंत नहीं हुआ था, क्योंकि ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्तूबर १४२७ ई०) के "वकाया" में लिखा है, कि ८२८ हि० (२३ नवम्बर १४२४—१२ नवम्बर १४२५ ई०) में बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूपर अधिकार कर लिया। सारा उलुस उसके अधीन हो गया।

खानोंके इस परिवर्तनसे मालूम होगा, कि अब तोकतामिशके पुत्रों और पोतोंका आपसमें संघर्ष चल रहा था। एकबार फिर उरुसके पौत्र बोरकने सिंहासनपर अधिकार जमाया।

बोरक खान, बुर्राक, कुइजो-पुत्र (१४२५-२८ ई०)—बोरकको यह सफलता दक्षिणमें मिली थी। तोकतामिशके बाद उसकी सतानों और तैमूरकी सतानोंमें आपसमें पैतृक वैमनस्य चलता रहा। दक्षिणने उरुसखानकी सतानोंका पक्ष लिया और मिर्जा उलुगवेककी सहायतासे बोरकको सफलता मिली। लेकिन सफल घुमन्तू सरदार कभी कृतज्ञता माननेके लिये तैयार नहीं होते, यह बात किसीसे छिपी नहीं है। राजगद्दी सभालनेके बाद ही ८२९ हि० में वह मिर्जा उलुगवेककी सीमापर अवस्थित सिगनाक नगरमें आया। इससे पहले ८२३ हि० (१७ जनवरी १४२०—५ जनवरी १४२१ ई०) में वह उलुगवेकके पास शरणार्थीके तौरपर आया था और उलुगने उसे शिक्षा और सहायता देकर विलायत-उज्वेक भेजा था।

तोकतामिशकी तरह बोरक खानने दक्षिणकी ओर मुंह फेरनेसे पहले रूसकी ओर विजय-यात्रा की थी। १४२६ ई० में तारतारोंने र्याजन नगरको लूटा। तीन साल बाद कजानके तारतारोंने गालिच, कोस्त्रोमा आदि नगरोंको बरबाद किया। १४३०ई० में तारतार राजकुमार हैदर लिथुवानिया के भीतर घुस गया और उसने तीन सप्ताह मुहासिरा करनेके बाद मत्सेन्स्कको सर किया। रूसी अब कर रोकनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे। १४३७ ई० में कुचुक (छोटे) मुहम्मदने उलुक मोहम्मद खानको मार भगाया। उलुकने रूसमें जाकर शरण ली, लेकिन कुचुकने उसे वहांसे निकलनेके लिये मजबूर किया। उलुक बुलगारोंकी भूमिमें चला गया, वहां कजान नगरको उसने फिरसे बसाया और कजानके खान-वंशकी स्थापना की। इससे मालूम होगा कि अभी किपचकोंकी शक्ति बिल्कुल खतम नहीं हुई थी।

बोरक खानने सिगनाकमें आकर मिर्जा उलुगके पास यह कहकर एलची भेजा—"आपकी सहायता और शिक्षासे मुझे सिंहासन मिला, इसके लिये मैं बहुत-बहुत कृतज्ञ हूं, लेकिन सिगनाक हमारे श्वेत-ओर्दू वंशकी राजधानी है, उसे हमें दे दिया जाय।" इधर वह उलुगखानसे चिकनी-चुपड़ी बातें कर रहा था और उधर उसके आदमी सिगनाक इलाकेपर हाथ सफा करनेमें लगे थे। वहांके तैमूरी हाकिम अमीर अरसलन ख्वाजा तरखनने उलुगवेकके पास खबर भेजी, कि ओगलानके नौकर (अफसर) इलाकेको बरबाद कर रहे हैं, अपनेको पूरा हाकिम समझकर सरकारका मजाक उड़ा रहे हैं। उलुगबेकने भारी सेना जमा करके उधर कूच करनेका निश्चय किया, लेकिन उसके बाप शाहरुखने युद्धकी बरबादीको बतलाते हुये उसे वैसा करनेसे रोकते हुये भी राजकुमार (मिर्जा) मुहम्मदकी अधीनतामें सेना दे अंतर्वेदकी ओर भेजा। जोकीने १५ फर्वरी १४२७ ई० को समरकंदकी ओर प्रस्थान किया और वहां जाकर बड़े भाईकी सेनासे मिल गया। संयुक्त-सेनाने आगेकी ओर कूच किया। इतनी भारी सेनाको देखकर बोरक एक बार डर गया, लेकिन वह अपने पूर्वजोंकी भूमि लेने आया था, क्या मुंह लेकर पीछे लौटता? किपचक-सेना एकाएक शत्रुके ऊपर टूट पड़ी। मिर्जा उलुगवेगको अपनी संख्याका अभिमान था, लेकिन किपचकोंने उसके छक्के छुड़ा दिये। पासा पलटने लगा। सैनिक उलुगवेकके घोड़ेकी बाग पकड़कर उसे मैदानसे बाहर लाये। सारी सेना हारकर समरकंदकी ओर भागी। उज्वेकोंके हाथमें भारी संपत्ति आई। इतनी घबराहट मच गई, कि लोग समरकंद नगरके दरवाजोंको बंद करने लगे। उन्हें बहुत समझा-बुझाकर रोका गया। बोरककी सेनाने तुर्किस्तान और अंतर्वेदके सारे इलाकोंको लूटा और बरबाद किया। यह खबर खुरासानमें शाहरुखके पास पहुंची।

इस घटनाने साबित कर दिया, कि लद्धड़ सामंतशाही चुस्त घुमंतुओंके सामने निर्बल साबित होती है। शाहरुखको अब होश आया, जब खतरा सामने दिखाई पड़ा। लेकिन, उज्वेकोंके तैमूर-वंशका स्थान लेनेमें अभी पौन सदीकी देर थी, जबकि तैमूरी शाहजादा बाबरको मध्य एसियाई अंतर्वेद छोड़कर भारतीय अंतर्वेदका रास्ता नापना था। शाहरुखको एक बड़ी सेना लेकर समरकंद आया देख

बोरकको वहाँसे हटना पड़ा। शाहरुख इस अभियानमें ६ अक्तूबर १४२७ ई०को गुजरगाह आया। दक्षिणमें इस तरह सफल हो बोरक अपने पूर्वी पड़ोसी चगताईवंशी उलुग बेगके राज्य मुगोनिस्तान-पर जा पड़ा। ८३२ हि० (११ अक्तूबर १४२८—२६ सितम्बर १४२६ ई०) में उलुगबेगने अपने बाप शाहरुखके पास हिरात खबर भेजी, कि बोरक और मुगोनिस्तानके सुल्तान महमूदमें भारी युद्ध हुआ, जिसमें सुल्तान महमूदने बोरकको कतल कर दिया।

२८ मुहम्मद सुल्तान, तेमूरखान-पुत्र, तुगलक-तेमूर-पौत्र (१४२५-३० ई०)

बोरकके बाद मुहम्मद सुल्तान गद्दीपर बैठा। ख्वारेज्मका तेमूरियोंके हाथमें जाना उसको बहुत खटकता था, आखिर जूछिके राज्यका आरम्भ ख्वारेज्मको लेकर हुआ था। मुहम्मदने ८३४ हि० (१६ सितंबर १४३०—८ सितंबर १४३१ ई०) के अंतमें अपनी सेना ख्वारेज्मपर भेजकर वहाँ खूब लूट-पाट मचाई, लेकिन वह उसे ले नहीं सका। मुहम्मद सुल्तानने अपनी राजधानी क्रिममें बनाई थी।

२९ दौलत वर्दी

बोरक जिस वक्त अपने पूरबके पड़ोसियोंसे लड़ने गया था, उसी समय मुहम्मद पश्चिमी भागका खान बन बैठा, लेकिन जल्दी ही दौलत वरदी तोकतामिश पुत्रने उसे हटा दिया। वह तीन दिन ही शासन करने पाया था, कि बोरक खान फिर आ गया।

३० कादिर वर्दी

शायद यह तोक्तामिशका पुत्र था, जिसे इदिकूने मारा। इदिकू भी लड़ाईमें या गिर-दरियामें डूबकर मरा।

३१ शादीबेक

गयासुद्दीन शादीबेकने भी थोड़े ही समय शासन किया। मुहम्मद सुल्तान तेमूर-खान-पुत्रके समयसे ही किपचककी राजनीतिक अवस्था इतनी अस्त व्यस्त रही, कि राजावलीका ठीकसे पता नहीं लगता।

३२ सैयद खान, सैदक खान

इसने कुछ दिनोंतक शासन किया, फिर जानीबेकका पोता और सैयद खानका पुत्र कासिम खान गद्दीपर बैठा।

३३ कासिम खान, सैदक खान-पुत्र (१५०९–१५२३ ई०)

दश्ते-किपचकका खान होते ही कासिम खानको सैवक खानसे मुकाबिला करना पड़ा। ९१५ हि० (२१ अप्रैल १५०९–९ अप्रैल १५१० ई०) में सैवक खानने चढ़ाई करके कासिमको हराया। ९३० हि० (१० नवम्बर १५२३–२८ अक्तूबर १५२४ ई०) में कासिम खान मरा।

३४ अकनजर, हकनजर खान, कासिम-पुत्र (१५२३)

बापके बाद अकनजरको गद्दी मिली। अब श्वेत-ओर्दूके दो टुकड़े हो गये थे, जिनमें एकका शासक अकनजर था, और दूसरेके जूछि-पुत्र शैवानके वंशज।

श्वेत-ओर्दू-खान-वंशवृक्ष

(—१२२८–१४१० ई०)

अध्याय ८

रूस (रूरिक-वंश)

(९११-१५९४ ई०)

अवतरणिका

मध्य-एसियाके इतिहासको स्पष्ट करनेके लिये चीन और ईरानके तत्कालीन इतिहासके साथ रूसके इतिहासका भी कुछ परिचय आवश्यक है, क्योंकि शताब्दियोंतक वह एक दूसरेको प्रभावित करते रहे हैं। ईरान जहा अपनी भाषा और सस्कृतिसे मध्य-एसियाके साथ समीपता स्थापित करता है, वहा चीन काफी समयतक उसके ऊपर सीधे राजनीतिक प्रभाव रखता रहा। रूसका प्रभाव यद्यपि आरभमें अधीन-जातिके सिवा और रूपमें नही देखा जाता, किन्तु आगे वह बढते-बढते सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाता है। हालकी दो शताब्दियोमें तो मध्य-एसियामे बहुतसे परिवर्तन लाते रूस आज एक नये ससार-का निर्माण कर रहा है। ऐसी स्थितिमें रूसी इतिहासपर सिंहावलोकन किये बिना हम मध्य-एसिया की कितनी ही बातोको समझ नही पायेंगे।

(क) शक-सरमात

शकोंके विशाल देश (शकद्वीप)के बारेमें हम पहले कह आये हैं और यह भी बतला आये हैं, कि शक और सिथ एक ही थे। इन्हीकी कालासागर और कास्पियन समुद्रके उत्तरमें रहनेवाली शाखा सरमात कही जाती थी। आगे यह नाम भूलसा जाता है, और ईसाकी प्रथम शताब्दीमें वेनिद (वेन्द) और अत दो नये लोग हमारे सामने आते हैं, जो शक-सरमात-वंशके ही हैं।

वेन्द—वेन्दका शब्दार्थ है जलनिवासी या नदीनिवासी। यह विस्तुला नदीसे द्नियेपर और द्नियेस्तर नदियोके ऊपरी भागोमें रहते थे, यही पश्चिमी स्लावो (पोल, चेक, स्लावक) के पूर्वज थे।

अन्त—अन्तका शब्दार्थ है सीमातवासी। ईसाकी प्रथम शताब्दीमें यह द्नियेस्तरसे दोनतककी भूमिमें रहते थे।

पूर्वी और पश्चिमी स्लावोंके अलावा शक-सरमातोकी एक दक्षिणी शाखा भी थी, जिससे दक्षिणी स्लाव (युगोस्लाव) खोरवात, सर्ब (मकदूनी) और बोल्गारी स्लाव जातिया निकली। रूसी विद्वान् अ० अ० शाहमातोफके अनुसार सारी रूसी जातिया—रूसी, उक्रइनी और बेलोरुसी—अतोकी सतान है, लेकिन मकदमिक म० स० ग्रुसेव्स्की अतोको केवल उक्रइनोका पूर्वज मानते हैं।

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें चीनसे पश्चिमी देशोका जो व्यापार-मार्ग खुला था, वह भारत और ईरानतक ही सीमित नही था, बल्कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें ही दक्षिणी रूस भी इस व्यापारिक क्षेत्रके भीतर था—ख्वारेज्मसे रूसका बहुत घनिष्ठ व्यापारिक सबध था। उस समय वोल्गा नदीका नाम फिन भाषामें रा था, जिसे तुर्कोंने इतिल बनाया और फिर तटपर बुल्गारोके रहनेके कारण वोल्गा नाम पड़ा। हूणोकी बाढ़के आनेसे पहले ईसाकी प्रथम शताब्दीमें उरालके पास तुर्क जातिया रहती थीं—चुवाश, याकत (साइबेरिया) और आधुनिक तुर्क एक ही जाति-के हैं।

रूसियोका सवध अतोसे है। यह अत ईसाकी चौथी सदीमें द्नियेस्तरसे दोनके आगेतक फैले हुये थे। इनके पश्चिमी पडोसी गाथ क्रिमियामें तथा द्नियेस्तरके पश्चिममें रहते थे। अतोका सबसे पुराना उल्लेख हमें केर्चमें प्राप्त एक अभिलेखमें मिलता है। चौथी सदीमें हूणोकी बाढ आकर अतोको उत्तरकी ओर ढकेलती गाथोके ऊपर आ पडी। ३७६ ई० म हूण-राजा बलम्बरने गाथ-राजा वीनीतरको लडाईमें मार उसकी खोपडीका प्याला बनाया। हूणोद्वारा भगाये गये गाथ अपने पडोसी अतोके ऊपर पड। इस सघर्षमें अत-राजा वोग अपने पुत्रो और सत्तर सामतोके साथ मारा गया।
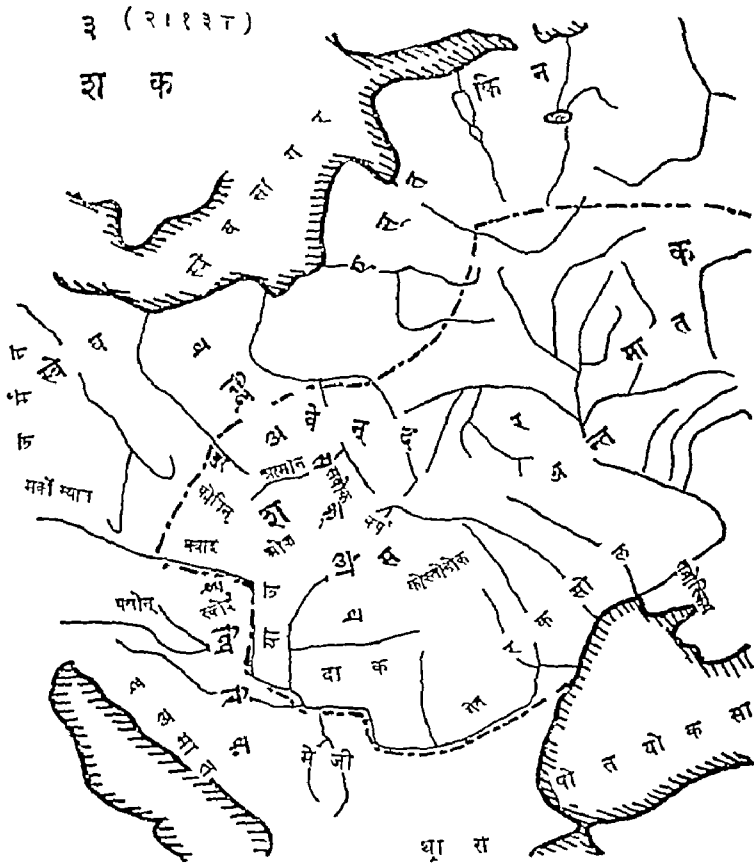
हूणोने कुछ समयतक दन्यूब और तिसिया नदीके बीचमें अपना राज्य कायम किया। पाचवी सदीके पूर्वाधमें इनके राजा अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के प्रतापसे सारा पूर्वी युरोप कापता था।

हूणोके बाद पाचवी सदीमें आवारोकी बाढ पूरबसे पश्चिमकी ओर चली। तुर्कोंके प्रहारके मारे उनके पहलेके स्वामी अब जान बचानेके लिये पश्चिमकी ओर भागे। इसीपर तुर्कोंके राजा सिलजीबुलने कहा था—"वह (आवार) चिडिया नही है, जो कि हवामें उड जायेंगे। तुर्कोंकी तलवारोंसे भागकर, मछली नही है, कि गहरे पानीमें चले जायेंगे। जायेंगे पृथ्वीपर ही। जब मैं हेफतालोंसे लडाई खतम कर लूगा, तब आवारो पर पडूगा, तब वह मेरे हाथसे नही निकल सकेंगे।" आवाराने दक्षिणी रूसमें पहुचकर कान्स्तन्तिनोपोलमें रोमके सम्राट्के पास अपना दूत भेजकर शरण मागी। ५६२ ई० के आसपास सम्राट् योस्तीनियनने उन्हे बसनेके लिये भूमि दी। काला सागरके पश्चिमी

किनारेपर पुरानी स्किफिया (शक)-भूमिमें पहुँचकर इस्त्रा (दन्यूब) के तटपर जा उन्होंने विश्राम किया।

आवारोंकी बाढ़ आनेपर फिर हूणोंकी तरह अपने लिये खतरा देखकर अन्तोंने सुलह करनेके लिये उनके पास अपने राजा मेजमिर इदरी-पुत्र तथा केलायस्त आदि सरदारोंको समझौता करनेके लिये भेजा, लेकिन आवारोंने उन्हें मार डाला। रोमने आवारोंको शरण दी थी, क्योंकि उनके लिये इन टिड्डीदलसे बचनेका कोई दूसरा रास्ता नहीं था। आवार रोमन-साम्राज्यके भीतर लूट-मार करना अपना हक समझते थे। पूर्वी-रोमन (बिजन्तीन) सम्राट् मावरिक (५८२–६०२ ई०) के समय अन्त बिजन्तीनकी सैनिक सेवा करते थे। उस समय स्लावोंका यह सबसे शक्तिशाली कबीला था। सम्राट् फोक (६०२–६१० ई०) और हेराकिल (६१०–६४१ ई०) के समय भी अन्त शक्तिशाली बने रहे, यद्यपि अब बिजन्तीन सम्राटोंके ध्यान को इधरसे हटाकर सासानियों (ईरानियों) और अरबोंके संघर्षोंने अपनी ओर खींच लिया था। ७वीं सदीमें इस प्रकार हम अन्तोंको बिजन्तीनके घनिष्ठ सम्बन्धमें देखते हैं। निश्चय ही अन्तोंका ऊपरी वर्ग (सैनिक और शासकीय प्रधान) ग्रीसकी पिछली संस्कृतिसे बहुत प्रभावित थे। १०वीं-११वीं शताब्दीके कियेफके रूसी लोग अन्तोंके खूनके ही नहीं, बल्कि उनकी संस्कृतिके भी उत्तराधिकारी थे। अन्त कृषि जानते थे, लेकिन अधिक उत्तरवाले उनके लोग पशुपालनपर ज्यादा ध्यान देते थे। दासता भी उनमें प्रचलित थी। अकदमिक न० स० देर्झाविनके अनुसार[1]—"१०वीं सदीके कियेफ रूस (और कियेफ राजुल) उसी भाषाको बोलते थे, जिसे कि छठी सदीके अन्त लोग, उसी पेरुनको पूजते और उसी पुराने पथपर चलते थे, जिसपर छठी सदीके अन्त।"—उनके देवताओंमें स्वारोग, स्वारोग-पुत्र स्वारोजिक (स्वारोचिप), दाजबोग (सूय, यह भी स्वारोग-पुत्र) मुख्य थे। देवियोंमें लादा (ह्लादा), वेस्ता (वसता), देवा और जीवा प्रधान थीं।

१०वीं सदीके अरब लेखक मसऊदीके अनुसार—"उनमें कुछ ईसाई भी हैं, कुछ काफिर, जो सूर्यकी पूजा करते हैं।" इसके दो शताब्दी बाद प्राय १२०० ई०में इब्राहिम वेसिफ शाह-पुत्र लिखता है—"इनमें कुछ ईसाई और दूसरे सूर्य या नभकी पूजा करते हैं।" ९४९ ई०में लिखते हुये कान्स्तन्तिन बगरया नरोद्नी उनके अग्निपूजक होनेकी भी बात करता है। १२वीं शताब्दीमें लिखते हुये किरिलिता तुरेव्स्कीने उन्हें वृक्ष, नदी, पर्वत और जल की पूजा करनेवाला बतलाया है।

१०वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें रूसके पड़ोसी खाजार, महा-बोल्गार और बिजन्तीन थे, जिनके साथ वह व्यापार करते थे। अरब लेखक इब्न-हौकल (९७६-९७७ ई०) भी खाजारों और बोल्गारोंके साथ रूसोंके व्यापारकी बात कहता है।

(ख) रूसोंके पड़ोसी मंगोलायित

बोल्गार—हूणोंके आनेसे पहले ही उरालके पास मंगोलायित जातिके लोग बसते थे, शायद बोल्गार उन्हींमेंसे थे। चौथी सदीमें हूणोंके बोल्गासे पश्चिम पहुँचनेके तुरत ही बाद बोल्गार, कास्पियन समुद्रके पश्चिमोत्तरीय मैदानोंमें देखे गये, लेकिन वहाँ वह ज्यादा दिनोंतक नहीं ठहर सके, क्योंकि दूसरे घुमन्तू उनकी जानके गाहक बन गये। इन्हीं बोल्गारोंमेंसे कुछ भागकर पश्चिममें दन्यूबके किनारे पहुँचे, जहाँ स्थानीय स्लावोंमें वह घुल-मिलकर अपनी रूपरेखा और भाषाको भी खोकर अब बुल्गारिया-निवासियोंके नामपर ही अपना चिह्न छोड़ गये। दूसरा भाग वहाँसे वोल्गातटपर गया, जहाँ उसने बोल्गार-राज्यको स्थापित किया और 'रा' और इतिल नामसे मशहूर नदीको बोल्गा नाम दिया। यह बोल्गार निम्न और मध्य-बोल्गाकी उपत्यकाओंमें पहले निरे घुमक्कड़ पशुपाल रहे, फिर एक अरब-लेखकके अनुसार वह जौ-गेहूँकी खेती भी करते थे। इनकी राजधानी कामा और बोल्गाके संगमसे कुछ नीचे बड़ी ही समृद्ध व्यापारिक नगरी थी, जहाँ हर साल रूस, काकेशस, बिजन्तीन और मध्य-एसियाके व्यापारी आते थे। बोल्गार अपनसे उत्तरवाले देशको "अंधकार भूमि"

---

[1] "स्लावियाने व् द्रेवृनोस्ती" पृ० १८।

कहते थे। वहासे वह अपनी चीजोसे बदलकर समूर लाते थे। मुसलमान व्यापारियोके सपकमें आनेसे इनमें मुस्लिम सस्कृति और धम फैला और १० वी सदीतक बोल्गार शासक और सरदार मुसलमान बनकर अरबोकी नकल करना अभिमानकी बात समझने लगे। उस समयतक वह अपना सिक्का भी ढालने लगे थे।

१०वी सदीके आरभमें इब्न-फज़लान एक अरब दूत-मडलका सदस्य बनकर बोल्गारोकी भूमिमें गया था। उसने अपनी यात्राका एक बडा ही सुन्दर वणन छोडा है। बोल्गार राजधानीसे नातिदूर दूत-मडलका स्वागत करते हुये उसे एक विशाल तथा अच्छी तरह सुसज्जित तबूमें ले जाया गया, जिसमें अमनी गलीचे बिछे हुये थे। रूमी कमखावसे ढँके सिहासनपर खान बैठा था। उसके दाहिनी ओर सरदार बैठे थे। मासके टुकडो और मधुकी शरावसे मेहमानोकी जियाफत की गई। इब्न-फज़लानने वहा रूसी व्यापारी भी देखे। वह बडे ही लबे तगडे तथा हर वक्त कटार, छुरी और तलवार लटकाये फिरते थे।

यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि बोल्गार और खाजार राज्योके स्थापित होनेके बाद बोल्गातट युरोप और एसियाके व्यापार-मागका महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया। बोल्गाका ऊपरी भाग पश्चिमी द्विना नदीके पास पहुच जाता है, जो कि बाल्तिक समुद्रमें गिरती है। इसी तरह फिनलन्दकी खाडीके लिये भी जलपथ थोडी ही दूरपर मिल जाता है। इन नदियोके बीचके स्थल-मार्ग दुगम पहाडोंके नही थे, इसीलिये व्यापारी इस स्थल-मागपर अपनी नावोको ढकेल कर ले जाते थे। ८ वीं-१० वी शताब्दियोमें व्यापारके लिये यहा भारी सख्या में अरब व्यापारी आते थे, जो मास खरीदनेके बदले भी अपने छोटे-छोटे चादीके सिक्के देते थे। ये अरब सिक्के उस समय पूर्वी युरोप, बाल्तिक-राज्यो, स्कैंडिनेविया और जमनीतकमें प्रचलित थे।

खाजार—६ठी–८वी सदी में मगोलियासे अराल और कास्पियन समुद्रतक जो घुमन्तू तुर्क रहते थे, इन्हीमें खाजार भी थे। ६ठी सदीमें बोल्गारोकी तरह खाजार भी काकेशसके उत्तरमें चरवाही करते थे। ७ वी सदीमें इन्होने निम्न बोल्गा-उपत्यकामें अपना राज्य स्थापित किया। अब वह अध-घुमतू हो गये—जाडोमें नगरोमें रहते और गर्मियोमें अपने ऊटो, घोडो, भेडोको लिये मैदानोमें चरवाही करते। पशुपालन ही उनकी मुख्य जीविका थी, इसके अतिरिक्त थोडी-सी खेती और अगूरकी बागवानी भी कर लेते थे। इनका शासक एक खाकान होता था, जो राजकाजमें सीधे भाग न लेकर देवतासा माना जाता था। उसके सहायक और सरदार शासनका काम देखते थे। पहले इनकी राजधानी बलाजर (दक्षिणी दागिस्तान) थी, लेकिन ७२२-२३ई०में अरबोने आक्रमण करके इनकी राजधानीको जब ध्वस्त करदिया, तब इन्होने बोल्गा और सागरके सगमपर बोल्गाके डेल्टामें इतिलको अपनी राजधानी बनाया। व्यापारकी भी भावी सुविधा होनेके कारण इतिल एक बडी नगरी बन गई। खाकानका ईंटका महल एक द्वीपमें था, जिसको नावोके पुलद्वारा किनारेसे मिला दिया गया था। नगर-प्राकारके बाहर लकडीके घर तथा घुमन्तुओके तबू रहते थे। इन्हीमें ख्वारेज्मी, अरब, ग्रीक, यहूदी, भारतीय आदि व्यापारी आकर रहते थे। इतिलकी बाजारोमें सारी दुनियाका माल भरा रहता था। ख्वारेज्मके पास होनेके कारण वहावालोका यहाके व्यापारमें विशेष हाथ था। उस समय खाजार-खाकान और उसके सरदार मुसलमान नही यहूदी थे। दोनके तटपर खाजारोका एक और भी बडा व्यापारिक नगर सरकेल था। इस नगरके निर्माणमें बिजन्तीन (रोम) इजीनियरोने सहायता की थी। उत्तर और पूरबसे घुमतुओसे रक्षा करनेके लिये नगर दृढ प्राकारोसे घिरा था। दक्षिणमें वतमान मखचकलासे नातिदूर समदर नामका एक और भी मशहूर शहर था, जिसके पास अगूरोके बहुतसे बाग थे। ९वी शताब्दीमें खाजार अपने उत्कर्षकी चरम सीमापर पहुचे थे। अजोफ-समुद्रके तटतक तथा क्रिमियाका भी कुछ भाग खाजारोके शासनमें था। द्नियेपर और ओकाकी उपत्यकाओमें रहनेवाली स्लाव जातिया इन्हें कर देती थी। उत्तरमें इनकी सीमा मध्य-बोल्गामें बोल्गारोसे मिलती थी। कास्पियन समुद्रका नाम खाजार समुद्र (बहीरा खाजार) इन्हीके कारण पडा, जिसे पीछे मुसलमानोने हजरत खिजिरके नामसे जोडकर खिजिर-समुद्र बना दिया।

पेचेनेग—खजारोके पडोसी पेचेनेग भी तुर्की जातिके थे, जो ९वी शताब्दीके पूर्वार्धमें यायिक (उराल) और इतिल (वोल्गा) नदियोंके बीचमें घुमक्कडी करते थे। ९वी शताब्दीके उत्तरार्धमें दूसरे घुमन्तुओंके साथ संघर्ष होनेके कारण वह पश्चिममें जा दोन और द्नियेपरके बीचकी भूमिमें घूमने लगे। इनकी संख्या काफी थी। मंगोलियाके हूणोंके समयसे ही हम देखते हैं, कि घुमन्तुओंके ऊपरी वर्गमें संस्कृतिका अभाव होना आवश्यक नही है—पेचेनेगके सोने-चादीके बर्तन, ताम्रपट्ट आदि पुरातत्त्वकी सामग्रियां जो खुदाइयोंमें मिली हैं, उनसे यह बात सिद्ध होती है। पेचेनेग अपने पडोसी स्लावोंको सबसे ज्यादा हानि पहुंचाते थे।

(ग) कियेफके राजुल

पुराने अंतोंके वंशज ८वी-९वी शताब्दीमें छिन्न भिन्न हो गये। बेटा हाथपर उनके हाथमें वह तलवार पकडाते थे, किंतु बिखरी हुई तलवारें शक्तिहीन साबित हो रही थी। ९वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें एक बडी निराशाजनक स्थितिमें रूस लोग रह रहे थे, यद्यपि उनकी वीरतामें जरा भी कमी नही आई थी। बिखरी हुई तलवारें इकट्ठा करनेवाले व्यक्तिकी प्रतीक्षा हो रही थी। ऐसे व्यक्तिके आनेके लिये रास्ता भी साफ था। रूसके भीतरसे कई वणिक्पथ पूरबमें चीन, दक्षिणमें बिजन्तीन और ईरान, पश्चिममें युरोपकी ओर जाते थे। स्कँडेनेवियाके व्यापारी बहुमूल्य रेशम, समूरी छाल, अंबर तथा दूसरी चीजोंका व्यापार करने आते थे। बाल्तिक समुद्रसे पश्चिमी द्विना होकर वोल्गा नदीसे मिलनेवाले रास्तेकी बात हम कर चुके हैं। स्कँडेनेवियावाले फिनलद खाडीसे नेवा नदीको पकड उसके उद्गम इलमन झीलमें पहुंच लोवात नदीद्वारा ऊपरकी ओर चलते। वहांसे उन्हें पश्चिमी द्विना नदी पर पहुंचनेमें थोडी दूरतक नावको स्थलमार्गपर घसीटना पडता। इलमनसे दूसरी नदी द्वारा वह थोडा स्थलमार्ग पारकर वोल्गा नदीके वणिक्पथपर पहुंच जाते। इसी तरह द्नियेपर पहुंचनेका भी जल-स्थल-मार्ग था। इन वणिक्पथोंपर जहां व्यापारियोंके सार्थ चलते थे, वहां कुछ लोग व्यापारके साथ लूट-पाट भी भारी लाभका साधन मान उससे बाज नही आते थे। पश्चिमी युरोपमें स्कँडेनेवियाके निवासी नार्समेन उस समयके बडे साहसी यात्री थे, जो व्यापारके साथ लूट-मारको भी अपना पेशा बनाये हुये थे। वह सशस्त्र संगठित दलोंमें हो रूसमें व्यापार करनेके लिये आया करते। उन्होंने ९वी शताब्दीमें रूसके भीतरसे जानेवाले मार्गोंको अपना क्रीडाक्षेत्र बनाया। नार्समेन वरगीके नामसे अधिक प्रसिद्ध थे। अपने कोनुग (राजकुमारों) के नेतृत्वमें लूट-मारके लिये उन्होंने अपने सैनिक दल संगठित किये थे। वह स्लावों और दूसरे लोगोंके ऊपर आक्रमण करके उनकी मूल्यवान् चीजोंको जहां लूट लेते, वहां स्त्री-पुरुषोंको पकड ले जाकर कन्स्तान्तिनोपोलके बाजारोंमें अथवा बोलगारों और खजारोंकी राजधानियोंमें बेंच देते।

१ रूरिक

इन्ही वरगियोंमेंसे कुछने ग्रीक जानेवाले मार्गमें अपनी गढियां बना लीं, वह स्थानीय स्लावोंपर शासन करते हुये उनसे कर उगाहने लगे। कितनी ही बार स्लाव बिगडकर वरगी कोनुगोंको मार डालते, फिर कोई स्थानीय स्लाव राजुल राज करने लगता। परंपरा कहती है, कि ९वीं शताब्दीके मध्यमें रूरिक (रोयरिक, रोरिक) नामक एक साहसी वरगीने नवोगोरदमें अपना अड्डा जमाया। नवोगोरद कालासागर और द्नियेपर नदीसे उत्तर जानेवाले रास्तेपर एक बडा महत्त्वपूर्ण स्थान था। रूरिकका भाई सिनेउस ब्येलोओजेरो (श्वेत सरोवर) पर जम गया। फिनलदकी खाडीसे वोल्गा और उरालवाला वणिकपथ वहींसे होकर जाता था। तीसरा भाई त्रुवोर इज्वोरस्क नगरपर डट गया, जो कि बाल्तिकसे आनेवाले रास्तेका केंद्रीय नगर था। इन तीनो भाइयोंके अतिरिक्त दो और वरगी कोनुग अस्कोल्द और दिरने कियेफ नगरको अपने हाथमें किया। ग्रीसके पथपर कियेफ बहुत महत्त्वपूर्ण नगर था। इसी तरह बाल्तिकसे पश्चिमी द्विनाके मार्गपर भी वरगियोंने अपनी गढियां बना रक्खी थीं। वरगी आकर स्लावोंकी भूमिमें अधिकतर लूट-मार करते, फिर धनको लेकर अपने देश लौट जाते। उनमेंसे कितने ही रूस-राजुलोंके अनुचर अथवा स्वतंत्र सरदार बनकर भी बस गये। वरगियोंसे

स्लावोका नाकोमें दम था, पर वह मख्यामें पीछेके मगोलोकी तरह बहुत थोडे थे। वरगी सरदार स्लावो-मेंसे भी अपने अनुचर भर्ती करते थे। रूसमें स्थायी तौरसे बसनेवाले ये वरगी स्लाव-समुद्रमे बहुत जल्दी ही अपने नामोको मिटा रूस बन गये, रूसी भाषा बोलने तथा पेरुन और स्वारोगकी पूजा करने लग। रूरिक, उसके भाइयो तथा साथियोकी भी यही हालत थी।

रूरिक-वशावली—रूरिकके वशमे निम्न राजा हुये —

		काल
	क कियेफ	
१	रूरिक	६०० ई०
२	ओलेग, रूरिक-पुत्र	–६११ ,,
३	ईगर, रोरिक-पुत्र	६११-४५ ,,
४	ओलगा, ईगर-पत्नी	६४५-५७ ,,
५	स्व्यातोस्लाव I ईगर-पुत्र	६५७-७३ ,,
६	व्लादिमिर I स्व्यातोस्लाव-पुत्र	६७८-१०१५ ,,
७	स्व्यातोपोल्क I व्लादिमिर-पुत्र	१०१५-१६ ,,
८	यारोस्लाव I व्लादिमिर-पुत्र	१०१६-५४ ,,
९	इज्यास्लाव I यारोस्लाव-पुत्र	१०५४-७३ ,,
	स्व्यातोस्लाव II यारोस्लाव-पुत्र	१०७६ ,,
	इज्यास्लाव I (पुन)	१०७३ ,,
१०	स्व्यातोपोल्क II इज्यास्लाव-पुत्र	१०७३-१११३ ,,
११	व्लादिमिर II मनोमाख	१११३-२५ ,,
	ख रोस्तोफ-सुज्दल	
१२	यूरी I दीघवाहू, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र	–११५७ ,,
१३	अद्रेयी, बगोल्यूबोव्स्की यूरी-पुत्र	११५७-७४ ,,
१४	व्सेवोलोद I यूरी-पुत्र	११७६-१२१२ ,,
१५	यूरी II व्सेवोलोद-पुत्र	१२१२-१२३८ ,,
१६	यारोस्लाव II व्सेवोलोद-पुत्र	१२३८-४६ ,,
	स्व्यातोस्लाव III व्सेवोलोद-पुत्र	१२४७-४८ ,,
	अद्रेयी II यारोस्लाव-पुत्र	१२४९-५२ ,,
१७	अलेक्सान्द्र नेव्स्की यारोस्लाव-पुत्र	–१२६३ ,,
	ग मास्को जार	
१८	दानियल	१२६३-१३०३ ,,
१९	यूरी III दानियल-पुत्र	१३०३-२५ ,,
२०	इवान I खलिता, दानियल-पुत्र	१३२५-४१ ,,
२१	सेमेओन, इवान-पुत्र	१३४१-५३ ,,
२२	इवान II इवान-पुत्र	१३५३-५९ ,,
२३	दिमित्रि इवान II-पुत्र	१३५९-८९ ,,
२४	वासिली I अध, दिमित्रि-पुत्र	१३८९-१४२५ ,,
२५	वासिली II अधवासिली-पुत्र	१४२५-६२ ,,
२६	इवान III वासिली II-पुत्र	१४६२-१५०५ ,,
२७	वासिली III इवान III-पुत्र	१५०५-३३ ,,
२८	एलेना, वासिली III पत्नी	१५३३-३८ ,,
२९	जार इवान, वासिली III-पुत्र	१५३८-८४ ,,
३०	फ्योदोर, इवान IV-पुत्र	१५८४-९८ ,,

२ ओलेग रूरिक-पुत्र (९१२ ?)

१० वीं शताब्दीके आरंभमें रूरिक पुत्र ओलेग द्नियेपर-उपत्यकाके कुछ भागोंका स्वामी था। पुराने इतिहासकार लिखते हैं, कि ओलेग पहले नवोगोरदके स्लावोंपर शासन करता था, किन्तु पीछे वह द्नियेपर-उपत्यकामें चला गया और स्मोलेन्स्क क्रिविचीको जीतकर नीचेकी ओर बढ़ा। अपने दोनों देशभाइयों अस्कोल्द और दिरको मारकर उसने कियेफपर अधिकार कर लिया, जहाँसे चलकर द्रेव्ल्यान लोगोंको अपने अधीन करते हुये खाजारोंके अधीनस्थ सेवेरियान और रादिमिची स्लावोंको अपने अधीन किया। इस प्रकार ओलेग नवोगोरद और कियेफ दोनोंका स्वामी बन जानेके बाद द्नियेपर वणिक्पथका भी स्वामी हो गया। धीरे-धीरे और कितने ही छोटे-छोटे राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर कर वह "रूसका महाराजुल" बनकर दूसरे राजुलोंपर शासन करने लगा। कियेफके महाराजुलके अधीन हो अब द्नियेपर-उपत्यका और इल्मेन-सरोवरके स्लाव एकताबद्ध हो गये। इस एकताबद्ध राज्यको रूस कहा जाने लगा। यह कहना मुश्किल है, कि रूस किस भाषाका शब्द है। जो भी हो १०वीं शताब्दीके आरंभमें बहुत-से स्लाव कबीलोंको, जो कियेफके शासनके अधीन एकताबद्ध हुये थे, उनको यही नाम दिया गया, और इतिहासमें उन्हें "कियेफ रूस" कहा जाने लगा।

यद्यपि कियेफ राजुलोंकी अधिकांश प्रजा स्लाव थी, लेकिन उनमें कुछ मेर्या, वेसी और चूद जैसी अरूसी कबीले भी थे। अभी ये जातियाँ आर्थिक तौरसे अधिक विकसित नहीं थीं। पशुपालन, शिकार, कुछ कृषि और मामूली दस्तकारी उनकी जीविका थी। अभी वह एक दूसरेके ऊपर आर्थिक तौरसे इतने निर्भर नहीं थे, कि उनका एक घनिष्ठ संघ बन जाता। ये पूर्वी स्लाव कृषि-समूहों (वेर्व) में जीवन विताते अभी भी जनयुगके रीति-रवाजोंको पकड़े हुये थे। उनकी भूमि सामेमें हुआ करती थी, लेकिन रूरिकोंके अधीन एकताबद्ध होनेपर व्यापारका सुभीता और भी बढ़ा, जिससे उनके भीतर धनी-गरीब होने लगे। गरीब अपने धनी बंधुओंके कमकर बनने लगे। भूमिपर भी वैयक्तिक अधिकार माना जाने लगा। इस प्रकार उनके भीतर सामंती संबंध कायम हो गया।

आगे कियेफ-राज्यने पूर्वी युरोपमें विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त किया। विजन्तीन (पूर्वी रोम) का प्रभुत्व सारे कालासागर और उसकी तटवर्ती भूमिपर था। अल्प-विकसित जातियाँ कभी अपने लूट-मारसे उसको चिढ़ाती थीं और कभी विजन्तीनके शासक स्वयं लूट-मार करनेपर उतारू हो जाते। ऐसे ही किसी आक्रमणके बदलेमें ८६० ई० में स्लावोंने बज (ओक) वृक्षोंको खोखला करके अदनोदेरेव्की (एकदारुक) नावोंका बेड़ा तैयार किया और कान्स्तन्तिनोपोल बंदरगाहके छोर (सुवर्ण-शृंग) पर पहुँचकर राजधानीके लिये खतरा पैदा कर दिया। तूफानने स्लावोंकी एकदारुक नावोंको तितर-बितर कर दिया, नहीं तो इसमें संदेह नहीं, कान्स्तन्तिनोपोल उनकी दयाका भिखारी होता। ९११ ई० में फिर उन्होंने अपनी प्रभुता दिखलाकर अपने अनुकूल संधि करवाई।

९१३-९१४ ई० में स्लावों (रूसो) ने अब कास्पियनके किनारोंपर भी आक्रमण शुरू कर दिया। इसके लिये वह अपनी नावोंको अजोफ सागर होते दोन नदीमें ले जाते और उसी जगहपर अपनी नावोंको कंधोंपर उठाकर वोल्गामें पहुँचाते, जहाँ दोनों नदियाँ एक दूसरेके बहुत समीप पहुँच गई हैं और जहाँ १९५२ ई० के वसंतमें यातायातके लिये बड़ी नहर चालू हो गई। रूसलोग वोल्गासे नीचे कास्पियन समुद्रमें जा काकेशसकी बस्तियोंमें लूट-मार करते। कितनी ही बार खाजार भी उनको अछूता नहीं छोड़ते, और रूसोंको भारी हानि उठानी पड़ती।

ओलेगका शासन काफी लंबा था, संभवतः १०वीं शताब्दीके उत्तरार्धके आरंभतक। अपने चालीस सालके राज्यमें उसने रूसको एक-राज्य बनानेका ऐतिहासिक काम पूरा किया। उसके कामका कितना महत्त्व है, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्सने "१८वीं सदीमें गुप्त कूटनीति" (अध्याय ५) में उसका उल्लेख करते हुये कहा है —

"रूसके प्राचीन नक्शे हमारे सामने उससे कहीं अधिक विशाल युरोपीय क्षेत्रको प्रदर्शित करते हैं जिसका कि वह आज गर्व कर सकता है। ९वीं शताब्दीसे ११वीं शताब्दीतक उसका लगातार बढ़ाव इसी-

की ओर सकेत करता है। हम ओलेगको अट्ठासी हजार आदमियोके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन सधि करनेको मजबूर करते देखते है। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्व्यातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—'ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुए, चावल, फल और शराब भेजते है, हुगरी ढोर और घोडे देती है, रूससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते ह।' व्लादिमिर क्रिमिया और लिवानिया (बाल्तिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उसी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोलियनने जमन सम्राट् से किया।"

मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रूस १० वी शताब्दीमें कहासे कहा पहुच गया।

३ ईगर रूरिक-पुत्र (९११–४५ ई०)

१०वी शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमें उसका भाई ईगर कियेफका महाराजुल बना। उसने अपने भाईकी सफलताओको आगे बढाकर और भी कितने ही राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी बुग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिलाफ विद्रोह करनेवाले द्रेव्ल्यानोको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०में ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रूसोने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी बस्तियोको ध्वस्त किया, लेकिन अतमें ग्रीक बेडेने उन्हें अपने बदरगाहसे कालासागरकी ओर खदेड दिया। वहासे जाकर रूसोने क्षुद्र एसियाके तटको लूटा-बरबाद किया। बडी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहासे उसे हटानेमें सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी बिल्कुल आरभिक अवस्थामें थे, जबकि "ग्रीक

मग्नि' के नामसे प्रसिद्ध एक तरहका भभकनेवाला तरल पदार्थ तीर अपने नागुआपर फेंकते थे। "ग्रीक अग्नि" के सामने ईगरके सैनिक बेड़ेको बहुत बुरी तरहसे हारना पड़ा। आगसे बचनेके लिए बहुतसे रूस * पानीमें कूदकर डूब मरे। बचे-खुचे पोत अपने देशको लौट आये। यद्यपि ग्रीकोंने उस समय रूसोंको हरा दिया, लेकिन इन अर्ध-घुमन्तू लड़ाकू जातियोंके लिए एक बारकी हार कोई महत्त्व नहीं रखती। इसलिये ग्रीक सरकारने ९४५ ई०में ईगरके साथ एक नई संधि की, जिसमें व्यापारिक सबंध स्थापित करनेके साथ उभय पक्षके शत्रुओंके विरुद्ध सैनिक सहायताकी शर्त भी स्वीकृत की गई थी।

३३२ हिजरीके आरंभ (४ सितंबर ९४४ ई०)मे रूसोंने कास्पियन तट-भूमिको अपना लक्ष्य बनाया था। कास्पियन तटको लूटते हुये वह कुरा नदीके भीतर घुस गये और ऊपरकी ओर जाके उन्होंने बरदआ नगरीको ले लिया। यहांसे वह आसपासके इलाकोंमें लूट-मार करने लगे। लेकिन यहांका जलवायु अनुकूल न होनेसे बीमारीके कारण बहुतसे रूस मर गये, उनकी संख्या कम हो गई। इसी समय अरब फौजोंने उन्हें एक किलेमें घेर लिया। बड़ी मुश्किलसे रातके अंधेरेमें वह नावोंमें पहुंच अपने प्राणों और लूटे धनको बचाकर भागनेमें सफल हुये।

कियेफ रूसके राजुलोंने दूसरोंके धनको लूटना और पुरुष-स्त्रियोंको पकड़कर दास बनाना अपने वध शासनका एक अंग मान लिया था। वह पिछले सालकी जमा की हुई लूट और बंदियोंको नावोंपर चढ़ाकर द्नियेपर नदीसे कालासागरकी ओर भेजते। द्नियेपरके जलप्रपात रास्तेमें पड़ते, जिनपरसे नाव टूटकर चकनाचूर हो जाती, इसलिये ऐसी जगहोंपर उन्हें बल्लोंके सहारे कंधोंपर उठाकर आदमी ले जाते। लूटके मालके लिये यहां पड़ोसी लुटेरे पेचेनेगोंके आक्रमणका भारी डर रहता और कितनी ही बार उनकी अन्यायोपार्जित संपत्ति पेचेनेगा (तुर्की) घुमन्तुओंके हाथमें चली जाती। द्नियेपरके मुहानेमें पहुंचकर यात्री आरामकी सांस लेते और भगवान्‌से कृतज्ञता प्रकट करते। वहां एक छोटे द्वीपपर अवस्थित बज (ओक) वृक्ष-देवताको भेंट-पूजा चढ़ाते। फिर कालासागरके पश्चिमी किनारेसे होते वह कान्स्तन्तिनोपोल जारग्राद (राजनगरी) जाते। वहां वह अपने दासों, समूरी खालों और दूसरी चीजोंको बेचकर बदलेमें कपड़ा, शराब, फल तथा शौकीनीकी दूसरी चीजें खरीद लेते।

अपनी प्रजासे कर उगाहनेमें इन राजुलोंका व्यवहार बहुत कठोर होता था। इसके लिये लड़ाकू देरेव्यान (देहाती) अक्सर विद्रोह कर उठते थे—"अगर भेड़ियेको भेड़ोंके गल्लोंमें आनेका चस्का लग गया, और वह न मारा गया, तो वह सारी भेड़ोंको निगल जायेगा"—कहते हुये ३१ अगस्त ९४५ ई० को उन्होंने अनुचरोंसहित ईगरको मार डाला।

अभी रूस ईसाई नहीं हुए थे। इसी समय ईगरके शासनकालमें ही ९२२ ई० में मुसलमान पर्यटक इब्न फज्लानने वोल्गाके किनारेके नगरोंकी यात्रा की थी। उसने रूसोंके बारेमें लिखा है—"मैंने रूसोंको उस समय देखा, जबकि वह अपने पण्य द्रव्योंको लेकर इतिल (वोल्गा) के किनारे आये थे। मैंने उनके जैसे सर्वांगपूर्ण आदमी कहीं नहीं देखे। वह खजूरके वृक्षकी तरह (सीधे तथा) लालवर्णके होते हैं। वह न कुर्ता पहनते हैं, न कफतान (जामा), बल्कि उनमेंसे पुरुष एक तरहका चोगा जैसा कपड़ा पहनते हैं, जिसे एक बगलसे डालकर अपनी एक (दाहिनी) बांह खुली रखते हैं। हरएक आदमी अपनी तलवार, छुरे और कटारको नहीं छोड़ता। इनकी तलवारें लम्बी तथा लहरदार होती हैं। पैरसे कंधेतक उनके शरीरपर हरे वृक्षों, मूर्तियों और दूसरी चीजोंके चित्र बने होते हैं। उनकी प्रत्येक स्त्रीके नितम्बके पास पतिकी संपत्तिके अनुसार लोहे, तांबे, चांदी, सोनेकी डिबिया लटकती रहती है। हरएक डिबियामें एक छल्ला होता है, जिससे बंधी छुरी नितम्बपर लटकती है। वह अपने कंठमें सोने और चांदीकी मालायें पहनती हैं। हरएक पुरुष जब दस हजार दिरहमका सौदा कर लेता है, तो अपनी स्त्रीके लिये एक माला और बीस हजार दिरहमका सौदा करनेपर दो माला खरीद देता है। हर दस हजार दिरहम सौदेकी वृद्धिके साथ मालाकी संख्या भी बढ़ती रहती है, जिससे स्त्रीके पास बहुत-सी मालायें हो जाती हैं। उनके यहां मिट्टीकी बनी हुई हरी गुरियाको सबसे अच्छा अलंकार समझा

* आजके रूसी नामसे भिन्न कियेफके इन पुराने लोगोंको "रूस" कहा जाता था।

की ओर संकेत करता है। हम ओलेगको अट्ठासी हजार आदमियोंके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन संधि करनेको मजबूर करते देखते हैं। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्व्यातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—'ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुएं, चावल, फल और शराब भेजते हैं, हुंगरी ढोर और घोड़े देती है, रूससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते हैं।' व्लादिमिर क्रिमिया और लिवानिया (बाल्तिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उसी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोलियनने जर्मन सम्राट्से किया।"

मार्क्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रूस १० वीं शताब्दीमें कहांसे कहां पहुंच गया।

३. ईगर रूरिक-पुत्र (९११–४५ ई०)

१०वीं शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमें उसका भाई ईगर कियेफका महाराजुल बना। उसने अपने भाईकी सफलताओंको आगे बढ़ाकर और भी कितने ही राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी बुग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिलाफ विद्रोह करनेवाले द्रेवूल्यानोंको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०में ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रूसोंने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी बस्तियोंको ध्वस्त किया, लेकिन अंतमें ग्रीक बेड़ेने उन्हें अपने बंदरगाहसे कालासागरकी ओर खदेड़ दिया। वहांसे जाकर रूसोंने क्षुद्र-एसियाके तटको लूटा—बरबाद किया। बड़ी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहांसे उसे हटानेमें सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी बिल्कुल आरंभिक अवस्थामें थे, जबकि "ग्रीक

अग्नि" के नामसे प्रसिद्ध एक तरहका भभकनेवाला तरल पदाथ ग्रीक अपने शत्रुओपर फकते थे। "ग्रीक अग्नि" के सामने ईगरके सैनिक वेडेको बहुत वुरी तरहसे हारना पडा। आगसे वचनेके लिये बहुतसे रूस * पानीमें कूदकर डूब मरे। वचे-खुचे पोत अपने देशकी ओर लौटे। यद्यपि ग्रीकोने उस समय रूसोको हरा दिया, लेकिन इन अर्ध-घुमतू लडाक जातियोके लिये एक वारकी हार कोई महत्त्व नही रखती। इसलिये ग्रीक सरकारने ९४५ ई०में ईगरके साथ एक नई सधि की, जिसमे व्यापारिक सवध स्थापित करनेके साथ उभय पक्षके शत्रुओके विरुद्ध सैनिक मित्रताकी शर्त्तें भी स्वीकृत की गई थी।

३३२ हिजरीके आरभ (४ सितवर ९४४ ई०)में रूसोने कास्पियन तट-भूमिको अपना लक्ष्य वनाया था। कास्पियन तटको लटते हुये वह कुरा नदीके भीतर घुस गये और ऊपरकी ओर वढते उन्होने वरदआ नगरीको ले लिया। यहासे वह आसपासके इलाकोमें लूट-मार करने लगे। लेकिन यहाका जलवायु अनुकूल न होनेसे बीमारीके कारण वहुतसे रूस मर गये, उनकी सख्या कम हो गई। इसी समय अरव फौजोने उन्हे एक किलेमें घेर लिया। वडी मुश्किलसे रातके अधेरेमें वह नावोमे पहुच अपने प्राणो और लूटे धनको वचाकर भागनेमें सफल हुये।

कियेफ रूसके राजुलोने दूसरोके धनको लूटना और पुरुष-स्त्रियोको पकडकर दास वनाना अपने वैध शासनका एक अग मान लिया था। वह पिछले सालकी जमा की हुई लूट और वदियोको नावोपर चढाकर द्नियेपर नदीसे कालासागरकी ओर भेजते। द्नियेपरके जलप्रपात रास्तेमे पडते, जिनपरे नावें टूटकर चकनाचूर हो जाती, इसलिये ऐसी जगहोपर उन्हें वल्लोके सहारे कधेपर उठाकर आदमी ले जाते। लूटके मालके लिये यहा पडोसी लुटेरे पेचेनेगोके आक्रमणका भारी डर रहता और कितनी ही वार उनकी अन्यायोपार्जित सपत्ति पेचेनेगा (तुर्की) घुमन्तुओके हाथमे चली जाती। द्नियेपरके मुहानेमें पहुचकर यात्री आरामकी सास लेते और भगवान्से कृतज्ञता प्रकट करते। वहा एक छोटे द्वीपपर अवस्थित वज (ओक) वृक्ष-देवताको भेंट-पूजा चढाते। फिर कालासागरके पश्चिमी किनारेसे होते वह कान्स्तन्तिनोपोल जारग्राद (राजनगरी) जाते। वहा वह अपने दासो, समूरी छालो और दूसरी चीजोको वेचकर वदलेमें कपडा, शराव, फल तथा शौकीनीकी दूसरी चीजें खरीद लेते।

अपनी प्रजासे कर उगाहनेमें इन राजुलोका व्यवहार वहुत कठोर होता था। इसके लिये लडाक् द्रेव्ल्यान (दीहाती) अक्सर विद्रोह कर उठते थे—"अगर भेडियेको भेडोके गल्लोमे आनेका चस्का लग गया, और वह न मारा गया, तो वह सारी भेडोको निगल जायेगा"—कहते हुये ३१ अगस्त ९४५ ई० को उन्होने अनुचरोसहित ईगरको मार डाला।

अभी रूस ईसाई नही हुए थे। इसी समय ईगरके शासनकालमे ही ९२२ ई० में मुसलमान पयटक इब्न-फज्लानने वोल्गाके किनारेके नगरोकी यात्रा की थी। उसने रूसोके वारेमें लिखा है—"मने रूसोको उस समय देखा, जवकि वह अपने पण्य द्रव्योको लेकर इतिल (वोल्गा) के किनारे आये थे। मैंने उनके जैसे सर्वागपूर्ण आदमी कही नही देखे। वह खजूरके वृक्षकी तरह (सीधे तथा) लालवर्णके होते हैं। वह न कुर्ता पहनते है, न कफतान (जामा), वल्कि उनमेंसे पुरुष एक तरहका चोगा जसा कपडा पहनते है, जिसे एक वगलसे डालकर अपनी एक (दाहिनी) वाह खुली रखते हैं। हरएक आदमी अपनी तलवार, छुरे और कटारको नही छोडता। इनकी तलवारें लम्वी तथा लहरदार होती ह। पैरसे कधेतक उनके शरीरपर हरे वृक्षो, मूर्त्तियो और दूसरी चीजोके चित्र वने होते हैं। उनकी प्रत्येक स्त्रीके नितम्वके पास पतिकी सपत्तिके अनुसार लोहे, तावे, चादी, सोनेकी डिविया लटकती रहती है। हरएक डिवियामें एक छल्ला होता है, जिससे वधी छुरी नितम्वपर लटकती है। वह अपने कठमें सोने और चादीकी मालायें पहनती हैं। हरएक पुरुप जव दस हजार दिरहमका सौदा कर लेता है, तो अपनी स्त्रीके लिये एक माला और वीस हजार दिरहमका सौदा करनेपर दो माला खरीद देता ह। हर दस हजार दिरहम सौदेकी वृद्धिके साथ मालाकी सख्या भी वढती रहती है, जिससे स्त्रीके पास वहुत-सी मालायें हो जाती ह। उनके यहा मिट्टीकी वनी हुई हरी गुरियाको सवसे अच्छा अलकार समझा

* आजके रूसी नामसे भिन्न कियेफके इन पुराने लोगोको "रूस" कहा जाता था।

जाता है। यह मिट्टी जहाजोंपर होती हैं, जिसको वह बहुत दाम देकर खरीदते है—एक गुरियाका दाम एक दिरहम। अल्लाहके सृष्टि करनेके समयसे ही ये गदे हैं, पाखाना-पेशावके समय सफाई नही करते, बिल्कुल जगली गदहो जैसे। वह अपने नगरसे आकर इतिल (वोल्गा) के घाटपर उतरते है—इतिल बडी नदी है। नदी-तटपर बहुतसे लकडीके घर बने ह, जिनमे वह ठहरते हैं। एक-एक घरमे दस-बारह आदमी या कम-बसी जमा हो जाते ह। प्रत्यकके पास मोढा होता है, जिसके ऊपर वह बैठता है। हरएकके पास अपनी सुन्दरी दासी होती है, जो उसके सामान को देखती है। कभी-कभी वह एक दूसरेके खिलाफ लडनेके लिये जमा हो जाते ह और कभी व्यापारके लिये निकलत ह। प्रतिदिन सवेरे दासी बडी डोलम पानी भरकर ला अपने स्वामीके पास रख देती है। स्वामी उसमें अपना मुह, हाथ, बाल और सिर धोता है। उसीमें पोटा-खखार फेंकता है। जब वह अपना काम कर लेता है, तो दासी डोलको उठा ले जाती है और उसीमें अपने स्वामीकी तरह मुह धोती-धाती है। इसी तरह उसी बाल्टीके पानी को घरमें रहनेवाले सब इस्तेमाल करते हैं। अपने मुह-बालको धोते है।

"नावसे आनेपर उनमेंसे हरएक अपनी रोटी, मास, दूध और पानकी चीजें लेकर बडे जगलमे चला जाता है, और पृथ्वीपर बने मनुष्य जैसे चेहरेके सामने भेंट-पूजा रखकर कहता है—"स्वामी, बग (भगवान्), अपने सामान और दास-दासीके साथ, सबोलके समूरी छालोके साथ मैं दूरसे आया हू।" इस प्रकार अपने सभी सौदोका नाम गिनाकर फिर कहता है "—म तेरे पास यह भेंट ले आया हू।" फिर वह भटको देवताके सामने रखते कहता है—"मैं चाहता हू, कि तू मेरे व्यापारमें सोना-चादीके पैसो-को देनेमे सहायता करे।" व्यापार अच्छा होनेके बाद फिर वह प्राथना करता है—"मेरे स्वामीने मेरी इच्छा पूरी की, मुझे जरूर उसकी भेंट-पूजा करनी चाहिये।" फिर वह कितने ही बैलो और भेडोको ले जाकर बलि चढा कुछ मास उसी बडे वृक्षके नीचे छोड देता है, बैलो और भेडोंके गलेको उसी वृक्षके नीचे काट-कर जमीनपर रख आता है। जब रात आती है, तो कुत्ते आ उन्हे खा जाते है। तब वह फिर कहता है—"मेरा बग (भगवान्) मेरे ऊपर प्रसन्न है, उसने मेरी सारी बलि खा ली!" उनमेंसे जब कोई बीमार पडता है, तो उसके लिये एक ओर झोपडी बनाकर वहा उसे रख देते है। बीमारके लिये थोडी-सी रोटी और पानी रखनेके सिवा न कोई वहा जाता है और न उससे बातचीत करता या मिलता-जुलता है। अगर वह अच्छा हो जाता है, तो साथमे जाता है, अगर मर जाता है, तो उसे जला देते ह। यदि वह दास होता है, तो उसे धरतीपर छोड देते हैं, जहा उसे कुत्ते और गिद्ध खा जाते हैं।

मुझे बतलाया गया, कि वह मरनेके बाद अपने सरदारोकी बहुत धूमधामसे अत्येष्टि-क्रिया करते हैं। मैंने उसे देखना चाहा। मुझे उनके एक बडे आदमीके मरनेकी खबर मिली। मैं उसे देखने गया। उन्होंने अर्थीपर ढाककर मुर्देको दस दिनोतक रक्खा। इसी बीच मुर्देके कफन सीने और दूसरे काम होते रहे। अत्येष्टि यही है, कि गरीब आदमीके लिये वह छोटी-सी चिता बना उसपर लाशको रखकर जला देते हैं। धनी आदमी होनेपर उसकी सम्पत्तिको इकट्ठा करके उसके तीन भाग करते ह, जिसमेंसे एक भाग परिवारको मिलता है, दूसरे भागसे वह कपडा-लत्ता खरीदते ह और तीसरे भागसे श्राद्धके दिनके खान-पानकी चीजें लाते हैं। अपने स्वामीके मरनेके बाद उसकी दासी साथ जलती है। वह उसे रात-दिन शराब पिलाकर मस्त रखते है, जिससे कोई-कोई हाथमें प्याला लिये ही मर जाती है। जब कोई सरदार मर जाता है, तो उसका परिवार मृतपुरुषके दास-दासीसे पूछता है—"तुममेंसे कौन स्वामीके साथ मरेगा?" उनमेंसे कोई कह उठता है—"म"। जब एक बार 'मैं' कह दिया, तो उसके लिये मरना अनिवाय हो गया, वह अपनी बातसे मुकर नही सकता। अधिकतर साथ जलनेका काम दासिया करती हैं। जब वह आदमी मरा, जिसके बारेमें मुझे बतलाया गया था, तो उसकी दासियोंसे पूछा गया—"कौन उसके साथ मरेगा?" उनमेंसे एक दासीने कहा—'मैं'। उन्होंने उसी समय उसके ऊपर दो दासिया नियुक्त कर दी, जिसमें वह उसकी रखवाली करें। मृतकके लिये वह दूसरे काम करने लग। उन्होंने कफन तैयार किया और जो दूसरी आवश्यक चीजें थी, उन्हें भी तैयार किया। दासी रोज खूब आनन्दसे खाती-पीती। जब दाहका दिन आया, तो म भी नदीपर गया, जहा चिता तयार थी। चिताके ऊपर बहुत-सी लकडिया रक्खी थी। उसीके ऊपर लाकर अरथीको रख दिया गया। फिर वह मेरी समझम न आनेवाली

भाषामें कुछ कहते हुये एकके-पीछे एक चलने लगे। लाश अब भी अर्थीमें पड़ी थी। फिर उन्होंने मोढ़ा ला चितापर रख उसे ग्रीक रेशमी कपड़े, तकिये आदिसे ढाक दिया। फिर एक बूढ़ी स्त्री आई, जिसे कि वह लोग मृत्युका देवता (यमदूता) कहते हैं। वह मोढ़े पर बैठ गई। उसीके कहनेके अनुसार मिलाई तथा दूसरे काम होते हैं। वही दासीको मारती है। उन्होंने उसे चितापर बैठा दिया, फिर मरनेवालेके पहने हुए कपड़ेको वहा रक्खा। उसीके सामने उन्होंने मद्य, फल और वाद्ययंत्र (वलालैका) रक्खा। सफेद चेहरा हो जानेके सिवा मुर्देमें कोई परिवर्तन नही दीख पड़ता था। उन्होंने उसके ऊपर रेशमी कुर्ता, जामा, सदली, जरीदार जूता आदि रक्खा, सिरके ऊपर रेशमकी बटी टोपी रक्खी। फिर चितापर उसके कपड़ोको बिछाकर तकिया रक्खी। फिर पान (मद्य), फल रख दिया। कुत्तोंने आ चिताको गिरा-पड़ा दिया। फिर मृत पुरुषके सारे हथियारोंको उन्होंने क्रमसे उसके पास सजा दिया। फिर उसके दो घोड़ोको लाकर उन्होंने वही तलवारसे मारकर उनके मासको चितापर रख दिया। फिर वह दो बैल लाये। उन्हे भी उसी तरह मारकर चितापर फेंक दिया। फिर मुर्गी-मुर्गा लाये, उन्हें भी मारकर वही डाल दिया। फिर मरनेके लिये तैयार दासी लाई गई, जिससे हरएकने कहा—"अपने स्वामीसे कहना, कि हमने केवल उसके प्रेमसे यह सब किया।" दासीने अपना पैर चितापर रख अपनी भाषामें कुछ कहा। उसे हटा दिया गया। फिर उसने वही किया, जो कि पहली बार किया था। फिर उसे तीसरी बार हटाया गया। उसने फिर वही किया। फिर उसे उन्होंने मुर्गी दी जिसे उसने सिर मरोड़कर फेंक दिया। उन्होंने मुर्गीको उठाकर उसी चितामें डाल दिया। मैने दुभाषियेसे पूछा, कि उस दासीने क्या कहा? उसने जवाब दिया—'उसने पहली बार कहा—'हा, मैं अपने बाप और अपनी माको देखती हू।' दूसरी बार उसने कहा—'हा, मैं देखती हू अपने मरे हुये बंधुओंको, मानो वह (यहा) बैठे हुये हैं।' फिर उसने तीसरी बार कहा—'हा, मैं देखती हू अपने स्वामीको, जैसे वह बड़े सुन्दर हरे-भरे राइ (स्वर्ग) में बैठे हैं, उनके साथ पुरुष और बच्चे भी हैं। वह मुझे बुला रहे है। मुझे उनके पास ले चलो।' पीछे उसे चितापर ले गये, और चीजें निकालकर उस यमदूता बुढ़ियाको दे दी, जो दासीको मारने जा रही थी। फिर बुढ़ियाने पैरोंके कड़ोको निकालकर, उनमेंसे दोको दासीको दे दिया। फिर उसे चिताके पासकी झोपड़ी मे ले गये, जहा पुरुषोने उसे प्यालेमें शराब लाकर दिया। उसने उसे पिया। दुभाषियेने मुझसे कहा, 'वह अपनी सहेलियोके साथ प्रार्थना कर रही है।' फिर उसे दूसरा प्याला दिया गया। उसने उसे ले पीते हुये एक लम्बी गीत गाई। लेकिन बुढ़िया प्याला पीनेसे रोककर उसे वहा ले गई, जहा उसका स्वामी लेटा हुआ था। मै देख रहा था, कैसे वह छटपटा रही थी। उसने अपने सिरको चौतरे और चिताके बीचमें किया, और बुढ़ियाने गलेसे पकड़कर उसे चौतरेपर पहुचाया। फिर पुरुषोंने लकड़ियोंको पीटना शुरू किया, जिसमे कि (दासी का) रोना-चिल्लाना सुनाई न दे, और आगे दूसरी दासिया डरकर अपने स्वामीके साथ मरनेसे इन्कार कर दें। फिर मरनेवाली दासीको लाकर उसके स्वामीकी बगलमें रख दिया—दो ने उसके पैरोको पकड़ रखा था, दोने उसके हाथोको, यमदूता बुढ़ियाने उसे गलेसे पकड़ा था। पुरुषोंने उसे तान रक्खा था। बुढ़ियाके सामने बड़ा खाड़ा रक्खा था, जिसे उसने दासीकी पसलियोंके बीचमें घुसेड़ दिया। दो पुरुषोंने भी उसपर प्रहार किया। अभी भी वह मरी नही थी। फिर मृत पुरुषके बहुत नजदीकके संबंधीने आकर एक जलती लकड़ी उठा उससे चितामें आग लगा दी। फिर दासीको उसके स्वामीके पास ले आकर रख दिया गया। इसके बाद लकड़ीके टुकड़ोको लिये लोग आये और उन्हें चिताके काठपर फेंक दिया। आग पहले घासमें लगी, फिर चितामें, फिर लाशमें। आग जलने लगी। इसी समय जोरकी हवा चली, जिससे आगकी लपटें धाय-धाय करके बलने लगी। मेरे पास एक रूस पुरुष खड़ा था। उसने मुझसे कुछ कहा। मैंने दुभाषिये से पूछा—'उसने क्या कहा।' दुभाषियेने जवाब दिया—'वह कहता है, अरबके लोग (मुसलमान) मूर्ख हैं। वह जिस आदमीसे प्रेम करते हैं, उसे ले जाकर जमीनमें गाड़ देते है, जहा उसे कीड़े-मकोड़े खा जाते हैं। हम (रूस) तो उसको आगमें जला देते हैं और वह तुरन्त राइ (स्वर्ग) में चले आते है।' फिर उसने मुस्कराते हुये लम्बी हसी हसते कहा-'देखो, इसीमे खुश होकर भगवान्ने हवाको भेजा है। फिर नदीके तटपर सजाई चिताकी जगहपर श्वेत सफेदा-वृक्षके टुकड़ेपर उस पुरुष और रूसोंके राजाका नाम लिखकर रख दिया गया।'

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि भारतमें सतीप्रथा शकोंके साथ ईसवी-सन्के आरभमें आई। हमारे शक तथा रूसी एक ही वशके थे, यह हम बतला चुके हैं। इसीलिये दोनोकी सतीक्रियामें कितनी ही समानता देखकर आश्चय करनेकी आवश्यकता नही है।

४ ओलगा, ईगर-पत्नी (९४५-५७ ई०)

ईगरका उत्तराधिकारी उसका पुत्र स्व्यातोस्लाव छोटा बच्चा था, इसलिये राज्यका शासन उसकी मा ओलगाने सभाला। ओलगा स्लाव थी, इसलिये रूरिककी तीसरी पीढीमें स्व्यातोस्लाव भाषा और आकृति सबमें स्लाव था।

५ स्व्यातोस्लाव I, ईगर-पुत्र (९५७-७३ ई०)

स्व्यातोस्लावने अपने बाप-दादोके विजय और वीरतापूण कामोको और आगे बढाया। उसका सारा जीवन अभियानोमें बीता। वह कभी अपनी यात्राओमें रसदकी गाडिया नही ले जाता, अपने घोडेकी जीनका तकिया बनाकर धरतीके ऊपर सो जाता और आधे पके हुये घोडेके मासको खाता। स्व्यातोस्लावने कभी धोखा देकर शत्रुपर आक्रमण नही किया। जब किसीके विरुद्ध चढाई करता, तो पहलेसे दूतद्वारा सदेश भेज देता—'मैं तुम्हारे विरुद्ध कूच करना चाहता हू।'

स्व्यातोस्लावसे पहले ही द्नियेपर-उपत्यका और इल्मन सरोवरका प्रदेश कियेफ राज्यमें सम्मिलित था। स्व्यातोस्लावने पहले द्नियेपरसे पूरबमें रहनेवाली स्लाव-जातियोकी ओर ध्यान दिया और ओका-उपत्यकाके व्यातिची लोगोको जीतनेके बाद दूसरोंके ऊपर आक्रमण किया। १० वी शताब्दीके साठवें सालके आसपास उसने वोल्गाके किनारेके बुल्गारो और खाजारोंको हराया, फिर उत्तरी काकेशसपर आक्रमण कर वहाके कसोवी (चिरकास) और यासी (ओसेती) जातियोकी भी वही हालत की। ६६७ ई० में उसने दन्यूबतटवासी बुल्गारोंके ऊपर चढाई की, जो अब नामके ही बुलगार थे, नही तो भाषा, आकृति आदिमें उसी स्लाव जातिके थे, जिसका कि उनका विजेता। इस आक्रमणका यही कारण था, कि बुल्गार अपने पडोसी ग्रीक (पूर्वी रोम) सम्राटपर बराबर आक्रमण करते उन्हे जबदस्त हारपर हार दे रहे थे। ग्रीक रोकनेमें असमथ थे, इसलिये उन्होने स्व्यातोस्लावको मददके लिये बुलाया। उसने बुल्गारोको पूरीतौरसे हराकर दन्यूबतटपर अवस्थित बुल्गारियाकी राजधानी पेरेया (स्लावेत्स) में स्थायी तौरसे अपनी छावनी स्थापित करनेकी योजना बनाई। स्व्यातोस्लावने कहा—'यहा यह मेरे देशका केंद्र है। यहा सभी अच्छी चीजें—सोना, कीमती कपडे, शराब और फल ग्रीकोकी ओरसे प्रवाहित होते रहते हैं, चेको तथा मगयारोके देशोंसे चादी और घोडे एव रूसोके देशसे समूरी छाल, मधु, मोम और दास-दासिया आती हैं।"

स्व्यातोस्लावके रूपरगके बारेमें ग्रीक ऐतिहासिकोने लिखा है—"वह कदमें मझोला—न बहुत बडा न बहुत छोटा था, उसकी भौहें घनी, आखें नीली, नाक छोटी, दाढी मुडी और सिर घुटा था। केवल खोपडीके ऊपरी भागमें लबे बाल थे। उच्च कुलका परिचायक बालोका एक गुच्छा (शिखा) उसके सिरमें एक ओर था। उसकी गदन मोटी, कधा चौडा, सारा शरीर सुन्दर सुडौल था। उसके एक कानमें सोनेका मणिजटित कुडल था। उसकी पोशाक एक सफेद स्वच्छ कुर्तेके सिवा और कुछ नही थी।"

रूरिक-सतानोके शासनके समय रूसके भिन्न-भिन्न स्थानोमें निम्न राजुल थे—नवोगोरद, रस्तोफ-सुज्दल, मुरमो-र्याजन, स्मोलेन्स्क, कियेफ, चेर्नीगोफ, सेवेर, पेरेयास्लाव्ल, वोलिन्स्क, गालित्स, पोलोत्स, तूरोफ-पिन्स्क, जिनके नीचे कितने ही छोटे-छोटे ठाकुर होते थे। कालासागरके पासवाला मैदान उस समय तुर्कोंके हाथमें था, जो पेचेनेग, तुर्की, बेरेन्दे, चेर्नीक्लोबुक (कराकल्पक) जसे भिन्न-भिन्न कबीलोमें बटे थे—पेचेनेगोका देश कियेफकी भूमिसे एक दिनके रास्तेपर पडता था।

६ व्लादिमिर, स्व्यातोस्लाव-पुत्र (९७३–१०१५ ई०)

स्व्यातोस्लावको अपने अभियानोसे फुर्सत नहीं थी। अपनी अनुपस्थितिमें राज्यका भार उसने अपने
तीन पुत्रोपर छोड रक्खा था। ज्येष्ठ पुत्र यारोपोल्क पोलियानोकी भूमि—जिसमें कियेफ नगर भी था—
का शासन करता था। ओलेगके अधीन द्रेव्ल्यानोकी भूमि थी, और नवोगोरद व्लादिमिरको मिला था।
बापके मरते ही तीनो भाइयोमें झगडा शुरू हुआ। यारोपोल्क और ओलेग युद्धमें काम आये, और पूर्वी
स्लावोकी भूमि व्लादिमिरके शासनमें एकतावद्ध हो गई। इसके बाद व्लादिमिरने गालिच (हालिज)
के प्रदेशको अपने राज्यमें मिलाया और विरोध करनेवाले पोलोके ऊपर आक्रमण किया। व्लादिमिरने
अपने पडोसी लिथुवानियोपर भी आक्रमण किये, लेकिन उसका ध्यान सबसे अधिक पेचेनेगोकी ओर था,
जो कि उसकी दक्षिणी सीमापर आक्रमण करते रहते थे। उसने इन घुमतुओंसे प्रतिरक्षाके लिये जगह-
जगह गढियां बनवाईं और वहा अपने लडाकू लोगोको लाकर बसा दिया।

ईसाई-धर्म स्वीकार—अभी तक कियेफ रूस अपने पूर्वजोके धर्मपर ही आरूढ थे। यद्यपि उनका
व्यापारिक और सैनिक तौरसे भी ग्रीसके साथ घनिष्ठ सबध था, जिसके कारण ईसाई पुरोहित भी अपने
व्यापारियोके साथ उनके यहा आया करते थे। ईगरके समय भी कियेफमें ईसाइयोंके कुछ गिर्जे थे।
पहले ही निकोलाइ ख्रिसोवेर्द (९७९–९९१ ई०) ईसाई-प्रचारक बनाकर स्लावोमें भेजा गया था।
इसमें सदेह नहीं कि आभिजात्य वर्गमें कितने ही ईसाई-धर्मको स्वीकार कर चुके थे, तो भी अभी अपने
जनयुगके (कबीलाशाही) पूर्वजोके धर्मको रूस छोडना नही चाहते थे। जनयुगका धर्म अपने-अपने कबीलो
देवताओ और रीति-रवाजोंके साथ घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध रहता है। जब राज्योकी सीमा कबीलोको
तोडकर आगे बढ़ती है, तो राज्य की एकतामें कबीलाशाही धर्म बाधक होता है, फिर किसी सामन्ती धर्म
को स्वीकार करनेकी जरूरत पडती है, ता कि वह राजा और भिन्न-भिन्न कबीलोंवाली प्रजाके भीतर पहिले
के रक्तसबधके टूटनेपर अपने (धर्म) द्वारा एक नये सबधको स्थापित करे। स्लावोंसे बाहर भी राज्यवि-
स्तार होनेके कारण अब व्लादिमिरको एक व्यापक धर्मकी अवश्यकता पडी। इसके लिये उसका ध्यान
यहूदी धर्मकी ओर भी गया था—हमे मालम है, कि खाजार खगान यहूदी धर्मके माननेवाले थे। पुरानी
ऐतिहासिक परपरासे मालूम होता है, कि ९८६ ई० में व्लादिमिरने यहूदी धर्म स्वीकार करना इन्कार कर
दिया। रूसोंके सगे भाई बुलगारियावाले ईसाईधर्मको स्वीकार कर चुके थे। काला समुद्रके उत्तरी और
पूर्व-उत्तरी तटपर क्रिम, खोरसुन आदि नगरोमें धनी ईसाई ग्रीक व्यापारी रहते थे, जिन्होने वहा अच्छे-
अच्छे गिर्जे बना रक्खे थे। व्लादिमिरने रोम-दरबार की तडक-भडक, उसके कला-कौशल और विचार-
धारा को भी देखने-सुननेका मौका पाया था। अपने पास-पडोसकी गौराग जातियोमें इस्लामको न
फला देखकर उसकी ओर उसका आकर्षण नहीं हो सकता था। इन सामान्ती धर्मोंके मुकाबिलेमें स्लावो-
का पुराना धर्म ओझा-सयाना-पुरोहितोका धर्म था, इसमें पुराने जनयुगीन ठाकुरोंकी प्रतिष्ठा अधिक
थी, जो नवजात उच्चवर्ग के लोगोको सम्मान नही देना चाहते थे, जो कि उनके लिये प्राचीन कालसे
सुरक्षित था। इन्हीं नये अ-कुलीन ठाकुरोने पहिले ईसाईधर्मकी ओर हाथ बढाया। कहा जाता है,
ईगरकी विधवा ओलगाने भी ईसाई-धर्म स्वीकार किया था, जो असदिग्ध नही है। ९८७ ई० मे बिजन्तीन
साम्राज्यके भीतर एक बडा विद्रोह उठ खडा हुआ था। इसी समय उत्तरसे दन्यूबके बुल्गारोने भी हमला
करना चाहा, जिसपर बिजन्तीन सरकारने व्लादिमिरको सहायताके लिये बुलाया और ९८८ ई० मे व्लादि-
मिरके साथ सधि की। व्लादिमिरने ग्रीक-सम्राट्की बहिन अन्नासे व्याह करनेकी इच्छा प्रकट की।
सम्राट्ने इस शर्तपर व्याह करना स्वीकार किया, कि व्लादिमिर ईसाई-धर्मको स्वीकार करे। उस समय
कान्स्तन्तिनोपोलमें दो सम्राट् राज्य कर रहे थे, अन्ना दोनो हीकी बहिन थी। विद्रोह-दमन करनेके
उपहारस्वरूप अन्ना मिलनेवाली थी, लेकिन जब काम निकल गया, तो सम्राटोने अपने वचनको पूरा
करनेमें ढिलाई दिखानी शुरू की। इसपर व्लादिमिरने आक्रमण करके क्रिमिया प्रायद्वीपके ख़ेर्सोनेस
(खोरसोन) नगरको घेर लिया, और बिजन्तीनको अपना वचन पालनेके लिये मजबूर किया। उसी समय
व्लादिमिरने ग्रीक-चर्चकी पद्धतिके अनुसार बपतिस्मा ले राजकुमारी अन्नासे व्याह किया। ९८८ ई० में
खोरसोनसे रानी अन्नाके साथ कियेफ लौटने पर उसने कियेफके सारे लोगोको जबर्दस्ती द्नियेपर नदीमें

डुबकी लगवा ग्रीक-पादरियोंद्वारा उन्हें बपतिस्मा दिलवाया। धर्मान्धिताके पागलपनमें पुराने स्लाव-देवताओंकी मूर्तियां—जो अधिकतर काठकी होती थीं—जला दी गईं। महादेवता पेरुनकी एक मूर्ति द्नियेपरमें फेंक दी गई। इसी तरह जबर्दस्ती बपतिस्मा दिलवा थोड़े ही दिनोंमें प्राय सारे नागरिक रूस ईसाई बना दिये गये, लेकिन गांवोंमें पेरुन-पूजकोंकी समाप्ति इतनी जल्दी नहीं हो पाई।

७ स्व्यातोपोल्क I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१५-१९ ई०)

व्लादिमिरके मरते ही उसके पुत्रोंमें गद्दीके लिये जो भयंकर संघर्ष शुरू हुआ, उसमें स्व्यातोपोल्कने अपने भाइयों—बोरिस, ग्लेब और स्व्यातोस्लाव—को मारकर कियेफकी गद्दी ले ली। इसपर पिताके समयसे ही नवोगोरदका शासक व्लादिमिर-पुत्र यारोस्लावने नवोगोरदवालोंकी मददसे स्व्यातोपोल्कपर आक्रमण किया। स्व्यातोपोल्क हारकर अपने ससुर पोलन्दके राजुलके पास भाग गया। दामादकी मदद करनेके लिये पोलन्द राजुल बोलेस्लाउस्ने रूसपर आक्रमण किया और पश्चिमी बुगके किनारे यारोस्लावको हरा कियेफमें दाखिल हो अपने दामादको गद्दीपर बिठाया। पोलोंने इतने हीसे संतोष न कर देशमें लूट-पाट मचानी शुरू की, जिसका प्रतिरोध रूसोंने भी बहुत जोरसे किया। जब लूट-पाटकर नगरों और गांवोंमें जाड़ा बितानेके लिये पोल इकट्ठा हुये, तो लोगोंने विद्रोह करके उन्हें मार डाला। बची-खुची सेनाके साथ बोलेस्लाउस् पोलन्द भागा। पोलोंकी सहायतासे वंचित स्व्यातोपोल्कको यारोस्लाव और उसके नवगादियोंके हाथ हार खानी पड़ी और भागते समय वह मारा गया।

८ यारोस्लाव I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१९-५४ ई०)

यारोस्लाव अब कियेफ और नवोगोरदका महाराजुल बना, लेकिन अभी भी एक प्रतिद्वंद्वी उसका भाई म्स्तिस्लाव मौजूद था, जोकि काकेशसके समीप तमन प्रायद्वीपमें तमूतरकानका शासक था। उसने आक्रमण करके यारोस्लावसे सेवेस्क भूमि तथा चेरनीगोफ नगरको छीन लिया। द्नियपर नदी दोनों भाइयोंकी सीमा बनी। १०३६ ई० में भाईके मर जानेपर सेवेस्क प्रदेशको फिर यारोस्लावने कियेफ-राज्यमें मिला लिया। यारोस्लावके समय ईसाई धर्मने कियेफ रूसोंपर पूर्ण विजय प्राप्त की, ईसाई-चर्च (धर्मसंघ) का संगठन हुआ, और कान्स्तन्तिनोपोलके महासंघराजने रूसोंके लिये एक संघ-राज नियुक्त किया। कियेफके पास पेचेर्स्क-मठ इसी समय बना, जिसने शासकवर्गमें शिक्षा फैलानेमें बड़ा काम किया।

कियेफ-राज्य अब युरोपके महत्त्वपूर्ण राज्योंमेंसे था। ग्रीक-संबंधके कारण उसका सांस्कृतिक तल भी ऊंचा हो गया था। यारोस्लाव-परिवारका संबंध अब पश्चिमी युरोपके राजघरानोंसे होने लगा था। यारोस्लावकी बहिन पोल-राजासे ब्याही थी। उसके दामादोंमें फ्रांस, नार्वे और हुंगरी (मगयार) के राजा थे। यद्यपि यारोस्लावने पोलन्दकी सहायतासे सिंहासन पाया था, लेकिन अब वह इतना शक्तिशाली था, कि पोलन्दके भीतरी मामलोंमें दखल देता था। बोलेस्लाउस्के मरनेके बाद पिताके राज्यसे छीने गये गालिच प्रदेशको उसने फिर ले लिया। १०४३ ई० में उसने अपने पुत्र व्लादिमिरके नेतृत्वमें एक असफल अभियान कान्स्तन्तिनोपोलके विरुद्ध भेजा। पश्चिमकी ओर बाल्तिक प्रदेशपर जर्मन आक्रमण करने लगे थे। यारोस्लावने प्रतिरक्षाके लिये यूरियेफ (एस्तोनियामें तरतू) नगरको बसाया, और बाल्तिकके लोगोंको अपने अधीन कर लिया। उसने बोल्गाके किनारे अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगर बसाया। दक्षिणमें पचेनेगोंसे उसका संघर्ष बराबर जारी रहा।

यारोस्लावके समयमें ही पहला कानून-ग्रंथ (विधान-संहिता) "यारोस्लाव्स्की प्राव्दा" के नामसे संपादित हुआ, जिसपर ईसाई बिजन्तीन कानूनोंका प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। उसी प्राव्दा (सत्य) द्वारा जनयुगसे चले आते खूनका बदला लेना सारी जातिके लिये आवश्यक होनेकी जगह परिवारके सदस्योंतक ही सीमित करते हुये कहा गया—"अगर कोई आदमी दूसरेको मार डाले तो भाई का बदला भाई ले, बापका बदला पुत्र, पुत्रका बदला भाई-भतीजा-भांजा भी। अगर कोई बदला

लेनेवाला न रह जाय, तो मरे हुये आदमी के लिये चालीस ग्रिवना (दो सौ ग्रामकी चांदीकी सिल्ली) देना होगा।" यारोस्लावके पुत्रके शासनकालमें बदला लेनेके विधानको ही उठा दिया गया, और इस प्रकार जनयुगकी एक पुरानी प्रथाको सामंतयुगने समाप्त कर दिया।

सुव्यवस्थित रूसी चर्चके स्थापित हो जानेपर अब बाकायदा पुस्तकें भी लिखी जाने लगीं, बाइबल तथा दूसरे धार्मिक ग्रंथोंके साथ-साथ ग्रीक इतिहास-ग्रंथोंका अनुवाद करते, रूसी लिखित साहित्यका आरंभ किया गया। यारोस्लावके समयमें ही रूसका इतिहास लिखनेका प्रथम प्रयत्न किया गया, जिसे कि उसके मरनेके बाद पेचेर्स्क-मठने संपादित किया। इसको "आरंभिक-इतिहास" (नचल्नया लेतोपिस्) कहते हैं। इसमें राजुलोंकी जीवनियां, और बहुत-सी कहानियां जमा की गई हैं। मूल पुस्तक अपने १११६ और १११८ के संशोधित संस्करणोंके रूपमें "पुराने वर्षोंका इतिहास" के नामसे अब भी मौजूद है। यारोस्लावके समयमें ही कियेफमें ग्रीक वास्तु-शास्त्रियोंकी देख-रेखमें सोफिया-गिर्जे का निर्माण हुआ। विजन्तीन ढांचेको लेते हुये भी इसमें रूसी वास्तुकलाका सम्मिश्रण किया गया। ११ वीं शताब्दी की रूसी कलाकी यह सर्वोत्कृष्ट इमारत है। गिर्जेके भीतरकी दीवारोंपर सुन्दर भित्ति-चित्र और फर्श-पर बढ़िया पच्चीकारीका काम है। उस समयके विदेशी यात्री कियेफके वैभवको देखकर उसे "कान्स्तन्तिनोपोलका प्रतिद्वंद्वी" कहते थे। कियेफके नमूनेको लेकर यारोस्लावके पुत्र व्लादिमिरने नवो-गारदमें भी उसी तरहका सोफिया-गिर्जा बनवाया।

आर्थिक ढांचा—यह कह चुके हैं, कि ९वीं शताब्दीसे पहले रूस कृषिजीवी थे, यद्यपि नगरों और द्नियेपर-उपत्यकासे दूरके जंगलोंमें रहनेवाले अब भी पशुपालनपर अधिक निर्भर करते थे। अभी भी उनका राजनीतिक ढांचा बहुत-कुछ जनयुगीन था, और राजुलोंको अपने लोगोंकी रायका बहुत ख्याल रखना पड़ता था। न पसंद आनेपर लोग साफ जवाब देते थे—"राजुल, हम तो नहीं जाते, तू अपनी लड़ाई जाके लड़।" लेकिन ११ वीं शताब्दीमें पहुंचते-पहुंचते जनयुगीन ढांचेके स्थानपर सामंती ढांचा कायम हो गया था, जिससे जहां सामंतोंकी शक्ति बढ़ी, वहां साधारण जनतामें सांपत्तिक विषमता भी बढ़ी। कुछ लोगोंके पास भूमि और संपत्ति अधिक आ गई, और इस प्रकार बहुत खेतोंवाले धनी जमींदारोंका एक वर्ग पैदा हो गया, जिन्हें **बोयर** कहा जाता था। ये राजुलोंके बड़े सहायक थे। इनके अतिरिक्त मठोंके पास भी बहुत धन-धरती हो गई। उनके महंत भी बोयरोंकी तरह राजुलोंके समर्थक थे। अबतक धरतीपर जो वैयक्तिक नहीं बल्कि पंचायती अधिकार चला आता था, वह खतम होने लगा। बड़े-बड़े शहरोंके आसपास राजुलों, बोयरों और मठोंके गांव बस गये थे। दास अभी तक लूटकर बेचनेके ही काममें आते थे। खेतोंमें काम करनेके लिये गरीब किसान और मजदूर ज्यादा लाभदायक समझे जाते थे, जिन्हें कि कर्ज खिला या दूसरी तरहसे जमींदार अपना बंधुवा बना लेते थे। लेकिन अभी ११वीं शताब्दीमें भी अधिकांश किसान समूहबद्ध होकर रहते राजुलोंको केवल कर दे दिया करते थे। ११ वीं शताब्दीके अन्ततक यह स्वतंत्र किसान-समूह बहुत-कुछ अपने अधिकार खो चुके थे। बहुत दबानेसे जातीय स्वतंत्रताकी भावना जब कभी जाग उठती, तो वह राजुलों और बोयरोंके खिलाफ विद्रोह कर उठते, या अन्यत्र भाग जाते। भागा हुआ किसान पकड़नेपर दास बना दिया जाता।

"रुस्कया प्राव्दा"—यारोस्लावके समय निर्मित विधान (प्राव्दा) के आधारपर ही उसके पुत्रों और पौत्रोंके समय "रुस्कया प्राव्दा" (रूसी विधान) के नामसे एक विधान-संहिता बनी, जिसमें उन विधानोंको खासतौरसे स्थान दिया गया, जिनके द्वारा जनसाधारणको जमींदारों (बोयरों) और सामंतों की संपत्तिपर हाथ बढ़ानेसे रोका जाता था—खेतकी मेंड तोड़ने और पशुओंके चुराने आदिके अपराधमें जुर्मानाका विधान किया गया। बोयरका अपने दास और अर्धदास रियायापर क्या अधिकार है, इसे भी उसमें बतलाया गया। जनयुगसे खूनके बदलेमें खूनीसे सारे कबीलेको बदला लेनेका जो अधिकार चला आता था, और जिसे यारोस्लाव-प्राव्दाने केवल परिवारके व्यक्तियोंतक ही सीमित कर दिया था, उसकी जगह अब "रुस्कया प्राव्दा" ने "विरा" (अर्थदंड) का विधान करके उसका परिमाण चालीस ग्रिवना निश्चित कर दिया—बोयरको मारनेपर यह जुर्माना दूना (अस्सी ग्रिवना) देना पड़ता, लेकिन

दासके मारनेपर विरा न दे केवल दास-स्वामीको पचास ग्रिवना दे देना पर्याप्त समझा जाता था। "रूसकया प्राव्दा"में यह भी कहा गया है—"अगर किसी आदमीपर तलवारसे प्रहार किया गया हो लेकिन वह मरा न हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना, और घावकी चिकित्साके लिये आहत आदमीको एक ग्रिवना पानेका अधिकार होगा। अगर एक दात तोडदिया गया हो और मुहसे खून निकला हो, तो जुर्माना बारह ग्रिवना और दातके लिये एक ग्रिवना देना होगा।" मधु अब भी आयका एक अच्छा साधन समझी जाती थी और चीनी-गुडके अभावमे रूसोंके लिये वही एकमात्र मिठाईकी चीज थी। शराब बनानेमें भी उसका बहुत व्यवहार होता था, इसीलिये "रस्कया प्राव्दा" ने विधान किया था—"अगर कोई आदमी ऐसे वृक्षको काटे, जिसमे जगली मधु-मक्खिया रहती हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना और आधा ग्रिवना वृक्षका (दाम) देना होगा।"

पहले चीजोके विनिमयका माध्यम जगलके इलाकोमें पशु-चम और खेतवाले इलाकोमें पशु था। इसीलिये पुराने समयमें पैसेको "स्कोत" (पशु) या "कुनी" (चम) कहते थे। रूसोके पास अपना सिक्का नही था। अरबो, ग्रीको या पश्चिमी युरोपवालोंके सिक्के उस समय रूसोमे भी चला करते थे। ११वी शताब्दीके आरभमे ग्रीक सिक्कोकी नकल करते कियेफ रूसोने भी थोडेसे अपने-अपने सिक्के ढाले, जिनके ऊपर राजुलका चेहरा बना रहता—सिक्कोका रवाज अधिकतर नगरोमें था।

९ इज्यास्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०५४—७३ ई०)

यारोस्लावके मरनेके थोडे ही दिनो बाद रूसोकी एकता भग होने लगी और यारोस्लावके पुत्र स्वतत्र रूपमे अपने-अपने प्रदेशोपर शासन करने लगे। सबसे बडा लडका इज्यास्लाव कियेफ और नवो गोरदका स्वामी बना। दनियेपरके वणिक्पथपर ये दोनो बहुत महत्त्वपूर्ण नगर थे, इसलिये इज्यास्लावका स्थान बहुत महत्त्व रखता था। दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लावको चेर्निगोफका इलाका मिला और व्सेवोलदको पेरेयास्लाव्ल और रोस्तोफ-सुज्दल। दूसरे इलाके दूसरे राजकुमारोंके हाथोमें चले गये। पहले तीनो बडे लडके आपसमें मेलसे रहते, मिलकर शत्रुओंसे देशकी प्रतिरक्षा करते थे, कभी-कभी इकट्ठा होकर राजकाजकी बातोमें सलाह भी करते थे। १०६८ ई० में जब कियेफके कारीगरो और किसानोंने विद्रोह किया, तो उन्होंने इकट्ठा होकर अपने बापकी "प्राव्दा" का सशोधन और परिवर्धन किया। यारोस्लावके पुत्रोंके सबसे भयकर शत्रु थे तुर्कजातीय पोलोवत्सी—अपनी भाषामे इनका नाम दूसरा ही होगा, लेकिन रूसी उन्हे इसी नामसे पुकारते थे। यारोस्लावके शासनके खतम होनेके समय ११वी शताब्दीके मध्यमें ही पूरबसे आकर पोलोवत्सियोंने आक्रमण करके कालासागरके उत्तरवाली मैदानी भूमिपर अधिकार कर लिया और वहा रहने पेचेनेगोको पश्चिममे दन्यूबकी ओर भगा दिया। पोलोवत्सी घुमतू पशुपाल थे। उनके बहुतसे छोटे-छोटे कबीले थे, जिनके अपने-अपने खान (राजा) हुआ करते थे। पशुओंपर निर्भर होनेके कारण वह एक जगहसे दूसरी जगह घूमा करते और समय-समयपर रूसोकी भूमिपर चढाई कर उनके पशुओ और पुरुष-स्त्रियोको पकडकर लौट जाते। उनका आक्रमण बडा ही भयकर और अचानक होता। ग्रीक लेखक उनके बारेमे कहते है—"पोलोवत्सी पलक मारते-मारते प्रकट होकर लुप्त हो जाते है। आक्रमण खतम होते ही लूटके मालसे लदे अपने घोडाको कोडोंसे मारते वह आधीकी तरह निकल जाते है, मानो वह उडती हुई चिडियाको पकडना चाहते है। तुम्हारे आख उठाकर देखनेसे पहले ही वह निकल चुके रहते है।" १०६८ ई० मे इज्यास्लाव अपने दोनो भाइयो स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदके साथ पोलोवत्सियोको दबानेके लिये गया, लेकिन बुरी तरहसे हारकर उन्हें युद्ध-क्षेत्रसे भागना पडा। इज्यास्लाव कियेफ पहुचा। पोलोवत्सियोंके आक्रमण और लूटमार से सत्रस्त किसानोंने इकट्ठे हो इज्यास्लावसे माग की, कि हमें हथियार दो और साथ चलकर शत्रुओंसे लडो। इज्यास्लावको भय लगने लगा, कि कही वह हथियार मेरे ही विरुद्ध न उठाये जाय। उसके इन्कार करनेपर लोगोने राजुलके महलका लूट और बर्बाद कर, उसकी जगह दरबारद्वारा जेलखानेमे बद कोलोत्सके राजुल व्सेस्लावको मुक्त कर कियेफका राजुल घोषित किया। इज्यास्लाव भागकर पोलड पहुचा, जहासे पोल राजा बोलेस्लाउसकी सहायतासे कियेफ लौटा। व्सेस्लाव बिना आघात पहुचे

चुपचाप रातको पोलोत्स्क भाग गया। इज्यास्लावने लोगोंसे भारी खूनी बदला लिया। पोल सैनिक कियेफ राज्यके नगरोंमें जगह-जगह छावनी डालकर रहने लगे। उन्होंने अपने अत्याचारोंसे इतना तंग किया, कि लोगोंने जानपर खेलकर उनकी हत्या कर डाली।

पोलोवत्सी जैसे जबदस्त शत्रु सिरपर थे, तो भी यारोस्लावके बेटोंकी एकता देरतक नहीं रह सकी। विदेशियोंसे मदद लेकर इज्यास्लावने फिरसे सिंहासनपर अधिकारकर जनताके ऊपर जो अत्याचार किये, उनसे लोगोंमें उसके प्रति भारी घृणा पैदा हो गई। इससे फायदा उठाकर १०७३ ई० में स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदने आक्रमण करके इज्यास्लावको कियेफसे भगा दिया। अब स्व्यातोस्लाव कियेफकी गद्दीपर बैठा।

स्व्यातोस्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०७३--१११३ ई०)

स्व्यातोस्लाव थोड़े ही दिनोंतक भाईको सिंहासनसे वंचित रख सका। इज्यास्लाव भागकर जर्मन सम्राट और रोमके पोपके पास मदद मांगने गया, और अंतमें पोलोंकी मददसे उसने फिर अपने सिंहासनको प्राप्त किया, लेकिन वह थोड़े ही समय बाद अपने भतीजोंसे लड़ते हुये मारा गया।

यारोस्लावके पौत्रोंमें भी बराबर संघर्ष जारी रहा—कभी कोई किसीको भगाता और कभी कोई फिरसे अपने राज्यको प्राप्त करता। आपसकी लड़ाई और पोलोवत्सियोंके आक्रमणोंसे देशकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। इसीलिये १०९७ ई० में कुछ प्रभावशाली राजुलोंने ल्यूबेकमें जमा होकर सोचा—"हम क्यों रूस-भूमिको नष्ट कर रहे हैं ?" उन्होंने कहा—"हम आपसमें एक दूसरेके साथ विश्वासघात करनेका उपाय सोच रहे हैं। पोलोवत्सी हमारे देशका तहस-नहस करते इस बातसे प्रसन्न हैं, कि हम आपसमें लड़ रहे हैं। आओ, आजसे हम मेलसे रहें।" उन्होंने अंतमें यह निश्चय किया, कि हरएक राजुल अपने पैतृक राज्यको अपने पास रक्खे। अब कियेफ इज्यास्लावके पुत्र स्व्यातो-पोल्कके हाथमें रहा।

१० स्व्यातोपोल्क II, इज्यास्लाव-पुत्र

जब एक दूसरेके हित परस्परविरोधी हों, तो इस तरहके भावुकतापूर्ण आदर्शवादी फैसले देर तक कैसे माने जा सकते थे ? हमने भिन्न-भिन्न देशोंमें ऐसे अवसरोंपर राजुलों और राजाओंकी परिषदें होतीं, और उन्हें अच्छे निर्णयों पर पहुंचते देखा है। पर आर्थिक स्वार्थोंकी चट्टानोंके ऊपर उनके चकनाचूर होते भी देर नहीं लगती। स्व्यातोपोल्कको कियेफका अधिकार मिला और उसके चचेरे भाई व्लादिमिरको उसके पिता व्सेवोलदका पेरेयास्लाव राज्य मिला।

११ व्लादिमिर मनोमाख, व्सेवोलद-पुत्र (१११३-२५ ई०)

व्लादिरमिर बिजन्तीन-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख का धेवता था। इस सम्बन्धका उसे अभिमान भी था, इसीलिये वह व्लादिमिर मनोमाख (एक-राजा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। परिषद्के उठते देर नहीं हुई, कि फिर राजुलोंमें झगड़ा शुरू हो गया। स्व्यातोपोल्कने अपने एक राजुल भाई वासिल्कोको धोखेसे पकड़कर उसके प्रतिद्वंद्वी दाविद ईगर-पुत्रके हाथमें दे दिया, जिसने उसे अंधा करके जेलमें डाल वासिल्कोके नगरोंपर अधिकार कर लिया। इसपर व्लादिमिर मनोमाखने दूसरे राजुलोंका नेतृत्व करके वासिल्कोके छुड़ानेके लिये आक्रमण कर उसे मुक्त कर दिया। ११०० ई० में राजुलोंकी दूसरी परिषद् हुई, जिसमें उन्होंने दाविदको व्लादिमिरके सिंहासनसे वंचित कर दिया। आपसी संघर्षके समय पोलोवत्सियोंकी खूब बन आई, और वह रूसकी भूमिमें बहुत भीतरतक लूट-मार करने लगे। परिषद्में मनोमाखने मिलकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान करनेका प्रस्ताव किया, जिस मानकर सभी रूसी राजुलोंने व्लादिमिर मनोमाखके नेतृत्वमें पोलोवत्सीके ऊपर चढ़ाई की। सामूहिक शक्तिके सामने पोलोवत्सी बुरी तरहसे हारे, और विजेता रूस ढोरों, घोड़ों, ऊंटों, लूटके माल तथा बन्दियोंके साथ लौटे। ११११ ई०में उन्होंने फिर एक अभियान किया, जिसमें वह पहलेसे भी अधिक सफल रहे।

[illegible] मारनेपर सिर्फ [illegible] लोग स्वामीको [illegible] ग्रिवना देना पर्याप्त समझा जाता था। “रूस्कया प्राव्दा”में यह भी कहा गया है—“अगर किसी आदमीपर तलवारसे प्रहार किया गया हो लेकिन वह मरा न हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना, और घावकी चिकित्साके लिये घायल आदमीको एक ग्रिवना पानेका अधिकार होगा। अगर एक दाँत तोड़ दिया गया हो और मुँहसे खून निकला हो, तो जुर्माना बारह ग्रिवना और दाँतके लिये एक ग्रिवना देना होगा। मधु अब भी आयका एक अच्छा साधन समझी जाती थी और चीनी गुड़के अभावमें रूसके लिये यही एकमात्र मिठाईकी चीज थी। शराब बनानेमें भी उसका बहुत व्यवहार होता था, इसीलिये “रूस्कया प्राव्दा”ने विधान किया था—“अगर कोई आदमी एक वृक्षको काटे, जिसमें जंगली मधुमक्खियाँ रहती हों, तो तीन ग्रिवना जुर्माना और आधा ग्रिवना वृक्षका (दाम) देना होगा।

पहले चीजोंके विनिमयका माध्यम जंगली जानवरोंका चाम, पशु, नमक और [illegible] पशु था। इसीलिये पुराने समयमें रूसी सिक्केको “स्कात” (पशु) या “कुनी” (चमड़ा) कहते थे। रूसके पास अपना सिक्का नहीं था। अरबी, यूनानी या पश्चिमी युरोपवालोंके सिक्के उस समय रूसमें भी चला करते थे। ११वीं शताब्दीके आरम्भमें और [illegible] कियेफ रूसने भी थोड़ेसे अपने-अपने सिक्के ढाले, जिनके ऊपर राजुलका चेहरा बना रहता—सिक्केका रिवाज अधिकतर नगरोंमें था।

० इज्यास्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०५४—७३ ई०)

यारोस्लावके मरनेके थोड़े ही दिनों बाद रूसकी एकता भंग होने लगी और यारोस्लावके पुत्र स्वतंत्र रूपसे अपने अपने प्रदेशोंपर शासन करने लगे। सबसे बड़ा लड़का इज्यास्लाव कियेफ और नवो-गोरदका स्वामी बना। द्नियेपरके वणिक्-पथपर ये दोनों बहुत महत्त्वपूर्ण नगर थे, इसलिये इज्यास्लावका स्थान बहुत महत्त्व रखता था। दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लावको चेर्निगोफका इलाका मिला और व्सेवोलदको पेरेयास्लाव्ल और रोस्तोफ-सुज्दल। दूसरे इलाके दूसरे राजकुमारोंके हाथोंमें चले गये। पहले तीनों बड़े लड़के आपसमें मेलसे रहते, मिलकर शत्रुओंसे देशकी प्रतिरक्षा करते थे, कभी-कभी इकट्ठा होकर राजकाजकी बातोंमें सलाह भी करते थे। १०६८ ई० में जब कियेफके कारीगरों और किसानोंने विद्रोह किया, तो उन्होंने इकट्ठा होकर अपने बापकी “प्राव्दा” का संशोधन और परिवर्धन किया। यारोस्लाके पुत्रोंके समयमें भयंकर शत्रु थे तुर्कजातीय पोलोवत्सी—अपनी भाषामें इनका नाम दूसरा ही होगा, लेकिन रूसी उन्हें इसी नामसे पुकारते थे। यारोस्लावके शासनके खतम होनेके समय ११वीं शताब्दीके मध्यमें ही पूरबसे आकर पोलोवत्सियोंने आक्रमण करके कालासागरके उत्तरवाली मैदानी भूमिपर अधिकार कर लिया और वहाँ रहने पेचेनेगोंको पश्चिममें दन्यूबकी ओर भगा दिया। पोलोवत्सी घुमन्तू पशुपाल थे। उनके बहुतसे छोटे-छोटे कबीले थे, जिनके अपने-अपने खान (राजा) हुआ करते थे। पशुओंपर निर्भर होनेके कारण वह एक जगहसे दूसरी जगह घूमा करते और समय-समयपर रूसोंकी भूमिपर चढ़ाई कर उनके पशुओं और पुरुष-स्त्रियोंको पकड़कर लौट जाते। उनका आक्रमण बड़ा ही भयंकर और अचानक होता। ग्रीक लेखक उनके बारेमें कहते हैं—“पोलोवत्सी पलक मारते-मारते प्रकट होकर लुप्त हो जाते हैं। आक्रमण खतम होते ही लूटके मालसे लदे अपने घोड़ोंको कोड़ोंसे मारते वह आँधीकी तरह निकल जाते हैं, मानो वह उड़ती हुई चिड़ियाको पकड़ना चाहते हैं। तुम्हारे आँख उठाकर देखनेसे पहले ही वह निकल चुके रहते हैं।” १०६८ ई० में इज्यास्लाव अपने दोनों भाइयों स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदके साथ पोलोवत्सियोंको दबानेके लिये गया, लेकिन बुरी तरहसे हारकर उन्हें युद्ध-क्षेत्रसे भागना पड़ा। इज्यास्लाव कियेफ पहुँचा। पोलोवत्सियोंके आक्रमणों और लूटमारसे संत्रस्त किसानोंने इकट्ठे हो इज्यास्लावसे माँग की, कि हमें हथियार दो और साथ चलकर शत्रुओंसे लड़ो। इज्यास्लावको भय लगने लगा, कि कहीं वह हथियार मेरे ही विरुद्ध न उठाये जायँ। उसके इन्कार करनेपर लोगोंने राजुलके महलको लूट और बरबाद कर, उसकी जगह उसकेद्वारा जेलखानेमें बंद कोलोत्सके राजुल व्सेस्लावको मुक्त कर कियेफका राजुल घोषित किया। इज्यास्लाव भागकर पोलंद पहुँचा, जहाँसे पोल राजा बोलेस्लाउस्की सहायता ले कियेफ लौटा। व्सेस्लाव विश्वासघात करके

चुपचाप रातको पोलोत्स्क भाग गया। इज्यास्लावने लोगोमे भारी खूनी बदला लिया। पोल सैनिक कियेफ राज्यके नगरोमें जगह्-जगह् छावनी डालकर रहने लगे। उन्होंने अपने अत्याचारोंसे इतना तग किया, कि लोगोने जानपर खेलकर उनकी हत्या कर डाली।

पोलोवत्सी जैसे जबदस्त शत्रु सिरपर थे, तो भी यारोस्लावके बेटोकी एकता देरतक नही रह सकी। विदेशियोंसे मदद लेकर इज्यास्लावने फिरसे सिंहासनपर अधिकारकर जनताके ऊपर जो अत्याचार किये, उनसे लोगोमें उसके प्रति भारी घृणा पैदा हो गई। इससे फायदा उठाकर १०७३ ई० म स्व्यातोस्लाव और व्सेवोलदने आक्रमण करके इज्यास्लावको कियेफसे भगा दिया। अब स्व्यातोस्लाव कियेफकी गद्दीपर बैठा।

स्व्यातोस्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०७३--१११३ ई०)

स्व्यातोस्लाव थोडे ही दिनोतक भाईको सिंहासनसे वंचित रख सका। इज्यास्लाव भागकर जर्मन-सम्राट और रोमके पोपके पास मदद मागने गया, और अतमें पोलोकी मददसे उसने फिर अपने सिंहासनको प्राप्त किया, लेकिन वह थोडे ही समय बाद अपने भतीजोंसे लडते हुये मारा गया।

यारोस्लावके पौत्रोंमें भी बराबर संघर्ष जारी रहा—कभी कोई किसीको भगाता और कभी कोई फिरसे अपने राज्यको प्राप्त करता। आपसकी लडाई और पोलोवत्सियोके आक्रमणोसे देशकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। इसीलिये १०९७ ई० में कुछ प्रभावशाली राजुलोंने ल्यूबेकमें जमा होकर सोचा—"हम क्यो रूस-भूमिको नष्ट कर रहे हैं?" उन्होने कहा—"हम आपसमें एक दूसरेके साथ विश्वासघात करनेका उपाय सोच रहे हैं। पोलोवत्सी हमारे देशका तहस-नहस करते इस बातसे प्रसन्न है, कि हम आपसमे लड रहे है। आओ, आजसे हम मेलसे रहें।" उन्होंने अतमें यह निश्चय किया, कि हरएक राजुल अपने पैतृक राज्यको अपने पास रक्खे। अब कियेफ इज्यास्लावके पुत्र स्व्यातो-पोल्कके हाथमें रहा।

१० स्व्यातोपोल्क II, इज्यास्लाव-पुत्र

जब एक दूसरेके हित परस्परविरोधी हो, तो इस तरहके भावुकतापूर्ण आदर्शवादी फैसले देर तक कैसे माने जा सकते थे? हमने भिन्न-भिन्न देशोमे ऐसे अवसरोपर राजुलो और राजाओकी परिषदें होती, और उन्हे अच्छे निर्णयो पर पहुचते देखा है। पर आर्थिक स्वार्थोंकी चट्टानोके ऊपर उनके चकनाचूर होते भी देर नहीं लगती। स्व्यातोपोल्कको कियेफका अधिकार मिला और उसके चचेरे भाई व्लादिमिरको उसके पिता व्सेवोलदका पेरेयास्लाव राज्य मिला।

११ व्लादिमिर मनोमाख, व्सेवोलद-पुत्र (१११३-२५ ई०)

व्लादिमिर विजन्तीन-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख का धेवता था। इस सम्बन्धका उसे अभिमान भी था, इसीलिये वह व्लादिमिर मनोमाख (एक-राजा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। परिषद्के उठते देर नही हुई, कि फिर राजुलोंमें झगडा शुरू हो गया। स्व्यातोपोल्कने अपने एक राजुल भाई वासिल्कोको धोखेसे पकडकर उसके प्रतिद्वद्वी दाविद ईगर-पुत्रके हाथमें दे दिया, जिसने उसे अधा करके जेलमें डाल वासिल्कोके नगरोपर अधिकार कर लिया। इसपर व्लादिमिर मनोमाखने दूसरे राजुलोका नेतृत्व करके वासिल्कोके छुडानेके लिये आक्रमण कर उसे मुक्त कर दिया। ११०० ई० में राजुलाकी दूसरी परिषद् हुई, जिसमें उन्होने दाविदको व्लादिमिरके सिंहासनसे वंचित कर दिया। आपसी संघर्षके समय पोलोवत्सियोकी खूब बन आई, और वह रूसकी भूमिमें बहुत भीतरतक लूट-मार करने लगे। परिषद्में मनोमाखने मिलकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान करनेका प्रस्ताव किया, जिस मानकर सभी रूसी राजुलोंने व्लादिमिर मनोमाखके नेतृत्वमें पोलोवत्सीके ऊपर चढाई की। सामूहिक शक्तिके सामने पोलोवत्सी बुरी तरहसे हारे, और विजेता रूस ढोरो, घोडो, ऊटो, लूटके माल तथा बन्दियोंके साथ लौटे। ११११ ई०में उन्होने फिर एक अभियान किया, जिसमें वह पहलेसे भी अधिक सफल रहे।

स्व्यातोस्लाव १११३ ई० में मरा, उसके बाद ही कियेफमें विद्रोह उठ खड़ा हुआ, जो नगरसे देहातमें फैलने लगा। साधारण जनताके इस विद्रोहका कारण बोयरों और सूदखोरोंका अत्याचार था। विद्रोहियोंने शहरमें उनके घरोंको लूटकर नष्ट-भ्रष्ट किया। इसके कारण बोयर, महन्त और छोटे-मोटे सामन्त डरने लगे। कियेफके धनियोंने व्लादिमिर मनोमाखके पास संदेश भेजा—"आओ राजुल, कियेफमें। अगर तुम नहीं आओगे, तो यह समझ रक्खो, कि और भी बहुत बुरी बात होगी—साधारण लोग बोयरों और मठोंको लूट लेंगे।"

व्लादिमिरने अपने अनुचरोंसहित आकर विद्रोहको दबा दिया, लेकिन केवल बलपूर्वक दबानेसे काम नहीं चल सकता था, इसलिये उसने जनसाधारणके ऊपर होने अत्याचारोंको भी कम किया। कियफ ले लेनेके बाद व्लादिमिरने देशको और अधिक छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना चाहा, और दूसरे राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। जो नहीं मानते, थे, उन्हें उनके नगरोंसे वंचित करनेकी उसमें क्षमता भी थी, इसलिये सभी राजुलोंने उसे अपने ऊपर माना। व्लादिमिरने एक बार फिर अपने पुरखोंके वैभवको स्थापित कर दिया। युरोपके दरबारोंमें भी व्लादिमिरकी बड़ी धाक थी। ग्रीक-सम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख उसका नाना ही था। उसकी एक पोती एक ग्रीक राजकुमारसे व्याही थी। व्लादिमिरकी बहिन जर्मन सम्राटसे व्याही थी, और व्लादिमिर स्वयं इंगलिश राजाका दामाद था। उस समय बिजन्तीन-राज्यमें जो गृह-कलह चल रहा था, उसमें भी उसने दखल दिया। व्लादिमिरकी सेना दन्यूबके किनारे तक पहुँची, और वहाँ अपने दावेको प्राचीन रूस भूमि (इस्माईल) पर स्थापित किया।

व्लादिमिर बड़ा ही निर्भीक और बहादुर पुरुष था। उसने अपने पुत्रोंको फटकारते हुए एक बार लिखा था—"अपनी जान बचानेके लिये शत्रुके सामनेसे मैं कभी नहीं भागा और खतरेका सदा निर्भयतापूर्वक सामना करता था। बच्चो, न तुम सेनासे डरो और न पशुसे। तुम्हारा काम पुरुषोचित होना चाहिये। मैंने रात या दिन, सर्दी या गर्मी कभी अपनेको आराम लेने नहीं दिया।" वह शिकारका बड़ा शौकीन था, जिसमें कई मर्तबे उसने अपनेको खतरेमें डाला। दो मर्तबे जंगली बैलने उसे अपनी सींगपर उठा लिया, एक बार हरिनने सींगसे घायल किया, एक बार एक जंगली सूअरने उसकी बगलसे लटकती तलवारको तोड़ दिया, एक भालूने उसके कपड़ोंको फाड़ डाला और एक भयंकर जानवरने एक बार हमला करके उसे और उसके घोड़ेको गिरा दिया।

व्लादिमिर केवल एक निर्भीक योद्धा ही नहीं बल्कि शिक्षित पुरुष भी था। राजपरिवार-में शिक्षा और संस्कृतिका अधिक प्रसार होनेसे उसे भी शिक्षित होना ही था। उसका पिता व्सेवोलद एक शिक्षित व्यक्ति था, जो पाँच विदेशी भाषाओंको जानता था। स्वयं सुशिक्षित व्लादिमिरने विद्याके महत्त्वको दिखलाते हुए एक बार अपने पुत्रोंको लिखा था—"जो तुम जानते हो, उसे न भूलो, और जो नहीं जानते उसे पढ़ो।" वह बड़ा स्वाध्यायप्रेमी था। अपनी सैनिक यात्राओंमें भी वह सदा अपने पास पुस्तकें रखता था। उसने "बच्चोंकी शिक्षा" के नामसे एक दिलचस्प पुस्तक लिखी थी।

व्लादिमिर कियेफ-रूसके शासनकी अन्तिम चकाचौंध करनेवाली ज्योति था। देशमें जो बिखराव प्रारम्भ हो गया था, उसे व्लादिमिर थोड़े ही समयतक रोक सका। उसके मरते ही फिर रूस-भूमि अनेक छोटी-छोटी रियासतोंमें बँट गई, जगह-जगह स्वतंत्र राजुल शासन करने लगे। इनमेंसे कुछ महत्त्वपूर्ण रियासतें थीं—कियेफ, चेरनीगोफ, गालिच, स्मोलेन्स्क, पोलोत्स्क, तुरोफ-पिन्स्क, रोस्तोफ-सुज्दल, र्याजन्, नवोगोरद और व्लादिमिर-वोल्हुन्स्क। ये सभी राजुल स्व्यातोस्लाव-पुत्र व्लादिमिरके वंशज थे। कियेफ अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता था, इसलिये वह राजुलोंकी छीना-झपटीका बराबर अखाड़ा बना रहा। सैनिक जीवनसे अनभ्यस्त विलासी राजुल अब कियेफका कोई मान नहीं रखते थे। जहाँ व्लादिमिर मनोमाख अपने घोड़े, बाज और रसोईका भी काम

अपने नौकरोंपर न छोड़ अपने हाथो करनेके लिये तैयार रहता, वहा इन राजुलोंका जीवन आरामपसदीका था। इन्ही बातोके कारण राजुलोकी शक्ति भी कम हो गई, और धनी बायर अब राजुलोको अपनी बात माननेके लिये मजबूर कर सकते थे, इसीलिये हर बातम वह उनकी सलाह लेते थे। राजुल अगर कोई बात अपने योद्धाओंकी सम्मति बिना करते, तो वह जवाब देते—"राजुल, तूने हमारी रायके बिना यह निश्चय किया, इसलिये हम तेरे साथ नही जायेंगे।" इस समय पुराने समयकी प्रभावशालिनी सस्था 'वेचे' (पचायत) का भी महत्त्व बढ गया था—वेचे नागरिकोकी पचायत थी, जिसपर बायरो और धनी नागरिकोका भारी प्रभाव था। जब किसी बातका निर्णय करना होता, तो घटा बजाकर या चिल्लाकर नागरिकोको वेचे (सभा) के लिये जमा किया जाता। अगर वेचे प्रस्तावको स्वीकार करती, तो लोग चिल्लाकर कहते—"हम सब चलेंगे और हमारे बच्चे भी।" लेकिन कभी-कभी नगरके लोग राजुलकी लडाईमें शामिल नही होना चाहते, तब कहते—"राजुल, मेल करो, नही तो अपनी विपता आप सभालो।" इस प्रकार १२ वीं शताब्दीमें कोई राजुल वेचेकी रायके बिना किसी शत्रुके साथ युद्धसे अपनी प्रतिरक्षा करनेकी हिम्मत नही रखता था। राजुलके सिंहासनपर बैठनेके समय वेचे पहिले उससे अपनी शर्तें मनवाती। ऐसे भी अवसर आये, जब कि नापसन्द होनेपर वेचेने राजुलको निकाल बाहर किया और किसी दूसरे राजकुमारको यह कहकर निमन्त्रित किया—"आ राजुल, हम तुझे चाहते हैं।"

उस समय एक तरफ वेचेका अधिकार बढनेसे बायरो और धनिक नागरिकोंके हाथोमें अधिक शक्ति आ गई थी, तो दूसरी तरफ बाहरी शत्रुओसे अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिये रूसमें कोई मजबूत सगठित शक्ति नही रह गई थी। इसी समयकी स्थितिमें एक अज्ञात कवि ने "ईगर-सेना-गाथा" लिखी थी।

ईगर सेना-गाथा—कालासागरके उत्तर एक मगोलायित घुमतू कबीला पोलोवत्सी ९वी-१०वी शताब्दी में रहता था। कियेफ-रूसोके साथ इसका बहुत दिनोतक सघर्ष रहा। रूसी भाषाका आदिकाव्य "ईगर-सेना-गाथा" इन्ही सघर्षोके सबधमें लिखा गया है। पोलोवत्सी इतने प्रबल थे, कि रूस उनसे अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ थे, जिसका एक कारण यह भी था कि, रूस स्वय बहुतसे छोटे-छोटे टुकडोमें बटे थे, जिनमें आपसमें बराबर लडाई होती रहती थी। पोलोवत्सी जब हमला करने आते, तो काफी प्रतिरोध नही कर सकते थे। इन युद्धोका सबसे ज्यादा सत्यानाशी प्रभाव गावोके किसानो-पर पडता था। "सभी नगर और गाव निर्जन हो गये थे। हम उन खेतोपरसे गुजरे, जिनमें कभी घोडो और ढोरोंके झुड तथा भेडोके गल्ले चरा करते थे। लेकिन, वहा सभी चीजें वीरान पडी थी। अनाजके खेतोमें जगल जम गया था, जिसमें वन्य पशु रहा करते थे।" पुराने इतिहास-लेखकका कथन पोलोवत्सी-आक्रमणोके असरको बतलाता है। पोलोवत्सी भारी सख्यामें रूसोको बदी बनाकर अपने साथ ले जाते थे। "आफतके मारे, भूख-प्याससे काले पडे वे अभागे अपरिचित देशकी ओर वस्त्रहीन नगे पैर कदम बढा रहे थे। उनके पैर काटोंसे छिल गये थे। आखोमें आसू भरकर वह एक दूसरेसे कहते थे—"मैं अमुक और अमुक नगरका हू।" दूसरा जवाब देता—"मैं अमुक और अमुक दीहातका हू।" रूसी भाषाके इस कलापूर्ण अमर लघु-काव्यमें राजकुमार ईगरका पोलोवत्सी घुमतुओंके साथके सघर्षका वर्णन है। १२ वी शताब्दीके अतमें किसी अज्ञात लेखकने इसे लिखा था। सेवेर्स्क राजुलोने तग आकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान किया, जिसका नेता राजुल ईगर स्व्यातोस्लाव-पुत्र था। जब रूस-राजुलोसे उसने अपने साथ आ मिलनेके लिये कहा, तो सेवेर्स्क राजकुमारोने इन्कार कर दिया। पीछे उन्होंने अपना स्वतत्र अभियान किया, जिसमें वह बुरी तरहसे हारे, ईगर बदी हुआ। कविने रूस-भूमिके महान् वीरके तौरपर ईगरका चित्रण किया है—"सैनिक उमगोंसे भरे उसने अपने सैनिकोका नेतृत्व करते हुये रूस-भूमिकी रक्षाके लिये पोलोवत्सियोंके ऊपर अभियान किया।" ईगरने अपने सैनिकोसे कहा—"भाइयो और योद्धाओ! बदी बननेसे मर जाना अच्छा है। मैं चाहता हू अपने भालेको पोलोवत्सी मैदानके छोरसे तोड डालू। रूसजन! मैं चाहता हू, तुम्हारे साथ अपने सिरको गिरा

आनाकानी नही करता था, शायद इसीलिये उसका नाम "दोल्गोरुकी"—दीर्घबाहू पड़ा। जहा पीछे मास्को नगर बसा, वही बायर कुचकाका गाव था। यूरीने उस गावको ले मास्को नदीके किनारे वहीं अपने लिये एक महल बनाया, जहापर ११४७ ई०मे उसने अपने मित्र चेर्नीगोफके राजुलका स्वागत किया था। यह गाव सुज्दल और चेर्नीगोफ दोनो रियासतोकी सीमापर था। यरीने पहले मास्कोके चारोतरफ एक लकडीकी दीवार बनवाई, जिसे ११५६ ई० में दुर्गके रूपमें परिणत कर दिया। यूरी अपने समयका सबसे अधिक शक्तिशाली रूसी राजुल था। उसने वोल्गा-तटवाले बुल्गारोको कई बार लडाईमे हराया और पुराने नगर नवोगोरदको अपने राज्यमें मिला लिया। कियेफपर भी अधिकार करके कियेफ-राजुल बनकर वह ११५७ ई० में मरा।

१३ अन्द्रेइ बगोल्युबोव्स्की, यूरी-पुत्र (११५७–७४ ई०)

यूरीके पुत्र अन्द्रेइके शासनकालमे रोस्तोफ-सुज्दलकी शक्ति और बढी। उसने पडोसके कितने ही राजुलोको अपना सामत बनाया। ११६९ ई० में उसने अपने सामन्तोकी सेनाके साथ कियेफ-पर आक्रमण किया और तीन दिनोतक उस प्राचीन नगरीको लूटा। अगले साल अन्द्रेइने नवोगोरदके ऊपर अपनी सेना भेजी, लेकिन नवोग्रादियोने उसे बहुत हानि उठाकर खाली हाथ लौटनेके लिये मजबूर किया। नवोगोरद अन्नके लिये सुज्दलपर निर्भर था। अन्द्रेइने वहा अन्नका जाना रोक दिया, जिसके कारण नवोगोरद आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर हुआ। ११६९ ई० की लूट और ध्वसलीलाके बाद कियेफ शताब्दियोतक सभल नही सका, लेकिन सुज्दल-राज्यका नगर व्लादिमिर अन्द्रेइकी राजधानी बनकर खूब फलने-फूलने लगा। अन्द्रेइने अपनी नई राजधानीका निर्माण पश्चिमी युरोपके कलाकारो और वास्तु शास्त्रियोके परामर्शानुसार बडे भव्यरूपमें किया। इसी समय व्लादिमिरमें प्रसिद्ध उपेन्स्की गिर्जा बनाया गया, जिसके चित्रोमें पाश्चात्य कलाका प्रभाव दिखाई पडता है। व्लादिमिर नगरके पास बोगोल्युबोवो (भगवत्-प्रिय) उसकी दुर्गबद्ध जमींदारी थी, जहापर अन्द्रेइ अक्सर रहा करता था, इसीलिये उसको "बोगोल्युबोव्स्की" कहा जाने लगा। वह बायरोकी शक्तिको बढते नही देखना चाहता था, इसीलिये उसने कुचका जैसे कितने ही बायरोको मार भगाया और अपने दरबारियोमें साधारण जनोको रक्खा। लोग कहते थे—"राजुलकी जमीदारीमे घासके चप्पलमें घूमना बायरकी जमीदारीमें सुन्दर जूता पहनके घूमनेसे अच्छा है।" अन्द्रेइने जनसाधारणसे आये अपने दरबारियो और नगर-निवासियोकी सहायताके आधारपर रूसी रियासतोको सगठित करनेकी कोशिश की, लेकिन अभी उनके आर्थिक सबध इतने दृढ नही थे, कि यह सगठन मजबूत होता। इसीलिये बायरोका उच्छेद करना उसके लिये समव नही हुआ। तो भी बायरोको वह बहुत असतुष्ट कर चुका था। उन्होंने षड्यत्र करके ११७४ ई० में बोगोल्युबोवोके प्रासादमें चुपकेसे घुसकर अन्द्रेइको मार डाला। इसके बाद सारी लूट-पाट मची। बायर बहुत नाराज थे। वह केवल अन्द्रेइकी हत्यासे ही सतुष्ट नही हुये। उन्होने उसके भाइयोको भी वचित करके उसके भतीजोको शासन करनेके लिये निमत्रित किया। लेकिन व्लादिमिरके नागरिको और अन्द्रेइके छोटे दर्जेके अनुचरोने बायरोकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। बायरोने धमकाया—"हम व्लादिमिरको जलाकर खाक कर देंगे या वहा अपने पसद्निक (नगरपाल) अनुशासन करने के लिये भेजेंगे।" तो भी वह अपने मनोरथमें सफल नही हुये। नागरिको और साधारण जनताकी सहायतासे अद्रेइका भाई व्सेवोलद यूरी-पुत्रने बायरोको हराकर उन्हें अपनेको राजुल स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।

१४ व्सेवोलद, यूरी-पुत्र (११७६–१२१२ ई०)

व्लादिमिर (क्ल्याज्मातटी) राजधानी बननेके बाद अब रोस्तोफ-सुज्दल राज्यका नाम व्लादिमिर राज्य हो गया। व्सेवोलदने "व्लादिमिर-महाराजुल"की उपाधि धारण की। उसने नवोग्रादवालोमे अपने पुत्रो और भतीजोको शासकके तौरपर स्वीकार करवाया। स्मोलेन्स्कके राजुलोंने भी उसकी अधीनता स्वीकार की। र्याजनके न माननेपर राजुलको जेलमें डाल अपने पुत्रको वहा

द, या अपने शिरस्त्राणसे दोनके जलको पीऊँ ।" "काफी लोहित मदिरा वहां नहीं थी, रूस वीर अपने युद्ध-भोजको खतम कर रहे थे। उन्होंने अपने बंधुओंका पान करनेका अवसर दिया, और रूस-भूमिके लिये स्वयं अपने जीवनका उत्सर्ग किया।" युद्धक्षेत्रमें पड़े हुये वीरोंके शवोंको देखकर कौवे किस तरह अपना भोज कर रहे थे, इसे कविने कितने शक्तिशाली शब्दोंमें चित्रित किया है —

"भाई भाईसे बोला—'यह मेरा है,
और यह भी मेरा है, राजुल छोटीको बड़ी चीज कहने लगे, विश्वासघात के लिये।
और म्लेच्छ पोलोवत्सी विजयी बनकर रूस भूमिमें आये।"

रूस-राजुलोंको एक होनेके लिये कवि कहता है —

"प्रभुओ, अपने पैरोंको सुनहली रिकाबोंमें रक्खो,
आजके अपने ऊपर होते अत्याचार तथा रूस भूमिके लिये,
स्व्यातोस्लाव-पुत्र वीर ईगरके घावोंके लिये।'

रूसी भाषाके इस आदिकाव्य (वीरगाथा)से रूसी साहित्यका आरंभ होता है और समस्त रूसी जातिको विदेशियोंके विरुद्ध एक होनेका संदेश देता है। अगली शताब्दियोंने देखा, कि वह संदेश व्यर्थ नहीं गया। ईगरके खूनका रूस बदला चाहे पोलोवत्सीसे न ले पाये हों, लेकिन उन्होंने रूसके शत्रुओंसे सदा बदला लिया। इसी काव्यके वीर नायकके नामपर रूसमें पुरुषोंका सबसे अधिक प्रचलित नाम ईगर पाया जाता है। द्वितीय महायुद्धमें स्तालिनग्रादसे फासिस्तोंको खदेड़ते हुये हजारों रूसी सैनिकोंने दनियेपरके तटपर पहुंचकर अपने शिरस्त्राणोंसे उस पवित्र जलको पीकर ईगरकी अपूर्ण इच्छाको पूरा किया।

ख रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल

१२ वीं शताब्दीमें जब दनियेपर-उपत्यकावाली रूस-भूमि पालोवत्सीके आक्रमणोंका शिकार हो अपने ऐतिहासिक महत्त्वको खो बैठी थी, इसी समय उत्तर पूर्वी रूस-भूमिमें वोल्गा और ओका नदियोंके बीच रोस्तोफ-सुज्दलका एक नया राज्य स्थापित हुआ, जिसने रूसके इतिहासमें महत्त्वपूर्ण काम किया। यह भूमि कियेफ जैसी उर्वर नहीं थी। जंगली भूमि थी, जिसमें जंगली जानवर और मधुमक्खियां बहुत थीं, नदियोंमें मछलियोंकी बहुतायत थी, लेकिन जहांतक खेतीलायक भूमिका संबंध है, ऐसी भूमि क्ल्याज्मा नदीके तटपर ही थी। ओका और उसकी शाखा मस्क्वा नदीके किनारे रहनेवाले स्लाव जातिका नाम व्यातिची था। समय-समयपर आसपासके स्लाव भी यहां आकर बसते जा रहे थे। रोस्तोफ यहांका प्रधान नगर था, जिसका उल्लेख पहले-पहल १०वीं शताब्दीमें मिलता है। इस भूमिकी दूसरी प्राचीन नगरी सुज्दल थी। यारोस्लावके शासनकालमें उसने अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगरको ११ वीं शताब्दीमें बसाया। व्लादिमिर नगरको संभवतः व्लादिमिर मनोमाखने १२ वीं शताब्दीमें कायम किया। इस प्रकार व्यातिचियोंकी इस भूमिमें रोस्तोफ, सुज्दल, यारोस्लाव्ल और व्लादिमिर—चार नगर थे, पांचवां नगर मस्क्वा (मास्को) आगे स्थापित होकर जगद्विख्यात बननेवाला था।

व्यातिची स्लावोंके पड़ोसमें मेरिया, वेसी और मोर्दवी रूसी-भिन्न जन-जातियां रहती थीं, जिनका मुख्य काम था शिकार, मधु-संग्रह तथा थोड़ी-सी खेती। इनके अलग-अलग कबीलोंपर अपने-अपने ठाकुर शासन करते थे। रूसियोंके ईसाई हो जानेके बाद भी यह लोग बहुत समयतक अपने जन-जातीय धर्मको मानते थे। उस समय ओका और वोल्गाके तटोंपर यह काफी संख्या में बसते थे।

१२ वीं शताब्दीमें रोस्तोफ-सुज्दलके इलाके तथा दनियेपर-उपत्यकामें भी रूसी और अ-रूसी लोगोंके खेतों और भूमियोंको बायरों और महंतोंने अपने हाथमें कर लिया था और जन-साधारण बंधुवासे रह गये थे—ओका और वोल्गाके बीचके लोगोंको पादरियोंने जबर्दस्ती ईसाई बनाया था।

१२ यूरी I दीर्घबाहु, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र (११५७ ई०)

१२ वीं सदीके पूर्वार्धमें रोस्तोफ-सुज्दलमें एक स्वतंत्र राजुलका शासन कायम हुआ था, जिसका प्रथम गद्दीधर व्लादिमिर मनोमाखका पुत्र यूरी था। वह धनी बायरोंकी जमीनको जबर्दस्ती छीन लेनेमें

आनाकानी नहीं करता था, शायद इसीलिये उसका नाम "दोल्गोरुकी"—दीर्घबाहु पडा। जहा पीछे मास्को नगर बसा, वहीं बायर कुचकाका गाव था। यूरीने उस गावको ले मास्को नदीके किनारे वही अपने लिये एक महल बनाया, जहापर ११४७ ई०मे उसने अपने मित्र चेर्नीगोफके राजुलका स्वागत किया था। यह गाव सुज्दल और चेर्नीगोफ दोनो रियासतोकी सीमापर था। यूरीने पहले मास्कोके चारोतरफ एक लकडीकी दीवार बनवाई, जिसे ११५६ ई० में दुर्गके रूपमें परिणत कर दिया। यूरी अपने समयका सबसे अधिक शक्तिशाली रूसी राजुल था। उसने वोल्गा-तटवाले बुल्गारोको कई बार लडाईमें हराया और पुराने नगर नवोगोरदको अपने राज्यमें मिला लिया। कियेफपर भी अधिकार करके कियेफ-राजुल बनकर वह ११५७ ई० मे मरा।

१३ अन्द्रेइ बगोल्युवोव्स्की, यूरी-पुत्र (११५७-७४ ई०)

यूरीके पुत्र अन्द्रेइके शासनकालमें रोस्तोफ-सुज्दलकी शक्ति और बढी। उसने पडोमके कितने ही राजुलोंको अपना सामत बनाया। ११६९ ई० में उसने अपने सामन्तोकी सेनाके साथ कियेफ-पर आक्रमण किया और तीन दिनोतक उस प्राचीन नगरीको लूटा। अगले साल अन्द्रेइने नवोगोरदके ऊपर अपनी सेना भेजी, लेकिन नवोग्रादियोने उसे बहुत हानि उठाकर खाली हाथ लौटनेके लिये मजबूर किया। नवोगोरद अन्नके लिये सुज्दलपर निर्भर था। अन्द्रेइने वहा अन्नका जाना रोक दिया, जिसके कारण नवोगोरद आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर हुआ। ११६९ ई० की लूट और ध्वंसलीलाके बाद कियेफ शताब्दियोतक सभल नही सका, लेकिन सुज्दल-राज्यका नगर व्लादिमिर अन्द्रेइकी राजधानी बनकर खूब फलने-फूलने लगा। अन्द्रेइने अपनी नई राजधानीका निर्माण पश्चिमी युरोपके कलाकारो और वास्तु-शास्त्रियोके परामर्शानुसार बडे भव्यरूपमें किया। इसी समय व्लादिमिरमे प्रसिद्ध उपेन्स्की गिर्जा बनाया गया, जिसके चित्रोमें पाश्चात्य कलाका प्रभाव दिखाई पडता है। व्लादिमिर नगरके पास बोगोल्युवोवो (भगवत्-प्रिय) उसकी दुर्गवद्ध जमीदारी थी, जहापर अन्द्रेइ अक्सर रहा करता था, इसीलिये उसको "बोगोल्युवोव्स्की" कहा जाने लगा। वह बायरोकी शक्तिको बढते नही देखना चाहता था, इसीलिये उसने कुचका जैसे कितने ही बायरोको मार भगाया और अपने दरबारियोमें साधारण जनोंको रक्खा। लोग कहते थे—"राजुलकी जमीदारीमे घासके चप्पलमे घूमना बायरकी जमीदारीमें सुन्दर जूता पहनके घूमनेसे अच्छा है।" अन्द्रेइने जनसाधारणसे आये अपने दरबारियो और नगर-निवासियोंकी सहायताके आधारपर रूसी रियासतोको सगठित करनेकी कोशिश की, लेकिन अभी उनके आर्थिक सबध इतने दृढ नहीं थे, कि यह सगठन मजबूत होता। इसीलिये बायरोका उच्छेद करना उसके लिये सभव नही हुआ। तो भी बायरोको वह बहुत असतुष्ट कर चुका था। उन्होने षड्यत्र करके ११७४ ई० में बोगोल्युबोवोके प्रासादमें चुपकेसे घुसकर अन्द्रेइको मार डाला। इसके बाद भारी लूट-मार मची। बायर बहुत नाराज थे। वह केवल अन्द्रेइकी हत्यासे ही सतुष्ट नही हुये। उन्होंने उसके भाइयोको भी वचित करके उसके भतीजोंको शासन करनेके लिये निमत्रित किया। लेकिन व्लादिमिरके नागरिको और अन्द्रेइके छोटे दर्जेके अनुचरोने बायरोकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। बायराने धमकाया—"हम व्लादिमिरको जलाकर खाक कर देंगे या वहा अपने पसद्निक (नगरपाल) अनुशासन करने के लिये भेजेंगे।" तो भी वह अपने मनोरथमें सफल नही हुये। नागरिको और साधारण जनताकी सहायतासे अद्रेइका भाई व्सेवोलद यूरी-पुत्रने बायरोको हराकर उन्हे अपनेको राजुल स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।

१४ व्सेवोलद, यूरी-पुत्र (११७६-१२१२ ई०)

व्लादिमिर (क्ल्याजमातटी) राजधानी बननेके बाद अब रोस्तोफ-सुज्दल राज्यका नाम व्लादिमिर राज्य हो गया। व्सेवोलदने "व्लादिमिर-महाराजुल"की उपाधि धारण की। उसने नवोग्रादवालोंसे अपने पुत्रों और भतीजोंको शासकके तौरपर स्वीकार करवाया। स्मोलेन्सकके राजुलोने भी उसकी अधीनता स्वीकार की। र्‍याजनके न माननेपर राजुलको जेलमें डाल अपने पुत्रको वहा

कर जाकर बैठा लिया। जब लोगोंने इसका विरोध करना चाहा, तो उसने र्याजनका बहुत नाश नष्ट किया। उसकी इतनी तत्परता देखकर भी "ईगर-सेना गाथा" के कविने व्सेवोलदके लिये कहा—

"महाराजुल व्सेवोलद अपनी नावाके पतवारोंसे,
तू वोल्गाके पानीको बिखरा नहीं सकता,
और न अपने रानियोंके शिरस्त्राणोंमें दोनको उलीच सकता।"

वोल्गाके बुल्गार अब भी शक्तिशाली थे, जिनसे व्सेवोलदने कई लडाइयां लड़ीं। पोलावत्सीके खिलाफ भी उनकी भूमिमें उसने एक बहुत बड़ा अभियान किया। व्सेवोलदने सुदूर गुरजी (जार्जिया) के राजाके साथ संबंध स्थापित किया और वहांके कारीगरोंको बुलवाकर राजधानीमें दृमित्रीफ गिर्जा बनवाया। व्सेवोलद पिताकी तरह ही बायरोंसे घृणा करता था। अपने बहुतसे पुत्रोंके कारण लोगोंने व्सेवोलदका नाम "बोल्शोये ग्नेज्दो" (भूरिश कुलाय) रख दिया था। व्सेवोलदके मरनेके बाद उसके हर एक पुत्रको अलग-अलग ठकुराइयां मिलीं, जिनकी संख्या पुत्रोंके समय पांच और पौत्रोंके समय बारह हो गई। इनमें परिवारके ज्येष्ठ व्यक्तिको व्लादिमिर नगरका राज्य तथा "व्लादिमिर-महाराजुल" की उपाधि मिलती।

१५ यूरी व्सेवोलद-पुत्र (१२१२–१२३८ ई०)

व्सेवोलदके मरनेके बाद व्लादिमिरके राजुलोंने ओका और मध्य-वोल्गाके बीचमें रहनेवाले रूसी-भिन्न जातियोंकी भूमिको हड़पना शुरू किया। केवल मोर्दवी कितने ही समयतक और अपनी स्वतंत्रता कायम रख सके। महाराजुल यूरीने १२२१ ई०में ओका और वोल्गा नदियोंके संगमपर निज्नीनवो-गोरद (निचला नवोगोरद, वर्त्तमान गोर्की) नगर और दुर्गकी स्थापना की। यहांसे रूसी राजुल मोर्दवियोंकी भूमिमें लूट मार करते थे। मोर्दवियोंने अपने राजा पुरगसके नेतृत्वमें जबर्दस्त प्रतिरोध किया और एक बार उन्होंने निज्नीनवोगोरदपर आक्रमण करके उसकी बाहरी बस्तियोंको जला दिया।

यूरीको प्रभुता दिखलानेका अब मौका नहीं रह गया था, क्योंकि गद्दीपर बैठनेके समय (१२१२ई०) जो मंगोल तूफान सुदूर चीनमें अपनी प्रलयलीला मचा रहा था, वह अब उसके घरमें पहुंच गया। यूरी अपनी सेनाके साथ वोल्गाके उत्तरमें सित नदीके करीब वोल्गाकी एक शाखाके किनारे एक बड़े मैदानमें पड़ा हुआ था। उसको खबर मिली, कि बुल्गार राजधानीको मंगोल नष्ट-भ्रष्ट कर चुके। मंगोलोंका मुकाबिला करनेके लिये रूसी राजुलोंका एक होना आवश्यक था, जिसके लिये वह तैयार नहीं थे। र्याजन मंगोलोंका पहला शिकार होना था, जिसके बाद यूरीकी बारी थी, लेकिन यूरीने र्या-जनको सहायता देनेसे इन्कार कर दिया। मंगोलोंने र्याजनको दखलकर उसको भूमिसात कर दिया। फिर व्लादिमिरपर आक्रमण करके उसे नष्टकर आसपासकी ठकुराइयोंके लोगोंको अपनी तलवारोंसे घासकी तरह काट डाला। एक महीनेके भीतर उन्होंने १४ नगरोंको दखल किया और जलाया, मास्को भी जिनमेंसे एक था। अब (१२३८ ई०) में बा-तूके मंगोल सित नदीके पासवाले मैदानमें अवस्थित यूरीकी सेनापर पड़े। यूरी लड़ाईमें काम आया। बा-तू नवोगोरदकी भूमिपर भी बढ़ना चाहता था, लेकिन रास्तेके जंगलों और दलदलोंने उसे आगे बढ़ने नहीं दिया। इसके बाद मंगोलोंने कियेफ और सुदूर पश्चिममें गालिच-वोलोहुन्स्कके राज्यको लेते पोलन्द तथा पूर्वी यरोपके और भी कितने ही राज्योंका ध्वंस किया। रूसियोंके ऊपर अब मंगोलोंका कठोर शासन स्थापित हो गया, लेकिन मंगोल जानते थे, कि सीधे शासन करनेसे किसी रूसी राजुलद्वारा शासन करना बेहतर है, इसलिये उन्होंने यूरीके भाई यारोस्लावको व्लादिमिरका महाराजुल मान लिया।

१६ यारोस्लाव व्सेवोलद-पुत्र (१२३८–४६ ई०)

महाराजुलको नियुक्त करनेपर ही संतोष न कर बा-तूने रूसके मुख्य-मुख्य नगरोंमें अपने नगरपाल

(बसकाकी) नियुक्त किये। मगोल कर उगाहनेमे कितनी निर्दयता करते थे, इसे एक जनगीत बतलाता है—

यदि किसी आदमीके पास पैसा नही,
तो उससे वह उसका बच्चा लेते।
यदि आदमीके बच्चे न होते,
तो उससे उसकी बीवी लेते,
यदि आदमीके गृहिणी न होती,
तो उससे वह उसके शरीरको ही लेते।

एक समकालीन लेखक मगोल अत्याचारके बारेमे लिखता है —"हमारे पुरखो और भाइयोके खूनसे भूमि पानीकी तरह भीग गई, हमारे बहुतसे भाई और बच्चे बदी बनाकर (तारतार) ले गये, हमारे गावोमें जगल लग गये, हमारी कीर्त्ति धूमिल हो गई, हमारा सौदय नष्ट हो गया, हमारा धन गैरोकी सपत्ति बना, हमारे श्रमका फल काफिरोके हाथमें चला गया, हमारा देश विदेशियोके हाथमें पड गया।" ऐसी स्थितिमें यदि रूसमें विद्या और सस्कृतिका ह्रास हुआ, तो कोई आश्चय नही। रूसी नगरोकी होली मचाते समय मगोलोंने प्राचीन रूसी साहित्य और कलाकी भी होली मचा दी।

लेकिन सब तरहसे रूसियोको निरीह और निर्बल बनाते हुये भी मगोलोनें उनके हाथमे एक बडा हथियार दे दिया था, वह था व्लामिदिरके महाराजुलोको दूसरे रूसी राजुलोके ऊपर मानना। यह काम उन्होंने किसी परमार्थ बुद्धिसे नही किया था, बल्कि इस प्रकार समयपर नियमपूवक करकी भारी राशिको प्राप्त करना उनके लिये बहुत आसान हो गया था। मगोल खान अपने इसी स्वार्थके कारण व्लादिमिरके शासकको "व्लादिमिर और सारे रूसका महाराजुल" स्वीकार करते हुये उसे यारलिक (अधिकार-पत्र) देते थे। कर उगाहनेके लिये जो एकता कायम हुई थी, वह मगोल-शक्तिके क्षीण होनेके समय एक सबल राजनीतिक शक्तिमे परिणत हो गई।

नवोगोरद—पूर्वी स्लाव अभी भी जनयुगीन समाजहीमें थे, जबकि कियेफ-रूसकी स्थापना हुई थी। वस्तुत भिन्न-भिन्न परिस्थितियोंके कारण पूर्वी स्लावोका सामाजिक विकास अपने पश्चिमी पडोसियोंके बराबर नही हो पाया था। इसमें अपने शक पूर्वजोके समयसे ही चली आती उनकी स्वच्छद लडाकू वृत्ति भी काम कर रही थी। वह पशुपाल-जीवनको पूरीतौरसे छोडनेके लिये तैयार नही थे। यद्यपि ईसवी-सन्‌के आरभ और बादकी चार शताब्दियोमें हूणोके पहुचनेसे पहिले ही निम्न द्नियेपर आदि प्रदेशोमें स्लावोने नागरिक-जीवन स्वीकार कर लिया था, और महाराजुल व्लादिमिरके ईसाई-धम स्वीकार करने से बहुत पहले ही ग्रीक सस्कृतिसे उनके पूवज अतोका घनिष्ठ सबध स्थापित हो गया था, लेकिन अभी अधिकाश रूस जनयुगके मनोभावोंको ही अपनाये हुये था। रूसी भाषाका हमारी सस्कृत और प्राकृत भाषाकी तरह सश्लेषणात्मक रह जाना—शब्द और धातुकी रूपावलियोका सस्कृत जैसे चलना—भी शायद उसी सामाजिक मद परिवतनके कारण हुआ। हमारे यहा ईसाकी ६ठी-७वीं शताब्दीमें भाषा जहा श्लिष्ट रूपको छोड, विश्लिष्ट बन चुकी थी, वहा रूसी भाषा आज भी बहुत-कुछ श्लिष्ट है। यह कोई आश्चयकी बात नहीं है, क्योकि रूसके सामाजिक सगठनमें जनयुगीन जनतान्त्रिकताके भाव बहुत पीछेतक काम करते रहे। कियेफ रूसकी शक्तिके निबल होनेपर छोटे-छोटे राजुलोंके साथ वेचेका प्रभाव भी इसी बातको बतलाता है। जहा दूसरे राज्योमें यह साधारण जनोकी जनतान्त्रिकता अपने राजुलोको अधिक स्वच्छदता न देनेका कारण बनी, वहा नवोगोरदके नागरिकोमें इसने आभिजात्यवग के गणराज्यका रूप लिया और समय-समयपर होनेवाला वहाका राजुल पूरी तौरसे गणसभा—वेचे—के हाथमें था। नवोगोरदकी परिस्थिति ही ऐसी थी, जिसने उसे एक गणतान्त्रिक नगरके रूपमें विकसित होने दिया। यह स्लावोंकी एक बहुत पुरानी नगरी वोल्गाके उद्‌गमके पास इल्मन सरोवरसे पूर्वीय वणिक्‌पथके ऊपर बसी हुई थी। वहा हाट और मेलेका मैदान था। इसी मैदानमें नगरकी वेचे बैठा करती थी। पासके मुहल्लेमें मुख्यत व्यापारी, शिल्पकार और मजदूर बसते थे। नगरके पूवकी ओर—सोफिइस्कया—में एक दुग था, जिसमें प्रसिद्ध सोफिया गिर्जा खडा था। यही नवोगोरदका बडा पादरी (बिशप) रहता था।

नवोगोरद नगरसे नवगोरद-राज्य आरंभ हो जाता था, जो ओनेगा और लदोगा सरोवर एवं फिनलन्दकी खाडीतक फैला हुआ था। नवोगोरदके बायरों और व्यापारियोंके जहाँ-तहाँ गाँव और खेतियाँ (कर्मान्त) थीं। उन्होंने पूरबमें उरालकी पहाड़ियों तककी आदिम जातियोंको अपने अधीन कर रक्खा था, जिनमें वह करके रूपमें बहुमूल्य समूरी छालें और चाँदी वसूल करते थे। व्यापार, जंगल और शिकारकी उपज नवोगोरदकी समृद्धिके कारण थे। अनाजके लिये उन्हें अपने पड़ोसी सुज्दलपर निर्भर रहना पड़ता था। नवोगोरदका संबंध बाल्तिक समुद्रके वणिक्पथसे था, जिसके जरिये वह युरोपके साथ व्यापार करते थे। जर्मन और स्वीड व्यापारी भी इस व्यापारमें उनके सहभागी थे। वर्षमें दो बार जर्मन "अतिथि" व्यापारके लिये नवोगोरद आया करते थे। गर्मियोंके "अतिथि" फिनलन्द खाड़ीसे नेवा नदी होकर नाव द्वारा आते, और जाड़ाके "अतिथि" बाल्तिक तट (लिवोनिया) से बर्फपर फिसलनेवाली बिना पहिये की गाड़ियों (स्लेज) द्वारा आते। उत्तरी युरोप और नवोगोरदमें व्यापार करनेवाली जर्मन नगरियों का १४ वीं सदीमें हंसे कहा जाता था। नवोगोरदके व्यापारी रूसकी चीजोंको इन हंसीय नगरियोंके माध्यमद्वारा जहाँ युरोपमें पहुँचाते, वहाँ स्वयं युरोपीय वस्तुओंको उनसे लेकर वह रूसके नगरोंमें फैलाते। शिकारपर जीवन बितानेवाली सुदूर उत्तरकी नेन्सी नामसे प्रसिद्ध जातियोंसे (जिन्हें नवोगोरदीय लोग समोयित कहते थे) कीमती समूर मिलते थे। समोयित अधिक उत्तरके तुंद्रा-प्रदेशमें रहते थे। उनसे दक्षिण तायगा भूमिमें कामी शिकारी रहते, उत्तरी उराल की ढलानों पर युग्रा कहे जानेवाले लोग रहते थे—जो कि आजकलकी मान्सी (वोगुल) और खान्ती (ओस्तियाक) जातियाँ हैं। इनकी भूमि (जिसे बुल्गार "अंधकारभूमि" कहते थे), अपने समूरी जानवरोंके लिये प्रसिद्ध थी। तुंद्रावाले लोगोंकी मुख्य जीविका थी बारहसिंगा पालना, जल-पक्षियों और ध्रुवकक्षीय लोमड़ियों का शिकार करना। इन पिछड़ी हुई जातियोंके निरंकुश राजा थे नवोगोरदीय बायर और व्यापारी। उनके अत्याचारोंसे कभी-कभी मजबूर होकर वह विद्रोह भी कर बैठती थी। ११८७ ई० में युग्रा लोगोंने नवोगोरदके कर उगाहनेवालेको मार डाला, जिसपर कई सालतक नवोगोरदसे उनपर सैनिक अभियान भेजे जाते रहे।

नवोगोरद नगरका सबसे प्रभुताशाली वर्ग था बायरोंका। सबसे अच्छी भूमि और विजित क्षेत्र इनके हाथमें थे, जिनमें वह अपने अर्धदासों और किसानोंकी मददसे अधिया (पोलोविना) पर खेती कराते थे। बायर अपने असामियोंको गाँव छोड़कर जाने नहीं देते थे। हस्तशिल्प भी यहाँपर बहुत उन्नत था, लेकिन शिल्पकार भी बायरों और व्यापारियोंके अधीन थे। गरीब मजूरोंका काम था माल ढोना और नावें खेना। इस प्रकार इस गणराज्यकी संपत्तिके मालिक थे बायर और व्यापारी। काले (चोर्निये) गरीब लोग उनके लिये अपना जीवन और श्रम भेंट करते थे। रूसी नगरोंकी तरह नवोगोरदमें भी एक राजुल रहता था, लेकिन यहाँकी वेचेकी शक्ति सबसे अधिक थी। १२ वीं शताब्दी के प्रथम पादमें बायरों और व्यापारियोंद्वारा नियंत्रित वेचेने इस बातका रवाज किया, कि वहाँ के सभी मुख्य-आफिसर नवोगोरदकी बायरोंमेंसे चुने जायें। व्लादिमिर मनोमाखके पौत्र व्सेवोलदके राजुल होनेके समय ११३६ ई० में वेचेने विद्रोह कर दिया, क्योंकि व्सेवोलद कुछ अधिक स्वतंत्रतासे काम लेना चाहता था। विद्रोहियोंने दो महीनेतक व्सेवोलद और उसके परिवारको बंदी रख फिर मुक्त कर दिया। तबसे वेचेकी शक्ति सर्वोपरि हो गई। यद्यपि नवोगोरद अपने यहाँ सदा एक राजुल रखता था, लेकिन जब कभी भी राजुल कुछ स्वतंत्रता दिखलाने लगता, तो उसे बोरिया-बिस्तर बाँधके निकल जाना पड़ता। वेचेके सन्निपातके लिये लोगोंको घंटे बजाकर सूचना दी जाती, सभी लोग मैदानमें इकट्ठे होते। कभी-कभी एक ही समय वेचेकी बैठक तोरगोवया और सोफिस्कया दोनों जगहोंपर होती, दोनोंके निर्णय कभी-कभी एक दूसरेसे भिन्न होते, ऐसी अवस्थामें दोनों वेचेका बोलखोफ पुलके आरपार झगड़ा होता। इस प्रकार जारके निरंकुश शासनके स्थापित होनेसे पहले ही नवोगोरदमें एक सबल प्रजातांत्रिक संस्थाका शासन था।

जर्मन व्यापारी बाल्तिकतटके रास्ते व्यापार करनेके लिये नवोगोरद आते थे। १२वीं शताब्दी-में उन्होंने पश्चिमी द्विना नदीके मुहानेपर अपनी एक व्यापारिक बस्ती स्थापित की, जो कि दूसरेकी

भूमिपर अनधिकार-चेष्टा थी। उन्होने व्यापारके साथ-साथ ईसाई-धर्मके प्रचारकी भी आड लिया जिसमें उन्हें रोमके पोपकी सहायता प्राप्त थी। लोग पूर्वजोकी पुरानी संस्कृतिके प्रतीक अपने धर्मको छोडकर ईसाई बननेके लिये तैयार नही थे, इसपर पोपने उनके विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दिया। उत्तरी जर्मन व्यापारियोने लिवोनिया (बाल्तिकतट) के विजय करनेका इसे अच्छा मौका देख इसके लिये जहाज दिये। बड़ा पादरी नियुक्त होकर जब अपने धर्मयोद्धाओंके साथ लिवोनिया आया, तो वहाके लोगोने कहा—"अपनी सेना लौटा दो। हमें तलवारसे नही, बल्कि शब्दोंसे समझाओ।" लेकिन वह तो तलवारसे ईसाई-धर्मका प्रचार करने आये थे। उनके पास देशियोंकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हथियार थे। लडाईमें उन्होने लिवोनियावालोंको हराया, लेकिन बडे पादरीका घोडा उसे शत्रुके दलमें ले गया, जहा प्रथम विशपको धर्म-प्रचार करते हुये शहीद बननेका मौका मिला। जर्मनोने सारे देशको लूट-मारकर बर्बाद कर दिया। नये विशप अलबर्टने पश्चिमी द्विनाके मुहानेके पास १२०१ ई० में रीगा नगरको बसाया। वहा जर्मन उपनिवेशियोंको बसाकर व्यापार और धर्म-प्रचार किया जाने लगा। अगले साल (१२०२ ई० में) खड्गवीरके नामसे पोपने एक नई धर्मसेना संगठित करनेकी आज्ञा प्रदान की। यह वीर अब खुलकर देश-विजय करने लगे। लोग विरोध करते, तो वह ग्रामो और नगरोको जला देते, सभी पुरुषोको मार डालते और स्त्रियो और बच्चोको दास बनाकर बेच देते। लोग भागकर जगलोमें चले जाते, जहा यह धर्मसैनिक उनको शिकार करते पकडते। एक जर्मन सम-सामयिक लेखकके अनुसार—"वह उन्हे पीटते हुये गावमें ले आते। भगोडोका पीछा करते रास्तोसे होते उनके घरोमें घुस उन्हें बाहर घसीटकर मार डालते। जो अपनी छतो या लकडीके टालोपर चढकर आत्मरक्षाका प्रयत्न करते, उन्हें पकडकर काट डालते। गावसे भागते हुये लोगोको उनके खेता में भी पीछा करते। वहासे यदि पवित्र देववनोकी तरफ भागते, तो वह देववृक्ष उनके खूनसे लाल हो जाते। पाचसौसे अधिक आदमी लडाईके स्थानमें और बहुतसे खेतोमें, रास्तोपर तथा दूसरी जगहोंमें मारे गये।" ईसाके धर्मके प्रचारका कैसा सुंदर तरीका था!

जर्मन धर्मयोद्धा इसलिये भी सफल हो रहे थे, क्योकि लिवोनीय लोगोमें एकता नही थी। विशप अलबर्टके मरनेके बाद लिवोनी धर्मयोद्धाओंको कई बार बुरी तरहसे हार खानी पडी, जिससे उनका धार्मिक उत्साह कम होने लगा। इसी समय एक दूसरी जर्मन धर्मसेना—त्युतोनिक आकर मौजूद हुई। यह धर्मसेना १२वी शताब्दीमें फिलस्तीनमे मुसलमानोके साथ लडनेके लिये स्थापित की गई थी, जिसे पोपने इस नये धर्मक्षेत्रमें भेज दिया। जब लिथुवानी जातिके प्रसी कबीलोंकी भूमि—नीमेन और विस्तुला नदियोके द्वावे—में इन त्युतोनिक धर्मयोद्धाओंके पैर पडे, तो वहा कार्ल मार्क्सके अनुसार—"१३वी शताब्दी के अन्तमें यह समृद्ध देश निर्जन भूमिमें बदल गया, गाव और जुते हुये खेतोकी जगह जगल और दलदल आ मौजूद हुये। लोगोमेंसे कितने ही मार डाले गये, कितनोको बंदी बनाकर ले गये और बाकी लिथुवामें भागनेके लिये मजबूर हुये।"

१२३७ ई० में लिवोनी खड्गवीर और त्युतोनिक धर्मसेना बाल्तिक प्रदेशको जीतनेके लिये एकताबद्ध हो गई।

१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की, यारोस्लाव-पुत्र (१२६३ ई०)

जर्मन धर्मयोद्धाओंके अतिरिक्त स्वीड व्यापारी भी नवोगोरदकी भूमिपर आख गडाये हुये थे। जर्मन धर्मवीर बाल्तिक तटको दखल कर रहे थे, और स्वीड व्यापारी फिनलन्दकी खाडीपर हाथ साफ करना चाहते थे, जिसमे कि वह पूर्वी युरोपके व्यापारके एकमात्र स्वामी बन जाये। १२४० ई० में स्वीड राजा कौन्ट बगरके नेतृत्वमें नेवाके ऊपर स्वीडोंने आक्रमण किया, लेकिन नेवाके मुहानेपर उनके उतरते ही नवोगोरदके महाराजुल अलेक्सान्द्रने उनपर भीषण प्रहार किया। इस समयतक बा-तू खानका राज्य पूरी तौरसे स्थापित हो चुका था, और महाराजुल अलेक्सान्द्रने बा-तूकी कृपा प्राप्त कर ली थी। राजनीतिक चाल हीमें नही, बल्कि सैनिक कौशलमें भी अलेक्सान्द्र असाधारण पुरुष था। एक समकालीन लेखकके अनुसार—"विजय करते हुये यह अजेय था।" अलेक्सान्द्रके नेतृत्वमें नवोगोरदके सैनिकोने

अद्भुत वीरताका परिचय दिया। स्वीड पूरी तौरसे पराजित हुये और वह अपने जहाजोंपर बैठकर भाग निकले। नेवा तटपर हुई इसी विजयके उपलक्षमें अलक्सान्द्रका नाम अलेक्सान्द्र नेव्स्की पड़ गया। आज भी सोवियत रूसके दूसरे नम्बरके सबसे बड़े नगर लेनिनग्रादके प्रसिद्ध राजपथका नाम नेव्स्की है।

अलेक्सान्द्रने और भी लड़ाइयां लड़ीं, लेकिन इसके पहले एक बार उसे वेचेका कोपभाजन हो नवोगोरदसे निर्वासित होना पड़ा था। पर जब बाल्तिक-तटमें जर्मनोंने आक्रमण किया, तो वेचेने फिर उसे बुला लिया, और कई लड़ाइयोंमें उसने जर्मनोंको बुरी तरहसे हराया, जिनमें ५ अप्रैल १२४२ ई० को लड़ी गई "बर्फकी लड़ाई" निर्णायक साबित हुई। नवोगोरदके लोगोंने पांच सौ जर्मन धर्मवीरोंको मारकर उन्हें सात मीलतक खदेड़ा और पचास बंदी बनाये। इस युद्धमें हारनेके बाद जर्मन वीरोंने फिर रूसी भूमिकी ओर हाथ बढ़ानेकी हिम्मत नहीं की।

नवोगोरदवालोंने ही अपनेसे पश्चिम बाल्तिकके रास्तेपर प्स्कोफ नगर स्थापित किया था, जो १४वीं शताब्दीमें नवोगोरदसे स्वतंत्र हो एक गणराजीय नगरमें परिणत हो गया। स्वतंत्र गणनगर होते हुये भी नवोगोरद और प्स्कोफके लोग अपनेको ब्लादिमिर-महाराजुलके अधीन मानते थे। १४वीं शताब्दीके प्रथम पादमें ब्लादिमिर-राज्यके भीतर एक और घरेलू संघर्ष त्वेर तथा मास्कोके राजुलोंके बीच शुरू हो गया। यह दोनों नगर ऐसी जगह स्थित थे, जहांपर मंगोल मुश्किलसे पहुंच पाते थे, इसीलिये दूसरी जगहोंके भी कितने ही शरणार्थी यहां आकर बस गये थे, जिसकी वजहसे दोनों नगरोंका आर्थिक विकास बड़ी तेजीसे हुआ। त्वेर ऊपरी वोल्गा तथा उसकी शाखा त्वेरत्साके संगमके पास बसा हुआ था। नवोगोरदसे वोल्गा होकर कास्पियनतक जानेवाले वणिक्पथको त्वेरसे होकर गुजरना पड़ता था। इसी व्यापारके कारण त्वेरके नागरिक बड़े समृद्धिशाली हो गये थे।

मास्को नगर वोल्गामें गिरनेवाली ओका नदीकी शाखा मास्क्वाके तटपर अवस्थित था। ऊपरी वोल्गासे ओकाकी ओर सीधा आनेवाला वणिक्पथ मास्कोकी भूमिसे गुजरता था। यहांसे निम्न-वोल्गाकी ओर भी आसानीसे जाया जा सकता था, साथ ही दोनका ऊपरी भाग नजदीक होनेके कारण अजोफ और कालासागर होते पूर्वी युरोपका वणिकपथ भी यहांसे खुला हुआ था—क्रिमिया और कालासागरके तट-पर इतालीके व्यापारियोंने अपनी बहुतसी व्यापारिक बस्तियां बसा रक्खी थीं। इन्हीं कारणोंसे मास्को-को विकासका त्वेरसे भी अधिक सुभीता प्राप्त था।

पक्का मुसलमान कहते हैं, तो भी राजनीतिमें वह इस तरहके व्याहको बुरा नही समझता था। यह भी याद रखनेकी बात है, कि पश्चिमके मगोल शासकोमें सभी मुसलमान नही हुये, बल्कि कितने ही व्याह-शादीके सम्बन्धसे ईसाई होकर रूसियोंके भीतर हजम हो गये। मगोलोकी सहायताके बाद भी यूरीकी हार हुई और उसकी रानी—उज्बेककी बहिन—बंदिनी बनी, और उसी अवस्थामे मर भी गई। यूरीने खानके सामने त्वेर-महाराजुल मिखाइलके ऊपर इल्जाम लगाया, कि उसने उसे जहर देकर मरवा दिया। खानने मिखाइलको मृत्युदंड दिया और यूरीको महाराजुलका पद प्रदान किया। इसी समयमे मास्कोका सितारा चमकने लगा। यूरी बहुत दिनोतक इस पदका उपभोग नही कर सका और वह मिखाइलके एक पुत्रद्वारा मारा गया। उज्बेकने यूरीके हत्यारेको मरवा डाला, लेकिन मास्कोको अधिक शक्तिशाली न होने देनेके लिये अबकी महाराजुल-पदको उसने मिखाइलके पुत्र अलेक्सांद्रको प्रदान किया। पर, रूसके आर्थिक जीवनमें मास्कोकी जैसी स्थिति थी, उसके कारण पासा पलटा नहीं जा सकता था।

२० इवान I खलीता, दानियल-पुत्र (१३२५–४१ ई०)

मास्कोमें यूरीका स्थान उसके भाई इवान I ने ले लिया, जिसका नाम खलीता (पैसेका थैला) पड गया था, क्योकि उसके पास बहुत पैसा था। इवान खलीता ही नही था, बल्कि वह बडा चतुर और कुटिल शासक भी था। मास्कोकी शक्ति बढानेके लिये वह हर तरहके हथियारोको इस्तेमाल करनेके लिये तयार था। उस समय रूसी सघराज व्लादिमिर नगरमें रहता था—कियेफके नष्ट हो जानेके बाद सघराजकी गद्दी यही चली आई थी। यूरीने कोशिश की थी और इवान खलीताने भी कोशिश करके सघराज पीतरको इस बातके लिये राजी कर लिया, कि वह अपनी गद्दीको व्लादिमिरसे मास्को ले आये। तबसे मास्को रूसके सबसे बडे धर्मनायककी राजधानी बन गया, जिससे मास्कोकी शक्ति बढनेमें बडी सहायता मिली। अब धार्मिक बहिष्कारकी धमकी देनेसे छोटे-मोटे राजुल भी मास्कोकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार हो जाते। धर्मराजका कोश भी मास्को-राजुलकी सहायता करनेके लिये तयार था। इवान खलीता मगोल खान, उसकी खातूनो और अनुचरोपर सोनेकी वर्षा करनेके लिये तैयार रहता था, फिर वह क्यो न उसके पक्षमें होते? १३२७ ई० में खानने अपने दूत चोलखानको एक बडी मगोल सेनाके साथ त्वेरके विरुद्ध भेजा। मगोलोने नगरको लूटना शुरू किया, इसपर लोगोने विद्रोह कर दिया और चोलखान तथा उसके सैनिक खतम कर दिये गये। इवान खलीताने दौडकर खानके पास पहुंच त्वेरको दड देनेके लिये अपनी सेवायें पेश की। खानने उसे एक बडी मगोल सेना दी। इवानने त्वेरपर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। त्वेरके महाराजुल अलेक्सांद्रने भागकर प्स्कोफमें शरण ली। सघराजने प्स्कोफवालोको धार्मिक बहिष्कारकी धमकी दी। उनसे सहायता न पा महाराजुल लिथुवानिया भाग गया। पीछे वह त्वेर लौटा और खानने भी उसे क्षमा कर दिया, पर पीछे फिर इवान खलीताकी चालोमें पडकर खानने उसे ओर्दूमें बुलवाकर मार डाला। मास्को-राजुलका मनोरथ सिद्ध हुआ और १३२८ ई० में उसे महाराजुलका पद मिल गया। यही नही, सारी रूस भूमिसे कर उगाहनेका इजारा भी खानने खलीताको दे दिया। खलीता समयसे पहले ही नगद कर बेबाक करनेके लिये तैयार रहता था, फिर खान क्यो नही वैसा करता? इवान खलीताने अपने शत्रुओको दबाने तथा मास्कोकी शक्तिको बढानेमें किपचक (मगोल) खानका खूब इस्तेमाल किया। उसके मरते समयतक मास्को राज्य काफी विस्तृत हो चुका था, और उसका प्रतिद्वद्वी त्वेर अपनी समृद्धिके बहुतसे साधनोको खो चुका था। अब सारी मास्क्वा-उपत्यका (कलोम्नासे मोजाइस्कतक) मास्को-महाराजुलकी थी—मास्को-साम्राज्यकी नीव पड गई।

२१ सेमेओन, इवान I-पुत्र (१३४१–५३ ई०)

खलीताके मरनेके बाद महाराजुल पद उसके पुत्र सेमेओनके हाथमें रहा।

२२ इवान II, इवान I-पुत्र (१३५३-५९ ई०)

भाईके बाद इवान I गद्दीपर बैठा, फिर उसका पुत्र दिमित्रि मास्कोका स्वामी बना।

अद्भुत वीरताका परिचय दिया। स्वीड पूरी तरहसे पराजित हुये और वह अपने जहाजोंपर बैठकर भाग निकले। नेवा तटपर हुई इसी विजयके उपलक्षमें अलेक्सान्द्रका नाम अलेक्सान्द्र नेव्स्की पड गया। आज भी सोवियत रूसके दूसरे नम्बरके सबसे बडे नगर लेनिनग्रादके प्रसिद्ध राजपथका नाम नेव्स्की है।

अलेक्सान्द्रने और भी लडाइयां लडी, लेकिन इससे पहले एक बार उसे वेचेका कोपभाजन हो नवो-गोरदसे निर्वासित होना पडा था। पर जब बाल्तिक-तटसे जर्मनोंने आक्रमण किया, तो वेचेने फिर उसे बुला लिया, और कई लडाइयोंमें उसने जर्मनोंको बुरी तरहसे हराया, जिनमें ५ अप्रैल १२४२ ई० को लडी गई "बर्फानी लडाई" निर्णायक साबित हुई। नवोगोरदके लोगोंने पांच सौ जर्मन धर्मवीरोंको मारकर उन्हें सात मीलतक खदेडा और पचास बंदी बनाये। इस युद्धमें हारनेके बाद जर्मन वीरोंने फिर रूसी भूमिकी ओर हाथ बढानेकी हिम्मत नहीं की।

नवोगोरदवालोंने ही अपनसे पश्चिम बाल्तिकके रास्तेपर प्स्कोफ नगर स्थापित किया था, जो १४वीं शताब्दीमें नवोगोरदसे स्वतंत्र हो एक गणराजीय नगरमें परिणत हो गया। स्वतंत्र गणनगर होने हुये भी नवोगोरद और प्स्कोफके लोग अपनेको व्लादिमिर-महाराजुलके अधीन मानते थे। १४वीं शताब्दीके प्रथम पादमें व्लादिमिर-राज्यके भीतर एक और घरेलू संघर्ष त्वेर तथा मास्कोके राजुलोंके बीच शुरू हो गया। यह दोनों नगर ऐसी जगह स्थित थे, जहांपर मंगोल मुश्किलसे पहुंच पाते थे, इसीलिये दूसरी जगहोंके भी कितने ही शरणार्थी यहां आकर बस गये थे, जिसकी वजहसे दोनों नगरोंका आर्थिक विकास बडी तेजीसे हुआ। त्वेर ऊपरी वोल्गा तथा उसकी शाखा त्वेरत्साके संगमके पास बसा हुआ था। नवो-गोरदसे वोल्गा होकर कास्पियनतक जानेवाले वणिक्पथको त्वेरसे होकर गुजरना पडता था। इसी व्यापारके कारण त्वेरके नागरिक बडे समृद्धिशाली हो गये थे।

मास्को नगर वोल्गामें गिरनेवाली ओका नदीकी शाखा मास्क्वाके तटपर अवस्थित था। ऊपरी वोल्गासे ओकाकी ओर सीधा आनेवाला वणिक्पथ मास्कोकी भूमिसे गुजरता था। यहांसे निम्न वोल्गाकी ओर भी आसानीसे जाया जा सकता था, साथ ही दोनका ऊपरी भाग नजदीक होनेके कारण अजोफ और कालासागर होते पूर्वी युरोपका वणिक्पथ भी यहांसे खुला हुआ था—क्रिमिया और कालासागरके तट-पर इतालीके व्यापारियोंने अपनी बहुतसी व्यापारिक बस्तियां बसा रक्खी थीं। इन्हीं कारणोंसे मास्को-को विकासका त्वेरसे भी अधिक सुभीता प्राप्त था।

ग. मास्को महाराजुल

१८. दानियल, अलेक्सान्द्र नेव्स्की-पुत्र (१२६३–१३०३ ई०)

१३वीं शताब्दीके आरम्भमें मास्कोकी एक छोटीसी रियासत थी, जिसमें मास्को नगर तथा रूजा और ज्वेनीगोरदके दो और छोटे-छोटे कस्बे सम्मिलित थे। लेकिन अब उसपर अलेक्सान्द्रका पुत्र दानियल राज्य कर रहा था, जो अपने पिताकी तरह ही योग्य और महत्त्वाकांक्षी था। १३०१ ई० में उसने मास्क्वा और ओकाके संगमपर अवस्थित कलोम्ना नगरको ले लिया। १३०२ ई० में उसे पासके पेरेयास्लाव्ल राज्यका उत्तराधिकार मिला, जिसके कि अधीन पहिले मास्को था। अब मास्को ज्यादा बढ गया था, तो भी अभी वह त्वेर (आधुनिक कलिनिन) का मुकाबिला नहीं कर सकता था, विशेष-कर इसलिये भी कि मंगोल खानने वहांके महाराजुल मिखाइल यारोस्लाव-पुत्रको १४वीं शताब्दीके आरम्भमें ही "व्लादिमिर-महाराजुल" स्वीकार कर लिया था। किसी रूसी राजुलको अधिक शक्तिशाली न होने दिया जाये, इसके लिये मंगोल खानोंकी यह नीति थी, कि वह कभी एकका समर्थन करते और कभी दूसरेका। उज्बेक खानने व्लादिमिरके महाराजुलको अधिक शक्तिशाली देख मास्कोके राजुल यूरी दानियल पुत्रका पक्ष लेना शुरू किया।

१९. यूरी III दानियल-पुत्र (१३०३–२५ ई०)

यूरीके ऊपर उज्बेक खानकी इतनी कृपा थी, कि उसने अपनी बहिनको यूरीसे ब्याह दिया और त्वेरके महाराजुलसे लडनेके लिये मंगोल सेना साथ कर दी। उज्बेकखानको मुस्लिम इतिहासकार

पक्का मुसलमान कहते है, तो भी राजनीतिमें वह इस तरहके व्याहको बुरा नहीं समझता था। यह भी याद रखनेकी बात है, कि पश्चिमके मगोल शासकोमे सभी मुसलमान नहीं हुये, बल्कि कितने ही व्याह-शादीके सम्बन्धसे ईसाई होकर रूसियोंके भीतर हजम हो गये। मगोलोकी सहायताके बाद भी यूरीकी हार हुई और उसकी रानी—उज्बेककी बहिन—बंदिनी बनी, और उसी अवस्थामें मर भी गई। यूरीने खानके सामने त्वेर-महाराजुल मिखाइलके ऊपर इल्जाम लगाया, कि उसने उसे जहर देकर मरवा दिया। खानने मिखाइलको मृत्युदंड दिया और यूरीको महाराजुलका पद प्रदान किया। इसी समयमे मास्कोका सितारा चमकने लगा। यूरी बहुत दिनोतक इस पदका उपभोग नही कर सका और वह मिखाइलके एक पुत्रद्वारा मारा गया। उज्बेकने यरीके हत्यारेको मरवा डाला, लेकिन मास्कोको अधिक शक्तिशाली न होने देनेके लिये अबकी महाराजुल-पदको उसने मिखाइलके पुत्र अलेक्साद्रको प्रदान किया। पर, रूसके आर्थिक जीवनमें मास्कोकी जैसी स्थिति थी, उसके कारण पासा पलटा नहीं जा सकता था।

२० इवान I खलीता, दानियल-पुत्र (१३२५–४१ ई०)

मास्कोमें यूरीका स्थान उसके भाई इवान I ने ले लिया, जिसका नाम खलीता (पैसेका थैला) पड गया था, क्योंकि उसके पास बहुत पैसा था। इवान खलीता ही नही था, बल्कि वह बडा चतुर और कुटिल शासक भी था। मास्कोकी शक्ति बढानेके लिये वह हर तरहके हथियारोको इस्तेमाल करनेके लिये तैयार था। उस समय रूसी संघराज ब्लादिमिर नगरमें रहता था–कियेफके नष्ट हो जानेके बाद संघराजकी गद्दी यही चली आई थी। यूरीने कोशिश की थी और इवान खलीताने भी कोशिश करके संघराज पीतरको इस बातके लिये राजी कर लिया, कि वह अपनी गद्दीको ब्लादिमिरसे मास्को ले आये। तबसे मास्को रूसके सबसे बडे धर्माचार्यकी राजधानी बन गया, जिसमे मास्कोकी शक्ति बढनेमें बडी सहायता मिली। अब धार्मिक बहिष्कारकी धमकी देनेसे छोटे-मोटे राजुल भी मास्कोकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार हो जाते। धम राजका कोश भी मास्को-राजुलकी सहायता करनेके लिये तैयार था। इवान खलीता मगोल खान, उसकी खातूनो और अनुचरोंपर सोनेकी वर्षा करनेके लिये तैयार रहता था, फिर वह क्यो न उसके पक्षमें होते? १३२७ ई० में खानने अपने दूत चोलखानको एक बडी मगोल सेनाके साथ त्वेरके विरुद्ध भेजा। मगोलोने नगरको लूटना शुरू किया, इसपर लोगोने विद्रोह कर दिया और चोलखान तथा उसके सैनिक खतम कर दिये गये। इवान खलीताने दौडकर खानके पास पहुच त्वेरको दड देनेके लिये अपनी सेवाये पेश की। खानने उसे एक बडी मगोल सेना दी। इवानने त्वेरपर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। त्वेरके महाराजुल अलेक्सांद्रने भागकर प्स्कोफमें शरण ली। संघराजने प्स्कोफवालोको धार्मिक बहिष्कारकी धमकी दी। उनसे सहायता न पा महाराजुल लिथुवानिया भाग गया। पीछे वह त्वेर लौटा और खानने भी उसे क्षमा कर दिया, पर पीछे फिर इवान खलीताकी चालोमें पडकर खानने उसे ओर्दूमें बुलवाकर मार डाला। मास्को-राजुलका मनोरथ सिद्ध हुआ और १३२८ ई० मे उसे महाराजुलका पद मिल गया। यही नही, सारी रूस भूमिसे कर उगाहनेका इजारा भी खानने खलीताको दे दिया। खलीता समयसे पहले ही नगद कर बेबाक करने के लिये तैयार रहता था, फिर खान क्यो नही वैसा करता? इवान खलीताने अपने शत्रुओको दबाने तथा मास्काकी शक्तिको बढानेमें किपचक (मगोल) खानका खूब इस्तेमाल किया। उसके मरते समयतक मास्को राज्य काफी विस्तृत हो चुका था, और उसका प्रतिद्वंद्वी त्वेर अपनी समृद्धिके बहुतसे साधनोको खो चुका था। अब सारी मास्क्वा-उपत्यका (कलोम्नासे मोजाइस्कतक) मास्को-महाराजुलकी थी—मास्को-साम्राज्यकी नींव पड गई।

२१ सेमेओन, इवान I-पुत्र (१३४१–५३ ई०)

खलीताके मरनेके बाद महाराजुल पद उसके पुत्र सेमेंओनके हाथमे रहा।

२२ इवान II, इवान I-पुत्र (१३५३-५९ ई०)

भाईके बाद इवान I गद्दीपर बैठा, फिर उसका पुत्र दिमित्रि मास्कोका स्वामी बना।

२३ दिमित्रि दोन्स्की, इवान II-पुत्र (१३५९-८९ ई०)

महाराजुलको तरुण देखकर पड़ोसी राजुलोंने मास्को-राज्यपर हाथ फेरना चाहा, लेकिन दिमित्रिके पीठपर अब संघराज अलेक्सी और मास्कोके बायरोंका हाथ था। जिनके प्रयत्नसे खानने दिमित्रिको महाराजुलका पद प्रदान किया। बायरोंने बालक दिमित्रिको घोड़ेपर चढ़ाकर प्रतिद्वंद्वी सुज्दल राजुलपर आक्रमण कर दिया और हाथसे निकल गये व्लादिमिर-नगरपर फिर अधिकार कर लिया। दिमित्रिके ३६ वर्षके शासनमें मास्कोकी शक्ति बहुत बढ़ी, जिसमें एक कारण (मंगोल सुवर्ण-ओर्दूकी) शक्तिका कमजोर होना भी था। १३६६ ई० में दिमित्रिने मास्कोको पत्थरकी दीवारोंसे दुर्गबद्ध किया, इसके पहले उसके चारों ओर बजकी लकड़ीका नगर-प्राकार था। उसने त्वेर, र्याजन और निज्नीनवोगोरदके राजुलोंपर जबदस्त आक्रमण किये, जिसपर उसके शत्रुओंने लियुवन राजा ओलिगदसे मदद ली, और तीन बार मास्कोके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन मास्को अजेय साबित हुआ। पादरी, संघराज अलेक्सी और बायर सब तरहसे मदद देनेके लिये तैयार थे। मास्कोने कोमी जातिके लोगोंको अपने अधीन कर उन्हें ईसाई बनानेका प्रयत्न किया। ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ मास्कोकी शक्ति बढ़ती गई। शक्तिके मदमें मास्कोने मंगोलोंसे भी छेड़-छाड़ शुरू की। अब मंगोलोंका सुवर्ण-ओर्दू छोटे छोटे खानोंमें बंट चुका था, जिनमें सबसे शक्तिशाली ममाईखान था। मास्कोकी इस छेड़खानीको मंगोल कैसे बर्दाश्त करते? ममाईने १३७८ ई० में र्याजनपर आक्रमण करनेके लिये एक तारतार सेना भेजी, जिसका लक्ष्य था मास्कोकी ओर बढ़ना। लेकिन ममाईकी सेनाको वोझा नदीके किनारे भारी हार खानी पड़ी। ममाईने अब लिथुवानी राजा जागिएलोसे समझौता किया और स्वयं एक बड़ी सेना लेकर लड़नेके लिये आगे बढ़ा। र्याजनके राजुलने अपने प्रतिद्वंद्वी मास्कोके महाराजुलके विरुद्ध ममाईसे मेल कर लिया। उधर महाराजुल दिमित्रिने भी डेढ़ लाखकी सेना एकत्रित कर ली थी। जातीयताके जोशमें आकर भारी संख्यामें रूसी राजुलके झंडेके नीचे इकट्ठा हो गये थे। यही नहीं, राजा ओलिगदके दो लिथुवानी राजकुमार भी बेलोरूसी और लिथुवानी सैनिकोंके साथ ममाईसे युद्ध करनेके लिये आये। दिमित्रिने अपनी सेनासहित ओकापार हो दोनके किनारे पहुंच युद्ध-परिषद् बुलाई। कुछ लोगोंकी राय थी "दोनके पार जाओ राजुल" और दूसरे कह रहे थे "मत जाओ, वहां बहुत शत्रु है।" दिमित्रि मना करनेवालोंकी बात न मान दोनपार हो गया। ८ सितम्बर १३८० ई० को कुलिकोवोका भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। कुलिकोवोका युद्धक्षेत्र नेप्र्याद्वा नदी और दोनके संगमपर अवस्थित था। युद्ध भीषण हुआ, कई मीलतककी धरती खूनसे लाल हो गई, जहां जगह-जगह लाशें पड़ी थीं। तारतारोंको पहले कुछ सफलता हुई, लेकिन इसी समय छिपे हुये रूसी सैनिकोंने अपना पीछा करते तारतारों पर पीछेकी ओरसे आक्रमण कर दिया। ठीक समयपर हुये इस जबदस्त प्रहारसे तारतारोंकी पूरी हार हुई। वह जान बचानेके लिये भाग निकले और रूसी सवारोंने पीछा करके उनके शिविरको भी ले लिया। दोनतटपर हुये इसी युद्धके विजयके उपलक्षमें दिमित्रिको "दोन्स्की" (दोनवाला) कहा जाने लगा।

इस लड़ाईके थोड़े दिनों बाद तोकतामिशसे लड़ते हुये ममाई मारा गया। उसके बाद तोकतामिशने १३८२ ई० में एकाएक मास्कोपर आक्रमण कर दिया। महाराजुल दिमित्रि तैयार नहीं था, इसलिये सेना भरती करनेको वह उत्तर चला गया। बायरोंने भी जान लेकर भागना चाहा, इसपर मास्कोमें विद्रोह हो गया। स्वतन्त्रता-प्रेमी नगरवासियोंने क्रेमलिन (दुर्ग) के फाटकपर पहरेदार बैठा दिये, जिसमें महाराजुलानी और संघराजके अतिरिक्त कोई नगरसे बाहर न जाने पाये। तोकतामिशकी सेनाने क्रेमलिनपर आक्रमण किया। नागरिकोंने उसका पूरा प्रतिरोध किया। तीन दिनतक लड़ाई करनेके बाद भी सफलता न देख तोकतामिशने छलसे लोगोंको भुलावा दे नगरके दरवाजेको खुलवाया और उसे लूटकर जला दिया। इसके बाद रूसी लोग फिर किपचकोंको कर देने लगे। यद्यपि कुलिकोवोके युद्धने रूसियोंको मंगोलोंके जूयेसे मुक्त नहीं कर दिया, किन्तु उनके मनमें अब यह भाव पैदा हो गया था, कि हम मिलकर मंगोलोंसे अच्छी तरह मुकाबिला कर सकते हैं।

२४ वासिली I, दिमित्र-पुत्र (१३८९–१४२५ ई०)

पिताके कामको पुत्रने और आगे बढाया। वासिलीने निज्नीनवोगोरदको ले लिया।

२५ वासिली अंध II वासिली I-पुत्र (१४२५–६२ ई०)

वासिलीके पुत्र वासिलीको अपने मनोरथमें अधिक सफलता प्राप्त करनेमें सबसे भारी बाधा पारिवारिक संघर्ष था। उसका चचा यूरी स्वयं महाराजुल बनना चाहता था। खानने वासिलीको जब यह पद प्रदान किया, तो दोनोंमें खुला संघर्ष शुरू हो गया, जो बीस सालतक जारी रहा। इस संघर्षमें कितनी ही बार मास्को एक हाथसे दूसरे हाथमें जाता रहा। एक बार वासिली तीर्थयात्राके लिये त्रोयत्सा गया हुआ था, उसी समय उसके प्रतिद्वंद्वी राजुल शेम्याकाके सिपाहियोंने उसे पकडकर मास्कोमें ले जा अंधा कर दिया, जिसके कारण उसका नाम त्योम्नी (अंध) पड गया। वासिलीने फिर जल्दी ही अपने राज्यको प्राप्त कर लिया, और उसके बाद उसकी शक्ति फिर बढी।

१४ वीं सदीके अन्तमें रूसमें ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ विद्याका प्रचार भी कमसे कम उच्च वर्गमें काफी था, लेकिन अंध वासिली "निर्ग्रंथ और निरक्षर" था, जिससे सिद्ध है, कि अभी रूसी सामन्तवर्गमें विद्याकी उतनी आवश्यकता नहीं मानी जाती थी।

२६ इवान III, वासिली अंध-पुत्र (१४६२–१५०५ ई०)

पीढ़ियोंसे धीरे-धीरे संचित होती मास्को-राजशक्ति अब बिल्कुल स्पष्ट दिखने लगी। इवान III ने सारे उत्तर-पूर्वी रूसका एक सुसंगठित राज्य बना लिया। नवोगोरद अभीतक मास्कोसे अपनेको स्वतंत्र

बनाये हुये था, इसपर इवान III ने एक बडी सेना लेकर उसके ऊपर आक्रमण किया और हराने-के बाद नगरको स्वतत्र छोड उसके अधीनस्थ प्रदेशोको अपने राज्यमें मिला लिया। मास्कोने पेमको अपने राज्यमे मिलाकर अपनी सीमा उराल प्रदेशतक बढा ली और वहाकी धातुकी खानोमें काम करने के लिये चतुर शिल्पी भेजे। नवोगोरदके भीतर फिर आपसी सघर्ष शुरू हुआ, और अन्तमें उसने १४८७ ई० में इवानको अपने "गसूदर" (स्वामी) के तौरपर स्वागत किया। नवोगोरदकी बोलीमें "गसूदर" का अर्थ साधारण सामन्ती भूमिपति भी होता था। इवान उनका साधारण भूमिपति बननेके लिये तैयार नही था। उसने पूर्ण प्रभुताकी माग की। इन्कार करनेपर सेना लेकर चढ आया और लम्बी बातचीतके बाद जनवरी १४७८ ई० मे नागरिकोने उसकी सारी शर्तोंको मान लिया। १४८५ ई० में इवानने त्वेरको भी पूर्ण तौरसे अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, र्याजनका राज्य भी मास्कोका करद बन गया। यद्यपि रूसीजन अब मास्कोके अधीन एक हो चुके थे, लेकिन उनके सजातीय वेलोरूसी और उक्रइनी अब भी लिथुवानिया और पोलन्दके हाथमें थे, जिनको एकताबद्ध करनेमें अभी सदियोके सघर्षकी अवश्यकता थी।

तारतार (मगोल)-शासनकी समाप्ति (१४८० ई०)—नवोगोरद जैसे शक्तिशाली राज्यका ले लेनेके बाद अब इवान सुवर्ण-ओर्दूकी ओर बढनेके लिये स्वतन्त्र था। आपसमें लडते ओर्दूके अनेक खानोने पहिले हीसे उसके लिये रास्ता साफ कर दिया था। इवानने क्रिमियाके खान मेंगली गिराईसे मेल किया—वहा वह प्रतिवर्ष दूतमडलद्वारा खान, उसकी खातूनो और मुख्य दरबारियोको भेंट भेजा करता था। सुवर्ण-ओर्दूकी कमजोरीको देखकर इवानने उसे कर देना बन्द कर दिया। सुवर्ण-ओर्दूके खान अहमदने लिथुवानियाके राजाकी सहायतासे मास्कोको कर देनेके लिये मजबूर करना चाहा, लेकिन सफल नही हुआ, इसपर तारतार और रूसी सेनायें युद्धके लिये ओकाकी शाखा उग्रा नदीके आरपार खडी हुई। दोनोमेंसे कोई नदी पार करनेकी हिम्मत नही करता था। अहमद कर देना स्वीकार कर लेनेपर लौट जानेके लिये तैयार था। जब उग्राकी धारा बर्फ बनकर जम गई, तो चतुर इवानने अपनी सेनाको पीछे हटा एक अधिक अनुकूल स्थान पकडनेका हुकुम दिया। अब भी खान आक्रमण करनेमे हिचकिचा रहा था। एक ओर सर्दी और भूखसे खानकी सेना परेशान थी और दूसरी ओर इवानके सहकारी मेंगली गिराईने हमला करके उसे खतरेमें डाल दिया था। लिथुवानियाका राजा भी अहमदको बीच हीमें छोडकर चला गया। अहमदको मास्को-की सीमासे हटनेके सिवा और कोई रास्ता नही रहा। बिना युद्धके इस दिनके हटनेके साथ ही दो शताब्दियोंसे चला आता रूसियोके ऊपर मगोलोका शासन हटसा गया, और बातूका सर्वशक्तिमान् सुवर्ण-ओर्दू १५०२ ई० में क्रिमियाके तारतारोद्वारा पराजित होकर निम्न-वोल्गाकी अस्त्राखानकी छोटीसी रियासतके रूपमें बच रहा।

तारतारो (मगोलो) के जूयेसे मुक्त होनेके बाद इवानने अब फिनो, स्वीडो, जर्मनो, लिथुवानियो और तुर्कोंके हाथमें पडी प्राचीन रूसी भूमिके उद्धारका सकल्प किया।

तुर्की—तैमूरके युद्धोंमें परास्त होकर भागे क्षुद्र-एसियाके तुर्कोंने युरोपके तटपर पहुचकर कान्स्तान्तिनोपोलके पूर्वी रोमन राज्यके अवशेषको खतम कर दिया। धीरे-धीरे बढते हुये इन्ही तुर्कोंने बलकान भूमिको लेते कालासागरसे उत्तरमें भी अपना हाथ फैला दिया। इस प्रकार तैमूरके बाद तुर्कोंके रूपमे एक शक्तिशाली राज्य पूर्वी युरोपमें आकर उपस्थित हो गया। इवानने पहले और शत्रुओंसे भिडनेके लिये तुर्कोंके साथ समझौता कर लिया—वह पहला युरोपीय राजा था, जिसने तुर्कोंके अस्तित्वको १४९२ ई० में स्वीकार किया। उसने बाल्तिक-तटसे होनेवाले खतरेकी रक्षाके लिये नारवा नदीपर इवानगोरद (इवान-नगरी) का दुर्ग स्थापित किया। यह बाल्तिककी ओर बढनेका रूसका पहला कदम था। लिथुवानिया जैसे प्रबल प्रतिद्वद्वीको पछाडनेके लिये इवानने लिवोनीय धर्म-सेनासे समझौता किया। पीछे जर्मन धर्मसैनिकोके विरुद्ध उसने लिथुवानियासे सधि की और चेर्निगोफ नगरके साथ सेवेर्स्क प्रदेशको लेते हुये उसने अपनी सीमाको कियेफके नजदीकतक पहुचा दिया। पूरबमें कजानके खानको

भी इवानने अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उसने उरालकी ओर भी कई अभियान भेजे। १५०० ई० में इवानकी सेनाने उराल पर्वतश्रेणी अर्थात् युरोपकी सीमासे पार हो एसियाकी सीमामें पैर रक्खा। वहाके निवासी नेन्सी अब मास्कोके करद बन गये। राज्यविस्तारके प्रयत्नमें कितनी ही बार उसे बाधाका भी सामना करना पडा, लेकिन बाधाओंके होने भी इवान आगे बढनेमें सफल रहा। सैनिक-शक्ति तो उसकी प्रबल थी ही, किन्तु उससे भी अधिक उसकी कूटनीति काम कर रही थी। क्रिमिया और साइबेरियाके तातारोंको सुवर्ण-ओर्दूके अवशेषसे भिडाकर उसने अपना काम निकाला।

मास्को नगरी जहा एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानी हो गई थी, वहा वह व्यापारका भी सबसे बडा केंद्र थी। जाडोंमें बर्फ बनी हुई मास्क्वा नदीके ऊपर व्यापारी अपनी दूकाने रखते थे। एक युरोपीय यात्रीने उस समयका वर्णन करते हुये लिखा है—"सारे जाडेभर अनाज, मास, सूअर, ईंधन, भुस और दूसरी आवश्यक चीजे बेंचनेके लिये वहा लाई जाती है। नवम्बरके अन्तमें मास्कोके पास-पडोसके लोग अपनी गायो और सूअरोंको मारकर नगरमें बेंचनेके लिये लाते है। यह बडा आनन्दका दृश्य होता है, जबकि बर्फके ऊपर चमडे निकाले हुये जानवरोंको बहुत भारी परिमाणमें अपने पैरोंपर हम खडा देखते है।"

इवान III ने मास्कोको एक बडी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तिमें परिणत कर दिया। उसने शासन, सेना, और कोशको जहा केंद्रित कर दिया, वहा सैनिक हथियार और कौशलमें भी बहुत वृद्धि की। इवानने पश्चिमी युरोपसे कारीगरोंको बुला तोपें ढलवाकर रूसी तोपखानेको मजबूत किया। उसकेद्वारा स्थापित रूसी तोपखाना तबसे ही दुनियाका सबसे शक्तिशाली तोपखाना बन गया, जिसे सोवियत-कालमें भी रूसने अक्षुण्ण रखा—हिटलरकी सेनाओंको भगानेमें रूसी तोपोंका काफी हाथ रहा। इवानको अब सभी राजा अपनी उच्च बिरादरीमें सम्मिलित करनेके लिये प्रस्तुत थे। जर्मन-सम्राट्ने राजाकी उपाधि देनी चाही, लेकिन इवानने "मुझे उसकी आवश्यकता नही" कहकर लेनेमें इन्कार कर दिया। पोपने भी उसकी ओर मित्रताका हाथ बढाया। वेनिसके धनी गणराज्य तथा पश्चिमी युरोपके दूसरे व्यापारी कालासागर और क्रिमिया होते मास्को पहुचने लगें। इवानने पश्चिमी युरोपसे तोप ढालनेके लिये ही कारीगर नही मगवाये, बल्कि वास्तुशास्त्री तथा शिल्पशास्त्रियोंको भी बुलाया।

इवानके प्रभावको बढानेके लिये इसी समय एक और भी अच्छा मौका मिल गया। ईसाई धर्म कैथोलिक और अर्थोदक्स दो सम्प्रदायो (चर्चो) में विभक्त है, जिसमें कैथोलिक पोपका केंद्र रोम नगर है और ग्रीक अर्थोदक्स चर्चका महासघराज कान्स्तन्तिनोपोलमें रहता था। १४५३ ई० में तुर्क सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोलपर अधिकार करके पूर्वी रोमक (बिजन्तीन) साम्राज्यको खतम कर दिया। तुर्कोंका राज्य कालासागर-तट, काकेशस और बलकानमें दन्यूब नदीके किनारे वीना नगरके पासतक फैल गया। वेनिस और पोपकी मध्यस्थतासे इवानने अन्तिम ग्रीक सम्राट्की भतीजी सोफिया पालेओलोगससे व्याह किया। वेनिस और रोमको आशा थी, कि इस प्रकार वह इवानकी शक्तिसे तुर्कों-को खतम करनेमें सफल होगे, लेकिन इवान किसीका हथियार बननेके लिये तैयार नही था। क्रिमियाके खानोंद्वारा इवानने तुर्कोंके साथ सम्बन्ध स्थापित किया। ईरानसे भी उसने सम्बन्ध स्थापित किया। इस प्रकार मास्कोके व्यापारी कान्स्तन्तिनोपोल और ईरान तककी यात्रा करने लगे। इन्ही व्यापारियो में त्वेर (कलिनिन) नगरका अफनासी निकितिन भी था, जिसने १४६७–७२ ई० में ईरानके रास्ते समुद्रद्वारा भारतकी यात्रा की थी। अफनासीने अपना यात्राविवरण "खोजेनिये जा-त्रि-मोर्या" (तीन समुद्रो पारकी यात्रा) लिखकर हमारे लिये छोडा है।

अफनासीकी भारतयात्रा—त्वेरके रूसी सौदागर निकितिन अफनासीने "तीन समुद्रो पारकी यात्रा" की थी। वह वास्को-द-गामाके भारत पहुचने (१४९८ ई०) से ३२ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें आ बहमनी (बीदर) सुल्तान मुहम्मदशाह III (१४६२–८३) के राज्यमें ६ वर्ष (१४६६-७२ ई०) रह रूस लौट स्मोलेन्स्कमें मर गया। उसके यात्रा-विवरणके कुछ अश है —

मैं पवित्र स्पा (त्राता)के गिर्जमें महान् राजुल मिखाइल बोरिसपुत्र और त्वेर्के प्रधान पादरी गेनादीकी कृपामयी अनुमति प्राप्तकर रवाना हुआ। वोल्गा नदीसे चलकर पवित्र शहीद वोरिस और ग्लेबके "जिवो नचात्नया त्रोइत्जा" (जीवनप्रदायक त्रिमूर्ति) के पवित्र मठमें पहुँचा। साधु मकरी और उसके भाईने मुझे आशीर्वाद दिया। (फिर) मैं उगलिच गया। उगलिचसे कोस्नोमा (त्वेर) के राजुल अलेक्सान्द्रके पास पहुँचा। सारे रूसके शासकने मुझे स्वतंत्र जीवन प्रदान किया। इसी तरह मुझे निज्नीनवोगोरदमें उपसरक्षक मिखाइल किस्लेफ और जकात-अफसर इवा साराके पास जानेकी अनुमति मिल गई।

अबसे पहले ही वासिली और पापी (मैं) चल पड़े थे। फिर भी मुझे (निज्नी) नवोगोरदमें शाह शिरवानके तातार राजदूत हसनबेगके लिये प्राय दो सप्ताह रुकना पड़ा। वह महाराजुल इवाके पास नव्वे बाज लेकर आया था। मैं जहाजपर चढ़ उसके साथ वोल्गाकी राह चला और कुशलपूर्वक कजान, उर्दा, ओगलान, सराइ और बरेकेजाम लाँघ गया।

हम बुजान नदीमें पहुँचे। वहाँ हमें तीस बदमाश तातार मिले। उन्होंने हमें गलत खबर दी, कि बुजानमें कासिम खाँ तीन सौ तातारोंके साथ पड़ा सौदागरोंकी राह देख रहा है। शिरवानके राजदूत हसनबेगने उनमेंसे प्रत्येकको तीन-तीन मलमलके थान दिये, जिसमें वे हमें अस्त्राखानके आगेतक पहुँचा दें। मैं अपना जहाज छोड़कर अपने साथियोंके साथ राजदूतके जहाजपर सवार हो गया। हम अस्त्राखान लाँघ रहे थे, (आकाशमें) चाँद चमक रहा था, इसी समय वहाँके हाकिमने हमें देख लिया। उसके तातारोंने चिल्लाकर कहा—भागना मत! और उसने हमारे पीछे अपने सिपाही छोड़ दिये। बुगून पहुँचते-पहुँचते उन्होंने हम पापियोंको पकड़ लिया, और हममेंसे एकको गोली मार दी। हमने भी उनके दो आदमी मार डाले। हमारे छोटे जहाजको वहाँ रोककर उन्होंने लूट लिया और मेरा सारा सामान नौकाके साथ ही उनके कब्जेमें चला गया।

बड़ी नौकासे (भागकर) हम समुद्र-तटतक पहुँचे, लेकिन (हमारी) नाव वोल्गाके मुहानेपर जमीनपर चढ़ गई। तातार वहाँ हमें आ पकड़कर और नावको पानीमें खींच ले गये। उन्होंने (हम) चार रूसियोंको कैद कर लिया और बाकियोंको समुद्रकी ओर भगा दिया। वह हमें बहावके विरुद्ध जाने नहीं दे रहे थे, जिसमें हम उनके खिलाफ खबर न दे दें।

अब हम दो नावोंमें दरबन्द (कास्पियन) समुद्रकी ओर चले। एकमें राजदूत हसनबेग, हम रूसी और कुछ ईरानी—कुल दस आदमी थे और दूसरीमें छ मास्कोके और छ त्वेरके निवासी चल रहे थे। इस सामुद्रिक यात्रामें हम तूफानमें पड़ गये और तटसे टकरा जानेसे छोटी नावके लोगोंको केताकोंने पकड़ लिया।

जब हम दरबन्द पहुँचे, तो मालूम हुआ, कि हम तो राहमें लुट गये, लेकिन वासिली बिल्कुल सही सलामत पहले ही दरबन्द पहुँच गया है। मैंने वासिली पापिन और शिरवान शाहके राजदूत हसनबेगने—जिसके साथ कि हम आये थे—बड़ा अनुनय-विनय किया कि वे तर्कीमें केताकोंद्वारा गिरफ्तार हमारे आदमियोंको छुड़ानेका प्रयत्न करें। हसनबेग बीच-बचाव करनेके लिये पहाड़पर जाकर पुलादबेगसे मिला। पुलादबेगने शिरवान शाहबेगके पास एक तेज दूत भेजकर कहलाया कि तर्की (किला) से टकराकर एक रूसी नावके टूट जानेपर केताकोंने उसे पकड़ लिया, उसके आदमियोंको गिरफ्तार कर लिया और उनकी चीजें लूट लीं। शिरवान शाहबेगने अपने संबंधी खलीलबेगद्वारा कहलवाया—'खबर मिली है, कि मेरी नाव तर्कीके पास टकराकर टूट गई, तुम्हारे आदमियोंने नावके आदमियोंको पकड़ लिया और उनकी चीजोंको लूट लिया। कृपा करके मेरी खातिर उन पकड़े आदमियोंको मेरे पास भेज दो और उनकी चीजें भी इकट्ठी कर दो, क्योंकि वे लोग मेरे पास भेजे गये थे। अगर तुम्हें किसी चीजकी जरूरत हो, तो मेरे पास आओ, मेरे भाई, मैं कोई चीज देनेसे तुम्हें इन्कार नहीं करूँगा। अब कृपया मेरे लिये इन आदमियोंको मुक्त कर दो।' खलीलबेगने तुरंत मुक्तकर दरबन्द फिर वहाँसे शिरवान शाहके आवास 'कोइतुल' में भेज दिया।

हम कोइतुलमें शिरवान शाहके पास पहुचे। हमने उससे बडी मिन्नत की, कि वह हमपर दया करे और हमारे रूस लौटनेमें मदद करे, पर हमारी संख्या बहुत थी। उसने हमें कुछ न दिया। बहुत रो-धोकर हममेसे हर एकने अपनी राह ली। जिनको रूसमें काम था, वह रूस चले गये, कुछ उधर जिधर उनकी आखें ले गई गयें, कुछ शेमाखमे ही पड़े रहे और कुछ काम करने बाकू चले गये।

मैं फिर दरबन्दसे बाकू गया, जहा कभी नही बुझनेवाली अग्नि (ज्वालामाई) सदा जलती रहती है। बाकूसे मैं समुद्रकी राह चपकुर जा वहा छ महीने रहा। फिर जाकर माजन्दरानके मुल्कमें सारामे एक महीने रहा। उसके बाद मैं आमूल गया और वहा एक महीने रहा। फिर आमूलसे मैं देमावन्द गया और देमावन्दसे रैं (तेहरान)। यही मुहम्मद (पैगम्बर) के पोते और अलीके बेटे शाह हुसैनकी हत्या हुई थी और उसके शापसे सत्तर नगर नष्ट हो गये थे। रैसे मैं गजान आया और वहा एक महीना रहा। गजानसे नाइन और नाइनसे येज्द (उयेज्द), जहा मैं एक महीना ठहरा। येज्दके बाद मैं सिदजान आया और फिर तारूम, जहा मवेशियोको चारे 'अल्लवीन' के बदले खानेको खजूर देते है।

तारूमसे मै लार गया और लारसे बन्दर। यही ओरमुज्द (ओर्मुज) का बन्दर है। फिर भारतीय सागर, जिसे फारसीमें हिन्द-समुदर कहते हे। ओरमुज बन्दरसे समुद्र केवल चार मील है।

हिन्दू मास नही खाते, न तो बाझ मवेशीका, न भेडका, न मुर्गे-मुर्गियोका और न मछलीका। वह सूअर भी नही खाते, यद्यपि देशमें सूअरोकी बहुतायत है। दिनमें वह दो बार भोजन करते है, और रातमे कुछ नही खाते। वह शराब नही पीते और न दूसरा ही ऐसा पेय, जो नशा कर दे। वह मुसलमानोके साथ नही खाते-पीते। उनका भोजन अच्छा नही होता। वह आपसमें भी एक दूसरेके साथ नही खाते-पीते, (यहातक कि) अपनी पत्नियोके साथ भी नही (खाते)। वह चावल और रोगन (घी) मिली खिचडी और अनेक प्रकारकी सब्जिया खाते हैं, जिन्हे वह रोगन (घी) या दूधके साथ पकाते है। वह दाहिने हाथसे खाते है, बायें हाथसे कुछ नही खाते। वह चम्मचका इस्तेमाल नही जानते। सफरके समय हर आदमी अपना भोजन (खीर) आप पकाता है। भोजनके समय वह पर्दा कर लेते है, जिसमे मुसलमान उनका खाना न देख ले। अगर मुसलमान खाना देख ले, तो हिन्दू उसे नही खायेंगे। खाते समय वह अपनेको कपडेसे भलीभाति ढाक लेते हैं, जिसमें कोई उन्हें देख न सके।

रूसियोकी ही भाति हिन्दू भी पूर्वकी ओर मुह करके प्रार्थना करते हैं। वह दोनो हाथ ऊपर उठाकर सिरपर रख लेते है, फिर जमीनपर पड जाते हैं, यही उनका प्रणाम (साष्टाग प्रणाम) करना है। भोजनके पहले उनमेंसे कुछ (लोग) अपने हाथ-पाव धोते है और कुल्ला करते है। देवालयोमें कोई दरवाजा नही होता, उनका रुख पूर्वकी ओर होता है—कुछ मूर्तियोका मुख उत्तरकी ओर भी होता है। जब हिन्दुओमें कोई मर जाता है, तो उसके शरीरको जलाकर राखको पानीमें डाल देते हैं। जब किसी औरतके बच्चा होता है, तो पति उसे ले लेता है। लडकेका नामकरण पिता करता है और लडकीका माता। उनके आचार-व्यवहार अच्छे नही हैं और न उनमे कोई शम है। मिलते और अलग होते समय वह ईसाई साधुओकी भाति अपने दोनो हाथ जमीनकी ओर कर लेते हैं, कुछ बोलते नही।

दाबुलसे कालीकट २५ दिनका रास्ता है, कालीकटसे सिहल (लका) १५ दिनका। सिहलसे जावत (जावा) १ महीनेका, जावतसे पेगू (बर्मा) २० दिनका, पेगूसे चीन और महाचीन फिर एक महीनेका। यह सारी यात्रा समद्रकी राह है। चीनसे खिताईकी यात्रा खुश्कीसे छ महीनेकी और समुद्रसे चार दिनोकी है। भगवान् मेरी रक्षा करे।

बोद्रग तीन दिनो तक चाद प्राय पूरा चमकता है। हिन्दुस्तानमे गर्मी बहुत नही है। ओर्मुज और बहरेनम—जहा मोती निकलती है—बडी गर्मी पडती है, जद्दा, बाकू, अरब, मिस्र और लारमें भी। खुरासानमें गर्मी इतनी ज्यादा नही, लेकिन चगताई (मध्य एसिया) मे बहुत है। शीराज, यज्द और कजानमें गर्मी ह, पर वहा जोरकी हवा चलती है। गीलानमें बडी गर्मी है, बहुत पसीना निकलता है। बाबुल, रूम और दमश्क भी गरम है। अलेप्प इतना गरम नही। शेवास्त और जाजियामें सभी कुछ बहुतायतसे मिलता है। वैसे तुर्कीमें भी सब चीजोकी बहुतायत है। रूमानियामें फल बहुत है और खानेकी सभी चीजें

सस्ती है। पोदोलियामें फल सब जगहोंसे अधिक होते हैं। भगवान् रूसकी रक्षा करे, भगवान् उसे बचाये। इस संसारमें रूसके समान (अच्छा) कोई दूसरा मुल्क नहीं, यद्यपि वहाके बायर अच्छे नहीं हैं। परन्तु रूसकी भूमि बनाई जा रही है, उसमें बड़ी भलाई होगी। मेरे भगवान्, भगवान्, भगवान्, भगवान् (बोग् माइ)।

हे मेरे भगवान, मेरी आशायें तुझपर लगी हैं। मेरे भगवान्, मेरी रक्षा कर ले। मैं नहीं जानता कि हिंदुस्तानसे किधरको जाऊं। ओर्मुजसे खुरासानको राह नहीं, चगताईके लिये रास्ता नहीं और बहरैन और यज्दके लिये भी कोई मार्ग नहीं। सर्वत्र विद्रोह हो रहे हैं, सर्वत्र बादशाह भगाये जा रहे हैं, मिर्जा जहान शाहको उजून (हसन) बेग ने मार डाला है, सुल्तान अबू-सईदको जहर दे दिया गया है। उजून (हसन) बेग अब शीराजमें है, पर उस मुल्कने उसको स्वीकार नहीं किया है। यादगार मोहम्मद उसके पास नहीं जाता, वहां जानेमें उसे खतरा मालूम होता है। और कोई राह नहीं। (मेरे) मक्का जानेका मतलब है मुसलमान हो जाना। ईसाई होनेकी वजहसे मक्का जानेमें (मेरी) खैरियत नहीं, क्योंकि वहां जाते ही मुसलमान बना लिया जाऊंगा। हिन्दुस्तानमें रहनेका मतलब है, अपने पास जो कुछ है, सबको खर्च कर डालना, क्योंकि यहांका रहन-सहन महंगा है। मैं अकेला हूं, पर मेरा रोजाना खर्च ढाई अल्तीना (अशर्फी) है। यहां मैंने भरकर शराब मैंने कभी नहीं पी।

हम मस्कत पहुंचे। वहीं मैंने पासख (ईस्टर) त्योहार मनाया। फिर तीन दिनोंमें ओर्मुज पहुंचा। २० दिन ओर्मुज ठहर मैं लार गया और वहां तीन दिन रहकर बारह दिनकी यात्राके बाद शीराज पहुंचा, जहां सात दिन रहा। शीराजसे पंद्रह दिनकी यात्रा कर अबरकुन पहुंचा और वहां दस दिन ठहर, नौ दिनमें येजद पहुंचा, जहां ८ दिन रहा। येज्दसे पांच दिनमें अस्पहान पहुंचा, और वहां छ दिन ठहरा। वहांसे काशान जा पांच दिन रहा। काशानसे कुम गया। कुमसे सवा, सवासे सुल्तानिया और सुल्तानियासे तब्रीज। तब्रीजसे मैं हसनबेगके कबीलेमें पहुंचा, उनके बीच १० दिन ठहरा। वहांसे कहीं जानेका रास्ता न था, लड़ाई चल रही थी। हसनबेगने तुर्क सुल्तानके विरुद्ध अपनी ४० हजार सेना भेजी थी। सेनाने सिवास और तकातपर कब्जा कर लिया, तकातमें आग लगा दी। उन्होंने अमसपर भी अधिकार कर लिया, अनेक गांव लूट लिये, फिर वह किरमानकी ओर बढ़े। मैंने सेनाका साथ छोड़ आरजिंजान (अर्जेरूम) की राह ली और वहांसे त्रेपोजान्द जा पहुंचा।

पक्रोफके दिन ही मैं त्रेपोजान्द पहुंचा और पांच दिन वहां ठहर, एक जहाजपर जा कफाका किराया ठीक कर लिया, तथा कफामें जकात कर देनेके लिये कुछ सिक्के बदले।

त्रेपोजन्दमें फौजदार और शासकके भाईने मुझे बड़ा नुकसान पहुंचाया। वह मेरा सारा सामान पहाड़के ऊपर अपने महलमें उठा ले गया, और चूंकि मैं हसनबेगके कबीलेकी ओरसे जा रहा था, इस-लिये छिपी चिट्ठियोंके लिये मेरी तलाशी ली।

भगवान् की दयासे मैं अब तीसरे समुद्र (कालासागर) में दाखिल हुआ, जिसे ईरानी 'इस्तम्बूलका समुन्दर' कहते हैं। जहाजसे पांच दिन चलकर हम बोनद पहुंचे। वहां हमें तेज (दक्खिनी) हवा मिली, जो हमें त्रेपोजन्दकी ओर ढकेल ले चली। मौसमकी परेशानी के कारण हमें प्लातानमें रुक जाना पड़ा। वहांसे दो बार हमने चलना चाहा, पर मौसमके कारण रुकना पड़ा। भगवान् ही (सबका) मल और रक्षक है, उसे छोड़ हम और किसी भगवान्को नहीं जानते। अन्तमें (समुद्र) पारकर हम बाल-क्लोफ पहुंचे, फिर वहांसे गुरजोफ, जहां हम पांच दिन ठहरे।

भगवान्की दयासे हम समुद्र पारकर, फिलिपोफकी शामसे नौ दिन पहिले कफा पहुंच गये। भगवान् ही बनानेवाला है। उसकी मर्जीसे मैंने तीन समुन्दर पार किये, आगेकी भगवान् जाने। दयालु भगवान्के नामपर, महान् प्रभु और लघु प्रभु, ईसा और पवित्रात्मा शान्ति। भगवान् बड़ा है, प्रभु महा प्रभुके बराबर कोई दूसरा भगवान् नहीं। भगवान्की महिमा, उसका आशीष। उस जैसा दूसरा नहीं, वह सर्वज्ञ है, दृश्य-अदृश्य सबका वही राजा है, ज्योति है, रक्षक है और प्रभु है। वह श्रेष्ठ और महान्

है, स्रष्टा और चित्रकार है। वह सारे पापोंका क्षमा करनेवाला है। वही सभी वस्तुओंको वढानेवाला है, हमारी अन्तरात्माओंको जानने और स्वीकार करनेवाला है। वही आकाश और पृथ्वीमें व्याप रहा है, सबकी रक्षा कर रहा है, वही सर्वोच्च, सवमहान्, सर्वदर्शी, सर्वश्रोता है। वह न्यायकारी, ममीचीन और शालीन है।
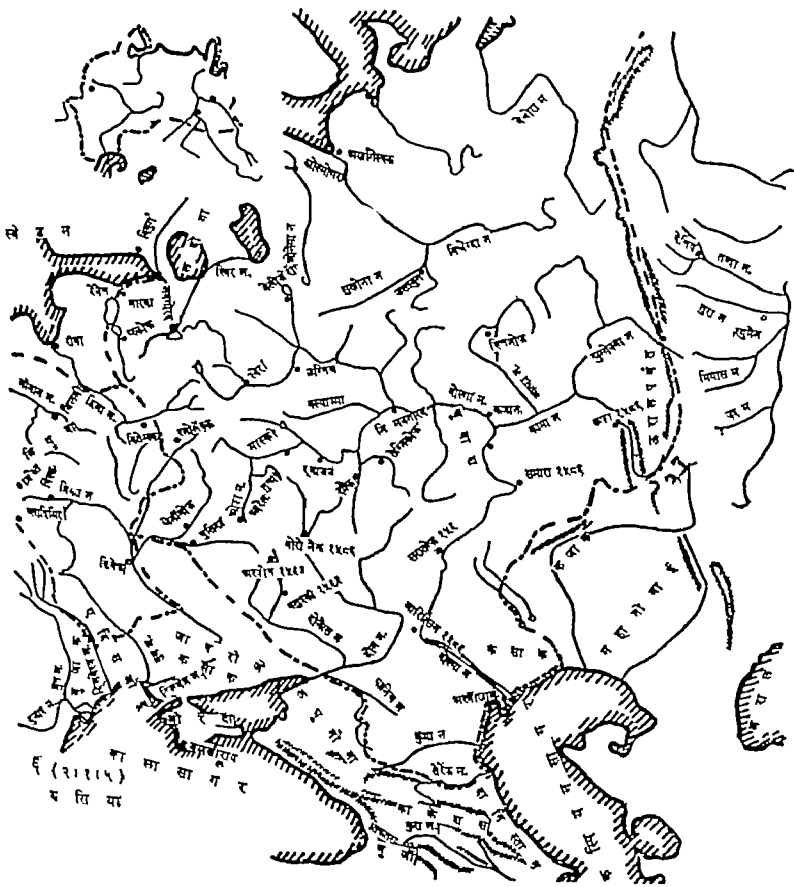
कान्स्तान्तिनोपोलके तुर्कोंके हाथमें चले जानके वाद और ग्रीक राजकुमारीसे व्याह कर लेनेपर इवान अपनेको ग्रीक सम्राटोंका सीधा उत्तराधिकारी मानने लगा। उसने विजन्तीन राजमुद्रा—दो शिर-वाले वाज—को अपनी राजमुद्रा वनाई। दरवारके समय वह रत्नजटित सिंहासनपर एक मुकुट धारण करके वैठता था, जिसे "मनोमाख" मुकुट कहते थे, और जिसके वारेमें परम्परा कहती है, कि उसे व्ला-दिमिर मनोमाखने अपने नाना ग्रीकसम्राट् कन्स्तन्तिन मनोमाखसे पाया था।

इवानने अपनी राजधानीको भी अब राजसी ढगसे सजाना शुरू किया। पहले मास्कोके सारे घर लकडीके होते थे, राजप्रासाद भी लकडीका था। इवानके समयसे पत्थरके मकानोकी वृद्धि होने लगी। इतालियन वास्तुशास्त्री रिदालफो दि फ्योरावेन्तेको वुलाकर उसने नये वास्तु-साधनोका प्रयोग कराया। विदेशी शिल्प-शास्त्रियोंने इवानके लिये जो इमारतें वनाई थी, उनमेंसे कुछ—क्रेमलिनकी दीवारें और मीनार, पत्थरके गिर्जे, पाषाण-प्रासाद तथा सुदर ग्रानोवितया पलाता—अब भी मौजूद हैं। इवान अब अपनेको सचमुच ही अभिमानी ग्रीकसम्राट् मानता था। जरा भी आज्ञा-

उल्लघनपर वह बायरोको मृत्यु या निर्वासनका दड देता था। बायर कहते थे—"जबसे महाराजुलानी सोफिया अपने ग्रीकोके साथ आई, तबसे सभी बात उलट-पुलट गई।"

२७ वासिली III, इवान III-पुत्र (१५०५–३३ ई०)

वासिलीके शासन का वही समय है, जब कि भारतम बाबर और हुमायू राज्य कर रहे थे। इस समय रूस बडी तेजीसे अपना राज्यविस्तार और शक्ति-सचय कर रहा था। जो रियासतें बापके समय अब भी स्वतत्र थी, उन्हें वासिलीने मास्कोमें मिला लिया—प्स्कोफ १२१० ई० में मास्कोके अधीन हुआ। इसीके शासनमे १५२१ ई० म र्याजन भी मास्कोका अभिन्न अग हो गया। १५१४ ई० में तीन बार तोप दागनेके बाद स्मोलेस्ककी अकल ठिकाने आ गई और वहाके बिशपने नागरिकोके साथ महाराजुल के शिविरमे आकर प्राथना की—"नगरको मत नष्ट करो, शातिपूवक इसे ले लो।" अब वासिली III रूसभमिके सारे राजाओका राजा था। समकालीन विदेशी भी लिखते है—"वासिलीकी शक्ति सारी दुनियाके राजाओसे बढकर है, वह सबके जीवन और सम्पत्तिका पूणतया स्वामी है।" मास्कोवाले खुले आम कहते थे—"हमारे राजाकी इच्छा भगवान्‌की इच्छा है।" बायर भी उसके सामने भीगी बिल्ली बन गये थे। वह जिसको कान पकडकर निकाल देता, वह चूतक करनेकी हिम्मत नही रखता था। वासिलीने नीचे तबकेके कितने ही आदमियोको अपना विश्वासपात्र बनाया था, जिसमेसे दो-तीन सब बातोमे उसके सलाहकार थे। उसके समकालीन साधु पिलोतेइने लिखा था—"मास्को दुनियाकी महान् राजधानियो—प्राचीन रोम और द्वितीय रोम कान्स्तन्तिनोपोल—का उत्तराधिकारी है, मास्को तीसरा रोम है, और चौथा कोई नही होगा।"

२८ येलेना वासिली III-पत्नी (१५३३–३८ ई०)

वासिलीने मरते वक्त सिंहासनका अधिकारी अपने तीन वषके पुत्र इवानको छोडा था। उसके बाल्यकालमें शासनकी बागडोर उसकी मा रानी येलेना वासिलियेफ-पुत्री ग्लिन्सकी-वशजाके हाथम रही। वासिली III ने बायरोकी स्वेच्छाचारिताको बहुत दबाकर देशकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेवाले इस वर्गको अधिकारच्युत कर डाला था। अब बायरोने फिरसे अपने स्थानको प्राप्त करना चाहा, लेकिन येलेना गुडिया रानी नही थी। उसने बायरोके हर प्रयत्नको व्यथ किया। पर राजा और बायर (सामन्त) एक ही वगके है, दोनोके स्वाथ एक तरहके हैं, शादी-ब्याह आदि सम्बन्ध भी उनका आपसमे होता है, इसलिये उन्हें कहातक अलग रखखा जा सकता था ? रानी अभी मुश्किलसे पाच वष शासन कर पाई थी, कि बायरोने उसे जहर देकर मार दिया।

२९ इवान IV, वासिली III-पुत्र (१५३८–८४ ई०)

राजमाताको मारकर बायरोने शक्ति अपने हाथमें ले ली और आठ वषका बालक इवान खिलौने-की तरह गद्दीपर बिठा दिया गया। लेकिन बायरोमें भी निजी स्वार्थान्धता इतनी थी, कि वह आपसमें बराबर लडते झगडते रहे। पहले राजुल शुइस्की और बेल्स्कीके बीचमें भयकर सघष हुआ और शुइस्कीके अनुयायियोंने क्रेमलमें घुसकर अपने विरोधी राजुल बेल्स्कीको गिरफ्तार कर लिया। शुइस्कीके हाथमें भी शक्ति देरतक नही रही। ग्लिन्स्कीवशने—जिसकी पुत्री राजमाता येलेना थी—अन्द्रेइ शुइस्कीको १५४३ ई०में मार डाला। बायर तीन वषतक शासन करते रहे। वह केन्द्रीकृत सरकारके विरुद्ध थे और चाहते थे, कि देश फिर छोटे-छोटे राजुलोम बट जाये। शासन क्या था, अपने भाई-भतीजो-भाजो और सहायकोमें नगरो और इलाकोको बाटना, जो जनसाधारणकी लूटका एक खुला तरीका था। घरके भीतरकी कमजोरी देखकर सुवण-ओर्दूकी शाखाओ—क्रिमिया और कजानके तारतारो—ने फिर रूसभूमिमें लूट-मार मचानी शुरू की। बायर अपनी स्वाथपूर्तिमें इतने सलग्न थे, कि वह बच्चे महा-राजुलके खाने-कपडेतकका भी ध्यान नही रखते थे। तरुण इवानने अपनी माके समयके दरबारको भी देखा था। उस समय राजसिंहासनका कितना सम्मान था ? अब उसके मालिक इस बच्चेकी कोई पर्वाह नही करता था। केवल विशेष उत्सवोके समय उसको सिंहासनपर बैठाकर सम्मान-प्रदशनका

अभिनय किया जाता था। बालक इवान मेधावी था। छोटी उमरसे ही उसने लिखना-पढना सीख लिया था। उसे किताबोके पढ़नेका बडा शौक था। स्वय सुशिक्षित सघराज मकरीने इवानके ऊपर बहुत प्रभाव डाला था। लडकपनसे ही अपनी आखोके सामने वायरोको लूटते, खून-खराबी करते देख, स्वय उपेक्षित हो इवानके स्वभावमें क्रूरता भी सन्निविष्ट हो गई थी।

ऐसे होनहार बालकको बहुत दिनोतक गुडिया बनाके नही रक्खा जा सकता था, विशेषकर जब कि वायरोमें स्वय आपसी खूनी सघर्ष चल रहे थे। सत्रह वर्ष की उमर (१५४७ ई०) में इवानने सिंहासनको सभालते हुये पूर्वजोकी "महाराजुल" उपाधिसे सन्तुष्ट न हो जारकी उपाधि स्वीकार की। इवान IV पहला रूसी जार था—जार-क्जार-कैज़र-कैसर अर्थात् रोमक सम्राट्का ही बिगडा रूप है।

वायरोने अपनी सामन्ती जागीरदारिया फिरसे स्थापित कर ली थी। उसके कारण लोगोकी बुरी हालत थी। उन्होने १५४७ ई० में मास्कोमें ग्लिन्स्की दलके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी समय भारी आग लग जानेसे नगरका बहुत-सा भाग जल गया था, जिसके कारण लोगोकी हालत और भी खराब हो गई और वह ग्लिन्स्कियोकी स्वेच्छाचारिताके खिलाफ उठ खडे हुये। वह जारकी नानी अन्ना ग्लिन्स्कयाके ऊपर जादूसे नगरमें आग लगानेका दोष लगाते थे। विद्रोहमें ग्लिन्स्की वशका एक आदमी मारा गया और बाकी जान लेकर भाग गये। जार स्वय वोरोब्योवो गाव (वर्तमान लेनिन-पर्वत) में भागकर जा छिपा।

जब विद्रोह दबा दिया गया, तो साधारण जनताकी सतान एक चतुर और ईमानदार अफसर अलेक्सी अदाशेफ शासनका मुखिया बना। अदाशेफने अपने साथ एक प्रभावशाली दरबारी पादरी सेल्वेस्तर तथा कुछ शक्तिशाली वायरोको मिला इज्ब्रान्नया रादा (वृत-परिषद्) बनाई, जिसकी रायके बिना तरुण जार कोई निर्णय नही कर सकता था।

राज्य-विस्तार—इवान IV के शासनारम्भके समय उत्तर-पूर्वी रूस एकताबद्ध हो चुका था। अब रूसका विस्तार आसपासकी जातियोको जीतकर ही किया जा सकता था। वासिली III के समयमें क्रिमियाके खानकी मददसे कजानके तारतारोने अपनेको स्वतत्र कर लिया था, इसलिये इवानको कजानके खानसे सबसे पहले भुगतना था, जिसके लिये तारतारोने रूसी भूमिपर लूट-मार मचाकर बहाना भी पैदा कर दिया था। कजान मध्य-वोलगाके ऊपर एक महत्त्वपूर्ण नगर था, जिसके विरोधी शक्तिके हाथमें रहनेपर वोलगा-कास्पियनका वणिक्पथ खतरेमें पड जाता था और पूर्वमें उराल तथा आगेके विस्तारकी गुजाइश नही रह जाती थी। उधर तुर्कीने कालासागरको अपनी झील बनाकर काकेशसतक अपनी बाह फैला ली थी। अस्त्राखान और कजानके खान भी हमेशा तुर्कीकी ओर आशा लगाये रहते थे। इस प्रकार पूरबसे रूसको खतरा भी था। इवानने पहले कजानको खतम करनेका निश्चय किया। १५५० ई० का महाभियान असफल रहा, इसपर उसने १५५१ ई०के वसतमें मारियोंकी भूमिमें वोल्गाके पहाडी किनारेपर स्वीयाजस्क नगर बनाया, जो कि कजानके सामने पडता था। मारी लोग अबतक कजानको कर देते थे, अब वह जारको कर देनेके लिये मजबूर हुये। स्वीयाजसकका दृढ दुर्ग बन जानेके बाद रूसी कजानको घेर सकते थे। कजानके तारतारोने जबर्दस्त प्रतिरोध किया, लेकिन रूसियोके पास डेढ लाख सेना थी, दूसरे उनके पास शक्तिशाली तोपखाना भी था। नगरके भीतर तीस हजार तारतार सेना थी। कुछ महीनेतक तारतारोने प्रतिरोध किया, लेकिन जब शक्तिशाली तोपोने नगरके प्राकारको उडा दिया, तो वह कहातक प्रतिरोध करते? अन्तमें २ अक्तूबर १५५२ ई०को रूसी कजानको दखल करनेमें सफल हुये। कजानके पतनके साथ तातारोका प्रतिरोध खतम नही हुआ। वह कई सालोतक लडते रहे, उनके सहायक तारतार ही नही, मारी, उदमुत, चुवाश और मोर्द्वा जैसी रूसीभिन्न जातिया भी थी। कजानके उच्छेदके बाद पहलेके खान और सामन्तोकी अधिकाश सम्पत्तिको इवानने अपने अफसरो और पादरियोमें बाट दिया और लोगोको अबदास बना दिया। कितने ही जारभक्त तारतार सामन्त अभी भी अपनी भूमिके मालिक रहे। इस प्रकार वोल्गाकी जनता चक्कीके दो पाटोंके नीचे पिसने लगी। कजानके विजयके बाद बाश्किरोने भी इवान-

की अधीनता स्वीकार की। फिर उनसे भी पूव साइवेरियाके खान यादगारने १५५५ ई० में मास्कोको कर देना स्वीकार किया। अगले साल १५५६ ई० में अस्त्राखानकी वारी आई। मास्कोकी सेनाको वहासे खानको भगानेमें कठिनाई नही हुई। अस्त्राखान नगर ले लेनेके वाद सारी वोल्गा नदी रूसके हाथमें थी। कास्पियनके तटपर वसा अस्त्राखान अव मध्य-एसिया और ईरानके साथ होनेवाले व्यापारका केंद्र वन गया। उत्तरी काकेशसके छोटे-छोटे अमीर वरावर आपसमे लडते रहते थे, जिससे इवानको मौका मिला, और उसने तेरेक नदीके किनारे एक किला वनवाना चाहा। लेकिन इवान अभी तुर्कोंसे झगडा नही मोल लेना चाहता था, इसलिये तुर्कोंके दवाव देनेपर उसने नगर वनानेका ख्याल छोड दिया। तो भी रूसी कसाक (स्वतत्र किसान) नही रुके और वह तेरेकके तटपर वरावर वने रहे। तारतार सवार लूट-मारको आमदनीका एक वैध साधन मानते थे, खासकर काफिरोके विरुद्ध वैसा करना तो पुण्यका काम था, इसलिये घोडोपर चढे वह वरावर इस ताकम रहते थे, कि कैसे रूसकी भूमिमें घुसकर वहा लूट-मार मचाई जाये। इसके लिये मास्कोको मैदानी जगहोंमें जगह-जगह फौजी चौकिया—स्तानित्सा (थाना)—स्थापित करनी पडी। स्तानित्सामें एक ऊचा मीनार या वृक्ष होता था, जिसपर वैठा एक सैनिक वरावर देखता रहता। जैसे ही दूर धूल उठती दिखाई पडती, वह उतरकर घोडे-पर चढ दूसरी स्तानित्सामे खवर देता, वहासे दूसरा सवार तीरकी तरह निकलता, इस प्रकार वहुत जल्दी ही खवर मास्कोतक पहुच जाती, और प्रतिरोधका उचित प्रवध कर दिया जाता।

कास्पियनतटको लेकर अव रूस केवल स्थलशक्ति नही रह गया था, किन्तु कास्पियन वस्तुत एक महा-सरोवर है, जिसका महासमुद्रोसे कोई सम्वन्ध नही है। इस कमीको दूर करनेके लिये वाल्तिक समुद्र-तटपर अधिकार करना जरूरी था, जिसमें कि रूसका पश्चिमी युरोपके देशोसे सीधा सवध हो जाये। जव वाल्तिकतट (लिवोनिया) की ओर इवानने हाथ वढाया, तो लिवोनियाके पडोसी लियुवानिया, स्वीडन और डेन्माक चुप रहनेवाले नही थे। पर जारकी शक्ति (धन और जनका वल) इतनी वढ चुकी थी, कि समुद्रपारसे आकर लिवोनियाको मदद देना मुश्किल था। जमन धमसेनाने अच्छी तरह डटकर प्रतिरोध किया, लेकिन अूनेवाल्डमें उसे जो हार खानी पडी, उसके वाद वह फिर सभल नही सकी। जनवरी १५५८ ई० में इवानने लिवोनियाके विरुद्ध युद्ध छेड दिया। कितने ही महीनोकी लडाईके वाद लिवोनियाका वहुत ही महत्त्वपूण वदरगाह रीगा रूसियोके हाथमें चला गया। उसके वाद यूरियेफ नगरकी वारी आई और आगे १५६१ ई० तक सारी लिवोनिया इवानके हाथोंमें थी। सामने खतरेको देखकर पडोसी राज्य रेवेल (तल्लिन) ने स्वीडन और डेनमार्कको अपना सरक्षक वनाया और अवशिष्ट लिवोनियाने पोलराजा तथा लियुवानियाके शासककी शरणमें जाना पसन्द किया। इस तरह लिवोनिया कई राज्योमें वट गया। अव रूसको पोलन्द, स्वीडन और डेन्मार्कके साथ वीस वपतक लडना था।

लिवोनियामें वरावर सफलता ही नही होती रही, वल्कि कभी-कभी रूसियोको वहा हानि भी उठानी पडी थी। ऐसे समयमें वायर फिर अपना सर उठाना चाहते थे। वह जारके हाथमें सारी शक्ति नही रहने देना चाहते थे। इवान इस तरहके घरेलू झगडे पसन्द नही कर सकता था, उसने १५६५ ई० में शासन-प्रवधको नये तरहसे सगठित करना चाहा। वायरोपर उसको विश्वास नही था। एक दिन यकायक वह अपने विश्वास-पात्र शरीर-रक्षकोके साथ मास्को छोडकर वहासे सौ किलोमितरपर अवस्थित दुग-वद्ध अलेक्सेन्द्रोवा-स्लवोदोवा गावमें चला गया। वहासे उसने सघराजको पत्र लिख वायरोकी विश्वास-घातकी तालिका वनाकर भेजते हुये सिंहासन छोड देनेकी घोषणा की। इसपर मास्कोके नागरिको, पादरियो और कितनेही वायरोने जारके पास जाकर मास्को लौटचलनेके लिये वडी प्रार्थनाकी। इवानने स्वीकार किया, और मास्को लौटकर उसने विश्वासघाती वायरोको दड दे राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सवोर) की वैठक वुलाई। उसके साथ ही उसने "ओप्रेच्निना" (पृथक् राज्य) के नामसे अपने विश्वास-पात्रोंका एक और सगठन तैयार किया, जो जारके हुकुमको वजा लानेके लिये वरावर तैयार रहती थी। इवानने अपने सारे राज्यको दो भागोमें विभक्त किया—जेम्श्चिना (भूमिक) जिसका शासन वायरोकी दूमा (ससद्) जारके अधीन रहकर करती थी और ओप्रेच्निना, जो सीधे जारके अधीन

थी। ओप्रेच्निनावाली भूमिमें राज्यके सबसे अच्छे तथा केंद्रीय प्रदेश थे, जिनका सैनिक और आर्थिक महत्त्व सबसे ज्यादा था। स्वय मास्को नगरको भी इसी तरह दो हिस्सोमें बाट दिया गया था। जेम्स्चिना भागमें बायर और ओप्रेच्निना भागमे वेवोद (राजपुरुष) दोनो साथ-साथ काम करते थे। ओप्रेच्निनाकी राजधानी अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोबोदोवा थी, जहापर जार अपनेको अधिक सुरक्षित समझता था। ओप्रेच्निनाका काम था सामन्तो (बायरो) की शक्तिको कमजोर करना और छोटे-छोटे भूमिपति-सरदारोका एक वर्ग तैयार करना।

जार इवान निरकुशताको राजाका आवश्यक अधिकार समझता था। उसका कहना था—राजशक्ति भगवान्की ओरसे मिली है। जारकी आज्ञाका उल्लघन करना महापाप है। जारकी सभी प्रजा उसकी सेवक है, उसको अपनी प्रजाको क्षमा करने या मारनेका अधिकार है। जारकी शक्तिको सीमित करना अपराध है, क्योकि इसके कारण देशकी प्रतिरक्षा खतरेमे पड जाती है।

इवान अपनी शक्तिको इस तरह दृढ करते हुये रूसकी आर्थिक और सैनिक शक्तिको मजबूत करता जा रहा था। इसी समय १५७१ ई० मे क्रिमियाके खान दौलत गिराईने एकाएक आक्रमण कर दिया और प्रतिरोधका मौका दिये बिना क्रेमलिन छोड सारे मास्कोको जलाकर भारी सख्यामे बदियो-को दास बनाकर बेचनेके लिये पकड ले गया। दूसरे साल १५७२ ई० में जब फिर उसने अपनी लूटमार-को दुहराना चाहा, तो ओका नदीपर ही जेम्स्की वेवोदोने रोककर मास्कोको बचा लिया। जेम्स्की वेवोद बायर थे। उनकी इस सेवाको देखकर जारको अब ओप्रेच्निना की अवश्यकता नही मालूम हुई और उसी साल उसने उसे तोड दिया। इवानने रूसमें एक धर्म, एक नाप-तोल और एक भूमि-नाप स्थापित कर रूसकी एकताको और आगे बढाया।

१५७६ ई० में पोलन्दके राजा सिगिस्मद अगस्तसके मरनेके बाद स्तिफन बथोरी राजा निर्वाचित हुआ। उसने जमन और हुगेरियन सैनिकोकी भरती तथा तोपखानेके विकासद्वारा अपनी शक्तिको बढाकर १५७९ ई०में रूसके जीतनेके लिये अभियान किया। १५८१ ई०में एक लाख सेनाके साथ उसने प्स्कोफको घेर लिया, लेकिन सारी शक्ति लगाकर भी वह उसे ले नही सका। इवानको केवल पोलन्दसे ही लडना नही था, बल्कि स्वीडनने भी इसी समय लिवोनियाके लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्वीडिश सेनाको आसानीसे सफलता मिली। यद्यपि इवान अपने राज्यकी प्रतिरक्षामें सभी जगह असफल रहा, लेकिन प्स्कोफके प्रतिरोधने उसे अवसर दे दिया, कि अच्छी शर्तोंके साथ अपने शत्रुओंसे समझौता कर ले। इवानने लिवोनियाको छोड दिया और बथोरीने रूसी नगरोपरसे अपना अधिकार हटा लिया। इसी तरह स्वीडनके सामने भी उसे समझौता करना पडा। इस प्रकार उसका पचीस साल (१५५८–८३ ई०) का सघर्ष अधिकतर बेकार गया, जब कि १५८४ ई० में इवान मरा।

इवान सुशिक्षित, दूरदर्शी और कुशल शासक था। वह अच्छा लिख लेता था। लेकिन, कभी-कभी उसपर सनक सवार हो जाती, तो वह क्रूरकर्मा सिद्ध होता, जिसके ही कारण लोगोने उसका नाम ग्रोज्नी (क्रूर) रख दिया था। एक बार क्रोधांध हो उसने अपने बेटे राजकुमार इवानपर डडा चला दिया, जिससे वह मर गया। इवानका शासन रूसके इतिहासके लिये बडा महत्त्व रखता है, और देशके शक्तिशाली और एकताबद्ध करनेमें उसकी सेवाओको आज भी बडे आदरसे याद किया जाता है।

येरमकद्वारा साइबेरिया-विजय—इवानके शासनका एक महत्त्वपूर्ण काम है, रूसका साइबेरियाकी ओर विस्तार। हम कह आये है, कि वासिली III और उसके पिताके समय ही रूसका विस्तार उरालकी जनजातियोकी ओर हो चुका था। साइबेरियाकी बहुमूल्य समूरी छालें सोना-जवाहरके दाम बिकती अपना विशेष आकर्षण रखती थी। इसलिये बहुतसे साहसी रूसी शिकारी और व्यापारी उरालकी ओर जा चुके थे, इन्हीमें नवोगोरदसे आया एक व्यापारिक परिवार स्त्रोगनोफ भी था। वस्तुत स्त्रोगनोफका पूर्वज पहले सुवर्ण-ओर्दूका एक तातार मिर्जा (राजपुरुष) था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर उसका नाम स्पीरिदोन पडा। चौकठेमें मढी गोलियो (अबकस) द्वारा गिनती करनेका

की अधीनता स्वीकार की। फिर उसने भी पूर्व साइबेरियाके खान यादगारने १५५५ ई० में मास्कोको कर देना स्वीकार किया। अगले साल १५५६ ई० में अस्त्राखानकी बारी आई। मास्कोकी सेनाको वहाँसे खानको भगानेमें कठिनाई नहीं हुई। अस्त्राखान नगरके लेनेके बाद सारी वोल्गा नदी रूसके हाथमें थी। कास्पियनके तटपर बसा अस्त्राखान अब मध्य एसिया और ईरानके साथ होनेवाले व्यापारका केन्द्र बन गया। उत्तरी काकेशसके छोटे छोटे अमीर बराबर आपसमें लड़ते रहते थे, जिससे इवानको मौका मिला, और उसने तेरेक नदीके किनारे एक किला बनवाना चाहा। लेकिन इवान अभी तुर्कोंसे झगड़ा नहीं मोल लेना चाहता था, इसलिये तुर्कोंके दबाव देनेपर उसने नगर बनानेका ख्याल छोड़ दिया। तो भी रूसी कज्जाक (स्वतंत्र किसान) नहीं रुके और वह तेरेकके तटपर बराबर बने रहे। तातार सवार लूट-मारको आमदनीका एक वैध साधन मानते थे, खासकर काफिरोंके विरुद्ध वैसा करना तो पुण्यका काम था, इसलिये घोड़ोंपर चढ़े वह बराबर इस ताकमें रहते थे, कि कैसे रूसकी भूमिमें घुसकर वहाँ लूट-मार मचाई जाये। इसके लिये मास्कोको मैदानी जगहोंमें जगह-जगह फौजी चौकियाँ—स्तानित्सा (थाना)—स्थापित करनी पड़ीं। स्तानित्सामें एक ऊँचा मीनार या वृक्ष होता था, जिसपर बैठा एक सैनिक बराबर देखता रहता। जैसे ही दूर धूल उठती दिखाई पड़ती, वह उतरकर घोड़ेपर चढ़ दूसरी स्तानित्सामें खबर देता, वहाँसे दूसरा सवार तीरकी तरह निकलता, इस प्रकार बहुत जल्दी ही खबर मास्कोतक पहुँच जाती, और प्रतिरोधका उचित प्रबंध कर दिया जाता।

कास्पियनतटको लेकर अब रूस केवल स्थलशक्ति नहीं रह गया था, किन्तु कास्पियन वस्तुतः एक महासरोवर है, जिसका महासमुद्रोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कमीको दूर करनेके लिये बाल्तिक समुद्र-तटपर अधिकार करना जरूरी था, जिसमें कि रूसका पश्चिमी युरोपके देशोंसे सीधा संबंध हो जाये। जब बाल्तिकतट (लिवोनिया) की ओर इवानने हाथ बढ़ाया, तो लिवोनियाके पड़ोसी लियुवानिया, स्वीडन और डेन्मार्क चुप रहनेवाले नहीं थे। पर जारकी शक्ति (धन और जनका बल) इतनी बढ़ चुकी थी, कि समुद्रपारसे आकर लिवोनियाको मदद देना मुश्किल था। जर्मन धर्मसेनाने अच्छी तरह डटकर प्रतिरोध किया, लेकिन अर्नेवाल्डमें उसे जो हार खानी पड़ी, उसके बाद वह फिर संभल नहीं सकी। जनवरी १५५८ ई० में इवानने लिवोनियाके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। कितने ही महीनोंकी लड़ाईके बाद लिवोनियाका बहुत ही महत्त्वपूर्ण बंदरगाह रीगा रूसियोंके हाथमें चला गया। उसके बाद यूरियेफ नगरकी बारी आई और आगे १५६१ ई० तक सारी लिवोनिया इवानके हाथोंमें थी। सामने खतरेको देखकर पड़ोसी राज्य रेवेल (तल्लिन) ने स्वीडन और डेनमार्कको अपना संरक्षक बनाया और अवशिष्ट लिवोनियाने पोलराजा तथा लियुवानियाके शासककी शरणमें जाना पसन्द किया। इस तरह लिवोनिया कई राज्योंमें बँट गया। अब रूसको पोलन्द, स्वीडन और डेन्मार्कके साथ बीस वर्षतक लड़ना था।

लिवोनियामें बराबर सफलता ही नहीं होती रही, बल्कि कभी-कभी रूसियोंको बड़ा हानि भी उठानी पड़ी थी। ऐसे समयमें बायर फिर अपना सर उठाना चाहते थे। वह जारके हाथमें सारी शक्ति नहीं रहने देना चाहते थे। इवान इस तरहके घरेलू झगड़े पसन्द नहीं कर सकता था, उसने १५६५ ई० में शासन-प्रबंधको नये तरहसे संगठित करना चाहा। बायरोंपर उसको विश्वास नहीं था। एक दिन यकायक वह अपने विश्वास-पात्र शरीर-रक्षकोंके साथ मास्को छोड़कर वहाँसे सौ किलोमितरपर अवस्थित दुर्ग-बद्ध अलेक्सेन्द्रोवा-स्लबोदोवा गाँवमें चला गया। वहाँसे उसने संघराजको पत्र लिख बायरोंकी विश्वास-घातकी तालिका बनाकर भेजते हुये सिंहासन छोड़ देनेकी घोषणा की। इसपर मास्कोके नागरिकों, पादरियों और कितनेही बायरोंने जारके पास जाकर मास्को लौटचलनेके लिये बड़ी प्रार्थना की। इवानने स्वीकार किया, और मास्को लौटकर उसने विश्वासघाती बायरोंको दंड दे राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सबोर) की बैठक बुलाई। उसके साथ ही उसने "ओप्रेच्निना" (पृथक् राज्य) के नामसे अपने विश्वास-पात्रोंका एक और संगठन तैयार किया, जो जारके हुकुमको बजा लानेके लिये बराबर तैयार रहती थी। इवानने अपने सारे राज्यको दो भागोंमें विभक्त किया—ज़ेम्स्चिना (भूमिक) जिसका शासन बायरोंकी दूमा (संसद्) जारके अधीन रहकर करती थी और ओप्रेच्निना, जो सीधे जारके अधीन

थी। ओप्रेच्निनावाली भूमिमे राज्यके सवसे अच्छे तथा केंद्रीय प्रदेश थे, जिनका सैनिक और आर्थिक महत्त्व सवसे ज्यादा था। स्वय मास्को नगरको भी इसी तरह दो हिस्सामे वाट दिया गया था। जेम्स्चिना भागमें वायर और ओप्रेच्निना भागम वेवोद (राजपुरुष) दोनो साथ-साथ काम करते थे। ओप्रेच्निनाकी राजधानी अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोवोदोवा थी, जहापर जार अपनेको अधिक सुरक्षित समझता था। ओप्रेच्निनाका काम था सामन्तो (वायरो) की शक्तिको कमजोर करना और छोटे-छोटे भूमिपति-सरदारोका एक वग तैयार करना ।

जार इवान निरकुशताको राजाका आवश्यक अधिकार समझता था। उसका कहना था—राजशक्ति भगवान्की ओरसे मिली है। जारकी आज्ञाका उल्लघन करना महापाप है। जारकी सभी प्रजा उसकी सेवक है, उसको अपनी प्रजाको क्षमा करने या मारनेका अधिकार है। जारकी शक्तिको सीमित करना अपराध ह, क्योकि इसके कारण देशकी प्रतिरक्षा खतरेमें पड जाती है।

इवान अपनी शक्तिको इस तरह दृढ करते हुये रूसकी आर्थिक और सैनिक शक्तिको मजबूत करता जा रहा था। इसी समय १५७१ ई० म क्रिमियाके खान दौलत गिराईने एकाएक आक्रमण कर दिया और प्रतिरोधका मौका दिये विना क्रेमलिन छोड सारे मास्कोको जलाकर भारी सख्यामे वदियो-को दास वनाकर वेचनेके लिये पकड ले गया। दूसरे साल १५७२ ई० में जव फिर उसने अपनी लूटमार-को दुहराना चाहा, तो ओका नदीपर ही जेम्स्की वेवोदोने रोककर मास्कोको वचा लिया। जेम्स्की वेवोद वायर थे। उनकी इस सेवाको देखकर जारको अव ओप्रेच्निना की अवश्यकता नही मालूम हुई और उसी साल उसने उसे तोड दिया। इवानने रूसमें एक धर्म, एक नाप-तोल और एक भूमि-नाप स्थापित कर रूसकी एकताको और आगे वढाया ।

१५७६ ई० मे पोलन्दके राजा सिगिस्मद अगस्तसके मरनेके वाद स्तिफन वथोरी राजा निर्वा-चित हुआ। उसने जमन और हुगेरियन सैनिकोकी भरती तथा तोपखानेके विकासद्वारा अपनी शक्तिको वढाकर १५७९ ई०में रूसके जीतनेके लिये अभियान किया। १५८१ ई०में एक लाख सेनाके साथ उसने प्स्कोफको घेर लिया, लेकिन सारी शक्ति लगाकर भी वह उसे ले नही सका। इवानको केवल पोलन्दसे ही लडना नही था, वल्कि स्वीडनने भी इसी समय लिवोनियाके लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्वीडिश सेनाको आसानीसे सफलता मिली। यद्यपि इवान अपने राज्यकी प्रतिरक्षामें सभी जगह असफल रहा, लेकिन प्स्कोफके प्रतिरोधने उसे अवसर दे दिया, कि अच्छी शर्तोंके साथ अपने शत्रुओसे समझौता कर ले। इवानने लिवोनियाको छोड दिया और वथोरीने रूसी नगरोपरसे अपना अधिकार हटा लिया। इसी तरह स्वीडनके सामने भी उसे समझौता करना पडा। इस प्रकार उसका पचीस साल (१५५८–८३ ई०) का सघष अधिकतर वेकार गया, जव कि १५८४ ई० में इवान मरा।

इवान सुशिक्षित, दूरदर्शी और कुशल शासक था। वह अच्छा लिख लेता था। लेकिन, कभी-कभी उसपर सनक सवार हो जाती, तो वह क्रूरकर्मा सिद्ध होता, जिसके ही कारण लोगोने उसका नाम ग्रोज्नी (क्रूर) रख दिया था। एक वार क्रोधाध हो उसने अपने वेटे राजकुमार इवानपर डडा चला दिया, जिससे वह मर गया। इवानका शासन रूसके इतिहासके लिये वडा महत्त्व रखता है, और देशके शक्तिशाली और एकतावद्ध करनेमें उसकी सेवाओको आज भी वडे आदरसे याद किया जाता है।

येरमकद्वारा साइवेरिया-विजय—इवानके शासनका एक महत्त्वपूर्ण काम है, रूसका साइवेरियाकी ओर विस्तार। हम कह आये हैं, कि वासिली III और उसके पिताके समय ही रूसका विस्तार उरालकी जनजातियोकी ओर हो चुका था। साइवेरियाकी वहुमूल्य समूरी छालें सोना-जवाहरके दाम विकती अपना विशेष आकर्षण रखती थीं। इसलिये वहुतसे साहसी रूसी शिकारी और व्यापारी उरालकी ओर जा वसे थे, इन्हीमें नवोगोरदसे आया एक व्यापारिक परिवार स्त्रोगनोफ भी था। वस्तुत स्त्रोगनोफका पूवज पहले सुवर्ण-ओर्दूका एक तारतार मिर्जा (राजपुरुष) था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर उसका नाम स्पीरिदोन पडा। चौकठेमें मढी गोलियो (अवकस) द्वारा गिनती करनेका

लिये भेंट देकर विदा किया। येरमककी चालको कुचुमने समझ लिया और रूसी पोशाकमें लौटे कुतु-गाईकी बातोंपर विश्वास न कर सेना जमा करनी शुरू की।

मई १५८१ ई० में येरमक-दलने तुरासे आगे प्रस्थान किया। थोड़ा ही आगे जानेपर ६ तार-तार-राजकुमारोंके अधीन आई सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। विजय कसाकोंके साथ रही। उन्होंने बड़ी निष्ठुरतापूर्वक शत्रुओंको कतल किया। लूटका जो माल हाथ आया, उसे बाकी बचे हजार कसाक साथ नहीं ले जा सकते थे। उन्होंने बचे मालको जमीनमें गाड़ दिया और फिर नावपर तोबोल नदीसे आगे बढ़े। नदीके ऊँचे किनारोंपर भुज वृक्षोंके जंगल थे, जिसमें छिपकर तारतार लड़ते, लेकिन बन्दूकोंके सामने उन्हें भागना पड़ता। आगे बढ़नेपर तोबोलनदी जहां पतली हो गई वहां तारतारोंने जंजीर बांधकर नावोंको रोकनेकी कोशिश की। येरमक वहां १६ जुलाईको पहुंचा। तारतार यसाउल अलीशेरकी एक भी न चली और येरमक उन्हें मारता-पीटता आगे निकल गया। अन्तमें वह तोबोल और तावदा नदीके संगमपर पहुंचे, जहांसे कि रूसका व्यापार-मार्ग जाता था। प्रस्थान करते वक्त येरमक-दलने यहींतक आनेका निश्चय किया था। लेकिन येरमक उतनेसे सन्तुष्ट होनेवाला नहीं था। आठ दिन वहां ठहरकर उसने कुचुमके राज्यके बारेमें और जाननेके वास्ते फिर आगेके लिये प्रस्थान किया। कुचुमने तारतारों, ओस्तियाकों और वोगुलोंकी एक सेना जमा कर उसे महमेतकुलके अधीन प्रतिरोध करनेके लिये भेजा, राजधानी सिबिरकी रक्षाके लिये नई खाई बनवाई और पास-पड़ोसके तारतार अमीरोंको भी अपने नगरोंको दुर्गबद्ध करनेके लिये कहा। चुवास-पर्वतके पास इर्तिश नदीपर कुचुमने मोर्चाबंदी कराई। येरमक जब तावदासे आगे बढ़ते मिर्जाबाखान-गांव (बाखान्स्की-युर्त) में पहुंचा, तो महमेतकुल वहां लड़नेके लिये तैयार था। यद्यपि महमेतकुलके पास दसगुने (दस हजार) सवार थे, लेकिन पांच दिनके युद्धके बाद उसे बुरी तरहसे हारना पड़ा। येरमकके सारे अभियानका यही सबसे बड़ा युद्ध था। बारूदी हथियारोंके सामने तीर-धनुषकी क्या पेश जाती? तारतारोंने कुछ नीचे तुरवाके संगमपर फिर असफल प्रतिरोधकी कोशिश की। इसके आगे तोबोल और इर्तिशके संगमसे १६ वर्स्त पहले एक सरोवरपर फिर कुचुमके दर्बारी कराचिनके नेतृत्वमें तारतार जमा थे। उनकी संख्या देखकर कसाक कुछ भयभीत हो लौटनेकी सोचने लगे, लेकिन एक वोगोल बूढ़ेने तारतारोंकी कमजोरीको बतलाकर उनकी हिम्मत बढ़ाई। इस प्रकार येरमक-दल लड़ते-लड़ते आगे बढ़ता गया। १२ अगस्त १५८१ ई० तक अब उनके पास लूटमें बहुत भारी परिमाणमें सोना, चांदी मोती, जवाहिर, पशु, अनाज और मधु आ गया था। इसी समय ग्रीक ईसाई सम्प्रदायके अनुसार चौदह दिनका व्रत आया। येरमकने चौदह दिनकी जगह चालीस दिन व्रत रखनेका हुकम दिया।

२६ सितम्बरको फिर कसाकोंने प्रस्थान किया। अब वह इर्तिश नदीमें जा रहे थे। उन्होंने तारतार-कुमार अतिक्की बस्ती (साउस्त्रोफनी) को आसानीसे ले लिया। सामान नावोंपर लदा था। संख्या भी कम हो गई थी। वह सोचने लगे लौटें या आगे बढ़ें। अन्तमें उन्होंने आगे बढ़नेका ही निश्चय किया। अब वह खानके राज्यके गर्भमें पहुंच रहे थे। कुचुम अपने लोगोंके साथ चुवासके दुर्गबद्ध प्रदेशमें प्रति-रोधके लिये तैयार था। कुचुमका आक्रमण इतना जबर्दस्त था, कि येरमक और कोल्जोफ भी "भग-वान् बचाये" चिल्लाते आगे बढ़े। तारतार अपने (शायद अंधे) सरदार को घेरे हुये खड़े थे, इमाम और मुल्लाह "या मुहम्मद" पुकार रहे थे। कसाक मोर्चेके तीन खुले स्थानोंकी ओर दौड़े। महमेतकुल लड़ाईमें घायल हुआ था, जिसे इर्तिशपर नावद्वारा पहुंचाया गया, बाकी सेना हताश हो भागने लगी—भागनेवालोंमें सबसे पहले ओस्तियाक सरदार थे, उनके बाद तारतार। कुचुम कुछ खजानेके साथ इर्तिशकी शाखा इसिम नदीकी ओर भागा। इस युद्धमें एक सौ सत्तर रूसी मारे गये, जिनके लिये बहुत पीछेतक तबोलस्क नगरके गिर्जामें विशेष प्रार्थना की जाती थी। कुचुमने कजान या बुखारासे लोहेकी दो तोपें मंगवाई थीं, जिन्हें भागते वक्त उसने इर्तिशमें फेंक दिया था। कसाकोंने निकालकर उन्हें विजयकी सौगात बनाया। चुवाश, विजिक, सुसगन, अबालक नगरोंके तारतार-अमीर कुचुमके साथ भाग गये। कुचुम भागते समय थोड़ी देरतक तोबोल नदीके तटपर अविस्यत यालुतुरामें ठहरा था।

७ नम्बर १५८१ ई०को येरमक सदलबल राजधानी सिबिरमें दाखिल हुआ। वहाकी छोटी कोठरियोंमें मुश्किलसे खान और उसके अनुचर रह सकते थे। राजधानीकी एक ओर इर्तिश नदी और दूसरी ओर सिबिरका नामकी एक छोटी नदिका बह रही थी, बाकी दो तरफ घुस्मकी मोरचेबंदी थी। मकान सारे लकडीके थे, इसलिये पीछे उनका कोई अवशेष नही रह गया। खानकी राजधानीमें समूरी छाल तथा दूसरी बहुमूल्य वस्तुयें भारी परिमाणमे मिली, लेकिन आहारकी कोई चीज नही प्राप्त हुई।

विजयके तीन दिन बाद देमियान्का नदीसे होते एक ओस्तियाक सरदार येरमकके पास सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये आया। वह अपने साथ समूर, मछली तथा दूसरी खाद्य वस्तुयें ले आया था। येरमक ने थोडासा कर लेकर खातिर-सम्मान प्रदर्शन करके उसे लौटा दिया। धीरे-धीरे भय छूट गया और इर्तिश तथा तोबोल-उपत्यकाओंके और बहुतसे कबीले भेंट ले-लेकर पहुचने लगे। लेकिन, अभी सिबिरखानने हथियार रख नही दिया था। अन्नके अभावमें मछली रूसियोंका प्रधान खाद्य थी। बीस रूसी मछली मारने गये थे। महमतकुलने एकाएक आक्रमण करके उन्हे मार डाला। येरमकने पीछा करके महमतकुल और उसके आदमियोको इर्तिश नदीके तटपर अवस्थित शम्मिन्स्की गावमे पकडकर घोर बदला लिया। कुछ ही आदमी अपने सरदारके साथ वहासे बच निकले। इस विजयके बाद अमीर इशबरदीने येस्केल्बिनियान (तावदा) झीलसे आकर अधीनता ही नही स्वीकार की, बल्कि और छोटे-छोटे राजाओंसे अधीनता स्वीकार करानेमें रूसियोंकी सहायता की। सुकलेत (शायद वोगल) सरदारने भी छालोंके रूपमें कर प्रदान किया।

सिबिर-विजयकी खबर देनेके लिये येरमकने अपने साथी इवान कोल्जोफको मास्को भेजा, जिसके साथ कुचुमके अधीनता स्वीकार करनेका पत्र भी था। कोल्जोफ जाडेके मध्यमें बर्फवाला जूता पहने, समूरके कोटसे शरीर ढाके लम्बी-पतली बेपहियेंकी गाडीको कुत्तो और बारहसिंगोंसे खिचवाते इशबरदीको पथप्रदर्शक बना तावदासे पहाडोंके रास्ते होते चेरदिन पहुचा।

इससे कुछ पहले चेरदिनको एक वोगल सरदारने लूटा था। वहाके कमाण्डर वासिली पेलेपेलिश्चिनने जारके पास शिकायत भेजी थी, कि स्त्रोगोनोफोने दोनवाले विद्रोही कसाकोको शरण दी है, जिन्होंने वोगलोंको लूटा, उसीसे नाराज होकर उन्होने हमारे ऊपर आक्रमण किया। इसपर जार इवानने नाराज हो २८ नवम्बर १५८२ ई० को स्त्रोगोनोफोके पास सख्त पत्र लिखकर येरमक तथा उसके साथियोको बुरा-भला कहा था। लेकिन इसके थोडे ही समय बाद जब कोल्जोफने अपने साथियोंके साथ मास्को पहुचकर सिबिर-विजयकी खुशखबरी दी, तो जारने अपनी बातको वापस ले लिया और दो मूल्यवान् कवच, एक चादीका प्याला, अपने पहननेका एक समूरी चोगा, तथा कितने ही और कपडे येरमकके लिये और दूसरे इनाम उसके साथियोंके लिये भेजकर कोल्जोफको लौटाया।

महमतकुल अभी भी हाथ नही आया था। १५८२ ई० के शुरूमें पता लगते ही येरमकने साठ सैनिकोंको उसपर अचानक हमला करनेके लिये भेजा। इर्तिशके किनारेसे नातिदूर तुलार झीलके पास, जहा पीछे कुलारेप्स्कया स्लोबोदा गाव बसा, एक जगह डेरा डाले पडे महमतकुलपर कसाक टूट पडे। अपने बहुतसे आदमियोंको मरवाकर महमतकुल बदी बना। कुचुमके विरुद्ध महमतकुल अच्छा जामिन मिला, यह समझकर येरमक बहुत खुश हुआ, और उसने उसे बडी खातिरके साथ सिबिर नगरमें अच्छी तरह रखा। कुचुम भागकर इशिम नदीकी ओर चला गया। वही सिबिरके पुराने खान वेग-फुलातके पुत्र सैदियतने बुखारासे लौटते समय कसाकोंसे मेल करके अपने पिताके शत्रुपर आक्रमण कर दिया। तबतक सबसे शक्तिशाली अमीर मिर्जा कराचा भी कुचुमका साथ छोड चूलिम्स्कोये सरोवर-पर चला गया था। सैदियतके आक्रमणने कुचुमकी हालत और बुरी कर दी।

१५८२ ई० के बसतमें येरमकने पचास सैनिकोंके साथ बोगदान ब्रियास्गाको इर्तिशके तारतारो तथा ओस्त्रियाकोंसे कर उगाहनेके लिये भेजा। तारतारोंने प्रतिरोध किया। उनकी गढी अरिन्द-

सियनाके तटपर थी। कसाकोंने आक्रमण करके उसे तोट दिया। यह तारतार अभी भी मुसलमान नही थे। वह अपनी खून लगी तलवारको चूमते थे। सैनिकोने वहासे वहुतसे छाले और रसद येरमकके पास भेजी। फिर आगे बढते हुये कितने ही और कबीलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। तुरतेस नदीके तारतार तथा पडोसी उवाती तारतारोने भी अधीनता स्वीकार की। इर्तिशके किनारेके उग्रोने भी कर देना स्वीकार किया। कसाक-टुकडी इर्तिशके साथ-माय ओव नदीतक जा फिर सिविर-नगरमें लौट आई। रास्तेमें उन्हें कितनी ही वार लडना पडा, लेकिन उनका एक भी आदमी नुकसान नही हुआ।

१५८२ ई० की गर्मियोको येरमकने सिविरमें विताया। फिर महमतकुलके साथ बहुतसी भेंट और शुल्ककी वस्तुयें देकर उसने मास्को दूतमडल भेजा। १५६३ ई० में भ्रियाजगाने जो रास्ता पकडा था, उसी रास्ते वह इर्तिशके नीचे ओवकी ओर चले। आगे तावदा नदीके तारतारोंसे भारी लडाई हुई, झील लाशोके मारे गदी हो गई, इसीलिये उसका नाम पगश्नुये मोजेरो पडा।

जारने नवविजित सिविर (साइवेरिया) देशपर शासन करनेके लिये पाच सौ कसाकोंके साथ सेमिओन दिमित्रि-पुत्र वोल्वोव्स्कीको २२ मई १५८३ ई० को मास्कोसे रवाना किया। वह नवम्बरमें सिविर पहुचा। इसके वाद ही साइवेरियामें अकाल पड गया। येरमकका अभियान इतना निष्ठुर और ध्वसकारी था, कि वहा अन्न मिलना मुश्किल हो गया। कितने ही कसाक भूखके मारे मर गये। उसके वाद चमरोगने आफत ढाई। वोल्खोव्स्की स्वय मौतका शिकार हुआ। मिर्जा कराचाने कजाकोंसे सुरक्षित रखनेके वहाने कोल्जोफ और उसके चालीस साथियोंको वुलाकर मार डाला। तारतारो और ओस्तियाकोने अव आम विद्रोह कर दिया, जिसके कारण कितने ही कर-उगाहनेवाले कसाक मार डाले गये। कराचाने अन्तमें सिविर नगरको भी घेर लिया। येरमकके ऊपर नगरकी रक्षाका भार छोडकर अधिकाश कसाकोंने रातके वक्त सोसकानमें पडे कराचाके डेरेपर छापा मारकर उसे दखल कर लिया। मारे जानेवालो में कराचाके दो पुत्र भी थे, लेकिन कराचा भाग निकलनेमे सफल हुआ। फिर सेना जमा करके तारतारोने हमला किया। उस वक्त दुश्मनकी गाडियोंसे मोरचावदी करके रूसियोने उनका मुकाविला किया। काफी हानि उठानेके बाद तारतार भाग गये। अब रूसियोकी धाक चारो ओर जम चुकी थी। पास-पडोसके तारतारो और ओस्तियाकोने समझ लिया, कि प्रतिरोध करनेसे कोई फायदा नही हो सकता, इसलिये उन्होने अधीनता स्वीकार की, सिविरमें अव खाने-पीनेकी चीजें काफी आने लगी।

साइवेरियाका नाम इसी सिविर नगरके कारण पडा, यद्यपि रूसी भाषामें सिविरका अर्थ उत्तर (दिशा) भी है। सिविर नगर साइवेरियाके कीमती समूरोके व्यापारका बडा केंद्र था, इसलिये वहा वुखाराके व्यापारी भी आया करते थे। मुमकिन है, साइवेरियाके समूर और अल्ताईके सोनेके लिये मध्य-एसियासे यहा आनेवाला माग वही पुराना वणिक्‌पथ हो, जिससे वुखाराके वाणिज्य-सार्थ यहा आया करते थे। वुखाराके कारवाके आनेका समय था। पता लगा, कुचुम उसपर हमला करना चाहता है। येरमकने कारवाकी रक्षाथ डेढ सौ सैनिक भेजे और स्वय भी वगाई नदीके सगमतक गया। कारवा नही आया। येरमक अपने दलको लेकर वेगुइशेन्स्कोये सरोवरपर अवस्थित तारतार-राजकुमार वेगुइशके गढपर आक्रमण किया, प्रतिरोध करनेमें प्राय सारे तारतार मारे गये। इसके वाद येरमकने शमसा और कियाचिक, साला, कोर्दकपर चढ़ाई की। सालामें थोडा-सा प्रतिरोध हुआ। कोर्दकके आदमियोने भागकर जगलमें शरण ली। तेवेन्दा (तुर्वेदा) के तारतार-राजा येलिगइने अपनी सुदरी लडकीका येरमकसे व्याह करना चाहा, किन्तु येरमकने विवाहसे इन्कार करते हुये उसे अभय वचन दिया। कुचुम इसी लडकीको अपने लडकेके लिये चाहता था। इशिमके सगमकी लडाईमें पाच कसाक मारे गये। वाकी दल इर्तिशके साथ-साथ आगे चला। अउसककुल झीलके ऊपर प्रसिद्ध तारतार किला कुल्लरा था, जो कलमक मंगोलोंसे सीमाकी रक्षाके लिये बनाया गया था। उसके ऊपर पाच रोज घेरा डाल लौटते वक्तके लिये छोडे कसाक-दलने इर्तिशसे पूरव कुलारचोक झीलके ऊपर अवस्थित ताशदकान नगरपर आक्रमण किया, जो

बिना लड़ाईके ही सर हो गया। फिर शिस् और इर्तिशके संगमपर बसे तारतारोंके अन्तिम गांव शिसतमकपर पहुंचे। कसाक गरीबोंसे कर नहीं थोड़ी-सी भेंट लेते थे, जिसका प्रभाव साधारण जनतापर अच्छा पड़ रहा था। जब वह लौटनेके लिये ताशदकान पहुंचे, तो बुखाराके कारवांके आनेकी खबर मिली। उससे मिले बिना ही कसाक-दल येरमकके नेतृत्वमें सिबिरकी तरफ लौटा। वह अपने पहलेके एक डेरे—येरमकोवा पेरेकोफ—के पास एक भींटे (जरेवो गोरोदिची) पर पहुंचे, जिसके बारेमें तारतारोंका कहना था, कि यह उसी कूसिम-तुरा (कुमारी दुर्ग) का अवशेष है, जिसको कि कुमारियोंने अपने लहंगोंमें मिट्टी ढो-ढोकर बनाया था। दुश्मनसे अब कसाक निश्चिन्त हो गये थे, इसलिये बिना संतरी रखे ही उन्होंने वहां डेरा डाल दिया। कुचुमके चरने तीन बन्दूको और कितने ही कारतूसोंको ले जा कसाकोंके बारेमें उसे खबर दे दी। वह अपने आदमियोंके साथ आकर उनपर टूट पड़ा। येरमक शत्रुओंकी पांतीको चीरता नदीके किनारे उस स्थानपर पहुंचा, जहांपर अपनी नावोंके होनेकी उसे आशा थी। नाव न पाकर वह नदीमें कूद पड़ा। जारने जिस कवचको उसकी रक्षाके लिये भेजा था, वही उसके मरनेका कारण बना—कवचके बोझके मारे १७ या १८ अगस्त १५८५ ई० को येरमक नदीमें डूबकर मर गया। इस प्रकार एक क्रूर किन्तु साहसी पुरुषकी जीवन-यात्रा समाप्त हुई।

येरमकका शव अबालकसे १२ वर्स्तपर २५ अगस्तको येपचिन्स्की नामक तारतार गांवमें मिला। कवचका एक भाग और ओस्तियाकोंकी देवमूर्तिसे वेलोगोस्कके लिये एक घंटा बनाया गया और दूसरे भागको मिर्जा कैदोलको दिया गया। येरमकका चोगा राजकुमार सैदियतको मिला, और तलवार तथा कमरबन्द मिर्जा कराचाको। मुल्लोंने पूजाके डरसे येरमककी कबरको छिपा दिया।

इस लड़ाईसे सिर्फ एक आदमी बच निकला, जिसने सिबिरमें जाकर खबर दी। तारतारोंसे भयभीत नेताविहीन एक सौ पचास भूखे कसाक २७ अगस्त १५८४ ई० को सिबिर छोड़कर लौटनेके लिये मजबूर हुये। कुचुमने उन्हें नहीं छेड़ा और अपने पुत्र अलीको भेजकर सिबिरपर फिरसे अधिकार कर लिया। जल्दी ही पुराने खानवंशके राजकुमार सैदियतने अलीको मार भगाया। साइबेरियाका अभियान निष्फल नहीं हुआ, और न रूसियोंका पैर तोबोल नदीके तटपर सिबिर नगरतक ही आकर रुक गया।

३० फ्योदर, इवान IV-पुत्र (१५८४-९८ ई०)

इवान IV ने क्रोधावेशमें हो अनजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र इवानको मार दिया। क्रूर इवानके मरनेके समय उसके दो पुत्र जीवित थे, जिनमेंसे फ्योदर उसकी पहिली बीबी अनस्तासिया रोमनोवासे था और दूसरा शिशु दिमित्रि उसकी अन्तिम स्त्री मरिया नागायासे। अनस्तासिया रोमनोफ वंशकी थी, जो कि जल्दी ही रूरिक-वंशका स्थान लेनेवाला रूसका अंतिम राजवंश बनने जा रहा था। फ्योदर रूसका जार बना और जारकुमार दिमित्रि अपनी मां और नानावंश (नगाय) के साथ उगलिच नामके छोटेसे नगरमें एक छोटी-सी जागीर देकर निर्वासित कर दिया गया। दिमित्रि बहुत दिनोंतक नहीं जिया, और १५९१ ई०में मर गया। फ्योदर चिररोगी, बहुत दुर्बलबुद्धि किंतु साधु स्वभावका आदमी था। वह अपना सारा समय भगवान्‌की भक्तिमें बिताता। गिर्जेके घंटोंको बजाते उनकी टुन-टुनकी आवाज सुननेमें उसे बड़ा आनंद आता था। लोग खुलेआम उसे मूर्ख कहते थे। राज्यका शासन जारके संबंधियों और उसके कृपापात्र बायरोंके हाथमें चला गया, जिनमें बायर बोरिस फ्योदर-पुत्र गदुनोफ जल्दी ही सबसे अधिक प्रभावशाली बन गया। गदुनोफ-परिवार पुराने रूसी राजुल-वंशोंमेंसे नहीं था, इसलिये वह उच्चकुलीन होनेका दावा नहीं कर सकता था। लेकिन इवान IV के अन्तिम दिनोंमें बोरिसका प्रभाव बहुत बढ़ गया था, जिसमें उसकी बहिन इरिनाका जार फ्योदरसे ब्याह होना भी एक कारण था। वैसे बोरिस गदुनोफ बड़ा ही योग्य और गुणीपुरुष था, यद्यपि उसने ईसाई-धर्मके अनुसार पुस्तकोंकी शिक्षा अच्छी तरह नहीं पाई थी। कुलीन बायर पुराने रीति-रवाजोंका पालन करना आवश्यक समझते थे, किंतु बोरिस उनकी पर्वाह नहीं करता था। वह विदेशियोंसे मिलने-जुलनेमें जरा भी आनाकानी नहीं करता था।

अपने बहनोईकी ओरसे शासनका भार सभालते ही उसका पहला काम था, अपने काममें बाधा देनेवाले बायरोको दरबारसे निकाल बाहर करना। वह स्वय विदेशी राजदूतोंसे मुलाकात करता और अपने घरमें राजदरबार जैसा ठाट रखता था। गदुनोफ ग्रीक चर्चके महत्त्वको समझता था। इस चर्चका सबसे बडा महन्त या महासघराज कान्स्तन्तिनापोलमें रहता था, जो कि १४५३ ई० में सुल्तान मुहम्मद उसमानअली तुर्कके हाथम चला गया था। यह कैसे पसद किया जा सकता था, कि ईसाई-धर्मके एक बडे सम्प्रदायका महागुरु ईसाई-विरोधी सुल्तानके मातहत रहे। १६ वी सदीके अन्तमें महासघराज जब-तब मास्को आने लगा था, जहा उसे बहुत भेंट-पूजा मिलती थी। इसी तरहकी एक यात्रामें महासघराज जेरेमिया जब मास्को आया, तो गदुनोफने उससे रूसी चर्चके लिये एक पृथक् सघराज होनेकी स्वीकृति ले ली। १५८९ ई० में इस प्रकार बना प्रथम रूसी सघराज योव गदुनोफका अनुगामी था।

जार पयोदरके शासनके अन्तिम वर्षोंमें सारा शासनयत्र बोरिस गदुनोफके हाथमें चला गया। गदुनोफकी सफलताओंने भी उसके प्रभावको बढ़ानेमें सहायता की। लिवोनियाके युद्धमें रूसके हार खानेपर बाल्तिक तटको स्वीडनने दखल कर लिया था, जिसके कारण पश्चिमी युरोपसे रूसका सीधा सबध नही रह गया था। गदुनोफने इसके लिये १५९० ई० में स्वीडनसे लडाई शुरू की, और १५९५ ई० की सधिके अनुसार स्वीडनको मजबूर होकर फिनलन्द खाडी और लदोगा-सरोवरके तटके भूभाग (इवान-गोरद, याम, कोपोरये, करेला)को दे देना पडा। उस समय राज्यके सामने किसानोकी एक बडी समस्या थी—रूसी किसान भूमिपतियोके शोषण और अत्याचारके कारण अपने गावोको छोड दक्षिण-पूर्व और उत्तरकी सीमात-भूमिमें बसते जा रहे थे, जिसके कारण खेतोका जोतना मुश्किल हो गया था। उन्हें मजबूर करके रखनेके लिये स्वीडनसे युद्ध होते समय (१५९२-९३ ई०) ही किसानोकी गणना की गई थी। उस वक्त जो किसान जिस जमीदारके अधीन दर्ज किये गये थे, उन्हें १५९७ ई० की राजघोषणाके अनुसार वही रहनेके लिये मजबूर किया गया।

१५९८ ई० में जार पयोदरके मरनेके साथ प्राचीन रूरिक-राजवश समाप्त हो गया। जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय परिषद्) ने १५९८ ई० में बैठक करके बोरिस गदुनोफको नया जार चुना।

रूरिक-वशने रूसके लिये बडा ही ऐतिहासिक काम किया। इसीके शासनकालमें जनयुगके अवशेषो को खतम करके रूसमें एक शक्तिशाली सामन्ती व्यवस्था कायम की गई, फिर रूसके भिन्न-भिन्न टुकडो-में बटी रियासतोको इकट्ठा करके बृहत्तर रूस देशके निर्माण करनेका प्रयत्न किया गया। इसमें मगोलोंने आकर दो शताब्दियोतक कुछ बाधा जरूर डाली, लेकिन अन्तमें फिर एकीकरणका काम बहुत जोरसे शुरू हुआ और रूसकी सीमाए उत्तरमें फिनलन्दकी खाडी, पश्चिममें बाल्तिक-समुद्र, दक्षिणमें कास्पियन सागर और पूरबमें सिबिर नगरतक फैल गई। दक्षिणी सीमा कालासागरतक पहुच जाती, लेकिन कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोंने (१४७५ ई० में) क्रिमियाके खानको अपने अधीन करके उधरका रास्ता रोक दिया। यद्यपि आगेकी पौन शताब्दी रूसके लिये बहुत अच्छी साबित नही हुई, लेकिन साथ ही एक बार जहातक वह अपने पैरोको रख चुका था और जहा जनताका स्वार्थ सहायता देनेके लिये मौजूद था, वहासे उसे पीछे हटाया नही जा सकता था। रूसको और आगे ले चलनेका काम अब प्रथम पीतरको करना था, जो कि औरगजेबका तरुण समकालीन था। अकबरकी मृत्युसे सात वर्ष पहले पयोदरका देहान्त हुआ। देशके एकीकरण और दृढताके लिये जैसे अकबरने भारतमें काम किया था, वही काम रूरिक-वशके १६ वीं शताब्दीके जारोने किया। अकबरके कामको औरगजेबने बेकार कर दिया, लेकिन रूसके सौभाग्यसे उसे जार पीतर जैसा दूरदर्शी शासक और चतुर सेनानायक मिला, जिसने रूसके पिछडेपनको हटानेका काम बडी सफलतापूर्वक किया।

रूरिक-वंशवृक्ष
(९११-१५९८ ई०)

१ रूरिक (९११-?)
- २ ओलेग (९११ ई०)
- ३ ईगर=४ ओलगा (९४५-५७) (९४५)
  - ५ स्व्यातोस्लाव I (९५७-७३)
    - यारोपोल्क
    - ओलेग
    - ६ व्लादिमिर I (९७३-१०१५)
      - ७ स्व्यातोपोल्क (१०१५-१९)
      - ८ यारोस्लाव (१०१९-५४)
        - ९ इज्यास्लाव (१०५४-७३)
          - १० स्व्यातोपोल्क (१०७३-१११३)
        - स्व्यातोस्लाव II (मृ० १०७६)
          - ओलेग (मृ० १११५)
            - स्व्यातोस्लाव (मृ० ११६४)
              - ईगर (वीर) (मृ० १२०२)
        - व्सेवोलद
          - ११ व्लादिमिर II मनोमाख (१११३-१५)
            - मिस्तस्लाव
            - १२ युरी I दीर्घबाहु (सुज्दल) (-११५७)
              - १३ अन्द्रेइ (११५७-७४)
              - १४ व्सेवोलद (११७६-१२१२)
                - १५ युरी II (१२१२-३८)
                - १६ यारोस्लाव II
                  - १७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की (-१२६३)
                    - १८ दानियल (मास्को) (१२६३-१३०३)
                      - १९ युरी III (१३०३-२५)
                      - २० इवान I खलीता (१३२५-४१)
                        - २१ सेमम्योन (१३४१-५३)
                        - २२ इवान II (१३५३-५९)
                          - २३ दिमित्रि (१३५९-८९)
                            - यूरी
                            - २४ वासिली I (१३८९-१४२५)
                              - २५ वासिली II अंध (१४२५-६२)
                                - २६ इवान III (१४६२-१५०५)
                                  - २७ वासिली III (१५०५-३३)=२८ येलेना (१५३३-३८)
                                    - २९ इवान IV जार (१५३८-५४)
                                      - ३० फ्योदर (१५८४-८९)
                  - यारोस्लाव (त्वेर) (मृ० १२७२)

भाग २

दक्षिणापथ (१२२४–१७४७ ई०)

अध्याय १

चगताई-वंश

(१२२२-१३७० ई०)

छिङ्गिस्‌के मरने के बाद उसका राज्य चार उलुसोंमें विभक्त हुआ-(१) जू-छि उलुस या सुवर्ण-ओर्दू (किपचक-राज्य), जिसके बारेमें अभी हम कह चुके हैं, (२) ओगोताई-उलुस, चगताईके उत्तर-पूर्वमें था, जिसके खान एमिल और कुबानमें रहते थे, (३) तुलुइ-उलुस, जो कि ओगोताई उलुस-के उत्तरमें था और (४) चगताई (जगताई, जगदाई)-उलुस जिसके हाथमें अन्तर्वेद, सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान था। इन चारों उलुसोंके अतिरिक्त कुबिलेइ खानके अनुज खुलाकूने ईरान, इराक, शाम और आजुरबाइजानमें अपना एक अलग राजवंश कायम किया था। छिङ-गिस्‌ने ही अपना राज्य चार भागोंमें विभक्त करके चारों पुत्रोंको दे दिया था, लेकिन साथ ही चारों उलुसोंके खानोंको एक कआन (महाखान) के अधीन रहनेकी व्यवस्था भी कर दी थी। यह व्यवस्था बहुत-कुछ १३वीं शताब्दीके अन्त (कुबिलेके मृत्युके समय १२९४ ई०) तक चलती रही, जिसमें सबसे अधिक बाधा ओगोताइ और चगताई-उलुसोंकी ओरसे दी गई।

१ जगताई, छिङ-गिस्-द्वितीय पुत्र (१२२७-४२ ई०)

छिङ्गिस्‌ने अपने द्वितीय पुत्र चगताई (जगताई, छगताई) को जो भूभाग दिया था, उसमें अन्तर्वेद (आमू और सिर-दरियाके बीचका भाग), काश्गर, बदख्शा, बलख-अर्थात् उइगर डाडे, अल्ताई और हिन्दूकुश पर्वतमालाओंके बीचके देश शामिल थे। चगताई-भूमिमें आजकल चीनी-तुर्किस्तान, सोवियत कजाकस्तान-किर्गिजस्तान-उज्बेकिस्तान-ताजिकिस्तान-तुर्कमानिस्तान और अफगानिस्तान शामिल हैं। चगताईवंशने ७७१ हि० (१३७० ई०) तक १४६ वर्ष राज्य किया, फिर उसका स्थान तेमूर और उसके वंशजोंने लिया। लेकिन, तेमूरकी संतानोंने अबू-सईद (१४५१-६६ ई०) तक चगताई-वंशके किसी व्यक्तिको गुडिया खान बनाकर कायम रक्खा। जिस तरह अब्बासी खलीफोंकी राजशक्ति खतम हो जानेपर भी बगदादमें उन्हें कठपुतली खलीफा बनाकर कायम रक्खा जाता रहा, उसी तरह छिङ-गिस्‌के वंशकी पवित्रताका खयाल करके चगताई खानोंको समरकन्दकी गद्दीपर रखा जाता रहा। चगताई-उलुस १२२७ ई० से १३१८ ई० तक रहा। उसके बाद राज्यशक्तिको हथियानेके लिये मंगोल और अ-मंगोल, स्वदेशी और विदेशी दलोंका झगड़ा उठ खड़ा हुआ, जिसमें अन्तर्वेदमें स्वदेशी तुर्कोंका पलड़ा भारी हो गया और इस प्रकार अन्तर्वेद (मावरा-उन्-नह्र) और मुगोलिस्तानके दो राज्य पैदा हो गये। चगताई खानकी राजधानी अल्मालिक इलि-उपत्यकामें वर्तमान कुलजा नगरके पास थी।

छिङ-गिस्‌के अन्तःपुरमें पाँच सौ खातूनें (रानियाँ) और बेटियाँ थीं। हरेक बड़े विजयमें हाथ लगी सुंदर राजकन्याओंमेंसे एकको हरएक सेनापति अपने कआनके पास भेजना आवश्यक समझता था। बापकी तरह उसके लड़कोंके भी बड़े-बड़े रनिवास थे, तो भी प्रमुख रानियाँ (खातूनें) मंगोल-वंशकी ही होती थीं।

चगताई खान अपने पिताके यस्सा (नीतिशास्त्र) का पंडित तथा उसपर अक्षरशः चलनेवाला माना जाता था। यस्साके अनुसार घरेलू जानवरोंको जबह (हलाल) करना या दिनमें बहते पानीमें नहाना वर्जित था। जगताईने यस्साके विरुद्ध आचरण करनेपर एक मुसलमानको मृत्युदंड दे दिया था। उसका शासन दृढ़ किंतु न्यायानुमोदित था। उसके राज्यमें डाकका बहुत अच्छा प्रबन्ध था। यद्यपि वह जबर्दस्त

पियक्कड था, किंतु राजकाजके देखनेमे गफलत नही करता था। लाग उसके कठोर नियमाको भी मानते, क्योकि वह भरसक अन्याय नही होने देता था। उसके यहा सभी धर्मो और जातियोके लोग समान थे। समान दृष्टिसे देखे जानेका यह अर्थ नही था, कि मगोलोके समान ही दूसरे लोगोको भी माना जाता था। उसकी प्रजामें अधिकाश मुसलमान थे, इसलिये उसने मुसलमानोको बडे-बडे दर्जे दिये थे, तो भी वडे पदोपर मगोलोके बाद तुर्कोको अधिक देखा जाता था। इसका कारण भी था—केवल दक्षिणके थोडसे अशको छोडकर उसकी प्रजा अधिकाश तुर्क थी। तुर्को और उनके सरदाराने तुर्क जातिके इतिहासमें प्रवेश करनेके समय (६ठी सदीके मध्य) से ही सैनिक जीवनको नही छोडा और वह अब भी जव-तब घुमन्तू जीवनका भी अभिनय करते थे, क्योकि मध्य-एसियामें घुमन्तू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझा जाता था। चगताई और जू-छिके उलुस तुर्कोके ऊपर शासन करते थे। अतमें इन उलुसोके मगोल भी इन्ही तुर्कोमें विलीन हो गये। लेकिन, चगताई खानके लिये अभी वह समय दूर था। चगताईने यलजपुत्र मसूदवेगको अन्तर्वेदका शासक नियुक्त किया था, जो कि तुर्क मुसलमान था। मसूद पहले चीनमें भी शासक रह चुका था। उस वक्त राज्यमें व्यक्ति-कर आमदनीका एक वडा स्रोत था, जो सम्पत्तिके अनुसार प्रतिव्यक्ति एकसे सात तका (१ १० जुयेनी) होता था। सभी धर्मोके पुरोहित करसे मुक्त थे।

अपने गुरु तातातुगाकी शिक्षासे चगताईने फायदा उठाया था। गुरुने शिक्षा दी थी—शासकको न्यायपरायण और उत्साही होना चाहिये। समरकन्द तथा बुखाराकी जगह अलमालिकको राजधानी बनाना चगताईके बाद उसके वशजोको भी पसद आया, क्योकि वहा उनके बहुसख्यक घोडा और पशुओके चरानेके लिये विशाल चरागाहें थी। अभी राजशक्ति मगोल तलवारोके ऊपर निर्भर थी, जो ऐसे खानको कभी नही पसन्द करते, जो पूर्वजोके जीवनको छोडकर नगरके विलासी जीवनमें फस गया हो। मगोलोका शासन आर्थिक शोषणका था ही, इसलिये सारी निष्पक्षता दिखलानेपर भी मुल्ला मगोल काफिरोके विरुद्ध लोगोको भडका दिया करते थे, जिसके कारण विद्रोह हो जाना आसान था।

बुखारा-विद्रोह (१२३२ ई०)—१२३२ ई० में बुखारामें मगोलोके विरुद्ध जो विद्रोह हुआ, उसका नेता एक छलनी बनानेवाला महमूद था। वह बुखारासे तीन लीग (योजन) दूर तारावमें पहले-पहल १२३२-३३ ई० (६३० हि०) में प्रकट हुआ। उसने दावा किया—अल्लाने मुझे दिव्य शक्ति देकर भेजा है। पहले शायद भूत भगानेका काम करके उसने अपने प्रति लोगोंके मनमें विश्वास पैदा किया। मुसलमान हो जानेपर भी पुराने भूत-प्रेत लोगोके मनसे गये थोडे ही थे—मुसलमान भी जिन, शैतान आदिपर विश्वास करते थे। महमूदकी दिव्यशक्तिको पहले उसकी बहिनने स्वीकारा, फिर उसके दूसरे कितने ही अनुयायी बने। सब जगह हल्ला हो गया है, कि संत महमूदके पास जो जाता, उसकी बीमारिया छूट जाती है। फिर अधे-लूले-लगडे बडी भारी सख्यामें उसके पास पहुचने लगे। जब २०वी शताब्दीके मध्यमें उडीसाके नैपालबाबाके पास लोग रेला-मोटरो-विमानोंसे दौडने लगे, तो आजसे सवा सात सौ वर्ष पहलेके अतर्वेदके लोगोका ऐसा करना कौनसी आश्चर्यकी बात थी? महमूदका यश तारावसे चलकर राजधानीमें पहुचा। मुल्ला शम्सुद्दीन महमूदने पहले हीसे भविष्यद्वाणी लिख छोडी थी, कि मुसलमानोका मुक्तिदाता तारावमें पैदा होगा। धर्माध महमूदने जल्दी ही देखा, कि उसके अनुयायियोकी सख्या बहुत अधिक हो गई है और वह मगोलोके विरुद्ध उठ खडे होने के लिये उसकी आज्ञा भर चाहते है। इस परिस्थितिको देखकर बुखाराके राज्यपाल और दूसरे अधिकारी घबडा उठे। उन्होने उस समय खोजदमें अवस्थित मसूदवेगके पास सलाहके लिये खबर भेजी और इधर नये पैगम्बरको दुआ देनेके लिये बुखारा बुलवाया। मौका पाते ही उस पागलको मरवा डालनेका निश्चय किया गया था, किंतु महमद उतना पागल नही था। उसे षड्यत्रका पता लग गया। उसने साथ चलते रक्षी मगोलोकी ओर मुह करके एकाएक उनके विश्वासघातके लिये भर्त्सना करते कहा—मै तुम सबको इसी समय अधा कर देता हू। मगोल रक्षियोके दिलमें इसका भारी भय छा गया। उन्होने इसे उसकी दिव्यशक्तिका प्रमाण समझा। बुखारामें महमूदका स्वागत

राजसी ढंगसे हुआ। उसे सल्जूकी सुल्तान सजरके बनवाये महलमें ठहराया गया। दर्शन करनेवालों की भारी भीड़ लगने लगी। लोग यह सोचकर अपनी जीभ निकाले खड़े होते, कि महमूदके थूककी एक बूंद हमारे मुंहमें चली जाये और हम सारे रोगों और आफतोंसे मुक्त हो जायें। बुखाराके मुल्लों और अमीरोंने इस अद्भुत संतको अपनी दूकानदारी और अधिकारके लिये खतरनाक समझा। उन्होंने मंगोलोंको उसे मार डालने की सलाह दी। सब होते भी महमूदको उनके फंदेसे निकलकर पड़ोसके पहाड़में भाग जानेमें कोई अड़चन नहीं हुई। लोग पैगम्बरके पीछे-पीछे चले। किसानोंने हल्ला उड़ाया, कि पैगम्बर हवासे उड़कर उस पहाड़में चला गया। लोगोंकी भक्ति और भी बढ़ गई। महमूदने जब देखा, कि शासक उसका प्राण लेनेके लिये तैयार है, तो उसने हथियार उठानेके लिये हुकुम देते हुए कहा "अब समय आ गया है, कि काफिरोंको कतल कर दिया जाय।" थोड़े ही समय बाद महमूद पैगम्बर और सुल्तानके रूपमें एक भारी अंधविश्वासी भीड़को लिये बुखारामें दाखिल हुआ। उसने मुल्ला शम्शुद्दीन महमूदको बुखाराका सदरे-जहान नियुक्त किया, और लोगोंको हुकुम दिया, कि धनियों तथा

चगताई राज्य
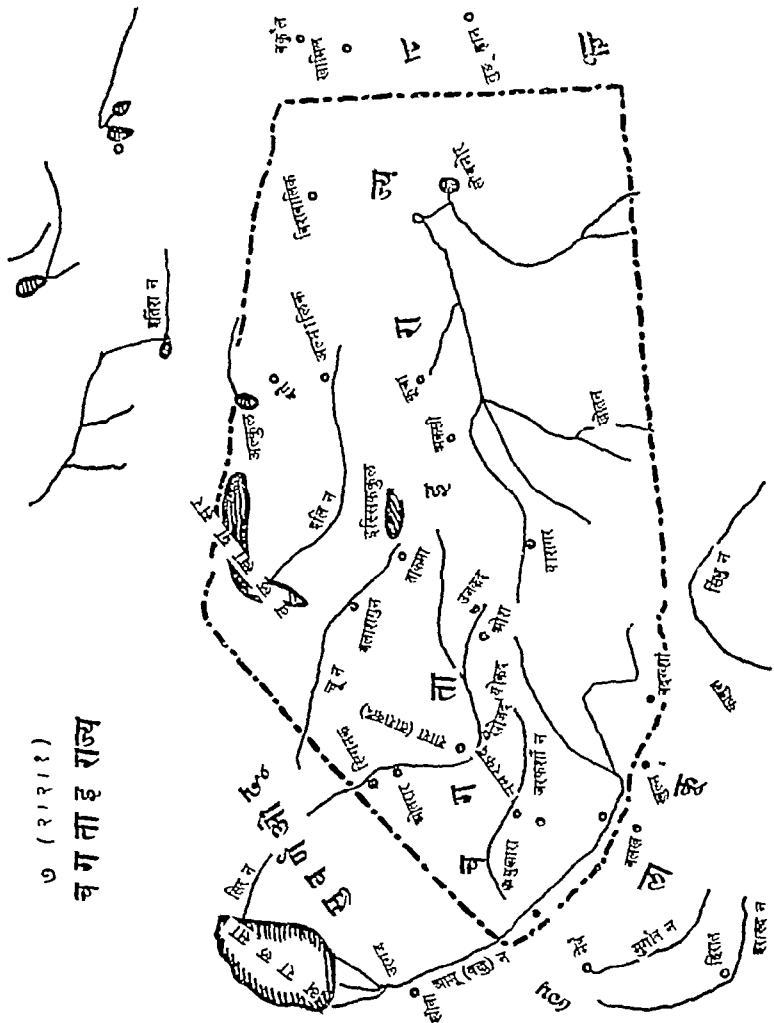
अमीरोको लूटो। अपने भक्तोका उसने विश्वास दिलाया—"मेरे पास एक गुप्त सेना है, जो हवामें मेरे हुकुमकी प्रतीक्षा कर रही है। देखो उन हरितवस्त्रधारियोको और उन दूसरे श्वेतवस्त्र-धारियोको, जैसे ही मै सकेत करूगा, वह हमारी मददके लिये उतर आयेंगे।" भीडमेंसे एक आदमीने कहा, "हा, मै देख रहा हू।" फिर अमीने वही बात दुहराई। महमूदने अगले जुमा (शुक्रवार) को अपने नामका खुतवा पढ़वाया। उसने धनियोकी सम्पत्ति जब्त कर ली। बुखाराकी सुदरिया बहुत भारी सख्यामें उसके घरमें चली आईं। बुखाराके धनी-मानी करमीनाकी ओर भाग गये, और वहासे मगोल सैनिकोको लेकर फिर बुखारा आये। महमद अपने एक शागिदके साथ निहत्था ही उनसे मिलने चला गया। अधविश्वासियोकी भारी भीड भी पीछे-पीछे थी। इसी समय अकस्मात् धूल लिये आधी उठी, जिसमें आदमी एक-दूसरेको देख नही सकते थे। चमत्कारोपर विश्वास करने-वाले मगोल डरके मारे भागने लगे। बुखारियोने पीछा करके उनमेंसे बहुतोको मारा, लेकिन इसी समय उन्होने पीछे मुडकर देखा, कि उनका पैगम्बर मारा जा चुका है। महमूदका स्थान उसके भाई ने लिया, लेकिन वह एक ही सप्ताह शासन कर सका। इसी समय मगोल सेनापति इल्दिर नोयन और जेङ्गिन कुरजी काफी सेना लेकर आ पहुचे। पहले ही आक्रमणमें महमूदके अनुयायी भाग खडे हुए। मसूदबेगने मगोलोको नगर लूटनेसे तबतक रोके रखा, जबतक कि खानके पाससे आज्ञा न आ जाय। चगताईने लूटनेकी आज्ञा नही दी।

मगोलो और उनके सरदारोके बारेमें कितने ही लोग ख्याल करते हैं, कि वह बर्बर थे, लेकिन एक युरोपीय लेखक बम्बेरीका कहना है—"मगोलोका सबध ऐसी जातियोसे हुआ था, जो सभ्यताके उच्च तलपर थी। अपनी जन्मभूमि (मगोलिया) की तरहकी खुली जगहोके लिये उनके दिलोंमें भारी प्रेम था। नगरो और बस्तियोको वह भ्रष्टाचार और नामर्दीका स्रोत मानकर बडी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।" उनके लिये आदर्श जीवन था पशुपालोका—अर्थात् अपने पशुओको लिये सफेद नम्देके तम्बुओ में खुली जगहोमें रहना। बस्ती और नगरके वासियोको वह तबतक छेडना नही चाहते थे, जबतक कि वह आज्ञाकारी रहें। बल्कि, ऐसे लोगोके लिये वह युद्धध्वस्त नगरोको फिरसे बसानेमें सहायता और प्रोत्साहन देते थे। इराक के जैसे कितने ही शहर उनकी लडाइयोके कारण उजड गये थे, लेकिन मगोलो ने वहाके लोगोको घुमन्तू जीवनकी ओर लौटानेका प्रयत्न नही किया। काशगर प्रदेशकी अवस्थामें कुछ भेद था। मगोलोने जल्दी ही इस प्रदेशको अपने हाथमें कर लिया था। तरिम-उपत्यका उस समय उइगुरोकी थी, जो बौद्धधर्मी रह सस्कृतिमें अधिक विकसित हो चुके थे। वह अब घुमन्तू नही बल्कि बस्तीमें रहना पसन्द करते थे, और उन्होने चीनी तुर्किस्तानके नागरिक जीवनको स्वीकार कर लिया था। उइगुरो (कराखानियो) के उत्तराधिकारी कराखिताई भी जल्दी ही नागरिक जीवनके प्रभावमें आ गये थे। लेकिन, जिस तरह पश्चिमी तुर्किस्तानमें नगरोके जीवनको फिरसे स्थापित करनेमें चगताइयो ने सहायता की, वही बात पूर्वी तुर्किस्तानमें नही हुई। वहा उजडे हुए नगर फिर नही बस सके, न टूटी नहरें फिरसे जारी की जा सकी, जिसके कारण हरे-भरे गाव और सुदर नगर बालुकासमुद्रमें डूब गये।

मगोलोके शासनकालमें दूसरी विद्याओंका प्रचार और विकास रुक गया, हा, इस्लामिक धर्म-शास्त्र और उससे भी ज्यादा सूफी-सतोका प्रभाव अवश्य बढ़ा। इस समयसे सूफी-सतों (खोजो, शेखो) का प्रभाव इस भूमिमें इतना जबर्दस्त स्थापित हो गया, जितना किसी दूसरे इस्लामी देशमें देखा नहीं जा सकता। इसी समयसे इन सतोंके परिवारोने स्थायी तौरसे देशका धार्मिक और सास्कृतिक नेतृत्व अपने हाथोंमें ले लिया। सतो और सूफियोकी ओर लोगोका इतना झुकाव शायद इसीलिये हुआ कि मगोलोने विजयी इस्लामको धूलमें मिला दिया था। ससारमें किसी ओरसे आशा न रह जानेपर अब लोगोका ध्यान सूफियोके चमत्कारपूर्ण रहस्यवादी उपदेशो और विचित्र जीवनोकी ओर खिच गया।

चगताईके शासनके आरम्भ होते ही मगोलोंद्वारा ध्वस्त नगरो और गावोको फिरसे आबाद करनेके लिये सबसे जरूरी बात थी, भयभीत किसानो और कारीगरोको समझा-बुझाकर काममें लगाना। हम देख चुके हैं, नगरोंके भीषण नर-सहारके समय भी मगोलोने कारीगरोको प्राण-दान देकर

उनके दिलमें विश्वास कायम करनेकी कोशिश की थी। चगताई-शासकोंके सहानुभूतिपूर्ण भावने भी लोगोंके दिलमें विश्वास पैदा किया। मसूदवेग चगताई खानका परम विश्वासपात्र अधिकारी था, तो भी उसके अधीनस्थ नगरोंमें कितने ही मगोल शासक भी नियुक्त थे, जैसे समरकन्दका शासक जोङ्-सान ताउ-फ और बुखाराका बुका-बोशा, जिनमें पहला शायद चीनी था। चगताईका वजीर हेजिर तुर्क था। मसूदने लोगोंकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये मदरसे भी कायम किये। १२३४ ई० में बुखाराके मसूदवेग और शेरकुली मदरसोंमें हजार विद्यार्थी पढते थे।

गर्मियोंमें चगताई खानका निवास कूयाश (सूय) अलमालिकके पास कोक (नील) पर्वत में रहता था। जाडोंमें वह मेराउरिक (? मेराउजिक)–इलामें रहता, जो इलिके तटपर था। कूयाशके पास चगताईने कुतुलुग (पवित्र) गाव वसाया था। चीनी पर्यटक चान-चुनके अनुसार चगताई का ओर्दू इलि नदीके दक्षिणी किनारेपर——शायद उसी जगह जहा कि उसके उत्तराधिकारीका ओर्दू—— उलुस-इफ या उलुसु-इकमें था। चगताईका इल-अलरग् (सबसे बडा नगर) अलमालिक था। चगताई-की उइगुर प्रजामें अब भी कुछ बौद्ध थे, और कुछ ईसाई। इन दोनो हीके साथ मुसलमानोंकी सख्त दुश्मनी थी। अभी सप्तनदके मुस्लिम जिलोंमें भी काफी गैर-मुस्लिम रहते थे–उदाहरणार्थ, चू-उप-त्यकाके नेस्तोरी। १२५३ ई० में जब रुब्रिक इधरसे गुजरा, तो कयालिकसे उत्तर तीन फ्रांसीसी मील (ल्यू, १३॥ वर्स्त) पर उसने एक गाव देखा, जिसके सारे निवासी ईसाई थे और वहांपर उनका गिर्जा भी था। इस्सिकुल सरोवरके तटपर भी इसी नामके एक नगरमें १४वी सदीमें अमनी साधुओंके मठ थे। मार्को पोलोके अनुसार चगताई स्वय ईसाई था। जो भी हो, मुसलमानोंको जानवरोंके हलाल करने और बहते पानीमें नहानेके लिये मृत्युदड देना, उन्हें भडकानेके लिये काफी था। इसी भावको प्रकट करते चगताईकी मृत्युपर किसी मुसलमानने पद्य लिखा था——

"जिसकी डरसे कोई पानीमें नही उतरता था,
वह डूब गया गहरे समुद्रमें।"

आशाका विरोध करनेके लिये चगताईके हुकुमसे ६२६ हि० (३० XI १२२८–२१ X १२२९ ई०) में मुल्ला अबू-याकूब-यूसुफ सैकाकी मारा गया, जिसकी कब्र १६वी सदीमें भी तेकेस नदीके तटपर मौजूद थी। लेकिन, यह सब होते हुए भी चगताई मुसलमानोंका द्वेषी नही था, यह इससे भी सिद्ध है, कि उसके बहुतसे राजविभागोंके प्रमुख मुसलमान थे। सबसे शक्तिशाली और धनी व्यापारी कुतुबुद्दीन खवास-आमिद था। ख्वारेज्मशाह मुहम्मदकी एक कन्या कुतुबुद्दीनसे व्याही थी और दूसरी चगताईके हरममें थी।

चगताईने अपने जीवनमें ही ओगोताई कआनकी सम्मतिसे अपने पोते करा हुलाकूको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। वह दिसम्बर १२४१ ई० में मरा।

चगताई-वशमें निम्न खान हुये–

१	चगताई, छिङ्गिस्-पुत्र	१२२७-४२ ई०
२	करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र	१२४२-४६ "
३	येस्सू मङ्गू, चगताई-पुत्र	१२४६-५१ "
	करा हुलाकू (पुन॰)	१२५१ "
४	ओरगाना खातून, कराहुलाकू-पत्नी	१२५१-५९ "
५	अलगू, अरिकबुगा, बेदार-पुत्र	१२५९-६५ "
६	मुबारकशाह करा हुलाकू-पुत्र	१२६६ "
७	बोराक इसुनदावा-पुत्र	१२६६-७१ "
८	निकपाई सरवान-पुत्र	१२७१-७४ "
९	तोका तेमूर कदमी-पुत्र	१२७४-८२ "
१०	दुवा, दावा, बोरा-पुत्र	१२८२-१३०७ "

११	कुजक, कोन्चोग्, दुवा-पुत्र	१३०७-८ ई०
१२	तलिकू, खिजिर, वदमी-पुत्र	१३०८ ९ "
१३	केवेक, दुवा-पुत्र	१३०९ "
१४	एसेन्‌बुका, ईसनबुका, दुवा-पुत्र	१३०९-१८ "
	केवेक (पुन)	१३१८-२६ "
१५	इलिकदई, इलिचिगिदई, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१६	दुवा तेमूर, दुर्रा तेमूर, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१७	तरमा शेरिन्, सजर, दुवा-पुत्र	१३२६-३४ "
१८	वजन, वोजन, दुवा-तेमूर-पुत्र	१३३४ "
१९	जेङ्किस खलील, एबुगेन-पुत्र, दुवा-पौत्र	१३३४-३८ "
२०	येस्सुन तेमर, एबुगेन-पुत्र	१३३८-४० "
२१	अली सुल्तान, ओगोताई-वंशज	-१३४०-४२ "
२२	मुहम्मद पुलाद, कोन्चोग-पुत्र	
२३	काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र	१३४६ "
२४	दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज	१३४६-४८ "
२५	वायनकुली, सूरग् ओगलान-पुत्र	१३४८-५८ "
२६	तेमरशाह	१३५८- "
२७	इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र	-१३६३ "
२८	काविलशाह	१३६३-६९ "

२ करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र (१२४२—४६ ई०)

छिङ्गिस् जिस वक्त हिन्दूकुश पर्वतमालाके अजेय दुर्ग वामियान पर आक्रमण कर रहा था, उसी समय उसका अत्यन्त प्रिय पौत्र मोतुगान मारा गया। शायद बापके मारे जानेपर छिङ्गिस्का भारी शोक करना करा हुलाकूके लिये चगताईके प्रेम और उत्तराधिकार पानेका कारण हुआ। गद्दीपर बैठते समय करा हुलाकू छोटा था, इसलिये राजकाजका भार अभिभाविकाके रूपमें उसकी दादी एबुसकिनने अपने हाथमें लिया। अभिभाविकाने पहिला काम यह किया, कि हकीम मजीदुद्दीन और अपने पतिके कृपापात्र वजीर हेजिरको हकीमसे मिलकर चगताई खानको मरवानेके इल्जाममें मरवा डाला। उसने अपने बहनोई हवश अहमदको अपना वजीर बनाया। अभी अवस्था ठीक नहीं हुई थी, कि इसी समय ओगोताई कआन मर गया और कूयुकने जबर्दस्ती कआनपदको ले लिया। उसने अपने सभी विरोधियोंको उनके पदसे निकाल दिया, जिनमें एबुसकेन भी थी। कूयुकने ६४५ हि० (८ V १२४७—२८III १२४८) में इस्सुनको चगताई-उलुसका खान नियुक्त किया, जिसके कारण केवल अलमालिकमें ही नहीं, सारे चगताई-उलुसमें गड़बड़ी फैल गई। मसूदबेगको भी भागकर बातूके पास शरण लेनी पड़ी। कआनका निर्वाचन १२४६ ई० तक नहीं हो सका था। कूरिल्ताई (महासंसद) की बैठकमें ओगोताईके पुत्र कूयुक (गूयुक) को कआन चुना गया। कूयुक ईसाई-धर्मका पक्षपाती तथा चगताईकी तरह ही इस्लाम-विरोधी था। अब साम्राज्यमें ईसाईयोंका मान बहुत बढ़ गया था। गूयुक कआनने करा हुलाकूको हटाकर जगताई-पुत्र येस्सू-मुङ्खे (येसू-मङ्गू) को खान बनाया।

३ येस्सू मङ्गू, येसू-मुङ्-खे (१२४६-५१ ई०)

येसू-मुङ्-खे सदा शराबमें मस्त रहता था, राजकाजका काम उसकी रानी तुगाशी देखती थी। सौभाग्यसे उसे खवाम हवश जैसा योग्य खवास-अमिदा (वजीर) मिला था। खवाम हवशने जगताई खानके हरएक पुत्रके साथ अपने एक-एक पुत्रको लगा रक्खा था। यसू-मुङ्खेके दरबारमें विद्वान् बहाउद्दीन मेर्गलानी रहता था। उसका पिता फरगानाका शेखुल्-इस्लाम और मा करखानी वंशजा थी। गूयुकके समय बातू भारी सेनाके साथ पश्चिममें दिग्विजयके लिये भेजा गया था। इसी समय हुलागू-

को दक्षिणमें दिग्विजयके लिये भेजा गया। अभी यह दिग्विजय-सेना कयालिक नगरमें सात दिन पर अवस्थित (सप्तनदके दक्षिणके अलाताऊ पर्वतके पास) अलाकामकम थी, कि गूयुक कआनके मरनेकी खबर मिली। अब तुलुइका ज्येष्ठ पुत्र तथा कुबिलेईका बड़ा भाई मुङ्-खे (मङ्-गू) कआनकी गद्दीपर बैठा। ओगोताईके पौत्रोंने इसका विरोध किया। वह समझते थे, कि गूयुकके बाद अब उनके उलुसका कआन होना चाहिये। इस विरोधमें येसू-मङ्-गू भी ओगोताईके पौत्रोंके साथ था। १२५१ ई० में राजधानी कराकोरममें कूरिल्ताई बुलाई गई, जिसमें मुङ्-खेके गद्दीपर बैठनेका बड़ा विरोध हुआ। मंगोलोंमें भीषण संघर्ष शुरू हो गया। सतहत्तर बड़े-बड़े सरदार मारे गये, और बहुतसे खानजादे दूर दूर निर्वासित कर दिये गये, जहां कितनेही मर गये। चगताई-गद्दीसे वंचित करा हुलाकूने मुङ्-खेका पक्ष लिया। कआन अब भला येसू-मङ्गूका क्यों पक्ष लेने लगा? करा हुलाकूने अपने भाई बुरीके साथ एक बड़ी सेना ले चढ़ाई की। येसू-मङ्गू, तुगाशी खातून और बुरी आसानीसे पकड़ लिये गये। तुगाशी करा-हुलाकूको दे दी गई। येसू-मङ्गू और बुरी भागकर बातूके ओर्दूमें चले गये, जहांपर बुरीको मृत्युदंड दिया गया, और उसके बारह भाइयोंके साथ येसू-मङ्गूको भी उसकी जन्मभूमिमें भेज दिया गया। येसूको फिर खानका स्थान मिलनेवाला था, किन्तु वह रास्ते हीमें मर गया। तुगाशी खातूनपर मुकदमा चलाकर उसे घोड़ेके नीचे रौंदवाकर मरवाया गया।

करा हुलाकू (पुन: १२४६ ई०)

करा हुलाकूके राज्य संभालनेपर हबश आमिद फिर वजीर हो गया। उसने बहाउद्दीनको जेल-में डाल दिया। बहाउद्दीन ने कवितामें बहुत स्तुति की, लेकिन सब बेफायदा। रानी एरगेनाने नमदेमें लपेट ठोकरें लगवाती उसकी हड्डी तुड़वाई। करा हुलाकू अधिक दिन नहीं जी सका। उसके बाद उसकी रानी ओरगाना (एरगेना) ने गद्दी संभाली।

४. एरगेना, ओरगाना करा हुलाकूपत्नी

एरगेना मंजुलता, सौंदर्य, और प्रतापमें अपने समयकी तीन अद्वितीय मंगोल-राजकुमारी बहिनोंमसे थी, जिनके बारेमें कहा जाता था, कि दुनिया का कोई चित्रकार उनके रूपको अपनी तूलिकासे चित्रित नहीं कर सका—तीनों बहनें चगताई, बातू और खुलाकू-वंशी खानोंकी रानियां थीं।

मुङ्खे कआनद्वारा पश्चिमके दिग्विजयार्थ भेजी गई सेनाओंमेंसे कराकुरम और बिशबालिगसे आनेवालियोंको चगताई-भूमिमें मिलना था। वहांसे कयालिक और ओतरारके बीच पहुंचनेपर ओरदा (जूछि-पुत्र) के पुत्र खकिरिन (खकिरान) को इस भारी सेनाका संचालक बनना था। लेकिन अब बातू और मुङ्खे कआनमें मतभेद हो गया था। मुङ्खेने इसी बातको साधु रुबरिकसे कहा था—"जैसे सूर्य अपनी किरणोंको सर्वत्र फैलाता है, उसी तरह मेरी और बातूकी राज्यशक्ति भी देश-देशमें फैली हुई है।" यह कहना इसी बातको सिद्ध करता है, कि अब कआनका बातूपर कोई दबाव नहीं था। कआन और बातूकी सीमा तलस (तरस) से थोड़ा पूरबमें मिलती थी।

प्रधान-वजीर हबश हमीद (अमीद) और उसका पुत्र नासिरुद्दीन राजकाजमें ओरगानाकी सहायता करते थे। रानीकी योग्यतासे कोई इन्कार नहीं करता। इतिहासकार वस्साफके अनुसार ओरगाना स्वयं बौद्ध थी। १२८४ ई० में ओरगाना अल्मालिकमें ही थी, इसी समय कआनका अनुज तथा रानीका बहनोई खुलाकू पश्चिमी एसियाके दिग्विजयके लिये आते हुए उससे मिला। वहांसे खुलाकू की सेना सप्तनद और सिर-उपत्यका होते १२५५ ई० के बसंतमें समरकन्द पहुंची। इससे दो साल पहले (१२५३ ई० में) साधु रुबरिक सप्तनदसे गुजरा था। उसने अपने यात्रा-विवरणमें इस प्रदेशका अच्छा वर्णन किया है। लड़ाईके ध्वंसके रूपमें उसने इलितटपर मिट्टीकी दीवारोंवाले अनेक खंडहर देखे थे। उससे कुछ दूरपर एक प्रसिद्ध नगर इलानबालिक था, जहांसे १२५५ ई० में अर्मनी राजा गयतोन गुजरा था। उसने लिखा है—पहाड़से निकलकर बहुतसी नदियां बलकाश झीलमें गिरती हैं। यहींपर कयालिक नामका बड़ा नगर था। जहां बहुतसे व्यापारी रहते थे। यहांकी मैदानी भूमिमें पहले बहुतसी बस्तियां थीं, जिन्हें तातारोंने ध्वस्त कर दिया। सप्तनदके उत्तरी भागमें अब

मगोल घुमन्तू रहा करते थे। इतिहासकार जुवेनीके अनुसार मुङखे कग्रानने उज्कन्दको करलुकवशी अरसलनखानके पुत्रको प्रदान किया था।

हुलाकू (खुलाकू)ने ईरान पहुच वहांसे चाङतेको किसी कामसे इलि और चूके बीचकी भूमि (सप्तनद) द्वारा कग्रानके पास भेजा। यह चीनी यात्री १२५६ ई० में सप्तनद होकर गया था। वह इस प्रदेशका नाम इ-तू (इ-दू) बतलाता है और कहता है, कि वहा बहुतमी जातियोकी बस्तिया है। उस समय इस प्रदेशमे बहुत वृक्ष थे।

ओरगानाने सप्तनद और अन्तर्वेदपर दस सालतक अच्छी तरह शासन किया।

कग्रानके मरनेपर फिर जो उथल-पुथल हुई, उससे चगताई-उलुसमें भी गडबडी मची। मुङखे कग्रान ६५८ हि० (१८ XII १२५६—७ XI १२६० ई०) में मरा। अब कग्रानके सिंहासनके लिये मुङखेके दो भाइयो कुबिले और अरिकबुगाका झगडा हुआ। अरिकबुगाने अलगूको और कुबिलेने बुरी-पुत्र अबिश्काको चगताई खान बनाया। अलगूकी शक्ति ज्यादा मजबूत थी। उसने ओरगानाको भगाकर अलमालिककी गद्दी सभाल ली।

५ अलगू, अरिकबगा, बेदार-पुत्र (१२५९–६५ ई०)

कुबिलेद्वारा निर्वाचित चगताई खान अबिश्काको रास्तेमें ही कुबिलेके प्रतिद्वद्वीने बदी बना लिया, लेकिन पीछे अलगूने इसका बदला कुबिलेके प्रहारके समय सहायता देनेसे साफ इन्कार करके लिया। यही नही, उसने अरिकबुगाके तीन कर उगाहनेवालोको पकडकर उनके पासके पैसोको छीनकर मरवा डाला, और इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला कुबिलेका समर्थक बन गया।

तुर्किस्तान सारा अलगूके राज्यमें सम्मिलित था। उसके पास डेढ लाख सवार-सेना थी। ओरगानाने अरिकबुगाका पक्ष लेते उसके पास सदेश भेजा, इसपर अलगूने पाच हजार सैनिकोके साथ उचाचर और बिकी ओगलान तथा अमीरोमेंसे हबश अमीर-पुत्र सुलेमानको भी बितिकची और अबिश्काके साथ समरकन्द, बुखारा तथा अन्तर्वेदके दूसरे इलाकोमें सीमातोकी रक्षाके लिये भेजा। अलगूको सुवण-ओर्दूके खिलाफ ख्वारेज्ममें भी सफलता मिली।

इस विश्वासघातसे नाराज होकर अरिकबुगाने कुबिलेके सकटकी पर्वाह न कर अलगूपर चढाई कर दी। ऐसा अच्छा मौका पाकर कुबिलेने आक्रमण करके राजधानी कराकोरमको अरिकबुगासे छीन लिया। इधर अरिकबुगाने भी अलगूसे चगताईराजधानी अल्मालिक ले ली। अलगू भागा, और काश्गर, खोजन्द होते समरकन्द पहुचा। अरिकबुगाने ६६२ हि० (४ XI १२६३—२४ X १२६४ ई०) के जाडोको अलमालिकमें बिताया। उसने अलगूके अनुयायियोके साथ बडा निष्ठुर बर्ताव किया, और पास-पडोसके इलाकोको इतना उजाड दिया, कि भयकर अकालके मारे हजारो आदमी मर गये। अरिकबुगाके इस क्रूर बर्तावसे उसके अच्छे-अच्छे सेनापतियोने साथ छोड दिया। तब उसे होश आया और समझौतेके लिये तैयार हुआ। ओरगाना और मसूदबेग बातचीत करनेके लिये नियुक्त किये गये। अन्तमें चगताईका प्रदेश अलगूको दे देना पडा। खाली कोशको भरनेके लिये मसूदबेगने फिर प्रयत्न करना शुरू किया। अलगका एक और भी दूसरा भयकर प्रतिद्वद्वी था ओगोताईका पौत्र कैदू (काइ-दू), जिसने बातूकी सहायतासे अन्तर्वेदके उत्तरी भाग—तुर्किस्तान प्रदेश—को हडपनेकी कोशिश की, लेकिन, अरिकबुगासे छुट्टी पाकर अलगूने उसे मार भगाया। ओरगाना अलगूकी प्रिया पत्नी थी, जिसकी मृत्युके थोडे ही समय बाद ६६४ हि० (१३ X १२६५—३ IX १२६६ ई०)में अलगू भी मर गया। अतिम समयमें अलगूको सदेह हो गया था, कि ओरगाना अन्तर्वेदके मुसलमानोका अधिक पक्षपात करती है, जिसके ही पापके कारण वह मरी।

अलगूका प्रतिद्वद्वी कैदू बहुत समयतक कुबिले खानका भी जबदस्त प्रतिद्वद्वी रहा। कुबिलेको कग्रानका महासिंहासन और सभी तरहके भौतिक साधन प्राप्त थे, किंतु कैदूको केवल अपने कौशल तथा वीरताके बलपर लडना था। उसने न कभी शराब पी और न कूमिस ही। पहले वह पहाडाके भीतर छिपकर कग्रान और अलगूसे लडता रहा। फिर उसने बेरेक खान (सुवण-ओर्दू) और अलगके बीचमें

झगडा डलवा दिया। वेरेकने किसी ज्योतिषीसे सुना था, कि कैदू बहुत भारी आदमी होगा, इसलिये वह उसकी सहायताके लिये तैयार होगया। जू-छि उलुसकी मददसे कैदू काफी शक्तिशाली हो गया, और उसने अलगूकी एक बडी सेनाको हराकर नष्ट कर दिया। अलगूने दूसरी जबर्दस्त सेना भेजी, जिसने ओतरारके पास बेरेक खानको हराया—यह १२६५ ई० के अन्त या १२६६ ई० के आरम्भ की बात है। इन आरम्भिक लडाइयोके बाद अलगूको सफलता मिलने लगी और वह अपने सभी इलाकोको अपने हाथ में करनेमें सफल हुआ।

६ मुबारकशाह, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६ ई०)

इतिहासकार जमाल करशीके अनुसार ओरगाना-पुत्र मुबारकको १२६६ ई० में आहनगर उपत्यकामें खान बनाया गया। चगताई खानोमें वह पहला मुसलमान था, यद्यपि अभी खानोका इस्लाम अधिकतर दिखावेके लिये था। सारी प्रजाके मुसलमान होनेके कारण ऐसा करनेमे लाभ था। मुबारकको बहुत कोमलप्रकृति और न्यायप्रिय कहा जाता है। कुबिलेने उसको चगताई खान स्वीकार कर भी उसके सौतेले भाई बोराकको उसका उपराज बनाया, जिसमें कही मुबारककी शक्ति ज्यादा न बढ जाये। इस समय अब चगताई-राज्यके भीतर मुल्की,गैरमुल्की, मगोल-अ-मगोलका सवाल छिड गया था, जिसके उठानेमें बोराकका भी हाथ था। निम्न सिर-उपत्यका भी अब कैदूके हाथमें चली गई थी। कैदूके चालीस पुत्र अलग-अलग सेनाओके सेनापति थे। लूटप्रेमी, घुमन्तू मगोल और तुर्क बडी सख्या में कैदूके झडे के नीचे चले गये थे। कैदू अन्तर्वेद ही नही, कुबिलेके राज्यको भी लेना चाहता था। कुबिलेने उसके विरुद्ध अपने पक्षको मजबूत करनेके ख्यालसे बोराकको मुबारकका उपखान बनाकर अल्मालिक भेजा था, लेकिन बोराकने शुरूसे ही कैदूके साथ सहानुभूति दिखलानी शुरू की। दोनोने बुखारा और समरकन्दके हथियार बनानेवाले (वस्साफ) के अनुसार ६६१ हि० (१५ XI १२६२–६ X १२६३ ई०) में सोलह हजार कारीगरोको भेडोकी तरह आपसमें बाट लिया। इनमेंसे पाच हजार बातूको, तीन हजार हुलाकूको और बाकी कआनको मिले। उज्गद और पूर्वी तुर्किस्तानमें भी बोराकको सफलता मिली। इन सफलताओंके बाद अब मुबारकको गद्दीपर बनाये रखनेकी जरूरत नही थी, इसलिये सितम्बर १२६६ ई० में उसे बन्दीखानेमें डाल दिया गया, और सौतेले भाई बोराकने सीधे गद्दी सभाल ली।

७ बोराक, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६-७१ ई०)

कैदू कुबिलेके विरुद्ध सफल नही हो रहा था, जूछि-उलुस भी प्रबल था, इसलिये वह चगताई-राज्य से ही कुछ छीन सकता था, इसीलिये बोराक और कैदूमें पूर्वी सिर-उपत्यका और सप्तनदके लिये झगडा हो गया। १२६८ ई० में जूछि-उलुसके खान मङ्गू-तेमूरकी सहायतासे कैदूने सिर-उपत्यकाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन उसके कुछ ही समय बाद कैदू और मङ्गू तेमूरमें लडाई हो गई। इस अवसरसे फायदा उठाते हुए बोराक भी कैदूके ऊपर चढ दौडा,। दोनोंमें सेहून (सिर-दरिया) के तटपर लडाई हुई। कैदू और किपचक-सेनाकी हार हुई। बहुतसे लोग मारे गये या बन्दी बने, भारी सम्पत्ति लूटमें मिली। यह खबर सुनकर मङ्गू-तेमूरने अपने चचा बेरकेचरको पाच तुमान (पचास हजार) सेना देकर भेजा। उसने बोराकको बुरी तरह हराया। वह समरकन्दकी ओर भी बढना चाहता था, लेकिन कैदूने उसे मना कर दिया।

इस युद्धमें हारकर बोराक अन्तर्वेदकी ओर भागा। उसकी सेना बिना लूटका माल पाये ही लौट रही थी, इसलिये उसे सतुष्ट करना आवश्यक था। बोराकने इसके लिये बुखारा और समरकन्दके लोगोंको केवल शरीर ले नगरसे बाहर निकल जानेका हुकुम दिया, जिसमें कि सेना नगरको लूटकर अपना मनोरथ पूरा कर सके। लोगोके बहुत रो-धोकर विनती करने, भारी कर देने तथा हथियार बनाने वाले सिकलीगरोंके रात-दिन हथियार बनानेके लिये वचन देने पर बोराकने अपने इरादेको छोड दिया। बडे जोरसे तैयारी होने लगी और बोराक जल्दी ही फिर लडनेके लिये तैयार हो गया।

कैदू केवल योग्य सैनिक ही नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। वह अरिकबुगा की गलतीको दुहरा नही सकता था। वह जानता था कि मेरा सबसे जबर्दस्त शत्रु कुबिले खान है,

मगोल घुमन्तू रहा करते थे। इतिहासकार जुवेनीके अनुसार मुक्से कआनने उज्कन्दको करलुकवशी अरसलनखानके पुत्रको प्रदान किया था।

हुलागू (हुलाकू)ने ईरान पहुच वहासे चाउतेको किसी कामसे इलि और चूके बीचकी भूमि (सप्तनद) द्वारा कआनके पास भेजा। यह चीनी यात्री १२५९ ई० मे सप्तनद होकर गया था। वह इस प्रदेशका नाम इन्-तू (इ-दू) बतलाता है और कहता है, कि वहा बहुतसी जातियाकी बस्तिया हैं। उस समय इस प्रदेशमे बहुत वृक्ष थे।

ओरगानाने सप्तनद और अन्तर्वेदपर दस सालतक अच्छी तरह शासन किया।

कआनके मरनेपर फिर जो उथल-पुथल हुई, उससे चगताई-उलुसमे भी गडबडी मची। मुड्ने-कआन ६५८ हि० (१८ XII १२५९—७ XI १२६० ई०) मे मरा। अब कआनके सिंहासनके लिये मुड्नेके दो भाइया कुबिले और अरिकबुगाका झगडा हुआ। अरिकबुगाने अलगूको और कुबिले ने बुरी-पुत्र अबिश्काको चगताई खान बनाया। अलगूकी शक्ति ज्यादा मजबूत थी। उसने ओरगानाको भगाकर अलमालिककी गद्दी सभाल ली।

५ अलगू, अरिकबगा, वेदार-पुत्र (१२५९–६५ ई०)

कुबिलेद्वारा निर्वाचित चगताई खान अबिश्काको रास्तेमे ही कुबिलेके प्रतिद्वद्वीने बदी बना लिया, लेकिन पीछे अलगूने इसका बदला कुबिलेके प्रहारके समय सहायता देनेमे साफ इन्कार करके लिया। यही नही, उसने अरिकबुगाके तीन कर उगाहनेवालोको पकडकर उनके पासके पैसोको छीनकर मरवा डाला, और इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला कुबिलेका समर्थक बन गया।

तुर्किस्तान सारा अलगूके राज्यमें सम्मिलित था। उसके पास डेढ लाख सवार-सेना थी। ओर-गानाने अरिकबुगाका पक्ष लेते उसके पास सदेश भेजा, इसपर अलगूने पाच हजार सैनिकोके साथ उचा-चर और विकी ओगलान तथा अमीरोमेंसे हवश अमीर-पुत्र सुलेमानको भी विलिकची और अबिश्काके साथ समरकन्द, बुखारा तथा अन्तर्वेदके दूसरे इलाकामें सीमातोकी रक्षाके लिये भेजा। अलगूको सुवर्ण-ओर्दूके खिलाफ ख्वारेज्ममें भी सफलता मिली।

इस विश्वासघातसे नाराज होकर अरिकबुगाने कुबिलेके सकटकी पर्वाह न कर अलगूपर चढाई कर दी। ऐसा अच्छा मौका पाकर कुबिलेने आक्रमण करके राजधानी कराकोरमको अरिकबुगासे छीन लिया। इधर अरिकबुगाने भी अलगूसे चगताईराजधानी अलमालिक ले ली। अलगू भागा, और काशगर, खोजन्द होते समरकन्द पहुचा। अरिकबुगाने ६६२ हि० (४ XI १२६३—२४ X १२६४ ई०) के जाडोको अलमालिकमें बिताया। उसने अलगूके अनुयायियोके साथ बडा निष्ठुर बर्ताव किया, और पास-पडोसके इलाकोको इतना उजाड दिया, कि भयकर अकालके मारे हजारो आदमी मर गये। अरिकबुगाके इस क्रूर बर्तावसे उसके अच्छे-अच्छे सेनापतियोने साथ छोड दिया। तब उसे होश आया और समझौतेके लिये तैयार हुआ। ओरगाना और मसूदबेग बातचीत करनेके लिये नियुक्त किये गये। अतमें चगताईका प्रदेश अलगूको दे देना पडा। खाली कोशको भरनेके लिये मसूदबेगने फिर प्रयत्न करना शुरू किया। अलगूका एक और भी दूसरा भयकर प्रतिद्वद्वी था ओगोताईका पौत्र कैदू (काइ-दू), जिसने बातूकी सहायतासे अन्तर्वेदके उत्तरी भाग—तुर्किस्तान प्रदेश—को हडपनेकी कोशिश की, लेकिन, अरिकबुगासे छुट्टी पाकर अलगूने उसे मार भगाया। ओरगाना अलगूकी प्रिया पत्नी थी, जिसकी मृत्युके थोडे ही समय बाद ६६४ हि० (१३ X १२६५—३ IX १२६६ ई०)में अलगू भी मर गया। अतिम समयमें अलगूको सदेह हो गया था, कि ओरगाना अन्तर्वेदके मुसलमानोका अधिक पक्षपात करती है, जिसके ही पापके कारण वह मरी।

अलगूका प्रतिद्वद्वी कैदू बहुत समयतक कुबिले खानका भी जबर्दस्त प्रतिद्वद्वी रहा। कुबिलेको कआनका महासिंहासन और सभी तरहके भौतिक साधन प्राप्त थे, किंतु कैदूको केवल अपने कौशल तथा वीरताके बलपर लडना था। उसने न कभी शराब पी और न कूमिस ही। पहले वह पहाडोके भीतर छिपकर कआन और अलगूसे लडता रहा। फिर उसने बेरेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) और अलगूके बीचमें

झगडा डलवा दिया। वेरेकने किसी ज्योतिषीसे सुना था, कि कैदू बहुत भारी आदमी होगा, इसलिये वह उसकी सहायताके लिये तैयार होगया। जू-छि उलुसकी मददसे कैदू काफी शक्तिशाली हो गया, और उसने अलगूकी एक बडी सेनाको हराकर नष्ट कर दिया। अलगूने दूसरी जबर्दस्त सेना भेजी, जिसने ओतरारके पास वेरेक खानको हराया—यह १२६५ ई० के अन्त या १२६६ ई० के आरम्भ की बात है। इन आरम्भिक लडाइयोके बाद अलगूको सफलता मिलने लगी और वह अपने सभी इलाकोको अपने हाथ में करनेमें सफल हुआ।

६ मुबारकशाह, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६ ई०)

इतिहासकार जमाल करशीके अनुसार ओरगाना-पुत्र मुबारकको १२६६ ई० में आहनगर उपत्यकामें खान बनाया गया। चगताई खानोमें वह पहला मुसलमान था, यद्यपि अभी खानोका इस्लाम अधिकतर दिखावेके लिये था। सारी प्रजाके मुसलमान होनेके कारण ऐसा करनेमें लाभ था। मुबारकको बहुत कोमलप्रकृति और न्यायप्रिय कहा जाता है। कुबिलेने उसको चगताई खान स्वीकार कर भी उसके सौतेले भाई वोराकको उसका उपराज बनाया, जिसमें कही मुबारककी शक्ति ज्यादा न बढ जाये। इस समय अब चगताई-राज्यके भीतर मुल्की,गैरमुल्की, मगोल-अ-मगोलका सवाल छिड गया था, जिसके उठानेमें वोराकका भी हाथ था। निम्न सिर-उपत्यका भी अब कैदूके हाथमें चली गई थी। कैदूके चालीस पुत्र अलग-अलग सेनाओके सेनापति थे। लूटप्रेमी, घुमन्तू मगोल और तुर्क बडी सख्या में कैदूके झडे के नीचे चले गये थे। कैदू अन्तर्वेद ही नही, कुबिलेके राज्यको भी लेना चाहता था। कुबिलेने उसके विरुद्ध अपने पक्षको मजबूत करनेके ख्यालसे वोराकको मुबारकका उपखान बनाकर अल्मालिक भेजा था, लेकिन वोराकने शुरूसे ही कैदूके साथ सहानुभूति दिखलानी शुरू की। दोनोने बुखारा और समरकन्दके हथियार बनानेवाले (वस्साफ) के अनुसार ६६१ हि० (१५ XI १२६२–६ X १२६३ ई०) में सोलह हजार कारीगरोको भेडोकी तरह आपसमें बाट लिया। इनमेंसे पाच हजार बातूको, तीन हजार हुलाकूको और बाकी कआनको मिले। उज्गद और पूर्वी तुर्किस्तानमें भी वोराकको सफलता मिली। इन सफलताओंके बाद अब मुबारकको गद्दीपर बनाये रखनेकी जरूरत नही थी, इसलिये सितम्बर १२६६ ई० में उसे बन्दीखानेमें डाल दिया गया, और सौतेले भाई वोराकने सीधे गद्दी सभाल ली।

७ वोराक, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६-७१ ई०)

कैदू कुबिलेके विरुद्ध सफल नही हो रहा था, जूछि-उलुस भी प्रबल था, इसलिये वह चगताई-राज्य से ही कुछ छीन सकता था, इसीलिये वोराक और कैदूमें पूर्वी सिर-उपत्यका और सप्तनदके लिये झगडा हो गया। १२६८ ई० में जूछि-उलुसके खान मङ्गू-तेमूरकी सहायतासे कैदूने सिर-उपत्यकाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन उसके कुछ ही समय बाद कैदू और मङ्गू तेमरमें लडाई हो गई। इस अवसरसे फायदा उठाते हुए वोराक भी कैदूके ऊपर चढ दौडा। दोनोंमें सेहून (सिर-दरिया) के तटपर लडाई हुई। कैदू और किपचक-सेनाकी हार हुई। बहुतसे लोग मारे गये या बन्दी बने, भारी सम्पत्ति लूटमें मिली। यह खबर सुनकर मङ्गू-तेमूरने अपने चचा वेरकेचरको पाच तुमान (पचास हजार) सेना देकर भेजा। उसने वोराकको बुरी तरह हराया। वह समरकन्दकी ओर भी बढना चाहता था, लेकिन कैदूने उसे मना कर दिया।

इस युद्धमें हारकर वोराक अन्तर्वेदकी ओर भागा। उसकी सेना बिना लूटका माल पाये ही लौट रही थी, इसलिये उसे सतुष्ट करना आवश्यक था। वोराकने इसके लिये बुखारा और समरकन्दके लोगोंको केवल शरीर ले नगरसे बाहर निकल जानेका हुकुम दिया, जिसमें कि सेना नगरको लूटकर अपना मनोरथ पूरा कर सके। लोगोंके बहुत रो-धोकर विनती करने, भारी कर देने तथा हथियार बनाने वाले सिकलीगरोंके रात-दिन हथियार बनानेके लिये वचन देने पर वोराकने अपने इरादेको छोड दिया। बडे जोरसे तैयारी होने लगी और वोराक जल्दी ही फिर लडनेके लिये तैयार हो गया।

कैदू केवल योग्य सैनिक ही नही, बल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। वह अरिकबुगा की गलतीको दुहरा नहीं सकता था। वह जानता था कि मेरा सबसे जबर्दस्त शत्रु कुबिले खान है,

इसलिये उसने शान्तिसे काम लेना चाहा और मेल करानेके लिये बोराकके लगोटियायार किपचक ओग-लानको उसके पास भेजा। बोरकने अपने मित्रका खूब स्वागत किया। दोनोंने एक दूसरेको प्याला दिया, सलाह हुई, कि जूछि, चगताई और कैदूके उलुसोंके बीच मित्रता स्थापित करनेके लिये एक कुरिल्ताई (महापरिषद्) बुलाई जाय।

६६७ हि० (१० IX १२६८–१ VIII १२६९ ई०) के वसत (मार्च-अप्रैल १२६९ ई० में) तलस और कँजककी मैदानी भूमिमें कुरिल्ताई एकत्रित हुई। कैदू और बोराक दोनो अपने-अपने रक्त तथा सुवर्णसे मिश्रित मदिराको एक साथ शान्तिचषकमें पीकर एक-दूसरेके अदा (परम मित्र) बने। कुरिल्ताईमें कैदूने कहा था—"हमारे महान् पितामह (छिङ-गिस्) ने दुनियामें युद्ध किया तलवार और बाणके बलपर विशाल राज्य स्थापित किया। जब हम अपने पुरखाकी ओर देखते है, तो हम सब भाई भाई हैं। लेकिन हममें कुछ भी मेल नही।" इसके जवाबमें बोराकने कहा—"बात ठीक है। मैं भी उसी वृक्षका फल हू। मेरे पास भी थोडा-बहुत यूत (ओर्दू) है। चगताई और ओगोताई (कैदूका पिता मह) छिङ-गिस् खानके ही पुत्र थे। ओगोताई कआनसे कैदू, चगताईसे मैं, जेठे भाई जूछिसे बेरकेचर और मङ्गू-तेमूर और कनिष्ट भाई तू लुईसे हुलाकू और कुबिले हैं।

"हमारे समयमें पश्चिमातका स्वामी मङ्गू-तेमूर खनाई-माचीनका राजा कुबिले खान है, जिसके राज्यकी लम्बाई-चौडाईको भगवान् ही जानता है। पश्चिमातमें आमूसे सिरिया और मिस्रतक पिता द्वाराअर्जित राज्यका खान अबका है। दोनोके बीचमें हमारा राज्य, तुर्किस्तान और किपचक है। मुझे अपना कसूर नहीं मालूम होता।' इसपर कैदू और बोराक दोनोंने कहा—"सत्य तुम्हारी ओर है। अब यही निर्णय है, कि आजके बाद हम एक दूसरेके विरोधी नही बनेंगे ।"

इस प्रकार गरमागरम भाषण करते और भावुकता दिखलाते हुए मगोल-राजवशियोने आपसमें मेल किया। उनके लाखो घोडों और पशुओंके लिये चरागाहोंकी अवश्यकता थी, जो गर्मीकी अलग और जाडेकी अलग होती थी। गर्मीके दिनोमें ओर्दू ऊची ठडी जगहोंमें जाकर अपने तम्बू लगाता और जाडेके दिनोमें ऐसी जगहपर, जहा हवा और सर्दी कम होती तथा कुछ घास-चारा भी मिल सकता था। कुरिल्ताईने याइलक (गरम चरागाह) और किशलक (सर्द चरागाह) निश्चित कर दिये गये। कैदूके ओर्दूको सप्तनदमें स्थान दिया गया। मुस्लिम इतिहासकार कैदूकी न्यायप्रियताके बड़े प्रश-सक है—कैदूने सफल युद्ध करके अपने राज्यमें व्यवस्था कायम की थी।

कुरिल्ताईके फैसलेका प्रभाव ज्यादा दिन नही रहा। जब आर्थिक स्वार्थ एक-दूसरेके विरोधी हो, तो स्थायी मेल कैसे हो सकता है? बोराकको इस बटवारेके कारण अन्तर्वेदका एक-तिहाई हिस्सा—खोजदसे समरकन्दके पासतककी भूमि—कैदूको देना पडा। बोराक इस क्षतिको पूर्ण करनेके लिये आमूके दक्षिण (हुलाकूके राज्य) खुरासानपर चढ़ा। लूट-पाटके मारे किसान भागने लगे। गावोंके उजड जाने पर भारी अकालका सामना करना पडता, इसलिये दोनो खानोंने वजीर मसऊदबेगको भेजकर किसानो को सान्त्वना देनेका प्रयत्न किया। वस्तुतः इसवक्त बडी बुरी अवस्थामें था। बोराक अबका खान (ईरान) पर चढ दौडनेके लिये उतावला हो रहा था। मसऊदने ऐसा न करनेकी सलाह दी, तो गुस्सेमें आकर बोराकने उसे सात कोडे लगवाये, जिसके लिये पीछे उसे खेद हुआ। तो भी उसने अपना सकल्प नहीं छोडा। रुपये-पैसे का हिसाब करनेके बहाने मसऊदबेग अबका (इलखान) के पास गया, लेकिन उसका असली उद्देश्य था इलखानकी सैनिक स्थितिका पता लगाना। इलखानको पता लग गया। बडी मुश्किलसे मसऊदबेग जान बचाकर भाग सका। इस तरह असफल होनेपर चगताई खानने ईरानमें रहते चगताई-राजकुमार निकूदरको फोडनेके लिये एक गुप्तचर भेजा। अतमें अपने पुत्र बेग-तेमूरको एक तुमान सेना के साथ राजरक्षाके लिये भेजा। कैदूने भी कितने ही राजकुमारोंको सेना देकर बोराककी सहायताके लिये भेजा, जिनमें मोतूगन-पौत्र बुरी-पुत्र अहमद, चगताई-पौत्र सरबान-पुत्र निकबेई ओगुल, और ओगोताई-पौत्र कैदू-पुत्र बालिगू (यालगू) थे। सभी लोग वक्षु (आमू दरिया) पार होनेके लिये तेरमिजकी ओर रवाना हुए। दूसरी सेना गू-युक कआन-पौत्र, हकुरखान-पुत्र चुबाद, तथा कैदू-पुत्र किपचकके साथ खीवामें वक्षु नदी पार होनेके लिये भेजी गई। एक और भी सेना मङ्किशलकसे होते कोकाजू

कुचुकके नेतृत्वमें रवाना हुई। अपने पुत्र बेक तेमूरको दस हजार सेना दे बोराक अन्तर्वेदमें छोड़ नावोंके पुलसे वक्षु पार हुआ। उसका कैम्प मेर्वमें पड़ा, जहाँसे उसने अपने सैनिकोंको कुबिले कआनके भतीजे खुलाकू-पुत्र अबकाके सारे देशको लूटकर बरवाद करनेका हुकुम दिया। उस समय खुरासान का राज्यपाल अबका-पुत्र अरगून था। बोराककी सेना खुरासानमें दाखिल हुई और उसने बदख्शा, कीसिम, शापूरगान, तालिकान, मेर्व-शायान, तथा नेशापोर (२८ अप्रैल १२६६ ई०) तकके प्रदेशको लूटा और उजाड़ा। थोड़ेसे प्रतिरोधके बाद सारे खुरासानपर बोराकका अधिकार हो गया। उसका मुकाबिला करनेके लिये अबका आजुरबाइजानसे चला। हेरातके पास दोनो सेनाओंमे लड़ाई हुई, जिसमें बोराकको हार खानी पड़ी। अबकाने पराजित सेनाका पीछा किया। शायद सारी चगताई सेना नष्ट हो जाती, लेकिन सेनापति जलेरताईने बड़े कौशलसे उसे नष्ट नही होने दिया। अबकाने अन्तर्वेदके बहुत से इलाकोंको लूटा। उस वक्त मगोलोंके सामने मुसलमान चापलूसी करने कहाँतक गिर गये थे, इसका उदाहरण यह घटना है—अबकाने खाते समय एक बार अपने वजीर शम्शुद्दीनकी ओर चाकूके नोकपर सूअरका मांस रखकर बढ़ाया। वजीरने जमीन चूमकर इस अत्यन्त हराम भोजनको खा लिया। इसपर खानने अपना प्याला उठाकर उसकी तरफ किया। उसके न लेनेपर अबकाने कहा—"इसने प्याला लेने से इन्कार करके मुझे नाराज नही किया, लेकिन यदि इसने मांसको लेनेसे इन्कार किया होता, तो मैं उसी चाकूसे इसकी आखें निकाल लेता।"

जिस समय बोराकने खुरासानपर सफल आक्रमण किया, यदि उसी समय उसके मित्रोंमें फूट न हो गई होती, तो शायद अबकाको इतनी आसानीसे सफलता न मिलती। बोराकका अदा (परम मित्र) किपचक ओगलान चगताई सेनापति जलेरताईके किसी बर्तावसे असतुष्ट हो साथ छोड़कर चला गया। बोराकने उसे दड देनेका वचन दिया भी, किंतु किपचक ओगलान नही रुका। ग-युक कआनके पुत्र जवात ने भी इसी समय साथ छोड दिया। अबकाने एक और चाल चली। उसने बोराकके तीन दूतोंको पकड सासत देकर उनसे यह स्वीकार करवाया, कि हम अपने खानकी ओरसे गुप्तचरका काम करने आये हैं। वह मृत्युकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि इसी समय धूलिधूसरित धावनने आकर खबर दी—"मेरे स्वामी! दरबन्द (कास्पियन) की ओरसे शत्रुओं (किपचकों) ने भारी सख्यामें आकर देशपर धावा बोल दिया है, पश्चिमी प्रदेश तलवार और आगसे ध्वस्त किये जा रहे हैं।" अबका यह खबर सुनकर आजुरबाइजानकी ओर चला गया और बोराकके दूतोंको भागनेका मौका मिल गया। बोराक विजयसे कुछ निश्चितसा हो गया, किंतु, फिर अचानक लौटकर अबकाने हेरातके पास बोराकको जबर्दस्त हार दी। बोराक इस लड़ाईमें घायल हुआ। अपनेको खतरेमे डालकर सेनापति मेरगुल और जलेरताईने बोराकको निकालकर वक्षुपार न कराया होता, तो बोराककी जान न बचती।

इस भीषण पराजय और मित्रोंके विश्वासघातके बाद बोराक ६६९ हि० के वसत (मार्च-अप्रैल १२७१ ई०) में मर गया।

८ निगपई, सरवान-पुत्र (१२७१—७४ ई०)

नये खानके शासनकालमें भी चगताई और ओगोताई उलुसोंका झगड़ा जारी रहा। कैदूने निगपईको खान बनाया, इसपर बोराक और अलगूके पुत्रोंने विद्रोहकर दिया। इस सघर्षमें जरफ्शा-उपत्यका के सारे नगर नष्ट हो गये। निगपई पीछे कैदूके विरुद्ध हो गया और उसके साथ लड़ते हुए १२७४ ई० में मारा गया।

९ तोका तेमूर, कदमी-पुत्र (१२७४—८२ ई०)

निकपाई और तोका तेमूरका नाम कितनी ही वंशावलियोंमें नही मिलता, जिसका कारण यही हो सकता है, कि उनका शासन गृह-युद्धोंके समयका था, जिसमें एकसे अधिक राजकुमार तख्तके दावदार थे।

१० दुवा, तुवा, दावा, बोराक-पुत्र (१२८२—१३०७ ई०)

चगताइयोंमें दुवा बहुत शक्तिशाली खान, और कैदूका पक्का साथी था। उसके लिये इसने कदूसे खानोंसे बहुतसी लड़ाइयां लड़ी। प्रसिद्ध इतिहासकार शम्शुद्दीन जुवैनी इसका वजीर था। अबका

की सेना लूट-पाट करते ६७१ हि० (२६ VII १२७२-१६ VI १२७३ ई०) में बुखारा पहुच महान् नगरको लूट वहाके नागरिकोमेंसे पचास हजारको बन्दी बना अब लौट रही थी, तो सेनापति चापरने आक्रमण करके उनमेंसे कितने ही वन्दियोको छुडा लिया। तीन साल बाद फिर अबकाने आकर देशको बरबाद किया, जिसका सुधार दुवाके शासनकालमें मसऊदबेगके योग्य प्रबन्धके कारण हो पाया। श्वेत-ओर्दूके बायन खानसे भी दुवाका विशेष झगडा था, क्योकि वह कैदू और दुवाके विरोधियाका पक्षपाती था। १३वी सदीके प्रथम वर्षमें इन दोनो दलोने अठारह लडाइया लडी। बायनके पीठपर तैमूर कआन था, सुवर्ण-ओर्दू और इलखान (ईरान) भी बायनके दलमें सम्मिलित थे---दुवाके विरुद्ध उत्तर-पश्चिममें तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू) और बायन (श्वेत-ओर्दू) की सेनायें थी, दक्षिण-पश्चिममें गाजनखान (ईरान) और दक्षिण-पूर्वमें बदख्शाका शासक भी चीन-सम्राट् (कुबिले) के पक्षपाती थे। इतने जबदस्त शत्रुओंसे घिरे रहते भी देशकी समृद्धि और राज्यकी शक्तिको बनाये रखना दुवा की योग्यताका परिचायक था।

कैदूके चालीस पुत्र थे, यह हम कह आये है। उसने छिङ्-गिस् खानकी तरह अपने राज्यको अपने ४० लडकोमें बाट दिया था--वडेको चीन सीमान्तपर, बेकैचेरको जछि सीमातपर सरवानको अफगानिस्तानमें सबज्येष्ठ पुत्र चापरको सबसे अधिक सघर्षके स्थान सप्तनदमें रक्खा था। कैदूकी-पुत्री खुतुलुन चागा भी बडी ही वीर तरुणी थी। अपने पिताके अभियानोमें भाग लेनेके कारण उसने व्याह नही करना चाहा। कैदू उसे बेटी नही, बेटेकी तरह प्यार करता था। उसने उसे स्वयवर चुननेके लिये कहा। जब कोई वर नहीं मिला, तो गाजन खान (ईरान) को देना चाहा, लेकिन खुतुलुन चागाने यह पसन्द नहीं किया और अपने पिताके बडे दरबारी एक चीनीको अपना हाथ दिया। कैदू करशीके अनुसार १३०१ ई० में (दूसरोके अनुसार १३०३ ई० के वसतमें) लडाईमें मरा। उसका मृत शरीर चू और इलि नदियोके बीचके ऊचे पहाड सिवालिकमें दफनाया गया।

कैदूके मरनेके बाद अब दुवा सबसे प्रभावशाली खान था। उसने १३०३ ई० के वसतमें चापर को कैदूका उत्तराधिकारी बनाया, जिससे कैदू-पुत्रोमें झगडा उठ खडा हुआ। बाहर भी शत्रुओका भय था ही। तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू खान) ने बायनके शत्रु कुइलुकको समर्पण करनेकी माग की। इन्कार करनेपर उसने दो तुमान सेना दे बायनकी पीठ ठोकी। फवरी १३०३ ई० के आरम्भमें बायनका दूत दुवा और चापरके साथ मिलकर लडाई करनेकी बात तै करने बगदाद गया।

दुवा एक कुशल सैनिक ही नही था, बल्कि कैदूकी तरह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि शक्ति छिन्न-भिन्न करनेवाले विरोधी तत्त्वोंसे उसे लडना पड रहा था, लेकिन वह समझ रहा था, कि यदि लडाई इसी तरह चलती रही, तो कुछ ही समयमें अन्तर्वेद, सप्तनद, किपचक और ईरान-इराक से छिङगिस-वशका नाम मिट जायेगा। इसीलिये वह सोच रहा था, कि कआनकी अधीनतामें सभी उलुसोका एक सघ बनना चाहिये। उसने इसके लिये एक योजना बनाई-(१) सभी आपसमें शातिसे रहते कआन (चीनके मगोल सम्राट्) को अपना प्रभु मानें, (२) सभी देशोमें व्यापारकी स्वतन्त्रता हो। उसने इस योजनाको सबसे पहले कआन तोगृतोगूके पास भेजा, जिसने उसे बहुत पसन्द किया। इसके बाद अगस्त १३०४ ई० में चापर और दुवाके दूत योजनाको लेकर ईरान गये। वहा तथा पीछे जूछिके दरबारमें भी इस योजनाका स्वागत नही हुआ, शायद उन्होने इसे दुवाकी एक चाल समझा।

चगताई राजकुमार अपने युर्तोको लेकर चरागाहामे घूमा ही करते थे, जहा किसी छोटीसी बातको भी लेकर झगडा हो पडना स्वाभाविक था। १३०५ ई०में अन्तर्वेदमें चापरका कुछ चगताई राज-कुमारोके साथ झगडा हो गया। उसके लिये तरुणोके लडकपनपर अफसोस प्रकट करते लोग समझौता करानेके लिये ताशकन्दमें जमा हुये। ओगोताईके राजकुमार जोचोकबालिकमें चापरके भाई शाहके युतपर टूट पडे। उस समय दुवाका सेनापति दक्षिण-सप्तनदके अरपा-उपत्यकामें हेमत-वास कर रहा था। शाह अपने सात हजार आदमियोके साथ भागकर अपने भाई बेकेचरके पास पहुचा। विरोधी राजकुमारोने तलस-द्रोणीके पासवाले नगरोको लूटा। चापरको यह खबर कआनकी सेनासे लडते इर्तिश अल्ताईके पास मिली। वहासे हार खाकर वह तीन सवारोंके साथ भागकर दुवाके पास गया।

रशीदुद्दीनके अनुसार दुवा १३०६ ई० में मरा और वस्साफके अनुसार १३०७ ई० में।

११ कुजेक, कुचोक, दुवा-पुत्र (१३०७-८ ई०)

दुवाके मरनेपर बरकुलसे बुलाकर कुजेकको अलमालिकके पास सेवकुन स्थानमे गद्दीपर बिठाया गया। यह युलदुजमें मरा। इसके समयमें भी गृह-युद्ध जारी रहा, और बुरीवाशीके पास तथा मिरे-उपत्यकाके पूर्वी भागोमें कई लड़ाइयां हुई। अपने प्रतिद्वद्वी ओगोताई राजकुमार कुरसेवेसे लड़कर भागते समय कुजेक मारा गया।

१२ तलिकू, तलिक, खिजिर, कदमी-पुत्र (१३०८-१० ई०)

बुरीको १२५१ ई० में कतल किया गया था, यह हम बतला चुके है। उसीका पुत्र तलिकू अब गद्दीपर बैठा। इस समय जल्दी-जल्दी खानोका बदलना यही बतला रहा था, कि अब सत्ता दरबारियों-के हाथमें थी और खान उनके खेलके मुहरे थे। मुस्लिम दरबारियो और प्रजाको प्रसन्न करनेके लिये तलिकूने खिजिरके नामसे अपनेको मुसलमान घोषित किया, जिससे मगोल राजकुमार नाराज हो गये–अबतक मगोलोने बौद्ध धर्मको जातीय धर्मके तौरपर स्वीकार कर लिया था, इसलिये वह नही पसन्द कर सकते थे, कि उनका खान मुसलमान बन जाये। इसी भावनासे प्रेरित हो तीन सौ सवारोके साथ दुवा-पुत्र केवेकने रातको भोजके समय खेमेमें घुसकर खानको मार डाला। वस्साफके अनुसार तलिकू ७०८ हि० (२१ VI १३०८–१२ V १३०९ ई०) में गद्दीपर बैठा, दूसरे इतिहासकारोके अनुसार ७०९ हि० (११ VI १३०९–२ V १३१० ई०) में गद्दीपर बैठा, तथा ७१० हि० (३१ V १३१०–२१ IV १३११ ई०) में उसकी मृत्यु हुई।

१३ केबेक, दुवा-पुत्र (१३१० ई०)

केबेक बहादुर और स्पष्टवादी खान था। चापरने पिताकी शत्रुताको उसके पुत्र केबेकतक कायम रक्खा, लेकिन उसे हार खानी पड़ी। अब चगताई-उलुस अस्त-व्यस्त हो चुका था। चापरने त्युकमे, बइ-केचर और उरुस-पुत्रोके साथ मिलकर केबेकके ऊपर चढाई की, लेकिन उसे इलि नदीके पश्चिममें पराजित होना पड़ा। फिर इलिके रास्ते जाकर उसने त्युकमेको हराकर उसके युतको छिन्न-भिन्न कर दिया। त्युकमेने पूरबमें भागकर कआनके पास चीनमें जाना चाहा। भागते समय त्युकमेकी भिड़त केबेककी सेनासे हो गई, जिसमें वह मारा गया। राजकुमारोके इस घरेलू सघर्षोंके कारण कृषि और व्यापारको भारी क्षति हुई। केबेकने इस सघर्षको बन्द करनेके लिये ७०९ हि० (११ VI १३०९–२ V १३१० ई०) में कूरिल्ताई बुलाई और उसके इस निर्णयको स्वीकार किया, कि गद्दी उसके भाई एसेनबुकाको दी जाय, और वह कआनके अधीन रहे।

१४ एसेनबुगा, ईसनबुका, दुवा-पुत्र (१३१०-१८ ई०)

कैदूका विशाल राज्य अब छिन्न-भिन्न हो गया था, और उसका अधिकाश चगताई-उलुसके हाथमें चला आया था। कैदूके पुत्रोमेंसे शाहके पास कुछ इलाके रह गये थे। एसेनबुगाने राज्यके भीतर और बाहर शाति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। इसके लिये उसने १३१२ ई० में उज्बेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) के साथ मित्रता स्थापित की, जो १३१५ ई० तक रही, जबकि चगताई और जुचि दोनो उलुसोंने अपने शत्रु उलजैतू (ईरान) पर आक्रमण किया। चगताई सेनाने इलखानी सेनाको हराकर हेरात तक उसका पीछा किया। चार महीनेतक यह प्रदेश चगताइयोके हाथमें रहा और उनकी सेनाने वहा बहुत अत्याचार किय।

कआन बयन्तुका ओर्दू जाडोमें कोवुक-तटपर और गर्मियोमें एसुन मोरान (इर्तिश-शाखा) पर रहता था। ऐसे ही समय एसुन मोरानके पास उसका चगताई उलुससे झगडा हो पड़ा। कआनकी दूसरी सेना उस समय चालीस दिनके रास्ते पर थी। तोकाजीके नेतृत्वमें कआनकी सेनाने एसेनबुगाके हेमत-वास (इस्सिकुलके समीप) और ग्रीष्मवास (तलसके समीप) को लूटा-पाटा। इस समय (१३१२ ई०) एसेनबुगाकी उज्बेक खानके साथ मित्रता थी। जब कआनकी सेनाके आक्रमणकी बात एसेनबुगाको मिली, तो वह खुरासान छोड़कर उत्तरकी ओर लौटा। लेकिन इलखान उल्जैतू खुदाबन्दा

की सेना लूट-पाट करते ६७१ हि० (२६ VII १२७२–१६ VI १२७३ ई०) में बुखारा पहुंच महान् नगरको लूट वहाके नागरिकोंमेंसे पचास हजारको वन्दी वना जब लौट रही थी, तो सेनापति चापरने आक्रमण करके उनमेंसे कितने ही वन्दियोंको छुड़ा लिया। तीन साल बाद फिर अवकाने आकर देशको बरवाद किया, जिसका सुधार दुवाके शासनकालमें मसऊदवेगके योग्य प्रवन्धके कारण हो पाया। श्वेत-ओर्दूके वायन खानसे भी दुवाका विशेष झगड़ा था, क्योंकि वह कैदू और दुवाके विरोधियोंका पक्षपाती था। १३वी सदीके प्रथम वर्षमें इन दोनों दलोंने अठारह लड़ाइयां लड़ीं। वायनके पीठपर तेमूर कआन था, सुवर्ण-ओर्दू और इलखान (ईरान) भी वायनके दलमें सम्मिलित थे—दुवाके विरुद्ध उत्तर-पश्चिममें तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू) और वायन (श्वेत-ओर्दू) की सेनायें थीं, दक्षिण-पश्चिममें गाजनखान (ईरान) और दक्षिण-पूर्वमें वदख्शाका शासक भी चीन-सम्राट (कुबिलै) के पक्षपाती थे। इतने जबदस्त शत्रुओंसे घिरे रहते भी देशकी समृद्धि और राज्यकी शक्तिको वनाये रखना दुवा की योग्यताका परिचायक था।

कैदूके चालीस पुत्र थे, यह हम कह आये हैं। उसने छिङ-गिस् खानकी तरह अपने राज्यको अपने ४० लड़कोंमें बाट दिया था—वड़ेको चीन सीमान्तपर, वेकेचेरको जह्धि सीमातपर सरवानको अफगानिस्तानमें सर्वज्येष्ठ पुत्र चापरको सबसे अधिक सघर्षके स्थान सप्तनदमें रक्खा था। कैदूकी-पुत्री खुतुलुन चागा भी बड़ी ही वीर तरुणी थी। अपने पिताके अभियानोंमें भाग लेनेके कारण उसने व्याह नही करना चाहा। कैदू उसे बेटी नही, बेटेकी तरह प्यार करता था। उसने उसे स्वयंवर चुननेके लिये कहा। जब कोई वर नही मिला, तो गाजन खान (ईरान) को देना चाहा, लेकिन खुतुलुन चागाने यह पसन्द नही किया और अपने पिताके बड़े दरबारी एक चीनीको अपना हाथ दिया। कैदू करशीके अनुसार १३०१ ई० में (दूसरोंके अनुसार १३०३ ई० के वसतमें) लड़ाईमें मरा। उसका मृत शरीर चू और इलि नदियोंके बीचके ऊंचे पहाड़ सिवालिकमें दफनाया गया।

कैदूके मरनेके बाद अब दुवा सबसे प्रभावशाली खान था। उसने १३०३ ई० के वसतमें चापर को कैदूका उत्तराधिकारी वनाया, जिससे कैदू-पुत्रोंमें झगड़ा उठ खड़ा हुआ। बाहर भी शत्रुओंका भय था ही। तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू खान) ने वायनके शत्रु कुइलुकको समर्पण करनेकी माग की। इन्कार करनेपर उसने दो तुमान सेना दे वायनकी पीठ ठोंकी। फर्वरी १३०३ ई० के आरम्भमें वायनका दूत दुवा और चापरके साथ मिलकर लड़ाई करनेकी बात तै करने बगदाद गया।

दुवा एक कुशल सैनिक ही नही था, बल्कि कैदूकी तरह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि शक्ति छिन्न-भिन्न करनेवाले विरोधी तत्त्वोंसे उसे लड़ना पड़ रहा था, लेकिन वह समझ रहा था, कि यदि लड़ाई इसी तरह चलती रही, तो कुछ ही समयमें अन्तर्वेद, सप्तनद, किपचक और ईरान-इराक से छिङगिस-वंशका नाम मिट जायेगा। इसीलिये वह सोच रहा था, कि कआनकी अधीनतामें सभी उलूसोंका एक संघ वनना चाहिये। उसने इसके लिये एक योजना वनाई–(१) सभी आपसमें शांतिसे रहते कआन (चीनके मंगोल सम्राट्) को अपना प्रभु मानें, (२) सभी देशोंमें व्यापारकी स्वतन्त्रता हो। उसने इस योजनाको सबसे पहले कआन तोगृतोगूके पास भेजा, जिसने उसे बहुत पसन्द किया। इसके बाद अगस्त १३०४ ई० में चापर और दुवाके दूत योजनाको लेकर ईरान गये। वहां तथा पीछे जूछिके दरबारमें भी इस योजनाका स्वागत नही हुआ, शायद उन्होंने इसे दुवाकी एक चाल समझा।

चगताई राजकुमार अपने यूर्तोंको लेकर चरागाहोंमें घूमा ही करते थे, जहां किसी छोटीसी बातको भी लेकर झगड़ा हो पड़ना स्वाभाविक था। १३०५ ई०में अन्तर्वेदमें चापरका कुछ चगताई राज-कुमारोंके साथ झगड़ा हो गया। उसके लिये तरुणोंके लड़कपनपर अफसोस प्रकट करते लोग समझौता करानेके लिये ताशकन्दमें जमा हुये। ओगोताईके राजकुमार जोचोकवालिकमें चापरके भाई शाहके यूर्तपर टूट पड़े। उस समय दुवाका सेनापति दक्षिण-सप्तनदके अरपा-उपत्यकामें हेमंत-वास कर रहा था। शाह अपने सात हजार आदमियोंके साथ भागकर अपने भाई वेकेचरके पास पहुंचा। विरोधी राजकुमारोंने तलस-द्रोणीके पासवाले नगरोंको लूटा। चापरको यह खबर कआनकी सेनासे लड़ते इर्तिश अलताईके पास मिली। वहांसे हार खाकर वह तीन सवारोंके साथ भागकर दुवाके पास गया।

रशीदुद्दीनके अनुसार दुवा १३०६ ई० मे मरा और वस्साफके अनुसार १३०७ ई० में।

११ कुजेक, कुचोक, दुवा-पुत्र (१३०७-८ ई०)

दुवाके मरनेपर वरकुलसे वुलाकर कुजेकको अलमालिकके पास सेवकुन स्थानमे गद्दीपर बिठाया गया। यह युलदुजमें मरा। इसके समयमें भी गृह-युद्ध जारी रहा, और वुरीवाशीके पास तथा गिर-उपत्यकाके पूर्वी भागोमें कई लडाइया हुई। अपने प्रतिद्वंद्वी ओगोताई राजकुमार कुरसेवेसे लडकर भागते समय कुजेक मारा गया।

१२ तलिकू, तलिक, खिजिर, कदमी-पुत्र (१३०८-१० ई०)

बुरीको १२५१ ई० मे कतल किया गया था, यह हम वतला चुके है। उसीका पुत्र तलिकू अव गद्दीपर बैठा। इस समय जल्दी-जल्दी खानोका वदलना यही वतला रहा था, कि अब सत्ता दरवारियो-के हाथमें थी और खान उनके खेलके मुहरे थे। मुस्लिम दरवारियो और प्रजाको प्रसन्न करनेके लिये तलिकूने खिजिरके नामसे अपनेको मुसलमान घोषित किया, जिससे मगोल राजकुमार नाराज हो गये—अवतक मगोलोने वौद्ध धर्मको जातीय धमके तौरपर स्वीकार कर लिया था, इसलिये वह नही पसन्द कर सकते थे, कि उनका खान मुसलमान वन जाये। इसी भावनासे प्रेरित हो तीन सौ सवारोके साथ दुवा-पुत्र केवैकने रातको भोजके समय खेमेमें घुसकर खानको मार डाला। वस्साफके अनुसार तलिकू ७०८ हि० (२१ VI १३०८—१२ V १३०९ ई०) में गद्दीपर बैठा, दूसरे इतिहासकारोके अनुसार ७०९ हि० (११ VI १३०९—२ V १३१० ई०) में गद्दीपर बैठा, तथा ७१० हि० (३१ V १३१०—२१ IV १३११ ई०) में उसकी मृत्यु हुई।

१३ केबेक, दुवा-पुत्र (१३१० ई०)

केवेक वहादुर और स्पप्टवादी खान था। चापरने पिताकी शत्रुताको उसके पुत्र केवेकतक कायम रक्खा, लेकिन उसे हार खानी पडी। अब चगताई-उलुस अस्त-व्यस्त हो चुका था। चापरने त्युकमे, वड्-केचर और उरुस-पुत्रोके साथ मिलकर केवेकके ऊपर चढाई की, लेकिन उसे इलि नदीके पश्चिममें पराजित होना पडा। फिर इलिके रास्ते जाकर उसने त्युकमेको हराकर उसके युर्तको छिन्न-भिन्न कर दिया। त्युकमेने पूरवमें भागकर कआनके पास चीनमें जाना चाहा। भागते समय त्युकमेकी भिडत केवेकको सेनासे हो गई, जिसमें वह मारा गया। राजकुमारोके इस घरेलू सघर्षोके कारण कृषि और व्यापारको भारी क्षति हुई। केवेकने इस सघर्षको वन्द करनेके लिये ७०९ हि० (११ VI १३०९—२ V १३१० ई०) में कूरिल्ताई वुलाई और उसके इस निर्णयको स्वीकार किया, कि गद्दी उसके भाई एसेनवुकाको दी जाय, और वह कआनके अधीन रहे।

१४ एसेनबुगा, ईसनबुका, दुवा-पुत्र (१३१०-१८ ई०)

कैदूका विशाल राज्य अव छिन्न-भिन्न हो गया था, और उसका अधिकाश चगताई-उलुसके हाथमें चला आया था। कैदूके पुत्रोमेंसे शाहके पास कुछ इलाके रह गये थे। एसेनवुगाने राज्यके भीतर और वाहर शान्ति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। इसके लिये उसने १३१२ ई० में उज्वेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) के साथ मित्रता स्थापित की, जो १३१५ ई० तक रही, जवकि चगताई और जूचि दोना उलुसोंने अपने शत्रु उलजैतू (ईरान) पर आक्रमण किया। चगताई सेनाने इलखानी सेनाको हराकर हेरात तक उसका पीछा किया। चार महीनेतक यह प्रदेश चगताइयोके हाथमें रहा और उनकी सेनाने वहा वहुत अत्याचार किये।

कआन वयन्तुका ओर्दू जाडोमें कोवुक-तटपर और गर्मियोंमें एसुन मोरान (इर्तिश नावा) पर रहता था। ऐसे ही समय एसुन मोरानके पास उसका चगताई उलुससे झगडा हो पडा। कआनकी दूसरी सेना उस समय चालीस दिनके रास्ते पर थी। तोकाजीके नेतृत्वमें कआनकी सेनाने एसेनवुगाके हेमत-वास (इस्सिकुलके समीप) और ग्रीष्मवास (तलसके समीप) को लूटा-पाटा। इस समय (१३१२ ई०) एसेनवुगाकी उज्वेक खानके साथ मित्रता थी। जब कआनकी सेनाके आक्रमणकी बात एसेनवुगाको मिली, तो वह खुरासान छोडकर उत्तरकी ओर लौटा। लकिन इलखान उल्जैतू खुदावन्दा

एसेनके अत्याचारोको कैसे भूल सकता था ? एसेनबुगासे नाराज उसका मुसलमान हुआ भाई यसाउर उस समय ईरानमें रहता था। उल्जैतून उसे सेना देकर ७१६ हि० (२३ III १३१६–१४ II १३१७ई०) में वक्षुपार भेजा। एसेनबुगाकी भारी हार हुई और वह अन्तर्वेद छोडकर भाग गया। उल्जैतूकी सेना-ने देशमें लूट-मार मचाई, और उसने बुखारा, समरकन्द और तेरमिजके निवासियोको बीच जाडेमें जबदस्ती दूसरे स्थानोंमें भेज दिया, जिसके कारण उनमसे हजारो मर गये।

एसेनबुगा १३१८ ई० मे मरा। प्रसिद्ध पर्यटक इब्न-बतूताके अनुसार वह शामानी (बौद्ध) धर्मको मानता था, यद्यपि मुसलमानोके साथ उसका बर्ताव अच्छा था।

केबेक पुन (१३१८–२६ ई०)

केबेकने इसलिये गद्दी छोडी थी, कि चगताई-उलुसके आपसी झगडे मिट जायें और राजशक्ति मजबूत हो, लेकिन ऐसेनबुगाके अत्याचारोने अवस्था और शोचनीय बना दी। केबेक फिर गद्दीपर बैठा, लेकिन वह एकता स्थापित करनेमें सफल नही हुआ। चगताई-उलुस अब दो भागोमें बट गया। अन्तर्वेदमें मुसलमान (तुर्क) अमीरोका प्रभाव अधिक था और पूर्वी भागमें मगोल अमीरोका। पूर्वी भाग–सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान–मुगोलिस्तान के नामसे इसी समय अलग होने लगे, जिसका प्रथम खान एसेनबुगा पुत्र तुगलुक तेमूर हुआ। केबेकद्वारा गद्दीसे वचित होनका बदला एसेनबुगाके पुत्रने इस बटवारे द्वारा लिया। अब भी केबेकके शासनमें अफगानिस्तान, अ तर्वेद और सप्तनदका बहुतसा भाग था। केबेकने अपनी राजधानी नखशेबमें रखी, और वहासे ढाई फरसख* पर अपने लिये एक करशी (महल) बनवाया, जिसके ही कारण पीछे नकशेबका नाम करशी पड गया। इब्न-बतूताके अनुसार केबेकको उसके भाई तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिङ) ने मार डाला।

१५ इलिकदई, इलचीगिदई, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

केबेकके बादके खान जल्दी-जल्दी बदलते रहे या वजीरोके हाथकी गुडिया बने रहे। इसी समय कैथलिक मिश्नरियोने ईसाई-धर्मके प्रचारमें बडी सरगरमी दिखलाई।

१६ तुवा-तेमूर, दुवा-तेमूर, दुरी तेमूर, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

खान बननेसे पहले यह एक पूर्वी जिलेका ठाकुर था। वहीं रहते १३१५ ई० में इसके पास चीन-से सहायता आई थी। गद्दीपर यह कुछ ही महीनो रह पाया, क्योकि इसके भाईका हत्यारा तरमाशेरिन राज्यपर घात लगाये हुए था।

१७ तरमाशेरिन, धर्म-छे-रिङ, दुवा-पुत्र (१३२६–३४ ई०)

धर्म-छे-रिङ सस्कृत धर्म और तिब्बती छेरिङ (दीर्घायु) दो शब्दोंसे मिलकर बना है। इसका नाम ही बतलाता है, कि चगताई-वशपर बौद्ध-धर्मका कितना प्रभाव था, लेकिन तरमाशेरिनने अपनेको कट्टर मुसलमान सिद्ध करनेकी कोशिश की। राजवशका डूबता सितारा मुसलमान बनकर अवलम्ब ढूंढ रहा था। तरमाशेरिन १३२६ ई० के अ तमें गद्दीपर बैठा और खान बनते देर नहीं लगी, कि उसने मुसलमान बन अलाउद्दीन नाम धारणकर धार्मिक कर्तव्यपालन करनेके लिये अफगानिस्तान और पजाब तक जहाद (धर्मयुद्ध) शुरू कर दिया, लेकिन इसी समय अलमालिक और राज्यका पूर्वी भाग हाथसे निकलकर मुगोलिस्तानके खानके हाथमें चला गया। मुगल-राजकुमाराका प्रभाव अब खतम हो चुका था। दरबारमें तुर्क मुसलमान अमीर सर्वेसर्वा थे। यह मगोलोकी सस्कृतिपर इस्लामकी विजय थी। लेकिन वहा केवल इस्लाम और गैर-इस्लाम धर्मका ही झगडा नहीं था, बल्कि युद्धजीवी घुमन्तू और कृषि-व्यापार-जीवी स्थायी निवासियोका भी द्वद्व चल रहा था। युद्धजीवी घुमन्तुओंमें मगोल ही नही बल्कि भारी सख्यामें तुर्क भी शामिल थे।

खुरासानपर तरमाशेरिनने ७२५ हि० (१८XII १३२४—८XI १३२५ ई०) में आक्रमण किया था, लेकिन नये गाजीको गजनीमें जबदस्त हार खाकर वक्षुपार भागना पडा। इब्न-

* १ फरसख = ६ वस्त = १२ ली = ३ मीलके करीब।

बतूता दो महीनेतक बुखारामें तरमाशेरिनका मेहमान रहा। वह इसे बड़ा ही पक्का मुसलमान कहता है। अपने समसामयिक दिल्लीके सुल्तान मुहम्मद तुगलकके साथ इसका बहुत अच्छा संबंध था और तुगलककी इस्लाम-भक्तिका वह अनुकरण भी करना चाहता था। इब्न-बतूताने लिखा है—एक बार किसी धार्मिक भूलके लिये मुल्लाने तरमाको लोगोंके सामने फटकारा। खानने उसे बुरा न मान आंसू बहाते हुए तोबा किया। इब्न-बतूताके अनुसार उसने अपने सिंहासन और प्राण इस्लामके लिये न्योछावर कर दिये थे।

इस्लामकी इतनी अन्धभक्ति देखकर मगोल-राजकुमार चुप रहनेके लिये तैयार नहीं थे, आखिर उन्हें भी धर्म-भक्ति करनेके लिये तिब्बतसे बौद्ध-धर्म मिल चुका था। १३३४ ई० में दुवा तेमूरके पुत्र बूजनके नेतृत्वमें विद्रोह हुआ—इब्न-बतूताके अनुसार बूजन मुसलमान था, जो संदिग्ध है। तरमा हारकर भारतकी ओर भागा जा रहा था। बलखके राज्यपाल तथा केवेकके पुत्र यङगीने उसे पकड़कर बूजनके पास भेज दिया, जिसने उसे समरकन्दके पास कतल करवा दिया।

१८ बूजन, बोजन्द, दुवा तेमूर-पुत्र (१३३४ ई०)

अपना-अपना मतलब सिद्ध करनेके लिये दरबारमें अब इस्लामी और इस्लामविरोधी दो दल हो गये थे। बूजन इस्लामविरोधी दलका अगुवा था—इन्हें मगोल और गैर-मगोल दल कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। बूजन ईसाइयों और यहूदियोंका अधिक पक्ष करता था—बौद्धोंका उसके राज्यमें अभाव-सा था। इसके अल्पकालीन शासन में ईसाइयों और यहूदियोंके मन्दिर अधिक बने, प्रचार भी बढ़ा। इससे पहले १३२९ ई० में ही दोमनिकन साधु थामस मन्तजोला अन्तर्वेदमें कैथलिक धर्मका प्रचार करने आया था। मगोल-शासक मुस्लिम धर्मांधतासे भय खाते चाहते थे, कि उनकी प्रजापर मुल्लोंका एकाधिपत्य न रहे, इसीलिये वह बौद्ध-धर्मके साथ-साथ ईसाई धर्मको भी प्रोत्साहन देते थे। बूजन अपने प्रतिद्वंद्वी बहुतसे अमीरों और राजकुमारोंको जरा-जरासे संदेहपर बहुत कर दंड देता था। इसके कठोर शासनसे लोग तिलमिलाकर विद्रोह कर बैठे, जिसमें प्रसिद्ध ताजिक नेता हुसेन कर्तने प्रमुख भाग लिया। अरपाखानसे दुगसानको छीननेके लिये बूजन जब बुखारामें था, उसी समय अन्दखोई और शापूरगान (सिबोरगान) के तुर्क कबीलोंने अरलत और एवरदीको लूटा। तुर्कोंने अपने सजातीय तथा अत्यन्त प्रभावशाली अमीर कजगनसे सहायता ली। हेरातके शासक मलिक हुसेन तथा वजीर अलाउलमुल्क खुदावन्दजादा (तेरमिज)ने भी उनकी सहायता की। लड़ाईमें बूजन पकड़ा गया और उसे उसके शत्रुओंके हाथमें दे दिया गया। इब्न-बतूताके अनुसार यसावर-पुत्र खलीलने बूजनको मार डाला और १३३४ ई० में ही जेंकिश (चेंगिज) ने उसका स्थान लिया।

१९ जेंकिश (जिकशी), खलील, दुवा-पौत्र, एबुगेन-पुत्र (१३३४-३८ ई०)

यह भी इस्लामी पार्टीका नहीं बल्कि मुसैबीके अनुसार बौद्ध था। मगोलोंने किसी दूसरेको खान बनाया, जिसपर जेंकिश ताराजमें मगोलोंको हराते अलमालिक पहुंचकर गद्दीपर बैठा। फिर आगे बढ़ते उसने बिशबालिग और कराकोरम (मगोलिया) को ले लिया, जिसपर कआन (चीन-सम्राट) को दबकर सुलह करनी पड़ी। अलमालिकमें वजीर अलाउलमुल्क खुदावदजादाको शासनके लिये छोड़कर वह समरकन्द लौट आया, लेकिन पीछे संदेह हो जानेपर उसने अलाउलमुल्कको मरवा डाला। बिशबालिक और कराकोरमके विजयकी बात कहांतक ठीक है, इसे नहीं कहा जासकता, लेकिन १३३२ई०में जेंकिशने चीन-दरबारमें भेंट भेजी थी। वह अधिकतर अलमालिकमें रहता था। कैथलिक मिशनरी वहां बड़े जोरसे धर्म-प्रचार कर रहे थे। कैथलिक चर्चने फ्रांसिस्कन साधु निकोलाई (मिखाइल) को चीनका आर्चबिशप (लाट-पादरी) बनाकर भेजा था। अलमालिकमें जेंकिशके दरबारमें उसका बड़ा सम्मान हुआ। कुछ ही समयमें राजधानीमें पादरियोंका भारी जमाव हो गया—बग्गदीका रिचार्ड, अलकसंदरियाका साधु फ्रांसिस्क, रायमुन्द और इसी तरह कितने ही और धर्म-प्रचारक वहां मौजूद थे। खानका सात वर्षका पुत्र बपतिस्मा लेकर योहन बना। स्पेनिश साधु पसखालिस १३३८ ई० में धर्म-प्रचारार्थ उरगंजसे अलमालिक जा पांच महीने रहा।

[१] आग जेंकिश और मलिक हुसेनमे लड़ाई हुई। हुसेनने उसे पकड़कर क्षमा कर दिया। उस समय जेंकिश हेरातमें था, जबकि १३४७ ई० के वसतमें वतूता वहासे भारतके लिये प्रस्थान कर रहा था।

२० येस्सुन तेमूर, एसुन, एबुगेन-पुत्र (१३३८–४० ई० ?)

थोड़े दिन राज्य करनेके बाद ओगोताई-राजकुमार अली सुल्तानने इसे हटाकर इसका स्थान लिया। इससे थोड़े समय पहले सप्तनदमें ईसाइयोपर भारी अत्याचार हुए और आठ शताब्दियोसे चला आया नेस्तोरीय सम्प्रदाय वहासे सवदाके लिये उच्छिन्न हो गया।

२१ अली-सुल्तान, ओगोताई-वंशज (१३४०–४२ ई० ?)

अली-सुल्तान मुस्लिम पार्टीका था, किंतु इसके जुल्मसे ईसाई ही नही मुसलमान भी पनाह मागते थे।

२२ मुहम्मद पुलाद, पोलाद, कुजेक-पुत्र (१३४२ ई० ?)

अली-सुल्तानको हटाकर कुछ समयतक यह चगताई खान रहा।

२३ काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र (७३३–४७ हि०* ?)

यह भी बड़ा अत्याचारी था। इसके डरके मारे दरबारी पहले अपनी वसीयत करके तब खानके पास जाते थे। इसके १३-१४ सालके शासनमें चारो तरफ आतक फैला रहा। प्रभावशाली वजीर कजगनने इससे पिंड छुड़ानेके लिये विद्रोह कर दिया। पहली लड़ाई ७४४ हि० (२६ मई १३४३—१५ अप्रैल १३४४ ई०) अथवा मीरखोजन्दके अनुसार १३४५ ई० मे हुई, जिसमें खान जीता और अमीर कजगन की एक आख तीर लगनेसे फूट गई। सफल होनेपर भी खान शत्रुओका पीछा नही कर सका। उसने जाडा करशीमें विताया। सख्त जाड़े और हिमवर्षाके कारण घोड़े और बोझा लादनेके बहुतसे पशु मर गये। ७४७ हि० (२४ अप्रैल १३४६–१५ माच १३४७ ई०) में फिर लड़ाई हुई, जिसमें खानकी हार हुई और उसका अत्याचारी शासन खतम हुआ।

२४ दानिशमन्द, ओगोताई-वंशज (१३४६–४८ ई०)

अमीर कजगनको एक गुड़िया खानकी जरूरत थी। उसने ओगोताई दानिशमन्द ओगलान (राजकुमार) को लाकर गद्दीपर बिठाया। दो साल बाद उससे मन ऊब गया, फिर उसने बायन कुल्लीको गद्दीपर विठाया।

२५ बायन कुल्ली, सुरगू ओगलान-पुत्र, चगताई-वंशज (१३४८–५८ ई०)

कजगनके अनुकूल होनेसे यह दस सालतक खान बना रहा। अमीर कजगन एक तो स्वदेशी तुर्क था, दूसरे बड़ा ही चतुर और न्यायप्रिय भी, इसलिये वह बहुत जनप्रिय था। कजगनके मरनेपर उसका लड़का अब्दुल्ला वजीरआजम (महामत्री) बना, जिसने बायनको कुदुजमें शिकार करते समय कतल करवा दिया—अब्दुल्ला बायनकी बीबीका यार था। अब अब्दुल्लाने तेमूरशाह ओगलानको गद्दीपर विठाया।

२६ तेमूरशाह (१३५८—ई०)

छिड्ग-गिस् वंशकी इतनी धाक और पवित्रता स्थापित हो गई थी, कि खानके सिंहासनको कोई लेनेकी हिम्मत नही करता था। स्वय तेमूरलगने भी खान बनना नही चाहा और विश्वविजयी होनेके बाद भी वह "अमीर तेमूर" या "सुल्तान तेमूर" ही बना रहा। अब्दुल्लाका प्रभाव बापके बराबर नही था। तेमूरशाहको जिस तरह गद्दीपर बिठाया गया, उससे दरबारी नाराज हो गये। अमीर बायन सुल्दूज अब्दुल्लाके विरुद्ध चढ़ाई करनेके लिये जब समरकन्दकी ओर जा रहा था, तो रास्ते में केश (शहरसब्ज) का शासक हाजी बिरलस भी उसके साथ हो लिया—यही हाजी सैफुद्दीन बिरलस तेमूर

---

* २२ IX १३३२–१३ VIII १३३३ ई० से २४ IV १३४६–१५ III १३४७ ई०

लगका चचा था। अब्दुल्ला हारकर अन्दराव (अफगानिस्तान) की ओर भागा, और उसने अपना बाकी जीवन वहीं बिताया। चगताई-शासनकी बागडोर अब अत्यन्त अयोग्य भारी पियक्कड सैलदूज तथा हाजी बिरलसके हाथोंमें थी। सारे राज्यको अमीरोंने अपनी-अपनी रियासतोंमें बांट लिया, जिसमें केश (शहरसब्ज) और आसपासका इलाका बिरलसको मिला। चारों ओर गृहयुद्ध और अराजकताका दौरदौरा था।

२७ इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र (–१३६३ ई०)

तेमूरशाहकी जगह इलियास गद्दीपर बिठाया गया। चगताई-वंशकी पश्चिमी शाखाकी जहां यह अवस्था थी, वहां उत्तर-पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खान अभी इतने शक्तिहीन नहीं हुए थे। अन्तर्वेदकी अवस्थाके बारेमें सुनकर अलमालिकका खान तुगलक तेमूर एक बडी सेना लेकर समरकन्दकी ओर चला। आपसमें लडते छोटे-छोटे अमीर भला उसका मुकाबिला कैसे कर सकते थे? हाजी सैफुद्दीन बिरलस (तेमूरका चचा) बिना लडे ही खुरासानकी ओर भाग निकला। उसके भाई तुरगाई बिरलसके तरुण पुत्र तेमूर लगने चचासे राय लेकर तुगलक तेमूरसे भेंट की। तरुणसे खान इतना प्रभावित हुआ, कि उसने केशके निवासियोंपर अत्याचार नहीं किया। तुगलक तेमूरने अन्तर्वेदको जीत कर अपने पुत्र इलियास खोजाको समरकन्दमें उपराज घोषित कर तेमूर लग बिरलसको विश्वास-पात्र जान वजीर (अमात्य) नियुक्त किया। तुगलक तेमूर काशगरकी ओर लौट गया। अमीरोंके आपसी झगडोंमें पडना तेमूरने पसन्द न कर बुखारा तथा खीवा होते कास्पियनतटवर्ती रेगिस्तानोंका रास्ता लिया। इस निर्जन भूमिमें वह कितने ही समयतक मारा-मारा फिरता रहा। अन्तमें वह अपने केश लौटे कुछ साथियोंको लेकर वक्षु नदीके दक्षिण चला गया। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३–३० अगस्त १३४६ ई०) में कुंदुजके पास दानियालकी सेनाको हराकर तेमूर उसका पीछा कर रहा था, इसी समय तुगलक तेमूर खानके मरनेकी खबर आई और इलियास खोजा समरकन्द छोडकर बापकी गद्दी संभालने अलमालिक चला गया। तेमूर लगने तुरत अन्तर्वेद लौट सरदारोंकी कूरिल्ताई बुलाकर काबिलशाहको खान घोषित किया।

२८ काबिलशाह (१३६३–६९ ई०)

काबिलको छिङ-गिस्-वंशका अन्तिम चगताई खान तो नहीं कह सकते, क्योंकि तेमूरके वंशने भी अबू-सईदके समय (१४६७–९४ ई०) तक छिङ-गिसी राजकुमारोंको बराबर समरकन्दकी गद्दीपर गुडिया खान बनाये रक्खा। ८ अप्रैल १३६७ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) तक काबिलशाह बहुत कुछ अपने पूर्वजों जैसा ही खान रहा। उसके बाद तेमूरने बाकायदा अपनेको शासक घोषित किया, यद्यपि उसने खान-परंपराका उच्छेद नहीं किया।

चगताई-अर्थनीति—मगोल-शासन घुमन्तू सैनिक सामन्तोंका शासन था, जो अपनेसे भिन्न जातियोंके लिये निरंकुश था, किन्तु जहांतक मगोल सामन्तों और राजकुमारोंका संबंध था, खानके लिये बहुमतकी इच्छाका उल्लंघन करना आसान काम नहीं था, क्योंकि सेना उनकी थी। मगोल शासक नागरिकों और ग्रामीणोंकी गाढेकी कमाईको उडाना अपना हक समझते थे। पहले कितने ही समयतक इनके भीतर सैनिक जीवन कायम रहा, किंतु आगे विलासिता बढनेके कारण उसका ह्रास होने लगा। इसके साथ ही राजपरिवार और सामन्त-परिवारोंकी संख्या बढनेके कारण प्रजाका शोषण-उत्पीडन और भी भयंकर होने लगा। उनके सहकारी तुर्क घुमन्तू थे, जो देशमें शताब्दियों पहलेसे अपना प्रभाव जमाये हुए थे, और छिङ-गिस्‌की सेनामें दूध-पानीकी तरह मिल गये थे। वह अब अपने स्वार्थोंको हाथ से जाने देनेके लिये तैयार नहीं थे। मगोल-राजपरिवार और मगोल अमीर-परिवारोंकी निर्बलताके समय तुर्कोंने शासनकी बागडोर भी अपने हाथमें संभाल ली। प्रजाका शोषण पूर्ववत् जारी रहा, तो भी अन्तर्वेदकी सम्पत्तिका महास्रोत—अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य और सुंदर दस्तकारी—सूखा नहीं था।

साहित्य—मगोलोंके सर्वसंहारी प्रहारके बाद साहित्यकी और धाराएं रुकसी गईं, लेकिन धर्मशास्त्र (शरीयत), धार्मिक साहित्य, सूफी साहित्य, मदिरावाद फूलता-फलता रहा। मुल्लों और

सूफियोकी मगोल-दरबारमें बडी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी बढ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नही पडा था। कुछ परिवारोने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुश्तैनी गद्दी बना ली, और उनका सम्मान पैगम्बरोकी तरह होने लगा। इन परिवारोम सिताजी और खावन्द बहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन मिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२–२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (९ XI १२३०–३० IX १२३१ ई०) मे खोजन्दम आकर बस गया था, और मगोलोके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। बुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्सुद्दीन पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-सग्रह) मौजूद है। इसने "मिन्हाजुल्-मुजक्करीन" के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अबकाकी सेना द्वारा ६७१ हि० (२९ VII १२७२–१९ VII १२७३ ई०) मे बुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमालुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने "बोस्ताने-मुजक्करीन" लिखा। तरमाशेरिनके बाद मगोल-राजवश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मगोलोके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ ईटकी अलग मस्जिद बनाकर रहना आसान नही था। मगोल-राजवश बौद्ध-सतो और लामाओ की अधभक्ति सीख चुका था, अब वही अन्धभक्ति उनकी सूफियोके प्रति हो गई। मानके बढ़नेके साथ सूफियोकी सख्या भी बहुत बढी। मुल्लाओका गढ बुखारा अब सूफियोका भी गढ बन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

"बुखारा मीरवी दीवाना।
लायक जजीरे-जिंदानखाना।"

(बुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जजीर जैसा है।)

चगताई-वशवृक्ष—
(१२२२–१३७० ई०)

ओगोताई
छिङ्ग-गिस्
१ चगताई (१२२७-४२ ई०)
मोतुगान सरबान ३ येस्सुमगू (१२४६–५१) बेदार इसुनदावा
२ कराहुलाकू=४ ओरगाना (१२४२-४६) | (१२५१-५९) बुरी
८ निकबेइ (१२७१-७४)
५ अलगू (१२५९-६५)
७ बोरक (१२६६-७१)
६ मुबारक (१२६६) कदमी अहमद
१० दुवा (१२८२-१३०७)
९ तोकतेमूर (१२७४-८२) १२ तलिकू (१३०८-९)
११ कोन्चोग (१३०७-८) १३ केबेक (१३०९) १४ एसेनबुका (१३०९-१८) १५ इलिकदई (१३२६) १६ दुवातेमर (१३२६) १७ तरमाशेरिन (१३२६-३४) एबुगन
२२ मु० पूलाद
१८ बुजन (१३३४)
मुहम्मद
२१ अली-सुल्तान (१३४०–४२)
१९ जेङ्किश (१३३४-३८)
२० येस्सुन (१३३८-४०)

अध्याय २
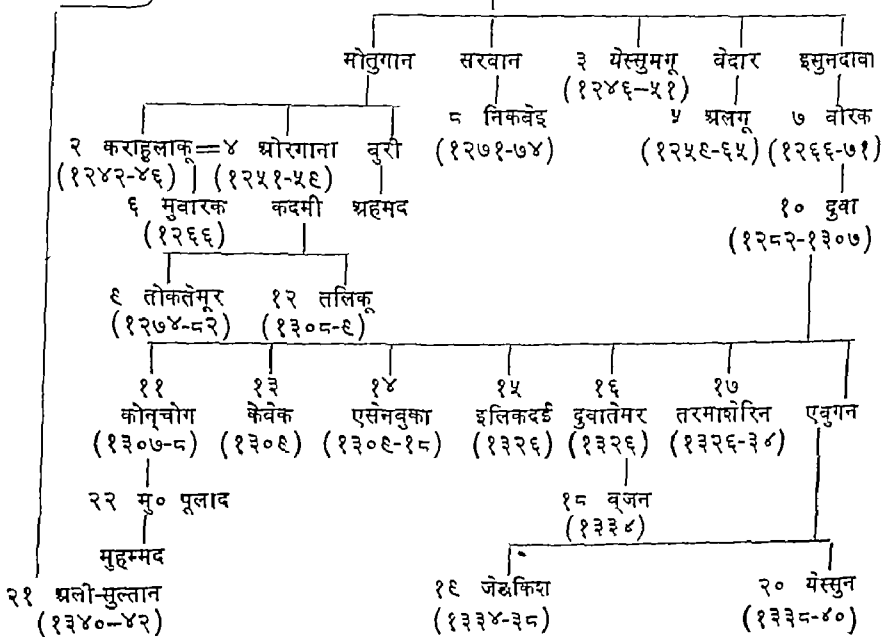
हुलाकू-वंश

(१२५६-१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोंको विजय करके अपने वंशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के बाद इसकी राजधानी तब्रीज हो गई। सभी मंगोल खानोंके ऊपर कगान (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलूसोंके खानोंको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मंगोल-राजवंशके लिये रूढ़ हो गया।

इलखानोंकी नामावली निम्न प्रकार है--

१	हुलाकू, तूलुइ-पुत्र	१२५६-६४ ई०
२	अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४-८२ ,,
३	अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२-८४ ,,
४	अरगून, अबका-पुत्र	१२८४-९२ ,,
५	गैखातू, अबका-पुत्र	१२९२-९५ ,,
६	बैदू, तरगाई-पुत्र	१२९५ ,,
७	गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५-१३०४ ,,
८	उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४-१७ ,,
९	अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७-३५ ,,
१०	अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५-३६ ,,
११	मूसा, अली-पुत्र	१३३६-३७ ,,
१२	मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७-३८ ,,
१३	सातीबेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८-४० ,
१४	शाहजहां तैमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० ,,
१५	सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०-४४ ,,
१६	नौशेरवां	१३४४ ,,

१ हुलाकू, खूलागू, तूलुइ-पुत्र (१२५६-६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) चिङ्-गिसके पुत्र तुलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कगानो मुङ्खे और कुबिलेइका अनुज था। मुङ्खेने १२५२ ई०में जो कुरिल्ताई बुलाई थी, उसमें ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूवके पहाड़ों में पहुंचा। फर्वरी १२५४ ई०में चगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० में अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुंचा और २ जनवरी-को उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमें पहुंच हसन बिन-सब्बाहके गढ़ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुल्मुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योंको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रबन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोंसे राजाओं और राजमन्त्रियोंको भी प्राणोंका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेड़ता नहीं था। हुलाकूने

इस गढको तोडकर उसे हमेशाके लिये नष्ट भ्रष्ट कर दिया, और उसके बाद इस्माईली फिर अपने लिये वैसा सुदृढ दुर्ग नहीं बना सके। इसी इस्माईली सम्प्रदायके गुरु हमारे यहाके आगाखान है, या या कहिये, हुलाकूकी आत्मीमे उड पत्तोमेसे एक हैं। मार्च १२५७ ई० को हुलाकूने हम्दानके लिये प्रस्थान किया। छिङ-गिस्की दिग्विजयमे उसके सेनापति हम्दानतक ही आ पाये थे। यहासे हुलाकूको उस रास्तेपर जाना था, जिसपर मगोल घोडोकी टाप नहीं पडी थी। ईरानके जिस भागको छिङ-गिस्के सेनापतियोने जीता था, उसपर भी अभीतक मगोल शासन पक्का नहीं हो पाया था। हुलाकू अब इस काम-को बडे दृढतासे करता चल रहा था। १८ जनवरी १२५८ ई०को वह खलीफाकी राजधानी बगदादके पूर्वमे था। ४ फर्वरीको उसने बुर्जेअली किलको ध्वस्त किया। खलीफा पूरी तौरसे पराजित हो १० फर्वरीको हुलाकूके शिविरमे कोरनिश करने गया। यद्यपि खलीफाकी राजशक्ति तीन शताब्दियो पहले ही खत्म हो चुकी थी, लेकिन इस्लामके पोपके तौरपर उसका सम्मान अब भी बहुत अधिक था। देश-देशके स्वतन्त्र सुल्तान उसके पास बडी-बडी भेंटें भेजकर उसके दिये चार अक्षरो-के नामोको बडे अभिमानपूर्वक अपने नामके साथ जोडते थे। खलीफाका हुलाकूके दरबारमें सलाम बजाने जाना वैसा ही था, जैसा कि हालमें सूर्यदेवीके पुत्र जापानके मिकादोका अमेरिकन जेनरल मेकआर्थरके सामने दडवत् करना। लेकिन हुलाकू सापको पालनेके लिये तैयार नहीं था। वह समझता था, खलीफा मुसलमानोको भडका सकता है, इसीलिये बडे लडकेके साथ खलीफाको उसने २० फर्वरी को मरवा दिया।

बगदादपर अधिकार करके विजित देशकी व्यवस्थाके लिये कुछ समयतक हुलाकू रुका, फिर वह पश्चिमकी विजय यात्राके लिये निकला, और २५ जनवरी १२६० ई० को जाकर उसने हलब (अलेप्पो) पर अधिकार किया। शाम (सिरिया) की राजधानी (दमिश्क) की ओर बढनेपर उसका मुकाबिला मिस्रके ममलूक सुल्तान सैफुद्दीन फीरोजसे पडा। हुलाकूके सेनापति कीतू-बुगाने मिस्रियोके पास निम्न शब्दोमें अतिमेत्थम् भेजा—

"तुमने सुना होगा, कैसे हमने एक विशाल साम्राज्यको जीता, कैसे हमने पृथिवीकी गदगियोको हटाकर शुद्ध किया, और अधिकाश लोगोको कत्ल कर डाला। तुम्हारा काम है, भागना और हमारा काम है पीछा करना——जहा भी तुम जाओ, जिस रास्तेसे भी जाओ, वहा तुम्हारा पीछा करना। तुम कैसे हमसे बच सकते हो? हमारे घोडे बडे तेज हैं, हमारे बाण बडे तीक्ष्ण हैं, हमारी तलवार वज्र जैसी है, हमारे हृदय पहाडकी तरह कठोर हैं, हमारे सैनिक बालूके कणोकी तरह असख्य है। किले हमें रोक नहीं सकते, न हथियार ही। हमारे विरुद्ध तुम्हारी प्रार्थनाओको भगवान् नहीं सुनेगा। तुम हीन उपायोंसे अपनेको बचाना चाहते हो और शपथ-पूर्वक की हुई प्रतिज्ञाओको तोडते हो। विद्रोह और अव्यवस्था तुम्हारे भीतर फैली हुई है। अपने अभिमानके लिये तुम्हे अब भयकर दण्ड मिलनेवाला है। अन्यायी अपने भाग्यसे शिक्षा लेने जा रहे हैं। हमारे साथ युद्धका मसूबा रखनेवाले अब पछतानेवाले है। जो हमारी शरणमें आना चाहते है, केवल उन्हीकी रक्षा होगी। अगर तुम हमारी आज्ञा और पेश की हुई शर्तोको मानोगे, तो हमारे वैभवमें भागीदार बनोगे, यदि प्रतिरोध करोगे, तो नष्ट हो जाओगे। आत्महत्या मत करो। जिसे पहलेसे सजग कर दिया गया है, उसे अपने लिये सावधान रहना चाहिये। तुमसे कहा गया है, कि हम काफर है, पर हम तुमको पापी समझते है। जिस भगवान्की आज्ञाए अमिट है, जिसका फैसला पूर्णतया न्यायानुमोदित है, वही तुम्हारे ऊपर हमें विजयी बना रहा है। हमारी आखोमें तुम्हारी सबसे जबदस्त सेनाये भी आदामियोकी एक छोटीसी टुकडी हैं। तुम्हारे प्रसिद्ध वीरोको भी हम तुच्छ समझते है। तुम्हारे राजाओको हम घृणाकी दृष्टिसे देखते है। जवाब देनमें जल्दी करना। ऐसा न हो, कि युद्ध तुम्हारे ऊपर आग लगा दे और तुम्हारे ऊपर अपनी चिनगारिया फेंकने लगे। हमारा कहा न करोगे, तो जो भयकर सत्यानाश तुम्हारा होनेवाला है, उससे कही भाग नहीं पा सकोगे और तुम अपने देशको रेगिस्तान बना दोगे। हम पहलेसे चेतावनी देकर तुम्हारी भलाई करना चाहते है, तुम्हें तुम्हारी नीचतासे डराना चाहते हैं। अब तुम ही एकमात्र (हमारे) शत्रु रह गये हो, जिसके विरुद्ध हमें कूच करना है। तुम्हारे और जो लोग भी दर्वी आदेशका अनुगमन करते हैं, मौतसे

डरते हैं, उनके लिये भी सुरक्षाका यही रास्ता है, कि वह कआनकी आज्ञाको मानें। मिस्रको कहो—हुलाकू इस भूमिके बड़ोंको अपमानित करने आ रहा है, वह बच्चोंको यहां भेज देगा, जहां बूढ़े गये हैं।'

इसका जवाब सुल्तान फीरोजने इस प्रकार दिया—

"ओ तरुण, तुमने अभी-अभी अपना जीवन आरम्भ किया है, इसीलिये तुम जीवनकी ओर इतना कम ध्यान देते हो। तुमने अभी दस दिनोंकी ही समृद्धि और सौभाग्यका उपभोग किया है। ऐसा होनेपर भी तुम सारी दुनियासे अपनेको बड़ा समझते हो और अपनी आज्ञाको भवितव्यताकी आज्ञा मानकर उसे अनिवार्य समझते हो। तुम क्यों मुझसे ऐसी मांग कर रहे हो, जिसे कि तुम पा नहीं सकते? क्या तुम अपनी चालाकी, अपनी सैनिक शक्ति और अपनी हिम्मतसे एक भी तारेको बंदी बना सकते हो? तुम शायद नहीं जानते, कि पूरबसे पश्चिमतक अल्लाके बन्दे, धर्मात्मा पुरुष, रक्षक, बच्चे-बूढ़े, सभी इस (मेरे) दरबारके दास हैं, वह मेरी सेना है। जब मैं अलग-अलग प्रतिरोधियोंको इकट्ठा हो जानेकी आज्ञा दूंगा, तो पहले ईरानके मामलेको ठीक करूंगा, फिर तूरान (तुर्किस्तान) पर चढ़ूंगा और वहां हरएक आदमीको उसके पदपर स्थापित करूंगा। इसमें संदेह नहीं, कि मेरे इस कामके परिणाम-स्वरूप पृथिवीपर अशांति और गड़बड़ी फैलेगी, लेकिन यह सब मैं बदला लेनेके लोभसे नहीं करता और नहीं लोगोंकी वाहवाही लटना चाहता हूं। मैं इसके लिये उत्सुक नहीं, कि सेनाके बजते बाजोंके साथ आदमी मारे जायं।   मैं दुआ या शापको भी नहीं पसन्द करता। मेरे, कआन और हुलाकू—सबके पास एक-सा ही दिल है, एक-सी ही भाषा है। अगर मेरी तरह तुम भी मित्रताका बीज बोना चाहते हो, तो मेरे सेवकोंकी खाइयों और मोर्चाबन्दियोंसे तुम्हारा क्या काम है? भलाईके रास्तेको पकड़ो और खुरासान लौट जाओ। यदि तुम लड़ना ही चाहते हो, तो मेरे पास हजारों सेनायें हैं, जो कि बदला लेनेके समय आनेपर समुद्रको सुखा देंगी।"

३ सितम्बर १२६० ई० को मंगोल और ममलूक सेनाओंमें भीषण लड़ाई हुई। यद्यपि ममलूक सुल्तान-खलीफाने अपने लिखे अनुसार ईरान और तूरान (मध्य-एसिया) की ओर पैर नहीं बढ़ाया, लेकिन हुलाकूकी सेनाको उसने पूरी तौरसे हराकर अफ्रीकामें बढ़नेका रास्ता बन्द कर दिया। हुलाकूकी विजयिनी सेनाको ही मिस्रियोंने नहीं रोका, बल्कि तेमरलंगकी विजययात्रा भी यहीं आकर खतम हो गई। नील-उपत्यका एक छोटासा देश है। वह कैसे विश्वविजताओंकी सेनाओंको रोक सका, इसका कारण उतनी उसकी अपनी शक्ति नहीं थी, जितनी कि बड़ीसे बड़ी सैनिक शक्तिका भारी विवरावके कारण अंतमें क्षीण हो जाना—तरिम, चू, मुरगाब, जरफशा (सोग्द) और खुद हमारे यहांकी प्राचीन सरस्वती (-घग्घर) भारी जलप्रवाहको लेकर चलती हैं, लेकिन अंतमें उनके पानीको सोखते हुए रेगिस्तान उन्हें अपनेमें लीन कर लेता है।

मिस्रकी ओर आगे न बढ़ सकनेपर हुलाकू लौट पड़ा। तब्रेजको लेकर १२ सितम्बर (१२६० ई०)को उसने आगेकी विजययात्रा शुरू की, और दियारबेकर, जजीरा, रोहा (एदेस्सा), मर्रान और निसिबीके नगरोंपर अधिकार किया। रोहाके पास हुलाकूने मंगोल सैनिक शक्तिका एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया, जिसे देखने के लिये रोम और अमनीके राजा भी उपस्थित थे। दमिश्कपर अधिकार करनेके बाद हुलाकूने दुनियाका सबसे पहला कागजी नोट (चाउ) जारी किया, दूसरे इतिहासकारोंका मत है, कि यह पहलेपहल १२ अप्रैल १२९४ ई० को तब्रेजमें जारी किया गया।

विजयोंके बाद हुलाकूने मरगाको अपनी राजधानी बनाया, जिसे उसका लड़का तब्रेजमें ले गया।

हुलाकू और उसके चचेरे भाई बरका खान (१२५५–६५ ई०) का पहले मेल था, उसके बाद दोनोंमें झगड़ा होनेका कारण बरकाने हुलाकूके इस्लाम और खिलाफतके ध्वंस करनेकी बात बतलाई, लेकिन वस्तुत झगड़ा काकेशसपर अधिकारका था।

काकेशसकी ओर बढ़ते हुए अब जूछि-उलुसकी सीमा नजदीक आ गई तो अनिश्चित विजित देशोंके लिये दोनोंमें झगड़ा शुरू हो गया। यह बतला आये हैं, कैसे ११ नवम्बर १२६२ ई० को जूछि-उलुसके खान बेरकेसे मुकाबिला करनेके लिये हुलाकूकी सेना दरबन्द पहुंची, लेकिन वहीं बरकाके सेनापति नोगाईने उसे हराकर पीछे हटा दिया। बरका और मिस्र-सुल्तान फीरोज दोनों हुलाकूके शत्रु

थे। "शत्रुका शत्रु मित्र" की नीतिके अनुसार सुवण-ओर्दू और मिस्रम मल-जोल करनेका प्रयत्न होने लगा। १२६३ ई० के शरद्में वरकाका दूतमडल मिस्रके सुल्तानके पास पहुचा।

मिस्र और दरवन्दकी हारोके वाद हुलाकने समझ लिया, कि हमारे राज्यका जितना विस्तार हो सकता है, उतना हो चुका। इसीलिय अब वह शासन-प्रवन्धमें लग गया। १२६४ ई० में उसने कई शासन-सुधार किये। १९ रवी II ६६३ हि० (८ फर्वरी १२६४ ई०)को हुलाकू जगात (मेरगाम) मे मर गया।

हुलाकूकी पटरानी ओइरोत (मगोल)-राजकुमारी कूवेक (ओलेज) खातून थी।

हुलाकूके अलमौतके किलेके ध्वस्त करते समय इस्माईली पोप अलाउद्दीन मुहम्मदने मुहक्किक नासिरुद्दीन तूसी (१२०१–७४ ई०)को अपन वन्दीखानेमें डाल रखा था। तूसी वहुमुखी प्रतिभाका धनी था। हुलाकूने उसकी कदर की। तूसी हुलाकू और उसके वेट अवका खानके शासनकालमें वहुत सम्मानित रहा। उसने "जिजे इलखानी" नामसे एक पचाग बनाया।
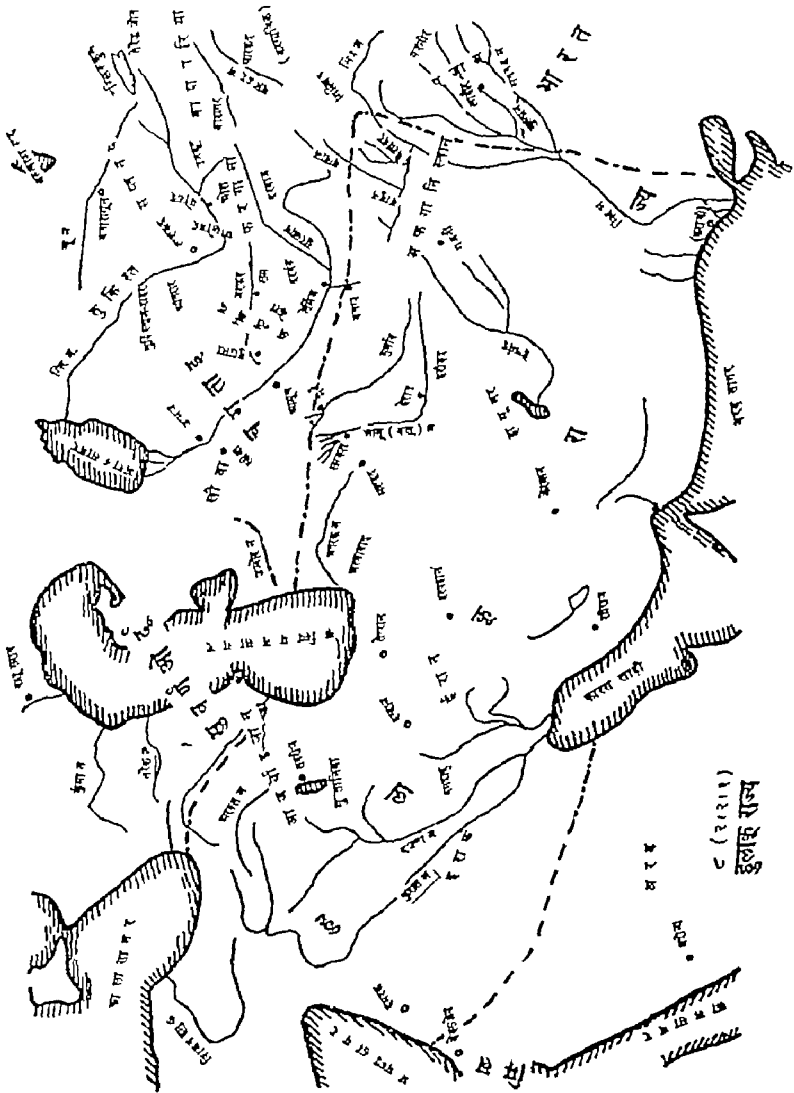
२ अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र (१२६४–८२ ई०)

अबका बापकी तरह ही एक कुशल सैनिक और शासक था। बापके समय बेरका खानसे जो झगड़ा हुआ था, वह इसके समयमें भी जारी रहा। बेरकाके उत्तराधिकारी बातू-पुत्र मङ्गू-तेमूर (१२६५–८० ई०) के साथ भी इसकी लड़ाइयाँ होती रहीं। नोगाई-द्वारा पिताकी हारका बदला लेनेके लिये अबकाने राजकुमार यशमुतके अधीन एक बड़ी सेना ले १९ जुलाई १२६५ ई०को प्रस्थान किया। कुरा-तटपर पहुँचकर दोनों ओरकी सेनायें दाव-पेंच ढूँढ़ने लगीं, और लड़ाई नहीं हो पाई।

२६ नवम्बर १२७० ई०को कुबिलेका भेजा यारलिक (शासन-पत्र) जगातमें मिला। अबका बराबर अपने चचा कुबिलेका पक्षपाती रहा, जब कि चगताई और ओगोताई-वंशके खान उसके प्रतिद्वंद्वी थे। जगताई-खान बोरक अबकासे खुरासान को छीनकर बहुत दिनोंतक अपने अधिकारमें नहीं रख सका। अबकाने खुरासानका बदला ६७२ हि० (२९ VII १२७२–१९ VI १२७३ ई०)में ख्वारेज्म तथा बुखाराको लूटकर लिया।

फारसीका महान् कवि (मुशर्रिफुद्दीन) सादी (११८४–१२९२ ई०) हुलाकू और अबका-के समयमें ही हुआ था, जिसने अपने दो महान् ग्रंथो "बोस्ताँ" और "गुलिस्ताँ" को १२५७-५८ ई० में लिखा था। लेकिन, सादी-जैसा स्वतंत्रचेता पुरुष मंगोलोंका दरबारी नहीं हो सकता था। सर्वश्रेष्ठ सूफी कवि मौलाना जलालुद्दीन रूमी (१२०७–७३ ई०) भी हुलाकू और अबकाके समयमें ही हुआ था। रूमी वस्तुतः रूममें नहीं बल्कि १२०७ई० में बलखमें पैदा हुआ था, जहाँसे वह अपने बापके साथ नेशापोर (खुरासान) गया और अन्तमें मक्का और दूसरी जगहोंकी यात्रा करते बापके साथ क्षुद्र-एसियाके कोन्या (इकोनियम्) नगरमें रहने लगा। इसकी प्रसिद्ध कृति "मस्नवी" (कथाकाव्य) में सत्ताईस हजार शेर हैं, जिसका स्थान दुनियाके महान् काव्योंमें है। सादी और रूमी हुलाकू-अबकाके कालकी उपज हैं, इसलिये उनकी कविताओंपर उस समयकी स्थितिका प्रभाव पड़ना जरूरी है। सादीने वैरागियों और दरवेशोंकी जिंदगी पसन्द की, और मौलाना रूमीने वेदान्ती रहस्यवाद स्वीकार किया, इसका कारण मंगोलोंकी ध्वंसलीलासे पैदा हुआ निराशावाद था।

३ अहमद तगूदर, निकोदर, हुलाकू-पुत्र (१२८२–८४ ई०)

अबकाके मरनेपर उसके भाईने गद्दी सँभाली। उसने अपनी अयोग्यताको ढँकनेके लिए इस्लाम स्वीकार किया, जिसपर मंगोल बिगड़ गये और अबकाके पुत्र अरगूनने उसे मार डाला।

४ अरगून, अरगोन, अबका-पुत्र (१२८४–९२ ई०)

हुलाकूके समयसे ही राज्यका वजीर-आजम ख्वाजा शम्सुद्दीन चला आता था। उसके प्रभावको न सहकर अरगूनने ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) में उसे मरवा दिया। अरगूनको परेशान करनेके लिये बाप-दादोंके समयसे ही किपचकोंके साथ झगड़ा चला आ रहा था। २१ सितम्बर १२८६ ई० को अरगूनका शिविर मेरागमें पड़ा था। छिटपुट झड़प होती ही रहती थी। इसी बीच २६ मार्च १२९० ई० को दूतोंने आकर खबर दी, कि किपचक-सेना आगे बढ़ती दरबन्द[1] आ पहुँची है। किपचक और इलखानके झगड़ोंमें दरबन्दका ज्यादा महत्त्व था। किपचकोंके आनेकी खबर पाकर अरगूनने तुकाल, शिकतुर नोयन और कुजुकवलके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना २७ मार्चको रवाना की। इस सेनामें तुगाचार और दूसरे मंगोल अमीर भी थे। २१ अप्रैल (१२९० ई०) को सेनाका हरावल करासू नदीपर पहुँचा। मेंगलान बुका आदिके नेतृत्वमें उत्तरसे दो तुमान (बीस हजार) किपचक-सेना आ रही थी। इलखानियोंने नदी पारकर उसपर आक्रमण किया। दुश्मनके तीन सौ सवार मारे गये और कितने ही बन्दी बने। ३ मई १२९० ई० को अरगून विलियासुवरमें पहुँचा। अन्तमें राजकुमार बैदूने विद्रोह करके इसे मार डाला।

---

१ दरबन्द (द्वारबन्ध) दो थे, जिनमें एक मध्य-एसियामें तेमिजके उत्तरके पहाड़ोंका लोहद्वार था, और दूसरा बाकूसे उत्तर काकेशस पर्वत तथा कास्पियन समुद्रके मिलनस्थानपर।

सादी शाराजी इसीके समय (६६१ हि०) मरा। सादीने हिंदुस्तान, काशगर और पश्चिममें मिस्रतककी यात्रा की थी। हुलाकूके शीराजके राज्यपाल अलाउद्दीन और उसके भाई दोनो वजीरआजम शम्शुद्दीन सादीके बड़े भक्त थे, जिनके कारण सादीका परिचय अबकासे हुआ था, लेकिन यह नही कहा जा सकता कि अरगूनसे भी उसका परिचय था। सादीका बादशाहोंसे ज्यादा मेल-जोल न था, तो भी उसने लिखा है—

बादशह सायये-खुदा बाशद्।
साया बा ज़ात आश्ना बाशद्।

(राजा भगवान्की छाया है। छाया है यदि वह भगवान्से परिचित हो।)

अल्लामा कुतुबुद्दीन (मृत्यु १३११ ई०) तब्रेजी अपने समयका बड़ा विद्वान् था। अरगूनका कृपापात्र कवि **औहदी** (मृत्यु १३३७ ई०) इसी समय हुआ था। यही समय था, जब कि भारतमें अमीर खुसरो-जैसा फारसीका महान् कवि पैदा हुआ। खुसरोका बाप छिङ्गिसी हमलेके मारे बहुतसे दूसरे तुर्कोंकी तरह मध्य-एसियासे भागकर भारत चला आया था। अमीर खुसरो जब मुल्तानके हाकिम सुल्तान मुहम्मदके दरबारमें था, उसी समय ६८३ हि० (२० III १२८४–८ II १२८५ ई०) अरगून खानके एक सेनापति तेमूर खानने तीस हजार सवार लेकर पंजाबपर हमला किया, और लाहौर, दीपालपुरको लूटते-मारते वह मुल्तानकी ओर बढ़ा। मुकाबिलेके लिये गया सुल्तान मुहम्मद मंगोलोंके सामने हारा और मारा गया। अमीर खुसरो और उनके साथी दूसरे कवि हसन देहलवी भी अपने स्वामीके साथ इस संघर्षमें शरीक थे। मंगोल दोनोंको बन्दी बनाकर बलख ले गये। अमीर खुसरो दो सालतक बलखमें रहा, जिसके बाद उसे छुट्टी मिली और वह लौटकर दिल्ली चला आया। इस घटनाका बड़ा ही करुणापूर्ण वर्णन अमीर खुसरोने अपनी कवितामें किया है, जिसको हम पहिले उद्धृत कर चुके हैं।

५ गैखातू, अबका-पुत्र (१२९२–९५ ई०)

अरगूनके बाद बेटेको वंचित कर भाईको गद्दी मिलना यही बतलाता है, कि अभी सैनिक जनतन्त्रताका मंगोलोंमें बिलकुल उच्छेद नही हुआ था। गैखातूका समकालीन किपचक खान तोकताई बड़ा ही शक्तिशाली था, लेकिन पीढ़ियोंसे लड़ते-लड़ते तंग आकर अब वह चाहता था, कि काकेशसके लिये चलती रहनेवाली लड़ाई बन्द की जाय। उसने कोनिचि शोगलान (राजपुत्र) को शांतिदूत बनाकर १३ जुलाई १२९३ ई० को भेजा। २८ मार्च १२९४ ई० (२८ रबी II ६९३ हि०) को तोकताईका भेजा दूसरा दूतमंडल भी आया, जिसके मुखिया राजकुमार कलिनतई और उलाद थे। दलननोरमें उनसे बातचीत कर २ अप्रैल १२९४ ई०को गैखातूने बड़े सम्मानके साथ उन्हें बिदा किया। किपचकोंकी ओरसे अब इलखानको कुछ निश्चितता-सी थी।

६ बैदू, तरगई-पुत्र (१२९५ ई०)

बैदू अधिक दिनोंतक शासन नही कर पाया और जल्दी ही उसे हटाकर गाजनने सिंहासन दखल कर लिया।

७ गाजन, अरगून-पुत्र (१२९५–१३०४ ई०)

गाजन इस्लामका धर्मराज कहा जाता था। इसमें शक नही कि उसके समयसे ईरानके मंगोल-राजवंशपर इस्लामका प्रभाव बहुत जोरसे पड़ने लगा। किपचक खानसे फिर झगड़ा शुरू हो गया। ३ मई १३०१ ई०को तोकताई खानका दूत आया, लेकिन सुलह नही हो सकी। इसपर गाजन एक बड़ी सेना ले शिरवान और गुर्जिस्तान होते दरबन्द पहुँचा। तोकताईको उसकी सेनाके सामने हारकर भागना पड़ा। इलखानके प्रतिद्वंद्वी मिस्रके सुल्तान-खलीफाके साथ किपचक खानका संबंध अच्छा था, यह बतला चुके है। मिस्रका सुल्तान केवल राजा ही नही बल्कि खलीफा (धर्मगुरु) भी था। किपचक खानने उसे अपनी लड़की दी थी। गाजनने अर्रानसे काजी नासिरुद्दीन तब्रीजी और काजी कमालुद्दीन मोसलीको दूत बनाकर तोकताईके पास भेजा। मिस्री दूतमंडल हिल्लामें आकर गाजनसे बातचीत कर रहा था। इसी समय २१ जनवरी १३०२ ई०को तोकताईके भी दूत तीन सौ सवारोंके साथ आ पहुँचे।

गाजन किपचक-दूतमंडलसे बहुत अच्छी तरह मिला। तोकताई अपने प्रभावशाली वृद्ध सेनापति नोगाईके झगड़ेसे निबट चुका था, और अब अर्रान और आजुर्बाइजानको लेना चाहता था। उसका कहना था—पितामह छिङगिसूने यह प्रदेश बातू खानको दे दिया था। लेकिन, गाजन तलवारसे जीते इलाकेको बात-से कैसे लौटा सकता था ? उसने धमकी दी—यदि हमारी बात नही मानोगे, तो तुम्हारे विरुद्ध करा-कोरमसे क्रिमियातककी सारी शक्ति तथा दस तुमान (एक लाख) सेना डेरोमे तैयार खडी है। गाजनने यह भी कहा—हुलाकूके समयसे ही यह भूमि हमारी है। भूमि लौटानेकी बात तलवारकी भाषामे ही हो सकती है।

३० जनवरी १३०३ ई०को नववर्षका पर्व आया। राज्यके वजीर, अमीर, गुरजी (जार्जिया) अमनी, रोमके राजा एवं खुरासान-मिस्र-सिरिया आदिके लोग भी भेंट लेकर आये। तीन दिन तीन रात बडे धूमधामसे महोत्सव मनाया गया। दान-इनाममें इस्लामके सुल्तानने बडी उदारता दिखलाई। इतिहासकार वस्साफ गाजनको इस्लामका सुल्तान कहता है, लेकिन इस्लामका सुल्तान बननेसे पहले गाजनने ईरानमे एक बडा बौद्ध विहार बनवाया था। पर, जब उसने देखा, चीन और मगोलिया यहासे बहुत दूर है, इसलिये वहा सर्वत्र प्रचलित बौद्ध-धर्म इस्लामी ईरान-इराकमे कोई सहायता नही दे सकता, तो वह मुसलमान हो गया।

गाजनके समय रशीदुद्दीन फज्लुल्ला (१२४७–१३२८ ई०) गणित, दर्शन और चिकित्सा-शास्त्रका उच्च कोटिका विद्वान् था। अबकाका वह विश्वासपात्र दरबारी था। गाजनने उसे अपना वजीर बनाया। अबूसईदने थोडे दिनोके लिये उसे हटा दिया था, पीछे उल्जैतूको विरेचनमें जहर देकर मारनेका अपराध लगा, उल्जैतूके पुत्र इब्राहिमने उसे मरवा दिया। रशीदुद्दीन अपने समयका बहुत बडा इतिहास-कार भी है। उसकी पुस्तक "जामे-उत् तवारीख" एक विशाल और बहुमूल्य इतिहासग्रंथ है।

८ उल्जैतू, मुहम्मद खुदावन्दा, अरगून-पुत्र (१३०४–१७ ई०)

इलखानोने बगदादके खलीफाको खतम किया, लेकिन मिस्रके खलीफाका वह कुछ बिगाड नही सके। बगदादका खलीफा सुन्नियोंका धर्मगुरु था, और मिस्रका खलीफा शियोंका। उल्जैतूने इस्लाम-प्रेम दिखलानेके लिये अपना नाम मुहम्मद खुदावन्दा रखा। ईरान अभी शियोका नही हुआ था, लेकिन उल्जैतूने अपनेको शिया दिखलानेके लिये शियोंके बारह इमामोके नामवाले सिक्के चलाये। उल्जैतूका अपने प्रतिद्वंद्वी किपचकखानो तोकताई और उज्बेक (१३३३–४० ई०)से मुकाबिला था। १३१६ ई०में किपचक-राजकुमार बाबा ओगलान भागकर उल्जैतूकी शरणमें आया। उसने उसे सहारा दिया। बाबा तुरत ही अपनी सेना लेकर ख्वारेज्मपर चढ गया, जो उज्बेकखानके राज्यमें था। इसके लिये उज्बेकने दूत भेजा और किस तरह बाबा ओगलान ख्वारेज्मसे मारकर भगाया गया, यह हम पहले कह आये है।

मगोलोके शासनकालमें जिस तरह शर्गीयनके विद्वानों और सूफी कवियोकी कृतिया अधिक प्रचलित हुई थी, उसी तरह फारसी गद्य-कथासाहित्यके विकासका भी यही समय था। तुगराई (मृत्यु १३२४ ई०) मशहदी इस समयका बहुत बडा कथाकार था, जिसके "मिरातुल्-मफतूह", "कुजुल् मआनी", "चश्मये फैज" आदि कितने ही कथाग्रन्थोका बहुत मान हुआ।

९ अबूसईद, उल्जैतू-पुत्र (१३१७–३५ ई०)

अबूसईद कम उमरमें ही गद्दीपर बैठा था, इसीलिये शासनका सारा प्रबन्ध उसके सेनापति अमीर चोबानके हाथमें था। चोबानने उज्बेक खानकी सेनाको खदेडकर दरबन्दके पार तेरेक नदीतकके प्रदेशको लूटा था, इसलिये उसका प्रभाव बहुत अधिक हो गया था। उसके नौ पुत्रोमें सबसे बडा अमीर हसन खुरासान और माजंदरानका राज्यपाल था, और हसनका बडा पुत्र तालिश अस्पहान पारस-केर-मानका। हसन और तालिशका बापसे झगडा हो गया, जिससे चोबानने उनपर आक्रमण कर दिया। हसन और तालिश दहिस्तानके रास्ते ख्वारेज्म भागे। वहाके राज्यपाल अमीर कुतुलुक तेमूरने उनका स्वागत करते उज्बकखानके पास भेज दिया। उज्बेकने उनकी बडी खातिर की। चेरकासियोंके खिलाफ उज्बेक खानकी ओरसे लडते हुए हसन घायल हो गया। उज्बकने बडी चिकित्सा कराई, लेकिन वह न बचा। उसका लडका बहुत दिनोंतक जीता रहा।

७३५ हि० (१ सितम्बर १३३४–२३ जुलाई १३३५ ई०)में उज्बेकखानकी सेनाने फिर दश्तेखाजार—कास्पियनके उत्तर-पश्चिमतटके मैदानी प्रदेश—के रास्ते अर्रान और आजुर्बाइजानपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्थान किया। अबूसईद भी खबर सुनकर मुकाबिलेके लिये चला, किन्तु कराबाग में ३१ अक्तूबर १३३५ ई० (१० रबी I ७३६ हि०) को इस "दीनदार नेककिर्दार बादशाहके प्राण पक्षीने शरीरके पिजड़ेसे उड़कर उत्तम स्वर्गको घर बनाया।" उज्बकखानने अपनी सेनासहित आगे बढ़ कुरा नदी तकके सारे इल्खानी प्रदेशको बरबाद कर दिया। तारीफ यह कि मुसलमान इतिहासकारोंके लिये अबूसईदकी तरह उज्बक खान भी धर्मराज था। दरबारी कवि औहदीने अपने संरक्षक अबूसईदकी तारीफमें अपनी मस्नवी "जामजम"में लिखा है—

> दो जहां रासिलयं-ईद जदन्द ।
> सिक्क बर-नाम बूसईद जदन्द ॥
> दर्-चमन गुफ्त बुलबुल ओ कुमरी ।
> मदहि-गुल गुली उलुल-अमरे ॥

(दोनों लोकोंकी खुशीका पारितोषिक किया, अबू-सईदके नामपर सिक्का चलाया। उपवनमें बुलबुल और कुमरीने इस फूलकी तारीफ की।)

अबूसईदके मरनेपर भारी शोक मनाया गया। मस्जिदोंके मीनारोंको शोक-प्रकाशक कपड़ोंसे ढाक दिया गया था।

अबूसईदके बाद हुलाकू-वंशका पतन बहुत जल्दी-जल्दी होने लगा और ग्यारह वर्षोंके भीतर ६ खान गद्दीपर बैठे।

अबूसईदके समय "तारीखे गुजीदा" नामक इतिहासके बहुत सुंदर ग्रंथका लेखक हम्दुल्ला मुस्तौफी (मृत्यु १३४९ ई०) हुआ था। मुस्तौफीने अपने ग्रंथको प्रसिद्ध इतिहासकार रशीदुद्दीनके बेटे गयासुद्दीनको समर्पित किया था। इस ग्रन्थके उद्धरण फज्लुल्ला-पुत्र अब्दुल्ला शीराजी (मृत्यु १३२८ई०) ने अपने ग्रंथ "तारीखे वस्साफ" में दिये हैं। दिल्लीके फारसी कवि अमीर खुसरो (१२५३–१३२५ ई०) का यह समकालीन था।
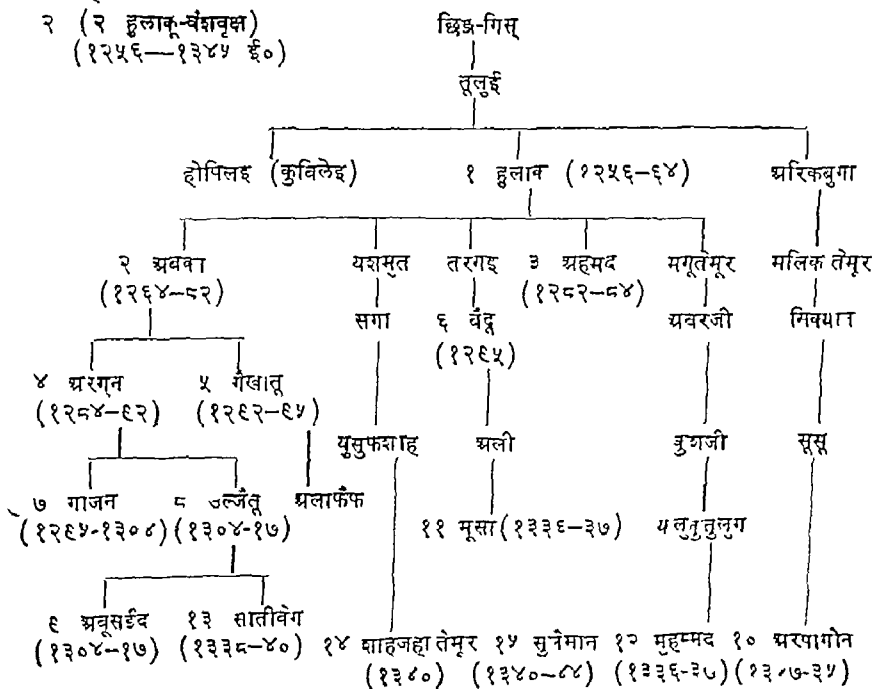
अबूसईदके बाद अब छिङ्गिमी राजकुमार पूरी तौरसे मुसलमान थे। मंगोल अब संस्कृतिहीन नहीं थे, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, न्यायप्रियता आदि गुणोंके कारण उनकी संस्कृति उच्च स्तरकी थी, किन्तु इस्लामके समुद्रमें उनका कोई बस नहीं चला। दरबारियोंने जब शक्ति हथिया ली, तो गुडिया खानको कभी अपने शक्तिशाली वजीरोंको प्रसन्न करनेके लिये और कभी प्रजाके प्रभावशाली वर्गको अपनी ओर करनेके लिये इस्लाम लाना जरूरी था। अन्तमें मंगोल-वंशकी समाप्ति होकर इसकी जगह पांच छोटे-छोटे राजवंश कायम हुये, जिनका अन्त तेमूरलंगने अपने दिग्विजयमें किया। यह पांचो खानदान थे—(१) जलायर, (२) मुजफ्फरी, (३) सर्वदारी, (४) बनीकर्त्त और (५) चोबानी। जलायर सुल्तान ओवेसके बाद सुल्तान अहमद हुआ, जिसे १३८० ई०में तेमूरने खतम किया।

हजारा—मंगोलोंके शासनकालमें जो मंगोल इधर आकर रह गये थे, उनमेंसे कुछ तो साधारण तुर्क जन-समूहमें विलीन हो गये, किन्तु कुछ घुमन्तू हिन्दूकुश (हिन्दूकोह)की उपत्यकाओंमें जाकर कृषक और पशु-पालका जीवन बिताने लगे। इनके पचीस कबीले थे, जो आजकल हजाराके नामसे अफगानी-ताजिकों और वक्षु-उपत्यकाके दक्षिणवाले तुर्कोंके बीचमें रहते हैं। इनकी भाषा तुर्की नहीं, एक तरहकी फारसी है, लेकिन बाबरके समयतक यह मंगोल-भाषा बोलते थे। अबुलफजल (अकबरके प्रधान-मंत्री)ने इन्हें मङ्गु खान्का वंशज कहा है, और यह भी उल्लेख किया है, कि इनकी स्त्रियां पुरुषों जैसी ही लड़नेमें बहादुर होती हैं। अफगानिस्तान और सोवियत मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमानोंके महासमुद्रके बीचमें अपनेको शिया बनाये रखना हजारोंकी विशेषता है। विद्वानोंने इनकी भाषामें कितने ही मंगोल शब्द भी ढूंढ निकाले हैं।

साहित्य—इलखानियोंके समयमें फारसी गद्य-पद्य-साहित्यकी रचनायें बढ़ी, यद्यपि इस साहित्यमें निराशावादकी ही प्रधानता है। इस कालकी कविता तीन श्रेणियोंमें बांटी जा सकती है—सूफी रहस्यवाद, गजल (प्रेम-पत्र), कसीदा (स्तुतिप्रशंसा) और उपदेश।

इनमें सूफी कवि थे—फरीदुद्दीन अत्तार (१११९–१२२९ ई०)–जिसे प्रथम मंगोल आक्रमणमें एक मंगोल सैनिकने मार डाला, सादी, औहदी, इराकी और मगरबी।

गजलके कवि थे—मौलाना रूमी, सादी और हाफिज।

कसीदाके कवि—कमाल इस्माईल और सुलेमान सावजी।

उपदेशात्मक रचना करनेवालोंमें निपुण थे—सादी और इब्न-यमीन।

तैमूर-वंश

(१३७०-१५०० ई०)

१ तैमूरलंग (१३७०-१४०५ ई०)

तैमूरका पिता तुरगाई बरलस था। अमीर कजगनने केश (शहरसब्ज) और नख्शब (कर्शी)के इलाके दिये थे। अपने स्वरचित जीवनचरित्र "तुजुकाते-तैमूर"[1] में तैमूरने लिखा है—"बारह वर्षकी उमरमें ही मुझे अपनी असाधारण बुद्धि और दिमागी शक्तिका पता लगने लगा, और मैंने अपनेको अल्लाह और आत्मसंयमका अभ्यासी बनाया। अठारह सालकी उमरमें मैं सेना और बहादुरोंके विजय-कार्योंमें अपनी चतुराईके लिए कम अभिमान नहीं रखता था। मैं अपना समय कुरान पढ़ने, शतरंज खेलने तथा बहादुरोंके अनुरूप दूसरे कामोंमें बिताता था।" १३५६ ई० में तैमूरके पिताने उसे अमीर कजगनके पास दूत बनाकर भेजा। कजगन उससे इतना प्रसन्न हुआ, कि उसने अपने लड़के सेला-गानकी, बेटी आलजे तुरकान आगाको उससे ब्याह कर दिया और "मिंगबाशी" (सहस्रपति)का पद दे हुसेन खाँ (गुरगान)के विरुद्ध अभियानमें जाते समय तैमूरको अपने साथ ले गया। अभियान सफल रहा, किन्तु इसी समय कजगनकी हत्या कर दी गई और थोड़े ही समय बाद तैमूरका पिता भी मर गया। अमीर कजगनके पौत्र अमीर हुसेनके साथ तैमूरकी मित्रता हो गई। अभी वह अमीर कजगनकी हत्याका बदला लेनेकी सोच रहे थे, कि मुगोलिस्तानका खान तुगलक (ध्वजाधारी) अन्तर्वेदपर चढ़ दौड़ा।

हम कह आये हैं, कैसे अन्तर्वेदकी चगताई राज्यकी डावाँडोल स्थितिको देखकर जाते (सीमाती) मुगोलिस्तानके खान तुगलक (ध्वजाधारी) तैमूर[2] ने ७६१ हि० (२३ XI १३५९—१३ X १३६० ई०) में शाशके रास्ते आकर आक्रमण किया। खोजन्द नदी पार कर लेनेपर अमीर बायजीद जलायर उससे आ मिला। दोनों शहरसब्ज (केश) की ओर बढ़े। तैमूरलंगके चचा हाजी बिरलसने पहले मुकाबिला करनेका ख्याल किया, लेकिन फिर उसे व्यर्थ समझकर खुरासानकी ओर भागना ही अच्छा समझा। चचाकी सलाहसे तैमूरलंग किस तरह लौटकर समरकन्दमें प्रधान बना, इसके बारेमें हमने अन्यत्र बतलाया है। तैमूर और उसके वंशज अपनेको छिङ्गिस्-वंशी सिद्ध करनेकी बहुत कोशिश करते हैं। भारतमें तो उसके वंशजोंने अपने खानदानका नाम ही मुगल रख दिया। लेकिन, वस्तुतः वह छिङ्गिस्-वंशज नहीं थे। कुछ इतिहासकारोंने उन्हें चगताई-सेनापति कराचार नोयनके वंशका बतलाकर मगोल सिद्ध करनेकी कोशिश की है, लेकिन वस्तुतः बिरलस तुर्क थे। हाँ, वह उन तुर्कोंमेंसे थे, जो कि मगोलोंके मध्य-एसियाकी ओर बढ़नेके समय उनकी सेनामें बहुत भारी संख्यामें शामिल हो गये। वह मगोलोंके विश्वासपात्र सरदारोंमेंसे थे, लेकिन जब मगोल-शक्ति निर्बल हो गई, तो वह उनके तुर्क-प्रतिद्वंद्वी बन गये। अमीर कजगनके बाद इनका जोर अन्तर्वेद और तुर्किस्तान (मध्य-सिर-उपत्यका)में बढ़ा। मगोल-राज्यकी बंदर-बाँटके समय तैमूरका पिता हाजी तुगाई बिरलस तुर्कोंकी कोरकान (गूरगान) शाखाका मुखिया और केश (शहरसब्ज) इलाकेका स्वामी बन गया, जिसके मरनेपर उसका उत्तराधिकारी उसका भाई हाजी बिरलस हुआ—

---

१ "तुजुकाते-तैमूर" (तैमूरके नियम) तुर्कीमें लुप्त तथा फारसी अनुवादमें ही प्राप्य है।

२ जन्म ७३० हि० (२५ X १३२९—१५ IX १३३० ई०), गद्दी ७४८ हि० (१३ IV १३४७—३ III १३४८ ई०), मुसलमान ७५४ हि० और मृत्यु ७६४ हि० (२१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०)

हाजी बिरलसको किन्ही-किन्ही इतिहासकारोंने तेमूरलंगका भाई भी लिखा है। तेमूरलंगके बापका स्थान हाजी बिरलसने लिया, इसमें कोई मतभेद नही है। यही केश नगरमें ५ शावान ७३६ हि० (१६ मार्च १३३६ ई०) को तेमूर पैदा हुआ। बचपनसे ही उसमें नेतृत्वके लक्षण दिखलाई पडने लगे। लडकोंकी पचायत और शिकारमें निपुणता दिखलाकर साबित कर रहा था, कि वह एक कुशल शासक और सैनिक होगा। तुगलक तेमूरने तेमूरलंगके आनेपर उससे प्रभावित हो उसे केशका हाकिम बना दिया। जब खान काशगर लौट गया, तो अमीरोंमें झगडा बढ चला। अगले साल ७६२ हि० (११ XI १३६०—२ X १३६१ ई०) में खान फिर अन्तर्वेद आया और अमीरों-को भगाकर उसने समरकन्दपर फिर अधिकार कर वहाका शासन अपने पुत्र इलियास खोजा ओग-लानके हाथमें दिया और तेमूरलंगको उसका मुख्य-पारिषद् (अतालीक) नियुक्त किया। लेकिन तेमूरकी दूसरे अमीरोंसे नही पटी और वह अमीर कजगनके पौत्र तथा अपने साले अमीर हुसेनकी खोजमें भाग निकला।

समरकन्दसे भागनेके बाद तेमूर कराकुमके उसी रेगिस्तानकी ओर गया, जो कि उत्तराभिमुख वक्षुसे कास्पियन समुद्रतक फैला हुआ है। यहा उसे बहुत तकलीफ उठानी पडी। निर्जन मरुभूमिमें खानेका भी ठिकाना नही था। तेमूर अपने तुजुकातमें लिखता है—मैं और मेरी पति-परायणा पत्नी ओल्जाई अमीर हुसेनसे मरुभूमिमें मिले और फिर महीने भर रात-दिन रेगिस्तानमें भटकते रहे। कितनी ही बार हमें अन्न और जल भी मुयस्सर नही हुआ। अन्तमें एक तुर्कमानने हमें पकडकर बन्दी बना लिया और ओल्जाईको एक ऐसी पशुशालामें ले जाकर बन्द कर दिया, जो दिस्सुओ और खट-मलोंसे भरी थी। तेमूर किसी तरह साले और बीबीके साथ वहासे भागकर केश पहुचा। थोडे ही दिनों-में उसके पुराने साथी उसके पास जमा हो गये, जिनके साथ वक्षु पार हो वह दक्षिणके इलाके (पुराने वाह्लीक) में चक्कर काटता रहा। अन्तमें लूट-पाट करनेके लिये सीस्तानके ऊपर आक्रमण किया और बलूचियोंसे एक किला छीन लिया। लेकिन जल्दी ही लोगोंने उसके ऊपर आक्रमण किया, जिसमें उसके पैरमें चोट लग गई और वह जिन्दगीभरके लिये लंग (लगडा) हो गया। मगोलों और तुर्कों-में तेमूर नाम बहुत अधिक पाये जाते है, जिनसे अलग करनेके लिये वह इतिहासमें तेमूर-लंग (तेमूर लगडा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। तेमूरके साले हुसेनने इसी समय बलखपर अधिकार कर लिया। तेमूर भी वही चला गया। धीरे-धीरे तेमूरके पद्रह सौ अनुयायी हो गये। ७६५ हि० (१० अक्तूबर १३६३—३० अगस्त १३६४ ई०) में इलयास खोजाकी सेनाके साथ उसकी प्रथम भिडत वक्षुके बाये तटपर कुदुजके नजदीक हुई। यद्यपि इलियासकी सेना पाचगुनी थी, लेकिन तेमूरने उसपर पूर्णतया विजय प्राप्त करके सेनाको नदी पार भगा दिया। इसी समय पिताके मरनेकी खबर सुनकर इलियास बापकी गद्दी सभालने अलमालिककी ओर दौडा, और तेमूर बहुत आसानी-से जेतो (मगोलिस्तानियों) को अन्तर्वेदसे निकालनेमें सफल हुआ। अब तेमूर अपनी जन्मभूमि-का स्वामी था, लेकिन प्रतिद्वंद्वियों और बाधाओंकी कमी नही थी, इसलिये उसने प्रभावशाली सरदारो की एक कूरिल्ताई बुलाई, जिसमें रिक्त सिंहासनपर काबिलशाहके बैठानेका निर्णय हुआ। तेमूर-वशने अबूसईदके समय (१४५१-५२ ई०) तक मगोल खानोंको समरकन्दकी गद्दीपर बनाये रक्खा, जो यही बतलाता है, कि अन्तर्वेदके लोगोंमें चिङगिसी राजवंशके साथ एक विशेष तरहका लगाव स्थापित हो गया था। खानकी जगह सभालनेपर तेमूरको भारी विरोधका सामना करना पडता।

जाडा बीतते ही इलियास खोजा एक बडी सेना लेकर फिर अन्तर्वेदकी ओर आया। तेमूरका शिविर उस समय चिनास और ताशकन्दके बीचमें था। हुसेनने सिर-दरियाको पार कर लिया। लडाईमें दो हजार आदमियोंको मरवाकर हुसेन अपनी राजधानी सालीसराय (नदीके परले तट-पर) चला गया और तेमूर कर्शीकी ओर भागा। जेतोने फिर समरकन्दको ले लिया। इसी समय तेमूरकी मददके लिये जेतोंके घोडोंमें महामारी फैल गई, जिससे बहुत सारे घोडे मर गये और उन्हें अपना सामान पीठपर ढोनेके लिये मजबूर होना पडा। वह अन्तर्वेद छोडकर चले गये। तेमूरके लिये यह बहुत अच्छा अवसर मिला था, किन्तु इसी समय हुसेनसे उसका बिगाड हो गया, जिसके

अब तेमूरका कोई प्रतिद्वंदी नहीं रह गया था। इसी समय १३६९ ई०में बल्खमें उसने एक बड़ी कुरिल्ताई बुलाई, जिसमें चगताई-राजवंशके सभी अमीर, तेमूरके गाढ़े दिनों और तरुणाइके साथी तथा उसके पुराने प्रतिद्वंदी भी शामिल हुए। सबने तेमूरको अपना शासक स्वीकार किया और मंगोल खानोंके राज्याभिषेक-समयकी सभी प्रथाके अनुसार ८ अप्रैल १३६९ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) को तेमूरको एक सफेद नमदेपर बिठाकर उसे चारों ओरसे पकड़कर उठाया, और धर्मगुरु सैद बरकाके द्वारा कुतबा पढ़े जानेके बाद अमीर घोषित किया। वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशपर अपना दृढ़ शासन स्थापित कर तेमूरने समरकन्दको अपनी राजधानी बनाया।

७८२ हि० (७ IV १३८०—२६ III १३८१ ई०) में तेमूरने अपने पुत्र मीराशाहको खुरासानपर अधिकार करनेके लिये पहले भेज फिर स्वयं भी वहाँ पहुँचा। इस समय ईरान कई राजवंशोंमें बँटा था। उनमें सर्बेदार-वंश था, जिसके—(१) अब्दुरजाक (एक वर्ष दो मास), (२) मसऊद (७ वर्ष), (३) शम्सुद्दीन, (४) लोगान तैमूर, (५) कस्साब हैदर, (६) यहिया करबी, (७) ख्वाजा दमगानी, (८) अली मोवैयद अब्दुरंजाक—आठ शासकोंने उत्तरी ईरानपर पैंतीस साल शासन किया। अन्तिम शासक अब्दुरजाकने तमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। खुरासानमें हिरातको राजधानी बनाकर कुर्त-वंश शासन कर रहा था। तेमूर इसी वंशके खिलाफ चढ़ा। राजधानी-के पास भारी लड़ाई हुई। पर्वोके नगर खाबूशान, तूस, नेशापोर, सब्जवार ध्वस्त होकर ईंटों और मिट्टीके ढेर रह गये। खुरासानके बाद तेमूरने सीस्तान, बलोचिस्तान और अफगानिस्तानपर आक्रमण किया। इस प्रकार १३८६ ई० (७८८ हि०)में वह ईरानपर आक्रमण करनेके लिये स्वतंत्र था। इस्पहानका सारा इलाका और पारस मुज्जफरी-वंशके हाथमें था। इराक और आजुरबाइ-जानके इलाके अब भी इलखानी अमीर चोबानके वंशके हाथमें थे। बगदादने बिना प्रहारके ही अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार खिलाफतकी राजधानी तेमूरके हाथमें आ गई।

ईरानपर विजय प्राप्त करनेके बाद तेमूर समरकन्द लौटा। समरकन्दका भाग्य जाग उठा। तेमूरने अपने दरबारको बड़े ही दबदबेके साथ सजाया। समरकन्दमें एकसे एक सुन्दर महल, मस्जिदें और मदरसे बनवाये, जिनके बनानेके लिये रोम, ईरान और भारततकके वास्तु-शास्त्री और शिल्पी बुलाये गये। लाखोंकी संख्यामें देश-विदेशोंके दास-दासियोंमेंसे काफी समरकन्दमें लाये गये, जिनके कारण समरकन्दके शिल्प और उद्योगको आगे बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली।

तोकतामिशपर आक्रमण—इसी वक्त पहलेके आश्रय प्राप्त किपचक खान तोकतामिशसे तेमूरका झगड़ा हो गया और उसे अपने उत्तरी शत्रुकी शक्तिको तोड़नेकी आवश्यकता पड़ी। तोकतामिश मिरद-ग्याके रास्ते सफल न होनेपर १३८५ ई०में काकेशसके रास्ते तब्रेजपर जा पड़ा, और इलखानियोंके

समयसे चले आते इस समृद्ध नगरको लूटकर बर्बाद कर दिया। इसका बदला लेनेके लिए १३८७ ई० में तैमूरने काकेशनके रास्ते दरवन्द पहुच तोग्तामिशको बुरी तरह हराया । १३८८ ई० (७९० हि०)में तोकतामिशने सिरदरियाकी ओरसे भारी आक्रमण किया। तैमूरको उसके लिये ७९२ हि० (२० XII १३८९--१० XI १३९० ई०)मे प्रथम महाभियान करना पड़ा। वह सिर-दरियाके पार हो उत्तरमें बढते-बढते ६ अप्रैलको वोल्गारोकी भूमिमे अवस्थित कृचुकताग (लघु-पर्वत) में पहुचा। फिर उलूताग (महापर्वत)पर चढकर उसने आसपासकी भूमिका अवलोकन किया। यहीपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई०को एक शिलालेख लिखकर स्थापित किया।

आगे तोकतामिशको तैमूरने कैसे हराया, इसका वर्णन हम पहिले कर चुके है *।

उस करारी हारके बाद भी तैमूरके हटते ही तोकतामिश फिर सबल हो उठा, जिसके लिये तैमूरको २५ फर्वरी १३९३ ई०में दूसरा महाभियान काकेशसके रास्ते कास्पियनसे पश्चिम-पश्चिम करना पड़ा। १३ अप्रैलको वह तेराक नदीपर पहुच गया। तोकतामिशको हारकर पीछे भागना पड़ा। तैमूर उसका पीछा करके आगे वोल्गाके किनारे-किनारे सराय पहुचा। नगरवासियोंको घर छोड बाहर निकल जानेका हुकुम दे उसे खूब लुटवाया। फिर मास्कोकी ओर जाना चाहता था, जिसके लिये भगवान्की मा (मरियम)का बडा जुलूस निकाला गया, बड़ी पूजा-प्रार्थना की गई, और भगवान्की माने मास्कोको बचा लिया। तैमूरने क्रिमियाके बडे नगर अजाकको भी लूटा। सोना, चादी और रतन लदवाये तथा सुदर दास-दासियोंके समूहको लिय वह दरवन्दके रास्ते लौटा। तैमूरकी विजय-यात्राओमें छिङ्गिसकी विजय-यात्राने प्रेरणा दी थी, लेकिन जहा छिङ्गिस् हर एक विजयपर अपना दृढ शासन स्थापित करता था, वहा तैमूरके बहुतसे अभियान केवल लूटमारके लिये होते थे।

७९६ हि० (५ X १३९६–२६ VIII १३९७ ई०)में पाच सालकी अनुपस्थितिके बाद तैमूर राजधानी समरकन्द लौटा। वक्षु-तटपर अपनी खातूनो, पुत्रियो-पौत्रियो तथा राज कुमारोंके साथ पहुचनेपर लोगोंने उसका अपार स्वागत किया। खुशीमें उसने सोना और जवाहर लुटाये। तैमूर साठ वर्षका हो चुका था। इसी समय उसने तौकेल खानमसे शादी करके उसे "दिलकुशा" प्रासाद प्रदान किया। अभी भी उसकी लूटसे तृप्ति नही हुई थी, और अब उसकी नजर सिंधु और गगाकी ओर थी।

भारतपर आक्रमण—८०० हि० (२८ IX १३९७—१५ VIII १३९८ ई०)को उसने भारतके लिये प्रस्थान किया। उसका पौत्र पीर मुहम्मद पहले ही आकर मुल्तानका मुहासिरा किये हुये था। तैमूर बलख और हिन्दूकोहके रास्ते काबुल पहुचा। ८०१ हि०के पहले दिन (१३ सितम्बर १३९८ शुक्र) उसने सिंध नदीको पार किया। रास्तेमें नगरोंको लूटता और लोगोंकी लाशों-से सडकोंको पाटता जब सतलजके किनारे पहुँचा, तो पीर मुहम्मद भी उससे आ मिला। फिर भारतकी राजधानी दिल्लीकी बारी आई। बदियोंके मारे जल्दी चलनेमें रुकावट हो रही थी, इसलिये उनसे छुट्टी पानेके लिये उसने एक लाख बदियोंको कतल करवा डाला। यह इतना अमानुषिक कार्य था, जिसे करनेकी हिम्मत कुछ जल्लाद नही कर सकते थे, इसलिये सारी सेनाको हुकुम हुआ, कि हर एक आदमी इस काममें सहायता करे। इतिहासकार नासिरुद्दीन इसका बडा करुणापूर्ण वर्णन करता है। उसके लिये अपने पद्रह हिन्दी दासोंका मारना बहुत मुश्किल हो गया था। जो जरा भी ढिलाई करता, उसे पीटा जाता। अपने व्यापार और राजसी वैभवके लिये प्रसिद्ध दिल्लीने अपना खजाना तैमूरके लिये खोल दिया, लेकिन तैमूरने दया नही दिखलाई। वही हालत मथुराकी हुई—वहाके मदिर ध्वस्त कर दिये गये और मूर्तिया तोड दी गई। रास्तेमें हर एक आदमीको मारते और लूटनेसे बची हर एक चीजको नष्ट करते तैमूर हरिद्वारकी ओर पहाडके भीतरतक घुस गया। उसके इतिहासकारोंने गढवालके पर्वतवासियोंके भीषण प्रतिरोधका वर्णन किया है, लेकिन तब भी वहाकी राजधानी तैमूरके हाथसे बच न सकी। कुछ लोगोंका मत है, कि तैमूर देहरादून-

* विशेषके लिये देखो पृष्ठ ५६-६२

कारण उससे पूरा फायदा नही उठा सका। हुसेनने पहले धोखेसे तेमूरको खत्म करवाना चाहा, जब उसमे सफलता नही मिली, तो उसके खिलाफ अमीर मूसाको सेना देकर भेजा। मसा वलखमे वक्षु पार हो उत्तरकी ओर बढा, लेकिन तमरने उसे हरा दिया। फिर हुसेन स्वय सालीसरायसे एक भारी सेना लेकर चला। तेमूर करशी होते बुखारा लौटा फिर अन्तर्वेद छोड ख्वारेज्मकी ओर भाग गया। हुसेन अब सारे अन्तर्वेदका स्वामी था। तेमूरने जाडे भर तैयारी की। वसत शुरू होते ही एक छोटी किन्तु बहुत ही सुशिक्षित और बहादुर सेनाके साथ आक्रमण कर उसने ताशकन्द ले लिया, फिर समरकन्द और करशीमे अपने प्रतिद्वद्वीकी सेनाको चीरते वह जलायर अमीर कैखुसरोसे जा मिला। कैखुसरोने अपनी लडकीका तेमूरके पुत्र जहागीरसे व्याह कर भारी सेनासे उसकी मदद की। तेमूरने पीछे मुडकर हुसेनको वक्षुपार मार भगा दिया। जेतोके साथ तथा अमीर जलायरसे तेमूरका मेल हुसेनके लिये बहुत भयकर था और अन्तमें उसने बहनोईसे सधि कर ली। हुसेनको तेमूर ने उसके विरोधी सामन्त बदख्शाके हाकिमको दबानेमें सहायता भी दी। लेकिन, जब तेमूरके ऊपर जेतोने प्रहार किया, तो हुसेनने विश्वासघात किया, और अन्तमें हारकर तेमूरके हाथमें वन्दी हुआ। तेमूर उसे मारना नही चाहता था, लेकिन उसके अमीरोने बहुत जोर दिया और अन्तमें ७७१ हि० (५ VIII १३६९—२६ VI १३७० ई०)में उसे अपने बहनोईको मरवाना पडा।

अब तेमूरका कोई प्रतिद्वद्वी नही रह गया था। इसी समय १३६९ ई०में बलखमे उसने एक बडी कूरिल्ताई बुलाई, जिसमें चगताई-राज्यके सभी अमीर, तेमूरके गाढे दिनो और तरुणाईके साथी तथा उसके पुराने प्रतिद्वद्वी भी शामिल हुए। सबने तेमूरको अपना शासक स्वीकार किया और मगोलो तथा उनके पूर्वजोंके समयसे चली आई प्रथाके अनुसार ८ अप्रैल १३६९ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) को तेमूरलगको एक सफेद नम्देपर बिठाकर उसे चारो ओरसे पकडकर उठाया, और धर्मगुरु सैयद बरकाद्वारा अल्लाहकी दुआ पढे जानेके बाद अमीर घोषित किया। वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशपर अपना दृढ शासन स्थापित कर तेमूरने समरकन्दको अपनी राजधानी बनाया।

७८२ हि० (७ IV १३८०—२६ II १३८१ ई०) में तेमूरने अपने पुत्र मीराशाहको खुरासानपर अधिकार करने के लिये पहले भेज फिर स्वय भी वहा पहुचा। इस समय ईरान कई राजवशो मे बटा हुआ था। उत्तरमे सर्वदार-वश था, जिसके—(१) अब्दुर्रजाक (एक वर्ष दो मास), (२) मसऊद (७ वर्ष), (३) शम्सुद्दीन, (४) तोगान तेमूर, (५) कस्साब हैदर, (६) यहिया करनी, (७) हसन दमगानी, (८) अली मोवैयद अब्दुरजाब—आठ शासकोने उत्तरी ईरानपर पैतीस साल शासन किया। अन्तिम शासक अब्दुरजाकने तेमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। खुरासानमें हिरातको राजधानी बना करतवश शासन कर रहा था। तेमूर इसी वशके खिलाफ चढा। राजधानीके पास भारी लडाई हुई। कितने नगर कावूशान, तूस, नेशापोर, सब्जवार ध्वस्त होकर ईंटो और मिट्टीके ढेर रह गये। खुरासानके बाद तेमूरने सीस्तान, बलोचिस्तान और अफगानिस्तानपर आक्रमण किया। इस प्रकार १३८६ ई० (७८८ हि०)में वह ईरानपर आक्रमण करनेके लिये स्वतत्र था। अस्पहानका सारा इलाका और पारस मुज्जफरी-वशके हाथमें था। इराक और आजुरबाइजानके इलाके अब भी इलखानी अमीर चोबानके वशके हाथमें थे। बगदादने बिना प्रहारके ही अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार खिलाफतकी राजधानी तेमूरके हाथमें आ गई।

ईरानपर विजय प्राप्त करनेके बाद तेमूर समरकन्द लौटा। समरकन्दका भाग्य जाग उठा। तेमूरने अपने दरबारको बडे ही दबदबेके साथ सजाया। समरकन्दमें एकसे एक सुन्दर महल, मस्जिदें और मदरसे बनवाये, जिनके बनानेके लिये रोम, ईरान और भारततकके वास्तु-शास्त्री और शिल्पी बुलाये गये। लाखोकी सख्यामें देश-विदेशोके दास-दासियोमेंसे काफी समरकन्दमें लाये गये, जिनके कारण समरकन्दके शिल्प और उद्योगको आगे बढनेमें बडी सहायता मिली।

तोकतामिशपर आक्रमण—इसी वक्त पहलेके आश्रय प्राप्त किपचक खान तोकतामिशसे तेमूरका झगडा हो गया और उसे अपने उत्तरी शत्रुकी शक्तिको तोडनेकी आवश्यकता पडी। तोकतामिश मिस्रक्मियोके रास्ते सफल न होनेपर १३८५ ई०मे काकेशसके रास्ते तब्रेजपर जा पहुचा, और इलखानियाके

समयसे चले आते इस समृद्ध नगरको लूटकर बर्बाद कर दिया। इसका बदला लेनेके लिए १३८७ ई० में तैमूरने काकेशसके रास्ते दरबन्द पहुंच तोक्तामिशको बुरी तरह हराया। १३८८ ई० (७९० हि०)में तोकतामिशने सिरदरियाकी ओरसे भारी आक्रमण किया। तैमूरको उसके लिये ७९२ हि० (२० XII १३८९—१० XI १३९० ई०)मे प्रथम महाभियान करना पड़ा। वह सिर-दरियाके पार हो उत्तरमें बढते-बढते ६ अप्रैलको वोलगाकी भूमिमे अवस्थित कृचुकताग (लघु-पर्वत) में पहुंचा। फिर उलूताग (महापर्वत)पर चढकर उसने आसपासकी भूमिका अवलोकन किया। यहीपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई०को एक शिलालेख लिखकर स्थापित किया।

आगे तोकतामिशको तैमूरने कैसे हराया, इसका वर्णन हम पहिले कर चुके है *।

उस करारी हारके बाद भी तैमूरके हटते ही तोकतामिश फिर सबल हो उठा, जिसके लिये तैमूरको २५ फर्वरी १३९३ ई०में दूसरा महाभियान काकेशसके रास्ते कास्पियनसे पश्चिम-पश्चिम करना पड़ा। १३ अप्रैलको वह तेरक नदीपर पहुंच गया। तोकतामिशको हारकर पीछे भागना पड़ा। तैमूर उसका पीछा करके आगे वोल्गाके किनारे-किनारे सराय पहुंचा। नगरवासियोंको घर छोड़ बाहर निकल जानेका हुकुम दे उसे खूब लुटवाया। फिर मास्कोकी ओर जाना चाहता था, जिसके लिये भगवान्की मा (मरियम)का बडा जुलूस निकाला गया, बडी पूजा-प्रार्थना की गई, और भगवान्की माने मास्कोको बचा लिया। तैमूरने क्रिमियाके बडे नगर अजाकको भी लूटा। सोना, चादी और रत्न लदवाये तथा सुदर दास-दासियोके समूहको लिये वह दरबन्दके रास्ते लौटा। तैमूरकी विजय-यात्राओमें छिड्गिसकी विजय-यात्राने प्रेरणा दी थी, लेकिन जहा छिड्गिस् हर एक विजयपर अपना दृढ शासन स्थापित करता था, वहा तैमूरके बहुतसे अभियान केवल लूटमारके लिये होते थे।

७९९ हि० (५ X १३९६–२६ VIII १३९७ ई०)में पाच सालकी अनुपस्थितिके बाद तैमूर राजधानी समरकन्द लौटा। वक्षु-तटपर अपनी खातूनो, पुत्रियो-पौत्रियो तथा राज-कुमारोंके साथ पहुचनेपर लोगोंने उसका अपार स्वागत किया। खुशीमें उसने सोना और जवाहर लुटाये। तैमूर साठ वर्षका हो चुका था। इसी समय उसने तौकेल खानमसे शादी करके उसे "दिलकुशा" प्रासाद प्रदान किया। अभी भी उसकी लूटसे तृप्ति नही हुई थी, और अब उसकी नजर सिंधु और गगाकी ओर थी।

भारतपर आक्रमण—८०० हि० (२४ IX १३९७—१५ VIII १३९८ ई०)को उसने भारतके लिये प्रस्थान किया। उसका पौत्र पीर मुहम्मद पहले ही आकर मुल्तानका मुहासिरा किये हुये था। तैमूर बलख और हिन्दूकोहके रास्ते काबुल पहुचा। ८०१ हि०के पहले दिन (१३ सितम्बर १३९८ शुक्र) उसने सिंध नदीको पार किया। रास्तेमें नगरोंको लूटता और लोगोकी लाशो-से सडकोको पाटता जब सतलजके किनारे पहुचा, तो पीर मुहम्मद भी उससे आ मिला। फिर भारतकी राजधानी दिल्लीकी बारी आई। बदियोके मारे जल्दी चलनेमें रुकावट हो रही थी, इसलिये उनसे छुट्टी पानेके लिये उसने एक लाख बंदियोंको कतल करवा डाला। यह इतना अमानुषिक कार्य था, जिसे करनेकी हिम्मत कुछ जल्लाद नही कर सकते थे, इसलिये सारी सेनाको हुकुम हुआ, कि हर एक आदमी इस काममें सहायता करे। इतिहासकार नासिरुद्दीन इसका बडा करुणापूर्ण वर्णन करता है। उसके लिये अपने पद्रह हिन्दी दासोको मारना बहुत मुश्किल हो गया था। जो जरा भी ढिलाई करता, उसे पीटा जाता। अपने व्यापार और राजसी वैभवके लिये प्रसिद्ध दिल्लीने अपना खजाना तैमूरके लिये खोल दिया, लेकिन तैमूरने दया नही दिखलाई। वही हालत मथुराकी हुई—वहाके मंदिर ध्वस्त कर दिये गये और मूर्तिया तोड दी गई। रास्तेमें हर एक आदमीको मारते और लूटनेसे बची हर एक चीजको लूटते तैमूर हरिद्वारकी ओर पहाड़के भीतरतक घुस गया। उसके इतिहासकारोने गढ़वालके पर्वतवासियोंके भीषण प्रतिरोधका वर्णन किया है, लेकिन तब भी वहाकी राजधानी तैमूरके हाथसे बच न सकी। कुछ लोगोका मत है, कि तैमूर देहरादून-

* विशेषके लिये देखो पृष्ठ ५६-६२

की तरफ गया था, लेकिन उस समयके अलकनन्दा और भागीरथीके प्रदेशोंका केंद्र दूसरी उपत्यका नहीं, बल्कि श्रीनगरके आसपास वहींपर था। वहाँसे उसे लूटमें बहुतसा धन मिला था।

यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि तेमूरकी भारतपर चढ़ाई केवल लूट पाटके लिये हुई थी। भारतसे अपार सम्पत्ति और लाखों दास दासी लेकर तेमूर उसी साल (१३९८ ई०) समरकन्द लौट गया।

सिरिया-विजय करते समय वहांके शासक मिस्रके ममलूकोंको हुलाकूकी तरह तेमूर भी नहीं दबा पाया। दुबारा हम्ला करके वह उनके हाथसे दमिश्कको ही छीन सका।

सिरिया विजयके बाद ८०५ हि० (१४०३ ई०)के वसन्तमें क्षुद्र-एसियाकी विजयके लिये तेमूर सिवास और कराशहर होते यनकुर (अंगोरा)के मैदानमें पहुंच सुल्तान बायजीदसे भिड़ा। उसमानअली तुर्कसेना तेमूरके सामने पूरी तौरसे पराजित हुई। सुल्तान बायजीद अपने रनिवासके साथ तेमूरका बंदी बना। अब सारे क्षुद्र-एसिया (भूमध्य-सागरसे काला-सागरके तटतक)का स्वामी तेमूर था। यहाँसे लौटकर जब तेमूर समरकन्द गया था, उसी समय स्पेनके राजा तृतीय हनरीका दूत दोन रुय गोनजा

१ (२।३।१) तेमूरी साम्राज्य (१४०० ई०)
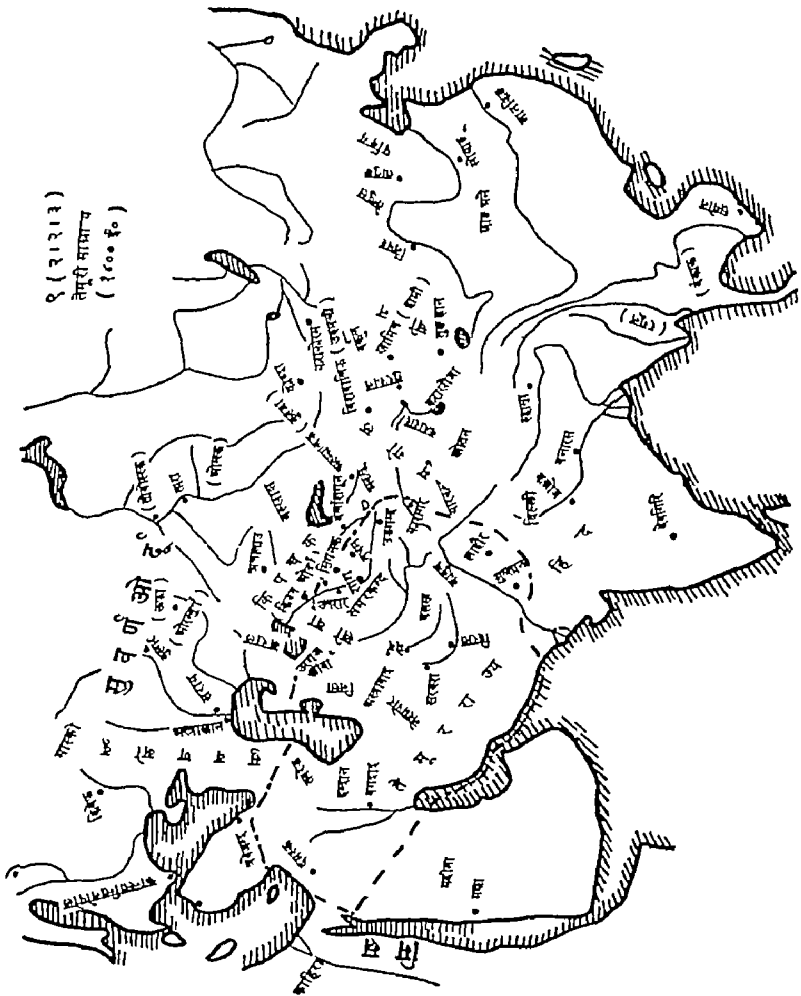
लेज दे क्लावियो समरकन्दमें उसके दरबारमें पहुंचा। क्लावियोने अपनी यात्राका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। तेमूरका दरबार उस समय एक बड़े ही विशाल और कीमती तम्बूके भीतर लगा हुआ था। उसकी रानियां बिना किसी परदेके तेमूरके पास तख्तपर बैठी थीं। यही नहीं, तेमूरकी खातूनों (रानियों)ने अपनी मद्य-गोष्ठीमें क्लावियोको अलग निमंत्रित करके सम्मानित किया था। इससे स्पष्ट है, कि तेमूरके समयतक अभी मध्य-एसियाके तुर्क राजपरिवारमें परदा-प्रथा जारी नहीं हुई थी, लेकिन उसके वंशजोंने भारतमें पहुंचकर जल्दी ही उसे अपना लिया।

जनवरी १४०५ ई० (८०७ हि०—१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)में फिर तेमूर अपनेको विजय-यात्रासे रोक नहीं सका। पश्चिममें उसके घोड़ोंकी टाप रूसकी भूमितक पहुंच चुकी थी, लेकिन जबतक पूरबमें चीन-विजय न कर ले, तबतक वह छिङ्गिसके समकक्ष कैसे हो सकता था? इसीलिये जाड़ेमें ही उसने अभियान कर दिया। लेकिन, फरवरीमें सिरतटपर ओत-रारमें पहुंचकर बीमार हो १७ फरवरीको वहीं मर गया। चरित्रलेखक अहमद अरबशाह-पुत्रने जाड़ेके मुंहसे तेमूरके बारेमें कहलवाया है—

"ओ क्रूर अत्याचारी, अपनी गतिको रोक! कबतक तू दुःखी दुनियाको अपनी तलवार और आगसे नष्ट करता रहेगा? अगर तू शैतान है, तो यह भी समझ ले, कि मैं भी एक शैतान हूं। हम दोनों बूढ़े हैं, हम दोनोंके सामने एक ही लक्ष्य है, और वह है दासोंको अपने जूए के नीचे लाना। अगर तू मानव-जातिका उच्छेद करना जारी रक्खेगा और दुनियाको निर्जन और ठंडी बनाएगा, तो समझ ले मेरी सांस उससे भी कहीं अधिक ठंडी और ध्वंसकारी है। तू अभिमान करता है अपनी उस असंख्य सेनापर, जो कि तेरा हुकुम बजा लानेके लिये दौड़ पड़ती है और जिसके द्वारा तू सभी चीजोंको नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है, तो मेरे इन जाड़ेके दिनोंको भी याद कर, जो कि सर्वशक्ति-मान्‌के श्वासोंकी मददसे हर चीजके नष्ट करनेकी क्षमता रखते हैं। मैं किसी बातमें तुझसे कम नहीं। जरा देर ठहर! बदला लेनेके लिये मैं अभी पहुंच रही हूं और तेरी सारी आग और क्रोध मेरी बर्फीली आंधी द्वारा लाई ठंडी मौतसे तुझे नहीं बचा सकते।"

तेमूर अपने बारेमें "मेन् तिङ्री-कुली तेमूर" (मैं भगवान्‌का दास तेमूर) लिखता था, लेकिन जिस भगवान्‌का दास तेमूर था, वह अवश्य ही निष्ठुर रहा होगा। छिङ्गिस् और उसके उत्तरा-धिकारियोंने भी तलवार और आगसे दुनियाको जीता था, लेकिन अनावश्यक हत्याके वह इतने पक्षपाती नहीं थे, जितना कि खूनका प्यासा तेमूर। ईरानी शियोंको दासके तौरपर बेचना, एक बड़ी समस्या थी, क्योंकि मुसलमानको दास नहीं बनाया जा सकता। इस समस्याको मुल्ला शमशुद्दीनके इस फतवाने हल कर दिया—शिया मुसलमान नहीं है, बल्कि काफिरोंसे भी बदतर हैं।

यदि तेमूर चाहता, तो अपनेको खान (बादशाह) क्या खलीफा घोषित कर सकता था। तेमूर-की सेना उसके कौशल और सार्वत्रिक विजयोंके कारण उसपर इतना विश्वास रखती थी, और उसके हुकुमकी इतनी पाबन्द थी, कि अपार सम्पत्तिके लूटनेमें लगी होनेपर भी तेमूरके ना करनेपर अपने हाथोंको तुरत रोक देती थी। ऐसी अंधभक्त सेनाके बलपर पैगम्बर बनना उसके लिये बिल्कुल आसान था। कवियोंके प्रति तेमूरकी विशेष सहानुभूति नहीं थी, लेकिन वह दरबारमें कवियों, गायकों, सूफियों-का सत्कार करता था। नकशबन्दी दरवेशोंके सम्प्रदायका संस्थापक ख्वाजा बहाउद्दीन [मृत्यु ७९१ हि० (३१ XII १३८८—२१ XI १३८९ ई०)], ख्वाजा अहरार, ईशान मखदूम कासानी और सूफी अल्लामदारपर उसकी बड़ी आस्था थी। कवियों और सूफियोंने उसके खूंखार सैनिकोंके मनको नरम करनेमें शायद ही कुछ काम किया हो।

वोल्फके अनुसार तेमूर "लम्बे-चौड़े कदका आदमी था। उसका सिर असाधारण तौरसे बड़ा तथा ललाट चौड़ा था। रंग उसका बहुत ही सुन्दर लाली लिये हुये गोरा था। उसके लम्बे बाल जन्मसे ही (ईरानी) पुराण-प्रसिद्ध जालकी तरह सफेद (ब्लौंड) थे। अपने कानों में वह दो बहुमूल्य हीरे पहना करता था। उसके चेहरेपर हमेशा गंभीरता और एक तरह की उदासी छाई रहती थी। उसे

मिस्र
मदीना
मक्का
देवगिरि
मास्को
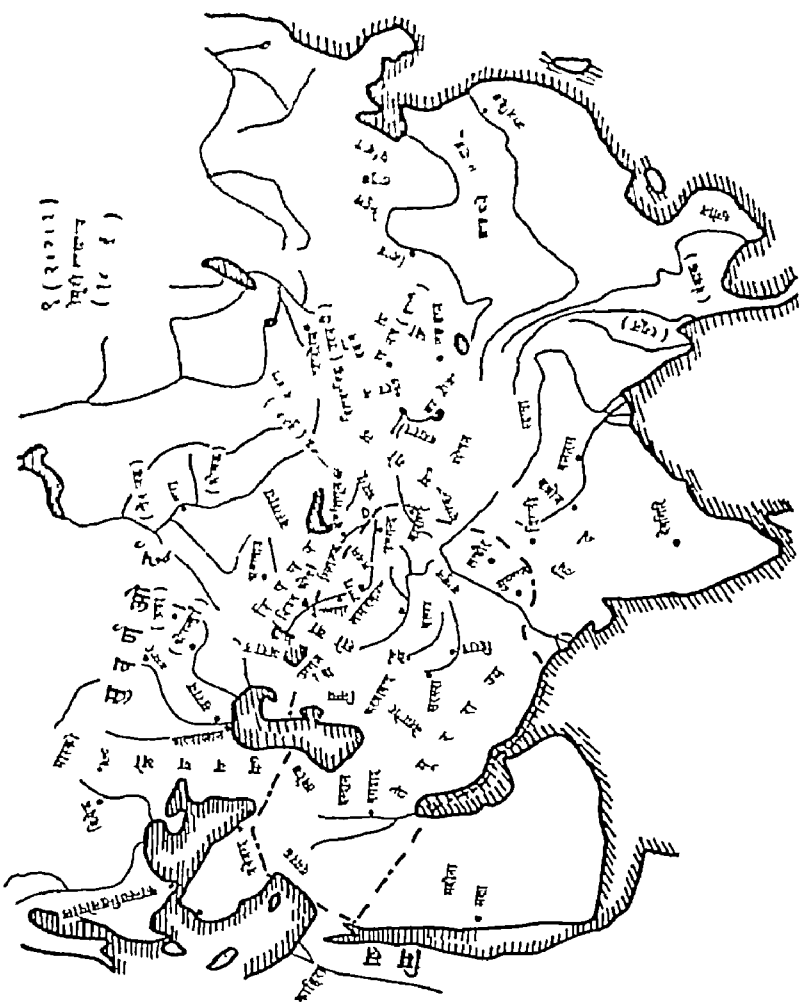
लेज दे क्लावियो समरकन्दमे उसके दरवारमे पहुचा। क्लावियोने अपनी यात्राका बहुत सुन्दर वणन किया है। तेमूरका दरवार उस समय एक बडे ही विशाल और कीमती तम्बूके भीतर लगा हुआ था। उसकी रानिया विना किसी परदेके तेमरके पास तख्तपर बैठी थी। यही नही, तेमूरकी खातूनो (रानियो)ने अपनी मद्य-गोष्ठीमें क्लावियोको अलग निमन्त्रित करके सम्मानित किया था। इससे स्पष्ट है, कि तेमूरके समयतक अभी मध्य-एसियाके तुर्क राजपरिवारमे परदा-प्रथा जारी नही हुई थी, लेकिन उसके वशजोने भारतमे पहुचकर जल्दी ही उसे अपना लिया।

जनवरी १४०५ ई० (८०७ हि०—१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)मे फिर तेमूर अपनेको विजय-यात्रासे रोक नही सका। पश्चिममे उसके घोडोकी टाप रूसकी भूमितक पहुच चुकी थी, लेकिन जवतक पूरवमे चीन-विजय न कर ले, तवतक वह छिड्गिसके समकक्ष कैसे हो सकता था? इसीलिये जाडेमे ही उसने अभियान कर दिया। लेकिन, फरवरीमें सिरतटपर ओत-रारमे पहुचकर बीमार हो १७ फरवरीको वही मर गया। चरित्रलेखक अहमद अरवशाह-पुत्रने जाडेके मुहसे तेमूरके वारेमें कहलवाया है—

"ओ क्रूर अत्याचारी, अपनी गतिको रोक! कवतक तू दुखी दुनियाको अपनी तलवार और आगसे नष्ट करता रहेगा? अगर तू शैतान है, तो यह भी समझ ले, कि मै भी एक शैतान हू। हम दोनो वूढे है, हम दोनोके सामने एक ही लक्ष्य है, और वह है दासोको अपने जूए के नीचे लाना। अगर तू मानव-जातिका उच्छेद करना जारी रक्खेगा और दुनियाको निजन और ठडी वनाएगा, तो समझ ले मेरी सास उससे भी कही अधिक ठडी और ध्वसकारी है। तू अभिमान करता है अपनी उस असख्य सेनापर, जो कि तेरा हुकुम वजा लानेके लिये दौड पडती है और जिसके द्वारा तू सभी चीजोको नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है, तो मेरे इन जाडेके दिनोको भी याद कर, जो कि सवशक्ति-मान्के श्वासोकी मददसे हर चीजके नष्ट करनेकी क्षमता रखते है। मै किसी वातमें तुझसे कम नही। जरा देर ठहर! वदला लेनेके लिये मै अभी पहुच रही हू और तेरी सारी आग और क्रोध मेरी वर्फीली आधी द्वारा लाई ठडी मौतसे तुझे नही वचा सकते।"

तेमूर अपने वारेमें "मेन् तिङ्री कुली तेमूर" (मैं भगवान्का दास तेमूर) लिखता था, लेकिन जिस भगवान्का दास तेमूर था, वह अवश्य ही निष्ठुर रहा होगा। छिड्गिस् और उसके उत्तरा-धिकारियोने भी तलवार और आगसे दुनियाको जीता था, लेकिन अनावश्यक हत्याके वह इतने पक्षपाती नही थे, जितना कि खूनका प्यासा तेमूर। ईरानी शियोको दासके तौरपर वेचना, एक वडी समस्या थी, क्योकि मुसलमानको दास नही वनाया जा सकता। इस समस्याको मुल्ला शमशुद्दीनके इस फतवाने हल कर दिया—शिया मुसलमान नही है, वल्कि काफिरोसे भी वदतर है।

यदि तेमूर चाहता, तो अपनेको खान (वादशाह) क्या खलीफा घोषित कर सकता था। तेमूर-की सेना उसके कौशल और सावत्रिक विजयोके कारण उसपर इतना विश्वास रखती थी, और उसके हुकुमकी इतनी पावन्द थी, कि अपार सम्पत्तिके लूटनेमें लगी होनेपर भी तेमूरके ना करनेपर अपने हाथोको तुरत रोक देती थी। ऐसी अधभक्त सेनाके वलपर पैगम्बर बनना उसके लिये विल्कुल आसान था। कवियोंके प्रति तेमूरकी विशेष सहानुभूति नही थी, लेकिन वह दरवारमें कवियो, गायको, सूफियो-का सत्कार करता था। नक्शवन्दी दरवेशोके सम्प्रदायका सस्थापक ख्वाजा वहीउद्दीन [मृत्यु ७९१ हि० (३१ XII १३८८—२१ XI १३८९ ई०)], ख्वाजा अहरार, ईशान मखदूम कासानी और सूफी अल्लामदारपर उसकी वडी आस्था थी। कवियो और सूफियोने उसके खूखार सैनिकोके मनको नरम करनेमें शायद ही कुछ काम किया हो।

वोल्फके अनुसार तेमूर "लम्वे-चौडे कदका आदमी था। उसका सिर असाधारण तौरसे वडा तथा ललाट चौडा था। रग उसका वहुत ही सुन्दर लाली लिये हुये गोरा था। उसके लम्बे वाल जन्मसे ही (ईरानी) पुराण-प्रसिद्ध जालकी तरह सफेद (ब्लौड) थे। अपने कानो मे वह दो वहुमूल्य हीरे पहना करता था। उसके चेहरेपर हमेशा गभीरता और एक तरह की उदासी छाई रहती थी। उसे

तैमूरके उत्तराधिकारी—और बातोंमें सिकन्दरका अनुकरण करते भी तैमूरने अपने राज्य का नहीं बाँटा। उसने अपने पोतोंमेंसे अपने पौत्र (जहांगीर-पुत्र) पीर मुहम्मदको अपना उत्तराधिकारी चुना था। तैमूरकी मृत्युके समय वह कंधारमें था। उसके आनेसे पहले ही दूसरे पुत्र मीरानके पुत्र खलील सुल्तानने समरकन्दमें अपनेको अमीर घोषित कर दिया। तैमूर पुत्र शाहरुख हिरात (खुरासान)का शासक था, सिंहासनके लिए उसका भी दावा था। उसे खुरासान, सीस्तान और माजन्दरानका राज्य मिल गया, तो भी वह चुप न हुआ। खलील सुल्तानकी राजगद्दीकी घोषणा सुनकर शाहरुख भी अपने एक सेनापतिको हिरातमें छोड़ वक्षुकी ओर चला। खलील और पीर मुहम्मदने समझौता कर लिया, कि खलीलके बाद पीर मुहम्मद उत्तराधिकारी होगा। [illegible] शाहरुख उस वक्त कुछ नहीं कर सका, लेकिन दो साल बाद उसने [illegible] छीन लिया, और ८१७ हि० (२३ III १४१४—११ II १४१५ ई०) को अस्पहान और शीराजको लेकर तैमूरके प्राय सारे राज्यका शासक बन गया। समरकन्द, बुखारा, हिरात मर्व सब्जावार, शुस्तर अस्त्राबाद और शीराज जैसे नगर उसके हाथमे थे।

साहित्य और कला—यद्यपि तैमूरने ललित कलाओंके लिये सहृदय हृदय नहीं पाया था, लेकिन दुनियाके दूसरे बादशाहोंके दरबारी ठाटको बहुत पसन्द करता था, इसीलिये अनिच्छापूर्वक भी उसके द्वारा कलाको प्रेरणा मिली। वास्तुकलाके लिये विशेष तौरसे, क्योंकि उसे महलों, मस्जिदों और अच्छी-अच्छी इमारतोंके बनानेका बडा शौक था। समरकन्दमें अब भी उसकी बनवाई कुछ इमारतें मौजूद हैं। उसके समय इस दिशामें जो कार्य आरम्भ हुआ, उसकी पूर्णता उसके लडके शाहरुख और पोते उलुगबेगके समय हुई। तैमूरने १३७१ ई०में तुरकान आकाका रौजा समरकन्दमें बनवाया था जो शाहजिंदाके नामसे अब भी एक सुन्दर इमारत है। बीबी खानमकी मस्जिद (समरकन्द में) १३९९-१४०४ई०में तयार हुई थी, जो आज यद्यपि बहुत टूटी फूटी अवस्थामें पहुंच गई है, किन्तु है एक सुन्दर इमारत। तैमूरकी अपनी समाधि "गोरे-अमीर" जिसे उसके लडके शाहरुखने बनवाया, अब भी समरकन्दकी भव्य इमारत है।

तैमूरके कालकी एक बहुत बडी देन है अरबी लिपिकी नस्तालीक शैली। अरबके आरम्भिक खलीफोंके समय अरबी भाषा कूफी लिपिमें लिखी जाती थी जिसका स्थान जल्दी ही टेढी-मेढी नस्ख लिपिने लिया। आज भी कुरान और अरबीकी पुस्तकें इसी लिपिमें छपी मिलती हैं। लेकिन तैमूर-के दरबारी मीरअली तब्रेजी [जन्म ७८१ हि० (१९ IV १३७९—९ III १३८० ई०)—मृत्यु-८०७ हि० (१० VII १४०४—३१ I १४०५ ई०)] ने नस्ख लिपिके टेढे-मेढे कूबडोंको तोड-कर सीधा कर दिया, और उसमें एक बहुत ही सुन्दर लिपि "नस्तालीक" निकल आई। अरबी-मिश्र

फारसी आदि भाषाओंके लिए नस्तालीक लिपि बहुत पसन्द की गई। भारतमें भी उर्दू इसी लिपि-में लिखी जाती है। छापेके जमानेमें टाइपकी सुविधाके कारण "नस्ख" फिर आगे बढ़ गई—ईरानमें उसीमें पुस्तकें और अखबार छपते हैं। लोगोंको बहुत अफसोस है, कि टाइपोंके बनानेमें सुविधा न होनेके कारण मुद्रण-कलाने नस्तालीकको उपेक्षित कर दिया। लेकिन हमारे यहाँ उर्दूके लिये टाइपोंसे अधिक लिथोका प्रचार है, जिसके कारण उर्दूमें अब भी तैमूरके समयकी देन 'नस्तालीक'का बहुत प्रचार है। नस्तालीकके प्रचारमें सबसे अधिक हाथ हिरातके सुलेखका-का है, जिन्होंने लेखन-कलाका मान इतना ऊँचा कर दिया, जहाँपर उसके बाद फिर वह नहीं पहुँच सका।

राजावलि—तैमूर-वंशमें निम्न सुल्तान हुए —

१	तैमूर-लंग	१३७०-१४०५ ई०
२	खलील सुल्तान, तैमूर-पुत्र	१४०५–६ ,,
३	शाहरुख, तैमूर-पुत्र	१४०६–४७ ,,
४	उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र	१४४७–४९ ,,
५	अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र	१४४९–५१ ,,
६	अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र	१४५१–५२ ,,
७	अबुसईद, मीराशाह-पुत्र	१४५२–६९ ,,
८	अहमद, अबूसईद-पुत्र	१४६९–९३ ,,
९	सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र	१४९३–९४,
१०	बैसुकर, मुहम्मद-पुत्र	१४९४–९७ ,,
११	सुल्तानअली, मुहम्मद-पुत्र	१४९७–१५०० ,,
१२	बाबर, उमरशेख-पुत्र	१५००–१ ,,

२ खलील सुल्तान, तैमूर-पुत्र (१४०५–६ ई०)

खलील सुल्तानमें बहुतसे गुण थे, लेकिन वह सीमासे अधिक सखर्च था, जिसके कारण खजाना खाली होते देर नहीं लगी। उसमें दूसरी कमजोरी यह थी, कि वह भी नूरजहाँ-प्रेमी जहाँगीरकी तरह शादमुल्कका गुलाम था। इन कारणोंसे जल्दी ही उसके बड़े-बड़े समर्थक उदासीन या अलग हो गये। १४०६ ई०में खुदादाद और शेख नूरुद्दीनने स्वामीसे विद्रोह करके समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। उस समय तो किसी तरह उसे बचाकर अगले साल नूरुद्दीनके साथ सुलह कर ली, लेकिन, फिर खुदादादने दूसरे अमीरोंको मिलाकर समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। बातचीत-के बहाने विद्रोहियोंने सुल्तानको बहकाकर उसे कैद कर लिया और नगरपर उनका अधिकार हो गया। यह खबर सुनकर शाहरुखने अपने सेनापति शादमुल्कको खुदादादको दंड देनेके लिये भेजा। खुदादाद समरकन्द छोड़कर भाग गया। शादमुल्क खुले दरवाजों समरकन्दके भीतर घुसा। उसने रानी शादमुल्कके साथ बड़ा ही घृणाजनक दुर्व्यवहार किया, जो शाहरुखके लिये अच्छा नहीं था। शाहरुख अपने तरुण पुत्र उलुगबेगको राज्यपाल बना समरकन्दमें रख हिरात लौट गया। खलील उस समयतक भागकर मुगोलिस्तानमें चला गया था, किंतु शादमुल्कका वियोग वह नहीं सह सका और हिरातमें जाकर उसने अपने भाईको आत्मसमर्पण कर दिया। शाहरुखने उसे सम्मानपूर्वक हिरातका राज्यपाल बना दिया, लेकिन वह उसी साल मर गया।

३ शाहरुख, तैमूर-पुत्र (१४०६–४७ ई०)

तैमूर खानदानका यह सबसे बड़ा और प्रतापी बादशाह था। बहुत दिनोंसे हिरातमें रह जानेके कारण उस नगरके साथ इसका इतना प्रेम हो गया था, कि तैमूरकी गद्दी सँभालनेपर भी उसने अपनी राजधानी समरकन्दमें नहीं बदली। तैमूरी-वंश और मध्य-एसियाकी कला और साहित्यका

हास-परिहास और चुटकुले बिल्कुल पसन्द नही थी, सास करके झूठको तो वह बहुत भारी शत्रु था। झूठकी जगह वह अपनी रायके विरुद्ध सचको ज्यादा पसन्द करता था। मगर जिस बात या लक्ष्यको पकड़ लेता या आज्ञा दे देता, उसे फिर उलटता नही था। अतीतके लिये उसे कभी अफसोस नही हुआ और न अनागतकी आशासे उसने कभी आनन्द मनाया। उसे कवि और विदूषक पसन्द नही थे। उसे प्रिय थे चिकित्सक, ज्योतिषी, धर्मशास्त्री। वह अक्सर अपने सामने शास्त्रार्थ कराया करता। सबसे ज्यादा भक्ति उसकी दरवेशो (साधु-सतो)के ऊपर थी, जिनके आशीर्वादसे वह अपनी विजयोकी सफलता समझता था। लिखना-पढना वह जानता था और जीवन-घटनाओपर उसने अपनी लेखनी चलाई भी है। उसकी स्मृति बहुत तेज थी। वह अरबी नही जानता था, लेकिन तुर्की, मगोल और फारसी भाषाये अच्छी तरह जानता था। वह कट्टर मुसलमान नही था, क्योकि वह छिडगिस्के यासा (तुरा) को कुरानके ऊपर मानता था। उसने अपने कानून (तुजुक)को यासासे लेकर बनाया। बाबर और अकबरने भी अपने पुरखा तेमूरका ही अनुकरण किया। प्रसिद्ध ही है, कि भारतीय मुगल राजकुमारोका खतना नही होता था। तेमूर यात्रियो और दरवेशोसे दूसरे मुल्कोके बारेमे जहा ज्ञान प्राप्त करनेकी कोशिश करता था, वहा इस कामके लिये उसने खुद भी अपने आदमी दूसर देशोमे भेज रखे थे।

तेमूरके उत्तराधिकारी—और बातोमें छिड्गिस्का अनुकरण करते भी तेमूरने अपने राज्य को नही बाटा। उसने अपने जीवनमें ही अपने पौत्र (जहागीर-पुत्र) पीर मुहम्मदको अपना उत्तराधिकारी चुना था। तेमूरकी मृत्युके समय वह कधारमे था। उसके आनेसे पहले ही दूसरे पुत्र खलील सुल्ताननने सेनाके बलपर अपनेको अमीर घोषित कर दिया। तेमूर-पुत्र शाहरुख हिरात (खुरासान)का शासक था, सिंहासनके लिये उसका भी दावा था। उसे खुरासान, सीस्तान और माजन्दरानका राज्य मिल गया, तो भी वह चुप न हुआ। खलील सुल्तानकी राजगद्दीकी घोषणा सुनकर शाहरुख भी अपने एक सेनापतिको हिरातमे छोड वक्षुकी ओर चला। खलील और पीर मुहम्मदने समझौता कर लिया, कि खलीलके बाद पीर मुहम्मद उत्तराधिकारी होगा। दोनोकी सयुक्त शक्तिके सामने शाहरुख उस वक्त कुछ नही कर सका, लेकिन दो साल बाद उसने अन्तर्वेदको खलीलसे छीन लिया, और ८१७ हि० (२३ III १४१४—११ II १४१५ ई०) तक अस्पहान और शीराजतक बढकर तेमूरके प्राय सारे राज्यका शासक बन गया। समरकन्द, बुखारा, हिरात, मेव, सब्जवार, शुस्तर, अस्त्राबाद और शीराज जैसे नगर उसके हाथमें थे।

साहित्य और कला—यद्यपि तेमूरने ललित कलाओके लिये सहृदय हृदय नही पाया था, लेकिन दुनियाके दूसरे बादशाहोके दरबारी ठाटको बहुत पसन्द करता था, इसीलिये अनिच्छापूर्वक भी उसके द्वारा कलाको प्रेरणा मिली। वास्तुकलाके लिये विशेष तौरसे, क्योकि उसे महलो, मस्जिदो और अच्छी-अच्छी इमारतोके बनानेका बडा शौक था। समरकन्दमें अब भी उसकी बनवाई कुछ इमारतें मौजूद है। उसके समय इस दिशामें जो काय आरम्भ हुआ, उसकी पूर्णता उसके लडके शाहरुख और पोते उलुगबेगके समय हुई। तेमूरने १३७१ ई०में तुरकान आकाका रोजा समरकन्दमे बनवाया था, जो शाहजिदाके नामसे अब भी एक सुन्दर इमारत है। बीबी खानमकी मस्जिद (समरकन्द में) १३९९-१४१४ई०मे तैयार हुई थी, जो आज यद्यपि बहुत टूटी-फूटी अवस्थामे पहुच गई है, किन्तु है एक सुन्दर इमारत। तेमूरकी अपनी समाधि "गोरे-अमीर" जिसे उसके लडके शाहरुखने बनवाया, अब भी समरकन्दकी भव्य इमारत है।

तेमूरके कालकी एक बहुत बडी देन है अरबी लिपिकी नस्तालीक शैली। अरबके आरम्भिक खलीफोके समय अरबी भाषा कूफी लिपिमें लिखी जाती थी जिसका स्थान जल्दी ही टेढी-मेढी नस्ख लिपिने लिया। आज भी कुरान और अरबीकी पुस्तकें इसी लिपिमे छपी मिलती है। लेकिन तेमूरके दरबारी मीरअली तब्रेजी [जन्म ७८१ हि० (१९ IV १३७९—९ III १३८० ई०)—मृत्यु-८०७ हि० (१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)] ने नस्ख लिपिके टेढे-मेढे फवडोको तोड-कर सीधा कर दिया, और उससे एक बहुत ही सुन्दर लिपि "नस्तालीक" निकल आई। अरबी-भिन्न

फारसी आदि भाषाओंके लिए नस्तालीक लिपि वहुत पसन्द की गई। भारतमे भी उर्दू इसी लिपि-में लिखी जाती है। छापेके जमानेमें टाइपकी सुविधाके कारण "नस्ख" फिर आगे बढ गई—ईरानमें उसीमें पुस्तके और अखबार छपते है। लोगोको बहुत अफसोस है, कि टाइपोके बनानेमे सुविधा न होनेके कारण मुद्रण-कलाने नस्तालीकको उपेक्षित कर दिया। लेकिन हमारे यहा उर्दूके लिये टाइपोसे अधिक लियोका प्रचार है, जिसके कारण उर्दमे अब भी तेमूरके समयकी देन 'नस्तालीक'का बहुत प्रचार है। नस्तालीकके प्रचारमे सबसे अधिक हाथ हिरातके मुलेखको-का है, जिन्होने लेखन-कलाका मान इतना ऊचा कर दिया, जहापर उसके बाद फिर वह नही पहुच सका।

राजावलि—तेमूर-वशमें निम्न सुल्तान हुए —

१	तेमूर-लग	१३७०-१४०५ ई०
२	खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र	१४०५–६ ,,
३	शाहरुख, तेमूर-पुत्र	१४०६–४७ ,,
४	उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र	१४४७–४९ ,,
५	अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र	१४४९–५१ ,,
६	अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र	१४५१–५२ ,,
७	अबसईद, मीराशाह-पुत्र	१४५२–६९ ,,
८	अहमद, अबूसईद-पुत्र	१४६९–९३ ,,
९	सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र	१४९३–९४ ,,
१०	वैसुकर, मुहम्मद-पुत्र	१४९४–९७ ,,
११	सुल्तानअली, मुहम्मद-पुत्र	१४९७–१५०० ,,
१२	बाबर, उमरशेख-पुत्र	१५००–१ ,,

२ खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र (१४०५–६ ई०)

खलील सुल्तानमे बहुतसे गुण थे, लेकिन वह सीमासे अधिक खर्च था, जिसके कारण खजाना खाली होते देर नही लगी। उसमें दूसरी कमजोरी यह थी, कि वह भी नूरजहा-प्रेमी जहागीरकी तरह शादमुल्कका गुलाम था। इन कारणोंसे जल्दी ही उसके बड़े-बड़े समर्थक उदासीन या अलग हो गये। १४०६ ई०में खुदादाद और शेख नूरुद्दीनने स्वामीसे विद्रोह करके समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। उस समय तो किसी तरह उसे बचाकर अगले साल नूरुद्दीनके साथ सुलह कर ली, लेकिन, फिर खुदादादने दूसरे अमीरोको मिलाकर समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। बातचीत-के बहाने विद्रोहियोने सुल्तानको बहकाकर उसे कैद कर लिया और नगरपर उनका अधिकार हो गया। यह खबर सुनकर शाहरुखने अपने सेनापति शादमुल्कको खुदादादको दड देनेके लिये भेजा। खुदादाद समरकन्द छोडकर भाग गया। शादमुल्क खुले दरवाजो समरकन्दके भीतर घुसा। उसने रानी शादमुल्कके साथ बडा ही घृणाजनक दुर्व्यवहार किया, जो शाहरुखके लिये अच्छा नही था। शाहरुख अपने तरुण पुत्र उलुगबेगको राज्यपाल बना समरकन्दमे रख हिरात लौट गया। खलील उस समयतक भागकर मुगोलिस्तानमे चला गया था, किंतु शादमुल्कका वियोग वह नही सह सका और हिरातमे जाकर उसने अपने भाईको आत्मसमर्पण कर दिया। शाहरुखने उसे सम्मानपूर्वक हिरातका राज्यपाल बना दिया, लेकिन वह उसी साल मर गया।

३ शाहरुख, तेमूर-पुत्र (१४०६–४७ ई०)

तेमूर खानदानका यह सबसे बडा और प्रतापी बादशाह था। बहुत दिनोंसे हिरातमें रह जानेके कारण उस नगरके साथ इसका इतना प्रेम हो गया था, कि तेमूरकी गद्दी सभालनेपर भी उसने अपनी राजधानी समरकन्दमें नही बदली। तेमूरी-वश और मध्य-एसियाकी कला और साहित्यका

चरम उत्कर्ष शाहरुखके समय हुआ। उसने अपने बड़े पुत्र उलुगबेगको समरकन्द (अन्तर्वेद) का शासक बना दिया था, जिसने वहा अपनी सुरुचि और विद्याप्रेमका परिचय दिया।

अब्दुरजाक समरकन्दी शाहरुखका बहुत कृपापात्र इतिहासकार था। इसने "वकाया" लिखना शुरू किया, जिसकी परिपाटी भारतमे भी मुगलवशने जारी की। तत्कालीन इतिहासके लिये सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओके ये दरबारी अभिलेख बहुत ही उपयोगी है। समरकन्दीके ग्रथ "मतलऽसादन" मे प्रतिवर्षकी घटनाओका उल्लेख है। ८१२ हि० (१६ मई १४०९–६ अप्रैल १४१० ई०)की "वकाया" लिखते समय वह कहता है—'उज्बेकमुल्क (किपचक)के स्वामी पुलाद खानका अमीर अदिकू बहादुर और अमीर ईसाके नोकर (अफसर) दूत बनकर आये। उन्होने शिकारी जानवर और दूसरी चीज भेट की। मिर्जा (राजकुमार) मुहम्मद जौकीके लिये लडकीकी खास्तगारी करते हुये शाहरुखने खानके लिये बहुतसी भेटे और दूतोके लिये बहुतसे इनाम दिये।" अगले साल भी राजधानी हिरातमे "वलायत-उज्बेक' और "दश्ते-किपचक"से अमीर अदिकू दरबन्दके रास्ते और अमीर शेख इब्राहीम शरवानके रास्ते दूतमडल लेकर आये।

८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२ ई०—८ मार्च १४१३ ई०)में समरकन्दी लिखता है—ख्वारेज्म को लेकर शाहरुखका किपचकोंके साथ सघर्ष हो गया। ८२२ हि० (२८ जनवरी—१९ दिसम्बर १४१९ ई०) मे किपचक खान बुराकने उलुगबेगके ऊपर आक्रमण किया। तेमूरने जैसे तोकतामिश-को सरक्षण देकर आगे बढाया और अन्तमे वह भस्मासुर बनने लगा, वही बात बुराक खानने अपने भूतपूर्व सहायक और सरक्षक उलुगबेगके साथ की। ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६–२३ सितम्बर १४२७ ई०)मे बुराक ओगलानने अन्तर्वेदपर भीषण आक्रमण किया। समरकन्दमे लोग इतने डर गये, कि उन्होने नगरका दरवाजा बन्द करनेका विचार शुरू किया। उलुगबेगके हारकर भागनेकी खबर सुनकर शाहरुख स्वय एक बडी सेना लेकर समरकन्दकी ओर आया और बुराकको अन्तर्वेद छोडकर भागना पडा।

शाहरुखने थोडे ही समयम तेमूरद्वारा विजित प्राय सारे साम्राज्यको अपने हाथमें कर लिया। उसके बाद जब-तब ख्वारेज्म या सिर-दरियाकी ओर किपचको (उज्बेको)के आक्रमणका मुकाबिला करना पडता था, नही तो वह अपने समयको साहित्य, सगीत और कलाके विकासमे लगाता था। सगीतका वह प्रेमी ही नही था, बल्कि उसने इसके लिये स्वय बहुतसे गीत बनाये थे। ८२०–२३ हि० (१४१७–२० ई०) मे शाहरुखके दरबारमें चीनसे एक दूतमडल आया, जिसके उत्तरमे ८२३ हि० (१७ I–७ XII १४२० ई०)में शाहरुखने अपना दूतमडल चीन भेजा। शाहरुखका बडा लडका उलुगबेग ज्योतिष और गणितका विद्वान् तथा भारी सरक्षक था। इसी तरह उसका छोटा लडका बैसुकर पुस्तको और ललित कलाका बडा प्रेमी था। बैसुकरने इस दूतमडलके साथ नक्काश (चित्रकार) ख्वाजा गियासुद्दीनको कर दिया था, जिसमे कि वह चीनी जीवनके हर पहलूको चित्रित करके लाये, तथा चीनी चित्रकलाको नजदीकमे देखे।

८३९ हि० (२७ जुलाई १४३५–१६ जून १४३६ ई०)म ख्वारेज्मकी ओरसे दूतने खबर दी कि किपचक शासक अबुल्खैर ओगलानने अचानक दश्त (किपचक-मैदान)की ओरसे ख्वारेज्म-पर आक्रमण कर दिया है और वहाका राज्यपाल सुल्तान इब्राहीम शादमुल्क-पुत्र भाग गया है। शहर-को सर करके किपचकोने उसे लूटा बरबाद किया, फिर अपने देश लौट गये। ८४४ हि० (२ जून १४४०–२३ अप्रेल १४४१ ई०)मे अस्त्राबादकी ओरसे खबर आई, कि दश्तकी ओरसे आकर उज्बेक-सेना मुल्कमे लूट-पाट मचा रही है। वहाका शासक अमीर हाजी यूसुफ जलाल कुतलुग कुछ नही कर सका। "वकायानिगार" (घटना-लेखक) समरकन्दीने लिखा है—"कही-कही उज्बेक-सैनिक कजाक होकर (उज्बेक कजाकशुदा) माजन्दरान प्रदेशमें भी घुस आये और वहासे लौट गये।" १४४० ई०मे अभी "कजाक" शब्द एक विशेष जातिका वाचक नही हुआ था, बल्कि उज्बेकोंके लुटेरेपनेको दिखलानेके लिये ही यहा कजाक शब्दका प्रयोग हुआ, लेकिन पीछे उज्बेक (किपचक)

तुर्कोंके एक भागको कजाक कहा जाने लगा, जिनके ही नामपर आज सोवियत संघका दूसरे नंबरके सबसे बड़े गणराज्यका नाम कजाकस्तान है और आज कजाक शब्द लुटेरेका पर्यायवाची नहीं समझा जाता।

अन्तर्वेदपर किपचकों (उज्बेकों)का आक्रमण १४१२ ई०से ही होने लगा था। उसके बादके अट्ठाईस वर्षोंमें उनके साथ बहुतसे संघर्ष हुये। पहले वह मध्य-सिर-उपत्यका और ख्वारेज्मतक लूट-पाट मचाते थे, पीछे अब माजन्दरानतक हाथ बढ़ाने लगे। यद्यपि अभी अन्तर्वेदके उज्बेकोंके हाथों-में जानेमें साठ वर्षकी देरी थी, किंतु उनका आतंक अभीसे छा गया था और १४४० ई०में शाहरुखने हुकुम दिया था—"हर साल दसहजारी अमीरोंमेंसे कुछ वलायत-माजन्दरानमें जा सजग रहते वास करें।" इसके बाद मिर्जा बैसुकर, फिर मिर्जा अलाउद्दीन दोनों राजकुमारोंने भी वहां जाकर डेरा डाला। इसी साल अमीर हाजी युसुफ जलील, उसका भाई अमीर शेख हाजी और दूसरे दसहजारी अमीर अपनी सेना लेकर वहां पहुंचे, किंतु यकायक उज्बेक सेना उनके ऊपर टूट पड़ी और अमीर हाजी युसुफ मारा गया।

८४५ हि० (२२ मई १४४१ ई०–१२ अप्रैल १४४२)में शाहरुखने इतिहासकार अब्दुरजाक के नेतृत्वमें एक दूतमंडल भारत भेजा। तैमूरियोंके कितने उदार विचार थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि शाहरुखने अपने दूतमंडलको दिल्ली या बहमनी रियासतके पास न भेजकर उस समयके दक्षिणके सबसे शक्तिशाली हिंदूराज्य विजयनगरमें भेजा, जिसमें एक सुभीता यह भी था—ईरान शाहरुखके राज्यमें था, जिसका समुद्रके रास्ते भारतके साथ व्यापारिक संबंध विजयनगरके समुद्र-तटद्वारा स्थापित था। यह दूतमंडल हिरातसे चलकर केरमानके रास्ते ओरमुज्द बंदरगाहपर पहुंचा, जहांसे जहाजमें बैठकर भारत आया। अब्दुरजाकने विजयनगरका बहुत ही सुंदर वर्णन "मतलस्सादैन"में किया है।

राज्यपाल होनेके समय भी शाहरुखने हिरातको बहुत ही समृद्ध और अलंकृत किया था, लेकिन जब उसने उसे तैमूरी राज्यकी राजधानी बना दिया, तो हिरात सारे इस्लामिक जगत्का एक बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र बन गया। विद्वानों और कला-विशारदोंका वहां बड़ा सम्मान था। बाबरने अपने ग्रंथमें लिखा है, कि हिरात-जैसा शहर दुनियामें नहीं है। हिरातमें चित्रकलाकी एक खास कलम—सूक्ष्मचित्र—का आरम्भ किया गया, जो कि शायद पहिले समरकन्दसे वहां आई। हिरात नगरके पश्चिमोत्तरमें शाहरुखने १४१८–३७ ई०में अपनी रानी गौहरशादका रौजा मस्जिदके साथ बनवाया। यह वहांकी सबसे सुंदर इमारत है। शाहजहां भी एक समय खुरासान गया था, जिसका ही प्रधान नगर हिरात है। हो सकता है ताजमहल बनानेमें उसे यहांके गौहरशाद-के रौजेसे प्रेरणा मिली हो। इस रौजेका निर्माण कवामुद्दीन शीराजी नामक एक कुशल वास्तुशास्त्री-ने किया था। यही गौहरशाद उलुगबेग और बैसुकरकी मां थी, जिससे शाहरुख बहुत प्रेम करता था। बैसुकरने हिरातमें एक किताबखाना बनवाया था, जिसकी इमारत अत्यन्त सुंदर ही नहीं थी, बल्कि वहांपर पुरानी पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह था, और कितने ही सुलेखक पुस्तकोंकी लिखते रहते थे। हुसेन बैसुकरने १४३० ई०में "शाहनामा"की एक बहुत ही सुंदर प्रति लिखवाई, जो कि आजकल तेहरानके संग्रहालय में है।

४ उलुगबेग, शाहरुख-पुत्र (१४४७–४९ ई०)

उलुगबेगने अपने पिताके उपराजके तौरपर एकतालीस वर्ष (१४०६–४७)तक समरकन्द-में रहते अन्तर्वेदका शासन किया। ज्योतिष और गणितके विकासमें उसने खासतौरसे सहायता की। तारों और ग्रहोंके ठीक-ठीक वेधके लिए उसने एक बहुत बड़ी वेधशाला समरकन्दके पास कोहक नदीके ऊपर बनवाई, जिसका आरम्भ ८३२ हि० (११ अक्तूबर १४२८—१ सितम्बर १४२९ ई०) में हुआ था। इसके दरबारमें तथा वेधशालाके विद्वान् काजी जादरूम गयासुद्दीन, जमशीद मोहीउद्दीन काशानी, इसराईली (यहूदी) मलाहुद्दीन थे। यहींपर प्रसिद्ध सारणी ८१४ हि० (५ जुलाई १४३७–

२६ मई १८३८ ई०)मे तैयार हुई। उलुगवेगकी वेधशालाके ध्वमावशेष नगरके पूर्वी उपान्तमें चोपान-अता पहाडीपर अब भी मौजूद है। उसकी ज्योतिष सारणी—"जीजे-उलुगवेग"—सदियो तक यूरोपमे भी मान्य रही। पूवके देशोम वनी सभी ग्रह-सारणियोमें यह सबसे अधिक पूर्ण और शुद्ध थी। इसमे —(१) समय और युग, (२) समय-माप, (३) ग्रह-कक्षा, (४) नक्षत्र-ताराके स्थान दिये गये है। इसका बहुत ही सुदर पहला सस्करण प्रोफेसर ग्रीपसने १६४२–४८ई०मे आक्सफोड मे छपवाया था। डाक्टर टामस हाइडने १६६५ ई०मे इसका लातिनी अनुवाद प्रकाशित कराया। उलुगवेगकी नक्षत्र (तारा)-सूची इतनी पूर्ण है कि आज भी खुली आखोंसे दिखलाई देनेवाले उतने ही (डेढ हजार) तारोकी सूची बन पाई है समरकन्दको उलुगवेगने मध्य-एसियाकी उज्जयिनी बना दिया था।

उलुगवेगके वनवाये महल, मस्जिद, मदरसे वास्तु-कलाके अत्यन्त सुदर नमूने है। अगर उसके पिताने हिरातको भव्य बनाया, तो उलुगवेगने समरकन्दको भी उससे पीछे नही रहने दिया। उसके महलोको सजानेके लिये चीनके सुदर चित्रकारो और कलाकारोने आकर वर्षों काम किया था। चीनी बरतनोका उसके पास बहुत ही सुदर सग्रह था।

८५० हि० (२९ III १४४६—१७ II १४४७ ई०)में पिताके मरनेपर तेमूरी सिंहासन का अब उलुगवेग उत्तराधिकारी था, इसलिये उसे समरकन्द छोडकर हिरात जाना पडा। उलुग वेग सैनिक योग्यता नही रखता था, न कूटनीतिका पडित ही था, इसीलिये वह दो सालसे अधिक शासन नही कर सका। जल्दी ही उसके प्रतिद्वद्वी अलाउद्दौलाने समरकन्दका किला उससे छीन उलुगवेगके पुत्र अब्दुल्लतीफको बदी बनाया। उलुगवेगने आक्रमण करके सुलहकी सबसे पहली शर्त यह रक्खी, कि अब्दुल्लतीफको भेज दिया जाय। दूसरी शर्ते अलाउद्दौलाने पूरी नही की, जिससे फिर लडाई शुरू हुई। अलाउद्दौला हारकर मशहद (खुरासान)की ओर भागा। इसी समय तुर्कमानोने हिरातको और उज्बेकोने समरकन्दको लूटा। उलुगवेगने वर्षों लगाकर "चीनीखाना" को चीनी कलाकारो द्वारा अलकृत करवाया था और सुदर चीनी बर्तनोका अद्भुत सग्रह करवाया था। उन सबको पल मारते-मारते उज्बेकोने नष्ट कर दिया। जल्दी ही पुत्रवत्सल पिताके विरुद्ध अब्दुल्लतीफने विद्रोह कर दिया और आक्रमण करके उसे बन्दी बना दिया। उसने इतनी ही नृशसता नही दिखलाई, बल्कि चुपकेसे एक ईरानी गुलाम भेजकर बापको मरवा दिया।

उलुगवेग बहुत ही कोमल स्वभावका आदमी था, कला और विज्ञानके पीछे तो वह पागल था। उसकी कोमलहृदयताने तोकतामिशकी कहानियोको जानते हुये भी बोराक ओगलानका सरक्षक बनवाया। उसके विद्या-प्रेमकी प्रतीकके रूपमें बुखारामे उसके हुकुमसे बने एक मदरसेमे बहुत सुदर अक्षरोमे अब भी एक छोटासा अभिलेख मौजूद है। "तलबल्-इल्म फरीजत अला-कुल्ले मुव स्लेमुन्व मुस्लेमात" (विद्या पढना हरएक मुसलमान स्त्री-पुरुषका कर्तव्य है)।

साहित्य—खोजा इस्मत बुखारी उलुगवेगका राजकवि था। उसके अतिरिक्त खियाली, बुरदक, रुस्तम खूरियानी आदि भी दरबारके पारसी कवि थे—अभी तुर्कीको साहित्यकी भाषा नही स्वीकार किया गया था, तो भी उलुगबेगके पिता शाहरुखने तुर्की गीत बनाये थे। उमरशेख-पुत्र सुल्तान इस्कन्दर और खलील मिर्जा दोनो राजकुमार फारसीके कवि थे। शाहरुखके लडके बैसुकरका पुत्र बाबर मिर्जा सुदर प्रतिभाशाली कवि था जो तरुणाईमें ही मर गया। यह भारतके मुगल-सम्राट बाबरसे भिन्न था। तुर्कीके कवि सिद्दी अहमद मिर्जाने "लताफतनामा"के नामसे एक मसनवी (कथाकाव्य) लिखी थी। इसी वशमें आगे पैदा होनेवाला जहीरुद्दीन बाबर तलवारका ही धनी नही, बल्कि सरस्वतीका वर-पुत्र भी था।

५ अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र (१४४९-५१ ई०)

पिताके हत्यारे नृशस अब्दुल्लतीफको निश्चित हो राज्य भोगनेका मौका न मिला। पिता तथा अपने प्यारे सम्बन्धियोकी निमम हत्या सामन्तोके लिये कोई असाधारण बात नही समझी

जाती, इसीलिये संस्कृतमें कहावत मशहूर है—"जनकभक्षा राजपुत्रा" (पिताके भक्षक होते हैं राज-पुत्र)। अब्दुल्लतीफका एक बड़ा प्रतिद्वंद्वी तेमूर-पौत्र मीराशाहपुत्र अबूसईद (सम्राट बाबरका दादा) था। उसे अब्दुल्लतीफने हरा दिया। किंतु अब्दुल्लतीफके महापापको अधिक दिनोंतक बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था। उलुगबेगके एक स्वामिभक्त सेवकने इस आततायीको ८८५ हि० (१८ फवरी १४५०–५ जनवरी १४५१ ई०)मे मार डाला।

६ अब्दुल्ला, शाहरुख-पुत्र (१४५१–५२ ई०)

साल-साल दो-दो सालके लिये गद्दीपर बैठनेवाले तेमूरी शासकोंने अब बतला दिया, कि वंशकी नैया डावाडोल हो रही है। अब्दुल्लाने उन्हीं उज्बेकोंकी सहायतासे समरकन्दको प्राप्त किया, जो कि तेमूरी-वंशका स्थान लेनेवाले थे। "वकायानिगार" समरकन्दीने ८५५ हि० (३ फवरी १४५१–२५ दिसम्बर १४५३ ई०)मे लिखते हुए बतलाया है-"इसी बीच राजसेवकोंने खबर दी, कि उज्बेक बादशाह अबुल्खैर खान (१४२८–६८ ई०)–जो बहुत दिनोंसे अपने दरबारका दोस्त और शुभेच्छु है—आज्ञा पानेपर सेवामें आना चाहता है। सुल्तानकी स्वीकृति पाकर अबुल्खैर जल्दी-जल्दी अब्दुल्लाके ओर्दूमें आया। सुल्तानने उसका बड़ा स्वागत किया। (पीछे) अबुल्खैरने समरकन्द-विजयकी तदबीर अबूसईदको बतलाई। फिर दोनो यस्सी नगरके सीमातसे ताशकन्द और खोजन्द-के इलाकेमें आये। जब अब्दुल्लाको पता लगा, कि अबूसईद उज्बेक खानकी सेनाके साथ आ रहा है, तो वह एक बड़ी सेना ले कोहक नदी पार हो आगे बढ़ा। दोनो सेनाएं आमने-सामने खड़ी हुई और दोनोमें २२ जून १४५१ ई० शनिवार (२२ जमादी II ८५० हि०)को भयंकर लड़ाई हुई जिसमें अब्दुल्ला मारा गया और भारतीय मुगल-वंश-संस्थापक बाबरका पितामह, अबूसईद विजयी हुआ।

७ अबूसईद, मीराशाह-पुत्र (१४५२–६९ ई०)

अबुल्खैरको उसकी सहायताके लिये अबूसईदने बहुतसी भेंट दे कृतज्ञता प्रगट की, और अब्दुल्लतीफकी हत्यामें हाथ रखनेवालोको भी दंड दिया। शाहरुखके मरनेके बादसे ही जो गृह-कलह चल रहा था, उसे दबानेमें अबूसईद सफल हुआ। तेमूरी वंशका यह अन्तिम शक्तिशाली सुल्तान था। जैसा कि पहले बतला चुके हैं, अभी भी छिङ्-गिसुवंशी खान समरकन्दकी गद्दीपर बैठा करते थे। अन्तर्वेद, पूर्वी ईरान और अफगानिस्तान अबूसईदके राज्यमें थे। वह चतुर सैनिक और कुशल शासक था। इसका समकालीन तुर्कीका सुल्तान मुहम्मद II था, जिसने १४५३ ई०मे कान्स्तन्तिनोपल लेकर बलकान (युरोप)में इस्लामी राज्यकी स्थापना की।

रबी I ८६४ हि० (२६ दिसम्बर—२५ जनवरी १४४९—६० ई०)के आरंभमें इसके दरबार में कलमको (मगोलो) और किपचकोंके दूत आये, जिनका अबूसईदने बहुत सम्मान किया। लेकिन उत्तरके घुमन्तुओंकी मित्रता बादलके छाहसे बढ़कर नहीं होती। ८६९ हि०के जमादी II (फवरी १४६५ ई०)के मध्यमें खबर मिली, कि किपचक खान अबुल्खैरके भाई सैयद यक्का सुल्तानको अमीरो (उच्च अफसरो)ने ख्वारेज्ममें पकड़कर हिरात भेज दिया, जहां वह बन्दीखानेमें पड़ा है। अबूसईदने उसे अपने पास बुलाया, और "उस सदाचारी सुभक्त तरुण"को बहुत सम्मानपूर्वक घोड़ा, सोना, कुलाह और इनाम प्रदान कर वलायत उज्बेकमें भेज दिया। लेकिन उज्बेक घुमन्तू इन उपकारो-को देरतक कैसे याद रख सकते थे, जब कि दक्षिणके समृद्ध नगरोंको लूटकर ही वह मौजका जीवन बिताते अपने सैनिकोंमें अनुशासन कायम रख सकते थे। ८७२ हि० (२ अगस्त १४६७—२२ जून ६८ ई०)की घटनाके बारेमें समरकन्दीने लिखा है—"मरदुमे-उज्बेक (उज्बेक लोगो)के प्रहारसे अन्तर्वेदको हरसाल जहमत और बर्बादी उठानी पड़ती रही, लेकिन इस साल वहांसे ऐसी खबर नहीं आई। इसी समय ख्वारेज्ममे दूतने आकर कहा, कि किपचकोंकी भूमिसे देरसे कजाक हुये मिर्जा सुल्तान हुसेनने ख्वारेज्मपर आक्रमण किया। तेमूरी अमीर उसके सामने नहीं टिक सके, और मिर्जाने ख्वारेज्म-को पामाल किया। यह खबर सुनकर अबूसईदने अपने सभी उच्च सेनापतियोंको ख्वारेज्म जानेका

आदेश दिया, लेकिन उधर आजुर्बाईजानमें भी उजुन हसनबेगने खतरा पैदा कर दिया था, इसलि उसी साल अबूसईद सेना लेकर उधर गया और लड़ाईमें बन्दी हुआ। उजुन हसन (१४६७-७८ ई० ने अबूसईदको शाहरुखकी बेगम गौहरशादके पुत्र यादगार मिर्जाके हाथमें दे दिया, जिसने अपन माकी हत्याका बदला लेते अबूसईदको मार डाला। अबूसईदके ग्यारह पुत्रोंमें एक उमरशेख मिज था। इसीका पुत्र बाबर था। जिसने भारतमें मुगल-साम्राज्यकी स्थापना की।

अबूसईदको भी सुन्दर इमारतोंके बनानेका बड़ा शौक था। आज भी उसकी लड़की सुल्तान खाविन्द निकीके रौजेकी सुन्दर इमारत समरकन्दमें "इशरतखाना"के नामसे मौजूद है।

८ अहमद, अबूसईद-पुत्र (१४६९-९३ ई०)

अहमद एक मामूली बुद्धिका आदमी था, ऊपरसे वह कभी शराबमें मतवाला रहता और कभी भक्ति और खुदाके इश्कमें गर्क। इसके समयमें दरबारी अमीर अक्सर विद्रोह करते रहे। खुरासान बिलकुल स्वतन्त्र हो गया, जिसपर तेमूर-वंशी सुल्तान हुसेन (१४६९-१५०६ ई०) हिरातमें शासन करता रहा। अहमदने अपने भाई उमरशेखको फरगाना देकर उसे दूसरोंके हाथों में जानेसे बचा लिया। उमरशेखके फरगानामें शासन करते समय ही उसका पुत्र बाबर पैदा हुआ। अहमदके सत्ताईस सालके शासनमें समरकन्दको फिर तरक्की करनेका मौका मिला।

कवि नवाई—हिरातने स्वतन्त्र होकर अपने गौरवको फिर लौटा लिया। हुसेन मिर्जा (१४६९-१५०६ ई०)के शासनकालमें हिरातने साहित्य और कलामें चरम उन्नति की, जिसका बहुत कुछ श्रेय तुर्की साहित्यके कालिदास अली शेर नवाईको है। नवाई १४४१ ई०में हिरातमें पैदा हुआ था। उसके बचपन और जीवनका भी अधिकतर भाग हिरातमें बीता। वह शिक्षा प्राप्त करनेके लिये समरकन्द भेजा गया। वहाँका सबसे बड़ा धनी दरवेश मुहम्मद तरखन उसका संरक्षक था। सुल्तान अहमद मिर्जाके समय नवाई बुखारा और समरकन्दका सबसे बड़ा जमींदार था। हिरातमें रहते बचपनमें हुसेन मिर्जा नवाईका सहपाठी था। जब हुसेन मिर्जा हिरातकी गद्दीपर बैठा, तो उसने समरकन्द से सुल्तान अहमद मिर्जाको नवाईको भेजनेके लिये लिखा। समरकन्दमें रहते वक्त नवाईको जिन लोगोंके सम्पर्कमें अधिक आना पड़ा था, उनमें सूफी संत खोजा उबैदुल्ला अहरार मुख्य था। संत-महन्त होनेके साथ खोजा अहरारकी जमींदारीका ठिकाना नहीं था। कहावत है—कोई आदमी अपने गदहेपर चढ़ा अन्तर्वेदमें उत्तरसे दक्षिणकी यात्रा कर रहा था। सैकड़ों मील चलता गया, लेकिन जब भी किसी लहलहाते खेतके बारेमें पूछता, तो लोग कहते—'यह खोजा अहरारका है।' इसपर मुसाफिरने अपने गदहेको भी खेतकी तरफ हाँकते हुए कह दिया—"जा तू भी खोजा अहरारका हो जा।" खोजा अहरारकी महिमा सबसे अधिक इसलिये फैली कि वह अपनी अपार सम्पत्तिका उपयोग परोपकारमें करता था। नवाई भी बहुत भारी जमींदार था, अहरारकी प्रेरणासे उसने भी अपनी सम्पत्तिको वैसे ही कामोंमें खर्च करनेका निश्चय किया।

सुल्तान हुसेन सूक्ष्मचित्र, सुलेखनकला, वास्तुकला और संगीतका बड़ा प्रेमी था। अली शेर नवाई तो विद्वानों और कलाकारोंका अपने सुल्तानसे भी बड़ा संरक्षक था। हिरातमें एसियाके ही भिन्न-भिन्न देशों के व्यापारी नहीं आते थे, बल्कि १४९४ ई० में एक फ्रांसीसी कारवाँ भी आया था। भारत, चीन आदि के व्यापारी तो सदा ही आते रहते, इसलिये यहाँपर विद्वानों और कलाकारोंके लिये विचार-विनिमयका अच्छा अवसर मिलता था।

१४६९ ई०में समरकन्दसे लौटनेके बाद १४८७ ई०तक नवाई सुल्तान हुसेनके दरबारका एक बहुत ही शक्तिशाली अमात्य था। दरबार छोड़नेके बाद उसने अपने बड़े-बड़े निर्माण-कार्य आरम्भ करके पूरे किये। उसकी बनवाई सबसे बड़ी इमारत "इखलास" (स्नेह) बीस साल-में तैयार हुई, जो हिरात नगरके बाहर यजील नहरके किनारे अवस्थित थी। कितने ही हजार आदमी इसके बनानेके लिये रोज काम करते थे। कितनी ही बार नवाई स्वयं मजदूरोंकी तरह काम करता। "इखलास"के भीतर सुन्दर मदरसा, खानकाह तथा मस्जिद बनी हुई थी। खानकाहसे पश्चिम

"खानकाह-शफाइया" (सार्वजनिक अस्पताल) था, जहापर अपने समयके प्रसिद्ध चिकित्सक हकीम गयासुद्दीन मुहम्मद चिकित्सा करते थे। यहाकी बहुतसी इमारतोमे "मदरसा निजामिया" भी था, जिसमें अच्छे-अच्छे अध्यापक नियुक्त थे। नवाईने और जगहोपर भी खानकाहे और मदरसे बनवाये, जिनमें "मदरसा-खुसरविया" मेर्वके अब्दुल्लाखान-किलेमें अवस्थित था। खुरासान और ईरानके दूसरे स्थानोमें मुसाफिरोंके आरामके लिये नवाईने पचास रबाते (धर्मशालाए) बनवाई थी। उसके आश्रित इतिहासकार ख्वोन्दमीरके अनुसार नवाईने हम्माम (स्नानागार) और चौदह मस्जिदें इस्तिखर सेरख्स और अस्त्राबादमें बनवाई थी।

नवाईको जहा अपने परोपकारी कामोंके लिये ख्वोजा अहरारसे प्रेरणा मिली थी, वहा उसकी काव्यप्रतिभाको निजामी (११६१—१२०३ ई०) और जामी (१४१४—९२ ई०)की कविताओंसे भारी प्रेरणा मिली थी। जामी नवाईका समकालीन था, और हिरातके पास हीमे रहता था। फारसी भाषाका वह अन्तिम महाकवि था। यद्यपि नवाईने "फानी" (नाशमान)के नामसे फारसीमे भी कविताए की है, लेकिन वह अमर है अपनी तुर्की कविताओंके कारण। आजकल मध्य-एसियाकी सबसे प्रगतिप्राप्त उज्बेक जातिका वह परम श्रद्धाभाजन कवि है। उज्बेक राजधानी ताशकन्द में नवाई नाट्यशालाके नामसे एक बडी ही विशाल और सुन्दर रगशाला स्थापित की गई है। नवाई-की जीवनीको लेकर उज्बेक-लेखक ऐबकने एक उपन्यास "नवाई" लिखा है, जिसपर उसे स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। नवाईने सत्तरसे अधिक पुस्तकें लिखी है, जिनमें उसका "खमसा" (पचक) सबसे अधिक प्रसिद्ध है। जिन विषयोको लेकर नवाईने अपने पाच काव्य लिखे, उन्हीपर पहले निजामीने और उसके बाद खुसरो देहलवी (१२५३—१३२५ ई०)ने भी सुन्दर काव्य लिखे है—

	निजामी (११६१-१२०३)	खुसरो (१२५३-१३२५)	नवाई (१४४१-१५०१)
१	मख्जनुल्-असरार	मत्लउल्-अनवार	खैरतुल्-अबरार
२	खुसरो-व-शीरी	शीरी-खुसरो	फरहाद शीरी
३	सिकदरनामा	आईने-सिकन्दरी	सद्दे-सिकन्दरी
४	लैला-व-मजनू	मजनू-लैला	लैला-मजनू
५	हफ्त-पैकर	हश्त-बहिश्त	हफ्त-किश्वर

नवाईसे पहले तुर्की भाषाने साहित्यमें ऊचा स्थान नही प्राप्त किया था। यद्यपि नवाईने अपनी कृतियोको हिरातमें बैठकर लिखा था, लेकिन हिरातमे तुर्कोंकी काफी सख्या रहते भी, वह खुरासानी ईरानी भाषाका प्रदेश था। पूर्वी तुर्की भाषा (चगताई तुर्की)में भी स्थानोके अनुसार भेद हो गया था, और सबसे शिष्ट अन्दिजान (फरगाना)की तुर्की समझी जाती थी। बाबर स्वय वही पैदा हुआ था। उसने बाबरनामामें नवाईकी भाषाके बारेमें लिखा है*—

"अन्दिजान ऐले नयग लफ्ज कलम बेरल, रास्ते तोर हानी हो जू केम नीर अली शेर नवाई नयग मुसन्निफाते बावजूद हरेदा नशो-नुमा तापैब तोर बोतेल बेल दो।"

(अन्दिजानके लोगोकी भाषा मीर अली शेर नवाईके ग्रन्थोकी भाषासे मिलती है, जिसे कि उसने हिरातमें लिखा था।)

अन्दिजान काशगरसे दूर नही है। तुर्की साहित्यकी सबसे पहिली पुस्तक "कुतदगु-बिलिक" काशगरमें नवाईसे तीन शताब्दी पहिले लिखी गई थी। "कुतदगु-बिलिक"की भाषा प्राचीन उइगुर भाषासे बहुत घनिष्ठ सबध रखती है। हम कह आये है, कि उइगुर और तुर्क पहले एक ही जातिका नाम था। प्राचीन उइगुर भाषाके नमूने कितने ही बौद्ध सूत्रोंके अनुवादके रूपमें अब भी प्राप्त है। छिङ्गिस् और उसके बेटो-पोतोंके राज्यमें किपचक, ईरान और अन्तर्वेदके सभी जगहके दरबारो और आफिसोमें उइगुर लेखक हुआ करते थे, जिनमें अधिकाश भिक्षु थे, जिसके कारण

* "बाबरनामा" पृष्ठ २ ख (लन्दन १९०६ ई०)

लेखकका वकसी (भिक्षुका उइगुर अपभ्रंश कहा जाने लगा। इसी प्राचीन उइगुर भाषा और लिपि-का प्रचार सारे चगताई राज्यमें हुआ और पीछे इसे चगताई भाषा कहा जाने लगा। जब अन्तर्वेदमें उज्वेकोका शासन स्थापित हुआ, तो वहाके सभी तुर्क उज्वेक कहे जाने लगे, तवसे इस भाषाका नाम उज्वेकी पड गया। आजकल वह इसी नामसे प्रचलित तथा उज्वकिस्तान गणराज्यकी राज्यभाषा है। मगोल चगताई तुर्कोमें विलीन हो गये, इसीलिये पीछे कहा जाने लगा—"तुर्क कौम लारी जूजी दरदार पुग व जगताई" (जन्कि चगताई तुर्क कौमके थे)।

नवाईका काम सुदर इमारतो और उपकारी सस्थाओके निर्माण तथा काव्योतक ही सीमित नही था, वह विद्वानो और कलाकारोके लिये कल्पवृक्ष था। एसियाका एक अद्वितीय चित्रकार कमालुद्दीन वेहजाद (मृत्यु १५२१ ई०) नवाईके ही सरक्षणमें आगे वढा, जिसे कि "नजाकत कलम वेनजीर" (तूलिकाकी कोमलतामे अनुपम), "सूरतेहालका मुसव्विर" (यथारूप चित्रण कर्ता) और "द्वितीय मानी" कहा जाता है। मानी ईरानका पैगम्वर (२१६–२७६ ई०) चित्रकला मे भी अद्वितीय समझा जाता था। मानीकी चित्रकलाके नमूने अव प्राप्त नही है। ईसाकी तीसरी सदीके वाद चित्रकलाके एकसे एक दुश्मन दुनियामें आये, जिनके हाथसे मानीके चित्रोका वच निकलना सभव नही था। लेकिन वेहजादके वनाये हुये चित्र अव भी दुनियाके सग्रहालयामें मिलते है।

सुल्तान अली मशहदी, मीर अली मजनू, मुहम्मद शिकावी जैसे सव समयके लिये अनुपम सुलेखक नवाईके दरवारमें थे। सुल्तान अलीने नवाईके "खम्से"की एक प्रति १४९२–९ ई०में लिखी थी, जो कि आजकल लेनिनग्रादके राजकीय लोक-पुस्तकालय (प्राच्य ५६०)में मौजूद है, जिसमें लेखक ने लिखा है–"खम्सा मीर अली शेर नवाई व-खते किव्लउल्कुत्ताव मौलाना सुल्तान अली मशहदी" (मीरअली शेर नवाईका पचक, लेखकशिरोमणि मौलाना सुल्तान अली मशहदीके अक्षरोमें) सुल्तान अलीको वुढापेमे भी अपनी लेखनीपर कितना अभिमान था, यह उसकी प्रतिलिपि की हुई एक पुस्तक के अन्तमें मौजूद निम्न पद्यसे मालूम होगा—

मरा उम्र शस्त व-से शुद वेशकम्।
हनोजम् जवानस्त मुश्को कल्म्॥
तवानम् हनोज अज खफी-वो-जली।
नविश्तन् कि अल्-अव्द सुल्तान् अली॥

(मेरी उम्र कम-वेशी तिरसठ हो गई, किन्तु अभी भी मेरी काली कलम जवान है। अव भी मै सूक्ष्म और स्थूल हस्ताक्षर सुल्तान अलीके साथ लिख सकता हू।)

नवाईका देहान्त २ जनवरी १५०१ ई०को हुआ।

९ सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र (१४९३–९४ ई०)

भाईके मरनेके वाद पाच तरुण भतीजोको मारकर मुहम्मद समरकन्दकी गद्दीपर वैठा। यह वडा क्रूर, पियक्कड और व्यभिचारी था, जिसके कारण उसके अमीर विरुद्ध हो गये और थोडे ही समय वाद इसकी शायद अकाल-मृत्यु हो गई।

१० वैसुकर, मुहम्मद-पुत्र (१४९४–९७ ई०)

वापके मरनेपर मसऊद, सुल्तान अली और वैसुकरमे तख्तके लिये झगडा हुआ, और अन्तमें अठारह सालकी उम्रमें वैसुकर सुल्तान वना। अहमदके समयसे ही उत्तरके उज्वेक और देशके भीतर अमीर वहुत शक्तिशाली होने लगे। वैसुकरकी तरुणाईसे उनको और भी आगे वढनेका मौका मिला, जिसमें आपत्ति करनेपर अमीरोने करशीसे उसके भाई सुल्तान अलीको वुलाया। वैसुकर भाग गया, किंतु पीछे फिर अमीरोने उसे ही वुलाकर गद्दीपर रहने दिया। सुल्तान अली वुखाराकी ओर भागा और फिर युद्धकी तैयारी करनेके वाद वुखारासे समरकन्द आया। दूसरा भाई मसऊद भी उसमें

सहायतार्थ दक्षिणसे आया। उमरशेख-पुत्र बाबर मिर्जा इस समय खोकन्द (फरगाना)का स्वतन्त्र शासक था। उसकी भी नजर समरकन्दपर थी। चारों ओरसे निराश होकर बैसुकर अपने भाई मसऊदकी शरणमें [९०३ हि० (३० VIII १४९७—२१ VII १४९८ ई०)] भागा, जिसके पास ही रहते ९०५ हि० (८ VIII १४९९—२८ VI १५०० ई०)मे वह गुमनाम मरा।

११ सुल्तान अली, मुहम्मद-पुत्र (१४९७–१५०० ई०)

तैमूरी राज्यको बाबर और सुल्तान अलीने आपसमे बाट लिया। दोनो ही कम उमरके थे, इसलिये शासनकी बागडोर अमीरोके हाथमें थी। सुल्तान अली तीन साल ही राज्य कर पाया, कि एक सौ चालीस वर्ष पुराने तैमूरी वंशके दीपकको उज्बेकोंके खान शैबानीने बुझा दिया। बाबरने वंशकी नैयाको डूबनेसे बचानेकी कोशिश की, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

१२ जहीरुद्दीन बाबर, उमरशेख-पुत्र (१५००–१ ई०)

हम कह चुके है कि अहमदके समरकन्दकी गद्दी सभालनेके समय उसका भाई उमरशेख फरगानाका शासक रहा। बाबर वहीपर १४८१ ई०मे पैदा हुआ और बापके बाद फरगानाका शासक बना। शैबानीके समरकन्दपर पैर जमानेसे पहले बाबरने भी समरकन्दकी ओर हाथ फैलाया था, लेकिन उज्बेक सेनाने उसे हरा दिया। समरकन्द लेकर मुहम्मद शैबानी निश्चित नही रह सका। एक बार बाबरने समरकन्द, मियानकुल और करशीसे उसे भगा दिया, लेकिन बुखारासे उज्बेकतक भी चिपटे रहे। अगले साल ९०७ हि० (१७ VII १५०१—७ VI १५०२ ई०)में शैबानीने बडे जोरका आक्रमण किया, और बाबरके पैर उखड गये। समरकन्दसे भगाये जानेपर वक्षुपार हो बाबरने कुदुज ले लिया। ईरानी शाह इस्माईलकी मदद लेकर और किस तरह बाबरने बारह सालतक तैमूरकी भूमि लेनेका प्रयत्न किया, इसे हम आगे बतलायेंगे। कुदुजसे ही बीस हजार सेना जमा करके बाबरने ९०९ हि० (२६ VI १५०३—१६ V १५०४ ई०) मे काबुलको दखल कर लिया और वहासे भारतपर आक्रमण करके १५२६ ई०मे लोदियोंसे दिल्लीका तख्त छीनकर मुगल-वंशका सस्थापक बन गया। जो बाबर मुट्ठीभर उज्बेक घुमन्तुओंके सामने सारे प्रयत्न करनेके बाद भी टिक नही सका, वही बाबर हिंदुस्तानको जीतनेमे सफल हुआ, यह यही बतलाता है कि उस समयकी परिस्थितिमें सैनिक तौरसे घुमन्तू जितने मजबूत थे, उतने स्थिर बस्तीवाले नही। साथ ही हिंदुस्तानकी लडाईने कभी लोकयुद्धका रूप नही लिया, लडनेवाले मुट्ठीभर सामन्त और उनके अनुचर थे, अधिकाश जनता शासकोंके अत्याचार और स्वेच्छाचारसे तग होकर इतनी निराश थी कि वह यही कहती थी—"कोउ नृप होय हमहि का हानी।"

साहित्य और संस्कृति—अब भी तैमूरवंशी छिङगिस्के "यासा" (विधान) और तैमूरके "तुजुक" (व्यवस्था)को मानते थे, और मुसलमान होते हुये भी धर्माध नही थे। तैमूरवंशके रूपमें मध्य-एसियामें तुर्कजाति गौरवके शिखरपर पहुची। इस समय बडे-बडे विद्वान् और कलाकार पैदा हुए। तैमूर स्वय कलम चलाना जानता था। उसका पुत्र शाहरुख सुन्दर गीतोका लेखक था। उलुगबेग गणित और ज्योतिषका विद्वान तथा सरक्षक था। उसका छोटा भाई बैसुकर पुस्तको और चित्रकलाका प्रेमी था। बाबर कवि-लेखक, शासक-योद्धा था। इस कालमें बुखारा, समरकन्द और मेवमें बडे-बडे धर्मशास्त्री (फकीह), दार्शनिक और कवि हुये, जिनमें फारसीका कवि जामी (१४१४–१४९२ ई०) और तुर्की साहित्यका सर्वश्रेष्ठ कवि नवाई (१४४१–१५०१ ई०) भी थे। तुर्की भाषाका मान सबसे अधिक इसी समय हुआ। अरब खलीफोंके समय अरबी भाषा सरकारी भाषा थी। ताहिरियोंने अरबीकी जगह फारसीको दी, तबसे फारसी ही राजकाज और साहित्यकी भाषा समझी जाने लगी। तैमूरियोंने यद्यपि फारसीको स्थानच्युत नही किया, लेकिन तुर्कीका सम्मान जरूर बढ़ाया, जिसमें नवाई और बाबरका हाथ बहुत अधिक था। बाबरकी देखादेखी जहागीरने भी तुर्कीमें "तुजुक जहागीरी" लिखी, लेकिन शायद वह आखिरी मुगल था, जो कि भारतमें अच्छी तुर्की बोल-लिख सकता था। तुर्की वैसे सभी मध्य-एसियाके तुर्कोंकी भाषा थी,

लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा, अन्दिजान और काश्गरमे बोली जानेवाली तुर्कीको ही साहित्य की भाषा माना गया। तुर्की भाषाके सबधमें यह कहा जा सकता है कि जितना ही पूरब जायें, उतना ही वह अधिक शिष्ट रूपमे मिलती है। यहा तुर्की भाषासे हमारा मतलब पूर्वी तुर्कीसे है, जिसे पहले चगताई और आजकल उज्बेकी कहा जाता है। यारकन्द काश्गरकी भाषाका भी इसी भाषासे सबध है। पश्चिमी तुर्कीमे तुर्कमानी, आजुरबाईजानी और उसमान अली (तुर्की राज्यकी) भाषाए सम्मिलित है, जो आपसमे भेद रखते हुये भी एक दूसरेसे बहुत समानता रखती है।

तेमूरी-वशवृक्ष—
(१३७०–१५०० ई०)

अध्याय ४
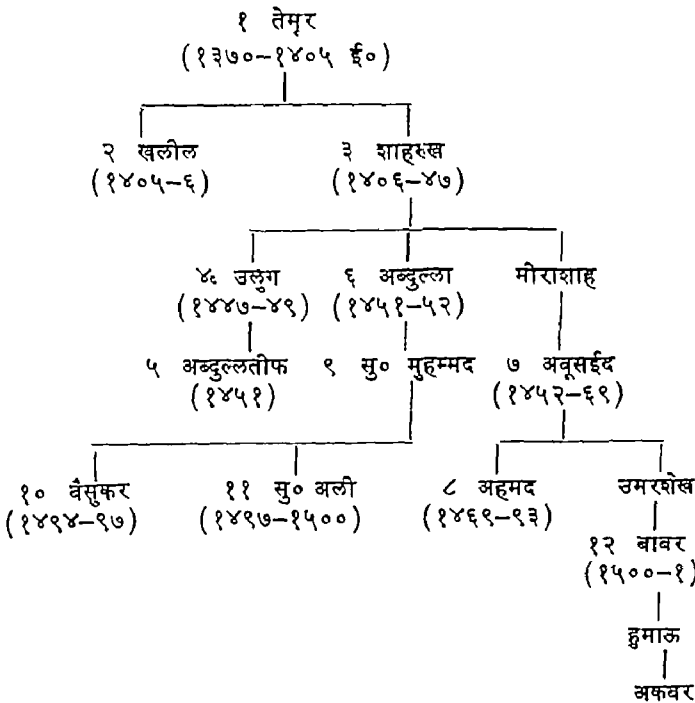
शैबानी-वंश

अबुल्खैर—तोकतामिशके सुवर्ण-ओर्दूके गौरवको पुन जागृत करनेका प्रयत्न विफल होनेपर तूरान-अधित्यका (किरगिज-स्तेपी)का स्वामी बुराक खान हुआ, जिसने तैमूरियोको बहुत तग किया। उसके बाद अबुल्खैर [जन्म १४१३ ई० (८१६ हि०)] का प्रताप बढा। इसका पौत्र तथा अन्तर्वेद-विजेता शैबानीके नामसे मशहूर है। वह जू-छिके पुत्र शैबानके वशका था।

शैबानी-वश यद्यपि छिङ्गिस्-पुत्र जू-छिके पाचवें लडके शैबानके नामसे प्रख्यात हुआ, लेकिन वह मुहम्मद शैबानीके अन्तर्वेद जीतनेसे पहले किपचक या उज्वेक नामसे प्रसिद्ध था। उज्वेक खान (१३१३-४० ई०) सुवर्ण-ओर्दूका एक शक्तिशाली शासक तथा इस्लामका धार्मिक धर्मराजा था, इसीलिये जू-छिका उलुस, विशेषकर बा-तू-वशकी प्रजा पीछे उज्वेकके नामसे प्रसिद्ध हुई है, यह हम बतला चुके है। जू-छि-उलुस आरम्भ हीमें बा-तू और ओर्दाके उलुसोमे विभक्त हो गया था, जिसमें बा-तूका उलुस सुवर्ण-ओर्दू और ओर्दाका श्वेत-ओर्दूके नामसे पुकारा जाता था। उज्वेक सुवर्ण-ओर्दूका खान था, इसलिये सुवर्ण-ओर्दवालोका ही नाम उज्वेक पडना चाहिए, लेकिन पीछे इसका उतना ध्यान नही रखा जाता रहा, और सारे जू-छि-उलुस या किपचक-जातिको उज्वेक कहा जाने लगा। हम यह भी देख चुके है, कि इन्ही उज्वेको या किपचकोको लूट-मार करनेके कारण अन्तर्वेदी कजाक कहने लगे, जिससे आगे किपचकोकी एक शाखा कजाक नामसे प्रसिद्ध हुई। जू-छिकी सातवी पीढीमें अबुल्खैर किपचकोका जबदस्त खान हुआ, जिसने अन्तर्वेदकी राजनीतिमें दखल दिया। बाबरके दादा अबूसईदको तख्तपर बैठानेमें उसका मुख्य हाथ था। उज्वेक-राज्यका सस्थापक वस्तुत यही अबुल्खैर था। अभी बीस सालका भी नही हुआ था, कि उसने तैमूर-पुत्र शाहरुखके कुछ इलाकोको छीन लिया। उज्वेक गद्दीका मालिक बननेसे पहले उसे सुवर्ण-ओर्दूके मुखिया मुस्तफा खानको हराना पडा, जिसमें मिली भारी लूटकी सम्पत्तिको अपने अमीरो और सैनिकोमें बाटकर वह सर्वप्रिय हो गया। निम्न-सिर-दरियाके तटपर अवस्थित सिगनक किपचकोके हाथसे निकल गया था। अबुल्खैरने उसके ऊपर आक्रमण किया और शाहरुखके स्थानीय राज्यपालको आत्मसमर्पण करना पडा। फिर अबुल्खैर आगे बढकर अककुरगान, अरक, सूजक और उजकन्द ले सूजकपर बख्तियार सुल्तान, सिगनकपर मनाहदान ओगलान और उजकन्दपर बखसमबी मगुतको शासक नियुक्त किया। उसने जाडा सिर-उपत्यकामें बिताते १४४८ ई०के वसतमें इलाककी ओर बढनेकी तैयारी की। इसी समय पता लगा, कि शाहरुख मर गया, और उलुगबेग गद्दी सभालने खुरासानकी ओर गया है। समरकन्दको अरक्षित-सा देख अबुल्खैरने उधर कूच कर दिया। समरकन्दके राज्यपाल जलालुद्दीन बायजीदने बहुत-सी भेंट देकर अबुल्खैरके पास कहलवाया—"उलुगबेग सदा खानके साथ अच्छा सबध रखता था, इसलिये यही अच्छा है, कि खान हमारी भेंट स्वीकार करके लौट जाय।" अबुल्खैर बिना समरकन्दको लूटे ऐसा करके अपने अमीरो और सैनिको को सन्तुष्ट नही रख सकता था। समरकन्दपर अधिकार कर विशेष तौरसे "चीनी-खाना"की चित्रशालाकी दीवारोपर सुन्दर-सुन्दर पच्चीकारी किये चित्रोको उज्वेकोने अपनी गदासे मारकर तोड दिया। सोनेके कामको उन्होने सोनेके लोभसे कुरेदकर निकाल लिया। इस प्रकार "कई वर्षोके परिश्रमके बाद बने हुये कलाके कामोको कुछ घटोमें उन्होने नष्ट कर दिया।"

शाहरुखके उत्तराधिकारियोमे उसका पौत्र अब्दुल्ला मिर्जाने आपसी झगडोमें हारकर तुर्किस्तानकी ओर भाग यस्सी (तुर्किस्तान शहर)के किलेपर अधिकार कर लिया। अबुल्खैर

भारी सेना लिये अबूसईदको गद्दी दिलानेके वास्ते समरकन्द आया । गर्मियोकी गर्मीम उसे भागनेके लिये मजबूर होना पड रहा था । इसी समय उसने येदेची (मन्त्रद्वारा वर्षा करानेवाले)को वर्षा बरसानेके लिये कहा । कहते ह, वर्षा हुई, और अबुल्खैरकी सेना जीजक के रेगिस्तानके रास्ते आसानीसे पार हो गई। अब्दुल्ला उस समय तुर्किस्तान, अन्तर्वेद, बदख्शा आर काबुलका स्वामी था । बुलालगरके तटपर कनवानके मैदानमे अवस्थित शीराजमें अबूसईद-समर्थक अबुल्खैरकी उज्बेक-सेना और अब्दुल्लासे १४५२ ई० (८५५ हि०)में लड़ाई हुई । अब्दुल्लाने राज्य और प्राण दोनो गवाये । अबुल्खैरने पकडे हुये बंदियोको छोड दिया और अपने सैनिकोको लूटनेसे मना किया । समरकन्दमे उसने स्वय बागे-मैदानम डेरा डाला, और उसके अमीर कगुलमे ठहरे। एक बडा दरबार रचाकर अबुल्खैरने अबूसईदको गद्दीपर बैठाया । फिर वह अपनी इस्लाम-भक्ति और शास्त्रोंके ज्ञानका परिचय देता अन्तर्वेदके शेखुल्इस्लाम (इस्लामिक-धर्मराज)मे कितने ही समयतक सत्सग करता रहा । अबूसईदने रोज उसके पास भेंट और सौगात भेजी, तथा उलुगबेगकी पुत्री राबिया सुल्तान बेगमको अबुल् खैरको प्रदान किया । शाति स्थापित करके अबुल्खैर दश्तेकिपचककी ओर लौट ही रहा था, कि जुगारियाके कलमक राजा उजतेमूर थैशीकी जीभमें पानी भर आया, और उसने अन्तर्वेदकी ओर बढना चाहा । इसपर अबुल्खैर और कलमकोकी सेनाए नूरतुकाईके इलाकेमे चिर नदीके पास कोक-काशानामे एक दूसरेसे भिडी । कलमकोने उज्बेकोको करारी हार दी । उज्बेक और कलमक दोनो ही घुमन्तू लडाकू जातिया थी, जिनमे उज्बेक जहा तुर्क मुसलमान थे, वहा कलमक मगोल बौद्ध । १५वी सदीके मध्यमें जो बौद्ध मगोलोने किपचक भूमि और अन्तर्वेदकी ओर पैर बढाना शुरू किया, तो अगली तीन शताब्दियोतक वह रुके नही, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, एक समय उनकी सफलताओको देखकर सम्भावना होने लगी थी, कि अपने पूर्वज छिङ्-गिस्की तरह शायद वह भी सारे पूर्वी-पश्चिमी तुर्किस्तान, किपचक-मगोलियाके मालिक बने । कोक-काशानामे हारकर अबुल्खैर सिगनककी ओर भागा । कलमकोने ताशकन्दके प्रदेश तथा तुर्किस्तान और शाहरुखिया आदि नगरोको लूटा, फिर वह सैराम होते चू-उपत्यकाके रास्ते लौट गये । शायद यह तेमूर थैशी ओइरोद मगोलोंके दक्षिणपक्ष (मेगोन-गार)का चिङ्-साङ् (उपराज) तथा एसेन खानका उत्तराधिकारी था । कलमक परम्परामें अबुल्खैरको बोल्गारी खान कहा गया है । अपने इसी अभियानमे खोशोत मगोलोने सबसे पहले नाम पैदा किया । खोशोत कबीलेके प्रमुख अखसू गलदनके दो पुत्र अराक तेमूर और बर्राक तेमूर सयुक्त शासक थे ।

इस युद्धके बाद अबुल्खैरका ध्यान अब दश्तेकिपचककी ओर ज्यादा हुआ, जिसके कारण यह भूमि अधिक समृद्ध हुई । १४५५ ई०मे एक बार फिर अबुल्खैरने तेमूरी लतीफ-पुत्र मोहम्मद मिर्जा को गद्दीपर बिठानेके लिये अपनी सेना भेजी, मगर अबूसईदसे हारकर उसे खाली हाथ लौटना पडा । अबुल्खैरके धन और प्रतापको बढते देख उसके सबधियोने ईर्ष्या करके विद्रोह कर दिया, जिसम ८७८ हि० (१४८९ ई०)मे अबुल्खैर मारा गया । अबुल्खैरका राज्य किरगिज स्तेपीके पश्चिमी भागपर था । १४६५ ई० (८७० हि०)के आसपास कुछ उज्बेक अबुल्खैरसे असन्तुष्ट हो जू-छि-वशकी एक दूसरी शाखाके सुल्तान गिराई और जानीबेगके साथ मुगोलिस्तानमे भाग गये, जिनको वहाके खान इसानबुगाने स्वागत कर चू-नदीके पास अपने राज्यके पश्चिमी भाग-म स्थान दिया । इन्हीको पीछे उज्बेक-कजाक आर अन्तमे कजाक कहा जाने लगा । कजाक सुल्ताना-का राज्य इस प्रकार १४६५ ई०मे शुरू हुआ, और १५३३ ई० (९४० हि०) तक वह पुरानी उज्बेक-भूमिके अधिकाश भागके शासक हो गये । १४६९ ई० (८७४ हि०)म अबुल्खैरके मरनेपर कितने ही उज्बेक फिर मुगोलिस्तानमे अपनी भूमिमे लौट आये । अबुल्खैरने ख्वारेज्म आर निम्न तथा मध्य-सिर-उपत्यकापर अधिकार कर लिया था । अबुल्खैरके पुत्र थे—बुदगू या शाह बूदग, खोजा मुहम्मद, अबुल्मसूर मुहम्मद, हैदर, सजर, इब्राहीम, कूचुनजी, सुइउनिच, अक्यूत और सयद बाबा । पिताके मरनेपर पुत्रोमें झगडा उठ खडा हुआ । ख्वारेज्म-शासक यादगारकी सतानोंमें खान-

कर जबदस्त संघर्ष हुआ। बूदगको कजाकोंके खानों—गिराई और जानीवेगसे भी बहुत प्रतिद्वंद्विता थी, जो कि सिर-उपत्यकामें रहते थे। कजाकोंकी मददके लिये मुगोलिस्तानका खान यनरा आया। युद्धमें बूदगने हारकर अपना शिर कटवाया। इसी बूदग (बदाग)का पुत्र था अबुल्-फतह मुहम्मद शैबानी, जिसने अन्तर्वेदमें शैबानी-वंशका शासन स्थापित किया। जिस समय उज्बेक दक्षिणमें मध्य-एसियाकी ओर बढ रहे थे, उसी समय रूस, तारतारों (मगोलों)के जुयेको फेंककर मजबूत हो रहा था। मुहम्मदने पहले-पहल १५०० ई० (९०६ हि०)में अन्तर्वेदको जीता, किन्तु इसी समय उन्नीस वर्षकी आयुमें बाबरने आकर उसे बुखारा छोड़ सब जगहोंसे खदेड दिया। अगले साल १५०१ ई० (९०७ हि०)में बाबरको मुहम्मद शैबानीने सारे अन्तर्वेदमें भगा दिया और १५०५ ई० (९११ हि०)तक फरगाना भी बाबरके हाथसे जाता रहा, यही नहीं, ख्वारेज्म, हिसार (ताजिकिस्तान) और मेवको भी शैबानीने ले लिया।

राजावलि—शैबानी-वंशके खानोंकी नामावली निम्न प्रकार है —

१	मुहम्मद शैबानी, बूदग (बदाग)-पुत्र	१५००–१२ ई०
२	कूचुनजी, अबुल्खैर-पुत्र	१५१२–३० ,,
३	अबूसईद, कूचुनजी-पुत्र	१५३०–३२ ,,
४	उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र	१५३२–४० ,,
५	अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र	१५४० ,,
६	अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र	१५४०–५१ ,,
७	नौरोज अहमद, सूयुनजी-पुत्र	१५५१–५६ ,,
८	पीर मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५५६–६१ ,,
९	इस्कन्दर, जानीवेग-पुत्र	१५६१–८३ ,,
१०	अब्दुल्ला II, इस्कन्दर-पुत्र	१५८३–९६ ,,
११	अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र	१५९६–९७ ,,
१२	पीर मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५९७–९९ ,,

१ मुहम्मद शैबानी, बदाग-पुत्र (१५००–१२ ई०)

मुहम्मदका जन्म १४५१ ई०में हुआ था। बापके मारे जानेपर उसके नाना उइगुर शेख हैदरने उसका पालन-पोषण किया था। उस समय किपचक-भूमिकी शक्ति निर्बल थी। उसके शासक थे-सैदिक, ऐबक (शैबानी ओर्दूके खान हाजी मुहम्मदका पुत्र), अरबशाहकी सतानें, श्वेत-ओर्दूके खान बोराकके पुत्र जानीवेग और गिराईवेग उसके बाद मंगित या नोगाई खान या यमगुरची, अब्बास और मूसा। नानाके मरनेपर मुहम्मद और उसके भाई महमूदको अमीर कराचिनवेगने अपने सरक्षणमें ले लिया। हैदरको ऐबकने हरा दिया, इसपर अमीर कराचिन अस्त्राखानी कासिमखानके दरबारमें भाग गया, जहा उसके साथ मुहम्मद और महमूद दोनो भाई भी गये। कासिमखानने अपने अमीरुलउमरा तेमूरवेग नोगाईके सरक्षणमें दोनो भाइयोको दे दिया। जिस समय सुवर्ण-ओर्दूके ऐबक खानने अस्त्राखानको भी आ घेरा उस समय मुहम्मद और महमूद तरुण थे। दोनोंने कराचिनके साथ लडते हुये शत्रुओकी पाती तोडकर निकल भागनेमें सफलता पाई। फिर मुहम्मद अपने पुराने देश निम्न-सिर-उपत्यकामें लौटा। लोग खान-पुत्रोंके झडेके नीचे आकर खडे होने लगे। मुहम्मद कजाकोंके खान जानीवेग-पुत्र इराचीके साथ सावरान के पास लड़ा, किन्तु असफल हो उसे बुखाराकी ओर भागना पडा। तेमूरी अहमद मिर्जाके राज्यपाल अमीर अब्दुल अली तरखनने उसे बुखारामें बडे सम्मानके साथ रक्खा। फिर अहमद मिर्जाने अपने पास बुलाकर उसका बहुत अच्छी तरहसे आतिथ्य किया। दोनो भाई दो सालतक बुखारामें रहे। इस बीचमें वह अन्तर्वेदसे अच्छी तरह परिचित हो गये। इसके बाद अब्दुल अलीको साथ लिये दोनों खानजादे अपनी जन्मभूमिकी ओर बढे। अरतक किलेके पास जानेपर खोजा बेगचिकने—जो कि अपने कबीलेका मुखिया तथा किपचकोंके सबसे पुराने अमीरोंमेंसे था—किलेकी कुंजी लाकर

मुहम्मदके हाथमें दे दी। इस आरम्भिक सफलताके बाद मुहम्मद सिगनक शहरकी ओर बढ़ा। वहा उसे मगित (नोगाई) सरदार मूसाका दूत मिला, जिसने उसे दश्तेकिपचकका खान बननेके लिये अपने स्वामीकी ओरसे निमन्त्रण दिया। मुहम्मद उसके पास गया और मूसाके प्रतिद्वंद्वी कजाक खान वेरेंदकको हरानेमें मुहम्मदने सहायता की, पर अब मूसा बहानेबाजी करते कहने लगा, कि मगित लोग राजी नही ह। निराश होकर मुहम्मद शैबानीने दश्तेकिपचकसे लौट सूजकपर अधिकार कर जानीवेग-पुत्र मुहम्मद सुल्तान (कजाक)से कई लडाइया लडी, लेकिन अतमे हारकर उसे मगिशलक (कास्पियनतट) होते ख्वारेज्मकी ओर भागना पडा। खुरासानके शासक सुल्तान हुसेन मिर्जाके राज्यपाल अमीर नासिरुद्दीन अब्दुल खालिक फीरोजशाहने उसे बहुत-सी मूल्यवान् भेंटे प्रदान कीं। ख्वारेज्मसे कराकुल होते मुहम्मद बुखारा पहुचा और फिर अली तरखनके साथ समरकन्द। अन्तर्वेदके बादशाह अहमद मिर्जाकी मुगोलिस्तानके खान महमूद खानसे ताशकन्द-शाहरुखियाके लिये लडाई हो रही थी, जिसमे अहमद मिर्जाके साथ १४८८ ई०में मुहम्मद शैबानी भी शामिल हुआ। सिर दरियाकी शाखा चिर (चिरचिक)के तटपर दोनो सेनाओकी भिडत हुई। शैबानीने अपन उपकारसे विश्वासघात करते शत्रुके साथ चुपके-चुपके सलाह कर ली थी, कि यदि मुझे अपना सिहासन मिल जाय, तो मैं अपने सपक्षियोमें गडबडी पैदा करके उनका साथ छोड दूगा। अगले दिन मुगोलिस्तानी सेना चिर (चिरचिक) नदी पार हुई-पैदल सेना आगे-आगे थी, और रिसाला पीछे-पीछे। शैबानीने अपनी योजना पूरी की। सुल्तान अहमद मिर्जा हारा और उसके बहुतसे आदमी भागते हुये नदीमें डूबकर मर गये। मुगोलिस्तानी खानने पारितोषिकके रूपमें मुहम्मद शैबानीको तुर्किस्तान शहर दे दिया। लेकिन तुर्किस्तान शहर श्वेत-ओर्दूके खानोका था, इसलिये कजाक खान जानीवेग और गिराईका मुगोलिस्तान के खान महमूदके साथ झगडा होना जरूरी था। महमूदने शैबानीकी सहायता की, अबुल्खैरके पुराने सैनिक भी मुहम्मद शैबानीके झडेके नीचे आ जुटे थे। मुहम्मदके उज्वेकोने जानीवेग और गिराईके कजाकोंसे लोहा लिया। आसपासके कई किलोको हाथमें करके शैबानी सिगनकपर बढा, जहा कजाक खान वेरेंदकसे भिडत हुई। इसी समय पता लगा कि फीरोजशाह ख्वारेज्मसे खुरासान गया हुआ है। फिर क्या, मुहम्मद शैबानी ख्वारेज्मपर चढ़ दौडा। कई दिनोंके आक्रमणके बाद भी वह सफल नही हुआ। इसी समय फीरोजशाह लौट आया। शैबानीने ख्वारेज्म छोडकर बुलदुमके किले पर आक्रमण किया, जिसका ध्वसावशेष खीवासे ८८ वर्स्त (२४$\frac{1}{2}$ फरसख) पर अब भी मौजूद है। इसके बाद वेजिर (वेसिर) शहरको जा लिया, किन्तु खुरासानी सेनाने आकर उसे वहासे भगा दिया। फिर मुहम्मद शैबानी कितने ही नगरोको लूटते-पाटते इलाक और अस्त्राबादतक गया। इसी समय मुगोलिस्तानके खान महमूदका निमन्त्रण मिला और वह ओतरार (उतरार) चला गया।

साबरानके लोगोका वहाके दारोगा (राज्यपाल) कुल मुहम्मद तरखनके साथ झगडा हो गया। उन्होने उसे निकाल बाहर कर नगरकी कुजी मुहम्मदके भाई महमूद शैबानीको दे दी, और सारे तुर्किस्तान (मध्यसिर-उपत्यका)के लोगोने दोनो शैबानी भाइयोको अपना शासक मान लिया। इसी समय कजाकोने आक्रमण करके महमूदको पकडकर कजाकसरदार कासिम—जो कि महमूदका मौसेरा भाई था—के हाथमें दे दिया। कासिमने कुछ दिन रखकर सैनिक पहरेमें उसे सूजकके लिये रवाना किया, किन्तु रास्तेसे महमूद भाग निकला, और उसने उगुजमान पहाडपर जाकर भाईसे भेंट की। फिर दोनो भाई ओतरार गये। थोडे ही समय बाद कजाक खान वेरेंदकने ओतरारपर आक्रमण किया, लेकिन कुछ दिनो बाद सुलह हो गई।

मुहम्मद इधरसे छुट्टी पा यस्सी (तुर्किस्तान) जा वहाके दारोगा मुहम्मद मजीद तरखन * को कैद कर ओतरार लाया, लेकिन मुगोलिस्तानके खान महमूदने आकर उसे छुडाकर समरकन्द भेज दिया। अभीतक महमूद खान (मुगोलिस्तानी) मुहम्मद शैबानीपर बहुत विश्वास रखता था, लेकिन अब उसे मालूम हो गया, कि वह बडा ही अविश्वसनीय और खतरनाक आदमी है, इसीलिये वह

* तरखन=राजकुमार (तुर्की)

उज्बेकोका साथ छोड़ कजाकोकी ओर हो गया। कजाकोने यस्सीको लेना सम्भव नही समझा, इसलिये ओतरारपर आक्रमण करके महमूद सुल्तानको घेरना चाहा, लेकिन उसमें वह सफल नही हुये। फिर दोनो दलोमे सुलह हुई और कजाक खान बेरेदकने अपनी दो बहिनोमेंसे एकको मुहम्मद शैबानी और दूसरीको उसके पुत्र मुहम्मद तेमूरको दिया। मुहम्मद शैबानी जैसे भी हो तैसे अपना मतलब सिद्ध करनेवाला आदमी था, उसे वचन, शपथ या उपकारका कोई ख्याल नही था। अपने राज्यविस्तारमें उसने किसी भी तरीकेको इस्तेमाल करना उठा नही रक्खा। ईमानदारी तो उसे छू नही गई थी। महमूद खानने उसकी बहुत सहायता की थी, लेकिन उनके मनमें भी उसने सदेह पैदा कर दिया। तो भी मुगोलिस्तानी खान समरकन्द और बुखाराके जीतनेकी अपनी योजनामे शैबानीका उपयोग करना चाहता था। लेकिन उससे शैबानीकी शक्तिके बढनेमें ही सहायता मिली।

१४९७ ई०में बाबरने समरकन्दको लेनेके लिये आक्रमण किया, उस समय महमूद शैबानी बाबरके प्रतिद्वद्वी सुल्तान बैसुकर मिर्जाके बुलानेपर ओतरारसे गया। सुल्तान महमूद शैबानीको जीजकमें पहुचकर हार खानी पडी, तब उसका भाई मुहम्मद शैबानी मदद करने आया। अबकी बार एक हजार जेतो (मुगोलिस्तानी खानकी सेना)ने धोखा दिया, और मुहम्मदको भी मुहकी खानी पडी। शैबानीके लिये ईमान-धर्मकी पावन्दी जरूरी नही थी, लेकिन सूफियो और शेखोकी करामातपर उसका बहुत विश्वास था। एक बार उसने शेख मसूरको भोजन कराया। जब वह दस्तरखानके कपडे को बीचसे उठा रहा था, तो शेखने कहा—"तुझे मालूम नही, कि इस कपडेको बीचसे खीचकर नही, बल्कि चारो कोनोसे मोडकर उठाया जाता है। इसी तरह देशको उसकी राजधानीपर दखल करके नही, बल्कि उसके सीमान्तोपर अधिकार करके जीता जाता है।" इस गुरुमन्त्रके बाद मुहम्मद शैबानी अपने अनुयायियोको लेकर अतर्वेदके समृद्ध और सुखी इलाकोंके ऊपर चढ दौडा जिसका कि कोना-कोना वह अपने भगोडे जीवनमें देख चुका था। लूटका माल मिल रहा था, इसलिये घूमन्तू सैनिकोकी क्या कमी हो सकती थी? शैबानीकी सेनामें दश्तेकिपचकके सभी इलाकोके उज्बेक शामिल थे, पीछे खीवासे भी कितने ही मगित आ मिले। तुर्किस्तान और ओतरारके शासक उसके दो चचा कूचुनजी और सुईउनिच थे, जो अपने सबधी हमजा सुल्तान और महबूब सुल्तानके साथ एक बडी सेना लेकर भतीजेके दलमें शामिल हो गये। उत्तरमे घुमन्तुओकी इतनी जबर्दस्त शक्ति तैयार हो रही थी, और उधर दक्षिणमे तेमूरी सुल्तान आपसमें दगल लड रहे थे। गृह-युद्धके भडकानेमें बाबरका मुख्य हाथ था। बापसे मिले फरगानापर सतुष्ट न रहकर उसने १४९७ ई०में समरकन्दको आकर ले लिया, लेकिन थोडे ही दिनो बाद उसे छोडना पडा और वहाका शासन महमूद मिर्जा-पुत्र सुल्तान अलीके हाथमे चला गया। एक उज्बेक रखेली जूरे-बेगी आगा सुल्तान अलीकी मा थी, शायद इस कारण भी दूसरे शाहजादे उसे गद्दीपर देखना नही चाहते थे। लेकिन अब तेमूरी सुल्तान दरबारियोंके हाथके कठपुतली भर रह गये थे, इसलिये असली शक्ति सुल्तान अलीके हाथमें नही थी, बल्कि चार सौ सालोंसे शेखुल्-इस्लाम होते आये वशके मुखिया खोजा अह्रिया सर्वेसर्वा था।

मुहम्मद शैबानीको तेमूरियोकी भीतरी कमजोरिया अच्छी तरह मालूम थी। अन्तर्वेदके और स्यानोकी लूट-मारसे शक्तिशाली बन वह १५०० ई० (९०६ हि०)में समरकन्दपर पहुचा। दस दिनतक उसने नगरको घेरे रक्खा। शेखके पुत्रने दरवाजेसे निकलकर शैबानी सेनाको हरा पीछे ढकेल दिया, लेकिन शैबानीने मौका पा चहार-राह दरवाजेसे नगरमे घुसनेमें सफलता पाई और बिना प्रतिरोधके ही वह बागेनौके ग्रीष्मप्रासादमे पहुच गया। अब उसे नगरके भीतर रह गये शत्रुओसे लडना था। युद्ध मध्याह्नमें शुरू हो आधी राततक जारी रहा। मुहम्मद शैबानीने वीरता दिखलाने-में खतरेकी बिलकुल परवाह नही की। दूसरे दिन खबर मिली, कि अब्दुल अली तरखनका पुत्र और कितने ही और तरखन (राजकुमार) बुखारासे सहायताके लिये आते दबूसियाका मुहासिरा किये हुये है। यह खबर सुन उज्बेकोने समरकन्दके मुहासिरेके लिये थोडीसी सेना छोड पहले तरखनोकी ओर मुह मोड और उन्हें हराकर वे बुखाराके ऊपर जा धमके, जिसके सर करनेमें बहुत कठिनाई नही

हुई। शैबानीने वहा कुछ सेना और अपने अन्त पुरको रखकर कराकुलपर आक्रमण किया। इसी समय बुखारावालोने उज्बेक-सेनाको मार डाला। खबर मिलते ही शैबानीने तुरन्त लौटकर बुखारा शहर-पर अधिकार करके वहाके नागरिकोंसे बहुत सख्त बदला लिया। फिर वह समरकन्दपर आया, जिसके विजयमे अली मिर्जाकी अपनी मा—जोकि उज्बेक जातिकी थी—ने विश्वासघात किया। बाबर उसके बारेमे लिखता है—"अपनी जडता और मूर्खताके कारण उसने शैबानी खानके पास गुप्त रीतिसे सदेश भेजकर प्रस्ताव किया, कि यदि तुम मेरे साथ ब्याह करो, तो मेरा लडका इस शर्तपर समरकन्दको समर्पण कर सकता है, कि जब तुम अपने पैतृक राज्यको प्राप्त कर लोगे, तो इस नगरको मेरे बेटे सुल्तान अली को दे दोगे।" इसी कारण चहार-राह दरवाजा अरक्षित मिला। जब शैबानी बागे-मैदानमे पहुचा, तो सुल्तान अली मिर्जा बिना किसीसे कुछ कहे कुछ अनुचरोंके साथ चहार-राह दरवाजेसे निकलकर शैबानीसे मिला। शैबानीने उसकी कोई इज्जत न कर उसे निचले आसन पर बैठाया। सुल्तान अलीके जानेकी खबर सुनकर खोजा अहिया भी पहुचा, लेकिन शैबानीने चार सौ वर्षोंके शेखुल्-इस्लाम-वशका कुछ भी ख्याल न कर उठकर उसका स्वागत भी नही किया, और खूब कडे-कडे शब्दोंमें उसे फटकारा—"अभागी दुर्बल स्त्रीने पति पानेके लालचसे अपने खानदान और लडकेकी इज्जतको धूलमें मिला दिया, लेकिन उसके साथ भी अच्छा बर्ताव नही हुआ, क्योंकि शैबानी उसको अपनी रखेलिनोके बराबर भी नही समझता था।" १५०० ई० (९०६ हि०)में समरकन्दको सर करनेके बादसे शैबानीका सन-जलूस (अभिषेक-सवत्) चला। तीन-चार दिन बाद सुल्तान अलीको उसने मरवा डाला, फिर खुरासानकी ओर यात्रा करते समय तुरन्त ही उसने विश्वासघाती खोजा अहिया और उसके दो पुत्रोंको कत्ल करवा दिया।

शैबानी और उसके अमीरोको समरकन्द जैसा समृद्ध-सुन्दर नगर मिला, "लेकिन उसके सैनिकोंका नागरिक जीवनसे प्रेम नही था। नगरमें कुछ दिनो रहनेके बाद शैबानीने अपने सात-आठ हजार सैनिकोंके साथ खोजा-दीदारके पास जा डेरा लगाया।" दो हजार सैनिक शहरके आसपासमें छावनी डाले पडे रहे और नगरके भीतर सिर्फ छ सौ सैनिक रह गये थे। १९ सालके बाबरको जब यह पता लगा, तो उसने दो सौ चालीस आदमियोको लेकर बडे साहसका काम करना चाहा। नगरके सैनिकोको सजग देखकर उसे कितनी ही बार अपने इरादेको रोकना पडा। लेकिन एक रात खोजा अब्दुल मकरम सत्तर या अस्सी आदमियोको लिये मोगाकपुल होते प्रेमियोकी गुफाके सामनेसे नगर-प्राकार फांदनेमें सफल हुआ और पीछेसे जा फीरोजा दरवाजाके रक्षक सिपाहियोंके ऊपर टूट पडा। इस आक्रमणमें दरवाजेके गारदका कमाडर फाजिल तरखन मारा गया। मुकरमके आदमियोने कुल्हाडेसे ताला तोड दरवाजा खोल दिया। अब बाबर भी शहरके भीतर दाखिल हुआ। इस समयके बारेमें बाबर लिखता है—"नागरिक गहरी नीदमें थे, लेकिन दूकानदारोने जब अपनी दूकानोंसे झाककर देखा और उन्हे असली बातका पता लग गया, तो उन्होने शुक्रिया अदा करनेके लिये भगवान्से प्रार्थना की। नगरके बाकी लोग भी जल्दी जाग उठे और अपने लोगोकी सहायता पा हमने पागल कुत्तेकी तरह उज्बेकोको हर एक कूचे और सडकमें पत्थरो और लकडियोंसे पीट-पीटकर मारा।" चार-पाच सौ उज्बेक सैनिक मारे गये। उज्बेकोकी ओरसे नियुक्त नगर-कोतवाल जानवफा जान बचाकर शैबानीके पास भागा। बाबर मदरसा-उलुगबेगकी ओरसे होते मेहराबोवाली शाला (उलुगताक)मे जाकर बैठा। नागरिकोने नये तेमूरी बादशाहको बधाई दी। दूसरे दिन मालूम हुआ, कि आहनीदरवाजा (लौहद्वार) अब भी शत्रुओंके हाथमे है। बाबर पन्द्रह-बीस आदमियोंके साथ उधर दौडा, लेकिन उसके पहुचनेसे पहले ही नगरके गुडोने उन्हे बाहर निकाल दिया था। जब मुहम्मद शैबानीको यह खबर मिली, तो डेढ सौ सवारोंके साथ आकर उसने दरवाजा आहनीपर आक्रमण करना चाहा, लेकिन उसे व्यर्थ समझकर वह लौट गया। समरकन्दपर अधिकार हो जानेके बाद आसपासके बहुतसे इलाकोंसे उज्बेक मार भगाये गये। सोग्द और मियानकुलपर बाबरका अधिकार था, और खोजार तथा करशीपर बाकी तरखन (बुखारा-राज्यपाल)का। मेवसे लौटकर शबानी-सेनाने सिर्फ बुखाराको अपने हाथम लौटा पाया।

उस साल तो यही मालूम हो रहा था, कि बाबर फिर तैमूरकी कीर्तिको जगाके रहेगा, लेकिन शैबानी भी चुप रहनेवाला आदमी नहीं था। उसने तैयारी करके १५०१ ई०के वसन्तमें कराकुल और दबूसिया ले लिया। अप्रेल या मई १५०१ ई०में शैबानीसे लड़नेके लिये बाबरने सरेपुलके पास जाकर मोर्चाबन्दी की। उसके शिविरसे शैबानीका शिविर चार मीलपर था। चार-पाँच दिनोतक दोनो दलोमें मामूली झडप होती रही। यद्यपि अभी मददके लिये आनेवाली सेनाकी प्रतीक्षा करनेकी जरूरत थी, लेकिन ज्योतिषियोका बतलाया मुहूर्त बीता जा रहा था, इसलिये सहायता आनेसे पहले ही बाबरने युद्ध छेड दिया। उज्बेकोकी युद्धविद्यामें एक ज्यादा प्रचलित चाल थी "तुलुगमेह" अर्थात् शत्रुके पार्श्वोंको प्रहार करके मोड देना, दूसरी चाल थी सरपट दौडते बाण-वर्षा करना, इसके लिये सेनानायक और सिपाही दोनो पीछा किये जानेपर सरपट लौट पडते। शैबानीकी सेना बाबरसे कही अधिक थी। इसी समय मुगोलिस्तानकी सेनाने बाबरके साथ धोखा दे दिया। बाबरकी पूरी हार हुई। वह अपने दस-पन्द्रह अनुयायियोंके साथ कोहक नदीकी धारमें कूद पडा। सवार और घोडे दोनो बख्तरदार थे, जिसके कारण उनके शरीरपर भारी बोझा था, तो भी किसी तरह भागकर वह रातसे पहले ही समरकन्द पहुँचे। बाबरने इस समयके अपने उतावलेपनके ऊपर एक शेर लिखा—

"जो उतावला होकर जल्दीमें अपनी तलवारपर हाथ रखेगा,
वह उस हाथको अफसोस करते हुये अपने दाँतोंसे काटेगा।"

उलुग-मदरसेमें चादर-सफेदके नीचे ठहरकर बाबर शहरके बचानेकी तैयारी करने लगा। नगरके बहुतसे निकम्मे और फजूलके "गाजी" हर मुहल्ले और कूचेसे बडी सख्यामें आकर मदरसेके फाटक-पर "पैगम्बरकी जय" करते उतावलापन दिखला रहे थे। तजर्बेकार लोग रोकनेकी कोशिश करते, तो उन्हें वह गाली सुनाते। बात न मानकर वह गये और उज्बेकोंसे खूब पिटे। बाबरने पीछे हटते समय रक्षा करनेके लिये सेना भेजी, लेकिन तबतक गाजियोकी भीड पिटकर तितर-बितर हो चुकी थी। अब सिपाहियोको नगरके मुहासिरेकी लडाई लडनी थी। बीच-बीचमे सैनिक बाहर निकल छापा मार-कर कितने ही शिर काट लाते। मुहासिरेके कारण नगरमें बाहरसे खूराक आनी बन्द हो गई, जिसके कारण भीषण भुखमरी और अकाल पडा। गरीब लोग कुत्तो और गदहोका मास खाने लगे। घोडोको वृक्षोका पत्ता खिलाया जाता। ऐसी स्थितिमें कितने दिनोतक अपनेको रोके रखता, समरकन्दको आत्मसमर्पण करना पडा। बाबरकी बडी बहिन खानजादा विदेशी लुटेरे शैबानीके हाथ-में पडी। अपनी मा और कुछ दूसरी औरतोको साथ लिये बाबर आधी रातको नदीको पारकर समरकन्दसे भाग निकलनेमें सफल हुआ। जीजकमें पहुँचनेपर उसे एक नई दुनिया जान पडी, जब समरकन्दकी भुखमरीके बाद उसे बढ़िया मोटा मास, बारीक आटेकी अच्छी तरह पकी हुई रोटी, मीठे तरबूजे और स्वादिष्ठ अगूर भारी परिमाणमें मिले—चरम अकालसे वह चरम सुकालमें पहुँच गया था। अब सोग्द (अन्तर्वेद)का स्वामी शैबानी था। उसने मुगोलिस्तानी खान महमदको अगूठा दिखला दिया, जिसने जाकर ताशकन्द-शाहरुखियाको हाथमें किया। जाडोमें सिर नदीके जम जानेपर उसे आसानीसे पार हो शैबानीने ताशकन्द शाहरुखियाको लूटा। १५०२ ई०मे मुगोलिस्तानी राज्यपाल सुल्तान अहमद तम्बोलने अपने मालिकसे विद्रोह करके शैबानीको सहायताके लिये बुलाया। शैबानीने पहुँचकर महमूद खानको बुरी तरहसे हराया, और उसके साथ आया बाबर मिर्जा जान बचाकर फरगानाके दक्षिणवाले पहाडोमें भाग गया। मुगोलिस्तानी खानको दौलत सुल्तान खानम (अपनी बहिन), तथा अम्बा सुल्तान खानम, कुरज खानम आदि कई राजकुमारियोको जून १५०३ ई०में भेंट देनी पडी। शैबानी फरगानाके मुख्य नगरोमें उज्बेक छावनिया रखकर लौट आया।

१५०५ ई०तक सारा फरगाना, ख्वारेज्म और हिसार (ताजिकिस्तान) आदिके इलाकोपर भी शबानीका अधिकार हो गया। अब वह अपनी सारी सेना ले तैमूरके द्वितीय पुत्र उमरशेखके वशज हुसेन बैकरासे खुरासान छीननेके लिये दक्षिणकी ओर बढा। पहले साल वह बलख नगरतक अपना अधिकार करके समरकन्द लौट गया। हुसेनने अपने पडोसी ईरानी शाह इस्माईल और बाबरसे भी

मदद मागी। बावर ९०९ हि० (१५०३-४ ई०)मे काबुलका राजा बन चुका था। वह भी हुसेनके मददके लिये खुरासान आया, लेकिन तबतक हुसेन मर चुका था, और उसके दोनो बेटोमें राज्यके बटवारेको लेकर भयकर फूट पैदा हो गई थी। शैंवानी जैसे भयकर शत्रुको शिरपर देखकर भी ऐसा करना बावर को बहुत बुरा लगा—"दस फकीर एक चट्टानपर बैठ सकते है, किंतु दो राजाओंके लिये सारा भूमडल छोटा है।" बावर निराश होकर लौट गया। ९१२ हि० (१५०७ ई०)के वसन्तमें शैंवानी फिर सेना ले वक्षु पार हुआ, और रास्तेके इलाकोको जीतते जूनमें मुरगाब नदी भी पार हो गया। खुरासानकी राजधानी हिरात नगरी तुरन्त उसके हाथमें आ गई। वहाका किला कुछ देर तक प्रतिरोध करता रहा, लेकिन दो-तीन सप्ताह बाद किलेने भी आत्मसमर्पण किया। शैंवानीने हिरात के साथ इतनी मेहरबानी की, कि एक लाख तका कर लेकर कला और विज्ञानके इस महान् केन्द्रको अपने लुटेरे उज्बेकोंके हाथो बरबाद होने नही दिया। शैंबानीने अपनी सेनाके साथ शहरके बाहर डेरा डाला। हुसेन बेकराके बेटे मुजफ्फर हुसेन मिर्जाकी बीबीके सौंदर्यको सुनकर अट्ठावन वर्षका शैंवानी उसपर मुग्ध हो गया। उसने उसे अपने हरममें दाखिल किया। हिरातके राजभवनमे उसे भारी परिमाणमें सोने-चादीके बर्तन, बहुमूल्य लाल, हीरे, मोतिया तथा दूसरे रत्न प्राप्त हुये।

उसकी सेनाने बाकी तेमूरी राजकुमारोको हराते सारे खुरासानको अपने हाथमें कर लिया। बावर शैंवानीसे हारा और जला-भुना हुआ था, इसलिये उसे अपने शत्रुमे केवल दोष ही दोष दिखलाई पड़ते थे। शैंवानी कवि था, और उसकी कवितायें बुरी नही होती थी, लेकिन "बाबरनामा"में बावर लिखता है—"बिल्कुल अज्ञ होते भी उसने ढिठाई दिखलाते हुये काजी अख्तियार और मुहम्मद मीर युसुफ (खुरासाने प्रसिद्ध मुल्ला) जैसे विद्वानोके सामने कुरानकी व्याख्या करते व्याख्यान दिया। उसने कलम उठाकर सुलेखक मुल्ला सुल्तान अली और चित्रकार बेहजादके लेखो और चित्रोका सशोधन किया। वह अपने उबा देनेवाले शेरोको मेम्बरसे पढ़कर सुनाता था, और उन्हे उसने लिखवाकर चारसूमे टगवा दिया था।" आधुनिक कालके तुर्की साहित्यके एक विद्वान् वाम्बेरीने शैंवानीकी कविताके बारेमें लिखा है—"शब्द और अर्थ दोनोकी दृष्टिसे शैंवानीकी कविता पूर्वी तुर्की साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतियोमें है, और उससे पता लगता है, कि शैंवानीको तुर्की, फारसी और अरबीका ज्ञान बहुत अच्छा था।"

शैंबानीने बावरका पीछा भी करना चाहा, लेकिन कधार नगरके मुहासिरेमे असफल रहनेके कारण वह काबुलकी ओर नही बढा। १५०८ ई०में उसने मुगोलिस्तानके खान महमूदको ताशकन्दमे जाकर हराया। खानने फरगानाके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन अपने पाच पुत्रोंके साथ प्राण खोनेके सिवा उसे कुछ हाथ नही लगा।

पूर्वी और दक्षिणी प्रतिद्वद्वियोंसे निपटनेके बाद भी अभी उत्तरमें कजाक खान कासिमके दो लाख सैनिक मौजूद थे। जाडोमें दोनोंके ओर्दू घास-चारेके सुभीतेवाले स्थानमे डेरा डाला करते थे। शैंबानीका ओर्दू उस समय कुरुकमें था। १५०९-१०ई०के जाडोमें एक दिन कासिम खान अपनी सेनाके साथ आ पहुचा। उज्बेकोने अपने लूटके मालको छोड दौडकर शैंवानीको खबर दी। शैंबानीने तुरन्त पीछे हटनेके लिये नगारा बजवाया और जाडेके अन्ततक उज्बेक बडी अस्तव्यस्त अवस्थामे समरकन्द पहुचे।

यह कह चुके है कि मगोल कबीलोंके अवशेष हजाराके नामसे अफगानिस्तानके पश्चिमी पहाड़ोमें रहते थे। शैंवानी १५१० ई०में उनपर आक्रमण करनेके लिये हिंदूकोहके भीतर घुस गया। लेकिन लौटते वक्त हेलमन्दकी उपत्यका मे उसे आदमियो और पशुओकी बडी क्षति उठानी पडी। खुरासानमें पहुचनेपर उसके पास दो सेनाएं आ गईं और उसने क्षतिग्रस्त सेनाको तुर्किस्तान जानेकी छुट्टी दे दी।

शैंवानीका प्रतिद्वद्वी ईरानी शाह इस्माईल सबसे अधिक शक्तिशाली था। उसने आजुरबाइजानी तुर्क-वश (श्वेत-मेश)का उच्छेद करके सारे ईरानपर अधिकार करते हुये सफावी-वश (१४९०-१५२४ ई०)की स्थापना की थी। वह कैसे देख सकता था, कि पूर्वी ईरान-खुरासानपर उज्बेकोंका

अधिकार हो। ९१६ हि० (१० IV १५१०–१ III १५११ ई०)में उसने खुरासानपर आक्रमण किया। उस समय उज्वेकोंकी सेना हिरातमें एकत्रित हुई थी। शैबानीकी सेना इस्माईलकी अपेक्षा कम थी। वह हिरातमें छावनी छोड़ मेर्वकी ओर लौटा। मशहदकी तीर्थयात्रा समाप्त कर शाह इस्माईलने उज्वेकोंका पीछा किया। तूर्केराबादके पास दोनों सेनाओंमें जबर्दस्त लड़ाई हुई, शैबानी हारा और शाहकी सेना उसे मेर्वकी दीवारोंतक खदेड़ ले गई। शैबानी मेर्वमें दुर्गबद्ध हो गया और शहरके आस-पास शाह इस्माईलने घिरावा डाल दिया। इस तरहकी कायरता दिखलानेके लिये शाहने शैबानीका फटकारते हुये चिट्ठी लिखी। यद्यपि शैबानी इस तरहकी व्यर्थकी वीरता दिखलानेका नहीं, बल्कि कल-बल-छलका पक्षपाती था, लेकिन उस वक्त अपने बीस हजार घुड़सवारोंको लिये इस्माईलकी चालीस हजार सेनाके साथ लड़नेके वास्ते मैदानमें चला आया। लोगोंने उसे प्रतीक्षा करनेकी सलाह दी, लेकिन उसने नहीं माना और सामने और पीछे दोनों तरफसे आक्रमण कर दिया। इसमें शक नहीं, उज्वेकोंने युद्धमें बड़ी बहादुरी दिखलाई, लेकिन संख्यामें दूने सफावी भी लड़नेमें निर्बल नहीं थे। उज्वेक-सेना छिन्न-भिन्न हो गई, शैबानी पाँच सौ सवारोंके साथ भागकर पशुओंके एक हातेम जा छिपा। दूसरी तरफ द्वार न होनेसे नदी-तटकी ओर प्राकारसे उज्वेक सैनिक एक दूसरेके ऊपर कूदे, खानको कूदनेमें चोट आई। दुश्मनोंने उसके शरीरको आदमियोंके ढेरमेंसे निकालकर मार डाला, और शैबानीका सिर काटकर शाहको भेंट किया। उसने आज्ञा दी, कि शैबानीके शरीरको टुकड़े-टुकड़े करके राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंमें प्रदर्शित किया जाय। इस्माईलने उसके चमड़ेमें भसा भरकर तुर्क-सुल्तान बायजीदके पास भेज दिया। बायजीद सुन्नियोंका सबसे बड़ा नेता था, और इस्माईल शियोंका, इसलिये उसने तुर्क-सुल्तानके पास सुन्नी भाई तथा महान् उज्वेक-नेताकी इस दुर्गतिको दिखलाना चाहा। शैबानीकी खोपड़ीमें सोना मढ़वाकर इस्माईलने शराबके प्यालेके तौरपर प्रदर्शन कराया।

इसमें शक नहीं, शैबानी उत्तरी घुमन्तुओंका अन्तिम सबसे बड़ा विजेता था, जिसने मध्य-एसियामें एक बड़े राज्यकी स्थापना की। लेकिन इसी समय ईरानमें सफावी जैसा शक्तिशाली वंश स्थापित हो गया, जिसने ईरानको शिया घोषित करके पूर्वी और पश्चिमी सुन्नी देशोंके बीचमें पच्चरका काम किया। वक्षु (आमू-दरिया)तक इस्माईलने बढ़कर फिर उसे एक बार ईरान और तूरानके बीचकी सीमा बनाई।

२ कूचुनजी (१५१२–३० ई०)

शैबानी घुमन्तू राजवंश था, इसलिये हजारों वर्षसे स्थापित अपनी पुरानी व्यवस्थाके अनुसार उसके हरएक राजकुमारको छोटे-छोटे प्रदेशका राजा बनाया जाता था। वह अपने ऊपर एकको खान मानते थे। खानके मरनेपर वंशके सभी कुमार मिलकर उसका उत्तराधिकारी खान तथा आवश्यकता होनेपर कलगा (युवराज) चुनते थे, इसमें योग्यतासे अधिक रिश्ते और उमरमें सर्वज्येष्ठका ख्याल काम करता था।

मेर्वमें शैबानीकी जो दशा हुई, उसकी खबर सुनकर बाबर काबुलसे अपने पूर्वजोंके देशकी ओर चला, लेकिन नेताके मर जानेसे शैबानी-सेना नष्ट नहीं हो गई थी। जानीबेग सुल्तान उस समय उपराज था, जिसके झंडेके नीचे फिर बड़ी सेना इकट्ठी हो गई। इसी सेनाने मुगोलिस्तानका कत्ले-आम किया था, जिसमें "तारीख रशीदी"का लेखक इतिहासकार हैदर बाल-बाल बचा था। बाबर अपनी सेना ले आमू पारकर खुत्तलके प्रधान शहर दश्तेकुलाकमें पहुँचा। यहाँ वक्षुके पास फिर दोनों सेनाओंमें झड़प हुई, लेकिन शक्ति आजमा लेनेपर दोनोंने लड़नेकी हिम्मत नहीं दिखलाई। बाबर वक्षु पार हो कुदुज लौट गया और शैबानी-सेनापति हमजा सुल्तान हिसारको। मेर्वसे शाह इस्माईलने शैबानीकी बीबी खानजादा बेगमको भेज दिया था, जो अपने भाई बाबरसे जा मिली। बाबरने इसके लिये इस्माईलको बहुत धन्यवाद देते हुये अन्तर्वेद जीतनेके लिये उससे सैनिक सहायता मांगी।

शाह इस्माईलकी भेजी सेनाको भी साथ ले बाबर फिर पहाड़ी रास्तेसे आमू दरिया पारकर उसकी

आगे बढ़ा। आमरी एक शाखा गुरगावपर पुलेसगीनको हमजा सुल्तान दखल किये हुये था। वावरको मालूम हो गया, कि दुश्मन वहुत शक्तिशाली है, तो भी साहस करके पुलकी आशा छोड नदी पार करनेकी कोशिश की। लेकिन, जल्दी ही उसे एक दुगम रास्तेसे आवदराकी ओर लौटना पडा। उज्बक उसका पीछा कर रहे थ। आधी रातको खबर लगी, कि उज्बेक नजदीक आ गये ह। वावरने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया और हमजा सुल्तान तथा मेहदी सुल्तान वावरके वन्दी वने। वावर चगताइयोंकी पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खानका नाती था, इसलिये चगताई-वशज होनेका दावा करता था। उसने इस सफलताके वाद और भी आगे वढकर दरवन्दे-आहनी (लौहद्वार)तक उज्बेकोंका पीछा किया। यार मुहम्मद नजम-शानी (द्वितीय तारा)ने करशीको लूटा और लोगोंको कत्ल किया। अव पामीरमे हिसार और खुत्तलान, खोजर तथा आमूके दक्षिण कुदुजके प्रदेश वावरके हाथमे आ गये। दर्रा-सँवरगे दरवन्दनकके प्रदेशको कुछ समयके लिये अपने हाथमे करके वावरको प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी, लेकिन वह जवतक समरकन्दम पहुचकर तेमूरके तख्तपर नहीं वठता, तवतक अपनी सफलतामे सन्तुष्ट नही हो सकता था। उसके इस मनोरथको पूरा करनेके लिये शाह इस्माईलने भारी सेना भेजी। उज्बेक सेनापति उवैदुल्लाने करशीमे मोर्चावन्दी कर रखी थी, वाकी उज्बेक समरकन्द भाग गये थे। वावरने साठ हजार सयुक्त सेनाके साथ आक्रमण करके उवैदुल्लाको हराकर वाकी उज्बेकोंको भी किजिलकुमके रेगिस्तानमे भगा दिया। दूसरे उज्बेक सुल्तानोंको जव पता लगा, तो सामने होकर लडनेकी जगह उन्होंने तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)की ओर भागना ही अच्छा समझा। वावर अव सारे अन्तर्वेदका स्वामी था।

८ अक्तूवर १५११ ई०को समरकन्दमे वावर तेमूरके सिंहासनपर वठा। इस वक्त उसे कितनी प्रसन्नता हुई होगी, इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं। उसे क्या पता था, कि यह आठ महीनोंकी चादनी है। हा, उसके वाद उसे एक और भी विशाल और वैभवशाली साम्राज्यको भारत मे स्थापित करनेका मौका मिलेगा। इस समय "वावरका राज्य" तारतारी रेगिस्तानोंसे गजनी और कावुलतक था, जिसमे कुदुज, हिसार, समरकन्द, वुखारा, ताशकन्द, सेरम, खाकन्द (फरगाना) आदि नगर सम्मिलित थे। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि खुरासान अव शाह इस्माईलका था।

लेकिन शाहकी मदद वावरके लिये वहुत महगी पडी। उसने शाहके नामका खुतवा पढवाया। एक शिया वादशाहके नामका खुतवा पढे जाते देख सुन्नी अन्तर्वेद कैसे सन्तुष्ट हो सकता था? वावरने स्वय ईरानी पोशाक धारण की, और अपनी सेनाको भी वैसा ही करनेका हुक्म दिया। खासकर ईरानी टोपी धारण करनी अनिवाय कर दी, जिसमे शियोंके वारह इमामोंके चिह्न वने हुये थे, और पोशाकमें एक लम्बी लाल पट्टीको लगानेके लिये कहा, जो कि बीचसे होकर पीठके पीछे लटकती थी, जिसके कारण ईरानियोंको किजिल वास (रक्त-केश) कहा जाने लगा। वावर जरूर समझता होगा, कि शिया-धम, शियोंकी वेश-भूषा तथा शिया इस्माईलको अपना प्रभु स्वीकारकर वह सुन्नियोंका कोप-भाजन वनेगा, लेकिन उसके लिये और कोई रास्ता नही था। प्रजाके असन्तोषकी खवर उज्बेकोंको लगी, और १५१२ ई०के वसन्तमे एक उज्वेक-सेना ताशकन्दकी ओर बढी, दूसरी रेगिस्तानके रास्ते उवैदुल्लाके नेतृत्वमे यतीकुदुप (सप्तकूप) होती वुखाराकी ओर। ताशकन्दमें मुकाविला करनेके लिये वावरने सेना भेज दी, और स्वय उवैदुल्लाकी ओर चला। कुलमलिकमे दोनोंमे जवदस्त सघष हुआ, लेकिन यह चमत्कारसे कम नही था, जो कि १८ अप्रैल १५१२ ई०में वावरकी चालीस हजार सेनाको तीन हजार उज्वेकोंने हरा दिया—अर्थात् एक उज्वेक दस वावरी सैनिकोंसे भी अधिक युद्धक्षमता रखता था। पीछे भारतपर विजय प्राप्त करनेके समय हर एक वावरी सैनिक शायद हिंदुस्तानी सैनिकोंसे दसगुणीसे अधिककी क्षमता रखता था। इसमे कारण नागरिक विलासितापूण जीवन तथा पारस्परिक फूट हो सकती थी।

कुलमलिकमें हारनेके वाद वावरके लिये समरकन्दमे भी शरण नही थी। अव वह शाह इस्माईलके पास जानेके लिये दरवन्दकी ओर चला। दरवन्दमें भी मोर्चावन्दी हो चुकी थी। शाह इस्माईलने

यार मुहम्मदके नेतृत्वम साठ हजार तुर्कमान भेजे, जिन्होंने उज्वेक सेनापति हमजाको हराकर लाहद्वार (दरबन्द) पार हो खोजार (गुजार), करशीको लूटा। करशीमें पन्द्रह हजार नागरिकोको बिना यह ख्याल किये कत्ल कर डाला गया, कि वह उज्वेक है या स्थानीय नागरिक, बूढे-बच्चे है, या स्त्री। इसी कत्ले-आममें कवि बीनाई भी मारा गया। शिया अपनी धर्मान्धताका परिचय दे रहे थे। बाबर समझ गया, कि अब उसे अन्तर्वेद क्षमा नही कर सकता , इसलिये अपनेको उसने अलग कर लिया। इसके बारेम हैदरने लिखा है—"इस्लाम (सुन्नी-धम)का प्रभाव कुफ्र और अविश्वासके ऊपर विजय पाने लगा, सच्चे धमकी विजय घोपित हुई। आक्रमणकारी बुरी तरहसे हारे, और उनमेंसे अधिकाश युद्धक्षेत्रम मारे गये। गिज्दुवानके बाणोने करशीके खूनका बदला लिया। मीर नजीम तथा दूसरे सभी तुर्कमानोंके मुख्य सेनानायक नगरमे भेज दिये गये।"

मीर नजीमके दबदबेके बारेमें वही इतिहासकार लिखता है—उसके रसोईखानेमे प्रतिदिन सौ भेंड़े, असख्य मुर्गे-मुर्गिया, हस, बतकें और चालीस खवात (५६० सेर ?) दालचीनी, केसर और दूसरे मसाले इस्तेमाल होते थे। उसके खानेकी तश्तरिया या तो बिलकुल सोनेकी थी या बहुत मूल्यवान् चीनी मिट्टीकी। अब बाबरने सदाके लिये अन्तर्वेदसे विदाई ली, और वह काबुल लौट गया।

जिस वक्त दक्षिणमें बाबर-इस्माईल और उज्बेकोका इस तरह सघर्ष हो रहा था, उसी समय मुगोलिस्तानके खानने पूरबसे अन्दिजानके रास्ते प्रधान उज्वेक-सुल्तान सुयुन्जिक खानके ऊपर आक्रमण किया और जरफ्शा-उपत्यकामें समरकन्दसे चालीस मील पूव बिशकान्द (पजकन्द) मे उसे पूरी तौरसे हरा दिया। यह वह समय था, जब कि बाबर ईरानी सेना लेकर समरकन्दकी ओर बढ रहा था।

१० (२।४।५)

शवानी-अस्त्राखानी (१५०० १७४७)
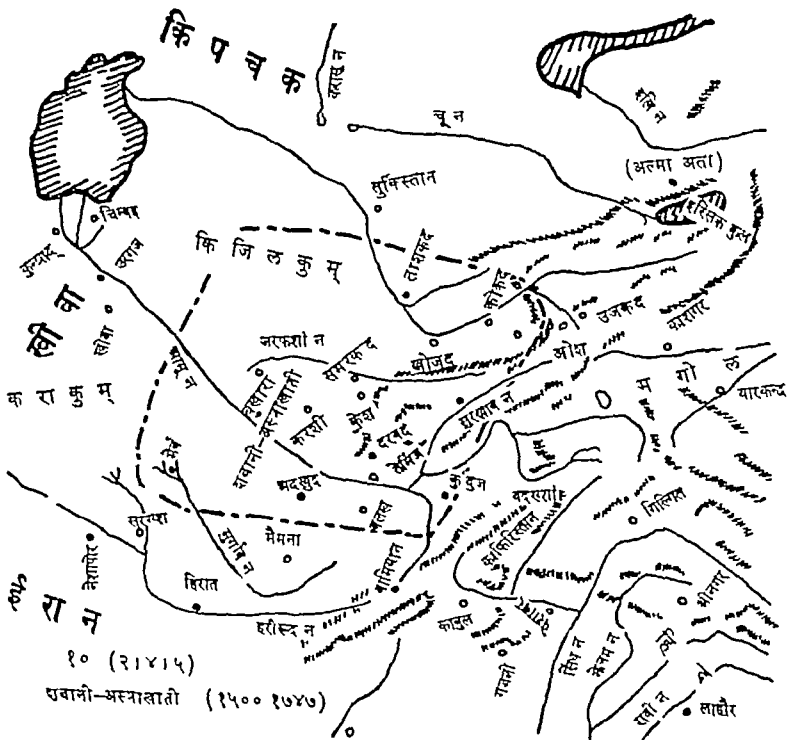
बुखारामे उत्तर गिज्दुवानमे शाह इस्माईलके सैनिकोका जानीबेग-सुल्तानने किस तरह मुकाबिला किया, इसे "तारीख रशीदी"में मिर्जा हैदरके शब्दोमें सुनिये—

"उज्बेक सुल्तान उसी रातको किलेके भीतर प्रविष्ट हुये, जिस रात तुर्कमान (इस्माईलके सैनिक) और बाबर घुसे थे। तुर्कमान और बाबर महलके सामने छावनी डालकर मोर्चाबन्दीके यत्नोंका ठीक ठाक करनेमें लगे हुये थे। सूर्योदयके समय उन्होंने उपनगरमें अपनी सेनाओंको शत्रुकी ओर मुंह करके खड़ा किया। दूसरे पक्षने भी लड़ाईकी तैयारी की। उज्बेकोंके उपनगरमें होनेसे युद्धक्षेत्र बहुत सकरा था। उज्बेक-पैदल-सेनाने चारों ओरसे बाणोंकी वर्षा करनी शुरू की, और जल्दी ही इस्लामकी ताकतने कुफ्र और नास्तिवताके हाथको तोड़ दिया, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। इस्लामके विजयी वीरोंने धर्मविद्वेषियोंके झंडेको गिरा दिया। तुर्कमान पूरी तौरसे हारे, उनमेंसे अधिकांश लड़ाईके मैदानमें मारे गये। करशीमें तलवारसे जो घाव हुये थे, उनको बदलेके बाणोंकी सिलाईने सी दिया। विजेताओंने मीर नजीम और सभी तुर्कमानोंको नरकमें भेज दिया, बादशाह (बाबर) निराश और दुःखी हो हिसारकी ओर लौटा।"

बाबरका यह अंतिम प्रयत्न था। उसने काबुल लौटकर अब अपनी शक्तिको हिन्दुस्तान जीतनेमें लगाया।

गिज्दुवानके युद्ध ९१८ हि० (१९ III १५१२–७ II १५१३ ई०)के बाद शैबानी सुल्तानोंने अपने तुरा और याम्साक (कानून)के अनुसार मुहम्मद शैबानीके चचा कूचुनजीको अपना खान बनाया और सूयुन्जिक कलगा (युवराज)के पहले ही मर जानेके कारण जानीबेग कलगा बनाया गया। लेकिन वह भी पहले ही मर गया। जानीबेगने शैबानी सुल्तानों (राजकुमारों)में इलाके बांट दिये, जिसमें कूचुनजीको समरकन्द, सूयुन्जिकको ताशकन्द, उबैदुल्लाको कराकुल-करशी-बुखारा और जानीबेगको समरकन्द-मियानकुल-कर्मीना मिला।

ताशकन्दपर आक्रमण करनेवाली सेनाका संचालक सूयुन्जिक था। उसने नगरपर अधिकार कर लिया। १५१२ ई०में सुल्तान सईद खान मगोलिस्तानीने पांच हजार सेना ले फरगानासे होकर सूयुन्जिकके ऊपर आक्रमण किया। विशकन्दमें हार खाकर सुल्तान सईद अन्दिजान पहुंचा। गिज्दुवानमें भारी विजय प्राप्त करनेके बाद सूयुन्जिकने सईदकी ओर मुंह किया, लेकिन सईदने अन्दिजान, अक्सी और मरगिनानमें मजबूत सैनिक छावनियां रख दक्षिणके पहाड़ोंका रास्ता लिया। सईदने कजाकोंके शक्तिशाली खान कासिमको सहायताके लिये बुलाया, जो कि शैबानियोंका भी शत्रु था। दश्तेकिपचक्के मध्यमें रहनेवाले इस खानके पास बड़ी भारी सेना थी। वह सईद खानकी मददके लिये दक्षिणकी ओर चला। सैरामके राज्यपालने बिना लड़े ही किलेकी कुंजी कासिमके हाथमें दे दी। फिर कजाकसेना रास्तेके नगरों और गांवोंको लूटती-पाटती ताशकन्दकी ओर चली। १५१३-१४ ई०में सूयुन्जिक कजाक खानके प्रतिरोधमें ही लगा रहा। १५१५ ई०में कासिमने किसी दूसरी दिशामें लूट-पाट करनेके लिये अभियान किया, तब कजाकोंसे छुट्टी पा उज्बेक फरगानाकी ओर मुड़े। सुल्तान सईद खान बिना मुकाबिला किये ही काशगरकी ओर भाग गया, जहां उसने कई साल शासन किया। फरगानापर फिर उज्बेकोंका अधिकार हो गया।

गिज्दुवानकी विजयसे शाह इस्माईलकी सेनाकी जो गति हुई थी, उससे उज्बेकोंकी हिम्मत बढ़ गई और उन्होंने एक बार बलखतक घुसकर खुरासानमें लूट-पाट की, लेकिन जब शाह इस्माईलकी सेनाके प्रहारका भय लगा, तो वह पीछे हट आये। शाह इस्माईल १५२३ ई०में मर गया, और उसका बालकपुत्र तहमास्प (१५२४–७६ ई०) तख्तपर बैठा। इस समय फिर उज्बेकोंको मौका मिला और १५२५ ई०में उबैदुल्ला एक बड़ी सेना ले मेव जीतते खुरासानकी ओर बढ़ा। अप्रतिरक्षित मशहद नगरने आत्मसमर्पण किया। उबैदुल्ला तूसको भी लेते अस्त्राबाद पहुंचा, और अपने पुत्र अब्दुल अजीजको वहांका शासक बना बलखकी ओर लौटा। आजुरबाईजानसे सेना आई, लेकिन उसे उज्बेकोंने बोस्तामसें हरा दिया, और अस्त्राबाद अब्दुल अजीजके ही हाथोंमें रहा।

उबैदुल्लाने जाड़ोंको गोरियान (गोरी सुल्तानोंकी मूलभूमि)में बिताया। ९३४ हि० (२७ सितम्बर १५२७–१७ अगस्त १५२८ ई०)में उसने सात मासतक हिरातका मुहासिरा किया। शाह तहमास्प एक बड़ी सेना ले उसके मुकाबिलेके लिये आया, जिसे देख उबैदुल्ला हट गया।

फिर उसने ईरानी शाहसे मुकाबिला करनेके लिये भारी तैयारी शुरू की, और डेढ़ लाख सेना लेकर दक्षिणकी ओर चला—छिङ्-गिस्के बाद इतनी बड़ी सेना वक्षु पार नहीं हुई थी। यद्यपि ईरानी सेनामें पचास हजार ही आदमी थे, लेकिन वह बड़े तजर्बेकार और अनुशासन-सपन्न थे। उन्होंने (टर्कीके) उस्मानी तुर्कोंके साथ अनेक सफल लड़ाइया लड़ी थी। युरोपने मगोलोंसे सीखकर बारूदके हथियारोंमें बहुत तरक्की कर ली थी। उस्मानी तुर्कोंने उनसे तोप और पलीतेकी बन्दूकोंका इस्तेमाल सीखा था। उस्मानी तुर्कोंके प्रतिद्वन्द्वी सफावी इन नये शक्तिशाली हथियारोंके बिना कैसे सफलता पा सकते थे ? आविष्कारोंके इतिहाससे मालूम है, कि युद्ध-सम्बन्धी आविष्कार सबसे जल्दी प्रचलित हो जाते है। तहमास्पकी सेनामें दो हजार तोपची और छ हजार बन्दूकची थे। उज्बेकोंकी सेना यद्यपि तीनगुनी थी, लेकिन उनके हथियार वही पुराने—तीर-धनुष और तलवार-भाले थे। शाह तहमास्प मशहद और हिरातके रास्ते जामके समीप पहुचा—मुख्य सेना गशहदमें डेरा डाले पड़ी थी। बीस हजार ईरानी सवारोंको दुश्मनकी छावनीका पता लगानेके लिये भेजते हुये हिदायत दी गई, कि कोई आदमी अपनेको खाइयोंसे बाहर न दिखलाये। इधर मत्रशास्त्रियोंको लगा दिया गया था, कि वह जादू करके शत्रुको ऐसा बना दें, कि उनमेंसे एक भी बच निकलने न पाये। अभी तैयारी पूरी नही हुई थी, कि शाह तहमास्पने युद्ध करनेकी ठान ली। २५ सितबर १५२९ ई० को जाममे दोनों सेनाये एक दूसरेसे भिड़ी। यह ९ मुहर्रम करबलामें इमाम हुसेनकी शहादतका दिन था, इसलिये शिया शाहने इसी पवित्र दिन युद्ध छेड़ना अच्छा समझा। बीचमें तोपोंको रक्खे बीस हजार चुनी हुई सेना खड़ी थी, जिनके साथ शाह भी था। उज्बेक पार्श्वोंपर आक्रमण कर दोनों छोरोंको पीछे ढकेल पीछेसे भी डेरोंको लूटने लगे। लेकिन पार्श्वोंके इस प्रकार ढकेल दिये जानेपर भी केंद्र मजबूत रहा। ठीक समयपर तोपोंको बाधनेवाली जजीरें गिरा दी गई और वह आग और गोले उगलने लगी। तिगुना जनबल रखते हुये भी उज्बेक घास-मूलीकी तरह कटने लगे। युद्धक्षेत्रमें उनके पचास हजार आदमी काम आये, लेकिन उन्होंने बीस हजार अपने शत्रुओंका भी सहार किया। उज्बेकोंकी भारी हार हुई।

तहमास्पके विजयसे बाबर प्रसन्न नही शकित हो उठा। उसे डर लगा, कही वह खुरासानसे हमारे राज्यकी ओर भी न बढ आये। बाबरने अपने बेटे हुमायूको पचास हजार सेना देकर आगे बढ़नेका हुक्म दिया—हुमायू उस वक्त पिताकी ओरसे बदख्शाका राज्यपाल था। बेटेको इस तरह रवाना करके बाबर स्वय मुगोलिस्तानी राजकुमार सुल्तान वेसके साथ समरकन्दकी ओर चला। वेसके भाई शाह कुल्लीने हिसारको ले लिया। तुरसुन मुहम्मद सुल्तानने तेर्मिज और कबादियानपर हाथ साफ किया। जिस समय हुमायू इस प्रकार, कूचुनजी खानको तहस-नहस करनेमें व्यस्त था उसी समय बाबर आगरामें कूचुनजीके दूत अमीन मिर्जाकी बड़ी आवभगत कर रहा था। भोजके बाद सिरकमाश मलमलका जामा, और बहुमूल्य वटन, सोना तथा दूसरी चीजें भेंटमें पा ३१ जनवरी १५२९ ई०को उज्बेक दूत बाबरसे विदा हुआ। दूत अमीन मिर्जाको एक खाडा, एक कमरबन्द, एक हाथीका अकुश तथा कई हजार तका इनाम मिला था। इसी तरह दूतकी बीबी मेहरबान खानम और उसके पुत्र पूलादको भी बाबरने भेंट-इनाम देनेमें बड़ी उदारता दिखलाई। दूतको क्या पता था, कि जिस समय पिता उसकी इतनी खातिर कर रहा है, उसी समय उसका बेटा (हुमायू) उज्बेकोंके राज्यमें आग और तलवारका जौहर दिखला रहा है।

लेकिन इस भीषण सग्रामके खतम करनेका समय यकायक आ गया, जब कि १५३० ई०में कूचुनजी मर गया और उसी सालके दिसम्बरमें बाबरकी प्रार्थना स्वीकृत हुई—हुमायू बीमारीसे बच गया, लेकिन उसके बदलेमें अल्लाने बाबरको बुला लिया।

३ अबूसईद खान (१५३०-३२ ई०)

कूचुनजी (अबुल्खैर-पुत्र)के राज्यकालमें ही उसके उत्तराधिकारी (कलगा) चुने गये सूयुन्जिक तथा जानीबेग खोजा (मुहम्मद-पुत्र) मर गये, इसपर कूचुनजीके पुत्र अबूसईदको खान चुना गया। पिताकी भाति इसने भी अपनी राजधानी समरकन्दमें रक्खी। लेकिन, उज्बेक सैनिक-

घातिका मसाला अब उबैदुल्ला था, जो बुखारामें रहता था। ईरानियासे एक बार बुरी तरहसे हार खानेके बाद भी उबैदुल्ला फिर खुरासानकी ओर बढ़ना चाहता था, मगर अबुसईद और दूसरे सुल्तान (राजकुमार) इसमें सहमत नहीं थे। बारूदके हथियारोंने इन घुमन्तुओंकी हिम्मत तोड़ दी थी। ईरानका सफ़वीवाला झंडा एक बार फिर सारे खुरासानपर फहराने लगा। तहमास्पने अपने भाई बहराम मिर्जाको अपना उपराज बनाकर खुरासानका शासक बनाया। उबैदुल्ला सेनाका प्रधान-सेनापति था, इसलिये उसने रायसहानगर भी १५३१ ई०में मशहदकी ओर अभियान किया, लेकिन बहरामसे हार खाकर भागनेके सिवाय कुछ हाथ नहीं लगा। घुमन्तू टिड्डी-दलकी तरह हारसे भय खाकर सदाके लिये पीछे नहीं भाग सकते। १५३२ ई०में उज्बक-सेनाने हिरात, मशहद, अस्त्राबाद और मज़ंदरानतकके सारे प्रदेशको डेढ़ सालतक लूटा-बरबाद किया। घिरावेमें पड़े हिरात शहरके लोगोंने खानाभावमें कुत्ते-बिल्लियोंको खाकर खतम कर दिया। शहर आत्म-समर्पण करनेकी सोच रहा था, इसी समय तहमास्पको पश्चिममें उस्मानी तुर्कोंसे छुट्टी मिल गई और वह खुरासानकी ओर बढ़ा, जिसपर उबैदुल्ला लौट गया। ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२८ VI १५३३ ई०) में अबूसईद मर गया।

४ उबैदुल्ला, महमूद-पुत्र (१५३२–४० ई०)

विजेता मुहम्मद शैबानीका भतीजा उबैदुल्ला खान बनकर और भी निरंकुश हो गया। १५३५ ई० में उसने फिर खुरासानमें लूट-मार करनेके लिये सेना भेजी, और अगले साल खुद खुरासानकी ओर बढ़ा। चार मासतक हिरातपर उसका अधिकार रहा, जिसमें उसने शियापर बहुत अत्याचार किये। शाह तहमास्पका पूरबमें ही जबर्दस्त शत्रु नहीं था, पश्चिममें उस्मानी तुर्कोंसे उसका संघर्ष चलता रहता था, जिसमें राजनीतिके साथ-साथ शिया-सुन्नीका झगड़ा भी शामिल हो जानेसे युद्धका रूप बहुत भीषण होता था। जब वह अपनी अधिकांश सेना ले पूरबकी ओर बढ़ता, तो पश्चिमका शत्रु प्रहार करने लगता, और जब वह पश्चिमकी तरफ मुँह करता, तो पूरबकी ओरसे प्रहार होने लगता। जब शाह तहमास्प खुरासानमें उबैदुल्लाके खिलाफ सेना लेकर आया, तो उबैदुल्ला देश लौट गया। तोपों और बंदूकोंके डरके मारे अब उज्बेक जमकर लड़नेकी हिम्मत नहीं करते थे, लेकिन खुरासानमें लूट-मार करनेके लिये वह दो-तीन बार और जाते रहे।

इसी बीच खीवा (ख्वारेज्म) में उज्बेकोंका एक और स्वतंत्र राज्य कायम हो गया, जिसके कारण वहाँ गड़बड़ी फैल गई। उससे फायदा उठा उबैदुल्ला अपने अमीरोंके साथ उरगजके ऊपर चढ़ा। ख्वारेज्मके राजकुमार मङ्गिशलककी ओर भाग गये। उरगंज पहुँचकर उबैदुल्लाने उन्हें पकड़नेके लिये सेना भेजी और अवानेक खान अपने सारे लोगोंके साथ वेजिरसे उत्तर वेगातकिरी स्थानमें पकड़ा गया। उबैदुल्लाने अवानेकको उमरगाजीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर अपने बापकी हत्याका बदला लिया। उबैदुल्लाने ख्वारेज्मको अपने पुत्र अब्दुल अजीजके हाथमें दे दिया। वहाँके निवासी सर्तो (फारसी भाषाभाषियों) और तुर्कोंको उबैदुल्लाने नहीं छेड़ा। उज्बेकोंको चार भागोंमें बाँटकर उसने बुखारा (उबैदुल्ला), समरकन्द, ताशकन्द और हिसारके सुल्तानोंको दे दिया। लेकिन अवानेश खानका पुत्र दीन मुहम्मद अब भी अपनी रियासत देरूनका स्वामी था। उसके पास उरगंजसे भी कितने ही भगोड़े आ गये थे। दीन मुहम्मदने खीवापर धावा कर दारोगा (राज्यपाल) और उसके आदमियोंको हराकर मार दिया। हजारास्पका दारोगा भी जान लेकर भागा। अब्दुल अजीजकी भी हिम्मत उरगंजमें रहनेकी नहीं हुई, और वह भी वहाँसे खिसका। खबर सुनकर उबैदुल्ला चार हजार सेना लेकर पहुँचा, जिसके मुकाबिलेके लिये दीन मुहम्मद भी अपने तीन हजार सैनिकोंके साथ तैयार था। अमीरोंने मना किया, लेकिन दीन मुहम्मदने नहीं माना। घोड़ेसे उतरकर उसने अपने कुर्तेपर मिट्टी फेंकते हुये कहा—"मेरे अल्लाह, मैं अपना आत्मा–प्राण तेरे हाथोंमें देता हूँ और अपना शरीर धरतीको।" फिर उसने पीछे मुँह फेरकर कहा—"मैं अपनेको मरा हुआ समझता हूँ। तुममेंसे जिसको अपना प्राण मुझसे ज्यादा प्यारा हो, वह मेरे साथ आगे न बढ़े, जिसको नहीं वह आये।"

यह कहकर दीन मुहम्मद फिर घोड़ेपर चढ़ा। उसके सैनिक भी उत्साहसे भरे उसके पीछे-पीछे चले। पहली भिड़तमें ही उन्होंने दुश्मनोंको भारी क्षति पहुंचाई। दोनों उज्बेक जातिके ही लोग थे, इसलिये समझौतेकी बात चलने लगी। इसी बीच ९४६ हि० (१९ V १५३९–८ IV १५४० ई०) में उबैदुल्ला मर गया। इतिहासकार हैदरके अनुसार पिछले सौ सालोंमें उबैदुल्ला जैसा बादशाह नहीं हुआ था। वह बड़ा ही सदाचारी, नम्र, धार्मिक, संयमी, न्यायपरायण, उदार और वीर पुरुष था। उसने अपने हाथसे कई कुरानकी प्रतियां लिखीं। तुर्की-अरबी-फारसीका वह कवि तथा संगीतज्ञ था। उसके समयमें राजधानी बुखारा हुसैन मिर्जाके हिरातकी याद दिलाती थी।

५ अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र (१५४० ई०)

यह थोड़े ही समय बाद मर गया, और फिर उसका भाई गद्दीपर बैठा।

६ अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र (१५४०–५१ ई०)

१५२६ ई० में बलख जीतनेके बाद उसे जानीबेगके पुत्र पीर मुहम्मदके बेटेको दे दिया गया था। अब्दुल्लतीफके समय १५४७ ई०में अपने भाई हुमायूँसे विद्रोह करके बाबर-पुत्र कामरान काबुलसे बलखकी ओर भागा। पीर मुहम्मदने उसका स्वागत किया और उसे सेना देकर लौटाया। कामराननें गोरी और बकलानपर अधिकार कर लिया। इस समय पीर मुहम्मद उसके साथ था और यहींसे सेना देकर लौट गया। प्रतिद्वन्द्वी भाईकी इस तरह सहायता करनेके लिये बादशाह हुमायूं बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने बलखके विरुद्ध अभियान किया। हुमायूं इस वक्त अन्दराब, तालिकान होते नारीडाड़ेको पार हो निलवरकी सुन्दर उपत्यकामें होते बक्लान पहुंचा और सेनाको ऐबकके ऊपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया—बलख-राज्यमें ऐबक एक बहुत ही उर्वर और समृद्ध इलाका है। ऐबक ले लेनेके बाद खोल्म होते हुमायूंकी सेना आगे बढ़ी, लेकिन प्राकृतिक और मानवी प्रतिरोध इतने कड़े हुये, कि उसे लौटना पड़ा। हुमायूंके लौट जानेपर कामराननें बदख्शांपर असफल आक्रमण किया। अब्दुल्लतीफके शासनकालमें की यही एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ९५९ हि० (२९ दिसंबर १५५१–१८ नवम्बर १५५२ ई०) में अब्दुल्लतीफ मर गया।

७ नौरोज मुहम्मद, सूयुनजी-पुत्र (१५५१-५६ ई०)

उज्बेक और उस्मानअली तुर्क-राज्योंके बीचमें सुन्नियोंकी घृणाके पात्र सफावी शियोंका राज्य था, जिनसे दोनों लड़ते रहते थे। इसके कारण दोनों सुन्नी तुर्क-शासकोंके बीचमें अब बहुत घनिष्ठता स्थापित हो चुकी थी, जिसे ब्याह-शादीद्वारा भी दृढ़ करनेकी कोशिश की जाती थी। नौरोजके शासन कालमें दोनों राज्योंमें दूतोंका बहुत दानादान होता रहा।

८ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५५६-६१ ई०)

पीरमुहम्मदके शासनके बारेमें यही कहा जा सकता है, कि अभी शैबानियोंकी शक्तिका ह्रास होना शुरू नहीं हुआ था।

९ इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र (१५६१-८३ ई०)

इस्कन्दरके शासनकालमें राज्यका सर्वेसर्वा उसका पुत्र अब्दुल्ला था। अब्दुल्लाने १५५६ ई० में बुखाराकी शाखाको खतम कर दिया। फिर ९६८ हि० (२२ IX १५६०–१३ VII १५६१ ई०) में उसने अपने पिताको "खाकानेजहां" (दुनियाका राजा) घोषित किया। ९८६ हि० (१० III १५७८–२९ I १५७९ ई०) में उसने समरकन्दकी शाखाको भी खतम कर दिया, जिससे पहिले १५८१

ई०में बाबाजान सुल्तानपर उसने विजय प्राप्त कर ली थी। अब्दुल्ला असाधारण आदमी था, इसमें सन्देह नहीं। जीजकसे समरकन्दकी ओर आनेवाले रास्तेमें जीलानउति डांडेपर एक चट्टानके ऊपर उसने एक अभिलेख खुदवाया है—"रेगिस्तानको पार करनेवालो और जलयानके यात्रियोंको मालूम होना चाहिये, कि ९७९ हि० (२६ मई १५७१–१५ अप्रैल १५७२ ई०)में खलाफतके सहायक, महाखाकान सर्वशक्तिमान् महाखान इस्कन्दरखान-पुत्र अब्दुल्लाके तीस हजार सैनिकों, और बोरका खानके पुत्र दरवेशखान-बाबाखान आदिकी सेनाओंके बीचमें युद्ध हुआ। उसकी सेनामें सुल्तानके पचास सम्बन्धी और तुर्किस्तान-ताशकन्द फरगाना-दश्तकिपचकके चालीस हजार योद्धा थे। तारोंके सौभाग्यसूचक समायोगसे शाहकी सेनाको विजय प्राप्त हुई। उपर्युक्त सुल्तानोंमें बहुत-से मारे गये, और बहुतसे बन्दी हुये। इस एक महीनेके भीतर इतना खून बहा, कि जीजक नदीके पानीके ऊपर खून तैरता रहा। ।"

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि चट्टानोंपर अभिलेख खुदवानेवाले मध्य-एसियामें बहुत कम ही खान और सुल्तान हुये।

९८७ हि० (२८ II १५७९–१९ I १५८० ई०)में बाबाखानने ताशकन्द ले अपने भाई दरवेशको मार डाला। अब्दुल्लाको यह खबर खोकन्दके इलाकेमें मिली। उसने पहुँचकर ताशकन्दके पास बाबाको हराकर भगा दिया। अब्दुल्लाको सूचना मिली, कि वह कजाकोंके बीच जाकर छिपा है। इसपर उसने उसे पकड़नेके लिये तलस और सैरामतक सेना भेजी। १५७९-८० ई०में कजाकोंने यस्सी और सरवान ले लिया, फिर सरवान-सुल्तानके नेतृत्वमें बुखारातक और बादमें समरकन्दतकके इलाकेको लूटा। इसी बीच बाबाका कजाकोंके साथ झगड़ा हो गया और वह उनके कई सर्दारोंको मार, उनके खान सिगाईको हराकर भारी लूटके मालके साथ ताशकन्द लौटा।

बाबाने फिर अब्दुल्लाकी नींद हराम कर दी और १५८१ ई०में वह उसके विरुद्ध उजकदतक पहुँचा। जब उसका डेरा कराताउमें पड़ा हुआ था, उसी समय सिगाई खान उसके पास आया, जिसे उसने खोजन्द शहर प्रदान किया। कजाकोंसे और घनिष्ठ मित्रता करनेके लिये बखारामें एक बहुत बड़ा जल्सा मनाया गया, जिसमें अब्दुल्लाके पुत्र अब्दुल-मोमिन और सिगाईके पुत्र तवक्कलने खेलमें अपनी सिद्धहस्तता दिखलाई। १५८३ ई०में अब्दुल्लाने फरगाना और अन्दिजानको जीता, जिसमें कजाक तवक्कल खान उसका सहायक रहा। बाबा सुल्तानके पतनके बाद तुर्किस्तान और ताशकन्दने अब्दुल्लाकी अधीनता स्वीकार की। इसी साल पिताके मरनेपर अब्दुल्ला शैबानी-तख्तपर बैठा।

१० अब्दुला II, इस्कन्दर-पुत्र (१५८३–९६ ई०)

अब्दुल्ला अकबरका समकालीन था। बापके समयमें भी सारा राजकाज तथा दिग्विजय अब्दुल्ला ही करता रहा। अब्दुल्लाकी सबसे बड़ी इच्छा थी, मुहम्मद शैबानीके साम्राज्यकी सीमाओं तक अपने राज्यको पहुँचाना, जिसमें वह बहुत कुछ सफल भी हुआ। शैबानियोंका वह सबसे बड़ा खान था। इस्कन्दरके मरनेके वक्त वह खोजन्दमें था। वहीं शैबानी-सुल्तानोंने उसे अपना खाकान चुना, और मक्काके जमजमके पानीमें भिगोकर पवित्र किये गये सफेद नम्देके ऊपर बैठाकर उसे अपने कन्धोंपर उठाया। इस प्रकार छिङ्गिस और उसके पहलेसे चली आई नम्दारोहण (सिंहासनारोहण) की रसम अदा की गई। अमीर यहाँसे जमीन गये, जहाँसे गद्दी पानेकी खबर दी गई। अपने पिताके समयमें ही अब्दुल्लाने कजाक-मरुभूमिसे काबुलकी सीमातकके बहुतसे प्रतिद्वन्द्वियों और शत्रुओंको परास्त किया, और छोटी-छोटी रियासतोंमें बटे उज्बेक राज्यको एकताबद्ध किया था। उसके राज्यकी सीमा उत्तरमें सिर नदीसे आगेकी मरुभूमितक तथा पूरबमें काशगर और खोतनतक थी।

दक्षिणमें अकबर और सफावी शाहके साम्राज्य उसके आगे बढ़नेमें बाधक थे, लेकिन बलख और बदख्शाको उसने दिल्लीसे छीन लिया था ।

शाह तहमास्पके मरनेपर अब्दुल्लाकी शक्ति और भी अधिक बढ़ी। ख्वारेज्म आपसी फूटसे अस्त-व्यस्त था, जिसका अन्त करनेवाला शाह अब्बास (१५८७–१६२९ ई०) ईरानके अत्यन्त शक्ति-शाली शाहोंमेंसे था। १५८५ ई०में शाह अब्बासको उस्मानी तुर्कोंकी लड़ाईमें फंसा देखकर उज्बेकोंने हिरातपर आक्रमण कर दिया और नौ महीनेके मुहासिरेके बाद उसपर अधिकार कर लिया। इस लड़ाईमें राज्यपाल अलीकुली खान शामलू और कितने ही दूसरे ईरानी सेनापति काम आये । सुन्नी-उज्बेक शियोंको काफिरोंसे भी बदतर मानते थे, इसलिये उन्होंने हिरातियोंके साथ बहुत कठोर बर्ताव किया। सदियोंसे शिया-सुन्नी मुल्ला कलमकी लड़ाई लड़ रहे थे, और उनके सुल्तान अपनी तलवारों द्वारा एकको मिटाकर इस भेदको मिटाना चाहते थे । तरुण शाह अब्बास जब कजवीनसे अपनी सेना लेकर खुरासानकी ओर बढ़ा, तो अब्दुल्ला चुपकेसे मेव होते बुखारा लौट गया । मशहद पहुंचनेपर अब्बासको पता लगा, कि तुर्कोंने गुरजी (जार्जिया)पर आक्रमण कर दिया है। अब्बास जल्दी-जल्दी उधर लौटा, लेकिन लड़ाईमें उसकी हार हुई। इसकी खबर पाते ही अब्दुल्ला मशहदपर चढ़ दौड़ा। उसके हरावलका नेतृत्व अब्दुल-मोमिनके हाथमें था, जिसने मशहदपर भारी अत्याचार किये । अब्दुल-मोमिन बड़ा ही बर्बर, क्रूर, महत्त्वाकांक्षी आदमी था। वह एक बड़ी सेना लिये दीन मुहम्मदके साथ जल्दी-जल्दी आगे बढ़ा। हिरातका राज्यपाल तथा अब्दुल्लाका विश्वासपात्र सेवक कुलबाबा कोकलताश भी उसके साथ था। इस सेनाने पहले नेशापोरपर आक्रमण किया। कुछ थोड़ेसे आदमी पकड़कर छोड़ दिये गये । नेशापोरको लूटकर वह शियोंके पवित्र नगर मशहदपर बढ़े—लूट-मारके भयसे बहुतसे गांवके लोग भी मशहदको सुरक्षित समझ वहां चले आये थे। इतने आदमियोंके लिये अन्न कहांसे मिलता ? अकाल पड़ गया। पहले ही प्रहारमें नगरपर उज्बेकोंका अधिकार हो गया, और वहांके राज्यपाल उम्मत खान उस्ताजलका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया। अब्दुल-मोमिनके सैनिकोंने शहरके भीतर जाकर देखा, कि "बहुसंख्यक स्त्री-पुरुष, संत और विद्वान्, सभी इमाम रजाके रौजेके बाहरी आंगनमें इस आशासे जमा हो गये हैं, कि स्थानकी पवित्रताके कारण शायद उन्हें प्राणदान मिल जाय। लेकिन, उज्बेक शिया-पवित्रस्थानको कब माननेवाले थे ? उन्होंने बिना किसी विचारके जो भी चीज सामने आई, उसे काटा और नष्ट कर दिया।" पैगंबरके नातीकी सन्तान इमामरजाके वंशजोंको भी उन्होंने नहीं छोड़ा—वह बेचारे अपने पूर्वज शहीदकी कब्रसे लिपटे हुये थे। कहा जाता है, अब्दुल-मोमिन स्वयं उस समय मीर अलीशेखके महलसे तमाशा देख रहा था, जब कि उसके आदमी अपनी तलवारोंको इन निरपराध स्त्री-पुरुषोंके खूनसे रंग रहे थे। न जाने कितने अच्छे-अच्छे विद्वान् और धर्मशास्त्री भी इस हत्याकांडमें मारे गये। हजारों आदमियोंके करुण क्रंदनसे भी उज्बेकोंका दिल नहीं पसीजा। सिर्फ सड़कों और आंगनोंको ही नहीं, बल्कि पवित्रतम स्थानों और मस्जिदोंको भी उन्होंने खूनसे रंग दिया । मशहदके हत्याकांडमें अलीके वंशजोंकी कब्रोंको भी अब्दुल मोमिनने नहीं छोड़ा, और उन्हें तोड़-फोड़कर नष्ट कर दिया । तीन शताब्दियोंसे तीर्थयात्री और दूसरे धार्मिक लोगोंने जो मूल्यवान् भेंटें—अतिविशाल सोने और रूपेके दीपस्तम्भ, बहुमूल्य धातुओं और रत्नोंसे जटित कवच, दुर्लभ रत्न, तथा दूसरी कितनी ही अनमोल चीजें—इमामरजाकी समाधिपर चढ़ाई थी, उन सबको विजेताओंने लूट लिया। यही नहीं, उन्होंने वहांके विशाल पुस्तकालयको भी ध्वस्त कर दिया, जिसमें पुराने सुल्तानोंके दान दिये कितने ही प्रसिद्ध कुरानके अत्यन्त सुन्दर कलापूर्ण हस्तलेख थे। "शियोंकी पुस्तकें" कहकर उन सबको घसीटकर सड़कोंपर ले गये और फाड़कर उन्हें पूरी तौरसे नष्ट कर दिया। सुन्नी विजेताओंने मुर्दोंके ऊपर भी रहम नहीं किया। इमाम रजाके पास सोये शाह तहमास्पकी लाशको जलाकर उन्होंने हवामें उड़ा दिया।

शाह अब्बास उस समय बीमार था, इसलिये तेहरानसे नहीं आ सका। जैसे ही स्वस्थ हुआ, वह तैयारी करने लगा। लेकिन अधिकांश खुरासान—हिरात, मशहद, मेरूस, मेव, साप, जाम, पंजदेह, गोरियान—अब्दुल्लाके हाथमें करीब-करीब उसकी मृत्युके समयतक रहा।

[१५८६ ई० में ही अब्दुल्लाको खुरासानकी ओर गया जानकर उत्तरसे कजाकोंने लुटेरोंके घर को लूटनेका निश्चय किया और तवक्कल खान तथा उसके भाई इशिमके नेतृत्वमें वह ताशकन्दपर चढ़ आये। लूटकर जब वह रेगिस्तानकी ओर लौट रहे थे, तब अब्दुल्लाके भाई उबदुल्लासे उनका मुकाबिला हुआ।

जिंदगीभर सफल करते हुये भी अब्दुल्लाका जीवन असफल रहा, ऊपरसे अंतमें पुत्र अब्दुल मोमिन के बर्तावोंने उसे और दुखी बना दिया। उत्तरके कजाक उसे दम नहीं लेने दे रहे थे। १५९६ ई०में उनके खान तवक्कलने फिर चढ़ाई की, और ताशकन्दको लूटा, फिर ताशकन्द एवं समरकन्दके बीचमें अब्दुल्लाको बुरी तरह हराया। उधर शाह अब्बास ख्वारेज्मके उज्बेकोंसे दोस्ती कर उनकी मददसे मेव, मशहद और हिरातको छीननेके लिये तैयार था। इस प्रकार अब्दुल्लाने अन्तमें अपनी आंखोंके सामने ही अपने कियेपर पानी फिरते देखा और ६ फवरी १५९७ ई०को अर्थात् अकबरसे आठ वर्ष पहले बेटेके हाथों प्राण खोया।

११ अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र (१५९६–९७ ई०)

अब्दुल्लाके मरते ही देशमें अराजकता फैल गई। पिताको मारकर तख्त लेनेकी इच्छा रखनेवाले पुत्रने गद्दी संभालते ही पहले पिताके विश्वासपात्र सेवकोंको मरवाना शुरू किया, जिसके कारण दरबारी उसके खूनके प्यासे हो गये। उसे चारों ओर षड्यंत्र ही षडयंत्र दिखाई देता था। जुलाई १५९७ ई०में गर्मीसे बचनेके लिये वह रातमें यात्रा कर रहा था। मशालची और कितने ही सवार उसके साथ थे। उरातिपा और जमीनके बीचमें एक सकरा दर्रा आया, जिसमें मशालचीके साथ सिर्फ दो सवार एक साथ गुजर सकते थे। इसी समय इस आततायीके ऊपर बाणोंकी वर्षा होने लगी। मोमिन घायल होकर गिर पड़ा, और हत्यारोंने तुरन्त उसका शिर काट लिया। दूसरे दिन पीछेसे आनेवालोंने पोशाकसे उसके धड़को पहचाना। इस प्रकार छ महीना शासन करनेके बाद इस राक्षसने सचमुच ही नरकका रास्ता पकड़ा।

१२ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९७–९९ ई०)

अब्दुल मोमिनके मरनेपर तख्तके बहुतसे दावेदार उठ खड़े हुये, लेकिन शैबानी-वंशके अंतिम खान बननेका सौभाग्य पीर मुहम्मदको हुआ। जुलाई १५९८ ई०में शाह अब्बासने हिरातके पास कूलेसालारमें उज्बेकोंको करारी हार दी, और उनसे सब्जवार, मशहद और हिरात छीन लिया। देशकी इस अवस्थाकी खबर कजाकोंको भी मिले बिना नहीं रही, और तवक्कल अपने सत्तर अस्सी हजार सवारोंके साथ तुर्किस्तान-शहर, अक्सी, अंदिजान, ताशकन्द, समरकन्दको लूटते-अधिकार करते बुखारा पहुंचा। पीर मुहम्मद पंद्रह हजार सैनिकोंके साथ नगरमें घिर गया। बारहवें दिन फाटकसे बाहर निकल उसने कजाकोंको बुरी तरह हराया। लुटेरोंके विरुद्ध लोग एक हो गये थे। मियानकुलके उजुनसकालमें दुश्मनोंसे फिर मुकाबला हुआ। बाकी मुहम्मद भी युद्धके आरम्भके समय भाग ले रहा था, लेकिन इसी समय खुरासानमें अब्बासद्वारा उज्बेक-सेनाके घोर पराजयकी खबर पहुंची। कजाकोंसे महीनेभर केवल जब-तब झड़प करते रहनेके बाद युद्ध हुआ, जिसमें दोनोंकी बहुत क्षति हुई। तवक्कल घायल न हो जाता, तो शायद उज्बेकोंका उसी समय खातमा हो जाता। तवक्कल ताशकन्द लौटकर मर गया, और एक नक्शबन्दी शेख (साधु)ने बीचमें पड़कर कजाकों और उज्बेकों में सुलह करवा दी। बाकी मुहम्मदको समरकन्द मिला, लेकिन वह तो पीर मुहम्मदसे तख्त छीनना चाहता था। पीर मुहम्मद समरकन्दमें लड़ते वक्त मारा गया, और बाकी महम्मदकी इच्छा पूर्ण हुई। बाकी मुहम्मद अब्दुल्ला II की बहिन जोहरा खानम तथा जानीबेग सुल्तानका बेटा था। पीर मुहम्मद के साथ शैबानी वंशका अन्त हुआ।

इतिहास-लेखक वेम्बरीके अनुसार शैवानियोंके कालमें पूर्वी और पश्चिमी इस्लाम पूरी तौरसे अलग हो गया, और उसने वह रूप लिया, जो उसका आज भी मौजूद है। ईरान, चीन (सिङ-क्याग) और हिंदुस्तान पूर्वी इस्लामके अन्तर्गत हुये और पश्चिमके देश पश्चिमी इस्लाममें। चीन और मध्य-एसियाके मुसलमानोंमें साधु-सतो, जादूगरो और ज्योतिषियोका बहुत ज्यादा मान था। यदा-तासी (जादूके पत्थर)से वह वायु-जल-नियंत्रण रोगमुक्ति और युद्धमें विजय प्राप्त करना चाहते, इस्लाममें भी अधिक उसके सतो और सूफियोंपर विश्वास रखते थे। मगोलोके शासनकालमें मुट्ठीभर मुल्ला और सूफियोंके खानदानोंने धर्मकी इजारादारी अपने हाथमें ले ली थी, जिनके सामने अत्यन्त शक्तिशाली और स्वेच्छाचारी सुल्तान भी शिर झुकानेके लिये तैयार थे। यह लोग राजा और प्रजा दोनोंके भक्तिभाजन थे---साधारण जनता समझती थी, कि उनके पास दिव्य शक्ति है। उनके प्रति सुल्तान और खान केवल भारी सम्मान ही नहीं दिखलाते थे, बल्कि अपनको उनका तुच्छ सेवक साबित करनेकी कोशिश करते थे। मखदूम आजम मौलाना खोजकी काशानी---प्रसिद्ध खोजा अहरारका शिष्य---अपने त्याग और वैराग्यपूर्ण जीवनके लिये बहुत माननीय समझा जाता था, और अपनी दिव्य शक्तिके कारण लोगोंमें सम्मान ही नहीं भयकी दृष्टिसे भी देखा जाता था। वह २१ महर्रम ९४९ हि० (७ मई १५४२ ई०) मे मरा। उसकी समाधि देहबिदमें है, जहांपर हालतक लोग भारी सख्यामें तीर्थयात्राके लिये जाते थे।

साहित्य-संस्कृति---शैवानी-कालमें तुर्की भाषा और साहित्यका सर्वत्र प्रचार हुआ। कितने ही कवि अब केवल तुर्की (उज्बेकी)में ही कविता करते थे, यद्यपि अन्तर्वेदके गाव-गावमें भी ताजिकोंके रहनेसे पुरानी भाषा फारसीका इतना प्रचार था, कि प्राय सभी तुर्क स्त्री-पुरुष द्विभाषी थे। इन कवियोंमें सबसे प्रसिद्ध उज्बेक-राजकुमार मुहम्मद सालेह था, जिसके पिताको तेमूरियोंने ख्वारेज्म-के राज्यसे वंचित कर दिया था वह तरुणाईमें ही शैवानियोंके दरबारमें चला आया। अपने महाकाव्य "शैवानीनामा" द्वारा किसी-किसीके मतमें वह नवाईसे भी बड़ा कवि है। इस समयके दूसरे बड़े कवि थे--अमीर अली कियातिब, प्रथम शैवानी-राजकवि मुल्ला नीरक, मुल्ला मुशफिकी (मृत्यु १५८५ ई०), काजी पायन्दा, जमीनी, वजीर। पायन्दाने कुलबाबा कोकलताशकी प्रशसामें एक काव्य लिखा, जिसमें बिंदीवाले अक्षरो (बे, ते, जीम, चे, खे, जाल, जे, शीन, ज्वाद, जोय, गैन, फे, काफ और नून) का प्रयोग नहीं किया। शीरी खोजा उबैदुल्लाकालीन, और खैर हाफिज [मृत्यु ९८१ हि० (१५७३-७४ ई०)] इस कालके मशहूर सगीतकार और गायक थे---खैर हाफिज अब्दुल्लाके दरबार-में था।

शैवानीकालमें खान, खानजादो तथा अमीरोंने मस्जिदो, मदरसा और रौजोंको बनानेमें होड़-सी लगा रक्खी थी। वजीर कोकलताशने १५२७ ई० (९३४ हि०)में समरकन्दमें अपने नामकी विशाल मस्जिद बनवाई, जिसके सगमर्मरके मेम्बर (वेदी) को कूचुनजी खानने प्रदान किया। अब्दुल्ला खानका बनवाया मदरसा बोल्शेविक क्रांतिके पहलेतक मौजूद था। इसके विशाल फाटकपर कुरानकी आयतें लिखी हुई हैं, जिसके एक-एक अक्षर दो फिट लम्बे हैं। अब्दुल अजीज खानने अरबोंके वक्तकी बनवाई मोगक मस्जिद (पारसी मदिर)की मरम्मत करवाई और बुखारासे थोड़ी दूरपर अवस्थित खोजा बहाउद्दीनके सुन्दर मकबरेको बनवाया। अबूसईदने समरकन्दमें एक बड़ा मदरसा बनवाया। करोड़पति मीर अरबने बुखारामें एक मदरसा स्थापित किया, जिसके बारेमें हालके लेखकोंने लिखा है---"यह सारे मध्य-एसियाका सबसे अधिक वमस्व-सपत्ति रखनेवाला मदरसा है।"

इस समयके सुल्तानोंमें सभी जगह कवि होनेकी बड़ी लालसा थी, और उनमेंसे कुछको कविकर्ममें सफलता भी मिली। इस्माईल, तहमास्प, अब्बास फारसीके कवि थे। मुहम्मद शैवानी, उबैदुल्ला, अब्दुल्ला II भी कवि थे। बाबर, हुमायं और अकबरने भी कविता की, जिसमें बाबर तो तुर्की भाषा का आज भी एक श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

शैबानी वंशवृक्ष—
(१५००–९९ ई०)
अबुल्खैर
शाहबुदाग
कोजा मुहम्मद
२ कूचुनजी (१५१२-३०)
सूयुनजी
महमद सु०
१ मुहम्मद (१५००-१२)
जानीबेग
७ नौरोज (१५५१ ५६)
३ अबसईद (१५३०-३२)
५ अब्दुल्ला I (१५४०)
६ अब्दुल्लतीफ (१५४०-५१)
४ उबैदुल्ला (१५३३-४०)
८ पीर मु० (१५५६–६१)
९ इस्कंदर (१५६१-८३)
सुलेमान
१२ पीर मु० (१५९७-९९)
१० अब्दुल्ला II (१५८३-९६)
जुहरा=जानीबेग
११ अब्दुल्मोमिन (१५९६-९७)
दीन मु०
बाकी म०
वली मुहम्मद

अध्याय ५
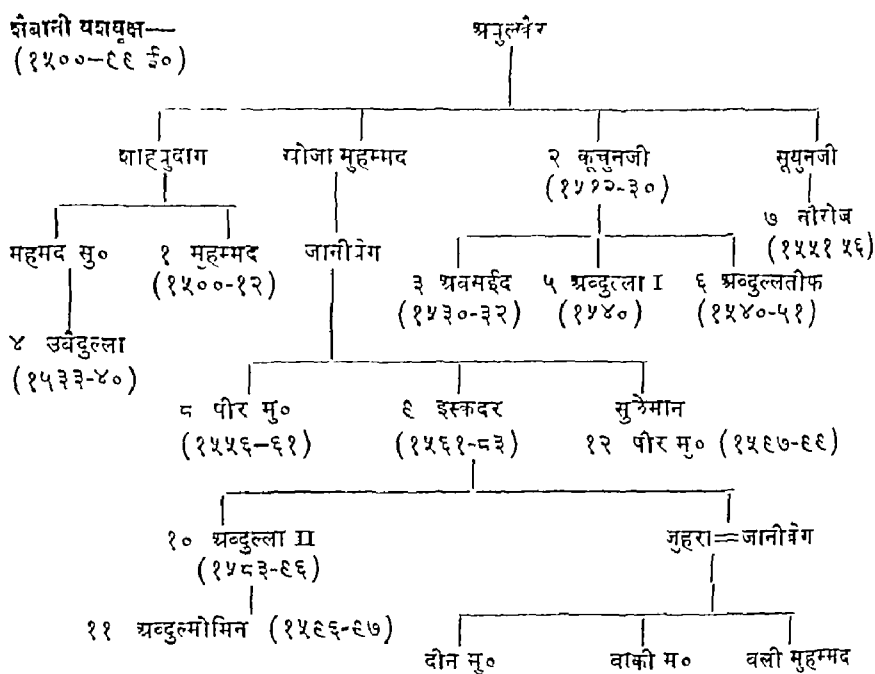
अस्त्राखानी (१५९९--१७४७ ई०)

१ दीन मुहम्मद (१५९८ ई०)

सुवर्ण-ओर्दूकी राजधानी सरायवरका जब ध्वस्त हो गई, और ज्-छिका उलुस कई टुकड़ोंमें बट गया। उस वक्त उनके एक खानकी राजधानी वोल्गा और कास्पियनके संगमपर अस्त्राखान थी। सुवर्ण-ओर्दूके प्रसिद्ध खान कूचुक मुहम्मदका पुत्र अहमद उसका उत्तराधिकारी बना। कूचुकका दूसरा पुत्र चुवाक सुल्तान था, जिसका पुत्र मंगिशलक और पौत्र यार मुहम्मद थे। जब रूसियोंने अस्त्राखानको भी छीन लिया, तो यार मुहम्मद खानने भागकर बुखारामें इस्कन्दर खानके पास शरण ली। अस्त्राखानी और शैवानी दोनो ही ज-छिके वंशज थे। इस्कन्दरने यार मुहम्मदका बहुत सम्मान किया और उसके लड़के जानीवेग सुल्तानके साथ अपनी लड़की जोहरा खानमका ब्याह कर दिया। जानीवेग ९७५ हि० (८ जुलाई १५६७--२८ मई १५६८ ई०) की विजय-यात्राओंमें अपने साले अब्दुल्लाके साथ रहा। अब्दुल्लाके समय उसके भाजे दीन मुहम्मदने खुरासानके कई शहरोंपर शासन किया, अन्तमें वह निसा और अबीवर्दका राज्यपाल बना। अब्दुल मोमिनने उसके पिता जानीवेगको जेलमें डाल दिया था, इसपर विद्रोह करके दीन मुहम्मदने हिरात लेनेका असफल प्रयत्न किया। अब्दुल मोमिनके मरनेके बाद ईरानी फिर खुरासानको जीतनेका प्रयत्न करने लगे। इसने भी हाथ-पैर फैलानेकी कोशिश की। अब्दुल मोमिनके बाद शहर-शहरमें खान (राजा) बनते जा रहे थे। दीन मुहम्मदने भी मक्का-मदीनासे लौटे अपने दादा सुल्तान यार मुहम्मदके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना चाहा। मेवमें कासिम सुल्तानने अपना राज्य कायम किया, लेकिन जल्दी ही वह मार डाला गया। मेर्वको भी दीन मुहम्मदके छोटे भाई वली मुहम्मदने बड़े भाईके नामसे दखल कर लिया। जुलाई १५९८ ई०में नर मुहम्मदको हराकर शाह अब्बासने हिरात ले लिया। दीन मुहम्मद हारकर भागा जा रहा था, लेकिन शाही कपड़ोंके कारण पहचाना गया और काराई घुमन्तुओंने उसे मार डाला। बाकी मुहम्मदने तवक्कलसे लड़कर पराजित होते समय खबर दी और उसे समरकन्दका राज्य मिला।

शायद हिरातमें कुलेसालारके निर्णायक युद्धके समय ही यार मुहम्मद और जानीवेग मारे गये, यद्यपि इससे पहले ही हिरातमें यार मुहम्मदने अपनेको खान घोषित कर दिया था। दीन मुहम्मदके मरनेपर उसके स्वामिभक्त नौकर खाकी यसाउलने खानम और उसके दोनों बच्चों इमामकुल्ली और नादिर (नासिर)को अपने घोड़ेकी पीठपर दोनों ओर रखकर सरपट भागते हुये उनकी जान बचाई। नादिर मुहम्मदके पैरमें गोली लग गई, जिससे वह जन्मभरके लिये लंगड़ा हो गया। बाकी मुहम्मद और वली मुहम्मद अन्तर्वेदमें थे। बाकी मुहम्मदने राज्य संभाला। इतना कहनेसे यह मालूम होगा, कि यद्यपि बाकी मुहम्मदके गद्दी संभालनेके बाद एक नये अस्त्राखानी राजवंशकी स्थापना हुई, किन्तु वस्तुतः दोनों ही राजवंश उज्बेक जातिके ही थे। सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी मुसलमान खान उज्बेकके नामसे क़िपचकोंकी यह संज्ञा हुई, यह हम कह आये हैं। शैवानी और अस्त्राखानी ही नहीं, बल्कि दोनोंके उत्तराधिकारी तथा अन्तिम राजवंश मंगीत भी उज्बेक ही था। बोल्शेविक क्रांतिने मंगीत-वंशका उच्छेद करके यहां सोवियत गणराज्य कायम कर देशको उज्बेकिस्तान नाम दिया।

राजावलि——इस वंशमें निम्न खान हुये——

१	दीन मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र	१५९८ ई०
२	बाकी मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र, इस्कन्दर-मानी	१५९९-१६०५ „
३	वली मुहम्मद, जानीबेग पुत्र	१६०५-८ "
४	सैयद इमामकुल्ली, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६०८-४२ "
५	नादिर मुहम्मद, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६४२-४७ "
६	अब्दुल अजीज, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६४७-८० "
७	सुभानकुल्ली, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६८०-१७०२ "
८	मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०२-७ "
९	उबैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०७-१७ "
१०	अबुल्-फैज मुहम्मद, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७१७-४७ "
११	अब्दुल मोमिन, अबुल्फैज-पुत्र	१७४७ "
१२	उबदुल्ला II, अबुल्फज पुत्र	१७५१ "
१३	अबुलगाजी, इब्राहीम पुत्र इमामकुल्ली-वंशज	

२ बाकी मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९९-१६०५ ई०)

हम बतला चुके हैं कि कैसे दीन मुहम्मदने पहले ही खुरासानमें अपनेको स्वतन्त्र खान घोषित किया। अब्दुल मोमिनके मारे जानेके बाद उसने अन्तर्वेदकी ओर पैर बढ़ाया और वहाँका शासक बन गया। वस्तुतः बाकीने ही अस्त्राखानी वंशकी नींव रक्खी। इसने हिसारके पहाड़ी इलाके (ताजिकिस्तान)को सर किया और इसके भाई वली मुहम्मदने बलखको ले लिया, जिसे कि पीर मुहम्मदके भाई इब्राहीमने ईरानसे आकर हथिया लिया था। इब्राहीमके शिया होनेसे लोग नाराज थे, साथ ही वह पियक्कड़ और बहुत क्रूर भी था। उसे हटा उबैदुल्लाको बैठाया गया, जिसे वली मुहम्मदने हिसारमें आकर भगा दिया। काराई तुकमानोंने उसके भाई दीन मुहम्मदको मारा था, उसका बदला लेनेके लिये बाकी मुहम्मदने १६०२ ई०में कुदुजपर हमला किया। उज्बेकोंने अपने पुराने शत्रुओं (तुर्कमानों)से बड़ा ही निष्ठुर बदला लिया। बहुत-से तुर्कमान भागकर कुदुजके किलेमें बन्द हो गये। किला बहुत मजबूत था। उज्बेकोंने बारूद लगाकर दीवारके एक बड़े भागको उड़ा दिया, जिसके साथ सैकड़ों तुर्कमान भी चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ गये। फिर आक्रमण करके किलेको ले उज्बेकोंने किसीको जीवित बन्दी नहीं बनाया। तुर्कमानोंके काराई कबीलेको इस लड़ाईमें बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, जिसके बाद वह फिर अपनेको सँभाल नहीं सके——काराई तुर्कमान शाह अब्बासके सहायक थे। उज्बेकोंने शापूरगान और अन्दखूईको ले बिलुक अकचीतक देशको लूट-मारकर उजाड़ दिया। ईरानी इनके मुकाबिलेके लिये आये, लेकिन बलखके पास बाबर अब्दुलके मकबरेके नजदीक उनमें महामारी फैल गई। ऊपरसे उज्बेकोंने दोनों ओरसे हमला कर दिया। शाह अब्बास बड़ी मुश्किलसे कुछ हजार आदमियोंके साथ जान बचाकर भाग सका।

१६०५ ई०में बाकी बीमार पड़ा और असाध्य रोगसे मुक्ति पानेके लिये एक प्रसिद्ध सत शेख आलिम अलीजानकी शरणमें गया। शेखने उसे वक्षु (आमू-दरिया) की ताजी हवा सेवन करनेकी सलाह दी। बाकी मुहम्मदको खटोलेमें लिटा नावपर ले गये। वह कई दिनोंतक नदीकी हवा खाता घूमता रहा। अन्तमें रजब १०१४ हि० (१२ नवम्बर-१२ दिसम्बर १६०५ ई०) में अर्थात् अकबरकी मृत्यु-महीने रजब १०१४ हि० में मरा।

३ वली मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१६०५-८ ई०)

यह बड़ा ही शराबी और व्यभिचारी था, ऊपरसे लोग इसके वजीर शाहबेग नौबलताशके जुल्मोंसे भी परेशान थे, इसलिये इसके भतीजे सैयद इमामकुल्लीके नेतृत्वमें विद्रोह हो गया। वली ईरानकी ओर

भागा। शाह अब्बाससे अस्सी हजार सेनाकी मदद ले वह फिर वक्षुकी ओर चला। मखदूम आजमके वंशज खोजा मुहम्मद अमीनसे इमामकुल्लीको सहायता प्राप्त हुई। खोजा (संत)ने अपने सूफियोंके चोगेके ऊपर धनुष-बाण लटकाकर पहला तीर छोडा, फिर दुआ पढ़कर मुट्ठीभर मिट्टी शत्रुओंकी ओर फेंक दी—जिसका अर्थ था, शत्रु अंधे हो जाय। तुमुल युद्ध हुआ। मासियान सरोवरके किनारे इस युद्धमें वली मुहम्मदने तख्त गवा अपनेको भतीजेके हाथमें बंदी पाया। शायद भतीजा चचाको छोड भी देता, लेकिन शेखका हुक्म था, इसलिये कत्ल किये बिना कैसे रह सकता था? वली मुहम्मदके पुत्र रुस्तम और रहीम ईरान भाग गये।

४ सैयद इमामकुल्ली बहादुर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६०८–४२ ई०)

यह जहांगीर और शाहजहांका समकालीन था, और भारतीय मुगल-साम्राज्यसे इसकी सीमा मिली हुई थी। जिस वक्त अब्दुल मोमिनने मशहदमें कत्लेआम किया था, उसी समय इमामरजाके वंशजोंके मुखिया अबूतालिबने दीन मुहम्मदके घोडेकी लगाम पकडकर अपने परिवारके लोगोंके प्राणोंकी भिक्षा मांगी। दीन मुहम्मद उनके बचानेके लिये उसी मुहल्लेमें ठहरा और उसने अबूतालिबकी बेटी जोहरा बानूसे व्याह किया। इसी जोहरा बानूसे इमामकुल्ली और नजर (नादिर मुहम्मद, नासिर) मुहम्मद पैदा हुये। यद्यपि बापकी ओरसे यह उज्बेक या छिङ-गिस्के वंशज होनेका अभिमान कर सकते थे, लेकिन पैगंबर मुहम्मदकी बेटीकी संतान होनेके कारण आगे अब अस्त्राखानी खानोंने अपने नामके साथ सैयद लगाना शुरू कर दिया। इमामकुल्लीका दीर्घकालीन शासन अन्तर्वेदकी उन्नति और समृद्धिका समय था। उसके शासनकी यह एक और भी विशेषता थी, कि इसने बिना किसी युद्ध और विजयकी लूट-पाटके अपने राज्यको खुशहाल बनाया। अपने भाई नादिर (नजर) को इसने बलखका राज्यपाल बनाकर मुगल-साम्राज्यकी सीमापर रख दिया। इमामकुल्ली दृढ़ शासक होते हुये भी बड़ा ही धार्मिक, शिक्षित, सत्संग-प्रेमी और स्पष्ट वक्ता था। राजधानी बुखारा इस समय धन-जन, कला-सौंदर्यसे भरी फल-फूल रही थी। इमामकुल्लीका पड़ोसी शाह अब्बास शक्तिशाली होते हुये भी एक बार भारी मुंहकी खा चुका था। हां, उत्तरके कजाक और कल्मक अब भी खतरनाक थे, जिसके लिये इमामकुल्लीको १६१२ ई०में कजाकों और कल्मकोंको हरानेके लिये सिर-दरियाके उत्तरमें अशगरा और करातागतक जाना पड़ा। उसने अपने इकलौते पुत्र इस्कन्दरको ताशकन्दका राज्यपाल बनाया। कुछ ही समय बाद वहां विद्रोह हो गया, जिसमें पुत्र मारा गया। विद्रोहको दबानेके लिये इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको भी बलखसे बुला लिया, और भारी सेना लेकर ताशकन्दको घेर लिया। ताशकन्दियोंने प्रतिरोध करनेका निश्चय किया। इकलौते बेटेकी मृत्युसे पागल इमामकुल्लीने शपथ कर ली थी, कि मैं तबतक हत्याकांडको बन्द नहीं करूंगा, जबतक कि ताशकन्दियोंका खून मेरी रिकाबतक न पहुंच जाये। नगर सर होनेपर लूट-मार शुरू हुई। कुछ घंटोंके कत्लके बाद लोगोंने खानको बहुत समझाया, लेकिन वह तो प्रतिज्ञा कर चुका था। तब मानवरक्तसे भरे एक हौजमें घोड़ेपर चढ़कर वह खड़ा हुआ। खून रिकाबतक पहुंच गया, खानकी प्रतिज्ञा पूरी हुई, और निर्मम हत्या बन्द हुई। लेकिन यह विजय स्थायी नहीं थी। कुछ ही साल बाद कजाकोंने ताशकन्दको फिर अपने हाथमें कर लिया। इमामकुल्लीने भी मामलेको बेकार समझकर कजाकखान तुरसुनसे सुलह करके १६२१ ई०में ताशकन्दको उसके हाथमें दे दिया।

इमामकुल्लीके ऊपर इकलौते पुत्रकी मृत्यु और ताशकन्दमें बही खूनकी नदीका, जान पड़ता है, बड़ा भारी प्रभाव पड़ा था। वह कितनी ही बार शाही लिबासको छोड़ फकीरोंका चोगा पहिन बुखारामें घूमता था। उस समय उसका वजीर नजर दीवानबेगी और उसका भक्त अब्दुल वली भी साथ रहता था। इस प्रकार वह अपनी आंखों प्रजाकी दशा देखना चाहता था। कवि "तुराबी" और मुल्ला "नखली" उसके बड़े कृपापात्र थे। खान खुद भी कवि था। एक तरुण मुल्ला किसी सुन्दरीपर मुग्ध हो गया। त्योहारके लिये प्रेमिकाके पास सुन्दर पोशाक भेजकर उसने अपने प्रेमका परिचय देना चाहा, लेकिन मुल्लाके पास इतना धन नहीं था। सोचा "माले-काफिरां हस्त बर-मोमिन

नख्ल (खजर) उगती है।" इस तरह उसने दोनो कवियोको प्रसन्न रखनेकी कोशिश की। जहागीर-का दूत १०३६ हि० (२२ सितम्बर १६२६ ई०—१३ अगस्त १६२७ ई०)मे बुखारासे लौटा। इसके बाद ही जहागीर मर गया और शाहजहा गद्दीपर बैठा। मुगल बाबरके समयसे ही अपने पूर्वजोंकी भूमिकी ओर चाहभरी दृष्टिसे देखा करते थे। इसी इच्छाको पूरी करनेके लिये शाहजहा एक बडी सेना ले काबुलसे आगे बढा। खबर पाकर इमामकुल्ली भी अपने भाई नादिर, दस भतीजो-के साथ एक बडी सेना ले बलख पहुचा। सभी पैदल थे, सिर्फ इमामकुल्ली घोडेपर सवार था। लोग भेंट करनेके लिये आये। इमामके लिये रास्तेमें पावडे बिछा दिये गये। बडा स्वागत हुआ। फौजी तैयारी करते इमामकुल्लीने दादखा हाजी मसूरको दूत बनाकर शाहजहाके पास काबुल भेजा। शाह-जहाने कहा—"मै तो सिर्फ सूबोको देखनेके लिये आया हू।' नादिरकी शियोसे मित्रता थी, जिससे ईरानके साथ उसका अच्छा सम्बन्ध रहा, तो भी मेवके लिये एक बार उसने असफल कोशिश की। १६२१ ई०में भी नादिरने पायन्दा मिर्जाको दूत बनाकर उसके द्वारा पचास तुर्किस्तानी घोडे मुगल-दरबारमें भेजे थे। अडतीस सालके शासनके बाद इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको बलखसे बुलाकर राज्य सौंप दिया। इस समय वह बीमारीके कारण अन्धा हो गया था। जुमाकी नमाजके बाद उसने अपने सामने भाईके नामका खुतबा पढवाया और फिर अन्तिम जीवन बितानेके लिये मदीनेका रास्ता लिया। सारे लोग यह दृश्य देखकर रो रहे थे।

५ सैयद नादिर मुहम्मद, नाजिर, नासिर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६४२-४७ ई०)

नादिरके खजानेमें अपार धन था, जो आठ हजार ऊटोका भार (चालीस हजार मन) आका जाता था। उसकी घोडसालमें आठ हजार घोडे थे। उसके पास कीमती छाले पैदा करनेवाली अस्सी हजार कराकुल भेंड थी, कीमती गुलाबी साटनसे भरी चार सौ सदूकें थी। इतनी सम्पत्ति उसे मिली थी। वह उसे बाटकर नाम कमाना चाहता था, लेकिन भाईने प्रजारंजनद्वारा जितनी कीर्ति अर्जित की थी, वह उसे मिलनी सभव नही हुई।

नादिर-पुत्र अब्दुल अजीजने पिताके रुष्ट होनेपर उसे मनानेके लिये क्षमापत्र लिखा। दूसरा भाई सुभानकुल्ली समझाने गया। विद्रोह दबानेके लिये भेजा गया पुत्र कुतुलुक सुल्तान विद्रोह करके कुदुजके किलेमें दुर्गबद्ध हो गया। पिताकी आज्ञा पा किला सर करके सुभानने उसे मरवा डाला। इसपर नादिरने कहा, कि मैंने मारनेके लिये नही कहा था। सुभान महत्त्वाकाक्षी था। वह चाहता था कि मुझे "कलाखान" (महासेनापति)की पदवी प्राप्त हो। न मिलनेपर बापसे बागी हो उसने बापके खिलाफ दिल्लीके बादशाह शाहजहासे मदद मागी। शाहजहाने अपने दोनो पुत्रो मुरादबख्श और औरगजेबको एक बडी सेना देकर भेजा। खुसरू सुल्तानने बलखमे प्रतिरोध करना चाहा, लेकिन उसे बन्दी बनाकर भारत भेज दिया गया। किसीने इसी बीच नादिरको बतलाया, कि हिन्दी सेना तुम्हारी मददके लिये नही, बल्कि बलखपर अधिकार करने आई है। इसपर नादिर रातको ही अपने खजानेको जमा करके शापुरगान और अन्दखुदकी ओर से भागकर शाह अब्बास II के पास चला गया। उसकी मा इमामरजाकी सतान थी, इसलिये अब्बासने उसका बडा सम्मान किया। उधर चगताई (शाहजहाकी) सेना आगे बढती गई, और उसने वक्षुके दक्षिणके नगरोंमें अपने शासक नियुक्त किये। सारे उज्बेक भागकर वक्षुपार चले गये। दो सालतक आमू दरिया (वक्षु) और हिन्दूकोहके बीचके प्रदेशपर शाहजहाका शासन रहा। भारत जैसे गरम मुल्कके सैनिक यहाकी सर्दीके मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकारने लिखा है—"जो घरसे बाहर निकलते, वह ठडा होकर मर जाते, और जो भीतर रहते, वह अपनेको गरम करनेके लिये आगके सामने झुलसते रहते।" भारतीय सेनाने, इसमें शक नही, हिन्दूकोह पार करके इस इलाकेको बहुत बरबाद कर दिया, जिसके कारण बलखमें अकाल पड गया। १०६० हि० (४ जनवरी १६५० ई०—२५ नवम्बर १६५० ई०)के जाडोमें एक खरवार (गदहेका बोझ) अनाजका दाम हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाडा बहुत ही सख्त था। अन्तमें जब हिन्दी सेनाको लौटनेके लिये मजबूर होना पडा,

हलाल" (काफिरोका माल मुसलमानोके लिये हलाल है)। उस समय क्या बोल्शेविक क्रांतिके होनेतक हिन्दू जौहरियो और महाजनोकी कितनी ही दूकानें बुखारामें थी। मुल्लाने हिन्दू जौहरीकी दूकान तोड़नेका निश्चय किया और अपने दो नौकरोके साथ वहा पहुचकर आसानीसे दरवाजेको खोल लिया। फिर रत्नोकी एक पिटारीके साथ निकलकर सडकपर आया। इसी बीच आहट पा हिन्दू जौहरी जाग उठा और हल्ला मचाते हुये जाकर उसने मुल्लाकी गरदन पकडी। उधर मशाल हाथमे लिये पहरेदार भी पहुच गया। मुल्लाने तुरन्त मारकर मशालको गिरा दिया, और अधेरेमे बोल उठा—"ओह, नजर दीवानबेगी, तुमने बडा मखतापूर्ण मजाक किया।" जवाब मिला—"आला हजरत (परमभट्टारक), मैं नही, यह अब्दुल वसी कुरजी था।" पहरेवालेको जब मालूम हुआ, कि खानका दल भेस बदले आ पहुचा है, तो वह डरकर भाग निकला। हिन्दू जौहरीने खानसे प्रार्थना करते पहरेवालेके कर्त्तव्य न पालन करनेकी शिकायत की। पूछ-ताछ करनेपर मुल्लाके प्रेम और साहसकी सारी बातका पता लग गया। खानने जौहरीके मालको लौटवा दिया, लेकिन मुल्लाकी दिक्कताको देखकर उसे दड न दे इतना पारितोषिक दिया, जिसमें वह अपनी प्रेमिकाको भेंट भेज सके।

१६२० ई०में रूसी जार मिखाइल फयोदर-पुत्र (मृत्यु १६४५ ई०)ने इमामकुल्लीके पास यह सिखलाकर अपना दूतमडल भेजा, कि किसीको भेंट-बखशीश न देना, खानके तख्तके पास बुलानेपर ही जाना, यदि दूसरा दूत हो, तो उसके आसनके नीचा होनेपर ही अपने आसनपर बैठना। जारका दूत बुखारा पहुचा। महलके एक अफसरने जारके पत्रको लेना चाहा, लेकिन रूसी दूतने उसे देनेसे इनकार किया। जारकी ओरसे अभिनन्दन भेंट करते हुये जब जारका नाम लिया गया, तो खान उठकर खडा नही हुआ। इसपर दूतने कहा—"सभी राजाओका कायदा है, जारका नाम लेनेपर खडे हो जानेका।" इमामकुल्लीने इस ढिठाईका जवाब नरमीसे दिया—"बहुत दिनके बाद रूसी राजदूत आया है, इसलिये म वैसा करना भूल गया, मेरी मशा अनादर करनेकी नही थी।"

इमामकुल्लीने जहा जारके साथ दौत्य-सम्बन्ध स्थापित किया था, वहा उसने अपने सिहासनारोहणकी सूचना देनेके लिये जहागीरके पास भी अपना दूत भेजा था। रसीले जहागीरने इमामकुल्लीकी बेगमका भी कुशल मगल पूछा, जो कि मुस्लिम शिष्टाचारके विरुद्ध था। लेकिन जहागीर मुस्लिम शिष्टाचारका उतना प्रेमी नही था, उसका वश मुस्लिम शरीयतसे ज्यादा चिङ्गिसी यास्साको मानता था। उसने मुस्लिम सुल्तानो और इस्लामिक रवाजोको धत्ता बताते हुये अपने सिक्कोपर मूर्तिया अकित कराई थी। जहागीरको बुखाराके दूतने इतना ही जवाब दिया, कि मेरा मालिक सामारिक इश्कसे मुक्त है, वह इस दुनियाकी चीजोसे प्रेम नही करता। इसपर जहागीरने तुरन्त जवाब दिया—"तुम्हारे खानने कब इस दुनियाको देखा, जो कि उसे इतना वैराग्य हो गया?" इमामकुल्लीका दूत वैद्य था। परिहास करनेके बाद भी जहागीरने उसे बहुत-सा सोना, जवाहर तथा जरीके काम किये हुये एक तम्बूको देकर विदा किया। बहुत जोर देनेपर शिकारके समय खान दूतसे मिलनेके लिये राजी हुआ। दूतने सुनहले तम्बमे सारी गटोको सजा दिया। इमामने शिकारसे लौटते वक्त एक नजर डाली, फिर रहीम परवानेजीकी ओर मुह करके बोला—"ले जा, इस सबको हमने तुझे दे दिया।" दूसरे दिन भारतीय दूतने दरबारमें एक तलवार पेश करते हुये खानसे कहा—"अकबर शाहको दो बढिया तलवारे मिली थी, जिनमेंसे एकको सम्राट्ने अपने लिये रख लिया है, और दूसरेको उसने अपने भाईके पास मित्रताके चिह्नके तौरपर भेजा है।" खानने हाथमें लेकर तलवारको मियानसे निकालना चाहा, किन्तु वह नही निकली, इसपर उसने कहा—"तुम्हारी तलवारका निकालना बहुत मुश्किल है।"

दूतने जवाब दिया—"केवल यही ऐसी है, क्योकि यह शातिकी तलवार है, मगर यह युद्धका हथियार होती, तो अपने मियानसे तुरन्त निकल पडती।"

"नखली" और "तुराबी" दोनो दरबारी कवियामें प्रतिद्वन्द्विता रहा करती थी। खानने उनके बारेमें हिंदी दूतकी राय पूछी, जिसने तुरन्त जवाब दिया—"ओ खान, तुराब (मिट्टी)से ही

नख्ल (खजर) उगती है।" इस तरह उसने दोनो कवियोको प्रसन्न रखनेकी कोशिश की। जहांगीर-का दूत १०३६ हि० (२२ सितम्बर १६२६ ई०—१३ अगस्त १६२७ ई०)में बुखारासे लौटा। इसके बाद ही जहांगीर मर गया और शाहजहां गद्दीपर बैठा। मुगल बाबरके समयसे ही अपने पूर्वजोंकी भूमिकी ओर आहभरी दृष्टिसे देखा करते थे। इसी इच्छाको पूरी करनेके लिये शाहजहां एक बड़ी सेना ले काबुलसे आगे बढ़ा। खबर पाकर इमामकुली भी अपने भाई नादिर, दस भतीजों-के साथ एक बड़ी सेना ले बलख पहुंचा। सभी पैदल थे, सिर्फ इमामकुल्ली घोड़ेपर सवार था। लोग भेंट करनेके लिये आये। इमामके लिये रास्तेमें पावड़े बिछा दिये गये। बड़ा स्वागत हुआ। फौजी तैयारी करते इमामकुल्लीने दादखा हाजी मसूरको दूत बनाकर शाहजहांके पास काबुल भेजा। शाह-जहांने कहा—"मै तो सिर्फ सूबोको देखनेके लिये आया हूं।" नादिरकी शियासे मित्रता थी, जिससे ईरानके साथ उसका अच्छा सम्बन्ध रहा, तो भी मेवके लिये एक बार उसने असफल कोशिश की। १६२१ ई०में भी नादिरने पायन्दा मिर्जाको दूत बनाकर उसके द्वारा पचास तुर्किस्तानी घोड़े मुगल-दरबारमें भेजे थे। अड़तीस सालके शासनके बाद इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको बलखसे बुलाकर राज्य सौंप दिया। इस समय वह बीमारीके कारण अन्धा हो गया था। जुमाकी नमाजके बाद उसने अपने सामने भाईके नामका खुतबा पढ़वाया और फिर अन्तिम जीवन बितानेके लिये मदीनेका रास्ता लिया। सारे लोग यह दृश्य देखकर रो रहे थे।

५ सैयद नादिर मुहम्मद, नाजिर, नासिर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६४२–४७ ई०)

नादिरके खजानेमें अपार धन था, जो आठ हजार ऊंटोका भार (चालीस हजार मन) आंका जाता था। उसकी घोड़सालमें आठ हजार घोड़े थे। उसके पास कीमती छालें पैदा करनेवाली अस्सी हजार कराकुल भेंड़ थी, कीमती गुलाबी साटनसे भरी चार सौ सन्दूकें थीं। इतनी सम्पत्ति उसे मिली थी। वह उसे बांटकर नाम कमाना चाहता था, लेकिन भाईने प्रजारंजनद्वारा जितनी कीर्ति अर्जित की थी, वह उसे मिलनी संभव नहीं हुई।

नादिर-पुत्र अब्दुल अजीजने पिताके रुष्ट होनेपर उसे मनानेके लिये क्षमापत्र लिखा। दूसरा भाई सुभानकुल्ली समझाने गया। विद्रोह दबानेके लिये भेजा गया पुत्र कुतुलुक सुल्तान विद्रोह करके कुंदुजके किलेमें दुर्गबद्ध हो गया। पिताकी आज्ञा पा किला सर करके सुभानने उसे मरवा डाला। इसपर नादिरने कहा, कि मैंने मारनेके लिये नहीं कहा था। सुभान महत्त्वाकांक्षी था। वह चाहता था कि मुझे "कलाखान" (महासेनापति)की पदवी प्राप्त हो। न मिलनेपर बापसे बागी हो उसने बापके खिलाफ दिल्लीके बादशाह शाहजहांसे मदद मांगी। शाहजहांने अपने दोनो पुत्रो मुरादबख्श और औरंगजेबको एक बड़ी सेना देकर भेजा। खुसरू सुल्तानने बलखमें प्रतिरोध करना चाहा, लेकिन उसे बन्दी बनाकर भारत भेज दिया गया। किसीने इसी बीच नादिरको बतलाया, कि हिन्दी सेना तुम्हारी मददके लिये नहीं, बल्कि बलखपर अधिकार करने आई है। इसपर नादिर रातको ही अपने खजानेको जमा करके शाबूरगान और अन्दखुदकी ओर से भागकर शाह अब्बास II के पास चला गया। उसकी मा इमामरजाकी सन्तान थी, इसलिये अब्बासने उसका बड़ा सम्मान किया। उधर चगताई (शाहजहांकी) सेना आगे बढ़ती गई, और उसने वक्षुके दक्षिणके नगरोंमें अपने शासक नियुक्त किये। सारे उज्बेक भागकर वक्षुपार चले गये। दो सालतक आमू दरिया (वक्षु) और हिन्दूकोहके बीचके प्रदेशपर शाहजहांका शासन रहा। भारत जैसे गरम मुल्कके सैनिक यहांकी सर्दीके मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकारने लिखा है—"जो घरसे बाहर निकलते, वह ठंडा होकर मर जाते, और जो भीतर रहते, वह अपनेको गरम करनेके लिये आगके सामने झुलसते रहते।" भारतीय सेनाने, इसमें शक नहीं, हिन्दूकोह पार करके इस इलाकेको बहुत बरबाद कर दिया, जिसके कारण बलखमें अकाल पड़ गया। १०६० हि० (४ जनवरी १६५० ई०—२१ नवम्बर १६५० ई०)के जाड़ोंमें एक खरवार (गदहेका बोझ) अनाजका दाम हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाड़ा बहुत ही सख्त था। अन्तमें जब हिन्दी सेनाको लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा,

तो एक ओर हिन्दूकोह (हिंदूकुश) के ऊंचे दर्रोंकी सर्दीने भारी संख्यामें बलि लेनी शुरू की और दूसरी ओर उज्बेक सैनिकोंने उन्हें गिद्धकी तरह नोचना शुरू किया। हजारोंकी संख्यामें लोग रास्तेमें मर गये। अगले साल "तारीख मुकीमखानी"का लेखक जब दूत बनकर इसी रास्ते भारतकी ओर आ रहा था, तो उसने सब जगह भारतीयोंके कंकालोंके ढेर देखे।

सेना लौटानेसे पहले शाहजहाने नादिरको अपना राज्य संभाल लेनेके लिये कहा। नादिर लौटा, लेकिन उसके बेटोंमें झगड़ा हो गया, जिसपर नाराज हो नादिरने राज्यको बाटकर* मदीनेका रास्ता लिया। वह रास्ते ही में मर गया, पर उसकी लाश मदीनेमें उसके भाईके पास दफनाई गई।

नादिर खानके प्रिय पुत्र कासिम सुल्तानके बारेमें इतिहासकारोंका कहना है, कि अस्त्राखानियों-में कोई इतना बहादुर, बुद्धिमान्, उदार और साहसी नहीं हुआ। वह अच्छा कवि और सुन्दर गद्य-लेखक था। एक हजार शेरोंका उसका दीवान (कविता-संग्रह) मौजूद है, जिसमें उसने सायब इस्पहानीका अनुसरण करते बहुतसी रचनायें की है। "तुराबी" और "नखली" दोनो इस समयके कवि थे, इसे हम बतला आये हैं।

बुखारामें अब युरोपके नये हथियारोंका प्रचार हो चला था, लेकिन उलुगबेगके बाद विज्ञानकी ओर बढनेका कोई प्रयत्न नहीं हुआ। अब तो वहां धर्म और मुल्लोंने अपना एकच्छत्र राज्य कायम कर दिया था। शैबानियोंके शासनके अन्तिम कालमें युरोपीय व्यापारी अन्थनी जेंकिन्स १५५८-५९ ई० में बुखारा पहुंचा था, इससे पहले पोलो भ्रातृ-युगल तीन साल (१२६४-६७ ई०) बुखारामें रहे थे, जब कि चगताई खानोंका राज्य था और बुखाराकी कोई प्रधानता नहीं थी। बुखारा पहले भी समय-समयपर अन्तर्वेदकी राजधानी रहा, किन्तु अस्त्राखानियोंके शासनके आरम्भ होनेके साथ साथ वह अब स्थायी राजधानी बन गया।

६ सैयद अब्दुल अजीज, नादिर-पुत्र (१६४७-८० ई०)

गद्दी संभालनेके बाद अब्दुल अजीजने अपने भाई बलख-शासक सुभानकुल्लीको रास्तेका कांटा समझ हटाना चाहा। इस कामके लिये उसने अपने दूसरे भाई (कवि) कासिम मुहम्मदको भेजा। लेकिन कासिमको हारकर हिसारकी ओर भागना पड़ा, और सुभानकुल्लीको युवराज कबूल करके समझौता करना पड़ा। ख्वारेज्म बहुत समयसे अस्त्राखानियोंके अधीन रहता चला आया था, लेकिन १६६३ ई०में अबुलगाजीने स्वतन्त्र होनेका निश्चय कर लिया। वह निम्न वक्षु-उपत्यकासे बुखारियोंको भगाते हुये अन्तर्वेदके भीतर घुस आया। करमीनामें अब्दुल अजीजने उसे हराया। अबुलगाजीने घायलकी हालतमें नदी तैरकर अपनी जान बचाई। लेकिन उजबक एक हारसे हार माननेवाले थोड़े ही होते है? अबुलगाजीने दूसरी बार तैयारी की, और अबके लटते पाटते वह बुखाराके दरवाजेतक पहुंच गया। उसका उत्तराधिकारी और पुत्र अनशा खान और भी साहसी निकला। उसने १०७६ हि० (१४ VII १६६५-४ VI १६६६ ई०) में एक बड़ी सेना लेकर चढाई की। उस वक्त अब्दुल अजीज करमीना गया हुआ था। उसकी अनुपस्थितिमें अनुशाने बुखारापर अधिकार कर लिया। अब्दुल अजीज भी कम साहसी नहीं था। वह केवल चालीस अनुयायियोंके साथ बुखाराके अर्क (किले) में घुस गया और लोगोंको युद्ध करनेके लिये तैयार किया। ख्वारज्म वालोंके सभी विरुद्ध हो गये और सामूहिक शक्तिके बलपर अब्दुल अजीजने अनुशाको बुरी तौरसे हराया। अब्दुल अजीज शरीरमें महाकाय था, लेकिन जूता उसके पैरोंमें चार सालके बच्चे जैसा लगता था। युद्धमें वह बड़ा ही साहसी और काममें तत्पर रहता था। अपने पूर्वजोंसे उसने भी शमा और सूफियोंकी आदत सीख ली थी, और कितनी ही बार दूसर सांसारिक कामोंको छोड़कर एकांतमें ध्यान और भजन करने लगता। उसने भी अन्तमें अपने भाई सुभानकुल्लीको तख्त देकर मदीनाका रास्ता लिया।

* बाटमें सुभानकुल्लीको बलख और खोजा सालको उपरी-वक्षु प्रदेश मिला।

प्रसिद्ध सुलेखक मुल्ला हाजी इसके यहा सात सालतक रहा, और उसने खानके लिये 'हाफिज" का दीवान उतारा।

७ सैयद सुभानकुल्ली, नादिर-पुत्र (१६८०–१७०२ ई०)

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने अपने पुत्र इस्कन्दरको "कलाखान" बनाया, लेकिन दो वर्ष बाद उसके भाई मसूरने जहर देकर उसे मरवा दिया। पिताने फिर तीसरे पुत्र उबैदुल्लाको बनाया, उसे भी दूसरे बेटेने कत्ल करवा दिया। बेटोके इस विद्रोहसे वह बहुत परेशान था। उसके मंत्री मुकीम खानने व्यापारियो और कारीगरोपर भारी टैक्स लगाकर चीन और युरोपके कारीगरोद्वारा बनाई सुन्दर कलाकी चीजो और गोटेवाले मखमल लिये। चार महीने बाद वह भी षड्यन्त्रका शिकार हुआ। फिर चौथे पुत्र मसूरको राज्यपाल बनाया।

इसी समय खीवासे भी झगडा उठ खडा हुआ। खीवाके अमीरने १०९५ हि० (२० XII १६८३–९ XI १६८४ ई०)में बुखारापर चढाई की। सुभानकुल्लीके सेनापति मुहम्मद बीने उसे मार भगाया, लेकिन दूसरे साल फिर उसने आक्रमण किया। इसके बाद ११०० हि० (२६ X १६८८–१६ IX १६८९ ई०)मे खीवाका खान बुखाराके दरवाजेतक पहुच आया था। अब भी मुहम्मद बीने उसे बुरी तरहसे हराकर पीछे भगाया। कुछ समयके लिये खीवाने सुभानकुल्लीकी अधीनता भी स्वीकार की।

ख्वारेज्मका खान अनुशा बडा शक्तिशाली शासक था। उसे भगानेमें मदद देनेके लिये सुभानकुल्लीने अपने बेटे सादिकको बुलाया, लेकिन उस वक्त उसके शासित इलाके (बलख)मे भी भीतरी-बाहरी झगडे थे, इसलिये वह वहा लौट गया। इस बेहुक्मीके लिये सुभानने अपने बेटेको दड देना चाहा, इसपर उसने बगावतका झडा खडा कर दिया। उसने इससे पहले अपने दो भाइयो अब्दुल गनी और अब्दुल कयूमको मारकर औरगजेबके पास मत्री करनेका प्रस्ताव किया। यह खबर सुनकर १६८५ ई०में सुभानकुल्ली अपने पुत्रके विरुद्ध खानाबाद पहुचा, जहासे उसने बहुत स्नेहपूर्ण पत्र भेजकर उसे क्षमा कर देनेका वचन दिया, किन्तु जब पुत्र आया, तो उसके पैरामे बेडी डलवा कालकोठरीमें बद कर दिया, जहा वह तीन महीने बाद (१६८६ ई०मे) मर गया।

इस समय तुखारिस्तानके दो कबीलो मेमना-अन्दखुदवाले मिंग, और बलखके पासके किपचकोमें बडी लडाई थी। सुभानकुल्लीने मशहदकी तीर्थयात्रा करनेकी सोची। इसी वक्त खीवाके खान अनुशाके बुखाराकी ओर लूटपाट करनेकी खबर आई। सुभानकुल्ली आया और उसके सेनापति मुहम्मद बीने खीवाकी सेनाको बुरी तरह हराया। अनुशा अपने ही लोगोद्वारा मारा गया, और उसका पुत्र एरेग सुल्तान ख्वारेज्मकी गद्दीपर बैठा।

औरगजेबको दिये वचनके अनुसार सुभानकुल्लीने महमूद जान बीके नेतृत्वमें खुरासानपर एक सेना भेजी, जो देशको लूटकर बहुतसे स्त्री-बच्चोको बदी बना लौट आई। इसी बीचमें एरेंगकी सेनाने फिर बुखारापर धावा किया। दस दिनतक बुखारावालोने मुकाबिला किया, लेकिन जबतक बदख्शा-बलखका राज्यपाल महमूद बी अतालीक नही पहुचा, तबतक ख्वारेज्मियोको दबाया नही जा सका। अतालीकके आनेपर ख्वारेज्मियोकी हार हुई और खीवाके आदमियोने षड्यत्र करके एरेंग खानको मार डाला। सुभानका शासन खीवावालोने स्वीकार किया। १६८७ ई०म वहा उसके नामका खुतबा और सिक्का चला और सुभानने शाहनियाज इशिक आकाको वहाका राज्यपाल नियुक्त किया। सुभानका तुर्कीके सुल्तान अहमद II (१६९१–९५ ई०)के साथ भी दौत्य-सबध था, जिसके पास प्रशसा करते हुये उसने अपने पत्रमें लिखा था—"फेंक काफिरों और अभागे अधर्मियो (किजिलबासो) को भूतलसे नष्ट कर देने-जैसे अल्लाहके महान् काममें आप लगे हैं।" मुस्लिम जगत्‌में इस समय बुखाराका नाम बडे गौरवसे लिया जाता था। औरगजेबने सुभानकुल्लीके पास दूतके साथ एक हाथी और कितनी ही और मूल्यवान् भेंटें भेजी। तुर्कीका सुल्तान अहमद II उसे प्रशसापूर्ण पत्र लिखते समय "भाई"के नामसे सबोधित करना नही भूलता था।

सुभानकुल्लीको पढने-लिखनेका भी शौक था। उसने ग्रीक-चिकित्सका—गेलन और हिप्पोक्रेत—तथा बूअली सेनाकी पुस्तकोंके आधारपर तुर्की भाषामें वैद्यकपर एक पुस्तक लिखी, जिसमें रोगमुक्तिके एक बडे साधन गडा-तावीजको लिखना वह नहीं भूला।

अस्सी सालकी उमर हो जानेपर उसने अपने पुत्र मुकीमको बलखसे बुलाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, और १११४ हि० (२८ V १७०२–१८ IV १७०३ ई०) में मर गया।

८ मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७०२–७ ई०)

मुकीम खानको गद्दी सभालते ही अपने बडे भाई उबैदुल्लाके विरोधका सामना करना पडा। मगीत कबीलेका शक्तिशाली सरदार रहीम बी बडे भाईका समर्थक था, इसलिये पाच सालतकके बडे संघर्षके बाद मुकीमको अपने हाथमें शक्ति लनेमें सफलता मिली।

९ उबैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७०७–१७ ई०)

अब अस्त्राखानी वंशमें भी गुडिया सुल्तान होने लगे। उबैदुल्ला, मगीत-सरदार रहीम बीके हाथका कठपुतली था।

१११५ हि० (१७ V १७०३–४ IV १७०४ ई०)मे कुकुरत कबीलेवालोंने उबैदुल्लाके शहर खानाबादपर आक्रमण किया। अतालीक महमूद बी उनसे लडने गया, जिसमें उसका भाई अब्दुल्ला मारा गया। महमूद बीने इस खतरनाक कबीलेको पूरी तौरसे दड देनेके लिये आज्ञा मागी, क्योंकि उन्होंने वक्षुकी भूमिमें लूट-मार मचा रक्खी थी। मुकीम खानकी आज्ञा पा महमूद बी जल्दी-जल्दी कूच करते हुये तीन दिनमे कबादियान किलेपर पहुचा, जिसे कि कुकुरतोंके सहायक दुश्मन कबीलेने दखल कर रक्खा था। महमूद बीके सामने उन्होंने आत्मसमर्पण किया। कबादियानमें एक सेना रख महमूद बी कुकुरतोंके विरुद्ध चला, जो अपने डेरे और चीज-वस्तुओंको छोडकर भाग गये। महमूदने बहुतोंको मारा, लेकिन दुश्मनोंके पामीरके पहाडोमें भागकर छिप जानेपर पीछा करना आसान नहीं था। अतालीक महमूद बीने धन ले लडका-बच्चाको छोड दिया। फिर उसने तगिदीवान और बदे-हरमकी ओर उनका पीछा किया और ककाई किलेमें डेरा डाल चारों ओर सेना भेजकर कुकुरत कबीलेको नष्टप्राय कर दिया। जब वह बलख लौटा, तो मुकीमने उसे और उसके साथियोंको बहुत मूल्यवान् खिलअत तथा दूसरी भेंट प्रदान की।

१० अबुल्‌फैज, सुभानकुल्ली-पुत्र (१७१७–४७ ई०)

उबैदुल्ला खान अतालीक रहीम बीसे झगड पडा, जिसके लिये उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा। रहीमने उसकी जगह अबुल्‌फैजको खान बनाया। उज्बेकोंने इसके समय भी खुरासानपर आक्रमण करना जारी रक्खा। ऐसे ही एक आक्रमणमें उन्होंने नादिर (पीछे दिल्ली लूटनेवाले महान् विजेता नादिरशाह)को पकड लिया था। १७१८ ई०मे उज्बेकोंने अब्दाली-अफगानोंके सर्दार आजादुल्लासे मेल करके खुरासानको लूटा। सेफे-कुल्ली खानके अधीन तीस हजार ईरानी सेना आई, जिसने खुरासानमें बारह हजार उज्बेक-सेनाको हराया, लेकिन उसे खुद उज्बेकोंके मित्र अफगानोंसे हारना पडा।

१७३६ ई०में ईरानी सेनापति नादिरशाहने गुरजी (जार्जिया)में उस्मानी तुर्कोको बुरी तरहसे हराकर उत्तर-पूर्वकी ओर नजर फेरी, और उसके पुत्र रजाकुल्ली खानने अबुल्‌फैजके सेनापर आक्रमण किया, लेकिन इसी समय इलबस खीवासे अपने उज्बेक भाइयोंकी सहायताके लिये आ गया, जिससे उनकी जान बच गई।

१७३६–३८ ई०में नादिरने कधारका मुहासिरा करते समय अपने पुत्र रजाकुल्लीका यादगिया और मरचा (मरवेचाग)के रास्ते अफगानोंके दोस्त अलीमर्दाना (अन्दखुद)के खिलाफ

भेजा। पड़ोसी घुस-तुओंने अलीमरदाका साथ छोड़ दिया और रजाकुल्लीने उसे बन्दी बनाकर बापके पास भेज दिया। रजाकुल्लीने शापूरगान और अक्सी ले बलखको भी जीत लिया, फिर वक्षुपार हो अबुल्फ़ैजकी शक्तिको नष्ट करना चाहा, लेकिन इसी समय ख्वारेज्मके खान इलबर्सने आकर फिर अपने भाई उज्बेकोको बचा लिया। हार खानेके बाद नादिरने रजाकुल्लीको इस बहानेसे बुला लिया—"उच्च तुर्कमान कुलो तथा छिङ्-गिस् खानकी सतानोके पैतृक देशोपर हाथ नही मारना चाहिये।"—यह अगूर खट्टे-जैसी बात थी।

नादिर दिल्ली लूटनेके लिये चला गया और लौटते समय पेशावरमें उसे अबुल्फ़ैजका पत्र मिला, जिसमें लिखा था—"मै पुराने वशकी अन्तिम सतान हू। मै तुम्हारे जैसे शक्तिशाली बादशाहका विरोध करने की काफी शक्ति नही रखता, इसीलिये मै अलग रहकर तुम्हारी भलाईके लिये दुआ करता रहता हू। तो भी, यदि तुम मुलाकात करके मुझे सम्मानित करना चाहते हो, तो मै एक अतिथिके तौरपर तुम्हारा उचित सत्कार करूगा।" अबुल्फ़ैजने अपने दोस्त खीवाके खानको भी वैसा ही करनेको कहा। लेकिन नादिरशाहने इस चापलसीभरी बातको बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखा। दिल्लीसे तीन सौ हाथियो, मोती-हीरा-जटित तम्बू, बहुत-सी सम्पत्ति और शाहजहाके प्रसिद्ध सिहासन तख्त-ताऊसके साथ लौटकर नादिर कुछ दिनो हिरातके पूबके पहाडो (कोहिस्तान) मे ठहरा। यहीसे उसने रूसी साम्राज्ञी एलिजाबेथ (१७४१–६१ ई०) तथा अबुल्फ़ैजके पास कुछ भेंटें भेजी।

नादिरने अब इलबर्सके सत्यानाश करनेका निश्चय किया। वह बुखाराके सीमान्तपर वक्षुतटके करकी स्थानमें पहुचा, जहापर अस्त्राखानियोका सर्वेसर्वा रहीम बी भेंट लिये उपस्थित था। वहासे नादिर चारजय गया। तीन दिनमें वक्षुपर नावोका पुल बनवाकर बहुतसी सेनाको खजानेकी रक्षाके लिये छोड वह बुखारासे एक मजिल पहले कराकुलमें पहुचा। अबल्फ़ैजने सुन्दर अरब घोडोकी भेंट लिये अपने अमीरो और मुल्लाओके साथ स्वागत किया। नादिरशाहने खानको बैठनेके लिये स्थान देते उसे "शाह" के नामसे सम्बोधित किया। अबुल्फ़ैजने अपनी बेटीको नादिरशाहसे ब्याहा और नादिरने अपनी बहिनको अबुल्फ़ैजके भतीजेके लिये दिया। रहीम बीको नादिरशाहने खानकी उपाधि देकर छ सौ तुर्कसेनाका नायक बनाया। इस तरह बुखाराको अपने अधीन कर वह खीवाकी ओर बढा। इलबसने अधीनता स्वीकार करानेके लिये आये नादिरके दूतको मरवा दिया था। नादिर अब उसके ऊपर चढा। इलबर्स खानकाहके किलेमें घिर गया। तीन दिनकी गोलाबारीके बाद इलबसने अपनेको नादिरके रहमपर छोड दिया, और खूनखार नादिरने उन्नीस प्रधान अफसरोंके साथ उसे कत्ल करवा दिया। चारजूय लौटकर नादिरने अपनी नव-विवाहिता बीबीको उसके पिता-के पास भेज दिया। मेवके रास्ते जब वह खुरासानमें पहुचा, तो वही २३ जून १७४७ ई०को उसके एक अनुचरने उसे मार डाला।

नादिरशाहकी मृत्युकी खबर पाकर अब रहीम बीने अबुल्फ़ैजको गद्दीपर बैठाये रखनेकी जरूरत नही समझी, और उसे पैमनारसे मीर अरबके मदरसेमें कैद कर दिया। ईरानी इसपर क्षुब्ध हुये, तो रहीमने कहा—"मै तो मामूली उज्बक हू। नदिरशाहने तो न जाने कितने बड़े-बड़े खानदानी राजाओको लूटा-मारा।" ईरानी सेना जब रहीम खानको घेरनेका मसूबा बाधने लगी, तो रहीमने गिलजई अफगानोका कान भरा—नादिरने तुम्हारे देश कन्धारको अब्दालियोके हाथमें दे उन्हें भूमि, स्त्री और वेतन देनेका वचन दिया है। उन्होने उसकी बात मान ली। रहीम बीने उसी रात अबुल्फ़ैजको मार डाला। दूसरे दिन ईरानियोने रहीम बीसे सुलह कर ली। अपने तोपखानो, तम्बुओ और रसदके सामानको छोड जानेके लिये रहीम बीने उन्हें अच्छी भेंट देकर देश लौट जानेकी छुट्टी दे दी। इस प्रकार कुछ ही महीनोमें रहीम बीने ईरानियोके प्रभुत्वको बुखारासे खतम कर दिया।

११ सैयद अब्दुल् मोमिन मुहम्मद, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अबुल्फैजको मारकर अभी रहीम बी सीधे गद्दीपर बैठनेके बारेमें निश्चय नही कर पाया था। उसने अपने दामाद तथा निहत खानके पुत्र अब्दुल् मोमिनको गद्दीपर बैठा दिया। एक दिन मीठे खरबूजे कपडेसे ढाककर खानके पास आये थे। बीबीने पूछा—"क्या है ?" उसने जवाब दिया—"तुम्हारे बापका शिर है, जिसने मेरे बापको मारकर देशपर अधिकार कर लिया है।" बीबीने यह बात बापसे कह दी और रहीमने अब्दुल् मोमिनको कुयेमें ढकेलकर मरवा दिया।

१२ सैयद उबैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अफगान—अफगानोंका उत्कर्ष इसी समय होने लगा। महमूद बीके समय सुलेमान पर्वत श्रेणीमे उनका एक छोटा-सा कबीला था, जिसने अपनी शक्ति बढाते-बढाते एक समय वक्षुसे सिंध तटतककी भूमि ले ली। जातिकी तौरपर सिन्ध-तटतक अब भी पख्तून (अफगान) रहते हैं, लेकिन पश्चिममें काबुलके पासकी कोहदामन-उपत्यकासे ही ताजिको, फिर हजारो और अन्तमे उज्बेकोके इलाके आ जाते है। तो भी वक्षु (आम)के तटतक अब भी अफगानिस्तानकी राज्यसीमा है। १८वी सदीके आरम्भम अर्थात् औरंगजेब और उसके कुछ उत्तराधिकारियोंके समयतक उज्बेकोसे बचनेके लिये अफगान भारत और ईरानके बादशाहोकी प्रजा बनकर उन्हे कर देते थे। लेकिन जब सफावी-वंश (१४९९-१७२२ ई०)का सितारा डूब गया, तो गिलजई कबीलेके सरदार महमूदके नेतृत्वमें अफगानोंने अस्पहानतकपर आक्रमण करनेका प्रयत्न किया, जहासे नादिरने उन्हे मार भगाया। इस अन्तिम एसियाई महान् विजेताके पतन, भारतीय "मुगल"-साम्राज्यके क्षीण होने एवं उत्तरमे बुखाराके उज्बेकोमे फैली गडबडीसे फायदा उठाकर अफगानोने वक्षु और सिंधके बीचके नादिरके जीते हुये देशको हडप लिया। अहमदशाह दुर्रानी (अफगान-सरदार)ने नादिर-वंशज तथा तेमूरके पौत्र शाहरुख मिर्जासे मेल करके ११६६ हि० (८ XI १७५२–२९ IX १७५३ ई०) मे वक्षुसे दक्षिणवाले इलाकेको बुखारासे छीन लिया, जिसमें मैमना, अन्दखूई, आकचा, शापूरगान, शेरपुल, खुल्म, बलख, बदख्शा और बामियान अवस्थित है। विजेता अफगान सेनापति बेगीखान पीछे सदर-आजम अहमदका उत्तराधिकारी बना। १२०३ हि० (२ X १७८८–२३ VIII १७८९ई०) में तेमूरशाहको बहावलपुरके अभियानमें फसा देख उज्बेकोने वक्षु पार हो अपने बहुतसे इलाकोको फिर ले लिया। १२०८ हि० (९ VIII १७९३-३० VI १७९४ ई०) में तेमूरशाह मर गया, जिसकी जगहपर उसका पुत्र शाहजमा काबुलकी गद्दीपर बैठा। इसीके समय बुखाराके मगीत अमीर मासूम-ने हमला किया, और बलख घिरा रहा। शाहजमा उस समय भारत और खुरासानके अभियानोंमें व्यस्त था, किन्तु जब उससे उसने छुट्टी पा ली, तो मासूमने लडनेकी जगह उससे सुलह करना ही अच्छा समझा। शाहजमाके प्रतिद्वन्द्वी भाई शाह महमदको अमीर मासूमने १२१४ हि० (५ VI १७९९-२६ IV १८०० ई०)में बखारामें शरण दी।

बेगीखानको वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशके जीतनेके उपलक्षमें सदर-आजमकी उपाधि मिली। अमीर मासूम और बेगीखान मगीती अमीर शाह मुरादकी भी उपाधि थी, जो कि रहीम बीका भतीजा था।

अस्त्राखानी कालकी इमारतामें मदरसा शरदिल भी है, जो १६१० ई०में बना था।

१३ सैयद अबुल्गाजी, इब्राहीम-पुत्र (१७४७ ई०)

रहीम बीके हाथका यह अंतिम अस्त्राखानी कठपुतली खान था, जिसके बाद रहीमने स्वयं गद्दी सभाल ली।

अस्त्राखानी-वंशवृक्ष—
(१५१५–१७४७ ई०)
इस्कन्दर (शैबानी)
जुहरा=जानीबेग
१ दीन मु०
(१५९८)
२ बाकी मु०
(१५९९-१६०५)
३ वली मु०
(१६०५-८)
४ इमामकुल्ली (१६०८-४२)
५ नादिर मु० (१६४२-४७)
६ अब्दुलअजीज
(१७४७-८०)
७ सुभानकुल्ली
(१६८०-१७०२)
खुदायार अतालीक
रजब मु०
इब्राहीम
१३ अबुल्गाजी
(१७४७)
९ उबैदुल्ला I
(१७०७-१७)
८ मुकीम
(१७०२-७)
१० अबुल्फैज
(१७१४-४७)
दानियालबी
११ अब्दुल् मोमिन
(१७४७)
१२ उबैदुल्ला II
(१७४७)
शम्शबानू=शाहमुराद

११ सैयद अब्दुल् मोमिन मुहम्मद, अबुल्फ़ैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अबुल्फ़ैजको मारकर अभी रहीम बी सीधे गद्दीपर बैठनेके बारेमें निश्चय नहीं कर पाया था। उसने अपने दामाद तथा निहत खानके पुत्र अब्दुल् मोमिनको गद्दीपर बैठा दिया। एक दिन मीठे खरबूजे कपड़ेमें डालकर खानके पास आये थे। बीबीने पूछा—"क्या है ?" उसने जवाब दिया—"तुम्हारे बापका शिर है, जिसने मेरे बापको मारकर देशपर अधिकार कर लिया है।" बीबीने यह बात बापसे कह दी और रहीमने अब्दुल् मोमिनका कुयेंमें ढकेलकर मरवा दिया।

१२ सैयद उबैदुल्ला II, अबुल्फ़ैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अफ़गान—अफ़गानोंका उत्कर्ष इसी समय होने लगा। महमूद बीके समय सुलेमान पर्वत-श्रेणीमें उनका एक छोटा सा कबीला था, जिसने अपनी शक्ति बढ़ाते-बढ़ाते एक समय वक्षुसे सिंध-तटतककी भूमि ले ली। जातिकी तौरपर सिंध-तटतक अब भी पस्तून (अफ़गान) रहते हैं, लेकिन पश्चिममें काबुलके पासकी कोहदामन-उपत्यकासे ही ताजिकों, फिर हजारा और अन्तमें उज्बेकोंके इलाके आ जाते हैं। तो भी वक्षु (आमू)के तटतक अब भी अफ़गानिस्तानकी राज्यसीमा है। १८वीं सदीके आरम्भमें अर्थात् औरंगजेब और उसके कुछ उत्तराधिकारियोंके समयतक उज्बेकोंसे बचनेके लिये अफ़गान भारत और ईरानके बादशाहोंकी प्रजा बनकर उन्हें कर देते थे। लेकिन जब सफ़ावी-वंश (१४९९–१७२२ ई०)का सितारा डूब गया, तो गिलजई कबीलेके सरदार महमूदके नेतृत्वमें अफ़गानोंने इस्पहानतकपर आक्रमण करनेका प्रयत्न किया, जहाँसे नादिरने उन्हें मार भगाया। इस अंतिम एसियाई महान् विजेताके पतन, भारतीय "मुगल"-साम्राज्यके क्षीण होने एवं उत्तरमें बुखाराके उज्बकोंमें फैली गड़बड़ीसे फ़ायदा उठाकर अफ़गानोंने वक्षु और सिंधके बीचके नादिरके जीते हुये देशको हड़प लिया। अहमदशाह दुर्रानी (अफ़गान-सरदार)ने नादिर-वंशज तथा तैमूरके पौत्र शाहरुख मिर्जासे मेल करके ११६६ हि०(८ XI १७५२–२९ IX १७५३ ई०) में वक्षुसे दक्षिणवाले इलाकेको बुखारासे छीन लिया, जिसमें मैमना, अन्दखुई, आकचा, शापूरगान, शेरपुल, खुल्म, बलख, बदख्शां और बामियान अवस्थित हैं। विजेता अफ़गान सेनापति बेगीखान पीछे सदर-आजम अहमदका उत्तराधिकारी बना। १२०३ हि० (२ X १७८८–२३ VIII १७८९ई०) में तैमूरशाहको बहावलपुरके अभियानमें फँसा देख उज्बेकोंने वक्षु पार हो अपने बहुतसे इलाकोंको फिर ले लिया। १२०८ हि० (९ VIII १७९३-३० VI १७९४ ई०) में तैमूरशाह मर गया, जिसकी जगहपर उसका पुत्र शाहजमा काबुलकी गद्दीपर बैठा। इसीके समय बुखाराके मंगीत अमीर मासूम-ने हमला किया, और बलख घिरा रहा। शाहजमा उस समय भारत और खुरासानके अभियानोंमें व्यस्त था, किन्तु जब उससे उसने छुट्टी पा ली, तो मासूमने लड़नेकी जगह उससे सुलह करना ही अच्छा समझा। शाहजमाके प्रतिद्वन्द्वी भाई शाह महमूदको अमीर मासूमने १२१४ हि० (५ VI १७९९-२६ IV १८०० ई०)में बखारामें शरण दी।

बेगीखानको वक्षुके दक्षिणवाले प्रदेशके जीतनेके उपलक्षमें सदर-आजमकी उपाधि मिली। अमीर मासूम और बेगीखान मंगीती अमीर शाह मुरादकी भी उपाधि थी, जो कि रहीम बीका भतीजा था।

अस्त्राखानी कालकी इमारतोंमें मदरसा-शेरदिल भी है, जो १६१० ई०में बना था।

१३ सैयद अबुल्गाजी, इब्राहीम-पुत्र (१७४७ ई०)

रहीम बीके हाथका यह अन्तिम अस्त्राखानी कठपुतली खान था, जिसके बाद रहीमने स्वयं गद्दी सँभाल ली।

अस्त्राखानी-वंशवृक्ष—
(१५१५–१७४७ ई०)
इस्कन्दर (शैवानी)
जुहरा=जानीबेग
१ दीन मु०
(१५६८)
२ बाकी मु०
(१५६६-१६०५)
३ वली मु०
(१६०५-८)
४ इमामकुल्ली (१६०८-४२)
५ नादिर मु० (१६४२-४७)
रजब मु०
इब्राहीम
१३ अबुल्गाजी
(१७४७)
६ अब्दुलअजीज
(१७४७-८०)
७ सुभानकुल्ली
(१६८०-१७०२)
खुदायार अतालीक
६ उबैदुल्ला I
(१७०७-१७)
८ मुकीम
(१७०२-७)
१० अबुल्फैज
(१७१४-४७)
दानियालबी
११ अब्दुल् मोमिन
(१७४७)
१२ उबैदुल्ला II
(१७४७)
शम्शबानू=शाहमुराद

अध्याय ६

खीवा-खान

(१५१५-१७१४ ई०)

ख्वारेज्म अब अपनी राजधानी खीवाके नामसे प्रसिद्ध होने लगा था। ख्वारेज्मकी भूमि पश्चिममें कास्पियन और दक्षिणमें खुरासानसे अलग करनेवाले रेगिस्तान क़राकुम और पूर्वमें बुखारासे अलग करनेवाले रेगिस्तान क़िज़िलकुमसे घिरी हुई बालुका-समुद्रमें द्वीपकी तरह है—उत्तरमें अराल समुद्रके दोनों तरफ भी मरुभूमि है। इस प्रकार बालुका-राशिके भीतर रहते भी ख्वारेज्म हमेशासे बड़ा ही उर्वर और समृद्ध देश, तथा युरोपके साथके व्यापारका केंद्र रहा। रेगिस्तानोंके कारण ही दक्षिण और पूर्वके राज्योंकी अपेक्षा इसका सम्बन्ध वोल्गा-उपत्यकासे अधिक रहा। सदियोंतक जू-चि उलुसने इसपर शासन किया। बहुत पीछे सफावियोंने मौका पाकर खीवाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन, जब उज्बेकोंने मुहम्मद शैबानीके नेतृत्वमें अन्तर्वेदको जीता, तबसे उज्बेकोंकी ही प्रधानता खीवापर भी हो गई। १५१० ई०में शैबानीको हराकर शाह इस्माईलने ख्वारेज्मको बाटकर वहां अपने तीन राज्यपाल नियुक्त किये—(१) खीवा-हजारास्प, (२) उरगंज, (३) वेसिर (वेजिर)। ख्वारेज्ममें सुन्नी धर्मकी प्रधानता थी, और सफावियोंने शिया-धर्मको राजधर्म घोषित किया था। इससे फायदा उठा उमर गाजीने शियोंके विरुद्ध ख्वारेज्मियोंको उभाड़ना शुरू किया और दो साल बाद ही हुसामुद्दीन कतल नामक एक धार्मिक नेताने वेसिरके लोगोंको समझाकर उज्बेक खान बरकाके पुत्र इलबसको लाकर गद्दीपर बैठा दिया।

बरका खान जू-चि-पुत्र शैबानके प्रपौत्र पूलाद खानके पुत्र अरबशाहकी सन्तानोंमेंसे था। अबुलखैरके दादा इब्राहीम ओगलानका भाई यही अरबशाह सुवर्ण-ओर्दूके छिन्न-भिन्न टुकड़ोंमेंसे एकका खान था—अरबशाह और इब्राहीम दोनोंने बापकी सम्पत्तिको आपसमें बाट लिया, इस प्रकार अरबशाह भी एक छोटासा खान (राजा) बन गया। इब्राहीमके पोते अबुलखैरने अपनी शक्ति कितनी बढ़ाई, इसका वर्णन हम तेमूरी वंशके वर्णनमें कर आये हैं। अरबशाहके बेटे हाजी तुली (तुगलक हाजी) का एक ही पुत्र तेमूरशाह था, जो कि कलमकोंके युद्धमें मारा गया। उइगुरोंके सरदारने तेमूर-शेखकी खानमसे विदाई देते समय पूछा, तो खानमने कहा—"मुझे तीन महीनेका गर्भ है।" इसपर उइगुर घुमन्तू थम गये। यह खबर पाकर कुछ दूर चले गये नेमन कबीलेवाले भी ठहरकर बच्चेके पैदा होनेकी प्रतीक्षा करने लगे। छिङ्-गिस्के पवित्र खूनकी इतनी महिमा थी, कि अपने भावी खानकी आशामें उन्होंने अपने लाखों पशु-प्राणियोंके साथ वहां ठहर जाना आवश्यक समझा। छ महीने बाद खानमको बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम यादगार रक्खा गया। उइगुरोंने दूसरे कबीलोंके पास सूयुनजी (भेंट) भेजनेके लिये न्योता भेजा। नेमन काला घोड़ा भेजकर यादगारके ओर्दूमें लौट आये। उनके आनेपर मानो गोदमें ले बापके तम्बूमें खानके आसनपर बच्चेको बिठा दिया। उइगुरोंने अधिक सम्मान दिखलानेके लिये अपने स्थानको खानके दरबारमें नेमनोंको दे दिया। इसी तरह और भी कितने ही कबीले खबर पाकर अपने खानके पास लौट आये, लेकिन उइगुर और नेमन यही दोनों उज्बेक कबीले खानके कराची (विपत-सपतके साथी) रहे।

बड़ा हो यादगारने अपने उलुसका अच्छा नेतृत्व किया। उसके चार पुत्र हुये—बरका (बेरेका), अबलेक, अमीनेक और अलक। १५वीं सदीका समय था, लेकिन अभी भी मंगोल भाषा बिल्कुल विस्मृत नहीं हुई थी, यह खानजादोंके नामसे पता लगता है। अमीन अरबी नहीं मंगोल-भाषाका शब्द है, जिसे अरबीमें जान, फारसीमें होश, और उज्बेकी तुर्कीमें तिन कहते हैं। "शैबानीनामा"में चारों पुत्रोंको बरका, अबलक, अबका और इलबानेक कहा गया है। बरका शरीरमें बहुत ही शक्ति-

शाली था। उसके समयमें अबुल्खैर दश्ते-किपचकका सबसे शक्तिशाली खान था। उसने १४५५ ई०में बरकाके नेतृत्वमें एक सेना बुखाराके खान अब्दुल्लतीफके पुत्रकी मददके लिये भेजी। उज्बेक अपने सहयोगी बुखारियोंसे झगड पडे, और सोग्द इलाकेके लूटके मालको ऊटोंपर लादे लौट गये। कुछ समय बाद दो नोगाई खानो मूसाबेग और कुजाश मिर्जाके बीचमें लडाई हो गई। कुजाशके जीतनेपर मूसाने बरकासे सहायता मागी—नोगाई-वंश ज्यादा सम्माननीय समझा जाता था। बरकाने इस शर्त्तपर सहायता देनी स्वीकर की, कि मेरा पिता यादगार खान बनाया जाये और मूसा उसका प्रधान बेक (अमीर) बने। मूसाने स्वीकार किया। सफलताके बाद यादगारको सफेद नम्देके ऊपर उठाकर बाकायदा खान घोषित किया गया। यादगार खान अभियानपर चला। उसके हरावलका नायक मूसाबेग था। जाडेके दिन थे। जमीन बर्फसे ढँकी थी। घास-चारेका ठिकाना नही था। घोडे दुबले होते गये और रसद खतम हो गई। लौट चलनेकी बात कहनेपर बरकाने इन्कार कर दिया। एक पहाडीपर चढकर देखा, तो (उश्तउर्त) के परे एक उपत्यकामे कुजाश मिर्जाके तम्बू दिखाई पडे। बरकाने तुरन्त आक्रमण कर दिया। कुजाश पकडकर मारा गया, और उसके डेरे लूट लिये गये। बरका सुल्तानने कुजाशकी लडकी मलाई खानजादाके साथ ब्याह किया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद यादगार मर गया। अबुल्खैरकी मृत्यु भी इससे थोडा ही पहले हुई थी। अबुल्खैरकी मृत्युके बाद उसके उज्बेक जहा-तहा बिखर गये। उज्बेक कहावत है—"अगर तुम दुश्मनको अपने बापके घरकी ओर दौडते देखो, तो तुम्हें उसके साथ होकर लूटमें भागीदार बनना चाहिये।" बरका भला अबुलखैरके धन और शक्तिकी लूटमें क्यो पीछे रहता ?

कुछ सालो बाद अबुल्खैरका पौत्र प्रसिद्ध विजेता मुहम्मद शैबानीका डेरा निम्न सिर-उपत्यकामे बरका सुल्तानके पास पडा था। उसने अपने आदमियोको हुक्म दिया—"रातको घोडोपर चढ़कर जाओ, और सूर्योदयके वक्त बरकाके तम्बूपर टूट पडो, दूसरी किसी चीजका ध्यान न करके सिर्फ उसको पकड लाओ।" बरका अपने तम्बूमें था। उसने घोडोंके टापकी आवाज सुनी, और उसी समय कधेपर एक समूरी चोगा डालकर नगे पैर सरकडेके जगलोमें घुस गया। बर्फ पडी हुई थी। एक सरकडेने उसके पैरको घायल कर दिया, लेकिन वह उसकी परवा न कर सिर-दरियाके किनारे उगनेवाले उन्हीं सरकडोके घने जंगलमें छिपा रहा। शैबानीके आदमी इधर-उधर पूछ-ताछ करने लगे, जिसपर उइगुर कबीलेके एक ईनक (सरदार) मुगाने कह दिया, कि मै ही बरका हू। उसे पकडकर मुहम्मद शैबानीके पास ले गये। शैबानी बरकाको अच्छी तरह पहचानता था। उसने मुगामे पूछा, कि तुमने झूठ क्यो कहा। इसपर मुगाने जवाब दिया—"मैंने उसका बहुत नमक खाया है। मै उसकी विपत्ति-सपत्तिमें साथी रहा हू। मैंने सोचा, यदि मैं उसका पीछा करनेवालोमेंसे कुछको इस तरह फसा रक्खू, तो उसे भागनेका अच्छा मौका मिलेगा। बाकी, अब जो तुम्हारी मर्जी हो, मेरे साथ करो।" शैबानीने प्रसन्न हो उसे इनाम देकर छोड दिया। उधर शैबानीके कुछ आदमी खूनसे पता पा बरकाको पकड लाये। शैबानीने उसे मार डाला, और उसके शिविरको लूट लिया। बरकाकी विधवा खातून अबुल्खैरके द्वितीय पुत्र खोजा मुहम्मद सुल्तानकी बीबी बनी। उसे पहले ही गर्भ था, जिससे जानीबेग (अब्दुल्ला खानका दादा) पैदा हुआ। बरकाके पहले हीके दो पुत्र इलबर्स और बलबर्स थे, जिनमें बलबर्स दोनो पैरोंसे लुज था। इन्ही दोनो भाइयोंमेंसे एक इलबर्सको हुशामुद्दीनने वेसिरकी गद्दीपर बैठाया।

राजावलि—बरका-वंशी खीवा-खान निम्न प्रकार हुये—

१ इलबर्स, बरका-पुत्र १५१५ ई०
२ सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र
३ हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र
४ सोफियान, अमीनेक-पुत्र
५ बुजुगा, अमीनेक-पुत्र
६ अवानेक, अमीनेक-पुत्र

७	गाल, अगीनेक पुत्र	१५३९–४६ ई०
८	आताई, अगीनेक-पुत्र	१५४६ "
९	दोस्त, बुजुगा-पुत्र	१५५६ "
१०	हाजी मुहम्मद, अवताई-पुत्र	१५५६–१६०२ "
११	अरब मुहम्मद, हाजी मुहम्मद-पुत्र	१६०२–२१ "
१२	इसफन्दियार, अरब पुत्र	१६२२–४२ "
१३	अबुलगाजी, अरब-पुत्र	१६४३–६३ "
१४	अनुशा, अबुलगाजी-पुत्र	१६६३–८६ "
१५	एरग, अनुशा-पुत्र	१६८६–८७ "
१६	शाहनियाज	१६८७–१७०२ "
१७	अरब मुहम्मद, अनुशा-पुत्र	१७०२ "
१८	हाजी मुहम्मद, अनुशा पुत्र	१७१४ "
१९	यादगार, अनुशा-पुत्र	
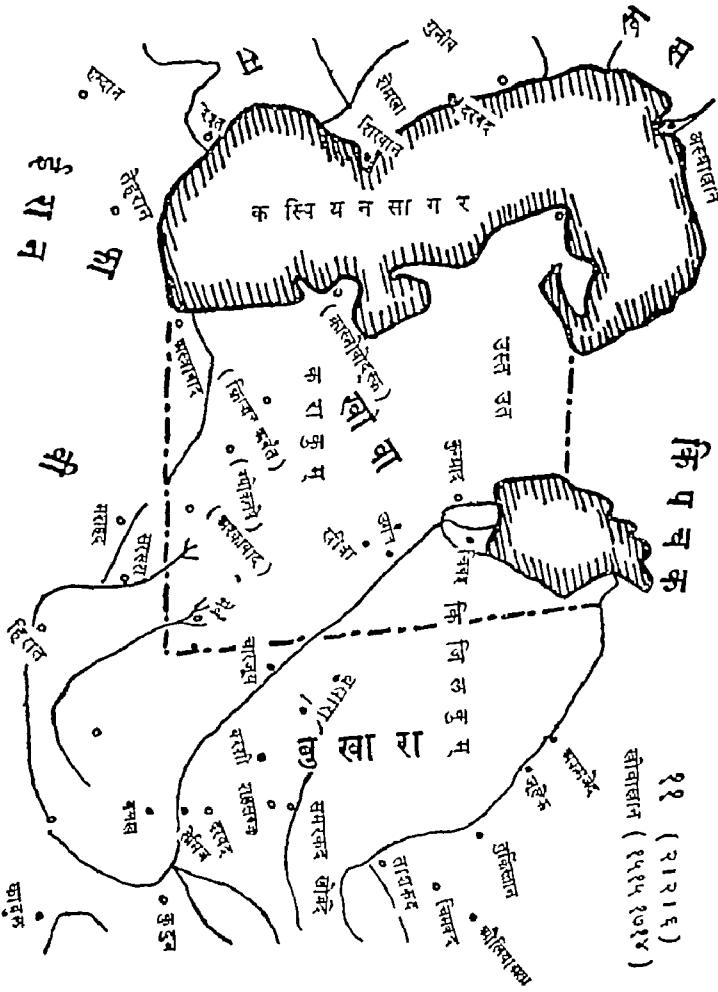
१ इलबर्स, बरका-पुत्र (१५१५ ई०)

इलवर्सको बुलाकर इधर छिपा रक्खा गया और उधर षड्यन्त्रियोंने घृणास्पद शिया ईरानियोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें मार डाला, केवल एक ईरानी भागकर जान बचा पाया। दूसरे दिन ईरानी राज्यपालके महलमें लाकर इलवर्सको खान घोषित किया गया। उज्बेक और सरत (फारसीभाषी) दोनो ही सुन्नी होनेसे शियोंके साथ घृणा करते थे। उन्होंने इस समय बडा उत्सव मनाया। इसके बाद यगीशहर और तेरसेकने भी इलवर्सकी सेनाके सामने शिर झुकाया। इलवर्सने अपने भाई बलवर्सको "बिलिकिच"की उपाधि दे यगीशहरका शासक बनाया। उरगजमें अभी ईरानी राज्यपाल सुल्तानकुल्ली अरब शासन कर रहा था, लेकिन तीन ही महीने बाद इलवर्सने सुल्तानकुल्लीको भी महलमें पकडकर सभी नौकरोंके साथ मार डाला। हजारास्प और खीवाकी छावनियोंने वहाके सरतोंसे राय पूछी, तो उन्होंने रहनेके लिये जोर दिया। दश्तेकिपचकसे अब इलवर्सने अपने भाई-बंधोंको बुलाया और बूढ़े उइगुरकी बात नहीं मानी—"उज्बेकोंमें बादशाहकी महिमा अपने अधीनोंके प्रेमपर निर्भर करती है।" यादगारके सभी पुत्र मर चुके थे, किन्तु अबलेक खानका एक पुत्र और अमीनेक खानके छ पुत्र अपने परिवारो और ओर्दूके साथ आकर उरगजमें बस गये। इलवर्स स्वय वेजिरमें रहता था। उसके भाई-बधोने खीवा और हजारास्पको इतना लूटा और बरबाद किया, कि इन शहरोंको और कातको भी ईरानी छोड गये। १५२३ ई०में शाह इस्माईल मर चुका था। खुरासान पर्वतश्रेणीके उत्तरवाले महीने और देरूनतक उसके सभी राज्यपाल अपने स्थानोंको छोडकर भाग गये। उज्बेकोंके लिये खुरासानियो और तुर्कमानोंके ऊपर लूटके अभियान करनेकी छूट मिल गई। इन अभियानोंमें लुज बलवर्स रथपर चढकर अगुवा बनता था। किजिल-बासोपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्षमें इलवर्सके सात पुत्र गाजी (धर्मयोद्धा) कहलाये।

२ सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र

इलवर्सके मरनेपर दोनो भाइयोंके पुत्रोमें सबसे बडा सुल्तान हाजी गद्दीपर बैठा, किन्तु राज्यकी सारी शक्ति उसके चचेरे भाई सुल्तान गाजीके हाथमें रही। सुल्तान गाजी बहुत ही धनी और स्वेच्छाचारी था। एक साल राज्य करनेके बाद सुल्तान हाजी मर गया, और उसके बाद यादगार-वशकी ज्येष्ठतम सतान होनेसे हसनकुल्लीको खान बनाया गया।

३ हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र

उरगजको इसने अपनी राजधानी बनाया। इलवर्स और अवानेकके पुत्रोने इसके ऊपर आक्रमण किया, और मुहासिरेके कारण उरगजमें भुखमरी शुरू हो गई। चार महीने बाद उसने आत्म-समर्पण किया। हसनकुल्लीपर अगकनाईके वधका दोष लगाया गया था, जिसके लिये उसके ज्येष्ठ पुत्र बलाल सुल्तानको मारकर बदला लिया गया। हसनकी विधवा और दूसरे पुत्र समरकद भेज दिये गये।

४ सोफियान, अमीनेक-पुत्र

अमीनेक (अवानेक) का पुत्र सोफियान उरगजमें खान बना। खानजादोमें रियासतोंका फिरसे वितरण किया गया, जिसमें बरका सुल्तानके पौत्रोंको वेजिर, यगीशहर, तेरसेक, देरून, खुरासान और मगिशलकके तुर्कमान मिले। अवानेक खानके चार पुत्रोंको खीवा, हजारास्प, कात, बलदुमाज, नौकीची सूबुई (नदी-तटका इलाका), बगाबाद, निसा, अबीवर्द, चिहारदे, मेहीने, जेजे तागबुई (पहाडी इलाका), और साथ ही आमू, बलखान और देहिस्तानके तुर्कमान भी मिले। उस समय अबुल्गाजीके अनुसार वक्षु नदी बलखानमें कास्पियन समुद्रमें गिरती थी, और आजकल जहा विकराल रेगिस्तान खडा है, वहा बहुतसे समृद्ध ग्राम और नगर बसे हुये थे। पाच शताब्दियों बाद, अब फिर कास्पियन समुद्रकी ओर वक्षुकी एक धारा मनुष्योंके हाथोंद्वारा मोडी जा रही है, जिसके कारण फिर इस मृत भूमिमें जीवन सचार होनेवाला है। बलखानके नजदीक रहनेवाले इरसारी तुर्कमानोंने कुछ

समझौता सोफियानका कर दिया, इसके बाद खानकी ओरसे कर उगाहनेके लिये जब आदमी भेजे गये, तो उन्हें इन पुमतुआने मार डाला। इसपर सोफियान एक बड़ी सेना ले इरसारियों तथा पड़ोसी खुरासानके सलरियाके डेरापर आक्रमण करके लूट-मार करते बहुतसे स्त्री-बच्चा और सम्पत्तिको अपने साथ ले गया। उस समय कितने ही तुर्कमानोंने चू-नटकी निर्जन-अधित्यका (प्लेटो) में शरण ली थी। उन्हें चारों ओरसे घेर लिया गया, जिसके कारण बहुतसे प्यासके मारे मर गये। अवानेक-पुत्र अगताईको उन्होंने वचन दिया, कि हम तुम्हारी सन्तानके सदा भक्त रहेंगे। अगताईने बीचमें पड़कर प्रत्येक मारे गये नर उगाहनेके लिये हजार भेड़ अर्थात् कुल चालीस हजार भेड़ें दंड देनेपर समझौता करा दिया। इरसारियोंने सोलह हजार, खुरासानी सलरियोंने सोलह सौ, और तेके सारिक-यामूत—इन तीन कबीलोंने आठ हजार भेड़ें दी। कुछ समय बाद तुर्कमानोंकी जनगणना करके उनके ऊपर निम्न प्रकार कर लगानेका निश्चय हुआ—

उतशाकी सलूर (भीतरी सलूर)	१६०००, तथा उसके ऊपर		१६०० खानकी रसोईके लिये।			
हसन करीता	१६०००	और	१६००	"	"	"
अरवाजी (भीतरी सलूर)	४०००	और	४००	"	"	"
गोकलान	१२०००	और	१२००	"	"	"

अदाली (खिजिर), अली, तीवेची } इन तीनों वक्षु तटवासी कृषक कबीलोंको अपनी उपज और भेड़ोंमेंसे कुछ कर और अदकली (सैनिक) भी देने पड़े।

सोफियानके मरनेपर खीवा उसके पुत्रोंको खारिशके रूपमें मिला।

५ बुजुगा, अमीनेक-पुत्र

भाईका स्थान जिस वक्त बुजुगाने लिया, उस वक्त बुखाराके उबैदुल्ला खान और ईरानी शाह तहमास्पके बीचमें संघर्ष हो रहा था। ख्वारेज्मी भी इससे फायदा उठानेके लिये पील-कुपरुकीतक जा खोजन्द और अस्पेराईं (अस्त्राबादके समीप)पर टूट पड़े। शाह तहमास्पके ऊपर पश्चिमसे उसमान-अली तुर्क भी प्रहार कर रहे थे। दुश्मनोंमें फूट डालनेके लिये शाह तहमास्पने छिङ-गिस् खानके खूनसे संबंध जोड़नेके लिये बुजुगा खानसे पुत्री मांगी। खानने अपनी पुत्री न होनेसे अपनी भतीजी तथा सोफियान खानकी पुत्री आइशाको देना चाहा। विवाहपत्र लिखवानेके लिये लड़कीका भाई आगिस सुल्तान गया। शाहने उसका कजवीनमें स्वागत-सत्कार किया और खोजन्द-शहर (ईरान)को उसे जागीरमें दिया। उसने सोनेके नौ डले, चांदीके नौ डले, अच्छी जातिके सुसज्जित नौ घोड़े, रेशमके ऊपर सोनेके काम किये नौ तम्बू तथा समुचित कालीन और तकिये, एक हजार थान रेशम, आदि बुजुगा खानके लिये भी भेंट भेजे। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिये ख्वारेज्मी उज्बेकोंने ईरानी सीमापर लूट-मार बन्द कर दी। काफी दिनोंतक राज्य करनेके बाद बुजुगा मर गया और उसकी जगह उसका भाई अवानेक खान बना।

६ अवानेक, अमीनेक-पुत्र

बुजुगाके तीनों पुत्रों दोस्त मुहम्मद, ईस मुहम्मद और बुरुमर्मेसे पहले दोनोंको कातकी जागीर मिली। अवानेककी दो बीबियां मंगीत कबीलेकी थीं, और एक दासी थी। दासीसे उसका पुत्र दीन मुहम्मद हुआ, जो लड़कपनसे ही युद्धके खेल खेला करता था। उस समय अस्त्राबादके पासका इलाका उरगजके उज्बेकोंके हाथमें था। दीन मुहम्मद बीस सालका हो गया। उसने इस इलाकेको अपने लिये मांगा। न देनेपर उसने चालीस सहायकोंके साथ जाकर एक तुर्कमान बेक (सरदार)के ऊंटों और भेड़ोंको लूट लिया। तुर्कमान बेकने अपने स्वामी मुहम्मद गाजी सुल्तान इलबस-पुत्रको इसकी खबर दी। मुहम्मद गाजीकी बहिनकी शादी हाल हीमें अवानेक खानसे हुई थी। उसने छापा मारकर दीन मुहम्मदको पकड़, लूटे मालको छीन, कुछ दिनों बंदी रख उसे हाथ-पैर बांधके घोड़ेपर सवार करके बापके

पास भेज दिया। लेकिन दीनू (दीन मुहम्मद) ऐसा-वैसा आदमी नही था। उसके लिये उसके साथी अपना खून-पसीना एक करनेके लिये तैयार थे। उन्होने रास्ते हीमें दीनूको छुड़ा लिया। दीनूने बाप और सौतेली मा तमगाज चुराको झूठी चिट्ठी लिखी, कि तमगाजकी बहिन बहुत बीमार है। बहिन और बहनोईकी चिट्ठी पाकर मुहम्मद गाजी आया, तो पता लगा, चिट्ठी जाली थी। बहिनने भाईको बहुत सावधान कर दिया। इसी समय दीनूके आदमियोके पैरकी आहट सुनकर मुहम्मद गाजी अस्तवलमें रक्खी सूखी लीदके ढेरमें जा छिपा, किन्तु आदमियोने उसे पकड लिया और उसकी गर्दन काट दी। यह खबर वेजिरमें गई। निहल सुल्तानके भाई सुल्तान गाजीसे मिलने अली सुल्तान गया था। उसने भाईके वधका गुस्सा अली सुल्तानको मारकर निकाला—"खूनका बदला खून" घुमन्तू कबीलोका एक सर्वोपरि विधान है। इलबर्मका ओर्दू वेजिरमें रहता था और अवानेकका ओर्द् उरगजमें। खानने अपने कबीलेवालोको मना किया, लेकिन वह अली सुल्तानके खनका बदला लेनेके लिये अधीर थे। दोनोका किर-मगिशलकके छोरपर अवस्थित कुमकदमें युद्ध हुआ, जिसमें अवानेककी जीत हुई। इलबसके खानदानको मारकर सामानको लूट लिया गया। सुल्तानकी वेवा उलुग तूर्न अपने लड़को और लड़कियोंके साथ बुखारा जानेके लिये छोड दी गई, जहापर बलबस सुल्तानका भी परिवार पहलेसे ही रहता था। अब सारा ख्वारेज्म अवानेक खानके लड़कोका था। खानने अपने लिये उरगज रख बाकी अपने बेटे-पोतोमें बाट दिया। दीन मुहम्मदको सुल्तान गाजीवाला देरून इलाका मिला।

सुल्तान गाजीके दो पुत्र उमर गाजी और शेर गाजी बुखारामें रहने लगे थे। उमरने बापके खूनका बदला लेनेके लिये उबैदुल्ला खानसे सैनिक सहायता ले अवानेकपर आक्रमण किया, और उसे मारकर पितृ-ऋण चुकानेमें सफल हुआ।

इस झगडेके बाद भी देरूनका इलाका दीन मुहम्मदके हाथमें रहा, जहा अवानेकके दो बेटे भी ख्वारेज्मसे भागकर आ गये थे। दीन मुहम्मदने खिजिर कबीलेकी शाखा अदकालीके बेक (सरदार) को सैनिक सहायता देनेके बदले तरखून (राजकुमार) की पदवी और सेनामें वामपक्षमें स्थान पानेका सम्मान प्रदान किया, तथा अदकालियोको उज्बेकोमें गिने जानेका प्रलोभन दे अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार एक हजार अदकाली सैनिक मिले। तीन हजार और सैनिकोको जमाकर दीन मुहम्मदने खीवापर चढाई कर दी, और बुखारासे आई उबैदुल्लाकी सेना को हराकर १५३९ ई०के आसपास परिवारकी रूठी लक्ष्मीको मना लिया।

७ काल, अमीनेक-पुत्र (१५३९–४६ ई०)

लेकिन ख्वारेज्मका खान अब भी अवानेकका भाई काल खान हुआ, जिसने सात बरसतक शासन किया। उसके समयमें ख्वारेज्म कितना धनधान्यपूर्ण था, वह इस कहावतसे सिद्ध है—"काले खानने गद्दी पकडी, एक पैसेमें रोटी तगडी।"

८ अकताई खान, अमीनेक-पुत्र (१५४६ ई०)

नये खानने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया। काल खानके पुत्रोको कात नगरकी, उसी तरह सोफियान खानके पुत्रो यूनस और पहलवान-कुलीको भी जागीर मिली थी। लेकिन, बुजुगा खान, अवानेक खान और अकताई खानके बेटोने मिलकर अपने इन सम्बन्धियोको भगा दिया और वह बुखारामें शरण लेनेके लिये मजबूर हुये। छिने हुये इलाकेकी बाटमें अवानेक खानके पुत्र अली सुल्तानको देरून दिया गया, उसके भाई महमूदको उरगज, हाजिमको वगावाद, दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द, और बुजुगोंके दोनो पुत्रो ईश और दोस्तको खीवा-हजारास्प मिले। सोफियानके पुत्र यूनसने नोगाइयोंके प्रसिद्ध सुल्तान इस्माईलकी लडकीसे ब्याह किया। वह अपने चालीस अनुचरोके साथ बुखारा जा रहा था। तुर्कमान उस समय निर्जन था और लोग उरगजके पास डेरा डाले हुये थे। इसी समय यूनसको अपने पूर्वजोकी सम्पत्तिको लौटानेका ख्याल आया, और रातमें अपने साथियोके साथ महलमें घुसकर उसने राज्यपाल सरी मुहम्मद सुल्तानको पकड पहरेमें अकताई खानके पास वेजिरमें

भेज दिया। सैनिक और नागरिक महमूदसे परेशान थे, इसलिये उन्होंने यनसका स्वागत करते हुये उसे खान घोषित कर दिया। अकताई सेना लेकर आया, लेकिन उसे हारकर भागना पडा। यनस और अकताईके पुत्रोंके बटे कासिम सुल्तानने पीछा करके नानाको पकडकर उरगज लेजा चुपकेसे अकताईको इस तरह मार डाला, कि उसके शरीरपर कोई घावका चिह्न नही दिखाई पडता था—मालूम पडता था, जैसे वह स्वाभाविक मृत्युसे मरा हो। निहतकी लाशको उसके परिवारके पास वेजिरमें भेज दिया गया। मृत खानके पुत्रोंने बदला लेनेके लिये उरगजपर चढाई की, और यनसको बुखारा भाग जाना पडा, लेकिन किसी अनुचरने छिपे हुये कासिम सुल्तानको पकडा दिया। उरगज शत्रुओंके हाथमें गया, और कासिम कत्ल कर दिया गया। सोफियान खान और काल खानके वंशका उच्छेद हो गया और अवानेक खानके लडके खुरासान भाग गये। फिर बटवारा हुआ, अकताई खानके परिवारको वेजिर और उरगज मिले, और बुजुगा खानके पुत्रों ईस, दोस्त और बुरुमको खीवा, हजारास्प और कातके इलाके।

९ दोस्त खान, बुजुगा-पुत्र (१५५६ ई०)

दोस्त बडे ही नरम स्वभावका आदमी था। भाई ईसने उरगज मागा, और अपने लिये सिर्फ खीवा-को रखनेके लिये कहा। दोस्तके देनेपर भी हाजिमने इंकार कर दिया। इसपर ईसने हाजिमको वहासे हटानेके लिये हमला कर दिया। सात दिनतक मुहासिरा करनेपर भी सफलता नही मिली। इसपर खिसियाकर उसने उइगुर और नेमन कबीलेके आदमियोको छोड बाकी सभी वंदियोको बडी निष्ठुरतासे मार डाला, और फिर खीवा जाकर इन कबीलाके उज्बेकोको वहासे भगाकर उनका स्थान दुश्मन कबीलेको दे दिया। कुछ समय बाद १५५६ ई०में वह फिर उरगजपर चढा, और सात दिनके असफल मुहासिरेके बाद धोखेसे सरताके मुहल्लोमें घुस गया। अकताईका पुत्र नेमन उइगुर कबीलेवालोके साथ वेजिरकी ओर हट गया। कुछ समय बाद हाजिम मुहम्मदने अपने भाइयो तथा अवानेक पुत्र अली सुल्तान एवं दीन मुहम्मद-पुत्र अबुल्सुल्तानकी सहायतासे उरगजपर आक्रमण किया। चार महीनेके मुहासिरेके बाद किला तोडनेके लिये आक्रमण करते समय ईस सुल्तान मारा गया। कुछ सैनिकोने खीवामें जा दोस्त मुहम्मदको भी मार डाला। ईसके दो लडके वहासे भागकर बुखारा जा वही मरे। खीवा-राजवंशमें राजपरिवारोका कत्लेआम और उच्छेद आम बात थी। अब बुजुगा खानका वंश समाप्त हो गया। यह घटना ९६५ हि० (२४ X १५५७–१४ IX १५५८ ई०) की है।

१० हाजी मुहम्मद, हाजिम, अकताई-पुत्र (१५५६–१६०२ ई०)

हाजिम अकबरका समकालीन था। खान घोषित होते समय इसकी उमर उन्तालीस सालकी थी। इसने वेजिरको अपनी राजधानी बनाया, और अली सुल्तानको उरगज, हजारास्प तथा कात मिले। हाजिमके भाई महमूदको आधा खीवा, उलुग-तूर्व-ताश-कूनिशके तुर्कमान, दूसरे भाई तैमूरको आधा खीवा मिला। दीन मुहम्मदके पोते नर मुहम्मदके इलाके मेवपर हमला किया करते थे। दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द मिला था, यह हम बतला आये है, जहासे वह बराबर ईरानके शियोंपर जहाद किया करता था। शाह तहमास्पने सेना भेजकर अबीवर्दको छीन लिया। दीन मुहम्मद इसपर सीधे कजवीन चला गया। वह साहसका पुतला था। शत्रुके हाथ मारे जानेका उसे कोई डर नही था। फिर शाहकी जाली चिट्ठी लाकर उसने अबीवर्दको खाली करवा लिया। फिर एक-एक करके किजिल-बास (शिया) बादशाहके अनुयायियोको मारा। तहमास्प उसे दंड देनेके लिये आया, तो दीन मुहम्मदने चालीस-पचास आदमियोके साथ सीधे शाहके पास जा उसके दामनको चूमा। शाहने अपना एक हाथ उसकी गर्दनपर और दूसरा हाथ छातीपर रखकर देखा, उसकी सास बिल्कुल स्वाभाविक-सी चल रही है। इसपर उसने आश्चर्य करते हुए कहा—"जरूर यह (हृदय) पत्थरका है।"

फिर दीनूके सम्मानमें शाहने एक बड़ी दावत की और क्षमा करके अबीवर्द भी उसे प्रदान कर दिया।

बुखाराके खान उबैदुल्लाने मेर्वमें योलुम बीको अपना राज्यपाल नियुक्त किया था। लोगोने विद्रोह कर दिया, इसपर तीस हजार सेना लेकर उबैदुल्ला आया। योलुमने दीन मुहम्मदसे मदद मागी। दीन मुहम्मद अपने सवारोके साथ उस जगह पहुचा, जहापर मुरगाव नदी वालुका-राशिमें अन्तर्धान हो जाती। उसने अपने सवारोको दोनो बगलोमें वृक्षकी डालिया बाधकर धीरे-धीरे चलनेके लिये कहा। धूलसे आसमान छा गया। बुखारी सेना उसे देखकर डर गई। एक ओरसे दीन मुहम्मदकी भारी सेना और दूसरी तरफ योलुमकी फौज, दोनोके बीचमें पडकर मरनेकी जगह बुखारियोने घर लौट जाना ही अधिक पसन्द किया। दीन मुहम्मदने इस प्रकार मेवपर अधिकार करके अपनेको वहाका खान घोषित किया, और वही रहते चालीस वर्षकी उमरमें ६६०हि० (१८XII१५५२–८XI १५५३ ई०) में मरा। उसने अपने द्वितीय पुत्र अबुल मुहम्मदको अपना कलखान (युवराज) बनाया था, जो उसके बाद मेर्वकी गद्दीपर बैठा।

एक समय अबुल मुहम्मदके पुत्र जलालने खुरासानपर आक्रमण किया। प्रतिरोधके लिये ईरानियोने मशहदमें सेना जमा की। दोनो ओरकी सेनाओमें लडाई हुई, जिसमें अपने दस हजार उज्बेकोंके साथ जलाल मारा गया। अबुल मुहम्मदको अपने इकलौते पुत्रके मारे जानेका भारी सदमा हुआ, जिसका इलाज हकीमोने दूसरा पुत्र प्राप्त करना बतलाया। मेर्वकी एक लोली (डोम या रोमनी) स्त्री वीबीजेह तम्बुरिन बजा और चित्र खीचकर जीविका कमाती थी। उसने व्याह नही किया था, किन्तु उसके पास चार सालका लडका था। उसी लडकेको लाकर घोषित कर दिया गया कि, यह अबुल मुहम्मदका लडका है। अबुल मुहम्मदने उसका नाम नूर मुहम्मद रखा। यही नूर मुहम्मद अबुलके मरनेके बाद मेवके गद्दीपर बैठा। कितने ही सालो बाद हाजिमके पुत्राने यह कहते हुये उसपर आक्रमण किया—"हम लोली (वेश्या) के लडकेको नही मान सकते।" इसपर नूर मुहम्मदने बुखारावालोके पास सदेश भेजा—"मै तुम्हारी ओरसे राज्यपाल होनेके लिये तैयार हू।" अब्दुल्ला खानने आकर मेवको तो ले लिया, लेकिन साथ ही नूर मुहम्मदको अगूठा दिखला दिया। नूर अब उरगजमें हाजिमकी शरणमें गया। अवानेक-पुत्र अली सुल्तानको उरगज-हजारास्प-कातके अतिरिक्त निसा, अबीवर्द और तागबुर्ड भी मिले थे। वहासे वह बसत और गर्मियोमें बराबर खुरासानपर आक्रमण करके पीलकुहकी, तरशीज, तरबेत, जाम और खारकारमें लूट-मार मचाया करता था। अली सुल्तानसे नूर मुहम्मदसे जुरजान, जार्जरूम, कराइलू और अस्त्रा-बादको जीत लिया। अब उसके पास चालीस हजार सेना थी। वह अपने प्रत्येक उज्बेकको प्रतिवर्ष सोलह भेडें देता था, जिसके लिये तुर्कमानोसे कुछ कर लेना, कुछ ईरानकी लूटमेंसे, और एक पचमाश भाग अपने पाससे भी देता था। एक बार उसने ईरानियोकी पद्रह हजार सेनाको हराकर पाच हजार घोडे पकडे थे। ईरानकी इन्ही चढाइयोमें ६७६ हि०(२६ VI १५६८–१७ V१५६६ ई०)में अली सुल्तानके मारे जानेके बाद उसका पुत्र मजर निसामें उसका उत्तराधिकारी हुआ, किन्तु पच्चीस वर्षकी आयुमें ही निस्सतान मर गया। अली सुल्तानके मरनेपर हाजिम खानने वेजिरको अपने भाई मुहम्मद सुल्तानको दे दिया और स्वय जाकर उरगजमें रहने लगा। तुर्कीके सुल्तान—जो सुन्नियोंका खलीफा भी था—का दूत मिलकर शियोपर हमला करनेकी प्रेरणा देनेके लिये हिन्दुस्तान गया था। अब वह उसी बातके लिये बुखारा आया। बुखारासे वह उरगज और मगिशलकके रास्ते जब लौट रहा था, उसी समय हाजिमके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने उरगजमें उसे लूट लिया और मुश्किलसे खाना खर्चेके लिये थोडासा पैसा छोड दिया। बुखाराका खान अब्दुल्ला इसपर नाराज हो गया। उधर कास्पियनके पश्चिमी तटका इलाका शिरवान तुर्कीके सुल्तानके हाथमें था। अन्तर्वेदके व्यापारियोको उरगजसे आगे मगिशलक पहुच जहाजमें कास्पियन पार कर शिरवानके रास्ते यात्रा करनी पडती थी, क्योंकि कास्पियनका दक्षिणी तट शियोके हाथमें था, जहा सुन्नी व्यापारियोके जान-मालकी खैरियत नही थी। उक्त घटनामें एक साल पहले हाजी किरतास एक बडे कारवा और मक्काके तीर्थयात्रियोके साथ उरगज पहुचा। उसे भी पुलाद सुल्तानके पुत्र बाबा सुल्तानने लूटकर

बुखाराकी ओर खदेड दिया। नूर मुहम्मदने मेवको लेकर अब्दुल्लाके मनोरथको असफल कर दिया था, इसलिये अब्दुल्लाने बडी तैयारी की। हाजिम खान अपने उज्बेकोपर विश्वास नहीं करता था। वह अपने पुत्र मुहम्मद इब्राहीमके हाथमे उरगजको छोड अपने दूसरे पुत्र अरब मुहम्मद सुल्तानकी जागीरमे वेरून चला गया। बुखारी सेनाके आनेपर ख्वारेज्मी-उज्बेक खीवा और हजारास्प आदि नगराको छोड वेजिर * भाग गये।

खीवासे निकला दो हजार परिवारोका विशाल गिरोह किसी उत्सवके जलूसकी तरह मालूम होता था। पातीसे खडा होनेमे उन्हें आधा दिन लगा था। उन्होने अपनी गाडियापर घरकी मुर्गियो, चटाइयो और सभी चीजोको लटका रक्खा था। बुखारी सेनाने खीवापर अधिकार कर नागरिको के साथ मित्रतापूर्ण घोषणा करके वेजिरका रास्ता पकडा। रास्तेमे उसने पुलाद सुल्तानके अनुचरोको तितर-बितर करते हुये उनका सामान लूट लिया। वेजिरमे आपसमे फूट थी, इसलिये वह शत्रुसे कैसे मुकाबिला करते? एक मासतक नगरका मुहासिरा रहा। बुखारी अब्दुल्ला खानने भाग की थी—"म केवल बाबा सुल्तानको दड दनेके लिये आया हू, तुम मेरे पास निर्भय चले आओ।" खान स्वय अब्दुल्लाके शिविरमे चला गया, और इस प्रकार आपसी फूटके कारण सारा ख्वारेज्म बिना एक भी प्रहारके अब्दुल्लाके हाथमें चला गया। अब्दुल्ला वहांके भिन्न-भिन्न शहरोमे अपने राज्यपाल नियुक्त करके १००२ हि० (१७ IX१५९३–१८ VIII १५९४ ई०) मे बुखारा लौट गया। पीछे अपनी शपथकी काई पर्वा न करके अब्दुल्लाने बीस-बाईस राजकुमारोको अक्सूमें डुबाकर मरवा दिया और लोगोके ऊपर भारी कर लगाया। हाजिम खान अपने बचे-खुचे सुल्तानोके साथ भागकर शाह अब्बास I के पास चला गया, और उसका पुत्र सुईउनिच मुहम्मद अपने दो पुत्राके साथ काफिर गियोके पास जाना पसद न कर तुर्कोमें शरणार्थी हुआ। इस समय अब्दुल्लाका खूनखार पुत्र बलखका राज्यपाल अब्दुल मोमिन सफावियो (ईरानियो) से लड रहा था। ख्वारेज्ममें सेना कम रह गई थी, यह खबर पाकर हाजिमके पुत्र अरब मुहम्मदने चुपचाप अस्त्राबादके लिये प्रस्थान कर दिया। पीछे हाजिम भी आ पहुचा। तुर्कमान मदद करनेके लिये तैयार ही थे। इस प्रकार अरब मुहम्मदने १००४ हि० (६ XI १५९५–२७VII१५९६ ई०) में कई शहराको ले लिया। लेकिन जब अब्दुल्लाने भारी सेना भेजी, तो दुश्मन तितर-बितर हो गये। हाजिम अस्त्राबाद होते शाहके दरबारमे पहुचा। अब्दुल्लाको बाबा सुल्तानसे मुकाबिला करनेके लिये हजारास्पका चार मासतक मुहासिरा करना पडा। अन्तमे बाबा सुल्तान पकडकर मारा गया और ख्वारेज्मपर फिर बुखाराका शासन स्थापित हो गया।

१००५ हि० (२५ VIII १५९६–१६ VII १५९७ ई०) में अब्दुल्लाके मरनेपर शाहने स्वय सेना लेकर बोस्तामपर चढाई की, और हाजिम तथा उसके पुत्र अरब मुहम्मदको ख्वारेज्म जानेके लिये आदेश दिया। हाजिम उस समय पद्रह आदमियोके साथ कुरेन पह[illegible] एक नेके कबीलेके डेरेमें था। अब्दुल्लाके बाद उसके उत्तराधिकारी अब्दुल् मोमिनके भी कत्लकी खबर सुनकर वह आठ दिनमें चलकर उरगज पहुच गया, और उसका शासन फिरसे ख्वारेज्मपर स्थापित हो गया। उसने अपने पुत्र अरब मुहम्मदको खीवा और कात दिया, पौत्र इसफन्दियारको हजारास्प, और अपने लिये उरगज तथा वेजिरको रक्खा। जिन उज्बेकोको जबर्दस्ती बुखारा ले जाया गया था, वह भी लौट आये। इसी समय नूर मुहम्मद भी ईरानसे अपनी पुरानी जागीरमें लौट आया था। नूर मुहम्मद उज्बेकोको सताता और तुर्कमानो तथा सरतोका पक्षपात करता था। यह खबर सुन शाह अब्बासने एक मासके मुहासिरेके बाद मेर्वको उससे छीन लिया। अबीवर्द, निसा और देरून भी शाहके हाथमें चले गये, जहापर उसने अपने राज्यपाल नियुक्त किये। नूर मुहम्मदको वह पकडकर अपने साथ ईरान ले गया, जहा वह बन्दीखानेमें मरा।

* बर्तोल्दिके अनुसार इसका ध्वसावशेष उस्तउतकी अधित्यकामें चिकके नजदीकका देवकेसकेन है, अथवा कुन्या-उरगजके दक्षिण-पश्चिम २४ मीलपर अवस्थित शेरवानका ध्वसावशेष है, जो वक्षु-कास्पियन नहरके बननेकी प्रतीक्षामें सोया हुआ है।

हाजिम मुहम्मद १०११ हि० (२१ VI १६०२–१२ V १६०३ ई०) में मरा।

जेन्किन्सनकी यात्रा—हाजिम मुहम्मदके शासनकालमें अंग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन खीवासे गुजरा था। उसके यात्रा-विवरणसे उस समयकी बहुतसी बातोंपर प्रकाश पड़ता है। जेन्किन्सनने १३ अप्रैल १५५८ ई०को अपने मालके साथ मास्को छोड़ा और १४ जुलाईको वह गस्त्राखान पहुंचा। अपने मालके ढोनेके लिये वहां उसने बनी-बनाई नाव खरीदी, और कास्पियन समुद्रके उत्तरी तटसे होते यायिक (उराल) और यम्बा नदियोंके मुहानोंको बाईं ओर छोड़ते वह २७ अगस्तको मंगिशलकमें उतरा। उसके साथ और भी कितने ही ईरानी तथा तातार व्यापारी अपनी नावोंमें चल रहे थे। मंगिशलकके राज्यपालने ऊंटोंका इन्तिजाम कर दिया। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि उसे काफी भेंट-पूजा देनी पड़ी। जेन्किन्सन अब अपना माल ले स्थल-मार्गसे वेजिर पहुंचा। वह लिखता है—लोग बड़े नोचनेवाले हैं। मुझे प्रत्येक ऊंटके लिये तीन रूमी चमड़े और चार लकड़ीके बर्तन देने पड़े, राज्यपालको अलग नौ चमड़े और चौदह दूसरी चीजें भेंट देनी पड़ी। जिस कारवांमें जेन्किन्सन चल रहा था, उसमें हजार ऊंट थे। पांच दिनकी यात्राके बाद वह मंगिशलकके उस इलाकेपर पहुंचा, जिसपर तैमूर सुल्तानका अधिकार था। सुल्तानने बड़ा अच्छा बर्ताव किया और जेन्किन्सनको मांस और घोड़ीका दूध दिया। उसने उससे पन्द्रह रूबलकी चीजें लीं, लेकिन उसके बदलेमें एक घोड़ा इनाम दे अपने तम्बूमें अंग्रेज व्यापारीकी जियाफत भी की। वहांसे रेगिस्तानके भीतर बीस दिनका रास्ता चलना पड़ा। खानेके लिये एक घोड़ा और एक ऊंट मारना पड़ा। पानी कभी दो दिनपर मिलता था, सो भी खारा-सा। अब कारवां कास्पियनकी एक खाड़ीपर पहुंचा, जहांके तुर्कमान सरदारने धमकाकर पैसा वसूल किया। जेन्किन्सन लिखता है कि, इस समय (१५५८ ई०) वक्षु (आमू-दरिया) यहींपर कास्पियन-समुद्रमें गिरती है।

६ अक्तूबरको रवाना होकर तीन दिनकी यात्राके बाद वह शहर वेजिर (सेलीजर) में पहुंचा। अजीम (हाजिम) खान अपने तीन भाइयोंके साथ यहीं रहता था। जेन्किन्सनने ९ अक्तूबर (१५५८ ई०)को खानसे भेंट की, और भेंटके अतिरिक्त रूसके जारका पत्र भी उसे दिया। खानने घोड़ेके मांस और दूधसे दावत कर, रास्तेके लिये सुरक्षा-पत्र भी दिया। वेजिरका दुर्ग एक ऊंचे पहाड़पर था। खानका घर बहुत ऊबड़-खाबड़ और दुर्बल मिट्टीका था। लोग बहुत गरीब थे। दक्षिणका इलाका अधिक उर्वर था। उसने लिखा है—"यहां एक बढ़िया फल दोनो (तरबूजा) होता है, जो बहुत बड़ा और उसमें पानी भरा होता है। लोग खानेके बाद पेयकी जगह इसे खाते हैं। एक और भी फल है, जिसे खरबूजा कहते हैं, और वह खीरेके जैसा बड़ा पीले रंगका तथा मीठा होता है। एक और भी अनाज जेगुर (बाजरा) होता है, जिसके डंठल बेंतकी तरह ऊंचे होते हैं और उसके सिरेपर चावलकी तरह दानोंके गुच्छे लगते हैं, मानो छोहारोंके लच्छे हैं। सिंचाईके लिये वक्षुसे इतना पानी ले लिया गया है, कि नदी अब कास्पियनतक नहीं पहुंचती।"

वेजिरसे दो दिन चलनेके बाद जेन्किन्सन उरगंज पहुंचा। यहां भी कर देना पड़ा। जेन्किन्सनने हाजिमके भाई अली सुल्तानसे भेंट की, जिसने गृहयुद्ध करते सात वर्षोंमें चार शहर लिये और खोये। युद्धके कारण यहां बहुत कम व्यापारी आते थे, इसलिये मालकी बिक्री अच्छी नहीं थी। जेन्किन्सन केवल चार केरसियोंको बेच सका। यहांसे कास्पियनतकका प्रदेश तुर्कमानोंका देश कहा जाता था, और शासक थे हाजिम खान और उसके भाई। "जो भिन्न-भिन्न माताओं और कुछ दासियोंके पुत्र होनेसे एक-दूसरेसे ईर्ष्या करते, एक दूसरेको खतम करनेकी कोशिश करते हैं।" आपसके युद्धमें उनमेंसे हारकर कोई बच निकलता, तो आमतौरसे साथ ही उसके अनुचर भी रेगिस्तानमें चले जाते, और गांवके पानी लेनेके पड़ावोंपर छापा मारते। इसी प्रकार वह कारवांको लूटते रहते, जबतक कि फिर वह घरेलू झगड़ेके लिये अपनेको काफी मजबूत न कर लेते।

उरगंज छोड़कर वक्षुके किनारे-किनारे सौ मील चलनेपर जेन्किन्सन एक स्थानपर पहुंचा, जिसको वह आर्दोक कहता है—यहां तेज प्रवाहवाली धारा थी, जो कि वक्षुको छोड़नेके बाद हजार मीलपर उत्तरमें जा भूमिमें विलीन हो जाती है, फिर प्रकट होकर खिताई समुद्रमें जाकर

मिलती हैं। आगे जेन्किन्सनको वात नगर मिला। वहाके लोग हाजिमके भाई सरामेत सुल्तानकी प्रजा थे। जेन्किन्सनने सुल्तानको अपना अगुवा ऊंट भालर लिये एक रूसी लाल चमडा और दूसरे वर दिये। सुल्तानने उसके साथ प्रतिरक्षी भेज दिये। "प्रतिरक्षी भी लाऊसन थे। तीन दिन जानेके वाद उन्होंने और आगे जानेके लिये भारी रकम मागी और न देनेपर वह लौट गये। फिर कारवाके खोजे (स्वामी) वहीं मुकाम करनेपर जोर देकर भेडकी पसलीकी हड्डीसे शुभाशुभ सगुन विचारने लगे। वह इस हड्डीको जलाकर उसकी राखकी स्याही वनाकर कुछ अक्षर लिख रहे थे। इसी समय एक निर्वासित राजकुमारने अपने कुछ अनुयायियोंके साथ जबर्दस्त आक्रमण किया, लेकिन व्यापारियोंने भी उसका मुकाबिला किया। जेंकिन्सनके पास कुछ बंदूकें थीं, जिन्होंने इस समय बडा काम दिया। लोगोंने अपने पशुओं और सन्दूकोंका मोर्चा बना लिया, और उसके पीछेसे गोलियां दागी जाने लगीं। रातके वक्तमें डाकू सुल्तानने संदेश भेजा, कि हम मुसलमानोंको छोड देंगे, यदि तुम अपने क्रिस्तान साथियोंको हमारे हाथमें दे दो। लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। अन्तमें कुछ भेंट और एक ऊंट देकर जान छुडानी पडी। यात्री फिर वहांसे बुखारा गये। जब व्यापार करके जेन्किन्सन उरगंज लौटा, तो रूसके जारके पास जानेवाले हाजिम खानके चार दूत भी उसके साथ हो लिये। १५६५ ई०में जार फ्योदरके पास खीवासे नये राजदूत भेजे गये थे।

११ अरब मुहम्मद, हाजिम-पुत्र (१६०२–२१ ई०)

अरब मुहम्मद जहांगीरका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अस्फन्दयारको हजारास्पकी जगह वातका इलाका दिया। कुछ समय वाद १६०२ ई०में यायिक-तटनिवासी हजार रूसी कसाकोंने आकर उरगंजको लूटा और हजारसे अधिक नागरिकोंको मार डाला। वह लूटे मालको हजार गाडियोंपर ले चले। अरब मुहम्मदने उनके रास्तेको काट दिया, जिससे कसाक रेगिस्तानमें भटक गये, जहां पानीके अभावके कारण उन्होंने पशुओंका खून पी प्यास बुझाई। पांच दिनतक उन्हें खून भी नहीं मिला और ऊपरसे उज्बेक चारों ओरसे आक्रमण कर रहे थे। एक वार उज्बेक पीछेसे उनकी गाडियोंके मोर्चेके भीतर घुस गये और उन्हें टुकडे-टुकडे कर डालनेमें सफल हुये। सिर्फ एक सौ कसाक किसी तरह बचकर अरालके किनारे पहुंचे। उन्होंने तूकके किलेके पास अपना किला बनाया और कुछ समयतक वह मछली खाकर जीते रहे। अन्तमें अरब मुहम्मदने उनके किलेको दखल कर लिया।

पूर्वसे कल्मक-मंगोल अरालकी ओर पैर फैलाते हुये अब यहां भी आकर आक्रमण करने लगे। वह खोजाकुल और शेख जलील पर्वतके बीचमें पहुंचकर तूकतक उज्बेक डेरोंको लूटकर बूरीचीके रास्ते लौट गये। अरब मुहम्मदने पीछा करके माल और बंदियोंको छुडा लिया, लेकिन कल्मक हाथ नहीं आये। कुछ समय बाद नेमन कबीलेवालोंने इलबस खानकी सन्तान खुसरो सुल्तानको अपना खान बननेके लिये बुलाया, जिसने षड्यंत्र किया, लेकिन परदा खुल जानेपर खुसरो और षड्यंत्री नेता मारे गये। दो साल बाद फिर षड्यंत्र हुआ। इसके दस साल बाद (१६१५ ई०) कल्मकोंने आकर बड़ी लूट-मार मचाई। सोलह साल राज्य करनेके बाद १६१८ ई०में हब्श इलबसके दो सोलह और चौदह सालके पुत्र अरब मुहम्मदसे विद्रोह कर खीवासे उरगंजपर चढ आये। छोकरे भला इतनी हिम्मत कैसे करते, असलमें यह काम उनके अनुचरोंका था, जिनकी संख्या लूटकी लालचसे बहुत बढ गई थी।

खीवाके खानोंमें इस तरहका विद्रोह और वंशोच्छेद असाधारण घटना नहीं समझी जाती थी, यह हम देख चुके हैं।

१०१३ हि० (३० V १६०४–२० IV १६०५ ई०)में (इतिहासकार अबुलगाजीके जन्मसे एक साल पहले) अरब मुहम्मदने एक नहर खुदवाई, जो तूक, उरगंज होती अराल समुद्रमें गिरती थी। तुला (अक्तूबर-नवम्बर) मासके आते ही इस नहरको बन्द कर दिया जाता, और फसलके कट जानेपर फिर खोल दिया जाता था। कुछ सालों बाद यह एक तीरकी मारसे अधिक चौडी कर दी गई।

इस नहरके कारण खेतीको इतना फायदा हुआ, कि गेहूं बहुत सस्ता हो गया। सारे इलाकेमें गेहूंकी फसल खड़ी दिखलाई पड़ती थी। दोनों खान-पुत्रोंने अन्न-भंडारको खोलकर अनाजको गरीबोंमें बांटना शुरू किया। अन्तमें उन्हें वेजिर शहर और उस इलाकेमें रहनेवाले तुर्कमानोंको देकर समझौता किया गया। दोनो चार हजार अनुयायियोंके साथ बापसे मिलकर वेजिरमें जा पांच साल तक शांतिपूर्वक रहे। छठे साल (१६२० ई०) जब खान उरगंजमें था, उसी समय इलवसने आक्रमण करके खीवा ले अपने पांच सौ आदमियोंको भेजकर बापको भी बन्दी बना लिया। खजाना लूटकर उसने "कुत्तों और चिड़ियोंमें बिखेर दिया, और वेगोंको निकाल बाहर किया।" इसके बाद वह वेजिर लौट गया। अब अस्फन्दयार और अबुलगाजी (प्रसिद्ध इतिहासकार) बापके सहायक बन गये, और दोनोंने मिलकर इलवस सुल्तानके ऊपर आक्रमण किया। इलवस किर (उस्त-उत)की ओर भागा, और उसका माल-असबाब लूट लिया गया। अबुलगाजीने बापको बहुत समझाया, कि विद्रोहियोंको इसी वक्त नष्ट कर देना चाहिये, लेकिन बापका सलाहकार अतालीक हुसेन हाजी भीतरसे विद्रोहियोंके पक्षमें था। उसने वैसा नहीं होने दिया। अस्फन्दयार भी बहुत आगे बढ़ना नहीं चाहता था। हबश और इलवस दोनों अबुलगाजीके भारी शत्रु थे। इस अपूर्ण अभियानके बाद अरब मुहम्मद खान खीवा लौटा, अस्फन्दयार हजारास्प गया और अबुलगाजीको कात मिला। पांच महीने-बाद अब खानको अक्ल आई, और उसने अपने पुत्रोंको खुले तौरसे आक्रमण करके दंड देना चाहा। अली सुल्तानकी खुदवाई नहर तम्ली-यामिशके तटपर लड़ाई हुई। खान हारकर बंदी बना। हबशने बापकी अंधा कर तीन बीवियों और दो छोटे पुत्रोंके साथ उसे छोड़ दिया। अब हबश अस्फन्दयारके पीछे पड़ा। अबुलगाजी डरके मारे कात होते बुखारा भाग गया। अस्फन्दयार अपने दूसरे दो भाइयों शरीफ और ख्वारेज्मशाहके साथ हजारास्पमें किलाबन्द हो गया—यह १०३० हि० (२६ XI १६२०–१७ X १६२१ ई०)की बात है। चालीस दिनके मुहासिरेके बाद दोनों पक्षोंमें समझौता हुआ—अस्फन्दयार मक्का चला जाये, शरीफ मुहम्मदको कात मिले और ख्वारेज्मशाह तथा अफगान दोनों छोटे भाई बाप-माके साथ खीवामें रहें। अगले साल (१६२२ ई०) इलवसने बाप, अपने भाई ख्वारेज्मशाह और अस्फन्दयारके दो पुत्रोंको मरवा डाला और दूसरे भाई अफगानको मरवानेके लिये हबशके पास भेज दिया—लेकिन हबशने उसे रूस भेज दिया, जहां वह १६४८ ई०में मरा। हाजिम सुल्तानकी लड़की अलतून खानिम—अफगानकी विधवा—ने कासिमोफमें अपनी बनवाई तकियामें पतिके शवको दफनाया।

१२ इस्फन्दयार, (अस्फ०) अरब-पुत्र (१६२२–४२ ई०)

यह शाहजहांका समकालीन था। ख्वारेज्ममें तुर्क और सर्त दो जातियां बसती थीं। सर्त पुराने बाशिन्दे ईरानी जातिके थे, और तुर्क जातिमें तुर्कमान पुराने कगलियों या गूजोंकी संतान थे, जिनका सलजूकों और उसमानअली तुर्कोंसे निकटका सम्बन्ध था। उज्बेक वहां मुहम्मद शैबानीके साथ आये थे। सर्तोंका शासन उठे युग बीत गये थे, लेकिन तुर्कमानोंके पूर्वज सलजूक बहुत दिनोंसे इस भूमिके शासक थे, इसलिये वह अब भी अपनेको स्वामी समझते थे। इसीलिये उनसे तथा नये स्वामी उज्बेकोंसे बराबर संघर्ष होता रहता था। यदि खान तुर्कमानोंका पक्ष करता, तो उज्बेक नाराज होते, उज्बेकोंका करता, तो तुर्कमान शत्रु बन जाते। अरब मुहम्मदने यही गलती की थी, कि उसने दोनोंको संभालकर नहीं रक्खा। बापकी पराजयके बाद अस्फन्दयार शाह अब्बासके पास ईरान भाग गया और उससे सहायता लेकर देरून और बलखान पर्वतको लेनेमें सफल हुआ। यहीं तेके, सारिक और यामूत तुर्कमान कबीलोंके तीन सौ जवान उससे आ मिले। उसने रातके वक्त वक्षु-तटपर तुर्क किलेके सामने पड़े हबशके डेरेपर छापा मारा। लेकिन हबश प्राण बचाकर इलवसके पास जानेमें सफल हुआ। इलाकोंका फिरसे बटवारा हुआ, जिसमें हबशको उरगंज और वेजिर (वजीर) और इलवसको खीवा-हजारास्प मिला। शरीफ और अबुलगाजीके अनुचरोंने भी मदद दी थी, किन्तु हारकर अस्फन्दयारको मशिशलक भागना पड़ा। अपने सहायक तीन हजार

तुर्कमानोको लेकर फिर वह उरगज पहुचा, जहा बीस दिनतक लडाई होती रही। इलवस अन्तमें पकडकर मार डाला गया। हवश पहले कराकल्पकोमें भागा, फिर यम्बाके नोगाइयोम पहुचा, जिन्होने उसे पकडकर अस्फन्दयारके पास भेज दिया और उसने भाईके खूनमें हाथ रग लिया। अस्फन्दयार उज्बेकोके विरुद्ध तथा सर्तो और तुर्कमानोका पक्षपाती था। सरतोमे लडाईमें मदद नही मिल सकती थी, किन्तु बडे-बडे धनी व्यापारी इन्हीमें थे, जिनसे धनकी बडी मदद मिलती थी।

१३ अबुलगाजी, अरब-पुत्र (१६४३–६३ ई०)

प्रसिद्ध इतिहास लेखक अबुलगाजी १०१४ हि० (१६ V १६०६–६ IV १६०५ ई०)में पैदा हुआ था। उसके बाप अरब मुहम्मद खानने उसी साल उरालके काफिर कसाक-रूसियोको हराया था, इसीलिये बच्चेका नाम अबुल-गाजी (काफिरोंसे लडनेवाला) रक्खा गया। इलबसके साथ बापकी लडाईमे वह दक्षिणपक्षका कमाडर था, जिसमें एकके बाद एक उसके तीन घोडे मारे गये। बापकी हार होनेपर वह एक अनुचरके साथ भाग निकला। शत्रु उसका पीछा कर रहे थे। आकर एक बाण मुहमें लगा, जिससे जबडेकी हड्डी टूट गई। लेकिन वक्षु-तटके घने फराम (झाऊ)के जगलोंमें वह छिपनेमें सफल हुआ। फिर अपने कवच और हथियारोको फेंककर घोडेपर नदीमें कूद पडा। प्यासा घोडा पानी पीनेके लिये जरा रुकना चाहता था, लेकिन पीछा करनेवाले शत्रु बाण छोड रहे थे। कोडा नही था, कि घोडेको मारकर आगे बढाये। घावके कारण मुहमे खून भरा हुआ था, अपने भारी कवचके कारण घोडा पानीमे डूबने लगा और नाक-कान ही थोडे-थोडे बाहर निकले हुये थे। इसी समय अबुलगाजीको बूढे सैनिककी बात याद आई—"चारजामेसे उतर एक पैरको रिकाबमें और दूसरेको घोडेकी पूछपर डाल चारजामेके पिछले छोरको एक हाथमे पकडे—दूसरे हाथसे लगामका इशारा करते चले, तो पानीसे भी बोझ हलका करनेमे सहारा मिलता है।" उसने ऐसा ही किया और वह सहीसलामत नदी पार हो गया। वह कात पहुचा। वहासे कितने ही आदमी, नये घोडे और रसद ले वह समरकन्द पहुचा, जहा इमामकुल्ली खानने उसका अच्छा स्वागत किया। इसके दो साल बाद भाई अस्फन्दयार खान घोषित हुआ। अबुलगाजी और शरीफ फिर देश लौट आये। अबुलगाजीको उरगज और शरीफको वजीरके इलाके मिले। अस्फन्दयारने अपने पास खीवा, हजारास्प और कातको रक्खा। लेकिन देरतक शाति कहा रह सकती थी? जल्दी ही भाइयोमें फिर झगडा उठा। अस्फन्दयार सर्तो और तुर्कमानोका पक्षपाती था, और उसके दोनो भाई उज्बेकोके। फसल कट जानेके बाद १६२४ ई०में अबुलगाजी अस्फन्दयारसे मिलने खीवा गया। तीन दिन रहनेके बाद घोडे कस लिये थे, इसी समय खानने हुक्म दिया, कि सभी नैमनो और उइगुरोको कत्ल कर दिया जाय। बातकी बातमें सौ उज्बेक मार डाले गये। इतना ही नही हजारास्प और खस्तमीनारेसीमें डेरा डाले सभी खानभक्त उज्बेक बूढे-बच्चोंतक मार डाले गये, किसी नैमन और उइगुरको जीता नही छोडा गया। शरीफको इन दोनो कबीलोंको कत्ल करनेके लिये उरगज भेजा गया, और अबुल-गाजीको मार डालनेकी गरजसे खीवामें रोक लिया गया। इसी समय उज्बेकोने धमकी दी, कि यदि अबुलगाजीको नही छोडा गया, तो हम राज्य छोडकर चले जायेंगे। छोड दिये जानेपर अबुलगाजीने उरगज पहुचकर उसे जनशून्य-सा पाया। वक्षु नदी पहले पाससे बहती थी, अब उसने अपनी पुरानी धार छोडकर नई धारा पकड ली थी। अबुलगाजी तूकके किलेमें ठहरा, जहां शरीफ भी उससे आ मिला। दोनो भाइयोके आसपास भारी सख्यामें उज्बेक जमा हो गये। उन्होने तुर्कमानोपर आक्रमण करनेका विचार किया, लेकिन इसका पता तुर्कमानबेक मुहम्मद हुसेनको लग गया, और वह अपने अनुयायियोके साथ अस्फन्दयारके पास चला गया। अब दोनो भाई उज्बेकोको लिये खीवापर चढे। खाईकानाक नहरके ऊपर बने ताशकुपुरुक (पाषाणपुल)पर कितने ही भूखमे अधमरे तुर्कमान मिले, जिन्हें उन्होने मार डाला। लेकिन इसी समय कल्मक-मगोल उनके ऊपर आ पडे और वह कितने ही उज्बेकोको पकड ले गये। कल्मकोका आतक इतना छाया हुआ था, कि अबुलगाजीके कितनेही सहायक साथ छोड गये। खीवाके तुर्कमानोको हिम्मत और मदद मिल गई। उन्होने चश्मीके पास

छ दिनतक युद्ध किया, लेकिन कोई फैसला नही हुआ, इसपर घर लौट जानेकी सलाह हुई। इसी समय अस्फन्दयारने तुर्कमानोको बढावा दिया। यद्यपि तुर्कमानोकी सख्या उज्बेकोसे दसगुनी थी, लेकिन तो भी युद्धका परिणाम अनिश्चित ही रहा। अस्फन्दयारने गर्मिया खीवामे विताई, अबुलगाजी और शरीफ उरगजमें रहे। १६२८-२९ ई०में एक पुच्छलतारा निकल रहा था, जिसे भारी अपशगुन माना जाता था। उज्बेकोमेंसे कुछ अन्तर्वेदकी ओर भाग गये और कुछ तुर्किस्तानमे, इस प्रकार उनके निम्न तीन बडे-बडे भाग हुये—(१) बुखाराकी ओर जानेवाले, (२) मगीतों (नोगाइयो) में जानेवाले, (३) कजाकोंमें जानेवाले। अबुलगाजी उज्बेकोके उस गिरोहके साथ था, जो कजाकोकी भूमिमें गया और शरीफ बुखारावालोके साथ। तीन साल बाद (१६३१-३२ ई०) उनमेंसे दो हजार परिवार फिर ख्वारेज्म लौट आये, जिनमें आठ सौ बुखारावाले परिवार भी आकर मिल गये। अब यह लोग अरालमें सिरके गिरनेवाले इलाकेमे पशुचारण करने लगे। अस्फन्दयारने उन्हें चैनसे नही रहने दिया और आक्रमण करके उनका नाम-निशान मिटा दिया।

अबुलगाजी कजाकखान इशिमके पास जाकर रहने लगा। वहा उसका परिचय राजकुमार तुरसुनसे हुआ, जिसके साथ वह दो साल ताशकन्दमें जाकर रहा। इशिमने तुरसुनको उसी समय मार डाला, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुलीके पास बुखारा जाने दिया। यहा उसे अस्फन्दयारके अत्याचारोंसे ऊब गये ख्वारेज्मी तुर्कमानोका निमत्रण मिला और वह खीवा पहुचा। अस्फन्दयार हजारास्प लौट गया था। इसी बीच शरीफ भी अबुलगाजीसे आ मिला और दोनोने मिलकर अस्फन्दयारपर आक्रमण करके उसे हरा दिया। लेकिन इतनेमे सघर्ष खतम नही हुआ। फिर कितनी ही लडाइया और लूटपाट होती रही। एक बार अबुलगाजीको खुरासानमें बेगलरबेगने पकडकर हमदानमें शाह अब्बास I के पौत्र शाह शफीके पास भेज दिया, जिसने उसे अस्पहानमें नजरबन्द कर दिया—अबुलगाजीको दस हजार तका पेंशन और रहनेके लिये मकान मिला था। १६३०-४० ई०तक अबुलगाजी इस तरह ईरानमें बदी रहा। उसने धीरे-धीरे आठ घोडे खरीदकर भिन्न-भिन्न जगहोमें छिपा रक्खे। यही उसके कुछ विश्वासपात्र नौकर भी आ मिले। अबुलगाजी स्वय एक नौकर-का साईस बना। घोडे तैयार कर लिये गये थे। नगाडखानेमें जिस वक्त मध्य-रात्रिका नगाडा बज रहा था, उसी वक्त वह सडकसे होकर निकल पडा। द्वारपर पहुचकर उसने चिल्लाकर कहा—"खोलो दरवाजा"। दरवाजा खुल गया और अबुलगाजी अपने साथियोके साथ चलता बना। बोस्तामके पास जब वह एक कब्रिस्तानसे गुजर रहा था, तो वहा कोई मुर्दा दफन किया जा रहा था। अबुलगाजीने वहीं एक गरीब सैयदसे बातचीत करके रसद तथा तीन घोडोंके बदलनेका प्रबन्ध किया। गलतीसे उसने मर्वका रास्ता पूछ लिया, जिससे लोगोंको सदेह हो गया, कि यह भगोडे उज्बेक कैदी हैं। प्रत्युत्पन्नमति अबुलगाजीने झट बहाना कर दिया, कि हम शाहके चिरकासी मुहम्मद कुल्लीबेग हैं—और एक प्रसिद्ध मुल्ला—से मिलने जा रहे है। इस तरह चिरकासी मुहम्मद कुल्लीबेग बनकर अबुल गाजीकी जान बची। आगे जाकर जब वह रेगिस्तानके छोरपर पहुचे, तो मगिशलकके कितने ही भगोडे तुर्कमान आ मिले। उनसे मालूम हुआ, कि वोल्गाकी ओरके कल्मकोने आक्रमण किया था, वह बहुतसे पशुओंको लूट ले गये। अबुलगाजीने अपना परिचय दिया। तुर्कमानोंने उसे अपने पास जाडा बितानेके लिये निमन्त्रित किया। जाडोंके बाद वसतमें अबुलगाजीको तेक्के (तुर्कमान) कबीले—जो कास्पियनके पूर्वी तटके पासके बलखान पहाडमें रहते थे—के पास जानेको कहा। वहा जाकर अबुलगाजीने दो साल बिताये। फिर वह मगिशलक पहुचा, जो कि अब कल्मकोके अधीन था। कल्मक सरदारको जब बात मालूम हुई, तो उसने अबुलगाजीको बुलाकर सालभर नजरबन्द रक्खा। अन्तमें १६४२ ई०में वह उरगज लौटनेमें सफल हुआ। इसके छ महीने बाद अस्फन्दयार मर गया, शरीफ मुहम्मद दो साल पहले ही मर चुका था, इसलिये ख्वारेज्मकी गद्दी अब अबुलगाजी बहादुरके लिये हाजिर थी।

जहा खूनखराबी और लूट-मारको खेल समझा जाता हो, और हर एक बातका फैसला केवल तलवारसे किया जाता हो, वहा जीवन कैसे व्यवस्थित रह सकता है? आश्चर्य तो यह है, कि इतनी

मारकाट रहनेपर भी रूसके साथ होनेवाला व्यापार अब भी बन्द नहीं था। व्यापार सचमुच ही बडी-बडी लडाइयोंके भीतरसे भी अपना रास्ता निकाल लेता है। दोनो लडनेवाले सरदार भेंट पूजा लेकर व्यापारीका रास्ता छोड देते हैं। ख्वारेज्ममें बडी अशान्ति थी, जब कि अस्फन्दयारकी मौतके सालभर बाद अबुलगाजी अरालके उसी इलाकेमें खान घोषित हुआ, जहापर वक्षु अराल-समुद्रमें गिरती है। इस इलाकेमें प्राय सारे ही उज्बेक बसते थे। ख्वारेज्मके बाकी भागोंमें अस्फन्दयारके दो पुत्रो युशन और अशरफके अनुयायी तुर्कमान रहते थे। खुतबा उस समय बुखाराके खान नादिर महम्मदके नामसे पढा जाता था, जिसके पास अराफ जामिनके तौरपर रहता था। अबुलगाजीने दो बार चढाई करके खीवाके उपनगरको लूटा। नादिर मुहम्मदने खीवा और हजारास्पमें अपने राज्यपाल नियुक्त किये थे और अस्फन्दयारकी विधवाको उसके एक पुत्र और कन्याके साथ करशीमें रहनेके लिये भेज दिया था। बुखारी राज्यपाल वस्तुत सैनिक कमाडर था, नागरिक शासन अस्फन्दयारद्वारा नियुक्त तुर्कमान अमलोंके हाथमें थो। इसी समय बुखारासे खानका पौत्र तथा खुसरो सुल्तानका पुत्र कासिम सुल्तान निगरानीके लिये ख्वारेज्म आया, किन्तु वह तुर्कमान अमलोंसे छेडखानी नहीं करता था। कासिमके आनेकी खबर सुनकर अबुलगाजीने और सेना जमाकर खीवापर चढाई की। बुखारी सेना बहुत अधिक थी, जिससे लडनेके लिये अबुलगाजीकी सेना कई टुकडियोंमें बट गई। खीवाके हजार सैनिकोंमें आठ सौ कवच-शिरस्त्राणसे इस तरह ढके हुये थे, कि उनकी सिर्फ आखे दिखलाई पडती थी। अबुलगाजीके आदमियोंमेंसे केवल पाच कवचधारी थे। लेकिन अबुलगाजीने बहुत अच्छी तरहसे व्यूह-रचना की। लडाईका फैसला होनेसे पहले ही याकूब तुपितको भेजकर कासिमको बुखारा बुला लिया गया। थोडे समय बाद नादिर स्वय बुखाराका खान नहीं रहा और उसके बेको (अमीरो) ने उसके बेटे अब्दुल अजीजको तख्तपर बैठाया। खीवामें नियुक्त बुखारी सेना भी अब भाग गई और १६४४ ई०में अराल-तटसे आकर अबुलगाजीने खीवापर अधिकार कर लिया। अबुलगाजीने सार्वजनिक क्षमादानकी घोषणा करतेहुये भगोडे तुर्कमानोंको लौटनेके लिये कहा। भगोडे तुर्कमानोंके सरदार गुलाम बहादुर, दीन मुहम्मद, उनउनबेगी और उरुसबेगोने हजारास्पके पासके रेगिस्तानमें डेरा डालकर अपने अक-शक्कालो (जेठो) को भेज आत्म-समर्पण किया। खानके वचन देकर बुलानेपर वह आये थे, लेकिन जियाफतमें खाना शुरू करनेके समय ही अबुलगाजीके हुक्मसे उनका कत्लेआम शुरू हुआ। तुर्कमान भारी सख्यामें मारे गये, माल-असबाब लूट लिया गया और उनके बीबी-बच्चे दास बना दिये गये। इस हत्याकाडके बाद अबुलगाजी खीवा लौटा, और थोडे समय बाद उसने तेयेनमें तुर्कमानोंके एक दूसरे समूहपर आक्रमण करके उन्हें लूटा-मारा। यही खीवा और बलखके भगोडोंने बामे-बुरनियामें पनाह लेनेके लिये एक पत्थरका किला बनाया था। उन्होने अपने परिवारको कराकश्ती भेज दिया। उनपर भी आक्रमण करके अबुलगाजीने एक-एक आदमीको मार डाला, और लगे हाथो कराकश्तीमें पडे उनके डेरोंको भी लूट लिया। लेकिन मगोल कोशोत (कलमक) ख्वारेज्मके लिये अब एक भारी समस्या हो उठे थे। १६४८ ई०में अबुलगाजीने उन्हें हराया, तो भी व्यापार करनेके लिये आये तोरगुत (मगोल) सरदार बायनको सुरक्षित घर जाने दिया। १६५१ ई०में अबुलगाजी उनके सरदारके साथ बैराज तुर्कमानोंको नष्ट कर औरतो-बच्चोंको पकड ले गया। अगले साल तूजके अमीरो और सारिक तुर्कमानोंकी बारी आई, इसी साल तोरगुत (वोल्गा) कलमकोने हजारास्पके पास लूट-मार की, जिन्हें अबुलगाजीने भगाकर बहुत दूरतक पीछा किया।

इस प्रकार कुछ सालोंकी सरगरमीके बाद अबुलगाजीने सभी तुर्कमानोंको दबाकर कितने ही समय तक शातिपूर्वक राज्य किया। १०४६ हि० (५ VI १६३६–२६ VI १६३७ ई०) में उसके भाई शरीफके दामाद सुभानकुल्लीने अपने भाई अब्दुल अजीज खान (बुखारा) के खिलाफ मदद मागी। बत्तीस ख्वारेज्मी कुमारोंके खूनका बदला लेनेका यह अच्छा मौका था। अबुलगाजीने मदद दी और उसके सेनापति बेककुली इरनेकने कराकुलके इलाकेको लूट-मारकर उजाड दिया और वह बुखाराके पासके गाव सुइजनिखवालातक जाकर कुकेदलिक लौट आया। फिर उसी साल बुखारी सेनाको

हराकर कराकुलको जला चारजूयके इलाकेको भी उसने बरबाद किया। कुछ महीने बाद (१६५४-५५ ई०) वह याइजी इलाकेको नेरेजेमतक लूटने कराकुल होते भारी सख्यामे युद्धबदियोको लिये खीवा लौटा। यह सब देखते हुये भी अब्दुल अजीज खानको सामने आनेकी हिम्मत नही हुई। १०६५ हि० (११ XI १६५४-२ X १६५५ ई०) मे ही ख्वारेजिमयोने करमीनापर अधिकार करके लूटा। इन लडाइयोमें अबुलगाजी स्वय शामिल होता था। एक बार खतरेसे बचानेके उपलक्षमे अबुलगाजीने अपने पुत्र अनुशा (अनुशाह) को एक झडा, एक सेना तथा हजारास्पकी कमाड प्रदान की। अबुलगाजीने १६५८ ई०मे वरदजा इलाकेको लूटा, जिसमें कि बुखारा शहर है। १६६१ ई०में उसने फिर बुखारा इलाकेको लूटा। इस तरह अपने सहधर्मियोको अनेक बार लूटने-मारनेके बाद उसका ख्याल काफिरोको लूटकर पुण्य कमानेका हुआ। इसके लिये उसकी नजर ईरानी किजिल-बासो और वोल्गाके पासवाले कलमकोपर पडी। उसने दूतद्वारा अब्दुल अजीज खानके पास सुलहका प्रस्ताव भेजा, और शासनका काम अनुशाको सौंप दिया। लेकिन उसे पुण्य-अर्जनका अवसर नही मिला और घोर युद्ध तथा अशातिके बीस सालके शासनके बाद वह १०७४ हि० (५ VIII १६६३-२५ VI १६६४ ई०)में मर गया। एक तरफ वह खूनका प्यासा निपट श्वापद था, तो दूसरी तरफ उसकी लेखनीने एक बडे ही सुन्दर इतिहास-ग्रथको हमारे लिये छोडा। अपने समकालीन औरगजेबके कितने ही अवगुण उसमें भी थे।

१४ अनुशा मुहम्मद बहादुर, अबुलगाजी-पुत्र (१६६३-८६ ई०)

बापने बुखाराके साथ मैत्री कर ली थी, लेकिन बेटा उसे माननेके लिये तैयार नही था। उसने बुखाराके नजदीक जूयेबारके खोजोको जाकर लूटा। उस समय अब्दुल-अजीज खान करमीनामें था। खबर सुनते ही वह दौडा। आधी रातको जब वहा पहुचा, उस समय नगर ख्वारेजिमयोंके हाथमे था। केवल चालीस दासोको लिये उसने रक्षि-सैनिकोंके ऊपर पड अपने लिये रास्ता बनाया, और लडते-लडते वह आर्क (किले)में जा पहुचा। उसने ख्वारेजिमयोके कत्ले-आमका हुक्म दे दिया। उज्बेकों, ताजिको या विदेशी व्यापारियोमें जिन-जिनके हाथमें भी हथियार था, सभी शत्रुओके ऊपर टूट पडे—नगर के बाहर जानेवाले सारे रास्ते बाढें खडी करके बन्द कर दिये गये थे। ख्वारेजिमयोका भीषण सहार हुआ, लेकिन अनुशा एक छोटी-सी टुकडीके साथ भागकर ख्वारेज्म पहुचनेमें सफल हुआ। इस मारके कारण थोडी देरके लिये अनुशाकी हिम्मत टूट गई।

यद्यपि अब्दुल अजीज खानने ख्वारेजिमयोके आक्रमणका सफल प्रतिरोध किया, लेकिन तब भी १६८० ई०में अब्दुल अजीजको सुभानकुल्लीके लिये गद्दी खाली करनी पडी। सुभानका आरम्भिक शासन बेटोके विद्रोहके कारण कमजोर था, इसलिये अनुशाको फिर हिम्मत हुई, और उसने १६८३ ई०में आक्रमण करके नगरों और गावोको बुखारा शहरके आसपासतक ध्वस्त कर दिया और बहुत से माल और युद्धबदियोंके साथ लौट गया। सुभानने हाल हीमें विद्रोह करनेवाले अपने पुत्र सादिकको सहायताके लिये बुलाया, लेकिन रास्तेमें उसने सुना, कि अनुशाने खुरासानपर आक्रमण करके वहा अपने नामका सिक्का और खुतबा चलाया है। हिसार (ताजिकिस्तान) और खोजन्दके अमीर भी अब खुली तौरसे सुभानकुल्लीसे विद्रोही बन गये और उसके कितने ही दरबारी भी अनुशाके पक्षमें हो गये। यह स्थिति देखकर सादिकने बुखारा जानेकी जगह लौटकर बलखकी रक्षा करना अधिक पसन्द किया। इसपर खानने बदख्शाके राज्यपाल महमद बी अतालिकको बुलाया, जिसने गिज्दुवानमें अनुशाकी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया, यह हम पहले बतला चुके हैं। अगले साल (१६८५ ई०) खानको बलखके झगडेमें फसा देखकर बुखाराके द्वारपर अनुशा फिर आया, किन्तु मुहम्मदजान अतालीकने बलखसे आकर फिर उसे हरा दिया। इसके कुछ समयबाद जब सुभानकुल्ली मशहदमें तीर्थ-यात्राके लिये गया था, तो अनुशाने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण किया, लेकिन लोगोने एक होकर भयकर हत्याके साथ ख्वारेज्मियोंको हटनेके लिये मजबूर किया—

इस संघर्षमें बहुतसे ख्वारेज्मी नेता भी मारे गये। अनुशा फिर चढ़ाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन अमीरोंने मना करते हुए कहा, कि कल्मक बड़ी सेना लेकर हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहे हैं, उनसे लड़नेके लिये एरेंक (औरंग) को सेनाका संचालक बनाकर भेजो। सेना हाथमें आते ही एरेंकने बापको पकड़ लिया और लाल लोहेसे दागकर उसे अंधा बना तख्तसे उतार दिया।

१५ मुहम्मद एरेक, औरंग, अनुशा-पुत्र (१६८६–८७ ई०)

ख्वारेज्मके दरबारमें भी कितने ही अमीर सुभानकुल्लीके पक्षमें थे। एरेंकने सुभान-कुल्लीके पक्षवाले अमीरोंको देश-निकाला दे दिया, फिर बुखारी सेनाको खुरासानमें गई जानकर बुखारापर चढ़ाई की। सुभानकुल्लीने दस दिनतक नगरकी रक्षा की, फिर महमूद बी अतालीक आ गया, जिसने बुखाराके नगर-प्राकारके नीचे ख्वारेज्मियोंको हरा उनमेंसे बहुतोंको बन्दी बना लिया। इस बीच सुभानपक्षी अमीरोंने उरगंजमें षड्यंत्र कर रखा और लौटते ही एरेंकको जहर देकर मार डाला।

१६ शाहनियाज खान (१६८७–१७०२ ई०)

ख्वारेज्मके खानोंका वंश गोन-वधके लिये हदसे अधिक बदनाम हो गया था, जिसके कारण वहाके अमीर उन्हें पसन्द नहीं करते थे, इसलिये एरेंकके मरनेके बाद विद्रोहियोंने सुभानकुल्लीके पास कोई शासक प्रदान करनेके लिये अपना शिष्टमंडल भेजा। सुभानकुल्लीने शाहनियाज इशिक आकाको राज्यपाल बनाकर भेज सिक्का तथा खुतबा अपने नामसे जारी कराया। सुभानका शासन कई सालोंतक रहा। उसने १७०० ई०में रूसी जार पीतर I के पास दूत भेजकर प्रार्थना की, कि हमारे देशको अपने संरक्षणमें ले लो। उसी साल ३० जुलाईको पत्रद्वारा पीतरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। १७०२ ई०में सुभानकी मृत्युके बाद, जान पड़ता है, शाहनियाजका शासन भी खतम हो गया।

१७ अरब मुहम्मद II, अनुशा-पुत्र (१७०२ ई०)

१७०२ ई०में पीतर I ने एक मित्रतापूर्ण संदेश भेजकर अरब मुहम्मद और उसके लोगोंको अपनी प्रजाके तौरपर स्वीकार किया, इस प्रकार हम देख रहे हैं कि औरंगजेबके शासनके अन्तिम समयमें रूसी जारकी बाँह ख्वारेज्मतक पहुंच चुकी थी।

१८ हाजी मुहम्मद बहादुर, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

इसके बारेमें इतना ही मालूम है, कि १७१४ ई०में इसका दूत पीतरबुर्गमें पीतर I के दरबारमें पहुंचा था।

१९ यादगार, अनुशा-पुत्र (१७१४ ई०)

यह १७१८ ई० में मरा था। जान पड़ता है, यह अधिक समयतक राज्य नहीं कर पाया। इसके साथ बेरेका खानकी संतानोंका शासन ख्वारेज्ममें खतम हो गया, और उनका स्थान बाहरसे नये-नये आते खानोंने लिया।

खीवाखान-वंशवृक्ष
(१५१५–१७१४ ई०)
जूछि
शैवान
यादगार
बेरेक
अवलेक
अमीनेक
वलवस
१ इलवर्स (१५१५)
३ हसनकुल्ली
२ मु० हाजी
४ सोफियान
५ बुजुगा
६ अवानेक
७ कल
८ अकताई (१५४६)
९ दोस्त (–१५५६)
दीन मु० (१५३९–४६)
१० हाजी मु० (१५५६–१६०२)
११ अरब मु० (१६०२–२१)
१२ इस्फन्दयार (१६२२–४२)
१३ अबुलगाजी (१६४३–६३)
१४ अनुशा (१६६३–८६)
१५ एरेक (१६८६–८७)
१६ शाहनियाज (१६८७–१७०२)
१७ अरब मु० (१७०२)
१८ हाजी मु० (१७१४)
१९ यादगार (१७१४)

भाग ३

उत्तरापथ

अध्याय १
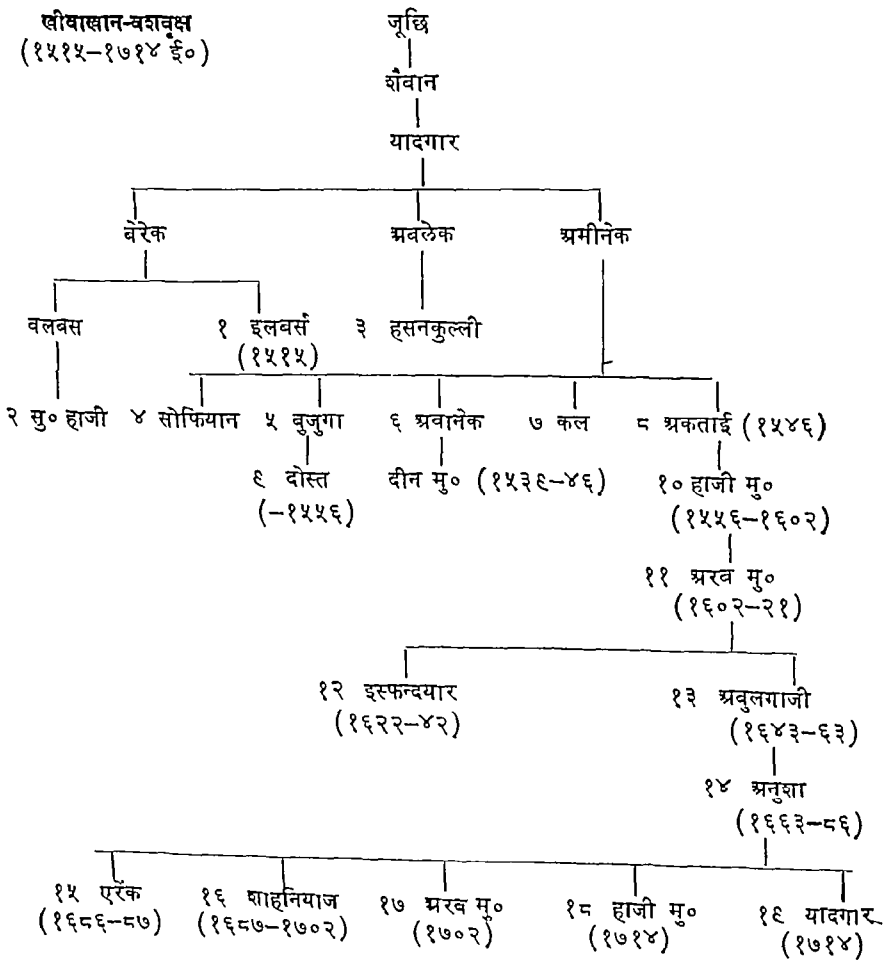
रूसका प्रसार

(१५९८-१८०१ ई०)

१. बीचके जार

१ बोरिस गदुनोफ (१५९८-१६०५ ई०)

१६वी सदीके अन्ततक रोरिक-वंशके नेतृत्वमें रूसका किस तरहसे एकीकरण और प्रसार हुआ, इसके बारेमें हम कह आये है। रूरिकवंशी अन्तिम जार फ्योदोर इवान-पुत्रके मरनेके साथ १५९८ ई०में रूरिक-वंशके खतम होनेपर बोरिस गदुनोफ जार बना। विवाह-संबंध तथा फ्योदोर-के समय शासनकी बागडोर हाथमें रखनेके कारण गदुनोफको कठिनाई नही हुई और १५९८ ई० में "जेम्स्की सबोर" (राष्ट्रीय परिषद्)में एकत्रित सामन्तो और व्यापारियोके बहुमतने बोरिस गदुनोफको मास्कोका जार निर्वाचित किया। बोरिसने इवानIVकी नीतिपर चलते हुये देशमें व्यवस्था कायम रखनेकी सफल कोशिश की। पुराने राजुलो और सामन्तोंके परिवार हमेशा देशको विकेन्द्रित करनेकी कोशिश करते थे, इसलिये इवानIIIकी तरह गदुनोफको भी उन्हे कडाईसे दवाना पडा। निकिता रोमन-पुत्र और उसके परिवारवाले—जो पीछे रोमनोफके नामसे प्रसिद्ध हुये—गदुनोफके लिये सबसे अधिक चिंताके कारण थे। रोमनोफोका संबंध जार फ्योदोरसे था, और नागरिकोमें उनके मुखिया फ्योदोर निकित-पुत्रके बहुतसे अनुयायी थे। गदुनोफने गुप्त सूचनाओंके बलपर उनपर षड्यन्त्र करनेका आरोप लगाया, और सभी भाइयोको उत्तरकी ओर निर्वासित कर दिया। फ्योदोर रोम-नोफ इसी समय पापा फिलारेतके नामसे साधु बन गया। अपने भूमिपति शत्रुओको गदुनोफने दवा दिया, लेकिन इसी समय किसान विद्रोहके रूपमें दूसरा भारी खतरा उठ खडा हुआ।

१६०१ ई०में रूसमें अकाल पड गया—पहले बहुत वर्षा हुई, फिर शरद्के आरंभ होमे पाला पडा, जिसके कारण सारी फसल बरबाद हो गई और वसतमें खेतोमें कोई अनाज नही पैदा हुआ। वसतकी वोआईके लिये किसानोंके पास बीजतक नही रह गया। लोग भूखके मारे घास और भोजपत्रकी छाल खा रहे थे। कोई-कोई गाव तो सारा-का-सारा मर गया। मास्कोकी सडकोपर भी बिना दफनाइ लाशें पडी हुई थी। यह भयंकर अकाल तीन वष (१६०१-१६०३ ई०)तक रहा। तालुक-दारो, मठो और व्यापारियोके पास भारी परिमाणमें गल्ला था, लेकिन उन्होने उसे महगे भावो-पर बेचकर धन जमा करना पसद किया। सामतो और जमीदारोने उस समय खाना देनेसे इन्कार करके अपने सेवकोतकको भी भगा दिया। भुखमरोंके विद्रोहका भय देखकर गदुनोफने हुक्म दिया, कि सरकारी बखारोको खोलकर लोगोमें अनाज बाटा जाय, लेकिन बाटने वालोने उसमें भी अपने लिये खूब पैसे बनाये। सरकारके पास इतना गल्ला भी नही था, और जिनके पास बहुत गल्ला था, वह मूल्यके और भी अधिक बढनेकी आशासे अपनी बखारोको खोलना नही चाहते थे। "मरता क्या न करता"के अनुसार अब भूखसे मरते किसानों और अर्धदासोने अपनी टुकडियां बना जमीदारो और बनियोको लूटना शुरू किया। उनमेंसे कुछ दोन-उपत्यका और ब्रयास्कके जगलो-में चले गये। १६३० ई०में खलोपको कसलोपके नेतृत्वमें किसानोकी एक बडी टुकडी राज-धानी (मास्को)के पास पहुची, जिसकी जारकी सेनासे एक भयंकर लडाई हुई, जिसमें जारका वोयवद (राज्यपाल)इवान बसमानोफ मारा गया। बडी मुश्किलसे जारकी सेनाने राजधानीसे विद्रो-

हियोंको भगा पाया। खलोपको कसलोप आहत होकर पकड़ा गया, लेकिन जल्दी ही मर गया। बहुतसे किसान और अर्ध-दासोंको जारके वोयवदोंने मास्कोकी ओर आनेवाली सड़कोंके किनारेके वृक्षों-पर लटकाकर फासी दे दी।

इसी समय प्रतिद्वंद्वी पोलन्दने रूसकी इस हालतसे फायदा उठाया और पोल-राजा सिगिस्मद III ने एक मिथ्या दिमित्रि I को अपने हाथका हथियार बनाना चाहा। रोमन कैथलिक धर्मराज पोपको जब यह खबर मिली, तो उसने भी दिमित्रिका समर्थन किया। अफवाह फैलाई गई, कि जार-पुत्र दिमित्रि उगलिचमें मारा नहीं गया, बल्कि वह भागकर पोलन्द चला गया। बोरिस गदुनोफ जिस समय गद्दीपर बैठा, उसी समय उक्रइनके पान (सामन्त) आदम विस्नियो वियेच्कीके गृहमें एक आदमी प्रकट हुआ, जिसने अपनेको इवान IVका पुत्र दिमित्रि घोषित किया। मास्को-सरकारको जब यह पता लगा, तो उसने उसके बारेमें कहा—यह दिमित्रि एक भूतपूर्व साधु ग्रिगोरी ओतरेपयेफ है, जो कि कस्त्रोमाके एक छोटेमें सामन्ती घरानेमें पैदा हुआ। ग्रिगोरी जवानीमें कितने ही मठोंमें घूमता रहा, फिर उसने अपना कुछ समय मास्कोमें बिताया, और अंतमें दूसरे तीन साधुओंके साथ पोलन्द भाग गया। आधुनिक इतिहासकारोंका कहना है, कि मिथ्या दिमित्रि कौन था, इसका पता लगाना मुश्किल है।

पोल अमीरोंने मिथ्या दिमित्रिके प्रकट होनेकी खबरका बड़ा स्वागत किया। उसे विस्-नियोवियेच्कीके एक संबंधी तथा सम्बोरके वोयवोद यूरी म्निस्जेफके पास पहुंचाया गया। १६०४ ई०के वसंतमें राजा सिगिस्मदIII ने राजधानी क्राकोमें दिमित्रिका स्वागत किया। उस समय तुरंत रूसके साथ खुली लड़ाई करना पसंद नहीं किया गया, लेकिन इस बातकी कोशिश की गई, कि दिमित्रिके पक्षपाती उसकी सेनामें आकर शामिल हों। पोल अमीरोंको रूसके धनका लोभ था, इसलिये वह दिमित्रिकी हर तरहसे सहायता करनेके लिये तैयार थे। दिमित्रिने पोप, पोलन्दके राजा तथा अमीरोंको बहुत बड़े-बड़े वचन दिये। पोपको खुश करनेके लिये उसने कैथलिक-धर्म स्वीकार किया और सभी रूसियोंको कैथलिक बनानेका बीड़ा उठाया। पोल राजाको उसने स्मोलेन्स्क नगर तथा चेर्निगोफके इलाके (सेवेर्स्क)को देनेका वचन दिया। म्निस्जेफ परिवारको उसने नवगोरद और प्स्कोफ प्रदेशका शासक बनानेका वादा करते कहा, कि जारके खजानेसे जो कुछ भी पैसा और रतन-जवाहर मिलेगा, वह तुम्हारा होगा। इस शर्तपर यूरी म्निस्जेफने अपनी लड़की मरीनाका ब्याह मिथ्या दिमित्रिसे करना कबूल किया—मरीना रूसी जारित्सा (जारानी) बनती। दिमित्रिके लिये सारी तैयारी सम्बोरमें होने लगी। तैयारीके बाद १६०४ ई०के शरद्के अन्तमें चार हजार पोल-सेना तथा कई सौ रूसी कसाकोंके साथ दिमित्रिने कियेफके पास द्नियेपर नदी पार किया। बिना प्रतिरोध किये ही कितने ही नगरोंने दिमित्रिकी अधीनता स्वीकार की। बोरिस गदुनोफके शासनसे असंतुष्ट अकालके मारे कितने ही भगोड़े किसान, अर्ध-दास तथा छोटे छोटे सैनिक भी उसके झंडेके नीचे जा खड़े हुये। बहुतसे किसान सचमुच ही उसे इवानIVका पुत्र समझने लगे। उनको यह भी विश्वास था, कि वह हमें अर्ध-दासतासे मुक्त कर देगा। १६०४ ई०के अन्तमें मास्कोकी सेना दिमित्रि द्वारा घेरे गये नवगोरद-सेवेर्स्कको मुक्त करनेके लिये पहुंची। मिथ्या दिमित्रिने चाहा, कि बिना लड़े सेवेर्स्ककी ओर चला जाय। जनवरी १६०५ ई०में यह सेवेर्स्कके पास दोबरोनीची गांवमें हारकर अपने बचे-खुचे आदमियोंके साथ पुतिवलकी ओर भाग गया। विजय प्राप्त करनेके बाद भी गदुनोफकी हालत बेहतर नहीं हुई। विद्रोहियोंके नये-नये दल आकर आक्रमण करते रहे। जारकी सेना क्रोमीके किलेको घेरे हुई थी। दोनके कसाक दिमित्रिकी ओर होकर लड़ने लगे। इसी समय जारकी सेनाने भी दिमित्रिके विरुद्ध लड़नेसे इन्कार कर दिया और बहुतसे सिपाही मैदान छोड़कर घर चले गये। इसी अवस्थामें अप्रेल १६०५ ई०में गदुनोफ एकाएक मर गया। सामन्तोंने तुरन्त उसके सोलह वर्षके पुत्र फ्योदोरको जार घोषित कर दिया।

गदुनोफके शासन-कालमें ही १५९८ ई०में साइबेरियामें जाकर रूसी प्रवासियोंके बसने का पहिला उल्लेख मिलता है। जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेके बाद ये लोग उगलिचसे भागकर पूर्वमें

चले गये थे। साइबेरियामें रूसियोंकी कुछ बस्तिया बल्कि पहले ही १५८७ ई०मे तबोल्स्क नगरकी स्थापनाके समयसे बसने लगी थी। १६०४ ई०मे तोम्स्क नगर भी स्थापित हो गया।

२ फ्योदोर, बोरिस-पुत्र (१३ अप्रेल–१ जून १६०५ ई०)

फ्योदोरको गद्दी नही बल्कि थोडे दिनोके लिये खाली सिहासनपर बैठकर रूसकी राजावलीमें नाम लिखवानेका मौका मिला। गदुनोफके हटते ही मिथ्या दिमित्रिका रास्ता खुल गया। क्रोमामें जो बची-खुची सरकारी सेना रह गई थी, वह भी पीतर बसमानोफकी अधीनताम दिमित्रिकी ओर चली गई। सामन्त पहिले हीसे गदुनोफसे घृणा करते थे, क्योकि वह राजुलोके अस्तित्वको खतरेमे डाले हुये था। राजुल वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीने पहले उगलिचमे जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेकी गवाही दी थी। अब उसने अपनी बातमे इन्कार करते कहा, कि गदुनोफ जार-पुत्रको मारना चाहता था, किंतु वह जान बचाकर भाग गया। वह जिंदा है और अब राजधानीकी ओर आ रहा है। दिमित्रिके दूतोके मास्को पहुचनेपर अमीरोने जार फ्योदोर और उसकी माको मार डाला। दिमित्रिने बिना किसी विरोधके जून १६०५ ई०में अपने सहायक पोलोंके साथ रूसी राजधानीमें प्रवेश किया—यह अकबरकी मृत्युका साल था।

३ दिमित्रि, मिथ्या (१६०५–६ ई०)

दिमित्रिने जारके पुराने सिहासनपर बैठते ही अपने असली रूपको दिखलाना शुरू किया। पहले उसने असतुष्ट किसानोको विश्वास दिलाया था, कि हम तुम्हारी हालत बेहतर बनायेंगे, लेकिन अब उसने फिर जमीदारो और सामन्तोकी पूर्व-स्थितिको मजबूत करना शुरू किया। ऊपरसे जो पोल अमीर और दूसरे अनुचर आये थे, वह अपनेको रूसियोका विधाता समझते उनके साथ बडा दुर्व्यवहार करते दोनो हाथोंसे नोच-खसोट कर रहे थे। दिमित्रिके चारों तरफ भाडेके विदेशी नौकर भरे हुये थे। दिमित्रि स्वय बहुत भारी परिमाणमे पैसा पोलन्द भेज रहा था। अब लोगोकी आखे खुली और मास्कोके नागरिकोने खुल्लमखुल्ला शिकायत करनी शुरू की। १६०६ ई०के वसतमें दिमित्रिकी बीवी मरीना आई, जिसके साथ पोल अमीरोका एक बडा दल बहुतसे अनुचरोको लिये आया। मरीनाके साथ दिमित्रिका विवाह-महोत्सव बडे ठाट-बाटसे मनाया गया, कई दिनोतक मौज होते रहे। शराबमें मस्त उसके विदेशी सहायकोने इस समय और भी गजब ढाया, जिससे जनता क्रोधमें पागल हो गई। राजुल वासिली शुइस्कीने इस अवस्थासे फायदा उठा षड्यत्र रचा और १७ मई १६०६ ई०को घण्टेकी आवाजके सकेतको सुनते ही लोग मुकाबिलेके लिये खडे हो चिल्ला उठे—"चलो लितवी पर! लितवोकी क्षय!!"—रूसी उस समय पोलोको लितवा कहते थे। मिथ्या दिमित्रिको जब खतरेकी खबर मिली, तो महलके सामने काफी भीड जमा हो चुकी थी। जान बचानेके लिये खिडकीसे कूदा, जिसके कारण वह बुरी तरह घायल हो गया। लोगोने पहुचकर उसे तुरन्त ही मार डाला। कुछ दिनो बाद मिथ्या दिमित्रिके शरीरको जला उसकी राख एक तोपमें भरकर उसे उसी ओर मुह करके दाग दिया गया, जिधरसे वह आया था। सारे नागरिक शहरमें टूट-टूटकर पोल अमीरो और दरबारियोको मारने लगे। पत्थर, छुरा, डडा जो कुछ भी हाथ आया, उसीसे उन्होंने हथियारबद पोलोपर आक्रमण किया। दो हजार पोल मारे गये और बाकियोने मोर्चाबदी छोड आत्म-समर्पण कर दिया। बायरोको डर लगा, कि विद्रोही जनसाधारण कही उनके विरुद्धभी कुछ न कर बैठे, इसलिये उन्होने सबसे पहले सिहासनपर किसीको बैठाकर राजशक्तिको मजबूत करना जरूरी समझा। उन्हे राष्ट्रीय परिषद् (जेम्स्की सबोर)को बुलानेकी हिम्मत नही हुई। डर रहे थे, शायद अधिकाश नागरिक और अमीर भी विरोध करें, इसलिये पुराने राजुलवशी वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीका नाम बिना निर्वाचनके ही १९ मईको क्रेमलिनके सामने जमा हुये लोगोके बीच जारके तौरपर घोषित कर दिया।

इस गडबडीके समयके जार निम्न थे—

१	बोरिस गदुनोफ	१५९५–१६०५ ई०
२	फ्योदोर, बोरिस-पुत्र	१३ अप्रेल-१ जून १६०५"
३	दिमित्रि (मिथ्या)	१६०५–६ "
४	वासिली, इवान-पुत्र शुइस्की	१६०६–१०"
५	व्लादिस्लाव, सिगिस्मद पुत्र	१६१०–१३ "

४ वासिली शुइस्की, इवान-पुत्र (१६०६-१० ई०)

शुइस्कीने बायरोको वचन दे दिया था, कि मै तुम्हारी सम्मतिसे राज्य करूगा, और क्रास (सलेब) के ऊपर कसम खाई थी, कि बिना बायरोकी दूमा (ससद)की रायके मृत्युदड नही दूगा, न दडित-पुरुषके सबधियोकी सम्पत्ति जब्त करूगा। रूसके भिन्न-भिन्न नगरोमें उसके जार होनेकी घोषणा की गई। धनी बायरोने सबसे अधिक लाभके पदोपर झपट्टा मारा, और उन्होने फिर मनमानी करनी शुरू की। पुराने राजुलवशो और नये जमीदार-धनियो—बायरो—के स्वार्थ एक नही थे। सामन्त कब बरदाश्त करने लगे, कि सभी बडे-बडे पदो को बायर दखल कर ले। जल्दी ही विद्रोह उठ खडे होनेकी शका होने लगी। बायरोने प्रतिरक्षाके लिये क्रेमलिनमें तैयारी शुरू की, उसकी दीवारोपर तोपें लगा दी, और खाइयोंके ऊपरके पुलोको हटा दिया।

किसान-विद्रोह (१६०६-८ ई०)—किसानोने विद्रोह किया, लेकिन वह सगठित नही था। जहा-तहा छिटपुट लोग सरकारके विरुद्ध आक्रमण कर रहे थे, जिससे सरकारी सेनाको अच्छा मौका मिला, और एक जगहके विद्रोहको दबा देनेपर दूसरी जगहके विद्रोहको दबाना आसान था। सबसे ज्यादा खतरनाक और जबदस्त विद्रोह था मजदूरो, अध-दासो और कसाकोका, जिसका नेता इवान बलो-तृनिकोफ (१६०६-७ ई०) था। अपनी जवानीके समय बलोतृनिकोफ एक बायरका अध-दास था, जिसके अत्याचारोंसे परेशान हो वह दोन-उपत्यकाके कसाकोमें भाग गया, जहा वह तार-तारोंके हाथमें पड गया। उन्होने उसे दास बनाकर तुर्कोके हाथमे बेच दिया। कुछ दिनो तक बलोत्निकोफ दूसरे बदियोकी तरह पैरोमे बेडी पहने नावकी पतवार चलाता रहा, लेकिन थोडे ही समय बाद वह तुर्कोकी दासतासे मुक्त होनेमें सफल हुआ। तुर्कोसे युरोपके भिन्न-भिन्न देशोमे कितने ही साल घूमनेके बाद रूसी सीमातके भीतर लौट आया। इसी समय शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ था। बलोत्निकोफने विद्रोही सेनाका नेतृत्व स्वीकार किया। सम-सामयिक लेखक उसकी असाधारण शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि और बहादुरीकी प्रशसा करते है। विदेशी लेखक उसे "युद्धवीर" कहते थे। युद्धोमें उसने अपनी सैनिक प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया था। जहा-कही भी बलोत्निकोफकी सेना जाती, किसान अपने जमीदारोंके विरुद्ध होकर उसकी सेनामें आ मिलते। शहरके गरीब भी उसकी तरफ हो जाते। बलोत्निकोफकी सेना पुतिवलसे जल्दी-जल्दी क्रोमी, सेरपुखोफ और कलोम्ना होती मास्कोकी ओर बढी। अक्तूबर (१६०६ ई०)के मध्यमें बलोत्निकोफ मास्कोके सामने पहुचा। राजधानीके चारो तरफ प्रतिरक्षाके लिये तेहरी पत्थरकी दीवार तैयार की गई थी। बलोत्निकोफ उसे सर नही कर सका, फिर मुहासिरा करके बैठ रहा। उसने नागरिकोंसे अपील करते पत्र लिखकर लोगोमें बटवाया, किसानो और अध-दासोको कहा—अपने बायरो और जमीदारोको खतम कर डालो, म तुम्हे राजुलोकी भूमि प्रदान करूगा। बलोत्निकोफकी सेनामें कुछ असतुष्ट राजुल भी थे, जिन्होने इस खतरेको देखा। र्‍याजनके सामत तथा ल्यापुनोफ-भ्रातृयुगल बलोत्निकोफका साथ छोडकर शुइस्कीकी ओर हो गये। इसपर जारकी सेनाकी हिम्मत और शक्ति बढी, जिसके साथ ही कितने ही और अमीर जारकी ओर हो गये। बलोत्निकोफको बची-खुची सेना लेकर दक्षिणकी ओर हटना पडा। उसने जार कलूगामें छावनी डाली। १६०७ ई०के वसतमें जारकी सेनाने कलूगाको घेर लिया, लेकिन इसी समय विद्रोहियोकी एक नई सेना बलोत्निकोफकी मददके लिये आ गई और शुइस्कीकी सेनाको बुरी तरहसे हार घेरा उठाकर भागना पडा।

बलोत्निकोफ आगे बढकर तुला पहुंचा, जहा कसाकोका एक नया दल उससे आ मिला। इसी दलमें पीतर नामक एक आदमी था, जो अपनेको जार फ्योदोर (इवान-पुत्र)का बेटा कहता था, यद्यपि वस्तुत फ्योदोरका कोई बेटा नही था। गर्मियोमे शुइस्की एक बडी सेना जमाकर चार महीनेतक तुलामें बलोत्निकोफपर आक्रमण करता रहा। जारके सेनापतियोने देखा, कि बलोत्निकोफको जल्दी हराया नही जा सकता और जाडोमे घेरा रखना मुश्किल होगा, इसलिये उन्होने पासकी उपा नदीके ऊपर एक ऊचा बाध बाध दिया, जिससे नदीका पानी इकट्ठा होकर जोरसे शहरके भीतर बढा, जिससे बलोत्निकोफकी रसद और बारूद बह गई। इसपर समर्पणकी बात होने लगी। जार वासिलीने वचन दिया, कि मै सभी विद्रोहियोको क्षमा कर दूगा, लेकिन उसने अपनी वचनका पालन नही किया। इवान बलोत्निकोफको उत्तरमे करगोपोलकी ओर भेजकर अधा करके डुबा दिया गया, और बहुतसे दूसरे विद्रोहियोको खलोपी (गृहदास) और अधदास बनाकर अमीरोको दे दिया गया। बलोत्निकोफ मारा गया, उसके सैनिक तितर-बितर हो गये, लेकिन शुइस्की-के विरुद्ध विद्रोह नहीं दबा। वोल्गा-उपत्यकाके मोर्द्विन और मारी (चेरेमिसी) विद्रोही बने और उन्होने रूसी किसानो और अर्ध-दासोको साथ लेकर निज्नी-नवोगोरदको घेर लिया। उस समय तो जारकी सेना उन्हे हटानेमें सफल हुई, लेकिन १६०८ ई०की शरद्मे सारी मध्य-वोल्गा उपत्यका विद्रोही बन गई।

इधर देशके भीतर इस तरहकी विद्रोहाग्नि जल रही थी, उधर पोल भी चुप नही बैठे थे। उन्होंने यह अफवाह फैलाई, कि मास्कोमें खिडकीसे कूदकर मरनेवाला आदमी वस्तुत दिमित्रि नही था, बल्कि दूसरे आदमीने अपनी जान देकर जार दिमित्रिके भागनेमें सहायता की। यह अफवाह यद्यपि दिमित्रिके मरनेके दिनसे ही उडाई जाने लगी थी, लेकिन उसका प्रभाव उस समय अधिक नहीं पडा। १६०८ ई०के बसतमें एक नया जार-पुत्र मिथ्या दिमित्रि II मास्कोके सीमातपर प्रकट हुआ। उसके साथ पोलदकी सरकारी सेना और दूसरे बहुतसे सैनिक थे। लिथुवानी सामन्त यान सपिएहा ७५०० पैदल और सवार सेना लेकर आया, हेतमन रोजिन्सकी भी चार हजार आदमियो के साथ पहुचा। इसी तरह दोन और जापोरोज्ये कसाक भी मिथ्या दिमित्रि IIके साथ आ मिले। बोल्खोफके पास १६०८ ई०के बसतमें जारकी सेनाने हार खाई और दिमित्रि IIकी मुख्य सेना कलूगा और मोजाइस्कके रास्ते मास्कोकी ओर बढी। उन्होने मास्कोपर अधिकार करनेकी विफल कोशिश की। इसके बाद पोलोने राजधानीसे थोडी दूरपर मास्क्वा नदीके ऊचे तटपर अवस्थित तुशिनो गावमें मोर्चाबदी करके डेरा डाला, जिसके ही कारण लोगोने मिथ्या दिमित्रि IIको "तुशिनो जार" अथवा "तुशिनोका चोर" कहना शुरू किया। मास्कोकी स्थिति बहुत बुरी हो गई थी। नगरमें आहारका अकाल था। कितने ही बायर और राजुल शुइस्कीके पतनको निश्चित समझकर मिथ्या दिमित्रिके पास चले गये। मास्कोपर घेरा डालकर मिथ्या दिमित्रिकी सेनाने आसपास-के महत्त्वपूर्ण स्थानोपर अधिकार करना शुरू किया। राजधानीसे सत्तर किलोमीतरपर अवस्थित त्रोइत्स्क-सेर्गियेफ मठ (आधुनिक जागोर्स्क)को पोलोने लेना चाहा। लेकिन रक्षाके लिये पासके किसान भी मठकी ऊची दीवारोके भीतर पहुचे हुये थे। मठने अपनी तोपो और सैनिकोंके बलपर पोलो और दिमित्रिकी सेनाको मार भगाया। ऊपरी वोल्गाके नगरोमें उसे जरूर सफलता मिली, क्योकि वहाके लोग जार और बायरोसे इतनी घृणा करते थे, कि उन्हे मिथ्या दिमित्रि सच्चा दिमित्रि मालूम होता था।

लेकिन दिमित्रिको जितनी सफलता होती जाती थी, उतना ही उसके सहायक पोलोका अत्याचार और अपमानजनक बर्ताव बढता जाता था। वह नगरोमें पहुचकर व्यापारियोके मालको छीनते, किसानो और कारीगरोपर भारी कर लगाते, जरा भी आनाकानी करनेपर उनके घरो और खेतोकी फसलको जला देते। कितने ही रूसी बायरो और जमीदारोकी सम्पत्तिको क्षति-पूर्तिके तौरपर उन्होने छीन लिया। लोग उनके विरुद्ध खडे होनेके लिये मजबूर हुये। छिटफुट होते विद्रोह १६०८ ई०में देशव्यापी गोरिल्ला-युद्धके रूपमें परिणत हो गये।

शुइस्कीने देखा, कि वह अकेला दोनो ओरकी मारको नही बर्दाश्त कर सकता, इसलिये उसने स्वीडेनके राजा चार्ल्स नवमसे मददके बदलेमे सधि द्वारा करेला (केखहोल्म)के नगर और आसपासके प्रदेशको स्वीडेनको दे दिया। चार्ल्सने इसके बदलेमें पोलोको भगाने तथा जारकी शक्तिको मजबूत करोंके लिये सहायता देनेका वचन दिया। स्वीडेनने १६०९ ई०के बसतमें पद्रह हजार सेनाके साथ जेकब देलागारदीको भेजा। इस सेनामे स्वीड्, जर्मन, अग्रेज, फ्रेंच और दूसरे कितने ही देशोके भाडेके सैनिक थे। शुइस्कीका भतीजा राजकुमार स्कोपिन-शुइस्की भी अपने रूसी सैनिकोको लिये इस सेनाके साथ हो गया। सेना रास्तेमें कितने ही नगरो और कस्बोको मुक्त करती तुशिनोकी ओर बढी। पोल भी आखिरी दाव लगानेके लिये तैयार थे। १६०९ ई०के ग्रीष्ममे भिन्न-भिन्न पोल सेनाओने जगह-जगहपर आक्रमण करके लूट-मार की, और इसी सालकी शरद्‌मे पोल राजा सिगिस्मदIIIने एक बडी सेना ले रूसके भीतर घुसकर स्मोलेन्स्क नगरपर घेरा डाल दिया। सीधे रूस और पोलदके बीच खुलकर लडाई होने लगी। सिगिस्मदको अब मिथ्या दिमित्रिIIकी अवश्यकता नही थी। जनवरी १६१० ई०में मिथ्या दिमित्रिII पोल सहायतासे वचित होकर तुशिनोसे कलूगाकी ओर भागा। उसके साथ अब भी कुछ पोल इस आशासे चल रहे थे, कि शायद मास्कोका सिंहासन आखिरमें उसको ही मिले। दिमित्रिका पक्ष लेनेवाले रूसी बायरो और राजुलोने आशा छोडकर सिगिस्मदके साथ समझौता करना चाहा, और पोल राजाके पुत्र व्लादिस्लावको मास्कोका जार स्वीकार करते हुये ४ फर्वरी १६१० ई०मे सधि की। सिगिस्मदने अपने पुत्रकी ओरसे वचन दिया, कि वह अमीरो और जमीदारोंके अधिकारोपर प्रहार नही होने देगा और भगोडे किसानोको उनके पास लौट जानेके लिये मजबूर करेगा।

५ व्लादिस्लाव सिगिस्मद-पुत्र (१६१०-१३ ई०)

मार्च १६१० ई०मे रूसी-स्वीडिश सेना मास्कोके भीतर दाखिल हुई। उधर मास्कोपर अधिकार करनेके लिये एक पोल सेना पहुची, जिसके विरुद्ध शुइस्कीने अपने भाई दिमित्रि शुइस्कीके नेतृत्वमे एक सेना भेजी। जून १६१० ई०में क्लुशिनो गावके पास दोनो सेनाओमे लडाई हुई, लेकिन लडते समय जर्मन और स्वीड भाडेके सैनिक रूसियोका साथ छोडकर पोलोकी ओर मिल गये—उन्हे तो पैसेसे काम था। पोलोने स्वीडोको स्वतन्त्रता-पूर्वक लौट जानेकी इजाजत दे दी। जुलाई १६१० ई०में मास्कोके नागरिकोमें भूखे मरनेकी और शक्ति नही रह गई, और उन्होने वासिली शुइस्कीके खिलाफ विद्रोह कर दिया। बायरो और राजुलोने वासिलीको पकडकर उसे साधु बननेके लिये मजबूर किया, जिसमे कि वह राजकाजमें दखल न दे सके। शासन-भार अब सात बडे-बडे बायरोकी बनी सरकारके हाथमें चला गया, इसीलिये इस सरकारको सेमी-बायर्-श्चिना (सात बायर शासन) कहा जाता था। बायरोने अपनी स्थितिको मजबूत नही देखी, इसलिये उन्होने इस शर्तपर व्लादिस्लावको मास्कोका जार बनना स्वीकार किया, कि वह बायरोंके साथ मिलकर शासन करे। विश्वासघातियोने समझौता करके पोल-सेनाको मास्कोके भीतर आने दिया। सघराज फिलारेत तथा कुछ और बायरोका एक प्रतिनिधि-मडल स्मोलेन्स्ककी दीवारोंके बाहर सिगिस्मदIII से मिलकर सधि करनेके लिये गया। लेकिन, पोलाने इन देशद्रोहियोको उनके कियेका अच्छा मजा चखाया और सबको पकडकर पोलन्द भेज दिया। इन प्रतिनिधियोने मास्कोमें गुप्त रीतिसे चिट्ठिया भेजकर अपनी हीन स्थिति और पोलोके विश्वासघातके बारेमें सूचित करते कहा, कि पोलोकी अधीनता स्वीकार मत करो, आपसमें इसके बारेमें राय करो तथा हमारे पत्रको "नवोगोरद, वलोग्दा और निजनीमें भेज दो, जिसमे सब इस बातको जान लें।" पोल राजाकी मशा वस्तुत स्वय मास्कोका जार बननेकी थी।

मास्कोके भीतर पहुचकर फिर पोलोने मनमानी शुरू कर दी, और जरा भी विरोध करनेपर लोगोको तुरत गिरफ्तार करके बदीखानेमें डाल दिया जाता। पोल अमीरोने क्रेमलिनमें जार-के खजानेको लूट लिया। उधर अपने राजाके नेतृत्वमें एक पोल सेना स्मोलेन्स्कको घेरे रही।

बलरमें स्वीडोंने फिनलन्द-खाडीके दक्षिणी तटपर अधिकार करके नवोगोरदको खतरेमे डाल दिया। व्यापारियो और कारीगरोकी हालत बुरी हो गई थी, क्योकि नगरोंके भीतर आपसी व्यापार बिल्कुल बद हो गया था। जमीदारो और अमीरोकी हालत भी खराब थी, क्योकि उनके खेतोंम काम करनेके लिये आदमी नही रह गये थे।

मास्कोमें पोलोने बहुत कोशिश की, कि लोग पोल-राजाकी राजभक्ति स्वीकार कर, लेकिन वह इसके लिये तैयार नही थे। जिन बायरोने विश्वासघात करके पोलोको बुलाया था, उनके खिलाफ घृणाजनक पत्र प्रसारित हो रहे थे। रूसी चचका प्रधान सघराज हर्मोगेनने भी इसी समय पोलोके विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये और १६१० ई०के अन्तमें उसने भिन्न-भिन्न नगरोमे अपनी घोषणा भिजवाकर कहा, कि राजधानीकी मुक्तिके लिये रूसी जनताको आगे बढना चाहिये। सघराजकी घोषणाने लोगोको और भी उत्तेजित कर दिया। जब इसकी खबर पोलोको मिली, तो उन्होंने सघ-राजको जेलमें डालकर तरह-तरहकी यातना देनी शुरू की, लेकिन उसने हिम्मत नही छोडी।

व्लादिस्लावको जारका सिंहासन तो मिला, लेकिन उसे और उसके बापको रूसियोने चैनमे रहने नही दिया। मास्कोको मुक्त करनेके लिये सारे देशमे तैयारी होने लगी। जनवरी १६११ ई०में र्याजनके वोयवोद (राज्यपाल) प्रोकोपी ल्यापुनोफने मास्कोकी मुक्तिके लिये स्वयसेवकोका सगठन शुरू किया, जिसमे पहिले मुख्यत दक्षिणी जिलोंके अमीरोकी सैनिक टुकडिया शामिल हुई। ल्यापुनोफने कसाको और अधदासोको भी पैसे और मुक्तिका लोभ देकर अपनी ओर खीचा। शक्ति बढाकर एक सैनिक टुकडी राजकुमार दिमित्रि मिखाइल-पुत्र पजार्स्कीके नेतृत्वमें पोलोके ऊपर प्रहार करने लगी। इस सेनाका हरावल ठीक समयपर मास्कोके पास पहुचा, और पोल तथा देशद्रोही बायरोने मास्कोमें आग लगा दी। जलते हुये घरोंके बीच लडाई जारी रही, पर अतमे धूयें और आगकी ज्वालाने रूसी सेनाको शहरसे बाहर निकलनेके लिये बाध्य किया। राजकुमार पजार्स्की इसी लडाईमें घायल हुआ। कुछ महीनेतक मास्कोके बाहर रहकर फिर कोशिश की, लेकिन वह राजधानीको मुक्त नही करा सके। ३० जूनको सेना-सगठनके बारेमे कसाकों और सामन्तोने आपसमे समझौता किया, जिसमें सामन्तोंका प्रतिनिधि ल्यापुनोफ था और राजकुमार दिमित्रि त्रुबेत्स्की तथा अतमन इवान जारुत्स्की कसाकोंके प्रतिनिधि थे। समझौता ठीकसे चला नही, दोनों पक्षोमें जब-तब झगडा हो उठता। ३० जूनको वह यहातक बढा, कि कसाकोने प्रोकोपी ल्यापुनोफको मार डाला, जिसके बाद स्वयसेवक-सगठन छिन्न-भिन्न हो गया। सामन्त अपने सैनिकोको लेकर चले गये और सिर्फ कसाक सैनिकोका एक भाग मास्कोके सामने रह गया।

उधर स्मोलेन्स्कके प्रतिरक्षियोने करीब-करीब दो सालतक पोलन्दकी भारी सेनाका मुकाबिला किया। पोल राजाने तोपोंकि गोलोंसे सफलता न पाकर बडे-बडे वादोंसे फुसलाना चाहा, लेकिन स्मोलेन्स्कके नागरिक इसके लिये तैयार नही थे। जून १६११ ई०के आरम्भमें पोल किलेकी दीवारको एक जगह उडानेमें सफल हुये, नागरिकोंने जलते हुये नगरकी सडकोंमें आखिरी लडाई लडी। बहुतोने शत्रुके हाथमें पडनेकी जगह आगकी ज्वालामें कूदकर जान दे दी। सत्तर मन बारूदके एक ढेरमें आग लगा दी गई, जिससे रूसियोंके साथ बहुतसे पोल भी चिथडे-चिथडे उड गये। बहुत थोडेसे प्रतिरक्षी पोलोंके हाथ बदी हुये। जिस समय स्मोलेन्स्कको पोलोंने लिया, उसी समय स्वेडोने उत्तरमें नवोगोरद नगरपर अधिकार किया।

कसाको और सामन्तोंके झगडेके कारण यद्यपि सैनिक स्वयसेवकोका सगठन छिन्न-भिन्न हो गया था, लेकिन रूसियोने पोलोंके विरुद्ध अपनी तलवार मियानमें नहीं रक्खी। निजनी-नवोगोरदने फिरसे स्वयसेवकोंके सगठनमें आगे बढकर काम किया और मास्कोकी लडाईमें घायल प्रसिद्ध वीर राजकुमार दिमित्रि पजार्स्कीको सेनाका सचालक बननेके लिये निमन्त्रित किया। चारो ओर फिर एक नया उत्साह दिखाई देने लगा। मास्कोमें पोलोको जब पता लगा, कि हमारे विरुद्ध एक बडी भारी सेना जमा हो रही है, तो उनमें घबराहट मच गई। उनसे भी ज्यादा

भयभीत थे देशद्रोही बायर। उन्होंने लोगोसे बहुत कहा, कि पोल राजकुमार व्लादिस्लावकी अधीनता स्वीकार करो, लेकिन लोग इसके लिये तैयार नही हुये।

१६१२ ई०के वसतमें स्वयसेवक-सेना निजनी-नवोगोरदसे यारोस्लाव्ल पहुची। सब जगह लोग बडे उत्साहके साथ स्वागत करते आ-आकर उसमें भर्ती हो रहे थे। यारोस्लाव्लमें सेना चार महीने रही। यहापर उन्होने राष्ट्रीय सरकार सगठित की और शासन-प्रबधके भिन्न-भिन्न विभाग कायम किये। स्वयसेवकोमे भिन्न-भिन्न नगरोंके अमीर, तथा सभी वर्गोके आदमी, कसाक, किसान और स्त्रेलेत्सी (धनुधर) ही नही, बल्कि तारतार, मारी और चुवाश जैसे अ-रूसी जातियोके भी लोग सम्मिलित थे। सेनाने अपना केद्र यारोस्लाव्लमें रक्खा, लेकिन उसकी टुकडिया चारो तरफ फैलकर देशको पोलोंसे स्वतन्त्र करने लगी। पोल आकर रूसके भिन्न-भिन्न इलाकोमें फैल तो गये थे, लेकिन उनको देशका परिचय कम था, इसलिये हर जगह ग्रामीणोको पथ-प्रदशनके लिये मजबूर करते। कितने ही पथ-प्रदर्शकोने उन्हे ऐसी जगह पहुचा दिया, जहा वह रूसी स्वयसेवको के हाथमें पडकर नष्ट हो गये। ऐसे ही पथ-प्रदशकोमें कस्त्रोमाका एक किसान इवान सुसानिन था। उसने पोलोका पथप्रदशन करते उन्हे इसुपोव्स्कोयके दलदलमें डाल दिया। पोलोने सुसानिनको मार डाला, लेकिन वह स्वय दलदलमे मरनेसे नही बचे। पीछे इवान सुसानिनका पद्य-नाटक (ओपेरा) बना, जो आज भी रूसियोमें बहुत जनप्रिय है।

१६१२ ई०के अगस्तके अतमें स्वयसेवक-सेनाका मुख्य अग मास्कोकी दीवारोंके नीचे पहुचा। यद्यपि उसका जबरदस्त प्रतिरोध हुआ, लेकिन वह मास्को नदीके तटपर पहुचे विना नही रहा। स्वयसेवकोका एक मुख्य सेनापति कुजमा मीनिन चार सौ आदमियोंके साथ नदीके पार हो पोलोंके पक्षपर प्रहार करने लगा। पोल इसकी आशा नही रखते थे, इसलिये पहली ही चोटमें भागकर अपने डेरोमे घुस गये। चार सौ गाडियोमें भरी उनकी रसद कुजमाके आदमियोंके हाथमें पडी। मास्कोमें डेरा डाले पडी पोलसेनाको अब न कहीसे अन्न मिलता और न बाहरसे सहायता आनकी आशा थी। अन्तम लडाई और भूखकी मारमे परेशान हो २६ अक्तूबर १६१२ ई० को क्रेमलिनके फाटककर लडाई करते उन्होने आत्म-समपण किया और मास्को मुक्त हो गया।

२ रोमनोफ़-वंश (१६१३ १९१७ ई०)

मास्कोको मुक्त करनेके बाद जारके निर्वाचनके लिये राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सबोर)को बुलाया गया। सभामें सबसे ज्यादा जनप्रिय बायर रोमनोफ थे, जिनकी लडकिया जार इवान IV और फ्योदोरको व्याही थी। सामन्तो और बायरोको उनसे भूमि, किसान तथा दूसरी चीजो के मिलनेकी आशा थी। रोमनोफ-परिवारका प्रधान व्यक्ति फिलारेत था, जो कि रस्तोफका सघराज किन्तु अब पोलदमें बदी होकर चला गया था। वह साधु भी था, इसलिये जार नही बन सकता था। १६१३ ई०के आरम्भमें राष्ट्रीय सभाने उसके सोलह वर्षके पुत्र मिखाइलको जार निर्वाचित किया, जो बुद्धि और आचरण दोनोमें दुबल था।

रोमनोफ-वश रूसका अन्तिम राजवश था, जो कि अकबरकी मृत्युके सात साल बाद अस्तित्व-में आ १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रान्तितक शासन करता रहा। इस वशके अन्तिम आठ जार नाममात्र के ही रोमनोफ थे, वह वस्तुत जर्मन थे, जिसके कारण दरबारमे हमेशा जर्मनोकी तूती बोलती रही। इस वशमें निम्न जार हुये—

१	मिखाइल, फिलारेत-पुत्र	१६१३–४५ ई०
२	अलेक्सान्द्र I, मिखाइल-पुत्र	१६४५–७६ ”
३	फ्योदोर, अलेक्सान्द्र I-पुत्र	१६७६–८२ ”
४	इवान V, अलेक्सान्द्र I-पुत्र	१६८२–९६ ”
५	पीतर I, अलेक्सान्द्र I-पुत्र	१६९६–१७२५ ”
६	एकातेरिना I, पीतर I-पत्नी	१७२५–२७ ”

७ पीतर II, अलेक्सान्द्र-पुत्र	१७२७–३० ई०
८ अन्ना, इवान V-पुत्री	१७३०–४० "
९ इवान VI, अन्ना-पुत्र	१७४०–४१ "
१० एलिजावेथ, पीतर I-पुत्री	१७४१–६१ "
११ पीतर III, पीतर I-नाती	१७६१–६२ "
१२ एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी	१७६२–९६ "
१३ पावल I, पीतर III-पुत्र	१७९६–१८०१ "
१४ अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र	१८०१–२५ "
१५ निकोलाइ I, पावल I-पुत्र	१८२५–५५ "
१६ अलेक्सान्द्र II, निकोलाइ I-पुत्र	१८५५–८१ "
१७ अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र	१८८१–९४ "
१८ निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र	१८९४–१९१७ "

१ मिखाइल, फिलारेत-पुत्र (१६१३–४५ ई०)

वस्तुत शासनसूत्र मिखाइलके नामसे अव उसकी मा और सवधियोंके हाथमें था । नई सरकारको देशमें व्यवस्था कायम करनेमे काफी दिक्कतका सामना करना पडा । अस्त्राखानमें भागे हुये जारुत्स्कीने अपनेको जार दिमित्रि घोषित किया, लेकिन उसको सहायता नही मिली और अन्तमें लोगोने उसे और उसकी स्त्री मरीनाको पकडकर सरकारके हवाले कर दिया । जारुत्स्कीको मास्कोमें फासी हुई, मरीना जेलमें मरी और उसका बच्चा भी फासीपर चढा दिया गया । यद्यपि पोलन्दसे सघर्ष कम हो गया, लेकिन रूसकी भीतरी कमजोरियोको देखकर स्वीडो-नें नवोगोरदपर अधिकार करके सघष जारी रक्खा । उनसे छुटकारा १६१५ ई०में प्स्कोफमें उनके प्रसिद्ध योद्धा राजा गस्ताव अदल्फसको हराकर ही हुआ । रूसी भी लडाई बढाना नही चाहते थे, क्योंकि उसके कारण देशका व्यापार तथा सारा आर्थिक जीवन चौपट हो गया था, लोगोकी हालत बुरी थी । इगलैण्ड और हालैंडको बीचमे डालकर १६१७ ई०के आरम्भमें, स्तोल्बोवोकी सधि हुई, जिसके अनुसार स्वीड सेनाने यद्यपि नवोगोरद और उसके इलाकेको खाली कर दिया, लेकिन फिनलन्द खाडीका सारा तट तथा कितने ही नगर अपने हाथमे ही रखे, इस प्रकार रूस बाल्तिक समुद्रसे वचित रहा । व्लादिस्लाव अभी भी रूसी सिंहासनकी आशा नही छोडे था । १६१८ ई०में वह एक बार मास्कोतक पहुचा, लेकिन वहासे मार भगाया गया । आखिर उसने भी १६१८ ई०के अन्त में साढे चौदह सालके लिये मास्कोके साथ सधि कर ली, लेकिन स्मोलेन्स्क और आसपासके इलाके तथा सेवेर्स्क (चेरगीनोफ)के इलाकेको पोलोने नही छोडा । इस सधिके बाद जारका पिता फिलारेत रोमनोफ बदीखानेसे मुक्त हुआ । मास्को पहुचनेके तुरन्त ही बाद उसे सारे रूसी चर्चका महा-सघराज बना दिया गया और अबसे जीवनभर (१६१९–३५ ई०) वही रूसका वास्तविक शासक था । सभी राजादेश जार और उसके बापके नामसे निकाले जाते थे । फिलारेतको महास्वामी ("वेलीकी गसुदार")की उपाधि मिली थी । वह अब धर्म और राज्य दोनोका कर्णधार था । इस असीम शक्तिको इस्तेमाल करके उसने केन्द्रीय सरकारको बहुत मजबूत किया । मास्कोने १६३२ ई०में स्मोलेन्स्कको लौटानेकी कोशिश की, लेकिन पोलन्दने राजनीतिक चालसे क्रिमियाके तारतारोको मास्कोसे उलझा दिया, और इस प्रकार उस साल स्मोलेन्स्कका अभियान व्यर्थ गया । १६३३ ई०में महासघराज फिलारेत मर गया ।

इस समय पोलन्दके षड्यन्त्रके कारण मास्कोके दक्षिणी सीमातको क्रिमियाके तारतारोंसे बहुत खतरा पैदा हो गया था । वह जब-तब रूसके भीतर घुसकर गावो और शहरोंमें लूटपाट मचाते थे । प्रतिरक्षाके लिये दक्षिणी सीमातकी मोर्चाबदी अब आवश्यक हो गई थी । तारतार दोनके कसाको-पर भी हमला करते थे, इसलिये वह भी उनको दबानेके लिये सब तरहसे तैयार थे । क्रिमियाके

तारताराकी पीठपर उधर तुर्कीका सुल्तान भी था, जिसका अधिकार काकेशसमें अजोफ समुद्रके तट तक था। १६३७ ई०में दोनके कसाकोंने अजोफके किलेपर आक्रमण किया। दोन नदीद्वारा अजोफ-समुद्रके भीतर पहुचनेमें तुर्कोका यह किला भारी बाधक था। दो महीनेके मुहासिरेके बाद कसाकोंने किलेको सर कर लिया। तुर्की सुल्तान इसे कैसे बरदाश्त कर सकता था? उसने १६४१ ई०में शक्तिशाली तोपखानेके साथ एक भारी सेना उनके विरुद्ध भेजी। मुट्ठी भर कसाक सेनाने चौबीस बार तुर्कोंके आक्रमणको विफल कर दिया। अन्तमें एक और बडे आक्रमणके समय उन्हे मास्कोसे सहायता मिली। मिखाइलकी सरकार बिना जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)की सम्मति लिये तुर्कीके साथ युद्ध नही छेडना चाहती थी। सभाने उसके लिये स्वीकृति नही दी, इसपर सरकारने कसाकोको अजोफ छोडकर चले आनेकी आज्ञा दी।

यह १७वी सदीका मध्य या शाहजहाका समय था। उस समय भारतके किसानोकी भी हालत रूसके किसानोंसे बेहतर नही थी। जमीन बडे-बडे जमीदारो और सामन्तोकी थी, जो अपने विला-सितापूर्ण जीवनके लिये उनका अधिकसे अधिक शोषण करते थे। किसानोके लिये अपने गाबोमें अब आशा नही रह गई थी। उनमेंसे कितने ही किसानी छोडकर व्यापारी बन गये और कुछ दूसरी जगहो में भाग गये। १७वी शताब्दीके ये जमीदार अपने किसानो, अर्धदासो और कारीगरोंके हाथके कामो मे सतुष्ट नही थे। राजधानीके धनी अमीर और बायर इतालीके मखमल, इगलैण्डके ऊनी कपडो और विदेशी समूरी टोपियोको पहनते थे। उनको बहुमूल्य आभूषणो और विदेशी शराबोका चसका लग गया था। उनके घरोमे बहुत तरहकी विदेशी चीजें इस्तेमालमे आती थी और यह सारी विलास-सामग्री किसानोकी कमाईसे मिले पैसेके बलपर ही खरीदी जा सकती थी। उदाहरणके लिये उस समयके एक बहुत बडे बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफको ले लीजिये। उसके पास तीन सौ गाव थे, जिनमें चालीस हजार अर्धदास रहते थे, जिनसे उसे दस हजार रूबल मासिककी आमदनी थी, जो आजकलके हिसाबसे लाखो रुपया होगा। उसकी बहुतसी बखारें थी, जिनमें लाख पूद (१ पूद=१८ सेर) अनाज भरा रहता था। पोलन्दके साथकी लडाईमें अनाजका भाव महगा हो गया। उस समय अपने अनाजको बेचकर मोरोजोफने बहुत पैसा जमा किया। उसकी जमीदारीमें सात सौ नौकर थे, जो किसानोकी अलग नोच-खसूट करते रहते थे। मोरोजोफके पास इतना पसा जमा हो गया था, कि उसने उससे लोहेका कारखाना, पोटाश-कारखाना कायम किये और अपने किसानोंको वहा जाकर काम करनेके लिय मजबूर किया। उसके पोटाशको विदेशी व्यापारी खरीद ले जाते थे।

अब कारखानोंके बढ़ानेकी अवश्यकता समझी जाने लगी थी। लडाईके लिये लोहेकी सबसे अधिक अवश्यकता होती है, इसलिये लोहेकी उपज बढाने के लिये एक डच व्यापारी एड्रू विनियस को लोह-धूनो (ओर)में काम करनेका ठेका दिया गया और उसने तुलामें पहला लोहेका कारखाना खोला, जिससे आगे चलकर तुला रूसका लौह-केन्द्र बन गया। उसके कुछ समय बाद एक स्वीडने मास्कोके पास काचका कारखाना खोला।

कारखानेका रवाज यद्यपि बढने लगा, लेकिन अब भी व्यापार रूसके आर्थिक जीवनमें खास स्थान रखता था, जिसके कारण कितने ही विदेशी राज्योंसे उसका घनिष्ठ सबध स्थापित हुआ। इसी समय पश्चिमी युरोपसे व्यापार करनेके लिये अर्खन्गेल्स्क प्रधान बदरगाह बन गया। गर्मियोमें जब समुद्र बर्फसे मुक्त रहता, तो बहुत-से अग्रेज, डच और जर्मन जहाज अपना-अपना माल लेकर वहा पहुचते—जिसमें ऊनी कपडे, रेशमी कपडे, मूल्यवान् बर्तन तथा दूसरी विलासिताकी चीजें होती। रूसी व्यापारी नावोमें साइबेरियाके समूर, चमडे, भागके कपडे, पोटाश, शूकरमास तथा गावो और नगरोंके कारीगरोकी बनाई और भी कितनी ही चीजें भरकर उत्तरी द्विना नदीसे हो अर्खन्गेल्स्क पहुचते। वहा दोनो ओरसे क्रय-विक्रय होता। एसियाके साथ व्यापार मुख्यत अस्त्रा-खानद्वारा होता था, जहापर बुखारी और ईरानी व्यापारी पूर्वी देशोंके मालको लेकर पहुचते थे। इस व्यापारसे लाभ उठानेके लिये हमारे भारतीय व्यापारी और कुछ कारीगर भी अस्त्राखानमें

जा पहुचे थे। इवान IVने भारतीय कारीगरोको वहासे मास्को बुलवा मगवाया था। व्यापारके बढानेके कारण अब नगरोकी सख्या और समृद्धि बढने लगी और धनी व्यापारियोका एक अलग वर्ग स्थापित होने लगा। देशकी शाति और केन्द्रीकरणने इस काममें बडी सहायता की।

चीनतक प्रसार—रूसका विस्तार साइबेरियामे पूर्वकी ओर हो रहा था। ऐसी अवस्थामें चीनके बारेमें ज्यादा जानकारी प्राप्त करना उसके लिये आवश्यक था। बुखाराके व्यापारी जहा एक ओर अपने कारवाको लेकर चीनमें पहुचते थे, वहा दूसरी ओर वह अस्त्राखान भी आते थे। सम्भव है, उनके साथ कुछ चीनी भी रूसमे पहुचे हो, लेकिन रूस अब पेकिङ्से ज्यादा नजदीकका सबध स्थापित करना चाहता था। १५६७ ई०में ही पेत्रोफ और यालीसेफ नामक दो कसाकोको इसलिये भेजा गया, कि वह पडोसी लोगोकी भाषा, रीति-रवाज आदिके बारेमे जानकारी प्राप्त करे। उन्हे विशेषकर चीन-राज्य, मगोलोकी भूमि और ओब महानदीके बारेमें जानकारी प्राप्त करनी थी। वह पेकिङ-की ओर बढते हुये कलगनतक पहुचे। लेकिन देवपुत्र सम्राट्के लिये वह कोई भेट नही लाये थे, इसलिये सम्राट् म्-चुङ् (१५६६-७२ ई०)के दरबारमें गये बिना ही उन्हे लौटा दिया गया। १६०८ ई०में फिर इसके लिये कोशिश की गई, जिसमें मगोल राजा अल्तनखाकी फिर सहायता ली गई, लेकिन इसका भी कोई परिणाम नही निकला। इसके बाद जार मिखाइलके समय १६१६ ई०में तुमेनेत और पेत्रोफ नामक दो कसाकोको तोबोल्स्कसे इसी कामके लिये भेजा गया। वह चीन तो नही पहुच सके, लेकिन अल्तन खानके दरबारमें कुछ समयतक रहे और खानने रूसी जारके अधीन होना स्वीकार किया। १६१९ ई०मे पेंतलिन और मदोफ भेजे गये। वह भी अपने साथ भेट नही लाये थे, इसलिये चीनी सम्राट्के दर्शनसे वचित रहे। हा, उन्हें चीनकी ओरसे एक चिट्ठी दी गई, जिसे लेकर वह तोबोल्स्क लौटे, लेकिन उस चिट्ठीको उस समय कोई नही पढ सका, और डेढ सौ साल बाद १७७६ ई०में पेकिङ्मे लाकर एक जेसुइत पादरीकी सहायतासे उस चिट्ठीका अनुवाद कराया गया।

इस प्रकार मिखाइलके समयमें चीनके साथ कोई बाकायदा दौत्य-सबध स्थापित नही किया जा सका।

मिखाइलके मरनेके बाद उसका पुत्र अलेक्सी सोलह वर्षकी आयुमें गद्दीपर बैठा।

२ अलेक्सी, मिखाइल-पुत्र (१६४५-७६ ई०)

लडके जारको बाज उडाने और दूसरे खेलोका बडा शौक था और राज्यकी सारी शक्ति एक धनी बायर बोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफके हाथमें थी, जिसने सभी ऊचे पदोपर अपने भाई-भतीजे-भाजोको भर दिया। जारके वशसे और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये उसने एक साधारण बायर मिलोस्लाव्स्कीकी एक लडकीका ब्याह जार अलेक्सीसे करवा उसकी दूसरी लडकीको स्वय ब्याह लिया। पोलन्दके युद्धके कारण देशकी आर्थिक हालत बहुत खराब हो गई, और साथ ही युद्धमें असफलता भी रही। मोरोजोफको सबसे पहले राजकोषकी स्थिति सुधारनी थी, इसके लिये उसने जहा सैनिकोका वेतन कम किया, वहा कई कर लगाये, जिनमें सबसे भारी नमकपर था। नमक इतना महगा हो गया, कि लोग मछली सुरक्षित रखनेके लिये उसे खरीदकर नही लगा सकते थे, जिसके कारण हजारो मन मछलिया सडने लगी, और मोरोजोफको जल्दी ही इस करको उठा देना पडा। इन सब कारणोंसे लोगोकी हालतपर इतना बुरा असर पडा, कि अलेक्सीके आरम्भिक शासनकालमें कितने ही विद्रोह हुये। १ जून १६४८ ई०को तीर्थयात्रासे लौटकर जार मास्को आया, तो लोगोने उसके पास जाकर मोरोजोफकी लूट-खसूटके बारेमें शिकायत की। उस दिन आवेदन-पत्र देनेवालोको कोडोकी मारसे भगा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन एक जन-समूहने क्रेमलिनके दरवाजेसे राजमहलमे पहुचकर माग की, कि नगर-कोतवाल त्योन्ति प्लेश्चेयेफको हमारे हवाले किया जाय। त्योन्ति बडा ही क्रूर और पाशविक अत्याचारी था। बायर शान्त करनेके लिये आये, लेकिन उन्होने उन्हें भगा दिया। इसके बाद जनताने बायरो और सरकारी अफसरोंके घरोपर आक्रमण किया। एक बडा अफसर मार डाला गया, नगरमें जगह-जगह

आग लगा दी गई, सन्त्रस्त जारने प्लेश्चेयेफ और अखानियोतोफ दो जालिम दरबारियोको जनता के हाथमे दे दिया, जो उसी समय मार डाले गये। फिर लोगोने मोरोजोफके शिरकी माग की। लाल मैदान*मे भारी भीड उमड आई थी। जारने लोगोंके सामने कसम खाकर अपने आदमियो द्वारा कहलवाया, कि मोरोजोफको सरकारसे निकाल दिया जायगा। उसी रातको उसे मास्कोसे निकालकर एक दूरके मठमे भेज भी दिया गया। इसी समय कितने ही असतुष्ट सामन्त भी आ गये और नागरिको तथा सामन्तोने मिलकर जारके पास आवेदन भेजा, कि एक नई विधान-सहिताके बनानेके लिये जेम्स्की सबोर (राष्ट्रीय सभा)को बुलाया जाय।

मास्कोके अतिरिक्त दूसरे शहरोमें भी विद्रोह उठ खडे हुये थे, इसलिये जारको राष्ट्रीय सभा जल्दी-जल्दी बुलानी पडी। सभाके सदस्योमें बहुमत नागरिको और जनपदीय सामन्तोका था। सभी मागोको मान लिया गया और जनवरी १६४९ ई०में नई विधान-सहिता स्वीकार की गई। शाहजहाके कालमें बनी इस विधान-सहिताद्वारा किसानोंके ऊपर सामन्तोका पूरा अधिकार स्थापित करके उन्हे अध-दास बना दिया गया। नागरिकोको यह अधिकार मिला, कि सभी बायरो और चचकी जायदाद दीहात नही नगरोकी मानी जाय, और उन्हें सामन्तो और अमीरोकी तरह कर उगाहने और राजसेवाओका अधिकार मिले। १६५० ई०मे नवोगोरद और प्स्कोफमें विद्रोह हो गये, जिनमें प्स्कोफका विद्रोह विशेष तौरसे खतरनाक था। लोगोने जारके वोयवद (राज्यपाल)को हटाकर वहा स्वायत्तशासन स्थापित कर लिया और जारसे माग की, कि वोयवदकी अदालतमे हमारे अपने प्रतिनिधियोको बैठनेकी इजाजत होनी चाहिये। मास्कोने इसका जवाब दिया—"कभी ऐसा नही हुआ, कि बायरो और वोयवदोंके साथ अदालतमें कमेरे (मृजिक) बैठें।" प्स्कोफके विरुद्ध सरकारी सेना गई, लेकिन उसे बुरी तौरसे हारना पडा। पीछे जब वहाके धनिया और अमीरोने देखा, कि इस सघर्षमें उनका भी ठौर-ठिकाना नही रहेगा, तो उन्होने विश्वासघात करके जारके निरकुश अधिकारको फिरसे स्थापित करनेमे मदद दी—१६५० ई०के विद्रोहोको दमन करनेमें भावी महासघराज निकोनका खास हाथ था।

शासन-यत्र—जारका अधिकार असीम था। जो कानन और नियम बनाये गये थे, उनका अन्तिम लक्ष्य यही था, कि अध-दासो और किसानोंके ऊपर बायरोका पूरा अधिकार रहे। जार सबके ऊपर स्वेच्छाचारी शासक ही नही था, बल्कि देशका वह सबसे बडा बायर (जमीदार) भी था। अमीरो और दूसरे जमीदारोंके लिये यह जरूरी था, कि जारकी शक्ति खूब दृढ हो, जिसमें वह उनके वर्ग-स्वार्थकी रक्षा कर सके। जारकी इच्छा ही सारे देशके लिये विधान थी। सामन्ती कुलोंके बायर भी अपनेको जारका सेवक कहते थे और गाव या नगरके साधारण लोग तो अपनेको वह भी नही कह सकते थे। वह जारके "नन्हेंसे अनाथ" थे। जारको सम्बोधित करनेपर वह अपनेको छोटा बनाते हुये पीतरकी जगह पेतरूशका (पीतरवा), इवानकी जगह इवाश्का (इवनवा) कहते थे। जारको वह देवता मानते हुये धरतीपर ललाट रखकर उसे प्रणाम करते।

राज्यके महत्त्वपूर्ण विषयोपर निर्णय करनेका काम जारके दरबारी बायरोकी दूमा (परिषद्) करती थी। इस परिषद्में केवल सामन्त (राजुल) और बायर ही सम्मिलित होते थे, लेकिन १७वी शताब्दीमें साधारण कुलके प्रभावशाली नये धनी भी उसमें सम्मिलित कर लिये गये।

सरकारी दफ्तरोंके कई दर्जे और विभाग थे। एक विभागका नाम "प्रिकाजी" था, जिसका मुखिया एक बायर और जिसके एक-दो सहायक-लेखक (द्याकी) होते। आफिसके साधारण कामोको पद्याचिये (निम्न-लेखक) करते। सैनिक काम-काजकी व्यवस्था अलग थी। रज्र्याद्नी-प्रिकाज (सैनिक आफिस) सेना-सचालन विभागका काम करता था। स्त्रेलेत्स्की आफिसका काम था, स्त्रेलेत्स्की सैनिकोंके कामको देखना, पसोल्स्की प्रिकाज (दूत-कार्यालय) विदेश-विभागका काम देखता। स्थानीय शासन-प्रबधके मुखिया वोयवोद (राज्यपाल) होते, जो राज्यके नगरोंके शासनके लिये

*लाल या "क्रास्नी" रूसी शब्दका अर्थ सुदर और रक्त दोनो है, पहिले इसका अर्थ "सुदर मैदान" लिया जाता था, किन्तु बोल्शेविक क्रातिके बादमें क्रातिके प्रिय रग लालको माना जाने लगा।

वायरो और सामन्तोमेंसे नियुक्त किये जाते। वोयवोद नगरके सैनिक और असैनिक सभी अधिकारो का प्रमुख था। वही न्याय प्रबन्ध करता, नगर और उसके इलाकेके लोगोसे कर उगाहता, एक तरहसे वह अपने इलाकेका स्वच्छद जार था।

चर्च सुधार—रूस सदियोंसे ग्रीक चर्चका पक्का अनुयायी था। चर्चके साधुओ-पुरोहितो एव मठो-गिर्जोका जाल गावोमें भी बिछा हुआ था, लेकिन तबतक अभी उसका पूरी तौरसे केन्द्रीकरण नही हुआ था—यही नही कितने ही कर्मकाड और रीति-रवाजको लेकर चर्चकी कई शाखायें हो गई थी। प्स्कोफमें लोगोके आन्दोलनको दबानेमें मदद देनेवाला निकोन अब महासघराज था। निकोन मठोकी जायदादके साथ अपनी इच्छानुसार जैसा चाहता वैसा करता। उसके पास बहुत भारी निजी सम्पत्ति थी। वह चर्चके भीतर अपनेको सर्वशक्तिमान् जार समझता था। उसके अत्याचारोके कारण साधु-पुरोहित उसे "जगली जानवर" कहते थे। निकोनने चाहा, कि भेदोको मिटाकर सारे चर्चको एक कर दिया जाय। इसके लिये उसने पूजा-पद्धतियो और रीति-रवाजोमें परिवर्तन करनेकी आज्ञा दी। निकोनके सामने पश्चिमी चर्चके रोमन-पोपका उदाहरण मौजूद था। उसने अपनेको पूर्वी चर्चका पोप बनाना चाहा। ग्रीक और कियेफके सुशिक्षित साधुओ-ने पद्धतियो और क्रिया-कलापोंके सशोधनका काम किया। निकोनने आज्ञा दी, कि पहले जैसे दो अगुलियोंसे सलेब खीच पूजाकी मुद्रा की जाती थी, अब उसे तीन अगुलियोसे करना चाहिए। बढते-बढते उसने इस सिद्धान्तको भी चलाना चाहा, कि आध्यात्मिक (धार्मिक) शासन सासारिक शासनसे ऊपर है "आध्यात्मिक शासन सूर्यकी तरह है, जब कि सासारिक शासन चन्द्रमा जैसा है—चन्द्रमा अपना प्रकाश सूर्यसे प्राप्त करता है।" निकोन "महास्वामी" (वैलीकी गसूदर) की उपाधि धारण कर राजकाजमें भी दखल देने लगा—सैनिक अभियानो तकके लिये भी आज्ञा निकालने लगा। उसकी इस अनधिकार चेष्टासे सामन्तो और अमीरोमे भारी असतोष पैदा हो गया। यद्यपि वह चर्चको मजबूत करनेके निकोनके प्रयत्नको पसद करते थे, लेकिन नही चाहते थे, कि महासघराजके सामने जार अकिंचन हो जाये। होते-होते इस वैमनस्यने भयकर रूप धारण किया, जिसपर निकोन एकाएक अपने पदको छोड एक मठमें एकातवासी बन बैठा। उसने समझा था, कि दरबारी खुशामद करते उसे फिरसे पद सभालनेके लिये प्रार्थना करेंगे, लेकिन उसे निराश होना पडा। निकोनके कामोकी जाच करनेके लिए जारने १६६६ ई०मे दो ग्रीक सघ-राजोकी समिति बनाई। समितिने अपना निर्णय दिया, कि निकोनने राजशक्ति हथियानेका प्रयत्न किया। तो भी उसके चर्च-सबधी सुधारोको स्वीकार किया गया। निकोनको एक साधारण साधु बनाकर उत्तरके एक मठमें निर्वासित कर दिया गया।

निकोनने जो सुधार किये थे, उससे यद्यपि रूसी चर्चमें एकता स्थापित हुई, लेकिन कितने ही सनातनियोने इन सुधारोंको माननेसे इन्कार कर दिया। उन्होने "रस्कोल्निकी" (मतभेदी) अथवा पुराणविश्वासी नामसे अलग सम्प्रदाय बना लिया। आज भी रस्कोल्निकी कितनी ही जगहो-में काफी सख्यामें मिलते हैं। इन विरोधियोमें एक मास्कोका अव्वाकुम था, जिसे उसके विरोधके लिये पूर्वी साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया, जहा प्राय दस वर्षोतक जारके वोयवोदोने उसके साथ बडा कठोर बर्ताव किया। निर्वासनके बाद अव्वाकुमने रूस लौटकर फिर अपने कामको शुरू किया। अब उसे उत्तरमें पुस्तोजेस्क स्थानमें बदी बनाकर एक अधेरे तहखानेमें डाल दिया गया। राज्यको इतने हीसे सतोष नहीं हुआ, बल्कि १६८१ ई०में अव्वाकुमकी होली जलाई गई। बहुत दिनोंतक रस्कोल्निकी सम्प्रदायका मुख्य केंद्र रूससे बाहर रूमानियामें था। क्रान्तिके बाद ही उनके साथका भेदभाव दूर हुआ, और उनका केन्द्र रूसकी भूमिमें चला आया।

उक्रइनका मिलन—१५६९ ई०में लियुवानिया और पोलन्दमें एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार दोनो एक हो गये। उसी समयसे उक्रइनका बहुत बडा भाग पोलन्दके हाथमें चला गया। उक्रइनी लोग पोल जमीदारो और सामन्तोंके जूयेके नीचे कराह रहे थे। सबसे अच्छी भूमिको लेते बढते-बढते द्नियेपर नदीके बायें तटके गावोंके भी स्वामी पोल बन गये। ऐसे आर्थिक शोषण, राज-

नैतिक अत्याचार और दुर्व्यवहारको उक्रइनी लोग कबतक चुपचाप बर्दाश्त करते ? स्लाव जाति-के होनेपर भी पोल जहां कैथलिक होनेसे रोमके पापाको भगवानूका अवतार मानते, वहां उक्रइनी ग्रीक चर्चके अनुयायी थे। पोल अमीर और जमींदार चाहते थे, कि उनके किसान भी रोमके पापाको मानें, ताकि बिना चू-चिराके हमारे जूयेको उठाते रहें। इसके लिये भी कोशिश की जाने लगी, कि कैथलिक और ग्रीक चर्चको एक संघमें मिला दिया जाये। योजना यह थी, कि दोनों चर्च पूजा-पद्धति अपनी-अपनी रक्खें, लेकिन रोमके पापाको अपना प्रमुख मानें। इस कामके लिये १५९६ ई०में ब्रेस्त नगरमें एक चर्च-सभा बुलाई गई। सभाका बहुमत इसे नहीं पसंद करता था, कि ग्रीक चर्च रोम-चर्चके अधीन हो जाये, तो भी अल्पमतके निश्चयको स्वीकार करते पोल राजा-ने वैसा राजादेश निकाल दिया। इसपर असंतोष बढ़ना ही था। धार्मिक एकताकी आड़में असल उद्देश्य तो था, किसानों और कमेरोंपर अमीरोंका निर्बाध अधिकार स्थापित करना। अत्याचारोंके मारे कितने ही उक्रइनी और बेलोरूसी किसान भागकर निम्न-द्नियेपर-उपत्यकाकी खाली जगहोंमें चले गये जो जापरोजे कसाकके नामसे प्रसिद्ध हुये। इसी समय रूसी जमींदारों के अत्याचारोंसे बचनेके लिए बहुतसे किसान दोन-उपत्यकामें भाग गये, जो दोन-कसाक कहलाये। उक्रइनके भगोड़े किसानोंने द्नियेपरके जल-प्रपातके पास खोर्तित्सा द्वीपमें अपना एक दुर्ग बनाया। अबतक तुर्क और क्रिमियाके तातार उक्रइनकी भूमिमें घुसकर लूट-मार करना अपना हक समझते थे, लेकिन अब जापरोजे कसाक कालासागरके तटकी उनकी भूमिमें हाथ साफ करने लगे। इनका कोई एक निश्चित निवासस्थान नहीं था। जब लूट-मारसे काफी माल प्राप्त हो जाय, और थोड़ेसे पशु-पालनसे काम चल जाये, तो स्थायी बस्ती बसानेकी क्या अवश्यकता ? कहीं कहीं उनके मोर्चाबंदी किये डेरे होते थे, जिन्हें सेच कहा जाता था। बसंतके आरंभमें कसाक सेचपर जमा होते। उस समय यह द्वीप जनसंकुल हो उठता। इसी समय कसाक अपना मुखिया (अतमन) तथा दूसरे सेनानायक निर्वाचित करते। सैकड़ों कसाक बोरी (बेद) की लकड़ीकी नावें बनाने या मरम्मत करनेमें लग जाते, हथियारोंको ठीक करते। सब तैयारी हो जानेके बाद इन्हीं नावोंपर चढ़कर वह बड़ी तेजीसे कालासागरमें पहुंच जाते, और फिर तट-भूमिपर लूट-मार शुरू कर देते। कभी-कभी तो वह सुल्तानकी राजधानी कान्स्तन्तिनोपोलतक भी धावा मारते। उनकी नावोंकी गति इतनी तीव्र होती, कि तुर्क सतरी खतरेकी खबर भी नहीं दे पाते थे। जाड़ोंमें कसाकोंकी सेच जनशून्य हो जाती। उस समय वह अपने लूटके मालको ले जाकर उक्रइन और पोलन्दके नगरोंमें बेंच दूसरी चीजें खरीदते।

१६वीं शताब्दीके अन्तमें जापरोजे कसाकोंकी संख्या काफी बढ़ गई। पोल राजा स्तेफन बाथोरीने उनकी सैनिक क्षमताको देखकर उन्हें अपना सचिकाबद्ध (रजिस्टरबद्ध) सैनिक बनाना शुरू किया—जिसके कारण ऐसे कसाक "रजिस्टरबद्ध कसाक" कहे जाने लगे। उनको राज्य-की ओरसे कुछ वेतन तथा शहरोंमें रहनेके लिये मकान मिलते थे। रजिस्टरमें नाम लिखे कसाकोंकी संख्या बहुत कम थी। १६वीं सदीके अन्तमें जापरोजे कसाकोंमें भी धनी-गरीबका भेद स्थापित हो गया। राजा उनके सरदार (हेतमन, अतमन) को अपना अफसर बनाता।

धनी-गरीबके भेदने उक्रइन और बेलोरुसियामें जनसाधारणको विद्रोह करनेके लिये मजबूर किया। इन विद्रोहोंमें जापरोजे कसाक प्रायः किसान-विद्रोहियोंका साथ देते—कभी-कभी रजिस्टर-बद्ध कसाक भी उनके सहायक बन जाते। विद्रोही किसान पोल जमींदारोंकी गाड़ियोंमें आग लगा देते, और हाथ लगनेपर उन्हें मार भी डालते। पोल फिर सेना लेकर आते और किसानोंसे बड़ी क्रूरतासे साथ बदला लेते। इस वक्त भी कितने ही विद्रोही किसान अपने गांवोंको छोड़कर मध्य-द्नियेपर के घने जंगलोंमें भाग जाते, जहांसे अपने शत्रुओंपर छापामारी करते।

१६३० ई०के आसपास जापरोजेकी सेच पोलोंके खिलाफ एक बार फिर उठी, जिसे आसानीसे दबा दिया गया, क्योंकि उनके धनी मुखिया और सरदार विश्वासघात करनेके लिये तैयार थे। पोलोंने जापरोजे कसाकोंको उक्रइनमें घुसनेसे रोकनेके लिये द्नियेपरके प्रपातके ऊपर कोदकमें किला

इजीनीयरके तत्वावधानमें एक किला बनवाया, जिसके तैयार हो जानेपर पोल हेतमनने कसाकोंके साथ मजाक करते हुये कहा—"कोदकके बारेमें तुम क्या सोचते हो ?"

"मानव हाथोंने जिसे बनाया, वह मानव हाथोंद्वारा नष्ट किया जायेगा।"—यह जवाब कसाक सरदार बगदान स्मेल्नित्स्कीका था।

कुछ वर्षों बाद सचमुच ही कसाकोंने कोदक दुर्गको नष्ट कर दिया, और १६३८ ई०मे पहले पोल सेना उक्रइनके विद्रोहको नही दबा सकी।

१६४८ ई०के बसंतमें फिर लोगोने पोलन्दके खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोहके आरम्भक जापरोजे कसाक और उनका नेता बगदान (भग-दत्त) स्मेल्नित्स्की था। बगदान उक्रइनमें बहुत जनप्रिय था। वह शिक्षित था। कियेफकी अकदमीमें उसने पढा था, और लातीनी भाषा भी जानता था। कसाकोंके कितने ही साहसपूर्ण अभियानोमें उसने भाग लिया था। अभी वह बीस वर्षसे कुछ ही बडा था, कि पोलोंके साथ मिलकर उसने तुर्कोंके खिलाफ लडाई लडी थी। उस समय तुर्कोंकी सीमा पोलन्दसे मिलती थी, और कितने ही उक्रइनी गाव तुर्कोंके हाथमें थे, जिनके साथ तुर्क बडा दुर्व्यवहार करते थे। बगदानका बाप चेचोरा जासीके पास तुर्कोंकी लडाईमे मारा गया और बगदान स्वय तुर्कोका बंदी बना, जहा उसे दो सालतक रहनेके बाद मुक्ति मिली। बगदान एक अच्छा खाता-पीता समृद्ध जमीदार था, और पोल राजकीय सेनाके रजिस्टरमें भी उसका नाम था। लेकिन, उसके देशभाइयों (उक्रइनियो)के साथ पोलोका जैसा दुर्व्यवहार हो रहा था, उसके कारण बगदान अपनेको रोक नही सका। पोलोका शासन मनमानी था। एक दिन एक पोल जमीदारने दखल करनेका सरकारी परवाना ला एकाएक बगदानकी जमीदारीपर अधिकार कर लिया, और सारे परिवारको जजीरोंमें बाध दिया। बगदानने जब न्याय करनेकी बात कही, तो पोल जमीदारने बगदानके दस वर्षके लडकेको कोडेसे पीटते हुये मार डाला। बगदानने राजाके दरबारमे जाकर न्याय पानेकी कोशिश की, लेकिन वहासे भी उसे खाली हाथ लौटना पडा। जो भी थोडीसी धन-दौलत-जमीदारी उसके पास थी, वह खतम हो चुकी, साथ ही उसके बेटेकी निर्मम हत्या की गई, उसे भी वह भूल नही सकता था। उसने अच्छी तरह समझ लिया, कि इन सारे अत्याचारोका कारण देशकी परतन्त्रता—उक्रइनका पोलन्दके हाथमें रहना है। उसने अपने कसाक-मित्रोको जमा करके उनका एक दल बनाया, और फिर उनसे पूछा—

"क्या हम अपने भाइयोको इस हालतमें छोड दें ? देशमें सभी जगह मैंने अपनी आखो भयकर अत्याचार होते देखा है। हमारे अभागे भाई हमसे सहायता माग रहे हैं।"

इसके जवाबमें एक बूढ़े कसाकने कहा—"अब तलवार उठानेका समय आ गया है, पोलोंके जूयेको उतार फेंकनेका समय आ गया है।" पोल जमीदारोंको भी इसकी भनक लग गई, और उन्होने बगदानको जेलमें डाल दिया, लेकिन वह भागकर जापरोजे पहुचनेमें सफल हुआ। अब उसने सगठित रूपसे पोल जमीदारोंपर धावा बोलना शुरू किया। पोल अपना सब कुछ छोड जान लेकर भागने लगे। यह खबर सुन उक्रइनमें और जगहोमें भी विद्रोह होने लगे। बगदानने सोचा, हमारी शक्ति और भी मजबूत हो सकती है, यदि क्रिमियाके तारतार खानसे मित्रता हो जाये। इसके लिये वह स्वय क्रिमियाकी राजधानी बक्सीसराय गया। खान उस समय पोल-राजासे बहुत नाराज था, क्योंकि कितने ही वर्षोंसे उसने भेंट नही भेजी थी। खानकी ओरसे बगदानका बडा स्वागत हुआ, और अपने उद्देश्यमें सफल होकर लौटा। खानने बगदानकी मददके लिये अपने एक राजकुमारके नेतृत्वमे तारतार सैनिक भी भेजे। कसाकोंने बगदानका भारी सम्मान करते अपनी सभामें उसे कसाक सेनाका हेतमन (मुखिया) घोषित किया और हेतमनके दर्जेका चिह्न एक बुलवा (गदा) भेंट की।

१६४८ ई०के बसंतसे कसाकोंने पोलोंपर खूब जोरके साथ आक्रमण करना शुरू किया। मईके आरम्भमें बगदानने एक बडी पोल सेनाको हराया, जिसमें कसाकों और तारतारोंको बहुत-सा लूट-का माल मिला। सफलताके साथ-साथ अब बगदानके अभियानोंने उक्रइनी जनताके मुक्ति-युद्धका

रूप लिया। १६४८ ई०के सितम्बरमे पोल सेनाकी पिल्याव्का नदीके तटपर और भी भयंकर हार हुई। इस हारके बाद बगदानके लिये पोल-राजधानी वारसाका रास्ता खुल गया था। बगदान उक्रइन से पोलोको ल्वोफ और जामोस्त्येतक खदेडकर कियेफ लौटा। लोगोने उक्रइनके मुक्तिदाताके तौरपर उसका स्वागत किया। तीन सौ वर्षोतक पोलोकी गुलामीमे रहनेके बाद कियेफ अब स्वतन्त्र हुआ था। पोल सरकारने उक्रइनकी शक्तिको समझ लिया और सधि कर लेनमे ही भलाई समझी। बगदानने माग या प्रतिज्ञा की—"मै सारी उक्रइनी जनताको पोलोकी गुलामीसे मुक्त करके ही दम लूगा।" पोल दूतोके साथ बातचीतका कोई फल नही हुआ, इसपर १६४९ ई०के ग्रीष्ममें बगदानने नया अभियान शुरू किया। क्रिमियाके तारतार अब भी उसके साथ थे, लेकिन पोलोने प्रलोभन देकर खानको अलग कर दिया और बगदानने अपनी शक्तिको देखते हुये सधि करना ही पसद किया। इस सधिके अनुसार उक्रइनका स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ, जिसका हेतमन बगदान माना गया। रजिस्टरबद्ध कसाकोकी सख्या छ हजारसे चालीस हजार कर दी गई।

१६४९ ई०की ज्वोरोफकी यह शान्ति-सधि भी उक्रइनको पूरी स्वतन्त्रता नही दिला सकी। पोल इस सधिको अपनी आगेकी तैयारीके लिये सिर्फ बहाना बनाना चाहते थे। १६५१ ई०के आरम्भमें उन्होने फिर पश्चिमी उक्रइनपर आक्रमण कर दिया। उसी सालके वसतमें एक बडी सेना लेकर पोल-राजा स्वय चढ आया। पोपने अपने पोल-अनुयायियोको इस धर्मयुद्धमें भाग लेनेके लिये घोषणा की—उक्रइनियोके साथ युद्ध करनेमें जो भी पाप होगा, हम उसको क्षमा करते ह। बगदानके साथ क्रिमियाके खानकी सेना थी, लेकिन ऐन-मौकेपर जून १६५१ को बेरेस्तमे तारतारोंने धोखा दे दिया। बगदानने जल्दीसे खानके पास जाकर सेनाको लौटनेके लिये कहा, लेकिन खानने सेना लौटानेकी जगह बगदानको ही अपने पास पकड रक्खा। बिना नेताके भी कसाक और उक्रइनी किसान कितने ही दिनोतक मोर्चा बाधे पोलोंसे लडते रहे। उन्होंने एक असाधारण शक्ति और हिम्मतके धनी पुरुष बोगुनको अपना नेता चुना। कसाकोने अपने पराक्रमका खूब परिचय दिया। एक घिरी कसाक-टोलीके पास पोलोंने आत्मसमर्पण करनेके बदले प्राणदान देनेका वचन दिया, जिसका जवाब था—"हमे अपने प्राण प्यारे नही है। हम शत्रुकी दयाको घृणाकी दृष्टिसे देखते ह।" यह कहकर वह एक-दूसरेसे गले मिल पोलोंके ऊपर टूट पडे। तीन सौ कसाकोमसे एक एक वीर-गतिको प्राप्त हुआ। इतनी वीरता दिखलानेके बाद भी पोल सेनाको रोका नही जा सका। महीने भर बाद जब खानने बगदानको छोडा, तो कियेफ पोलोंके हाथमें चला गया था और तारतारोने देशको लूटकर बरबाद कर दिया था। १६५१ ई० की शरदमें जो सधि करनी पडी, उसके अनुसार सारे सघर्षमें प्राप्त सभी चीजोको हाथसे खो देना पडा। पोल जमीदार फिर उक्रइन लौटे और विद्रोहमें शामिल होनेके दडस्वरूप किसानोंके ऊपर अकथनीय अत्याचार करने लगे। किसान अपने गावोको छोड-छोड द्नियेपरके बायें तटपर जमा हो वहासे रूसी राज्यके भीतर जाकर बसने लगे। पोलोंके अधीनवी उक्रइन-भूमि जल्दी ही जन-शून्य होने लगी, भगोडे उक्रइनी जाकर उत्तरी दोनेत्सकी ऊपरी उपत्यकाकी उर्वर-भूमिको आबाद करने लगे। पोल राजाने क्रिमियाके खानके साथ शाति स्थापित कर उसे चालीस दिनके लिये उक्रइनी जनताको लूटनेकी खुली इजाजत दी थी। क्रिमियाके तारतारोने लूटते-पीटते हजारो स्त्री-पुरुषोको ले जा जिन्दगीभर दास रहने के लिये बेच दिया। इन्हीके बारेमें एक उक्रइनी लोकगीतमें कहा गया है —

"उक्रइनी लोग दुःख भुगत रहे ह, उन्हें कही छिपनेकी जगह नही,
घुमन्तू सवारोंके ओर्दू बच्चोंके शरीरपर दौड रहे है,
कोमल शिशुओको रौंदते,
उनके पीछे हथियार—जजीरमें बधे जालिम खानके शिकार।"

१६४८–५१ ई०की लडाइयोंसे उक्रइनियोको इस बातका पता लग गया, कि बिना बाहरी सहायताके पोलोंके हाथसे अपने देशको मुक्त नही किया जा सकता। इसीलिये जब १६५२ ई० मे उक्रइनके किसान और कसाक दूसरी बार विद्रोह करनेके लिये तैयार हुये, तो बगदानने
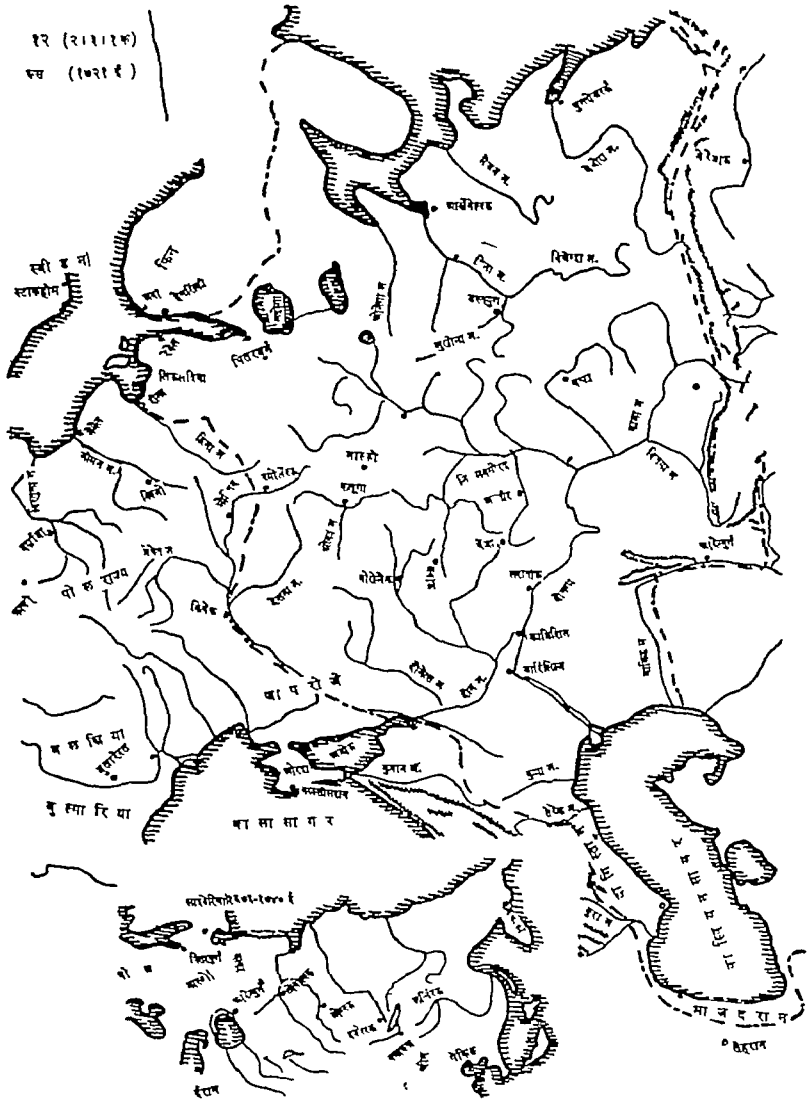
उक्रइनको रूसमें मिला लेनेके लिये मास्को-सरकारसे बातचीत शुरू की। १६५३ ई०के शरद् में मास्कोमें "ज़ेम्स्की सबोर"के अधिवेशनमें निश्चय हुआ, कि उक्रइनको अपने संरक्षणमें ले लिया जाय, और पोलन्दके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की जाय। ८ जनवरी १६५४ ई०मे उक्रइनी कसाकोंके प्रतिनिधियोका सम्मेलन—रादा—पेरेयास्लाव्लमें हुआ, जिसमें मास्कोके दूत भी शामिल हुये थे। रादाको सम्बोधित करते बगदानने अपने लोगोंकी दयनीय अवस्थाका चित्र खीचते हुये कहा था—

"तुम सब जानते हो, कि हमारा शत्रु हमें पूरी तौरसे मिटा देना चाहता है, जिसमें हमारी भूमिमें रूस (उक्रइनी) नाम फिर कभी न लिया जा सके। इसीलिये तुम चार शासकोंमें से किसी एकको अपने लिये चुन लो पहला है तुर्कीका सुल्तान, जो कि ग्रीकोपर जुल्म ढा रहा है, दूसरा है क्रिमियाका खान, जिसने हमारे भाइयोंके खूनसे अनेक बार अपने हाथोको रगा है, तीसरा है पोल-राजा, जिसके अमीरोंके अत्याचारके बारेमें कहनेकी अवश्यकता नही और चौथा है महारूसका पूर्वी जार।"

हजारो कठाने एक जवाब दिया —"हम पूर्वी जारके अधीन रहना चाहते ह ।"

इसके बाद मास्कोमे समझौता हुआ, और रूसने उक्रइनके स्वायत्त-शासनके अधिकारको स्वीकार किया—उक्रइनी सरकारके लिये लोकनिर्वाचित हेतमन (प्रधान) बनाना स्वीकार किया गया। उक्रइनके लिये स्वेच्छाचारी जारका शासन भी पोलोसे कम कठोर नही था, पर उक्रइनी और बेलोरुसी भाषा, धम और सस्कृतिमे रूसियोके सगे भाई थे, इसलिये उनको यही रास्ता अच्छा लगा। फिर १६५४ ई० मे पोलोसे लडाई शुरू हुई, जो बीच-बीचमे रुकती हुई तेरह वप (१६५४–६७ ई०) तक चली। इसी युद्धमें प्राय सारी बेलोरुसिया भी पोलोसे मुक्त हो गई। रूसकी विजयिनी सेना लियुवानियाके मुख्य नगर विलनोमें दाखिल हुई। उधर सारी उक्रइन-भूमिको मुक्त करते हुये बगदान और मास्को के वोयवोद पोलन्दकी सीमाको पार हो लुवलिन नगरको लेनेमें सफल हुये। इसी बीच १६५६ ई० में स्वीडनके राजा दशम चार्ल्सने भी पोलन्दके ऊपर आक्रमण करके वारसा (वरसावा), क्राको और दूसरे पोल-नगरोपर अधिकार कर लिया। इस अचानक प्रहारके कारण पोल मास्कोके साथ शाति-मिक्षा मागनेके लिए तैयार हो गये। पर, शाति अस्थायी ही हो पाई, क्योकि पोलन्द सारे उक्रइन और बेलोरुसियापर अपने अधिकारको छोडनेके लिये तैयार नही था। बाल्तिक समुद्रतट रूसके लिये इस समय खतरनाक था—जबतक स्वीडनको समुद्रतटसे भगाया न जाय, तबतक रूस अपनेको सुरक्षित नही समझ सकता था। इसके लिये १६५६ ई०में स्वीडनसे लडाई शुरू हो गई, लेकिन कुछ सफलता होनेपर भी युद्ध कई वर्षोंतक अनिर्णायक रूपमे चलता रहा। अन्तमें १६६१ ई०में रूसने अपनी असफलता स्वीकार करते यथापूव-स्थितिको मानते करसिकी-सधि-पत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। बगदान १६५७ ई०मे मरा। वह यह देखकर प्रसन्न था, कि उक्रइन अब जालिम पोलोंसे मुक्त है।

वोल्गाकी जातियां—१७वी सदीमें अब भी वोल्गाके दोनो तटोंके घने जगलो और मैदानोमे उराल-अल्ताई-वशकी अ-रूसी जातिया रहती थी। व्यत्का नदीकी पूर्वी वनभूमिमे उदमुत (वोत्याक), रहते थे। वोल्गाके बाये तटपर व्यत्का और वेतुल्गा नदियोंके बीचमें तथा वोल्गाके दक्षिणी तटपर, वोल्गा और सुरा नदियोंके बीचमे मारी (चेरेमिसी) लोग रहते थे। मारियोंके पडोसमें चुवास और मोर्द्विनी रहते थे, जिनकी बस्तिया निम्न ओका और ऊपरी सुराकी भूमिमें थी। निम्न कामाके दोनो तटोपर तातारो (तारतारो) की बस्तिया थी। बाशकिर (तुर्क) कामाके दक्षिणी-पूर्वकी भूमि एव ऊफा नदीके किनारे बसते थे। कुछ बाशकिर उरालके परे तबोल् नदीके ऊपरी भागमें भी रहते थे। इन सभी जातियोको इवान IVने कजानके खानपर विजय प्राप्त करनेके बाद अपनी प्रजा बना लिया था। जारकी सरकार १५५२ ई०तक वोल्गा-भूमिके अपने पराजित लोगोंसे वही कर वसूल करती थी, जो कजानके खान तथा उसके सामन्त उनसे लिया करते थे। जारके कर उगाहनेवालोंका बर्ताव भी इन लोगोंके साथ अच्छा नही था, कितनी ही बार वह लोगोंके पशुओं और अन्नको जब्त कर लेते। रूसी महन्तो और जमीदारोने भी वहाकी बहुत-सी उर्वर भूमि और जगलोपर अधिकार कर लिया था—इन जगलोमें भारी सख्यामें कीमती समूरी खालवाले जानवर रहते थे। ग्रीक चर्चने यहाके लोगोको निकोनके समय जबरदस्ती ईसाई बनानेमें बडी सरगरमी दिखलाई। ईसाई पुरोहित मोर्द्विनी गावोंके किसानोको जमाकर बपतिस्मा दे उन्हे बाध्य करते, कि वह अपने पवित्र वनो-उपवनो और पितरोकी कब्रोपर बने लकडीके ढाचोको जला दें।

बाशकिर लोग मुख्यत पशुपाल थे। वह समूरी जानवरोका शिकार, जगली मधुका सचय और मछुवाही भी किया करते थे। १७वी सदीमें अब वह कही-कही खेती करने लगे थे, और जहा-तहा लकडीके बने उनके झोपडे भी खडे होने लगे थे। ग्रीष्ममें वह अपने ढोरा और घोडोको चराने-के लिये चरागाहोंमें और शरद्के अन्तमें अपने जाडेके निवास-स्थानोमे चले जाते। पहले उनमें अपने छोटे-छोटे कबीलोका जनसत्ताक सगठन था, लेकिन अब वह पुराने समयसे चला आता सगठन टूटने लगा था। भूमिपर कबीलेका साझी अधिकार हटकर अब उसके बडे और अच्छे भागपर तरखनो (राजकुमारो) और बातुरो (बहादुरो) का अधिकार हो गया था। इस प्रकार धनी-गरीब

का वर्ग-भेद उनमें स्थापित हो चुका था। बाशकिर रूसी सरकारको कई तरहके मूल्यवान् समूरी खालोको करके रूपमे देते थे। १७वी सदीमें अब रूसी महत और जमीदार भी इनकी भूमिमे पहुँच-कर घने जगलो, मछलीभरी नदियो, नमककी खानो, हरे-भरे चरागाहो, तथा खेतीके लिये उपयुक्त बजर भूमिको अपने हाथमे करने लगे। इसके कारण पशुपाल बाशकिरोको बडी बाधा होने लगी, जिसके लिये असतोष और विद्रोह करनेका परिणाम यही हुआ, कि वहापर ऊफा जैसे कितने ही दुर्गबद्ध नगर रूसियोने स्थापित कर दिये।

वोल्गा-प्रदेशकी अ-रूसी जातियोमें कलमक (कलमख) भी थे। कलमक मगोलोकी एक शाखा थी, इसे हम आगे बतलायेंगे। वह १६३० ई०के आसपास निम्न-वोल्गाकी भूमिमें आये। पहले यह घुमन्तू जाइसन सरोवरके उत्तरकी पहाडियोमे विचरते थे, जिसे जुगारिया भी कहा जाता है। कलमकोंके कई भिन्न-भिन्न कबीले थे, जिनका अलग-अलग राजा होता था। वैसे सभी कबीले एक-दूसरेसे स्वतन्त्र थे, लेकिन जब सारी जातिके ऊपर कोई खतरा आता, तो सबसे शक्तिशाली जातिके राजाके अधीन वह अपना लडाकूसघ स्थापित कर लेते। १७वी सदीके आरम्भमे कलमकोंके एक बहुसख्यक कबीलेका डेरा इर्तिश नदीके ऊपरी भागमें था। इर्तिशके किनारे येरमककी विजयके बाद रूसियोकी बहुतसी बस्तिया बस गई थी। इर्तिशके इन कलमकोने रूसी कसबोपर आक्रमण करना शुरू कर दिया, जिसका बदला भी लिया जाने लगा। फिर दक्षिण-पश्चिमकी ओर बढते १६३० ई०के आसपास उन्होने यायिक (उराल) और वोल्गाके बीचकी भूमिको दखल कर लिया। १६५६ ई०में कलमकोने रूसकी अधीनता स्वीकार की। १७वी सदीके अन्त तथा १८वी सदीके आरम्भमे वोल्गा-कलमकोका शासक आयुका बडा शक्तिशाली खान था। यद्यपि उसने जारकी अधीनतासे इन्कार नही किया, लेकिन वह अपनेको स्वतन्त्र समझता था, और वोल्गाके किनारेके रूसी नगरोपर आक्रमण करनेसे भी बाज नही आता था। जो कलमक जुगारियामे रह गये थे, उन्होने १७वी सदीके अन्ततक एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया, जो धीरे-धीरे साम्राज्य-का रूप लेने लगा।

रूसी शासकोंके अत्याचारके कारण वोल्गाके लोग जब-तब विद्रोह कर बैठते थे, लेकिन १६६२ ई०मे इस विद्रोहने खतरनाक रूप लिया। उस साल एक ही समय बाशकिर भूमि और पश्चिमी साइबेरियाके बहुत भागोमे बगावत हो गई। येरमकद्वारा पराजित सिबिरके कूचुम खानके एक वशजने तातारो, बाशकिरो और पश्चिमी साइबेरियाके वोगुलो (मसियो)के विद्रोहका नेतृत्व किया। विद्रोहियोने रूसियोके किलेबद नगरोपर आक्रमण किया, उनके मठो और बस्तियोको नष्ट कर दिया। यह विद्रोह कई सालतक चलता रहा। विद्रोहके दमन कर देनेके बाद जारशाही सरकार ने बाशकिरोकी और कितनी ही भूमि छीन ली, बाशकिर जवानोको जबरदस्ती सेनामे भर्ती करके त्रिमियामें लडनेके लिये भेजा। इसके कारण १६७५ ई०के आसपास फिर विद्रोह उठ खडा हुआ। छिटपुट होते विद्रोहोको १६८२ ई०में सैयद सादिर जैसा नेता मिल गया। कलमकोका प्रधान आयु-का खान भी बाशकिरोकी सहायता करने लगा। लेकिन, अन्तमे बौद्ध कलमको और मुसलमान बाशकिरोकी प्रतिद्वद्विता इतनी बढी, कि कलमक जारकी ओर हो गये, और विद्रोहको कुचल दिया गया।

राजिन-विद्रोह—जार अलेक्सी (अलेक्सान्द्र)के कालमें रूसकी राजशक्ति और सीमा बहुत बढी, लेकिन देशमें सघर्षो और विद्रोहोंके भीतरसे ही। इन विद्रोहोमें स्तेपन राजिनके नेतृत्व-में हुआ किसानोका विद्रोह बडा भयकर था। भूखे गरीब कसाकोमें अशातिका होना स्वाभाविक था। इसी अशातिका नेता येरमक था, जिसने साइबेरियामे रूसकी सीमाको बढाया। कसाक स्व-भावत स्वच्छन्दताप्रेमी तथा लडाकू होते है। रूसी वोयवोद उनको नाराज होनेका बहुत मौका दे देते थे। १६६६ ई०मे कसाक आतमन (सरदार) वासिलीने दोनके गरीब कसाकोको मास्को-के विरुद्ध भडकाया और एक बडी कसाक सेना ले तुलातक पहुच गया। उसके साथ दक्षिणी जमीदारोके कितने ही अध-दास किसान भी शामिल हो गये। इसी समय दोनके गरीब किसान विद्रोहियोंको

आतमन स्तेपन तिमोफेयेफ-पुत्र राज़िन-जैसा नेता मिल गया। १६६७ ई०के वसतमें राजिन अपने सैनिकोको लिये दोनसे वोल्गाकी ओर वढा। उसके कसाकोने जार, महासघराज और धनी व्यापारियोकी अनाज तथा दूसरी पण्य वस्तुओंसे लदी वहुत-सी नावोको पकड लिया, जिनमें देश-निकाला पाये पैरोमें वेडी पडे कितने ही वदी भी थे। उन्हें मुक्त करके राज़िनने वदियों, स्त्रेलेत्सी (राज-सैनिको) और मल्लाहोसे कहा—"अव तुम सब स्वतन्त्र हो, जहा इच्छा हो वहा जाओ। मैं तुम्हारे साथ जवरदस्ती नही करूगा। जो कोई मेरे साथ रहना चाहता है, वह स्वतत्र कसाक माना जायगा। मैं केवल वायरो और धनी जमीदारोंसे लडनेके लिये आया हू, गरीवो और सीधी-सादी जनता को भाइके तौरपर मैं अपना भागीदार वनानेके लिये तैयार हू।"

इसके वाद राजिनके कसाक नावोपर चढकर अस्त्राखानके किलेसे वचते कास्पियनमें गये। फिर अपने पच्चीस नावोमें जा उन्होने यायिक (उराल) नदीके तटपर वसे यायित्स्क नामक दुर्गवद्ध नगरपर अधिकार कर लिया। राजिनने जाडोको यायिकके तटपर विताया। अगले साल वह समुद्रसे होकर ईरानके तटपर पहुचा। उसके पास कई हजार कसाक थे। उसने कास्पियन तटवर्ती काकेशसकी भूमिको लूटा, और ईरानके शाहके पास कई आदमी भेजकर कहलवाया, कि मैं और मेरे कसाक तुम्हारे देशमें सदा रहनेके लिये तैयार हैं, क्योकि हम मास्कोके वायरोंके अत्याचारको नही सह सकते। शाहने राजिनके दूतोको पकडकर मरवा दिया। इसपर कसाकोने ईरान-के नगरोमें लूट-पाट करनी शुरू की। शाहने पचास नावोमें सैनिक भरकर भेजे, लेकिन राजिनने उनमेंसे अधिकाशको डुवा दिया। सफलता होनेपर भी इन लडाइयोमे कसाकोको वहुत क्षति उठानी पडी, जिससे उनकी सख्या कम होती जा रही थी। वचे हुओमें वीमारी फैलने लगी, इसलिये राजिन वायरोंके राज्यमे वाहर ईरानमें रहनेका ख्याल छोडकर १६६९ ई०की शरद्में फिर अस्त्राखान पहुचा। उसकी अनुपस्थितिके समय अस्त्राखानकी छावनी और मोर्चावदीको वहुत मजवूत कर लिया गया था। राजिनने दोनकी ओर जानेके लिये इजाजत मागी। अस्त्राखानके वोयवोद जानते थे, कि नगरके अधिकाश लोगोकी सहानुभूति राजिनके साथ है, इसलिये उन्होंने इस शत-पर उन्हे जानेकी इजाजत दी, कि वह अपने लूटके माल और हथियार समर्पित कर दें। अस्त्राखानके गरीवोने वडे उत्साहके साथ राजिनका स्वागत किया। वह उसे वत्का (वापू) कहते थे। राजिनके कसाक पहले फटे-चीथडोमें गये थे, लेकिन अब वह गोटेदार रेशमी कपडे पहने हुये थे। राजिनने खूव दिल खोलकर सोनेकी मुहरो और दूसरी चीजोको लोगोमें वांटा। हथियार रखनेसे इनकार करके अपनी हथियारवद सेनाके साथ राज़िन दोनकी ओर चल पडा। अस्त्राखानके निवासियोंमेंसे भी कितने ही उसके साथ हो लिये।

चारो ओरसे दोन-कसाक राजिनके झडेके नीचे आने लगे। इसके वाद कई वार जार-शाही सेनासे उसने सफल मुकाविला किया। जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद)के निवासियोंने उसे शहरपर अधिकार करनेमें मदद दी। १६७० ई०के वसतमें राजिन दूसरी वार वोलाके किनारे पहुचा। पहले वह साधारण लुटेरेके तौरपर आया था, यद्यपि उसकी उदारताकी ख्याति उसी समय चारो ओर फैल गई थी, लेकिन अव वह कई हजार अनुशासन-सम्पन्न सेनाका कमाडर था। वह वोयवोदो, अमीरो और धनी व्यापारियोका दुश्मन था, लेकिन गरीवोका पक्षपाती और दासोका हर जगह मुक्तिदाता। राजिनकी दानशीलता, उदारता और गरीवोंके प्रति प्रेम ऐसी आकर्षण-की चीज थी, जिससे वह चारो तरफ मशहूर हो गया। जारित्सिन लेनेके वाद उसने अव रूसके भीतर वढ़नेका निश्चय किया, लेकिन इससे पहले उसने अस्त्राखानपर अधिकार करके निम्न-वोल्गामें अपनी सत्ता जमा लेना आवश्यक समझा। अस्त्राखानके वोयवोदने स्त्रेल्त्सीकी एक सेना राजिन के विरुद्ध भेजी, लेकिन सैनिक अपने अफसरोको मारकर विद्रोहियोंमे जा मिले। जून १६७० ई०में राजिन अस्त्राखानके पास पहुचा। पत्थरकी दीवारोंसे घेरकर नगरको वहुत मजवूत कर लिया गया था, दीवारो और मीनारोपर तोपें लगी थी, लेकिन वहुतसे स्त्रेल्त्सी तथा नगरके लोग राजिनके स्वागतके लिये अधीर थे। गोधूलीके समय घटे वजने लगे, यह इस वातका सकेत था कि कसाको

ने आक्रमण कर दिया है। कसाक अधेरेमें चुपचाप किलेके पास आ सीढिया लगाकर दीवार फाद नगरके भीतर कूद पडे। नागरिक भी उनकी मददके लिये दीवारके पास प्रतीक्षा कर रहे थे। नगर-के समपण करनेकी सूचना तोपोकी पाच आवाजसे दी गई। राजिनके कसाकोके साथ अस्त्राखानके गरीव भी शामिल हो गये और उन्होने वहाके अमीरो तथा प्रतिरोधकोको मार डाला। सवेरा होते-होते अस्त्राखानपर राजिनका पूरा अधिकार था।

राजिनकी विजय-यात्रा अव शुरू हुई। जारके स्त्रेल्त्सी और साधारण लोग राजिनकी सहायता करनेके लिये हर जगह तैयार थे। उसने सरातोफ (पुराना सरातोफ वोल्गाके वाये तटपर था), समारा (आधुनिक कुइविशेफ)को आसानीसे अपने हाथमें कर लिया, लेकिन सिम्बिस्क (आधुनिक उलियानोव्स्क)को लेनेमें वडे जवरदस्त प्रतिरोधका सामना करना पडा। उसके आदमी गाव-गावमे घूमकर राजिनके नामसे कह रहे थे—"सभी उत्पीडितो और गरीवोको विद्रोहके लिये खडा हो जाना चाहिये।" राजिन यह भी कहता था—"म महाप्रभु (जार)के लिये देशद्रोही बायरो और अमीरोसे लड रहा हू।" वह नही जानता था, कि जार उसी वगका सवसे शक्तिशाली आदमी है, जिसके विरुद्ध उसने जहाद छेडी है। प्राय एक महीनेतक राजिनने सिम्बिर्स्क नगरका मुहासिरा किया। १६७० ई०के अक्तूवरके आरम्भ-में नई सेना आ गई, और एक घनघोर लडाई हुई। तलवारोकी खपाखपमे वीर राजिन निश्शक लडता दिखाई पडता। उसके सिरपर एक गोली लग गई थी, एक पैर भी गोलीसे घायल हो गया था, तो भी वह लड रहा था। सारी वीरता दिखलानेपर भी सुशिक्षित सुशस्त्रित वहुसख्यक जार-सेनाके सामने राजिनको हार खानी पडी। वह थोडेसे कसाकोके साथ दोनकी ओर निकल भागा। राजिनके हारनेके वाद भी वोल्गाकी भिन्न-भिन्न जातियो—कलमक, तातार, मोर्द्विनी, मारी, चुवाश और वाशकिर—तथा दाहिने तटके प्रदेशोके रूसी किसानोने विद्रोहको वहुत समयतक जारी रक्खा। जारकी सेना इन विद्रोहियोंसे खूनी वदला लेने लगी। वदी किसानोको वह पकडकर अर्जमस नगरमें ले गये, जहा उन्हे वडी सासत देकर मारा गया। नगरके चारो ओर फासीकी टिकटिया खडी कर दी गई थी। एक विदेशी प्रत्यक्षदर्शीने लिखा है, कि तीन महीनेके भीतर अजमसमे ग्यारह हजार आदमियोको फासीपर चढाया गया। किसानोंके नेताओने अन्तिम समयतक वडी निभयताका परिचय दिया। जल्लादने एकसे पूछा—

"तुम क्या करना चाहते थे ?"

"हम मास्कोको लेना और तुम्हारे सभी वायरो, अमीरो और लिखनीचदोको मार डालना चाहते थे।"

एक किसान स्त्री-नेता अल्योनाको जलाकर मारनेका दड दिया गया। वह दडाज्ञा सुनकर जरा भी न घवडाई और मरते समय वोली—

"जैसे मै लडी, यदि वैसे ही दूसरे भी लडे होते, तो राजुल यरी (सेनापति)को हमारे सामनेसे जान लेकर भागना पडता।"

१६७१ ई०के आरम्भमें वोल्गाके दक्षिण-तटके विद्रोहियोको दवानेमें सफलता मिली। अव जारशाही राजिनके पीछे पडी थी। अप्रैल १६७१ ई०में उसे पकडकर मास्को ले गय, जहा राजिन को भीषण सासत दी जाने लगी, लेकिन तव भी उसने मुहसे एक बार भी आह नही निकाली। जून १६७१ ई०में उसको मारनेसे पूर्व जल्लादोने पहले हाथो और पैरोको काट दिया, फिर सिरको घडसे अलग कर दिया। जारकी सरकारने राजिनको मारकर सतोषकी सास ली, लेकिन साधारण जनताके लिये राजिन मरा नही। वह समझती थी, कि वायरोने किसी दूसरेको मारा है, राजिन तो अव भी बचकर कही छिपा हुआ है। वह फिर एक वार हम दुखियोकी मददके लिये आयेगा।

जनताका राजिनके प्रति कितना सदभाव था, वह लोकगीतोकी निम्न पक्तियोसे मालूम होगा—

उठ हे सूर्य, हे मैले-कुचैले,
तू जो कि पहाड़ोंके ऊपर इस प्रकार छाया है,
जो कि हरे उगे हुये पौधोपर छाया है,
हमारी हड्डियोको गरमाओ। हम ईमानदार जन है।
यद्यपि हम गरीब हैं, किन्तु हम किसीका जूआ नही उठायेंगे,
चोर हम नही है, और न भयकर डाकू,
स्तेपान राजिन हमारा नेता है।

रूसी भाषाका कालिदास पुश्किन स्तेपन राजिनको रूसी इतिहासका अत्यन्त काव्यमय पुरुष कहता है।

साइबेरियामें प्रसार—हम पहले कह चुके है, कि कैसे येरमकने सिबिरके खानको हराकर रूसी सीमाको ओब और इर्तिश नदीके तटतक पहुचा दिया। साइबेरियाके जगलोसे मिलनेवाली समूरी खाले सोनेके भाव बिकती थी, और साथ ही वहाके लोगोको पकडकर दास बनाकर बेंचना भी आमदनी का एक अच्छा खासा स्रोत था, इसलिये रूसी व्यापारियो और साहसियोका उधर खिचना स्वाभाविक था। समूरी खालोको पहले वह वहाके स्थानीय शिकारियोके हाथसे खरीदते थे। फिर रूसी शिकारियोंने स्वय जगलोमें दूर-दूर तक घुसकर शिकार करना शुरू किया। यह शिकारी कभी-कभी ऐसे स्थानोमें पहुचने लगे, जहापर जारके सैनिक कभी नही पहुच पाये थे। इसी तरह कुछ पीढियोमें रूसी येनिसेइसे अखोत्स्क समुद्रतक अपना अधिकार स्थापित करनेमें सफल हुये। जहा नदियोका सहारा था, वहा शिकारियो और व्यापारियोकी टोली नावोपर चढकर जाती, फिर नावोको आदमियोंके कधोपर उठाकर एक नदीसे दूसरी नदीमें परिवर्तित कर लेते। जार गदुनोफके कालमें रूसी व्यापारी और शिकारी मगोलियामें पहुच चुके थे। गदुनोफके समय वहा एक बड़ा सैनिक अभियान भेजा गया था। स्थानीय शिकारी (नेन्त्सी) इसे बर्दाश्त कैसे करते, लेकिन अपने पुराने हथियारो और बिखरी हुई अल्प-सख्याके बलपर बेचारे सफल प्रतिरोध कैसे करते? रूसी दूर-दूर जगलोमें लकडीके किले बनाकर जम जाते। इस प्रकार उन्होने निम्न-येनिसेइ-उपत्यकाके भागपर अधिकार कर लिया। उसके कुछ समय बाद उन्होने मध्य-ओब और मध्य-येनिसेइमें भी पहुच १६१९ ई०में येनीसेइस्क नगरकी स्थापना की। यहासे अब वह येवेंकी, बुयत तथा उस प्रदेशके दूसरे लोगोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करने लगे। दस वर्ष बाद येनिसेइ नदीके तटपर क्रास्नोयास्क नगर स्थापित हुआ, लेकिन यहा किरगिजोने उनसे जबरदस्त मुकाबिला किया। पर, मुकाबिलेमे हरकर रूसी अपने आगेके प्रसारको रोक नही सकते थे। येनिसेइस्क नगरसे अगारा नदीके किनारे चलते हुये रूसी बैकाल महासरोवरपर पहुच गये। १७वीं शताब्दीके मध्यमे उन्होने अगाराके बैकालसे निकलनेके स्थानके पास ही इर्कुत्स्कका शरद्कालीन निवास-स्थान बनाया। बुयत मगोल अपनी वीरताके लिये प्रसिद्ध थे। उन्होने अपनी भूमिपर हस्तक्षेप करते देखकर रूसियोंके साथ जबरदस्त सघर्ष किया, जिसमे असफल होकर कितने ही मगोलिया चले गये, लेकिन वहाके मगोल-सामन्तोके अत्याचारके कारण कितनो होने फिर लौटकर जारके जूयेको अपने कधेपर रक्खा। इसी समय येनिसेइसे लेना नदीकी ओर जानेवाला महत्त्वपूर्ण रास्ता स्थापित किया गया। रूसियोने अफवाह सुनी थी, कि लेनाके किनारे समूरी खालोकी खाने भरी पडी है, जिसे सुनकर येनिसेइस्क और मगजेया दोनो जगहोंसे रूसी साहसियोकी भीड टूट पडी। उन्होने लेना-उपत्यकाके निवासी याकूतोंके ऊपर प्रहार करके उनकी समूरी खालो, पशुओ (बारहसिगो)पर ही हाथ नही साफ किया, बल्कि स्त्री-बच्चोको भी बेचनेके लिये बदी बनाया। व्यापारियो और शिकारियोकी पहुच स्थापित होते ही येनिसेइस्कके सैनिक अधिकारियोने लेनाके तटपर याकुत्स्क नामका गढ स्थापित किया। कुछ ही समय बाद जारने याकुत्स्कके लिये वोयवोद (राज्यपाल) भेजना शुरू किया। याकुत्स्कमें जम जानेके बाद सैनिक, व्यापारी और शिकारी और भी आगेके अज्ञात इलाकोकी खोजमें लग गये, और उत्तर-पूरब ध्रुवप्रदेशीय समुद्रके तट तक याकूगिरो (ओदुलियो)के प्रदेशमें पहुच करके उनमे घर लेने लगे।

रूसी शिकारी पहाडोमें जब लेनाके उद्गमकी ओर पहुचे, तो उन्हे खबर लगी, कि शिल्का और जेयामें अन्न और चादी भरी पडी है। तुगुस लोगोने भी इस खबरकी पुष्टि की। इसपर साइबेरियाके वोयवोद गोलोविनने १६४३ ई०मे अपने एक क्लर्क वाच्तेयारोफकी अधीनतामे सात आदमियोको पता लगानेके लिये उक्त दोनो नदियोकी उपत्यकाओकी ओर भेजा। वाच्तेयारोफ इस कामके योग्य नही था, इसलिये वह खाली हाथ लौट आया। फिर उसी साल गोलोविनने पोयार्कोफके नेतृत्वमे एक बडी टोली यह कहकर भेजी, कि वहाके लोगोंसे जाकर कर उगाहो, और जो देनेसे इन्कार करे,

उठ रे सूर्य, हे मैले-कुचैले,
तू जो कि पहाड़ोंके ऊपर इस प्रकार छाया है,
जो कि हरे उगे हुये पौधोंपर छाया है,
हमारी हड्डियोंको गरमाओ। हम ईमानदार जन हैं।
यद्यपि हम गरीब हैं, किन्तु हम किसीका जूआ नहीं उठायेंगे,
चोर हम नहीं हैं, और न भयंकर डाकू,
स्तेपान राजिन हमारा नेता है।

रूसी भाषाका कालिदास पुश्किन स्तेपन राजिनको रूसी इतिहासका अत्यन्त काव्यमय पुरुष कहता है।

साइबेरियामें प्रसार—हम पहले कह चुके हैं, कि कैसे येरमकने सिबिरके खानको हराकर रूसी सीमाको ओब और इर्तिश नदीके तटतक पहुंचा दिया। साइबेरियाके जंगलोंसे मिलनेवाली समूरी खालें सोनेके भाव बिकती थीं, और साथ ही वहाके लोगोंको पकड़कर दास बनाकर बेचना भी आमदनी का एक अच्छा खासा स्रोत था, इसलिये रूसी व्यापारियों और साहसियोंका उधर खिंचना स्वाभाविक था। समूरी खालोंको पहले वह वहाके स्थानीय शिकारियोंके हाथमें खरीदते थे। फिर रूसी शिकारियोंने स्वयं जंगलोंमें दूर-दूर तक घुसकर शिकार करना शुरू किया। यह शिकारी कभी-कभी ऐसे स्थानों में पहुंचने लगे, जहांपर जारके सैनिक कभी नहीं पहुंच पाये थे। इसी तरह कुछ पीढ़ियोंमें रूसी येनिसेइसे अखोत्स्क समुद्रतक अपना अधिकार स्थापित करनेमें सफल हुये। जहां नदियोंका सहारा था, वहां शिकारियों और व्यापारियोंकी टोली नावोंपर चढ़कर जाती, फिर नावोंको आदमियोंके कंधे-पर उठाकर एक नदीसे दूसरी नदीमें परिवर्तित कर लेते। जार गदुनोफके कालमें रूसी व्यापारी और शिकारी मंगोलियामें पहुंच चुके थे। गदुनोफके समय वहां एक बड़ा सैनिक अभियान भेजा गया था। स्थानीय शिकारी (नेन्त्सी) इसे बर्दाश्त कैसे करते, लेकिन अपने पुराने हथियारों और बिखरी हुई अल्प-संख्याके बलपर बेचारे सफल प्रतिरोध कैसे करते? रूसी दूर-दूर जंगलोंमें लकड़ीके किले बनाकर जम जाते। इस प्रकार उन्होंने निम्न-येनिसेइ-उपत्यकाके भागपर अधिकार कर लिया। उसके कुछ समय बाद उन्होंने मध्य-ओब और मध्य-येनिसेइमें भी पहुंच १६१९ ई०में येनीसेइस्क नगरकी स्थापना की। यहांसे अब वह येवेंकी, बुर्यत तथा उस प्रदेशके दूसरे लोगोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करने लगे। दस वर्ष बाद येनिसेइ नदीके तटपर क्रास्नोयार्स्क नगर स्थापित हुआ, लेकिन यहां किरगिजोंने उनसे जबरदस्त मुकाबिला किया। पर, मुकाबिलेसे डरकर रूसी अपने आगेके प्रसारको रोक नहीं सकते थे। येनिसेइस्क नगरसे अंगारा नदीके किनारे चलते हुये रूसी बैकाल महासरोवरपर पहुंच गये। १७वीं शताब्दीके मध्यमें उन्होंने अंगाराके बैकालसे निकलनेके स्थानके पास ही इर्कुत्स्कका शरद्कालीन निवास-स्थान बनाया। बुर्यत मंगोल अपनी वीरताके लिये प्रसिद्ध थे। उन्होंने अपनी भूमिपर हस्तक्षेप करते देखकर रूसियोंके साथ जबरदस्त संघर्ष किया, जिसमें असफल होकर कितने ही मंगोलिया चले गये, लेकिन वहांके मंगोल-सामन्तोंके अत्याचारके कारण कितनों हीने फिर लौटकर जारके जूयेंको अपने कंधेपर रक्खा। इसी समय येनिसेइसे लेना नदीकी ओर जानेवाला महत्त्वपूर्ण रास्ता स्थापित किया गया। रूसियोंने अफवाह सुनी थी, कि लेनाके किनारे समूरी खालोंकी खान भरी पड़ी है, जिसे सुनकर येनिसेइस्क और मंगजेया दोनों जगहोंसे रूसी साहसियोंकी भीड़ टूट पड़ी। उन्होंने लेना-उपत्यकाके निवासी याकूतोंके ऊपर प्रहार करके उनकी समूरी खालों, पशुओं (बारहसिंगों)पर ही हाथ नहीं साफ किया, बल्कि स्त्री-बच्चोंको भी बेचनेके लिये बंदी बनाया। व्यापारियों और शिकारियोंकी पहुंच स्थापित होते ही येनिसेइस्कके सैनिक अधिकारियोंने लेनाके तटपर याकुत्स्क नामका गढ़ स्थापित किया। कुछ ही समय बाद जारने याकुत्स्कके लिये वोयवोद (राज्यपाल) भेजना शुरू किया। याकुत्स्कमें जम जानेके बाद सैनिक, व्यापारी और शिकारी और भी आगेके अज्ञात इलाकोंकी खोजमें लग पड़े, और उत्तर-पूर्वमें ध्रुवक-क्षीय समुद्रके तट तक याकूगिरों (ओदुलियों)के प्रदेशमें पहुंच करके उनसे कर लेने लगे।

रूसी शिकारी पहाडोमें जब लेनाके उद्गमकी ओर पहुचे, तो उन्हे खबर लगी, कि शिल्का और जेयामे अन्न और चादी भरी पडी है। तुगुस लोगोने भी इस खबरकी पुष्टि की। इसपर साइबेरियाके वोयवोद गोलोविनने १६४३ ई०में अपने एक क्लर्क वाच्तेयारोफकी अधीनतामे सात आदमियोको पता लगानेके लिये उक्त दोनो नदियोकी उपत्यकाओकी ओर भेजा। वाच्तेयारोफ इस कामके योग्य नही था, इसलिये वह खाली हाथ लौट आया। फिर उसी साल गोलोविनने पोयाकाफके नेतृत्वमें एक बडी टोली यह कहकर भेजी, कि वहाके लोगोंसे जाकर कर उगाहो, और जो देनेसे इन्कार करे,

साथ) उरगा-क्लगनके रास्ते चीन भेजे गये। असली राजकीय दूतमडल १६७५ ई०में गया, जब कि निकोलाइ स्पाथरीको जारने अपना दूत बनाकर चीन दरबारम भेजा। सम्राटने उसका अच्छी तरह स्वागत किया, सगीतके साथ दूध-मक्खनसे बनाई चायकी दावत की। चीनी दरबार के वहनसे व्यवहार अबुद्धिमत्तापूर्ण ही नही अपमानपूर्ण भी होते थे, किसी गलतीसे नाराज होकर सम्राटने जारकी भेंटको करके रूपमे स्वीकार कर स्पाथरीको हटा दिया।

आमूर-विजयसे व्यापारियोको भारी लाभ हुआ था। उसे देखकर १६४९ ई०में एक व्यापारी येरोफेइ खबारोफने अपना समय और धन एक अभियानके सगठनम लगाया। वोयवोद फास बेकोफने भी पैसे और सहानुभूतिसे उसका उत्साह बढाया। डेढ सौ स्वयसेवक तैयार किये गये, जिनके लिये हथियार, भोजन-सामग्री खबारोफने प्रस्तुत की। आमूर-निवासियोपर विजय प्राप्त करनेके लिये प्रस्थान कर पहले वह ओलेकमाके रास्ते चले, जो नया रास्ता था। आगे पहाड पार करनेम लोगोने कोई कठिनाई नही उपस्थित की, लेकिन उन्ह रूसियोकी क्रूरताका पता लग गया था, इसलिये जहा-कही भी वह पहुचते, लोग अपने गावोको छोडकर भाग जाते। पहली दो बस्तियोमें उन्हें एक भी आदमी का पूत नही मिला, तीसरी बस्तीमे पहुचनेपर तीन सवार मिले। खबारोफने बहुत समझानेकी कोशिश की, कि हम केवल शातिके साथ व्यापार करनेके लिये आये है, लेकिन जैसे ही सवार लोगको पता लगा, कि यह उन्ही सत्यानाशी बर्बरोमेंसे है, तो वह भाग चले। खबारोफके आदमी तीन दिनतक व्यर्थ ही उनका पीछा करते रहे। पाचवे जनशून्य गावमे एक बुढिया मिली। पता लगानेके लिये उसे बहुत सासत दी, लेकिन बुढियाने जो बाते बतलाई, वह पीछे झूठ निकली। अन्तमें खबारोफको खाली हाथ ही इर्कुत्स्क लौटना पडा, तो भी वह वोयवोदको यह समझा सका, कि यदि आमूर-प्रदेशको जीता जाय, तो वहासे काफी अनाज मिल सकता है।

खबारोफ इर्कुत्स्कमे उतने ही समय तक ठहरा, जितनेमे रसद और हथियार-सहित एक अच्छे दलको सगठित करके वह फिर अपने कामको शुरू कर सके। अबकी बार वह आगे बढते हुये अलबाजीन पहुचा। वहाके दौरी लोगोने एक दिन दोपहरसे शामतक लडाई की, लेकिन तोपो और बन्दूकोंके सामने तीर-धनुष क्या कर सकते थे? खबारोफने अलबाजीनको अपना केन्द्र बना जल्दी-जल्दी उसे किलाबन्द किया और पडोसके गाव गुइगुदारपर एकाएक आक्रमण करके लोगोको रूसका करद बनाया। गुइगुदारोकी अवस्था देखकर दूसरे लोगोने भी अधीनता स्वीकार करनेम ही भलाई समझी। एक एक आदमीसे कई-कई बार कर वसूल किया गया। इसकी शिकायत करनेपर खबारोफने लोगोको इकट्ठा होकर बात करनेके लिये बुलाया। तीन सौ आदमियोकी सभामें खबारोफने उनसे भारी बाते पूछी। इसके बाद कुछ समयतक रूसियोंका बर्ताव वहाके लोगोंके साथ मित्रतापूर्ण रहा। दौरी रूसियोंके डेरोमें आते, रूसियोको भी अपने घरोम निमन्त्रित करके काफी रसद-पानी देते। खबारोफको अब उनपर विश्वास हो गया था, लेकिन एक दिन सबेरे ही उठनेपर उसने देखा, कि सभी दौरी अपना गाव छोडकर भाग गये है। जाडेका मौसिम था, बहुत दूरतक दौड-धूप नही की जा सकती थी, आहार भी काफी नही था। खबारोफके दलके लिये आगे बढनेके सिवा दूसरा रास्ता नही था। अपनी नावोमे चढ आमूरके नीचेकी ओर चलते अचनी नामक मछुओंके इलाकेम पहुचकर उन्होंने डेरा डाल दिया। स्थानीय लोगोका प्रतिरोध व्यर्थ था।

चीन-दरबारमें की गई पुकारकी अब सुनवाई हुई, और एक चीनी सेना रूसियोंके विरुद्ध भेजी गई। आरम्भमें चीनियोने सफलता पाई, लेकिन सम्राट्ने अपने जेनेरलको हुक्म दिया था, कि रूसियो-को बिना मारे बदी बनाना चाहिये। इससे खबारोफके आदमियोको सुविधा मिल गई, और उन्होंने चीनियोको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। खबारोफके मुट्ठीभर आदमी कितने दिनोतक लडते रहते? अन्तमें चीनियोने अलबाजीनके किलेको सर करके उसे नष्ट कर दिया, जिसे सालभर बाद रूसियोने फिर बना लिया, और तब चीनियोकी तोपोने प्राय सालभर तक व्यर्थ ही उसे सर करनेका प्रयत्न किया।

१६५४ ई०में खबारोफकी जगह स्तेपानोफ नियुक्त किया गया। वह सुगरी नदीके नीचेकी ओर बढते हुये उसी सालके मई महीनेम एक चीनी सनिक टुकडीसे मिला। दोनो ओरसे गोला-गोली

चले। चीनियोंके जबरदस्त प्रहारसे रूसी नावोपर चढ़कर नीचेकी ओर भागे। चीनियोने नदीतटके निवासियोको गाव छोडकर देशके भीतर चले आनेके लिये कहा, जिसमे रूसी सैनिक उन्हे तकलीफ न दे सकें, और स्वय आहारसे वचित हो भूखे मरें। बीचके समयमे चीनी दूसरी लडाईकी तैयारी करते रहे। ३० जून १६५८ ई०में सुगारी नदीके मुहानेपर फिर लडाई हुई। इस युद्धमे दो सौ सत्तर आदमियोंके साथ स्तेपानोफका पता नही लगा, और करीव उतने ही कसाक पहाडोमे भाग गये। अव उनका काम चोरी-डकैती (कज़ाकी) करना रह गया। इस लडाईके वाद नेर्चिन्स्कतक आमूकी धारा शत्रुके खतरेसे मुक्त हो गई। चीनियोने निश्चित हो अपनी सेना लौटा ली। लेकिन इसी समय नेर्चिन्स्कको मदद मिली। इलिम्स्कके कसाक अपने वोयवोदको मारकर भाग गये और उन्होने पहाडके परले पार सखालिन और यालुम नदियोंके सगमपर अलबाजीनका किला वनाया, जिसे चीनी और तातार याकसा कहते थे। अलवाजीनके ये कसाक अपनी शक्ति और इलाकेको वरावर वढाते जगह-जगह गढियोको कायम करके दौरी और दुचेरी लोगोंसे कर उगाहने लगे।

१६८३ ई०में अलबाजीनके कसाकोने वीस चीनी शिकारियोको जीते-जी गाड दिया। यह खबर सुनकर चीन सरकार वहुत नाराज हुई। उसने एक चीनी सेना भेजी, जिसने १० जन १६८५ ई०मे अलबाजीनको घेरकर वहा चीनका झडा गाड दिया। चद ही दिनोंके प्रतिरोधके बाद अलवा-जीनियोने आत्म-समर्पण किया। किलेको विल्कुल तोड दिया गया। चीनी सेना वहासे अयहून गई। उनके जानेके वाद कसाकोने लौटकर जाडोमें अलवाजीनको फिरसे तैयार कर लिया। चीनी सेना फिर अयहूनसे आई, और उसने ७ जुलाई १६८६ ई०मे दूसरी वार अलवाजीनका मुहासिरा किया। इसी समय रूससे एक प्रतिनिधिमडल आया, जिसने सम्राट् खाड्-सी (शेंद्-चू १६६१-१७२३ ई०) से जारकी ओरसे निवेदन किया, कि जार युद्धसे नही शांतिके साथ मामलेका फैसला करना चाहते है। खाड्-सीने निवेदनको स्वीकार करके मुहासिरेको उठा लेनेका हुक्म दे दिया। यही समय था, जब कि एलियोत (ओयरोत) और खलखा मगोलोंके वीचमे रूसी सीमातके पास लडाई हो रही थी। चीनियोने रूसी अधिकारियोंके पास पत्र भेजकर शिकायत की, कि रूसी सीमातके लोग हमारे यकसा और चूनिपचूको लूटते-मारते, तथा चीनी शिकारियोंके साथ बुरा वर्ताव करते है। उन्होने यकसाके वोयवोद अलेक्सीपर इल्जाम लगाया, कि उसके दुर्व्यवहारोसे मजबूर होकर जेनेरलको यकसा मुहासिरा करना पडा, जिसमें यकसाको अन्तमें आत्मसमर्पण करना पडा। पत्रमे आगे लिखा गया था —

"तो भी परमभट्टारकने यह समझकर रूसियोंके साथ उनके पदके अनुसार वर्ताव करनेके लिये आज्ञा दी, कि रूसी राजुल वोयवोदके कामको नही पसद करेंगे। यही वजह है, जो यकसाके एक हजार रूसी सैनिकोको वदी बनानेके बाद उनके साथ कोई बुरा बर्ताव नही किया गया, बल्कि जिनके पास घोडे, हथियार या रसद नही थी, उन्हे यह चीजें देकर इस घोषणाके साथ लौटा दिया, गया, कि हमारे सम्राट् युद्ध पसद नही करते, वह अपने पडोसियोंके साथ शातिपूर्वक रहना चाहते है। परमभट्टारककी इस उदारतासे अलेक्सीको बहुत आश्चर्य हुआ, और उसने आखोमे आसू भरकर कृतज्ञता प्रकट की।"

कुछ समयतक वातचीत करनेके वाद सम्राट् खाड्-सीने रूसी और चीनी प्रतिनिधियोको मिल-कर वात करनेके लिये निपचू स्थान निश्चित किया। ३१ जन १६७९ ई०को चीनी प्रतिनिधिमडल मया सेना-मडल निपचू पहुचा, जिसमें अफसर, सिपाही और नौकर-चाकर लेकर नौ-दस हजार आदमी, तीन-चार हजार ऊट और कम-से-कम पद्रह हजार घोडे थे। वोयवोदने शिकायत की, कि चीनी सुलह नही लडाई करनेके लिये आये है और रूसी दूतमडलने १८ जुलाईतक यह कहते हुये आने-से इन्कार कर दिया, कि दोनो तरफके आदमी समान सख्यामे होने चाहिये। अतमें चीनियोंने निम्न वातें कहकर समझौता किया रूसी भी उतनी ही सख्यामें आ सकते है, लेकिन बैठकके समय प्रति-निधियोको तलवार छोडकर दूसरा कोई हथियार साथ नही लाना चाहिये। धोखा न किया जाय, इसके लिये रूसियोकी तलाशी चीनी, और चीनियोकी तलाशी रूसी लेवें। वडे-छोटेका ख्याल हटानेके लिये दोनो राजदूतोका तम्बू एक दूसरेसे सटा रहे, जिसमे वह अपने-अपने तम्बूमें बैठकर वातचीत कर सकें।

उनसे लडाई करो। जेयाके तटपर पहुचनेपर पोयार्कोफको अन्नके लिये निराश होना पडा। वहाके लोग अधिकतर चीनसे आये अनाजपर गुजारा करते थे। पोयार्कोफ ने अपने सत्तर आदमियोको पासमे रहनेवाले दौरी लोगोकी वस्तियोमें भेजा, लेकिन उन्होंने रूसियोको अपने गावोंके भीतर आने नही दिया। खाली हाथ लौटनेपर अपने लोगोने उन्हे रसद देनेसे इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ, कि उन्हे अब स्थानीय लोगोको लूट-मारकर जीवन-यापन करनेके लिये मजबूर होना पडा। वसतके आनेपर यह टुकडी नावपर दमेयानदीके नीचेकी ओर बढी। स्थानीय लोगोको खूनखार रूसियोका पता पहले हीसे लग गया था, इसलिये वह उनको आते सुनकर भाग निकले। तो भी तीन गिलियक पकडे गये, जिनके द्वारा रूसियोने कर उगाहनेमें सफलता पाई। आगे बढते-बढते रूसियोंने आमूर नदीके मुहानेपर पहुच जाडा बितानेके लिये वहा डेरा डाल दिया। मइल जून १६४६ ई०में याकुत्स्क लौटी। अभियान सफल रहा, क्योकि उन्होने एक नई भूमिका पत लगाया, लेकिन साथही उनकी यात्राद्वारा लोगोमें बडा भयसचार हो गया। अज्ञात कालसे पूर्व साइबेरियाकी यह जातिया चीनको कर दिया करती थी, इसलिये अब उन्होंने चीन सरकारतक अपनी गुहार पहुचाई।

१६४८ ई०में रूसी व्यापारियोंके एक समूहने कोलुमा नदीके मुहानेके पूर्व ध्रुवीय समुद्र-तटकी भूमिके बारेमे पता लगानेका निश्चय किया। उन्हें मालूम हुआ, कि समुद्री जानवर वालरस वही जाकर बच्चे देता है। वालरसका दात बहुत महगा बिकता था, इसलिये वह उस अज्ञात भूमिकी ओर खिचे। इसके लिये याकुत्स्कके व्यापारियोने कसाक सिमाओन देझन्येफके नेतृत्वमें सात नावा के साथ एक अभियान भेजा। यह लोग कोलुमाके मुहानेसे समुद्रके किनारे-किनारे आगे बढे। नावें मजबूत नही थी, इसलिये अधिकतर टूट-फूट गई, तो भी देझन्येफकी कुछ नावोको एक तूफान बहाकर अमेरिका और एसियाको मिलानेवाली समुद्रकी उस पतली धारमें ले गया, जिसका नाम पीछे बेरिंगकी खाडी पडा। उस समय युरोपमें कोई नही जानता था, कि एसिया और अमेरिकाकी सीमाओको केवल एक पतलीसी सामुद्रिक प्रणाली अलग करती है। आजकल एसियाके उत्तर-पूर्वीय अन्तिम अन्तरीपको देझन्येफ अन्तरीप कहा जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं, शाहजहाके शासनके अन्तिम वर्षोंमें ही रूसी साइबेरियाके पूर्वी छोरतक पहुच गये। जाच-पडताल करनेवालोने लेनाकी शाखा अलदल नदीसे होते अखोत्स्क समुद्रके तटपर पहुचकर वहा अखोत्स्क (शिकारवाला) गढ स्थापित किया, और बेचारे एवेंकी लोगोने बारूदी हथियारोंके सामने प्रतिरोधको व्यर्थ समझकर अधीनता स्वीकार की।

पश्चिमी सस्कृतिका प्रभाव—१७वी सदीके रूसमें अभी शिक्षाका प्रसार केवल अमीरो और व्यापारियोमें था। स्त्रिया सिर नही ढकती थी, किन्तु जबतक विवाहित नही हो जाती, तबतक पुरुषोंसे अलग रहती। वह अपरिचितकी ओर देखनेकी हिम्मत नही कर सकती थी। धनियोकी स्त्रिया अपना समय पूजा-पाठ या गोटा बनानेमें लगाती। अमीरोकी पोशाक बहुत भारी होती थी। बाहरी चोगा एडीतक पहुचता था, और लम्बी आस्तीन भी छोड देनेपर धरतीको छूनेसी लगती थी। उत्सवके समय बहुत मूल्यवान् ऊनी या रेशमी कपडे पहने जाते थे। हीरा-मोती-जटित सोने या चादीके बडे-बडे बटन चोगोमें लगते थे। सामन्त लोग समूरकी बडी लम्बी टोपी पहिनते थे, जो नीचेकी अपेक्षा ऊपर अधिक चौडी होती जाती और इतनी भारी होती थी, कि आदमी सिरको आसानीसे घुमा नही सकता था। पुरुष बालोंको काटकर रखते थे, लेकिन दाढीको बडी सावधानीसे बढाते थे। बिना दाढ़ीके आदमीको समझा जाता था, कि वह हर तरहके पाप कर सकता है। दाढ़ी मुडाना स्वय भी पाप-कर्म था। लेकिन, १७वी सदीमें ही पश्चिमी युरोपका प्रभाव धीरे-धीरे रूसके उच्च वर्गपर पडने लगा। व्यापारने पश्चिमी यूरोपके व्यापारियोंसे रूसका सबध बहुत घनिष्ठताके साथ स्थापित कर दिया था। अब कितने ही युरोपी रूसमे लोहे, काच आदिके कारखाने स्थापित करने लगे थे। मास्को और दूसरे नगरोमें बहुतसे ग्रीक, अग्रेज, जर्मन, डच और पोल व्यापारी तथा शिल्पी रहने लगे थे। उनमेंसे कुछ चद दिनोंके लिए आते और कितने ही रूसी नगरोंके वासी हो गये थे। मास्कोकी सरकार विदेशियोको—विशेषकर शिक्षिता, सनिक विशेषज्ञो, डाक्टरो, चित्रकारो तथा

दूसरे कलाकारों-शिल्पियोंको—अपने यहा आकृष्ट करनेकी कोशिश करती थी। सभी विदेशी कामके नहीं थे। उनमेंसे कितने ही मौज उड़ाने, या गुप्तचरी करनेके लिये आते थे, पर इसमें भी शक नही, कि कितने ही अपनी विद्या और अनुभवसे रूसियोंको लाभ पहुचाते थे। १६वीं सदीके अन्तमे ही मास्कोमें विदेशियोंके रहनेके मुहल्ले बन गये थे, जिन्हे पीछे "जर्मन (मह) बस्ती" कहा जाता था। १७वीं सदीके मध्यमे उन्हें योज़ा नदीके किनारे प्रेयोब्रज़ेन्स्कोये गावके पासमें परिवर्तित कर दिया गया। कितने ही रूसी इनके सम्पर्कमें आकर युरोपीय सस्कृतिसे प्रभावित होते रहे—यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि आजकी तरह उस समय भी रूसियोके लिये "यूरोपा" एक दूसरा ही महाद्वीप था। पश्चिमी युरोप सस्कृतिके साथ-साथ विलासितामें भी बहुत आगे बढा हुआ था। मास्कोके अमीर पुरुष-स्त्री भी इगलैण्ड, जर्मनी, फ्रास और दूसरे युरोपीय तथा पूर्वी देशोमें राजदूत बनकर जाते थे। रूसी व्यापारी भी कोशिश कर रहे थे, कि अपनी पण्य-वस्तुओको सीधे युरोपके नगरोमें जाकर बेचे, लेकिन विदेशी व्यापारी इसमें हर तरहकी बाधा उपस्थित करते थे।

उच्च वर्ग ही नही रूसी शिक्षित तथा बुद्धिजीवी वर्गपर भी पश्चिमी युरोपका प्रभाव पड़ने लगा था। जार अलेक्सी मिखाइल-पुत्रके समयका एक प्रभावशाली बायर ओरदिन-नाश्चोकिन् युरोपके नमूनेपर शासन-प्रबन्ध सगठित करनेका पक्षपाती था। उक्रइनके रूसमे मिल जानेसे, पोलन्द और पूर्वी युरोपके साथ सास्कृतिक सम्पर्क स्थापित होनेमें बड़ा सुभीता हुआ। शताब्दियोंके सिद्धहस्त कियेफके मूर्तिकार, चित्रकार तथा दूसरे कलाकार मास्कोमे आकर काम करने लगे। बायरोंके घरोमें उक्रइनी विद्वान् शिक्षकका काम करते थे। एक सुशिक्षित बेलोरूसी साधु सिमेओन पोलोत्स्की जार अलेक्सीके परिवारमें शिक्षक था। पोलोत्स्कीने नाटक और कवितायें लिखी। उसके पद्य बहुत प्रसिद्ध थे। वह साहित्य और काव्यशास्त्रकी भी शिक्षा देता था। बहुतसे विदेशी विद्वानोने इतिहास, युद्धविज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान तथा दूसरे विज्ञानोकी पुस्तकें १७वीं सदीमें रूसी भाषामें अनुवादित की। यह याद रखना चाहिये, कि यही हमारे यहा औरगजेबके शासन-का समय था, जिसमें जहादी लडाइया छोड़ विद्या-विज्ञानकी चीजोकी तरफ कोई ध्यान नही दिया गया था। रूसी शिक्षित अब सिर्फ धार्मिक साहित्य हीसे सतुष्ट नही थे, वह पश्चिमकी धर्मनिरपेक्ष कहानियो और उपन्यासोको अपनी भाषामें पढ़ने लगे थे। अमीरो तथा व्यापारियोंके दैनिक जीवन और वेश-भूषापर भी पश्चिमका प्रभाव पड़ने लगा था। १७वीं शताब्दीके उत्तरार्धमे शराबी साधुओं, लोभी न्यायाधीशो, और घूसखोर अमलो, तथा मूर्ख अमीरोंके ऊपर व्यग्य करते कितने ही प्रहसन लिखे गये थे। सक्षेपमें कहा जा सकता है, कि अब साहित्यमे वास्तविक जीवन—वस्तुवाद—के लानेकी कोशिश की जाने लगी थी। साहित्य हीमें नहीं, रूसी चित्रमे भी वस्तुवाद घुसने लगा था। प्रसिद्ध कलाकार सिमओन उशाकोफकी कला वास्तविकताका दर्पण-सी थी, जिसमें तत्का-लीन जीवनकी झाकी मिलती थी। उस वक्त भी आजकी तरह बहुतसे कलाकार ऊटपटाग-बेढगी टेढी-मेढ़ी रेखाओं और रगोंके पीछे इतने पागल थे, जिन्हें कलाका वास्तविकताके पास जाना फोटोग्राफी मालूम होता है। १७वीं शताब्दीमें पहले-पहल मास्कोके दरबारियोको नाट्यकलाका परिचय मिला, जब महावस्तीके एक पुरोहित गटफिड ग्रेग्रोरीने जार अलेक्सीके शासनकालमे रूसी विद्यार्थियो और जमन नटोंसे एक नाटकमडली बनाई, और ऐतिहासिक कहानियोको लेकर रगमचपर नाटक खेले। पीछे एक खास मकान बनाकर रूसी भाषामें लिखे नाटकोका भी अभिनय होने लगा। अभिनयके समय एक खास आसनपर बैठकर जार भी उसे देखता था, लेकिन जारानी अलग एक परदेमें बैठकर ही देख पाती थी। नवीनताकी तरफ अभिरुचि इतनी बढ गई थी, कि महासघराज निकोनने जल-भुनकर सभी देशी वाद्ययन्त्रोकी होली जला डालनेकी आज्ञा दी।

चीनसे सबध—जार अलेक्सीने अपना पत्र देकर पेर्फिलियेफको १६५९ ई०में चीन-सम्राट् शी-चू (१६४४-१६६१ ई०)के पास भेजा। सम्राट्ने उससे मुलाकात की। इसे कहनेकी आवश्यकता नही, कि रूसी दूतको दरबारमें कोतौ (साष्टाग प्रणिपात) करना पड़ा। रूसी दूतको दस पूद (४ मन) चाय देकर विदा किया गया। चाय शायद यह पहली बार स्थलमार्गसे मास्को पहुची। इसके बाद १६६९ ई०में अबलिनके अधीन और १६७५ ई०में परशेन्निकोफके नेतृत्वमें रूसी कारवां (वाणिज्य-

साय) उरगा-कलगनके रास्ते चीन भेजे गये । असली राजकीय दूतमडल १६७५ ई०मे गया, जब कि निकोलाइ स्पाथेरीको जारने अपना दूत बनाकर चीन दरबारमें भेजा । सम्राटने उसका अच्छी तरह स्वागत किया, सगीतके साथ दूध मक्खनसे बनाई चायकी दावत की। चीनी दरबार-के बहुतसे व्यवहार अबुद्धिमत्तापूर्ण ही नही अपमानपूर्ण भी होते थे, किसी गलतीसे नाराज होकर सम्राट्ने जारकी भेटको करके रूपमे स्वीकार कर स्पाथेरीको हटा दिया ।

आमूर-विजयसे व्यापारियोंको भारी लाभ हुआ था । उसे देखकर १६४९ ई०में एक व्यापारी येरोफेइ खबारोफने अपना समय और धन एक अभियानके सगठनमे लगाया। वोयवोद फ्रास-बेकोफने भी पैसे और सहानुभूतिसे उसका उत्साह बढाया। डेढ सौ स्वयसेवक तैयार किये गये, जिनके लिये हथियार, भोजन-सामग्री खबारोफने प्रस्तुत की। आमूर-निवासियोपर विजय प्राप्त करनेके लिये प्रस्थान कर पहले वह ओलेकमाके रास्ते चले, जो नया रास्ता था। आगे पहाड पार करनेमें लोगोने कोई कठिनाई नही उपस्थित की, लेकिन उन्हे रूसियोंकी क्रूरताका पता लग गया था, इसलिये जहा-कही भी वह पहुचते, लोग अपने गावोको छोडकर भाग जाते । पहली दो बस्तियोमें उन्हें एक भी आदमी का पूत नही मिला, तीसरी बस्तीमे पहुचनेपर तीन सवार मिले। खबारोफने बहुत समझानेकी कोशिश की, कि हम केवल शातिके साथ व्यापार करनेके लिये आये ह, लेकिन जैसे ही सवार लोगको पता लगा, कि यह उन्ही सत्यानाशी बबरोमेसे ह, तो वह भाग चले । खबारोफके आदमी तीन दिनतक व्यर्थ ही उनका पीछा करते रहे। पाचवे जनशून्य गावमें एक बुढिया मिली । पता लगानेके लिये उसे बहुत सासत दी, लेकिन बुढियाने जो बातें बतलाई, वह पीछे झूठ निकली । अन्तमे खबारोफको खाली हाथ ही इकुत्स्क लौटना पडा, तो भी वह वोयवोदको यह समझा सका, कि यदि आमूर प्रदेशको जीता जाय, तो वहासे काफी अनाज मिल सकता है।

खबारोफ इकुत्स्कमें उतने ही समय तक ठहरा, जितनेमें रसद और हथियार-सहित एक अच्छे दलको सगठित करके वह फिर अपने कामको शुरू कर सके । अबकी बार वह आगे बढते हुये अलबाजीन पहुचा । वहाके दौरी लोगोने एक दिन दोपहरसे शामतक लडाई की, लेकिन तोपो और बन्दूकोंके सामने तीर धनुष क्या कर सकते थे ? खबारोफने अलबाजीनको अपना केन्द्र बना जल्दी-जल्दी उसे किलाबन्द किया और पडोसके गाव गुइगुदारपर एकाएक आक्रमण करके लोगोको रूसका करद बनाया। गुइगुदारोकी अवस्था देखकर दूसरे लोगोने भी अधीनता स्वीकार करनेमे ही भलाई समझी । एक-एक आदमीसे कई-कई बार कर वसूल किया गया । इसकी शिकायत करनेपर खबारोफने लोगाको इकट्ठा होकर बात करनेके लिये बुलाया । तीन सौ आदमियोकी सभामें खबारोफने उनसे सारी बातें पूछी । इसके बाद कुछ समयतक रूसियोका बर्ताव वहाके लोगोके साथ मित्रतापूर्ण रहा। दौरी रूसियोंके डेरोमे आते, रूसियोंको भी अपने घरोमें निमन्त्रित करके काफी रसद-पानी देते । खबारोफको अब उनपर विश्वास हो गया था, लेकिन एक दिन सबेरे ही उठनेपर उसने देखा, कि सभी दौरी अपना गाव छोडकर भाग गये हैं । जाडेका मौसिम था, बहुत दूरतक दौड-धूप नही की जा सकती थी, आहार भी काफी नहीं था। खबारोफके दलके लिये आगे बढ़नेके सिवा दूसरा रास्ता नही था। अपनी नावोमे चढ़ आमूरके नीचेकी ओर चलते अचनी नामक मछुओंके इलाकेमें पहुचकर उन्होने डेरा डाल दिया । स्थानीय लोगोका प्रतिरोध व्यर्थ था ।

चीन-दरबारमें की गई पुकारकी अब सुनवाई हुई, और एक चीनी सेना रूसियोके विरुद्ध भेजी गई। आरम्भमे चीनियोंने सफलता पाई, लेकिन सम्राट्ने अपने जेनेरलको हुक्म दिया था, कि रूसियो को बिना मारे बदी बनाना चाहिये । इससे खबारोफके आदमियोको सुविधा मिल गई, और उन्होने चीनियोको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया । खबारोफके मुट्ठीभर आदमी कितने दिनोतक लडते रहते ? अन्तमें चीनियोने अलबाजीनके किलेको सर करके उसे नष्ट कर दिया, जिसे सालभर बाद रूसियोने फिर बना लिया, और तब चीनियोकी तोपोने प्राय सालभर तक व्यर्थ ही उसे सर करनेका प्रयत्न किया ।

१६५४ ई०म खबारोफकी जगह स्तेपानाफ नियुक्त किया गया । वह सुगरी नदीके नीचेकी ओर बढते हुये उसी सालके मई महीनेम एक चीनी सैनिक टुकडीसे मिला । दोना ओरसे गोला-गोली

चले। चीनियोंके जबरदस्त प्रहारसे रूसी नावोंपर चढकर नीचेकी ओर भागे। चीनियोंने नदीतटके निवासियोंको गाव छोडकर देशके भीतर चले आनेके लिये कहा, जिसमे रूसी सैनिक उन्हे तकलीफ न दे सकें, और स्वय आहारसे वचित हो भूखे मरें। बीचके समयमें चीनी दूसरी लडाईकी तैयारी करते रहे। ३० जून १६५८ ई०में सुगारी नदीके मुहानेपर फिर लडाई हुई। इस युद्धमे दो सौ सत्तर आदमियोंके साथ स्तेपानोफका पता नही लगा, और करीब उतने ही कसाक पहाडोमें भाग गये। अब उनका काम चोरी-डकैती (कज़ाकी) करना रह गया। इस लडाईके वाद नेर्चिन्स्कतक आमूकी धारा शत्रुके खतरेसे मुक्त हो गई। चीनियोंने निश्चित हो अपनी सेना लौटा ली। लेकिन इसी समय नेर्चिन्स्कको मदद मिली। इलिम्स्कके कसाक अपने वोयवोदको मारकर भाग गये और उन्होंने पहाडके परले पार सखालिन और यालुम नदियोंके सगमपर अलवाजीनका किला बनाया, जिसे चीनी और तातार याकसा कहते थे। अलवाजीनके ये कसाक अपनी शक्ति और इलाकेको बराबर बढाते जगह-जगह गढियोको कायम करके दौरी और दुचेरी लोगोंसे कर उगाहने लगे।

१६८३ ई०में अलवाजीनके कसाकोंने बीस चीनी शिकारियोंको जीते-जी गाड दिया। यह खबर सुनकर चीन सरकार बहुत नाराज हुई। उसने एक चीनी सेना भेजी, जिसने १२ जन १६८५ ई०में अलबाजीनको घेरकर वहा चीनका झडा गाड दिया। चद ही दिनोंके प्रतिरोधके बाद अलबा-जीनियोंने आत्म-समर्पण किया। किलेको बिल्कुल तोड दिया गया। चीनी सेना वहासे अयहून गई। उनके जानेके बाद कसाकोंने लौटकर जाडोंमे अलवाजीनको फिरसे तैयार कर लिया। चीनी सेना फिर अयहूनसे आई, और उसने ७ जुलाई १६८६ ई०मे दूसरी बार अलवाजीनका मुहासिरा किया। इसी समय रूससे एक प्रतिनिधिमडल आया, जिसने सम्राट् खाड-सी (शेङ्-चू १६६१-१७२३ ई०) से जारकी ओरसे निवेदन किया, कि जार युद्धसे नही शातिके साथ मामलेका फैसला करना चाहते है। खाङ्-सीने निवेदनको स्वीकार करके मुहासिरेको उठा लेनेका हुक्म दे दिया। यही समय था, जब कि एलियोत (ओयरोत) और खलखा मगोलोंके बीचमे रूसी सीमातके पास लडाई हो रही थी। चीनियोंने रूसी अधिकारियोंके पास पत्र भेजकर शिकायत की, कि रूसी सीमातके लोग हमारे यकसा और चूनिपचूको लूटते-मारते, तथा चीनी शिकारियोंके साथ बुरा वर्ताव करते है। उन्होंने यकसाके वोयवोद अलेक्सीपर इल्जाम लगाया, कि उसके दुर्व्यवहारोंसे मजबूर होकर जेनेरलको यकसा मुहासिरा करना पडा, जिसमें यकसाको अन्तमें आत्मसमर्पण करना पडा। पत्रमें आगे लिखा गया था —

"तो भी परमभट्टारकने यह समझकर रूसियोंके साथ उनके पदके अनुसार वर्ताव करनेके लिये आज्ञा दी, कि रूसी राजुल वोयवोदके कामको नही पसद करेंगे। यही वजह है, जो यकसाके एक हजार रूसी सैनिकोको बदी बनानेके बाद उनके साथ कोई बुरा वर्ताव नही किया गया, बल्कि जिनके पास घोडे, हथियार या रसद नही थी, उन्हें यह चीजे देकर इस घोषणाके साथ लौटा दिया, गया, कि हमारे सम्राट् युद्ध पसद नही करते, वह अपने पडोसियोंके साथ शातिपूर्वक रहना चाहते हैं। परमभट्टारककी इस उदारतासे अलेक्सीको बहुत आश्चर्य हुआ, और उसने आखोमें आसू भरकर कृतज्ञता प्रकट की।"

कुछ समयतक बातचीत करनेके बाद सम्राट् खाङ्-सीने रूसी और चीनी प्रतिनिधियोंको मिल-कर बात करनेके लिये निपचू स्थान निश्चित किया। ३१ जून १६७९ ई०को चीनी प्रतिनिधिमडल मया सेना-मडल निपचू पहुचा, जिसमें अफसर, सिपाही और नौकर-चाकर लेकर नौ-दस हजार आदमी, तीन-चार हजार ऊट और कम-से-कम पद्रह हजार घोडे थे। वोयवोदने शिकायत की, कि चीनी सुलह नही लडाई करनेके लिये आये है और रूसी दूतमडलने १८ जुलाईतक यह कहते हुये आने-से इन्कार कर दिया, कि दोनो तरफके आदमी समान सख्यामे होने चाहिये। अतमें चीनियोंने निम्न बातें कहकर समझौता किया रूसी भी उतनी ही सख्यामें आ सकते है, लेकिन बैठकके समय प्रति-निधियोंको तलवार छोडकर दूसरा कोई हथियार साथ नही लाना चाहिये। धोखा न किया जाय, इसके लिये रूसियोंकी तलाशी चीनी, और चीनियोकी तलाशी रूसी लेवे। बडे-छोटेका ख्याल हटानेके लिये दोनो राजदूतोंका तम्बू एक दूसरेसे सटा रहे, जिसमें वह अपने-अपने तम्बूमें बैठकर बातचीत कर सकें।

समझौतेके लिये एकत्रित यह सम्मेलन वस्तुत दोनो राज्योंके वैभवका प्रदशन था। रूसी तम्बू बहुत साफ-सुथरा था। उसके भीतर तुर्की कालीन बिछा हुआ था। चीनी तम्बू अपेक्षाकृत सादा था, जिसके बीचमे एक लम्बी बेच रक्खी हुई थीं। जब दोनो राजदूत अपने तम्बुओमें पहुचे, तो रगीन ध्वजा-पताकायें फहरा रही थी, नगारे बज रहे थे। रूसी दूतने पहले घोडेसे उतरकर कुछ कदम आगे बढकर चीनी राजदूतसे पहले तम्बूमें पधारनेके लिये प्राथना की। बीचमें एक मेज रखकर दोनों राजदूत आमने-सामने बेचोपर बैठ गये। अनुचर खडे रहे, और दुभाषिये मेजके छोरपर बैठे। बैठनेके बाद बातचीत शुरू हुई। दोनो ओरसे इतनी बढ-चढकर मागें पेश की गई, कि उनमेंसे कोई उन्हें मान नहीं सकता था। गरबिलोन चीनी दूतमडलका दुभाषिया था। उसके कहनेके मुताबिक "बस इतना ही बढे कि दो कदम पीछे हटे।" कई दिनोतक मोल-भाव होता रहा। ऐसा मालूम होने लगा, कि सधि वार्ता भग हो जायगी, लेकिन अन्तमें किसी तरह समझौता हुआ। ६ सितम्बरको सधिपत्रका अन्तिम मसौदा तैयार करके ऊचे स्वरसे पढा गया, और फिर मुहर और हस्ताक्षर करके दोनो पक्षोको एक एक प्रति दी गई। ९ सितम्बर १६८९ ई०को अन्तमें "दोनो पक्षोके मुख्य प्रतिनिधियोने खडे होकर सधिपत्रकी प्रतिको हाथमें ले अपने-अपने प्रभुओके नामसे, सारे ससारके प्रभु सवशक्तिमान् भगवान्की शपथ लेकर अपने मनकी ईमानदारीका प्रदशन किया।" इसके बाद दोनो ओरसे भेंटें दी गई। युरोपके किसी राज्यसे बिल्कुल समानताके तलपर की गई चीनकी यह पहली सधि थी।

साइबेरियामें विद्रोह—बहुत थोडे समयके भीतर ही रूसियोने उरालसे अखोत्स्क समुद्र तककी भूमिपर अधिकार कर लिया था। रूसी अफसर साइबेरियाके निवासियोपर भारी कर लगाने लगे, उधर रूसी व्यापारी सस्ती शराब पिलाकर मिट्टीके मोल बहुमूल्य समूरी छालोको लोगोंसे छीनने लगे। लोग विद्रोह करनेके लिये मजबूर होते, दबाये जाते, लेकिन कुछ वर्षो बाद फिर उठ खडे होते। एक बार वह याकुत्स्क नगरको नष्ट करनेमें करीब-करीब सफल हो गये थे। बुयत मगोल और एवेंकी हथियार रखनेके लिये तैयार नही थे। जार अलेक्सीके शासनकालमें पश्चिमी साइबेरियामे भी एक जबरदस्त विद्रोह हुआ था।

साइबेरियामें रूसी बस्तिया—रूसमे अखोत्स्क पहुचनेमें एसियाके सबसे चौडे उत्तरी भागको आरपार करना पडता है। यह प्रदेश इतना सद है, जिसके सामने रूसकी सर्दी लडकोका खिलवाड है, लेकिन तो भी १७वी सदीमें व्यापार और शिकार रूसियोको उधर खीच ले गये। सरकार सैनिकोंके साथ कितने ही दूसरे लोगोको भी वहा भेजने लगी। थोडे ही समय बाद सरकारने समझा, कैदियोको वहा भेजकर बसाना अच्छा है। हमें मालूम है, आस्ट्रेलियाको भी बसानेके लिये पहले अग्रेज कैदी ही भेजे गये थे—वह अग्रेज कैदियोंके लिये कालापानी बना था। बायरो और अमीराके लिये विद्रोही गरीबोंसे पिंड छुडानेका यह अच्छा मौका था। दूसरी तरफ अपने प्रभुओंके अत्याचारोंसे पीडित कितने ही किसानोने भी मुक्त हवामें सास लेनेके ख्यालसे साइबेरियामे प्रवास करना शुरू किया। पहले वह उरालतक पहुचे, फिर आगे बढने लगे। साइबेरियामें जगह-जगह किलाबदी करके बहुतसे सैनिकोको रखना पडता था। उनके लिये अन्न भी एक समस्या थी, क्योकि साइबेरियाके अधिकाश कबीले अभी शिकारी अवस्थामें थे, खेतीको एक तरह वहा नये तौरपर शुरू करना था। जो किसान साइबेरिया जाते, उन्हें मुफ्त भूमि मिलती, और बीज-रुपया उधार दिया जाता। इसके बदलेमें वह "प्रभुके लिये" एक निश्चित मात्रामें खेती करके अनाज सरकारको दे देते। रूसके किसानो और साइबेरियाके किसानोमे यही अन्तर था, कि यहा वह किसी जमींदारके लिये नहीं, बल्कि जारके लिये काम करते थे। किसानोंके अतिरिक्त बहुतसे रूसी व्यापारी भी आकर साइबेरियामें बस गये, जिनमेंसे कितनोंने अपनी खेती-बारी कायम कर ली और कुछ सैनिक सेवामें भी दाखिल हो गये। इस तरह १७वी सदीके अन्ततक अर्थात् औरगजेबके अन्तिम वर्षोतक साइबेरियामें जगह जगह रूसी बस्तिया और गाव बस गये थे। रूसियोने साइबेरियामें उत्पादनको बढाकर औरोंको भी बहुत प्रोत्साहन दिया। धीरे-धीरे खेतीका प्रसार बढ़ा और १७वीं सदीके अन्ततक पश्चिमी साइबेरियाके दक्षिणी जिले कृषिप्रधान हो गये। रूसी प्रवासियोने एसियाके उत्तरी भागकी जाच पडतालमें बहुत काम किया। उन्होने वहा लोहेकी घुना, और नमककी खानाका पता लगाकर काम शुरू,

किया। रूसी यात्रियोंने अपने यात्रा-विवरण तथा साइबेरियाके नक्शे प्रकाशित किये। रूसी सरकारके लिये साइबेरिया अर्थागमका एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्रोत था। वहांकी बहुमूल्य समूरी छालोंकी पश्चिमी युरोप, चीन और ईरानमें बड़ी मांग थी। इस आमदनीसे सरकार अपने सैनिक खर्च और नौकरोंके वेतनोंको देनेमें समर्थ थी।

३ फ्योदोर, अलेक्सी-पुत्र (१६७६–८२ ई०)

जार अलेक्सीके मरनेके बाद उसका पुत्र फ्योदोर गद्दीपर बैठा। इसने दो बार ब्याह किया, जिसमें पहली स्त्री मीलोस्लाव्स्की-कुलकी कन्यासे उसकी सोफिया आदि कई लड़कियां तथा दो पुत्र फ्योदोर और इवान हुये। मरनेसे थोड़ा समय पहले जार अलेक्सीने नारुश्किन कुलकी कन्या नतालिया किरिलोव्नासे ब्याह किया। नतालिया जारके एक कृपापात्र बायर अर्तमान मत्वयेफ परिवारमें पाली-पोसी गई थी, जहां उसे पश्चिमी संस्कृतिके घनिष्ठ संबंधमें आनेका मौका मिला था। मत्वयेफका घर युरोपीय ढंगसे सजा रहता था। उसके पास युरोपीय अभिनेताओंकी एक मंडली थी। १६७२ ई० में नतालियाको एक पुत्र पैदा हुआ, यही पीछे महान् जार पीतर I हुआ। अलेक्सीके मरनेके बाद फ्योदोर जब गद्दीपर बैठा, तो उसकी उम्र चौदह वर्षकी थी। वह मस्तिष्क और शरीरका बड़ा ही दुर्बल बालक था। जारके अन्तिम समयमें नतालियाके संबंधके कारण नारुश्किनोंका प्रभाव बढ़ गया था, लेकिन फ्योदोरके मातृ-कुलके होनेसे मीलोस्लाव्स्कियोंने अधिकार अपने हाथमें संभाल लिया। पश्चिमी युरोप और बाहरी देशोंके प्रथम प्रभावके परिणामस्वरूप १६८७ ई०में मास्कोमें प्रथम स्थायी शिक्षण-संस्था "स्लावानिक-ग्रीक-लातिन-अकदमी"के नामसे स्थापित हुई।

नारुश्किन इसे बर्दाश्त करनेके लिये तैयार नहीं थे, कि मीलोस्लाव्स्की दरबारमें सर्वेसर्वा हो जायें। आखिर उनका भी नाती जार-पुत्र पीतर था। जार फ्योदोर १६८२ ई० में निस्संतान मर गया, उसके उत्तराधिकारी उसके दो भाई—सहोदर इवान तथा सौतेला पीतर थे। इवान यद्यपि उमरमें बड़ा, लेकिन दिमागसे बहुत कमजोर था। फ्योदोरके शासनकालमें मीलोस्लाव्स्कियोंने जो मनमानी की थी, उसके कारण वह अप्रिय-से हो गये थे, इसलिये जारके जीवित्त कालमें ही उन्होंने नारुश्किनोंके साथ मैत्री स्थापित की। जैसे ही जार फ्योदोर मरा, महासंघराज और बायरोंने छोटे जारकुमार पीतरको जार घोषित कर दिया। महलके सामने जमा हुई भीड़ने बड़ी हुर्ष-ध्वनिसे इसका स्वागत किया, लेकिन मीलोस्लाव्स्की कुल इसे माननेके लिये तैयार नहीं हुआ। उन्होंने स्त्रेल्त्सी (सैनिकों)को भड़काया, जिनको कि काफी समयसे वेतन नहीं मिला था। ५ मई १६८२ ई० को स्त्रेल्त्सी बहुतसी तोपें अपने अधिकारमें कर झंडा लिये नगाड़ा बजाते क्रेमलिनके भीतर घुस गये। लोगोंने हल्ला उड़ाया, कि नारुश्किनोंने इवानको मार डाला, इसपर पीतरकी मां नतालियाने दोनों भाइयों—इवान और पीतरको लाकर खिड़कीपर खड़ा किया। लेकिन स्त्रेल्त्सियोंका क्रोध शांत नहीं हुआ। वह महलके भीतर घुस गये, और सबसे पहले जिस आदमीको उन्होंने खतम किया, वह था नारुश्किनोंका मुखिया राजुल दोल्गोरुकी। शामतक बायरोंको पकड़-पकड़कर वह मारते रहे। वह बायरोंको घसीटते हुये सैनिक मजाक उड़ाते थे—"यह बायर लरमोदानोव्स्की है, दूमाके सदस्यके लिये रास्ता दीजिये।" मारे गये आदमियोंमें बायर अर्तमान मत्वयेफ और जारानीके दो बड़े भाई भी थे। अन्तमें जारानीने स्त्रेल्त्सियोंके पैंतीस वर्षके बाकी वेतनको देनेका वचन दिया और उनके आग्रहपर इवान और पीतर दोनोंको संयुक्त जार घोषित किया गया—इवानको प्रथम जार माना गया। उनकी नाबालिगीके समय राजभगिनी सोफिया संरक्षिका घोषित की गई।

सोफियाका शासन—सोफियाका सबसे घनिष्ठ मित्र "प्रथम मंत्री" राजुल वासिली गोलित्सिन उस कालके सबसे सुशिक्षित बायरोंमें से था। वह चाहता था, कि देशमें नये सुधार किये जाय। लेकिन, अभी रूसको पोलंदसे निबटना था। इसी समय तुर्कोंके साथ पोलंदका वैमनस्य बढ़ा, जिससे उसे रूसके साथ समझौता करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। तुर्कोंके विरुद्ध पोलंद और वेनिस (इताली) को मदद देनेके लिये आस्ट्रियाने संधि की थी। तुर्कोंके साथ युद्ध छिड़ा हुआ था। मित्र-शक्तियोंने वीनामें तुर्कोंकी सेनाको हराया, और सुल्तानको आस्त्रियन राजधानीका मुहा-

सिरा उठाना पडा। अभी भी तुर्कीको पूरी तरह दवाया नही जा सका था, इसलिये मित्र शक्तियाको रूसकी सहायताकी अवश्यकता पड़ी। इस प्रकार १६८६ ई० मे पोल राजाने मास्को अपना दूतमडल भेजा, और कुछ समयकी वातचीतके वाद दोनो देशोमें "सनातन" सधि हो गई। पोलदने कियेफ और उसके पासके थोडेसे इलाकेको रूसको देना स्वीकार किया और रूसने तुर्की सुल्तानके सामन्त क्रिमियाके खानसे तुरत लडाई छेडनेका वचन दिया। १६८७ ई० में राजुल वासिली गोलित्सिनके अधीन पहली रूसी सेनाने क्रिमियापर आक्रमण किया, लेकिन उसे पूर्णतया असफल होकर लौटना पडा। फिर १६८९ ई० के वसतम और भी वडी सेनाके साथ गोलित्सिन तातारोंके किले पेरकोफ पर पहुचा, जिसे तातारोंने क्रिमियाके स्थलडमरूमध्यके सवसे सकरे स्थानपर वनाया था। गोलित्सिन इस किलेको नही ले सका, और फिर उसे लौटना पडा। इतना धन और प्राण गवाकर असफल होनेका परिणाम सोफियाकी सरकारके लिये अच्छा नहीं हुआ। लोगोने खुलकर असतोष प्रकट करना शुरू किया।

४ इवान VI, अलेक्सी-पुत्र (१६८२-९६ ई०)

यद्यपि इवान और पीतर दोनो सयुक्त जार घोषित हुये थे, लेकिन सरक्षिका सोफिया इवानकी सहोदरा थी, इसलिये एक तरहसे शक्ति उसके हाथमें होनेसे पीतर उपक्षितसा था। अपनी माके साथ उपनगरमें पीतरका समय अधिकतर प्रेयोब्रजेन्स्कोयके महलमें वीतता था। वहा जगलोमे वह अपने लगोटिया यारोके साथ सिपाहियोका खेल खेला करता। वह मिट्टीके छोटे-छोटे किले वनाते, फिर उसपर आक्रमण करनेका दाव-पेंच लगाते। कुछ सालों वाद पीतरने अपने साथियोकी दो नकली पलटनें वनाइ, जिनमेंसे एकका नाम उसने प्रयोब्रजेन्स्की रक्खा और दूसरेका नाम सेमओनोव्स्की—ये दोनों गाव पास-पासमे थे। एक वार अपने दादाकी चीजोम पीतरको एक पालवाली विदेशी नाव मिली। पीतरने अव उसे लेकर नौचालनका खेल शुरू कर दिया। मास्कोके एक विदेशी निवासी व्राटने उसे नौ-सञ्चालन-की शिक्षा दी। व्राट पहले नौसेनामें रह चुका था। मास्कोके पास वहनेवाली नदी यउजा (यौजा) छोटी थी, इसलिये पीतर अपनी नावको लेकर इज्माइलोवाके तालावमें पहुचा। लेकिन वह भी नावके मोडने-माडनेके लिये पर्याप्त नही था, इसलिये पीतर अव माकी आज्ञा लेकर पेरेया-स्लाव्लके बड़े सरोवरमे गया। उसकी वहिन सोफिया पीतरके इन सैनिक खेलोमे लगे रहनको पहले पसद करती थी, क्योकि इस प्रकार वह दरवारके षड्यत्रोकी ओर ध्यान नही दे सकता था, लेकिन आयुके वढनेके साथ-साथ पीतरके नकली सैनिक असली होते जा रहे थे। पीतर सत्रह वर्षका हो गया था। उसके लडकपनके खेलकी दोनो पलटन अव युरोपीय ढगपर शिक्षित मास्कोकी पलटन वन गई थी। सोफियाको जव खतरेका पता लगा, तो उसने रास्तेके इस काटेको अलग करना चाहा। उसने अपनेको कागज-पत्रोमें "परमशासक" लिखना शुरू किया। वह स्त्रेल्त्सियोको अपनी ओर मिलानके लिये उनको भोज-भाज देने लगी। पीतर और सोफियाके सवध विगडते गये। अन्तमें अगस्त १६८९ ई० की एक रातको पीतरको खवर लगी, कि सोफिया आक्रमण करनेके लिये स्त्रेल्त्सियोको तैयार कर रही है। पीतर तुरन्त घोड़ेपर सवार हो त्रोयत्स्क-सेर्गियेफके दुर्गवद्ध मठम पहुचा। यहींपर उसकी "नकली" पलटन जमा हो गई और एक स्त्रेल्सी पलटनके साथ कितने ही अमीर और कुछ वायर भी आ मिले। स्त्रेल्त्सियोंके भडकानका सोफियाका सारा प्रयत्न विफल हुआ। पीतरके समर्थकोकी सख्या दिनपर दिन वढती गई, और महीने वाद शक्ति पीतरके हाथमें आ गई। सोफियाको मठमें साधुनी वनके रहनेके लिये मजबूर होना पडा, और उसके सहायक राजुल वासिली गोलित्सिनको उत्तरमें निर्वासित कर दिया गया।

५ पीतर I, अलेक्सी-पुत्र (१६९६–१७२५ ई०)

औरगजेवके शासनके अन्तके साथ हम भारतके इतिहासको आधुनिक इतिहासके रूपमें बदलते नहीं देखते, लेकिन पीतरके शासनके साथ रूस आधुनिक जगत्में प्रवेश करता है। जसा कि पहले कहा गया, १६८२ ई० में अपने भाई इवानके साथ पीतर भी सयुक्त जार घोषित हुआ। अभी राजगद्दी

को हाथमें लेनेमें वह १६८९ ई० में सफल हो गया था, तो भी अभी उसका भाई इवान १६९६ ई० तक जारके तौरपर मौजूद रहा। पीतरकी मा ऐसे परिवारकी कन्या थी, जिसम पश्चिमी युरोपके फशन बहुत कुछ स्वीकृत किये जा चुके थे। मास्कोमे कितने ही पश्चिमी युरोपके व्यापारी, विद्वान् और शिल्पी रहते थे, जिनके मुहल्लोंमें भी पीतर जाया करता था। पश्चिमी युरोपमे उस समय ज्ञान-विज्ञानकी रोशनी फैलने लगी थी, आधुनिक युद्धकला तथा सामरिक यत्रोका विकास हो रहा था। पीतर जैसे प्रतिभाशाली तरुणको साफ मालूम होने लगा, कि रूसको महान् बनानेके लिय हमे पश्चिमी युरोपसे बहुतसी बाते सीखनी होगी। उनके सीखनेके लिये सिर्फ बादशाही हुक्मसे काम लेना बेकार समझ, वह स्वय आस्तीन समेटकर सीखनेके लिये दिलोजानसे कद पडा। पीतरके शासनके प्रथम अठारह वर्ष औरगजेबके अन्तिम वष थे। यह भी उल्लेखनीय बात है, कि पीतरका दूत भारत आकर औरगजेबसे सूरतमे मिला था। पीतर रूसको जहा एक सुसगठित शक्तिशाली राष्ट्रके रूप में बडे तेजीसे परिणत कर रहा था, वहा हिन्दुस्तानी औरगजेबका काम उससे बिल्कुल उलटा था। पीतर ज्ञान-विज्ञान और सहिष्णुता द्वारा रूसका एकीकरण कर रहा था, और औरगजेब धर्मान्धता द्वारा मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करनेके प्रयत्नमें राष्ट्रको छिन्न-भिन्न कर रहा था। औरगजेबकी अदूरदर्शिताका फल भारतने १७०७ से १९४७ ई० तक भोगा। यही समय है, जब कि पीतरकी जमाई नीवपर रूस दुनियाका अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। यह आश्चय करनेकी बात नही है, यदि बोल्शेविक पीतरकी प्रशसा करते नही थकते। वस्तुत वह रूसके सवश्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माताओमे मे था।

बहिन सोफियाके शासनके खत्म होनेके बाद पीतरकी मा नतालिया अभिभाविका बनी। पीतरने माके काममें दखल देना पसद नही किया। वह अपने सैनिक खेलको और गम्भीरताके साथ खेलता रहा। अपने सहायकोकी मददसे एक युद्धपोत बनाकर उसने पेरेयास्लाव्ल सरोवरमे उतारा। थोडे ही दिनो बाद वह उसे लेकर ध्रुवकक्षीय अर्खगल्स्कम गया, जहापर पश्चिमी युरोपके बडे-बडे जहाज आया करते थे। यहा पहलेपहल उसने उन जहाजोको देखा, जो कि महासमुद्रोको चीरते दुनियाके दूर-दूरके देशोम जाया करते थे। उसका जिज्ञासु हृदय उन्हे देखकर न जाने किन-किन कल्पनाओमे लीन हो गया। वहीपर एक पुराने स्काट जेनरल पेट्रिक गोडनसे उसने परिचय प्राप्त किया। गोडनने उसे अपन सामुद्रिक युद्धोकी बातें सुनाई। डच टिमरमानसे वह यही गणित और तोप चलानेका ज्ञान प्राप्त करने लगा। प्रतिभाशाली होनेके कारण थोडे ही दिनोमें वह अपने शिक्षककी भी गलतिया निकालने लगा। पीतरकी यह प्रथम तयारी थी। वह त्रिमियासे गोलित्सिनकी असफलताओका बदला लेना चाहता था। रूसने आस्ट्रिया और पोलदके साथ हो तुर्कोसे लडनेके लिये सधि की थी, किन्तु उसने अभी उसमें पूरा मनोयोग नही दिया था। अजोफके किलेके बारेमें क्रिमियाके खानसे बातचीत चली, लेकिन उसने उसे देनेसे साफ इन्कार कर दिया। अजोफ किलेमे इस समय तुर्कोकी सेना रहती थी। उसपर बिना अधिकार किये रूसी दोन द्वारा कालासागरमें नही पहुच सकते थे। पीतरने अब अपने खेलोको छोडकर वास्तविक युद्धमे उतरनेका निश्चय किया। १६९५ ई० के वसतमे तीस हजार सेना लेकर नावो द्वारा वह ओका नदीसे वोल्गा होकर जहा वोल्गा और दोन एक दूसरेके बहुत नजदीक होती है, (जहा पर १९५२ ई० में वोल्गो-दोन नहर जारी की गई है) वहा नावोको कधोंपर उठाकर दोन नदीमे पहुचाया गया। इसी समय पीतरने अपने एक पत्रमें लिखा था—"कोजुकोफमें हमें बडा आनन्द आया था (यही मास्कोके उपनगरमें पीतरने सैनिक प्रदशन किये थे), और अब हम खेलके लिये अजोफ जा रहे है।" अभी पीतरके पास युद्धपोत नही थे, इसलिये वह समुद्रकी ओरसे किलेको नही घेर सकता था। तुर्की सेनाको कुमक मिलनेमें कोई दिक्कत नही थी। उन्होने शरद् आरम्भ होते-होते रूसियोपर इतने जोरका प्रहार किया, कि उन्हे अजोफका मुहासिरा उठा लेना पडा।

इस हारने पीतरके लिये बडी शिक्षाका काम दिया। उसने अनुभव किया, कि बिना नौसेना के काम नही चल सकता, इसलिये सारे जाडोमें वह सैनिक पोतोंके निर्माण करनेमें दिलोजानसे पिल पडा। वोरोनज नदीके किनारे दोनके सगमसे नातिदूर वज, देवदारके जगलोंके नजदीक रहनेसे वही पोतोका निर्माण किया जाने लगा। इस कामम पीतर स्वय अपने हाथसे आरे खीचने और बसूला चलानेमें

भी पीछे नही रहता था। जारकी इतनी तत्परता देखकर दूसरोंम क्यो न उत्साह होता? जाडा खतम हो १६९६ ई० का वसत आया। इसी समय अजोफके पास रूसियोका एक बहुत बडा जहाजी बेडा देखकर तुर्कोंको बहुत आश्चर्य और उससे भी अधिक परेशानी हुई। यह कहने की अवश्यकता नही, कि अभी वाष्प-इजनोका युग नही था। तुर्की सैनिक बेडेमें लडनेकी हिम्मत नही थी। पीतरने जल और स्थल दोनो मार्गोसे अजोफके किलेको घेर लिया। कान्स्तान्तिनोपोलसे कोई मदद नही मिली, इसलिये ग्रीष्म के अन्ततक तुर्कोंने आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन पीतर जानता था, कि अजोफ ले लेनेसे ही काम नही चलेगा। कालासागरके तटपर तुर्कोंके और भी कितने ही सैनिक अड्डे थे। अभी तक अधकचरा ज्ञान रखनेवाले युरोपीय लोगोंसे पीतरने पश्चिमी युरोपकी बातें सीखी थी, इसलिये वह स्वय वहा जाकर सीखनेके लिये तैयार हो गया।

मा राजकाज सभाले हुई थी, इसलिये देशमें पीतरकी उतनी अवश्यकता नही थी। मुस्लिम तुर्कोंके विरुद्ध पश्चिमी युरोपके राज्योंसे घनिष्ठ सबध स्थापित करनेके उद्देश्यसे मास्कोने एक महादूत मडल भेजा, जिसमे भेस बदलकर पीतर स्वय शामिल हो गया। वह वहासे अपने साथ विशेषज्ञों, इजीनियरो, तोपचियो आदिको लाना चाहता था। १६९७ ई० में दूतमडल मास्कोसे चला था, जिसके साथ पीतर मिखाइलोफके नामसे एक साधारण जहाजी भी था। उसकी मशा युरोपकी सभी बातोंको गभीरतासे सीखनेकी थी। पीतरने पीछे अपनी मुहरमें खुदवा रक्खा था—"मै गुरुओकी खोजमे रहने वाला विद्यार्थी हू।" औरगजेब और पीतरके अन्तरको यहा हम साफ देख सकते है। दूतमडलके पहले ही पीतरने कोइनिग्सबर्ग नगरमें पहुच तोप चलानेकी कला सीखी। वहासे फिर वह हालैण्डके सारडम नगरमें पहुचा, जो कि अपने पोत-निर्माणके कामके लिये बहुत प्रसिद्ध था। पीतर एक साधारण लोहारके घरमें बसकर मामूली बढईकी तरह जहाजी कारखानेमें काम करने लगा, लेकिन वह अधिक दिनोतक अपनेको छिपा नही सका। बहुतसे डच-व्यापारी रूस गये हुये थे, उनकी आखें साढे छ फुटके तगडे जवानको देखकर कैसे चूक सकती थी? लोगोंसे बचनेके लिये पीतर वहासे आम्स्टडम चला गया, और वहा एक सबसे बडे जहाजी कारखानेमें काम करने लगा। यह एक-दो दिनके दिखावेका काम नहीं था। पीतर चार महीनेतक आम्स्टडममें काम करता रहा, तबतक जबतक कि जिस जहाज के निर्माणमें वह स्वय भी काम कर रहा था, वह पानी में नही उतार दिया गया। जहाजमें काम करनेके समयके बाद वह दूसरे कारखानो, मिस्त्रीखानो और म्युजियमोमें जाता, डच वैज्ञानिको और कलाकारो के साथ बातचीत करता। हालैण्डसे पीतर इगलैण्ड गया। वहा उसने वहाकी शासन-व्यवस्थाका अध्ययन किया। वह एक बार पार्ल्यामेंटके अधिवेशन को भी देखने गया। दो महीनेतक टेम्सतटपर डेप्टफडके कारखानेमे पोत-निर्माणकी कलाको व्यवहारिक तौरसे सीखता रहा।

समकालीन भारतमें क्या हम किसी ऐसे मुगल युवराज या शाहजादेको देख सकते थे? पीतर अपने और अपने देशके बारेमें 'होनहार बिरवानके होत चीकने पात' की कहावतको सिद्ध कर रहा था।

इगलैण्डसे पीतर आस्ट्रियाके सम्राट्के साथ सैनिक सधिके बारेम बातचीत करनेके लिये आस्ट्रिया गया। इस सारे पर्यटनमे महादूतमडलको मालूम हो गया, कि तुर्कोंके विरुद्ध कोई बहुत बडा समझौता नही हो सकता। युरोपमे स्पेनके उत्तराधिकारको लेकर अलग ही विरोध शुरू हो गया था, जो कि अन्तमें तेरह साल (१७०१—१७१४ ई०) के युद्धके रूपमें परिणत हो गया। आस्ट्रियाके राजवशका सारा ध्यान स्पेनकी ओर था। वह तुर्कोंके विरुद्ध रूसके साथ समझौता कैसे करता? उलटे उसने तुरत तुर्कोंके साथ सधि कर ली, जिसमें कि स्पेनकी ओर पूरा ध्यान दे सके। अपनी यात्रामें जहा पीतरने पश्चिमी देशोकी नई-नई प्रगतिको देखा और उनसे कितनी ही बात सीखी वहा उसके दिलमें यह देखकर सुई चुभ रही थी, कि स्वीडनने अब भी बाल्तिक-तटसे रूसको वचित कर रक्खा है। समुद्रका रास्ता रूसके लिये कहींसे नही था। पीतरकी दूरदर्शी आखे देख रही थी, कि कोई भी राष्ट्र बिना समुद्रके सहारे—बिना समुद्रपर विजय किये—अपनेको सुरक्षित और शक्तिशाली नहीं बना सकता। युरोपीय शक्तियोको तुर्कोंके विरुद्ध कुछ करनेके लिये नही तैयार देख, पीतरने पहले स्वीडनसे बाल्तिक-तटको छीननेका निश्चय किया। तुर्कोंकी अपेक्षा स्वीडन ही उस वक्त अधिक निकट शत्रु भी था। उसने झट तुर्को और क्रिमियाके खानसे सधि कर ली।

शायद पीतर अभी और कुछ समयतक विद्यार्थी बनकर पश्चिमी युरोपमे घूमता, लेकिन इसी समय स्त्रेल्त्सियो (गारद सैनिको) के विद्रोहकी खबर मिली। स्त्रेल्त्सी मास्कोमे गारदका ही काम नही करते थे, बल्कि वह अपना अधिक समय छोटे-छोटे व्यापारो और दस्तकारीके कामोमे भी लगाते थे। पीतरने राजधानीमे लौटकर उनसे माग की, कि तुम्हे अपना सारा समय सैनिक सेवामे देना होगा। इस विद्रोहसे फायदा उठानेके लिये राज्य-वचिता साधुनी सोफिया चुपके-चुपके स्त्रेल्त्सियोमे मिलकर षड्यत्र करने लगी। १६९८ ई०के ग्रीष्ममे तोरोपेत नगरकी छावनीमे रहनेवाले स्त्रेल्त्सियो की चार पल्टनें बलवा कर मास्कोकी ओर चल पडी, लेकिन पीतरके जेनरल गोर्डनने राजधानीके पास उन्हे आसानीसे हरा दिया। यह खबर पीतरको वीनामें मिली। सुनते ही वह बहुत जल्दी मास्कोके लिये चल पडा। रास्तेमें वह पोलदके राजा अगस्तससे मिला। दोनोने मिलकर स्वीडनके विरुद्ध लडनेका निश्चय किया। कही लोग राजधानीमें उसके स्वागतके लिये बडी तैयारी न कर दे, इसलिये वह एक दिन यकायक पहुचकर महलमें भी न जा प्रेयोब्रजेंस्कोय गावके अपने साधारणसे बगलेमे चला गया। खबर पाते ही दूसरे दिन सबेरे, बडे-बडे बायर, अमीर, व्यापारी और नागरिक स्वागत करने पहुचे। पीतरने उनके साथ बडे प्रेमसे मुलाकात की, लेकिन पुराने दस्तूरके मुताबिक उसने किसीको भी धरती पर मत्था टेककर प्रणाम करने नही दिया। इसी स्वागतके समय पीतरने कितने ही बायरोकी लम्बी दाढियोको कैंची ले अपने हाथसे कतर दिया। पीछे उसने राजादेश निकालकर लम्बी दाढ़ी और ढीलमढाल रूसी चोगा पहननेका निषेध कर दिया। स्त्रेल्त्सी-विद्रोहके बारेमें खोज करनेपर पता लगा, कि इसके पीछे सोफियाका हाथ है। जगह-जगहपर फासीकी टिकटिया खडी करके उसने स्त्रेल्त्सियोके १९५ सरगनोको नवोदेविची भिक्षुणी मठके जगलोके सामने फासीपर लटकवा दिया—सोफिया इसी मठमें रहती थी। सब मिलाकर बारह सौ स्त्रेल्त्सियोको प्राणदड दिया गया। पीतरने मास्कोस्थित उनकी पल्टनको तोड दिया, सोफियाको षड्यन्त्र करनेके लिये इतना ही दड दिया गया कि अब वह साधुनियोके घूघटको पहिनकर एकान्तवास करनेके लिये मजबूर की गई।

अब पीतरको तन्मयताके साथ स्वीडनसे निबटनेकी तैयारी करनी थी। किसानो, अर्धदासो तथा मुक्त आदमियोको भर्ती करके उसने एक नई सेना सगठित की। सैनिकोकी वर्दी उसने पश्चिमी युरोपकी नकलपर बनवाई और सबेरेसे रात होनेतक मास्कोके उपनगरमें यह नये रगरूट कवायद-परेडमें लगे रहते। तीन महीनेके भीतर बत्तीस हजार सेनाको शिक्षा दी गई—इसी बीच कास्तन्तिनोपोलमें दूत भेजकर पीतरने अगस्त १७०० ई० में तुर्कीके साथ सधि की थी। इस सधिके अनुसार तुर्कीने अजोफपर रूसका अधिकार कबूल कर लिया। इसके बाद तुरत पीतरने अपनी सेनाको स्वीडन-अधिकृत नारवाके किलेपर प्रहार करनेका हुक्म दे दिया। बाल्तिक समुद्रमें पहुचने के लिये नारवाका लेना आवश्यक था। पीतरका मुकाबिला एक नई सेनासे था। उसे रसद और हथियारोंके प्रबधमें कितने ही दोषोका पता लगा। सिपाहियोको पेटभर खाना नही मिलता था, खाइयोमें सर्दीसे तकलीफ, इसलिये बीमारी फैली। खबर पाते ही स्वीडनके राजा चाल्सने सहायताके लिये प्रयाण किया। अन्तमें रूसियोकी हार हुई, उनके बहुत-से सैनिक तथा सारा तोपखाना स्वीडनके हाथमें पड गया। लेकिन, पीतरके लिये हरएक असफलता नई तैयारीका अवसर देती थी। उसने सारी शक्ति लगाकर बडी तेजीसे सेनाको फिरसे सगठित करना शुरू किया। तोपोंके ढालनेके लिये उसने गिर्जोके बहुतसे विशाल घटोको गला डाला और एक सालके भीतरही तीन सौ तोपें तथा नारवामे गवाई सेनासे भी दुगनी सेना तैयार कर ली। पहले बायरोको जन्मत जेनरल बननेका अधिकार था, लेकिन अब पीतर ने उनके लिये भी बाकायदा शिक्षा लेनेका नियम बना दिया। १७२१ ई० में—औरगजेबकी मृत्युके छ साल पहले—रूसी सेना फिर लडाईके लिये तैयार थी। शेरेमेतोफके नेतृत्वमें एक रूसी सेनाने स्वीडोको दो बार हराकर बाल्तिक-तटके लिफलदिया प्रदेशपर अधिकार कर लिया। १७०३ ई०में रूसी सेनाने मरियनबुर्गको सर किया, अगले साल दोर्पत और नारवा उनके हाथमें थे। इस समय पीतर नेवा नदीके वाम तटपर इग्रियामें लडाईका सचालन कर रहा था। १७०२ ई०की शरदमें नेवा नदीके उद्गम लदोगा-सरोवरके तटपर अवस्थित स्वीडोंके अधिकृत नोटबोगपर अधिकार कर

लिया। पीतरने इस किलेका नाम बदलकर श्लुसेल्बुर्ग (कुंजीनगर) रक्खा, क्योंकि यह नेवा नदी होकर फिनलैंडकी खाड़ीमें पहुँचनेकी कुंजी थी। १७०३ ई०के बसंतमें आगे बढ़कर समुद्र-संगमसे नाति दूर नदीके बाँये किनारेपर अवस्थित स्वीड किले नेन्स्कान्सपर अधिकार कर इसी जगहपर पीतर और पावल किलेकी नींव रक्खी और कुछ लकड़ीके मकान बनवाये—यहींसे पीतरबुर्ग (आधुनिक लेनिनग्राद) आरम्भ हुआ, जो बोल्शेविक क्रांतिके समयतक रूसकी राजधानी रहा। पीतरका एक बहुत बड़ा संकल्प पूरा हुआ—रूसकी सीमा समुद्र-बेलातक पहुँच गई।

लेकिन, लड़ाईका मतलब केवल प्राणोंकी ही क्षति नहीं, बल्कि अपार धनकी भी क्षति है, जिसके लिये किसानोंको सबसे अधिक दाहन होना था। पीतरने नगरोंमें दाढ़ी रखना निषिद्ध कर दिया था, लेकिन जो दाढ़ी-कर देनेको तैयार थे, वह उसे रख सकते थे—इस करकी रसीदके तौरपर एक ताँबेका सिक्का मिलता था। ग्रामीणोंको दाढ़ी रखनेकी स्वतन्त्रता थी, लेकिन नगरमें आनेपर उन्हें भी दाढ़ी-कर चुकाना पड़ता। दाढ़ीको उस वक्त धर्मके साथ संबंधित समझा जाता था, इसलिये पीतरके इस कामसे लोगोंके नाराज होनेका मौका था, लेकिन वस्तुतः सबसे अधिक असंतोष था आर्थिक कठिनाइयोंके कारण। जगह-जगह छोटे-मोटे विद्रोह हुये। एक बड़ा विद्रोह ३० जुलाई १७०५ ई०को अस्त्राखानमें हुआ, जिसमें वोयवोद और कितने ही राजकर्मचारी मार डाले गये। फील्ड मार्शल शेरेमेतोफके नेतृत्वमें पीतरकी सुशिक्षित सेना जब गई, तो विद्रोहियोंको क्या आशा हो सकती थी? मार्च १७०६ ई०में तोपोंकी मारके सामने अस्त्राखानको आत्म-समर्पण करना पड़ा, जिसपर आठ महीनेतक विद्रोहियोंने अपना शासन स्थापित कर लिया था। अस्त्राखानके विद्रोहके समाप्त होनेके तुरन्त ही बाद दोनमें एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इससे तीन वर्ष पहले १७०४ ई० में बाशकिरोंने भी विद्रोह किया था, जिसमें विद्रोहियोंके नेताओंने क्रिमियाके खान या तुर्कीके खलीफाके अधीन अपना स्वतन्त्र राज्य कायम रखनेका इरादा किया था। पीतरने १७११ ई० तक अपनी शक्तिशाली सेनाके बलपर सभी जगह विद्रोहोंको दबा दिया।

स्वीडनके साथ अभी अन्तिम निर्णय नहीं हो पाया था। उक्रइनका हेतमन (राजप्रमुख) इवान माजेपा पीतरसे असंतुष्ट हो स्वीडनके राजा चार्ल्ससे साठ-गाँठ कर रहा था, इसलिये भी स्वीडनकी हिम्मत बढ़ी थी। माजेपाने रूसके खिलाफ भड़काकर अपने लोगोंको विद्रोह करनेके लिये तैयार करना चाहा, लेकिन वह उसमें सफल नहीं हुआ। चार्ल्स अप्रैल १७०९ ई०में सेना लेकर आया और उसने पोल्तावाके किलेको घेर लिया। पोल्तावाके लेनेपर स्वीडनके लिये मास्कोका रास्ता खुल जाता। पीतरको तुर्कीसे भी डर था, तो भी वह अपनी प्रधान-सेना लेकर पोलतावाकी ओर दौड़ा। २७ जून १७०९ ई० को पोलतावाके पास वोस्कला नदीके किनारे वह निर्णायक युद्ध हुआ, जिसने रूसके इतिहासको आगे बढ़ानेमें भारी सहायता की। युद्धके दिनसे पहलेवाली शामको पीतरने रूसी सेनाके लिये जो आदेश दिया था, उसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं—

"जवानो, वह घड़ी आ रही है, जो हमारे देशके भाग्यका फैसला करेगी, इसलिये यह मत सोचो, कि तुम पीतरके लिये लड़ रहे हो। तुम लड़ रहे हो उस राज्यके लिये, जो कि पीतरको सौंपा गया है, तुम लड़ रहे हो अपने परिवारके लिये, अपनी जन्मभूमिके लिये। अजेय कहे जानेवाले दुश्मनकी प्रसिद्धिसे हिम्मत न हारो, क्योंकि यह प्रसिद्धि झूठी बात है। इस प्रसिद्धिको तुमने कई बार अपने विजयों द्वारा झूठा सिद्ध किया है। जहाँतक पीतरका संबंध है, तुम यह गाँठ बाँध लो, कि उसे अपना प्राण प्रिय नहीं है।"

लड़ाई शुरू हुई। रूसियोंका प्रहार इतना जबरदस्त था, कि स्वीडोंमें भगदड़ मच गई। वह भारी संख्यामें खेत आये। कुछ थोड़ी-सी सेना ले चार्ल्स और माजेपा तुर्कीकी ओर भागे, बाकी सेनाने आत्म-समर्पण किया, जिसकी संख्या बीस हजार थी। उस समय स्वीडनकी सेना युरोपमें सबसे अच्छी मानी जाती थी। पीतरने उसे हराकर सारे युरोपमें रूसकी धाक जमा दी।

किनारे १७११ ई०में पीतर और उसकी सेनाको घेर लिया। रूसी सेनाकी भीतरी हालत बहुत बुरी थी, लेकिन तुर्की सेनापतिको इसका पता नही था, इसलिये उसने समझौतेकी वात स्वीकार की। पीतर वेवकूफीभरी वीरताका पक्षपाती नही था। उसने अजोफको तुर्कोंके हाथमे दे अपनी सेनाको वचा लेनेमें सफलता पाई।

तुर्कोसे छुट्टी पाकर फिर उसने स्वीडनकी तरफ मुह फेरा और १७१४ ई०में अवकी उसने हगो अन्तरीप (फिनलन्द)में स्वीडनकी नौसेनापर भारी विजय प्राप्त की। इस नौसैनिक पराजयके वाद स्वीडनने रूससे समझौतेकी वातचीत शुरू की, लेकिन पीछे उसे तोड दिया, जिसपर १७२० ई० में रूसको दूसरी नौसैनिक विजय प्राप्त करनी पडी। अब वाल्तिक-तट फिर रूसका हो गया। यही नही, कुछ ही वर्षोंके भीतर रूसकी नौसैनिक-शक्ति भी वहुत बढ़ गई। अन्तमे १७२१ ई०में सधि करके स्वीडनने फिनलन्द-खाडीका तट और रीगा-खाडीकी तटभूमि, करेलियाका कुछ भाग—जिसमे विपुरी भी था—और दूसरे प्रदेश रूसको दे दिये।

पूर्वमें प्रसार—यद्यपि पीतरको स्वीडनके साथ वहुत सालोतक फसा रहना पडा, लेकिन उसका ध्यान अपने पूर्वी सीमातसे कभी नही हटा। इसके शासनमे १७१५ ई० और १७२० ई०के वीच सारी ऊपरी इर्तिश-उपत्यका रूसके हाथमें चली गई। इसी नदीके तटपर ओम्स्क और सेमीप्लातिन्स्क जैसे कितने ही किले वनाये गये। ऊपरी इर्तिशमे वुखारा और खीवाका वणिक्पथ जाता था। मध्य-एसियाकी ओर भी अपनी विजय-यात्राको वढानेके लिये पीतरने कास्पियन समुद्रको इस्तेमाल किया। १७१६ ई०में राजुल वेकोविच-चेरकास्कीके नेतृत्वमें एक छोटी-सी सैनिक टुकडी ने खीवाके खानको गद्दीपर वैठनेके लिये मुवारकवादी देनेके वहाने पहुचना चाहा, लेकिन रेगिस्तानमे उसे घेरकर नष्टप्राय कर दिया गया, और इस प्रकार पीतर कास्पियन-तटमे आगे अपनी वाह फैलानेमें सफल नही हुआ। इधरसे असफल होकर १७२२ ई०में पीतरने काकेशसके विरुद्ध स्वय एक अभियान का नेतृत्व किया। काकेशसके सामन्तो—विशेषकर गुर्जी, अर्मेनियाके छोटे-छोटे राजा, व्यापारी तथा ईसाई पादरी—मुस्लिम ईरान या तुर्कीकी जगह ईसाई रूसको अधिक पसद करते थे। ईरानको काकेशसमें हार खानी पडी और उसने १७२३ ई०की सधिके अनुसार कास्पियनके अपने बहुत-से तटभागको रूसियोको दे दिया, जिसमें पश्चिमी तटपर दरवेंद, वाकू और पूर्वी तटपर अस्त्रावाद भी शामिल थे, लेकिन रूस इस भूमिको वहुत दिनोतक अपने हाथमें नही रख सका।

शासन-सुधार—पीतरके सैनिक सुधारो और उसके कारण मिली सफलताओंके वारेमे अभी हम देख चुके है। पीतरने व्यवस्थित सेनाको कायम किया, जिसमे वाकायदा रगरूट भर्ती किये जाते, वर्दी और हथियार दे उनको खूव कवायद परेड कराई जाती। पश्चिमी युरोपमे तोपोको खीचने के लिये घोडागाडियोका इस्तेमाल जव हुआ था, उससे पचास वर्ष पहले ही पीतरका तोपखाना घोडो द्वारा खीचा जाता था। राजप्रवन्धमें भी पीतरने कई वडे-वडे परिवर्तन किये। १७०८ ई०मे उसने राज्यको आठ गुर्वानियो (सरकारो)मे वाट दिया, गुर्वानियाका शासक एक गवर्नर होता था, जो कि सीधे केन्द्रीय सरकारसे सवध रखता था। पहले गुर्वानिया वडी-वडी वनाई गई, जिन्हे १७१९ ई०मे वाटकर पचासी प्रदेशोंके रूपमे परिणत कर दिया गया। प्रदेशोको फिर कितने ही जिलोमे विभक्त किया गया। प्रदेशो और जिलोंके शासक गवर्नर (राज्यपाल) और वोयवाद होते थे।

यह नही कहा जा सकता, कि पीतर नवीनताका अधभक्त था, लेकिन उसके कितने ही सुधारो से एक प्रभावशाली वर्ग असतुष्ट जरूर था। पीतरकी पहली वीवी योदोकिया लोपुखनासे उसका एक पुत्र राजकुमार अलेक्सी हुआ था। रुढिवादियोने अलेक्सीके ऊपर आशा लगा रखी थी, क्योकि वह पादरियो और अपने ननिहालके लोगोकी देखरेखमें पला था। अलेक्सी उतावला हो गया था, कि कव वाप मरे और गद्दी उसके हाथमें आये। पीतरने कई वार अपने बेटेको सावधान किया—"अपने देशके सम्मान और समृद्धिके वढानेमे जो भी वात सहायक हो, उसके साथ प्रेम करो। यदि मेरी सलाह नही मानोगे, तो म तुम्हे अपना माननेमे इकार कर दूगा।" अलेक्सीने वापकी वात नही मानी, और विद्रोह करके आस्त्रिया भाग गया। आस्त्रिया भला पीतरका कोप-भाजन वननेके लिये उसके पुत्रको क्यो शरण देनेके लिए तैयार होता? पीतरने पुत्रको वहासे पकडवा मगवाया, खास अदालतमें अभि-

योग चलवाया। अदालतने अलेक्सीको मृत्युदंड दिया, लेकिन उससे पहले ही वह जेलमे मर गया। अलेक्सीकी मौतने रूढ़िवादियोंकी आशापर पानी फेर दिया।

शिक्षा और संस्कृति—पीतर शिक्षाके महत्त्वको अच्छी तरह समझता था। उस समयके भारत मे अभी प्रेसोंकी छपाईका पता नहीं था, रूसमे भी अभी उनका प्रचार थोड़ा ही हुआ था। पहलेसे चले आते धार्मिक पुस्तकोंके स्लावानिक अक्षरोंके टाइप छापेकी दृष्टिसे कुछ दोषपूर्ण थे। पीतरने सुधार करके उनको वह रूप दिया, जो कि आज भी रूसीके लिये इस्तेमाल होता है। १७०८ ई०के बाद सिवा गिरजाकी प्रार्थना-पुस्तकोंके सभी पुस्तके अब नये टाइपमे छपने लगी। शिक्षा प्रचारके लिये विदेशी पुस्तकोंका रूसीमे अनुवाद होने लगा। गणित, पोत-निर्माण, दुर्ग-निर्माण, वास्तु-विद्या, युद्ध-शास्त्र आदि विषयोंपर पश्चिमी युरोपमें लिखे गये कितने ही अच्छे-अच्छे ग्रंथोंके रूसी अनुवाद छापे गये। रूसी इतिहासपर भी कितने ही ग्रंथ प्रकाशित हुये। पहला रूसी अखबार "वेदोमोस्ती" मास्कोमे औरंगजेबके मरनेसे चार वर्ष पहले (१७०३ ई०) छपना शुरू हुआ, जो पीछे पीतरबुर्ग राजधानीसे निकलने लगा। अभी तक रूसी पचांगमे ईसाई पचांगका अनुसरण करते हुये सन् सृष्टि संवत्सरसे गिना जाता था, और नया वर्ष पहली सितम्बरको आरम्भ होता था। १ जनवरी १७०० ई० को युरोपके कितने ही देशोमे स्वीकृत जूलियस कैसर द्वारा स्थापित जूलियन पचांगको पीतरने मान लिया। लेकिन जूलियन पचांगसे भी अधिक शुद्ध ग्रेगरी पचांग युरोपके कितने ही देशोमे प्रचलित था, जिसे बोल्शेविक क्रान्तिके बाद ही रूसने अपनाया। पीतरके शासनकालमें मास्को और पीतरबुर्गमे कितनी ही शिक्षण संस्थायें स्थापित हुईं। १७०२ ई०मे विदेशी अभिनेताओंको निमंत्रित करके मास्कोमे नये ढंगसे रंगमंचकी भी स्थापना हुई, जिसमे "ओरेशेक विजय"के नाम का एक नाटक पीतरके विशेष आग्रहपर खेला गया था। सभी दिशाओंमें सामाजिक परिवर्तन इस समय बड़ी तेज गतिसे हुआ, लेकिन इसमे सन्देह नहीं, कि यह परिवर्तन उच्चवर्गके ही भीतर हुआ।

पीतरबुर्ग निर्माण—स्वीडनपर लड़ाईमे विजय प्राप्तकर नेवाके दाहिने तटपर पीतरने "पीतर और पाल" नामक किलेकी स्थापना की थी। उस समय यहां आसपासमें बहुत घना जंगल तथा जहां-तहां छोटे-छोटे गांव थे। इसी जगह पीतरने अपने नामसे नगर बसाना शुरू किया। पीतरने पहले अपने लिये ही जयाची द्वीपपर एक लकड़ीकी छोटी-सी झोपड़ी बनवाई, जिसके बाद दूसरे बायरों और व्यापारियोंने पासमे घर बनाने शुरू किये।

पोल्तावाकी विजय (जून १७०९ ई०) के बाद पीतरने राजधानीको मास्कोसे पीतरबुर्ग लाने का निश्चय किया। हजारों किसान और शिल्पकार नगरके बनानेमें लगा दिये गये। दलदली जमीन भी बहुत थी, जिसके भीतर घुटनों तक डूबे काम करना पड़ता था। हजारों मजूर बीमारीसे मरे, उनका स्थान दूसरे हजारोंने लिया। पीतरबुर्गको मास्कोकी तरह नहीं बनाया जा रहा था। यहां पुरानेको बढ़ाना नहीं, बल्कि सारे नगरको आरम्भसे ही नया बनाना था, इसलिये इसकी सड़कें सीधी बनी। पहले हीसे योजना बनाकर नगर बनानेमें जो सुभीता होता है, वह पीतरबुर्गको प्राप्त हुआ। पीतरने पश्चिमी युरोपकी राजधानियों और मकानोंको देखा था, इसलिये वह चाहता था, कि उसकी राजधानीमें ईंट और पत्थरके मकान बनें, इसके लिये उसने दूसरे नगरोमें ईंट-पत्थरके मकानोंका बनाना निषिद्ध करके वहांसे राजों और मेमारोंको बुलवा लिया। नगरको सुंदर और कलापूर्ण बनाने-के लिये उसने कितने ही विदेशी वास्तुशास्त्रियोंको भी बुलवाया। जैसे-जैसे पीतरबुर्गका प्रताप बढ़ता गया, वैसे ही वैसे मास्कोकी अवस्था गिरती गई। धनी व्यापारी और बायर नई राजधानीमें चले गये, सरकारी दफ्तर भी मास्कोसे हट गये। पन्द्रह-बीस वर्षोंके भीतर ही एक छोटे-से गावसे बढ़कर पीतर-बुर्ग सत्तर हजार लोगोंका नगर बन गया।

साइबेरिया—पीतरसे पहले ही प्रशान्त-महासागरतक रूसकी सीमा जा लगी थी। युद्धके खर्चके लिये अपार धनकी आवश्यकता थी, जिसके लिये धनके सभी स्रोतोंके पता लगानेकी कोशिश की गई। इसी प्रयत्नमें नई भौगोलिक खोजों और नये प्रदेशोंपर अधिकार प्राप्त करनेका मौका मिला। १६९७-९८ ई०में एक स्त्रेल्त्सी अफसर व्लादिमिर अतलसोफके नेतृत्वमें एक छोटी टुकड़ी अनादिर नदीके तटपर अवस्थित अनादिरकी चौकीसे बारहसिंघोंसे खीची जानेवाली बेपहियेकी गाड़ी

द्वारा कमचत्काके किनारे पहुची, और उसने वहाके लोगोसे मुख्यत समूरके रूपमे कर उगाहना शुरू किया। अत्लसोफ पहला आदमी था, जिसने कमचत्का प्रायद्वीपका पता लगाकर उसके वारेमे लिखा। कमचत्का-निवासी (कमचादल) अभी जनयुगमे रहते थे। वह कवीलेशाही समाजसे ऊपर नही उठे थे। उनके एक-एक जन (कवीले) मे कुछ सौ तम्बू होते थे। मछुवाही उनकी जीविका थी। जनोमे आपसमें वरावर लडाई होती रहती थी। उनके हथियार थे—धनुष-वाण। वह वाणोंके फल चकमक-पत्थर या हड्डीसे वनाते थे। अत्लसोफने कमचादलोंके वीचमे शासन दृढ करनेके लिये एक रूसी छावनी स्थापित की, जहापर कसाक और सैनिक रहा करते, जिनका काम जारके शासनको मजवूत रखनेके साथ लूटपाटकर अपने लिये धन वटोरना भी था। १७३१-३२ ई०मे कमचादलोने कई विद्रोह किये। इनके नेता वही थे, जो कि रूसमे रहकर वारूदी हथियारोका इस्तेमाल जान गये थे, लेकिन रूसियोने उन्हे आसानीसे दवा दिया। फिर धीरे-धीरे उनकी जन-व्यवस्था टूटने लगी।

चीनके साथ सबध—नेर्चिन्स्क की सधिके (सितम्वर १६८९ ई०) साथ चीनका रूससे दौत्य-सवध स्थापित हुआ। उस सधिको प्रमाणबद्ध करने तथा व्यापारिक सवध सुधारनेके लिये मास्कोने १६९२ ई०में अपने एक जर्मन सेवक येवर्ट यसव्राट इड्सको भेजा। वह अठारह महीनेमे चीचीहार नगरमें पहुचा। चीनी सीमातपर पहुचनेपर एक चीनी मदारिन (अफसर) आठ रक्षक सैनिको तथा तीन लोहेकी तोपोंके साथ स्वागतके लिये आया। चीनी मदारिनने इड्सकी खूब पुरतकल्लुफ दावत की, फिर उसने भी मदारिनको युरोपीय ढगसे दावत दी। राजधानीमे भी उसका उसी तरह स्वागत किया गया। तीन दिनोतक उसकी जियाफत होती रही। इड्सने इसके वारेमे लिखा है—"मेरे लिये जो मेज रखी गई थी, वह प्राय वर्गाकार थी, जिसके ऊपर एकके ऊपर एक सत्तर तश्तरिया रखी गई थी, जो सभी चादीकी थी।" घोडीके दूधकी वनी शराव (कूमिस) को सोनेके प्यालेमे रख-कर दिया गया। अन्तमे १२ नवम्वर १६९२ ई०में उसे दरवारमे सम्राट् खाङ-सीके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सम्राट्के सामने अपना राजकीय प्रमाणपत्र पेश किया। शायद उसे साष्टाग दडवत् (कौतू) करनी पडी, जिसके वारेमे एक अग्रेजने लिखा है—"राजदूत अपने आसनपर ले जाये गये, इसी समय जव सम्राट् अपने सिहासनसे उतर रहा था, यकायक चीनियोने अपने घुटनो-को मोड सिरको धरतीपर तीन वार टेका। हमे भी प्रतिहारोने वहा ले जाकर उसी तरह प्रणाम करने के लिये मजवूर किया।" इड्सने १९ फरवरी १६९४ ई०मे पेकिङ छोडा, जिससे पहले फिर उसे सम्राट्से मिलनेका मौका मिला। सम्राट् खाङ-सीने १७१२-१७१६ ई०मे तू-ली-शिन्को दूत वनाकर तर्गुत कल्मकोंके खानके दरवारमें वोल्गा-तटपर भेजा। उस समय पीतर स्वीडनके साथ लडाई-मे लगा हुआ था, इसलिये वह वोल्गाके तटपर आये चीनी दूतको वुलाकर नही मिल सका। इस चीनी दूतमडलका यद्यपि वाहरी उद्देश्य था आयुका खानके स्वास्थ्यके वारेमें पुछार करना तथा आयुका-के भतीजे राजकुमार ओ-ला-पू-छू-योरको उसके पूर्व पदपर स्थापित करनेकी इच्छा प्रकट करना, लेकिन दूतको यह भी आज्ञा दी गई थी, कि वह मास्को राजधानीमें जाकर जारसे भी मिले। चीन लौटते समय जव तू-ली-शिन् रूसी सीमातपर पहुचा, तो रूसी अफसरने उसे सैनिक सम्मानके साथ सेलिगिन्स्की शहरमे पहुचा था, जहा वोयवोदने उससे वातचीत की। तोवोल्स्कमें आनेपर साइवेरियाके राज्य-पाल राजुल गजारिन मिला, जिससे तू-ली-शिन्ने राजकाजके वारेमे वहुत देरतक वातचीत की। यहा पर तू-ली-शिन्को सूचित किया गया, कि जार अपनी सेनाके सचालन करनेमें लगा हुआ है, नही तो वह वडी प्रसन्नतासे चीनी राजदूतसे मिलता। आयुकासे मिलनेके वाद तू-ली-शिन्ने पेकिङमें लौट कर सम्राट्को एक रिपोर्ट दी, जिसमें लिखा था

"इस प्रकार उत्तर-पूर्वमें रूसी राज्य अल्पजन तथा वयावानीसा इलाका है, यद्यपि अत्यन्त प्राचीन कालसे आजतक हमारे चीन-साम्राज्यके साथ उसका सवध नही रहा, और हमारे इतिहास-लेखकोंने भी रूसियोका उल्लेख नही किया और न आजतक कभी एक भी चीनी आदमी वहा पहुचा, तो भी सभी दिशाओंकी तरह वहा भी हमारे देवोपम सम्राट्की महिमा और महान् गुण प्रभाव डाले विना नही रहे। दुनियाके सभी दसो हजार राज्य सम्राट्की हितकारी सरकारके सरक्षणमें है। रूस

केवल अब चीनके साथ खुला सबंध स्थापित करने लगा है, लेकिन चालीस या पचास साल पहले भी जब कि दोनो साम्राज्योकी सीमाये निश्चित नही हुई थी, सूचनाओ द्वारा हमारे साम्राज्यके बहुतसे अच्छे गुण वहा ज्ञात थे।'

पीतरके प्रथम दूतमडलने यह भी तै किया, कि रूसी वणिक्-साथ थोडे समयके बाद बराबर जाया करे। लेकिन रूसी जबरदस्त पियक्कड थे, जिसके कारण अक्सर झगडे हो जाया करते था, जिससे सम्राट् खाङ्-सीने सबध विच्छेद करनेकी धमकी दी। इसपर १७१९ ई०मे पीतरने इस्माइलाफके नेतृत्वमे एक विशेष दूतमडल भेजा। इस्माइलोफके साथ एक अग्रेज जान बेल भी था, जिसने उसके बारेमे बहुत सी ज्ञातव्य बात लिखी है। इस दूतमडलको चीनी सीमाततक पहुचनेमे सोलह महीने लगे थे। सम्राट्के विशेष प्रतिनिधिने वहा उनका स्वागत किया। बेलने अपने विवरणमे लिखा है

"हमारे पथदर्शकने रास्तेमे कुछ स्त्रियोको चलते देखकर दूत (इस्माइलाफ)से पूछा—यह कौन है और कहा जा रही है? उसे बतलाया गया, कि वह हमारी मडलीकी है, और हमारे साथ चीन जा रही है। इसपर चीनी प्रतिनिधिने कहा—पेकिङमे पहले हीसे काफी औरते है। अबतक कोई भी युरोपीय स्त्री चीन नही आई, इसलिये सम्राटकी विशेष आज्ञाके बिना मै उन्हे ले जानेकी जिम्मेदारी नही ले सकता। यदि आप जवाबकी प्रतीक्षा करे, तो इसके लिये हम एक साथ भेजनेके लिये तैयार है, लेकिन सदेशवाहक छ सप्ताहसे पहले नही लौट सकता। इसपर यही ठीक समझा गया, कि असबाब का ले आनेवाली गाडियोके साथ स्त्रियोको सेलिगिन्स्की लौटा दिया जाये।"

जिस घरमे रूसी दूतमडलको ठहराया गया था, उसको दस बजे रातको सम्राटकी अपनी मुहर लगाकर बद कर दिया जाता था, जिससे कोई आदमी भीतर-बाहर आ-जा न सके। राजदूतके कहने पर यह नियत्रण हटा दिया गया। इस्माइलोफने पहले साष्टाग प्रणिपात करनेसे इन्कार कर दिया, लेकिन पीछे उसने इस शर्तपर कबूल किया, कि चीनी दूत भी रूसी दरबारमे वहाकी प्रथाके अनुसार साष्टाग प्रणाम करेगा। बेलने रूसी दूतके दरबारमे जानेका वर्णन निम्न शब्दोमें किया है

"हमे प्राय पाव घटा प्रतीक्षा करनी पडी। पिछले दरवाजेसे सम्राट् शालमे प्रवेशकर सिंहासनपर बैठा। इस समय सभी लोग खडे हो गये। अब महाप्रतिहारने कुछ दूरपर खडे राजदूतको शालके भीतर आनेके लिये कहा, और उसे एक हाथमे पकडे तथा दूसरे हाथमें राजकीय प्रमाणपत्र थामे ले चला। सीढियोपर चढनेके बाद उसने पूर्वनिश्चयानुसार प्रमाणपत्रको वहा स्थित एक मेजपर रख दिया। सम्राट्ने राजदूतको पास आनेका निर्देश किया, और उसी वक्त प्रमाणपत्रको लिये अलोईके साथ वह सिंहासनके पास गया। फिर घुटना टेकते हुये उसने पत्रको सम्राट्की ओर बढाया, जिसने अपने हाथमे उसे छू दिया। फिर परमभट्टारक जारके स्वास्थ्यके बारेमे पूछकर राजदूतसे कहा—परमभट्टारक जारके लिये मेरे हृदयमे इतना मित्रतापूर्ण और प्रेमका भाव है, कि मैने उनके पत्रको लेनेमें अपने साम्राज्य की प्रचलित प्रथाके पालन करनेका ख्याल नही किया।

"थोडे समयतक यह भेंट होती रही। उस समय राजदूतके अनुचर शालके बाहर खडे रहे। पत्रके देनेपर हमने समझा, कि अब काम खतम हो गया। फिर महाप्रतिहारने राजदूतको लौटाकर अनुचरोको हुक्म दिया कि नौ बार मत्था टेककर सम्राट्के प्रति सम्मान प्रदर्शित करें। महाप्रतिहारने खडा होकर तारतार (मगोल) भाषामे "मोरगू" और "बोस" में बोलते हुये आज्ञा दी। मोरगूका अर्थ है सिर झुकाना और बोसका खडा होना।"

बेलके लिखनेसे मालूम होता है, कि रूसी दूतमडलको यद्यपि बहुत-से दरबारी अपमानजनक शिष्टाचारोको पालन करनेके लिये मजबूर होना पडा, लेकिन उनका सत्कार-सम्मान इतनी अच्छी तरहसे हुआ, कि वह सबको भूल गये। इस्माइलोफके विदा हो जानेके बाद उसका सचिव देलाग रूसी प्रतिनिधिके तौरपर पेकिङ (पेचिङ)मे रह गया, लेकिन उसकी स्थिति एक नजरबन्द जैसी थी। जिस वक्त देलाग पेकिङमें था, उसी समय मगोलोके एक चीनाधीन कबीलेने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इसपर पेकिङमे किसी भी रूसी कारवाका आना निषिद्ध कर दिया गया। देलागके साथ असह्य दुर्व्यवहार हुआ, जैसा कि उसने स्वय लिखा है

"मुझे आदेश है, कि हमारे दोनों साम्राज्योंके बीचमें अधिक घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये पूरा प्रयत्न करूं, लेकिन मैं उन्हें—प्रधान मंत्रीको—बतला देना चाहता हूं, कि इस अवसरपर चीनी सचिवालयने (मेरे साथ) जो बर्ताव किया, उससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। (आपको) यह ख्याल दिलसे हटाना नहीं होगा। परमभट्टारक जारके स्वीडनके साथ हो रहे युद्धको सम्मानपूर्वक समाप्ति पर ही सब कुछ निर्भर करता। शायद जिस वक्त मैं यह बातें कर रहा था, उसी समय सचमुच शांति-संधि की जा रही थी। उसके बाद इसमें कोई बाधा नहीं हो सकती, कि मेरे स्वामी (जार) धीरज खोकर कहीं अपने हथियारोंको इस ओर न घुमा दें।"

लेकिन चीनी प्रधान-मंत्री ऐसी धमकियोंकी कोई पर्वाह नहीं करता था। अन्तमें देलागको चीन दरबारसे चले जानेकी छुट्टी मिली और सत्रह महीना रहनेके बाद एक कारवाके साथ वह चीनकी राजधानीसे रवाना हुआ। इस प्रकार पीतरके समय चीन-रूसका संबंध अच्छा नहीं रहा। पीतरके मरनेपर यद्यपि बाहरी शक्तियोंसे संघपने भयंकर रूप धारण नहीं किया, लेकिन उसके बादके सैंतीस वर्षों (१७२५-६२ ई०) में चीन में छ प्रासादी क्रांतियां हुईं। पीतरके उत्तराधिकारियोंमें अन्ना इवान-पुत्री, और पीतर III अयोग्य और विलासी थे। उनके समयमें दरबारियोंके हाथमें राज-शक्ति चली गई थी। पीतर II और इवान VI गुड़िया जार थे। पीतर I ने १७२२ ई० में बनाये अपने विधानमें सम्राट्के हाथमें यह अधिकार दे दिया था, कि वह स्वयं अपने उत्तराधिकारीको चुन सकता है। लेकिन वह अन्त तक उत्तराधिकारीके बारेमें किसी निश्चयपर नहीं पहुंचा। वह मृत युव-राज अलेक्सीके पुत्रको उत्तराधिकारी नहीं बनाना चाहता था, अपनी रानी एकातेरिनाको भी राज देने में आनाकानी कर रहा था, और अपनी लड़कियों एलिजाबेत या अन्नाके बारे भी उसने कोई निश्चय नहीं कर पाया था। लेकिन उसके मरनेके बाद दरबारियोंके एक प्रभावशाली समुदायने पीतरकी रानी एकातेरिनाको गद्दीपर बैठा दिया।

६ एकातेरिना I, पीतर-पत्नी (१७२५-२७)

अपने दो सालके शासनमें उसने किसी योग्यताका परिचय नहीं दिया। दरबारके एक प्रभाव-शाली सामन्त मेंशिकोफने एकातेरिनाको पीतर I के पौत्र तथा अलेक्सीके पुत्र पीतर II को अपना उत्तराधिकारी बनानेके लिये तैयार किया। युवराजसे अपनी लड़कीका ब्याह करके वह अपने प्रभावको बढ़ाना चाहता था।

एकातेरिनाके समय १७२७ ई०में एक रूसी दूतमंडल सावा व्लादिस्लाव-पुत्रकी अधीनतामें पेचिङ भेजा गया। इस दूतमंडलका काम अबतक गये सभी दूतमंडलोंसे बड़ा ही लाभदायक साबित हुआ। सावाने २७ अगस्त १७२७ ई०को जिस संधिपत्रको स्वीकृत करानेमें सफलता पाई, वह सवा शताब्दियों (जून १८५८ ई०) तक मान्य रहा। इतनी देरतक रहनेवाली संधियां बहुत कम ही देखी जाती हैं। इसी समय रूस और चीनके बीचकी सीमारेखा पूर्वमें क्याख्तासे ऐगून नदीके मुहानेतक और पश्चिममें क्याख्तासे सुइयान-पर्वतमालाके एक डांडे शबिनादाबेगतक निर्धारित की गई। यह भी स्वीकार किया गया, कि हर तीसरे वर्ष रूसी कारवा पेचिङ आ सकते हैं, तथा यह भी कि पेचिङमें एक स्थायी रूसी दूतावास स्थापित किया जायगा, और रूसी अपने धर्मके अनुसार पूजा-पाठ कर सकेंगे। राजदूतके निवासमें रूसी और लातीनी भाषाओंके जाननेवाले चार तरुण विद्यार्थी रह सकेंगे, जिनका खर्च चीन वर्दाश्त करेगा, और शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह लौटनेके लिये स्वतन्त्र रहेंगे। इस दूत-मिशनके ऊपर चीन सरकारको प्रतिवर्ष हजार चांदीके रूबल और दस मन चावल खर्च करना पड़ता था। रूसी सरकार उसपर सोलह हजार चांदीके रूबल खर्च करती थी, जिसमेंसे एक हजार रूबल अलबाजीन कसाकोंकी पेचिङमें रहती तरुण संतानोंकी शिक्षापर खर्च होता था। यद्यपि इस संधिके अनुसार रूसी हर साल अपने कारवाको भेज सकते थे, लेकिन वस्तुत १७२७ ई० और १७६२ ई०के बीचमें केवल छ कारवा गये। व्यापारके लिये कई तरहके निर्बंध थे, जिसके कारण निराबाध व्यापार नहीं हो पाता था। बिना एक साल क्याख्तामें रहे कोई चीनी व्यापारी वहां

केवल अब चीनके साथ खुला संबंध स्थापित करने लगा है, लेकिन चालीस या पचास साल पहले भी, जब कि दोनो साम्राज्योंकी सीमायें निश्चित नही हुई थी, सूचनाओ द्वारा हमारे साम्राज्यके बहुतसे अच्छे गुण वहां ज्ञात थे।"

पीतरके प्रथम दूतमंडलने यह भी तै किया, कि रूसी वणिक-साथ थोडे समयके बाद बराबर जाया करे। लेकिन रूसी जबरदस्त पियक्कड थे, जिसके कारण अक्सर झगडे हो जाया करते था, जिससे सम्राट् खाङ-मीने संबंध-विच्छेद करनेकी धमकी दी। इसपर १७१९ ई०में पीतरने इस्माइलोफके नेतृत्वमें एक विशेष दूतमंडल भेजा। इस्माइलोफके साथ एक अंग्रेज जान बेल भी था, जिसने उसके बारेमें बहुत सी ज्ञातव्य बात लिखी है। इस दूतमंडलको चीनी सीमाततक पहुंचनेमें सोलह महीने लगे थे। सम्राट्के विशेष प्रतिनिधिने वहां उनका स्वागत किया। बेलने अपने विवरणमें लिखा है

"हमारे पथदर्शकने खेमोमें कुछ स्त्रियोंको चलते देखकर दूत (इस्माइलोफ)से पूछा—यह कौन हैं और कहां जा रही हैं? उसे बतलाया गया, कि वह हमारी मंडलीकी है, और हमारे साथ चीन जा रही हैं। इसपर चीनी प्रतिनिधिने कहा—पेकिङमें पहलेहीसे काफी औरतें है। अबतक कोई भी युरोपीय स्त्री चीन नही आई, इसलिये सम्राट्की विशेष आज्ञाके बिना मै उन्हे ले जानेकी जिम्मेदारी नही ले सकता। यदि आप जवाबकी प्रतीक्षा करें, तो इसके लिये हम एक साथ भेजनेके लिये तयार हैं, लेकिन संदेशवाहक छ सप्ताहसे पहले नही लौट सकता। इसपर यही ठीक समझा गया, कि असबाब को ले आनेवाली गाडियोंके साथ स्त्रियोंको सेलिंगिन्स्की लौटा दिया जाये।"

जिस घरमें रूसी दूतमंडलको ठहराया गया था, उसको दस बजे रातको सम्राटकी अपनी मुहर लगाकर बंद कर दिया जाता था, जिसमें कोई आदमी भीतर-बाहर आ-जा न सके। राजदूतके कहने पर यह नियंत्रण हटा दिया गया। इस्माइलोफने पहले साष्टांग प्रणिपात करनेसे इन्कार कर दिया, लेकिन पीछे उसने इस शर्तपर कबूल किया, कि चीनी दूत भी रूसी दरबारमें वहांकी प्रथाके अनुसार साष्टांग प्रणाम करेगा। बेलने रूसी दूतके दरबारमें जानेका वर्णन निम्न शब्दोंमें किया है

"हमें प्राय पाव घंटा प्रतीक्षा करनी पडी। पिछले दरवाजेसे सम्राट् शालमें प्रवेशकर सिंहासनपर बैठा। इस समय सभी लोग खडे हो गये। अब महाप्रतिहारने कुछ दूरपर खडे राजदूतको शालके भीतर आनेके लिये कहा, और उसे एक हाथसे पकडे तथा दूसरे हाथमें राजकीय प्रमाणपत्र थामे ले चला। सीढियोंपर चढ़नेके बाद उसने पूर्वनिश्चयानुसार प्रमाणपत्रको वहां स्थित एक मेजपर रख दिया। सम्राट्ने राजदूतको पास आनेका निर्देश किया, और उसी वक्त प्रमाणपत्रको लिये अलोईके साथ वह सिंहासनके पास गया। फिर घुटना टेकते हुये उसने पत्रको सम्राट्की ओर बढाया, जिसने अपने हाथसे उसे छू दिया। फिर परमभट्टारक जारके स्वास्थ्यके बारेमें पूछकर राजदूतसे कहा—परमभट्टारक जारके लिये मेरे हृदयमें इतना मित्रतापूर्ण और प्रेमका भाव है, कि मैने उनके पत्रको लेनेमें अपने साम्राज्य की प्रचलित प्रथाके पालन करनेका ख्याल नही किया।

"थोडे समयतक यह भेंट होती रही। उस समय राजदूतके अनुचर शालके बाहर खडे रहे। पत्रके देनेपर हमने समझा, कि अब काम खतम हो गया। फिर महाप्रतिहारने राजदूतको लौटाकर अनुचरोंको हुक्म दिया कि नौ बार मत्था टेककर सम्राट्के प्रति सम्मान प्रदर्शित करें। महाप्रतिहारने खडा होकर तारतार (मंगोल) भाषामें "मोरगू" और "बोस" में बोलते हुये आज्ञा दी। मोरगूका अर्थ है सिर झुकाना और बोसका खडा होना।"

बेलके लिखनेसे मालूम होता है, कि रूसी दूतमंडलको यद्यपि बहुत-से दरबारी अपमानजनक शिष्टाचारोंको पालन करनेके लिये मजबूर होना पडा, लेकिन उनका सत्कार-सम्मान इतनी अच्छी तरहसे हुआ, कि वह सबको भूल गये। इस्माइलोफके विदा हो जानेके बाद उसका सचिव देलाग रूसी प्रतिनिधिके तौरपर पेकिङ (पेचिङ)में रह गया, लेकिन उसकी स्थिति एक नजरबन्द जैसी थी। जिस वक्त देलाग पेकिङमें था, उसी समय मंगोलोंके एक चीनाधीन कबीलेने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इसपर पेकिङमें किसी भी रूसी कारवांका आना निषिद्ध कर दिया गया। देलागके साथ असह्य दुर्व्यवहार हुआ, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है

"मुझे आदेश है, कि हमारे दोनो साम्राज्योंके बीचमे अधिक घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये पूरा प्रयत्न करू, लेकिन मै उन्हे—प्रधान मंत्रीको—बतला देना चाहता हू, कि इस अवसरपर चीनी सचिवालयने (मेरे साथ) जो बर्ताव किया, उससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। (आपको) यह ख्याल दिलसे हटाना नही होगा। परमभट्टारक जारके स्वीडनके साथ हो रहे युद्धको सम्मानपूर्वक समाप्ति पर ही सब कुछ निर्भर करता। शायद जिस वक्त मै यह बाते कर रहा था, उसी समय सचमुच शाति-संधि की जा रही थी। उसके बाद इसमें कोई बाधा नही हो सकती, कि मेरे स्वामी (जार) धीरज खोकर कही अपने हथियारोको इस ओर न घुमा द।"

लेकिन चीनी प्रधान-मत्री ऐसी धमकियोको कोई पर्वाह नही करता था। अन्तमे देलगत्रो चीन दरबारसे चले जानेकी छुट्टी मिली और सत्रह महीना रहनेके बाद एक कारवाके साथ वह चीनकी राजधानीसे रवाना हुआ। इस प्रकार पीतरके समय चीन-रूसका सबध अच्छा नहीं रहा। पीतरके मरनेपर यद्यपि बाहरी शक्तियोंसे सघर्षने भयकर रूप धारण नही किया, लेकिन उसके बादके सैतीस वर्षो (१७२५-६२ ई०) मे चीन मे छ प्रासादी क्रातिया हुई। पीतरके उत्तराधिकारियोमे अन्ना इवान-पुत्री, और पीतर III अयोग्य और विलासी थे। उनके समयमे दरबारियोंके हाथमे राज-शक्ति चली गई थी। पीतर II और इवान VI गुडिया जार थे। पीतर I ने १७२२ ई० मे बनाये अपने विधानमे सम्राट्के हाथमे यह अधिकार दे दिया था, कि वह स्वय अपने उत्तराधिकारीको चुन सकता है। लेकिन वह अन्त तक उत्तराधिकारीके बारेमें किसी निश्चयपर नही पहुचा। वह मृत युव-राज अलेक्सीके पुत्रको उत्तराधिकारी नही बनाना चाहता था, अपनी रानी एकातेरिनाको भी राज देने में आनाकानी कर रहा था, और अपनी लडकियो एलिजाबेत या अन्नाके बारे भी उसने कोई निश्चय नही कर पाया था। लेकिन उसके मरनेके बाद दरबारियोंके एक प्रभावशाली समुदायने पीतरकी रानी एकातेरिनाको गद्दीपर बैठा दिया।

६ एकातेरिना I, पीतर-पत्नी (१७२५-२७)

अपने दो सालके शासनमे उसने किसी योग्यताका परिचय नही दिया। दरबारके एक प्रभाव-शाली सामन्त मेंशिकोफने एकातेरिनाको पीतर I के पौत्र तथा अलेक्सीके पुत्र पीतर II को अपना उत्तराधिकारी बनानेके लिये तैयार किया। युवराजसे अपनी लडकीका व्याह करके वह अपने प्रभावको बढाना चाहता था।

एकातेरिनाके समय १७२७ ई०में एक रूसी दूतमडल सावा व्लादिस्लाव-पुत्रकी अधीनतामें पेकिङ भेजा गया। इस दूतमडलका काम अबतक गये सभी दूतमडलोंसे बडा ही लाभदायक साबित हुआ। सावाने २७ अगस्त १७२७ ई०को जिस सधिपत्रको स्वीकृत करानेमे सफलता पाई, वह सवा शताब्दियों (जून १८५८ ई०) तक मान्य रहा। इतनी देरतक रहनेवाली सधिया बहुत कम ही देखी जाती है। इसी समय रूस और चीनके बीचकी सीमारेखा पूर्वमें क्याख्तासे ऐंगून नदीके मुहानेतक और पश्चिममें क्याख्तासे सुइयान-पर्वतमालाके एक डाडे शबिनादाबेगतक निर्धारित की गई। यह भी स्वीकार किया गया, कि हर तीसरे वर्ष रूसी कारवा पेचिङ आ सकते हैं, तथा यह भी कि पेचिङमें एक स्थायी रूसी दूतावास स्थापित किया जायगा, और रूसी अपने धर्मके अनुसार पूजा-पाठ कर सकेंगे। राजदूतके निवासमे रूसी और लातीनी भाषाओंके जाननेवाले चार तरुण विद्यार्थी रह सकेंगे, जिनका खर्च चीन बर्दाश्त करेगा, और शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह लौटनेके लिये स्वतन्त्र रहेंगे। इस दूत-मिशनके ऊपर चीन सरकारको प्रतिवर्ष हजार चादीके रूबल और दस मन चावल खर्च करना पडता था। रूसी सरकार उसपर सोलह हजार चादीके रूबल खर्च करती थी, जिसमेंसे एक हजार रूबल अलबाजीन कसाकोकी पेचिङमें रहती तरुण सतानोकी शिक्षापर खर्च होता था। यद्यपि इस सधिके अनुसार रूसी हर साल अपने कारवाको भेज सकते थे, लेकिन वस्तुत १७२७ ई० और १७६२ ई०के बीचमें केवल छ कारवा गये। व्यापारके लिये कई तरहके निर्बंध थे, जिसके कारण निराबाध व्यापार नही हो पाता था। बिना एक साल क्याख्तामें रहे कोई चीनी व्यापारी वहां

रूसियोंके साथ व्यापार नहीं कर सकता था, सरकार उन्हींको लाइसेंस देती थी, जो कि रूसी भाषा लिख-बोल सकते थे। व्यापार बदलेमें होता था, किसी भी तरहके सिक्केका इस्तेमाल बिल्कुल वर्जित था। चीनी व्यापारी पहले क्याख्ता जाते और अपने पसंदके मालको चुनते, फिर रूसी व्यापारी उसी रातके लिये मैमाचेन आते। अपनी सरकारों द्वारा नियुक्त कमिश्नर (आयुक्तक) चायके माध्यमसे हर एक चीजका दाम निश्चित करते। चीनी व्यापारी चायके बदलेमें ऊनी कपड़े, चमड़े, छालें जैसी चीजें लेते।

७ पीतर II, अलेक्सी-पुत्र (१७२७-३० ई०)

एकातेरिनाके मरनेके बाद मशिकोफने अपने ही महलमें पीतरको गद्दीपर बैठाया। उस समय वह बारह वर्षका लड़का था। उसके नामपर मेशिकोफ अब शासन करने लगा। धीरे धीरे मेशिकोफके प्रति लोगोंमें बहुत असंतोष पैदा हो गया और उसे पकड़कर बेरियोजोफ (साइबेरिया) में निर्वासित कर दिया गया। अब उसका स्थान दोलगोरुकी राजुल-वंशने लिया। उसने अपनी कन्यासे सम्राट्का ब्याह करना चाहा। यह याद रखना चाहिये, कि पीतर ने अपने लिये "सम्राट" (एम्पेरातोर) की पदवी धारण की थी, जिसका प्रयोग अन्तिम जारतक होता रहा, यद्यपि लोग अधिकतर जारकी उपाधि ही इस्तेमाल करते थे। ब्याहकी तैयारी हो ही रही थी, इसी बीच पीतर II बीमार होकर मर गया। पीतरके साथ रोमनोफ वंशकी पुरुष-संतानोंका अन्त हो गया, इसके बाद रोमनोफ कुमारियां तथा उनके जर्मन पतियोंकी संतानें रूसपर शासन करती रहीं। ये जर्मन जार पूरीतौरसे रूसियोंमें मिल नहीं सके, उनके दरबारोंमें जर्मनोंका बाहुल्य था।

पीतर IIके समयकी एक उल्लेखनीय घटना है बेरिंगका भौगोलिक अभियान। १७वीं सदीके मध्यमें रूसियोंने कामचत्का तकका पता लगाकर उसपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था, और सिमओन देजनिओफने चुकोत्स्क प्रायद्वीपका चक्कर लगाकर सिद्ध कर दिया था, कि एसिया और अमेरिकाके बीचमें एक पतली-सी खाडी है। लेकिन यह बात १८वीं सदीके आरम्भमें भूल गई। अपनी मृत्युसे जरा-सा पहले पीतरने एसिया और अमेरिकाके मिलन-स्थानके बारेमें अधिक खोज-पता लगानेके लिये एक अभियान भेजनेकी आज्ञा दी। इस अभियानका नेता रूसी नौसेनाका एक अफसर तथा डेनमार्क-निवासी वीटस बेरिंग नियुक्त किया गया। पहले अभियान (१७२८-३० ई०)में बेरिंग (अपने नामसे प्रसिद्ध होनेवाली) खाड़ी तक गया, लेकिन उसने अमेरिकन तटभूमिकी पड़ताल नहीं की। दो साल बाद बेरिंग फ्योदोरोफ और ग्वोज्देफ दो रूसी सैनिक और भूगोलशास्त्रियोंके साथ गया। अबके उसने सिर्फ एसिया और अमेरिकाके तटोंपरकी ही जांच पड़ताल नहीं की, बल्कि वहांका पहला नक्शा तैयार किया। उसके बाद अमेरिका-तटके अलास्का प्रायद्वीपको रूसियोंने १७९७ ई०में अपना उपनिवेश बनाया, जिसे कि जारने १८६७ ई०में अमेरिकों के हाथमें बेच दिया।

८ अन्ना, इवान V-पुत्री (१७३०-४० ई०)

पीतर IIके मरनेके बाद कुछ समयतक निजी परिषद् (प्रिवी कौंसिल)ने शासनसूत्र अपने हाथमें लिया। इस परिषद्में दो पुराने राजुल-वंशों गोलित्सिन और दोल्गोरुकीका प्रमुत्व था। राजुल द० म० गोलित्सिन बहुत भारी जमीदार था, और परिषद्में उसकी चलती भी काफी थी। वह इंगलैण्ड और स्वीडनकी नकलपर राज्य-व्यवस्था करनेका पक्षपाती था, जिसमें शासनमें जमीदारोंका पलड़ा भारी होता। उसके प्रस्तावपर परिषद्ने पीतर I के भाई जार इवानकी पुत्री अन्ना को राजसिंहासन प्रदान किया। अन्नाका ब्याह पीतरने एक जर्मन राजुल (कूरलंडके ड्युक)के साथ किया था। ड्युकके मरनेके बाद बराबर वह वहीं रहती थी। परिषद्के सामन्तोंने कई शर्तें रक्खीं, जिसके बारेमें अन्नाने कहा "मैं सभी बातोंको बिना चूं चिराके माननेका वचन देती हूं।"

दरबारी चाहते भी नहीं थे, कि अन्ना राजकाजमें अधिक भाग ले, और वह भी अपने आनंद विलासमें समय काटना चाहती थी, जिसके लिये भारी परिमाणमें धन प्राप्त करना ही उसका

लक्ष्य था। पीतरबुर्गके हेमन्तप्रासादमें अपने चाटुकारोंमें घिरी वह अपना दिन बिताती थी। उसने अपने एक जर्मन दरबारी बीरेनको अपनी तरफसे राजकाज सँभालनेका काम दे दिया था। बीरेन एक निर्बुद्धि और अशिक्षित जर्मन अमीर था। उसने सभी प्रभावशाली पदोंपर जर्मनोंको भरना शुरू किया। वही वैदेशिक विभागका सचालन करते थे, और वही रूसी सेनाके सेनानायक थे। बीरेन रूसियोंको बड़ी तुच्छ दृष्टिसे देखता था। उसने कभी रूसी भाषा नहीं सीखी। लोगोंसे पैसे एठकर जर्मनीमें वह अपने लिये भूमि खरीदता तथा अपनी बीबीके लिये मूल्यवान् कपड़ों और रत्नोंको जमा करता। अन्नाके शासनके साथ रूसमें जर्मनोंका जबरदस्त प्रवेश शुरू हुआ, जो कि अन्तिम जारके समय हदतक पहुँच गया। रूसियोंके मनमें जर्मनोंके इस बर्तावसे यदि विद्वेष होने लगा, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। अन्नाके शासनकालमें कालासागरके तटपर अधिकार करनेके लिये तुर्की और क्रिमियाके साथ लड़ाई (१७३५-३९ ई०) हुई। रूसने तुर्की सेनाको कई जगह हराया। १७३९ ई० में तुर्कोंके साथ हुई सधिके अनुसार रूसको समुद्रतक द्नियेपर नदीके दोनों तट मिल गये। लेकिन लड़ाईपर जो खर्च करना पड़ा, उसके कारण देशके जनसाधारणकी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हो गई।

१७३७ ई०में अन्नाके शासनकालमें चीन और रूसके साथ व्यापारिक सबध अच्छे हो गये थे, इसलिये कारवाके व्यापारकी इजारेदारी किसी व्यापारीको न देकर खुला व्यापार करनेका रास्ता खोल दिया गया। व्यापारियोंको पेकिङ्ग भी जानेकी जरूरत नहीं थी। रूसी व्यापारी क्याख्ता में आके ठहरते और चीनी मैमाचिनमें—दोनों ही स्थान सीमातपर पास-पास थे। चीनी सरकार ने चीनी व्यापारियोंपर कुछ निर्बंध लगा रक्खे थे, जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं, और उसके कारण व्यापारमें कुछ अड़चन होती थी।

९ इवान VI, अन्ना-पुत्र (१७४०-४१ ई०)

अन्नाकी कोई सतान नहीं थी, इसलिये उसकी भतीजी अन्ना ल्योपोल्द-पुत्रीके बेटे इवानको राजगद्दी दी गई। नये जारकी मा एक जर्मन ड्युक (ब्रन्सविक)से ब्याही गई थी। १७४० ई०में अभी तीन महीनेका बच्चा ही था, जबकि इवानको गद्दीपर बैठा दिया गया। जारको कुछ करना-धरना भी नहीं था, इसलिये उसके बच्चे होनेसे कुछ बनने-बिगड़नेवाला नहीं था। उसकी मा राजमाता अभिभाविका घोषित की गई, लेकिन उसका शासन एक सालसे अधिक नहीं रहा। सभी जगह विदेशी जर्मनोंको देख राजधानीमें देशी अमीरोंके दिलमें आग लग रही थी। सैनिक अफसरों और सिपाहियों में भी इसके लिये असतोष फैला हुआ था। फ्रासके राजदूतने भी षड्यत्रमें सहायता दी, और २५ नवम्बर १७४१ ई०को पीतर I की पुत्री एलिजाबेत यकायक अपने अनुचरों और गारदकी एक टुकड़ीके साथ महलमें घुस आई। गारदोंने तुरन्त अन्ना ल्योपोल्द्-पुत्री और उसके परिवारको पकड़ लिया और जर्मनोंके साथ काफी दुर्व्यवहार करके एलिजाबेतको साम्राज्ञी घोषित कर दिया। शिशु सम्राट् इवानको श्लुशेलबर्गके किलेमें बद कर दिया गया, जहा उसे एकातेरिना IIके शासनकाल (१७६२-९६ ई०) में मार डाला गया।

१० एलिजाबेत, पीतर I-पुत्री (१७४१-६१ ई०)

एलिजाबेतके शासनकालमें रूसी सामन्तोंका प्रभाव काफी बढ़ा, और अमीरोंके फायदेके लिये कई नियम और विधान बनाये गये। अब केवल पुराने राजुलवशी ही किसानोंकी बस्ती-वाली भूमिके मालिक हो सकते थे। वह अपने अर्ध-दासोंको बिना अभियोगके साइबेरियामें निर्वासित कर सकते थे, जो आम तौरसे सेनामें भर्ती होकर जाते थे। एलिजाबेतको अपने आनद-मौजके सिवा किसी कामसे कोई वास्ता नहीं था। उसके यहा नाच, गाना और शराबकी मजलिसें लगातार होती रहती थीं। एलिजाबेतने अपने भतीजे कार्ल पीतर उलरिचको अपना उत्तराधिकारी बनाया। कार्ल पीतर I की पुत्री अन्ना और उसके पति ड्युक होल्स्टाइनका पुत्र था। पीतर रूसमें फ्योदोर-पुत्र कहा जाता था। वह बहुत ही निर्बलबुद्धि तरुण था। अठारह-बीस वर्षकी उमरमें भी अभी वह खिलौनो-

मे खेला करता और उनमे ऐसे बात करता मानो वह आदमी है। साथ ही अपने जर्मन होनेका उसे हदसे अधिक अभिमान था, और उसी परिमाणमे वह रूस और रूसियोंके साथ घृणा करता था। साम्राज्ञी एलिजावेतने उसका व्याह एक जर्मन राजकुमारी सोफिया अनहाल्ट-जर्व्स्तके साथ कर दिया, जो कि रूसमे एकातेरिना अलेक्सी-पुत्रीके नामसे प्रसिद्ध हुई—विना पिताके नामसे रूसमें किसी स्त्री-पुरुष को पुकारनेका रवाज नही है, इसलिये हरएकके साथ पितृनाम जोडना ही पडता है। एकातेरिना अपने पति जैसी नही थी। वह वडी योग्य और मेहनती स्त्री थी। उसने रूसी भाषा और रूसी रीति रवाजोका अच्छी तरह अध्ययन किया। वह रूसी सामन्तो और अमीरोंको हर तरहसे अपनी ओर खीचनेकी कोशिश करती थी।

११ पीतर III, फ्योदोर-पुत्र, पीतर I-नाती (१७६१-६२ ई०)

पीतरका शासन बहुत थोडे दिनोका था। वह अपने समयमें रूसी शासनको प्रुशियाके राजा फ्रेड्रिक (१७४०-८६ ई०) के नमूनेपर वनानेकी कोशिश करता रहा। फ्रेड्रिक वडा ही महत्त्वाकांक्षी शासक था, जिसके कारण उसके पडोसी बहुत चिन्तित रहते। फ्रास, आस्ट्रिया और सेक्सनीके साथ रूसने भी फ्रेड्रिकके विरुद्ध अपनी एक गुट बना ली थी। इगलैण्ड फ्रेड्रिकका पक्षपाती था। फ्रेड्रिकने पूर्वी पडोसीका विना ख्याल किये ही, सेक्सनीके ऊपर आक्रमण किया इसपर उसी साल रूसी सेना प्रुशियाके भीतर घुस गई, जिस साल अग्रेजोने पलासीकी लडाई (१७५७ ई०) जीतकर हिदुस्तानमें अपना दृढ शासन स्थापित किया। फ्रेड्रिकको अपनी सेनापर वडा अभिमान था। वह रूसी सेनाको बिल्कुल तुच्छ दृष्टिसे देखता था, लेकिन पहली ही झडपमें उसे अपनी राय बदलनी पडी। उसने अपने सबसे योग्य सेनापतियोको भारी सेना देकर रूसियोंके विरुद्ध भेजा। अगस्त १७५७ ई० मे जर्मनोने पहला आक्रमण किया, और यह आक्रमण हिटलरके ब्लित्जक्रीगका प्रथम नमूना था। यकायक आक्रमण करनेके कारण रूसी पहले कुछ तितर-बितरसे हो गये। मालूम होने लगा, जर्मन विजयी होगे। इसी समय जगलोमें छिपी हुई रूसी सेना मैदानमें कूद पडी। यह ब्लित्जक्रीगका अच्छा जवाव था। रूसियोने जर्मन सेनापर पूर्ण विजय प्राप्त की। कोय-निग्सवर्गके महादुर्गने विना प्रतिरोधके ही आत्म-समर्पण कर दिया। यदि रूसी सेनाने इस समय अवसरसे लाभ उठाया होता, यदि रूसके मित्रोने सुस्ती न दिखलाई होती, तो फ्रेड्रिकका सर्वनाश हुये विना नही रहता। अपनी सेनाको फिरसे सगठित करके १७५९ ई० मे फ्रेड्रिक ओडेर-पर-फ्राकफोतको खतरेमें डाले हुई रूसी सेनाके मुकाबिलेमें चला। सव प्रयत्न करके भी फ्रेड्रिकको बुरी तरहसे हारना पडा। जर्मन अपने हथियारो और झडोको छोडकर भाग गये। फ्रेड्रिक रूसियोंके हाथमे वदी होते बाल-बाल बचा। फ्रेड्रिक अत्यत निराश हुआ, जैसा कि उसने स्वय लिखा है "मै अभागा हू, जो जीनेके लिये बचा हू, जिस समय मै यह लिख रहा हू, हरएक आदमी भाग रहा है। इन आदमियोंके ऊपर मेरा कोई वस नही है।" लेकिन जिस वक्त फ्रेड्रिक इस तरहसे निराश था, उसी वक्त उसके पश्चिमी शत्रुओने उसे बचनेका अवसर दे दिया। १७६० ई० मे एक छोटीसी रूसी सेनाने जर्मन राजधानी बर्लिनपर कूच किया। यद्यपि राजधानीमें छब्बीस बटालियन पैदल, छियालीस रिसाला स्क्वाड्रन और एक सौ वीस भारी तोपें थी, लेकिन जर्मन सेनापतियोने नगरकी प्रतिरक्षा करना बेकार समझा। रातके वक्त वह अपनी सेना लेकर वाहर चले गये, और सवेरेके वक्त बर्लिनके नगराधिकारियोंने रूसी सेना पतियोको मखमलके गद्देपर रखकर नगरकी कुजी भेंट कर दी। फ्रेड्रिककी दुरवस्था चरम सीमा तक पहुच गई थी। इसी वक्त दिसम्बर १७६१ ई० में रूसी साम्राज्ञी एलिजावेत मर गई। उसके उत्तरा-धिकारी पीतर II ने प्रुशियाके साथ क्षणिक विराम-सधि करके फ्रेड्रिकको बचा लिया। इस युद्धमें अपनी विजयो द्वारा रूसने पश्चिमी युरोपको चकित कर दिया। रूसी सेनापति प अ रुम्यान्त्सेफ (१७२५-९६ ई०) के युद्धकौशलका इसमे वहुत भारी हाथ था।

पीतरके दो सालके राज्यमें रूसकी प्रगतिको लाभ नही हानि पहुची। फिर जर्मन सेना पतियों और अफसरोंकी सब जगह भरमार हो गई। पीतरकी दिलचस्पी रूसकी अपेक्षा अपने होल्स्टाइन वशसे अधिक थी। वह होल्स्टाइनके लिये डेनमार्कसे लड़नेकी तैयारी भी कर रहा था। लेकिन अपनी

महत्वाकाक्षाओंके अनुसार उसमें योग्यता नही थी । उसकी पत्नी एकातेरिना अच्छी-तरह जानती थी, कि उसका नालायक पति सिहासनको खोकर रहेगा, इसलिये स्त्री इसके षड्यत्रमे वह स्वय शामिल हो गई। गारदके अफसर दो-भाई ओरलोफ षड्यत्रके मुखिया थे । २८ जून १७६२ ई० के वडे तडके ही उन्होने एकातेरिनाको उपनगरके एक प्रासादमे पीतरबुगमे लाकर साम्राज्ञी घोषित कर दिया। अगले दिन पीतरने क्रोन्स्तात्में भाग जानेका व्यर्थ प्रयत्न किया, फिर सिहासनसे बाकायदा इस्तीफा दे दिया । ऐसे नालायक पतिको भी अधिक दिनातक जीनेका अधिकार देना बुद्धिमानीकी बात नही थी, इसलिये थोडे ही दिनो बाद वह मार डाला गया ।

१२ एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी (१७६२–९६ ई०)

एकातेरिना योग्य और सुशिक्षिता स्त्री थी । जिस वक्त वह गद्दीपर बैठी, उस वक्त राज्यकी अवस्था अस्तव्यस्त हो रही थी, राजकोष खाली था, सैनिकोको सात महीनेसे वेतन नही मिला था । मरम्मत न होनेसे, युद्धपोत और दुर्ग खराब हो रहे थे । जनतामे बहुत असतोष था, विशेषकर कारखानोमें काम करनेवाले उचास हजार मजूरो और जमीदारोके डेढ लाख अर्ध-दास कैदियोंसे जेल भरे हुये थे । एकातेरिनाने यद्यपि जमीदारोके अधिकारोपर प्रहार नही किया, लेकिन तब भी अपने शासनके आरम्भमें उसने किसानो और जनसाधारणके बोझेको हल्का करनेकी कोशिश की । उसे पश्चिमके नये विचारोवाले दार्शनिकोंके ग्रथोंके पढनेका बडा शौक था । फ्रेंच विचारक वोल्तेरके साथ उसका पत्र-व्यवहार था । उस समय वोल्तेर, मोन्तेस्को, दीदरो और दूसरे फ्रेंच विचारक अपनी सशक्त लेखनी द्वारा सामन्तवादी व्यवस्थापर प्रहार कर रहे थे, मिथ्या विश्वासोको हटाकर बुद्धिवादको आगे बढा रहे थे । एकातेरिना उनके इन विचारोंसे अवगत थी । वह वोल्तेर, दीदरो और दूसरोंसे पत्र-व्यवहार करके यह दिखलाना चाहती थी, कि जिस आदर्श शासन या नृपतिके बारेमें तुम प्रचार कर रहे हो, वैसी बुद्धिमती और नई रोशनीवाली शासिका मै हू । रूसके किसानोमें उस वक्त भूख और अज्ञानका अखड राज्य था, लेकिन एकातेरिना वोल्तेरको लिखती थी, कि रूसमें एक भी ऐसा किसान नही है, जो इच्छा होनेपर मुर्गी न खा सकता हो बल्कि अब तो वह मुर्गीकी जगह टर्कीका खाना ज्यादा पसद करते हैं । एकातेरिना पाखडमे बहुत ही चतुर थी । वह राजकाजमें सीधे भाग लेती थी । वह स्वय कानूनो और राजादेशोका मसविदा बनाती थी । साहित्यमें उसकी दिलचस्पी थी और स्वय एक पत्रिका "सबका थोडा" निकालती थी । एकातेरिनाका शासन सामतो और अमीरोंके लिये रूसी इतिहासका सुनहला समय था ।

जर्मनी (प्रुशिया) के साथ सात वर्ष (१७५६-६३ ई०) वाला युद्ध समाप्त होनेके बाद एकातेरिनाने राज्य सभाला था । यद्यपि बीचमे उसका नालायक पति आ घुसा था, लेकिन थोडे ही समयमें एकातेरिनाने रूसकी धाकको फिरसे जमा दिया । आस्ट्रिया और फ्रास रूसकी बढती हुई शक्तिको शकाकी दृष्टिसे देखते थे । फ्रेंच व्यापारी पूर्वी देशोंके व्यापारपर एकाधिपत्य रखना चाहते थे, इसलिये वह नही चाहते थे, कि रूसियोकी शक्ति अधिक बढे । आजकलके अमेरिकाकी तरह उस समयका फ्रास रूसके चारो तरफ शत्रु-राज्योंका घेरा डालना चाहता था । इसके लिये उसने तुर्की, पोलैण्ड, स्वीडन और आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर एक जबरदस्त गुट बनाना चाहा । रूसने भी इसके विरुद्धमें प्रुशिया, इगलैंड और दूसरे राज्योको मिलाकर एक गुट बनानेकी कोशिश की, लेकिन विरोधी स्वार्थोंके कारण दोनो अपने उद्देश्यमें सफल नही हुये । आस्ट्रिया पश्चिमी उक्रइनकी उर्वर भूमिको चाहती थी, प्रुशिया पोलन्दकी निम्न-विस्तुला-उपत्यकापर हाथ साफ करना चाहती थी, और रूस अपने हाथसे छिने बेलोरूसी और उक्रइनी इलाकोंको लौटाना चाहता था । इन स्वार्थों के साथ तीनोमेंसे कोई नही चाहता था, कि किसीकी शक्ति अधिक बढ जाये । शताब्दियोतक शक्तिशाली रहनेके बाद पोलन्द अब निर्बल हो गया था । वहाके अमीरो और सामन्तोने राजाके अधिकारको बहुत सीमित कर दिया था । उधर कैथलिक पोल ग्रीक-चर्चके अनुयायी उक्रइनो और बेलोरूसियोके ऊपर तरह-तरहके अत्याचार कर रहे थे । एकातेरिना कैसे चुप रह सकती थी ? १७६३ ई० में अगस्तस् III के मरनेपर एकातेरिनाके उम्मीदवार स्तानिस्लाउस पोनियातोव्स्कीको पोलन्दका राजा

चुना गया। रूस और प्रुशिया दोनोंने माग की, कि पोलन्दमें ग्रीक-विश्वासियो तथा प्रोटेसटेंटों (सुधार चर्च) को कैथलिकोंके बराबर अधिकार दिया जाय। इन्कार करनेपर रूसी सेना पोलन्दके भीतर भेज दी गई। पोलिश ससद्को मजबूर होकर रूसकी मागको स्वीकार करना पडा। इसी समय एकातेरिना ने पोलन्दको करीब-करीब अपने सरक्षणमे ले लिया। रूसके बढे हुये प्रभावको देखकर आस्ट्रिया और प्रुशियाको चिंता हो गई। फ्रेड्रिकने समझा, कि रूस सारे पोलन्दको हडप लेगा, इसलिये उसने आस्ट्रिया, प्रुशिया और रूसके बीच पोलन्दके बट जानेकी एक योजना बनाई, जिसे तीनो राज्याने स्वीकार किया—प्रुशियाको पोलन्दका बाल्तिक तट तथा पश्चिमी भाग मिला। इस प्रकार प्रुशियाका पूर्वी भाग, जो अभी तक अलग-अलग था, पश्चिमी भाग (ब्राडेनबर्ग) से मिल गया। प्रुशियाने डन्जिग और थोनको लेना चाहा, लेकिन एकातेरिनाने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाको उक्रइनी-गलिसिया मिली, और रूसको बेलोरूसियाका कुछ भाग। १७७३ ई०में इस प्रकार पोलन्दका पहला बटवारा हुआ, जो कि बहुत कुछ प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०) तक कायम रहा।

प्रथम तुर्की युद्ध (१७६८-७४ ई०)—फ्रास नही चाहता था, कि रूसकी शक्ति और बढे, इसलिये उसने तुर्कीको भडकाकर लडाई छिडवा दी। १७६८ ई०में सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोल स्थित रूसी राजदूतसे माग की, कि अपनी सेना पोलन्दसे हटा लो। तुर्कीकी इस अनधिकार चेष्टाको रूस कैसे स्वीकार कर सकता था? इसपर रूसी दूतको पकडकर जेलमें बन्द कर दिया गया। युरोपके लोग समझते थे, कि रूस तुर्की और पोलन्द दोनोंसे एक ही समय नही लड सकता। क्रिमिया का खान अपनेको तुर्कीके खलीफाके अधीन समझता था। उसने पहल की और १७६९ ई० के वसन्त मे क्रिमियाके तारतारोंने दक्षिणी रूसके सीमाती इलाकोम लूट-मार मचाई। रूसकी सीमाके भीतर यह तारतारोकी अन्तिम लूट-मार थी। प्रसिद्ध सेनापति रुम्यान्त्सेफ—जिसने सप्तवर्षीय जर्मन-युद्धम भारी यश कमाया था—एक बडी सेना लेकर दक्षिणकी ओर बढा। उसने अपने कई योग्य सहायक चुने थे, जिनमें अलेक्सान्द्र वासिली-पुत्र सुवारोफ भी था—सुवारोफ सभी कालके रूसी सेनापतियो का शिरोमणि माना जाता है। रुम्यान्त्सेफ सबसे पहले शत्रुकी सैनिक शक्तिको अधिकसे अधिक ध्वस्त करना चाहता था। १७७० ई० मे उसे पता लगा, कि लारगा नदीसे नातिदूर अस्सी हजार तुर्क-सेना छावनी डाले पडी है। रूसी सेनापतिके पास उस समय केवल तीस हजार सैनिक थे, लेकिन उसने आक्रमण कर दिया और तुर्क-सेनाको पूरी तौरसे हारना पडा। इसके दो सप्ताह बाद वह एक ओरसे अस्सी हजार तारतारो और दूसरी ओरसे तुर्कीके वजीरकी अधीनतामें डेढ लाख तुर्क सैनिकोके बीचम घिर गया। लेकिन इससे रुम्यान्त्सेफको घबराहट नही हुई। उसने यह कहते हुये पहले स्वय आक्रमण करनेका निश्चय किया "छोटी सेनासे बडी सेनाको हराना एक कला और कीर्तिकी बात है, और बडी सेनासे अधिक शक्तिशाली शत्रुको हरानेमें विशेष चातुरीकी अवश्यकता नही है।" तुर्की तोपखाने ने जबरदस्त गोलाबारी की और तुर्क सवारोंने भारी सख्यामे रूसियोका प्रतिरोध किया। निर्णयकी जब आखिरी घडी आई, तो रूसी सेना घबडाने लगी, इसी समय रुम्यान्त्सेफ आ पहुचा और उसने चिल्लाकर कहा—"डटे रहो लडको" और वह स्वय युद्धके भीतर पिल पडा। तुर्कोकी भारी हार हुई, और द्नियेस्तर तथा दन्यूबके बीचकी भूमि रूसियोंके लिये खाली हो गई। रूसी सेना अब दन्यूब महानदके वाम तटपर पहुच गई। इस विजयके लिये रुम्यान्त्सेफको "जा-दुनाइस्की" (दन्यूब वाला) की उपाधि प्राप्त हुई। स्थलपर इस तरह सफलता प्राप्त करके रूसी नौसेनाने जलमें भी अपनी श्रेष्ठता दिखलाई और उसने सारे तुर्की बेडेको नष्ट कर दिया। १७७१ ई० मे थोडे ही समयके भीतर रूसी सेनाने सारे क्रिमिया प्रायद्वीपपर अधिकार कर लिया। रूसी सेना दन्यूबके किनारेपर नही रुकी और उसने कई बार इस महानदको पार करके आक्रमण किया, जिसमें अलेक्सान्द्र सुवारोफने अपने सैनिक कौशलका बहुत अच्छा परिचय दिया। रूस अपनी विजययात्राको और भी जारी रखता, लेकिन एक तो युद्धके अपार व्ययका सवाल था, दूसरे इसी समय पुगाचेफके नेतृत्वमें रूसी किसानोंने जबदस्त विद्रोह कर दिया था। एकातेरिनाने १७७४ ई०मे जल्दी-जल्दी तुर्कीके साथ सधि कर ली। द्नियेपर और बुगके बीचका प्रदेश रूसको मिला और साथ ही कालासागरमें घुसनेकी केर्चकी खाडी भी। अब रूसी जहाज स्वच्छदतापूर्वक कालासागरमे जा सकते थे, तुर्कीने दरेदानियाल (दरदानेल्स)

और वासपोरसकी खाडियोको भी रूमी जहाजोंके लिये खोल दिया। क्रिमियाको तातारी तुर्कोंकी अधीनतासे स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया, और अब उसके ऊपर रूसका प्रभाव बढ चला।

किसान-सघर्ष—रूसी अपने पूवजो (शको) के समयसे ही योद्धा-जाति है। सामन्ती अत्याचारोको रूसी किसान और अर्ध-दास आख मूदकर हर वक्त बर्दाश्त करनेके लिये तयार नही रहते थे। १६वी से १८वी सदीके बीचमे केवल मध्य-एसियामे ही चालीसके करीब विद्रोह हुये। वोल्गा प्रदेशमे रूसी जमीदारो और अफसरोका अत्याचार बहुत बढा हुआ था। यह वह इलाका था, जहा-पर कि रूसियो और एसियाई जातियोंके इलाके एक दूसरेके पडोसमे पडते थे। बाशकिरोकी भूमिपर रूसी व्यापारियो, कारखानेवालोकी खास तौरसे गृध्र-दृष्टि थी। कलमक १७७० ई० के आसपास तक निम्न वोल्गाके दोनो तटोपर रहते थे, लेकिन १७७१ ई०मे शासकोंके अत्याचारसे परेशान तथा चीनके प्रलोभनके कारण वोलगाके बायें तटवाले कलमक अपने सारे तम्बुओ और पशुओको लेकर चीनकी ओर चले गये, जिसके बारेमे हम अभी कहनेवाले है—यह कलमक चीन द्वारा पूर्वी तुर्किस्तानमे बसाये गये। वोल्गाके दाहिने तटपर अब भी कलमक-मगोल रहते थे। किसानोका विद्रोह पहले-पहल यायिक (उराल) नदीके तटपर बसनेवाले रूसी कसाकोमे फैला। कसाक जिस वक्त भागकर जापरोजे और दोनकी भूमिमें बसे, उस वक्त उनमे उतनी सामाजिक विषमता नही थी, लेकिन अब उनके भीतर धनियो और गरीबोका भारी भेद हो गया था। सरकारी अफसर धनी कसाकोका पक्ष करते थे, और जरा भी विरोध करनेपर उन्हे बडी बुरी तरहसे दबा देते थे। १७७२ ई० मे यायित्स्क नगरमे कसाकोने विद्रोह करके जेनरल त्राउबेन्बर्ग और कितने ही कसाक आतमनो (सरदारो) को मार डाला। लेकिन सरकारी सेनाने आकर यायिकके कसाकोंके विद्रोहको दबा दिया। बहुतसे कसाक मारे गये, और बहुतसे वहासे बच निकलनेमे भी सफल हुये। तुर्कोसे लडाई हो रही थी, इसी समय दोन और यायिकके कसाकोमें अफवाह उडी, कि जार पीतर III मरा नही है, बल्कि वह हमारे बीचमे छिपा हुआ है। १७७३ ई० के शरदमें एमेल्यान पुगाचेफ नामक एक कसाकने विद्रोहका नेतृत्व अपने हाथमें लिया। वह उसी जिमोवेइस्क गावमे पैदा हुआ था, जिसे प्रथम किसान-वीर स्तेपान राजिनको पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

पुगाचेफने सप्तवर्षीय युद्धमें भाग लिया था, तुर्कोके युद्धमे भी लडा था। बीमारीके कारण छुट्टी पाकर वह घर आया था, लेकिन उसने फिर लौटकर जाना पसद नही किया। वह दोन, वोल्गा और यायिककी उपत्यकाओमे घूमता रहा। वहा उसे कितने ही दुदशाग्रस्त भगोडे किसान तथा उरालके कारखानोंके मजदूर मिले। अपने इस पर्यटनमें उसे लोगोसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका मौका मिला और धीरे-धीरे उसका एक दल बन गया। अपनेको सम्राट् पीतर III कहते हुये वह सितम्बर १७७३ ई० मे यायिकके तटपर पहुचा। लोग उसके झडेके नीचे आने लगे। पहले वह अपने आदमियोको लेकर ओरेनबुर्गकी ओर गया। गेरिसनको अधिकारमे कर किलेपर अधिकार करनेमे उसे कोई कठिनाई नही हुई। १७७३ ई० के अक्तूबरमें पुगाचेफ ओरेनबुर्गके नगर-प्राकारके पास पहुचा, जहा एक मजबूत किला और काफी सैनिक रहते थे। पुगाचेफ छ महीने उसे घेरे रहा। इस विद्रोहने आसपासके लोगोमे उत्तेजना पैदा की। कजाक (एसियाई) घुमन्तू भी उसकी सेनामे आकर शामिल होने लगे, निम्न वोल्गा और कालासागरके बीचके घुमन्तू कल्मक मगोल भी पुगाचेफकी सेनामें भर्ती होने लगे। तारतार, बश्किर और मारी नौजवान भी यायिकके तटपर पुगाचेफके पास पहुचने लगे। यह विद्रोह हर जातिके केवल किसानो तक ही सीमित नही था, बल्कि इसमे उरालके धातु-कारखानेमे काम करनेवाले मजदूर और दूसरे भी शामिल थे। धीरे-धीरे विद्रोह एक किसान-युद्धके रूपमे परिणत हो गया। पुगाचेफकी सेनामें कलमको, बश्किरो, तारतारो, कारखानोके मजदूरो और दूसरोकी अलग-अलग पल्टने सगठित थी। उनके पास हथियारोकी कमी थी। बहुत थोडोंके पास पलीतावाली बन्दूकें या पिस्तौलें थी, बाकी पुराने तरहके हथियारोंसे सज्जित थे। कुछ तोपें पकडी गई थी, जिनका एक तोपखाना बना लिया गया था। उरालके लोहेके कारखानोके कारीगरोकी सहानुभूति होनेके कारण, कुछ नई बदूकें भी विद्रोहियोको मिल रही थी। पुगाचेफ अपनी घोषणाओंको सम्राट् पीतर III के नामसे निकालता था, किसानो और गरीबोके लिये जितना कुछ उससे हो सकता था, उतना कर

रहा था और उसमे भी अधिकका वचन देता था। १७७३ ई०के अन्तमें ओरेनबुर्गको मुक्त करानेके लिये जेनरल कारके नेतृत्वमें एक सरकारी सेना आई, जिसे पुगाचेफने हरा दिया, इसके कारण उसका प्रभाव और बढ गया। सारे रूसके अमीरो, जमीदारो और धनियोंमे आतक छा गया। वोल्गासे सैंकडो मील दूर रहनेवाले जमीदार भी हर वक्त भयके मारे कापने लगे। लेकिन मार्च १७७४ ई० में सरकारी सेनाने पुगाचेफको ओरेनबुर्गके पास हरा दिया। अभी भी उसने अपने सघर्षको नहीं छोडा। पहले वह वश्किरोंके प्रदेशमें गया। फिर रूसी किसानो, वश्किरो तथा धातु-कारखानेके मजदूरोकी सेना सगठित कर वह कामा नदीकी ओर बढते कजानकी ओर चला, जो कि सारे वोल्गा प्रदेशका शासन केन्द्र था। पुगाचेफ जुलाई १७७४ ई० में कजान पहुचा। यहा भी उसे अन्तमें हारना पडा, और वह थोडेसे आदमियोके साथ वोल्गाके दक्षिण तटकी ओर भागा। सरकारी सेनाने पुगाचेफका पीछा करना शुरू किया। वोल्गाके दाहिने किनारेपर उसके पास अब थोडे हीसे आदमी रह गये थे, लेकिन जब वह घने वसे हुये इलाकेमें पहुचा, तो निजनी-नवोगोरदके इलाकेने हथियार उठा लिया। विना अधिक प्रतिरोधके एकके वाद एक नगरोने आत्मसमर्पण किया। परन्तु पुगाचेफकी यह सफलता क्षणिक सावित हुई। बाकायदा शिक्षाप्राप्त सरकारी सेनाके सामने किसानोका दल कैसे डटा रहता? पुगाचेफ पेंजा, सरातोफ और कमिशिन होते अगस्तके अतमें जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद) पहुचा, जहापर सरकारी सेनाने नगरसे नातिदूर पुगाचेफकी शक्तिको छिन्न भिन्न कर दिया। तो भी वह अपने कुछ आदमियोंके साथ वोल्गा पार करनेमें सफल हुआ, लेकिन इसके वाद लोगोका उसकी सफलतापर विश्वास नही रह गया। अन्तमें कसाक ज्येष्ठकोने उसे पकडकर सरकारके हाथमें दे दिया। हाथ-पैर बाधकर एक लकडीके पिंजडेमें पुगाचेफको मास्को ले जा जनवरी १७७५ ई० मे फासी दे दी गई। पुगाचेफने भारी जोश और वडी-वडी आशायें रूसकी गरीव जनतामें पैदा कर दी थी, लेकिन उस समय वह विखरे और अशिक्षित किसानोको ही विद्रोहियोकी सेनामें शामिल कर सकता था। अभी कारखानेके मजदूरोकी पल्टन तैयार नही हुई थी, जो अपने सुदृढ सगठनोसे किसान क्रान्तिको सफल बनाती।

जैसा कि पहले कहा गया, एकातेरिनाके शासनकालमे अमीरो और जमीदारोका बल और भी अधिक वढ गया। १७७५ ई० में किसान-विद्रोहको दवानेके वाद एकातेरिनाने राज्यके प्रबन्धमें कितने ही नये सुधार किये। सारा राज्य पचास गुबर्नियो (प्रदेशो) में वाट दिया गया—प्रत्येक गुबर्नियामें प्राय तीन लाखकी आवादी थी। हरेक गुबर्निया फिर कितने ही उयेज्दोमें वाटी गई, जिसमें प्राय तीस हजारकी आवादी थी। कभी-कभी दो-तीन गुबर्नियापर भी एक राज्यपाल नियुक्त होता, लेकिन अधिकतर प्रत्येक गुबर्नियाका एक राज्यपाल होता। इसके कहनेकी अवश्यकता नही, कि राज्यपाल या उयेज्दके शासक राजुलो (सामन्तो) और वायरो (अमीरो) में से ही होते थे। १७८५ ई० मे नगरके शासनके लिये भी नई व्यवस्था कायम की गई, और उसका कार्य-भार नगरपालिकाके ऊपर दिया गया, जिसके सबसे वडे अधिकारी "गरोदनिची" को सरकार नियुक्त करती थी।

वैदेशिक नीति—एकातेरिनाका शासनकाल रूसके भारी प्रसारका काल था। १८वी शताब्दी की अन्तिम चार दशाब्दिया रूसकी सीमाको अधिक वढाने और मजवूत करनेके लिये विशेष महत्त्व रखती है। एकातेरिनाके शासनकालमें ही तुर्की और स्वीडनके साथ दो-दो जवरदस्त युद्ध हुये। प्रथम तुर्की युद्धके समय १७३४ ई०में क्रिमियाके ऊपर रूसका सरक्षण स्थापित हो गया था। कालासागरपर निरावाध अधिकार करनेके लिये क्रिमियाका रूसके हाथमें जाना आवश्यक था। क्रिमियाके खानामें आपसमें उत्तराधिकारके लिये झगडे होते ही रहते थे। रूसने उससे फायदा उठाया, सेना भेज शगिन गिराईको पहले खान घोषित किया, फिर १७८३ ई० में शगिनको अधिकारच्युत करके तोरिदाके नाम से क्रिमियाको एक गुबर्निया बना दिया। अब कालासागरके तटकी काली मिट्टीवाली उवर भूमि (नवा रोसिया) रूसियोंके हाथमें थी, जिसके अच्छे-अच्छे इलाकोको अपने हाथमें करनेके लिये रूसी सामन्त गिद्धकी तरह टूट पडे। क्रिमिया प्रायद्वीपके भीतर भी उन्होने वैसा ही किया, और निवासी तारतार पहाडोकी ओर सिमटनेके लिये मजबूर हुये। जेनरल पोतेमकिन एकातेरिनाके कृपापात्रको क्रिमियाका महाराज्यपाल नियुक्त किया गया, जिसने अपना घर भरनेमें कोई कसर उठा

नहीं रक्खी। सेनाके लिये भर्ती किये गये रगरूटोको उसने अपने गावोंमें बसा दिया। नवारोसिया और क्रिमियामें नये नगर और दुर्ग स्थापित किये गये। निम्न द्नियेपरके तटपर एकातेरिनोस्लाव (आधुनिक द्नियेपरोपेत्रोव्स्क) की स्थापना हुई, जो कि इस प्रदेशका शासनकेन्द्र बना। क्रिमियाम सेवस्तोपोलमें एक नौसैनिक अड्डा कायम किया गया, द्नियेपर नदीके मुहाने खेर्सोनका किला तयार हुआ।

क्रिमियाके तातार धर्म और जातिमे तुर्कोंके सबधी थे, इसलिये क्रिमियामें रूस जो कुछ कर रहा था, उसे तुर्की चुपचाप बर्दाश्त नही कर सकता था। रूसियोको यह मालूम था, इसीलिये आस्ट्रियाके साथ सहायताकी सधि करके एकातेरिनाने भी युद्धकी तैयारी की। फ्रास तुर्कीको भडकानेके लिये मौजूद था, फिर १७८७ ई० मे द्वितीय तुर्की-युद्ध क्यो न घोषित होता? यह याद रखनेकी बात है कि १८वी शताब्दीके उत्तराधसे आज तक तुर्की किसी न किसी पश्चिमी शक्तिके हाथ म खेलते रूसको आगे बढनेका मौका देता रहा। आज जो अमेरिकाके पीठ ठोकनेपर तुर्की रूसके विरुद्ध ताल ठोक रहा है, उसका एक मुख्य कारण है आर्मेनिया और जार्जिया गणराज्योंके कुछ जिलाको प्रथम विश्व-युद्धके बाद हजारो आदमियोंके निष्ठुर हत्याके अनन्तर तुर्कीका दबा बैठना। रूसमे सबध जब खराब नही हुआ था, उस समय अमेरिका-इगलड-फ्रास आर्मेनियनोंके खूनसे रगी उनकी भूमिको लौटा देनेके लिये तुर्कीपर जोर दे रहे थे, लेकिन अब वह उसका नाम भी जीभपर आने नही देते। यह निश्चय ही है, कि तुर्कोंके पेटसे इन जिलोको उगलवाये विना सोवियत राष्ट्र चैन नही लेगा।

तुर्कीने इस युद्धका आरम्भ द्नियेपरकी एक शाखापर बने हुये किनबर्न रूसी किलेपर अधिकार करके किया, लेकिन वहाका सेनप सुवारोफ था। उसने तुर्कोको वहासे मार भगाया। अगले साल आस्ट्रियाने भी रूसकी ओरसे युद्ध घोषित किया। इस समय रूसी सेना तुर्की किले उशाकोफका मुहा-सिरा कर रही थी। रूसको काफी प्राणहानि उठानी पडी, लेकिन अन्तमे उन्होने किलेको सर कर लिया। १७८९ ई०मे दो और लडाइयोमें सुवारोफने तुर्कोको हराया। आस्ट्रियाने ऐन मौके पर धोखा देकर तुर्कोंसे सुलह कर ली, लेकिन रूसियोने युद्ध जारी रखा। १७९० ई०मे उन्होने दन्यूब (दुनाइ) मुहानेपर तुर्कोंके बहुत ही मजबूत किले इस्माईलको घेर लिया। यहापर भी घनघोर युद्ध हुआ, और अन्तमे इस्माईलके किलेपर रूसियोका अधिकार होगया। युद्धमे छब्बीस हजार तुर्क मारे गये। सुवारोफ जिस वक्त स्थलपर विजयपर विजय प्राप्त कर रहा था, उसी समय रूसी नौसेनापति अद्-मिरल फ्योदोर उशाकोफने भी तुर्कोंके जगी बेडे पर कई विजय प्राप्त की। इस्माईलके मुहासिरेके समय समुद्रके रास्ते उसने स्थलसेनाकी बडी सहायता की। सामुद्रिक युद्धमे दो हजार तुर्क मारे या डूब गये, जब कि उशाकोफके केवल इक्कीस आदमी मरे और पच्चीस घायल हुये। इस प्रतिरोधके बाद रूसी सेना इस्माईलमें उतर गई, लेकिन अभी अन्तिम निर्णायक सामुद्रिक युद्ध नही हुआ था, जिसमे तुर्की बेडेके बुरी तरह हारनेके तथा इस्माईलपर सुवारोफके अधिकार हो जानेके बाद युद्धमे तुर्कोको हार माननी पडी। १७९१ ई० में यास्सीमें तुर्कीने सधिपत्र लिख क्रिमियापर रूसके अधिकारको स्वीकारकर दक्षिणी बुग और द्नियेस्तरकी बीचकी भूमिको भी रूसके हाथमें दे दिया। इस युद्धके बाद कालासागरका सारा उत्तरी तट रूसका हो गया। लेकिन अब भी वतमान मोल्दावी सोवियत समाजवादी गणराज्य तुर्कोंके हाथमे ही रहा।

दक्षिणके शत्रुको आगे बढते देखकर स्वीडन कैसे अवसरसे फायदा उठाये बिना रह सकता था? उसने भी १७८८ ई०मे रूसके ऊपर प्रहार किया, लेकिन उसमें उसे सफलता नही मिली, और १७९० ई०में पुरानी सीमाके अनुसार ही दोनो देशोंमें सुलह हो गई।

चीनसे सबध—रूस और चीनके बीच मनोमालिन्यका कारण रूस द्वारा एक मगोल भगोडे राजाको शरण देना था। अमुरसना जुगर-कलमक राजवशका अन्तिम राजा भागकर साइबेरियामे चला गया था। चीनी सरकारने उसे समर्पित करनेके लिये रूसको लिखा, लेकिन रूसने वैसा नही किया। इसके थोडे ही समय बाद अमुरसना मर गया। चीनने फिर भी अमुरसनाकी लाश और दूसरे जुगर राजुलोको देनेकी माग की। न देनेपर नाराज होकर चीनने पेचिङ्ग में रहनेवाले सभी रूसी पादरियोको जामिनके रूपमे बदीखानेमें डाल दिया। व्यापारिक सबधमें गडबडी पैदा होनेमें

एक कारण था तुरगुत मगोलोका १७ वीसदीमे रूसके भीतर वोल्गाके किनारे चला जाना। कुछ समय तक तो वह शातिपूर्वक रहे, लेकिन उन्होने देखा, कि रूस और तुर्कोंके चक्कीके दो पाटोके भीतर उन्हें पिस जाना है। उधर तुलिशिनके दूतमडलने उन्हें लौटनेका भी बहुत प्रलोभन दिया। तुरगुत मगोल घुमन्तू थे, लेकिन अपनी पुरानी मगोल भूमिके साथ उनका बहुत स्नेह था। १७७१ ई०में रूसियो और तुर्कोंके बीचमे जो सघर्ष हुआ, उसमे तुरगुतोने रूसका पक्ष लिया। इसी समय तुर्कोंके साथ लडते उन्हे अपनी शक्तिका भान हुआ, और वह समझने लगे, कि तुर्कों (कजाको) के बीचसे चीरते-फाडते हम अपनी जन्मभूमिको लौट सकते है। ५ जनवरी १७७२ ई० को एक दिन यकायक सात लाख तुरगुत परिवारोने पूर्वकी ओर प्रस्थान कर दिया। रूसियोने पहले समझानेकी कोशिश की, फिर कुछ सेनाका भी उपयोग किया, लेकिन उस समय वह दक्षिणी शत्रुओंके साथ भी फसे हुये थे, इसलिये पूरी शक्ति नहीं लगा सकते थे। कजाक-तुर्कोंने अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वियोको आसानीसे बढ निकलनेका मौका नही दिया। तो भी तुरगुत अपने लाखो ऊटो, घोडो, भेडो, तम्बुओ और दूसरे सामानके साथ बालबच्चो को लिये, पद-पदपर कजाकोंसे लडते आगेकी ओर ही बढते गये। आठ महीनेकी इतिहासकी इस अद्वितीय यात्राके बाद तुरगुत जब इली नदीके तटपर पहुचे, तो सात लाखकी जगह अब वह तीन लाख आदमी रह गये थे। इलीके तटपर चीनने उनका स्वागत किया, और उन्हे पशु, अन्न और पैसेसे मदद देकर पासमे ही अलताई (सुवर्ण) की पहाडी भूमिमें बसा दिया। रूसने कुछ थोडे-से मगोलों को शरण दी थी, अब चीनने लाखोकी सख्यामे चीनी प्रजाको अपने यहा जगह देकर उसका बदला लिया। रूसने भी अब चीनियोको प्रलोभन देकर अपनी सीमाके भीतर रखना शुरू किया। इसपर दोनो राज्योके बीच शाति कैसे कायम रह सकती थी? चीन-सम्राट् काउ-चुङ (च्यानलुङ १७३५ ९५ ई०) ने विरोध प्रदर्शित करते हुये लिखा था

"परीक्षण करनेपर हमारे दोनो देशोंके समझौतोंके भीतर पता लगा, कि अगर सीमातपर किसी राज्यका चोर पकडा जाय, तो दोनो ओरके सयुक्त अधिकारियोंके सामने उसके बारेमे जाच पडताल होनी चाहिये और अपराधी साबित होनेपर उसे मृत्युदड देना चाहिये। इसी विधानके अनु सार मेरे चावालीसवे सवत्सरमे तुम्हारे यहाके ग्यारह घोडे चुरानेके कारण दो आदमियोको मृत्युदड दिया गया। हमारे महान् साम्राज्यने सधिपत्र और विधानका ईमानदारीसे पालन करनेके लिये ऐसा किया, मित्रता कायम रखनेके लिये ही नही, बल्कि सत्यके प्रेमके लिये भी, जिसका कि हम बहुत सम्मान करते ह। लेकिन, तुमने चोरोको प्राणदड नही देकर मित्रता और सधिपत्रके विधान और शपथको भग किया। यद्यपि हमारे दोनो साम्राज्य एक दूसरेके सीमातपर हैं, तो भी हमारा (चीन) साम्राज्य अपनेको बडा भाई कह सकता है, क्याकि वह साम्राज्योमे बडे भाईका स्थान रखता है। तुम्हारी प्रार्थना पर हमने दो चोरोको दडित किया, लेकिन तुम वही बात हमारे महासाम्राज्यको सतुष्ट करनेके लिये करनेसे इन्कार करते हो। क्या तुम नही सोचते, कि आनेवाली सतानें तुम पर हसेंगी?"

इन झगडोको मिटानेके लिये एकातेरिनाने क्रोपोतोफको दूत बनाकर चीन भेजा। बात चीत होनेके बाद १७२७ ई० के सधिपत्रमें और धारा जोडी गई, जिसके बाद फिर व्यापारिक सबध पहलेकी तरह स्थापित हो गया। यह उल्लेखनीय बात है, कि एकातेरिनाका मगोलियाके मगोलोंके साथका बर्ताव वहाके लामाओ और राजुलोंके लिये अधिक अनुकूल था, इसीलिये वहाके लोगामें मशहूर था, कि एकातेरिना श्वेततारा देवी (चगान-तारा-एखे) की अवतार है। एकातेरिनाके बाद जब रूसकी गद्दीपर जार बैठेने लगे, तो उन्हे भी मगोल चगान खान (श्वेत राजा) कहने लगे।

शिक्षा और सस्कृति—केवल राजनीतिक दाव-पेचोंसे ही किसी भी राजशक्तिको एकताबद्ध और शक्तिशाली नही बनाया जा सकता, उसके लिये तो अधिक शक्तिशाली हथियारोंकी अवश्यकता होती है। अपने प्रतिद्वद्वियोंके मुकाबलेमें अधिक शक्तिशाली हथियाराको ढूढते हुये आदमी बारूद के हथियारो तक पहुचा, और उसम भी एक दूसरेसे बाजी मार ले जानेके लिये उसने नये-नये आवि ष्कार किये, जिसके लिये आदमीको साइसकी ओर बढ़ना पडा। जिसके साथ ही अब साइस तथा दूसरी विद्याओकी प्रगति अनिवार्य हो गई। साइसके प्रसारके लिये पीतर I ने रूसी विज्ञान अकदमी (रुस्की अक्दमी नाउक) कायम करनेके बारेमे सोचा था, जो १७२५ ई० में ही उसके मरनेके

बाद स्थापित हुई। यह हम बतला चुके हैं, कि पीतरने पश्चिमी युरोपसे कितने ही विद्वानोको निमन्त्रित करके अपने यहा रक्खा था, जिनमें बरनूली और ल्योनहार्ड यूलर जैसे गणितज्ञ भी थे। रूसका पहला विज्ञानवेत्ता मिखाइल वासिली-पुत्र लोमोनोसोफ (१७११-६५ ई०) था। उसके रूपमें रूसकी प्रतिभा विद्याके बहुत-से क्षेत्रोमें प्रकट हुई। लोमोनोसोफ उत्तरी समुद्रतटके आरखगेल्स्क नगरसे नीतिदूर समुद्रतटके एक गाव देनिसोव्कामे एक खाते-पीते मछुयेके घरमें पैदा हुआ था। दस वर्षकी उमरमें वह अपने बापके साथ समुद्रमें मछली मारने जाया करता था, लेकिन लोमोनोसोफको जल्दी मालूम होने लगा, कि पढना अच्छी चीज है। आरखगेल्स्कमे कितने ही महीनो तक बहुत लम्बी रातें होती है। इन रातोमें वह अवसर अक्षर, व्याकरण और गणित पढता था, क्योकि इस समय मछुवाही करनेके लिये जाना नही पडता था। पास हीके कस्बे खोल्मोगोरीमें एक स्कूल था, लेकिन मछुवेका लडका होनेके कारण उसे उसमें भर्ती करने से इन्कार कर दिया गया। लोमोनोसोफ विद्याके लिये इतना व्यग्र था, कि एक मछली ले जानेवाली नावपर उसने मास्कोकी ओर प्रयाण कर दिया। अपने किसान या मछुवेके लडके होनेको छिपाकर ही वह मास्कोकी स्लावानिक ग्रीक-लातिन-अकदमीमें प्रविष्ट हो सका। पाच वर्ष तक बडी कठिनाइयोके साथ उसने वहा अध्ययन किया। बीस साल के तगडे जवान विद्यार्थीसे उसके सहपाठी बायरो और धनी व्यापारियोंके लडके परिहास करते रहते थे। पढाई समाप्त करनेके बाद लोमोनोसोफको एक अवसर हाथ आया। सरकारकी ओरसे तीन विद्यार्थी उच्च-शिक्षाके लिये युरोप भेजे जानेवाले थे। लोमोनोसोफ असाधारण मेधावी विद्यार्थी था, और बायरोंके लडकोमें से तीन मिल नही रहे थे, इसलिये उसे भी युरोप भेज दिया गया। उसने रसायन, धातुशास्त्र, खनिजशास्त्र और गणित अध्ययन करते हुये चार साल वहाके वैज्ञानिको और विद्वानो के सम्पर्कमें बिताये। १७४५ ई० मे स्वदेश लौटनेपर उसे प्रोफेसर होनेके साथ रूसी विज्ञान अकदमीका पहला रूसी मेम्बर बननेका अवसर मिला। अब तकके बीस वर्षोमे रूसी साइस अकदमीके सदस्य विदेशी विशेषकर जर्मन विद्वान् ही होते थे, जिनमेंसे कुछका ज्ञान बहुत ही उथला था। साइस के क्षेत्रमें लोमोनोसोफने कई नये आविष्कार किये, लेकिन अभी कोई गुणग्राहक नही था। लोमोनोसोफ के कितने ही आविष्कारो और वैज्ञानिक सिद्धान्तोकी पुष्टि १९वी सदीमें जाकर हुई। लोमोनोसोफने ही तापके यान्त्रिक सिद्धान्तको पहलेपहल बतलाया था। रसायनमे भी उसने जो नया सिद्धान्त निकाला था, उसका चालीस वर्ष बाद फ्रेच रसायनवेत्ता लावाजियेने फिरसे पता लगाया, और आज वह सिद्धान्त उसीके नामसे विख्यात है। भूतत्त्वशास्त्रमे भी लोमोनोसोफने धातुओ और धुनोकी उत्पत्ति का अध्ययन किया, जिससे भूतात्त्विक खोजोमे बडी मदद मिली। वह पहला आदमी था, जिसने बतलाया, कि पत्थरका कोयला पथराये वृक्षो और वनस्पतियोका अवशेष है। युरोपमें वह पहला आदमी था, जिसने भौतिक रसायनकी व्याख्या करते हुये कई व्याख्यान दिये। ज्योतिषशास्त्र और नाविकशास्त्रके अध्ययनमें भी उसने बहुत समय लगाया। यगसे साठ साल पहले उसने पृथ्वीतलके कम्पनकी बातका पता लगाया। हर्शलसे तीस साल पहले उसने बतलाया, कि बुधके चारो तरफ वातावरण है। नानूसेनसे एक सौ पैंतीस वर्ष पहले उसने ध्रुवीय महासागरके बहनेकी दिशाकी सूचना दी। इस प्रकार हम देख सकते हैं, कि जिन बातोको हम पश्चिमी युरोप के वैज्ञानिकोकी मौलिक खोज मानते हैं, वह गलत है। युरोपियनोंने भी विज्ञान की प्रगतिमें बहुत भाग लिया है, लेकिन यह केवल झूठा प्रचार है, कि युरोपीय दिमाग ही सभी बातोमे मौलिक होनेका ठेका लिये हुये हैं। रूसी दिमाग बहुत सी बातोमें उनसे आगे-आगे रहा। और तो और, परमाणु-विदरण का प्रायोगिक सिद्धान्त भी दो रूसी वैज्ञानिकोने पहलेपहल करके उन्हे छपवा भी दिया था, जिसके सहारे जर्मन और अमेरिकन विज्ञानवेत्ता आगे बढे। अपने साम्राज्यविस्तारके लिये जैसे युरोप हथियारोको चमकाने और लोगोमें फूट डालने की नीतिको इस्तेमाल करता रहा, वैसे ही अपनी दिमागी श्रेष्ठताका ढिंढोरा पीटकर भी उसने अपनी धाक जमानी चाही।

साहित्यकार भी था। रूसी साहित्यको उसने धार्मिक भाषासे हटाकर जनभाषाकी ओर ले जानेकी कोशिश की। उसने वैज्ञानिक ढगपर एक अच्छा रूसी व्याकरण लिखा, जो कई पीढ़ियों तक पढाया जाता था। उसकी प्रतिभाके बारेमे रूसके कालिदास अलेक्सान्द्र पुश्किनने लिखा था

"अपने असाधारण बुद्धि-बलके साथ असाधारण इच्छाबल रखते हुये लोमोनासोफने विद्याकी सभी शाखाओका अवगाहन किया। उसमें ज्ञानकी असाधारण पिपासा थी। वह इतिहासकार, साहित्यकार, यत्रशास्त्री, रसायनशास्त्री, धातुशास्त्री, चित्रकार और कवि था।"

लोमोनोसोफके अन्तिम वर्ष एकातेरिनाके शासनकालमे बीते। उसके कार्योंके रूपमें रूसी साहित्य, विज्ञानकी भव्य इमारतकी दृढ नीव पडी।

१८वी सदीमे शिक्षाकी ओर शहरोंके मध्यवर्गके लोगोका ध्यान गया था। दूसरी शिक्षण सस्थाओमे जगह न मिलनेके कारण अध्यापकोने अपने घरोमे छात्रावास-सहित स्कूल खोल रक्खे थे। बायर और धनी लोग अपने लडकोंके पढानेके लिये विदेशी शिक्षक रखते थे। फ्रेंचकी महिमा बढती चली गई थी, और १८वी सदीके मध्य तक अमीरोंके घरोमे रूसी नही फ्रेंच भाषा बोली जाती थी। हमारे आजके कितने ही हिन्दो-आग्लियन परिवारोकी तरह रूसी अमीर अपने भावोको अपनी भाषामें मुश्किलसे प्रकट कर सकते थे। वह फ्रेच बोलनेमे फ्रेंच लोगोका भी कान काटना चाहते थे। उनके यहा फ्रेंच अध्यापकोकी बडी माग थी, और फ्रासका कोई भी ऐरा-गैरा-नत्थूखैरा आकर रूसमें अमीरोके घरोमें अध्यापक बन जाता था। पुश्किनने अपने लघु उपन्यास "कप्तान कन्या" में इसका बडा परिहास किया है। लेकिन, इसका एक अच्छा पहलू भी था। प्रौढ फ्रेंच साहित्यसे रूसी साहित्यको आरम्भमे बडी प्रेरणा मिली। उन्हे पढकर रूसी लेखक मोलियेर, वोल्तेरकी नकल करना चाहते थे। पश्चिमी युरोपके साहित्यकी माग होनेसे उनके बहुतसे ग्रथोके रूसीमे धडाधड अनुवाद होने लगे। लोमोनोसोफ-समकालीन सुमारोकोफ (१७१८-७७ ई०) रूसी भाषाका पहला ख्यातनामा लेखक है। उसने बहुत-से ग्रथ फ्रेंच शैलीपर लिखे, जिनमे उसके ऐतिहासिक दु खात नाटक, प्रेम-गीत और प्रहसन अधिक जनप्रिय हुये। अपने समयके मास्कोके बारेमे उसने लिखा था "यहाकी सभी सडकें अज्ञानकी ईंटोसे सात फुट ऊची चिनी गई है, जिनको तोडनेके लिये एक सौ मोलियरोकी अवश्यकता है।"

रूसी लेखकोंके मैदानमे आते ही फ्रेंच साहित्यका प्रभाव घटने लगा, यह सुमारोकोफके समयमें ही देखा जाने लगा। सुमारोकोफपर फ्रेंच क्लासिक और ग्रीक साहित्यका बडा प्रभाव था। वह रूसी साहित्यको भी उसी रगमे रगना चाहता था लेकिन उसके तरुण समसामयिक देनिस फोन विजिन (१७४५-९२ ई०) ने साहित्यको रूसकी भूमि और रूसके जीवनमें लानेका प्रयत्न किया। १८वी सदीका अन्त होते-होते रूसको गवरील रोमन-पुत्र देर्झाविन (१७८३-१८१६ ई०) के रूपमे एक उच्च कोटिका कवि पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने रूसी वातावरण और रूसी जीवनको अपनाकर अपनी कविताको जनताके समीप ला दिया। इसके बाद रूसी साहित्य युरोपका भिखारी नही रह गया। उसने अपने लेखक और साहित्यकार इतने उच्चकोटिके पैदा किये, जिनका लोहा सभी जगह माना जाने लगा। निकोलाई मिखाइल पुत्र करमजिन (१७६५-१८२६ ई०) ने अपनी विदेश-यात्राओ द्वारा पश्चिमी युरोपके जीवन और सस्कृतिका चित्र खीचकर रूसी पाठकोके सामने रखा। करमजिनकी "बेचारी लीजा" कथा एक समय बहुत प्रचलित थी, लेकिन करमजिनने पीछे अपना सारा समय रूसी इतिहास लिखनेमें दे दिया।

इसी कालमें चित्रकला और वास्तुकलाने भी रूसमें प्रगति की, जिसमें पश्चिमी कलाकारोकी सहायता लाभदायक सिद्ध हुई। रूसी वास्तुशास्त्री बाजेनोफने कई अच्छी-अच्छी इमारते बनाई। उसकी प्रतिभाकी ख्याति देशकी सीमासे बाहर पहुच गई और फ्रासके राजाने बहुत अधिक वेतन देकर उसे बुलाना चाहा, लेकिन बाजेनोफने अपनी प्रतिभाको अपनी जन्मभूमिकी सेवामे ही लगाना चाहा। उसकी बनाई हुई इमारतोमे पश्कोफ-प्रासाद (आधुनिक लेनिन पुस्तकालय) मास्कोमे अब भी मौजूद है।

यान्त्रिक आविष्कारोमे भी लोमोनोसोफके दिखलाये रास्तेको रूसियोने आगे बढाया। इवान इवान-पुत्र पोल्जुनोफ (१७२६-६६ ई०) उरालकी किसी छावनीके एक सिपाहीका लडका था, जिसने "अग्नि-चालित इजन" का पहलेपहल आविष्कार किया। उस समय तक पानीकी शक्तिको इस्तेमाल करनेवाले कारखाने जहा-तहा बन चुके थे, लेकिन ऐसे कारखाने उन्ही जगहोपर बन सकते थे, जहा बहते पानीकी तेज धारा हो। पोल्जुनोफने वाष्प-चालित यन्त्रोंके कारखानोको किसी भी स्थानपर स्थापित करनेके ख्यालसे अपने अग्नि-चालित इजनका आविष्कार किया, लेकिन उसे बर्नौल (अल्ताई पर्वत) मे अपने वाष्प-इजनको चलाकर अपना जीवन खतम कर देना पडा। जेम्स वाटको आज वाष्प-इजनका आविष्कारक कहा जाता है। उससे इक्कीस वर्ष पहले पोलजुनोफने दुनियाका प्रथम वाष्प-इजन तैयार किया था। आविष्कारकी प्रतिभा रूसमे मौजूद थी, लेकिन सामन्तशाही रूस ऐसी प्रतिभाओको प्रोत्साहन देनेके लिये तैयार नही था। १८वी सदीके दूसरे रूसी आविष्कारक इवान पीतर-पुत्र कुलिबिन (१७३५-१८१८ ई०) की भी उसी तरह उपेक्षा हुई, जैसी पोल्जुनोफकी। कुलिबिनने अपने बचपनमें ही एक मित्रके घरमे दीवार-घडी देखी, और कुछ ही दिनो बाद उसने लकडी की उसी तरहकी घडी बना दी। बापके मरनेपर वह दूकानके कामके साथ-साथ समय बचाकर घडिया बनाने लगा। उसने और उसके साथियोने पाच वर्ष लगाकर अडेके बराबरकी एक घडी बनाई, जिसका उस समय बहुत फैशन चल पडा था। कुलिबिनने अपनी घडी एकातेरिनाको भेट की। एकातेरिनाने उसे साइस अकदमीका यान्त्रिक नियुक्त किया। कुलबिनने नेवा नदीके लिये एक मेहराब-वाले लकडीके पुलका नक्शा तैयार किया, लेकिन उसके नमूनेको आखसे देखनेके बाद भी किसीने काममें लानेका ख्याल नही किया। कुलिबिन अन्तमें बडी गरीबीका जीवन बिताते हुये अपने नगर निजनी-नोवगोरद (आधुनिक गोर्की) में मरा।

रूस प्रतिगामिताका गढ—एकातेरिनाके समय रूस जिस तरहका रूप ले रहा था, उसके बारेमें हम बतला चुके। रूसमें फ्रेंच साहित्य और विचारोका बडा मान था, लेकिन इसी समय १७८९ ई० मे फ्रेंच क्रांति हुई, जिसने बतला दिया कि सामन्तशाहीकी नीव बडी निबल है। फ्रेंच क्रांतिको देखकर युरोपके सभी मुकुटधारी कापने लगे थे। इसी समय रूसने एकातेरिनाके मुहसे कहलवाया—"फ्रेंच राजाका काम सभी राजाओका काम है।" उसने दृढ़तापूर्वक घोषित किया, कि मै यही भी चमारो (मजूरो) को राज्य-शासन करने नही दूगी। इसे सयोगकी ही बात कहिये, कि एकातेरिनाके स्थानपर रूसका सबसे शक्तिशाली शासक योसफ स्तालिन एक चमारका ही लडका था। सोलहवें लुईको जब फ्रासमें मृत्युदड दिया गया, तो सबसे पहले एकातेरिनाने फ्रेंच गणराज्यसे सबध विच्छेद कर लिया, फ्रासमें रहनेवाले सभी रूसियोको बुला लिया, और क्रांतिसे सहानुभूति रखनेवाले फ्रासीसियोको रूससे निर्वासित कर दिया। एकातेरिनाको "फ्रेंच महामारी" का सबसे अधिक डर था, लेकिन उसके ही शासनकालमे फ्रेंच क्रान्तिकी विचारधाराके पिताओ—वोल्तेर, दिदरो, रूसोकी पुस्तकें प्राय सभी रूसी अमीरोके घरोमे पाई जाती थी, वह उन्हे मूल फ्रेंचमे पढते थे। इन पुस्तकोका प्रभाव रूसियोकी विचारधारापर भी पड रहा था, और वह भी समता, भ्रातृभावके पक्षपाती होते जा रहे थे। ऐसे प्रगतिशील तरुणोमे अलेक्सान्द्र रादिश्चेफ पहला आदमी था। वह एक अमीर घराने मे १७४९ ई० मे पैदा हुआ था। उसने जर्मनीके लाइप्जिक विश्वविद्यालयमें अध्ययन किया था। समानता और स्वतन्त्रताके विचारोंसे भरे हुये रूसोके ग्रथोने उसपर बहुत प्रभाव डाला, और वह स्वेच्छाचारी शासनको बहुत घृणाकी दृष्टिसे देखने लगा। १७९० ई० में उसने अपनी प्रथम पुस्तक 'पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा' प्रकाशित की। पुस्तककी छ सौ पचास ही प्रतिया निजी तौरसे

छापी गई थी। एकातेरिनाने इस पुस्तकको देखकर कहा—"यह तो पुगाचेफसे भी भारी बदमाश है। इसके लिये दस फासीकी टिकटिया भी पर्याप्त नही होगी"। उसने रादिश्चेफको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। रादिश्चेफने अपनी पुस्तककी भूमिकामें लिखा था

"जब मनें अपने चारो ओर देखा, तो मानवताकी पीडासे मेरा हृदय फटने लगा।" जमीदारोके अत्याचारोके बारेमें उसने लिखा था—"यह क्रूर पशु, कभी न अघानेवाली जोकें, किसानोंके लिये वही छोडती हैं, जिसे वह लेना नही चाहती। जमीदार किसानोंके लिये विधान-निर्माता, न्यायाधीश हैं, जिनके कारण कोई अपने बचावके लिये एक शब्द भी नही कह सकता।" रादिश्चेफ समझता था, कि इन पशु-जोक-जमीदारोका सीधा सबध जारके सिहासनसे हैं, इसलिये अपनी यात्रामें उसने "स्वतन्त्रता" के नामसे जिस गीतको दिया था, उसमें "लोहेके सिंहासन" को नष्ट करनेके लिये जनताके भयकर बदलेकी बात लिखी थी। सामन्तघरमें पैदा हुआ रादिश्चेफ रूसका पहला क्रातिकारी, प्रजातत्र-पक्षपाती तथा प्रगतिशील विचारक था। अदालतने उसे मृत्युदड दिया, जिसे पीछे दस वर्ष साइबेरिया-निर्वासनके रूपमे परिणत कर दिया गया। एकातेरिनाने रादिश्चेफकी पुस्तककी होली जलवाई। एकातेरिनाके मरनेके बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र पावल I ने जब सार्वजनिक क्षमादान दिया, तो रादिश्चेफको भी साइबेरियामे लौटनेका मौका मिला, लेकिन उसका राजधानीमें आना निषिद्ध था, और अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५ ई०) के समयमे ही उसके ऊपरसे यह निर्बंध हटाया गया। उसने स्वतन्त्रता और समानताके आधारपर राज्यशासनमे सुधार करनेकी योजना बनाई। सत्ताधारी उसे फिर साइबेरियामे निर्वासित करनेकी सोच रहे थे, इसपर रादिश्चेफने विष खाकर १८०२ ई० में अपने जीवनका अन्त कर लिया। एकातेरिनाके समयके स्वतन्त्र विचारकोमें निकोलाइ नोविकोफ भी था, जिसने नये विचारोंके प्रचारके लिये पुस्तककी दूकान खोली थी। उसने एक प्रहसन और व्यगभरी पत्रिका "त्रूतेन" तथा और भी पत्र निकाले। अपने व्यगोमें वह शासकोकी अच्छी खबर लेता था, और किसानो और अर्ध-दासोकी पीडाको बडे सजीव रूपमें रखता था। उसकी पुस्तक "एक स्वामीका अपने गावके किसानोंके साथ पत्र-व्यवहार" में बडे ही मार्मिक रूपमें किसानोकी विपदाका चित्रण किया गया था।

१३ पावल I, पीतर III-पुत्र (१७९६-१८०१ ई०)

पावलके शासनके रूपमे अब हम रूसके उस समयमे आ जाते है, जब कि भारतमे रही-सही सामन्तोकी स्वतन्त्रता भी अग्रेज बनियोकी ईस्ट इडिया कपनी छीन रही थी। एकातेरिना अपने पतिके मरवानेसे ही सतुष्ट नही थी, बल्कि उसकी महत्त्वाकाक्षाने अपने पुत्रके साथ भी सौहार्द स्थापित करने नही दिया। पावलको उसकी दादी एलिजाबेतने पाला था। वह समझता था, मेरी माने मेरे उचित अधिकारको छीन रखा है। एकातेरिना भी इसे समझती थी, इसीलिये वह पावलको राजकाजमे हाथ डालनेका मौका नही देती थी। पावल माकी ओरसे दी हुई अपनी जमीदारी गत्चिनामे अपना सारा समय सैनिक कार्योमे बिताता था। उसने गत्चिनाको फ्रेड्रिक II के सैनिक नियमोंके अनुसार एक युद्ध-शिविर बना दिया था, जहापर सैनिकोको प्रुशियन सेनाकी वर्दी पहनाकर डडाके हाथो क्वायद परेड कराई जाती थी। सिंहासनपर बैठते ही पावलने बापके कदमोपर चलते रूसी सेनाको प्रुशियन सेनाके रूपमें परिणत करना शुरू किया। उस समय राजधानी (पीतरबुर्ग) भी बहुत कुछ एक सैनिक शिविरकी तरह मालूम होती थी। राज्यके सभी विभागोमे उसने कठोर सैनिक अनुशासनके बरते जानेकी माग की। फ्रेंच-क्रातिकी छाया अभी भी युरोपसे लुप्त नही हुई थी। उसके बारेमें वह अपनी मासे बिल्कुल सहमत था। विदेशी आकर कही क्रातिकी महामारी न फैला दें, इसलिये उनके आनेमें उसने निषेध और रुकावट डाल दी। वह रूसी अमीरोको भी युरोपके विश्वविद्यालयोंमें पढ़नेके लिये जानेकी इजाजत नही देता था। बाहरसे हर तरहकी पुस्तकोका आना उसने बद कर दिया। उसने जमीदारोके साथ पहलेसे भी अधिक पक्षपात किया—अपने चार वर्षके शासनमें उसने तीन लाखसे अधिक किसानोको उनके मालिकोका अर्ध-दास बना दिया। इसका परिणाम किसानोंका विद्रोह छोड और क्या हो सकता था? ५० गुबर्नियामेंसे बत्तीसमे किसानोंके विद्रोह हुये, जिन्हें दबानेके

लिये पावलने अपनी सेनाका बडी क्रूरतापूर्वक उपयोग किया। उस समय अर्ध-दासोंके विक्रयके विज्ञापन सरकारी समाचारपत्रमें बराबर निकला करते थे, जिसके कुछ उदाहरण हैं "बिक्रीके लिये दो परिवार अर्ध-दास, जिनमेंसे एक कोडे और जूते बनानेवाला तीस वर्षका विवाहित मर्द है, उसकी स्त्री धोबिन है, जो पशुओंको चरा सकती है। आयु पच्चीस वर्ष। दूसरा परिवार एक गायक-वादक सत्रह वर्षके मर्दका है दाम-कामके लिये लिखो, १७-१ अरबत, आप्त १।"

जिस वक्त पावल गद्दीपर बैठा, उस वक्त १७९५ ई० वाली रूस-इगलैंडकी मैत्री-सधिके अनुसार रूस भी फ्रासके विरुद्ध लड रहा था। पावलने गद्दी सभालते ही अपने देशको विश्राम देनेका निश्चय किया, और अग्रेज राजदूतको सूचित कर दिया, कि हमारी माने सेना भेजनेके लिये कहा था, लेकिन उसे भेजा नही जा सकता। इगलैंडने पावलको प्रलोभन देकर लडाईमे रखना चाहा, और कार्सिका द्वीपपर अधिकार करनेके लिये कहा। मिस्र जाते वक्त नेपोलियनने माल्ता द्वीपपर अधिकार कर लिया था, जो कि भूमध्यसागरमे बडे सैनिक महत्वका स्थान था। पावल भी अपनी माकी तरह चाहता था, कि भूमध्यसागरमें पैर रखनेका कोई स्थान मिले। माल्ता-धार्मिक-सगठन माल्ताद्वीपका मालिक था, जिसका जारके दरबारके साथ विशेष सबध था। उसने पावलको सहायताके लिये बुलाया। उधर नेपोलियनने जब तुर्कीके अधीन देश मिस्रपर आख गडाई, तो तुर्कीने भी अपने पुराने शत्रु रूसके साथ फ्रासके खिलाफ सैनिक सधि कर ली। अगस्त १७९८ ई० मे कालासागर के रूसी जगी बेडेके सेनापति अदमिरल उशाकोफको हुक्म हुआ, और वह सोलह जहाजो, सात सौ बानवे तोपो और आठ हजार नौसैनिकोके साथ तुर्की जगी बेडेकी मददके लिये फ्रासीसियोंके खिलाफ चल पडा। छ सप्ताहमें उशाकोफने यूनिया (यवन) द्वीपोमेंसे चार छोटे-छोटे द्वीपोपर अधिकार कर कोरफू द्वीपको लेनेके लिये प्रयाण किया। उस समय वहा छ सौ पचास तोपोंके साथ तीन हजार फ्रेंच सैनिक रहते थे। मुकाबिला बहुत सख्त हुआ, लेकिन १८ फवरी १७९९ ई० को कोरफूकी फ्रेंच सेनाने आत्म-समर्पण कर दिया। कोरफूके जीतनेके बाद रूसी सेना दक्षिणी इतालीके तटपर उतरी। इतालियन जनता नेपोलियनके विदेशी शासनसे घृणा करती थी। रूसियोंने उसकी सहायतासे नेपल्स और रोमपर अधिकार कर लिया। रूसी सामुद्रिक युद्धविद्याका मूलाचार्य उशाकोफ माना जाता है, और स्थलीय युद्धविद्याका सुवारोफ।

१७९९ ई० के आरम्भमें प्रजातत्री फ्रासके विरुद्ध रूस, इगलैंड, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपल्स-राज्यकी एक गुट बनी। जनवरी १७९९ ई० में नेपोलियनकी सेनाको हराकर नेपल्सवालोने अपना गणराज्य घोषित किया। पावल नही चाहता था, कि नेपल्समें उसके मित्र राजाका इस प्रकार अन्त होकर उसकी जगह इतालीमें पेरिसका एक नया सस्करण स्थापित हो। पावलने नेपल्सके राजाकी मदद के लिये ग्यारह हजार सेना भेजकर हुक्म दिया, कि आस्ट्रियाकी मददके लिये पहिले भेजी गई बीस हजार सेनासे मिलकर आगे बढो। आस्ट्रियन सरकारकी मागपर पावलने सुवारोफको सेनापति नियुक्त किया। सुवारोफ आज सोवियत रूसका भी सबसे अधिक सम्माननीय योद्धा है, जिसने उसके नामसे वीरताका एक उच्च तमगा प्रचलित किया। वह १७३० ई० मे एक सैनिक अफसरके घर मास्कोमें पैदा हुआ था। बचपनमें उसका स्वास्थ्य बहुत खराब और शरीर बडा दुबल था, इसलिये पिताने उसे लडकपनमे सेनामें शामिल नही किया, लेकिन लडकेने बचपनसे ही सैनिक बातोमें दिलचस्पी लेनी शुरू की और बापके पासकी सभी सैनिक पुस्तकोको बडे ध्यानसे पढ डाला। बारह वर्षकी उमरमे उसे रेजिमेंटमें नाम लिखानेका मौका मिला और सत्रह वर्षकी उमरमे कारपोरल (हवल्दार) के तौरपर उसने सैनिक जीवन आरम्भ किया। आगे तुर्की और पोलन्दके युद्धोमें उसने अपने युद्ध कौशलका परिचय दिया, जिसके कारण उसे फील्ड-मार्शल बना दिया गया। वह गतानुगतिक नही, बल्कि "बेलीकपर चलने-वाला सिंह था।" उसने युद्धविद्यामें कई नई बातें निकाली, जिनको आज भी लाल सेना बडे आदरसे स्वीकार करती है। फ्रेड्रिक II भी एक नये सैनिक विज्ञान और सगठनका आविष्कारक माना जाता है, लेकिन उसका विचार था "सिपाही सिर्फ एक यत्र है, जिसे नियमोंके अनुसार चालित होना चाहिये।" पावल फ्रेड्रिकके ही सैनिक आदर्शको मानता था, लेकिन सुवारोफ इसमे बिल्कुल उल्टा था। उसका कहना था "केशचूर्ण बारूदका चूर्ण नही है, झूठे ताले

छापी गई थी। एकातेरिनाने इस पुस्तकको देखकर कहा—"यह तो पुगाचेफसे भी भारी बदमाश है। इसके लिये दस फासीकी टिकटिया भी पर्याप्त नही होगी"। उसने रादिश्चेफको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। रादिश्चेफने अपनी पुस्तककी भूमिकामे लिखा था

"जब मैंने अपने चारो ओर देखा, तो मानवताकी पीडासे मेरा हृदय फटने लगा।" जमींदारो के अत्याचारोंके बारेमे उसने लिखा था—"यह क्रूर पशु, कभी न अघानेवाली जोकें, किसानोंके लिये वही छोडती हैं, जिसे वह लेना नही चाहती। जमीदार किसानोके लिये विधान-निर्माता, न्यायाधीश हैं, जिसके कारण कोई अपने बचावके लिये एक शब्द भी नही कह सकता।" रादिश्चेफ समझता था, कि इन पशु-जोक-जमीदारोका सीधा सबध जारके सिंहासनसे है, इसलिये अपनी यात्रामें उसने "स्वतन्त्रता" के नामसे जिस गीतको दिया था, उसमे "लोहेके सिंहासन" को नष्ट करनेके लिये जनता के भयकर बदलेकी बात लिखी थी। सामन्तघरमे पैदा हुआ रादिश्चेफ रूसका पहला क्रांतिकारी, प्रजातत्र-पक्षपाती तथा प्रगतिशील विचारक था। अदालतने उसे मृत्युदड दिया, जिसे पीछे दस वर्ष साइबेरिया-निर्वासनके रूपमें परिणत कर दिया गया। एकातेरिनाने रादिश्चेफकी पुस्तककी होली जलवाई। एकातेरिनाके मरनेके बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र पावल I ने जब सार्वजनिक क्षमादान दिया, तो रादिश्चेफको भी साइबेरियामे लौटनेका मौका मिला, लेकिन उसका राजधानीमें आना निषिद्ध था, और अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५ ई०) के समयमे ही उसके ऊपरसे यह निर्बंध हटाया गया। उसने स्वतन्त्रता और समानताके आधारपर राज्यशासनमे सुधार करनेकी योजना बनाई। सत्ताधारी उसे फिर साइबेरियाम निर्वासित करनेकी सोच रहे थे, इसपर रादिश्चेफने विष खाकर १८०२ ई० में अपने जीवनका अन्त कर लिया। एकातेरिनाके समयके स्वतन्त्र विचारकामें निकोलाइ नोविकोफ भी था, जिसने नये विचारोके प्रचारके लिये पुस्तककी दूकान खोली थी। उसने एक प्रहसन और व्यगभरी पत्रिका "नूतेन" तथा और भी पत्र निकाले। अपने व्यगोमें वह शासकोकी अच्छी खबर लेता था, और किसानो और अर्ध-दासोकी पीडाको बडे सजीव रूपमें रखता था। उसकी पुस्तक "एक स्वामीका अपने गावके किसानोंके साथ पत्र-व्यवहार" में बडे ही मार्मिक रूपमें किसानाकी विपदाका चित्रण किया गया था।

१३ पावल I, पीतर III-पुत्र (१७९६-१८०१ ई०)

पावलके शासनके रूपमें अब हम रूसके उस समयमे आ जाते है, जब कि भारतमे रही-सही सामन्तोकी स्वतन्त्रता भी अग्रेज बनियोकी ईस्ट इडिया कपनी छीन रही थी। एकातेरिना अपने पतिके मरवानेसे ही सतुष्ट नही थी, बल्कि उसकी महत्त्वाकाक्षाने अपने पुत्रके साथ भी सौहार्द स्थापित करने नही दिया। पावलको उसकी दादी एलिजावेतने पाला था। वह समझता था, मेरी माने मेरे उचित अधिकारको छीन रखा है। एकातेरिना भी इसे समझती थी, इसीलिये वह पावलको राजकाजमें हाथ डालनेका मौका नही देती थी। पावल माकी ओरसे दी हुई अपनी जमीदारी गत्चिनामे अपना सारा समय सैनिक कार्योमे बिताता था। उसने गत्चिनाको फ्रेड्रिक II के सैनिक नियमोंके अनुसार एक युद्ध-शिविर बना दिया था, जेहापर सैनिकोको प्रुशियन सेनाकी वर्दी पहनाकर डडोंके हाथो कवायद परेड कराई जाती थी। सिंहासनपर बैठते ही पावलने बापके कदमोपर चलते रूसी सेनाको प्रुशियन सेनाके रूपमें परिणत करना शुरू किया। उस समय राजधानी (पीतरबुर्ग) भी बहुत कुछ एक सनिक शिविरकी तरह मालूम होती थी। राज्यके सभी विभागोमें उसने कठोर सैनिक अनुशासनके बर्तने जानेकी माग की। फ्रेंच-क्रांतिकी छाया अभी भी युरोपसे लुप्त नही हुई थी। उसके बारेमे वह अपनी मासे बिल्कुल सहमत था। विदेशी आकर कही क्रांतिकी महामारी न फैला दें, इसलिये उनके आनेमे उसने निषेध और रुकावट डाल दी। वह रूसी अमीरोंको भी युरोपके विश्वविद्यालयामें पढनेके लिये जानेकी इजाजत नही देता था। बाहरसे हर तरहकी पुस्तकोंका आना उसने बद कर दिया। उसने जमीदारोके साथ पहलेसे भी अधिक पक्षपात किया—अपने चार वर्षके शासनमें उसने तीन लाखसे अधिक किसानोको उनके मालिकोका अर्ध-दास बना दिया। इसका परिणाम किसानोंका विद्रोह छोड और क्या हो सकता था? ५० गुबर्नियोंमसे बत्तीसमें किसानोंके विद्रोह हुये, जिन्हें दबानेके

लिये पावलने अपनी सेनाका बडी क्रूरतापूर्वक उपयोग किया। उस समय अर्ध-दासोंके बिक्रीके विज्ञापन सरकारी समाचारपत्रमें बराबर निकला करते थे, जिसके कुछ उदाहरण हैं "बिक्रीके लिये दो परिवार अर्ध-दास, जिनमसे एक कोडे और जूते बनानेवाला तीस वर्षका विवाहित मर्द है, उसकी स्त्री धोबिन है, जो पशुओंको चरा सकती है। आयु पच्चीस वर्ष। दूसरा परिवार एक गायक-वादक सत्रह वर्षके मर्दका है दाम-वामके लिये लिखो, १७-१ अग्रन, आप्त १।'

जिस वक्त पावल गद्दीपर बैठा, उस वक्त १७९५ ई० वाली रूस-इंगलैंडकी मैत्री-संधिके अनुसार रूस भी फ्रांसके विरुद्ध लड रहा था। पावलने गद्दी सभालते ही अपने देशको विश्राम देनेका निश्चय किया, और अंग्रेज राजदूतको सूचित कर दिया, कि हमारी माने सेना भेजनेके लिये कहा था, लेकिन उसे भेजा नही जा सकता। इगलैंडने पावलको प्रलोभन देकर लटाईमें रखना चाहा, और कार्सिका द्वीपपर अधिकार करनेके लिये कहा। मिस्र जाते वक्त नेपोलियनने माल्टा द्वीपपर अधिकार कर लिया था, जो कि भूमध्यसागरमें बडे सैनिक महत्वका स्थान था। पावल भी अपनी माकी तरह चाहता था, कि भूमध्यसागरमें पैर रखनेका कोई स्थान मिले। माल्टा-धार्मिक-सगठन माल्टाद्वीपका मालिक था, जिसका जारके दरबारके साथ विशेष सबध था। उसने पावलको सहायताके लिये बुलाया। उधर नेपोलियनने जब तुर्कीके अधीन देश मिसरपर आक्रमण किया, तो तुर्कीने भी अपने पुराने शत्रु रूसके साथ फ्रांसके खिलाफ सैनिक सधि कर ली। अगस्त १७९८ ई० में कालासागर के रूसी जगी बेडेके सेनापति अदमिरल उशाकोफको हुक्म हुआ, और वह सोलह जहाजो, सात सौ बानवे तोपो और आठ हजार नौसैनिकोंके साथ तुर्की जगी बेडेकी मददके लिये फ्रांसीसियोंके खिलाफ चल पडा। छ सप्ताहमें उशाकोफने यूनिया (यवन) द्वीपोंमेंसे चार छोटे-छोटे द्वीपोंपर अधिकार कर कोरफू द्वीपको लेनेके लिये प्रयाण किया। उस समय वहा छ सौ पचास तोपोंके साथ तीन हजार फ्रेंच सैनिक रहते थे। मुकाबिला बहुत सख्त हुआ, लेकिन १८ फरवरी १७९९ ई० को कोरफूकी फ्रेंच सेनाने आत्म-समर्पण कर दिया। कोरफूके जीतनेके बाद रूसी सेना दक्षिणी इतालीके तटपर उतरी। इतालियन जनता नेपोलियनके विदेशी शासनसे घृणा करती थी। रूसियोंने उसकी सहायतासे नेपल्स और रोमपर अधिकार कर लिया। रूसी सामुद्रिक युद्धविद्याका मूलाचार्य उशाकोफ माना जाता है, और स्थलीय युद्धविद्याका सुवारोफ।

१७९९ ई० के आरम्भमें प्रजातंत्री फ्रांसके विरुद्ध रूस, इगलैंड, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपल्स-राज्यकी एक गुट बनी। जनवरी १७९९ ई० में नेपोलियनकी सेनाको हराकर नेपल्सवालोंने अपना गणराज्य घोषित किया। पावल नही चाहता था, कि नेपल्समें उसके मित्र राजाका इस प्रकार अन्त होकर उसकी जगह इतालीमें पेरिसका एक नया सस्करण स्थापित हो। पावलने नेपल्सके राजाकी मदद के लिये ग्यारह हजार सेना भेजकर हुक्म दिया, कि आस्ट्रियाकी मददके लिये पहिले भेजी गई बीस हजार सेनासे मिलकर आगे बढो। आस्ट्रियन सरकारकी मागपर पावलने सुवारोफको सेनापति नियुक्त किया। सुवारोफ आज सोवियत रूसका भी सबसे अधिक सम्माननीय योद्धा है, जिसने उसके नामसे वीरताका एक उच्च तमगा प्रचलित किया। वह १७३० ई० में एक सैनिक अफसरके घर मास्कोमें पैदा हुआ था। बचपनमें उसका स्वास्थ्य बहुत खराब और शरीर बडा दुर्बल था, इसलिये पिताने उसे लडकपनमें सेनामें शामिल नही किया, लेकिन लडकेने बचपनसे ही सैनिक बातोंमें दिलचस्पी लेनी शुरू की और बापके पासकी सभी सैनिक पुस्तकोंको बडे ध्यानसे पढ डाला। बारह वर्षकी उमरमें उसे रेजिमेंटमें नाम लिखानेका मौका मिला और सत्रह वर्षकी उमरमें कारपोरल (हवल्दार) के तौरपर उसने सैनिक जीवन आरम्भ किया। आगे तुर्की और पोलन्दके युद्धोंमें उसने अपने युद्ध कौशलका परिचय दिया, जिसके कारण उसे फील्ड-मार्शल बना दिया गया। वह गतानुगतिक नही, बल्कि "बेलीकपर चलने-वाला सिंह था।" उसने युद्धविद्यामें कई नई बातें निकाली, जिनको आज भी लाल सेना बडे आदरसे स्वीकार करती है। फ्रेडरिक II भी एक नये सैनिक विज्ञान और सगठनका आविष्कारक माना जाता है, लेकिन उसका विचार था "सिपाही सिर्फ एक यत्र है, जिसे नियमोंके अनुसार चालित होना चाहिये।" पावल फ्रेड्रिकके ही सैनिक आदर्शको मानता था, लेकिन सुवारोफ इससे बिल्कुल उलटा था। उसका कहना था "केशचूर्ण बारूदका चूर्ण नही है, झूठे ताले

तोपें नहीं हूं, लम्बी चोटी तलवार नहीं हूं। मैं जर्मन नहीं, बल्कि जन्मजात रूसी हूं।" भला पावल ऐसे आदमीको क्यों पसंद करता? १७९७ ई० में उसने फील्ड मार्शल सुवारोफको उसकी जमींदारीमें निर्वासित कर दिया। लेकिन जब अंग्रेज और आस्ट्रियन मित्रोंने जोर दिया, तो फिर उसने सुवारोफको बुलाकर १७९९ ई० में फ्रांसके साथ लड़नेवाली मित्रोंकी सेनाओंका प्रधान सेनापति बना दिया। सुवारोफने साढ़े तीन महीनेके भीतर श्रेष्ठ फ्रेंच सेनापतियोंकी सेनाओंको बुरी तरह से हरा, सारे उत्तरी इतालीसे फ्रांसीसियोंका निकाल बाहर किया। आस्ट्रिया सारे इतालीको अपने हाथमें करनेकी घातमें था, इसलिये बहाना बनाकर सुवारोफको स्विट्जरलैण्ड भेज दिया गया। बड़े भीषण पहाड़ी रास्ता और नदियोंका पार करते हुये सुवारोफ स्विट्जरलैंडकी ओर गया। एक जगह उसकी बीस हजार सेना साठ हजार फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा घेर ली गई। उस समय रूसियोंके पास पर्याप्त रसद, गोला बारूद और तोप भी नहीं थी। इस स्थितिको देखकर उसने अपनी युद्ध-परिषद् में कहा—"हमें क्या करना होगा? पीछे हटना अपमानकी बात है, मैं कभी नहीं पीछे हटा। आगे श्वाइजकी ओर बढ़ना, असम्भव, वहां मसेनाके पास साठ हजार सैनिक हैं, जब कि हमारे पास केवल बीस हजार हैं। साथ ही हमारे पास न रसद है, न गोला-बारूद और न तोपखाना। हमें किसी तरहसे भी मदद मिलनेकी आशा नहीं है। हमारे लिये बस एक ही आशा है, अपनी सेनाकी हिम्मत और आत्म बलिदानकी भावना। हम रूसी हैं।" इसके बाद फ्रांसीसियोंके प्रहारको रोकते हुये सुवारोफकी सेनाने ४ अक्तूबर १७९९ ई० की रातको आल्पके हिमाच्छादित शिखरोंको पार करनेके लिये पानिक्षेर डांडेका रास्ता लिया। पहाड़ बहुत ऊंचे और सीधे खड़े थे। सिपाहियोंको कितनी ही जगह हाथों और पैरोंसे चिपक करके बर्फके ऊपर या सीधी खड़ी चट्टानोंपर सरकना पड़ा। एक खड़ी उतराईमें पकड़नेके लिये न कोई पेड़ था, न चट्टान। सुवारोफके प्रोत्साहनके सामने रूसी सैनिकोंके लिये कोई भी बात असंभव नहीं थी। वह अपनी बन्दूकें पकड़े इस भीषण उतराईमें बर्फपर फिसल पड़े। डांडा पार करनेके बाद अंत में सुवारोफकी सेनामें पंद्रह हजार आदमी बच रहे। आस्ट्रियाने रूसके साथ वचनका पालन नहीं किया।

सुवारोफने इतालीमें जिस तरह चमत्कारपूर्ण विजय प्राप्त की, उससे इंगलैंड, आस्ट्रिया और रूसके बीच में ईर्ष्या और आशंका पैदा होने लगी। आस्ट्रियावाले गुप-चुप फ्रांससे संधि करनेके लिये बातचीत चलाने लगे। इसपर पावलने आस्ट्रियाको लिखा

"भविष्यमें तुम्हारी भलाईका ख्याल मैं छोड़ दूंगा, और केवल अपने और अपने मित्रोंके हितको देखूंगा।" उसने गुस्सामें हो सुवारोफको रूस लौटनेके लिये लिखा "तुम्हें राजाओंकी रक्षा करनी थी, अब तुम्हें रूसके योद्धाओं और अपने राजाके सम्मानकी रक्षा करनी है।"

सुवारोफ बड़ी कठिनाइयोंके साथ अपनी सेनाको रूस लौटा ले आया, और उसे रूसकी सारी सेनाका "गेनरलिस्सिमो" (महामहासेनापति) की उपाधि प्रदान की गई। लेकिन थोड़े ही समय बाद फिर जारने सुवारोफको उपेक्षित कर दिया, राजधानीमें आनेपर लोग उसका राजसी स्वागत न करें इसके लिये उसका दरबारमें आना मना कर दिया। इसी तरह अपमानित और उपेक्षित रहकर १८ मई १८०० ई० को यह महान् सेनापति मरा। लेकिन आजका रूस उसे जितना सम्मान प्रदान कर रहा है, उतनेकी सुवारोफने आशा भी न की होगी।

इसी बीच पावल और इंगलैंडके भी संबंध बुरे हो गये, जब कि इंगलैंडने माल्तापर अधिकार कर लिया। नेपोलियनने इस सुअवसरसे फायदा उठाते हुये पावलके साथ समझौता करना चाहा, और माल्ताको फिरसे अधिकार करनेपर उसे रूसको देने तथा बदलेमें अपने सैनिकोंको लौटानेकी मांग किये बिना सारे हथियारोंके साथ रूसी कैदियोंको मुक्त कर देनेका वचन दिया। दिसम्बर १८०० ई० में पावलके साथ नेपोलियनने निजी लिखा-पढ़ी शुरू की, जिसका जवाब पावलने भी इंगलैंडके विरुद्ध जहर उगलते हुये दिया "इंगलैंड अपनी ईर्ष्या, धोखेबाजी और धनसे ही फ्रांसका केवल प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि हीन शत्रु होगा। धमकी, षड्यंत्र और पैसासे इंगलैंडने सभी राज्योंको फ्रांसके खिलाफ खड़ा कर दिया—उसके इस पापसे हम भी सम्मिलित हो गये।" अब फ्रांसकी भी स्थिति बदल गई थी। नेपोलियनने फ्रेंच क्रांतिका गला दबाते ९ नवम्बर १७९९ ई० की प्रतिक्रांति द्वारा सत्ता

अपनी सैनिक तानाशाही स्थापित कर दी थी। रूस और फ्रान्स चाहा, कि दोनों मिलकर भारतसे अंग्रेजोके शासनको खतम कर दे। जनवरी १८०१ ई० मे पावलने दोन-कज्जाक सेनाको हुक्म दिया कि वह ओरेनबुर्गसे बुखारा और खीवा होते सीधे सिधु नदीकी ओर कूच करे। बिना तयारी किये हुये इतने बडे अभियानका स्थलमार्गसे भेजना बुद्धिमत्ताकी बात नही थी, इसलिये पावलके मरने ही पर सम्राट् अलेक्सान्द्र I ने अभियानको रोक दिया। अपने अन्तिम जीवनमे पावलको कावेकाश और ईरानके रास्ते भारत पहुचनेकी धुन सवार थी। १८ जनवरी १८०१ ई० को उसने गुरजी (जार्जिया) और रूसके स्वेच्छापूर्वक एकतावद्ध होनेकी घोषणा निकाली। अभी हिन्दुस्तानमे अंग्रेजोंकी जड अच्छी तरह नही जमी थी, इसलिये पावलकी गतिविधिसे अंग्रेज बहुत चिंतित थे। पीतर्बुर्गमे स्थित अंग्रेज राजदूत भी उस षड्यन्त्रमे शामिल था, जिसमे पावलको अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा। ११ मार्च १८०१ ई० की रातको युवराज अलेक्सान्द्रकी शहसे षड्यन्त्रियोंने पावलके कमरेमे घुसकर उसे मार डाला।

साइबेरियाकी जातियां--यह हम बतला चुके है, कि कैसे येरमकने १६वी सदीमे सिबिर राजधानीको लेते वहाके खानको खतम किया, और राजधानीके नामपर देशको सिबेरिया (साइबेरिया) नाम देते रूसकी सीमाको इर्तिश और तोबोल नदियोंके तट तक पहुचा दिया। १७वी सदीमे येनीसेइ नदीके तटसे लेकर अखोत्स्क समुद्र तक सारा पूर्वी सिबेरिया भी रूसके हाथमे चला गया। इस विशाल भूभागमे भिन्न-भिन्न सामाजिक और आर्थिक विकासकी स्थितिकी कई जातिया रहती थी। येनिसेइसे पूर्व अखोत्स्क समुद्र तक इवेंकी (तुङ्-गुस) लोग रहते थे, जो कि पुराण-एसियाई जातिसे सबधित थे। उनके अपने बडे-बडे कबीले थे, जिनके अक्सर आपसमे खूनी झगडे हुआ करते थे। जाडोमें ये लोग सिबेरियाके ताइगामे शिकार करते और गर्मियोंमे मछलीके मारनेके लिये नदियोंके किनारे चले आते। गर्मियोमे उनके तम्बू भोजपत्रके छालसे ढके रहते, और जाडोमे वह चमडेके होते। बारहसिंगा उनका पालतू पशु था, जिसपर वह अपने सामानको ढोया करते थे। अपने दक्षिणी पडोसियोंसे उनको लोहा मिल जाता था। कोई-कोई कबीले हड्डियोंके बने हुये कवचको भी इस्तेमाल करते। भडकीले रंगवाले कपडे और चमकीले आभूषण उन्हे बहुत पसद थे। वह अपने सारे चेहरे पर गोदना गुदवाते थे। इवेंकी बडे लडाकू लोग थे। उनके ऊपर अपने ओझो-सयानोका बडा प्रभाव था। ये ओझा-सयाने देवताओको अपने सिरपर बुलाते, विशेष पोशाक पहिनकर तम्बूरिन बजाते खास नाच नाचते थे।

आमूर नदीके मुहानेपर भी प्राचीन पुराण-एसियाई जातिसे सबध रखनेवाली नीवखी (गिल्यिक) लोग रहते थे, जिनकी मुख्य जीविका मछुवाही थी।

उत्तर-पूर्वी सिबेरियामे ओदूल (यूकागिर), निमिलन (कोर्याक), लूओरावेतल्यन (चुकची), इतेल्मेन (कम्स्चदाल) जातिया अब भी बर्बर अवस्थामे रहती थी। उन्हे लोहेका पता नही था। उसकी जगह वह चकमक-पत्थर तथा हड्डियोंके हथियारोका इस्तेमाल करती थी। उनके छुरे पत्थरके होते थे, और बाणोके फल चकमकके। लोहेका परिचय उन्हें पहलेपहल रूसियोद्वारा मिला, इसीलिये अपनी जन-कथाओमें वह रूसियोको "लौह-पुरुष" कहने लगे।

ऊपरी येनिसेइ उपत्यकामे प्राचीन कालसे येनिसेइ-किरगिज नामक एक तुर्की जाति रहती थी, जिन्हें चीनी लोग खकास कहते थे, और आज भी खकास ही कहा जाता है। किरगिज येनिसेइके मैदानोमें घुमन्तू-पशुपालोका जीवन बिताते थे। अल्ताईके पहाडोमें भी कितनी ही पहाडी जातिया बसती थी, जिनमेंसे कुछ लोहधूनसे लोहा बनाकर कई तरहके लोहेके सामानको तैयार करती थी। अल्ताईके इन लोगोको ओइरोत-मगोलोने अपने भीतर हजम कर लिया, जिससे इस इलाकेका नाम ओइरोतिया पडा--आज यह ओइरोत-स्वायत्त-जिलेके नामसे सोवियत सघका एक भाग है।

एवेंकियोकी भूमिके मध्यमें लेना-उपत्यकाके पिछले हिस्सेमें तुर्की जातिके याकूत रहते थे। उनकी परपरासे मालूम होता है, कि एवेंकियोंके साथ भारी सघर्षके बाद बैकाल-पार इलाकेके दक्षिणसे आकर वह लेना नदीके तटपर रहने लगे। १७वी सदीमें याकूत अपने पडोसियोकी अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनकी मुख्य जीविका पशुओ और घोडोका पालन थी। वह लकडीके झोपडोमे रहते थे, जिनको आग

जलाकर गरम किया जाता था। धातुका काम भी वह पुराने ढगसे जानते थे। उनके बनाये हुये लकडी की मुट्ठीवाले छुरे तथा कवच रूसी भी बहुत पसद करते थे। १७वी शताब्दीमे जन-व्यवस्था याकूतोमेसे उठने लगी, जब कि उनके सरदारोंके पास पशुओके बडे-बडे रेवड और धन एकत्रित होने लगा। उनके पास साधारण चाकर और दास भी रहते थे। येनिसेइकी शाखा अगारा नदी, बैकाल सरोवर, और ऊपरी लेनाकी भूमियोमे बुयत मगोल लोग रहते थे। यद्यपि इनकी मुख्य आजीविका पशु पालन था, लेकिन वह थोडी-थोडी खेती और बदलेनके रूपमें कुछ व्यापार भी कर लेते थे। शिकार भी करते थे, लेकिन वह जीविकाका मुख्य साधन नही था। याकूतोकी तरह बूयतोंके भी शासक उनके सरदार होते थे। आमूर नदीके किनारे दौर और दूसरी मचुरियावाली जातिया रहती थी। १७वी सदी में दौर उच्च सभ्यताके धनी हो चुके थे। वह गावोंमे रहते, कई तरहके अनाजो और साग-भाजीकी खेती करते तथा फलदार बगीचे लगाते थे। पशुपालन तो वह करते ही थे, साथ ही उन्होने चीनमे मुर्गी पालना भी सीख लिया था। जगलमे समूरी जानवरोका शिकार भी उनके लिये बहुत लाभकी चीज थी। कृषि और समूरी छालके कारण समृद्ध इस इलाकेकी ओर चीनी सामन्तोका भी ध्यान गया था, और उन्होने वहा अपनी धाक जमा रक्खी थी। प्रतिवष चीनी व्यापारी अपने मालको लाकर यहा मागे दामोमे बेच बदलेमें समूरी खाल और दूसरी चीजे सस्तेमे ले जाते थे। दौरोमे धनी लोग अब चीनी रेशम पहनते, चीनी बर्तनोका इस्तेमाल करते तथा मकान बनाकर चीनियोकी तरह अपने गवाक्षोको कागजसे ढाकते थे। उनकी पोशाक भी चीनियो जैसी थी। दौरोंके पास कितने ही दुर्गबद्ध नगर थे। किस तरह रूसी कसाको और दूसरे साहस-यात्रियोने पूर्वी साइबेरियामे बढकर आमूरके मुहाने तकके सारे भूभागको जीता यह हम बतला चुके है।

येरमक (१५८१ ई०), खबारोफ (१६४९-५४ ई०) और पीछे मुरायेफ (१८४७— ई०) साइबेरियामे रूसके प्रसारके सबसे बडे वाहक थे। येरमक और खबारोफके कामोंके बारेमे हम पहले बतला चुके है, और यह भी, कि किस तरह चीनके साथ होते सीमाती झगडोंके बारेमे दोनो राष्ट्रोने प्रयत्न करके समझौता किया।

पावल I १९वी सदीके पहले वर्षमे मरा। उस समयतक रूसके राज्यका विस्तार पूर्वी पोलडको लेते प्रशान्त महासागर और बेरिंगकी खाडीतक था। उत्तरमे वह ध्रुवीय महासागरसे लेकर दक्षिण मध्य-एसियाके सीमाततक ही नही, बल्कि कही-कही उसके भीतर भी घुसा हुआ था। काकेशस में गुरजी और उत्तरी आजुर्बाइजान उसके हाथमे थे। रूसी सेनाओने रोम, आल्प्स और बर्लिन तककी विजय यात्रायें की थी। पावल हिन्दुस्तानसे अग्रेजोको भगाकर अपना शासन कायम करना चाहता था। इस प्रकार १८वी सदीके अन्ततक रूस दुनियाका एक बहुत ही शक्तिशाली देश बन गया था, इसमें सदेह नही। अभी इगलैड उसके मुकाबिलेमे एक धनी बनियेसे अधिक हैसियत नही रखता था, लेकिन सारी १९वी सदीमें, जहा अग्रेजोने नई वैज्ञानिक खोजोंसे लाभ उठाकर अपने देशको उद्योग-प्रधान बनाते हुए पूजीवादी शासनकी दृढ स्थापना की, वहा रूसी अभी सामन्तशाहीका मोह छोडने के लिये तयार नही थे, जिसके कारण वह अग्रेजोंके सामने पिछड गये—इस पिछडेपनको बडी तेजीके साथ सोवियतने समाजवादी शासनने दूर किया।

३ (१ जार-वशवृक्ष)
(१५९८—१८०१ ई०)
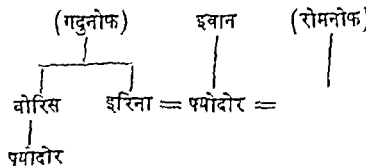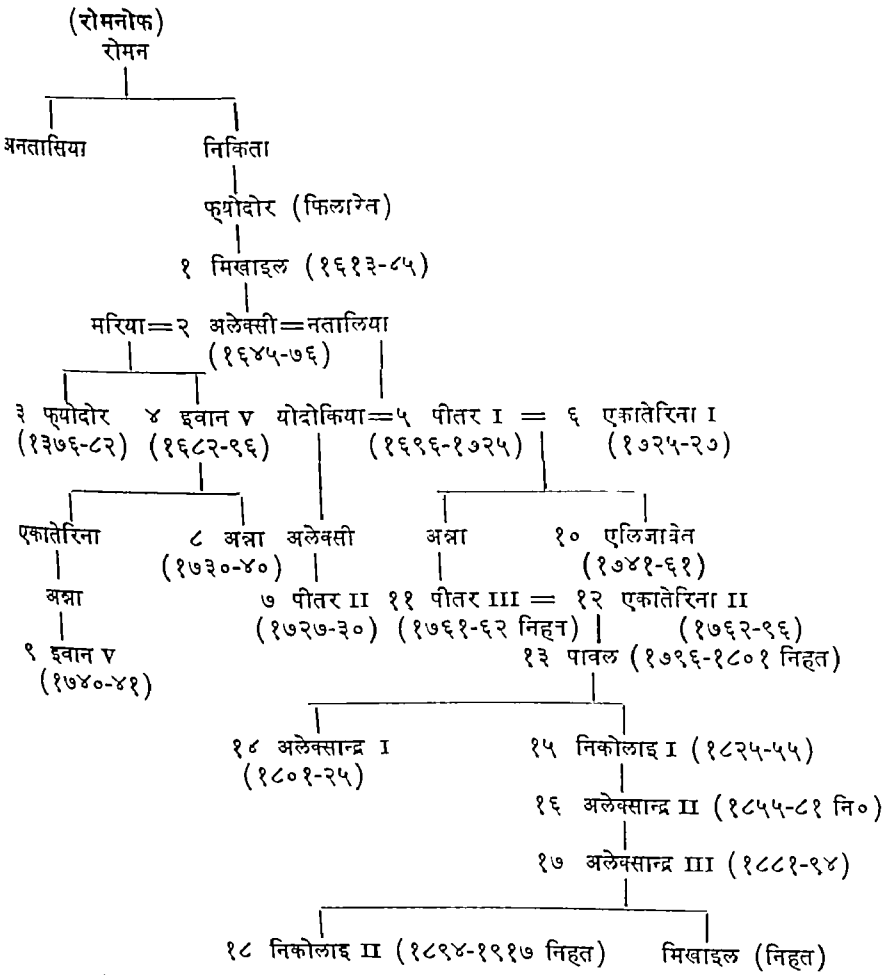
चीन-वंशावली मिङ और छिङ—रूसके पूर्वकी ओर प्रसारके समय उसका मुकाबिला चीनकी शक्तिसे होने लगा था। मगोल-वंश (१२०६-१३६८ ई०) के बादकी चीनी राजावली इस प्रकार है —

मिङ-वंश १३६८-१६४४ ई०—राजधानी नानकिङ (१३६८-१४०२ ई०), पेकिङ (१४०३-१६४४ ई०)

रूसी जार

१	ताइ-चू (चू-युवान-चाङ)	१३६८—९८ ई०
२	हुइ-ती	१३९८—१४०२ "
३	चेङ-चू	१४०२—२४ "
४	जे-चुङ	१४२४—२५ "
५	स्वान्-चुङ	१४२५—३५ "
६	यिङ-चुङ	१४३५—४९ "
७	ताइ-चुङ	१४४९—५७ "
	यिङ्-चुङ (पुन)	१४५७—६४ "

८	सियान्-चुङ	१४६४-८७ "	
९	स्याव-चुङ	१४८७-१५०५ "	
१०	वृ-चुङ	१५०५-२१ "	
११	मू-चुङ	१५६६-७२ "	
१२	शेन्-चुङ	१५७२-१६२० "	मिखाइल (१६१३-४५)
१३	कुवाङ-चुङ	१६२० "	
१४	मी-चुङ	१६२०-२७ "	
१५	सू-चुङ	१६२७ "	

छिङ (म चू)-वंश १५८३-१९११ ई०—राजधानी ल्याव-याङ (१६२१-४३ ई०), पेचिङ (१६४४-१९१२ ई०)

१	ताइ-चू नुर-हा-चू	१५८३-१६२७ "	मिखाइल (१६१३-४५)
२	ताई-चुङ (ह् वाङ-ताई-ची)	१६२७-४४ "	
३	शि -चू	१६४४-६१ "	अलेक्सान्द्र I (१६४५-७६)
४	शेङ-चू (खाङ-मी)	१६६१-१७२३ "	फ्योदोर (१६७६-८२)
५	शी-चुङ	१७२३-३५ "	पीतर I (१६९६-१७२५)
६	काउ-चुङ	१७३५-९५ "	एलिजावेत (१७४१-६१)
			एकातेरिना II (१७६२-९६)
७	जेन्-चुङ[1]	१७९५-१८२० "	पावल I (१७९६-१८०१)
			अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५)
८	स्वान्-चुङ	१८२०-५० "	निकोलाइ I (१८२५-५५)
९	वेन-चुङ	१८५०-६१ "	अलेक्सान्द्र II (१८५५-८१)
१०	मू-चुङ	१८६१-७५	अलेक्सान्द्र III (१८८१-९४)
११	ते -चुङ	१८७५-१९०८ "	निकोलाइ (१८९४-१९१७)
१२	पू-यी	१९०८-११ "	

स्रोत ग्रन्थ

1 History of U S S R (Ed A M. Pankratova, Moscow 1947)
२ ओचेक को इस्तोरिइ कलोनिजातिसइ सिबिरि १७वीं-१८वी सदी (मास्को १९४६)
३ यज़ीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (स स विलिन्स्की आदि, मास्को १९१८)
४ यज़ीकोज्नानिये
५ इस्तोरिया अेकातेरिनी वृतरोय (२ तोम्, बिल्वस्सोफ, बर्लिन १९००)
६ इस्तोरिया त्सार्त्वोवानिया पेश्रा वेलिकओ (५ जिल्द, ओस्त्रियालोफ्, पेतेरबुग, १८१५ ७१)
७ ओ देकब्रिस्ताख् पो सेमेइनीम् वोस्पोमिनानियाम् (स वोलखोन्स्की)
८ इस्तोरिया सससर (४ जिल्द, व इरब्दोनिकम्)
९ क वप्रोसु ओ खिम्नियान्स्त्वे ना रुशि दो व् ग्रादिमिरा (न वोरो इकोवा, १९१७)

अध्याय २

श्वेत-ओर्दू (२)

(१४२५-१७२८ ई०)

१ बुर्राक, बरका, कोइरियक-पुत्र (—१४२७ ई०)

श्वेत-ओर्दू (अक-युर्त) के बारेमे हम पहले कह चुके है। उसी ओर्दूके प्रतापी खान बुर्राकने अपने दक्षिणी पडोसियोकी नाकमे दम कर रक्खा था। बोराक खानकी मृत्यु ८३१ हि० (२२ X १४२७-११ IX १४२८ ई०) में हुई। यही बुर्राक (बोर्राक) या बरका श्वेत-ओर्दूकी नई शाखाका सस्थापक था, जिसकी राजधानी सिर-दरियाके तटपर सिगनक थी। बुर्राक खानके दो बेटो गिराई और जानीबेगमेसे गिराई बापके मरनेपर गद्दीपर बैठा। इस वशमे निम्न खान हुये—

१	बुर्राक, बरका, कोइरियक-पुत्र	—१४२७ ई
२	गिराई, बुर्राक-पुत्र	१४२७— "
३	बेरेंदक, गिराई-पुत्र	—१५०९ "
४	कासिम, जानीबेग-पुत्र	१५०९–१८ "
५	मीमाश, यादिक-पुत्र	१५१८— "
६	ताहिर, यादिक-पुत्र	
७	उजियाक अहमद, उज्बेक, जानीबेग-पुत्र	
८	अकनजर, कासिम-पुत्र	—१५८० "
९	शिगाई, यादिक-पुत्र	१५८०— "
१०	तवक्कल, शिगाई-पुत्र	—१५९८ "
११	इशिम, शिगाई-पुत्र	१५९८–१६३५ "
१२	जहागीर, इशिम-पुत्र	१६३५–९८ "
१३	तौफीक, तिअबका, जहागीर-पुत्र	१६९८–१७१८ "

२ गिराई, बुर्राक-पुत्र (१४२७–ई०)

१४९१ ई० में अबुल्खैर शैबानीका किपचक भूमिमें प्रताप छाया हुआ था, जिसके डरके मारे गिराई और जानीबेग दोनो भाई किपचक छोड भागकर इस्सिकुल-काशगर (मुगोलिस्तान)के खान इस्सनबुगाके पास पहुचे। मुगोलिस्तानी खानने दोनो भाइयोको चू-उपत्यका और बशीकुजीमें चर-भूमि दी। जब तक १४६९ ई० में अबुल्खैर मर नही गया, तब तक दोनो भाइयोको पश्चिम की ओर नजर डालनेकी हिम्मत नही हुई। अब उनके पास दो लाख व्यक्ति हो गये थे—इनके ओर्दूका नाम उज्बेक-कजाक पडा था। दोनो भाइयोने अपनी पितृभूमिके उद्धारका बीडा उठाया, लेकिन अबुल्खैरके पुत्र भी दबनेवाले नही थे, इसलिये जबर्दस्त सघर्ष शुरू हुआ। मुगोलिस्तानके खान महमूदने एक ओर बुर्राकके पुत्रोकी सहायता की, तो दूसरी ओर अबुल्खैरके पौत्र मुहम्मद शैबानीको भी तुर्किस्तान शहर देकर सहारा दिया। गिराई और जानीबेग इससे रुष्ट हो गये—"शैबानी हमारा शत्रु है, फिर खान क्यो उससे मेल कर रहा है?" अन्तमें दोनो भाइयोने मुगो-

लिस्तानी खान महमूदसे झगडा कर दो लडाइयोमें महमूदको बुरी तरह हराया, जिसका वदला महमूद के छोटे भाई अहमदने उज्वेक-कजाकोको तीन वार हराकर लिया——इसी समय इनका नाम उज्वेक-कजाक पडा, जिसमें कजाक शब्द साधारण डाकूके लिये नही, वल्कि साहसियोंके लिये मध्य-एसियाम
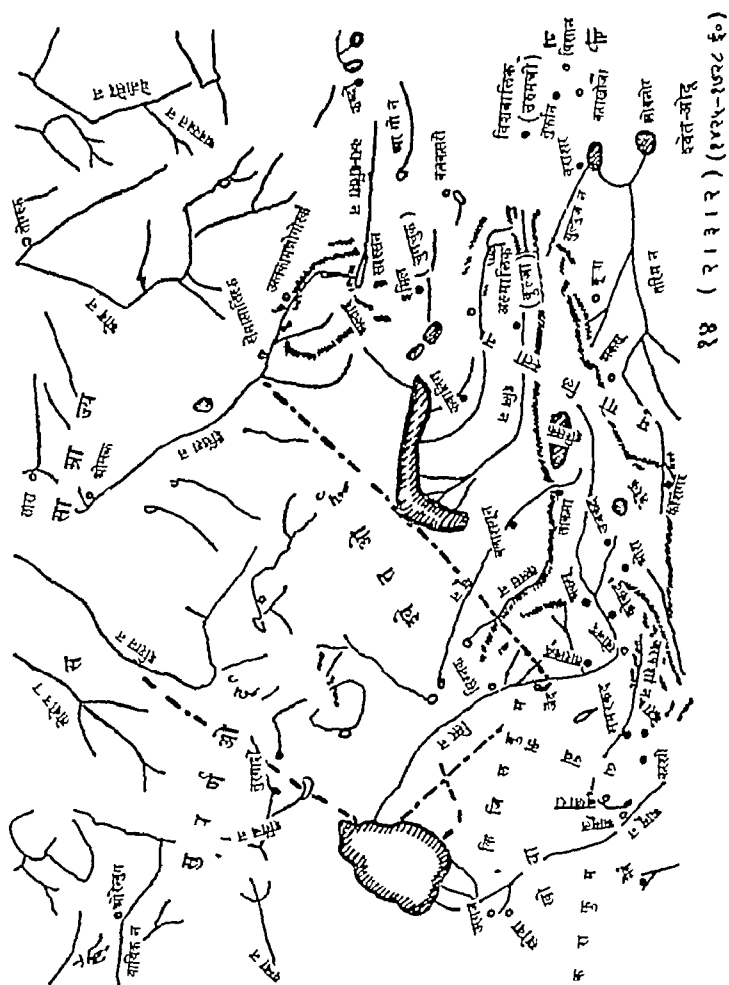
प्रयुक्त होता था——उज्वेक-कजाक (=श्वेत-ओर्दू) का अथ पहले "साहसी * उज्वेक खानके उलुम वाले" लिया जाता होगा, पीछे कजाक विशेपण नही, वल्कि वुर्रा्कके पुत्र गिराई और जानीवेगके अनुयायी श्वेत-ओर्दूका दूसरा नाम ही पड गया, जो आज भी प्रचलित है।

३ वेरेदक खान, गिराई-पुत्र (——१५०९ ई०)

गिराई और जानीवेग कव मरे, इसका ठीक पता नही ह। उनके वाद गिराईका पुत्र वरेंदक उज्वेक-कजाकोका खान हुआ। उज्वेक खानका पुराना उलुम अव शैवानी और कजाक दो प्रतिद्वंद्वी भागोमें विभक्त था, जिनका द्वंद्व वेरेंदकके समयमे भी जारी रहा। आगे चलकर मुहम्मद शैवानी

* तुर्की भापामें "कजाक" वहादुर (वीर) को कहते हैं।

के किपचक-तुर्क उज्बेक कहे जाने लगे, और बुर्राक-वशके अनुयायी कजाक। वेरदक उस समय सिग-नकमें था, जब कि उज्बेक मुहम्मद शैवानीके पास नोगाई खान मूसाका दूत आया था, और उसने दश्तकिपचकका खान बननेके लिये निमत्रण दिया। मुहम्मद शैवानी वहा गया। मूसाने स्वागत भी किया, लेकिन अब उज्बेकोका वास्तविक नेता वेरदक खान था, जिसे पसद नही था, कि मुहम्मद शैवानी किपचकका भी खान बने। वेरेदक सेना लेकर आया, लेकिन शैवानीने उसे मार भगाया। पीछे मूसाने अपने वचनको भग कर दिया और अमीरोंके राजी न होनेका बहाना करके मुहम्मद शैवानीको खान बनने नही दिया। १४९८ ई० मे मुहम्मद शैवानी और उसके भाई महमूदने सारे तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका) पर अधिकार कर लिया। शैवानीके हटते ही वेरेदव अपनी सेना लेकर सावरानपर चढ आया। अमीर मुहम्मद तरखनके कहनेपर नागरिकोने महमूद शैवानीको पकडकर वेरेंदकके चचेरे भाई जानीवेग-पुत्रके हाथमें दे दिया, जिसने उसे सूजक भेज दिया, लेकिन वह भागकर अपने भाई मुहम्मद शैवानीके पास ओतरार पहुचनेमे सफल हुआ। वेरेंदक सावरान शहरको नही ले सका था। इसी समय वेरेंदकके कजाक मुगोलिस्तानके खानसे मिलकर ओतरारके विरुद्ध अपना सैनिक प्रदर्शन कर लौट आये। इसपर शाहीवेग कजाकोंके ऊपर चढ दौडा। उस समय उनका डेरा अलाताग (वेर्नोये) के पास अलाताउके पहाडोमे था। आखिरमे दोनो पक्षोमे समझौता हो गया। वेरेंदकने अपनी लडकी मुहम्मद शैवानीके पुत्र मुहम्मद तेमूर सुल्तानको प्रदान की। लेकिन घुमन्तुओका समझौता तोडनेके लिये ही हुआ करता था। ९१२ हि० (२४ V १५०६-१४ IV १५०७ ई) मे कजाकोने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण कर दिया। शैवानीने उनका जवाब दिया। दो साल बाद १५०९ ई० में फिर कजाकोने प्रहार किया। इस समय वेरेंदक किपचकों-का नाममात्रका खान था, असली शक्ति उसके चचेरे भाई जानीवेग-पुत्र कासिमके हाथमें थी। कजाकोकी दो लाख सेना उसके पास थी। जाडोमे मुहम्मद शैवानी बुरुकमे ठहरा हुआ था। जाडोके अन्तमें यकायक कासिमके चढ आनेकी बात सुनकर उसने मुकाबिला करना चाहा, लेकिन बहुत हानि उठाकर उसे वहासे समरकन्द भागना पडा, जहासे भी खुरासानमें हटना पडा। इसी समय कासिमने कजाक तख्त लेकर वेरेंदक खानको समरकन्द भगा दिया।

४ कासिम, जानीवेग-पुत्र (१५०९-१८ ई०)

अब खानकी गद्दी गिराईके वशसे निकलकर जानीवेगके खानदानमे चली गई। किपचक-भूमि गिराई-जानीवेगके कजाकोंके हाथमें थी। धीरे-धीरे दश्त-किपचककी जगह कजाकस्तानका प्रयोग होता जा रहा था। वेरेंदकके शासनकालमें कासिमने अपनी प्रभुता बढा ली थी, लेकिन वह खानके पास यह कहकर नही रहता था—"यदि मैं सम्मान नही दिखाऊगा, तो खान नाराज होगा, और सम्मान दिखाना मेरी आत्माके विरुद्ध होगा।" उस समय वेरेंदक सिगनक और मुगो-लिस्तानके सीमान्तपर रहता था। खान हो जानेपर कासिम किपचकोका सबसे शक्तिशाली खान था। उसके पास दस लाख सेना थी। इतनी बडी सेना जू-छिके बाद किसी खानके पास नही रही। कासिमके नौ भाइयोमें सबसे अधिक प्रसिद्ध यादिक या उज्बेक सुल्तान था, जिसने मुगोलिस्तानके खान यूनसकी चौथी लडकी सुल्तान निगार खानम् (तेमूरी सुल्तान अबूसईदके लडके महमूद मिर्जाकी विधवा)से शादी की थी। यादिकके मरनेपर वह कासिमकी भी बीवी बनी। नोगाई शेखमिर्जासे लडाई करते वक्त ९३० हि० (१० XI १५२३-२८ X १५२४ ई०) बेटेने कासिमको मार डाला, और अपने बाप यादिकके स्थानको चचासे छीन लिया।

५ मीमाश, बिबाश, यादिक-पुत्र (१५१८—ई०)

मीमाशने मुगोलिस्तानके रशीद खानकी लडकी ब्याही थी। वह लडाईमे मारा गया।

६ ताहिर, यादिक-पुत्र

भाईके मरनेपर ताहिर गद्दीपर बैठा। ९२९ हि० (२० XI १५२२-११ X १५२३ ई०)

१० तवक्कल, शिगाई-पुत्र (१५९८ ई०)

बाबा सुल्तान और शैबानी अब्दुल्ला खानका झगडा इसके समयमें भी चलता रहा। तवक्कल अब्दुल्ला शैबानीके दरबारमें एक बार नाम कमा चुका था। वह शैबानी खानका समर्थक था। जब १५८२-८३ ई०मे अपने उलुगतागवाले प्रसिद्ध अभियानसे शैबानी खान लौट रहा था, उसी समय तवक्कल अककुरगानमे अपने पशुओकी देखभाल कर रहा था। उसने सुना कि बाबाका भाई सुल्तान ताहिर अभी-अभी सुगकके डाडेसे पार हुआ है। तवक्कलने पीछा करके ताहिरको पकडकर अब्दुल्लाके हाथमें दे दिया। खानने उसे जरबफ्तकी खिलअत और इनाम दिया। कुछ ही दिनो बाद तवक्कलने बाबा सुल्तान, जानमुहम्मद अतालीक, बाबाके पुत्र लतीफ सुल्तान और दूसरोंके शिर काटकर अब्दुल्लाके पास भेट किये। खानने बहुत भारी इनाम दे उसे समरकन्दके सबसे अच्छे इलाके आफरीकदका राज्यपाल बना दिया, जहा अब्दुल्ला स्वय बापके समय राज्यपाल था। तवक्कलके हाथमें बाबाके पडनेके बारेमें कहा जाता है नोगाइयोमे जानेपर उसे विश्वासघातका डर लगने लगा, तब उसने भागकर तुरा (साइबेरिया)की ओर जाना चाहा। फिर आशा हुई, कि शायद अपने लोगोंसे मदद मिले, इसलिये तुर्किस्तानकी ओर मुड पडा। रास्तेमें सिगनकमे ठहरकर उसने अपने दो कलमक सहायकोंको पता लगानेके लिये भेजा। दोनो कलमक तवक्कलके हाथमें पड गये, और उन्होने तवक्कलको साथ ले तम्बूमें पडे बाबाका शिर कटवानेमें सहायता की।

तवक्कल दो लाख कजाक-परिवारोका खान था। इस समय कलमक भी बहुत शक्तिशाली हो चुके थे। तवक्कलने अपने कजाकोको लेकर एक बार कलमकोंके देशपर हमला किया। इसपर कलमक राजाने अपने सैनिकोको यह कहकर भेजा, कि तवक्कलका शिर लिये बिना न लौटना। कलमकोकी भारी सेना देखकर तवक्कल ताश्कन्दकी ओर भागा, लेकिन कलमकाने पीछा करके उसके आधे आदमियोको बदी बना लिया। बाकी बचे ताश्कन्द पहुचे, जिसका राज्यपाल नौरोज अहमद बुर्राक खान था। तवक्कलने उसके पास दूत भेजकर कहलवाया—"मैं तुम्हारे देशमें आया हू, तुम्हारी शरण लेना चाहता हू। हम दोनो छिङ्गिस् खानके वशज है, अतएव एक दूसरेके सबधी है। दोनो मुसलमान होनेसे धम-भाई भी हैं। मेरी सहायता करो और आओ हम दोनो मिलकर कलमकोसे लडें।" बुर्राक खानने जवाब दिया—"अगर हमारे-तुम्हारे जैसे दस अमीर भी एक हो जायें, तो भी हम कलमकोका कुछ नही बिगाड सकते। वह याजूजके ओर्दूकी तरह असख्य है।"

तवक्कलने अन्तमें भागकर अब्दुल्ला खान शैबानीकी शरण ली। १५८३ ई० म अन्दिजान और फरगाना पर अब्दुल्लाने जो अभियान किया था, उसमे तवक्कल उसके साथ था। इसी समय तवक्कलको पता लगा, कि अब्दुल्लाके भाव उसके प्रति अच्छे नही है, इसलिये वह उसके हाथसे निकलकर दश्त किपचकमें चला गया। १५८६ ई० में अब्दुल्लाको दूसरी जगह फसा देखकर तवक्कलने तुर्किस्तान, ताश्कन्द ही नही समरकन्दको भी खतरेमें डाल दिया। अजतर्बेदमे छोटी-सी सेना आई, जिससे शराब खाना (ताश्कन्द इलाकेमे) मे लडाई हुई। कजाकोंके पास अच्छे हथियार नही थे, कवचकी जगह उनके पास चमडेके कोट थे, लेकिन वह बडे बहादुर थे, इसलिये अब्दुल्लाके उज्बेक बुरी तरहसे हारे। अब्दुल्लाके भाई उबैदुल्ला सुल्तानने समरकन्दमे पराजयकी खबर सुनी, तो वह सेना ले सिर नदी पार हो ताश्कन्द पहुचा। तवक्कल उस समय सैरामके पास डेरा डाले पडा था। भारी सेनाकी खबर पाकर वह किपचकभूमि की ओर लौटा, जहा कुछ समय तक उबैदुल्लाने उसका पीछा करनेका असफल प्रयत्न किया।

१५८८ ई० म अब्दुल्ला खानके बहनोई, रुस्तम-पुत्र जानीबेग-पौत्र उज्बेकन ताश्कन्दके राज्यपाल रहते समय विद्रोह कर दिया। ताश्कन्द-शाहख्खिया-खोजदके लागाने कजाक-सुल्तान जानअलीको अपना खान घोषित किया। विद्रोहमें अकलजरके पुत्र मुगातार्द और दीनमुहम्मदने भी भाग लिया।

इन लडाइयोसे मालूम होगा, कि शैवानियोंके प्रतापी खान अब्दुल्लाको उत्तरके घुमन्तू कितना परेशान किये रहते थे। १५९४ ई० मे तवक्कलने जार फयोदोर इवान-पुत्रके पास अपना दूत भेजकर निवेदन किया, कि मैं अपने उलुसके साथ जारकी प्रजा बनना चाहता हू, मेरे भतीजे उराज मोहमेतको मुक्त कर दिया जाय। मार्च १५९५ ई० मे जारने तवक्कलके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया, और कुछ बारूदी हथियार भेजकर उससे कहा, कि बुखाराके खान अब्दुल्लाके साथ शांति रखो, सिबिरखान कूचुमको अधीन बनाओ। भतीजेको हम मुक्त कर रहे हैं। उसकी जगह दरबारमे अपने पुत्रको भेजो।

लेकिन, तवक्कल भला अन्तर्वेदकी लटसे अपनेको क्यो वंचित होने देता? १५९७ ई० मे अब्दुल्ला और उसके पुत्र अब्दुल मोमिनके बीचके झगडेकी खबर उसे तुर्किस्तानमे मिली। तवक्कल खान—अब वही खान था—बहुत-से कजाक अमीरो और सैनिकोंके साथ ताश्कन्दकी ओर बढा। अब्दुल्लाने तवक्कलको कोई महत्त्व नही दिया और उसके मुकाबिलेके लिये कुछ सुल्तानो, शाहजादो और पडोसी अमीरोको थोडी सेना देकर भेजा। ताश्कन्द और समरकन्दके बीच सख्त लडाई हुई, जिसमे अब्दुल्लाकी सेना हारी, बहुतसे सेनापति मारे गये, बाकी बुखारा भाग गये। अब्दुल्ला मुकाबिलेके लिये बुखारासे समरकन्दकी ओर चला, लेकिन बीच हीमे बीमार होकर मर गया। अब तवक्कलकी बन आई। उसने भारी सेना ले तुर्किस्तानसे अन्तर्वेदमें घुसकर अकसी, अन्दिजान, ताश्कन्द, समरकन्द तथा मियानकुल तकके प्रदेशपर अधिकार कर लिया। फिर अपने भाई इशिम सुल्तानको बीस हजार सेना दे समरकन्दमें छोड सत्तर-अस्सी हजार सेनाके साथ बुखारापर चढा। पीर मुहम्मद पद्रह हजार सैनिकोंके साथ बुखाराकी रक्षापर नियुक्त था। उसने शहरके दरवाजोको बन्द कर लिया, और बीच-बीचमे निकल कर कजाकोके ऊपर ग्यारह दिनोतक वह छापा मारता रहा। बारहवे दिन सारी सेना शहरसे बाहर निकल आई। शाम तक भयकर युद्ध हुआ। कजाक हारकर तितर-बितर हो गये। धोखा देनेके लिये डेरोमें आग जली छोड तवक्कल रातको ही चला गया था। इस हारकी खबर समरकन्दमे इशिमको मिली। उसने अपने भाईके पास सदेश भेजा—"तुम्हे बहुत लज्जा आनी चाहिये, कि मुट्ठीभर बुखारियोने इतनी भारी सेनाको हरा दिया। अगर तुम यहा आये, तो हो सकता है, समरकन्दके लोग तुम्हारा स्वागत नही करें। खानको देश लौटना चाहिये, और मैं भी अपनी सेना लेकर उसके साथ मिलनेके लिये आ रहा हू।" तवक्कल अपने भाईके साथ लौटा। मियानकुल प्रदेशके उजुनसुकाल स्थानमें पीर मुहम्मद पीछा करते हुये सामने आया। एक महीने तक दोनोकी झडप होती रही, इसके बाद तवक्कल ने धावा बोल दिया। पीर मुहम्मदके सबधी सैयद मुहम्मद सुल्तान और दूसरा अफसर मुहम्मद बाकी अतालीक काम आये। तवक्कल भी लडाईमे घायल हुआ, और लौटते समय १५९८ ई० मे ताश्कन्दमें मर गया। उज्बेकों और कजाकोंके युद्धका कोई फैसला नहीं हुआ।

११ इशिम, शिगाई-पुत्र (१५९८–१६३५ ई०)

भाईके मरनेपर इशिमने कजाकोका नेतृत्व ग्रहण किया। उसने पहले बुखाराके विरुद्ध कोई भारी कदम उठाना नही चाहा। १६११ ई० में बुखाराके अधिकारच्युत खान वली मुहम्मद और उसके भतीजे इमामकुल्लीके झगडेमे इशिम पाच हजार कजाकोंके साथ शामिल हुआ। वली मुहम्मद मारा गया। इस सघर्षमें इशिमका भाई सैयदबी भी शामिल हुआ था। उरगज (ख्वारेज्म)मे भागा अबुलगाजी १६२५ ई० में इशिम खानके पास तुर्किस्तान शहरमें आकर तीन मास तक रहा। ताश्कन्द का तुरसुन खान (अकनजर-पुत्र) जब तुर्किस्तानमे आया था, तो इशिमने अबुलगाजीका यह कहकर उससे परिचय कराया—"यह यादगार-खानके वशज अबुलगाजी हैं। इनसे पहले हमारे यहा ऐसे राजकुमारने शरण नही ली, यद्यपि दूसरे बहुत-से राजकुमारोने शरण ली थी।" तुरसुन खान अबुलगाजीको अपने साथ ताश्कन्द ले गया। दो साल बाद १६२७ ई० में इशिमने तुरसुनको मार दिया, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुल्ली खानके पास बुखारा जानेकी इजाजत दे दी। कजाको और बुखाराके खान इमामकुल्लीके बीच झगडा-लडाई चलती रही। कजाकोने दो बार १६२१ ई० में बुखारियोको हराया था। अकनजर खानके पुत्र तुरसुन मुहम्मदने बीचमें पडकर समझौता करवाया।

अब कजाकोंके भारी शत्रु पूर्वमें जुगारियाके कल्मक (मगोल) थे, जिनके आक्रमण उनके ऊपर बराबर हो रहे थे। १६३५ ई० में इशिम खानने कल्मक राजा बातुर खुङ-तैशीके साथ लडाई मोल लेकर कजाकोंके ऊपर आफतका पहाड ढा दिया। कजाक सेनाका सेनापति इशिम-पुत्र यमगीर (जहांगीर) सुल्तान कल्मकोंके हाथमें बंदी बना। इसीके आसपास इशिम मर गया।

१२ यमगीर, जहांगीर, इशिम-पुत्र (१६३५-९८ ई०)

मित्रताका वादा करके जहांगीर मुक्त हो गया, लेकिन कजाकोंका खान बननेके बाद उसने फिर जुंगरो (कल्मकों) से छेडखानी शुरू की। अन्तमें १६४३ ई० में पचास हजार सेना लेकर बातुर खुङ-तैशी उसके ऊपर पडा, और अलतन किर्गिजों और तोकमक कबीलोंको पकडकर अपने साथ ले गया। इस लडाईमें जुंगरोंने कजाक सेनाका इतना सत्यानाश कर दिया, कि जहांगीरके पास सिर्फ छ सौ आदमी रह गये। वह दो पहाडोंके बीच ताकमें छिपा हुआ था, जब कि कल्मकोंने आक्रमण किया। जहांगीरने पीछेसे कल्मकोंपर आक्रमण किया। उसके बारूदी हथियारोंने कल्मकोंके बीचमें गजब ढाया। दस हजार कल्मक मारे गये। फिर जल्दी ही बीस हजार सेना जमा करके जहांगीर यलानतुश पहुंचा। बातुरको असफल लौटना पडा। अगले साल १६४४ ई० में बातुरने फिर अपने आदमियोंको कजाकोंके साथ लडनेके लिये जमा किया, लेकिन जहांगीरका मित्र खोसोत मगोल कबीलेके सरदार कुदेलिंग ताईशी बीचमें पडा। इस प्रकार कल्मकों और कजाकोंका युद्ध उस समय बच गया, और जहांगीर तुर्किस्तान चला गया।

१३ तौकीक, तवका, तिअबका, जहांगीर-पुत्र (१६९८-१७१८ ई०)

कजाक खानोंमें यह अत्यन्त प्रसिद्ध और जनप्रिय खान था। घुमन्तुओंके झगडोंको शांतिपूर्वक मिटानेमें इसने बडी सफलता पाई। कमजोर कबीलोंको वह सहानुभूतिसे अपनी ओर मिला लेता, शक्तिशाली कबीलोंको इज्जत करना सिखलाता। इसीने कजाकोंको तीन ओर्दुओंमें बांटा। एक तरह यह बटवारा बहुत प्राचीन समयसे चला आता था, जब कि इनके पूर्वज आग्ज-नुक कहे जाते थे। तिअबकाने उनकी जगहपर तीन विभाग किये, और महाओर्दूके लिये तिवोल, मध्यओर्दूके लिये वज्रेक और लघुओर्दके लिये एतियकको केन्द्र बनाया। तौकीकके जीवनभर कजाक एकताबद्ध रहे। तुर्किस्तान शहर उसकी राजधानी थी।

१६९८ ई० में जुंगर राजा छेवङ-अरबतनने कजाकोंके साथ हुये संघर्षोंके बारेमें चीन सम्राटके पास लिखा था—'दूसरे कल्मक राजा गदनने तौकीकके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दलाई लामाके बीचमें पडनेके] लिये कहा, इस पर पुत्रको पांच सौ आदमियोंके साथ छोड दिया गया। उस (तौकीक-पुत्र) ने विश्वासघात करके मेरे आदमियोंको मार डाला, और सरदार, उसकी बीबी, उसके बच्चोंको एक सौ किबितका (परिवारों) के साथ छीन लिया। यह घटना हुलियान हान (संभवत कल्मकोंका ग्रीष्म वासस्थान उलुगताग-पर्वतमाला) में हुई। तवकाने इसके बाद अपनी बहिनके साथ बापके पास जाते तोरगुत राजा आयुकापर रास्तेमें हमला किया। फिर हमारे देश से अपने देश लौटकर जाते एक रूसी करवाको लूटा।" यह सब दोष कल्मकोंने तवका (तौकीक) और उसके कजाकों पर लगाया। कल्मकोंके साथ लडाई लडकर कजाकोंने अपना भारी अनिष्ट किया। इसीके कारण वह अपनी पुरानी भूमिसे भागनेके लिये मजबूर हुये, और उनके कबीले भी छिन्न-भिन्न हो गये। अन्तिम दिनोंमें तवका खानका भी जोर कम हो गया। उसके सरदार अपने-अपने कबीलोंको ले स्वतन्त्र हो गये। कजाकोंके तीनों आर्दू अपने स्वतन्त्र अमीरोंके शासनमें रहने लगे, जिनमें मध्य ओर्दू बहुसंख्यक और अधिक शक्तिशाली था, यही अपनेको श्वेत-ओर्दूका असली उत्तराधिकारी मानता था। १७१८ ई० में कल्मकोंके आक्रमणसे परेशान होकर तौकीक खान, सामय खान और अबुलखैर खानने साइबेरियामें जार पीतर I के राज्यपाल गगारिनके सामने जाकर अधीनता स्वीकार कर दिया। तवका १७१८ ई० में मरा।

३ (२ श्वेत-ओर्दू-वंशवृक्ष)
(१४२५-१७२८ ई०)

स्रोत ग्रन्थ

१ तारीखे-रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर)
2 History of Mongol (H H Howorth)

अध्याय ३
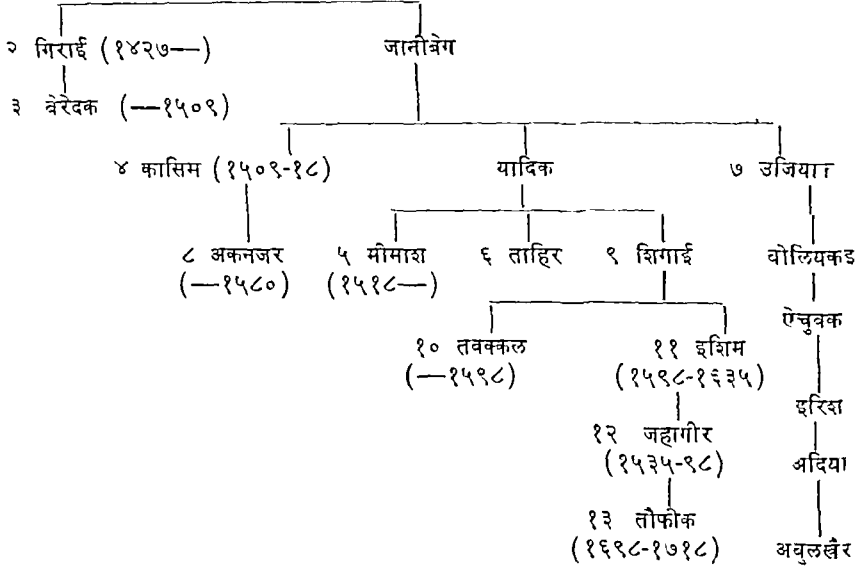
नोगाई

(१३००-१७२४ ई०)

१ नोगाई (–१२९९ ई०)

किपचक भूमिमे प्राचीन समयमे ही वहाके तुर्क कबीलोको अपने सामन्तोंके नामपर नया नाम लेते देखा जाता है, इसलिये नोगाई नाम होनेका यह अर्थ नही, कि उनका आरम्भ जू-छि प्रपौत्र तेवल-पुत्र तारतार-पुत्र नोगाईके समयसे होता है। ईसाकी आरम्भिक सदियोमें हूणोको हमने वल्काशसे कास्पियनके उत्तरी तट तक फैलते देखा, उनसे पहले यह भूमि शकोकी थी। एक तरह मगोलायित जातिका इस भूभागमें निवास इसी समयसे आरम्भ होता है। तुर्कोंकी मारसे जब पूर्वके अवार भागे, तो इनमेंसे कितनोंने अवारका नाम कायम रक्खा और कितने ही अपनी बैल-गाडियोपर घुमन्तू जीवन बितानेके कारण कङ्ग या कङ्-ली कहे गये। अवारोने ठप्पा प्राचीन हूणोके इन वशजोपर अपने नामका नही लगाया, लेकिन अवारोंके प्रतिद्वन्द्वी और उत्तराधिकारी तुर्कोंने जब चीनकी सीमासे कास्पियनके उत्तर तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया, तबसे इन्हे तुर्क कहा जाने लगा—आज भी इस भूमिके उनके वशज कजाक तुर्कोंकी एक शाखा माने जाते है। मगोलोके समयमे इन असख्य मगोलायित ओर्दुओमसे एकका नाम खानजादा नोगाईके नामसे नोगाई पडा। उससे पहले नोगाई कहे जानेवाले कबीले वोल्गासे पश्चिममें द्नियेपरके पार तक दक्षिणी रूसमे पेचेनगाके नामसे चरवाहोका जीवन बिताते थे। पेचेनगा जू-छिके पुत्र तेवल या तारतारको जागीरमे दिये गये थे, जो पीछे उसके पुत्र नोगाईके हाथमें आये। नोगाई सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी खान बरकाके समय प्रधान-सेनापति था। उसने ईरानके हुलाकू-वशी खानोको कई बार काकेशसकी भूमिमें हराया था, यह हम बतला आये है। इसने कान्स्तन्तिनोपलके सम्राट् मिखाइल पलियोलोगस (१२००-६१ ई०) की लडकी यूफियोसिनसे व्याह किया था। मिखाइलकी दूसरी लडकी मरिया हुलाकू खानसे व्याही थी। नोगाई बहुत प्रभावशाली मगोल राजकुमार था, यह भी हम बतला चुके है। दोनमें दन्यूब तककी भूमिका वह स्वामी था, और बुल्गारी (वोल्गा) का राजा भी उसके अधीन था। १२९९ ई० के आसपास सुवर्ण-ओर्दूके खान तारतारीने द्नियेपर पार हो ओजीम जिस तरह बूढे नोगाईको घायल किया, और आखिरमे वह मर गया, यह बतला आये है। इसीके समयमे पुराने पेचेनगा नागाई कहे जाने लगे। आगे चलकर इनके दो भाग हुये, जिनमे महानोगाई यायिक (उराल) और यम्बा नदियोके बीचके प्रदेशके दक्षिणी भागमे रहते थे, ये पूरी तौरसे मुसलमान हो गये थे। इनका दूसरा भाग बाश्किराके सीमातपर रहता था, जो बहुत कुछ पुराने मगोलोंके धर्म और रीति-रवाजोका पालन करते थे। इन्हीमे सिबेरियाके खान थे।

२ चुके, चुको, नोगाई-पुत्र (१३०० ई०)

नोगाईके मरनेपर उसके लडके चुकेको पकडनेके लिये तारताई खानने आदमियोने बहुत कोशिश की, मगर वह हाथ नही आया। पहले वह आस (उवान) में गया, फिर वहासे बुल्गारियाम अपने बहनोईके पास चला गया, किन्तु १३०० ई० के आसपास उसका सिर काटकर खानके पास भेज दिया गया।

३ बुरी, नोगाई-पुत्र (—१३०१ ई०)

यह इलखान (ईरानी) अबकाका दामाद था। इसने पिताकी हत्याका बदला लेना चाहा, लेकिन तोकताई खानको षडयंत्रका पता लग गया, और यह १३०१ ई० मे मारा गया।

४ कराकिजिक, चुके-पुत्र

नोगाईका खानदान एक-एक करके मुवण-ओर्दूके खानोकी कोपाग्निमे भस्म हो रहा था, लेकिन राजकुमार नोगाईके प्रताप और दीर्घकालीन शासनके कारण उसके उलुसका समय-समयपर बिखराव-जमाव होता रहता था, जिसके ही कारण नोगाई कबीलेका नाम इतने समय तक बना रहा।
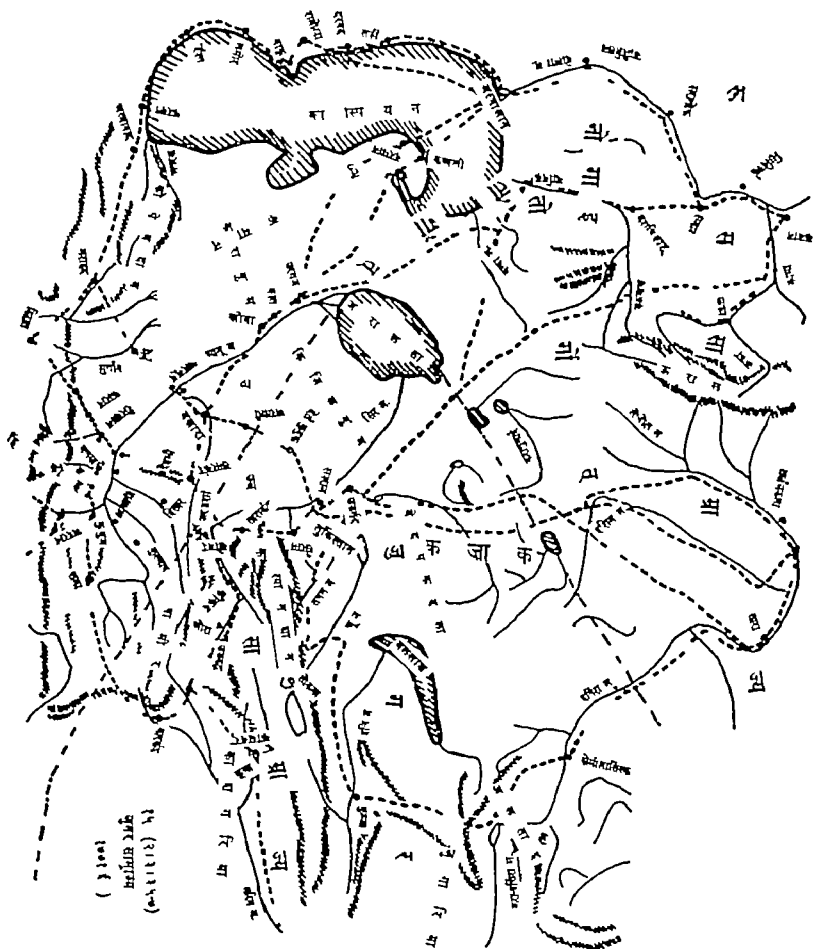
अपने बाप और चचाके मारे जानेके बाद कराकिजिक अपने दो न अधियो तथा तीन हजार अनुयायियोके साथ साइबेरियाके शमममान देशके अबादुल स्थानमें गया, जहासे वह तोकताके राज्यमें जब-तब लूट-मार करता रहा। शमममान लोगोने कराकिजिक और उसके अनुयायियोको बडे सम्मानके साथ रक्खा, और वह गुइउक या यायिक (उराल) नदीकी उपत्यकामें बस गये।

जब बा-तू-वंश निर्वंश हो गया, तो अमीरोंने लाकर शैबानी-वंशज खिजिर खानको सुवर्ण-ओर्दूका खान बनाया, जिसे हटाकर जक्रियाने अपने पुत्र करा नोगाईको खान बना दिया।

५ करा नोगाई, जेक्रिया-पुत्र

करा नोगाईका करा तोगाई भी कहते है। इसके अधीन वोल्गाके पूर्वी इलाकेमे नोगाइयोंके कई कबीले थे। करा नोगाईके बाद फिर नोगाइयोके खानोका सूत्र विलुप्त हो जाता है, और तेमूर-लंगके समकालीन इदिकूके समयमें फिर हम उन्हें प्रभावशाली कबीलेके रूपमे देखते है।

§२ महानोगाई (१४३१ ई०)

१ नूरुद्दीन, इदिकू-पुत्र (१४३१ ई०)

इदिकूको मंगतोका बेग कहा गया है, और मंगुत नोगाई ही थे, इसमे संदेह नही। इदिकू तेमूर लंगके प्रभावशाली अमीरोंमसे था। तोकतामिशके विरुद्ध तेमूरके अभियानमे यह उसका प्रधान पथप्रदर्शक रहा। तोकतामिशकी हारके बाद इदिकू तेमूरसे छुट्टी लेकर अपने कबीलेमें चला गया। तेमूर कुतुलुक किपचक-खानोकी गद्दी चाहता था, और इदिकू उसका चाणक्य था। १३९९ ई० मे तेमूर कुतुलुकके मरनेपर किपचकके सिंहासनपर इदिकूने तेमूरके भाई सादीबेगको बैठाया। फिर १४०७ ई० में उसे हटाकर पुलादबेगको खान बनाया। १४३१ ई० मे तोकतामिश-पुत्र कादिरबरदीसे जो संघर्ष हुआ, शायद उसीमें इदिकू मारा गया। इदिकूके मरनेपर उसके पुत्र गाजी नोरोज और मसूरने रूसमें शरण ली, तथा उसके दूसरे पुत्र कैकुबाद और नूरुद्दीन तूरान (तुर्किस्तान) की ओर भाग गये।

इदिकूके समय तक पुराने नोगाइयोकी परंपरा जारी रही, और आदिम राजकुमार नोगाई, और अन्तिम इदिकके कालोंमे नोगाई कबीला शक्तिशाली और बहुसंख्यक रहा। पुराने कबीलेके पतनके बाद उसका अधिकांश भाग यायिक (उराल) और यम्बा नदियोके बीचमें रहता था। इदिकू-पुत्र नूरुद्दीन उनका खान बना। यही महानोगाई कबीलेका संस्थापक था।

नूरुद्दीनको अपने पिताका उलुस बहुत क्षीण रूपमे मिला था, जिसके अस्तित्वको वह यथाशक्ति भर रख सका।

२ ओकस, नूरुद्दीन-पुत्र (१४८७ ई०)

१५ वी सदीके मध्यम कजाक खानोके भीतर नोगाइयोका अब काफी असर बढ चुका था। उनके दोनो भाइयो मुहम्मद अमीन और अलीखानके झगडोमे नोगाई अलीके समर्थक थे। लेकिन, अलीको रूसी पसंद नहीं करते थे। १४८७ ई० में रूसियोने अली पर आक्रमण करके उसे पकड लिया। दो साल बाद १४८९ ई० मे त्यूमनके शासक तजार ईवक, मिर्जा ओकास, या तत्पुत्र हसन, मूसा, और यमागुरचीने जारके पास अलीको छोड देनेके लिये चिट्ठी लिखी थी।

३ यमागुरची, ओकस-पुत्र (१४९९ ई०)

अब नोगाइयोका प्रभाव यही था, कि वह कजाक खानोके आपसी प्रतिद्वंद्वितामे किसी पक्षके सहायक होते रहे। यमागुरची और मूसाने कजाक खान अब्दुल लतीफके ऊपर उसके भाई मुहम्मद अमीनकी ओरसे हमला किया, लेकिन अब्दुल लतीफकी पीठपर रूसी थे, इसलिये उन्हे हारना पडा। शायद इसी समय यमागुरची मर गया। १५०५ ई० मे हम कजाक खान मुहम्मद अमीनको चालीस हजार कजाकों और बीस हजार नोगाइयोंके साथ रूसी सीमातपर आक्रमण करते देखते है। इसी युद्धमें मुहम्मद अमीन खानका साला मूसा मारा गया।

१५१७ ई० से १५२६ ई० तक वोल्गापारके नोगाई यायिक (उराल) और कास्पियनके तट पर तीन भाइयोमे विभक्त थे, जिनमे (१) सिदियक खान सेरायचुक नगरका स्वामी था, यायिक-उपत्यका इसीके हाथमें थी, (२) हसन (गमन) को कामा-वोल्गा और यायिक नदीके बीचका इलाका मिला था, और (३) शेख ममाईको सिविरवाला भाग तथा पास-पडोसका इलाका।

४ शेख ममाई, मूसा-पुत्र (१५२६ ई०)

इसके बारेमे हमे ज्यादा मालूम नही।

५ युसुफ मिर्जा मूसा-पुत्र

इसका पता भी इसके पुत्र अली मिर्जाके कारण लगता है।

६ अली मिर्जा, युसुफ-पुत्र (१५५१ ई०)

पासमें होनेके कारण नोगाई रूसके सीमातमे हर वक्त खतरा पैदा किये रहते थे, जिसके लिये रूसियोको अपने सीमातको किलाबद करनेकी बडी जरूरत पडती। अली मिर्जाने १५५१ ई० मे क्रिमियाके खान साहेब गिराईके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन खानने उसे हरा दिया। वोल्गा और दोन पार करके क्रिमियाके पास पहुचना, यही बतलाता है कि अभी सोलहवी सदीके मध्यम वहा कोई ऐसी शक्ति नही पैदा हुई थी, जो कि अली मिर्जाके रास्तेमें रुकावट पैदा करती। अली मिर्जा कजानमे रहता था। उसके कबीलेने नाराज होकर उसे निकाल यादगारको गद्दीपर बैठानेके लिये बुलाया। मास्कोके जारने इसे पसद नही किया, और अक्तूबर १५५२ ई० मे उसने आक्रमण करके कजानको ले लिया।

७ इस्माईल मिर्जा, मूसा-पुत्र (१५६४ ई०)

इसीके समयमे १५५८ ई० में अग्रेज व्यापारी जेंकिन्सन अस्त्राखान पहुचा था। वह लिखता है कि वोल्गाके बाये तटकी सारी भूमि—अस्त्राखानसे कास्पियन-तट होते तुर्कमानाकी भूमि तकका प्रदेश—मगुतों (नोगाइयो)का प्रदेश कहा जाता है। यहाके लोग मुसलमान है। १५५८ ई०में जो भयकर गृहयुद्ध हुआ था, जिसके साथ ही अकाल-महामारीने आक्रमण किया, उसमे उनके एक लाख आदमी मर गये। जेंकिन्सन लिखता है—"इस तरहकी महामारी इस भूभागमे कभी नही देखी गई। नोगाइयोकी भूमि चरागाहोकी भूमि है। इस महामारीके बाद वह उजाड हो गई, जिससे रूसियोको सतोष हुआ, क्योकि उनके साथ उन्हे बहुत दिनोंसे भयकर लडाइया लडनी पड रही थी। जब नोगाई कबीला अच्छी अवस्थामें था, उस समय वह कई भागोमे विभक्त था, जिन्हें होर्द (ओर्दू या उर्दू) कहते है। हरेक ओर्दूका अपना एक राजा होता है, जिसे मुर्जा (मिर्जा) कहा जाता है। सारा ओर्दू उसकी आज्ञा मानता है। इनके न घर है न नगर, बल्कि यह खुली जगहोमें रहते हैं। हरएक मिर्जा (राजा) अपने ओर्दू या लोगोको आसपास लिये हुये रहता है, जहा उनकी बीबिया, बच्चे और पशु भी रहते हैं। एक चरागाहकी घासके खतम हो जानेके बाद, वह दूसरी जगह चले जाते है। जब वह चलते हैं, तो ऊटोसे खीची जानेवाली गाडियोपर उनके घरकी तरहके तम्बू भी चलते हैं। इन्ही गाडियोमें उनके बीबी-बच्चे तथा सारी सम्पत्ति लदी रहती है। हरेक अमीरके पास दासियोके अतिरिक्त चार-पाच बीबिया होती है। नोगाई सिक्केका इस्तेमाल नही करते, बल्कि कपडो और दूसरी चीजें अपने पशुओ मे बदलते है। उन्हें युद्ध छोड और किसी विद्या और कलासे प्रेम नही और युद्धमें वह सिद्धहस्त हैं, अधिकतर पशुपालका जीवन बिताते हैं। उनके पास पशु-धन बहुत अधिक है—वस्तुत पशु ही उनकी सम्पत्ति है। वह मास अधिक खाते है, जो विशेषकर घोडेका होता है। घोडीका दूध पीते है, उसका मद्य (कूमिस) भी बनाते हैं। विद्रोह, चोरी, डकैती और हत्या इनके स्वभावमें है। न वह

अनाज खाते हैं और न रोटी, इसके लिये ईसाइयोका वह उपहास करते हुये कहते है—"तुम सरकडेकी फुन्नी खाते हो और वर्षाका पानी पीते हो, फिर क्यो न कमजोर रहोगे ? हम खूब मास खाते है, दूध पीते हैं, इसीलिये हम ताकतवर हैं।" जेन्किन्सन जब पेरे-वोलोग (प्राग्-वोल्गा) में पहुचा, तो वहा उसे एक नोगाई ओर्दू मिला। परे-वोलोग पीछे जारित्सिन और आजकल स्तालिनग्रादके नामसे पुकारा जाता हैं। यहींपर वोल्गा और दोनके बीचमें नावोको स्थल-मार्गसे पार कराया जाता था। आज वोल्गा-दोन-नहरके हो जानेसे उसकी कोई अवश्यकता नही है। पेरेवोलोगमे मिले नोगाई-ओर्दूके बारेमे जेन्किन्सनने लिखा है—"इसमें घरके आकारवाली गाडियोको करीब एक हजार ऊट खीच रहे थे। यह घर एक विचित्र तरहके तम्बू थे, और चलते समय दूरसे नगर जैसे मालूम होते थे।" यह ओर्दू नोगाइयोके राजा (मिर्जा) इस्माईलका था, जो कि जेन्किन्सनके अनुसार "सभी नोगाइयोमें सबसे बडा राजा है। उसने बाकी सभीको मार डाला या भगा दिया, अपने भाइयो और बच्चों तकको भी नही छोडा। रूसके सम्राटके साथ सुलह करके अब वह नोगाइयोपर शासन करता है, और रूसी भी नोगा-इयोके साथ शाति पा रहे है।" अस्त्राखानमे महामारी और अकालका क्या असर हुआ, इसके बारेमे जेंन्किन्सन लिखता है—"वहा बहुत-से लोग भूखमे मर गये। सारे द्वीप (अस्त्राखान) में मुर्दोंका ढेर मिलता है, जो बिना जलाये हुये जानवर जसे मालूम होते है। देखकर बडी जुगुप्सा होती है। इन अस्त्रा-खानी नोगाइयोमेंसे बहुतोको रूसियोने बेच डाला, और दूसरोको द्वीप (अस्त्राखान) से निर्वासित कर दिया। अगर मेरे पास एक हजार मुद्रा होती, तो मैं सुदर-सुदर तारतार बच्चोको उनके मा-बापोसे खरीद सकता था। इगलंडमे जो रोटी छ पेन्समें मिलती है, उसमें मैं एक लडके या तरुणीको खरीद सकता था। लेकिन उस समय इस तरहके सौदेसे हमें अधिक अवश्यकता थी खाद्य पदार्थकी।"

इस्माईलके समयमें नोगाइयोकी यह हालत थी। अस्त्राखानपर रूसियोने अपनी दृढ प्रभुता जमा ली थी। नोगाइयोको उनके सामने सिर झुकानेके लिये मजबूर होना पडा था। इस्माईल १५६३ ई० के अन्त या १५६४ ई०के आरम्भमे मरा, अर्थात् उसी समय, जब कि अतितरुण अकबरने भारतमे अपने राज्यको सभाला था।

८ दीनमुहम्मद, इस्माईल-पुत्र (१५६४ ई०)

यह सिबिरके कुचुम खानका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अलीकी शादी दीनमुहम्मदकी लडकीसे की थी। वोल्गा और दोनके पास अभी रूसियोकी बस्तिया नही आबाद हुई थी, और नोगाई कबीलेका ही यहापर निवास था। उनके पडोसमें क्रिमियाके तारतार थे। वह रूसी ईसाइयोको मुस-लमान तारतारोंके ऊपर इस तरह हावी होते देखना नही पसद करते थे। दोनोने मेल करके अपनी सयुक्त सेना ले ७ मई १५८० ई०मे अस्त्राखानको घेर लिया, किन्तु चद दिनोंके असफल मुहासिरेके अतिरिक्त उन्हे कुछ हाथ नही आया। इस समयतक उराल (यायिक) उपत्यकामें कसाक रूसी जैसे लडाक लोग आ बसे थे, जिनका नोगाइयोसे झगडा होता रहता था। दोनके ऊपरी भागमे भी रूसी कसाक रहते थे। उन्होने पहुचकर अस्त्राखानपर अधिकार करके सीमाती इलाकामे लूट-मार शुरू की। व्यापारियोको ही नही, जारके दूतमडलको भी उन्होने नही छोडा। इस प्रकार हम देखते है, कि इस समय निम्न-वोल्गाकी भूमि नोगाइयो, रूसी कसाको तथा इवान IV के सरदारोंकी भूमि बनी हुई थी। इवानने एक बडी सेना जेनरल इवान मुरस्किनकी अधीनतामे भेजी, जिसने शत्रुओंसे हराकर अस्त्राखानको मुक्त किया। इन्ही दोन-कसाकोका एक नायक येरमक था, जिसने सिबिर विजय किया, और जिसके बारेमे हम पहले कह चुके है। मुरस्किन द्वारा भगाये हुये कसाकोका एक भागने कास्पियनके पश्चिमी तटपर तेरेक नदीकी ओर जा वहा अपना उपनिवेश बसाया। एक और भागने कास्पियन-तटसे हो यायिक (उराल) नदीके मुहानेपर जाकर डेरा डाला। १५८० ई०मे इन कसाकोने अपने अदियोसे नोगाइयोकी राजधानी सरायचुकके बारेमे सुना, और वह उस पर चढ दौडे। शहरपर अधिकार कर

उन्होंने मेकानोमें आग लगा दी। जीते नोगाइयोंपर ही उन्होंने अत्याचार नहीं किया, बल्कि कब्रोंमेंसे उनके मुर्दोंको भी निकालकर बाहर फेंक दिया।

९ उरुस, इस्माईल-पुत्र (१५८० ई०)

उरुसके पूर्वी सीमांतपर सिबिरके खान कुचुमका राज्य था, और पश्चिममें क्रिमियाके खान मुहम्मद गिराई का। इसके सीमांतपर रूसके अधीन प्रदेश थे, जिनमें कहीं कहीं रूसियोंकी भी बस्तियां बसती जा रही थीं। उरुसने १५८३ ई०में मुहम्मद गिराई और कुचुम खानकी शहसे कामा-तटके इलाके-में लूट-मार मचाई, लेकिन, इन जगहोंमें बसनेवाले रूसी हिम्मतवाले कसाक थे। उन्होंने १५८४ ई० में अपने लिये उरालस्क नगर बसाया। नोगाइयोंके आक्रमणका हर वक्त डर लगा रहता था, इसलिये उन्होंने नगरके चारों ओर मिट्टीके धुस खड़े कर दिये। पूर्वकी ओर रूसियोंके विस्तारमें सबसे पहली और बड़ी बाधाके रूपमें नोगाई मौजूद थे।

१० अल्ता, उलिशाइन और यान अरसलन, उरुस-पुत्र (१६०१ ई०)

१६०१ ई०में नोगाइयोंके दो भाग हो गये थे, जिनमेंसे एकका नाम उरुस था, और दूसरेका कस्साई (छोटा)। अल्ता और उलिशाइन दोनों भाई अपने चचा या मामा कस्साईके ऊपर आक्रमण करना चाहते थे। दोनों कबीलोंके आपसी संघर्षके मारे ओर्दके दो भाग हो गये। १६०८ ई०में उरुस कबीलेने कस्साईके त्यूमन इलाकेमें घुसकर पिशमा-तटकी बस्तियोंको लूटा, लेकिन अन्तमें उन्हें हारकर भागना पड़ा। १६१३ ई० में अभी भी नोगाई इतने शक्तिशाली थे, कि उन्होंने इश्तेराकके नेतृत्वमें सारे उक्रइनको ही नहीं लूटा, बल्कि ओका नदी पार हो उत्तरमें कलोम्ना, सेरपुकोफ और मास्कोके पास तकके गांवोंको भी नहीं छोड़ा। ये घुमन्तू कबीले स्थायी निवासी रूसियोंके लिये उस समय भी बड़े खतरेकी चीज थे, जब कि भारतमें जहांगीरका राज्य था।

नोगाइयोंमें एक तरहकी आनुवंशिक बीमारी थी, जोकि इसी भूमिमें प्राचीनकालमें रहनेवाले शकों (सिथियनों) में भी पाई जाती थी—जिसका कारण सिरियाकी उरानिया देवीका मंदिर लूटनेके लिये देवीका शाप समझा जाता था। ग्रीक लेखक हिप्पोक्रातने सिथियनोंके बारेमें लिखा है—"सिथियनोंके भीतर कुछ ऐसे लोग हैं, जो कि हिजड़े होते हैं, और स्त्रियोंके सभी काम करते हैं। इसी-लिये उन्हें इनारी (नारी-समान, स्त्रैण) कहा जाता है।" नोगाइयोंमें इस बीमारीका पता आधुनिक कालमें बेइनेग्स नामक एक विद्वान्ने लगाया। कल्परोतने यह भी लिखा है—"यह एक तरहकी अचि-कित्स्य बीमारी है, जोकि किसी साधारण रोग या अधिक उमरके कारण होती है। उस समय मर्दोंके चमड़ेमें झुर्रियां पड़ जाती हैं, और उनकी जो चंद बालोंकी दाढ़ी होती है, वह भी गिर जाती है। फिर आदमी बिलकुल स्त्रीका रूप ले लेता है। वह बिल्कुल स्त्रीका-सा मालूम होता है, और स्त्रियोंसे ही मेल-जोल रखता है।"

१८वीं सदीके पूर्वार्धमें पहुंचकर नोगाइयोंकी शक्ति एक प्रभुताशाली कबीलेके तौरपर खतम हो जाती है, और पीछे इनका नाम भी लुप्त होने लगता है। बुखाराका आखिरी राजवंश मंगीत नोगा-इयोंमेंसे ही था, लेकिन अब उनके लिये भी नोगाई शब्द अपरिचित-सा होता जा रहा था। अजोफ सागरके पास रहनेवाले नोगाई कसाई (कसबुलाद)के ओर्दूसे संबंधित थे। कसाईको लघु ओर्दूका संस्थापक माना जाता था। कसाईके वंशज अरसलनबेग, मुर्जाबेग, मूसाबेग, तोगानबेग, कसबुला, आदि लघु नोगाईके सरदार थे।

३ (३ नोगाई-वंशवृक्ष)

१३००-१७२४ ई०
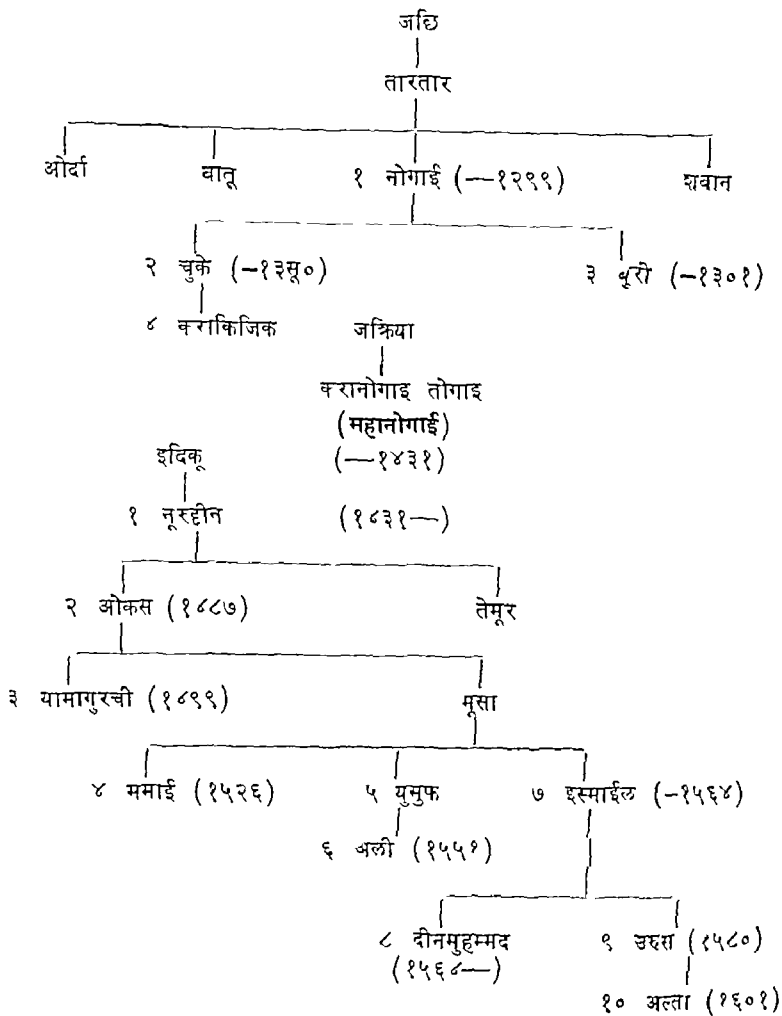
§ ३ कराकल्पक

कराकल्पक आजकल निम्न वक्षु-उपत्यका और अराल सागरके तटपर रहते हैं, जहाँपर उनका सोवियत स्वायत्त गणराज्य स्थापित है। यह भी नोगाई ओर्दूकी ही शाखा थे, इसलिये यहाँपर उनके इतिहासपर भी एक सरसरी नजर डालना आवश्यक है।

कराकल्पक अराल-समुद्रके पासके मैदानोंमें तथा बुखारा और खीवाके सीमान्त आकर बस गये। शायद यह महानोगाइयोंके मुर्जा उरसके पुत्र अल्ताके साथ संबंधित थे। इनको पहले [illegible] मङ्गू (चिप्टी नाकवाला) कहा करते थे। परंपरा बतलाती है, कि जब अमीर तेमूर-लंगने उनकी राजधानी बोल्गार नगरको नष्ट कर दिया, तो वह सिर-दरियाके मुहानेपर भाग आये। सयरी धूपसे बचने या शोक प्रकट करनेके लिये इन्होंने काली टोपी पहिननी शुरू की, जिसके कारण करा कल्पक (काली-टोपी) इनका नाम पड़ गया। एक दूसरी भी परंपरा है, जिसे कराकल्पकोंके दल [illegible]

और दूसरोने ओरेनबुर्गके रूसी वोयवोदके पास कही थी कराकल्पक लोग एक समय अस्त्राखान और कजानके बीच वोल्गाके पहाडी किनारोपर रहा करते थे। जब रूसियोने कजान (१५५२ ई०) और अस्त्राखान (१५५६ ई०) के राज्योको खतम कर दिया, तो यह कबीला वहांमे भाग आया। वह अपने को कराकिपचक कहा करते थे, और अपना उद्गम नोगाइयोके अल्ता-ओर्दूमे बतलाते थे, लेकिन पडोसियोने उन्हें काली टोपीके कारण कराकल्पक कहना शुरू किया। मगुत या मगित् नामकी साथकता अब भी उनकी चिप्टी नाकसे है।

१७१५ ई०म यात्री बेल वोल्गाके किनारेपर आया था। वह समाराके बारेम लिखते हुये करा-कल्पकोका भी उल्लेख करता है समारा (वतमान कुइबिशियेफ) को एक खाई और धुस्मोंसे किलाबद किया गया है, जिसमे थोडे-थोडे फासलेपर तोपोके रखनेके लिये लकडीके मीनार बने हुये ह। यहा पूवके रेगिस्तानमे रहनेवाले कराकल्पको (काली टोपियो)के आक्रमणका डर रहता ह, इसीलिये यह सावधानी रखी गई।

कराकल्पकोंके पहले दो भाग हुये—

(१) **ऊपरी कराकल्पक**—यह सिरके मुहानेसे ताशकद तक पाये जाते थे। जाडोम इनके युर्ता (डेरे) किसी निश्चित जगहपर होते, लेकिन गर्मियोमें ये चरवाही करते घूमते-फिरते ह। इनमे खानोकी उतनी नही चलती थी, जितनी कि खोजो (सत-महतो) की। इनमेंसे अधिकाश १८वीं सदीके अन्तमे लहाकूपन छोडकर कुछ-कुछ खेती करने लगे। कजाक इन्हे बहुत सताया करते थे, इसलिये तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दके पासवाले कराकल्पकोने जुगारियोके कलमकोकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।

(२) **निचले कराकल्पक**—कराकल्पकोके कुछ कबीले अराल-समुद्रके तट तथा कुवान नदीके दक्षिणके प्रदेशमे रहते थे। १८वी सदीके आरम्भमें रूसियोंके साथ इनका सम्पक हुआ। १७३२ ई०मे कजाकखान अबुल्खैरने अपने डेरेको सिरदरियाकी उपत्यकामें परिवर्तित कर दिया, और रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अपनेको इस तरह मजबूत करके निम्न-सिर-उपत्यकापर भी दावा किया। रूसी प्रतिनिधि दिमित्री ग्लादिश्येफ समारासे चलकर १७४१ ई०के अप्रल मे अबुल्खैरके डेरेमें पहुचा था। उसी यात्राम उसकी सिर और अदामतके बीचकी भूमिमे घूमनेवाले कराकल्पकोके मुखिया उबैदुल्ला, मुरादशेख, उरसनाक बातिर, तोकुम्बेतबी, उबिलाई सुल्तान और खोजा मरसेनसे मुलाकात हुई। उन्होने निम्न-कराकल्पक ओर्दूके तीस हजार परिवारोकी ओरसे सदाके लिये रूसकी अधीनता स्वीकार करते हुये कसम खाकर कुरानको चूमा। १७४२ ई० में ओरेनबुर्गमे जाकर उन्होंने अपनी शपथ दुहराई। कराकल्पक अब इतने विनम्र और आज्ञाकारी साबित हुये, कि ओरेनबुर्गसे ग्लादिश्येफको उन्हें ओरेनबुर्गके पडोसमे आकर बसनेके लिये समझानेको भेजा गया। ग्लादिश्येफको वहा काइपखान और उसके तीन पुत्र मिले, जिन्होने जारकी राजभक्तिकी शपथ ली। लेकिन इसका यह अथ नही कि अब वह अबुल्खैरके कजाकोकी अधीनतासे बिल्कुल मुक्त हो गये थे।

१८४३ ई०में पिलात गोर्देयेफको दुभाषिया देल्नोईके साथ ओरेनबुर्गसे कराकल्पकोके पास भेजा गया—गोर्देयेफ कराकल्पकोकी भाषा जानता था। देलनोईको रास्तेमें ही नवम्बरमें काइपखान और उरुजकुलके दूत मिले। उसने उन्हें पीतरबुर्ग भेजा, जहा दरबारमें उनकी बडी खातिर हुई और रानी एलिजाबेतने खुद दरबारमे उनसे मुलाकातकर अधीनता स्वीकारकी शपथ स्वीकार कर शत्रुओंसे रक्षा करनेका वचन दिया। लौटती यात्रामे भी ग्लादिश्येफ उनके साथ था। अबुल्खैरने स्वय रूसकी अधीनता स्वीकार की थी, लेकिन वह यह नही पसद करता था, कि कराकल्पक सीधे रूसको अपना स्वामी माने। इसी बीचमें उसने अचानक हमला करके कितने ही कराकल्पकोको मार डाला, और उनके एक खान उरुजकुलको उसके बीबी-बच्चो के साथ पकड ले गया। इस तरह कजाक तबतक कराकल्पकोको सताते रहे, जबतक कि १७४८ ई० में अबुल्खैर मर नही गया। कजाकोंकी इन लूटपाटोके कारण निम्न-सिर-उपत्यकामें कराकल्पकोकी बहुत सी बस्तिया उजड गईं, जहा उन्होंने

नहरे बनाकर अपने खेत आबाद किये थे। कराकल्पकोके भागनेसे यह सारी बस्तिया उजड गई, और नहरे भी बद हो गई। १७४२ ई०में ग्लादिश्येफने उजडे यागीकन्तकी कुछ पत्थरकी दीवारो और मीनारोको अच्छी हालतमे देखा था।

बातिरखान, काइप—बातिरखानका भी अबुल्खैरके बशसे सघर्ष होता रहा। बातिरके पुत्र काइपको खीवावालोने अपना खान बनाया था, जिसके बारेमे हम आगे कहनेवाले ह। उसीके साथ बहुत भारी सख्यामे कराकल्पक भी खीवाके राज्यमें जा निम्न वक्षु-उपत्यकामे बसने लगे, और धीरे धीरे वहा उन्हीकी अधिकता हो गई, जिसके कारण आज वहा कराकल्पक स्वायत्त गणराज्यकी स्थापना हो सकी।

१७५० ई०म अबुल्खैरके पुत्र एरलीने कराकल्पकोपर आक्रमण किया, लेकिन वह अपने बहुतमे साथियोके साथ मारा गया। अगले कितने ही वर्षातक बातिर और उसके पुत्र काइपका कजाकोके लघु-ओर्दूके खान मूरलीके साथ सघर्ष होता रहा, इसी कारण कराकल्पक काफी सख्याम निम्न सिर-उपत्यका छोडकर ताशकन्दके पास कजाकोके महाओर्दूकी शरणमें चले गये। कजाकोकी लूटमारके कारण १८वी सदीके अन्ततक कराकल्पकोने निम्न-सिरको बिल्कुल छोड दिया, और वह ऊपरकी ओर बढते हुये यानी दरियाके पास चले गये। वहा उन्होने अपने परिश्रमसे एक बडी नहर खोदी, जो पीछे सिर नदीकी एक शाखा बन आजकल यानी दरिया (नवीन नदी) के नामसे मशहूर है। कराकल्पकोंके हट जानेपर निम्न-सिर-उपत्यकामे कजाक आबाद हो गये।

हमने घुमन्तुओंके जीवनके ढगको देखा। मधु-मक्खियोकी तरह वह सारे कबीलेके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर थोडे समयम पहुच जाते, और कितनी ही बार अपने नामोको भी भुलाकर कोई दूसरे नाम ले लेते। कराकल्पकोके बारेमें १९वी सदीके मध्यमे बम्बेरीने लिखा था—

"वह वक्षुके परले तटपर गोरलानेके सामने और कुग्रादके पासतक रहते ह। वहा पडोसमे बहुत जगल ह। जगलोमे उनके पशुओके गोठ होते ह। उनके पास बहुत थोडे से घोडे होते है, और भेड तो मुश्किलसे होती है। कराकल्पक तुर्किस्तानमे अपनी अत्यन्त सुदरी स्त्रियोंके लिये प्रसिद्ध ह, लेकिन दूसरी ओर वह सबसे बडे मूर्ख भी कहे जाते है। उनके तम्बुओ (परिवारो) की सख्या दस हजार ह। चालीस साल पहले उन्होने कून्ग्रतोके खिलाफ विद्रोह किया था, जिसमें मुहम्मद रहीमखान उन्हे दबा दिया। आठ साल बाद १८५५ ई०में फिर उन्होने जरलिगके नेतृत्वमे बीस हजार सवारोके साथ विद्रोह किया, लेकिन कुतुलुक मुरादने उन्हे पूरी तौरसे हरा दिया।" कुइलवाइन १५५८-५९ ई० मे खीवामे गया था। उसके समय पद्रह हजार कराकल्पक अर्द्ध-घुमन्तू जीवन बिताते हुये रहते थ। राज्यने उनके ऊपर सबसे ज्यादा कर लगा रक्खा था, अतएव बिचारे बहुत गरीब थे।

रूसियोने जब वक्षुके मुहानेको ले लिया। उस समय कराकल्पकोके विद्रोहकी अफवाह सुनकर कर्नल इवानोफने उनके बी (सरदार) लोगोको बुलाया, जिनम चिमबाई भी था। जब इवानोफने अपने लोगोकी सख्या-सूची देनेके लिये कहा, तो वह डर गये। इसपर रूसी कसाकोने घेरकर बहुतोको गिरफ्तार कर लिया। इस बर्तावसे रूसियोने कराकल्पकोके मनम बुरा भाव पैदा कर दिया, क्योकि वह अपने बी लोगोको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते थे।"

स्रोत ग्रन्थ

1 History of Mongol I III (H H Howorth)
2 Bambery

अध्याय ८

मुगोलिस्तानके खान

(१३२१-१५६५ ई०)

चगताई-वशसे किस तरह मुगोलिस्तानके खानोका अलग वश स्थापित हुआ, इसके बारेमे हम बतला चुके है। मुगोलिस्तान मुगलोका स्थान था, यह तो इसके नामसे ही पता लग जाता है, लेकिन वस्तुत जिस भूमिको मुगोलिस्तान कहा जाने लगा, वहा मुगल तो दालमे नमकके बराबर कुछ खान और अमीर परिवारोंके रूपमें ही रह गये थे, जो भी बडी तेजीसे तुर्क बनते जा रहे थे। बाकी साधारण जनता तो तुर्क थी ही। पहिले इसी प्रदेशका नाम कराखिताई भी था, जो कि कराखिताई राजवश (११२५-१२१८ ई०)का सूचक था। यूनसखानके शासनके आरम्भ ८८९ हि० (३०I–२०XII १४८४ ई०) में जब नगरो और खेतीको प्रोत्साहन दिया जाने लगा, तो वहा पुराने समयके कितने ही नगरो और बस्तियोके ध्वसावशेष मौजूद थे। ऊपरी मुगोलिस्तान पहाडी नदियो और झीलोका प्रदेश था। इसके मैदानी इलाकोमें बहुत अच्छी चरागाहे थी, और पहाडी इलाके जगलो और वृक्षोंसे ढकी उपत्यकायें थी। पहाड बहुत ऊचे नही थे, इसलिये सर्दी अपनी चरम सीमा तक नही पहुचती थी, और आबोहवा बडी अच्छी थी। असली रेगिस्तान यहा वस्तुत थे ही नही, सिवाय उत्तर-पश्चिमी छोरके। इस भूमिमें नगर या गाव नही, बल्कि खुले मैदान (दश्त) थे। मुगोलिस्तान पहले किर्गिजो और बादम कजाकोका देश बन गया, तो भी उनके ऊपर मुगोलिस्तानके खान काशगरसे शासन करते थे। १४ वी सदीके पूर्वार्धके एक इतिहास-लेखकने इस प्रदेशके बारेमे लिखा है—"जबसे इस प्रदेशको तारतारो (मगोलो)की तलवारोने उजाड दिया, तबसे यहा बहुत कम बाशिंदे रह गये। ध्वसावशेषो और करीब-करीब विलुप्त-सी बस्तियोके सिवा यहा कुछ नही दिखाई पडता। दूरसे आदमीको एक अच्छा बसा हुआ नगर दिखाई पडता है, जिसके चारो तरफ सुदर हरियाली छाई हुई है, लेकिन जब पास जाते है, तो वहा बाशिंदे नही बल्कि पूरी तरहसे खाली मकान मिलते है। यहाके सारे ही बाशिंदे घुमन्तू भेंपपाल और चरवाहे है, जिनको खेती या फसल उगानेसे कोई वास्ता नही।"*

कराखिताइयोने अपने समय इस भूमिमे बहुतसे नगर बसाये थे, जिन नगरोमेसे कुछ बालुका-भूमिमें अब भी हो, तो कोई आश्चर्य नही। महारेगिस्तानके पासमें बसे हुये नगरोको यदि मगोलोने उजाड दिया, तो कभी-कभी बालुका-वृष्टिसे भी उनका सर्वनाश हुआ। स्वेन्-चाङने भी एक बालुका-वृष्टिका वर्णन किया है, जिसके कारण हो-लो-लो-कि-या नगर बालूके नीचे दब गया। डाक्टर बेल्लोने मुगोलिस्तानकी भूमिमे बालुका-वृष्टि द्वारा एक नगरके ध्वस होनेका वर्णन निम्न प्रकार किया है "मजार हजरत बेगमके पासमे बालुका एक पूरा समुद्र है, जो कि उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पूर्वकी ओर बाकायदा लहरोमें आगे बढ रहा है। बालूके टीले अधिकतर दससे बीस फुट तक ऊचे है, लेकिन कुछ पूरे सौ फुटकी छोटी पहाडीसे दिखाई पडते है, कुछ तो और भी ऊचे है। वह एक ऐसे मैदानको ढाके हुये है, जहा नीचे जहा-तहा कठोर मिट्टी दिखाई पडती है। यह टीले दो या तीनके समूहमें एकके पीछे एक चले गये है। लहरें वैसी ही मालूम होती है, जैसे बालुकामय तटपर समुद्रके पानीके हट जानेपर मालूम होती हैं। दक्षिण-पूर्वकी ओर इन टीलोकी शकल चद्राकार तथा कुछ खाली ढलानकी तरह होती है।

*"मस्लक-उल-अबसार" (शहाबुद्दीन)।

रूसी यात्री प्रजेवाल्स्कीने मुगोलिस्तानकी इसी भूमिको १९ वी सदीमे देखकर लिखा था "इन निर्जन और निष्ठुर पीली पहाडियोको देखकर दर्शकके मनमे बडी उदासी पैदा होती है। वहा आकाश और वालू छोडकर और कुछ नही दिखलाई पडता—एक भी वनस्पति, एक भी प्राणीका कही पता नही है। पीले रग लिये हुये खाकी रगके गिरगिट कही-कही दिखाई पडते है, जिनके चलनेका चिह्न वालूके ऊपर पड जाता है। इस निर्जन बालुका-समुद्रको देखकर दिल भारी हो जाता है, कहीसे कोई आवाज नही सुनाई देती ।"

१६ (२।३।४) मुगोलिस्तान (१३२१-१५४५ ई०)

लेकिन, कभी इस निजन भूमिमे हरे-भरे नगर और गाव बसे थे। उन्हीके ध्वसावशपोम भारतीय सस्कृतिके चिह्न और भारतीय इतिहासपर प्रकाश डालनेवाली वहुत-सी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिली है।

चगताई खानका राज्य बहुत विस्तृत था। १३२१ ई० मे जब तुर्क और मगोल प्रधानताके पक्षपातियोमें झगडा बहुत बढ गया, तो मगोल-दलने चगताई-वशके पूर्वोत्तरीय भागको अपने हाथम कर लिया। मुगोलिस्तानका प्रथम खान तुगलक तेमूर था, जो कि सयुक्त चगताई राज्यके खान ईसान-बुगाका पुत्र था। मुगोलिस्तानके खानोकी नामावली निम्न प्रकार है --

१	तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र	-१३६२ ई०
२	इलियास, तुगलक-पुत्र	१३६२-८९ „
३	खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र	१३८९-९९ „
४	शमाजहान, खिजिर-पुत्र	१३९९-१४०८ „
५	मुहम्मद, खिजिर-पुत्र	१४०८-१६ „
६	नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र	१४१६-१८ „
७	शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र	१४१८ „
८	वेइस, शेरअली-पुत्र	१४१८-२८ „
९	शातुक, शेरअली-पुत्र	१४२८-३४ „
१०	ईसानबुगा, वेइस-पुत्र	१४३४-६२ „
११	दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र	१४६२-६८ „
१२	यूनस, वेइस-पुत्र	१४६८-८७ „
१३	महमूद, यूनस-पुत्र	१४८७-१५०८ „
१४	मन्सूर, महमूद-पुत्र	१५०८ „
१५	सईद, अहमद-पुत्र	१५०८-३३ „
१६	रशीद, सईद-पुत्र	१५३३-५६ „
१७	अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र	१५९३ „
१८	महमूद	
१९	इस्माईल	

१ तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र (-१३६२ ई०)

चगताई-वशके इतिहासमे हम पढ चुके है, कि किस तरह मगोल सरदारोने अपनी प्रभुता और अलग अस्तित्व कायम रखनेके लिये कोशिश करके असफल होनेपर चगताई राज्यके एक भाग को अलग कर अपना अलग खान चुना। इस भागको मगलई-सूबे या मगोलिस्तान कहते थे—मगलाका अथ सेनाका हरावल भी है। इस भूभागमें कुल्जा, सप्तनद, इस्सिकुल, दक्षिणी सप्तनद तथा काशगरसे कूचा तक सारा पूर्वी तुर्किस्तान शामिल था। मुगोलिस्तानी-वशके सस्थापनमें सबसे अधिक हाथ अमीर पूलादचीका था। यद्यपि मगोल-अमगोलके साथ मुसलमान और अ-मुसलमानका सवाल भी उठाया गया था, लेकिन उनका पहला खान तुगलुक तेमूर भी अधिक दिनो तक अपनेको रोक नहीं सका, और अपनी प्रजा और अमीरोकी हमदर्दी प्राप्त करनेके लिये उसे मुसलमान बनना पडा। तुगलक तेमूरके जन्मके वारेमें कहा जाता है, कि उसकी मा अपने पतिके मरनेके बाद एमिल खोजा दुवा-पुत्रकी पत्नी बनी। वही तुगलक तेमूर पैदा हुआ। वहासे उसे लाया गया। दूसरी कहावतके अनुसार पुलादचीने उसे पहले खानके वशसे प्राप्त किया। ईसानबुगाकी प्रिया भार्या सातिलमिश थी, और दूसरी बीबीका नाम मनलिक था। मनलिकको गर्भिणी देखकर उसकी बडी सौतके दिलमें ईर्ष्या पैदा हुई। इसी समय ईसानबुगा मर गया, और मनलिक एमिलखोजाकी पत्नी बन गई। अमीर पुलादची दोगलतको अब एक खानकी जरूरत पडी। उसने मनलिक और उसके पुत्रको ढूढनेके लिये ताश तेमूरको कहा। ताशने कहा—"यह बडी लम्बी और कठिन यात्रा होगी, इसलिये यात्राकी अच्छी तरह तैयारी करनी पडेगी। मै प्रार्थना करूगा, कि हमें छ सौ बकरिया मिलें, जिसमें कि पहले हम उनका दूध

पीते रहें, पीछे एक-एकको मारकर खाते अपनी यात्रा जारी रक्खे।" ताश तेमूर अभियानमे सफल हुआ और वह मनलिकके बच्चेको चुरा लाया। फिर वह अक्सू गया, जहापर अमीर पुलादचीने बच्चे तुगलक तेमूरको खान घोषित किया। तुगलक तेमूर केवल मगलाई-सूबेका ही नही, बल्कि चगताई राज्यके कुछ और भागोका भी शासक था। कहते है, जब वह कल्मक (जुगारिया) देशसे लाया गया, तो उसकी उमर सोलह सालकी थी। अठारह वर्षकी उमरमे वह खान बनाया गया। जन्म उसका ७३० हि० (२५ X १३२९–१५ IX १३३०) में हुआ था। चौबीस वर्षकी उमरमें वह मुसलमान बना।

शेख जमालुद्दीन नामक एक सूफी-सन्त कतकमें रहता था। उसने जुमा (शुक्र) के दिन भविष्यद्वाणी की थी–"मै तुमसे छुट्टी लेता हू, दूसरी बार हम कयामतके दिन मिलेंगे।" उसने मस्जिदके मुअज्जनको भी साथ चलनेके लिये कहा। तीन फरसक जानेपर मुअज्जन किसी कामके लिये लौटा, और अजानके लिये मीनारपर चढकर उतरा, तो देखा मीनार चारो ओरसे छिप गया है, बालुका वृष्टि हो रही थी, और इतने जोरकी कि सारा नगर उससे ढक गया। थोडी देरमें धरतीके ऊपर उठे मीनारका थोडा ही सा भाग ऊपर निकला था। मुअज्जन मीनारपरसे बालूपर कूदकर भाग निकला। शेख अक्सूके पडोसमें बाडबुलम पहुचा। खान तुगलक तेमूरकी शिकार-पार्टी थी, जिसमे उसे जाना जरूरी था। न जानेके कारण उसे पकडकर खानके पास ले गये। अनजान होनेसे उस ताजिकको सजा नही दी गई। उस समय खान अपने कुत्तोको सूअरका मास खिला रहा था। वह शेखसे बोला—"क्या तू इस कुत्तेसे अच्छा है, या यह कुत्ता तुझसे अच्छा है?"

शेखने जवाब दिया—"अगर मेरे भीतर ईमान है, तो मै इस कुत्तेसे बेहतर हू, यदि मेरेमे ईमान (इस्लाम) नही है, तो यह कुत्ता मुझसे बेहतर है।"

इस बातको सुनकर तुगलक बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने शेखको घोडेपर चढाकर लौटाया। शेखकी यही करामात थी, जो कि उसके प्रभावमे आकर खानने इस्लामको स्वीकार किया।

मगोलोंके समयसे पहले ही इतिश-एमिलसे त्यान्-शान तक और बरकुलसे फरगाना और बलकाश तकके प्रदेशको कुकचा-तेङ्गिज कहा जाता था। इस भूमिमे मगोलोंके आनेसे पहले अच्छी आबादी थी, लेकिन १४ वी सदीके उत्तरार्धमें बस्तीवासी और घुमन्तू सस्कृतियाका द्वद्व चल रहा था। तुगलक तेमूरने इस्लामी सस्कृतिको स्वीकार कर मगोलोंकी घुमन्तू सस्कृतिको छोड दिया। लेकिन उससे दो शताब्दियो पहले यहाके वासी मुसलमान नही, बल्कि बहुत कुछ बौद्ध और कुछ-कुछ नस्तोरी ईसाई थे। चगताईकी एक शाखाके उत्तराधिकारी तेमरियाका मुगोलिस्तानी खानोंके साथ बराबर झगडा रहता रहा। तेमूरी इन्हे चिढानेके लिये जेते (प्रातवासी) कहा करते थे।

१३६० ई० मे तुगलक तेमूरका अपने तुर्क-अमीरोंके साथ अच्छा सबध था। तुगलक तेमूरने ७६२ हि० (११ XI १३६०—२९ X १३६१ ई०) मे अन्तर्वेदपर आक्रमण किया था। उसकी मृत्युके (७६४ हि० २१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०) बाद ही उसके पुत्र इलियास खोजाकी सेना अन्तर्वेदसे हटाई गई। तुगलक तेमूरकी कब्र अलमालिकसे अल्मितूमे आठ वेर्स्त (½ फरसख) और तरानचिन (तरानचिन्स्की) गाव खारिनमजारमे एक टेम्ने पर अब भी मौजूद है।

तुगलक तेमूर मृत्युसे पहले ही पुलादची मर गया था। उसका स्थान उसके अल्पवयस्क पुत्र खुदादादने लिया।

२ इलियास खोजा, तुगलक-पुत्र (१३६२–८९ ई०)

समरकदका उपराज रहकर बापकी मृत्युपर यसे मगोलिस्तान भागकर इलियासने गद्दी सभाली, इसे हम बतला चुके है। अमीर पुलादचीका भाई समसद्दीन इसके समय सर्वेसर्वा था।

इलियास खोजाने मीरापे युद्धमें तेमूरी-सेनापर विजय पाई। एक बार उसने समरकन्दको जा घेरा, लेकिन घोडोकी महामारीके कारण उसे वहासे हटना पडा। अमीर पुलादचीके भाई अमीर समसद्दीनने शक्तिको अपने हाथमे रखनेके लिये एक दिन तुगलक तेमूरके अठारह पुत्रोको मरवा,

डाला। कमरुद्दीनका भतीजा अमीर खुदादाद अपने पिताके लगाये वशके साथ सहानुभूति रखता था। उसने तुगलकके एक पुत्र खिजिर (?) खोजाको काशगर-बदख्शाके पहाडोमे भेजकर छिपा दिया।

इलियासने चीनके विरुद्ध भी धर्मयुद्ध छेडा, और कराखोजा तथा तुरफानपर अधिकार कर वहाके लोगोको मुसलमान बननेके लिये मजबूर किया। इन युद्धोंके समय इलियासको अनाजकी महिमा मालूम हुई, और उसने अपने भाई खिजिरसे पूछा—"क्या सेनाके लिये खाद्य-सामग्री जमा करनेके वास्ते मुगोलिस्तानमे खेती की जा सकती है?"

तेमूर-लग ७७२ हि० (२६VII१३७०–१६VI१३७१ ई०) मे कोचकर तक चढ आया था, लेकिन उस समय वह मुगोलिस्तानमें और भीतर बढकर आक्रमण नही कर सका। १३७५ ई०के आरम्भमे वह सैरामसे प्रस्थानकर चारिनतक पहुचा। उस समय कमरुद्दीनका डेरा कोकतेपे पर्वतमे था। तेमूर-लगके साथ सीधे लडना उसने पसद नही किया, और बेरकेई गुरयानकी तरफ हटा, जिसके बीच में तीन बडी-बडी नदिया पडती थी। इन्हीमेसे एकके किनारे पीछा करके तेमूरने उसे हराया और आगे बढते बाइतकमें पहुचा। अपने तीन अमीरोको उसने इलीके तटपर दड दिया। तेमूर बाइतकमे ५३ दिन रहा। इस समय उसके पुत्र जहागीरने पहाडोमें पीछा करके कमरुद्दीन और मगोल सेनाको उगफेरमर (पूर्वी तुर्किस्तान) में हराया। बाइतकमे तेमूर करा-कसमक (कस्तेव) डाडा होते हुये अतवाश पहुचा। वहासे अरपाकी द्रोणीमें जा कमरुद्दीनकी लडकीसे अपना ब्याह कर यामी (जासी) डाडेसे होकर उजगेन्दको लौट गया। ख्वारेज्मकी चढ़ाईमे तेमूरको फसा जानकर कमरुद्दीनने १३७६ ई०में उसपर चढाई की, और अतवाश पहुचा। कमरुद्दीनने रास्तेमे उसे जा घेरा, लेकिन सेकिज-इगाचेमें बडी बुरी तरहसे हारकर घायल हुआ। इस विजयके बाद तेमूर-लग अताकुर होते सिर-दरिया लौटा, जहामे वह समरकन्द चला गया। १३७७ ई०में तेमूरने कमरुद्दीनके विरुद्ध फिर सेना भेजी, जिसने कुरातमें उसे हराया। तेमूर बडी सेनाके साथ स्वय सप्तनदमे पहुचा था। उसके हरावलने कमरुद्दीनको बुम्सकमें पाया। तेमूर कोचकर तक गया, जहासे ओईनोग होते उजगन्द लौटा।

१३८३ ई०मे तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की। सप्तनदमें उसने अपनी कुछ सेना भेजी। उसकी सेना अताकुममें थी, जहा हरावल भी शत्रुको छिन्न-भिन्न करके लौट आया। अब दोनो सेनाओको लेकर तेमूर इस्सिककुल महासरोवर होते कोकतेपे पर्वतमे पहुचा, लेकिन कमरुद्दीनका वहा कोई पता नही था, इसलिये समरकन्द लौट गया।

३ खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र (१३८९–९८)

बापके मरनेके समय खिजिर खोजा बारह वर्षका था। कमरुद्दीनके शासनकालमे खुदादादने उसे काशगर और बदख्शाके बीचके पहाडोमें छिपा रक्खा। फिर बारह वर्षतक वह दक्षिण-पूर्वके सीमातपर लोब्नोर झीलके पास रहा। जिस तरह उसके बापको खोजकर लाया गया था, उसी तरह खिजिरको भी लोबनोरसे लाकर १३८९ ई०के आसपास खान बनाया गया। इलियास और खिजिर दोनो भाई थे। दोनोंकी बाल्य-कथायें एक दूसरेसे इतनी मिला दी गई है, कि उनके बारेमें कुछ निश्चयपूर्वक कहना मुश्किल है। तो भी इतना मालूम होता है, कि इलियास शायद बहुत दिनो तक कमरुद्दीनके हाथो नही बच पाया। खिजिरसे मुगोलिस्तानकी चरागाहोमें खेती करनेके बारेमें सलाह लेनेसे पता लगता है, कि इलियास और खिजिर दोनो भाई उस समय साथ रहते थे।

जिस साल खिजिरने गद्दी सभाली, उसी साल तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढ़ाई की। वह अल्कोशिदनासे बुरीवाश और त्यूपेलिक करक होते ओरनाक (ओजनाक या ओरतक) की ओर बढा। अतकानमूरीमें जब पहुचा, तो गर्मियोंके दिनोंमें अब भी वहा वर्फ मौजूद थी। ताउरा-अतलस और अईगिरके मैदान, उलागचारलिग होते आगे बढ चापरएगिरमे उसने मुगोलिस्तानी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया। खिजिर खानने अगा-त्यूरीके नेतृत्वमें तेमूरके खिलाफ सेना भेजी। अगा-त्यूरी जब उरेंगयारम पहुचा, तो तेमूरने उसके विरुद्ध अपनी हरावल सेनाको भेज अपनी सेनाको कई टुकडियो म करके भिन्न-भिन्न दिशाओमें उसे घेरनेके लिये भेज दिया। तेमूर-लग स्वय करागुचुर तरवगताई डांढेके पश्चिमी भागकी ओर चला। तेमूर-पुत्र उमरशेख दूसरी सेनाके साथ अगा-त्यूरीके पीछे कोबुक

डाडेकी ओर जा उसे हरानेमें सफल हुआ। अगा-त्यूरी भागकर ककमा-बुरूजीमें पहुचा। तेमूरने करागुचुरमे डेरा डालकर अपनी एक सेनाको इर्तिश-उपत्यकाकी ओर भेजा, और वदियाको वहासे समरकन्द भेज दिया। फिर वह एमिलगूचुरमे खानकी एक चरागाह सराय-ओर्दामें पहुचा। एमिल गूचूरमें वह सरायओर्दामें ठहरा। एमिलसे तेमूरने अपनी सेनाको दक्षिणी मुगोलिस्तानपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया। सभी सेनाको आगे युलदुजमे इकट्ठा होना था। युलदुजसे खिजिर खोजाके पीछे उसने उमरशेखके नेतृत्वमें एक सेना चालिश (करासर)में भेजी। फिर पूर्वी तुर्किस्तान हो ८९ अगस्त १३८९ ई०को युलदुज लौट ३० अगस्तको समरकन्द पहुचा। इस रास्तेसे कारवा दो महीनमें गुजरता था।

१३९० ई०मे फिर तेमूरने मुगोलिस्तानपर आक्रमण किया। ताशकन्दसे वह कमरुद्दीनका पीछा करते इर्तिशतक पहुचा। उसकी सेना ताशकन्दसे इस्सिककुल (सरोवर), कोकतेपे (पवत) फिर पहाडी-दुग अराजातू होते निश्चय ही वतमान अल्माअता नगरकी भूमिसे गुजरी। अलमालिक फिर इली नदी और काराताल होते, इचनीबुचनी, उकुर-कितचीके मैदानमेंसे जब तेमूर-लग इर्तिशके तटपर पहुचा, तो कमरुद्दीन वहासे उत्तरकी ओर भागकर त्यूलेस देशमें चला गया। इस देशमें समूरी छालवाले जानवर बहुत होते ह। लौटते वक्त तेमूर अलतुन-क्युरगे और अरतक-कुल (बलखाश) सरोवरके रास्ते आया। कमरुद्दीन अपने अन्तिम जीवनमें लकवाकी बीमारीसे बेकार हो गया, और लोगोने उसे कुछ रखेलियो और थोडे दिनोका खाना देकर जगलमें छोड दिया।

तेमूर-लगको इन सारे अभियानोसे बहुत फायदा नही हुआ। उसके प्रतिद्वन्द्वी घुमन्तुओको अपने नगरो और गावोका मोह नही था, इसलिये वह तेमूरी-सेनाके सामने भागकर अपनी रक्षा कर लेते, और उसके हटते ही फिर एकत्रित हो तेमूरको परेशान करनेके लिये तैयार हो जाते। इसलिये तेमूरने अब मुगोलिस्तानके साथ अपनी नीति बदलनी चाही। इसकी खबर पाकर १३९७ ई०में खिजिर खोजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र शमाजहानको दूत बनाकर तेमूरके दरबारमें भेजा। तेमूर-लगने उसके द्वारा उसकी बहिन तवक्कल आगासे ब्याह किया। नई रानीके आनेपर तेमूरने उसका नाम किचिक खानिम (छोटी रानी) रक्खा।

खिजिर खानके समय मुगोलिस्तानके अधिकाश कबीले मुसलमान थे।

खिजिरखान १३९९ ई०मे मरा। उसके बाद उसके चार पुत्रो शमाजहान, मुहम्मद ओगलान, शेरअली और शाहजहानके बीचमें उत्तराधिकारके लिये सघर्ष शुरू हुआ। इस समय उमरशेखका पुत्र मिर्जा अस्कन्दर मुगोलिस्तानकी सीमापर अवस्थित फरगानाका राज्यपाल था। इस झगडेसे फायदा उठाकर मिर्जा अस्कन्दरने अक्सू शहरको घेर लिया, जो कि चीनके व्यापारका बहुत बडा केन्द्र था। कुछ समयके लिये व्यापारके रास्ते अस्कन्दरके हाथमें आ गये। खिजिरके मरनेपर (१३९९ ई०) मुगोलिस्तानका कुछ भाग तेमूरके राज्यमें सम्मिलित कर लिया गया, जिसमें इस्सिककुल सरोवर-वाला प्रदेश भी था। तेमूर-लगने क्षुद्र-एसिया (वतमान तुर्की)से लाकर काले तातारोको इस्सिककुलके किनारे बसाया।

४ शमाजहान, खिजिर-पुत्र (१३९९–१४०८ ई०)

भाइयोंके सघर्षमें शमाजहानको सफलता मिली। यह तेमूरके जीवनका अन्तिम समय था। तेमूरके मरनेके साथ ही उसके लडकोमें जो झगडा पैदा हुआ, उसमे फायदा उठा शमाजहानने १४०५ ई०में चीनकी मदद लेकर अन्तर्वेदपर चढ़ाई की, किन्तु १४०८ ई०में उसका देहान्त हो गया।

५ मुहम्मद, खिजिर-पुत्र (१४०८–१६ ई०)

मुहम्मद इस्लामका बहुत पक्षपाती था। इसीके शासनकालमें अधिकाश मुगल-कबीले मुसलमान हो गये। इसने शाहरुखके पास दूत भेजा था। १४१६ ई०में यह काशगरमे था। चादिरकुलके उत्तरकी ओरकी पहाडियोमें इसकी बनवाई एक रबात (पाथशाला)म बडे-बडे पत्थर इस्तेमाल किये गये हैं। इतिहासकार हदरका कहना है, कि ऐसे पत्थर कश्मीरके मदिरोमें मिलते ह रबातका फाटक

चालीस हाथ ऊंचा है। फाटकके भीतर घुसकर दाहिनी ओर घूमनेपर साठ हाथ लम्बा एक रास्ता मिलता है। फिर चालीस हाथका एक गुम्वद है, जो वडा ही सुदर और सुडौल है। गुम्वदके चारो ओर चलनेका स्थान है, जिसके चारो तरफ और रास्तेमे भी कितने ही सुदर कमरे वने हुये ह। पश्चिम ओर तीस हाथ ऊची एक मस्जिद है, जिसमें वीससे अधिक द्वार ह। सारी इमारत पत्थरकी है। दरवाजोके ऊपर विशाल शिलाखड रखे है, जिन्हे कश्मीरके मदिरके देखनेसे पहले हैदर अद्भुत चीज समझता था।

डाक्टर लेंडसेलने शायद हैदरलिखित इतिहास 'तारीखे-रशीदी' से उद्धृत डाक्टर वेलोका उद्धरण देते हुये लिखा है—असली बात यह है, कि महमूदखानने "ताश-रवाद" नामक एक प्राचीन हिंदू-मदिरको मस्जिद वना दिया, जो कि चादरकुलवाले डाडेके रास्तेपर काशगर राजधानीको किर्गिजोसे बचानेके लिये वने दुगर्मे वना था। हैदर ('तारीखे-रशीदी' कार)का कहना है, कि वस्तुत महमूदखानने वडे-वडे पत्थरोकी यह रवात वनवाई।

यह रवात चादरकुलसे थोडी दूर अलमाती, वेरनीसे काशगरको नारिनसे होकर जानेवाले मुख्य रास्तेपर अवस्थित है, जिसे वहुतसे युरोपीय यात्रियोने देखा है। डाक्टर मीलेडने लिखा है—"यात्रीको भारी पत्थरोंसे वनी हुई अडतालीस कदम लम्बी और छत्तीस कदम चौडी इमारतको देखकर आश्चय हुये विना नही रहता। इसकी छत समतल है, जिसके वीचसे पच्चीस फुट ऊचा आधा नष्टसा गुम्वद उठा हुआ है। दरवाजा काफी ऊचा और मेहराबी है, जिसके द्वारा भीतर जाया जा सकता है। भीतर खिडकिया नही है। गुम्वदके नीचे एक कमरा या शाला है, जिसकी बगलमे नौ फुट ऊचाईवाली कोठरिया चारों दिशाओमें लातिनी (रोमन) सलेबकी शकलमे है। कोठरिया नीचे वर्गाकार और ऊपर गोल है। उनके भीतर पूरा अधेरा छाया रहता है, सिवाय उन कोठरियोंके जिनकी छतें गिर पडी है। इनके द्वार इतने नीचे है, कि आदमीको वहुत झुककर भीतर जाना पडता है। कोठरियोंके भीतर किसी गवाक्ष या सोने-बैठनेकी जगह नही है। इस इमारतमें रसोईघर या चूल्हेका कही पता नही। इमारत पास-पडोसमें पाये जानेवाले पत्थरोकी वनी हुई है। बीचके हॉलमे पलस्तरका थोडा-थोडा चिह्न मिलता है, लेकिन किसी तरहकी सजावट नही है।" यह यात्री लिखता है, कि मध्य-एसियाके कारवा-सरायो या रवातोंसे इस इमारतका कोई सादृश्य नही है। कोई-कोई इसे ईसाई-मठ बतलाते है, और कोई-कोई हिंदू (बौद्ध)-विहार। दोनो ही एक समय इस भूमिपर वहुत प्रभावशाली धम थे, इसलिये इसका वौद्ध-विहार या नेस्तोरीमठ होना आश्चयकी वात नही है। महमूदखानने ऐसी विचित्र इमारत स्वय बनाई हो, यह विश्वासकी बात नही जचती।

६ नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र (१४१६–१८ ई०)

१४१६ ई०में खान वननेपर इसके पास चीन-सम्राट् और शाहरुखके दूत आये। इसका शासन-काल थोडा रहा, और १४१८ ई०के आरम्भमें शेरअलीके पुत्र वेइस ओगलानने इसे खतम करके गद्दी सभाल ली।

७ शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र (१४१० ई०)

शेर मुहम्मद शाहरुख मिर्जाका समकालीन था। इसका भतीजा वेइस विद्रोही वनकर कजाकों (लुटेरो) का जीवन विता स्वतत्र खान बन गया। वेइसके लूट-मारमें वहुतसे मगोल तरुण भी शामिल थे, जिनमें इतिहासकार हैदरका दादा मीर सैयदअली भी था। हैदरने बडे अभिमानके साथ लिखा है—"मै वेइसखानका नाती हू, और वापकी तरफ अमीर खुदादाद-पौत्र सैयद अहमद मिर्जा-पुत्र अमीर सैयदअली मेरा दादा था। अमीर खुदादादने अपने पुत्र सयद अहमदको काशगरका राज्यपाल बनाकर भेजा था। उस समय वहा खोजा शरीफकी वहुत चलती थी। उसने अधिकार छिन जानेमे नाराज होकर काशगरको उलुगवेगके हायमे दे दिया। इसपर सैयद अहमद मिर्जाको अपने बेटे अमीर सैयदअलीके साथ काशगर छोडकर मुगोलिस्तानकी तरफ भागना पडा, जहा अहमद जल्दी ही मर गया।"

८ वेइस, शेरअली-पुत्र (१४१८-२८ ई०)

शेरमुहम्मदके समय यह अलग खान बन बैठा, पर चैनमे रहनेका मौका नही मिला। १४२० ई० में मुहम्मदखान-पुत्र शेरमुहम्मदसे इसका सघर्ष हुआ, और अन्तमें शेरमुहम्मदको समरकन्द भाग जाना पडा। जहा कुछ समय बदी रखकर उलुगवेगने उसे मुक्त कर दिया और १४२१ ई० मे वह मुगोलिस्तान लौटा। वेइसने अपनेको पक्का मुसलमान सावित करनेके लिये मुसलमानाके ऊपर आक्रमण करनेकी मनाही कर दी थी। लेकिन घुमन्तुओंके लिये लूट-मारका कोई रास्ता तो चाहिये, इसलिये उसने बौद्ध कलमकोको अपनी जहादका शिकार बनाया। पर, कलमक भी बहुत तगडे थे। कई बार उन्होने वेइसको हराया। मिंगलकके युद्धमे पकडकर उन्होने उसे अपने राजा ईसन थैसीके पास भेज दिया। उसने घोडेसे उतरकर थैसीको सलाम नही किया, तो भी मगोलोको छिङ-गिस्के पवित्र वशका ख्याल था, इसलिये उन्होने वेइसको छोड दिया। दूसरा युद्ध उसका कबाका के पास मुगोलिस्तानमे हुआ, जिसमें मुश्किलसे जान बचाकर वह भाग पाया। एक और युद्ध उसने तुर्फानके पास ईसन थैसीसे किया, जिसमें वेइस बदी हुआ, और उसने अपनी बहिन मखदूम खानिमको देकर छुट्टी पाई। वेइसने कलमकोंके साथ छोटे-बडे एकसठ युद्ध किये, जिसमे सिर्फ एकमे सफल हुआ। वेइस शरीरसे बहुत बलवान् था। हर साल वह तुर्फान, तरिम-उपत्यका, लोब और कातकके प्रदेशोमे जगली ऊटोके शिकारके लिये जाता। "खान स्वय गर्मियोमें अपने दासोकी मददसे घडामे पानी निकालकर जमीनकी सिंचाई करता।"

अमीर खुदादाद अब बानबे सालका हो गया था। वह हज करनेके लिये जाना चाहता था, लेकिन मौका नही पा रहा था। इसपर बूढेने उलुगवेगको बुलाया, लेकिन उलुगवेगको मगोलोंके हाथो बडी मुसीबत उठानी पडी। जब वह मुगोलिस्तानके प्रसिद्ध नगर चूमे पहुचा, तो अमीर खुदादाद सेना छोड कर मिर्जा उलुगवेगसे जा मिला। मुगोल हराकर तितर-बितर कर दिये गये। खुदादाद उलुगवेगके साथ समरकन्द पहुचा। तेमूरियोको छिङ-गिस् खानके तूरा (यासाक)के जाननेकी बडी उत्सुकता थी। शायद उनको मालूम नही था कि छिङ-गिस्के आदेशो (यासाक)को चीनी और मगोल भाषाओम लिखकर पहिले हीसे सुरक्षित रक्खा गया है। उस समय समझा जाता था, कि छिङ-गिस्का तूरा कुछ बडे-बूढोने अपनी स्मृतियोमें सुरक्षित रख छोडा है। अमीर खुदादाद छिङ-गिस्के तूराका नही, बल्कि इस्लामका पक्षपाती था। उसने उलुगवेगसे कहा—"हमने कुख्यात छिङगिसी तूराको बिल्कुल छोड शरीयतको स्वीकार किया है, लेकिन, यदि मिर्जा उलुगवेग तूराको पसद करते है, तो मै उन्हें ऐसे सिखलाऊगा, जिसमें कि वह शरीयतको छोडकर तूराको स्वीकार करे।" मिर्जा उलुगवेगने शायद अपनी वैज्ञानिक-बुद्धिसे बूढेको परख लिया हो, इसलिये उसने तूरा सीखनेका ख्याल छोड दिया।

उलुगवेग अपने इस आक्रमणमे चू, और चारिनके रास्ते गया था। खुदादाद जहा उसे आकर मिला, उसी स्थान पर मई १४२५ ई०मे शेरमुहम्मदकी हार हुई। उलुगवेगकी सेनाने शेरमुहम्मदका पीछा इली नदीतक किया, यद्यपि स्वय उलुगवेग युलदुजमें रहा। वहासे लौटते वक्त रास्तेम करशी स्थानमें उसने प्रसिद्ध कोक-ताश (नील-पाषाण)को पाया। तेमूर भी इस कोक-ताश (नीलपाषाण)को समरकन्द ले जानेकी बडी इच्छा रखता था, जिसको पूर्ण करनेका अवसर उसके पोतेको मिला।

शेरमुहम्मद वस्तुत वेइसका समकालीन खान था। मुगोलिस्तानका कुछ भाग इसके हाथमें था। उसके मरनेपर उसका राज्य भी वेइसके हाथमें चला गया। वेइस खानको १४२८ ई०मे इस्सिककुलके तटपर शातुककी शहसे कत्ल कर दिया गया। उलुगवेग शातुकको खान बनाना चाहता था, इसलिये वेइसके विनाशमें उसकी भी सहमति थी। यह भी कहा जाता है कि वेइस घोडा कुदाते हुये स्वय गिर गया, और गलतीसे अपने ही आदमियोंके तीरका शिकार हुआ।

वेइसके जमानेसे काफिर (बौद्ध) मगोलो—चोरोस, खोशोत, तोरगोत और खाइत—का पूर्वी मुगोलिस्तानपर आक्रमण शुरू हुआ। १३९९ ई०मे ओइरोत राजा उगेची गामागने मगोलोंके खान

एलबेकको मार डाला। उसके बाद ओइरोतोकी प्रधानता शुरू हुई। १४०८ ई०में उन्होने उलजई-तिमूरको विशबालिकमें कआनकी गद्दीपर बैठाया। इसी समय मुगोलिस्तानके कुछ हिस्सेपर पूर्वी-मगोलोने अधिकार कर लिया। इन्ही ओइरोतोको मुसलमान लेखक कल्मख(कल्मक) कहते है। मुहम्मदखान उनसे लडनेके लिये तैयार हुआ, और उसका प्रतिद्वद्वी बेइस चीनी लेखकोके अनुसार पूर्वी तुर्किस्तानसे अपनी मुख्य सेना ले पश्चिममे सप्तनदमे इली-तटपर ईलीबालिक पहुचा।

१५ वी सदीके यात्रियोके अनुसार मुगोलिस्तान उस समय मुख्यत घुमन्तुओका देश था, जो तम्बुओ में रहते और घोडोके मास और कूमिसपर गुजारा करते। उनमेसे कुछ बौद्ध ओइरोताकी तरफ थे, और कुछ मुसलमानोकी तरफ। इलीके तटपर ही बेइस खानको कई बार ओइरोतोके सरदार ईसन थैसीसे लडना पडा।

९ शातुक, शेरअली-पुत्र (१४२८-३४ ई०)

शातुक समरकन्दमे रहता था, जहासे उलुगबेगने उसे बेइससे लडनेके लिये मुगोलिस्तान भेजा। मुगोलिस्तानमें शातुकके पक्षपाती अमीर कम थे, इसलिये वह काशगर गया, जहापर खुदादादके पौत्र कराकुल अहमद मिर्जाने उसे हराकर मार डाला। इसपर उलुगबेगने एक सेना भेजी, जो अहमद मिर्जाको पकडकर समरकन्द ले गई, जहा उसके दो टुकडे कर दिये गये।

शातुकके मरनेके बाद मगोल अमीरोके दो दल हो गये थे, एक बेइसके बडे लडके यूनसको खान बनाना चाहता था, और दूसरा बेइसके दूसरे पुत्र एसेनबुकाको। दोनो ही अल्पवयस्क थे। एसेनबुकाकी पार्टी ज्यादा मजबूत थी, इसलिये वह गद्दीपर बैठा। यूनस अपने आदमियोके साथ उलुगबेगके दरबारमें चला गया, जिसने उसे ईरान भेज दिया। बाबरके अनुसार यह घटना जून १४३४ ई०की है।

१० एसेनबुगा, ईसनबुगा, बेइस-पुत्र (१४३४-६२ ई०)

एसेनबुगा अमीरोके हाथका खिलौना था। उसके प्रभावशाली अमीरोमें खुदादाद-पुत्र मीर मुहम्मदशाह (अतबाश) और मीर करिमबेर्दी थे। करिमबेर्दीने अपने लिये अलाबुगमे एक दुर्ग बनवाया, जहासे वह उलुगबेगशासित फरगानामे लूट-मार किया करता था। तीसरा अमीर मीर हकबेर्दी बेकिचेक था, जिसने इस्सिककुल सरोवरके एक द्वीप कोइसुइमें अपना गढ बनाया था। कल्मकोका भी उत्तर-पूबसे बराबर आक्रमण होता रहता था। एसेन एक बार स्वय तुर्किस्तान शहर और मैरामपर आक्रमण करने गया।

मुगोलिस्तानी उधर अन्तर्वेदपर लूट-मार करने जाते, तो कल्मक उन्हे लूटते-पाटते इस्सिक्कुलतक पहुचते—कुछ साल पीछे तो वह सिर नदीतक पहुचने लगे।

ईसानबुगाके खान बननेके बाद यूनस तीस हजार परिवारोवाले ओर्दू और ईराजान तथा मीरकतुकमानके साथ उलुगबेगके पास पहुचा था। उलुगबेगने उसे अपने पिता शाहरुखके पास भेज दिया, जिसने यूनसके साथ पुत्रवत् व्यवहार किया। यूनस बारह सालका था, जब कि यज्द (ईरान)मे उसने मौलाना शरफुद्दीन यज्दीसे पढ़ना शुरू किया। मौलानाके मरनेके समय वह चौबीस सालका था। फिर वह यज्द छोडकर यात्रापर निकला, और इराक, अरब, आजुर्बाइजान होकर शीराजमें रहने लगा। एकतीस सालकी उमर तक वह मुगोलिस्तानसे बाहर रहा।

यूनसके चले जानेपर ईसनबुगा सारे मुगोलिस्तानका खान था। शासन मजबूत हो जानेपर अमीर सैयद अलीने काशगर आनेकी आज्ञा मागी। यह कह ही चुके है, कि काशगरको खोजा शरीफ काशगरीने उलुगबेगको दे दिया था, जिसकी ओरसे अमीर सुल्तान मलिक दुलादाई राज्यपाल नियुक्त हुआ, उसके बाद हाजी मुहम्मद शाइस्ता फिर पीर मुहम्मद बरलस राज्यपाल हुये। सैयद अलीने खानसे कहा—"मै देखना चाहता हू, कि क्या मैं अपने परिवारके पुराने इलाकेपर फिरसे अधिकार स्थापित कर सकता हू, जिससे कि चालीस वर्षसे हम वचित है। यदि मै सफल नही हुआ, तो आप मुझे धिक्कार सकते है।" एसनबुगाने अपनी सहमति दे दी।

इस समय मगलाई सूयाह् (काशगरिया) का अधिकाश भाग दोगलतोके हाथमें था, लेकिन अन्दिजान और काशगरपर समरकन्दके शासक उलुगबेगका अधिकार था। इस्सिक्कुलका पहाडी इलाका संघर्षोका अखाड़ा बन गया था। बाकी इलाके दोगलत अमीरोके हाथमे थे। अमीर सैयद अली अक्सूसे अपने भाइयोको भगा वहा अपने परिवारको रख सात हजार सेना लेकर काशगरके ऊपर चढा। पहली ही भिडन्तमें हाजी मुहम्मद शाइस्ता भाग निकला। मुगोलिस्तानियोने चगताइयो (उलुगबेगकी सेना) का पीछा किया, लेकिन अभी भी काशगरके किलेमे दुश्मन मौजूद था—शाइस्ताने वहा मोर्चाबदी कर रक्खी थी। अमीर सैयद अलीने नगरपर अधिकार पा आसपासके इलाकोको उजाडना शुरू किया। उलुगबेगके पास समरकन्द गुहार गई, लेकिन वह ऐसी स्थितिमें नही था, कि सेनाकी मदद भेजता। अमीर सैयद अलीने जब तीसरे वर्ष काशगरपर चढाई की, तो लोगोने तग आकर खोजा शरीफसे कहा—"हमने लगातार तीन वर्षतक फसल गवा दी। अगर इस सालकी फसल भी हाथसे चली गई, तो देशमे भारी अकाल पडेगा।" लोगोने पीर मुहम्मद बरलसको पकडकर अमीर सैयद अलीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर काशगरके भीतर प्रवेश किया, और चौबीस सालतक वहा राज्य किया। हैदरके अनुसार उसने कृषि और पशु-पालनके ऊपर बहुत ध्यान दिया। वह तीन पुत्र और दो लडकिया छोडकर मरा। इन्ही पुत्रोमेंसे एक "तारीखे-रशीदी" का लेखक मुहम्मद हैदर मिर्जा था।

ईसानबुगाकी तरुणाईके कारण अमीर उसका बहुत मान-सम्मान नही करते थे। उस समय तुर्फानके उइगुरोके अमीर तेमूरका बहुत मान था, जिससे दूसरे अमीर डाह करने लगे, और एक दिन खानके सामने ही उन्होने पकडकर तेमूरकी चोटी काट डाली। अमीर सैयद अलीने जब यह खबर सुनी, तो उसने ईसानबुगा खानको अकबाससे ले आकर अक्सूका राज्यपाल बना दिया। चोटी काटनेसे यह मालूम होगा, कि अभी उइगुरोमें गैर-मुस्लिम (बौद्ध) भी थे। जान पडता है, मुस्लिमोसे अलग करनेके लिये चुटियाका चिह्न समकालीन भारतमें ही नही, बल्कि मध्य-एसियामें भी था। चीनियोने जबर्दस्ती मचूओने-चोटी रखवाई थी, किन्तु मगोल गृहस्थोकी चोटी तो मने अपनी आखो १९३५ ई० मे खैलरके पास देखी। जब उक्रइनके लोग तुर्की सुल्तानके अधीन थे, उस समय वहा भी चोटी ईसाइयो का और दाढी मुसलमानोका चिह्न था।

ईसानबुगाके समय अमीरोकी मनमानी चलती रही। दुगलत कबीलेके मीर करीमवर्दीने मुगोलिस्तानकी सीमातपर अलाबुगाकी पहाडीपर अपने किले बनाये थे, जहासे वह फरगना अन्दिजानकी ओर मुसलमानोको लूटने जाता। दूसरा अमीर मीर हकवेर्दी बेगजिकने इस्सिक्कुलके टापू कुई-सुईमें किला बनाकर कलमखोसे बचनेके लिये वहा अपने परिवारको रक्खा था। जारा और बारिनप कबीलोके अमीर ईसान थैशीके पुत्र अमासाजी थैशीका साथ देते थे। ईसान थशी कल्मक भूमिका स्वामी था। कालूजी, बलगाजी और दूसरे कितने ही कबीले कजाक-खान अबुलखैर (तुर्किस्तान) के साथ हो गये थे।

ईसानबुगाके अक्सूमे जम जानेपर धीरे-धीरे उसके अमीर भी उसके पास जमा होने लगे। खान भी उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था। जब शक्ति मजबूत हो गई, तो ईसानबुगाने ८५५ हि० (१४५८ ई०) मे एक साथ ही आक्रमण करके सैराम, तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दको लूट मारकर बर्बाद कर दिया। इस समय बाबरका दादा सुल्तान अबूसईद मिर्जा अन्तर्वेद (पश्चिमी तुर्किस्तान) का बादशाह था। अबूसईदने खानका पीछा किया, और उसे यगी—जिसे इतिहासकी पुस्तकोमे तराज कहा जाता है—मे जा पकडा। मुगल बिना युद्ध किये ही भाग गये। अबूसईद अन्तर्वेद लौट गया, लेकिन जब वह खुरासानकी ओर गया, तो फिर मुगोलिस्तानियोने हमला कर दिया। ईसानबुगाके अन्दिजानमे पहुचनेकी बात सुनकर अबूसईदके सेनापति मिर्जा अली कूचुकने भीतरी किलेको मजबूत कर दिया था, लेकिन बाहरी किले पर ईसानबुगाका अधिकार हो गया। अन्तमें सुलह हुई। खान सारे अन्दिजान इलाकेपर अधिकार करके लौट गया। सुल्तान अबूसईदको बडी परेशानी थी। यदि वह मुगोलिस्तान पर चढाई करता, तो खान अपने देशके दूसरे छोरपर चला जाता, जहापर उसका पीछा करना समरकन्दकी सेनाके लिये बहुत मुश्किल था। जब अबूसईदकी सेना लौटती, तो खान उसकी पीठपर हाना।

हर समय मुकाबिलेके लिये सेना भेजना सम्भव नही था। अबूसईदकी जैसी परेशानी घुमन्तुओंके साथ उससे डेढ सहस्राब्दी पहलेके दूसरे राजाओके सामने भी आती रही।

मुगोलिस्तानमे फसे होनेके कारण अबूसईद इराकपर चढाई नही कर पाता था। अन्तमें अबूस-ईदको एक ही रास्ता दिखलाई पडा, कि यूनसको ईरानसे बुलाकर उसके भाईके खिलाफ भिडा दिया जाय। उसने ऐसा ही किया। इस समय दश्तेकिपचकपर अबुलखैर खानका मजबूत शासन था। इस कजाक खानसे हारकर जू-छि-वंशज जानीबेग खान और गिराई खान मुगोलिस्तानमे चले गये। अबुल्-खैरके मरनेके बाद उसका उज्बेक-कजाक उलुस आपसी झगडोके कारण छिन्न-भिन्न हो गया, और उनमेंसे अधिकाश जाकर गिराई और जानीबेग खानके ओर्दूमे मिल गये। अब इनकी सख्या दो लाख थी। इसी समय उनके ओर्दूको उज्बेक-कजाकका नाम दिया गया, यह कह आये है। कजाक-सुल्तान ८७० हि० (२४ VIII १४६५- १५ VII १४६६ ई०) से शासन करने लगे, और ९४० हि० (२३ VII १५३३–१३ VI १५३४ ई०) तक उज्बेकिस्तान (किपचक-भूमि)के अधिकाश हिस्सेपर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। गिराई खानके बाद बेरेदक-पुत्र फिर जानीबेग खानके पुत्र कासिम खान हुआ। कासिम खानने सारे दश्ते-किपचकको जीत लिया, यह हम पहले बतला चुके है। हैदरके अनुसार उसकी सेना हजार हजार (दस लाख) से ज्यादा थी, और जू-छि खान छोडकर इतना बडा खान उस भूमिमें और कोई नही हुआ। कासिमके बाद उसका पुत्र मिमेश खान फिर उसका पुत्र ताहिर खान हुये। ताहिरके समयसे कजाकोकी शक्ति कमजोर होने लगी। ताहिरके बाद उसका भाई बिरलस था, जिसके समय उसका उलुस बीस हजार कजाकोका रह गया था। ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) में बिरलसके मरनेपर कजाक बिल्कुल लुप्त हो गये। ईसानबुगाके समयसे रशीद खानके समय (१५३३-६५ ई०)तक कजाको और मुगलोंके बीच अच्छा सबध रहा।

हैदरकी तरह मध्य-एसियाके किसी कबीलेके लुप्त होनेकी बातका अर्थ यही है, कि उनमें फिर नई गुटबदी हो गई।

अमासञ्ची थैंची (थैशी) और उजतिमूर थैंचीने १४५२ ई० और १४५५ ई० के बीच (दूसरी परपराके अनुसार १४३७ ई० में) सिर-दरियाके तटपर उज्बेक-कजाकोको बुरी तरहसे हराया। इस प्रकार अल्ताईके पासवाले कल्मक अब सिर-दरियाके तटतक पहुचने लगे। १४५९ ई०के अन्तमें सुल्तान अबूसईदने हिरातमें कल्मक-दूतसे भेंट की। मगोलोंके आक्रमणका उत्तर देनेके लिये अबूसईद-ने मुगोलिस्तानपर चढाई कर उन्हे अशपारमे हराया।

१४५६ ई० में अबूसईदने यूनसको मुगोलिस्तानमे लाकर बैठाया, किन्तु उसे हारकर फरगाना और सप्तनदकी सीमापर अवस्थित जीतीकेंदमें भागना पडा, जिसे कि अबूसईदने यूनसको दिया था।

एसेनबुगा १४६२ ई०मे मरा।

११ दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र (१४६२–६८ ई०)

ईसानबुगाके मरनेके बाद सत्रह वर्षकी अवस्थामें उसका पुत्र दोस्तमुहम्मद अक्सूमे बापकी गद्दी पर बैठा। यह बडा ही सनकी-सा तरुण था। इसने यारकन्द और काशगरपर चढाई की, और काश-गरको लूटकर अक्सू लौट गया। मुहम्मद हैदर मिर्जा (इतिहासकार) इससे नाराज होकर यूनस खानसे जा मिला। थोडे ही समय बाद दोस्तमुहम्मदने अपनी सौतेली मापर आशिक हो मुल्लोंसे ब्याह करनेके अनुकूल फतवा मागा। इन्कार करनेपर सात मौलवियोको उसने मरवा डाला। आठवें मौलवी मुहम्मद अतारकी बारी आई। शराबमें मदहोश और हाथमें तलवार लिये हुये उसने मौलवीसे पूछा—"मै अपनी मासे ब्याह करना चाहता हू। यह विहित है या नही?" अत्तार अपने समयके पूर्वी तुर्कि-स्तानका बहुत ही धार्मिक और अत्यन्त विद्वान् दरवेश था, उसने खानसे कहा—"तुम्हारे जैसोंके लिये यह विहित है।" खानने तुरत ब्याहकी तैयारी कर दी। हैदरके अनुसार स्वप्नमे उसके पिताने उसे फटकारते हुये कहा—"ओ अभागे, एक सौ वर्ष तक मुसलमान रहनेके बाद तू काफिर बनना चाहता है।" मगोलोमें सौतेली माको मा नही मानते थे, और उनमें ऐसा ब्याह होता रहता था। शायद यही समझकर दोस्तमुहम्मदको सौतेली माके ब्याहको शरीयतमे विहित करानेकी इच्छा हुई।

चिरागकुश (दीपवुझाव) सम्प्रदाय—दोस्तमुहम्मद खान (१४६१–६८ ई०) की लम्पटताके वारेमें सुनते वक्त यह भी याद रखना चाहिये, कि हैदरके अनुसार दोस्तमुहम्मदसे सौ वर्ष पीछे भी बदख्शामें एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसे 'चिरागकुश' कहते थे—"इस मतका बदख्शामें संस्थापक शाह राजीउद्दीन था। उसके अनुयायी जिस किसी अजनबीको पा उसे मार डालनेको मुक्तिका रास्ता मानते थे। कोहिस्तान (पामीर)के विधर्मियोंमें राजी बड़ा ही पापी था। बदख्शाके अधिकांश लोग इसके ही अनुयायी हैं। उनके लिये अपने नजदीकी सबंधियोंसे व्यभिचार करना वैध है। उसके लिये विवाह करनेकी भी कोई अवश्यकता नहीं। अगर कोई किसीके साथ यौन-संबंध करना चाहता, तो बेटा या मा किसीसे भी प्रसंग करना बिलकुल वैध है। उनमें यह नियम है, कि एक दूसरेकी स्त्री और सम्पत्तिका उपभोग कर।" हैदरका यहां अभिप्राय शायद बदख्शाके इस्माइलियोंसे है। इस्माइली शीयोंका एक सम्प्रदाय है। ये लोग छठे इमाम जाफर सादिकके ज्येष्ठ पुत्र इस्माईलको वास्तविक उत्तराधिकारी तथा अन्तिम इमाम मानते हैं, जब कि दूसरे शीया इस्माईलके भाई मूसा तथा पाच और पीछेके दूसरे—कुल बारह इमामोंको मानते हैं। इन्हीं इस्माइलियोंके गुरु आगा खां हैं। सोवियत शासनकी स्थापना (१९१८ ई०) से पहिले तक पामीरके इस इलाकेमें 'चिरागकुश' इस्माइलियोंकी काफी सख्या थी—अफगानिस्तानके इलाकेमें शायद वह अब भी है।

चालीस सालकी उमरमें छ दिन बीमार रहकर ८७३ हि० (२२ VII १४६८–१२ VI १४६९ ई०) में दोस्तमुहम्मद मर गया। उसके पुत्र सुल्तान ओगलानको पकड़कर तुर्फान और चालिश (करासर) ले गये। इस समय यूनसको मौका मिला और उसने आकर अक्सूको ले लिया।

१२ यूनस, वेइस-पुत्र (१४६८–८७ ई०)

एसन (ईसन) बुगाके मरनेके बाद वस्तुत मुगोलिस्तानका राज्य दो भागोंमें विभक्त हो गया था। ८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) तक अक्सू और पूर्ववाले प्रदेशमें एसनबुगाके पुत्र दोस्तमुहम्मदका शासन था, और पश्चिमी भाग पर यूनसका। दोस्तमुहम्मदके बाद केवेक-सुल्तान चार साल पीछे तक राज्य करता रहा, जिसके सिरको काटकर उसके ही आदमियोंने यूनसके पास भेज दिया। इस प्रकार १४७२ ई०में यूनस सारे राज्यका स्वामी बन गया।

यूनसका जन्म ८१८ या ८१९ हि० (१४१५ या १४१७ ई०) में हुआ था, और जैसा कि पहले बतलाया, बचपनमें ही वह ईरान चला गया, जहां उसे शरफुद्दीन यज्दी जैसे प्रसिद्ध इतिहासलेखक और विद्वान्‌के पास शिक्षा प्राप्त करनेका अवसर मिला। उसे घुमन्तू-जीवन पसंद नहीं था। दोस्त मुहम्मद खानके मरनेपर यूनसको मैदान खाली मिला। वह अक्सूपर अधिकार करके वहीं रहना चाहता था। शायद वह केवेक-सुल्तान ओगलानके साथ झगड़ा न करता, यदि उसे डर न होता, कि उसके ओर्दूके लोगोंमेंसे कितने ही केवेककी ओर चले जायेंगे।

८ फवरी १४६९ ई०में तेमूरी सुल्तान अबूसईदके मरनेपर उसका राज्य अलग-अलग शाहजादोंमें बट गया—खुरासानका शासक सुल्तान हुसेन मिर्जा हुआ, समरकन्दका अहमद मिर्जा, हिसार कुदुज-बदख्शाका सुल्तान महमूद, और अन्दिजान-फरगानाका वली (राज्यपाल) बाबरका पिता उमर शेख मिर्जा। यूनसने मुगोलिस्तान लौटनेपर तीनोंको अपना दामाद बनाया। अपनी लड़की मेहरे-निगार खानम अहमद मिर्जाको दी, कुतुलुग निगार उमरशेख मिर्जाको। इसी कुतुलुग निगार खानमसे बाबर पैदा हुआ। ताशकन्दका वली (राज्यपाल) शेख जमाल सुल्तान अहमद मिर्जा समरकन्दके अधीन रहा।

यूनसको कल्मकोंका झगड़ा उत्तराधिकारमें मिला था। १४७२ ई०में कल्मक-सेनापति अमासाजी (इस्सनपुत्र) थैशीने मुगोलिस्तानमें आकर इली-तटपर यूनसको हराया, जिसपर यूनसकी सेना तुर्किस्तान प्रदेश (सिर-दरिया)की ओर भागी, और वहीं उसने जाड़ा बिताया। मगोल करातुकाई सिर-तटतक पहुचे। उस समय कजाक खान गिराई (कराई) और जानीवेगका भगावर अबुल खैरका पुत्र बूरुज ओगलान तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)का शासक था। वह यूनससे लड़ने गया था। उस समय उसे शिकारमें अनुपस्थित पा उसके ओर्दूके साठ हजार परिवारोंको पकड़ लिया। इसमें राई

नही था, इसलिये बिना विरोध हीके यूरुज ओगलानने सबपर अधिकार कर लिया। जब यह खबर यूनसको मिली, तो वह सींग बजवाकर जल्दी-जल्दी लौटा, और जमी हुई सिर नदीके पार हो गया। यूरुजने जब आवाज सुनी, तो उसने भी जल्दीसे घोडेपर चढना चाहा, लेकिन उसकी नौकरानियान उसके घोडे और साईस (अखताची) को पकडे रक्खा। कुछ औरतें उसने घोडोंसे उतरकर आई, और उन्होंने यूरुज ओगलानको पकड लिया। इसी समय यूनस खानने आकर अपनी नौकरानीको यूरुजका सिर काट लेनेका हुक्म दिया। उसने तुरत सिर काट लिया। बिना रानीकी मधुमक्खियोंकी तरह बिना सरदारका उज्बेक-कजाक ओर्दू क्या कर सकता था? बीस हजार घुमन्तुओंमे बहुत कम जान बचाकर भाग पाये।

ताशकदका वली जमाल सुल्तान यूनसको सिर-उपत्यकामें नही देख सकता था। उसने आक्रमण करके यूनस खानको पकडकर सालभर बदी रक्खा, जिसपर सारा मुगोलिस्तानी उलुस शेख जमालके अधीन रहनेके लिये मजबूर हुआ। शेख जमालने यूनसकी बेगम और बाबरकी नानी ईमान दौलान बेगमको अपने एक अफसर ख्वाजा कलानको दे दिया। बेगमने बाहरसे स्वीकृति दे दी थी, लेकिन रातको पास आनेपर उसने ख्वाजा कलानको मार डाला। सालभर बाद अमीर करीमबेर्दी दोगलातके भतीजे अमीर अब्दुल कुद्दुजने शेख जमालको मारकर यूनस खानको मुक्त किया। अब ताशकन्द और शाहरुखिया भी बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके हाथमें थे। मुगोलिस्तानी अमीर फिर यूनसके पास लौट आये। उन्होंने खानसे शिकायत की—"खानने हमेशा हमें, कृषिवाले प्रदेशके नगरोंमें बसानेकी कोशिश की, जिसे हम लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते है।" खानने अफसोस प्रकट करते हुये कहा—"अबसे मैं नगरों और खेतीवाले स्थानोंमे रहनेका विचार छोड देता हू।"

इस वक्त कल्मक अपने युत (ओर्दूवाले देश) को लौट गये थे, इसलिये यूनस खानको मुगोलिस्तानमें मुगलोंके साथ रहनेकी हिम्मत हुई। इसके बाद कई सालो तक खानने घर या नगरमें रहनेका नाम नही लिया। काशगरके शासक मुहम्मद रेहर मिर्जाने यूनसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

अपने एक दामाद बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके साथ यूनसका विशेष स्नेह था। भाई अहमद मिर्जा (समरकन्दके सुल्तान) के आक्रमणका भय होनेपर उमरने यूनसको बुलाया। यूनसने फरगानाके सबसे बडे शहर अक्सीमें आकर डेरा डाला। अहमद मिर्जाने खानसे तीकासगरदकूके पुलपर लडाई की, जिसमे वह खानका बदी बना, लेकिन खानने अपने दामादको बहुतसी भेंटें देकर छोड दिया। कुछ समय बाद फिर उसने चढाई की, और उमरशेखकी सहायताके लिये खान मर्गिलान पहुचा। इतिहासकार हैदरने मौलाना मुहम्मद काजीके मुहसे सुना था—"एक बार मैं मर्गिलान गया। मैंने सुन रक्खा था, कि यूनस खान मुगल है, और समझा था, कि वह दूसरे रेगिस्तानी तुर्कोंकी तरह बिना दाढी-मूछका (मगोलायित) आदमी होगा। मैंने उसको देखा, वह बडा ही खुबसूरता था। उसका चेहरा ताजिकोंकी तरह दाढीसे भरा हुआ था। बातचीत और व्यहारमे वह बडा ही सस्कृत था, जैसे कि ताजिकोंमें भी बहुत कम पाये जाते हैं।" मौलानाने सभी सुल्तानोंको पत्र लिखा—"मैंने यूनस खान और मुगलोंको देखा। ऐसे बादशाहकी प्रजाको बदी बनाकर नही ले जाना चाहिये। वह इस्लामके अनुयायी है।" इसके बादसे मुगलोंको अन्तर्वेद और खुरासानमें ले जाकर दासके तौरपर बेचना बद हो गया। इससे पहले मुगलोंको भी दूसरे काफिरोंकी तरह दास बनाकर बेच दिया जाता था। यह मालूम ही है, कि इस्लामी शरीयतके अनुसार मुसलमानको दास नही बनाया जा सकता।

अहमद मिर्जा और उमरशेख मिर्जा अर्थात् समरकन्द और फरगानाका झगडा बराबर ही चलता रहा, आर उमरशेखकी मददके लिये यूनसको भी बराबर जाना पडता था। ऐसे ही एक समयमे यूनसके आनेपर उमरशेखने उसे ओश दे दिया। खानने वही जाडा बिताया। मुगोलिस्तानकी ओर लौटते समय उसने अपने दूसरे नाती इतिहासकार मुहम्मद हैदर मिर्जाको ओश (ऊश) का शासक बना दिया। शेख जमालकी मृत्युके बाद ताशकन्दको उमरशेखने ले लिया। समरकन्द-शासक अहमद मिर्जा इसे बर्दाश्त नही कर सकता था। खान उमरशेख और अहमद मिर्जाकी सेनायें फिर लडनेके लिये सिर-उपत्यकामें पहुची, लेकिन हजरत नासिरुद्दीन उबैदुल्ला सूफी (सत)ने बीचमे पडकर

विवादग्रस्त ताशकन्दको खानके हाथमे देकर झगडा शात करा दिया। अभी यूनस ताशकन्दम ही था, कि उमे लकवा मार गया। दो साल तक इस बीमारीमे पडे रहकर ७४ वर्ष की उमरमें ८९२ हि० (२८ XII १४८६–१८ XI १४८७ ई०)मे यूनस मर गया। चगताई खानोंमें अधिकाश चालीस वर्षसे अधिक नही जी पाये, और उनमेंसे कितने ही स्वाभाविक मौतसे नही मरे, लेकिन यूनस इसका अपवाद था। यूनसकी कब्र ताशकन्दम ही पूरानवार शेख खावन्दि-तुहूरकी समाधिके पास है।

१३ महमूद, यूनस-पुत्र (१४८७–१५०८ ई०)

बापके मरनेपर ज्येष्ठ पुत्र महमूद * को मगोलोकी रीतिके अनुसार सफेद नम्देपर बैठा कधपर उठा खान घोषित किया गया। लेकिन महमूदका अधिकार पूर्वी मुगोलिस्तानपर ही रहा। वह बापकी तरह ही सस्कृत और सुशिक्षित था। वह कविता भी करता था, जो बुरी नही होती थी। अन्तर्वेद लेनेकी उसकी बडी इच्छा थी, जिसमे कमजोर तेमूरी-सुल्तानोके मुकाबिलेमें पहिले इसे सफलता भी मिली, लेकिन १५०० ई० मे जब उज्बेक खान मुहम्मद शैबानीने अन्तर्वेदको अपने पजेमे कर लिया, तो उसके लिये फिर मौका नही रह गया। १४८८ ई० म कुछ सफलता मिली थी। उमरशेखने असलमे महमूदसे ताशकन्द छीननेके लिये सेना भेजी थी। खानने सफलता प्राप्त कर मिर्जाके सभी अनुयायियोको पकडकर मरवा डाला। इसी समयमे बाबरके पिता और मामाका सघर्ष शुरू हुआ जिसमें मिर्जाकी शक्ति बहुत क्षीण हो गई, और अतमे वह बिल्कुल हार गया। इसपर अहमद मिर्जा डेढ लाख सेना लेकर आया। अहमद मिर्जाके साथ कजाक अबुल्खैरका पौत्र और शाहबुदागका पुत्र शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) भी अपने तीन हजार आदमियोको लेकर गया था। हम पहले बतला चुके है, कि कैसे युद्धके समय शाहीबेग अपने तीन हजार आदमियो के साथ युद्धक्षेत्रसे निकल गया, और मिर्जाकी परताल (रसद) पर टूटकर उसे लूट लिया। इसके कारण अहमद मिर्जाकी सेना भागनेपर मजबूर हुई, लेकिन उसके सामने चिर नदी—जिसे ताशकन्दवाले पराक कहते है—थी, जिसमे बहुतसे सिपाही डूबकर मर गये और अहमद मिर्जा किसी तरह जान बचाकर समरकन्द पहुचा। इतिहासकार हैदरका पिता मुहम्मदहुसेन गूरगानसे महमूद खानका बडा प्रेम था। वह सदा एक ही डेरे या कमरेमे रहते थे। उनके घर बगल-बगलमें होते। वह अपने निजी घरेलू बाता को भी एक दूसरेमे नि सकोच कहते थे। महमूद खानने अपनी बहिन यूनस-पुत्री खूबनिगारसे महमूद हुसेनकी शादी कर दी थी। जब अहमद मिर्जा, उमरशेख मिर्जा और महमूद मिर्जा मर गय, तो उरातेपा भी महमूद खानके हाथमें चला गया, जिसे उसने अपने मित्र और बहनोई मुहम्मद हुसेनको दे दिया।

शाहीबेगने धोखा देकर ताशकन्द विजय करनेमे महमूद खानकी सहायता की थी। अब वह खानका सेवक था। उसकी सहायताके बदलेमे खानने तुर्किस्तान-शहरका इलाका उसे दे दिया, जिसे गिराई खान और जानीबेग दोनो भाई अपना समझते थे। इसके कारण खानमे उनका बिगाड हो गया। उन्होने कहा—हमारे दुश्मन शाहीबेगका क्यो तुर्किस्तान दिया? इसके बाद उज्बेक-कजाको और महमूद खानमे लडाईकी नौबत आगई। दो बडी-बडी लडाइया हुई, और दोनोमे महमूद खानकी हार हुई। महमूद खानका बर्ताव अच्छा न देख यूनस खानके समयके कितने ही सेनापति उसे छोड गये। खानने पाच अमीरोको मरवाकर एक नीच कुलके आदमीको अपना सेनापति बनाया।

८९९ हि० (१२X१४९३–२IX १४९४ ई०)मे बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाकी मौत घरके नीचे दबकर हुई। अमीरोने उसके पुत्र जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबरको फरगानाके तख्तपर बैठाया। अन्दिजानपर कही मुगल हाथ न फेर द, इसलिये अहमद मिर्जा अपनी सेनाके साथ आया, लेकिन मर्गिलानमे पहुचकर बीमार हो जानेसे उसे पीछे लौटना पडा, और उमरशेखकी मृत्युके चालीस दिन बाद वह भी चल बसा। सुल्तान महमूद मिर्जाने अब हिसार (ताजिकिस्तान)मे आकर समरकन्दकी गद्दी सभाली। छ महीने बाद वह भी मर गया, फिर उसका पुत्र मिर्जा बैसुकर गद्दीपर बैठा। महमूद खानने इस स्थितिमे उत्साहित हो समरकन्दकी ओर हाथ बढाया, लेकिन हैदरके अनुसार तीन सुल्तान

*जन्म ८६८ हि० (१५ XI १४६३—५ VIII १४६४ ई०)

सेनापतियोंके कारण कामयाबीकी लड़ाईमें खानको हार खानी पड़ी। ताशकन्द लौटनेपर अमीरोंने उसे समरकन्द और बुखारा लेनेमें शाहीबेग खानकी सहायता करनेकी सलाह दी, जिसमें वह आरामसे ताशकन्दमें रहें। खानको उनकी राय पसंद आई। इतिहासकार हैदरके पिता मुहम्मद हुसेनने बहुत रोका, लेकिन शाहीबेगको सहायता दी जाती रही। शाहीबेगके पास पचास हजार सेना हो गई, जिससे उसने समरकन्द और बुखारापर पूरी तौरसे अधिकार कर लिया। उसकी सफलता और लूटके लोभसे चारों ओरसे उज्बेक उसके झंडेके नीचे आ गये थे।

पिताके ताशकन्दमें रहनेपर यूनसका दूसरा पुत्र सुल्तान अहमद [जन्म ८७० हि० (२८ VIII १४६५–१५ VII १४६६ ई०)] मुगोलिस्तानमें अपने मुगलों और पशुओंकी चरवाही करता था। पहले दस सालके संघर्षमें उसने इरलातके अमीरोंको दबाया। अहमद अपने भाई महमूदकी तरह ही मस्कृत नहीं था। बाबरके अनुसार वह सचमुच ही रेगिस्तानका पुत्र था—शरीरसे हट्टा-कट्टा और बड़ी हिम्मतवाला। वह मंगोलों जैसी वेष-भूषा रखता था। अहमदने दो लड़ाइयोंमें कलमक-थैची एसेनकी सेनाको हराया, जिससे कलमकोंपर इसका बहुत रोब था। वह इसे अलाची (बहादुर) कहते थे। अहमदने कजाकोंको भी तीन बार हराया। सिर्फ काशगर और यारकन्दमें वह अपने मनसूबेमें सफल नहीं रहा। मुहम्मद शैबानी (शाहीबेग) ने जब अपने पहिले संरक्षक महमूद खानपर हाथ साफ करना चाहा, तो खानने अपने भाई अहमदको बुला भेजा। भाईका कहना मानकर इसने अपने पुत्र मन्सूरको मुगोलिस्तानमें रक्खा, और दूसरे दो पुत्रोंसहित ताशकन्द आया। १५०३ ई० में मुहम्मद शैबानीने अकसीकी लड़ाईमें दोनों भाइयोंको हराया। अहमद अकेले मुगोलिस्तान भागा। शैबानीने महमूदसे ताशकन्द और सैराम छीन लिया। फिर दोनों भाइयोंने अक्सू (पूर्वी तुर्किस्तान) में इकट्ठा जाड़ा बिताया, जहां ही अहमद लकवाकी बीमारीसे मर गया। महमूदने अक्सू और पूर्वी मुगोलिस्तानको ले लिया। अक्सूमें अपने भाई खलील सुल्तानसे हारकर वह सप्तनदके किर्गिजोंके पास पहुंचा। शाहीबेगने महमूद खानपर विजय प्राप्त की, उसी समय अकसीमें दोनों खान-भाई बंदी बने, और मुक्त कर देनेपर अहमद खान ९०९ हि० (२६ VI १५०३–१६ V १५०४ ई०) लकवासे मर गया।

महमूद खानकी हालत अंतमें बहुत बुरी हो गई। वह शाहीबेगके दरबारमें दयाकी भिक्षा मांगनेके लिये मजबूर हुआ। शाहीबेग (शैबानी) ने जवाब दिया—"एक बार मैंने तुमपर दया दिखला दी, अब दूसरी बार दया दिखलानेपर मेरी हुकूमत खतरेमें पड़ जायेगी।" उसने जरा भी दया न कर महमूद खान तथा उसके छोटे-बड़े सभी बच्चोंको खोजन्द नदीके किनारे ९१४ हि० (२ V १५०८–२३ III १५०९ ई०) में मरवा डाला। अबतक अन्तर्वेद शैबानियोंका हो चुका था, यह हमें मालूम है।

१४ मन्सूर, महमूद-पुत्र (१५०८ ई०)

इसी समय किर्गिजोंका नाम पहलेपहल मुगोलिस्तानमें सुनाई पड़ता है। शायद किर्गिज १०वीं शताब्दीमें ही यहां पहुंच गये थे। हैदर किर्गिजोंको मंगोलोंसे विभिन्न नहीं समझता। मुगोलिस्तानी मंगोलों और किर्गिजोंके झगड़ेका कारण वह उनका मुसलमान और काफिर होना बतलाता है। खलीलसे जल्दी ही उसका भाई सईद (जन्म १४९० ई०) आ मिला, जो कि अबतक बापके साथ अन्तर्वेदमें उज्बेकोंका बंदी था। सईदकी उमर उस समय तेरह-चौदह सालकी थी। दोनों भाई चार सालतक एक साथ रहे। इसी बीचमें चचासे झगड़ा हो उठा, और मन्सूर उनसे लड़ने मुगोलिस्तान गया। यही समय था, जब कि १५०८ ई०में शैबानीके हुक्मसे महमूद खान और उसके बेटोंको खोजन्द नदी (सिर-दरिया) के तटपर कत्ल किया गया। इसके पश्चात् चारुनचलाक या चारिन (आधुनिक अलमाअताके पास) में मन्सूरने अपने भाइयोंको परास्त किया। खलील भागकर फरगाना चला गया, जहां उज्बेक शासक जानीबेगने उसे कत्ल करवा दिया। सईद कुछ महीनों नरिनके जंगलोंमें छिपा रहा, फिर उज्बेकोंके हाथमें पड़कर फरगानामें बंद रहा, जहांसे भागकर काबुलमें जा १५०८ ई०के अन्ततक बाबरका मेहमान रहा।

पिताके मरनेपर अक्सूके खान चचा महमूद खानके साथ मन्सूरका झगड़ा था। मन्सूरने काशगरसे मुगोलिस्तान लेनेके लिये महमूद खानके खिलाफ जाकर अक्सूमें डेरा डाला। वहां मीर जब्बारबर्दीसे मन्सूरका झगड़ा हो गया। जब्बारने काशगरके हाकिम अबूबकरको बुला भेजा। मन्सूरको अक्सू छोड़कर भागना पड़ा। उसकी स्थिति बहुत बुरी हो गई। इसपर उसने अपने मामा जब्बारबर्दीसे शपथ-

पूर्वक क्षमा मागी। अव्वारने मन्सूरके साथ वडी उदारता दिखलाई, जिससे उसकी स्थिति अपने बाप सुल्तान अहमद खानसे भी बेहतर हो गई। इसी समय उसे खबर मिली, कि मुगोलिस्तान (सप्तनद) में सुल्तान महमूद, सुल्तान सईद और सुल्तान खलीलमें झगडा हो गया है। मन्सूरने मुगोलिस्तान पहुँच अपने चचा महमूदसे भेंट की। वही उसकी अपने छोटे भाइयो—सईदखा और खलील सुल्तान—से भी मुलाकात हुई। उसके बाद ही महमूदखान अन्तर्वेदकी ओर लौटा, जहा मुहम्मद शैवानीसे हारकर उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। अब मन्सूरने अपने भाइयोपर आक्रमण किया, जो कि मुगोलिस्तानमें मुगलो और किर्गिजोके साथ रहते थे। चारु-चलाकमें लडाई हुई, जिसमे हारकर मन्सूरके दोनो भाई विलायत (अन्तर्वेद) भाग गये। वहाके वलीने सुल्तान खलीलको मरवा डाला, और सुल्तान सईद भागकर काबुलमे बावरके पास पहुचा। मन्सूर मुगोलिस्तानमे हाथमे लगे किर्गिजो और मुगलोको अपने साथ चालिश (कराशहर) और तुर्फान ले गया। पीछे उसने कल्मकोपर सफल आक्रमण किया।

इसी बीच काबुलसे लौटकर सुल्तान सईदने काशगरको जीत लिया। मन्सूरको भारी भय लगने लगा। लेकिन शायद सईदको अन्तर्वेदमे शैवानियोकी शक्तिको देखकर कुछ अकल आई। उसने समझौता करनेके लिये ९२२ हि० (५ II–२६ XII १५१६ ई०) मे अस्सू और कुसानके बीचमें मन्सूरसे भेंट की, और उसकी अधीनता घोषित करते हुये उसके नाममे खुतवा पढे जानेका हुक्म दिया। इसके बाद बीस सालतक देशमे शाति रही। चीनमें कामिल (हामी) से लेकर अन्दिजान तक बिना रोक टोक आदमी यात्रा कर सकते थे रास्तेमे कोई कर नही लिया जाता था। यात्री हरेक रातको किसी घरमे मेहमान रह सकता था। यह बतलाते हुये इतिहासकार हैदर लिखता है—"अल्लाह दोनो धर्मात्मा भाइयोको स्वर्गोद्यान प्रदान करे।" मन्सूरके हाथमें पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्वी भाग था, जिसकी सीमा चीनसे लगती थी। वह अपनेको इस्लामका गाजी साबित करना चाहता था। इसमें मुख्य कारण लूट-मारका प्रलोभन था, जिसके लिये मिङ सम्राट् शी-चुङ (१५२१-६६ ई०) की सेनाओसे बराबर उसका धर्मयुद्ध होता रहा। मन्सूरने अरिग (मुगोलिस्तान) मे उज्बेक-कजाकोके साथ जमकर लडाई की, जिसमे उसकी हार हुई।

काशगरी अबूबकरकी सेना अमीर वेलीकी अधीनतामे सप्तनद गई, जहा उसे कुछ सफलता हुई। आखिरमे मन्सूरने अपने बडे पुत्र शाह खानको खान बनाया और स्वय अल्लाकी भक्तिमे लग गया। हैदरके समय ९५१ हि० (१५४५ ई०) में शाहखान तुरफान और चालिशपर शासन कर रहा था। इसी समय बाबरका बेटा हुमायू हिन्दुस्तानसे भागकर मारा-मारा फिर रहा था। शाहखानका चाल चलन हैदरको पसद नही था। उसने लिखा है—"इतिहासकारका धर्म है, कि ठीक या बेठीक जो भी उसे मालूम हो, उसका उल्लेख करे।"

यद्यपि सईदने १५०८ ई० मे ही पूर्वी तुर्किस्तानके पश्चिमी हिस्सेका शासन सभाल लिया था, लेकिन उसने बहुत साला तक मन्सूरको अपना प्रभु माना था। इतिहासकार हैदर सईदका समकालीन था। उसने "तारीखे-रशीदी"मे इसके बारेमें बहुतसी बातें लिखी है। रशीद खान, जिसके नामसे हैदरने अपने इतिहासको लिखा है, सईद खानका ही पुत्र था। सईद अहमद खानके आठ पुत्रोमेसे एक था। अपने भाई महमूद खानकी सहायताके लिये जिस वक्त अहमद खान जा रहा था, उस वक्त चौदह सालका सईद भी अपने बापके साथ था। अकसीकी लडाईमे एक तीरके लगनेसे उसकी जाघकी हड्डी टूट गई, और वह घायल हो अकसीके वली शेख बायजीदके जेलमें बन्द रहा। दूसरे साल शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ने शेख बायजीद, सुल्तान अहमद तम्बालको उसके सारे भाइयोंके साथ मारकर फरगानाको ले लिया। शाहीबेग सईदको पुत्रवत मान अपने साथ समरकन्द ले गया। जिस वक्त शाहीबेग (मुहम्मद शैबानी) ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया था, उसी समय सईद निकल भागा और यलीकन्दमें अपने चचा महमूद खानके यहा आकर कुछ दिन रहा। फिर वहांसे अपने भाई खलील सुल्तानके पास गया, जो कि उस समय किर्गिजोके ऊपर राज्यपाल था। चार सालतक वह अपने भाईके साथ वहा रहा। जब महमूद खान विलायत (अन्तर्वेद) गया, तब भी दोनो भाई किर्गिजोमें ही रहे। मन्सूर तुर्फान और चालिशसे सेना लेकर किर्गिजोके ऊपर चढा, तो दोनो भाई अपने अनुयायियो (मुगलो-किर्गिजो)के साथ मिलकर उससे चारनचलाकमे लडे,

और हार खा भागकर अकसी गये, जहा शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी)के चचेरे भाई जानीवेगने सुल्तान खलीलको मरवा दिया। सुल्तान सईद कुछ समयतक अब लूट-मारका जीवन बिताता रहा, फिर मुगोलिस्तान छोडनेपर मजबूर हो अन्दिजान होते बाबर बादशाहके पास काबुल पहुंचा। बाबरने उसे बडे आदर और प्रेमसे रक्खा—छिङ्-गिस् खानकी औलाद और मुगोलिस्तानके खानका बेटा था, इसलिये मुगलोके नामपर बावला बाबर क्यो न उसका सत्कार करता? सईद काबुलमे तीन सालतक बाबरका मेहमान रहा। जब शाह इस्माईल (ईरान) ने मेवम शाहीवेग (मुहम्मद शैवानी) को मार डाला, तो बाबर काबुलसे कुदुज पहुंचा। सईद भी इस वक्त बाबरके साथ था। इसी समय इतिहासकार हैदरके पिता सैयद मुहम्मद मिर्जाने शैवानी जानीवेग सुल्तानको अन्दिजानसे भगाकर उसपर अधिकार कर लिया था। बाबर बादशाहको इसकी खबर लगी, तो उसने सईद और कुछ मुगल अमीरोको अन्दिजान भेजा। सैयद मुहम्मद मिर्जाने जीते देशको उनके हाथमे दे दिया। सईदने खान मुहम्मद मिर्जाको "उलुस-बेगी" (कबीलोका सरदार) की उपाधि प्रदान की। लेकिन काशगरी मिर्जा अबूबकर भी अन्दिजानपर आख गडाये था। दोनोमे लडाई हुई। हैदरके अनुसार सईदने अपनी पन्द्रह सौ सेनासे अबूबकरकी बीस हजार सेनाको हरा दिया।

इस समय सप्तनदके उत्तरी भागमे कजाकोके खान कासिम [मृत्यु ९२४ हि० (१३I-८XII १५१८ ई०)] का राज्य था, जो जाडोमे कराताल में रहता था। कासिमने १५१० ई० के करीब मुहम्मद शैबानीको हराया, और १५१२ ई०मे तलस और सैरामपर अधिकार कर ताशकन्दके किलेका नष्ट कर दिया। हैदरके अनुसार उसके कजाकोकी सख्या दस लाख थी, लेकिन बाबरके अनुसार तीन लाख। १५१३ ई० के वसन्तमें चू नदीके तटपर सईदने कासिम खानसे मुलाकात की। कासिमकी उमर उस समय तिरसठ सालकी थी। उसने सईदकी बडी खातिर की। सईद इस वक्त बाबरकी सेवामे था।

बाबरकी इन सफलताओको शैबानी उज्बेक देख नही सकते थे। उन्होने ताशकन्द और समरकन्दके सीमान्तपर भारी सेना जमा की। बाबरने इसी समय (जून या जुलाई १५११ ई०) उन्हे हराकर थोडे दिनोके लिये समरकन्दके सिंहासनपर बैठनेमे सफलता पाई थी, लेकिन उसी सालके वसन्तके आरम्भमे उबैदुल्ला खानने बाबरको हराकर उसे परिवारसहित हिसारकी ओर भगा दिया। अन्तर्वेद उज्बेकोका हो गया, तो भी अन्दिजानपर सईद खानका अधिकार बना रहा। शाह इस्माईलकी कुमकसे साठ हजार सेना लेकर जब बाबरने समरकन्दपर चढाई की, उस समय सईद खान भी अन्दिजानसे उसकी मददके लिये आया था। ताशकन्दके पास शैबानी सूयुनजी (ख्वाजा) खानने सईदको हराकर अन्दिजानसे भागनेके लिये मजबूर किया। इसी समय इतिहासकार हैदर बाबरसे छुट्टी ले सईद खानकी सेवामे चला गया, और वसन्तमे दश्तेकिपचक (किर्गिज-कजाक) के खान कासिमसे मिला, जिसके पास बाबरके अनुसार तीन लाख सेना थी।

९२० हि० (२६ II १५१४–१७ I १५१५ ई०) मे उज्बेकोकी भारी सेनाने अन्दिजानपर आक्रमण किया। खानने भागकर काशगरियापर चढाई की, मिर्जा अबूबकर काशगरमें किलेबन्द हो गया। यगी-हिसारपर तीन मास घेरा डाल सईदने उसपर अधिकार कर लिया। मिर्जा अबूबकर दक्षिणकी ओर भागा। उसका पीछा करते सईद खानकी सेना तिब्बत (लदाख) के पहाडोंके भीतरतक गई। इस प्रकार मई-जून १५१३ ई० (९२० हि०) मे सईद खान काशगर-प्रदेशका स्वामी था, और ९२२ हि० (१५१६ ई०) मे, जैसा कि पहिले कहा, उसने बडी दूरदर्शिता दिखलाते हुये मन्सूर खानको अपना प्रभु मान लिया।

शैबानियोसे अन्तर्वेद छीननेका मनसूबा सईदने बाबरसे उधार लिया था, इसीलिये उनसे उसने छेडखानी जारी रक्खी। सप्तनदसे तोर्गुत डाडेसे होकर काशगरियामें सैतालीस सौ सेनाके साथ घुसकर अबूबकरको भगानेमे उसने पूरी तौरसे सफलता प्राप्त की। काशगर और यारकन्द को लेकर वहा पूरी तौरसे शाति-स्थापन कर १५१६ ई० में उसने अक्सू और कुचेईके बीच अल्मात स्थानमे मन्सूरसे भेट की। जैसा कि पहिले कहा, दोनोमें पूर्ण मैत्री स्थापित हुई, सईद ने मन्सूरको अधिराज माना, लेकिन शासित प्रदेशोका बटवारा तो करना ही था। मन्सूरको तुर्फान, कराशर और पूर्वी तुर्किस्तानका सारा ऊपरी भाग मिला, दूसरे भाई एमिर खोजाको

तुर्फान और अक्सू सौतेले भाई खान सुल्तानका बाई और कूची मिले। काशगर और दक्षिणी सप्तनद सईदके हाथमें रहे। हामी (चीन)से अन्दिजान (फरगाना) तकका वणिक्पथ मुक्त हो गया। अबूबकरसे लड़ने वक्त किर्गिज मुहम्मदने सईदकी बड़ी सहायता की थी, इसलिये उसे किर्गिजोंका सरदार बना दिया गया। १५१६ ई० के वसन्तमें फरगानामें उज्बकों से लड़नेकी तयारी करनेके लिये सईद मुगोलिस्तान गया। उसने चारिन-कुलके तटपर अपने भाई खान अचासे भेंट की। अरपा-उपत्यकामें मन्सूरको छोड़कर सारे भाई मिले, उन्होंने साथ ही शिकार खेला और जाड़ा बिताया। इसमें सईद अभियानकी बात भूल गया। इसी समय उसके अमीर मुहम्मदकी अधीनतामें किर्गिजोंने जाकर तुर्किस्तान-शहर, ताशकन्द और सैराममें लूटमार की, और शैबानी खानके सौतेले भाई तुर्किस्तान-शासक अब्दुल्लाको बन्दी बनाया। लेकिन मुहम्मदने उसे बहुत-सी भेंट देकर छोड़ दिया, जिसके कारण उसका सईदसे मन मुटाव हो गया। १५१७ ई० के वसन्तमें सईद अपनी सेना ले काशगरसे चला। एमिल खोजा भी अक्सूसे सारिग-अत्-आखुरी डाँडेसे होते आगे बढ़ा। दोनों सेनायें काफिर-यारिगमें मिल गईं, जहाँसे सईद बेसकाउन-द्रोणी और एमिल खोजा चू-द्रोणीसे आगे बढ़ा। किर्गिज मुहम्मद बेसकाउनके मुहानेके पास डेरा डाले पड़ा था। दोनों भाइयोंके आनेकी खबर पाकर वह तुर्किस्तानकी ओर भागा, और उसके घोड़े, भेड़ तथा सारी चीजें सयुओंने ले लीं। सईदने किर्गिजों को बन्दी नहीं बनाया। वहाँसे वह हिसार लौट गया।

१५१७ ई०में मुहम्मद किर्गिजने तुर्किस्तान और फरगानापर आक्रमण करके मुसलमानोंको लूटा, जिसके लिये सईदने चढ़ाई करके मुहम्मद किर्गिजको पकड़कर जेलमें डाल दिया, जहाँ वह पन्द्रह सालतक पड़ा रहा। इसी साल सईद अपने पुत्र रशीदको लेकर मुगोलिस्तानमें गया। उसने किर्गिजोंका दबाकर सारे मुगोलिस्तानपर अधिकार कर लिया। पीछे मंगितोंकी शक्तिके कारण उज्बेक-कजाक दश्तेकिपचकमें रहनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे, इसलिये वह दो लाखकी संख्यामें मुगोलिस्तान में चले आये। उनके साथ लड़ना असंभव समझकर रशीद सुल्तान—जिसे बापने मुगोलिस्तानमें छोड़ रक्खा था—अपने आदमियोंको ले काशगर भाग गया। १५१९ ई० (९२५ हि०) और १५२९-३० ई० (९३६ हि०)में दो बार सईदने बदख्शांपर चढ़ाई कर उसका आधा हिस्सा ले लिया।

१५२२ ई० में मुसलमानोंपर आक्रमण करनेका कारण बतलाकर सईदने अपने बेटे रशीद के सेनापतित्वमें फिर किर्गिजोंपर आक्रमण करनेके लिये सेना भेजते समय जेलसे छोड़कर मुहम्मद किर्गिजको भी उसके साथ कर दिया था। रशीदने कोचकरकी उपत्यकामें डेरा डाला। अधिकांश किर्गिजोंने मुहम्मदकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन उनमेंसे कुछ भाग गये। उस जाड़ेमें रशीद खान कोचकरमें ही रहा। इसके बाद वह हर साल कुछ समय कोचकर-उपत्यकामें बिताता था। १५२४ ई०में जब खान कोचकरमें था, उसी समय उसके पास उत्तरी सप्तनदके कजाकोंके खान कासिम-पुत्र ताहिरका आदमी आया। वह मुगोलिस्तानियोंके साथ मिलकर उज्बेकों और नोगाइयों (मंगितों) से लड़ना चाहता था। उसने अपनी बहिन भी रशीद खानको प्रदान की। इसके बाद अधिकांश किर्गिज ताहिरके अधीन हो गये। १५२५ ई० में खान इस्सिक्कुलके तटपर था, जब कि मुगोलिस्तानके सीमान्तपर कल्मकोंके चढ़ आनेकी खबर मिली। इससे पहले १५२२-२४ ई० में रशीद कल्मकोंके ऊपर सफल अभियान कर चुका था, जिसमें उसे गाजीकी उपाधि मिली थी। अपने परिवारको इस्सिक्कुलके किसी द्वीपमें छोड़कर रशीद कल्मकोंके विरुद्ध चलकर दस दिनमें कबीकलर (कबिलकक्ला) पहुँचा। इसी समय ताशकन्दके शैबानी खान सू-युन-चुकके मरनेकी खबर मिली। उज्बेकोंके साथ लड़नेका यह अच्छा मौका था, इसलिये वह जल्दीसे लौटकर इस्सिक्कुल पहुँचा, और वहाँसे कोनुर-उलेनके रास्ते फरगाना गया, लेकिन उसे जल्दी ही असफल हो उतुलुक (मुगोलिस्तान) लौटना पड़ा, जहाँसे जल्दी ही काशगर गया।

अगले जाड़ोंमें ताहिरका डेरा कोचकरके पास था। आधे किर्गिज उसकी ओर थे। रशीद अतबाशमें पड़ा था। १५२६ ई० के आरम्भमें रशीदने किर्गिजोंके साथ मेल किया, इसपर कितने ही कजाक सारे काश और कुनगेजतक सप्तनदसे हट गये। किर्गिजोंके डेरे कोचकर और जुगमलेके पास

पड़े हुये थे। ताहिरसे बातचीत करनेके लिये उसकी सौतेली मा (यूनस की पुत्री) का भजा, जो कि काशगरमे सईदके पास रहती थी। सईद लौटकर अकसाई पहुचा था, जब कि कजाकों और किर्गिजो के बीच समझौतेकी बातका उसे पता लगा। दोनो घुमन्तू जातियोके मिल जानेका खतरा सइदका साफ मालूम होने लगा, इसलिये वह वहासे बाबाचककी कूचीसेनाको भी ले अककुयाश होते अरिश-लारके रास्ते चला। उसने सप्तनदसे किर्गिजोको भगाकर उनकी एक लाख भेडे पकड लीं, जिससे उस स्थानका नाम कोई-चरीकी (भेडोवाला) पडा।

१५२७ ई०के वसन्तके आरम्भमे ताहिर अतवासपर चढ आया, और वहासे उसने किर्गिजोके साथ मिलकर मुगलोको मार भगाया। मुगलोके हट जानेपर अब सप्तनद कजाको और किर्गिजोके हाथमें चला गया, लेकिन दोनो जातियोकी मित्रता अधिक दिनोतक नही निभी। १५२६ ई० म ताहिरने अपने भाई अब्दुल कासिमको मार डाला, जिसपर कजाकोने उसका साथ छोड दिया। १५२९ ई० म अभी ताहिरके पास बीस या तीस हजार कजाक थे। हैदरके अनुसार ताहिर अन्तम बडी बुरी अवस्थामें मरा। उसके बाद उसका उत्तराधिकारी उसका भाई बुईदश हुआ।

(**तिब्बतपर जहाद**)—हैदर कलमका ही नही तलवारका भी धनी था। 'गाजी' बननेकी उसकी बडी इच्छा थी, जिसके लिये उसने तिब्बतके भीतरतक आक्रमण किया। अपने इतिहासमे वह लिखता है ९३४ हि० (२७ IV १५२७–१७८ VIII १५२८ ई०)म सईद खानने मुझे अपने बेटे रशीद सुल्तानके साथ बालर (बदख्शा और कश्मीरके बीचम काफिरोके देश काफिरिस्तान) पर आक्रमण करनेके लिये भेजा। यहा हमने सफलतापूर्वक 'धर्मयुद्ध' किया, और विजयी हो बहुत भारी लूटके मालके साथ लौटे। ९३८ हि० (१५ VIII १५३१—५ VII १५३२ ई०) के अन्तमे खान सईदने तिब्बतके काफिरिस्तान (लदाख) के साथ 'धमयुद्ध' किया, और मुझे पहले ही सेना देकर भेजा। मैंने बहुतसे किलोको लेकर तिब्बत (लदाख) देशके अधिक भागको अपने अधिकारमे कर लिया था, जब कि खान हमारे पास पहुचा। दोनोकी सेनामें पाच हजार आदमी थे। यह सख्या इतनी अधिक थी, जिसे सारा तिब्बत मिलकर जाडोमे खिला-पिला नही सकता था। खानने चार हजार सेना और इस्कन्दर सुल्तानके साथ मुझे कश्मीर भेजा, और खुद बल्ती-बालूर और तिब्बत (लदाख)के बीचमे जाडा बिताया। (हैदरका यह बालूर गिलगितका इलाका है, और तिब्बतसे उसका मतलब लदाखसे है)। खान बल्तीमे 'धमयुद्ध' में लगा रहा, फिर वसन्तमे वह तिब्बत (लदाख) लौटा। हैदरने कश्मीरमे पहुचकर वहाकी सेनाको हराया। कश्मीरके राजा मुहम्मदशाहने अपनी लडकी इस्कन्दर सुल्तानको ब्याह दी, और सईद खानके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मजूर किया। कश्मीरसे लूटकी भारी सम्पत्ति ले हैदर वसन्तमें तिब्बत (लदाख) में खानके पास पहुचा।"

अबकी खानने हैदरको उर-साग (वू-चाङ) की ओर भेजा, अर्थात् हैदर अब मुख्य तिब्बतकी ओर चला। खान उसे इस तरफ रवाना करके काशगर लौट गया। हैदर तिब्बतकी ओर बढते हुए ऐसी जगहपर पहुचा, जहापर सास रुकनेका रोग होता है (अर्थात् अधिक ऊचाईके कारण हवाके क्षीण होनेसे सास अधिक फूलने लगती है)। शायद वह लदाखसे यारकन्दकी ओर जानेवाले बडे डाडोपर जा रहा था। इसी समय ९३९ हि० (३ VIII १५३२–२४ VI १५३३ ई०) में ८५ सालकी उमरमें सईद खान मर गया और हैदरके अनुसार इस इस्लामके 'गाजी'को अल्ला-मियाने स्वर्गमें पहुचाया। हैदरके अनुसार सईदने अपने अभियानोंमे राज्यकी सम्पत्ति बहुत बढाई। मुगल, उज्बेक और चगताई तीनो उलुसोमें उसके समान बाण चलानेवाला कोई नही था। वह एकके बाद एक सात-आठ तीर छोड सकता था और सभी लक्ष्यपर जाकर लगते थे। वह बडे ही सुन्दर नस्तालीक अक्षर लिखता था। उसकी तुर्की और फारसी लिखावटोमें कोई गलती निकाल नही सकता था। वह तुर्कीमें गद्य-पद्य दोनो लिखता था। हैदरने सिर्फ एक बार उसे फारसीमे कविता करते देखा था। वह मेहतारा और चारतारा अच्छी तरह बजा सकता था—चारतारापर उसका हाथ ज्यादा खुला हुआ था। वह बाण बनानेमे बडा चतुर था, और हड्डीकी दस्तकारीका भी अच्छा ज्ञान रखता था। वह बडा उदार था।

१६ रशीद, अब्दुर् रशीद, सईद पुत्र (१५३३–५६ ई०)

सईद जब अदिजानमें शैबानीखानके पास पड़ा था, उस समय रशीद माके गर्भमें सात मासका था। वह ९१५ हि० (२१ IV १५०९—१२ III १५१० ई०) में पैदा हुआ। बाबरके अनुसार उसका पूरा नाम अब्दुरशीद था। जिस समय खलील सुल्तानको उसकी रानी जानीबेगमने अकसीमें मरवाया, उस समय खलील-पुत्र बाबा सुल्तान दूधपीता बच्चा था। सईद बाबाको अपने पुत्रसे भी ज्यादा मानता था, और ख्वाजा अलीबहादुरको उसने उसका अतावेग (अध्यापक-संरक्षक) बना दिया था। ख्वाजाका मुगोलिस्तानमें बहुत प्रेम था। उसने सईद खानसे प्रार्थना की, कि मुगोलिस्तान और किर्गिज प्रदेशको बाबा सुल्तानको दे दो, मैं स्वयं बाबाको अपने साथ ले वहाँका सारा प्रबन्ध ठीक-ठाक करूँगा। खान राजी हो गया। बाबा सुल्तानके ससुरने मना किया—"अगर बाबा सुल्तानने एक बार उस देशपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया, तो यहाँसे सभी मुगल मुगोलिस्तान चले जायँगे, और खानको हानि पहुँचेगी, इसलिये यही अच्छा है, कि बाबाकी जगह रशीदको मुगोलिस्तान भेजा जाय।" इतिहासकार हैदरका चचा बाबाका ससुर था, लेकिन वह रशीदका ज्यादा पक्षपाती था। सईद खानने अपने अधिकृत इलाकेका एक तिहाई रशीद सुल्तानको देकर मुगोलिस्तान भेज दिया। ९४४ हि० (१० VI १५३७—१ V १५३८ ई०) में सुल्तानके मुगोलिस्तान पहुँचनेपर मुहम्मद किर्गिजने सभी किर्गिजोंके साथ आकर सारे मुगोलिस्तानकी अधीनता न स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उज्बेकोंने भी विरोध किया। उज्बकों और किर्गिजोंके विरोधके मारे रशीदको काशगर लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। अपने सम्मिलित शत्रुओंके साथ लड़नेमें हानि देखकर रशीदको पीछे उज्बकोंके साथ समझौता करना पड़ा।

बाप (सईद खान)के मरनेके बाद रशीद मुगोलिस्तानका खान बना। सबसे पहले जो काम उसने किया, वह था अपने पिताके खैरखाहोंका वध। ९ अगस्त १५३३ (१० मुहर्रम ९४० हि०) को रशीद सुल्तानके आनेपर हैदरका चचा पिताकी मृत्युपर अफसोस प्रकट करने गया। आते ही रशीदने उसे तथा उसके मित्र अली सैयद दोनोंको मरवा दिया, और हैदरके चचाकी जगहपर मिर्जा अली तगाईको नियुक्त कर यह हुक्म दे काशगर भेज दिया, कि हैदरके चचाके बच्चों और सबंधियोंको बिना कोई दया-माया दिखलाये बड़ी क्रूरतासे मारनेमें कोई कसर उठा न रखना। यह खबर सुनकर पूबसे मन्सूर खान भी रशीदके ऊपर चढ़ दौड़ा, लेकिन उसे खाली हाथ लौटना पड़ा। मन्सूरने रशीदको दबानेके लिये और भी प्रयत्न किये, पर उसे सफलता नहीं मिली। रशीदके अत्याचारोंसे भयभीत हो उसके अमीरोंने विद्रोह किया, किन्तु रशीदने उनका दमन कर दिया। उसने अपनी सौतेली माताओं, बुवाओं और बहिनोंको भी निर्वासित कर दिया, जिनमें उसके बापकी चहेती बीबी जैनब सुल्तान खानम् भी थी। इधर जब उसने अपनोंसे इतना झगड़ा कर रखा था, उसी समय उत्तरमें उज्बेक-कजाक भी उसके दुश्मन थे, फिर अन्तर्वेदके उज्बेक-शबानियासे मेल करनेके सिवा रशीदके लिये और कोई चारा नहीं था।

८७७ हि० (८ VI १४७२–२९ IV १४७३ ई०) में यूनस खानने करातुकाईमें उज्बेक कजाकोंको हराया था। लेकिन उसके बाद मुगल उनसे बराबर हार रहे थे, केवल रशीद खानने एक बार उनको हाराया। इस समय अन्तर्वेदके मंगोलवंशियोंको चगताई कहा जाता था, और मुगोलिस्तानके चंगेजवंशियोंको मोगल, लेकिन चगताई मोगलोंके प्रति घृणा प्रदर्शित करते हुए उन्हें जाता (सीमाती) कहते थे, और मोगल चगताइयोंको करावाना। १६वीं सदीके मध्यमें लिखते हुए हैदरने कहा है—"वर्तमान कालमें बादशाहोंको छोड़कर कोई चगताई नहीं रह गया है। और ये बादशाह हैं बाबर बादशाहके पुत्र। चगताइयोंका स्थान (अब) कुछ दूसरे सभ्य लोगोंने लिया है।" लेकिन रशीदका यह कहना गलत है। तेमूर-वंशज बाबर माकी तरफसे अध मंगोलोंसे संबंध रखते भी बापकी ओरसे तुर्क था, मंगोल या मोगल हरगिज नहीं। लेकिन भारतमें सुव्यवस्थापित बाबरका वंश अपनेको मंगोल (मुगल) कहनेके लिये तुला हुआ था, जिसका दुहराना

वावर और हुमायू का कृपापात्र हैदर अपना फर्ज समझता था। हैदरके लिखनसे मालूम होता है, तुर्फान और काशगरके आसपासमें अब भी तीस हजार मुगल (मगोल) रहते थे, लेकिन मुगोलिस्तानको उज्बेको (कजाको) तथा किर्गिजोने ले लिया था। मगोल (मुगल) शब्दका कितना अनिश्चित प्रयोग उस समय हो रहा था, यह इसीसे मालूम होगा, कि हैदर किर्गिजोको भी मुगल-कवीलेमेंसे वतलाता है, जो कि "खाकानके साथ वरावर विद्रोह करते रहनेके कारण मुगलोसे अलग हो गये।" हैदरके समय सभी मुगल मुसलमान हो चुके थे, लेकिन किर्गिज अव भी काफिर (वौद्ध) थे। "इसीलिये उनका मुगलोंसे झगडा रहता है।" साथ-साथ इस्लामके गाजीका यह भी कहना है—"जो मुगल मुसलमान नही हैं, उनका हमने अधिक नामोल्लेख नही किया है, क्योकि काफिर चाहे जमशेद और जोहावके प्रतापको भी पा जाये, तो भी उसका जीवन याद रखने लायक नही होता।"*

९४४ हि० (१० VI १५३७–१ V १५३८ ई०)में रशीदने उज्बेक-कजाकोको करारी हार दी थी, जिसमें उनके खान ताहिरका भाई तुगुम और सैंतीस सुल्तान मारे गये। कजाकोका उसने सप्तनदमें उच्छेद-सा कर दिया। अपने वापका अनुकरण करते हुये रशीदने भी अपने वेटे अब्दुल्लनीफ को सप्तनदमें वैठाया, और शैवानी-उज्वेकोंसे मित्रता जारी रक्खी। ९५१ हि० (१५४४-१५४५ ई०) मे इस्सिक्कुलके तटपर ताशकन्दके खान नौरोज अहमद (वराक)से मुलाकात की। इसके कुछ समय ही वाद उज्बेक-कजाकोने फिर सप्तनदपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह याद रखना चाहिये, कि अभीतक उज्वेक शब्द कजाक और शैवानी दोनोंके लिए प्रयुक्त होता था, जो कि पीछे स्वय केवल अन्तर्वेदके शैवानी-अस्त्राखानी-मगीती खानोकी तुर्क प्रजाके लिये रूढ हो गया, और कजाक आधुनिक कजाकिस्तानमें रहनेवाले तुर्कोंको कहा जाने लगा। किर्गिज भी उस समयतक किर्गिज-कजाक कहे जाते थे, जो अन्तमें किर्गिजके नामसे मशहूर हुये।

रशीदका ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल्लतीफ वापके जीवन हीमें कासिम खानके पुत्र अकनजरके साथ लडाई करते मारा गया। अकनजर किर्गिजो और कजाकोका खान था। अग्रेज यात्री जेन्किन्सनके अनुसार १५५८ ई०के आसपास कजाको और किर्गिजोने ताशकन्द और काशगरमें वडी लूट-मार की, और चीनसे पश्चिमी-एसियाकी ओर जानेवाले वणिक्पथको काट दिया।

रशीद मुगोलिस्तानी खानोमें अन्तिम शक्तिशाली खान था।

१७ अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र (–१५९३ ई०)

यह अकवरका समकालीन था और १५९३ ई०में काशगरपर शासन करता था। अब्दुर्रशीदका तीसरा पुत्र अब्दुरहीम पिताकी आज्ञाके बिना ही तिब्वतमें जहाद करने गया, जहा वह मारा गया। कश्मीरपर कितने ही समयतक मुगोलिस्तानके खानोका अधिकार रहा, फिर १५८७ ई० के आसपास अकवरने कश्मीरको ले लिया।

१८ मुहम्मद खान (१६०३ ई०)

ईसाई साधु गोयेज आगरासे लाहौर, कावुल, वदख्शा होते १७०३ ई०में यारकन्द पहुचा। उस वक्त मुहम्मद खान वहाका राजा था। गोयेज सालभर यारकन्दमें रहा। उस समय काशगर राज्यकी राजधानी यारकन्द थी। गोयेज सूचाव (चीन)में अप्रैल १६०७ ई०में मर गया।

१९ इस्माईल खान

यारकन्दकी गद्दीपर पीछे इस्माईल वैठा।

वावर और हैदरकी पलटनमें मुगल नामसे प्रसिद्ध तुर्क भी काफी सख्यामें आये थे। दिल्लीके पास-पडोस और रावलपिंडीके इलाकेमें इन मुगलोकी सख्या काफी थी। पश्चिमोत्तर प्रदेशके रास्तेपर भी वह जहा-तहा वस गये थे, इनमें चगताई (वावरके अपने भाई-वधो)की सख्या २३५९३ थी, और वरलसोकी १२१७३।

---

*इसी जगह हैदरने अपने ग्रथके वारेमें लिखा है—"यह तारीखे-रशीदी ९५३ हि० के जुल्हेजा महीनेके अन्त (फरवरी १५४७ ई०) में कश्मीरके नगरमें लिखी गई, जव कि मुझ मुहम्मद गुरगान-पुत्र हैदर मिर्जाको कश्मीरके सिंहासनपर वैठे पाच वर्ष हो गये थे।"

३ (४ मुगोलिस्तानी खान-वृक्ष)
(१३२१–१५६५ ई०)

चगताई (१२२७-४२)
- मोतुगान
- यमेनदावा
  - बोरक (१२६६-७१)
    - दुवा (१२८२-१३०७)
      - कोनचोग् (१३०७-८)
      - येसेनबुगा (१३०९-१८)
        - १ तुगलक तेमूर (–१३६२)
          - २ इलियास (१३६२-८९)
          - ३ खिजिर (१३८९-९९)
            - ४ शमाजहान (१३९९-१४०८)
              - ६ नकशेजहान (१४१६-१८)
            - ५ मुहम्मद (१४०८-१६)
              - शेरअली
                - ८ वेइस (१४१८-२८)
                  - १० युसनबुगा (१४३८-६२)
                    - ११ दोस्तमुहम्मद (१४६२-६८)
                  - १२ यूनस (१४६८-८७)
                    - उमरशेख=कुतुलुग निगार
                      - बाबर
                        - हुमायूं
                          - अकबर
                    - १३ महमूद (१४८७-१५०८)
                      - १४ मन्सूर (१६०८)
                    - अहमद
                      - १५ सईद (१५०८-३३)
                        - १६ रशीद (१५३३-५६)
                          - अब्दुल्लतीफ
                          - १७ अब्दुलकरीम (–१५९३–)
                - ९ शातुक (१४२८-३४)
              - ७ शेर मुहम्मद (१४१८)
      - तरमाशरिन (१३२६-३८)
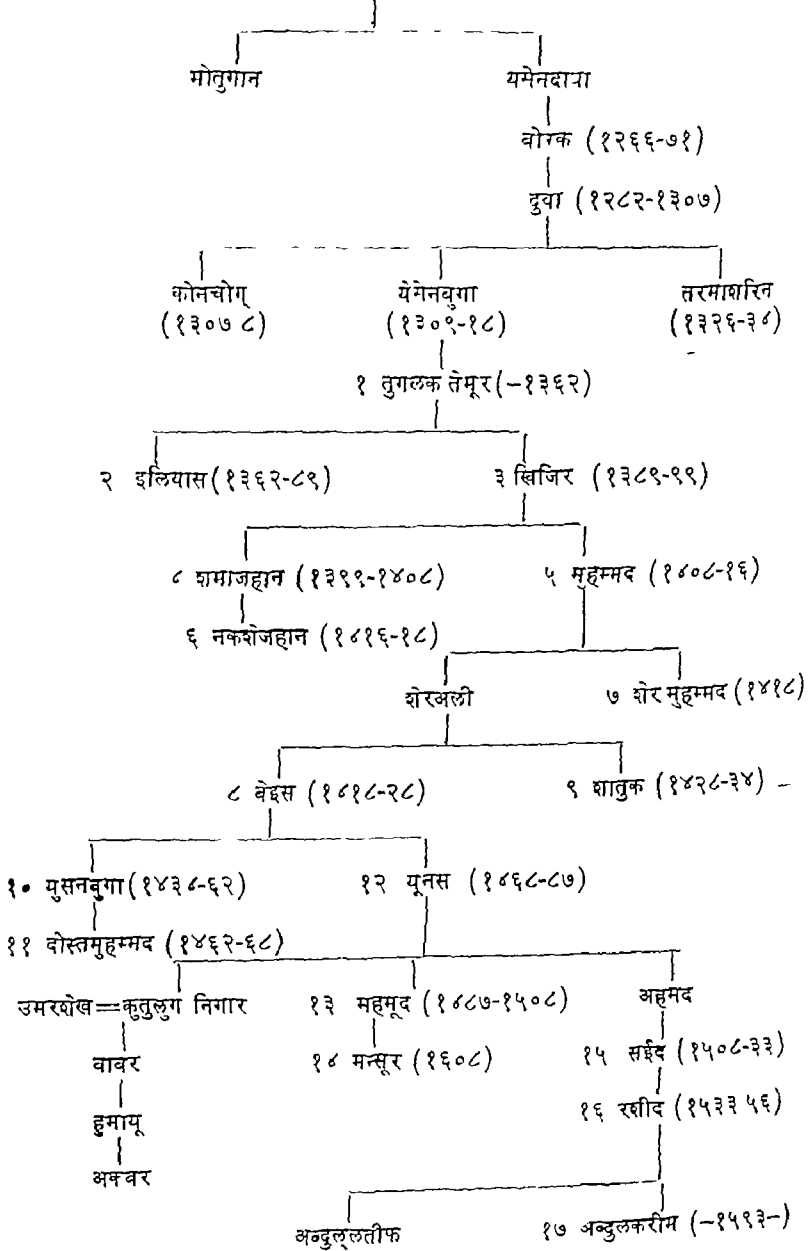
स्रोत-ग्रन्थ

१ तारीख रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत्, लन्दन १८८८)
२ " (Tr E D Ross, London 1895)
३ ओचर्क इस्तोरिइ सेमिरेचूया (व व बर्तोल्द)

अध्याय ५

सिबिरखान

(१५००–१६५९ ई०)

यरमकके सिबिर नगरके ध्वस और पश्चिमी साइबेरियापर रूसके शासनके स्थापित होनेकी बात कहते हुये हमने सिबिरके खान कूचुमका जिक्र किया था। १७ वी सदीमें साइबेरियामें बसनेवाली जातियोंके बारेमें भी हम बतला चुके है।

सिबिरके खान भी अपना सबध छिङ्-गिस्-पुत्र जू-छिके पुत्र शैबान खानसे जोडते है, जो कि बा-तू खानका भाई था। शैबानके बाद उसके पुत्र बा-तू खान, तत्पुत्र जूजीबुका, तत्पुत्र बादाकुल, तत्पुत्र मगू तेमूर, तत्पुत्र तुकाबेक, तत्पुत्र अलीओगलान, तत्पुत्र हाजी मुहम्मद खान, तत्पुत्र इलबक (या ईबक), तत्पुत्र मुर्तजा, तत्पुत्र कूचुमखानके पास पहुचकर हम येरमकके समकालमें आ जाते है। ७ नवम्बर १५८१ ई० में कूचुमको ही हराकर येरमकने उसकी राजधानी सिबिरको दखल किया था। कूचुमके बाद उसके पुत्रो अली और इशिमने कुछ समय तक शासन किया। इशिमका पुत्र अबले गिराई और उसके बाद इशिमके भाई चुवाकके पुत्र दौलात गिराईने शासन किया। साइबेरिया जैसे सभ्यताके छोरपर बसे देशके बाकायदा इतिहास लिखनेकी सम्भावना नही हो सकती थी, इसलिये इन खानोके बारेमे बहुत बातें हमें मालूम नही है। वस्तुत कबीलेशाही-धर्ममे इतिहास द्वारा अमर होनेकी सभावना न देख शासकोका सामन्तशाही-धर्मकी तरफ झुकनेका एक कारण यह भी है, कि सामन्तशाही पुरोहित अपने इतिहास-ग्रथो या पुराणो द्वारा अपने यजमानोको अमर कर देनेकी क्षमता रखते थे। सिबिरतक इस्लाम पहुचा तो था, लेकिन अभी वहाके लोगोंपर उसका गहरा प्रभाव नही पडा था। बा-तूके वशके खतम होनेपर सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनपर शैबानी-वशज खिजिरखा बैठा, जो कि मङ्-गू तेमूरका सबधी था। खिजिरखाका सिक्का ख्वारेज्ममें भी मिला है, जिससे जान पडता है, शायद ख्वारेज्मपर भी उसका अधिकार था। मङ्-गू तेमूरके छ पुत्रोमें किपचकका खान पुलाद या पोलाद-तेमूर है। इसने किपचक खान अजीजको १३६७ ई० के आसपास मार डाला। पोलादके दो पुत्रोमे अरबशाहके वशजोने ख्वारेज्मपर शासन किया, और इब्राहिमके वशजोने बुखारापर, यह हम बतला आये है। मङ्-गू तेमूरके पौत्र हाजी मुहम्मद खानके पुत्र ईबकसे हम सिबिरके खानोपर पहुचते है।

१ इबक, हाजी मुहम्मद-पुत्र (१४९३ ई०)

ईबक या इलबक उस समय हुआ, जब कि जू-छि-उलुस विशृखलित-सा हो चुका था। साइबेरिया और बश्किरोंके छोटे-छोटे राजा इसे अपना अधिराज मानते थे। पुराने पवाडोमें इसे कजानका जार उपक कहा गया है। इसने अपनी बहिनका व्याह साइबेरियाके शासक मारसे किया था, जिसे झगडा हो जानेके कारण पीछे इसने मार डाला। उसके बाद वह त्यूमेन (प० साइबेरिया) प्रदेशका राजा हुआ। ईबक १४९३ ई० के बाद किसी समय मरा।

२ मुर्त्तुजा, ईबक-पुत्र

इसके शासनकालमे उज्बेक-उलुसका अधिकाश भाग मुहम्मद शैबानी और इल्बर्सके नेतृत्वमे अन्तर्वेद और ख्वारेज्ममें चला गया। जिसका कारण था पूरबमे मगोल राजा अलतन खानके

नेतृत्वमे मगोलो द्वारा कलमकोपर भारी प्रहार पडनेसे उनका पश्चिमकी ओर भागते हुए उज्बेकोके ऊपर पडना। उन्हे कलमकोकी बाढने डुबाना चाहा, और उधर तेमूरी साम्राज्यके नष्ट-भ्रष्ट होनेके कारण दक्षिणसे न्योता आया। उज्बेक-उलुसमेसे जो यहा रह गये, वह मुर्त्तुजाको अपना खान मानते रहे। मुर्त्तुजाने नोगाइयोपर बडा अत्याचार किया, जिसका बदला पीछे उन्होने उसके पुत्र कूचुमको मारकर लिया।

३ कूचुम, मुर्त्तुजा-पुत्र (१५५५–९५ ई०)

१५५६ ई० मे सिबरके खान यादगारने रूसी जारके पास कर न भेजनेका यह कारण बतलाया था, कि शबानी राजकुमार हमारे देशमे लूट-मार कर रहा है। यह शैबानी राजकुमार कूचुम खान था, जो उस समय सिबिरसे पश्चिमके त्यूमन प्रदेशका शासक था। १५६३ ई० के आसपास कूचुमने यादगारको हटाकर सिबिर राजधानी दखल कर ली। १५६९ ई० में रूसी उसे सिबिरका जार (राजा) कहते थे, जिसे रूसी जारने एक सधि द्वारा अपने सरक्षणमें ले लिया था। सरक्षणकी एक शर्त यह थी, कि सिबिर खान हर साल सेबलकी हजार छाले और स्क्वाइरलो (गिलहरी) की हजार छालें प्रतिवर्ष भेजा करेगा। इस सोनेके मुहर लगे सधि-पत्रको चाबुकोफ साइबेरिया ले गया। कूचुमकी एक बीबी कजानके किसी छोटे खानकी लडकी थी, जिसके साथ कितने ही रूसी और चुवाश गुलाम भी सिबिर गये थे। उसकी दूसरी दो बीबिया मिर्जा दौलतबेगकी लडकिया थी। इस प्रकार सभ्यताके सीमान्तपर बसे होनेपर भी सिबिर नगरीमे सभ्यताके सदेशवाहक स्त्री-पुरुष पहुच चुके थे। लेकिन कूचुमकी प्रजामे अभी बर्बर अवस्थामें रहनेवाली कितनी ही जातिया थी। इर्तिश और तोबोलके कितने ही तारतार ओर्दू तथा बाराबिनके तारतार भी इसे अपना खान मानते थे। इसीके समय त्यूमनमें रूसियोंके साथ मिला हुआ एक अर्ध-स्वतत्र राजा रहता था। इस तरह कूचुमका राज्य तूराके मुहानेसे अधिक पश्चिम नही था। तरखनके तारतार इसकी अन्तिम प्रजा थे। तोबोलके सबसे नजदीकवाले बश्किर और ओस्तियाक कबीले भी कूचुमके अधीन थे। कहते है, कूचुम पहला खान था, जिसने साइबेरियामें इस्लामका प्रवेश कराया, लेकिन अभी वह बहुत फैला नही था। उसने अपने पिता मुर्त्तुजाको लिखा, जिसपर उसने एक आखुन (बडे मुल्ला) और कई मुल्लाओके साथ अपने पुत्र अहमद गिराईको कजानसे इस्लामके प्रचारके लिये कूचुमके पास भेजा। कूचुमने प्रजाको जबदस्ती मुसलमान बनानेकी कोशिश की, तो भी वह अभी तारतारोको पूरी तौरसे मुसलमान बनानेमें सफल नही हुआ था। इर्तिश-उपत्यकाके तारतार अब भी मूर्तिपूजक थे। रूसी यात्री मुलरसे यालीनिश तारतारोंके एक सरदार (बी) ने कहा था अपनी जवानीसे ही हम अपने मा-बाप, अपनी प्रजा तथा पडोसियोंके साथ सदा मूर्तिपूजक रहे। तोबोलस्क और देमियान्स्कोयके बीचके निवासी लेबाउज्की ओर्दूके तारतार तथा तूरिन्स्कके पडोसवाले तारतार भी तबतक मूर्तिपूजक रहे, जबतक ओस्तियाकोके साथमें उन्हें ईसाई नही बना लिया गया। बारबिन्स्की कबीलेके बहुतसे लोग १८वी सदीतक मूर्तिपूजक रहे, यद्यपि उनके इलाकेमें बहुत पहले कूचुमके समयमें ही मुसलमान पहुच चुके थे। एक दूसरे रूसी लेखक फिशरके अनुसार निजार-उपत्यकाके तूरिन्स्क तारतारोके कितने ही परिवार १६३९ ई० तक मूर्तिपूजक रहे।

७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमकने किस तरह कूचुमकी राजधानी सिबिरपर अधिकार किया, यह हम बतला चुके हे। १७ या १८ अगस्त १५८४ ई० को येरमक लडाईमें हारकर अपने कवचके भारी बोझके कारण नदीमें डूबकर मर गया, लेकिन उससे रूसी अधिकारको साइबेरियामें क्षति नही पहुची। येरमक और उसके साथियोका स्थान दूसरे रूसी बराबर लेते रहे। येरमककी मृत्युके दो साल बाद १५९६ ई० के वसन्तमें वोयवोद वासिली बोरिस-पुत्र सूकिन और इवान म्यास्नोईके साथ तीन सौ रूसी सैनिक आये—उन्होने युगुरके पहाडो और ओब नदीके रास्ते चढाई की। १० जुलाई १५८६ ई० को सूकिन तारतारोंके एक पुराने किले चिंगीपर पहुचा, जो कि तुरा नदीके तटपर था। वहा उसने

त्यूमनके नामसे एक नगर बसाया, जो आजकल पश्चिमी साइबेरियाका एक जिला है । त्यूमन तुरा नदीके दक्षिण तटपर बसा उरालसे पूव रूसियोकी प्रथम स्थायी बस्ती थी । रूसियाने बहुत आसानीसे तुरा, पिशिमा, इसेत, तोदा और तबोलकी उपत्यकाओके तारतारोको अपना करद बना लिया और कुछ ही समय बाद सैदिक खानको भी अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। सैदिक कूचुमसे पहलेके सिबिर-खानोका वंशज था ।

कूचुम अब भी हाथमे नही आया था। वह भागकर नोगाइयोके भीतर बराबिनके मैदानोमे चला गया, जहासे १५९० ई०मे उसने तोबोल्स्कके पासवाले इलाकेपर आक्रमण किया, और रूसी प्रजा बननेके कारण कौरदक और सालिन्स्कके तारतारोको लूटा । इसपर तोबोल्स्कके नये वोयवोद राजुल (क्न्याज) कोल्जोफ-मोसाल्स्कीने कुछ रूसी और तारतार सैनिकोके साथ अगले साल जुलाई १५९१ ई०में कूचुमके विरुद्ध अभियान किया, और वह चिलिक झीलके पास इशिमके तटपर कूचुमको हराकर उसकी दो बेगमो, एक पुत्र (अबूल्खैर) और बहुतसी लूटी हुई सम्पत्तिको लेकर वह लौटा। १५९४ ई० में रूसियोने तारानगरका निर्माण किया, जिसके लिये जारने राजुल अन्द्रेइ वासिली-पुत्र लेल्कोइको वोयवोद नियुक्त किया । वह मास्कोसे एक सौ पैंतालीस स्त्रेलत्सी, सौ कजान-तारतार, तीन सौ बाश्किर, पचास पोल और पचास पोऊकसाक भरोको साथ लेकर आया था । त्यूमनसे भी उसके साथ कितने ही लोग आये थे, जिनमे लियुवानी, चेरकासी, निर्वासित-कसाक, तथा कुछ साइबेरियाके तारतार थे। इस सेनामें अधिकाश सवार थे। उनके पास तोपखाना और काफी गोला-बारूद था। पहले नगरको तारा नदीके तटपर बसानेका ख्याल था, किन्तु पीछे विचार बदलकर उसे इर्तिशकी शाखा अगरकापर बसाया गया, पर नाम तारा ही रहा। रूसी अब कूचुमको दबानेके लिये उतारू थे। कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये कहा गया, और यह भी वचन दिया गया, कि छोटे पुत्रोमेंसे एक तथा दो-तीन प्रमुख तारतारोको जामिनके तौरपर मास्को भेज देनेपर बडे लडके अबुल्खैर तथा दूसरे सभ्रान्त बदियोको लौटा दिया जायगा। अबुल्खैरने भी जार फ्योदोरकी उदारताकी प्रशसा करते हुये बापको चिट्ठी लिखी । कूचुमने जवाब दिया—"मैने येरमकको सिबिर नही दिया, यद्यपि उसने उसे जीत लिया। मैं शातिसे रहना चाहता हू, यदि इर्तिशके किनारेको सीमान्त मान लिया जाय ।"

१५९५ ई० में फ्योदोर येलिक्की नया वोयवोद होकर आया। उसने तुरन्त कूचुम और उसके मित्र नोगाई खान अलीके ऊपर चढाई करनी चाही। तोबोल्स्क और त्यूमनसे भी मदद आई, जिसमें पाच तोपें भी थी। पहले जाडो में ९० कसाक-सैनिक भेजे गये, जो अयालिन्स्कके अटठाईस तारतारोंके साथ लौटे । कूचुम इन कसाकोको अपने रहनेकी जगह ऊपरी इर्तिशमें ले जाना चाहता था । इस समय वह ओबके जलप्रपातसे दो दिन आगे गाढिया-नगरमें डेरा डाले पडा था। फिर वोयवोदने नया अभियान भेजा, जो कूचुमके रहनेकी जगहको नष्ट करके तारा लौट गया । लेकिन कूचुम अभी दबा नही था। १५९६ ई० के बसन्तमे दोमोशेरोफके अधीन तैंतालीस सैनिकोका अभियान भेजा गया वह २९ मार्चको बरफानी जूतोपर रवाना हुये। मामूली सघर्षके बाद रास्तेके चमगुल, लुगुई, लुबा, केलेमा, तुराश, बरमा (उलुकबरमा), किरकिपी दि गावोने अधीनता स्वीकार की। इसी समय नोगाई मिर्जा चिन, और कितनोने भी अधीनता ीकार की, लेकिन कूचुम अब भी प्रतिरोधके लिये तैयार था। अगस्त १५९८ ई० में ३९७ रूसी सैनिकोंके साथ अन्द्रेइ वोयेकोफ कूचुमके विरुद्ध ओब नदीकी ओर चला। चारो ओर फसलें खडे खेतोके बीचमें कूचुम अपने परिवार तथा पाचसौ अनुयायियोके साथ छिपा हुआ था। २ सितम्बर को सूर्यास्तसे पहले रूसियोंने आक्रमण कर दिया। सारे दिन लडाई होती रही, जिसमें कूचुमका एक भाई, एक पुत्र, राजकुमार इलितन और पाच-छ अमीर, दस मिर्जा और एक सौ पचास सैनिक मारे गये। शामके वक्त नदीकी ओर शत्रु भगे। उनमें एक सौसे ज्यादा नदीमें डूब गये, पचास बन्दी बने, और कुछ लोग नावो द्वारा भागनेमें सफल हुये। वोयकोफको बहुतसे लूटके माल के अतिरिक्त आठ बेगमे, पाच कुमारिया और पाच राजकुमार हाथ लगे। वोयकोफने तारा

तेमूरलंग मंगोलों द्वारा [illegible] भारी प्रहार पड़नेसे उनको पश्चिमकी ओर भागते हुए उनके ऊपर पड़ा। उनके [illegible] जाता, और उधर तैमूरी साम्राज्यके नष्ट भ्रष्ट होनेके कारण दक्षिणसे खींचा आया। उज्बेक-उजुगगो जो यहां रह गये, वह मुर्तुजाको अपना खान मानते रहे। मुर्तुजाने नागाइयोंपर [illegible] अत्याचार किया, जिसका बदला पीछे उन्होंने उसके पुत्र कूचुमसे [illegible] किया।

३ कूचुम, मुर्त्तुजा-पुत्र (१५५५–९५ ई०)

१५५६ ई० में सिबिरके खान यादगारने रूसी जारको पास कर न भेजनेका यह कारण बतलाया था, कि शैबानी राजकुमार हमारे देशमें लूट-मार कर रहा है। यह शैबानी राजकुमार कूचुम खान था, जो उस समय सिबिरसे पश्चिमके त्यूमन प्रदेशका शासक था। १५६३ ई० के आसपास कूचुमने यादगारको हटाकर सिबिर राजधानी दखल कर ली। १५६९ ई० में रूसी उसे सिबिरका जार (राजा) कहते थे, जिसे रूसी जारने एक सधि द्वारा अपने सरक्षणमें ले लिया था। सरक्षणकी एक शर्त यह थी, कि सिबिर खान हर साल सेबलकी हजार छाल और स्क्वाइरलो (गिलहरी) की हजार छालें प्रतिवर्ष भेजा करेगा। इस सोनेके मुहर लगे सधि-पत्रको चाबुकोफ साइबेरिया ले गया। कूचुमकी एक बीवी कजानके किसी छोटे खानकी लडकी थी, जिसके साथ कितने ही रूसी और बलाख गुलाम भी सिबिर गये थे। उसकी दूसरी दो बीवियां मिर्जा दौलतबेगकी लडकियां थी। इस प्रकार सभ्यताके सीमान्तपर बसे होनेपर भी सिबिर नगरीमें सभ्यताके सदेशवाहक स्त्री-पुरुष पहुंच चुके थे। लेकिन कूचुमकी प्रजामें अभी बर्बर अवस्थामें रहनेवाली कितनी ही जातियां थीं। इर्तिश और तोबोलके कितने ही तारतार आदि तथा बाराबिनके तारतार भी इसे अपना खान मानते थे। इसीके समय त्यूमनमें रूसियोंके साथ मिला हुआ एक अर्ध-स्वतंत्र राजा रहता था। इस तरह कूचुमका राज्य तूराके मुहानेसे अधिक पश्चिम नहीं था। तरखनके तारतार इसकी अन्तिम प्रजा थे। तोबोलके सबसे नजदीकवाले बश्किर और ओस्तियाक कबीले भी कूचुमके अधीन थे। कहते हैं, कूचुम पहला खान था, जिसने साइबेरियामें इस्लामका प्रवेश कराया, लेकिन अभी वह बहुत फैला नहीं था। उसने अपने पिता मुर्तुजाको लिखा, जिसपर उसने एक आखुन (बड़े मुल्ला) और कई मुल्लाओंके साथ अपने पुत्र अहमद गिराईको कजानसे इस्लामके प्रचारके लिये कूचुमके पास भेजा। कूचुमने प्रजाको जबर्दस्ती मुसलमान बनानेकी कोशिश की, तो भी वह अभी तारतारोंको पूरी तौरसे मुसलमान बनानेमें सफल नहीं हुआ था। इर्तिश-उपत्यकाके तारतार अब भी मूर्तिपूजक थे। रूसी यात्री मुलरसे मालीनिश तारतारोंके एक सरदार (बी) ने कहा था अपनी जवानीसे ही हम अपने मां-बाप, अपनी प्रजा तथा पड़ोसियोंके साथ सदा मूर्तिपूजक रहे। तोबोल्स्क और देमियान्स्कोयके बीचके निवासी लेबाउज्की ओर्दूके तारतार तथा तुरिन्स्कके पड़ोसवाले तारतार भी तबतक मूर्तिपूजक रहे, जबतक ओस्तियाकोंके साथमें उन्हें ईसाई नहीं बना लिया गया। बारबिन्स्की कबीलेके बहुतसे लोग १८वीं सदीतक मूर्तिपूजक रहे, यद्यपि उनके इलाकेमें बहुत पहले कूचुमके समयमें ही मुसलमान पहुंच चुके थे। एक दूसरे रूसी लेखक फिशरके अनुसार निजार-उपत्यकाके तुरिन्स्क तारतारोंके कितने ही परिवार १६३९ ई० तक मूर्तिपूजक रहे।

७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमकने किस तरह कूचुमकी राजधानी सिबिरपर अधिकार किया, यह हम बतला चुके हैं। १७ या १८ अगस्त १५८४ ई० को येरमक लड़ाईमें हारकर अपने कवचके भारी बोझके कारण नदीमें डूबकर मर गया, लेकिन उससे रूसी अधिकारको साइबेरियामें क्षति नहीं पहुंची। येरमक और उसके साथियोंका स्थान दूसरे रूसी बराबर लेते रहे। येरमककी मृत्युके दो साल बाद १५९६ ई० के बसन्तमें वोयवोद वासिली बोरिस-पुत्र सूकिन और इवान म्यास्नोईके साथ तीन सौ रूसी सैनिक आये—उन्होंने युगुरके पहाड़ों और ओब नदीके रास्ते चढ़ाई की। १० जुलाई १५८६ ई० को सूकिन तारतारोंके एक पुराने किले चिंगीपर पहुंचा, जो कि तुरा नदीके तटपर था। वहां उसने

५ इशिम, कूचुम-पुत्र (--१६१६ ई०)

१६१६ ई० में इशिम सलबर और कोशुर दो कलमक राजकुमारोंके साथ ऊपरी इर्तिशमें मेमीप्लातिन्स्कमें रहता था। वहाँसे वह साइबेरियाके नगरोंमें ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकड़े जानेके बाद इसने अपनेको खान घोषित किया था। १६१८ ई० में कलमकोंके साथ मिलकर इसने रूसियोंपर आक्रमण किया, जिसमें इर्तिशके मैदानों और तोब्रोल्के बीचमें उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पड़ा। इस लड़ाईमें इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० में इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मंगोलोंने कलमकोंको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे हैं। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लड़कीसे ब्याह करके अपने ससुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कलमकोंका प्रथम सरदार था। इस समय कलमक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमें रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमें रह रहे थे। १६२२ ई० मे इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्ते-पर तोबोल-तटपर अवस्थित खामा करागाईमें रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६ अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५-१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कलमकोंके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कलमक सरदार कोक्शुल, उरलुक और बाइव्रेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोंको कलमकोंका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कलमकोंके थैशियों (राजाओं) तेलेंगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैची केशेसके साथ मित्रता बढ़ाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रक्खे रहा। १६३२ ई० में वह इसेतके तटपर अलीवयेक यूर्ति नामक गाँवमें था। १६३५ ई० में इसेत-तट, वेर्ख्ने-निजिन्सकया और चूबावोफामें था। इसी साल रूसियोंने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कलमकोंके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नहीं हुआ। १६३६ ई० में ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कलमक मारे गये। अबलइ ५४ कलमकोंके साथ पकड़-कर ऊफा लाया गया, जहाँसे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहाँसे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामें बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० में कलमकोंको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० में रूसियोंने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होंने उनमेंसे बहुतोंको मारा और कितनों को बंदी बनाया। बंदियोंमें तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० में कूचुमवंशी राजकुमारोंकी लूट-मारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोंके साथ कितने ही कलमक थैशियोंसे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोंको लूटा, और ३५८ पुरुषों और ३७५ स्त्रियोंको बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बंदियोंमेंसे बहुतोंको जुगा-रियाके खुन थैशीके बीचमें पड़नेपर छोड़ दिया। अब वस्तुत सिबिरके खानोंकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरबवाले प्रदेशके स्वामी कलमक थे। उन्हींमें सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमें उनका नाम नहीं मिलता।

लौटकर जार वोरिस गदुनोफको अपनी सफलताके बारेमें लिखा—"कूचुम खान दो आदमियोंके साथ ओबके किनारे-किनारे चाता प्रदेशमे चला गया।" वोयकोफने समझा-बुझाकर कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार करना चाहा। उसने इसके लिये मुल्ला तूल मेहमतको भेजा। उस वक्त ओव नदीके तटके एक जगलमे रूसियो द्वारा मारे गये अपने तारतारोकी लाशोंके बीचमे अधा-बूढा कचुम खान तीन वेटो और तीस अनुचरोके साथ एक पेडके नीचे बैठा था। मुल्लाने कहा—"अधीनता स्वीकार कर लो, फिर तुम मास्कोमे जाकर अपने परिवारके साथ आरामसे रह सकते हो। जार तुम्हारे साथ बहुत अच्छा वर्ताव करेगा।" बूढेका जवाब था—"जब मेरे दिन भले थे, म समृद्ध और सबल था, तब मै नही गया, तो क्या इस समय मे अपमानपूर्ण मृत्युके लिये वहा जाऊ ? मै अन्धा और बहरा हू, गरीव और वेचारा हू। मै अपनी सम्पत्तिके विनाशके लिये अफसोस नही करता, लेकिन मै अपने प्यारे पुत्र असमानकके लिये अफसोस करता हू, जिसे रूसी पकड ले गये। राज्यके विना भी मै उसके साथ सतोषमे रह सकता था, चाहे मेरी दूसरी वीविया और बच्चे न भी होते। अब मै अपने बचे-खुचे परिवारको बुखारा भेज दूगा और स्वय नोगाइयोमे चला जाऊगा।" कूचुमके पास उस समय न गरम कपडे थे, और न घोडे ही। उसने अपनी पुरानी प्रजा चातोसे कुछ चीजे भीखके तौरपर मागी। इसके बाद वह युद्धक्षेत्रमें पहुचा। फिर दो दिनतक मुर्दोको दफनानेमें लगा रहा। इसके बाद एक घोडेपर चढ़कर वह रूसी इतिहासकार करमजिनके अनुसार "इतिहाससे विलुप्त हो गया।"

कूचुम इर्तिशके रास्ते सइसान झील (नोर) की ओर जा कल्मकोके देशमें कुछ समय ठहरा, फिर उनके कितने ही घोडोको लूट कर इशिमके जिलेम गया। कल्मकोने पीछा करके इशिम नदीके पास करगालचेन झीलपर उसपर आक्रमण किया। उसके कितने ही अनुचर मारे गये, और कचुम नोगाइयो (मगुतो) मे भाग गया। लेकिन, नोगाइयोको कूचुमके बाप मुर्तुजाके हाथो बहुत कष्ट उठाना पडा था, इसलिये उन्होने बूढे कूचुमको मारकर उसका बदला लिया। कूचुमके परिवारके जो लोग रूसियोके हाथमे पडे थे, वह जनवरी १५९९ ई० मे मास्को पहुचे। खानके पुत्रो और पुत्रियोको अमीरो और धनी व्यापारियोके घरोमे रखकर जारने उनके लिये मामूली पेंशन निश्चित कर दी। महमेतकुल रूसी सेनामे शामिल हुआ, और १५९० ई० मे रूसकी तरफ से स्वीडनके विरुद्ध लडा। १५९८ ई० मे क्रिमियाके तारतारोके विरुद्ध भी वह जार वोरिस गदुनोफके साथ गया था। कूचुमका पुत्र अवुल्खैर १५९१ ई० में ईसाई बनकर अन्द्रेई नामसे प्रसिद्ध हुआ, और कूचुमके पुत्र अलीका लडका अल्पअसलन पीछे कासिमोफका खान बना।

४ अली, कूचुम-पुत्र (—१५९८ ई०)

१५९८ ई० की लडाईमे बापके साथ अली भी था। इस पराजयके बाद वह जहा-तहा घुमन्तू जीवन बिताता घूमता रहा। अभी रूसियोके शासनके आरम्भिक दिन थे। अली अपने अनुयायियोको जमा करके वह इर्तिश, इशिम और तवोलकी उपत्यकाओंमें लूट-मार करते यायिक नदी तथा कूफा तक धावा करने लगा। १६०३ ई० में वह लगातार रूसियोके साथ छेडखानी करता रहा। १६०६ ई० मे पहली बार उसके आदमी ताराके जिलेमें दिखलाई पडे, जहा उन्होने रूसी बस्तियोको लूटा। रूसियोने पीछा करके अलीकी माको पकड लिया, जिसे वह त्यूमन ले गये। १६०७ ई० मे कूचुमके पुत्र असिम, इशिम और कचुवार कल्मकोके झडेके नीचे हो, त्यूमन जिलेपर आक्रमण कर वहासे रूसी बच्चो और औरतोको पकड ले गये। फिर एक नोगाई मुर्जा कनाईके साथ दो सौ आदमियोको ले उन्होने तोबोलस्कके आसपास लूट-मार की। पीछा करके शमशीके जगलोमें अलीकी स्त्री दो पुत्र, असिमकी दो वीवियों और दो लडकियो, तथा अलीकी एक बहिनको पकडकर रूसी त्यूमन ले गये। आखिरमे किविरली झीलके पास दो दिनके युद्धमे जो वन्दी पकडे गये, उनमें अली भी था। उसे वन्दी बनाकर मास्को भेज दिया गया। वहा कुछ समय रहनेके बाद उसे यारोस्लाव्ल नगरमें नजरवन्द कर दिया गया, जहा १६३८ ई० के बाद वह किसी समय मरा।

५ इशिम, कूचुम-पुत्र (--१६१६ ई०)

१६१६ ई० में इशिम सलबर और कोशुर दो कलमक राजकुमारोके साथ ऊपरी इर्तिशमे सेमीप्लातिन्स्कमें रहता था। वहासे वह साइवेरियाके नगरोमे ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकडे जानेके बाद इसने अपनेको खान घोपित किया था। १६१८ ई० में कलमकाके साथ मिलकर इसने रूसियोपर आक्रमण किया, जिसमें इर्तिशके मैदानो और तोबोलके बीचमे उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। इस लडाईमें इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० में इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मगोलोने कलमकोंको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे ह। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लडकीसे ब्याह करके अपने ससुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कलमकोका प्रथम सरदार था। इस समय कलमक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमे रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमें रह रहे थे। १६२२ ई० मे इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्तेपर तोबोल-तटपर अवस्थित खामा करागाईमें रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६ अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५–१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कलमकोके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कलमक सरदार कोकुल, उरलुक और बाइबेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोको कलमकोका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कलमकोके थैशियो (राजाओ) तेलेगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैंची केशेंसके साथ मित्रता बढाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रक्खे रहा। १६३२ ई० में वह इसेतके तटपर अलीबयेफ यूर्ति नामक गावमें था। १६३५ ई० मे इसेत-तट, वेर्ख्ने-निजिन्सकया और चूबावोफामे था। इसी साल रूसियोने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कलमकोके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नही हुआ। १६३६ ई० में ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कलमक मारे गये। अबलइ ५४ कलमकोके साथ पकडकर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामें बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० में कलमकोको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० में रूसियोने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होने उनमेंसे बहुतोको मारा और कितनो को बदी बनाया। बदियोमें तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० में कूचुमवशी राजकुमारोकी लूट-मारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोके साथ कितने ही कलमक थैशियोमे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोको लूटा, और ३५८ पुरुषो और ३७५ स्त्रियोंको बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बदियोमेंसे बहुतोंको जुगारियाके खुन थैशीके बीचमें पडनेपर छोड दिया। अब वस्तुत सिबिरके खानोकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरबवाले प्रदेशके स्वामी कलमक थे। उन्हींमें सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमें उनका नाम नही मिलता।

लौटकर जार बोरिस गदुनोफको अपनी सफलताके बारेमे लिखा—"कूचुम खान दो आदमियोंके साथ ओबके किनारे-किनारे चाता प्रदेशमे चला गया।" वोयकोफने समझा-बुझाकर कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार करना चाहा। उसने इसके लिये मुल्ला तूल मेहमतको भेजा। उस वक्त ओब नदीके तटके एक जगलमे रूसियो द्वारा मारे गये अपने तारतारोकी लाशोंके बीचमे अधा-बूढा कचुम खान तीन बेटो और तीस अनुचरोके साथ एक पेडके नीचे बैठा था। मुल्लाने कहा—"अधीनता स्वीकार कर लो, फिर तुम मास्कोमें जाकर अपने परिवारके साथ आरामसे रह सकते हो। जार तुम्हारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करेगा।" बूढ़ेका जवाब था—"जब मेरे दिन भले थे, मैं समृद्ध और सबल था, तब म नही गया, तो क्या इस समय मैं अपमानपूर्ण मृत्युके लिये वहा जाऊ? मैं अन्धा और बहरा हू, गरीब और बेचारा हू। मैं अपनी सम्पत्तिके विनाशके लिये अफसोस नही करता, लेकिन मैं अपने प्यारे पुत्र असमानकके लिये अफसोस करता हू, जिसे रूसी पकड ले गये। राज्यके बिना भी म उसके साथ सतोपसे रह सकता था, चाहे मेरी दूसरी बीबिया और बच्चे न भी होते। अब मैं अपने बचे-खुचे परिवारको बुखारा भेज दूगा और स्वय नोगाइयोमे चला जाऊगा।" कूचुमके पास उस समय न गरम कपडे थे, और न घोडे ही। उसने अपनी पुरानी प्रजा चातोसे कुछ चीजें भीखके तौरपर मागी। इसके बाद वह युद्धक्षेत्रमे पहुचा। फिर दो दिनतक मुर्दाको दफ़नानेमे लगा रहा। इसके बाद एक घोडेपर चढ़कर वह रूसी इतिहासकार करमजिनके अनुसार "इतिहाससे विलुप्त हो गया।"

कूचुम इर्तिशके रास्ते सइसान झील (नोर) की ओर जा कलमकोके देशमें कुछ समय ठहरा, फिर उनके कितने ही घोडोको लूट कर इशिमके जिलेमे गया। कलमकोने पीछा करके इशिम नदीके पास करगालचेन झीलपर उसपर आक्रमण किया। उसके कितने ही अनुचर मारे गये, और कचुम नोगाइयो (मगुतो) मे भाग गया। लेकिन, नोगाइयाको कूचुमके बाप मुर्तुजाके हाथो बहुत कष्ट उठाना पडा था, इसलिये उन्होने बूढे कूचुमको मारकर उसका बदला लिया। कूचुमके परिवारके जो लोग रूसियोके हाथमें पडे थे, वह जनवरी १५९९ ई० में मास्को पहुचे। खानके पुत्रो और पुत्रियोको अमीरो और धनी व्यापारियोके घरोमें रखकर जारने उनके लिये मामूली पेंशन निश्चित कर दी। महमेतकुल रूसी सेनामे शामिल हुआ, और १५९० ई० में रूसकी तरफ से स्वीडनके विरुद्ध लडा। १५९८ ई० में क्रिमियाके तारताराके विरुद्ध भी वह जार बोरिस गदुनोफके साथ गया था। कूचुमका पुत्र अबुल्खैर १५९१ ई० में ईसाई बनकर अन्द्रेई नामसे प्रसिद्ध हुआ, और कूचुमके पुत्र अलीका लडका अल्पअमलन पीछे कासिमोफका खान बना।

४ अली, कूचुम-पुत्र (—१५९८ ई०)

१५९८ ई० की लडाईमें बापके साथ अली भी था। इस पराजयके बाद वह जहा-तहा घुमन्तू जीवन बिताता घूमता रहा। अभी रूसियोके शासनके आरम्भिक दिन थे। अली अपने अनुयायियोको जमा करके वह इर्तिश, इशिम और तबोलकी उपत्यकाओमें लूट-मार करते यायिक नदी तथा कूफा तक धावा करने लगा। १६०३ ई० म वह लगातार रूसियोके साथ छेडखानी करता रहा। १६०६ ई० में पहली बार उसके आदमी ताराके जिलेमें दिखलाई पडे, जहा उन्होन रूसी बस्तियोको लूटा। रूसियोने पीछा करके अलीकी माको पकड लिया, जिसे वह त्यूमन ले गये। १६०७ ई० में कूचुमके पुत्र असिम, इशिम और कचुवार कलमकोके झडेके नीचे हो, त्यूमन जिलेपर आक्रमण कर वहासे रूसी बच्चो और औरतोको पकड ले गये। फिर एक नोगाई मुर्जा मनाईके साथ दो सौ आदमियोको ले उन्होने तोबोल्स्कके आसपास लूट-मार की। पीछा करके शमशीके जगलोमें अलीकी स्त्री दो पुत्र, असिमकी दो बीबियो और दो लडकियो, तथा अलीकी एक बहिनको पकडकर रूसी त्यूमन ले गये। आखिरमें किविरली झीलके पास दो दिनके युद्धमे जो बन्दी पकडे गये, उनमें अली भी था। उसे बन्दी बनाकर मास्को भेज दिया गया। वहा कुछ समय रहनेके बाद उसे यारोस्लाव्ल नगरमे नजरबन्द कर दिया गया, जहा १६३८ ई० के बाद वह किसी समय मरा।

५ इशिम, कूचुम-पुत्र (—१६१६ ई०)

१६१६ ई० में इशिम सलबर और कोशुर दो कलमक राजकुमारोके साथ ऊपरी इर्तिशमें सेमीप्लातिन्स्कमें रहता था। वहासे वह साइबेरियाके नगरोमें ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकड़े जानेके बाद इसने अपनेको खान घोषित किया था। १६१८ ई० मे कलमकोके साथ मिलकर इसने रूसियोपर आक्रमण किया, जिसमे इर्तिशके मैदाना और तोबोलके बीचम उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। इस लडाईमे इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० में इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मगोलोने कल्मकोको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे है। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लडकीसे ब्याह करके अपने ससुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कलमकोका प्रथम सरदार था। इस समय कलमक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमे रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमें रह रहे थे। १६२२ ई० में इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्ते-पर तोबोल-तटपर अवस्थित खामा करागाईमें रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६ अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५–१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कलमकोंके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कलमक सरदार कोकगुल, उरलुक और बाइबेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोको कल्मकोका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कल्मकोके थैशियो (राजाओ) तेलेंगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैची केशेसके साथ मित्रता बढाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रक्खे रहा। १६३२ ई० में वह इसेतके तटपर अलीवयेफ यूर्ति नामक गावमें था। १६३५ ई० मे इसेत-तट, वेर्ख्ने-निजिन्सकया और चूबावोकामें था। इसी साल रूसियोने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कल्मकोके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नही हुआ। १६३६ ई० मे ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कलमक मारे गये। अबलइ ५४ कलमकोके साथ पकड़-कर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामें बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० में कल्मकोको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० में रूसियोने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होने उनमेंसे बहुतोको मारा और कितनो को बदी बनाया। बदियोमें तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० में कूचुमवंशी राजकुमारोकी लूट-मारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोंके साथ कितने ही कलमक थैशियोंसे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोको लूटा, और ३५८ पुरुषो और ३७५ स्त्रियोको बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बदियोंमेंसे बहुतोंको जुगारियाके खुन थैशीके बीचमें पड़नेपर छोड दिया। अब वस्तुत सिबिरके खानोकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरबवाले प्रदेशके स्वामी कलमक थे। उन्हीमें सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमें उनका नाम नही मिलता।

लौटकर जार बोरिस गदुनोफको अपनी सफलताके बारेमे लिखा—"कूचुम खान दो आदमियोंके साथ ओबके किनारे-किनारे चाता प्रदेशमें चला गया।" वोयकोफने समझा-बुझाकर कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार करना चाहा। उसने इसके लिये मुल्ला तूल मेहमतको भेजा। उस वक्त ओब नदीके तटके एक जगलमें रूसियो द्वारा मारे गये अपने तारतारोकी लाशोंके बीचमें अधा-बूढा कूचुम खान तीन बेटो और तीस अनुचरोके साथ एक पेडके नीचे बैठा था। मुल्लाने कहा—"अधीनता स्वीकार कर लो, फिर तुम मास्कोमे जाकर अपने परिवारके साथ आरामसे रह सकते हो। जार तुम्हारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करेगा।" बूढेका जवाब था—"जब मेरे दिन भले थे, म समृद्ध और सबल था, तब मै नही गया, तो क्या इस समय म अपमानपूर्ण मृत्युके लिये वहा जाऊ ? मै अन्धा और बहरा हू, गरीब और बेचारा हू। मै अपनी सम्पत्तिके विनाशके लिये अफसोस नही करता, लेकिन मै अपने प्यारे पुत्र असमानकके लिये अफसोस करता हू, जिसे रूसी पकड ले गये। राज्यके बिना भी मै उसके साथ सतोषसे रह सकता था, चाहे मेरी दूसरी बीबिया और बच्चे न भी होते। अब मै अपने बचे-खुचे परिवारको बुखारा भेज दूगा और स्वय नोगाइयोमें चला जाऊगा।" कूचुमके पास उस समय न गरम कपडे थे, और न घोडे ही। उसने अपनी पुरानी प्रजा चातोसे कुछ चीजे भीखके तौरपर मागी। इसके बाद वह युद्धक्षेत्रमें पहुचा। फिर दो दिनतक मुर्दोंको दफनानेमे लगा रहा। इसके बाद एक घोडेपर चढकर वह रूसी इतिहासकार करमजिनके अनुसार "इतिहाससे विलुप्त हो गया।"

कूचुम इर्तिशके रास्ते सइसान झील (नोर) की ओर जा कलमकोंके देशमे कुछ समय ठहरा, फिर उनके कितने ही घोडोको लूट कर इशिमके जिलेमे गया। कलमकोने पीछा करके इशिम नदीके पास करगालचन झीलपर उसपर आक्रमण किया। उसके कितने ही अनुचर मारे गये, और कूचुम नोगाइया (मगुतो) मे भाग गया। लेकिन, नोगाइयोको कूचुमके बाप मुर्तुजाके हाथो बहुत कष्ट उठाना पडा था, इसलिये उन्होने बूढे कूचुमको मारकर उसका बदला लिया। कूचुमके परिवारके जो लोग रूसियोके हाथमे पडे थे, वह जनवरी १५९९ ई० म मास्को पहुचे। खानके पुत्रो और पुत्रियोको अमीरो और धनी व्यापारियोंके घरोमे रखकर जारने उनके लिये मामूली पेंशन निश्चित कर दी। महमेतकुल रूसी सेनामे शामिल हुआ, और १५९० ई० में रूसकी तरफ से स्वीडनके विरुद्ध लडा। १५९८ ई० मे क्रिमियाके तारतारोके विरुद्ध भी वह जार बोरिस गदुनोफके साथ गया था। कूचुमका पुत्र अबुल्खैर १५९१ ई० में ईसाई बनकर अन्द्रेई नामसे प्रसिद्ध हुआ, और कूचुमके पुत्र अलीका लडका अल्पअमलन पीछे कासिमोफका खान बना।

४ अली, कूचुम-पुत्र (—१५९८ ई०)

१५९८ ई० की लडाईमे बापके साथ अली भी था। इस पराजयके बाद वह जहा-तहा घुमन्तू जीवन बिताता घूमता रहा। अभी रूसियोके शासनके आरम्भिक दिन थे। अली अपने अनुयायियोको जमा करके वह इर्तिश, इशिम और तवोलकी उपत्यकाओमें लूट-मार करते यायिक नदी तथा कूफा तक धावा करने लगा। १६०३ ई० म वह लगातार रूसियोके साथ छेडखानी करता रहा। १६०६ ई० मे पहली बार उसके आदमी ताराके जिलेम दिखलाई पडे, जहा उन्होने रूसी बस्तियोको लूटा। रूसियोने पीछा करके अलीकी माको पकड लिया, जिसे वह त्यूमन ले गये। १६०७ ई० में कूचुमके पुत्र असिम, इशिम और कचुवार कलमकोंके झडेके नीचे हो, त्यूमन जिलेपर आक्रमण कर वहासे रूसी बच्चो और औरतोको पकड ले गये। फिर एक नोगाई मुर्जा कनाईके साथ दो सौ आदमियोको ले उन्होने तोबोल्स्कके आसपास लूट-मार की। पीछा करके यामशीके जगलोमें अलीकी स्त्री दो पुत्र, असिमकी दो बीबियो और दो लडकियो, तथा अलीकी एक बहिनको पकडकर रूसी त्यूमन ले गये। आखिरमें किबिरली झीलके पास दो दिनके युद्धमे जो बन्दी पकडे गये, उनमें अली भी था। उसे बन्दी बनाकर मास्को भेज दिया गया। वहा कुछ समय रहनेके बाद उसे यारोस्लाव्ल नगरम नरजबन्द कर दिया गया, जहा १६३८ ई० के बाद वह किसी समय मरा।

५ इशिम, कूचुम-पुत्र (—१६१६ ई०)

१६१६ ई० में इशिम सलबर और कोशुर दो कल्मक राजकुमारोके साथ ऊपरी इर्तिशमे सेमीप्लातिन्स्कमें रहता था। वहासे वह साइबेरियाके नगरोमे ऊफा तक लूट-मार करता था। अलीके पकड़े जानेके बाद इसने अपनेको खान घोपित किया था। १६१८ ई० में कल्मकोके साथ मिलकर इसने रूसियोपर आक्रमण किया, जिसमे इर्तिशके मैदानो और तोबोलके बीचम उसे बहुत बुरी तरहसे हारना पड़ा। इस लडाईमें इसके बहुत-मे आदमी काम आये। १६२० ई० में इशिम कल्कम सेचक थैशीके साथ मिल कर शूचिये झीलकी ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मगोलोने कल्मकोको बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिमकी ओर भागे जा रहे हैं। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुककी लड़कीसे ब्याह करके अपने समुरके साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कल्मकोका प्रथम सरदार था। इस समय कल्मक पश्चिमी साइबेरियाके स्तेपीमे रूसी सीमाके दक्षिणकी भूमिमें रह रहे थे। १६२२ ई० मे इशिम त्यूमनसे सात दिनके रास्ते-पर तोबोल तटपर अवस्थित खामा करागाईमे रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहरके पास चला गया।

६ अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५—१६५० ई०)

अबलइ गिराई भी कल्मकोके साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कल्मक सरदार कोऊशुल, उरलुक और बाइवेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायतासे इशिमने बराबिनके तारतारोको कल्मकोका करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराईने कल्मकोके थैशियो (राजाओ) तेलेगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैची केशेसके साथ मित्रता बढाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रक्खे रहा। १६३२ ई० में वह इसेतके तटपर अलीबयेफ यूर्ति नामक गावमें था। १६३५ ई० में इसेत-तट, वेर्ल्ने-निजिन्सकया और चूबावोफामें था। इसी साल रूसियोने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कल्मकोके मारे जानेके सिवा उसका कोई फल नही हुआ। १६३६ ई० में ऊफासे अभियान भेजा गया। बहुतसे कल्मक मारे गये। अबलइ ५४ कल्मकोके साथ पकड़-कर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराईको उसके मरनेकी खबर भेज दी गई।

७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामे बुखाराके बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलतका दूत भी था। १६४० ई० में कल्मकोको साथ ले दौलतने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० में रूसियोने दो सौ बहत्तर सैनिक भेजे, जिन्होंने उनमेंसे बहुतोको मारा और कितनो को बदी बनाया। बदियोमें तोरगुत-सरदार उरलुकका एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० में कूचुमवशी राजकुमारोकी लूट-मारकी खबर लगती रही। १६५९ ई० मे बुगई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेईने एक हजार आदमियोंके साथ कितने ही कल्मक थैशियोंसे मिलकर बहुत-सी रूसी बस्तियोको लूटा, और ३५८ पुरुषो और ३७५ स्त्रियोको वन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बदियोंमेंसे बहुतोको जुगा-रियाके खुन थैशीके बीचमें पड़नेपर छोड दिया। अब वस्तुत सिबिरके खानोकी प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदीके पूरववाले प्रदेशके स्वामी कल्मक थे। उन्हींमे सिबिर खानके आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहासमे उनका नाम नही मिलता।

३ (५ सिबिरखान-वंशवृक्ष)
(१५००-१६५९ ई०)

- जू-छि
  - बा-तू
  - शैवान
    - बातू
      - जूजीबुगा
        - बदकुल
          - मंगू
            - पूलाद (किपचक)
              - अरबशाह (ख्वारेज्म)
              - इब्राहीम (बुखारा)
            - तुकाबेग
              - अली
                - हाजी मु०
                  - १ इबेक (—१४९३)
                    - २ मुर्तुजा
                      - ३ कूचुम (१५५५-९५)
                        - ४ अली (-१५९८)
                        - चुवाश
                          - ७ दौलत (-१६३७-)
                        - ५ इशिम (-१६१६)
                          - ६ अबलइ (-१६३५-५०)
    - खिजिर
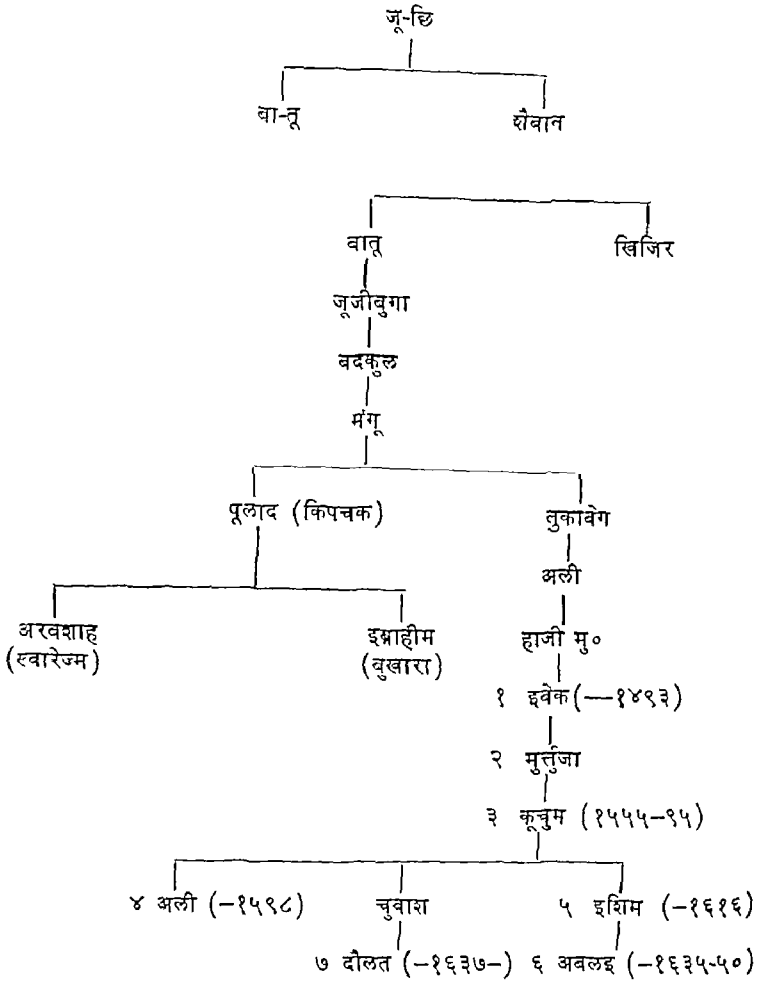
स्रोत ग्रन्थ

१ ओचेक पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सि इ सिविरि (मास्को १९४६)
२ History of Mongol (H H Howorth)

अध्याय ६

जुङ्गर-साम्राज्य

(१५८२-१७५७ ई०)

कल्मक-मगोल—मगोलोकी एक शाखाका नाम कल्मक था। इनका मगोल नाम तोरगुत था, लेकिन मुसलमान और रूसी लेखक इन्हे अधिकतर कल्मकके नामसे पुकारते हैं। १६०० ई० (अर्थात् अकबरकी मृत्युसे पाच साल पूर्व) के पहले अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें कल्मक नही थे। पूर्वी मगोलोंके शक्तिशाली राजा अल्तन खानने जब १६२० ई० में तोरगुतोको बुरी तरहसे हराया, तो वह अपने सरदारो खराखुला, दालय और मेरेगनके नेतृत्वमें पश्चिमकी ओर भागने लगे और फिर यम्बा नदी, उराल पर्वतमालासे पूर्व और अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें छा गये। १६वी सदी तक यह भूभाग उज्बेक-कजाको (शैवानी और कजाक) से नोगाइयोंके हाथमें चला गया था। वह इस भूमिमें अपना घुमन्तू-जीवन बिताते थे। कल्मकोका उनसे सघर्ष होने लगा। कल्मक लगातार पश्चिमकी ओर बढ़ते बश्किरोंके देशमें पहुचे। कल्मक राजा उरुसलन थैशीने बश्किरोसे कर मागा—बश्किर अभी तक नोगाइयोंके अधीन थे, जिससे नोगाइयोंसे झगडेकी नौबत आ गई। इस्माईल-पुत्र दीनेबेइका पुत्र कनाई उस वक्त नोगाइयोका राजा था। तोरगुत (कल्मक) सरदार उरलुक और उसके पुत्र दाईशिगने नोगाई खानके विद्रोही सल्तानियासे मिलकर १६३३ ई०में कनाईपर चढ़ाई की। कनाई रूसके अधीन था, इसलिये जारकी सरकारने तोबोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी सेनापतियोको उसकी मदद करनेके लिये हुक्म दिया।

१६४३ ई०में रूसियोने आक्रमण करके उरलुक और उसके कुछ पुत्र-पौत्रोको भी मार डाला। इसके बाद उरलुक-पुत्र येलदेङ और लोब्जाङने यायिक पार कर बोल्गाके मैदानोंमें प्रवेश किया, और नोगाइयोको किताई-किपचक, मैलबाश और येदिस्सन (एतिसन) के तीन भागोमें बाट दिया। साथ ही उन्होने उलाङ्तुमान (लाल ऊटवाले ओर्दू) के तुर्कमानोको भी उनकी भूमि येम्बाके दक्षिणी भागसे हटा दिया। अब बोल्गाके दोनो पारका इलाका नोगाइयोंके हाथसे निकलकर कल्मकोंके हाथमें चला गया। इस प्रकार नोगाई अपनी मूल-भूमिसे वंचित हुये। करीब डेढ़ शताब्दियों तक कल्मक इस भूमिमें छाये जरूर रहे, लेकिन अन्तमें फिर कजाक आकर आबाद हो गये, जिसके ही कारण आज यह भूमि कजाकस्तानके नामसे मशहूर है। पश्चिमी मगोलोको तोरगुत या कल्मक कहा जाता था, जब कि पूर्वी मगोल खलखा नामसे प्रसिद्ध थे।

(१) कल्मकोंके भीतर ओइरोद, कुरी, तुला, तुमेत, बरगुत, कुरलुतके कबीले थे, जो अंगारा नदी और बैकाल सरोवरके पश्चिममें रहते थे। हो सकता है, पश्चिमी मगोलोका कोई मुख्य सरदार कल्मक रहा हो, जिसके नामपर कबीलेका यह नाम पड़ा।

(२) उरियानकुत मगोल कोस्सागोल (झील)के पास रहते थे।

(३) सुवाइत (सूनित) कबतेरून (कैरून) भी मगोलोका कबीला था।

तायनखान (१४७०-१५४४ ई०) के पुत्रोने आपसमें मगोलोका बटवारा किया था।

कल्मकोंके बाद ज्यादा शक्तिशाली खलखा मगोल थे। आज भी बाह्य-मगोलिया इन्हीकी है। खलखाके उन्चास झडे थे, अर्थात् ये उन्चास छोटे-छोटे कबीलोमें विभक्त था। इनके चार मुख्य भेद थे—(१) जस्सक्तुखानके पश्चिमी खलखा, (२) तूशीयेतूखानके उत्तरी खलखा, जो कि तुला और केरुलोन-उपत्यकाओंमें रहते थे, (३) साइननोयनके मध्य खलखा, और (४) सेतजेनखानके पूर्वी खलखा।

मगोलराजावलि—चीनसे मगोल-शासनके उठनेके बाद मगोलोकी शक्ति तितर-बितर हो गई थी, जिसको एक बार फिर एकत्रित करके १४७० ई० में तायनखान सारे मगोलियाका शासक बना। तायनखानका वंश-वृक्ष निम्न प्रकार है —

३ (६ क मगोलिया-वंशवृक्ष)
(१३३२-१६०३ ई०)

- छिङ्-गिस् (१२०६-२७)
  - तूलुइ
    - कुबिले (१२६०-९४)
      - छिङ्-गेम् (चिङ्-किन्)
        - धर्मपाल
          - बोयन्तू (१३११-२०)
            - थुग-थेमूर
              - १ थेगेन थेमूर (१३३३-६८-७०) अंतिम चीन-सम्राट
                - २ बिलिकतू (१३७०-७८)
                - ३ उस्साखल (१३७८-८८)
                  - ४ एङ्क के सोरिकतू (१३८८-९२)
                  - ५ एल्बेक (१३९२-१४००)
                    - ६ गुनथेमूर (१४००-३)
                    - ७ उल्थैयेमूर (१४०३-११)
                      - ८ देल्बेक (१४११-१५)
                  - खरगोत्सोक
                    - १० अदर्स (१४३४-३९)
                      - ११ तैस्सोङ्क (१४३९-५२)
                        - १३ केतकू (१४५३)
                        - १४ मोलोन (१४५३-६३)
                      - १२ अकवर्शी (१४५२-५३)
                        - खर्गोतक्षोक
                          - वोलक्षो पजनोङ्क
                            - १६ तायन (१४७०-१५४४)
                              - वरसावोल
                                - गुनविलिक
                                - अलतन (१५०७-८३)
                              - तोरोवोलोद
                                - १७ वोदी (१५४४-४७)
                                  - १८ कुतङ्क (१५४७-५७)
                                    - १९ सस्सकतू (१५५७-९२)
                                      - २० मेत्जेन (१५९२-१६०३)
                      - १५ मदगोल (१४६३-७०)

उत्सुकेन

९ अदै (१४१५-३४)

तायनखान बहुत शक्तिशाली शासक था, लेकिन उसने बडी गलती यह की, कि राज्यको अपने ग्यारह पुत्रोमें बाट दिया। इसके ग्यारह पुत्र थे—(१) तोरोवोलोद, जिसका पुत्र वोदी तायनकी गद्दीपर बैठा, (२) उलुस बैशी, (३) बुर्सबोल, (४) अरसू, (५) अल्चिन, (६) वल्शिर, (७) अरा, (८) गेरेबोल, (९) गेरेसजा, (१०) वुशिगुन, (११) गेरेतू। इस विभाजनके बाद मगोल शक्ति फिर दुर्बल हो गई, और छिङ्ग-गिस्के वशके दावेदार बहुतसे छोटे-छोटे खान हो गये।

अन्तर-मगोलिया—यह तायनखानके वडे पुत्रोके हाथमें गई। अन्तर्-मगोलिया मचूरियाके पडोस मे थी, इसलिये दोनोकी घनिष्ठता बढ़ी, और अन्तमें मगोलोकी मददसे मचू नूर-हाचू या (ताई-चू) ने १५८३ ई०मे अपने मचू (छिङ)-वश (१५८३-१९१२ ई०)की स्थापना की, जिसके द्वारा मगोल सम्राटोंके स्थानपर स्थापित मिङ्-वश (१३६८–१६४४ ई०)का उच्छेद हो गया। चीनके ऊपर अधिकार करके मचुओने कलके अपने सहायक मगोलोके ऊपर हाथ फेरा, और उन्हें अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। इस प्रकार अन्तर्-मगोलिया चीनका भाग बन गई।

बाह्य-मगोलिया—इसे खलखा भी कहते है। यह तायनखानके छोटे लडकोंके हाथमें गई। १६८९ ई०में उनमें और उनके पश्चिमी पडोसी ओइरोद—कलमक—कबीलोके बीचमें लडाई छिड गई। अन्तमे खलखा (बाह्य-मगोलियावालो)को ओइरोदोंसे हारकर अपने कितने ही भूभागको गवाना पडा। कलमकोंके प्रहारसे मजबूर होनेपर खलखोंने रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपना बचाव करना चाहा, लेकिन इस समय मगोलियामें तिब्बतके दलाई लामाकी तरह एक बौद्ध सघराज—हू-तुक्-तू—का बहुत प्रभाव था। उसने यह कहकर रूसकी अधीनता स्वीकार करनेसे मना कर दिया, कि वह बौद्ध देश नही है। इसपर खलखोने चीनकी सहायता चाही। इस समय मचू-सम्राट् खाङ्-सी (शेङ्-चू १६६१-१७२३ ई०) चीनकी गद्दीपर था। उसने खलखोकी मदद की, और ओइरोदो (ओलिओतो)को असानीसे दबा दिया। १६९१ ई०में खाङ्-सीने दोलोन-नोर (दक्षिणी मगोलिया) मे खलखोकी एक बडी परिषद् बुलाई, जहापर एकत्रित होकर बाह्य-मगोलियाके राजुलोने चीन की अधीनता स्वीकार करते हुये अभय वर प्राप्त किया। तबसे प्राय मचू-वशके अतिम समय (१९११ ई०) तक बाह्य-मगोलियाने चीनकी अधीनता स्वीकार कर रक्खी, और प्रतिवर्ष आठ सफेद घोडे, और एक सफेद ऊट—नौ श्वेत—करके रूपमे चीन सम्राट्के पास भेजे जाते रहे, और चीनका 'अम्बन' (महामात्य) बाह्य-मगोलियाकी राजधानी उरगा (ताहुरे, आधुनिक उलानबातुर) में रहता रहा। उसके अतिरिक्त कोव्दो (पश्चिमी मगोलिया) और उलियस्सुतैमें सैनिक राज्यपाल रहते थे।

कलमक (जुगर), ओइरोद (ओलियोत) खलखा मगोलोंके प्रतिद्वद्वी थे, इसे हमने अभी देखा। यद्यपि चीनकी सहायतासे खलखोकी रक्षा हो गई, और कलमकोने खलखोके हाथ बडी बुरी तरहसे हार खाई, लेकिन तो भी कलमकोकी शक्ति अपनी पश्चिमी और दक्षिणी पडोसियोंपर बढ़ती ही गई। पूर्वकी तरफ बढावके रुक जानेपर वह अपने सरदारो खराखुल, ताले और मेरेगनके नेतृत्वमें छू मिश, ओब और तोबोलकी उपत्यकाओमें रहने लगे। कलमक पशुपाल थे, इसलिये चरागाहोंके लिये उनका नोगाइयोंसे झगडा हो गया। नोगाइयोंके अधीनस्थ बाशकिरोंसे कर मागनेपर नोगाइयोंसे सघर्ष हुआ, यह हम बतला चुके है।

कलमकोकी शक्तिका सस्थापक तूमेतवशी अल्तन खान (१५०७–८३ ई०) को माना जाता है। इसने १५५२ ई० में ओइरोतोंके नेताके तौरपर कजाकोंके खान तवक्कल शिगाई-पुत्र तथा ताहिर खानके वशजोको लडकर भगा दिया। तवक्कल ताशकन्द पहुचा, जहाका खान नौरोज अहमद (मृत्यु १५५६ ई०) था। तवक्कलने मगोलोंके विरुद्ध उससे मिलकर लडनेकी बात की, तो उसने जवाब दिया हमारे जैसे दस खान भी कलमकोका कुछ नही बिगाड सकते।

इस समय सप्तनद और उसके आसपासकी भूमिमे किर्गिज और कजाक दो घुमन्तू जातिया रहती थी। ९९० हि० (१५८२ ई०) अर्थात् अकबरके समकालीन एक अज्ञात लेखकके अनुसार किर्गिज मगोलोंके वशके है, और उनके यहा कोई राजा नही होता—उसकी जगह उनके नेता बेग होते है, जो कि काफिर है। वह पहाडोमें रहते हैं। यदि कोई उनके ऊपर अभियान करता,

तो वह अपने परिवारको पहाडोमें छिपा देते, फिर शत्रुका मुकाविला करते हैं। उनकी भूमि वहुत ठडी होनेसे सहायक होती है, जिसके कारण सफल विजेता भी उन्हे हाथमे नही रख सकता।

कजाक—काफिर किर्गिजोंके पडोसी कजाक थे, जिनकी सख्या दो लाख परिवार थी। यह मुसलमान तथा केवल इमाम अबू-हनीफाके अनुयायी (हनफी) थे। इनके पास वहुतसे ऊट थे। यह अपने तम्बुओको गाडियोपर ले चलते थे। मुसलमान होनेकी वजहसे इनका सवध वुखारासे वहुत घनिष्ठ था। कजाकोंके खान तवक्कलने १५९४ ई० मे जार फ्योदोरके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये अपने दूत मास्को भेजे। उस समय रूसी तवक्कलकको 'कजाको और कलमकोका राजा' कहते थे, जिससे यह पता लगता है, कि १६वी सदीके अन्तमें उसने कलमकोंके विरुद्ध कोई सफलता प्राप्त की थी। अपनी मृत्युके समय तवक्कल तुर्किस्तान-शहर (निम्न सिर-उपत्यका) और काशगरका शासक था। ये दोनो नगर कजाकोंके हाथमें प्राय १७२३ ई० तक रहे। १७ वी सदीमें कजाकोकी शक्ति वहुत मजबूत थी। उस वक्त वह सप्तनदपर भी अधिकार रखते थे, और उनका केन्द्र तुर्किस्तान और ताश्कन्दके नगर थे। उसी शताब्दीके अन्तमें ख्वारेज्म और वोल्गातट तक उनका प्रभुत्व फैला था। लेकिन इसी समय कजाकोंके प्रतिद्वद्वी कलमको (जुगरो)की शक्ति वढी। कलमकोंके राजा निम्न प्रकार थे—

जुगर-(कल्मक) राजावलि—

१	खराखुल या कराकुल	–१६३४ ई०
२	वातुर थैंची, खराखुल-पुत्र	१६३४–५३ "
३	सेङ्-गे, वातुर-पुत्र	१६५३–७१ "
४	गल्दन, गन्दन, वातुर-पुत्र	१६७१–९७ "
५	छेवङ्-रब्तन, सेङ्-गे-पुत्र	१६९७–१७२७ "
६	गल्दन, छेरिङ्-छेवङ्-पुत्र	१७२७–४५ "
७	छेवङ्-दोर्जे, गल्दन छेरिङ्-पुत्र	१७४५–५० "
८	दावा छेरिङ्, सेङ्-गे-वशज	–१७५५ "
९	अमुरसना, वातुर-थैंची-वशज	१७५०–५७ "

१ खराखुल, कुतुगैतू अबूदा अबलई-पुत्र, ओनगोजो-पौत्र, अरखान चिङ्-सेन-प्रपौत्र (–१६३४ ई०)

तायन खानके समय (१४७०–१५४४ ई०), कल्मको [१ करइत (केरगुदी), २ जुगर, ३ देरवेत, ४ खोरोत (चोरोस)] की भूमि त्यानशान-पर्वतमालाके उत्तर तथा वोग्दोउला-पर्वतके पडोसमें थी। सोलहवी सदीमें इनका केन्द्र कुल्जाके आसपास इलि-उपत्यकामे था। खराखुल (चोरोस) मगोलोंके खान खराखुलने १६३४ ई०के आसपास (शाहजहाके समय) ओइरोतोको एकतावद्ध करके अपनी शक्तिको बढानेकी कोशिश की, लेकिन उसमें सफलता उसके पुत्र वातुर थैंची (तैंची, तैंसी, थैशी) को हुई।

२ वातुर थैंची, खराखुल-पुत्र (१६३४–५३ ई०)

१६३४ ई० में वातुर (वहादुर) ने अपने वापका राज्य पा खुन-थैंचीकी उपाधि धारण की। इसके समय ओइरोतों या जुगरो (वामदल) का राज्य दृढ हुआ। इसने १६४० ई०में कूरिल्ताई (महापरिषद्) वुलाई, जिसमें रूसके राज्यमें रहनेवाले कलमकोंके भी प्रतिनिधि आये थे। यहा पर वातुरको खुन-थैंची (सारे कल्मकोका सरदार) वनाया गया। वातुर ऊपरी इर्तिश-उपत्यका तथा जाइसन सरोवरके पासकी भूमिमें चारण करता था। इसने तवक्कल खानके भाई और उत्तराधिकारी कजाकोंके खान इशिमसे सफल लडाइया की। १६५३ ई०में वातुरके मरनेके समय कल्मक एकतावद्ध हो चुके थे।

अल्ताईके उत्तरमें रहनेके कारण बातुरके कल्मकोंको उत्तरी एलियोत (ओइरोत) भी कहा जाता था, और दाहिनेकी ओर प्रवास करनेके कारण जुगर—सेगोनगर—या वामपक्ष भी। बातुरने तोर्गुतोंके राजा उर्लुककी लडकी ब्याही थी, लेकिन पीछे उर्लुकसे झगडा हो गया, जिसके कारण भी तोर्गुत पश्चिमकी ओर प्रयाण करनेके लिये मजबूर हुये। करा-इर्तिशकी उपत्यकामें बातुरके रूसी तथा खलखा पडोसी हुये। रूसी अबतक साइबेरियाके खानोंकी शक्तिको छिप-भिन्न कर चुके थे। ताराके आसपासके बराविस्की तथा दूसरे तुर्की कबीलोंपर बातुर थैंचीका दावा था। उसके आदमी १६०६ ई० में कर उगाहनेके लिये इस इलाकेमें गये, तो रूसियोंने विरोध किया, लेकिन वह उन्हे वहासे भगा नही सके। अगले साल कल्मकोंने कचुमके पुत्रोंको साथ ले तारासे पश्चिमकी ओर बढते हुए तोबोल्स्क, त्यूमन आदि जिलोंपर भी हमला किया। तारा-उपत्यकाके निवासी इर्तिशके मैदानोंसे नमक लाकर सारे देशमे बेंचते थे। १६१० ई० में कल्मकोंने नमककी खानोंको दखल कर लिया। इसपर तारतारो और दूसरे कबीलोंने लडनेकी तैयारी की, लेकिन जब १६१३ ई० में नमककी खानें उन्हे मिल गईं, तो झगडा खतम हो गया। १६१५ ई० मे बातुर थैंची (खराखुल तैंची ?) के दूत तारा गये। और अगले साल थैंची, बातुर और कई दूसरे थैंचियोंने तोबोल्स्कसे आये रूसी कसाकोंके सामने जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली, लेकिन यह शपथ नाममात्रकी थी। कल्मकोंने छेड-छाड जारी रक्खी, और १६१८ ई०में इर्तिश और तोबोलकी बीचकी भूमिमें सिबिर खानके पुत्रोंके साथ आये कल्मकोंको रूसियोंने हराकर उनके सत्तर ऊट और एक बक्सी (भिक्षु)को पकड लिया, जिसे पचास घोडा देनेपर छोडा गया।

१६२० ई० मे बातुर तैंची (?) खराखुलने अल्तन खान खलखाकी राजधानीको दखल किया, जो कि उबसा सरोवरके ऊपर थी, लेकिन खलखोन जल्दी ही कल्मकोंके ऊपर आक्रमण करके उन्ह हरा दिया। कल्मक तैंचीको अपने एक पुत्रके साथ ओबकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। कल्मक तैंचीने चूमिश नदीके तटपर एक दुग बनाया। उसके दूसरे जुगर-कल्मक इर्तिश, तोबोल आदिकी उपत्यकाओंमें चले गये। इसी समय देरबेत-मगोल भी भागकर साइबेरियामें गये।

धीरे-धीरे बातुरका राज्य बढा। किर्गिज और कजाक खास तौरसे अधीनता स्वीकार करने के लिये मजबूर हुये। कुछ कल्मकोंने किर्गिज और कजाक बदियोंको रूसियोंके पास भेजकर उनसे अपने वन्दी छुडाये। १६२३ ई०में खलखोंने फिर कल्मकोंको हराया। अबतक पिछले चालीस सालोंमें खलखोंमे लामाओंका जोर बहुत बढ गया था। इसके बाद उनका प्रभाव जागन नोमेन खान द्वारा कल्मकोंपर भी पडने लगा, और जुगर खान खराखुल, दरबेतोंके थैंची तालेई और तोर्गुतोंके सरदार उर्लुकने अपने एक-एक बेटेको भिक्षु बनाया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ, कि खलखो और कल्मकोंके बीच चला आता झगडा शात हो गया।

१६३४ ई० में रूसियोंको नमक न ले जाने देनेके लिये कल्मकोंने दो हजार सेना बैठा दी। रूसी डरके मारे नही गये, तो उन्होंने तारापर चढाई कर दी, लेकिन वहासे मार भगाये गये। १६३८ ई० में रूसी कसाक यामिश सरोवरपर पहुचे, जहा कल्मकोंके साथ उनकी पचायत बैठी, जिसमें निम्न शर्तोंपर सुलह हुई—(१) हम रूसी बस्तियोंपर आक्रमण नही करेंगे, (२) शिकार और मछलीके लिये गये रूसियोंके साथ छेड-छाड नही करेंगे, (३) नमक ले जानेम कोई रुकावट नही पैदा कर, उसके ढोनेके लिये अपने पशु भी देंगे। यह एकतरफा शर्तोंकी सुलह थी, जिसम रूसियोंका ही पलडा भारी था। लेकिन कल्मक घुमन्तू ऐसी शर्तोंको माननेके लिये क्या तैयार होने लगे? सीमान्तपर उनकी लट-मार बराबर जारी रही।

बातुर थैंचीका डेरा अपनी पुरानी जगह इली नदीके तटपर पडा था, जहासे उसने सन् १६३४ ई० मे त्यानशानके दक्षिणके नगरोंपर आक्रमण किया। बातुरकी धर्मभक्तिसे प्रसन्न होकर १६३५ ई०में दलाई लामाने उसे खुङ्-थैशी और एदन-बआतुरकी उपाधि प्रदान की। उसकी रूसियोंसे भी दोस्ती थी। उसने अल्ताईके उत्तर ओब-इर्तिशके बीचकी भूमिके अपने उपराज कला थैंचीको हुक्म दिया, कि तारा (रूसी नगर)से पकड लाये परिवारोंको लौटा दो। सौ परिवार—जिसम रूसी भगोडे भी शामिल थे—हजार घोडोंके साथ रूसियोंके पास लौटा दिये गये। अब रूसियो और बातुर थैंचीमें दूतोंका

दानादान होने लगा। इस समय बातुर एक बौद्ध विहार बनवा रहा था। निश्चय ही विहार अबतक तम्बुओंमें रहे होंगे, लेकिन तम्बुओं वाले विहारोंसे तो कीर्ति स्थायी नहीं हो सकती थी, इसलिये तिब्बतके विहारोंके अनुकरणपर वह एक भव्य इमारत खडी कर रहा था। उसने यह भी देखा, कि घुमन्तूगिरीसे जीविकाका स्थायी प्रबन्ध नहीं हो सकता, इसलिये वह चाहता था, कि कल्मक खेती करें। कल्मकोंकी एक प्रधान बस्ती थी कुबकसरी। बातुर अपना अधिक समय दे अपने देशको सुन्दर तथा खेती द्वारा समृद्ध करनेमें लगा था। १६४० ई०में नौ सौ रूबल (चांदी)के रेशम और दूसरे कपडे मास्कोमे उसके लिये भेजे गये। थैंचीके कहनेके अनुसार वोयवोदको हुक्म मिला था, कि साइबेरियासे सूअर, मुर्गे और कुत्ते भी भेजे जायं। इससे मालूम होता है, कि बातुर अपने लोगोंके आर्थिक ढांचेमें परिवर्तन करना चाहता था।

रूसियोंके कारण बातुर थैंचीका बढाव उत्तर (साइबेरिया) में नहीं हो सकता था, और पूर्वमें चीनके कारण भी आगे बढनेकी गुंजाइश नहीं थी, इसलिये उसका ध्यान अपने पश्चिमके किर्गिज-कजाकोंपर ही जाना स्वाभाविक था। १६४५ ई० में उसने कजाकोंके सबसे बडे खान इशिम खानको हराया, और उसका पुत्र यगिर सुल्तान कल्मकोंके हाथमें पडा। लेकिन वह जल्दी ही उनके हाथसे निकल भागा और शक्ति संचय करके १६४३ ई० में उसने बातुरको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। पर इस हारका कोई स्थायी प्रभाव नहीं पडा। इसी समय बातुरका प्रधान शिविर इमिल नदीके तटपर कुबकसरीमें था। यहींपर रूसी राजदूत इलिन उससे मिला। लौटते समय बातुरने पत्र देकर इलिनके साथ अपने दो दूत कर दिये। बातुरके पत्रमें लिखा था —

"परमभट्टारक महाराज (जार)को बगतिर खुङ्ग थैंची अभिनन्दन करता है। हम अच्छी तरह हैं, और जानना चाहते हैं कि आप कैसे हैं। आप महाराज, और मैं खुङ्ग थैंची अबतक शांतिके साथ रहे हैं। आप मेरे पिता हैं और मैं आपका पुत्र। दूरतम देशोंके लोग हम दोनोंके पारस्परिक अच्छे बर्ताव और सौहार्दको सुन चुके हैं। मेरे और आपके लोग साथमें व्यापार करते हैं, और एक दूसरेको नहीं लूटते, न एक दूसरेसे लडते हैं, बल्कि दोनोंके बीचमें शांति है। लेकिन आपके लोगोंने हमारी प्रजापर करसागलेनमें तोम नदीके तटपर आक्रमण किया, और उनमेंसे कुछको बंदी बनाया। अगर महाराज, आपको यह बात मालूम है, या आपकी आज्ञासे ऐसा किया गया, तो बिना मुक्ति-धन लिये बंदियोंको लौटा दो। अगर ऐसा नहीं हो, तो अपराधीको हमारे पास जुर्माना देनेके लिये मजबूर करो। आपके आदमी हमारे हरएक बंदीके लिये चार सौ सबले (समूरी छाल) मांगते हैं, चाहे वह दस सालका बच्चा ही क्यों न हो। यदि आप कृपा करके उन्हें बिना मुक्ति-धनके छोडनेकी आज्ञा नहीं देंगे, तो हमारी मित्रता खतरेमें पड जायेगी। हम आपके पास २ पातरकी छालें, ६ रुरथी (धनुधरोंके कामका मोटा चमडा), और दो घोडे भेज रहे हैं, जिनके बदलेमें हम एक कवच, एक बन्दूक, चार लडनेवाले मुर्गे, आठ लडनेवाली मुर्गियां चाहते हैं। यदि परमभट्टारक, आपको किसी चीजकी जरूरत हो, तो पत्रमें लिखें। हमारे दूतोंको मास्को जानेकी इजाजत मिले, जिसमें वह अपने घोडोंको साथ ले जा सकें।" इस समय जुंगारियामें अकाल पडा हुआ था, जिसके कारण बहुतसे कल्मक बरेबास्तेपीमें साइस्सननोर (श्रेष्ठ सरोवर)में मछली मारकर गुजारा कर रहे थे। इसके पहले इस सरोवरका नाम कीसलपू-नोर था।

शिकायतोंका कुछ भी फल न देखकर १६४९ ई० में खुङ्ग थैंचीके प्रतिनिधि कुला थैंची-पुत्र सकिलने तोम्स्क जिलेपर आक्रमण करके सगर्स्का गांवको उजाड दिया। अगले साल रूसियोंने कप्तान कल्पकोफको शिकायत करनेके लिये बातुरके पास कुबकसरीमें भेजा। उस समय बातुर यहां पत्थरोंकी इमारतोंवाले एक नगरके बनानेमें लगा हुआ था। बातचीत करनेपर मालूम हुआ, कि पहले रूसियोंने आक्रमण किया था। कल्पकोफके साथ फिर बातुरने अपने दूतोंको भेजकर दो बढई, दो राजगीर, दो लोहार, दो बन्दूक बनानेवाले मिस्त्री, एक तोप, कुछ सोनेके आभूषण, बीस सुअरियां, पांच सूअर, पांच लडाईके मुर्गे, दस लडाईवाली मुर्गियां और एक घंटा मांगा था।

बातुर थैंची बिखरे कल्मकोंको एकताबद्ध करके कल्मक साम्राज्यका संस्थापक तथा जबदस्त विजेता ही नहीं था, बल्कि उसकी जैसी प्रतिभा घुमन्तुओंमें मुश्किलसे पाई जाती थी। अकालोंके

अल्ताईके उत्तरमें रहनेके कारण बातुरके कल्मकोंको उनगे एरियोत (ओइरोत) भी कहा जाता था, और दाहिनेकी ओर प्रयाण करनेके कारण जुगर—मंगोनगर—या वामपक्ष भी। बातुरने तोर्गुतोंके राजा उलुककी लड़की ब्याही थी, लेकिन पीछे उर्लुकसे झगड़ा हो गया, जिसके कारण भी तोर्गुत पश्चिमकी ओर प्रयाण करनेके लिये मजबूर हुये। करा-इर्तिशकी उपत्यकामें बातुरके रूसी तथा खलखा पडोसी हुये। रूसी अजनब साइबेरियाके खानोंकी शक्तिको छिन्न भिन्न कर चुके थे। ताराके आसपासके बराबिन्स्की तथा दूसरे तुर्की कबीलोंपर बातुर थैंचीका दावा था। उसके आदमी १६०६ ई० में कर उगाहनेके लिये इस इलाकेमें गये, तो रूसियोंने विरोध किया, लेकिन वह उन्हें वहाँसे भगा नहीं सके। अगले साल करमकोंने कुचुमके पुत्रोंको साथ ले तारासे पश्चिमकी ओर बढते हुए तोबोल्स्क, त्यूमन आदि जिलोंपर भी हमला किया। तारा-उपत्यकाके निवासी इर्तिशके मैदानोंसे नमक लाकर सारे देशमें बचते थे। १६१० ई० में कल्मकोंने नमककी खानोंको दखल कर लिया। इसपर तारतारा और दूसरे कबीलोंने लड़नेकी तैयारी की, लेकिन जब १६१३ ई० में नमककी खान उन्हें मिल गई, तो झगड़ा खतम हो गया। १६१५ ई० में बातुर थैंची (खराखुल तैंची ?) के दूत तारा गये। और अगले साल थैंची, बातुर और कई दूसरे थैंचियोंने तोबोल्स्कसे आये रूसी कसाकोंके सामने जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली, लेकिन यह शपथ नाममात्रकी थी। कल्मकोंने छेड़-छाड़ जारी रक्खी, और १६१८ ई०में इर्तिश और तोमोलकी बीचकी भूमिमें सिबिर खानके पुत्रोंके साथ आये कल्मकोंको रूसियोंने हराकर उनके सत्तर ऊँट और एक बक्सी (भिक्षु)को पकड़ लिया, जिसे पचास घोड़ा देनेपर छोड़ा गया।

१६२० ई० में बातुर तैंची (?) खराखुलने अल्तन खान खलखाकी राजधानीको दखल किया, जो कि उबसा सरोवरके ऊपर थी, लेकिन खलखोंने जल्दी ही कल्मकोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें हरा दिया। कल्मक तैंचीको अपने एक पुत्रके साथ ओबकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पड़ा। कल्मक तैंचीने चूमिश नदीके तटपर एक दुर्ग बनाया। उसके दूसरे जुगर-कल्मक इर्तिश, तोबोल आदिकी उपत्यकाओंमें चले गये। इसी समय देरबेत-मंगोल भी भागकर साइबेरियामें गये।

धीरे-धीरे बातुरका राज्य बढ़ा। किर्गिज और कजाक खास तौरसे अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर हुये। कुछ कल्मकोंने किर्गिज और कजाक बंदियोंको रूसियोंके पास भेजकर उनसे अपने बन्दी छुड़ाये। १६२३ ई०में खलखोंने फिर कल्मकोंको हराया। अबतक पिछले चालीस सालोंमें खलखोंमें लामाओंका जोर बहुत बढ़ गया था। इसके बाद उनका प्रभाव जागन नोमेन खान द्वारा कल्मकोंपर भी पड़ने लगा, और जुगर खान खराखुल, दरबेतोंके थैंची तालेई और तोर्गुतोंके सरदार उर्लुकने अपने एक-एक बेटेको भिक्षु बनाया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ, कि खलखों और कल्मकोंके बीच चला आता झगड़ा शांत हो गया।

१६३४ ई० में रूसियोंको नमक न ले जाने देनेके लिये कल्मकोंने दो हजार सेना बैठा दी। रूसी डरके मारे नहीं गये, तो उन्होंने तारापर चढ़ाई कर दी, लेकिन वहाँसे मार भगाये गये। १६३८ ई० में रूसी कसाक यामिश सरोवरपर पहुँचे, जहाँ कल्मकोंके साथ उनकी पंचायत बैठी, जिसमें निम्न शर्तोंपर सुलह हुई—(१) हम रूसी बस्तियोंपर आक्रमण नहीं करेंगे, (२) शिकार और मछलीके लिये गये रूसियोंके साथ छेड़-छाड़ नहीं करेंगे, (३) नमक ले जानेमें कोई रुकावट नहीं पैदा कर, उसके ढोनेके लिये अपने पशु भी देंगे। यह एकतरफा शर्तोंकी सुलह थी, जिसमें रूसियोंका ही पलड़ा भारी था। लेकिन कल्मक घुमन्तू ऐसी शर्तोंको माननेके लिये क्यों तैयार होने लगे? सीमान्तपर उनकी लूट-मार बराबर जारी रही।

बातुर थैंचीका डेरा अपनी पुरानी जगह इली नदीके तटपर पड़ा था, जहाँसे उसने सन् १६३४ ई० में त्यानशानके दक्षिणके नगरोंपर आक्रमण किया। बातुरकी धर्मभक्तिसे प्रसन्न होकर १६३५ ई०में दलाई लामाने उसे खुङ्-थैंशी और एरदनि-बआतुरकी उपाधि प्रदान की। उसकी रूसियोंसे भी दोस्ती थी। उसने अल्ताईके उत्तर ओब-इर्तिशके बीचकी भूमिके अपने उपराज कुला थैंचीको हुक्म दिया, कि तारा (रूसी नगर)से पकड़ लाये परिवारोंको लौटा दो। सौ परिवार—जिसमें रूसी भगोड़े भी शामिल थे—हजार घोड़ोंके साथ रूसियोंके पास लौटा दिये गये। अब रूसियों और बातुर थैंचीमें दूतोंका

दानादान होने लगा। इस समय वातुर एक बौद्ध विहार वनवा रहा था। निश्चय ही विहार अबतक तम्बुओंमें रहे होंगे, लेकिन तम्बुओं वाले विहारोंसे तो कीर्ति स्थायी नही हो सकती थी, इसलिये तिब्बतके विहारोंके अनुकरणपर वह एक भव्य इमारत खडी कर रहा था। उसने यह भी देखा, कि घुमन्तूगिरीसे जीविकाका स्थायी प्रबन्ध नही हो सकता, इसलिये वह चाहता था, कि कल्मक खेती करे। कल्मकोंकी एक प्रधान वस्ती थी कुवकसरी। वातुर अपना अधिक समय दे अपने देशको सुन्दर तथा खेती द्वारा समृद्ध करनेमें लगा था। १६४० ई०में नौ सौ रुवल (चादी)के रेशम और दूसरे कपडे मास्कोमे उसके लिये भेजे गये। थैंचीके कहनेके अनुसार वोयवोदको हुक्म मिला था, कि साइबेरियासे सूअर, मुर्गे और कुत्ते भी भेजे जाय। इससे मालूम होता है, कि वातुर अपने लोगोंके आर्थिक ढाचेमे परिवर्तन करना चाहता था।

रूसियोंके कारण वातुर थैंचीका बढाव उत्तर (साइबेरिया) मे नही हो सकता था, और पूर्वमें चीनके कारण भी आगे बढनेकी गुजाइश नही थी, इसलिये उसका ध्यान अपने पश्चिमके किर्गिज-कजाकोंपर ही जाना स्वाभाविक था। १६४५ ई० में उसने कजाकोंके सबसे बडे खान इशिम खानको हराया, और उसका पुत्र यगिर सुल्तान कल्मकोंके हाथमे पडा। लेकिन वह जल्दी ही उनके हाथसे निकल भागा और शक्ति सचय करके १६४३ ई० में उसने वातुरको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। पर इस हारका कोई स्थायी प्रभाव नही पडा। इसी समय वातुरका प्रधान शिविर इमिल नदीके तटपर कुवकसरीमें था। यहींपर रूसी राजदूत इलिन उससे मिला। लौटते समय वातुरने पत्र देकर इलिनके साथ अपने दो दूत कर दिये। वातुरके पत्रमे लिखा था —

"परमभट्टारक महाराज (जार)को वगतिर खुङ थैंची अभिनन्दन करता है। हम अच्छी तरह है, और जानना चाहते है कि आप कैसे है। आप महाराज, और मै खुङ थैंची अबतक शातिके साथ रहे है। आप मेरे पिता है और मै आपका पुत्र। दूरतम देशोंके लोग हम दोनोंके पारस्परिक अच्छे वर्ताव और सौहार्दको सुन चुके है। मेरे और आपके लोग साथमें व्यापार करते है, और एक दूसरेको नही लूटते, न एक दूसरेसे लडते हैं, वल्कि दोनोंके वीचमे शाति है। लेकिन आपके लोगोंने हमारी प्रजापर करसागलेनमें तोम नदीके तटपर आक्रमण किया, और उनमेंसे कुछको बदी वनाया। अगर महाराज, आपको यह वात मालूम है, या आपकी आज्ञासे ऐसा किया गया, तो विना मुक्ति-धन लिये बदियोको लौटा दो। अगर ऐसा नही हो, तो अपराधीको हमारे पास जुरमाना देनेके लिये मजबूर करो। आपके आदमी हमारे हरएक बदीके लिये चार सौ सवले (समूरी छाल) मागते है, चाहे वह दस सालका बच्चा ही क्यो न हो। यदि आप कृपा करके उन्हें विना मुक्ति-धनके छोडनेको आज्ञा नही देंगे, तो हमारी मित्रता खतरेमें पड जायेगी। हम आपके पास २ पातरके छालें, ६ रुत्थी (धनुर्धरोंके कामका मोटा चमडा), और दो घोडे भेज रहे हैं, जिनके वदलेमें हम एक कवच, एक बन्दूक, चार लडनेवाले मुर्गे, आठ लडने-वाली मुर्गिया चाहते है। यदि परमभट्टारक, आपको किसी चीजकी जरूरत हो, तो पत्रमें लिखें। हमारे दूतोको मास्को जानेकी इजाजत मिले, जिसमें वह अपने घोडोको साथ ले जा सकें।" इस समय जुगारियामें अकाल पडा हुआ था, जिसके कारण वहुतसे कल्मक बरेवास्तेपीमें साइस्सननोर (श्रेष्ठ सरोवर)में मछली मारकर गुजारा कर रहे थे। इसके पहले इस सरोवरका नाम कीसलपू-नोर था।

शिकायतोका कुछ भी फल न देखकर १६४९ ई० में खुङ थैंचीके प्रतिनिधि कुला थैंची-पुत्र सकिलने तोम्स्क जिलेपर आक्रमण करके सगर्स्की गावको उजाड दिया। अगले साल रूसियोंने कप्तान वलपकोफको शिकायत करनेके लिये वातुरके पास कुवकसरीमें भेजा। उस समय वातुर वहा पत्थरोंकी इमारतोंवाले एक नगरके वनानेमे लगा हुआ था। वातचीत करनेपर मालूम हुआ, कि पहले रूसियोंने आक्रमण किया था। वलपकोफके साथ फिर वातुरने अपने दूतोको भेजकर दो वढई, दो राजगीर, दो लोहार, दो बन्दूक वनानेवाले मिस्त्री, एक तोप, कुछ सोनेके आभूषण, बीस सुअरिया, पाच सूअर, पाच लडाई के मुर्गे, दस लडाईवाली मुर्गिया और एक घटा मागा था।

वातुर थैंची विखरे कल्मकोको एकतावद्ध करके कल्मक साम्राज्यका सस्थापक तथा जवदस्त विजेता ही नही था, वल्कि उसकी जैसी प्रतिमा घुमन्तुओंमे मुश्किलसे पाई जाती थी। अकालोंकि

भयसे त्राण पाने और दूसरे अभावोंको हटानेके लिये उसने अपने लोगोको स्थायी तौरसे वस जाने की प्रेरणा दी, जिसके लिये जुगारिया (कल्मक भूमि) में जगह-जगह बौद्ध विहार बनवाये। वातुर थैचीकी भारी मददसे कोकोनोरके खोसोतोंके सरदार गूशी (गुश्री) खानने तिब्बतके छोटे-छोटे राजाओं को खतम करके सारे तिब्बतको एकताबद्ध कर १६४३ ई०मे पाचवे दलाई लामाको प्रदान करके लामा राज्यकी स्थापना की। वातुर थैची १६५३ ई०मे मरा।

३ सेङ-गे, वातुर-पुत्र (१६५३–७१ ई०)

वातुरका बडा लडका सेत्सेन खान या सेङगे इरशि ऊपरी इलिश-उपत्यकामे चारण करता था। वह सेङगेका सलाहकार था। सेङगेका वापके साथ अच्छा सबध नही था। उसने कई बार पिताके रास्तेमे रुकावट डालनी चाही। पिताके मरनेके बाद यह कल्मकोका थैची बना, तो भी सौतेले भाइयोसे इसका झगडा बराबर चलता रहा, जिसमे ही वह १६७१ ई०मे मारा गया।

४ गल्दन, वातुर-पुत्र (१६७१–९७ ई०)

सेंगेके बाद उसका भाई गल्दन बोशोक्तू (बुश्तू) खान गद्दीपर बैठा। गल्दन पहले बौद्ध भिक्षु बन तिब्बतमें अध्ययनके लिय गया हुआ था। लौटकर देश आनेपर भाई सेङगे (सेत्सेन खान) से अनबन हो गई। दोनोमे लडाई हुई, और १६७६ ई० के अन्तमें सेत्सेनको ताल्की डांडे और सेइराम झीलके पास हारकर भागना पडा। गल्दनका कजाको और किर्गिजोंसे भी झगडा रहा।

तिब्बतमे लूट-मार करनेके कारण गल्दनने अपने चचा शूकेरको किजिलपू सइरसन (झील)के तटपर हराया। भिक्षुके तौरपर तिब्बतमें रहते समय इसका दलाई लामासे घनिष्ठ सबध था, इसलिये उसका प्रभाव कल्मकोपर बहुत जल्दी बढ़ा—जुगर ही नही खोशोत आदि दूसरे कल्मक कबीलोने भी इसकी अधीनता स्वीकार की, और १६७६ ई०मे वापकी तरह इसने भी खुङ-थैचीकी उपाधि धारण की। इसके समय त्यान्-शानके दक्षिण (पूर्वी तुर्किस्तान)के शासक खोजा (पीर) थे, जिनमें आपसमें झगडा लगा हुआ था। काले पहाडियोका नेता काशगरका खान इस्माईल था। उसने सफेद पहाडियोंके नेता अप्पक खोजाको देशसे भगा दिया था। अप्पक खोजा पहले कश्मीर गया। औरंगजेबको अपने धर्म-बंधुकी मदद करनेकी फुर्सत नही थी। फिर वह तिब्बतमें दलाई लामाके पास पहुचा। दलाई लामाने खोजाको काश्गर और यारकन्द दिलानेमें मदद करनेके लिये गल्दनके पास लिखा। १६७८ ई०में गल्दनने पूर्वी तुर्किस्तानको जीतकर अप्पकको अपना उपराज बना यारकन्दमे बैठा दिया, और काश्गरके खानके परिवारको ले जाकर इली-उपत्यकाके मुसलमान नगर कुल्जामे बसा दिया। तबसे जबतक (१७५५ ई०में) कि चीनियोका पूर्वी तुर्किस्तानपर अधिकार नही हो गया—अर्थात् ७७ वर्षोंके लिये—एक बार फिर पूर्वी तुर्किस्तानकी प्राचीन बौद्ध-भूमि कल्मक बौद्धोंके हाथमें जा जुगर-साम्राज्य-का अग बन गई। वहाके प्रबन्धका काम गल्दनने खोजाके हाथमे दे रक्खा था, जो प्रतिमास चार लाख तका कर भेजता था। इसी समय गल्दनने तुर्फान और खामिलको भी जीत लिया, और बुश्तू खान (बोधिसत्व राजा) की उपाधि धारण की, जिसे कि अबतक छिङ-गिसूकी सन्तान ही धारण करती थी। गल्दनने चीन-सम्राट्के पास भेट भेजी, जिसके लिये सम्राट्ने प्रति-भेटके साथ-साथ राजमुद्रा प्रदान की। १६८२ ई०में सम्राट् खाङ-सी गल्दन (गल्दन) के पास भारी भेंट भेजते हुये उसके प्रतिद्वद्वी खलखा राजा तुशियेतूको भी भेंट भेजना नही भूला। १६८८ ई०में गल्दनने खलखोंके तुशियेतू खानपर चढाई की। खलखोमे भगदड मच गई, और तूशियेतूकी बीवी और बच्चे भी तीन सौ आदमियोंके साथ जान लेकर भागे। गल्दनको मालूम हुआ, कि उसके भाई सेङ गेके मरवानेमें तुशीयेतूका भी हाथ था, इसीलिये उसने दलाई लामाके दूतसे कहा था—"यदि मैं तूशियेतू खानसे सुलह कर लू, तो मेरे भाईके खूनका बदला कौन लेगा? मने निश्चय किया है, कि अपनी सारी सेनाको ले उसके साथ चार-पाच वर्षतक लडाई करूं। मैं खलखोको नष्ट करना चाहता हू और तबतक सतोष नही लूगा, जबतक कि तूशियेतूके भाई चुपसुन तम्पा*को हथकडियो-बेडियामें अपने पैरोमें पडा नही देखूगा।"

लेकिन अब गन्दन दूसरे झगडेमें फसा। उसका भतीजा सेंड-पुत्र छेवड अर्वतन बापके सिंहासनका दावेदार था। उसने १६८९ ई०मे चचाको हराया। इस लडाईमे गन्दनके लोगोकी हालत इतनी बुरी हो गई, कि कुछने तो जीवन-रक्षाके लिये आदमीका मासतक खाया। लेकिन यह अवस्था देरतक नही रही। गन्दन यदि अपने पूर्वी पडोसी खलखोंसे लोहा ले रहा था, तो साथही उसने रूसके साथ खूब मित्रता स्थापित की थी। रूसी व्यापारी बराबर उसके राज्य (जुगारिया) में जाते रहते थे। १६८८ ई० में गन्दनने दरखन (तरखन, राजकुमार) सइस्सनको दूत बना पत्र और भेंटके साथ इर्कुत्स्क भेजा।

चीन चुपचाप यह कैसे देखता रहता, कि उसके अधीन खलखोंमे कलमकोकी ताकत अधिक बढ जाये ? इसीलिये वह बीचमें कूद पडा। रूसी अभी दूर थे, इसलिये वह अपने मित्र कलमकोकी अधिक मदद नही कर सकते थे। चीन-सम्राट् खाङ सीने बडी सैनिक तैयारी की। पहले वह स्वय सेनाका सचालक बनकर आना चाहता था, लेकिन कहने-सुननेपर अपने बडे भाई ऊ-हो-चे-यू चिङ-वाङको प्रधान सेनापति बनाया। गन्दन भी कोई ऐसा-वैसा प्रतिद्वद्वी नही था। उसने चीनकी राजधानी पेकिङसे अस्सी योजन (लीग) पर जाकर लडाई छेडी। उसके पास चीनके बराबर सेना नही थी और न तोपें ही। पहले उसके हरावलको बहुत हानि उठानी पडी, लेकिन उसकी सेना दलदलके पीछे थी, जहा चीनी सेनाके लिये पहुचना बहुत कठिन था। लडाई रात तक होती रही, और किसी निर्णयपर पहुचे बिना ही दोनो सेनायें लौट गईं। चीनने इस शर्तपर समझौता किया, कि यदि गन्दन इस बातकी शपथ खाये, कि मै सम्राट् और उसके मित्रोकी भूमि-पर आक्रमण नही करूगा, तो वह अपनी सेनाके साथ लौट जा सकता है।

गन्दनकी शक्तिको कमजोर करनेके लिये चीनियोंने उसके भतीजे अर्वतनको उसकाया। गन्दनका राज्य इस समय उत्तरमे केहल्योन नदीसे दक्षिणमें कोकोनोर सरोवरतक, और पूवमे खल्खाकी सीमासे पश्चिममें किर्गिज-कजाकोकी सीमातक फैला हुआ था। चीनी इतिहासकारो के अनुसार—"वह (गन्दन) कजाकों और तुर्कोंको प्रसन्न करनेके लिये अपनेको इस्लामका भक्त बताता था, और तूशियेतू खानके भाई *जेचुन तम्पाके प्रतिद्वद्वी दलाई लामाके पक्षका समर्थन करते हुये मगोलोंके बीचमे झगडा पैदा किये हुये था।" गन्दनने मचू सम्राट्के भक्त कोरचिन मगोलोंके सरदारके पास लिखा था—"हमारे लिये इससे बढकर अयुक्त बात क्या हो सकती है, कि जिनके ऊपर एक बार हमने शासन किया, आज उनके ही हम दास बनें ? हम मगोल है, (बौद्ध) धर्मके नीचे एकताबद्ध है, इसलिये आओ हम अपनी शक्तियोंको मिलकर उस साम्राज्यको फिर प्राप्त कर ले, जो कि हमारा है, और हमें पूर्वजोसे उत्तराधिकारमें मिला है। मै अपने विजयके लाभ, यश और आनन्दमेंसे उनको अपना भागीदार बनाऊगा, जो कि विपद्में भागीदार बननेके लिये तैयार है। लेकिन अगर कोई भी मगोल राजा—और मै समझता हू, कि ऐसे कोई नही है—ऐसे है, जो हमारे सबके एकसे दुश्मन मचुओका दास रहना चाहते है, तो सबसे पहले मेरे क्रोधके भाजन वही होगे, चीनको जीतनेसे पहले मैं उनका सत्यानाश करके रहूगा।"

अप्रैल १६९६ ई०मे एक बहुत जबर्दस्त चीनी सेनाने गन्दनके विरुद्ध प्रस्थान किया। इस सेनाके साथ जेसुइत (ईसाई) साधु गेर्बिलोन भी था। सम्राट् खाङ-सी भी सेनाके साथ था। दरबारियोंने सम्राट्को रास्तेसे लौटनेके लिये बहुत जोर दिया, लेकिन उसका उत्तर था—"मैं यह बात बिल्कुल नही करूगा। क्या मैंने अपने पूर्वजोंके सामने शपथपूर्वक अपने अभिप्रायको प्रकट नही किया ? क्या हरएक सिपाही यह नहीं जानता, कि प्रस्थान करनेसे मेरा क्या मतलब था ? क्या मेरे पूर्वजोंने खतरे और कठिनाइयोका मुकाबिला करके सिंहासनको नही प्राप्त किया ? शक्तिशाली वीरोकी सतान होकर खतरेके डरसे औरतकी तरह मै कैसे भाग सकता हू ? ऐसा आचरण करके मै कौनसा मुह लेकर अपने पितरोंसे भेंट कर सकूगा ?"

---

* जे-चुन् तन्-पा=भट्टारक शासन(धर) स्वर्गके महालामाकी उपाधि थी।

आगे जानेपर पता लगा, कि गन्दन तुला नदीके तटपर था, जहासे यह केरुलोन नदीके किनारे-किनारे लौट गया। चीनी मध्य-सेना सम्राटके नेतृत्वमे केरुलोनके किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढती दोनो ओर मग्रहित् तक गई। लेकिन, अब आदमियोंके लिये रसद और जानवरोंके लिये चारा मिलना मुश्किल हो गया, इसलिये चीनी सेनाको मुख्य नोह्रिनके उपजाऊ इलाकेमें जाना पडा। गन्दनका पीछा करनेके लिये पाच-छ हजार सैनिक छोड दिये गये थे। चीनी सेनापति चे-नाइने गन्दनको बहुत मजबूत पाया, इसलिये कुछ गोलियां दागकर वह लौट पडा। गन्दनने उसका पीछा किया, और यह ख्याल नही किया, कि दूसरा सेनापति तेयेन्कू काफी सेना लेकर उसकी ताकमे है। तो भी बडा जबदस्त मुकाबिला किया। यदि तोपचिया और बन्दूकचियाने गोले-गोलियोंकी वर्षा न की होती, तो गन्दन पराजित न होता। अन्तमे कल्मक पीछेकी तरफ भागे। तीस ली (८ मील) तक चीनी सैनिकाने उनका पीछा किया। गन्दनकी रानी गोलीकी शिकार हुई। गन्दन अपनी लडकियो, एक लडके तथा कुछ अनुचरोंके साथ भागकर पश्चिमकी ओर चला। उसके सैनिकोंने चीनी जेनरलके पास आत्म-समर्पण किया। उसके बाद गन्दनके दूतने चीन-सम्राट्के पास पहुचकर कहा—"जल्दी ही मेरा स्वामी भी खल्खाकी तरह साम्राजी सिहासनके पास आ शातिपूर्वक अधीनता स्वीकार करेगा।" खाङ-सीने चिट्ठी लिखकर गन्दनको अस्सी दिनका अवकाश दिया। लेकिन चीनी दूतोमेंसे केवल एक गन्दनके सामने जाने पाया। उस समय गन्दन खुली जगहमे पत्थरोंके ढेरपर बैठा हुआ था। उसने पोची (दूत) का अपने पास आने नही दिया। सम्राट्की शुभेच्छाके लिये धन्यवाद दे अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिये दूत भेजनेकी बात कही। कुछ क्षणोकी भेटके बाद गन्दन घोडेपर चढ़कर चला गया। चीनी दूतने देरतक प्रतीक्षा की। वह कुछ सैनिक कार्रवाई करना चाहता था, किन्तु असफलतासे निराश और भतीजेके विद्रोहसे हताश हो गन्दनने ५ जून १६९७ ई० को आत्महत्या कर ली। कहते है, छ सप्ताह पहले वह सूर्योदयके समय बीमार पडा, और उसी रातको मर गया। यह खबर छ सप्ताह बाद चीन-दरबार को मिली।

गन्दनकी योग्यताके कायल उसके शत्रु भी थे। सम्राट् खाङ-सीने स्वय लिखा था—

"गन्दन एक बडा ही दुधर्ष शत्रु था। उसने समरकन्द, बुखारा, बुरुत (किर्गिज), उरगज, काशगर, सूइरमान (? सैराम), तुर्फान और चामिलको मुसलमानोंसे ले लिया, और बारह सौसे अधिक नगरोपर अधिकार किया, जो बतलाता है, कि उसकी बाह कितनी लम्बी थी। सातो झडोंके खलखोंने व्यर्थ ही अपने एक लाख जवानोको जमा करके उसका विरोध किया। उन्हे तितर-बितर करनेके लिये गन्दनके वास्ते एक वर्ष पर्याप्त था।'

यदि अपने प्रतिद्वंद्वियोकी तरह गन्दनके पास भी बारूदके शक्तिशाली हथियार होते, या उदीयमान मचू-शक्तिके यह आरम्भिक दिन न होते, तो कौन जानता है, उसने फिर छिङ-गिस्का अनुसरण करते हुये चीनके ऊपर मगोलोकी विजय-ध्वजा न गाडी होती ?

१६८१-८३ ई०मे गन्दन सैरामपर आक्रमण कर रहा था। १६८३, १६८४ और १६८५ ई० मे किर्गिजो और फरगानियाके ऊपर उसने प्रहार किया। गन्दन प्रथम खुङ-थैची था, जिसने इलीकी उपत्यकामें चारण किया। जाड़ोमे वह कभी-कभी इर्तिशके तटपर रहता था। तुर्क जातियोंमेंसे केवल बुरुत (किर्गिज) १८ वी सदीमें इस्सिक्कुलके पास विचरण करते थे। गन्दनके भतीजे छेवङ रब्तनने १६७८ ई० मे चचाको मगोलियामें अभियान करनेके लिये गया देखकर आक्रमण किया था।

५ छेवङ-रब्तन, सेङ-गे-पुत्र (१६९७–१७२७ ई०)

छेवङ औरंगजेबके शासनके अन्तिम दस सालोंके साथ-साथ और भी बीस वर्षतक मध्य एसियाका शासक रहा। इसने अपने चचा और दादाकी सफलताओको अक्षुण्ण रखते हुये अपने राज्यमे एकता स्थापित की। चीनको अपने रास्तेमे बाधक देखकर थोडे ही समयमें छेवङ भी चचाकी तरह उसका शत्रु हो गया। तो भी पहले सत्रह सालोंतक वह चीनके साथ शातिपूर्ण बर्ताव करता रहा। १७१४ ई०मे उसने चीन-अधिकृत ह्रामीपर आक्रमण किया। चीनने आल्क (अलताऊ) तकके इलाकेको उससे मागा, जिसे छेवङने देनेसे इन्कार कर दिया। चीनके जैसे बलिष्ठ शत्रुका विरोध करनेसे पहले

छेवङ्ने जरूरी समझा, कि रूसियोको अपना प्रभु मान लें। इसी सबधमे बात करनेके लिये कल्मकोंके पास इवान चेरेदोफ १७१९ ई०में भेजा गया इससे पहले १७१७ ई०मे छोटी सी नदी खर्किन्पर मूजार्तके पास रहते हुये छेवङ्ने तोबोल्स्कके रूसी राज्यपाल वेल्यानोफके पास अपना दूत भेजा था। १७२२ ई० म रूसी कप्तान उन्कोव्स्कीने इलीके दक्षिणी तटपर खुङ्-थैंचीके शिविरमें मुलाकात की। जिस स्थानपर मुलाकात हुई, वह चारिनसे कुछ वेर्स्तपर था। उन्कोव्स्की सितम्बर १७२३ ई०तक छेवङ्के दरबार में उसके ओर्दूके साथ त्यूप और जरगलानकी उपत्यकाओमे घूमता रहा, लेकिन इसका कोई अधिक फल नही हुआ, क्योंकि १७२२ ई० में मचू-सम्राट् खाङ-सीके मर जानेके कारण अब छेवङ्को चीनियोसे उतना डर नही रह गया।

१७२३ ई० में कल्मकोने कजाकोपर भारी विजय प्राप्त करके सैराम, तुर्किस्तान-शहर और ताशकन्दको ले लिया। कप्तान उन्कोव्स्कीके अनुसार छेवङ्के पास एक लाख सैनिक थे। वह बहुत ही जनप्रिय था। वह बिना अपने सेनापतियो और सरदारोकी सम्मतिके कोई निर्णय नही करता था। खुङ् थैंचीका सौतेला भाई छेरिङ्-दोण्डुब (दीर्घायु सिद्धार्थ) उसका एक बड़ा सरदार और सलाहकार था, जो कि लेप्सा और करातलाके तटपर चारण करता था। इस समय कितने ही कल्मक भी खेती करने लगे थे। खरगोशके मुहानेके नजदीक मरतो (ताजिको) की कई बस्तिया थी। शातिकालमें चीनियोके साथ कल्मक व्यापार करते थे, रूसियो तगुतो (अम्दुओ), अन्तर्वेदियो और भारतीयोंके साथ तो वह बराबर व्यापार करते रहते थे।

१७१५-१६ ई०के जाडोमें एक कारवाके साथ स्वीडन-निवासी रेनाड कल्मकोके हाथमे पड गया। वह प्राय सत्रह साल (१७३३ ई० तक) उनके देशमे रहा। उसने उन्हे युरोपकी कितनी ही बातें सिखलाई, और उनके बारेमे भी जानकारी प्राप्त की। कल्मक-भूमिकी स्थिति और विचार के बारेमें उसने लिखा है —(१) सप्तनदका (अलाताउ), तेकुशचिख नदी तथा बलखाशकी तटभूमि, (२) उत्तरमे इलीसे कोकताल और कोकतेरेकके बीच अलतिन-एमेल और कोइबिनके बीचकी भूमि, (३) उत्तरमें केगेनके किनारेसे और चारिनसे पूर्वमें केतनेन पहाडतक, (४) ऊपरी चिलिक-उपत्यका और उसकी पासकी भूमि, (५) त्यूपाके तटमे इस्सिक्कुलके दक्षिणी तट तक पश्चिमी छोरसे उत्तरमें कोइमू और अक्सूके बीच तक, (६) महाकेबिन-उपत्यका चूके सगम करातालतक।

चचाके साथ विरोधका कारण एक यह भी बतलाया जाता है, कि उसे पश्चिमी जुगारियामें अधिकार न देकर उसके भतीजेको नियुक्त किया गया था, तथा त्यान्‌शानके पासवाले नगरोमें भी उसे कुछ अधिकार-वचित किया गया। १६९६ ई० में अबतन (रब्-तन) * के पाच सौ सैनिक तुर्फानमें थे। खामिल और आसपासका शासक उस समय अब्दुल्ला तरखनबेग था। १६९७ ई० में अब्दुल्लाने चीनसम्राट्से यह कहकर मदद मागी, कि खुङ्-थैंची हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है। अर्बतनने उसके ऊपर दोषारोप किया, कि अब्दुल्ला कल्मकोंकी सीमाके भीतर घुसकर गन्दनके पुत्र छेरतन पल्जोर † (सेप्तेन बल्जुर) तथा दूसरे जुगरोको भी पकड ले गया, और हमारे दूतोको रोके रक्खा। चीनने अब्दुल्लासे माग की, कि गन्दनके पुत्रको दिखलाओ और हमारे दूत तथा बदियोको तुर्फान लौटा दो। अब्दुल्लाने कैदियोको चीन भेज दिया, जिनमेंसे सत्तर आदमियोको वहा जेलमें डाल दिया गया।

रब्तन कैसे पसन्द करता कि चचाके समयसे उसके करद लोग चीनकी छत्रछायामें चले जाय ? बहुतसे छोटे-छोटे राजाओने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। अर्बतनने तत्सीलाको हराया, जिसमें उसे चेरेन सन्लुप (छेरिङ् सम्डुब्) गन्दन-पुत्र, चोनसी हाई (गन्दन-पुत्री), गन्दनकी स्त्री कुलीन और गन्दनकी चिताभस्म भी मिली। चीन-सम्राट् देख रहा था, कि छेवङ् फिर चचाकी तरह जुगरोको एकताबद्ध करनेमें सफल हो रहा है। उसने रब्तनको रोकना चाहा, और पहले रब्तन को विजयमें प्राप्त वस्तुओको अपने पास भेजनेके लिये लिखा। रब्तनका जवाब था— 'लडाई अब समाप्त हो गई, इसलिये घावोको भूल जाना चाहिये। हमें पराजितोपर दया करनी

---

* रब्-तन=प्रशासन (तिब्बती)

† महाशासन श्रीयोगी (तिब्बती)

चाहिये । उन्हे नष्ट करनेका ख्याल ववरोचित होगा, मानवताका यह प्रथम विधान है, जिसे कि एलियोतो (ओइरोतो) ने सदा पवित्र मानकर पाला है।" रब्तनने गन्दनके लडके और पत्नीको भेज दिया, लेकिन लडकीके बारेमे कहा—'ओइरोतोमे कायदा नही है, कि अपने शत्रुओकी लडकीसे बदला ले । और गन्दनकी चिताभस्मसे सम्राटके विजयमे कोई वृद्धि नही होगी ।' इसके बाद चीनसे कई दूत आते-जाते रहे । बहुत दबाव पडनेपर उसने गन्दनकी चिताभस्म और उसकी पुत्रीको चीन भेज दिया । सम्राटने भी अपने पुराने शत्रुकी संतानके साथ बडी उदारता दिखलाई, और दोनों बहिन-भाइयोको क्षमा कर दरबारमे उन्हे ऊचे पद दिये ।

अपने पश्चिमी पडोसिया किर्गिज-कजाकोंके साथ रब्तनने भयकर युद्ध जारी रखा। १६८८ ई० के अपने एक पत्रमे रब्तनने सम्राट् खाड-सीको लिखा था, कि कमे गन्दनने तवक्कल तुकके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दिया था । लेकिन मने उसके बापकी प्रार्थनापर पाच सौ आदमियोके साथ उसे लौटा दिया, और केवल पाच सौ कृतघ्नोको ही मारा । लेकिन ये कृतघ्न मेरे प्रदेश हुलीजन हानपर चढ़ाई करके सौ परिवारोको पकड ले गये। मेरे ससुर आयुका खानने मेरी बीबीको मेरे साले सन्तिसत-चापूके साथ जब मेरे पास भेजा, तो तवक्कलने उन्हें पकडनेकी कोशिश की। उसने रूससे लौटते वक्त हमारे कारवाको भी लूटना चाहा । रब्तनके पास कजाकोंके खिलाफ कारवाई करनेके कई कारण हो सकते थे, लेकिन सबसे बडा कारण था चचाकी तरह उसकी राज्य-विस्तारकी अभिलाषा । उसने किर्गिज-कजाकोंके मध्य-ओर्दूके बहुत बडे भागको अपने अधीन कर लिया, और इस्सिक्कुल-सरोवरके पास रहनेवाले बुरुतो (काले किर्गिजो) को भी जीत लिया ।

उस समय तिब्बतका गद्दीधारी (छठा दलाई लामा) उसके चचा गन्दनका आदमी था। खोशोत ल्हचन खानने उसे मार भगाया और तिब्बतमे जुगरोके प्रभावको खतम कर दिया। ल्हचनकी सफलतासे अब तिब्बतमें चीनके प्रभावके जमनेकी संभावना हो गई । इसपर रब्तनने कोकोनोरके पासवाले खोशोत मंगोलोंसे मिलकर दो सेनाये भेजी, जिनमेंसे एक सीनिङ्-फू शहर पर पडी, जहापर कि दलाई लामा नजरबन्द था, और दूसरी सेना पोतलाके विरुद्ध गई । पहली सेना को सफलता नही प्राप्त हुई, लेकिन दूसरीने जाकर ल्हासाको ले लिया । ल्हचन खानने पोतला-प्रासादमें शरण ली, लेकिन उसे पकडकर मार डाला गया । तिब्बतके बहुतसे नगर और गांव उजाड दिये गये, मंदिर लूट लिये गये, स्वयं दलाई लामाके महल (पोतला) में बहुत सालोंसे जमा होती सम्पत्तिको भी जुगरोने लूट लिया । कितने ही विरोधी लामा थैलोंमें बन्द करके ऊटोपर लादकर जुगारिया भेज दिये गये । तिब्बतकी मददके लिये आती एक सेनाको एक दुर्गम डाडेपर जुगरोने मारकर भगा दिया। १७१७ ई० या १७२२ ई० मे जुगरोकी सेनाने तिब्बतमें आकर जो ध्वस-लीला की थी, उसके चिह्नस्वरूप अब भी मध्य-तिब्बतमें बहुतसे उजडे हुये गावोकी दीवारें खडी मिलती है, जिनकी जुडाई और दूसरी स्थितिके देखनेसे पता लगता है, कि जुगरोंके इस भयंकर प्रवाहके बाद फिर तिब्बतकी वास्तुकला अपनी पूर्व-स्थितिमे नही पहुची। चचा गन्दनने जहा तिब्बतकी समृद्धि बढ़ानेकी कोशिश की, वहा उसके भतीजे रब्तनने उसके नाशमें हाथ बटाया।

रब्तनकी यह कार्रवाई चीनको पसन्द नही थी। दो साल बाद चीनने उसे दंड देनेके लिये सेना भेजी, लेकिन वह उसके हाथसे केवल तुर्फानको ही छीन पाई। इससे पहिले १७१७ ई० में करासर नदीतक चीनी सेना पहुची थी, जहापर उसे कल्मकोंसे हारना पडा। १७१९ ई० में एक दूसरी चीनी सेनाने साइसन सरोवर तक धावा मारा। सम्राट् खाङ-सीके शासनकालके अन्त (१७२३ ई०) तक चीन और जुगरोका संघर्ष जारी रहा। उसके उत्तराधिकारी युङ-चेन (शी-चुङ १७२३–३५ ई०) ने सीधे लडाईमें भाग लेनेकी जगह अपनी सेनाको हटाकर रेगिस्तानी कबीलोको आपसमे लडनेके लिये छोड दिया ।

रब्तनके शासनके अधिक समयतक पूर्वी तुर्किस्तानपर उसका वैसा ही प्रभुत्व रहा । एक बार वहांके मुसलमानोंने विद्रोह किया, जिसपर बडी संख्यामे जुगर-सेना यारकन्द पहुची, जिसका साथ काले-पहाडी नेता खोजा दानियलने भी दिया । काशगरियोको नगरका द्वार खोलनेके लिये मजबूर होना पडा। लोगोंके मनोनीत हाकिमबेगको कल्मकोने भी अपना हाकिमबेग बनाया, और

वह काशगरके खोजा अहमद तथा अपने सहयोगी दानियल खोजाको उनके परिवारोका वन्दी बनाकर इली ले गये। १७२० ई०मे रब्तनने दानियलको छ नगरोका शासक बनाकर भेजा। दानियलने अपने लिये एक लाख तका कर निश्चित किया, जब कि अप्पकके लिये हजार तका मिलना निश्चित था।

रब्तन जुगर-वशका सबसे शक्तिशाली राजा था। उसकी प्रजा उसे बहुत पसन्द करती थी क्योकि उसका बर्ताव उनके साथ बहुत अच्छा था। दलाई लामाने उसे "एर्देनी म्रिकतू बआतुर खुङ-थैशी" की उपाधि प्रदान की थी।

रूसी अठारहवी सदीके शुरूमें साइबेरियाके एक छोरसे दूसरे छोरतक पहुच गये थे। मध्य-एसियाके भी कितने ही खान उनकी अधीनता स्वीकार किये हुये थे, इसलिये इस देशके बारेमें उनको बहुत-सी झूठी-सच्ची खबरें मिली थीं। किसीने उन्हे बतलाया था, कि पूर्वी तुर्किस्तानमें सोनेकी खानें हैं। इसपर १७१४ ई०में साइबेरियाके रूसी राज्यपाल राजुल गगरिनने खुङ-थैचीके पास इस प्रदेशको लेनेके लिये इर्तिशसे यारकन्दतक किला बनानेका प्रस्ताव किया। साथ ही तोबोल्स्कमें वहासे आई सोनेकी कुछ धूल भी भेजी। जारने इस कामके लिये इवान बुखोल्जको भेजा, जो २९३२ सेनाके साथ जुलाई १७१५ ई०मे तोबोल्स्कसे ताराके रास्ते रवाना हुआ, और इर्तिशसे साढे छ वेर्स्त (१ फर्सख) पर अवस्थित यामिशकी नमकवाली झीलपर पहुचा। इस झील तथा इर्तिशके बीचमे एक छोटी-सी मीठे जलकी झील प्रयाज्नोये ओजेरो थी, जिससे एक छोटी नदी प्रयाज्नुखा निकलकर इर्तिशमें गिरती थी। इसी नदीके मुहके पास कुछ ऊची भूमिपर रूसी यामीशेफका मिट्टीका छोटा-सा किला बनाने लगे। इसकी खबर पाकर, रब्तनके भाई छेरिङ दोंडुब्ने आक्रमण किया, और रसदके कारवाको भी लूट लिया। रूसियोंके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे, तो भी उन्हे बहुत हानि उठानी पड़ी। उनके पास जब सात सौ आदमी रह गये, तो वह किला तोडकर उत्तरकी ओर लौट गये। तारासे दो सौ सतहत्तर वेर्स्त (१३ फर्सख) पर ओब नदीके मुहानेपर उन्होंने ओम्स्कया-क्रेपोस्त नामक किला बनाया। उसी साल १७१६ ई०में बुखोल्जको बुला मगाया गया, और पीतर I ने मरिगोरोफकी मातहत दूसरा अभियान यामीसेफको लेनेके लिये भेजा। पीतर I इस योजनामें विशेष तौरसे दिलचस्पी रखता था। १७१७ ई० में स्तूपिनकी अधीनतामें दूसरा अभियान भेजा गया। उसने यामीशेफमें पहुचकर बाकायदा एक मजबूत किला तैयार किया। १७१८ ई० के वसन्तमे विलियनोफने रब्तनके पास पहुच-कर उसे पीतरका पत्र दिया। रब्तनने धमकी देते हुए किला तोड देनेके लिये कहा। किलेको तोडनेकी बात तो दूर रही, स्तूपिनने १६१८ ई०में यामीशेफसे भी दो सौ अट्ठाईस वेर्स्त (३४ फर्सख) आगे इर्तिशपर एक नया किला सेमीप्लातिन्स्क (सप्तप्रासाद) बनाया। यह किला एक बौद्ध विहारके ध्वसपर बना, जिसकी नीव खोदते समय बहुतसे तिब्बती हस्तलेख मिले थे, जो युरोपमें जानेवाले सबसे पहले तिब्बती हस्तलेख थे।

पीतरको गति मन्द मालूम हुई, इसलिये १७१९ ई०के आरम्भमें उसने इस कामकी देख-भालके लिये जेनरल लिखारेफको नियुक्त किया, जो भारी सख्यामें अफसरोको लेकर मई १७२० ई० में तोबोल्स्क पहुचा, फिर सेमीप्लातिन्स्क होते ४४० आदमियोंके साथ नावोपर सैंसन झीलकी ओर बढ़ा। रूसियोंकी इस गतिविधिसे कल्मकोको सदेह होना स्वाभाविक था। रब्तनके पुत्र और उत्तरा-धिकारी गल्दन छेरिङके नेतृत्वमें बीस हजार कल्मक प्रतिरोधके लिये जमा हुये। दोनो पक्षोकी सख्यामें बहुत अन्तर था, लेकिन रूसी आधुनिक हथियारोंसे सज्जित थे। उनके पास बहुतसी छोटी-छोटी तोपें थीं, जब कि कल्मकोंके पास सिर्फ तलवार और तीर-धनुष थे। तीन दिनकी लडाईमें एक रूसी मरा और तीन घायल हुये, जब कि कल्मकोकी भारी क्षति हुई। अन्तमें दोनोमें समझौता हो गया। सेमीप्लातिन्स्कसे १८१ वेर्स्त (३० फर्सख) पर एक झीलके पास ऊची जगहपर लिखारेफने उस्तका-मेन्नेगोर्स्कया नामका किला बनाया। लेकिन, यारकन्द की सोनेकी भूमिमें पहुचनेका यह प्रयत्न यहीं खतम हो गया। पीतर I के बाद फिर किसीको उसके लिये दिलचस्पी नहीं हुई।

शासन व्यवस्था—रूसी दूत उन्कोस्कीने १७२२ ई०में कल्मकोकी शासन-व्यवस्थाको देखा था। उसने लिखा है, कि खुङ-थैची (महाराजा) के बाद सबसे बडा दर्जा सइस्सनका था, जिस पदपर उस समय राजकुमार छेरिङ दोण्डुब् था। इसके बाद एक परिषद् (सर्गा) थी, जिसके सदस्य

थे—सइस्सन, सम्डुब वआतुर, शरातम्जिन, सङ-जी फुनछोक, मोद्वा, वतुमसी, जिम्बिल, सनजब, वसुन, बक्सीगिर तथा पारिषत्के नमिश्का तखन जारुवलू और खुदनेशीरा सचिव सोलम्दर्क्सा। इसके देखनेसे मालूम होगा, कि कल्मकोके ऊपरी शासन-यत्रम बहुसख्यक मुसलमान प्रजाका कोई आदमी नही था।

उ ज—पिछले तीस वर्षोमे जुगारियाम खेतीमे बहुत प्रगति हुई थी। सदाके घुमन्तू ये मगाल अपने एक हूण पूर्वजकी तरह अब खेतीकी महिमा अनुभव करने लगे थे। अकालोने बतला दिया, कि ऐसे समयम अधिक समयतक जमा रक्खे जा सकनेवाले अनाज ही अधिक सहायक होते ह। उस समय भी यहा गेहू, जौ, चावल और बाजरा प्रधान फसलें थी। फलोम सेब, लाल-सफेद अगूर, खूबानी, तरबूजा-खरबूजा, बडे कुम्हडे आदि होते थे। अल्मा-अता (सेवका बाप) के नामसे प्रसिद्ध आजका नगर इसी भूमिमे है, जहाके सेब अच्छे होते थे। इली और चूकी उपत्यकायें बहुत पहलेसे ही कृषि और बागबानी मे प्रधानता रखती थी, इसे हम शकाके कालमे भी देख चुके है।

ग्राम्य पशुओमें घोडा, ऊट, बैल, बडी भेंडे, बकरिया और खच्चर मुख्य थे, जो अभी भी कल्मकोंके सबसे बडे धन थे, क्योंकि किसानी-जीवनकी अपेक्षा अभी भी वह पशुपालोंके जीवनसे अधिक प्रेम रखते थे।

दस्तकारियोमे ऊनी कपडे और चमडेका काम कल्मक जानते थे, जिसमें पिछले दो पैंवियोंके शासनम बाहरके दस्तकारोने आकर अधिक उन्नति कराई। कल्मकोकी भूमिमें लोहा-ताबा प्रचुर परिमाणमे मिलता था,। यहाकी ताबे और सोनेकी खानोम तो नव-ताम्र-युगमें भी काम होता था, यह हम बतला आए ह। अब लडाइयोम तोपो और बारूदी हथियारोंसे मालूम हो गया था, कि उनके तीर-धनुष आजकलके हथियारोके सामने बेकार ह, और कुछ सौ रूसी-कसाक बीस हजार कल्मक बहादुरोको घास-मूलीकी तरह काटके रख सकते हे, इसलिये वह लोहेकी उपजकी ओर भी विशेष ध्यान देने लगे थे। वस्तुत कल्मक यदि मध्य-एसियाम साइबेरियासे विब्बतलन् पामीरके पवतो, तथा आमू और कास्पियनतक पहुचकर भी वहापर अपना एक स्थायी साम्राज्य नही स्थापित कर सके, तो उसका कारण यही था, कि वह उस तरहके हथियार नही तैयार कर सकते थे, जैसे कि रूसियो और चीनियोंके पास थे। उन्होने अगर लोहेके बनानेकी ओर ध्यान भी दिया, तो वह भी कुटीर-शिल्पके तौरपर ही उपजको सगठित करके। कल्मकोका साम्राज्य घुमन्तुओका अन्तिम साम्राज्य था, जिसे और सब योग्यता रहनेपर भी निबल हथियारोके कारण सफलता नही प्राप्त हुई। रब्तन और गन्दन दोनोने अपने लोगोंको पशुपालन युगसे कृषि-युगमें ला रखनेकी कोशिश की, लेकिन वह अपने समसामयिकोकी तरह लौह-युगमें नहीं आ सके।

कहते है, उसकी जुगर-सेनाने तिब्बतमें लामाओ और मठोके साथ जो अत्याचार किये थे, उसीके कारण कितने ही लोग असतुष्ट हो गये थे, और रब्तन उन्हीके षड्यत्रका शिकार हो १७२७ ई०में मारा गया।

६ गल्दन (गन्दन) II छेरिङ, रब्तन-पुत्र (१७२७–४५ ई०)

रब्तनके बाद उसका पुत्र गल्दन (गन्दन) छेरिङ गद्दीपर बैठा। इसके समयमें भी कई रूसी राजदूत आये, जिनमें उगूरिउमोफ उसके साथ-साथ १७३२-३३ ई०में जहा-तहा घूमता रहा। अप्रैल और मईमें छेरिङका ओर्दू निम्न इली उपत्यकामें कोजितेरमें था। मईके अन्तसे सारी गर्मियोमें वह तेमिरलिक, चेगेन, करकर और तेकेसमें घूमता रहा। सितम्बरसे मार्चके अन्ततक सारे जाडोमें वह इली तटपर रहा। छेरिङकी भी खलखा-मगोलोंसे लडाई जारी रही, लेकिन दलाई लामाने अपने दोना धर्मानुयायियोमे इस खून-खराबीको पसन्द नही किया, और १७३४ ई०में उनके बीचमें पडनेसे लडाई बन्द हो गई। छेरिङने मचू-सम्राट् चिन्येन-लुङ (काउ-चुङ १७३५-९५ ई०) की अधीनता स्वीकार की, यह जुगर-साम्राज्यके लिये अच्छा ही हुआ। १७४५ ई०मे छेरिङके मरनेके साथ जुगर-साम्राज्यकी समृद्धिका समय खतम हो गया।

७ बायन बीजिगन, अदसान खान, छेरिङ-पुत्र (१७४५ ई०)

बायन १७३३ ई०में पैदा हुआ था, और अभी वारह ही सालका था, जब कि उसे वापकी गद्दी मिली। इस अवस्थामें भी वह भारी अत्याचारी, जिससे जनतामें अप्रिय हो गया, इसका कोई अर्थ नहीं है। हां, उसका चचा दोर्जे (दर्गा) लामा गद्दीका अभिलाषी था, लेकिन रखेलीका पुत्र होनेके कारण उसे वंचित कर दिया गया था। दोर्जेको बुखारा और किर्गिजोके इलाकोमें बड़ी जागीर मिली थी। उसने सरदारोको मिलाकर षड्यंत्र किया और बायनको पकडकर उसकी आखें निकलवा पूर्वी तुर्किस्तान (सिङक्याङ) के एक नगरमें कैद कर दिया। सभी मैसन (राजकुमार) तथा बहुतसे जुगर तथा लामा दोर्जेके साथ थे।

८ छेवङ दोर्जे, दरशा लामा, गन्दन छेरिङ-पुत्र (१७४५–५० ई०)

दोर्जे लामाके गद्दीपर बैठनेसे तिब्बतके दलाई लामा भी बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने इसे "एरदेनी लामा बातुर खुङ थैची"की पदवी प्रदान की। दोर्जे लामाकी बातुरी (बहादुरी) थी अपने वंशके सभी राजकुमारोको मारकर सिंहासनके सारे खतरोको खतम कर देना। वैसे जुगर राजवंशमें बुढापेके लक्षण पहले हीसे दिखलाई पड़ने लगे थे, लेकिन दोर्जेने राज्यके सर्वनाशकी घडीको जल्दी लानेमें बहुत काम किया।

९ दावा छेरिङ, सेङ-गे-वंशज (१७५०–५५ ई०)

जुगर राजाओंके नाम प्राय सभी तिब्बती भाषाके बौद्ध हैं। दावा छेरिङका अर्थ है, 'चन्द्र दीर्घायु'। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि आजकलकी तरह उस समय भी खलखा, जुगर (कलमक) और दूसरे मंगोल बौद्ध-धर्मको अपना जातीय धर्म मानने लगे थे, और तिब्बतके महन्तराज दलाई लामा का इनके ऊपर बहुत प्रभाव था।

दावा रब्तनके भाईका पोता था। अधिकांश जुगरोने दोर्जे लामाको नहीं माना था। रब्तनके वंशको दोर्जेने मारकर खतम कर दिया था, लेकिन उसके भाई छेरिङ दोण्डुबकी सतानें अभी मौजूद थी। दावाने तिब्बत आदिके अभियानोमें सेनाका सचालन किया था, इसलिये अपनेको गद्दीके योग्य समझता था। खोयेत कबीलेके सरदार अमुरसनाने भी दावाके पक्षका समर्थन किया, लेकिन दोर्जे लामा बहुत मजबूत था। उससे हारकर दावा और अमुरसानको कजाकोके भीतर भागना पड़ा, लेकिन जुगरोमें उनके समर्थक कम नहीं थे। जुगरों और कजाकोकी मददसे अचानक एक रातको दावाने हमला कर दिया। लड़ाईमें दोर्जे लामा मारा गया, और दावाने गद्दी सभाल ली। अमुरसना अपनी दूसरी ही योजनायें रखता था। वह गर्मियोंमें इली-तटपर तम्बुओं और राजकीय झडेको गाडकर दरबार करता। दावा एक म्यानमें दो तलवारोको कैसे पसन्द करता? उसके आक्रमण करनेपर अमुरसना चीन भाग गया, और कुछ समयके लिये दावा सारी जुगारिया और पूर्वी तुर्किस्तानका भी खान हो गया। दावाने छेरिङ द्वारा नियुक्त काश्गरके शासकको इली प्रदेशमें रहनेके लिये मजबूर किया, लेकिन वह बहाना बनाकर काश्गर पहुंच वहा लड़ाईकी तैयारी करने लगा। उधर काश्गरी नेता यूसुफने काफिरोंका जूवा उतार फेंकनेके लिये लोगोंको उस्काया—"इलाकेके नगरद्वारोंपर बाजे बजे, और अपने देशकी स्वतन्त्रताको फिरसे प्राप्त करनेके निश्चयके लिये लोगोंने शपथ खाई।" खोजा यूसुफ एक कट्टर मुसलमान था। उसने लोगोंके सामने सुझाव रक्खा, कि नगरके पड़ोसमें डेरा डालकर पड़े हुये तीन सौ कलमक व्यापारियोको मुसल्मान बना लेना चाहिये। अगर वह इन्कार करें, तो उन्हें मार डालना चाहिये। उन्होंने उनके साथ ऐसा ही किया, और कसाकान (पुलिप अफसर) के तौर पर काम करनेवाले जुगरोको खानके पास भेज दिया। यारकन्दमें कलमकोकी तरफसे नियुक्त शासक हाजीबेगने आंखोंमें आंसू और सिरपर कुरान रखकर क्षमा मांगी, और लोगोंने उसे क्षमादान दे दिया। जब लोगोंने उसे जुगरोंके दूत और अनुचरोको मार डालनेकी बात कही, तो उसने जवाब दिया—"काफिरको सिर्फ युद्धमें मारा जा सकता है।" एक मजबूत पहरेमें कलमकोको शहरसे बाहर

भेजकर उसने हुक्म दिया, कि तुम फिर इस देशमें न आना। खोजा यूसुफने अन्तर्वेदके नगरों—खोकन्द, बुखारा, समरकन्द आदि—से काशगरियाके स्वतंत्र होनेकी खबर देते हुए सहायता मांगी, अन्दिजानके किर्गिज सरदार किबन मिर्जासे भी मुसलमानोंकी सहायता करनेके लिये कहा।

दावासे हारकर भागा अमुरसना चीन-दरबारसे पहुँचा था। उसने अपनेको सिंहासनका वास्तविक अधिकारी प्रमाणित किया। सम्राट्ने उसे च्वाङ-चिन्-वाङ (प्रथम श्रेणीके राजकुमार)की उपाधि प्रदान कर लफ्टनेन्ट-जेनरल (उपमहासेनापति) नियुक्त किया। १७५५ ई०में चीनी सेना लेकर अमुरसना प्रस्थान किया। सेनाको मुश्किलसे कहीं धनुष खींचनेकी अवश्यकता पड़ी होगी। सभी जगह लोग अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार थे। दावा अपने तीन सौ अनुचरोंके साथ मुजार्त डांडेसे होकर उश-तुर्फानकी ओर भागा, लेकिन शहरके हाकिम हाजिमबेगने उसे पकड़कर चीनियोंके हाथमें दे दिया, जिसके लिये हाजिमबेगको "वाङ" (राजकुमार) की उपाधि प्राप्त हुई।

१० अमुरसना, बातुर-वंशज (१७५५–५७)

दावाके गद्दीपर बैठनेके समय भी अमुरसना अपनेको कलमकोंका राजा समझता था। १७३४ ई० में वह कजाकोंकी मददसे, एमिल और ऊपरी इर्तिशकी भूमिको लेनेमें सफल हुआ था।

चीनी सेनाके साथ आकर अमुरसनाने समझा, कि जुगारियाको जीतकर चीनी उसे सारा अधिकार सौंप देंगे। लेकिन उसकी यह आशा सफल नहीं हुई। दावा और छेरिङको पकड़कर पेकिंग भेज दिया गया था। अमुरसनाको पता लगा, कि उसके साथ भी मंचू-सम्राट् मेरे ही जैसा बर्ताव कर रहा है। असलमें चीनने दावाको अपने हाथमें एक बड़ा हथियार बनाकर रख छोड़ा था, जिसमें कि अमुरसनाके जरा भी विरोध प्रकट करनेपर उसे इस्तेमाल किया जाय। लेकिन दावा बहुत दिनोंतक नहीं जिया। हाथसे निकल गये पूर्वी तुर्किस्तानको अमुरसनाने फिरसे लेना चाहा और थोड़ेसे संघर्षके बाद उसके कितनेही भागोंको फिर अपने हाथमें कर लिया। चीनी अमुरसनाको कठपुतली बनाकर रखना चाहते थे। इसका विरोध करते इलीमें पड़ी हुई छोटी-सी चीनी सेना और उसके जेनरलको अमुरसनाने मार डाला। इसपर चीनसे नई सेना आई। एकाध बार झड़प हुई। अमुरसनाने देख लिया, कि उसके लिये चीनी सेनाका सामना करना आसान नहीं है। १७५७ ई०में—जिस सालमें अंग्रेजोंने पलासीकी लड़ाई जीतकर भारतमें अपने राज्यकी दृढ़ नींव रक्खी—दो चीनी सेनाओंने आकर जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया। इनमेंसे एक उत्तरके रास्ते आई, और दूसरी दक्षिणके रास्ते। कलमकोंमें उस वक्त आपसमें भारी फूट थी, तो भी अमुरसना हिम्मत करके इलीकी ओर बढ़ा। लोगोंको बड़ी संख्यामें अपने झंडेके नीचे आते देखकर उसे बहुत उत्साह मिला, लेकिन जब चीनकी अपार सेनाको देखा, तो उसके होश उड़ गये, और वह कजाकोंकी ओर भागा। जेनरल चाउ-होइने कुछ सैनिकोंको पीछा करनेके लिये छोड़ जुगारियापर चीनी शासनको व्यवस्थापित करना शुरू किया। दूसरा चीनी सेनापति फू-ते अमुरसनाका पीछा करते हुये कजाकोंमें पहुँचा। कजाकोंने चीनकी अधीनता स्वीकार की। कजाक-खान अबले उसे पकड़कर चीनको देना चाहता था, इसलिये अमुरसना वहांसे लोचा (साबेरिया)की ओर भागा। एक बार चीन-सम्राट्को दरबारियोंने कहा—"इली प्रान्तको बिल्कुल छोड़ दिया जाय। हमसे यह बहुत दूर है। वहाँ जाकर शासन करना आसान नहीं है, इसलिये जिसकी इच्छा हो वह उसे ले ले।" चीन-सम्राट्ने इस सलाहको नहीं माना, और चाउ-होइ तथा फू-तेको युद्ध जारी रखते शासनको दृढ़ करनेका हुक्म दिया। अमुरसना अन्तमें साइबेरियामें कुछ समयतक मारा-मारा फिरा, लेकिन इस आफतसे चेचकने उसे जल्दी ही (१७५७ ई०)में छुटकारा दे दिया। हम बतला आये हैं, कि अमुरसना और उसके अनुयायियोंको साइबेरियामें शरण देनेके कारण रूस और चीनके सबंधमें खिंचाव पैदा हो गया था। जब रूसियोंने कहा, कि अमुरसना मर गया, तो चीनने उसके शवको मांगा, शव न होनेपर चिताभस्मका भेजनेके लिये कहा। रूसियोंने चीनी अमात्यको अमुरसनाके चिताभस्मको दिखला दिया, किन्तु उसे अपमानपूर्वक बिखेरनेके लिये देनेसे इन्कार कर दिया—"हरएक जातिके अपने रीति-रवाज होते हैं, जिन्हें वह पवित्र मानती है। जिस अभागे व्यक्तिने हमारे पास शरण ली, वह तुम्हारा दुश्मन मर चुका है। हमने उसके शरीरा

वषोषको दिखला दिया, इससे अधिक हम कुछ नही कर सकते ।" रूसकी भूमिमे पहुचनेसे पहलेही अमुरसनाकी बीवी बीतेइ—जो गन्दन छेरिङ्की पुत्री भी थी—पतिसे आ मिली थी । पतिके मरनेके बाद उसे पीतरबुग भेज दिया गया ।

मचू सैनिकोने बडी निष्ठुरतापूर्वक कल्मकोका सहार किया । उनके अत्याचारोंके कारण इलीकी सुन्दर उपत्यका उजड गई, जहा चीनियोने अपने कैदियोंके लिये कालापानी स्थापित किया । पाच लाखके करीब ओइरोत (कल्मक) चीनियोंके हाथो मारे गये । उनका तहस-नहस करनेके बाद चीनो सेनाने आगे भी अपनी दिग्विजय जारी रक्खी । १७५६-५८ और १७६० ई०में चीनी सेना कजाकोके मध्य-आर्दूकी भूमिमें घुसी । अवलै खानने चीनियोके सामने अधीनता स्वीकार की । उसके बाद लघु-ओर्दूके सरदार नूरअलीने भी चीनियोको अपना प्रभु माना । बूरुत (किर्गिज) सरदारोने भी उनके सामने सिर झुकाया । १७६६ ई०में चीनने अवलैको वाङ (राजा)की उपाधि दी । अब मध्य-एसियामें सब जगह चीनियोकी जय-दुदुमी बजने लगी । नूरअलीने भेंटके साथ अपने दूतमडलको पेकिंग भेजा । खोकन्दके खान एदेनिया बीने भी १७५८ ई०मे वही काम किया ।

जुगर-साम्राज्यके विच्छिन्न होने और चीनियोद्वारा पाच लाख कल्मकोंके मारे जानेपर जनशून्य सप्तनद भूमिमें फिर कजाक और किर्गिज लौट आये, और कुछ समयतक वह चीनकी प्रजा बने रहे । पीछे सप्तनदका बहुत भाग रूसियोने ले लिया, और सिर्फ ऊपरी इली-उपत्यका चीनके भीतर बनी रही ।

३ (६ ख जुगर-वंशवृक्ष)
(१५८२-१७५७ ई०)
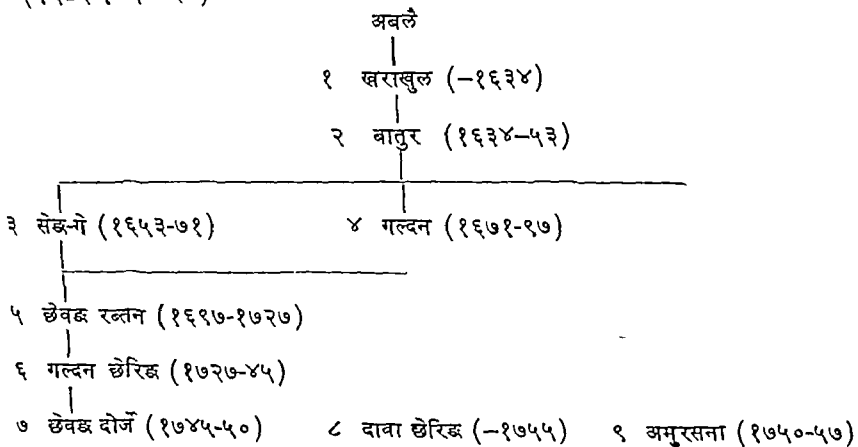
स्रोत ग्रन्थ

१ ओचेक इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व व बर्तोल्द)
२ History of Mongol (H H Howorth)

वोल्गा-कल्मक

(१६१६-१७७१ ई०)

हम कह आये है कि कैसे १६२० ई०में कल्मकोंने खलखा मगोलोंके हाथों भयकर हार खाई, और उन्हे पश्चिमकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पड़ा। उन्हीका एक भाग नोगाइयोकी भूमि होते पश्चिमकी ओर बढा। इनके नेता उर्लुक (तोर्गुत राजा), और उसके पुत्र दै-शिङ्ने १६३३ ई०में नोगाई-विद्रोही सल्तानियासे मिलकर कन्हार्डगर चढ़ाई की, जिसपर मास्कोने तोबोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी कमाडरोको कल्मकोंके दबानेके लिये हुक्म दिया। इस प्रकार कल्मकोको साइबेरियासे हटना पड़ा। यही उर्लुक वोल्गा-कल्मको या तोर्गुत-मगोलोका प्रथम शासक था। वोल्गाके कल्मकोकी राजावली निम्न प्रकार है —

१	खुङ्ग थैची उर्लुक, सुलसेगा-पुत्र	१६१६-४३ ई०
२	दै-शिङ्, उर्लुक-पुत्र	१६४३-५६ "
३	फुन्-छोग्, दै-शिङ्-पुत्र	-१६७२ "
४	आयुका, फुन्-छोग्-पुत्र	१६७२-१७२४ "
५	छेरिङ्-दोण्डुब्, आयुका-पुत्र	१७२४-३५ "
६	दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र	१७३५-४१ "
७	दोण्डुब् थैची, छग्दोर-पुत्र	१७४१-६१ "
८	उबासा, दोण्डुब् थैची-पुत्र	१७६१-७१ "

१ खुङ् थैची उर्लुक (१६१६-४३) ई०

वोल्गा-कल्मक राजवशका वास्तविक सस्थापक सुलसेगा उर्लुकका ज्येष्ठपुत्र खुङ्-थैशी (थैची) उर्लुक था। १५६२ ई०में अल्तन खानके भतीजेके लड़के खुलकताई सेसेनने एर्चिश (इर्तिश) नदीके तट पर चार ओइरोत (कल्मक) कबीलोको करारी हार दी, जिसके कारण तोर्गुतोकी शक्ति क्षीण हो गई, और जुगरो (कल्मको) की ताकत बढने लगी। १६०६ ई०में जुगरोका बड़ा सरदार बातुर बापसे अलग हो इर्तिशपर चला आया। यहापर उसका मुकाबिला तोर्गुतोंके साथ हुआ, जिसके कारण तोर्गुतोको पश्चिमकी ओर भागना पड़ा। पहले उन्होंने कूचुम खानके बेटोंके साथ मिलकर साइबेरियामें अपनी जड जमानी चाही, लेकिन रूसियोने उनकी एक भी नही चलने दी। फिर कल्मक अरब मुहम्मदके समय ख्वारेज्मके इलाकेकी ओर बढे, और उनका जब-तब ख्वारेज्मी उज्बेकोंके साथ झगडा होता रहा—इसके बारेमें हम पहले कह चुके है। १६३२ ई०में वह अपने थैची उर्लुककी अधीनतामें अस्त्राखानके आसपासमे रहते रूसी प्रतिनिधिका स्वागत करते रहे। १६३९ ई०मे तोर्गुतोने मगिशलकके तुर्कमानोको लूटा। १६४३ ई०म उर्लुकके अधीन पचास हजार किबित्का (तम्बू, परिवार) थे। १६४३ ई०में उर्लुकके खतरेको समझकर रूसियोंने हमला किया, और वह लड़ाईमें मारा गया। उर्लुकके तीन पुत्र थे—दैशिङ्, येल्दिङ् और लोञ्जङ्। बापके मरनेपर भाइयोमें भी झगडा हो गया।

२ दै-शिङ्, उर्लुक-पुत्र (१६४३-५६ ई०)

उर्लुकके मरनेके बाद उसके लोग पूरबकी ओर भागे लेकिन कुछ ही समय बाद एल्देर और लोञ्जाङ् यायिक (उराल) नदी पार हो वोल्गाके मैदानोमें चले आये। उन्होने तीन

कबीलों—किताई-किपचक, मैलेबाश और एतीसनको अपने आधीन किया, साथ ही उलान-पुमान (लाल ऊट कबीला)के तुर्कमानोंने भी इनकी अधीनता स्वीकार की, जो कि उस समय येम्बाके दक्षिणमें रहते थे। अब नोगाइयोंका अधिक भाग कलमकोंकी प्रजा था। १६५६ ई०मे ही दै शिङ और उसके पुत्र फुन-छोगने जारको अपना प्रभु स्वीकार किया।

३ फुन-छोग्, दै-शिङ-पुत्र (–१६७२ ई०)

इसके बारेमें इतना ही मालूम है, कि १६७० ई०में अधिकांश वोल्गा-कलमक इसके अधीन थे और वह ख्वारेज्मके भीतरतक लूट-मार किया करते थे।

४ आयुका थैंची, फुन-छोग्-पुत्र (१६७२–१७२४ ई०)

वोल्गा-कलमकोंका यह सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था। पीतर का समकालीन रहते हुये इतनी शक्ति सचय करना इसकी दूरदर्शिता और राजनीतिक चातुरीका परिचायक है।

१६७२ ई०में यह प्रतापी तोर्गुत (कल्मक) राजा आयुका गद्दीपर बैठा। उसके समय लघु-ओर्दूके नोगाई तथा पहाडी चिरकासी क्रिमियाके खानके अधीन थे। आयुकाने उन्हें क्रिमिया-के अधिकारसे छीन लिया, साथ ही नोगाइयोंके दूसरे दो ओर्दू कसाई और येदिसनको भी अपने यहा जामिन भेजने के लिये मजबूर किया। आयुका जानता था, कि अपने पडोसी मुसलमान कबीलोंकी शत्रुता मोल लेनेके साथ-साथ रूसमे भी बिगाड करना अच्छा नही होगा, इसीलिये उसने २६ फर्वरी १६३९ ई०में अस्त्राखानमें जाकर रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करनेका वचन दिया। लेकिन तब भी उसका वर्ताव बहुत स्वतत्रतापूर्वक होता था। रूसी डरते थे, कि तोर्गुतोंके अतिरिक्त, नोगाइयोंके भिन्न-भिन्न ओर्दू भी लूट-मारमें आयुकाके साथ सम्मिलिति हो सकने ह, इसलिये उन्होने अधिकतर साम और दानमे ही आयुकापर अकुश रखना चाहा। आयुकाने १६९३ ई०में रूसियोंकी ओरसे जाकर बाश्किरोंको जीता। आयुकाका डेरा अधिकतर कुवनस्तेपीके करातेपे स्थानमें रहा करता था। महानोगाईके थोडेसे लोगोंको छोडकर बाकी सभी नोगाई आयुकाके अधीन थे, और उनमेंसे अधिकांशने यायिक और वोल्गाकी स्तेपियोंको छोड कुवान और कुमामें डेरा डाला था—महानोगाई अब भी अस्त्राखानके आसपास रहा करते थे। १७२४ ई०में आयुकाके मरनेके समयतक नोगाइयोंकी यही हालत थी। नोगाइयोंके तम्बू मुर्गियोंके बडे टोकरेकी तरह होते थे, जिनमें नीचे गोल ढाचा होता, जिसे बीचमें धुआ निकलनेके लिये छेद छोडकर ऊटके बालोंके नम्देसे छा दिया जाता। कच्चे चमडेके टुकडोंको भी कभी-कभी नम्देकी जगह इस्तेमाल किया जाता था।

१६१३ ई०मे आयुकाने छग्दोरको अपना युवराज घोषित किया। १७२२ ई०मे जब पीतर I ईरानके विरुद्ध अभियान लेकर गया था, तो उसने अपने जहाजपर आयुका और उसकी पत्नीका सत्कार-सम्मान एक स्वतत्र राजाके तौरपर किया। १७२४ ई०में मरनेके समय आयुका ८३ वर्षका था।

५ छेरिङ दोण्डुब्, आयुका-पुत्र (१७२४–३५ ई०, १७४१–६५ ई०)

आयुकाके बाद धमपाल-पुत्र छेरिङ गद्दीपर बैठा। यह बहुत ही कमजोर स्वभावका आदमी था। रूसियोंकी कृपा प्राप्त करनेके लिये ईसाई बनकर इसने अपने लोगोंकी सहानुभूति खो दी। १७३५ ई०में यह मर गया।

६ दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र (१७३५–४१ ई०) और
७ दोण्डुब् थैंची छग्दोर-पुत्र (१७४१–६१ ई०)

इनके समय कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी।

८ उबासा, दोण्डुव् थैची-पुत्र (१७६१–७१ ई०

यह एक लाख कल्मक-परिवारोका राजा था । तुर्कोके युद्धोमें इसके नेतृत्वमें कल्मक बडी बहादुरीके साथ रूसियोकी ओरसे लडे थे, लेकिन उसके बदलेमे रूसियोका वर्ताव रूखा देखकर इसने पचास वर्षसे चले आते "स्वदेश चलो"के आन्दोलनका समर्थन किया और वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार तम्बुओको छोडकर बाकी कल्मक इसके नेतृत्वमें इली उपत्यकाकी ओर चले गये ।

कल्मकोंका भागना—१७०३ ई०में आयुका खान और जुगर थैची छेवङ-रब्तनसे लडाई हुई। वर्तमान कजाकस्तानके पूर्वी भागके स्वामी जुगर थे, और पश्चिमी भागके तोर्गुत (वोल्गा कल्मक) । दोनोकी सीमा मिलती थी, इसलिये इस तरहकी लडाई स्वाभाविक थी । वोल्गाके कल्मक भी उसी तरहके कट्टर बौद्ध थे, जिस तरह उनके भाई जुगर। वह तिब्बत तथा ल्हासाको अपनी धर्म-भूमि समझकर तीर्थयात्राके लिये जाया करते थे। आयुकाका भाजा या भतीजा करा कुचिन छेरिङ अपनी माके साथ तीर्थयात्राके लिये तिब्बत गया हुआ था । लडाईके कारण देश लौटनेका रास्ता न मिलनेसे वह चीन चला गया। चीन-दरबारमें उसका बडा स्वागत हुआ। इस समय मंचुओका सबसे अधिक प्रभावशाली सम्राट खाङ-सी (१६६१-१७२३ ई०)का शासन था । सम्राटने राजकुमार कराकुचिनको उसके अनुयायियोके साथ शेन्शी प्रदेशके पश्चिमी सीमान्तपर बसा दिया। इसी बीचमें सम्राट्ने निश्चय किया, कि वोल्गाके तटपर भागे हुये मंगोलो (तोर्गुतो)को फिर देशमे बुलाया जाय। कराकुचिनसे बढ़कर इस कामके योग्य और कौन हो सकता था? नौ साल रहनेके बाद १७१२ ई०में सम्राट्के दूतके साथ वह वोल्गातटपर लौटा । उसने अपने लोगोंके सामने जन्मभूमिमें लौट चलनेका प्रस्ताव रक्खा । यद्यपि इसी समय वह लौटनेके लिये तैयार नही हुये, लेकिन यह आन्दोलन कल्मकोंके भीतर चलता रहा। चीन इस काममें तिब्बतके लामाओंसे भी सहायता लेने लगा। अन्तमें वोल्गाके तोर्गुत ओर्दूका मुख्य लामा लोब्जाङ जाजेर अरन्त शिम्बा जैसा योग्य व्यक्ति चीनको इस कामके लिये मिल गया। वह राजकुमार बम्बरका पुत्र था जिसका तोर्गुतोपर उसका बहुत प्रभाव था । पन्द्रह भिक्षु और साथ ही एक टुल्कू (अवतारी) लामा (जिसके शरीरमें किसी बडे महापुरुषने अवतार धारण किया) के साथ उसने अपने आदमियोमें बाह्य-धर्मियो (रूसियो) के देशसे स्वधर्मियोंके देश और अपने पूर्वजोकी जन्मभूमिमें लौट चलनेके लिये प्रचार करना शुरू किया । इस समय आयुकाका पौत्र उबासा तोर्गुतोंका खान था। उसने १७६९-७० ई०के तुर्की-युद्धमें रूसकी ओरसे अपने तीस हजार आदमियोंके साथ भाग ले अपनी बहादुरीका परिचय दिया था, और तुर्कोंको कई जगहोमें करारी हार दी थी। इन सफलताओंके कारण उबासाका आत्मविश्वास और बढ़ गया था, और वह हर बातमें रूसियोकी नाजबरदारी करनेके लिये तैयार नही था । जब रूसियोने दबानेकी कोशिश की, तो स्वदेश लौटनेकी बातको जोर मिलने लगा। उस समय अस्त्राखानमें रूसी राज्यपाल ब्रिस्तोफ किशिन्स्की था। उसको भनक लग गई, कि तोर्गुत चले जानेकी तैयारीमें हैं, लेकिन उसने उन्हे समझाने-बुझानेकी जगह कडे शब्दोका इस्तेमाल किया—"तुम अपनेको समझते हो, कि हम बहुत भाग्यशाली होकर अपना काम-काज करेंगे, लेकिन तुमको समझ रखना चाहिये, कि तुम जंजीरमें बंधे भालूसे अधिक कुछ नही हो। जंजीर पकडकर तुम्हें जहा ले जाया जाये, वही जा सकते हो।" तोर्गुतोको सचमुच ही एक घेरेमें डाल रक्खा गया था। उनके पूर्वमें यायिक नदीकी उपत्यकामे कितने ही रूसी किले थे, जिनमें कसाक सैनिक थे। पीतर १ के बादके रूसी जारोंके जर्मन होनेका एक फल यह हुआ था, कि बहुत काफी सख्यामें जर्मनोंको लाकर वोल्गाके दाहिने तटपर बसा दिया गया था । यह जर्मन-उपनिवेश तोर्गुतोंके उत्तरमें पडते थे । पश्चिममें क्रिमियाके तारतारोकी चोट भी कल्मकोको ही बर्दाश्त करनी पडी थी। पिछले सालोमे कुछ अकाल भी पड गया था, इन सब कारणोसे 'स्वदेश चलो' आन्दोलनको बडी मदद मिली। वोल्गाके दाहिने तटके देर्बेत कबीलेने इस योजनाको पसन्द नही किया, और प्रयाणके लिये जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन वोल्गाके न जमनेका बहाना करके उन्होने साथ नहीं दिया। सारी तैयारी इधर हो रही थी, लेकिन ब्रिस्तोफ जैसे अयोग्य शासकके कारण रूसियोने उन्हे रोकनेके लिय

कोई तैयारी नही की। कलमकोके पास दो रूसी तोपें भी थी, जिनको वह पूवकी ओर जाते समय अपने कजाक विरोधियोके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते थे। यह मालूम ही है, कि १७५७ ई०के विजयके वाद त्यान्‌शान-सप्तनद चीनियोंके हाथमें था, इसलिये तोर्गुतोको सीमान्ततक पहुचनेकी ही दिक्कत थी। आगेके लिये उन्हे बहुत-बहुत-से प्रलोभन दिये गये थे।

बड़े लामाने ५ जनवरी १७७१ ई०को प्रयाणका दिन निश्चित किया था। उसी दिन उबासा सत्तर हजार परिवारोके साथ चल पडा। उस समय अधिकाश कलमक वोल्गाके बायें तटके मैदानोमें जमा थे। सब उबासाके पीछे-पीछे चलने लगे, केवल वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार परिवार रूसमें रह गये। यह पन्द्रह हजार परिवार १९४१ ई० तक सख्यामें कई लाख हो गये थे, और उनका एक स्वायत्त प्रजातत्र भी स्थापित हो गया था, लेकिन जर्मनोंके प्रहारके कारण द्वितीय युद्धके समय इन्हे वोल्गातट छोडकर पूर्वमें अपने पूर्वजोकी भूमिमें जानेके लिये मजबूर होना पडा, जहासे वह फिर लौटकर नही आये। द्वितीय विश्वयुद्धने इस भूभागमें जो परिवनन किये, उनसे वोल्गाके जर्मन-उपनिवेश सारे रूसमें बिखर गया, और क्रिमियाके तारतार साइबेरियाकी ओर चले गये।

तोर्गुत (कलमक) हल्की चीजें ही अपने साथ ले जा रहे थे। जब आगे यात्राकी कठिनाइया मालूम हुई, तो उन्होने रूसी तावेके सिक्कोको भी फेंक दिया, जिन्हें वर्षों बाद पाया गया। तोर्गुतोको कजाकोकी भूमिमेंसे जाना था, जो उनके पुराने दुश्मन थे, और जो हर जगह लूट-मार करनेकी कोशिश करते थे। कलमकोने स्त्री-बच्चो और अपने पशुओको बीचमें रक्खा था। चारो ओर हथियारबन्द पुरुष प्रतिरक्षाके लिये तैयार होकर चलते थे। उबासा स्वय पन्द्रह हजार आदमियोंके साथ यायिकके किनारे पहुचा, जिसमें कि रूसी कसाकोसे अपने लोगोको रक्षा कर सके। आठ दिनमें तोर्गुत वोल्गासे यायिकके स्तेपीमें पहुचे। उस समय यायिकके कसाक (रूसी) कास्पियनमें मछली मारने गये हुये थे, इसलिये तोर्गुत असानीसे यायिक पार कर गये। फिर किर्गिजोकी भूमिमें बर्फपर चलना पडा। अभी नदी पार करके बहुत दूर नही गये थे, कि मित्रासोफकी अधीनतामें दो हजार कसाकोन उनका पीछा किया, और वह येका-जुखोरके एक हजार तम्बुओको लौटानेमें सफल हुये। आगे कलमकोकी कठिनाइया और बढी। बर्फ पिघलनेके कारण कीचडमें घोडो, ऊटो, पशुओका चलना मुश्किल था, ऊपरसे घास-चारेकी कमीके कारण वह बहुत दुबल होने लगे। गरीब लोगोको पैदल चलना पडता था, जब कि धनी मगोल सवारियोपर चल रहे थे। इस विषमताने भी लोगोंके हृदय में जलन पैदा की। लेकिन जैसे भी हो, अब तो उनके लिये आगे बढनेके सिवा और कोई रास्ता नही था। दो मासकी यात्राके वाद वह इर्गिच नदी पार हुये। अब उनकी यात्रा सबसे कठिन थी। वसन्तके कारग बर्फ पिघलनेसे सभी नदी-नाले भरे हुये थे, जिन्हे पार करनेके लिये उन्होने नरकटके मुट्ठोको बाधकर तैरते पुल तैयार किये थे। इर्गिच और तुरगाई नदियोके बीचमें तोर्गुतोके सबसे अधिक आदमी मरे। तुरगाई पार होकर उन्होने दोनो तोपोको छोड दिया। इसी समय रूसी सेनाके साथ जेनरल त्राउत्रेन्बर्ग ओर्स्कसे चला, किर्गिज-कजाक लघु-ओर्दूका खान नूरअली भी कलमकोके पीछे पडा। वह तुरगाईसे आगे होकर उन्हें रोकना चाहते थे, लेकिन तोर्गुत दस दिन पहले ही आगे जा चुके थे। उन्होने दूत भेजकर कलमकोको लौटनेके लिये कहा, लेकिन कलमकोने आगे जानेका निश्चय नही छोडा। इशिम नदीके तटपर पहुचनेपर उनकी अवस्था कुछ बेहतर हुई, लेकिन यहापर किर्गिज-कजाकोंसे दो बार सघर्ष हुआ। अब कगरवेइन, शर्रा-उसुनकी १५० वेर्स्त (२५ फर्सख) चौडी स्तेपी जैसी भयकर भूमि मिली, जिसमें वह तीन दिन चले। यहा पीले रगका दुस्स्वादु पानी मिला। प्याससे मजबूर होकर उन्होंने उसे पिया, जिसके कारण बीमार होकर कई सौ आदमी मर गये। इस स्तेपीको पार करते ही नूर अली (लघु-ओर्दू) और अवलाई (मध्य-ओर्दू) के कजाकोने आक्रमण कर दिया। दो दिनतक भयकर लडाई हुई। इसके बाद तोर्गुत बलखासके किनारे पहुचे, जहा फिर कजाकोसे युद्ध हुये। आठ महीनेकी भयकर यात्राके बाद १७७१ ई०के मध्यमें इली नदीसे नातिदूर चरापेन स्थानमें वह चीनी सीमाके भीतर घुसे। एक रूसी इतिहासकारने लिखा है—"इस प्रकार आधुनिक

सख्यामें भगा दिया। पीछे बाश्किर उरालके कसाको (रूसियो)से मिलकर इनके बगलमे काटे बन गये । चारो ओरसे खतरा ही खतरा दिखलाई देनेपर मध्य-ओर्दूने रूसियोकी अधीनता स्वीकार करनेम खैरियत समझी १७३२ ई०मे शेमीअकाने रानी अन्ना की वफादारीकी शपथ ली, लेकिन कसाकोने इसे पसन्द नही किया, जिसके कारण मध्य-ओर्दूमे झगडा हो गया । बाश्किरोपर इन्होने असफल आक्रमण किया। जिस समय अपनी मूलभूमिको कसाक छोड़कर भाग रहे थे, उस समय महा-ओर्दू अपनी पुरानी भूमिमें जुगरोकी अधीनता स्वीकार कर किसी तरह रह गया।

जिस समय शमीअका रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपनी रक्षा करनेकी कोशिश कर रहा था, उस समय सारे कजाकोका सबसे बडा नेता तथा लघु-ओर्दूका खान अबुल्खैर भी रूसका खैरख्वाह था। मध्य-ओर्दूको रूसकी अधीनता स्वीकार करानेमें उसका काफी हाथ था। १७३४ ई०में रूसी सीमान्त (ओरेनबुर्ग) के राज्यपाल किरिलोफको शेमिअकाको खानकी पदवी-दानके लिये नियुक्त किया गया था, लेकिन पदवी प्राप्त करनेसे पहले ही शेमीअका मर गया। इस पदवीके साथ जो पत्र रूसी रानीने भेजा था, उसमें लिखा था—"हमारी प्रजा शेमीअका खान और मध्य-ओर्दूके किर्गिज-कजाकोकी सेनाके मखियोको।"

२ अबुल् मुहम्मद, पुलाद-पुत्र (१७३४–४८ ई०)

शेमीअका (पुलाद) खानके मरनेके बाद मध्य-ओर्दूके अबुल् मुहम्मद और उसके बाद अबलइ खान हुये। किसी-किसीके मतमें अबुल् मुहम्मद पुलाद खानका पुत्र था। इस समय किरिलोफकी जगह तातिश्चेफ १७३० ई०में ओरेनबुर्गका राज्यपाल था। उसने अबुल् और अबलइ दोनोको ओरेनबुर्गमें बुलाया। स्वयं न आकर उन्होंने अगस्त १७३८ ई०में संदेश भेजा, कि हम बहुत दूर इर्तिशके किनारे है, इसलिये अगले साल आकर राजभक्तिकी शपथ लेंगे।

लेकिन यह भी बात उन्होंने पूरी नही की। इसी बीचमें १७३९ ई०के आरम्भमें राजुल उरुसोफ ओरेनबुर्गका राज्यपाल होकर आया। मध्य-ओर्दूका अभीतक कोई पक्का खान नही चुना गया था, लेकिन अबुल् मुहम्मद उसका सबसे बडा प्रभावशाली नेता था। लघु-ओर्दूका खान अबुल्खैर दावा करता था, कि वह हमारे अधीन है। इसके कारण दोनोमें झगडा खडा हो गया। १७४० ई०में अबुल मुहम्मद, अबलइ सुल्तान और दूसरे कितने ही सरदारो और साधारण कजाक मुखियोंके साथ ओरेनबुर्ग पहुचा। राजुल उरुसोफने उसका उसी तरह सम्मान किया, जैसा कि अबुल्खैरके साथ किया था। उन्होंने राजभक्तिका पत्र अर्पित किया, जिसे एक दुभाषियेने पढ़ा। इसके बाद अबुल् मुहम्मद और अबलइने, एक जरदोजीके खड्पर घुटने टेककर शपथ ली, कुरानको अपने माथेपर लगाया, और शपथपत्रकी मुहरको सिरसे छू कुरानको चूमा। पासके ही तम्बूमें मध्य-ओर्दूके १२८ अमीरोने उसी तरह जारके प्रति शपथ ली। रस्मकी समाप्ति होनेपर तोपें दागी गई, और अन्तमें भोज हुआ। वहाके सेनापतिने दूसरे दिन भेंट करते समय मध्य-ओर्दूके नेताओंसे कहा, कि अपने देशसे गुजरते समय रूसी कारवाकी रक्षा करना, और मूलरके कारवाकी जो वस्तुए महा-ओर्दूने लूट ली है, उन्हे लौटवानेका प्रयत्न करना। उसने कजाको ओर वोल्गा-कल्मकोंके साथ शाति स्थापन करनेकी कोशिश की। लेकिन यदि लूटके मालको लौटाना या लूट-मार बन्द करना हो सकता, तो वह कजाक ही क्यो होते? जिस समय यह कार्रवाई हो रही थी, उसी समय ओरेनबुर्गमें अबुल्खैरके दो पुत्र नूरअली और एरअली मौजूद थे, लेकिन उनको डर लगा, कि अबुल् मुहम्मद कही रूसियोंसे चुगली करके हमे कैद न करा दे, इसलिये वह जल्दी-जल्दी वहासे चले गये।

१७४१ ई० में बाश्किर विद्रोहियोंके नेता कराशक्काल (काली दाढी) ने भागकर कजाकोमें पनाह ली, और उसने मध्य-ओर्दूकी एक टोलीको लेकर जुंगरोंको लूटा। जुगर उनका पीछा करते आ रहे थे, कि रास्तेमे कजाकोंके डेरोको पा उन्होंने उन्हे लूट लिया। राजुल उरुसोफने जुगर-राजा और रूसके बीचमें हुई सुलहका हवाला देकर ऐसा न करनेके लिये कहा। इसपर जुगरो ने जवाब दिया—"हम नही जानते, कि कजाक रूसी प्रजा है।" अबुल् मुहम्मदने देशमें जुगरोंसे प्रतिरक्षार्थ एक मजबूत किला बनानेके लिये रूसियोंको लिखा। उधर कजाकोका आक्रमण जुगारियाकी सीमान्तपर जारी रहा। १७४१ ई०में जुगर-राजा गल्दन छेरिड्ने मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूको दड देनेके लिये दो सेनायें भेजी, जिन्होंने अबलइको बदी बनाकर अपने साथ ले जानेमें सफलता पाई। अबलइ रूसी प्रजा था, इसलिये उसे छुडानेके लिये रूससे १७४२ ई०में मेजर मूलरको जुगरोंके पास भेजा गया। मुहम्मदने भी दूतमडलके साथ अपने पुत्रको जामिनके तौरपर भेजा। रूसियोको यह बात पसन्द नही आई, कि हमारी प्रजा होते हुये कजाक कल्मकोसे सीधे बातचीत करें। कजाकोने जुगरोंसे बहुत कहा, कि अब हम लूट-मार नही होने देंगे, लेकिन जुगर कजाकोंके स्वभावसे अच्छी तरह परिचित थे, इसलिये वह जामिन रखनेपर जोर देते रहे। अबुल् मुहम्मदको अपने लोगोंपर नियत्रण रखनेके लिये सावधान किया गया, और मामला उस समयके लिये सुधर गया।

अबुल् मुहम्मद यद्यपि अधिकाश कजाकोंके लिये मध्य-ओर्दूका खान था, लेकिन उनकी भारी सख्या तुरसुनखान पुत्र बुर्राकको अपना खान मानती थी, जिसने भी इसी समय रूसियोंके जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली थी। १७४३ ई०में उसने अपना दूतमडलन भेज साधारण सदेशवाहक द्वारा पत्र और सुनहरी समूरी खाल भेजी, जिसे लौटानेपर उसने रूखासा जवाब दिया। उधर मेजर मूलरके प्रयत्नसे १७४२ ई०में जुगरोनें अबलेई सुल्तानको छोड दिया था।

१७४४ ई०में जुगरोंने साइबेरियामें रूसी सीमाके पास शक्ति प्रदर्शन किया। अबुल मुहम्मद और उसके लोग तुर्किस्तानकी ओर खिसक गये, और उन्होंने गन्दन छेरिङ्के साथ घनिष्ठ मित्रता करनी चाही—अबुल् मुहम्मदका लड़का अब भी गन्दनके पास जामिनके तौरपर था। अबुल् मुहम्मदको आशा थी, कि इस तरह वह गन्दनसे मध्य-ओर्दूकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको पा लेगा। लेकिन उसका प्रतिद्वंद्वी बुर्राक सुल्तान भी अपने पुत्रको जुगरोंके पास जामिन दे मध्य-ओर्दूको अपनी ओर करनेकी चेष्टा कर रहा था। इस्लाम और बौद्ध धर्मको लेकर कजाकों और जुगरोंका झगड़ा बहुत पुराना था, जिसके कारण यदि रूसिया और जुगरों (कल्मकों) में लड़ाई छिड़ती, तो कजाक जरूर रूसियोंकी ओर हो जाते। खैर, रूसी सीमान्तके पास प्रदर्शन करके ही जुगर लौट गये, और लड़ाई नहीं हो पाई। इस शांतिसे लाभ उठाकर दो सालके बाद फिर मध्य-ओर्द रूसी सीमान्तपर पहुंचा, और अबुल मुहम्मद तथा बुर्राक दोनोंने पुनः जार-भक्तिकी शपथ ली। १७४६ ई०में जुगर आक्रमण करके कजाकोंके बहुत-से घोड़े छीन ले गये। यह वही साल था, जिस साल कि जुगर-राजा गन्दन छेरिङ् मरा।

१७४८ ई०में बुर्राकने लघु-ओर्दूके खान अबुलखैरको हराया। पीछे रूसी प्रजा करा-कल्पकोंको लूटा। जिसके लिये रूसी दंड देते, इसलिये डरके मारे पूर्वकी ओर बढ़ बुर्राकने ईकान, ओतरार और सिगनकपर अधिकार कर वहां डेरा डाला। अगले साल एक खोजाके साथ रहते बुर्राक और उसके दो पुत्रोंको जहर खिलाकर मार डाला गया। शायद अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने पिताकी हत्याकी शिकायत जुगरोंसे की। इस समय (१८वीं सदीके मध्यमें) मध्य-ओर्दू के अधिकांश सुल्तानों और सरदारोंने जुगरोंके यहां अपने जामिन दे रक्खे, थे, इसीलिये जुगर मध्य-ओर्दूको अपनी प्रजा मानते थे। इसी समय अबुल् मुहम्मद तुर्किस्तानकी ओर गया, जहांपर वह अपनी मृत्युके समयतक रहा।

३. अबलइ, शिगाई-वंशज (१७४८–८१ ई०)

अबुल् मुहम्मदके दक्षिणकी ओर, चले जानेपर मध्य-ओर्दूके कुछ सरदारोंने मृत बुर्राकखान के भाई सुल्तान कूचुकको अपना खान चुना, लेकिन रूसियोंने उसे स्वीकार नहीं किया। इस पर वह जुगरोंकी ओर झुके। शिगाई खानके वंशज अबलइकी दूसरी ही नीति थी। उसका कबीला अधिकतर रूसी सीमाके पास रहता था, इसलिये वह रूसियोंका अधिक पक्षपाती था—खासकरके तबसे, जब कि मध्य-ओर्दूने १७५१ ई०में उलुकतागमें जुगरोंसे करारी हार खाई। १७५४ ई०में उनके ऊपर जुगरोंका इतना अधिक दबाव था, कि बहुत-से अमीरोंने रूसियोंसे आज्ञा मांगी, कि हमारे बीबी-बच्चोंको अपने यहां शरण दो, और सीमान्तपर जमीन दो, तो हम खेती करके अपने गांव बसा लेंगे। इसपर कितने ही कजाकोंको उइस्कके पास बस जानेकी इजाजत मिली, और उचित जामिन दे देनेपर कितनों हीको हटकर रूसी सीमान्त रेखाके पीछे आनेकी भी इजाजत मिल गई। लेकिन इसी समय जुगर-साम्राज्यको चीनियोंने नष्ट कर दिया, जिसमें अबलइका भी काफी हाथ था। साम्राज्यके पतनमें अमुरसना और दावा छेरिङ् (१७५०–५५ ई०) का झगड़ा मुख्य कारण था, इसे हम पहले बतला आये हैं। चीनियोंकी सहायतासे अमुरसना खान बना था, लेकिन वह चीनियोंके हाथकी गुड़िया नहीं बनना चाहता था, इसलिये विद्रोही बना, और भारी चीनी सेना आनेपर उसने कजाकोंमें भागकर शरण ली। अबलइ खानने घोड़े और संरक्षक दिये, और गिरफ्तार करनेके लिये वचन देकर चीनी सेनापतियोंके पता पूछनेपर बहाना कर दिया, कि अमुरसना रूसियोंके पास भाग गया। इसपर नाराज हो चीनी जेनरल तलतगा कजाकोंके देशमें घुसा। फिर कजाकोंने उसे भुलावेंमें डाला। उधर मंगोलों और मंचू सैनिकोंको अपने जेनरलका आचरण बुरा लगा, इसलिये उनमेंसे बहुतेरे साथ छोड़कर चले गये, और जेनरलको पीछे हटना पड़ा। इन लड़ाइयोंमें सबसे बहादुर चीनी सेनापति हो मारा गया, और वही हालत कल्मक सेनानायकों—नीमा, पयार, सीला और मंगलिक आदिकी हुई, जो कि अमुरसनाके विरुद्ध हो चीनकी ओरसे लड़े थे। इस हारकी खबर मिलनेपर चीनमें एक

नई सेना आई, जिसने कजाकोंको हरा उनके बहुत-से मुखियो को पकडकर पेकिंग भेज दिया, जहा उन्हे प्राणदड दिया गया।

जुगरो जैसी अजेय शक्तिको इतनी आसानीसे खतम करते चीनियोको कोई दिक्कत नही मालूम हुई, यह देखकर अबलई रूसका पक्ष छोड चीनकी ओर झुका, और कुछ समय वाद उसने चीनी सम्राट् चियान-लुङ (काउ-चुङ १७३५—९५ ई०) की अधीनता स्वीकार की । सम्राट्ने इतने प्रभावशाली खानको अपना सामन्त बनते देखकर उसे राजा (वाङ) की उपाधि भेजी। अगले साल १७५७ ई० में जब उसे अपने ओर्दूके साथ चीनी प्रजा घोषित करनेकी आज्ञा आई, तो अबलइने टालमटोल कर दिया।

१७५८ ई०में मध्य-ओर्दूके एक भागके कजाक रूसी सीमापर आक्रमण कर दोनो ओरके करद २२० तारतारोको पकड ले गये, और इनका दूसरा भाग पूर्वकी ओर बढकर जुगर उच्छेद-से खाली पडी भूमिको आबाद किया । अबलइ जहा एक ओर चीनियोको विश्वास दिलाता था, कि मैं सम्राट् का करद सामन्त हू, वहा दूसरी ओर उसने रूसको भी विश्वास दे रक्खा था, कि मैं यह सब कुछ ऊपरी मनसे कर रहा ह, समय आनेपर मैं रूसकी ओरसे चीनके साथ लड़ूगा। रूसी रानीने बडी प्रशसा करते हुये उसके लिये एक बहुमूल्य समूरी छाल भेजी । मध्य-ओर्दूका अधिकाश अबलइको अपना खान मानता था। रूसी नही चाहते थे, कि अवलइका प्रभाव और शक्ति अधिक बढे। उन्होने तब भी कूटनीतिसे ही काम लेना चाहा, और कहा, कि लघु-ओर्दूके नूरअली खानकी तरह तुम भी अपने पुत्रको जारके दरबारमे जामिन भेजकर सम्मान प्राप्त करनेकी प्रार्थना भेजो। अबलइने इसे पसन्द नही किया।

१७६० ई० मे मध्य-ओर्दूके कजाकोने चीनकी प्रजा बुरूतो (जगली किर्गिजो) पर आक्रमण किया। चीनियोने इसपर विरोध प्रकट करते हुए अपनी सेना अबलइको दड देनेके लिये भेजी। तीन ही वष पहले जुगरोकी क्या दशा हुई, यह कजाक देख चुके थे, इसलिये उन्होने तुरन्त चीनियोकी अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन साथ ही रूसको प्रसन्न रखनेके लिये भी कितने ही बाश्किर और बराबिन तारतार बदियोको उनके पास लौटा दिया। रूसी चाहते थ, कि अबलइका सबध चीनसे न हो। १७६२ ई० में उन्होने हुक्म दिया, कि कजाक बडोमें भेट बाटनी है, सीमान्तके पास घोडोंके लिये अस्तवल, गाडियोके रखनेके लिये गाडीखाने, चारो ओर प्राकार और दूकानसे घिरा एक छोटा महल खासकरके खानके लिये बनाना है। वह महल पेत्रोपावलोव्स्कके सामने बना भी दिया गया है। रानी एकातेरिना II की गद्दीके समय अबलइ, ऐंचुवक और लघु-ओर्दूके नूरअलीने भी राजभक्तिकी शपथ ली, यद्यपि अबलइ अब भी चीनियोकी अधीनताको मानता था। इस प्रकार उसकी चाल दोरगी थी।

चीनी सेना जुगरोको हरानेके बाद पश्चिमकी ओर बढती गई। उसने खोकन्द और ताशकन्दपर आक्रमण किया। इसपर वहाके शासकोने अफगानिस्तानके अमीर अहमदसे इस्लामके नामपर मदद मागी। काश्गर और यारकन्द आदिके लोगोने भी जाकर काबुलपतिके पास गुहार की। अहमदशाह अब्दाली भारतमें भारी विजय (१७५६ ई०) प्राप्त करके काफी नाम कमा चुका था, इसलिये वह उत्तरसे आई गुहारको ठुकरा कैसे सकता था? उसने काफी सेना अन्तर्वेद की ओर भेजी। ताशकन्द और खोकन्दके बीचमें चीनी सेनासे बातचीत चलती रही, फिर सारे मध्य-एसियामें जहाद (धर्मयुद्ध) की घोषणा कर दी गई। उधर चीनियोने अबलइको सनद देकर इलीपर बसनेकी इजाजत देते हुये, दुश्मनोंसे रक्षाका भार अपने ऊपर ले लिया। अबलइने अपने ससुर सुल्तान अहमद, कुछ कजाक अमीरो और उनके लड़कोको जामिन बनाकर चीनियोके हाथमें दिया, और इस प्रकार अबलइ मुसलमानोंके जहादमे शामिल नही हुआ।

रूसियोने कोल्चवली नदीपर १७६४ ई०मे एक छोटासा किला सेमीप्लातिन्स्क बनाया था, जो कजाकोंके साथ व्यापार करनेका केन्द्र था। अबुल्मोहम्मद-पुत्र अबुल्फ़ैज, तथा तुर्किस्तानके पुलाद खानके भाई अबुल्फैजके कहनेपर ही रूसियोने यह किया था। अबुल्फैज मध्यओर्दूके सबसे अधिक शक्तिशाली कबीले नैमनका मुखिया था । जुगारियामें रहनेके कारण अब वह चीनियोपर अधिक

निर्भर करता था। रूसियोने अवलइको सेमीप्लातिन्स्कमे व्यापार करनेकी आज्ञा दे दी । कजाकोने खेती सीखनेकी इच्छा प्रकट की, तो समुचित जामिन लेकर दस खेती सिखानेवालोको भी रूसियोंने भेज दिया। इतिहासके आदिकालसे अबतक खेतीमे अछूते कजाक जुगरोकी भांति अब खेतीके महत्त्वको समझने लगे ।

अब हम उस समयमें पहुंचते हैं, जब कि १७७० ई०मे वोल्गा-तटसे तोर्गुत (कल्मक) भगे थे। कल्मकोका रास्ता अपने पुराने दुश्मन कजाकोकी भूमिके बीचसे था । रूसियोने भी उन्हे भडका रखखा था, इसलिये अवलइ और उसके आदमियोने सुल्तान अबुल्फैजकी तरह कल्मकोपर आक्रमण करके बहुत लूट-मार की, और उनमेंसे भारी सख्याको अपना बन्दी बनाया।

१७७५ ई०में अबुल्फैज तथा मध्य-ओर्दूके और कितने ही सरदारोने साइबेरियाकी सीमापर जाकर रूसी प्रजा होनेकी आज्ञा मागी—प्रजा होनेका मतलब था वार्षिक पेंशन और भेंट-इनाम की प्राप्ति। रूसियोने कहा—"तुम तो पहले हीसे हमारी प्रजा हो ।"

अवलइ अपनी चालाकी-चतुराईके बलपर बहुत शक्तिशाली बन गया, और बराबर रूस और चीनके बीचमें अपने दावपेच चलाता रहा। तो भी चीनकी ओर उसका झुकाव अधिक था, वह चीनी भाषा बोल भी सकता था । अपनी शक्तिको १७७१ ई०के बाद उसने अपनेको देश खुल्लमखुल्ला खान (राजा) कहना शुरू किया। कहासे यह पदवी मिली, पूछनेपर वह बडे अभिमानके साथ जवाब देता—तोर्गुतोपर विजय प्राप्त करनेसे अबुल्मुहम्मदके मरनेपर तुर्किस्तान और ताशकन्दके कजाकोने मुझे अपना खान निर्वाचित किया । अपने पूवजोकी भांति वह भी चाहता था, कि म भी कजाकोके सबसे बडे सत खोजा अहमदकी समाधिके पास रहू । रूसियोने दबाव दिया, कि अपने पुत्रको जामिन भेजकर जारसे खानकी पदवी प्राप्त करो। इसपर १७७७ ई०में उसने अपने पुत्र तोगुमको खान-पदवी प्राप्त करनेकी प्रार्थनाके साथ पीतरबुग भेजा । दरबारमें उसका अच्छा स्वागत हुआ, और २२ अक्टूबर १७७८ ई०को कुछ और भेंटोंके साथ खानकी उपाधिका शासनपत्र ओरेनबुग के राज्यपालके पास भेज दिया गया। अवलइको सूचित किया गया, कि उपाधि प्राप्त करनेके लिये त्रोइतस्क या साइबेरियाके किसी दूसरे रूसी नगरमें आओ । अवलइने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया । इसपर उसे उसके डेरेमें एक रूसी अफसरके सामन शपथ दी गई। लेकिन अवलइ चीनियोको नाराज नही करना चाहता था, इसलिये, उसने रूसी रानीकी भेजी हुई भेंटको स्वीकार नही किया। चूकि रूसियोने बुरुतो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध मदद देनेसे इन्कार कर दिया था, इसलिये अवलइने अपने पासके रूसी बदियोको वही लौटा दिया, और उन तुकमानोको भी, जिन्हे कि तोर्गुत अपने साथ ला महायात्रामें कजाकोंके देशमें छोड गये थे । इसपर रूसियोने नाराज हो अवलइकी पेंशन बन्द कर दी, और कुछ कजाक सुल्तानोको भी उसके विरुद्ध उकसाया, जिन्होने उसे पकडकर रूस ले जानेका असफल प्रयत्न किया । अवलइ बुरूतोंके विरुद्ध सफल अभियान करके तुर्किस्तान-शहर लौटा।उसने अपने लडके हादिलके लिये तलस नदीके तटपर एक प्राकारबद्ध महल बनवाया। पास हीमे महाआर्दूके कजाको–जो कि इस समय अवलइकी प्रजा थे—के कहनेपर एक शहर भी बसाया, जहा कराकल्पक किसान आकर आबाद हो गये । बन्दी बनाकर लाये बुरूतोको वह मध्य-ओर्दूके देशके उत्तरमें ले गया, जहा वह पीछे यानी-किर्गिज (नये किर्गिज)के नामसे प्रसिद्ध हुये। १७८१ ई०में अवलइ रूसी सीमा तकी ओर जा रहा था, इसी समय ७० वर्षकी उमरमें उसका देहान्त हो गया। उसकी कब्र तुर्किस्तान शहरमे बनाई गई। चीनमें खबर मिली, तो वहासे एक विशेष अफसर भेजा गया, जिसने परिवारको जमाकर राजसी ढगसे अवलइकी अन्त्येष्टि-क्रिया कराई ।

४ वली, अवलइ-पुत्र (१७८१–१८१८ ई०)

अवलइके मरनेपर मध्य-ओर्दूको महा-ओर्दूवाले बुरी तौरसे हराकर भारी सख्यामे उनके पशुओ को छीन ले गये। मध्य-ओर्दूकी शक्ति अब बिखरने लगी। उसके उत्तरी भागने अवलइ-पुत्र वलीको अपना खान चुना, और प्रार्थना करनेपर रूसने उसे स्वीकार भी कर लिया। १७८२ ई०में लेफ्टेनेन्ट-जेनरल याकोवने बडी धूमधूमसे पेत्रोपावलोव्स्कमें वलीको खान घोषित किया, लेकिन मध्य-आर्दूके

सबसे प्रभावशाली कवीलेके नैमनने वलीको न मजूर कर अबुल्‌मुहम्मद-पुत्र अबुल्‌फज (मृत्यु १७८३ ई०) को अपना खान चुना, जिसे चीनने मजूर कर लिया। लेकिन नैमनोमे भी सब एकराय नही थे। अबुल्‌फैजका पुत्र वुपू और दामाद खान खोजा वुर्राक-पुत्र इससे सहमत नही हुये। नैमनोमे काफी सख्या खान खोजाकी पक्षपाती थी, जिसे स्वीकार करते हुये चीनियोने अपना शासनपत्र भेजा। वलीको छोडकर अबलइके सारे सबघी रूस नही, वल्कि चीनके पक्षपाती थे। वलीके एक भाई जिंगिसने १७८४ ई०में सेना ले जाकर ताशकन्दमे एक विद्रोहको दबाया। उसके दूसरे भाई सुल्तान तीजकी वुरूतोसे भारी दुश्मनी थी। वुरूत लडाकू चीनी सेनाको भी अनेक बार पराजित कर चुके थे। सुल्तान तीजको भी उन्होने एक बार हराकर पकड लिया, और उसने अपने कई गुलामोको देकर छुट्टी पाई। वलीका बडा भाई बेर्दी खोजा चीनी सीमान्तपर रहनेवाले मध्य-ओर्दूके कजाकों का शासक था। इसे भी लडाकू वुरूतोसे पाला पडा था, और इसने उन्हे कई बार हराया। १७८५ ई०में ऐयागुज नदीके तटपर इसने वुरूतो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध अपनी सबसे बडी और अतिम विजय प्राप्त की। लेकिन उस समय वह चीनी सेनाके सहायकके तौरपर लड रहा था, जिससे उत्साहित हो अपनी छोटी सेनाके साथ जब वह यिदिस्से नदीके तटपर पहुचकर कुमक आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय वुरूतोने आक्रमण करके उसे पकड लिया। तीजको अब प्राणो की आशा क्या हो सकती थी? उसने एक रक्षरक्षीको मार डाला, जिसपर बाकी टूट पडे, और उन्होने उसे हाथ-पैर अलग-अलग काट, पेटको चीरकर उसीके भीतर हाथो-पैरोको डालके मारा। पीछे तीजके भाई अककियक और उसके पुत्रो लेपेस तथा चोकाने युद्धमे हराकर वुरूत सरदारके पुत्रको पकडा, और उसे घर ले जाकर बेर्दी खोजाकी स्त्रियोको दे दिया, जिन्होने उसे पीट-पीटकर मार डाला।

१७८६ ई०में रूसियोने अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया।

इस समय मध्य-ओर्दूके उत्तरी भागमे शाति छाई हुई थी। इनके पडोसी थे महा-ओर्दू, लघु-ओर्दूके कजाक, रूसी, ताश्कन्द-तुर्किस्तान राज्यके शातिप्रिय निवासी। दूसरे पडोसी लडाकू बाश्किर, श्रोइत्स्कके पासमें रहते थे। दूसरी ओर वुरूत भी चैनसे रहने देना नही चाहते थे। मध्य-ओर्दूकी स्थिति इस समय दूसरे दोनों ओर्दुओंसे कुछ बेहतर थी। महा-ओर्दू और लघु-ओर्दूकी अपेक्षा वह अधिक सस्कृत और स्थायी जीवन बिता रहा था, तथा अपने खानो और सुल्तानोकी बात मानते थे। वलीने भी अपने पिताकी तरह शक्ति-सचय करनेमें सफलता प्राप्त की। अस्त्राखानसे तोर्गुतोद्वारा छीने गये तुर्कमानोको लौटानेसे इन्कार करके उसने रूसियोको नाराज कर लिया। रूस-पक्षपाती अमीरोका भी वह दमन करता था। १७८९ ई०में महा-ओर्दूके एक सुल्तान तुगुमके साथ वलीके ओर्दूके भी कितने ही लोग रूसमे चले गये, और रूसियोने उन्हे उस्त-कामेन्नोगोर्स्कके किलेके पास जगह देकर बसा दिया। १७९३ ई०में जेनरल स्त्रान्दमानने जबर्दस्ती तुर्कमानोको वलीके हाथसे छुडाया, जिसकी शिकायत कजाक खानने रूसी रानीके पास की। बापकी तरह यह भी दुरगी चाल चल रहा था। १७९५ ई० में इसने एक पुत्रको चीनमें अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा था। प्रजाको इसने अपने जुल्मोंसे इतना नाराज कर दिया था, कि १७९५ ई०में मध्य-ओर्दूके दो सुल्तान, उन्नीस जेठे, ४३३०८ अनुचरो तथा ७९००० दूसरे कजाकोने रानी एकातेरिनाIIसे प्रार्थना की, कि हमें वलीके पजेसे छुडाकर रूसी प्रजा बना लो। खानने इसपर क्षमा मागी। १७९५ ई०में बाश्किरोंके पडोसी मध्य-ओर्दूके एक दलने चेलियाबिन्स्क और त्रेत्से उराल्स्कमे जाकर लूट-मार की।

१७९८ ई०में पावलके शासनकालमें कजाकोंके आपसी झगडोंके मिटानेके लिये पेत्रो-पालोव्स्कमे रूसियो और कजाकोकी एक सम्मिलित अदालत बैठी, लेकिन उसने अपना काम १८०६ ई०में शुरू किया। वली १८१८ ई०में मरा। अन्तिम वर्षोमें कजाकोमें उसकी चलती नही थी, और कितने ही अमीर उसकी आज्ञा माननेमे इन्कार करते थे। इसपर जार अलेक्सान्द्रI (१८०१-२५ ई०)ने बोराक-पुत्र बूकेइको मध्य-ओर्दूका द्वितीय खान १८१६ ई०मे नियुक्त किया। बूकेइ भी १८१८ ई०में मर गया, जिनके साथ ओर्दूके खानोकी परम्परा खतम हो गई, और उनके कजाक सीधे रूसी प्रजा हो गये, जिनके शासनके लिये रूसियोने एक विशेष प्रबन्ध कर रक्खा था।

ख लघु-ओर्दू (१७४४–१८१२ ई०)

तेअवका, तौफीक या तवक्कल खान (१६९८-१७१८ ई०)के बाद श्वेत-ओर्दू तीन भागोमे विभक्त हो गया था, जिनमे लघु-ओर्दूके अमीर थे—यादिक खानके भाई उजियक सुल्तानके वंशज। तेअवकाने अदिया (आइतिक)को लघु-ओर्दूके शासनका भार सौंपा। इस प्रकार अदिया लघु-ओर्दूका प्रथम खान था। लघु-ओर्दूके खानोंके नाम निम्न प्रकार हैं —

१	अदिया, जानीबेग वंशज, ईरिंग-पुत्र	—१७१७ ई०
२	अबुल्खैर, अदिया-पुत्र	१७१७–४९ "
३	नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र	१७४९–९० "
४	एरअली, अबुल्खैर-पुत्र	१७९०–९४ "
५	इशिम, नूरअली-पुत्र	१७९४–९७ "
६	एचुवक, अबुल्खैर-पुत्र	१७९७–१८०५ "
७	जन्ती उरा, एचुवक-पुत्र	१८०५–९ "
८	शेरगाजी, एचुवक-पुत्र	–१८१२ "

१ अदिया, एतीयक, इरिश-पुत्र (–१७१७ ई०)

श्वेत-ओर्दूके अन्तिम खान तेअवका (तौफीक)ने इसे लघु-ओर्दूका शासक बनाया था, लेकिन अदियाके समय अभी लघु-ओर्दू अपने स्वतंत्र अस्तित्वको कायम नही कर पाया था। यह काम उसके पुत्र अबुल्खैरने किया।

२ अबुल्खैर, अदिया-पुत्र (१७१७–४९ ई०)

१७१७ ई०मे अबुल्खैर भी तौफीक और काइपके साथ जुगरोंके विरुद्ध सहायता मागनेके लिये रूस गया था। बापके मरनेपर काइपके साथ अबुल्खैरकी प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई। १७१७ ई०में रूसियोसे भी उसका झगडा हो गया, उसने कजान प्रदेशमें नवोशेशिमन्स्कतक लूट-मारकरके बहुतसे बन्दी पकड लिये। जुगरोने भी लघु-ओर्दूकी लूट-मारोंसे तंग आकर १७२३ ई० में उन्हे तुर्किस्तान-ताश्कन्द-सैरामसे भगा दिया। तबतक अबुल्खैरने तुर्किस्तान शहरमें रहते अपनी शक्ति भी बहुत बढा ली थी। आपसी झगडोंसे जुगरोको लाभ और अपने वंशका नाश देखकर उसने एक महापरिषद् बुलाकर फैसला कराना चाहा, जिसने अबुल्खैरको अपना मुखिया चुनकर सफेद घोडेकी कुर्बानी दी। लघु-ओर्दूने उसके नेतृत्वम कई बार जुगरोको छोटी-मोटी हार दी, लेकिन इससे उनके राजा छेवङ्ग अपचन (रब्तन)का कुछ बिगडनेवाला नही था। जब जुगरोने जोरका प्रहार किया, तो लघु-ओर्दूको पश्चिमकी ओर भागना पडा, और उन्होने यम्बा नदीको पार हो तोर्गुतो (वोल्गा-कल्मको)को भगाकर यायिक(उराल)तक की भूमिको ले लिया। अब तोर्गुत उनके विरोधी हो गये और बादमें उरालके कसाक भी दुश्मन बन गये। इन दोनोंके प्रहारसे इन्हें इतनी हानि उठानी पडी, कि १७२६ ई०में इनके प्रतिनिधियोने जाकर रूससे सरक्षण पानेकी प्रार्थना की, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। यद्यपि ओर्दूका बहुमत तैयार नही था, तो भी अबुल्खैरने इसीमें खैरियत समझकर १७३० ई०मे ऊफाके वोयवोद वृतुलिनके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र भेजा। दूत जुलाई १७३० ई०को ऊफा पहुचे, जहामे उन्हे पीतरबुग भेज दिया गया। दूतोने दरबारमे कल्मको (तोर्गुतो), बाश्किरा और उरा-कसाकोंके साथ लडाई करनेका वचन दिया—हम रूसके शत्रुओमे लडनेके लिये सदा तैयार ह, और यदि खीवा, कराकल्पक तथा अरत्री क्बीलोंको दबानेके लिये हमें सैनिक दिये जाय, तो हम उनपर अभियान कर सकते हैं। उन्होने अपने ओर्दूकी ओरमे रूमी प्रजा होनेका स्वीकार किया, पीतरबुगमे इसके लिये बडी खुशी मनाई गई, क्योंकि बिना एक गोली दागे रूसको इतने नये प्रजाजन मिल गये। बाश्किर जब-तब रूसियोंके विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।

खीवावालोने हाल हीमें रूसी राजदूत राजुल बेकोविच-चेरकास्कीको मार डाला था, उसको भी वदला लेनेका मौका मिल रहा था। रानी अन्नाने सहायता और सरक्षण देनेका वचन-पत्र दिया। दूत जव अपने देशको लौटे, तो कजाक भूमिका नक्शा वनानेके लिये दो इजीनियर अफसर भी साथ कर दिये गये। सारा ओर्दू विरोधके लिये खडा हो गया। फिर एक वडी परिषद् वुलाई गई, और किसी तरह झगडा शात हुआ। १७३२ ई०में लघु-ओर्दके अबुल्खैर और मध्य-ओर्दूके शेमीअका खान दोनोने राजभक्तिकी शपथ ली। अबुल्खैरने दश्तकिपचकको छोड सिर-दरियाके मुहानेपर अपना डेरा डाला वहाके कराकल्पकोको भी अपने अधीन करके रूसकी प्रजा वनाया।

जनवरी १७३४ ई०में अवुल्खैरका पुत्र एरली सुल्तान और भी कितने ही कजाक-मुखियोके साथ पीतरवृग गया। रानीने उसका स्वागत करके वहुत इनाम दिया। एरलीने अवुल्खैर-परिवारमें खानकी पदवी पानेकी प्रार्थना की, और यह भी कहा, कि ओरी और उराल नदियोंके सगमपर रूसी किला वनाया जाय, अपने आसपाससे जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अबुल्खैरको मिले, तथा सैनिक सहायताके लिय कलमको और वाश्किरोकी तरह समूरी छालके रूपमें भेंट दी जाय। शर्ते मानना आसान था, लेकिन कजाक-जैसे कबीलोके लिये उनका पालन करना वहुत मुश्किल था। एक और भी वात थी कजाकोमें मुखिया या खानकी उतनी चलती नही थी। लोग जनतत्रताके अत्यन्त पक्षपाती थे, इसलिये खान द्वारा स्वीकृत शत-को माननेके लिये मजबूर नही थे। प्रसिद्ध भौगोलिक किरिलोफको कुछ इजीनियरोंके साथ किला वनाने तथा नक्शा तैयार करनेके लिये भूमापक वनाकर भेजा गया। तीन अफसर, कुछ मिस्त्री और नाविक नाव बनानेके लिये, एक खनिज इजीनियर, कुछ तोपची-अफसर, एक वनस्पतिशास्त्री, एक चित्रकार, एक डाक्टर, कजाकोकी भाषा सीखनेके लिये कुछ तरुण विद्यार्थी किरिलोफके नेतृत्वमें भेजे गये। कजान पहुचनेपर एक रेजिमेंट पैदल सेना, कुछ तोपखाना भी साथ हुआ। ऊफामें कसाकोकी एक पैदल वटालियन साथ हो गई। तेवकेलेफ नामक एक वाश्किरको कनलका दर्जा दे दुभाषिया नियुक्त किया गया। ऊफाकी आमदनी इस अभियानके खर्चके लिये निश्चित कर दी गई। किरिलोफको आज्ञा दी गई थी, कि ओरीके मुहानेपर नगर बसाकर लोगोको वहा वसनेके लिये आकृष्ट करे, तथा अबुल्खैरको खान उपाधिका शासन-पत्र प्रदान करे। शेमीअका, महा-ओर्दके दूसरे मुखियों और कराकल्पकोके मुखियोको किरिलोफसे मिलनेके लिये हुक्म दिया गया था। यह भी हुक्म था, कि मध्य-ओर्दू और महा-ओर्दूके मुखियोको राजभक्तिकी शपथ लेनेके लिये कहे, एरलीको अच्छे रक्षियोके साथ उसके बापके पास भेजे, कजाकोको भेंट-रिश्वत या कडे हाथोसे शान्त रक्खे, नये नगरमें उनके अमीरोंको घर और मस्जिद वनाने और आसपासमें उनके पशुओके चरनेकी इजाजत दे, उराल (यायिक) नदीको सीमा मानकर कजाकोको उसके पार होनेसे मना करे, झगडोको तै करनेके लिये रूसियो और कजाक-बडोकी सम्मिलिति अदालत स्थापित करके देशके रीति-रवाजके अनुसार फैसला कराये। किरिलोफ १७ जुलाई १७३४ ई०को पीतरवुर्गसे चला।

उसी साल अबुल्खैरने अपने पुत्र एरलीको फिर भेजा। किरिलोफ आगेके कामके लिये नेता था। १५ अगस्त १७३५ ई०में ओरी और उराल नदियोके सगमपर उसने ओरेनवुगकी नीव डाली। रूसके इस प्रकार लगातार आगे बढनेको देखकर इस भूमिके घुमन्तू कबीले कैसे सतुष्ट रह सकते थे? उनमेंसे कुछने विद्रोह भी किया, लेकिन तोपो और बन्दूकोके सामने उनका क्या वस चलता? दीवारोंके तैयार हो जानेपर १७३६ ई०के वसन्तमें अबुल्खैरको आनेके लिये निमत्रण दिया गया, और ताशकन्दके व्यापारियोको भी ओरेनवुगकी मडीमें व्यापार करनेकी सलाह दी गई। इस समय सवसे ज्यादा विद्रोही थे वाश्किर, जिनके विरुद्ध रूसियोको सेना भेजनी पडी, और नये किले भी वनाने पडे, जिनमें उराल नदीके तटपर गुर्लिन्स्क, ओजेर्नया, स्रेदनी, वेर्देस्कोइ और किरिलोफ थे। समारा नदीके ऊपर भी कुछ किले बनाये गये, लेकिन रूसियोको अपने हितके लिये इससे भी ज्यादा आवश्यक यह था, कि वोल्गा-कलमको, वाश्किरो और कजाकोंके आपसी झगडे वरावर वने रहे।

किरिलोफ अप्रैल १७३७ ई०में मर गया। इसी समय रूसी व्यापारियोका एक कारवा ताशकन्द जानेवाला था, जिसके साथ कप्तान येल्तन गया, जो पीछे भारतपर आक्रमण करने-

ख लघु-ओर्दू (१७४४-१८१२ ई०)

तेअवका, तौफीक या तवक्कल खान (१६९८-१७१८ ई०) के वाद श्वेत-ओर्दू तीन भागोमें विभक्त हो गया था, जिनमे लघु-ओर्दूके अमीर थे—यादिक खानके भाई उजियक सुल्तानके वशज। तेअवकाने अदिया (आइतिक)को लघु-ओर्दके शासनका भार सौंपा। इस प्रकार अदिया लघु ओर्दूका प्रथम खान था। लघु-ओर्दूके खानोंके नाम निम्न प्रकार हैं —

१	अदिया, जानीवेग वशज, ईरिश-पुत्र	—१७१७ ई०
२	अवुल्खैर, अदिया-पुत्र	१७१७–४९ "
३	नूरअली, अवुल्खैर-पुत्र	१७४९–९० "
४	एरअली, अवुल्खैर-पुत्र	१७९०–९४ "
५	इशिम, नरअली-पुत्र	१७९४–९७ "
६	एचुवक, अवुलखैर-पुत्र	१७९७–१८०५ "
७	जन्ती उरा, एचुवक-पुत्र	१८०५–९ "
८	शेरगाजी, एचुवक-पुत्र	–१८१२ "

१ अदिया, एतीयक, इरिश-पुत्र (–१७१७ ई०)

श्वेत-ओर्दूके अन्तिम खान तेअवका (तौफीक)ने इसे लघु-ओर्दूका शासक बनाया था, लेकिन अदियाके समय अभी लघु-ओर्दू अपने स्वतत्र अस्तित्वको कायम नही कर पाया था। यह काम उसके पुत्र अवुल्खैरने किया।

२ अवुल्खैर, अदिया-पुत्र (१७१७–४९ ई०)

१७१७ ई०में अवुल्खैर भी तौफीक और काइपके साथ जुगरोके विरुद्ध सहायता मागनेके लिये रूस गया था। वापके मरनेपर काइपके साथ अवुल्खैरकी प्रतिद्वद्विता शुरू हो गई। १७१७ ई०में रूसियोंसे भी उसका झगडा हो गया, उसने कजान प्रदेशमें नवोशेश्मिन्स्कतक लूट-मारकरके वहुतसे वन्दी पकड लिये। जुगरोने भी लघु-ओर्दूकी लट-मारोंसे तग आकर १७२३ ई० मे उन्हे तुर्किस्तान-ताश्कन्द-सैरामसे भगा दिया। तवतक अवुलखैरने तुर्किस्तान शहरमें रहते अपनी शक्ति भी वहुत वढा ली थी। आपसी झगडोंसे जुगरोको लाभ और अपने वशका नाश देखकर उसने एक महापरिषद् वुलाकर फैसला कराना चाहा, जिसने अवुलखैरको अपना मुखिया चुनकर सफेद घोडेकी कुर्वानी दी। लघु-ओर्दूने उसके नेतृत्वमे कई वार जुगरोको छोटी-मोटी हार दी, लेकिन इससे उनके राजा छेवढ्ढ अपचन (रब्तन)का कुछ विगडनेवाला नही था। जब जुगरोने जोरका प्रहार किया, तो लघु-ओर्दूको पश्चिमकी ओर भागना पडा, और उन्होने यम्वा नदीको पार हो तोर्गुतो (वोल्गा-कल्मकों)को भगाकर यायिक (उराल)तक की भूमिको ले लिया। अब तोर्गुत उनके विरोधी हो गये और वादमे उरालके कसाक भी दुश्मन वन गये। इन दोनोंके प्रहारसे इन्हे इतनी हानि उठानी पडी, कि १७२६ ई०मे इनके प्रतिनिधियोने जाकर रूससे सरक्षण पानेकी प्रार्थना की, लेकिन उसमे वह सफल नही हुये। यद्यपि ओर्दूका वहुमत तैयार नही था, तो भी अवुल्खैरने इसीमें खैरियत समझकर १७३० ई०मे ऊफाके वोयवोद वूतुर्लिनके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र भेजा। दूत जुलाई १७३० ई०को ऊफा पहुचे, जहासे उन्हे पीतरवुग भेज दिया गया। दूतोने दरवारमें कल्मकों (तोर्गुतो), वाश्किरो और उरा-कसाकोंके साथ लडाई करनेका वचन दिया—हम रूसके शत्रुओसे लडनेके लिये सदा तैयार है, और यदि खीवा, क्राकल्पक तथा अरवी कवीलोंको दवानेके लिये हमे सैनिक दिये जाय, तो हम उनपर अभियान कर सकते है। उन्होने अपने ओर्दूकी ओरसे रूसी प्रजा होनेका स्वीकार किया, पीतरवुगमें इसके लिये वडी खुशी मनाई गई, क्योकि विना एक गोली दागे रूसको इतने नये प्रजाजन मिल गये। वाश्किर जव-तव रूसियोंके विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।

खीवावालोंने हाल हीमें रूसी राजदूत राजुल बेकोविच-चेरकास्कीको मार डाला था, उसको भी बदला लेनेका मौका मिल रहा था। रानी अन्नाने सहायता और संरक्षण देनेका वचन-पत्र दिया। दूत जब अपने देशको लौटे, तो कजाक भूमिका नक्शा बनानेके लिये दो इञ्जीनियर अफसर भी साथ कर दिये गये। सारा ओर्दू विरोधके लिये खड़ा हो गया। फिर एक बड़ी परिषद् बुलाई गई, और किसी तरह झगड़ा शांत हुआ। १७३२ ई०में लघु-ओर्दूके अबुल्खैर और मध्य-ओर्दूके शेमीअका खान दोनोंने राजभक्तिकी शपथ ली। अबुल्खैरने दश्तकिपचकको छोड़ सिर-दरियाके मुहानेपर अपना डेरा डाला वहांके कराकल्पकोंको भी अपने अधीन करके रूसकी प्रजा बनाया।

जनवरी १७३४ ई०में अबुल्खैरका पुत्र एरली सुल्तान और भी कितने ही कजाक-मुखियोंके साथ पीतरबुग गया। रानीने उसका स्वागत करके बहुत इनाम दिया। एरलीने अबुल्खैर-परिवारमें खानकी पदवी पानेकी प्रार्थना की, और यह भी कहा, कि ओरी और उराल नदियोंके संगमपर रूसी किला बनाया जाय, अपने आसपाससे जानेवाले कारवांकी रक्षाका भार अबुल्खैरको मिले, तथा सैनिक सहायताके लिय कल्मकों और बाश्किरोंकी तरह समूरी छालके रूपमें भेंट दी जाय। शर्तें मानना आसान था, लेकिन कजाक-जैसे कबीलोंके लिये उनका पालन करना बहुत मुश्किल था। एक और भी बात थी कजाकोंमें मुखिया या खानकी उतनी चलती नहीं थी। लोग जनतन्त्रताके अत्यन्त पक्षपाती थे, इसलिये खान द्वारा स्वीकृत शर्तें-को माननेके लिये मजबूर नहीं थे। प्रसिद्ध भौगोलिक किरिलोफको कुछ इञ्जीनियरोंके साथ किला बनाने तथा नक्शा तैयार करनेके लिये भूमापक बनाकर भेजा गया। तीन अफसर, कुछ मिस्त्री और नाविक नाव बनानेके लिये, एक खनिज इञ्जीनियर, कुछ तोपची-अफसर, एक वनस्पतिशास्त्री, एक चित्रकार, एक डाक्टर, कजाकोंकी भाषा सीखनेके लिये कुछ तरुण विद्यार्थी किरिलोफके नेतृत्वमें भेजे गये। कजान पहुंचनेपर एक रेजिमेंट पैदल सेना, कुछ तोपखाना भी साथ हुआ। ऊफामें कसाकोंकी एक पैदल बटालियन साथ हो गई। तेवकेलेफ नामक एक बाश्किरको कर्नलका दर्जा दे दुभाषिया नियुक्त किया गया। ऊफाकी आमदनी इस अभियानके खर्चके लिये निश्चित कर दी गई। किरिलोफको आज्ञा दी गई थी, कि ओरीके मुहानेपर नगर बसाकर लोगोंको वहां बसनेके लिये आकृष्ट करे, तथा अबुल्खैरको खान उपाधिका शासन-पत्र प्रदान करे। शेमीअका, महा-ओर्दूके दूसरे मुखियों और कराकल्पकोंके मुखियोंको किरिलोफसे मिलनेके लिये हुक्म दिया गया था। यह भी हुक्म था, कि मध्य-ओर्दू और महा-ओर्दूके मुखियोंको राजभक्तिकी शपथ लेनेके लिये कहे, एरलीको अच्छे रक्षियोंके साथ उसके बापके पास भेजे, कजाकोंको भेंट-रिश्वत या कड़े हाथोंसे शान्त रखखे, नये नगरमें उनके अमीरोंको घर और मस्जिद बनाने और आसपासमें उनके पशुओंके चरनेकी इजाजत दे, उराल (यायिक) नदीको सीमा मानकर कजाकोंको उसके पार होनेसे मना करे, झगड़ोंको तै करनेके लिये रूसियों और कजाक-बड़ोंकी सम्मिलित अदालत स्थापित करके देशके रीति-रवाजके अनुसार फैसला कराये। किरिलोफ १७ जुलाई १७३४ ई०को पीतरबुगसे चला।

उसी साल अबुल्खैरने अपने पुत्र एरलीको फिर भेजा। किरिलोफ आगेके कामके लिये नेता था। १५ अगस्त १७३५ ई०में ओरी और उराल नदियोंके संगमपर उसने ओरेनबुर्गकी नींव डाली। रूसके इस प्रकार लगातार आगे बढ़नेको देखकर इस भूमिके घुमन्तू कबीले कैसे संतुष्ट रह सकते थे? उनमेंसे कुछने विद्रोह भी किया, लेकिन तोपों और बन्दूकोंके सामने उनका क्या बस चलता? दीवारोंके तैयार हो जानेपर १७३६ ई०के वसन्तमें अबुल्खैरको आनेके लिये निमंत्रण दिया गया, और ताशकन्दके व्यापारियोंको भी ओरेनबुर्गकी मंडीमें व्यापार करनेकी सलाह दी गई। इस समय सबसे ज्यादा विद्रोही थे बाश्किर, जिनके विरुद्ध रूसियोंको सेना भेजनी पड़ी, और नये किले भी बनाने पड़े, जिनमें उराल नदीके तटपर गुलिन्स्क, ओजेनया, स्रेदनी, वेर्देस्कोइ और किरिलोफ थे। समारा नदीके ऊपर भी कुछ किले बनाये गये, लेकिन रूसियोंको अपने हितके लिये इससे भी ज्यादा आवश्यक यह था, कि वोल्गा-कल्मकों, बाश्किरों और कजाकोंके आपसी झगड़े बराबर बने रहें।

किरिलोफ अप्रैल १७३७ ई०में मर गया। इसी समय रूसी व्यापारियोंका एक कारवां ताशकन्द जानेवाला था, जिसके साथ कप्तान येल्तन गया, जो पीछे भारतपर आक्रमण करने-

वाले नादिरशाहका नौकर हो गया। रूसकी ओरसे येल्तनको अराल समुद्रमें नौसचालन तथा सिरके मुहानेपर कैदियोंके लिये नगर बसानेके बारेमे विवरण देनेके लिये भेजा गया था। किरिलोफके मरनेके बाद उसकी जगह तातीशेफ नियुक्त किया गया। बाश्किर विद्रोहियोको दबानेके लिये अबुल्खैरको उनपर मनमानी करनेकी छूट दे दी गई थी। उसने बाश्किरोमे विद्रोही और और अविद्रोही का फर्क किये बिना सबके ऊपर भारी अत्याचार किये। उसीके बाद वही काम कजाकोने कलमकोंपर आक्रमण करके किया, और वह कलमकोको ही नही, बल्कि रूसियोको भी वन्दी बनाकर ले गये। बन्दी बनाकर ले जानेका मतलब था अन्तर्वेदमें उन्हे दासोंके बाजारमें बेच डालना। इसके कारण रूसी नाराज हो गये, और अबुल्खैरको, नूरअलीको जामिन बनाकर हटनेका हुक्म दिया। डरके मारे अबुल्खैर नही आया। अगस्त १७३८ ई०में वह आनेको राजी हुआ। उसके आनेपर रास्तेकी दोनो तरफ पाती बाघे सेना खडी थी। जब वह उस तम्बूमें आया, जिसमे रूसी रानी अन्नाका चित्र रखा हुआ था, तो नौ तोपे दागकर उसके लिये सलामी दी गई। तातीशेफको सम्बोधित करते हुये उसने कहा—"परम-भट्टारिका महारानी उसी तरह दूसरे राजाओमें श्रेष्ठ है, जैसे सूर्यका प्रकाश तारोमे। यद्यपि दूर होनेसे मै उन्हे नही देख सकता लेकिन उनके हितकारी प्रतापको मै अपने दिलमें महसूस करता हू। उनके प्रकाशद्वारा रोशनी पाकर म रानीकी अधीनता और एक गजभक्त प्रजाकी तरह अपनी आज्ञाकारिताको घोषित करता हू। मैं अपने परिवार और अपने ओर्दूको परमभट्टारिकाके सरक्षणमें एक शक्तिशाली बाजके पखके नीचे जैसे रखता हू, और सदाके लिये अधीन रहनेकी प्रतिज्ञा करता हू। साथ ही महान् जेनरल मं तुम्हारी ओर भी अपनी मित्रताका हाथ फैलाता ह।" फिर अबुल्खैरने हाथमें कुरान लेकर वफादारीकी कसम खाई, और रूसी बदियोको लौटानेका वादा किया। यही नही, उसने अपनी स्त्री पपाइको भी दरबारमें भेंट-स्वरूप भेजनेकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकार अबुल्खैर जैसे शक्तिशाली घुमन्तू खानको अपने अधीन पाकर रूसियोको भारी प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी।

१७३९ ई०मे तातीशेफकी जगह राजुल उरुसोफ वोयवोद होकर आया। आते ही उसने सुना, कि लघु-ओर्दूवालोने दो रूमी कारवानोको लूट लिया। १७४० ई०में अबुल्खैरने अपने तीन हजार कजाकोको वोल्गा-कलमकोको लूटनेके लिये भेजा। इसी बीचमे कुछ समयके लिये अबुल्खैर खीवाका खान भी बन गया था, लेकिन नादिरशाहने उसे वहा टिकने नही दिया। इस समय उसकी पूर्वी सीमान्तपर जुगरोका प्रताप छाया हुआ था। अबुल्खैर उन्हे भी खुश रखना चाहता था। जुगर कजाकोंके बार-बारके आक्रमणसे तग आ गये। उन्होने दो बडी-बडी सेनायें मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूके विरुद्ध भेजी, और अबुल्खैरसे जामिन भेजनेके लिये कहा।

रूसी राज्यपाल नेप्लुयेफने इसे उचित नही समझा, कि रूसी प्रजा होते हुये अबुल्खैर जुगरोंके पास जामिन भेजे। १७४२ ई०में शपथ लेते वक्त अबुल्खैर और दूसरोने यह वचन दिया था, कि हम जुगरोसे छेडछाड नही करेंगे। अबुल्खैरने अपने पुत्रके स्थानपर किसी दूसरेको रूसी राज्यपालके यहा जामिन रखना चाहा, लेकिन रूसियोने इसे नही माना। इसपर उसने कजाकोको भडकाया, और १७४३ ई०में दो हजार कजाक आकर नये बसे शहर ओरेनबुर्गको लूट वहाके निवासियोको पकड ले गये। इन कजाकोका नेता अबुल्खैरका सबधी दरवेशअली सुल्तान था।

अभीतक अबुल्खैर पर्देकी आडमें शिकार खेल रहा था, लेकिन १७४४ ई०म उसने नकाब उठा फेंका। अब उसके आदमी खुलकर रूसी कारवाको लूटने लगे। अन्तमे २४ अप्रैल १७४४ ई०को रूसियोने कल्मक राजा दोण्डुब् थैंचीको बारूद और शीशाके साथ पत्र लिखकर हुक्म भेजा, कि तुम अपने आदमियोको जमा करके कजाकोपर हमला करो, जो भी लूटम हाथ आयें, वह तुम्हारा होगा। लेकिन यह पत्र भेजा नही जा सका, क्योकि इसी समय जुगर-कल्मकोका साइबेरियापर आक्रमण होनेवाला था, जिसमें अबुल्खैरके कजाकोकी सहायता आवश्यक थी। अब भी अबुल्खरकी लूट-मार बन्द नही हुई। उसके आदमी फर्वरी १७४६ ई० और जनवरी १७४७ ई०मे जमे हुये कास्पियनपरसे होकर वोल्गा-कल्मकोको लूटने गये। बहुत इधर-उधर करनेके बाद १७४८ ई०की गर्मियामें अबुल्खैरने खोजा अहमदकी जगहपर अपने पुत्र ऐचुवक तथा कुछ दूसरे कजाक अमीरोंके लडकोंको जामिन देना स्वीकार किया, और यह भी वचन दिया, कि म अपने पासके रूसी बदियाको लौटा दूगा, और मेरे

आदमी फिर साम्राज्यपर आक्रमण नही करेंगे। इधर वह रूससे इस तरहकी प्रतिज्ञाये कर रहा था, और उधर चुपचाप जुगरोके खुङ्-थैचीको अपनी लडकी देनेकी बात चला रहा था।

अपने स्थानपर लौटनेके बाद लोगोको जमाकर अबुल्खैरने कराकल्पकोपर चढाई की, लेकिन मध्य-ओर्दूके शक्तिशाली कबीले नैमनका एक अत्यन्त प्रभावशाली खान बुर्राक कराकल्पकोको अपनी प्रजा कहता था। अबुल्खैरकी रूसने जो आवभगत की थी, उससे भी बुर्राक जल-भुन गया था। दोनोकी लडाई हुई, जिसमें अबुल्खैरको हारकर भागना पडा। बुर्राक-पुत्र शिगाईने दौड़कर उसे घोडेसे उतार भाला घुसेड दिया, इसी समय बुर्राक आ पहुचा, जिसने अपने हाथो अबुल्खैरको खतम किया। फिर वह कराकल्पकोको लूटने गया, लेकिन कराकल्पकोंके रक्षक अब रूसी थे जिनके डरके मारे उसने तुर्किस्तान लौट इकान, सिगनक और ओतरारपर अधिकार किया। पर जैसा कि पहले कहा, अगले ही साल १७४९ ई०में दो पुत्रो सहित उसे जहर देकर मार डाला गया—कहते हैं, इसमें जुगर खुङ्-थैशी छेवङ दोर्जेका भी हाथ था, जिसके पास अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने बापकी निर्मम हत्याकी शिकायत की थी। अबुल्खैरकी कब्र उत्किया नदीकी शाखा कादिर नदीके पास अक्षाश ५० ३० देशान्तर ८६-०१० मे मौजूद है।

३ नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र (१७४९–९० ई०)

अबुल्खैरके मरनेके बाद राज्यपाल नेप्लुयेफके प्रयत्नसे अबुल्खैर-पुत्र नूर अलीको खान चुना गया। वह लघु-ओर्दू और मध्य-ओर्दू दोनोका खान बनना चाहता था, पर रूसियोने २६ फरवरी १७३९ ई० को शासनपत्र भेज उसे किर्गिज-कजाकोका खान बनाया। नूरअलीकी मा पपाईका प्रभाव कजाको और पीतरबुर्ग दोनोमें था। ओरेनबुर्गमें नूरअलीको बडे ठाट-बाटके साथ खान घोषित करनेकी रसम अदा हुई। उसे दरबारी खिलअत, टोपी और तलवार दी गई, फिर घुटने टेककर उसने राजभक्तिकी शपथ ली। ओर्दूमें लौटनेपर जुगर खुङ्-थैचीका दूत आ मिला, जिसने उसकी बागदत्ता बहिनको मागा। उसने यह भी कहा, कि खुङ्-थैची तुर्किस्तान शहरको तुम्हें देनेके लिये तैयार है, जहापर तुम्हारे बाप-दादोकी हड्डिया कब्रिस्तानमें गडी हुई है। लेकिन नरअलीके सुल्तान और ओर्दूके मुखिया रूसियोको नाराज नही करना चाहते। रूसी जुगरोकी ताकतको समझते थे, जिनके प्रभुत्वको महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दू मानता था, और दोनो मध्य-एसियाई उनके हाथोंसे बाहर जानेकी शक्ति नही रखते थे। इसलिये उन्होने खुङ्-थैचीको नूरअलीका बहनोई बननेसे रोका। १७५० ई०में बहिन मर गई, सदेह था, वह स्वाभाविक मौतसे नही मरी। अबुल्खैर और काइपमें प्रतिद्वद्विता चलती रही। काइप-पुत्र बातिर (बहादुर)को लघु-ओर्दूके एक भागने अपना खान चुना। फिर बातिर-पुत्र काइप II खीवाका शासक चुना गया। बातिरने खीवासे बुखारा जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेनेकी माग की, जिसे कुछ अशमें रूसियोने मजूर भी कर लिया, इसपर नूरअली नाराज हो गया। नूरअलीके भाई ऐचुवकने १७५० ई० के वसन्तमें शातिप्रिय कबीला अरालीपर आक्रमण किया, जो कि खीवाके खानके अधीन था। इसका बदला लेनेके लिये खीवा-खान काइपने खीवामें व्यापारके लिये गये नूरअलीके लोगों तथा उसके दूतको बन्दी बना लिया, और लूटे माल तथा बन्दी अरालियोको लौटा दिया। एचुवकके दूसरे भाई एरलीने कराकल्पकोपर हाथ मारा, लेकिन यहा मुकाबिला निर्बलोंसे नही था, इसलिये एरलीके अधिकाश आदमी मारे गये, और स्वय एरली भी कितने ही महीनोतक कराकल्पकोंका बन्दी रहा।

नूरअली नही पसद करता था, कि खीवाके कारवासे बातिर छेड-छाड करे। १७५३ ई० में उसने एक रूसी कारवाको खीवा जाते वक्त लुटवा लिया, ऐसी ही और भी कितनी हो मनमानिया की, जिसकी शिकायत करनेपर उसने जवाब दिया—"बातिर और उसके पुत्र काइपने जो अत्याचार किये, उन्हींके कारण ऐसा हुआ। वह रूसके इलाकेपर हमला करना चाहते हैं, यदि मुझे दस हजार सेना और तोपखाना मिले, तो मैं चन्द दिनोंमें उन्हें दबा सकता हू। रूसियोने इसे स्वीकार नही किया। खीवावालोंके साथ झगडा होनेपर रूसियोने नूरअलीको खीवापर आक्रमण

बाद नादिरशाहका तोहफा हो गया। रूसी आगे बढनेका इरादा छोडकर तोमवाल्स्क तथा सिरक नदीपर किलोके लिए जगह तलाश करनेके लिये भेजा गया था। किरिलोफके मरनेके बाद उसकी जगह तातीशेफ नियुक्त किया गया। बाश्किर विद्रोहियोंको दबानेके लिये अबुलखैरको उनपर मनमानी कार्रवाई करनेकी छूट दी गई थी। उसने बाश्किरोंमें विद्रोही और और अविद्रोही का फर्क किये बिना सबके ऊपर भारी अत्याचार किये। उसके बाद वही काम कजाकोंने कल्मकोंपर आक्रमण करके किया, और वह कल्मकोंको ही नहीं बल्कि रूसियोंको भी पकड़ ले गये। बन्दी बनाकर ले जानेका मतलब था अन्तर्वेश उन्हें दास बनाकर बाजारमें बेच डालना। इसके कारण रूसी नाराज हो गये, और अबुलखैरको, नये ढंगका जामिन सदारोंको देनेका हुक्म दिया। उस साल अबुलखैर नहीं आया। अगस्त १७३८ ई०में वह आनेको राजी हुआ। उसके आनेपर गवर्नरकी दोनों तरफ पानी बाग सेना खड़ी थी। जब वह उस तम्बूमें आया, जिसमें रूसी रानीका चित्र लगा हुआ था तो तोप दाग कर उसके लिये सलामी दी गई। तातीशेफको सम्बोधित करते हुये उसने कहा—"परम-भट्टारिका महारानी उसी तरह दूसरे राजाओंसे श्रेष्ठ हैं, जैसे सूर्यका प्रकाश ताराओंसे। यद्यपि दूर होनेसे मैं उन्हें नहीं देख पाता, लेकिन उनके हितकारी प्रतापको मैं अपने दिलमें महसूस करता हूँ। उनके प्रतापद्वारा रूसानी पाकर मैं रानीकी अधीनता और एक राजभक्त प्रजाकी तरह अपनी आज्ञाकारिताको प्रमाणित करता हूँ। मैं अपने परिवार और अपने ओर्दूको परमभट्टारिकाके संरक्षणमें एक शक्तिशाली बाजों पंखके नीचे जैसे रखता हूँ, और सदाके लिये अधीन रहनेकी प्रतिज्ञा करता हूँ। साथ ही महान् जेनरल से तुम्हारी ओर भी अपनी मित्रताका हाथ फैलाता हूँ।" फिर अबुलखैरने हाथमें कुरान लेकर वफादारीकी कसम खाई, और रूसी बंदियोंको लौटानेका वादा किया। यही नहीं, उसने अपनी स्त्री पपाइको भी दरबारमें भेंट-स्वरूप भेजनेकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकार अबुलखैर जैसे शक्तिशाली घुमन्तू खानको अपने अधीन पाकर रूसियोंको भारी प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी।

१७३९ ई०में तातीशेफकी जगह राजुर उरुसोफ वोयवोद होकर आया। आते ही उसने सुना, कि लघु-ओर्दवालोंने दो रूसी कारवानोंको लूट लिया। १७४० ई०में अबुलखैरने अपने तीन हजार कजाकोंको वोल्गा-कल्मकोंको लूटनेके लिये भेजा। इसी बीचमें कुछ समयके लिये अबुलखैर खीवाका खान भी बन गया था, लेकिन नादिरशाहने उसे वहाँ टिकने नहीं दिया। इस समय उसकी पूर्वी सीमान्तपर जुगरोंका प्रताप छाया हुआ था। अबुलखैर उन्हें भी खुश रखना चाहता था। जुगर कजाकोंके बार-बारके आक्रमणसे तंग आ गये। उन्होंने दो बडी-बडी सेनायें मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूके विरुद्ध भेजी, और अबुलखैरसे जामिन भेजनेके लिये कहा।

रूसी राज्यपाल नेप्लुयेफने इसे उचित नहीं समझा, कि रूसी प्रजा होते हुये अबुलखैर जुगरोंके पास जामिन भेजे। १७४२ ई०में शपथ लेते वक्त अबुलखैर और दूसरोंने यह वचन दिया था, कि हम जुगरोंसे छेड़छाड़ नहीं करेंगे। अबुलखैरने अपने पुत्रके स्थानपर किसी दूसरेको रूसी राज्यपालके यहाँ जामिन रखना चाहा, लेकिन रूसियोंने इसे नहीं माना। इसपर उसने कजाकोंको भड़काया, और १७४३ ई०में दो हजार कजाक आकर नये बसे शहर ओरेनबुर्गको लूट वहाँके निवासियोंको पकड़ ले गये। इन कजाकोंका नेता अबुलखैरका संबंधी दरवेशअली सुल्तान था।

अभीतक अबुलखैर पर्देकी आड़में शिकार खेल रहा था, लेकिन १७४४ ई०में उसने नकाब उठा फेंका। अब उसके आदमी खुलकर रूसी कारवाँको लूटने लगे। अन्तमें २४ अप्रैल १७४४ ई०को रूसियोंने कल्मक राजा दोण्डुब् थैचीको बारूद और शीशाके साथ पत्र लिखकर हुक्म भेजा, कि तुम अपने आदमियोंको जमा करके कजाकोंपर हमला करो, जो भी लूटमें हाथ आये, वह तुम्हारा होगा। लेकिन यह पत्र भेजा नहीं जा सका, क्योंकि इसी समय जुगर-कल्मकोंका साइबेरियापर आक्रमण होनेवाला था, जिसमें अबुलखैरके कजाकोंकी सहायता आवश्यक थी। अब भी अबुलखैरकी लूट-मार बन्द नहीं हुई। उसके आदमी फर्वरी १७४६ ई० और जनवरी १७४७ ई०में जमे हुये कास्पियनपरसे होकर वोल्गा-कल्मकोंको लूटने गये। बहुत इधर-उधर करनेके बाद १७४८ ई०की गर्मियोंमें अबुलखैरने खोजा अहमदकी जगहपर अपने पुत्र ऐचुवक तथा कुछ दूसरे कजाक अमीरोंके लड़कोंको जामिन देना स्वीकार किया, और यह भी वचन दिया, कि मैं अपने पासके रूसी बंदियोंको लौटा दूँगा, और मेरे

आदमी फिर साम्राज्यपर आक्रमण नही करेंगे। इधर वह रूसमे इस तरहकी प्रतिज्ञाये कर रहा था, और उधर चुपचाप जुगरोंके खुङ-थैचीको अपनी लडकी देनेकी वात चला रहा था।

अपने स्थानपर लौटनेके वाद लोगोको जमाकर अवुल्खैरने कराकल्पकोपर चढाई की, लेकिन मध्य-ओर्दूके शक्तिशाली कवीले नैमनका एक अत्यन्त प्रभावशाली खान वुर्राक कराकल्पकोको अपनी प्रजा कहता था। अवुल्खैरकी रूसने जो आवभगत की थी, उससे भी वुर्राक जल-भुन गया था। दोनोकी लडाई हुई, जिसमें अवुल्खैरको हारकर भागना पडा। वुर्राक-पुत्र शिगाईने दौड़कर उसे घोडेसे उतार भाला घुसेड दिया, इसी समय वुर्राक आ पहुचा, जिसने अपने हाथो अवुल्खैरको खतम किया। फिर वह कराकल्पकोको लूटने गया, लेकिन कराकल्पकोंके रक्षक अव रूसी थे जिनके डरके मारे उसने तुर्किस्तान लौट इकान, सिगनक और ओतरारपर अधिकार किया। पर जैसा कि पहले कहा, अगले ही साल १७४९ ई०में दो पुत्रो सहित उसे जहर देकर मार डाला गया—कहते है, इसमें जुगर खुङ-थैशी छेवङ दोर्जेका भी हाथ था, जिसके पास अवुल्खैर-पुत्र नूरअलीने वापकी निर्मम हत्याकी शिकायत की थी। अवुल्खैरकी कब्र उत्किया नदीकी शाखा कादिर नदीके पास अक्षाश ५० ३० देशान्तर ८१-०१० मे मौजूद है।

३ नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र (१७४९–९० ई०)

अबुल्खैरके मरनेके वाद राज्यपाल नेप्लुयेफके प्रयत्नसे अवुल्खैर-पुत्र नूर अलीको खान चुना गया। वह लघु-ओर्दू और मध्य-ओर्दू दोनोका खान वनना चाहता था, पर रूसियोने २६ फरवरी १७३९ ई० को शासनपत्र भेज उसे किर्गिज-कजाकोका खान बनाया। नूरअलीकी मा पपाईका प्रभाव कजाको और पीतरवुग दोनोमें था। ओरेनवुगमें नूरअलीको वडे ठाट-वाटके साथ खान घोपित करनेकी रसम अदा हुई। उसे दरवारी खिलअत, टोपी और तलवार दी गई, फिर घुटने टेककर उसने राजभक्तिकी शपथ ली। ओर्दूमें लौटनेपर जुगर खुङ-थैचीका दूत आ मिला, जिसने उसकी वागदत्ता वहिनको मागा। उसने यह भी कहा, कि खुङ-थैची तुर्किस्तान शहरको तुम्हें देनेके लिये तैयार है, जहापर तुम्हारे वाप-दादोकी हड्डिया कलिममें गडी हुई है। लेकिन नरअलीके सुल्तान और ओर्दूके मुखिया रूसियोको नाराज नही करना चाहते। रूसी जुगरोकी ताकतको समझते थे, जिनके प्रभुत्वको महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दू मानता था, और दोनो मध्य-एसियाई उनके हाथोंसे वाहर जानेकी शक्ति नही रखते थे। इसलिये उन्होने खुङ-थैचीको नूरअलीका बहनोई वननेसे रोका। १७५० ई०में वहिन मर गई, सदेह था, वह स्वाभाविक मौतसे नही मरी। अवुल्खैर और काइपमें प्रतिद्वंद्विता चलती रही। काइप-पुत्र वातिर (वहादुर)को लघु-ओर्दूके एक भागने अपना खान चुना। फिर वातिर-पुत्र काइप II खीवाका शासक चुना गया। वातिरने खीवासे वुखारा जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेनेकी माग की, जिसे कुछ अशमें रूसियोने मजूर भी कर लिया, इसपर नूरअली नाराज हो गया। नूरअलीके भाई ऐचुवकने १७५० ई० के वसन्तमें शातिप्रिय कबीला अरालीपर आक्रमण किया, जो कि खीवाके खानके अधीन था। इसका वदला लेनेके लिये खीवा-खान काइपने खीवामें व्यापारके लिये गये नूरअलीके लोगो तथा उसके दूतको वन्दी बना लिया, और लूटे माल तथा बन्दी अरालियोको लौटा दिया। एचुवकके दूसरे भाई एरलीने कराकल्पकोंपर हाथ मारा, लेकिन यहा मुकाविला निर्वलोंसे नही था, इसलिये एरलीके अधिकाश आदमी मारे गये, और स्वय एरली भी कितने ही महीनोतक कराकल्पकोंका वन्दी रहा।

नूरअली नही पसद करता था, कि खीवाके कारधासे वातिर छेड-छाड करे। १७५३ ई० में उसने एक रूमी कारवाको खीवा जाते वक्त लुटवा लिया, ऐसी ही और भी कितनी ही मनमानिया की, जिसकी शिकायत करनेपर उसने जवाव दिया—"वातिर और उसके पुत्र काइपने जो अत्याचार किये, उन्हींके कारण ऐसा हुआ। वह रूसके इलाकेपर हमला करना चाहते है, यदि मुझे दस हजार सेना और तोपखाना मिले, तो मै चन्द दिनोमें उन्हे दबा सकता हू। रूसियोने इसे स्वीकार नही किया। खीवावालोंके साथ झगडा होनेपर रूसियोने नूरअलीको खीवापर आक्रमण

करनेके लिये उकसाया। रूसियोंने अपने आदमी भेजकर समझाया। सोय रूसके लिये फुसलाया, लेकिन हुआ यह, कि खाजा (मयर)के बीचमें पड़ जानेसे मामला और भी आगे बढ़कर खतम हो गया।

१७५५ ई०में बाश्किरोंने रूसियोंके खिलाफ विद्रोह कर दिया। मुल्ला बातिर शाहने उन बाश्किरों (रूसियों)के विरुद्ध उभारा और कजाकोंने भागकर तथा कजाक-ओर्दूमें भी जहाद करनेको लिख रखा। उनमेंसे बहुत रूसी अफसरोंको उन्होंने मारा। इसपर राज्यपाल तथा कमांडर नेप्लुइयेफने कजाकोंके प्रमुख—सुल्तान नूरअली, मुहम्मद मसलियार तथियर आदि कबीलोंसे सहायता ली। आरनबगके अखून (जिन्होंने अकीर नामियाँ या समाचार)ने फतवा दिया, कि रूसियोंसे भाग भगानेवाले बाश्किरोंको आश्रय देना इसलिये रूसके खिलाफ नहीं लड़ना चाहिये। रूसी राज्यपालने फतवाको कजाकोंमें बटवाया। रूसी दरबारकी सहमतिके साथ उसने कजाक खान और सुल्तानोंसे वचन लिया कि उनके बीचमें रहनेवाले सभी बाश्किर औरतों और बच्चोंको हम उस शर्तपर तुम्हारे हवाले कर देंगे कि तुम उनके पुरुषोंको सीमान्तसे बाहर भगा दो। इस समय विद्रोहके कारण बहुत भारी संख्यामें बाश्किर भागकर यायिक (उराल) नदीके पार चले गये थे। भोले कजाक इस मौकेसे फायदा उठाये बिना नहीं रह सकते थे, उन्होंने इन सभी अभागे लोगोंको पकड़ लिया। बाश्किर संख्यामें प्रतिरोध करनेकी शक्ति नहीं थी, उनमेंसे कितने ही मारे गये और कितनों हीको कजाकोंने पकड़कर रूसियोंके हाथमें दे दिया, और कुछ देश लौट बदला लेनेकी तैयारी करने लगे। रूसियोंने उन्हें भीतर-भीतर सहायता दी। फिर बाश्किर बड़ी संख्यामें यायिक पार हो कजाकोंके ऊपर पड़े। रूसी दोनों जातियोंमें दुश्मनीकी आग भड़काकर चैनकी वंशी बजाने लगे। बाश्किरों और कजाकोंका झगड़ा अब पीढ़ियोंके लिये जारी हो गया। अपनी सीमान्तकी रक्षाके लिये जारशाहीने क्या-क्या तरीके इस्तेमाल किये उसका एक उदाहरण देखिये—अभी रूसी इतने साधन-सम्पन्न नहीं थे कि सीमान्तपर अपने बलपर शान्ति स्थापन कर सकते। नूरअलीने इसकी शिकायत जब रूसियोंके पास की तो उन्होंने जवाब दिया— बाश्किर भगोड़ोंको शरण देनेका यह फल है।" जब बाश्किरों और कजाकोंका खूनी संघर्ष काफी हो चुका, और दोनों जातियाँ खूब कमजोर हो गईं, तो नेप्लुइयेफने यायिक नदीको दोनोंके बीचमें सीमा निश्चित करके उस पार करना निषिद्ध कर दिया। थोड़े दिनोंके लिये झगड़ा रुक गया लेकिन कबीलोंकी बदला लेनेकी प्रवृत्ति कितने दिनोंतक रुक सकती थी? फिर वह एक दूसरेके इलाकेमें घुसकर लूट-मार करने लगे, यदि सरदार रोकना चाहता, तो उसे काफिर रूसियोंका आदमी कहकर बदनाम करते। इसी बीचमें प्रुशिया (जर्मनी) के साथ रूसका सप्तवर्षीय युद्ध छिड़ गया, इसलिये रूसियोंका सारा ध्यान उधर खिंच गया।

१७५७ ई०में कलमक शासक दाव्दुव चीन नूरअली और क्रिमियाके खानसे कहा, कि आओ मिलकर रूसियोंके ऊपर हमला करें। लेकिन इसी समय चीनियोंने आक्रमण करके जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया, और विजयी चीनी सेनाके कारण रूसी सीमान्त खतरेमें पड़ गया। नूरअली रूसियोंकी शहरपर चीनियोंसे लड़नेके लिये तैयार था, लेकिन चीनी सेना जुगरोंके प्रभावक्षेत्रसे आगे नहीं बढ़ी।

१७५९ ई०में ओरेनबुगमें नया रूसी राज्यपाल था, जिसने नूरअलीके साथ उचित शिष्टाचार नहीं दिखलाया, जिसपर कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू कर दी, और रूसी भी बदला लेने लगे। एचुवकने जुगारियामें चले चलनेका प्रस्ताव किया। इसकी भनक मिलनेपर रूसियोंने वार्षिक पेंशन और दूसरे साम-दानके हथियारोंसे कजाकोंको ठंडा कर दिया, और ओरेनबुगके हाकिमोंको हिदायत दी, कि कजाकोंके साथ बहुत अच्छी तरह बर्ताव किया जाय, उनमें उदारताके साथ भेंटें बाटी जायँ, जाड़ोंमें उनके ढोरों और घोड़ोंके रहनेके लिये गोशालायें और अस्तबल बना दिये जायँ। रूसी समझ रहे थे, कि ऐसा न करनेपर कजाक चीनियोंकी सीमान्तकी ओर चले जायेंगे, और लघु-ओर्दूका यह इलाका तथा मध्य-एसियाका वणिक्‌पथ निर्जन और उजाड़ हो जायेगा।

१७६२ ई० में एकातेरिना II जब गद्दीपर बैठी, तो उस समय नूरअली, एचुवक तथा मध्य-ओर्दूके अबलइ खानने भेंटें भेजीं, लेकिन उसी समय नूरअलीने पेकिंगमें भी एक दूतमंडल भेजा, जिसका

वहा अच्छा स्वागत हुआ। इसपर फूलकर नूरअलीने रूसियोके साथ अपने लोगाकी छेडछाडको नही रोका। इसके बाद उसने वोल्गा-कल्मकोपर भी आक्रमण किये। उस समय जाडोमे उत्तरी कास्पियन समुद्र जम गया था, इसलिये वर्फपरसे होकर आक्रमण करनेमे उसको सुभीता था। रूसियोने यायिक नदीकी सीमा निश्चित की थी, लेकिन अब नूरअली उसके पश्चिममे जाडा बितानेकी माग करने लगा। जुगरोंके ऊपर विजय प्राप्त करके चीनी सेनाको सामने खडी देखकर मध्य-एसियाके मुस्लिम राज्य अपने घरू झगडोको भूलकर थोडे समयके लिये एक हो गये। नूरअली भी उनके साथ था। १७६८ ई०में नूरअलीने रानी एकतेरिनाको लिखा, कि मध्य-एसियाके मुसलमानोने मुझे निमन्त्रित किया है। साथ ही उसने रूसी इलाकेमे लूट-मार भी जारी रक्खी। १७६५, १७६६ और १७६७ई०मे इस तरहके कई हमले किये। इसके बाद १७७० ई० का वह समय आया, जब कि तोर्गुत-मगोल वोल्गाके तटको छोडकर पूबकी ओर भागने लगे। तोर्गुतोके भागनेमे जहा चीन-सम्राट् और दलाई लामाकी प्रेरणा काम कर रही थी, वहा कजाकोके बार-बारके आक्रमणमे भी वह तग आ गये थे। रूसियोने तोर्गुतोको रोकनेके लिये नूरअली और उसके कजाकोको कहा। काफिर तोर्गुतोकी लूट-मार मुसलमान कजाकोंके लिये पुण्य-अर्जनकी बात थी। नूरअली, उसका भाई एचुवक, खीवा का भूतपूर्व और अब लघु-ओर्दूका एक खान काइप अपने आदमियोंके साथ अभागे प्रवासियोपर टूट पडे। इन भयकर दुश्मनोने चीनी सीमान्ततक उनका पीछा किया। कभी-कभी कल्मकोने भी उन्हे हराया—मागिजके पास कजाकोको भारी हार खानी पडी, लेकिन मुगजर पहाड और इर्गिम नदी के तटपर कजाकोने अधिक सफलता पाई।

१७७३-७४ ई०मे पुगाचेफके नेतृत्वमे वोल्गाके किसानोने विद्रोह कर रक्खा था, यायिकके कसाक और बाश्किर भी उसके साथ थे। दोनो ही कजाकोके शत्रु थे, इसलिये वह विद्रोहमे शामिल नही हुये, हा, देशकी गडबडीसे लाभ उठाकर रूसी बस्तियोको लूटनेमे वह पीछे नही रहे, जिसके लिये १७७४ ई०में रूसियोने भी इनकी खूब मरम्मत की। इसी समय नूरअलीके पुत्र पीरअलीको खीवा और सराइचुकके बीचके तुर्कमानोने अपना खान चुना, और उसने खीवा जानवाले कारवासे कर लेना शुरू किया। कजाकोने जो लूट-मार की थी, उसका बदला लेनेके लिये १७८४ ई०मे ३४६२ रूसी सैनिकोने यायिक पार हो असली लुटेरोको न पा दूसरे ४३ कजाकोको पकड लिया, जिसपर सिरिमके नेतृत्वमें कजाकोने भी जवाब दिया। अगले साल (१७८५ ई०) मे दो डिवीजन रूसी सेना यम्बाकी ओर बढी, जिसने २३० औरत बच्चोको पकड लिया, और कजाकोने मजबूर होकर उनके बदलेमे रूसी बदियोको लौटाया। कजाकोके साथके झगडेको मिटानेके लिये १६ आदमियोकी एक विशेष अदालत बैठाई गई, जिसमें ओरेनबुर्गका सेनापति, दो सरकारी, दो व्यापारी, दो किसान इस प्रकार सात रूसी और एक सुल्तान तथा छ मुखिया—सात कजाक, एक बाश्किर और एक मेशकेरी प्रतिनिधि थे। इस अदालतने शाति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। रूसियोने यह भी देखा, कि लडाकू कजाकोको केवल तलवारके बलपर नही दबाया जा सकता, इसलिये १७८५ ई०मे ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमे कजाकोंके लिये मदरसा, मस्जिदे और कारवासराय बनानेका हुक्म दिया। रूसियोके सामने वही समस्या थी, जो कि हिन्दुस्तान छोडकर जानेतक पश्चिमोत्तर सीमान्तपर अग्रेजोके सामने।

१७८५ ई०में नये राज्यपाल बैरन इगेल्स्त्रोमने कजाकोको दबानेके लिये एक नया तरीका इस्तेमाल किया। उसने लघु-ओर्दूके तीन टुकडे—सेमीरोद्सक, वेउलिन और अलीमुल—करके उनपर अलग-अलग खान नियुक्त किये, और लघु-ओर्दूके खान पदको उठा देना चाहा। साथ ही कजाकोंकी महापरिषद् बुलानेका अधिकार खानके हाथमे न रख सुल्तानो और जेठोंके हाथमें दे दिया। लेकिन इस तरह महापरिषद् बुलानेपर अपमान समझकर कोई कजाक सुल्तान उसमें शामिल नही हुआ, तो भी परिषद् जमा हुई, और उसका सभापति डाकू नेता सिरिम बातिर बना, जो कि आनुवशिक कुलीनताका विरोधी था। उसने जोर देकर कहा—हमे खानकी जरूरत नही। कुल नही योग्यताको देखना चाहिये। रूसियोकी अधीनता स्वीकार करना ही हमारी भलाईका एकमात्र रास्ता है। उसने रूसियोंसे माग की, कि अबुल्खैरके वशको खान-पदसे वचित कर दो। रूसियोने आशिक रूपसे उसकी बात मान भी ली। १७८६ ई०मे उसका अच्छा परिणाम भी दिखाई पडा, जब कि पहलेकी अपेक्षा अधिक पशु

वहा अच्छा स्वागत हुआ। इसपर फूलकर नूरअलीने रूसियोके साथ अपने लोगोकी छेडछाडको नही रोका। इसके बाद उसने वोल्गा-कल्मकोपर भी आक्रमण किये। उस समय जाडोमे उत्तरी कास्पियन समुद्र जम गया था, इसलिये बर्फपरसे होकर आक्रमण करनेमे उसको सुभीता था। रूसियोने यायिक नदीकी सीमा निश्चित की थी, लेकिन अब नूरअली उसके पश्चिममे जाडा वितानेकी माग करने लगा। जुगरोंके ऊपर विजय प्राप्त करके चीनी सेनाको सामने खडी देखकर मध्य-एसियाके मुस्लिम राज्य अपने घरू झगडोको भूलकर थोडे समयके लिय एक हो गये। नूरअली भी उनके साथ था। १७६४ ई०में नूरअलीने रानी एकतेरिनाको लिखा, कि मध्य-एसियाके मुसलमानोने मुझे निमन्त्रित किया है। साथ ही उसने रूसी इलाकेमे लूट-मार भी जारी रक्खी। १७६५, १७६६ और १७६७ई०मे इस तरहके कई हमले किये। इसके बाद १७७० ई० का वह समय आया, जब कि तोर्गुत-मगोल वोल्गाके तटको छोडकर पूवकी ओर भागने लगे। तोर्गुतोंके भागनेमे जहा चीन-सम्राट् और दलाई लामाकी प्रेरणा काम कर रही थी, वहा कजाकोके बार-बारके आक्रमणसे भी वह तग आ गये थे। रूसियोने तोर्गुतोको रोकनेके लिये नूरअली और उसके कजाकोको कहा। काफिर तोर्गुतोकी लूट-मार मुसलमान कजाकोंके लिये पुण्य-अर्जनकी बात थी। नूरअली, उसका भाई एर्चुवक, खीवा का भूतपूर्व और अब लघु-ओर्दूका एक खान काइप अपने आदमियोके साथ अभागे प्रवासियोपर टूट पडे। इन भयकर दुश्मनोने चीनी सीमान्ततक उनका पीछा किया। कभी-कभी कल्मकोने भी उन्हे हराया—सागिजके पास कजाकोको भारी हार खानी पडी, लेकिन मुगजर पहाड और इशिम नदी के तटपर कजाकोने अधिक सफलता पाई।

१७७३-७४ ई०मे पुगाचेफके नेतृत्वमे वोल्गाके किसानोने विद्रोह कर रक्खा था, यायिकके कसाक और बाश्किर भी उसके साथ थे। दोनो ही कजाकोके शत्रु थे, इसलिये वह विद्रोहमें शामिल नही हुये, हा, देशकी गडबडीसे लाभ उठाकर रूसी बस्तियोको लूटनेमे वह पीछे नही रहे, जिसके लिये १७७४ ई०में रूसियोने भी इनकी खूब मरम्मत की। इसी समय नूरअलीके पुत्र पीरअलीको खीवा और सराइचुकके बीचके तुर्कमानोने अपना खान चुना, और उसने खीवा जानवाले कारवासे कर लेना शुरू किया। कजाकोने जो लूट-मार की थी, उसका बदला लेनेके लिये १७८४ ई०में ३४६२ रूसी सैनिकोने यायिक पार हो असली लुटेरोको न पा दूसरे ४३ कजाकोको पकड लिया, जिसपर सिरिमके नेतृत्वमें कजाकोने भी जवाब दिया। अगले साल (१७८५ ई०) मे दो डिवीजन रूसी सेना यम्बाकी ओर बढी, जिसने २३० औरत बच्चोको पकड लिया, और कजाकोने मजबूर होकर उनके बदलेमे रूसी बदियोको लौटाया। कजाकोके साथके झगडेको मिटानेके लिये १६ आदमियोकी एक विशेष अदालत बैठाई गई, जिसमें ओरेनबुर्गका सेनापति, दो सरकारी, दो व्यापारी, दो किसान इस प्रकार सात रूसी और एक सुल्तान तथा छ मुखिया—सात कजाक, एक बाश्किर और एक मेशकेरी प्रतिनिधि थे। इस अदालतने शाति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। रूसियोने यह भी देखा, कि लडाकू कजाकोको केवल तलवारके बलपर नही दबाया जा सकता, इसलिये १७८५ ई०मे ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमे कजाकोंके लिये मदरसा, मस्जिदें और कारवासराय बनानेका हुक्म दिया। रूसियोके सामने वही समस्या थी, जो कि हिन्दुस्तान छोडकर जानेतक पश्चिमोत्तर सीमान्तपर अग्रजोके सामने।

१७८५ ई०में नये राज्यपाल बैरन इगेलस्त्रोमने कजाकोको दबानेके लिये एक नया तरीका इस्तेमाल किया। उसने लघु-ओर्दूके तीन टुकडे—सेमीरोद्सक, बेउलिन और अलीमुल—करके उनपर अलग-अलग खान नियुक्त किये, और लघु-ओर्दूके खान पदको उठा देना चाहा। साथ ही कजाकोकी महापरिषद् बुलानेका अधिकार खानके हाथमे न रख सुल्तानो और जेठोके हाथमें दे दिया। लेकिन इस तरह महापरिषद् बुलानेपर अपमान समझकर कोई कजाक सुल्तान उसमें शामिल नही हुआ, तो भी परिषद् जमा हुई, और उसका सभापति डाकू नेता सिरिम बातिर बना, जो कि आनुवशिक कुलीनताका विरोधी था। उसने जोर देकर कहा—हमें खानकी जरूरत नही। कुल नही योग्यताको देखना चाहिये। रूसियोकी अधीनता स्वीकार करना ही हमारी भलाईका एकमात्र रास्ता है। उसने रूसियोंसे माग की, कि अबुलखैरके वशको खान-पदसे वञ्चित कर दो। रूसियोने आशिक रूपसे उसकी बात मान भी ली। १७८६ ई०मे उसका अच्छा परिणाम भी दिखाई पडा, जब कि पहलेकी अपेक्षा अधिक पशु

सीमान्तके झगड़ोंको निबटनेके लिये आये और १७८६ और १७८७ ई०में पहलेकी अपेक्षा कम रूसी कजाकोंसे बन्दी बने। कजाकोंने पहलेके रूसी बंदियोंको भी भारी संख्यामें छोड़ दिया। १७८८ ई०में याइक (उराल) नदीके पश्चिममें पतालीस हजार कजाक परिवारोंने आरामसे जाड़ा बिताया। बातिर (सिरिम) ओरेनबुर्गके राज्यपालका बड़ा ही विश्वासपात्र आदमी हो गया। नूरअलीने उसे विश्वासघाती बनानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। नूरअली इसपर ठंडा पड़ गया। उसने रूसी बंदियोंको लौटा दिया। अन्तमें रूसियोंने उसे परिवार-सहित ऊफामें और एचुनको उरालस्कमें भेज दिया।

नूरअलीके ज्येष्ठ पुत्र एरलीको १७८१ ई०में करासल्पकोंने अपना खान बनाया था। वह उनके साथ निम्न सिर-उपत्यकामें रहता था। वह थोड़ी-सी सेना लेकर अपने पिताके दुश्मन सिरिम बातिरके ऊपर चढ़ा। इसी समय लघु-ओर्दूके कुछ कबीलोंने भूतपूर्व खीवा-खान काइपको अपना खान बना लिया था, जिसने नूरअली या दूसरेके लिये राज्यपाल इगेल्स्त्रोमके पास आवेदनपत्र दिया था, लेकिन इगेल्स्त्रोम काइपके पक्षमें था, जिससे रानी एकातरिना सहमत नहीं हुई। वह चाहती थी, कि खानका पद उठा दिया जाय। मध्य-ओर्दूका आग्रह था, कि नूरअलीको फिर खान बना दिया जाय। बेउल्लि कबीलेका मुखिया सिरिम बातिर दो सहायकोंके साथ ओर्दूके एक भागका नेता था। रूसियाने उसे सरकारी पदाधिकारी-सा बनाकर नक़द और अनाजके रूपमें वेतन मुकरर कर दिया। कजाक-ओर्दूमें यह सब हाते देख पीढ़ियोंसे चले आते खान्दानी अमीर अधिकार-वंचित होनेके कारण भीतर ही भीतर जले-भुने हुये थे। इसी समय तुर्कीके साथ रूसियोंकी लड़ाई छिड़ गई, बुखाराने अपने खलीफा और धर्मभाइयोंका साथ दिया और कजाकोंको भी रूसियाके खिलाफ भड़कानेकी पूरी कोशिश की—"बहादुर योद्धा, बेग और मुखिया मरतइबेग, सिरिम बातिर, शुकुरअली बेग, सादिरबेग, तोरोंब बातिर, देदाने बातिर आदिको मालूम हो, कि हम ने तुर्कीके बादशाह, और अल्लाके खलीफासे सुना है, कि सात ईसाई राज्योंके साथ काफिर रूमी तुर्कोंके विरुद्ध एक हो गये हैं। कजाकोंको चाहिये, कि उन्हें दंड देनेके लिये सच्चे मुसलमानोंका साथ दें।" बुखारा सारे मध्य-एसियाकी काशी थी, जहांके मदरसोंमें पढ़नेके लिये कजाक-कबीलोंके तरुण भी आया करते थे। सिरिमने जवाब दिया, कि मैं और मेरे लोग इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि जब बुखारा और दूसरे मध्य-एसियाई लोग रूसियोंपर आक्रमण करें, तो हम उनका साथ दें। कजाकोंके भीतर क्या हो रहा है, इसका पता रूसियाको भी था। कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू की। उन्होंने अपने जेठोंकी बात नहीं मानी। जेठोंका काम था ओरेनबुर्ग जाकर अपनी तनखा ले आना। रूसियोंकी परेशानीसे फायदा उठाकर कितने कजाकों और उनके सुल्तानोंने फिरसे खानके नियुक्त करनेके लिये कहा। १७९० ई० में नूरअली ऊफामें रहते हुये मर गया, तबतक रूसी रानी खानके पदको फिरसे कायम करनेके पक्षमें हो चुकी थी।

४ एरली, अबुल्खैर-पुत्र (१७९०–९४ ई०)

जनवरी १७९० ई०में रानीके हुकमसे नूरअलीके भाई एरलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया गया। १७९१ ई० में सिरिम बातिरने यम्बाके मुहानेपर सारे लघु-ओर्दूकी परिषद् बुलाई, जिसमें यह प्रस्ताव रक्खा, कि सभी कजाक एक होकर रूसियोंपर आक्रमण करें, लेकिन अबुल्खैरके वंशजोंने अपने खान्दानके दुश्मन सिरिमकी बातको विफल करनेकी पूरी कोशिश की। ६ सितम्बरको उसी साल नूरअलीके पुत्र तुर्किस्तान-खान पीरअलीने रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये अर्जी दी। काइप पुत्र अबुल्गाजीने उसे यह कहकर बहुत भड़काया, कि तुम्हें न चुनकर एरलीको खान बनाना अन्याय है। उसने कुरानके वाक्यको उद्धृत करते हुए यह भी समझानेकी कोशिश की, कि किसी मुसलमानका हिजरत कर ईसाईकी प्रजा होना धर्मविरुद्ध है, इसलिये हमें रूसी प्रदेश छोड़ देना चाहिये। बुखाराका खान मेरा दोस्त है, वहां हमें रहनेको जगह मिल जायगी। इस सबका परिणाम यही हुआ, कि कजाकोंने लूट-मार बढ़ा दी। एरली खानने रूससे सेनाकी मदद चाही, लेकिन वह न मिली। जून १७९४ ई०में एरली मर गया।

५ इशिम, नूरअली-पुत्र (१७९४–९७ ई०)

लघु-ओर्दूके अधिकाश जेठे सहमत नही थे, तो भी रूसियोने इशिम सुल्तानको खान वनाया। सिरिम वातिरने एकाएक नवम्बर १७९७ ई०में क्रास्नोयास्कके दुर्गपर आक्रमण करके इशिमको मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। सिरिमके अनुयायी कजाक वरावर ऐसा ही करने लगे, जिसका वदला यायिकके कसाकोने १७९७ ई० और १७९८ ई० में आक्रमण करके उनके वहुतेरे आदमियोको मार हजारो घोडोको लूट कर लिया। कुछ ही समय वाद वाश्किरोने भी कजाकोको लूटना-मारना शुरू किया।

६ ऐचुवक, अबुल्खैर-पुत्र (१७९७–१८०५ ई०)

इशिमके मारे जानेके वाद लघु-ओर्दूके शासनका भार एक परिपद्के हाथमे दिया गया, जिसका प्रधान ऐचुवकको वनाया गया। इस परिपद्मे ओर्दूके प्रत्येक कवीलेके दो-दो प्रतिनिधि थे। इस समय वैरन इगेल्स्त्रोम फिर राज्यपाल होकर आया था। लघु-ओर्दूकी सरकारका केंद्र खोब्दा नदीपर रखना निश्चित हुआ। ओर्दू इस प्रवधसे सतुष्ट नही था। उन्होने फिर अपने लिये खानकी माग की। रूसियो ने ऐचुवकका समर्थन किया, रूपये-पैसोके वलपर ऐचुवक खान निर्वाचित हो गया और जार पावलने भी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी। ऐचुवक वूढा था। वह कजाकोको कावूमें नही रख सकता था। ओर्दूमें अव विखराव शुरू हुआ। उनमेंसे कुछ कवीले मध्य-ओर्दूमें मिल गये, कुछने सिर नदीके तटपर जा कराकल्पकोको दवाकर काइप-पुत्र अवुल्गाजीको अपना खान चुना। कुछने उस्तउर्तके अधिकाश भागपर अधिकार करके वहासे तुर्कमानोको भगा दिया। नूरअली-पुत्र वकेइ ऐचुवकके परिपद्का सभापति था। उसने गुर्जी-अस्त्राखानके महाराज्यपाल क्नोरिंगके पास प्राथनापत्र भेजा, कि हमे कल्मकोद्वारा परित्यक्त भूमि (यायिक-वोल्गाके वीचके इलाके रिन्पेस्की) में रहनेकी इजाजत दी जाय। उनमे व्यवस्था कायम रखनेके लिये सौ कसाक नियुक्त कर ११ माच १८०१ ई०के उकाज (राजादेश) द्वारा सरकारने मजूरी दे दी। ये कजाक मुख्यत वाउलिन कवीलेके थे, जिनकी सख्या दस हजार थी। नई भूमिमें आकर वह खूव फलने-फूलने लगे, और सात-आठ सालके भीतर ही उनके पास पहलेसे दस गुना पशु हो गये, जव कि यायिक पारवाले उनके भाई फूट और भूखकी मारसे अपने बच्चोको रूसियोंके हाथ वेच रहे थे।

१८०५ ई० में बुढापेके कारण ऐचुवकने अपने पदको छोड दिया।

७ जन्ती उरा, ऐचुवक-पुत्र (१८०५–९ ई०)

नया खान थोडे ही समयतक रहा, जिसके वाद नूरअलीके एक पुत्रने उसे कत्ल कर दिया। दो सालतक लघु-ओर्दूका कोई खान नही वनाया गया। इसी समय १८१०ई०में ओरेनवुग प्रदेशके इलेत्स्क इलाकेमें—जहापर कि नमककी वडी अच्छी खाने थी—लाकर बहुत भारी सख्यामें रूसी वसा दिये गये। कजाकोके बीचमें रूसियोकी वस्तियोको वसा-वसाकर जारशाही अपने शासनको दृढ करती थी, यह हम प्रशान्त महासागरतक फैली हुई रूसी वस्तियोंसे जानते है। इस वातमें उनकी नीति, भारतमें अग्रेजोंसे भिन्न थी। अग्रेज हिन्दुस्तानमें केवल अपने शासकों, सैनिको और कुछ व्यापारियोको रखकर शासन और शोपण जारी रखना चाहते थे, जव कि रूसी अपने अधीन पूर्वी देशोमें भारी सख्यामें रूसी किसानों और मजदूरोंको लाकर वसाते जाते थे।

८ शेरगाजी, ऐचुवक-पुत्र (१८१२–४४ ई०)

भाईकी जगहपर शेरगाजी लघु-ओर्दूका खान वना। इसी समय यायिक और वोल्गाके वीचमें वसे वुकेई-कवीलेका भी एक खान वुकेई था। १८२४ ई०में उसके मर जानेपर वुकेईके ज्येष्ठ पुत्र जहागीरको खान नियुक्त किया गया। शेरगाजीके ओर्दूके भी तीन टुकडे हो गये थे, जिनपर

सीमान्तके मेलोमें बिकनेके लिये आये और १७८६ और १७८७ ई०में पहलेकी अपेक्षा कम रूसी कजाकोके बन्दी बने। कजाकोने पहलेके रूसी बंदियोको भी भारी संख्यामें छोड दिया। १७८४ ई०में यायिक (उराल) नदीके पश्चिममे पैंतालीस हजार कजाक परिवारोने आरामसे जाडा विताया। बातिर (सिरिम) ओरेनबुर्गके राज्यपालका बडा ही विश्वासपात्र आदमी हो गया। नूरअलीने उसे विश्वास घाती बनानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन उसका कोई फल नही हुआ। नूरअली इसपर ठंडा पड गया। उसने रूसी बंदियोको लौटा दिया। अन्तमे रूसियोने उसे परिवार-सहित ऊफार्मे और एचुवकको उराल्स्कमे भेज दिया।

नूरअलीके ज्येष्ठ पुत्र एरलीको १७८१ ई०में कराकल्पकोने अपना खान बनाया था। वह उनके साथ निम्न सिर-उपत्यकामें रहता था। वह थोडी-सी सेना लेकर अपने पिताके दुश्मन सिरिम बातिरके ऊपर चढ़ा। इसी समय लघु-ओर्दूके कुछ कबीलोने भूतपूर्व खीवा-खान काइपको अपना खान बना लिया था, कुछने नूरअली या दूसरेके लिये राज्यपाल इगेल्स्त्रोमके पास आवेदनपत्र दिया था, लेकिन इगेल्स्त्रोम काइपके पक्षमें था, जिससे रानी एकातरिना सहमत नही हुई। वह चाहती थी, कि खानका पद उठा दिया जाय। मध्य-ओर्दूका आग्रह था, कि नूरअलीको फिर खान बना दिया जाय। बेउलिन कबीलेका मुखिया सिरिम बातिर दो सहायकोंके साथ ओर्दूके एक भागका नेता था। रूसियोने इन्हे सरकारी पदाधिकारी-सा बनाकर नकद और अनाजके रूपमें वेतन मुकरर कर दिया। कजाक-ओर्दूमे यह सब होते देख पीढ़ियोंसे चले आते खान्दानी अमीर अधिकार-वंचित होनेके कारण भीतर ही भीतर जले-भुने हुये थे। इसी समय तुर्कोंके साथ रूसियोकी लडाई छिड गई, बुखाराने अपने खलीफा और धर्मभाइयोका साथ दिया और कजाकोको भी रूसियोके खिलाफ भडकानेकी पूरी कोशिश की—"बहादुर योद्धा, बेग और मुखिया सरतइबेग, सिरिम बातिर, शुकुरअली बेग, सादिरबेग, बोरांक बातिर, देदाने बातिर आदिको मालूम हो, कि हम ने तुर्कोंके बादशाह, और अल्लाके खलीफासे सुना है, कि सात ईसाई राज्योंके साथ काफिर रूमी तुर्कोंके विरुद्ध एक हो गये ह। कजाकोंको चाहियें, कि उन्हे दड देनेके लिये सच्चे मुसलमानोका साथ दे।" बुखारा सारे मध्य-एसियाकी काशी थी, जहाके मदरसोमें पढनेके लिये कजाक-कबीलोंके तरुण भी आया करते थे। सिरिमने जवाब दिया, कि मै और मेरे लोग इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे है, कि कब बुखारा और दूसरे मध्य-एसियाई लोग रूसियोपर आक्रमण करें, तो हम उनका साथ दें। कजाकोंके भीतर क्या हो रहा है, इसका पता रूसियोको भी था। कजाकोने फिर लूट-मार शुरू की। उन्होने अपने जेठोकी बात नहीं मानी। जेठोका काम था ओरेनबुर्ग जाकर अपनी तनखा ले आना। रूसियोकी परेशानीसे फायदा उठाकर कितने कजाको और उनके सुल्तानोने फिरसे खानके नियुक्त करनेके लिये कहा। १७९० ई० में नूरअली ऊफार्मे रहते हुये मर गया, तबतक रूसी रानी खानके पदको फिरसे कायम करनेके पक्षमें हो चुकी थी।

४ एरली, अबुल्खैर-पुत्र (१७९०–९४ ई०)

जनवरी १७९० ई०में रानीके हुक्मसे नूरअलीके भाई एरलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया गया। १७९१ ई० में सिरिम बातिरने यम्बाके मुहानेपर सारे लघु-ओर्दूकी परिषद् बुलाई, जिसमें यह प्रस्ताव रक्खा, कि सभी कजाक एक होकर रूसियोंपर आक्रमण करें, लेकिन अबुल्खैरके वंशजाने अपने खान्दानके दुश्मन सिरिमकी बातको विफल करनेकी पूरी कोशिश की। ६ सितम्बरको उसी साल नूरअलीके पुत्र तुर्किस्तान-खान पीरअलीने रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये अर्जी दी। काइप पुत्र अबुल्गाजीने उसे यह कहकर बहुत भडकाया, कि तुम्हें न चुनकर एरलीको खान बनाना अन्याय है। उसने कुरानके वाक्यको उद्धृत करते हुए यह भी समझानेकी कोशिश की, कि किसी मुसलमानका हिजरत कर ईसाईकी प्रजा होना धर्मविरुद्ध है, इसलिये हमें रूसी प्रदेश छोड देना चाहिये। बुखाराका खान मेरा दोस्त है, वहा हमें रहनेको जगह मिल जायगी। इस सबका परिणाम यही हुआ, कि कजाकोने लूट-मार बढ़ा दी। एरली खानने रूससे सेनाकी मदद चाही, लेकिन वह न मिली। जून १७९४ ई०में एरली मर गया।

५ इशिम, नूरअली-पुत्र (१७९४–९७ ई०)

लघु-ओर्दूके अधिकाश जेठे सहमत नही थे, तो भी रूसियोने इशिम सुल्तानको खान बनाया। सिरिम बातिरने एकाएक नवम्बर १७९७ ई०मे क्रास्नोयार्स्कके दुर्गपर आक्रमण करके इशिमको मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। सिरिमके अनुयायी कजाक बराबर ऐसा ही करने लगे, जिसका बदला यायिकके कसाकोने १७९७ ई० और १७९८ ई० में आक्रमण करके उनके बहुतेरे आदमियोको मार हजारो घोडोको लूट कर लिया। कुछ ही समय बाद बाश्किरोने भी कजाकोको लूटना-मारना शुरू किया।

६ ऐंचुवक, अबुल्खैर-पुत्र (१७९७–१८०५ ई०)

इशिमके मारे जानेके बाद लघु-ओर्दूके शासनका भार एक परिषद्के हाथमें दिया गया, जिसका प्रधान ऐंचुवकको बनाया गया। इस परिषद्मे ओर्दूके प्रत्येक कबीलेके दो-दो प्रतिनिधि थे। इस समय बैरन इगेंल्स्त्रोम फिर राज्यपाल होकर आया था। लघु-ओर्दूकी सरकारका केंद्र खोव्दा नदीपर रखना निश्चित हुआ। ओर्दू इस प्रबंधसे सतुष्ट नही था। उन्होंने फिर अपने लिये खानकी माग की। रूसियोने ऐंचुवकका समर्थन किया, रूपये-पैसोके बलपर ऐंचुवक खान निर्वाचित हो गया और जार पावलने भी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी। ऐंचुवक बूढा था। वह कजाकोको काबूमें नही रख सकता था। ओर्दूमे अब बिखराव शुरू हुआ। उनमेंसे कुछ कबीले मध्य-ओर्दूमें मिल गये, कुछने सिर नदीके तटपर जा कराकल्पकोको दबाकर काइप-पुत्र अबुलगाजीको अपना खान चुना। कुछने उस्तउतके अधिकाश भागपर अधिकार करके वहासे तुर्कमानोको भगा दिया। नूरअली-पुत्र बकेइ ऐंचुवकके परिषद्का सभापति था। उसने गुर्जी-अस्त्राखानके महाराज्यपाल क्नोरिंगके पास प्रार्थनापत्र भेजा, कि हमें कल्मकोद्वारा परित्यक्त भूमि (यायिक-वोल्गाके बीचके इलाके रिन्पेस्की) मे रहनेकी इजाजत दी जाय। उनमें व्यवस्था कायम रखनेके लिये सौ कसाक नियुक्त कर ११ मार्च १८०१ ई०के उकाज (राजादेश) द्वारा सरकारने मजूरी दे दी। ये कजाक मुख्यत बाउलिन कबीलेके थे, जिनकी सख्या दस हजार थी। नई भूमिमें आकर वह खूब फलने-फूलने लगे, और सात-आठ सालके भीतर ही उनके पास पहलेसे दस गुना पशु हो गये, जब कि यायिक पारवाले उनके भाई फूट और भूखकी मारसे अपने बच्चोंको रूसियोके हाथ बेंच रहे थे।

१८०५ ई० में बुढ़ापेके कारण ऐंचुवकने अपने पदको छोड दिया।

७ जन्ती उरा, ऐंचुवक-पुत्र (१८०५–९ ई०)

नया खान थोडे ही समयतक रहा, जिसके बाद नूरअलीके एक पुत्रने उसे कत्ल कर दिया। दो सालतक लघु-ओर्दूका कोई खान नही बनाया गया। इसी समय १८१०ई०में ओरेनबुर्ग प्रदेशके इलेत्स्क इलाकेमें—जहापर कि नमककी बडी अच्छी खाने थी—लाकर बहुत भारी सख्यामे रूसी बसा दिये गये। कजाकोंके बीचमें रूसियोंकी बस्तियोको बसा-बसाकर जारशाही अपने शासनको दृढ़ करती थी, यह हम प्रशान्त महासागरतक फैली हुई रूसी बस्तियोंसे जानते है। इस बातमें उनकी नीति, भारतमें अग्रेजोंसे भिन्न थी। अग्रेज हिन्दुस्तानमें केवल अपने शासको, सैनिको और कुछ व्यापारियोंको रखकर शासन और शोषण जारी रखना चाहते थे, जब कि रूसी अपने अधीन पूर्वी देशोमें भारी सख्यामें रूसी किसानों और मजदूरोको लाकर बसाते जाते थे।

८ शेरगाजी, ऐंचुवक-पुत्र (१८१२–४४ ई०)

भाईकी जगहपर शेरगाजी लघु-ओर्दूका खान बना। इसी समय यायिक और वोल्गाके बीचमें बसे बुकेई-कबीलेका भी एक खान बुकेई था। १८२४ ई०में उसके मर जानेपर बुकेईके ज्येष्ठ पुत्र जहागीरको खान नियुक्त किया गया। शेरगाजीके ओर्दूके भी तीन टुकडे हो गये थे, जिनपर

तीन सुल्तान शासन करते थे। किर्गिज लोगोमें अपने राजवशके प्रति बहुत सम्मान था, और वह काली हड्डीवाले (साधारण जनता) सफेद हड्डी (पुराने राजवश) के जूयेको बडी खुशीसे उठानेके लिये तैयार थे।

अब कास्पियनके पूर्वी तटपर भी रूसने हाथ-पैर फैलाना शुरू किया था। १८३३ ई०में वहा उन्होने नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की, फिर मगुश्लक (मगिश्लक) किलोको बनाया। १८३५ ई०में यायिक (उराल) और उई नदियोके बीचमें एक नई दुर्ग-पक्ति बनाई, और इसके बीचमें पडनेवाली भूमि ओरेनबुगके कसाकोके इलाकेमें मिला दी गई। कुछ ही साल बाद मध्य-ओर्दूके प्रसिद्ध खान केनीसर कासिमोफने साइबेरियाके कजाकोमें भारी विद्रोह फैलाया, और लघु-ओर्दूके भी कुछ कजाक विद्रोहियोमे जा मिले। इस विद्रोहने छ सालतक रूसी सरकारको परेशान रक्खा। १८४४ ई०में रूसी सेनाने कासिमोफका पीछा करके उसे बुरूतो (करा-किर्गिजो)मे भागनेके लिये मजबूर किया, जहा उनमे लडते हुये कासिमोफ मारा गया। इस विद्रोहके दबानेके प्रयत्नके फलस्वरूप तुरगाई नदीपर ओरेनबुग-ईर्गिजपर उरालके किले १८४७ ई०मे बने। अगले साल करावुलात-तटपर उसी नामका एक रूसी किला बनाया गया। रूसी सीमाके भीतर रहनेवाले कजाकोपर खोकन्दी और खीवावाले लूट-मार किया करते थे, जिसके प्रतिरोधके लिये रूसियोने १८४७ ई०मे ही निम्न-सिरपर अराल्स्क (भूतपूर्व राइम्स्क)का किला बनाया। इस प्रकार रूस कदम-कदम आगे बढता जा रहा था, फिर भला कजाकोके भीतर शाति कैसे कायम हो सकती थी? जबतक इजत कुतेब्रेरोफको भगा नही दिया गया, और प्रसिद्ध बातिर जान खोजा मारा नही गया, तबतक दश्त (स्तेपी)में रूसियो और कजाकोका सघष जारी रहा, फिर कजाक पूरीतौरसे रूसियोके सरक्षणमें आ गये।

१८६९ ई०मे ओरेनबुगके दश्तमें नया शासन-सुधार हुआ, जिसके अनुसार सारे लघु-ओर्दूको उराल्स्क और तुरगाई दो जिलोमे बाट दिया गया। हरएक जिलेमें एक रूसी सैनिक कमाडर रहता था, जिसके अधीन कजाकोद्वारा निर्वाचित कुछ औल-जेठे (डेरेके मुखिया) शासन-प्रबधमें सहायता देते थे। कजाकोमें इसका भारी असतोष था, कि उनके ऊपर रूसी कसाक शासन करनेके लिये नियुक्त किये गये है। खीवाके खान कजाकोंके खान-वशके ही होते थे और उनका रूसियोंसे अच्छा सबध नही था। खीवाके खानने कजाकोंके असतोषसे फायदा उठाकर उन्हें भडकाया, जिसके कारण १८६९-७० ई०में सारे दश्तमें विद्रोहकी आग भडक उठी, डाकके रास्ते बद हो गये। कजाकोने डाककी चौकियोको नष्ट कर दिया, मुसाफिरोमेंसे पकडकर कुछको मार दिया और कुछको दास बनाकर बेंच दिया। इसके लिये रूसियोने घोर दमन किया, और कबीलोंको जबदस्ती जहा-तहा भेज दिया। लेखक श्माइलर १८७३ ई०में तुर्किस्तानमे कजाक राजुल छिङ-गिस्के साथ रहा, जो कि बुकेइयेफ ओर्दूके अन्तिम खानका पुत्र था। पिताके मरनेपर जारने उसे राजुलकी रूसी उपाधि प्रदान की थी, लेकिन वह पक्का मुसलमान था, और हाल हीमें मक्कासे लौटकर आया था। समारा जिलेमें उसे जमीदारी मिली थी। श्माइलरके अनुसार वह बडा ही सस्कृत, भद्र पुरुष था। उसका अधिक समय फ्रेंच उपन्यासोके पढ़नेमें लगता था। लघु-ओर्दू १९वी सदीके चतुथ पादतक पहुचते पहुचते अपने स्वभावमें कितना परिवतन कर चुका था, इसका उदाहरण यह राजुल था। लेकिन यह परिवतन अमीरो और राजवशियोतक हीमे सीमित था, अभी साधारण कजाक-जनता बहुत-कुछ पुरानी दुनियामे रहनेकी कोशिश कर रही थी और बोल्शेविक क्रातिके बाद ही उसमे वास्तविक सामाजिक क्राति हुई।

ग महा-ओर्दू (१७४०–६० ई०)

मध्य-ओर्दू और लघु ओर्दू रूसी सीमातके पास रहते थे, इसलिये उनका सबध बहुत पहले ही से रूसियोके साथ हो गया था, लेकिन महा-ओर्दू बहुत दूर रहता था, इसीलिये रूसियोके साथ सबध बहुत कम रहनेके कारण उनके इतिहासके बारेमें भी हमें बहुत अधिक मालूम नही है। महा-ओर्दूके कई कबीले थे, जो अपने अलग-अलग सुल्तान, बेग या खानके अधीन रहते थे। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि सारे कजाक-ओर्दुओकी तरह यहापर भी छिङ-गिस् खानके खूनसे सबध रखनेवाले ही शासकके तौरपर पसद किये जाते। महा-ओर्दू पहले जुगरोंके अधीन था, पीछे उन्होने चीनियोकी

अधीनता स्वीकार की। यद्यपि नाम महा-ओर्दू था, लेकिन सख्या और प्रभाव दोनोमें यह श्वेत-ओर्दूके मध्य और लघु-ओर्दूसे निबल था। तौफीक (तियाअवका) खानने श्वेत-ओर्दूको तीन हिस्सोमें बाटकर तिउलको महा-ओर्दूका शासक नियुक्त किया था। १७२३ ई०में जब जुगरोने कजाकोकी भूमि और तुर्किस्तान शहरको ले महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दूके कितने ही कबीलोको अपने अधीन किया, तो बाकी बचा हुआ महाओर्दू और मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर चला गया। पीछे कितने ही कजाक उत्तरकी ओर चले गये, लेकिन महा-ओर्दूवाले जुगरोकी प्रजा बनकर अपने पुराने देशमें बने रहे। महा-ओर्दूके निम्न खानोका पता है —

१	यलबस, इलवस	१७४० ई०
२	तिउल बी	१७४०–ई०
३	कुसियन बी	१७४२–ई०

१ एलबर्स (–१७४० ई०)

१७३८ ई०में महा-ओर्दूके खान एल्बर्सने रूसियोसे उनकी प्रजा बनकर व्यापार करने की इजाजत मागी, जब कि मालूम हुआ, कि ओरी नदीपर किलाबद नगर बन गया है, और मध्य तथा लघु-ओर्दूके लोग व्यापार करके बडे मौजमें रह रहे है। एलबर्स इस प्रकार आरेनबुर्गके साथ व्यापार करनेके लाभको देखकर ही रूसी प्रजा बननेके लिये तैयार हुआ। पीछे राजादेश तैयार हो ओरेनबुगके अभिलेख-गृहमें आकर यों ही पडा रहा। इसी समय जुगर-राजा गन्दनने महा-ओर्दूके प्रत्येक कजाकपर एक छाल कर लगाया। १७३९ ई०में मूलरके नेतत्वमें एक रूसी कारवा जा रहा था, जिसे महा-ओर्दूके कजाकोने लूटा। मूलरने ९ नवम्बर १७३१ ई०को ताशकन्द पहुचकर एलबर्ससे इसकी शिकायत की, और लूटे मालको लौटानेके लिये कहा। खानने जवाब दिया—"मैने दुघटनाकी खबर पहले ही सुनी थी, अल्लाका शुक्र करो, जो कि जिन्दा बच गये। मैने गिरोहके नेता कोगिलदेमे माल लौटानेके लिये कहा है, और माल न लौटानेपर उसे दड देनेकी धमकी दी है। लेकिन मुझे मालके लौटनेकी बहुत कम आशा है।" उस समय ताशकन्दका शासक सईद सुल्तान था, लेकिन कजाक और उनका खान करीब-करीब स्थायी तौरसे ताशकन्दके इलाकेमें डेरा डाले ताशकन्दियोको मनमाना लूटा करते थे। मूलरके

कारवाके प्रस्थान करनेके चौथे अप्रैल १७४० ई०में दिन सरत नागरिकोने एलवसको पकडकर मार डाला, जिसका वदला कजाकोने शहरको लूटकर लिया। एलवसके मरनेके वाद उसका साथी तिउल बी सारे ओर्दूका शासक वना।

२ तिउल बी (१७४०–ई०)

तिउल वीको शायद तौफीक खानने नियुक्त किया था। उसे अधिक दिनातक शासन करनेका मौका नही मिला, और उसे भगाकर गन्दन कुसियन वी छेरिङ्ग की ओरसे शासन करने लगा। १७३९ ई०में तिउल वीने रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करके अपने खोये अधिकारको प्राप्त करनेका असफल प्रयत्न किया।

३ कुसियन बी, कुसियक बी (–१७४२–ई०)

१७४२ ई०में कुसियन वी अव जुगरोंके राज्यपालके तौरपर ताशकन्दपर शासन कर रहा था। इस समय यद्यपि कजाकोकी राजनीतिक प्रधानता नही थी, लेकिन शहरके चारो ओर जिस तरह वह डेरा डाले पडे थे, उससे जान पडता था, कि मानो नगरका मुहासिरा किये हुये है और किसी वक्त भी टूट पडनेके लिये तैयार हैं। तुर्किस्तान शहरकी भी हालत कुछ समयतक ऐसी ही रही, लेकिन जुगरोकी शक्ति इतनी मजवूत थी, कि वह उनके व्यापारमे कोई बाधा नही डालते थे। तुर्किस्तान और ताशकन्द नगरोके बीचके दीहाती इलाकेपर महा-ओर्दूके कजाकोका स्थायी अधिकार था। जुगरोंके दवानेपर कजाक भागकर फरगानामें चले गये, जहा वह वहाके पुराने वाशिन्दोपर प्रभुत्व जमाने लगे, यद्यपि उन्हें वरावर जुगरोका भय वना रहता था। जुगरोके अतिम सघर्षके समय कजाकोने भी हाथ साफ किया और अमुरसनाके विद्रोह करनेपर ये भी उसके पक्षमें रहे। १७५६-५७ ई०में जुगर-राज्यके पतनके वाद कजाकोकी वन आई, और वह जुगरोकी छोडी हुई भूमि सप्तनदमें चले गये। चीनियाने १७५८ ई०में ताशकन्द लेकर जुगरोकी भूमिमे कजाकोंके वसनेके लिये प्रोत्साहन दिया।

इस समयतक महा-ओर्दूके कई टुकडे हो चुके थे, इनमेंसे जो जुगारिया लौटे, उनमेंसे कुछ चीन की प्रजा वने हुये थे, और कुछ चीनके विरोधी। दोनो पक्षोमें बरावर लडाई होती रहती थी, फिर इनके पडोसी वुरुत (करा-किर्गिज) भी इन्हें चैनसे रहने देना नही चाहते थ। १७७१ ई०में जव तोर्गुत वोला छोडकर पूवकी ओर भाग रहे थे, उस समय अपने दूसरे कजाक भाइयोकी तरह इन्होने भी उन्हे खूब लूटा। एरली सुल्तानन तोर्गुत थैची उवासा (उपासक)को वहुत तग किया, और इनके कारण उसे अठारह दिनतक एक जगह डेरा डालके पडा रहना पडा। इसी बीच एरलीन कल्मकोंके धन और सुदर स्त्रियोका लोभ देकर भारी सख्यामें जहादी जमाकर उन्हें चढाया। कजाकोकी शक्तिको देखकर उवासा डर गया। एरलीने उन्हें इली-उपत्यकामें चले जानेकी इजाजत दी। तोर्गुत जव निश्चित हो किसी जगह डेरा डाले हुये थे, उसी समय एरलीने आक्रमण करके भारी सख्यामें मगोलोकी निमम हत्या की, और कजाक वहुतसा लूटका माल और स्त्री-वच्चे पकड ले गये।

ताशकन्द इलाकेमें कुछ कजाक अव स्थायी तौरसे रहने लगे थे, ताशकन्द-शहर तो उनकी दयाका भिखारी था। वह पास-पडोसके लोगोको भी लूटते-उजाडते थे, जिसके कारण उनकी प्रजा न होनेपर भी वहाके लोग कर देनेके लिये मजवूर थे। १७६० ई०में लघु-ओर्दूद्वारा सिर नदीके मुहानेसे भगाया कराकल्पकोका एक समूह इनके साथ आ मिला। सालो अत्याचार वर्दाश्त करते-करते १७९८ ई०में ताशकन्दके नागरिक अपने शासक यूनस खोजाके अधीन उठ खडे हुये, और उन्होने कजाकोसे घोर वदला लिया—कजाकोंके सामने उनके भाइयोका शिर काटकर मीनार (स्तूप) वनवाया। यूनस खानने उन्हें पूरी तौरसे दवाकर ताशकन्दकी क्षतिपूर्तिको भी भरनेके लिये मजवूर किया। हर सौ भेड पर एक भेड कर वसूलकर उन्हें सेनामें भर्ती होनेके लिये भी मजवूर किया। १८१४ ई०में जव ताशकन्द खोकन्दके खानके हाथमें चला गया, तो ये कजाक भी खोकन्दकी प्रजा हो गये, लेकिन चिमकन्दके पास रहनेवाले कजाकोंमेंसे कितनो हीने अपने घरो और वागोको छोडकर चीनी सीमाके भीतर जाना पसद किया। कुछ अपने स्थायी निवासके जीवनको न पसदकर मध्य-ओर्दूके पास इतिश-तटपर चले

गये, और कुछ अकताग पहाड़की ओर। उनका एक भाग कितने ही समयतक ससेरेक (सप्तनद), कुसमू, और करातालके इलाकोंमें स्वतंत्र विचरता रह १८१० ई०में रूसके अधीन बना। इस समय उनका शासक मध्य-ओर्दूके खान अबलइका पुत्र सिउक था, जिसकी राजधानी अल्माअता थी, इसे रूसियोंने वेर्नोय (श्रद्धा) नाम दिया था—जो बाल्शेविक क्रांतिके बाद फिर अलमाअता बन आजकल कजाकिस्तान गणराज्यकी राजधानी तथा एक समृद्ध नगरी है। सिउक सुल्तान महा-ओर्दूके सबसे बड़े कबीले दोगलत (दूलत) का शासक था। रूसी उसे ३५० रूबल पेन्शन देते थे। रूसी अफसर वेनीउ-कोफने एक बार सुल्तानसे कहा—"मैं नहीं समझता, तुम्हारे लोग तुम्हें अपना शासक पाकर खुश हैं?" इसपर बूढ़ेने जवाब दिया—"ऐसा मत कहो, मैं तो पादिशाह (जार)की आज्ञाके अनुसार अपने लोगोंपर शासन करता हूँ, अल्ला जारकी रक्षा करे।"

रूसी अफसरने फिर कहा—"तुम बड़े नम्र हो सुल्तान? हम सभी सम्राट् (जार)की इच्छाका अनुसरण करना चाहते हैं और वेर्नोयेके हरएक आदमीको वैसा करना चाहिये लेकिन सुल्तान तुम्हारा ओर्दू तुम्हारी बात मानता है, इसलिये उनका बादशाहका भक्त होना तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है।"

"मेरे लोगोंको बादशाहका हुक्म मानना छोड़कर और कुछ नहीं करना चाहिये। जिन्हें बादशाहने हमारे ऊपर नियुक्त किया है, वह उनकी आज्ञा मानते हैं। हम यहाँ दो हाथोंकी तरह साथ-साथ रहते हैं—तुम रूसी लोग दाहिने हाथ हो, हम बायें, और राज्यपाल प्रिस्तोफ हमारा सिर है। यह बुरा होगा, यदि बायाँ हाथ दाहिनेकी आज्ञा नहीं माने, या दोनों ही सिरके कहेको न मानें।"

महा-ओर्दूके कुछ कजाक-परिवार रानी एकातेरिनाके उकाजे (राजादेश)के अनुसार अपने सुल्तान चुरिगेइके साथ चार हजार परिवारोंको ले १७८९ ई०में उस्तक्मिन्नोगोर्स्कमें बस गये, और १७९३ ई०में महा-ओर्दूके कितने ही कजाक अपने सुल्तान तुगुमके साथ साइबेरियाके सीमांतपर जा बसे। कजाकोंको अपनी ओर खींचनेके लिए चीनी नाममात्रका कर लगाते थे। भेड़ोंपर प्रति-हजार एक और ढोरोंपर प्रतिशत एक कर लेते थे। कजाक कितनी ही बार पेकिङ जाते, और उन्हें सम्राट् की ओरसे बहुत-बहुत इनाम मिलते। रूसी भी उनको अपनी ओर खींचना चाहते थे। कजाक अब भी अपने अक्खड़पनको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। सीमांतपर कर माँगनेपर एक चीनी अफसरको एक कजाकने कहा था—"घास और पानी अल्लाने बनाये हैं, और पशु उसीका दान है। हम उनकी चरवाही करते हैं, फिर हम क्यों किसीको कर दें?"

लेकिन कजाक बहुत दिनोंतक अपना अक्खड़पन नहीं चला सकते थे। रूसी गोले-गोलियोंके सामने उन्हें सिर नवाना ही पड़ा। अबलइ-जैसे साहित्य और संस्कृतिके नेताओंने रूसियोंसे सीखकर अपनी कजाक जातिमें प्रकाश फैलानेकी कोशिश की, लेकिन उसमें सफलता १९१८ ई०के बाद ही हुई, जब कि बोल्शेविक क्रांतिने उन्हें समानताका अधिकार दे नये भविष्यके निर्माणमें हाथ बटानेके लिये निमंत्रित किया।

स्रोत ग्रन्थ

१ History of Mongol (H H Howorth)

२ Medieval Researches from Eastern Asiatic Sources (E Bretschneider, London 1888)

भाग ४

दक्षिणापथ

अध्याय १

जारशाहीका अन्तिम प्रमार

(१८०१-१९१७ ई०)

पावल I के शासनके बारेमें कहते हुये हम बतला चुके है, कि १८ वी सदीके अंतमे रूस अब युरोपकी एक सबसे बडी शक्ति माना जाता था। पावलकी हत्याके बाद उसका लडका अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा।

१ अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र (१८०१-२५ ई०)

अलेक्सान्द्र अपनी दादी एकातेरिना II की देख-रेखमें युरोपीय शिक्षा-दीक्षामें पला था। एकातेरिनाने एक गणतत्री स्विस-विद्वान् लहापको अलेक्सान्द्रका अध्यापक नियुक्त किया था, जो उसके साथ गणतत्रताकी बातें किया करता था। उधर प्रशिया (जर्मनी) की सैनिक-कला उसके खूनमें थी। पीतर-वशके समाप्त होनेपर जर्मनीसे लाकर जो जार और उनकी सतानें रूसी सिंहासन पर बैठाये गये थे, वह अपने जर्मन होनेका अभिमान करते रूसियोंको हीन दृष्टिसे देखते थे। अलेक्सान्द्रकी घनिष्ठता जेनरल अर चेयेफसे भी पहले ही स्थापित हो गई थी, जो कि किसानोंकी अर्ध-दासताका जबर्दस्त पक्षपाती था। नये जारके बारेमें लोगोंका कहना था—"वह आधा स्विटजलैंडका नागरिक और आधा प्रुशियाका जमादार है।" लेकिन अरक्चेयेफ जैसे अध-दासताके पक्षपाती चाहे कितना ही चीखें-चिल्लायें, १९ वी सदीके आरम्भके साथ रूसमें पूजीवादका प्रभाव और कारखनोंका विस्तार जोरसे होने लगा, जिससे खेतीके अध-दासोंकी नही, बल्कि कारखानोंके मजदूरोंकी अवश्यकता बढी। व्यापारने नदियो और समुद्रोंके सस्ते जलपथोके महत्त्वको बतलाया, जिसके लिये कृत्रिम जलपथोंके बनानेकी ओर ध्यान जाना जरूरी था। १८०३ ई०में उत्तरी-एकातेरिना-नहर बनाकर कामा और उत्तरी द्वीना नदियोंको मिला दिया गया। अब उत्तरी द्वीनासे नौकाये वोल्गामें आने-जाने लगी। १८०४ ई०मे ओगिन्स्की नहर बनाई गई, जिसने बाल्तिक और काला सागरको मिला दिया। अलेक्सान्द्रके शासनकालके प्रथम दस वर्षोमें मारीइन्स्क और तिखविनकी नहर-प्रणाली बनकर तैयार हो गई, जिनके द्वारा रूसके भीतरी भागोंका सबध बाल्तिक समुद्रसे हो गया। नहरोंके साथ-साथ व्यापारके सुभीतेके लिये बकोंकी भी स्थापना होने लगी। १७८६ ई०में पीतरबुगमे राजकीय ऋण-बक स्थापित हुआ था। इसमे सरकार और जमीदारोको फायदा था। १८०७ ई०में मास्कोमें व्यापारिक बककी स्थापना हुई। अब मास्को, आर्खगेल्स्क, तगनरोग और फ्योदोसिया (क्रिमिया) में कितने ही बक-केंद्र स्थापित हो गय। मालकी माग अधिक होनेसे उद्योग-धन्धोंको बढनेका मौका मिला। १८०४ ई०में चुकदरकी चीनीके सात कारखाने काम कर रहे थे, जब कि १८१२ ई०में उनकी सख्या तीस हो गई। १८०८ ई० में पहली सूती कताई मिल स्थापित हुई। १८१२ ई०मे जितने कारखाने चल रहे थे, उनमेंसे बासठ प्रतिशत व्यापारियोंके थे, और केवल सोलह प्रतिशत के स्वामी जमीदार थे। इस प्रकार अब औद्योगिक पूजीवाद रूसमें पैर बढ़ाता जा रहा था।

शासन-सुधार—१८वी सदीके अन्तमें फ्रासीसी क्राति हो चुकी थी, जिसके प्रभावको दबानेके लिये जार पावलने बडी कोशिश की थी। उसके पुत्रको मालूम हो गया था, कि शासनमें बिना सुधार किये क्रातिको रोका नही जा सकता। जब अलेक्सान्द्र अभी युवराज ही था, तभी उसने

लाहापको एक पत्रमें लिखा था--"देशको स्वतन्त्रता दूंगा, और इस प्रकार मैं उसे पागलोंके हाथका खिलौना नहीं बनने दूंगा।" गद्दीपर बैठते ही अलेक्सान्द्रने घोषित किया, कि मैं अपनी दादी एकातेरिना II के विधानों और उसके भावोंके अनुसार शासन करूंगा। उसने जो सुधार किये, उनके द्वारा दो सौमेंसे एक किसान अर्ध-दास को फायदा हुआ। इन अर्ध-दासोंको मुक्ति पानेके लिये पांच हजार रूबल जमींदारको क्षति-पूर्ति देनी थी। भला इतना पैसा गरीब किसान कहांसे लाते?

अलेक्सान्द्रके सुधारोंमेंसे एक था १८०२ ई०में आठ मंत्रालयोंकी स्थापना। इसके पहले एकातेरिनाके शासकीय विभाग काम कर रहे थे। शिक्षाकी ओर भी नये जारने कुछ ध्यान दिया। १९वीं सदीके आरम्भमें मास्को और दोरपतमें दो विश्वविद्यालय मौजूद थे, १८०५ ई०में खरकोफ और कजानमें नये विश्वविद्यालय स्थापित हुये, और १८१९ ई०में पहलेसे मौजूद केन्द्रीय-शिक्षण प्रतिष्ठानको फिरसे संगठित करके पेतेर्बुर्ग (लेनिनग्राद) विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। इसी समय शिक्षा-मंत्रालयकी स्थापना हुई। लेकिन साथ ही अलेक्सान्द्र शिक्षाके खतरेको भी समझता था, इसीलिये मुद्रणपर अंकुश रखनेके लिये पुस्तकोंको छापनेसे पहिले उनके हस्तलेख सेंसर को दिखला लेनेका नियम बनाया।

नेपोलियनसे युद्ध (१८०५-७ ई०)--अलेक्सान्द्र उस समय जार हुआ, जब कि १७९२-९३ ई०की फ्रेंच-क्रांति समाप्त हो गई थी, और उसके बाद नेपोलियनने मौकेसे फायदा उठाकर अपनी विजय-यात्रा शुरू कर दी थी। वाणिज्य और बाजारके संबंधमें इंगलैंड और फ्रांसकी उस समय बड़ी प्रतिद्वंद्विता थी, जिसका प्रभाव तत्कालीन भारतमें भी देखा जा सकता था। रूसका व्यापार अधिकतर इंगलैंडके साथ था, इसलिये अलेक्सान्द्रने गद्दी संभालते ही इंगलैंडसे मित्रताकी संधि कर ली, और बापके समयमें जो अंग्रेजी जहाज रोक रक्खे गये थे, उन्हें मुक्त कर दिया। लेकिन नेपोलियनकी शक्ति उस वक्त बहुत जबर्दस्त थी। यदि बीचमें ब्रिटिश चैनलकी खाड़ी न होती, तो नेपोलियनके चंगुलसे इंगलैंड नहीं बच सकता था। इसपर भी १८०२ ई०में आमिनकी संधिद्वारा इंगलैंडने नेपोलियनसे त्राण पानेकी कोशिश की। लेकिन यह मित्रता या युद्धविराम अधिक समयतक नहीं टिक सकेगा, यह इंगलैंड भी जानता था, इसलिये उसने आस्ट्रिया, रूस और स्वीडनसे शत्रुके खिलाफ सैनिक मित्रताकी संधि कर ली। इंगलैंडको भारत-जैसी धनकी खान और दुनियाका व्यापार मिला था, इसलिये चांदीके भरोसे वह अपनी युद्ध लड़नेके लिये दूसरोंको तैयार कर रहा था, जैसे कि, आजकल अमेरिका। इंगलैंड और रूसकी इस संधिका एक मतलब यह भी था, कि नेपोलियनको हराकर फ्रांसके पुराने राजवंश बूरबोंको फिर गद्दीनशीन किया जाय, और सामन्तवादियोंके शासनको फिरसे स्थापित करके पूंजीवादियोंकी सफलताको खतम किया जाय।

अगस्त १८०५ ई० में रूसी सेनापति कुतुजोफकी अधीनतामें एक बड़ी सेना युरोपमें नेपोलियनके विरुद्ध भेजी गई। उस समय नेपोलियन अपनी डेढ़ लाख सेनाके साथ इंगलैंडपर आक्रमण करनेके लिये तैयार था। कुतुजोफ जिस वक्त जर्मनी (बवेरिया) के नगर ब्रानौमें पहुंचा, तो मालूम हुआ, कि आस्ट्रियाकी मुख्य सेनाने हथियार रख दिये हैं। नेपोलियनकी विशाल सेनाके पांचवें हीं भागके बराबर कुतुजोफकी सेना थी, इसलिये लौटनेके सिवा उसके लिये और कोई चारा नहीं था। लौटनेमें भी जो कौशल रूसी सेनापतियोंने दिखाया, वह अद्वितीय था। रूसी सेनापति बग्रातियोनके पास छ हजार सेना थी, जिसे तीस हजार फ्रेंच सैनिकोंने शोनग्राबनमें घेर रक्खा था। बग्रातियोनकी सेना बड़ी बहादुरीसे लड़ी और फ्रेंच-पंक्ति तोड़कर निकलनेमें सफल हुई। इस वीरताके उपलक्ष्यमें उन सारे सैनिकोंको "पांचके प्रति एक"के अभिलेखके साथ बांहोंपर फीता प्रदान किया गया। सबसे बड़ी लड़ाई आस्टर्लित्ज (बोहीमिया) में २ दिसम्बर १८०५ ई० को हुई, जिसमें एक ओर नेपोलियनकी नब्बे हजार सेना थे, और दूसरी ओर रूस और आस्ट्रियाके छियासी हजार। सेनापति इस समय और स्थानको युद्धके लिये उचित नहीं समझते थे, लेकिन आस्ट्रियाके सम्राट फ्रांसिस I ने तुरन्त युद्ध आरम्भ करनेके लिये जोर दिया। २ दिसम्बर १८०५ ई० को सवेरे कुहरा पड़ रहा था, जब कि रूसी फाजोने फ्रेंच सेनाके दाहिने पार्श्वपर जमकर आक्रमण किया। रूसी और आस्ट्रियन सेनायें दूर तक बिखरी हुई थीं, इसलिये नेपोलियनके प्रत्याक्रमणको वह बर्दाश्त नहीं कर सकीं, तो भी रूसी

सैनिकोंने लडाईमें जो बहादुरी दिखाई थी, उसके बारेमें नेपोलियनने खुद कहा—"आस्टर्लित्स (चेकोस्लावाकिया) में रूसियोंने जैसा भारी पराक्रम दिखलाया, वैसा मेरे विरुद्ध दूसरे किसी युद्धमें नही दिखलाया गया।"

१८०६ ई० के शरद्में अलेक्सान्द्रने अपने मित्र प्रुशिया (जर्मनी) की सहायताके लिये सेना भेजी, लेकिन नेपोलियनने येनामें आक्रमण करके प्रुशियन सेनाको तितर-बितर कर दिया। बर्लिनने बिना लडाईके ही अपनेको नेपोलियनके हाथमें समर्पित कर दिया, और १८०६-८ ई० में दो वर्षों तक वह नेपोलियनके सैनिकोंके हाथ में रही। जनवरी १८०७ ई० में नेपोलियन वर्स्सावा (पोलंद) में दाखिल हुआ। रूसी-सेनाको भी उसने दो जगह जबर्दस्त हार दी, जिसमें १८०७ ई० के ग्रीष्ममें फ्रीद-लंडकी लडाईमें रूसी सेनाका पंचमांश नष्ट हो गया। जून १८०७ ई० में जारके वास्ते इसके सिवा कोई चारा नही था, कि नेपोलियनकी विजय और उसके सम्राट् पदको तिल्जितकी सन्धिद्वारा स्वीकार करे।

नेपोलियन चाहता था, कि इंगलंड युरोपकी दूसरी शक्तियोंसे सहायता न पा सके। इसके लिये उसने दूसरे देशोंका इंगलैंडके साथ व्यापार करना मना कर दिया। रूस तकने नेपोलियनकी निषेध-आज्ञाको मानते हुये इंगलैंडको अपना अनाज भेजना बंद कर दिया, लेकिन इससे इंगलंडको नही, बल्कि स्वयं रूसके बडे जमीदारोंको अनाजके न बिकने या सस्ता हो जानेसे भारी क्षति उठानी पड रही थी, जिससे रूसमें आर्थिक संकट पैदा हो गया। तो भी रूस नेपोलियनको नाराज करनेकी हिम्मत कैसे कर सकता था?

इसी बीच (१८०८-९ ई०) रूस और स्वीडनमें लडाई छिड गई। नेपोलियन रूसकी शक्ति को अपने फायदेके लिये इस्तेमाल करना चाहता था। उसके कहनेपर रूसने इंगलैंडके साथ अपना कूटनीतिक संबंध तोड लिया था, और उसीके शह देनेपर रूसने स्वीडनके खिलाफ यह युद्ध घोषित किया। स्वीडनका यही कसूर था, कि उसने नेपोलियनकी आज्ञा न मानकर इंगलैंडके साथ मित्रताका संबंध कायम रक्खा। फरवरी १८०८ ई० में रूसी सेनाने सीमाांत पार किया। उस समय फिनलन्द स्वीडनके हाथमें था। १८०८ ई०के अन्त तक फिनलन्दको लेकर रूसी सेना स्वीडनकी भूमिमें दाखिल हो गई। १६ मार्च १८०६ ई० को, जब कि स्वीडनके साथ घनघोर युद्ध हो रहा था, अलेक्सान्द्रने फिन्-लन्दको बोर्गो नगरमें बुलाकर वचन दिया, कि फिनलन्दके विधानको हम पूरी तौरसे मानेंगे। इसी समय फिनलन्द रूसका एक प्रदेश घोषित हुआ, और तबसे बोल्शेविक-क्रांतिके समय (१९१७ ई०) तक वैसा ही रहा। ५ सितम्बर १८०९ ई० को सन्धि करके स्वीडनने फिनलन्दपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया। नेपोलियनके आदेशानुसार इंगलैंडके घिरावेमें युरोपके दूसरे देशोंने साथ देना स्वीकार किया।

नेपोलियन जानता था, जब तक रूसको अपने हाथमें नही किया जाता, तब तक उसकी विजय अधूरी रहेगी। बीचके समयमें नेपोलियनने रूसके बारेमें बहुतसी जानकारी प्राप्त की, और आक्रमण करनेके लिये पोलन्दको आधार-भूमिके तौरपर तैयार करता रहा। इसपर जारने नेपोलियनसे माग की, कि पोल-राज्यको फिरसे जीवित करनेकी कोशिश न करे, और दरेदानियाल तथा कान्स्तन्तिनोपलपर रूसके अधिकार करनेके साथ सहमत हो। नेपोलियनने इसे स्वीकार नही किया। सुलहके लिये नेपोलियन और जारने आपसमें मुलाकात करके भी बातचीत की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। नेपोलियनने मोल्दाविया और वलाचियाका रूसके हाथमें जाने देना स्वीकार किया। इसी बीच १८१० ई०में उसने हालैंडको अपने राज्यमें मिला लिया, और रूसके विरोधकी कोई पर्वाह नही की। रूस समझने लगा, कि नेपोलियन मौकेकी ताकमें है, इसलिये उसने १८०६ ई०से चली आती तुर्कीकी छेडछाडको आगे बढाना चाहा। युरोपके युद्धक्षेत्रमें रूसियोंके हारकी बात सुनकर तुर्कीकी भी हिम्मत बढ़ी, और उसने अपने छिने हुये कालासागर-तटवर्ती पश्चिमी काकेशस-प्रदेशको रूससे ले लेना चाहा। शांति और सुलहकी बात बेकार गई, क्योंकि तुर्की जानता था, कि इस समय रूसकी प्रधान सेना युरोपमें फसी हुई है। तब भी रूसी सेनाने नवम्बर १८०६ ई० में दन्यूबकी ओर आक्रमण करके बेसराबिया, मोल्दाविया और वलाचियाके तुर्की प्रदेशोंको ले लिया। रूसी प्रगतिको दन्यूब तटवर्ती तुर्की किलोंने नही रोक पाया। ८ मई १८२२ ई०को बुखारेस्तकी सन्धिके अनुसार

तुर्कीने वसराविियाके ऊपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और साथ ही खोतिन, बन्दर, अक्करमान और इस्माइलके किलोंको भी उसके हवाले कर दिया। रूसने पोती और अखल्कलाकी तुर्कोंको लौटा दिये। तुर्कीसे इस तरह छुट्टी पाकर रूस अब नेपोलियनके आक्रमणका जवाब दे सकता था।

नेपोलियन रूसको विश्राम लेने देना नही चाहता था। वह रूसकी ओर अपनी सेना भेजकर मई १८१२ ई०मे स्वय भी ड्रेसडनमे नीमन नदीकी ओर चल पडा। २४ जून (पुराना १२ जून) १८१२ ई०को नेपोलियनने हिटलरकी तरह बिना युद्ध घोषणाके ही रूसपर आक्रमण कर दिया। नेपोलियनके पास जहा पाच लाख सेना थी, वहा रूसकी कुल सेना एक लाख अस्सी हजार थी। हिटलरकी सेनाका तरह नेपोलियनकी सेनामें जर्मन, इतालियन, स्वीस, क्रोवात, स्पेनिश आदि युरोपकी सभी जातियोंके सैनिक थे। इतनी बडी सेनाके साथ सामने होकर लडना बेवकूफी थी, इसलिये रूसी सेनाने कमसे कम संघर्ष करते हुये पीछे हटने को पसद किया। नेपोलियनकी सेना आगे बढती अगस्तमें स्मोलेन्स्क पहुची। उसकी तोपोने शहरपर तेरह घटे गोलाबारी की, सारा नगर जलने लगा। नेपोलियनके विरुद्ध रूसियाने उसी नीतिका पालन किया, जिसे एक सौ तीस वर्ष बाद उन्होने हिटलरी आक्रमणके समय किया। आक्रमणकी गतिको धीमी करनके लिये कही-कही लडते रूसी पीछेकी ओर हटते गये, और साथ ही नेपोलियनको परित्यक्त भूमिमे खाने-पीने-रहनेकी कोई चीज न मिल सके, इसके लिये अपने घरोंमें अपने हाथसे आग लगाते गये। स्मोलेन्स्कके निवासी भी अपने घरो और सम्पत्तिमें अपने हाथों आग लगाकर वहासे चल दिये। उस समयके रूसमें प्रतिभाशाली पुरुषोंकी कदर बहुत कम होती थी, क्योंकि जार-वश एक विदेशी वश था, जो रूसियोंसे अधिक अपने जर्मन सबधियोंको मानता था। सुवारोफकी उपेक्षाके बारेमें हम कह चुके है। कतुजोफकी प्रतिभाकी भी उतनी कदर नही की गई, लेकिन नेपोलियनके इस भयकर आक्रमणके समय जार अलेक्सान्द्रको मजबूर होकर ६७ वर्षके बूढ़े कतुजोफको सारी रूसी सेनाका महासेनापति नियुक्त करना पडा।

राजुलवशी मिखाइल ईलारियोन-पुत्र कतुजोफ सुवारोफका योग्य शिष्य था। २९ वर्षकी उमरमें क्रिमियामें तुर्कोंके साथ लडते हुये उसकी एक आख जाती रही। वह सुशिक्षित था, बहुत-सी विदेशी भाषाओंको जानता था, और युद्ध-विद्यापर युरोपकी भिन्न-भिन्न भाषाओमें जितनी पुस्तकें प्राप्य थी, उनका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। १८१२ ई० में महासेनापति नियुक्त करते हुये भी जार अलेक्सान्द्रने अपने एक दरबारीसे कहा था—"लोग उसकी नियुक्ति चाहते थे, इसलिये मैने नियुक्त कर दिया, लेकिन व्यक्तिगत तौरसे मैने उससे अपना हाथ धो लिया।' नेपोलियनकी सेनायें अब मास्कोकी ओर बढ़ रही थी। मास्को उस समय रूसकी राजधानी नही था, लेकिन उसका महत्व पीतरबुर्ग राजधानीसे भी अधिक था, क्योंकि वही व्यापारका सबसे बडा केंद्र था। कतुजोफको बग्रातियोन जैसे दूसरे योग्य सेनापति मिले थे। बग्रातियोनने युद्धके बारेमें कहा था—"यह साधारण युद्ध नही बल्कि लोक-युद्ध है।" सचमुच ही सारी रूसी जनता उस वक्त अपने देशके लिये सब कुछकी बाजी लगाकर नेपोलियनके आदमियोसे लड रही थी। रूसी ही नही, बल्कि बाश्किर, कल्मक, तातार आदि जातियोंके सैनिक भी साथ-साथ बहादुरी दिखला रहे थे। लडनेसे भी ज्यादा नेपोलियनकी कठिनाइया इसलिये बहुत बढ़ गई थी, कि रूसी रास्तेके गावों, नगरो या खडी फसलोंमेंसे कोई चीज उसके लिये नही छोडते थे। २३ सितम्बर १८१२ ई० में नेपोलियनने रूसी सेनापतिके पास इस तरहके "बर्बरतापूर्ण और असाधारण' युद्धके तरीकेका विरोध करते हुये शान्ति करनेका प्रस्ताव किया। उसने जब इस बातपर जोर दिया, कि "लडाईमें युद्धके सर्वस्वीकृत नियमोंका पालन करना चाहिये," तो कतुजोफने जवाब दिया—"लोग तुम्हारे इस युद्धको तातार (मगोल) आक्रमण जैसा समझते है। इसीलिये वह प्रतिरोधके सभी तरीकोंको इस्तेमाल कर रहे है।" जार और दरबारी चाहते थे, कि नेपोलियनसे जमकर लडाई हो, लेकिन कतुजोफका कहना था, काल और [illegible] (दूरी) की सहायतासे ही हम दुश्मनको हरा सकते है। यदि मास्को भी शत्रुके हाथमें चला जाय, तो उसके लिये भी हमें तयार रहना चाहिये, क्योंकि हमें मास्को नही रूसकी रक्षा करनी है। नेपोलियनकी सेनाकी भारी क्षति हो रही थी। वह चाहता था, कि कतुजोफ लडनेके लिये तैयार हो, ताकि युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनाकी रीढ़ तोड दी जाय, लेकिन कतुजोफ अपनी निश्चित की हुई जगहपर ही लडना चाहता

था। ५ सितम्बर (२३ अगस्त) को रातको मेवर्दिनो गावमे एक छोटीसी रूसी सेनाने डटकर लडाई करके उस युद्धका आरम्भ किया, जो कि ८ सितम्बर (२६ अगस्त) के प्रातःकाल मास्कोसे ९० किलोमीतरपर अवस्थित बोरोदिनो गावके ऐतिहासिक युद्धके रूपमें हुआ। युद्धक्षेत्रमे ११२ हजार रूसी सैनिक थे, जिनके अतिरिक्त सात हजार कसाक और दस हजार नागरिक सैनिक भी शामिल हुये थे। नेपोलियनके पास अब एक लाख तीस हजार सेना और ५८७ तोपें रह गई थी। युद्धमे बगराति-योन घायल होकर अन्तमे मर गया। बेहोश होनेसे पहले उसके मुहसे अन्तिम शब्द निकले थे –"हमारे आदमी कैसे है ?" उसने "डटे हुये हैं" जवाब सुनकर प्राण छोडा। पीतर इवान-पुत्र बगरातियोन एक गुर्जी-वंशका सैनिक था, जिसे सुवारोफके चरणोंमे बैठकर युद्धविद्या सीखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यद्यपि बोरोदिनो में रूसी नेपोलियनकी सेनाको हरा नही सके, लेकिन उसके सालों बाद अपने मृत्युसे जरा सा पहले नेपोलियनने स्वीकार किया था–"मैने जितनी लडाइया लडी, उनमें सबसे भयकर लडाई वह थी, जो मास्कोके पास हुई। फ्रासीसियोने अपनेको विजयके योग्य यदि साबित किया, तो रूसियोंको भी अजेय होनेका अधिकार वही प्राप्त हुआ।" रूसी महान् कवि लेर्मन्तोफने बोरोदिनोके बारेमें लिखा था —

"उस दिन शत्रुने अच्छी तरह समझा
कि हम रूसी सिपाही कैसे लडते हैं—
भयकर हाथसे हाथ
घोडे और आदमी एक साथ लडते,
और तो भी तोपोंकी गडगडाहट।
हमारी छातिया वैसे ही काप रही थी,
जैसे वहा धरती कापती थी।
फिर पहाडों और मैदानोंमें अधकार छाया,
तो भी हमें अभी फिर लडना था।"

बोरोदिनोमे रूसी सेनामें पराजितकी तरह भगदड नही मची, बल्कि वह सुव्यवस्थित रीतिसे मोजाइस्क होते मास्को पहुची। १८ सितम्बर १८१२ ई० को मास्कोके पास फिली गांवमें कतुजोफने युद्धपरिषद् की। सेनापति लडनेके पक्षमें थे, लेकिन कतुजोफने यह घोषित करते हटनेका हुक्म दिया—"मास्कोका हाथसे जाना रूसका हाथसे जाना नही हैं।" १४ (२) सितम्बरके सबेरे रूसी सेना मास्को छोडकर बाहर जाने लगी। मास्कोके नागरिक भी जो कुछ साथ ले जा सकते थे, उसे लेकर पैदल या गाडियोंपर नगरसे निकल पडे। रातको मास्कोमें आग लग गई। हवा तेज थी, जिसने लकडीके मकानोंमे चिनगारी फेंक-फेंककर सारे नगरको जला दिया, जिससे फ्रेंच सैनिकोंको खुलकर लूटनेका मौका नही मिला। आग छ दिनोंतक जलती रही। मास्को नेपोलियनके हाथमें था। लेकिन जला-भुना आश्रयहीन मास्को जल्दी ही शुरू होनेवाले जाडेसे उसकी सेनाको कैसे बचा सकता था ? नेपो-लियनने बहुत कोशिश की, बहुत बार जार अलेक्सान्द्रको सधि करनेके लिये लिखा, लेकिन जारने उसका जवाब भी देना पसद नही किया। जाडा भयकर रूप लेता जा रहा था, उसके कारण सैनिकोंकी हालत खराब होती जा रही थी। नेपोलियनको अब कतुजोफके युद्ध कौशलका पता लगा, और उसने मास्को छोडनेका निश्चय कर लिया।

१८ (६) अक्तूबरके सबेरे सात बजे नेपोलियनने मास्कोसे हटना शुरू किया। उसने क्रेमलिनको बारूदसे उडा देनेका हुक्म दिया, लेकिन वर्षाके कारण कितने ही पलीते भीग गये थे, इसलिये क्रेमलिनका एक मीनार तथा दीवारका कुछ भाग ही नष्ट हो पाया। नेपोलियनको लौटते समय अब कतुजोफकी सेनाका मुकाबिला करना था, जो बीच-बीचमें फ्रेंच सेनापर भयकर प्रहार कर रही थी। रास्तेके नगर और गाव बिल्कुल उजाड थे। घोडोंको मारकर खानेके सिवा नेपोलियनकी सेनाके लिये प्राण बचानेका कोई उपाय नही था। भुखमरीके साथ-साथ बीमारीने भी अपना आक्रमण कर दिया था। रास्तेपर पडी आदमियों और घोडोंकी लाशें नेपोलियनके लौटनेका परिचय दे रही थी।

मन्त्रियोंकी संख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी—पुलिस, सचार और राज्य-नियन्त्रण के तीन और मन्त्रालय स्थापित किये गये। राजुलों और जमीदारोंने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमींदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमें माग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोंकी जगह "पचास अच्छे राज्यपालो" को नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके बडे युद्धोंके भीतरसे रूसको गुजरना पडा।

नेपोलियनके पतनके बाद जार समझता था—युरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्चेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्चेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा —

वह सारे रूसको अपनी एडीके नीचे पीस रहा है,
ढाचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।
जारका राज्यपाल और मुद्राधर स्वामी,
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,
बदला लेनेके लिये, घृणाके जिये भरा,
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,
कौन है यह "सच्चा अनतिशियोक्तिपूर्ण, वीर" ?
एक सिपाही, नही वह तो उसे छू भी नहीं गया।

उसने सैनिक बस्तिया बसाई थीं। किसानोको जबरदस्ती इन बस्तियोमे रहकर जन्मजात सिपाहीका काम करना पडता था। रूसके पश्चिमी सीमातपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोंकी बस्तिया बसी थीं। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नहीं करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्चेयेफने इन विद्रोहोंको बडी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोंको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया—"हर हालतमे सैनिक बस्तिया मौजूद रहेंगी, चाहे इसके लिये हमें पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीतर ५० मीलसे ऊपर) लाशोंसे भी ढाक देना पडे।"

काकेशस-विजय—१८०१ ई०में पूर्वी गुर्जीको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममे एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०में अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओंको जीतकर रूसमे मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०में त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पडा। १८०५ ई० के अन्तमें उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्त्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आधार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कारवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मागी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नही सका, और १८०६ ई० की शरद्में वह रूसका अग बन गया। इसके बाद उसी समय पडोसी कूबाके खानको भी रूसियोंने जीता। रूसियोंने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योंका दो प्रदेश—एलिजावेतापोल और बाकू—बना दिया। जारके रास्तेमे ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इगलैंड और फ्रास उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०में युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अन्तमें। यह युद्ध कई सालों तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हारें खाईं। ईरानने अतमें दागिस्तान और गुर्जीको रूसके हाथमें देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमें सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथकी लडाई मई १८१२ ई० में बुखारेस्ट सधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये है। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरसे अपने दावेको छोडा। जो रूसकी कुतसी गुर्बानिया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०में खतम हुआ, इगलैंडने भी तत्परता दिखलाई, क्योकि वह चाहता था, कि रूस इधरसे मुक्त होकर दोनोंके

सुधार—यह वनग अये हे, नि तरुणाईम जारसो लाहाप जैसे प्रगतिशील विचारावाले अव्यापकके सम्पकमे आनेका मोका मिला था। इसके अतिरिक्त अपने शासनके आरम्भिक दिनोमे जारपर स्पेरन्स्की जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्तिका भी प्रभाव पडा था। स्पेरन्स्की एक गावके ईसाई पुरोहितका लडका था। उसकी शिक्षा पीतरबुगकी एक धार्मिक पाठशालामें हुई थी। अपनी असाधारण प्रतिभाके कारण वह एक मामूली क्लकसे बढ़ते-बढते राज्यसचिव हो गया। तिल्जितकी सधिके बाद स्पेरन्स्की जारका प्रधान सलाहकार था। रूसकी शक्तिको दृढ करनेके लिये उसने यह जरूरी समझा, कि शासनमे सुधार किया जाय। १८०९ ई०मे स्परन्स्कीने "राज्य-विधानोंका सहितीकरण" के नामसे एक सुधार मसौदा तैयार किया। इस सुधार द्वारा वह चाहता था कि सामन्तशाही राजतत्रकी जगह बूर्ज्वा राजतत्र स्थापित हो, तथा "विज्ञान, व्यापार और उद्योग" की रक्षा की जाय। उसने कहा—"दुनियाके इतिहासमे ऐसा एक भी उदाहरण नही मिलता, कि नव शिक्षित और व्यापारप्रधान जाति अधिक दिनोंतक दासतामें रहे।" स्पेरन्स्कीने सुझाव पेश किया था, कि सभी सम्पत्ति रखनेवाले लोगोकी एक राज्यदूमा (सस ") बुलाई जाय, जिसके लिये हरएक वोलोस्त (परगना) के सम्पत्तिवाले चुनकर एक वोलोस्त दूमा बनाये, फिर वोलोस्त दूमाओंके सदस्य ओक्रुग (जिले) की दूमाके सदस्योंका चुनाव करे, फिर ओक्रुग-दूमाओके सदस्य गुबर्निया (प्रदेश) की दूमाओ का निर्वाचन करें, और गुबर्नियाकी दूमाये राज्य-दूमाके सदस्योंको निर्वाचित करें। इस प्रकार चार जगहोसे होकर चुनाव किया जाय। बिना राज्यदूमा और राज्यपरिषद्की स्वीकृतिके कोई विधान पास न किया जाय। शासन-प्रबध मत्रियोंके हाथमें रहे, जो दूमाके सामने जवाबदेह हो। इसमें शक नही, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके लिये स्पेरन्स्कीका कानूनी मसौदा प्रगतिशील था। लेकिन सत्ताधारी जमीदार इसे क्यों पसद करने लगे? वह स्पेरेन्स्कीको "बदमाश", "क्रातिकारी" और "क्रामवेल" कहकर बदनाम करते। उनके विरोधके कारण मजबूर हो अलेक्सान्द्रने मसौदेको अस्वीकार कर दिया, और उसकी जगह अपने नियुक्त किये सदस्योकी एक राज्य-परिषद् १८१० ई०में स्थापित की। राज्यपरिषद् का काम जारको केवल सलाह देनाभर था। यह राज्यपरिषद् १८१० ई० से १९०६ ई० तक बनी रही।

मन्त्रियोंकी सख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी---पुलिस, सचार और राज्य-नियत्रण के तीन और मत्रालय स्थापित किये गये। राजुलो और जमीदारोने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमीदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमें माग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोकी जगह "पचास अच्छे राज्यपालो" की नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके बड़े युद्धोके भीतरसे रूसको गुजरना पड़ा।

नेपोलियनके पतनके बाद जार समझता था–युरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्चेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्चेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा —

वह सारे रूसको अपनी एड़ीके नीचे पीस रहा है,
ढाचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।
जारका राज्यपाल और मुद्राधर स्वामी,
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,
बदला लेनेके लिये, घृणाके लिये भरा,
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,
कौन है यह "सच्चा अनतिशियोक्तिपूर्ण, वीर" ?
एक सिपाही, नही वह तो उसे छू भी नही गया।

उसने सैनिक बस्तिया बसाई थी। किसानोंको जबरदस्ती इन बस्तियोमें रहकर जन्मजात सिपाहीका काम करना पड़ता था। रूसके पश्चिमी सीमातपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोंकी बस्तिया बसी थी। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नही करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्चेयेफने इन विद्रोहोको बड़ी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोंको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया—"हर हालतमें सैनिक बस्तिया मौजूद रहेंगी, चाहे इसके लिये हमें पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीतर ५० मीलसे ऊपर) लाशोंसे भी ढाक देना पड़े।"

काकेशस-विजय—१८०१ ई०में पूर्वी गुर्जीको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममे एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०में अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओंको जीतकर रूसमें मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०में त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पड़ा। १८०५ ई० के अन्तमें उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्त्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आधार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कारवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मागी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नही सका, और १८०६ ई० की शरद्में वह रूसका अग बन गया। इसके बाद उसी समय पड़ोसी कूबाके खानको भी रूसियोंने जीता। रूसियोंने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योंका दो प्रदेश–एलिजावेतापोल और बाकू–बना दिया। जारके रास्तेमें ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इगलैंड और फ्रास उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०मे युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अतमें। यह युद्ध कई सालों तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हार खाई। ईरानने अतमें दागिस्तान और गुर्जीको रूसके हाथमें देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमें सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथकी लड़ाई मई १८१२ ई० में बुखारेस्तकी सधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये है। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरसे अपने दावेको हटा लिया, जो रूसकी कुतसी गुबर्निया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०में खतम हुआ, जिसमें इगलैंडने भी तत्परता दिखलाई, क्योंकि वह चाहता था, कि रूस इधरसे मुक्त होकर दोनोके दुश्मन

सैनिकोंके अतिरिक्त रूसी गोरिल्लोंने नेपोलियनकी सेनाके नाकमें दम कर दिया था। सर्दी अब इतनी बढ गई थी, कि भूखे फ्रेंच सिपाही गाडियों, घरोंके सामानो या मकानोमे आग लगाकर उससे बचनेकी कोशिश करते थे। लेकिन यह केवल रूसी जाडा नही था, जिसने कि १८१२ ई० में शत्रुकी सेनाको नष्ट किया। उस सालका जाडा अपेक्षाकृत नरम था, १२ सेटिग्रेड हिमबिन्दुसे नीचे तक ही चार-पाच दिन तापमान गया था। इससे कही अधिक सर्दी १७९५ ई० और १८०७ ई० में हुई थी, जिसको कि सहते हुये नपोलियनकी सेनाने हालैड आदिके युद्ध लडे थे। दिसम्बरके अन्ततक जब वह बेरेजिना नदीको पार हुई, तो नपोलियनकी महासेना अब तीस हजार रह गई थी। नेपोलियन अपनी सेनाको वही छोड जल्दी-जल्दी पेरिसकी ओर दौडा। अभी उसे अपने अन्तिम दिन देखने थे। १८१३ ई०की शरद्मे लाइपजिकामे मित्र-शक्तियोंने नेपोलियनको हराया, फिर मित्र-सेनाये जार अलेक्सान्द्र I के नेतृत्वमे मार्च १८१४ ई० मे पेरिसके भीतर दाखिल हुइ। क्राति द्वारा अपसारित बूर्बो राजवशको फिरसे फ्रासमे प्रतिष्ठापित किया गया, नेपोलियनको एल्ब द्वीपमें निर्वासित कर दिया गया। आगेकी वार्ताका फैसला करनेके लिये मई १८१५ ई० मे वीना की काग्रेस हुई, जिसमे पोलदके बहुत बडे भागको "सदाके लिये" रूसके हाथमें दे दिया गया। अभी काग्रेस चल ही रही थी, कि नेपोलियन एल्बसे भागकर पेरिस पहुचा, और वह फिरसे अपनी खोई शक्तिको हाथमें करने लगा, लेकिन सौ दिन बीतते-बीतते अग्रेज और जर्मन सेनाओंने वाटरलूके मैदानमे उसे अन्तिम तौरसे हराकर हेलेना द्वीपमें भेज दिया, जहा वह १८२१ ई० मे मर गया। फ्रासके सिंहासनपर अठारहवा लुई बैठाया गया। फ्रेंच-क्रातिने मुकुट-धारियोंकी जो दुर्दशा की थी, उससे युरोपके सभी राजाओमे आतक छा गया था। जार अलेक्सान्द्रने फिर ऐसा मौका न देनेके लिये आस्ट्रिया और प्रुशियाके राजाओके साथ मिलकर १८१५ ई० मे पवित्र सधिके नामसे एक समझौता किया। नेपोलियनके हारनेके बाद अब युरोपमे सब जगह रूसी जारकी तूती बोल रही थी। कार्ल मार्क्सने पवित्र-सधिके बारेमें कहा था—"यह युरोपके सभी राज्योपर जारकी प्रधानताका ही दूसरा नाम था।"

सुधार—यह बतला आये है, कि तरुणाईमें जारको लाहार्प जैसे प्रगतिशील विचारोंवाले अध्यापकके सम्पर्कमे आनेका मौका मिला था। इसके अतिरिक्त अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमें जारपर स्पेरन्स्की जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्तिका भी प्रभाव पडा था। स्पेरन्स्की एक गावके ईसाई पुरोहितका लडका था। उसकी शिक्षा पीतरबुर्गकी एक धार्मिक पाठशालामे हुई थी। अपनी असाधारण प्रतिभाके कारण वह एक मामूली क्लर्कसे बढते-बढते राज्यसचिव हो गया। तिल्जितकी सधिके बाद स्पेरन्स्की जारका प्रधान सलाहकार था। रूसकी शक्तिको दृढ करनेके लिये उसने यह जरूरी समझा, कि शासनमें सुधार किया जाय। १८०९ ई०में स्पेरन्स्कीने "राज्य-विधानोंका सहितीकरण" के नामसे एक सुधार मसौदा तैयार किया। इस सुधार द्वारा वह चाहता था कि सामन्तशाही राजतत्रकी जगह बूर्ज्वा राजतत्र स्थापित हो, तथा "विज्ञान, व्यापार और उद्योग" की रक्षा की जाय। उसने कहा—"दुनियाके इतिहासमें ऐसा एक भी उदाहरण नही मिलता, कि नव-शिक्षित और व्यापारप्रधान जाति अधिक दिनोंतक दासतामें रहे।" स्पेरन्स्कीने सुझाव पेश किया था, कि सभी सम्पत्ति रखनेवाले लोगोंकी एक राज्यदूमा (ससद्) बुलाई जाय, जिसके लिये हरएक वोलोस्त (परगना) के सम्पत्तिवाले चुनकर एक वोलोस्त दूमा बनायें, फिर वोलोस्त-दूमाओंके सदस्य ओकुग (जिले) की दूमाके सदस्योंका चुनाव करें, फिर ओकुग-दूमाओके सदस्य गुबर्निया (प्रदेश) की दूमाओं का निर्वाचन करें, और गुबर्नियाकी दूमाये राज्य-दूमाके सदस्योंको निर्वाचित करें। इस प्रकार चार जगहोंसे होकर चुनाव किया जाय। बिना राज्यदूमा और राज्यपरिषद्की स्वीकृतिके कोई विधान पास न किया जाय। शासन-प्रबध मत्रियोंके हाथमे रहे, जो दूमाके सामने जवाबदेह हो। इसमे शक नही, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके लिये स्पेरन्स्कीका कानूनी मसौदा प्रगतिशील था। लेकिन सत्ताधारी जमींदार इसे क्यो पसद करने लगे? वह स्पेरन्स्कीको "बदमाश", "क्रातिकारी" और "फ्रामसेन" कहकर बदनाम करते। उनके विरोधके कारण मजबूर हो अलेक्सान्द्रने मसौदेको अस्वीकार कर दिया, और उसकी जगह अपने नियुक्त किये सदस्योंकी एक राज्य-परिषद् १८१० ई०में स्थापित की। राज्यपरिषद्का काम जारको केवल सलाह देनाभर था। यह राज्यपरिषद् १८१० ई० से १९०६ ई० तक बनी रही।

मन्त्रियोंकी संख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी—पुलिस, संचार और राज्य-नियंत्रण के तीन और मंत्रालय स्थापित किये गये। राजुलों और जमींदारोंने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमींदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमें मांग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोंकी जगह "पचास अच्छे राज्यपालों" को नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके बड़े युद्धोंके भीतरसे रूसको गुजरना पड़ा।

नेपोलियनके पतनके बाद जार समझता था—युरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्चेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्चेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा —

वह सारे रूसको अपनी एड़ीके नीचे पीस रहा है,
ढाँचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।
जारका राज्यपाल और मुद्राघर स्वामी,
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,
बदला लेनेके लिये, घृणाके लिये भरा,
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,
कौन है यह "सच्चा अनतिशियोक्तिपूर्ण, वीर" ?
एक सिपाही, नहीं वह तो उसे छू भी नहीं गया।

उसने सैनिक बस्तियां बसाई थीं। किसानोंको जबदस्ती इन बस्तियोंमें रहकर जन्मजात सिपाहीका काम करना पड़ता था। रूसके पश्चिमी सीमांतपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोंकी बस्तियां बसी थीं। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नहीं करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्चेयेफने इन विद्रोहोंको बड़ी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोंको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया—"हर हालतमें सैनिक बस्तियां मौजूद रहेंगी, चाहे इसके लिये हमें पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीतर ५० मीलसे ऊपर) लाशोंसे भी ढांक देना पड़े।"

काकेशस-विजय—१८०१ ई०में पूर्वी गुर्जीको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममें एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०में अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओंको जीतकर रूसमें मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०में त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढ़ाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पड़ा। १८०५ ई० के अन्तमें उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्त्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आवार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कारवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मांगी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नहीं सका, और १८०६ ई० की शरदमें वह रूसका अंग बन गया। इसके बाद उसी समय पड़ोसी कूबाके खानको भी रूसियोंने जीता। रूसियोंने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योंका दो प्रदेश—एलिजाबेतापोल और बाकू—बना दिया। जारके रास्तेमें ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इंगलैंड और फ्रांस उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०में युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अंतमें। यह युद्ध कई सालों तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हारें खाई। ईरानने अंतमें दागिस्तान और गुर्जीको रूसके हाथमें देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमें सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथकी लड़ाई मई १८१२ ई० में बुखारेस्तकी संधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये हैं। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरसे अपने दावेको हटा लिया, जो रूसकी कुर्तसी गुबर्निया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०में खतम हुआ, जिसमें इंगलैंडने भी तत्परता दिखलाई, क्योंकि वह चाहता था, कि रूस इधरसे मुक्त होकर दोनोंके दुश्मन

नेपोलियनके खिलाफ अपनी सारी शक्ति लगाये। १८१३ ई० की गुलिस्तान-सधि के अनुसार आजकल-के रूसी आजुर्बाइजानको ईरानने सदाके लिये जारके हाथमें दे दिया।

वोल्गाके लोग—वोल्गाके बाश्किर, चुवाश, मोर्द्वी, तारतार आदि जातिया लड़ाकू स्वभाव की थी, इसलिये उन्होने आसानीसे रूसी जूयेको अपने कधेपर नही रक्खा। रूसियोने उनके भीतर अपने शासनको दृढ करनेके लिये कई तरीके इस्तेमाल किये। इन इलाकोकी उर्वर भूमिको रूसी जमीदार अपने हाथमे करके उनपर अपना रोब कायम करने, कही-कही रूसी किसानोंको भी ले जाकर उनके भीतर बसाते, जो कि किसानीके साथ-साथ सैनिकका भी काम देते। इसके अतिरिक्त ईसाई पादरियों को जबदस्ती ईसाई बनानेकी भी छूट थी। नये बने ईसाइयोको काफी प्रलोभन भी दिया जाता था। कितनी ही जगहोपर प्रत्येक नवईसाईको एक सलेब, एक रूबल और एक सफेद कमीज दी जाती थी। तारतारो और दूसराके सरदारो और सुल्तानोंको ईसाई-धम न स्वीकार करनेपर कितनी ही बार अपने असामियोसे वचित कर दिया जाता था। इनके अतिरिक्त निम्न-वोल्गाके किनारे ले जाकर जमन किसानोको बसा दिया गया। रूसी जार ऊपरसे रूसी थे, नही तो उनकी सारी मनोवृत्ति जमन थी, इसीलिये जमन शिक्षितो, सैनिको और दरबारियोंके प्रति ही नही, बल्कि साधारण जमनोंके प्रति भी उनका विशेष पक्षपात था। १८ वी सदीके उत्तरार्धमे वोल्गाके दोनों किनारोपर सरातोफसे और दक्षिण तक जगह-जगह जमन प्रवासियोंके गाव बसने लगे थे। १७६३ ई०मे एकातेरिना II ने विशेष राजघोषणा निकालकर बाहरसे रूसमें लोगोंको आनेका निमत्रण दिया था, जिसके अनुसार बीस हजारसे अधिक विदेशी—अधिकाश जमन आकर वोल्गाके किनारे बस गये। इन प्रवासियोंको प्रति परिवार तीस देसियातिन (अस्सी एकड़) जमीन तथा कुछ नकद ऋण भी दिया जाता था। कजाकों और कल्मक घमन्तुओंको रोकनेके लिये उक्रे-इनसे लाकर बहुतसे कसाकोको वोल्गाके पूवमे बसा दिया गया था। इस प्रकार हम देख रहे है, कि वोल्गा और उसके पूवकी एसियाई जातियोंपर अपने शासनको मजबूत करनेके लिये जारशाहीने रूसी ही नही, युरोपके दूसरे देशोके साधारण लोगोंको भी लाकर बसाना जरूरी समझा। इसपर भी बाशकिर, तारतार, चुवाश आदि जातिया हथियार रखनेके लिये जल्दी तैयार नही हुई।

साइबेरियाके लोगोंको जमीदारी या अध दासता प्रथा क्या है, इसका पता नही था। उनके पड़ोसी कजाक और दूसरी जातिया मौका पाकर उनके आदमियोको पकडकर दास बनाकर बेच देती थी। रूसियोने उनके भीतर भी पहुचकर अपने शोषणके नये तरीकेको जारी किया। १८१२ ई० से स्पेरेन्स्की जारके मनसे उतर गया था, लेकिन १८१९ ई०मे जारने उसे साइबेरियाका महाराज्यपाल बनाकर भेजा। स्पेरन्स्कीने वहा जाकर कुछ सुधार किये, लेकिन इसी समय साइबेरियाके लोगोको जबदस्ती ईसाई बनानेका काम भी आरम्भ हुआ, जिसमें मिशनरियोंने लोभ, धमकी हर तरहसे काम लिया।

भौगोलिक अभियान—नेपोलियनके युद्धोंमे सम्मिलित होकर रूस और बातोमें भी दूसरे देशोंसे क्यों पीछे रहने लगा? अब उसने भी अपने भौगोलिक अभियान भेजने शुरू किये। १८०३-६ ई० मे आदम क्रूजेन्स्तने जहाज द्वारा पृथिवी-प्रदक्षिणा की। उस समय रूस अपने समूरी छालोंका व्यापार चीनके साथ स्थलमार्गसे कयाखता होकर करता था। क्रूजेन्स्तने सोचा, जलमार्गसे इसे और सस्तेमें किया जा सकता है, इसके लिये १८०३ ई०के ग्रीष्ममें उसने एक सामुद्रिक अभियानकी योजना बनाई और वह अतलान्तिक समुद्र पार हो दक्षिणी अमेरिकाका चक्कर काटते प्रशान्त महासागरमें पहुचा। फिर काम्चत्का और जापानके तटसे वह एसिया और अफीकाके बाहर बाहर होते अतलान्तिकमे लौटा। इस अभियानने सखालिन, काम्चत्का, कूरिल और एलूतियान द्वीपोंके किनाराका खोज-पडताल की, और उत्तरी अमेरिकाके उत्तर-पश्चिमी किनारेकी भी देखा-भाला। अपनी पुस्तकमें क्रूजेन्स्तने इस यात्रा का वणन किया। १८०९-११ ई० में एक दूसरे अभियानने हेदेनस्त्रोमके नेतृत्वमें ध्रुवीय समुद्र के बीचमें नवसिबेरीय द्वीपोंकी जाच-पडताल की। १८१० ई० में इसी अभियानके एक सदस्य सनिकोफने इन द्वीपोंके सबसे उत्तरवाले द्वीपका पता लगाया, और यह भी दावा किया, कि वहा स्थलमाग है, जिसे सोवियतकालीन अभियानोंने गलत बतलाया। १८१५-१८ ई० में "रूरिक"

जहाजने काम्चत्का, चुकोतस्क और वेरिंग जलडमरूमध्यके बारेमे विशेष खोज-पडताल की। १८२१-२४ ई०में प्रसिद्ध रूसी नाविक लित्केने कम्चत्का और चुकोत्स्कका पहला नक्शा बनाया। १८२०-२४ ई०में रेंगलके नेतृत्वमें एक अभियान गया, जिसने साइबेरियाके उत्तरी तटको किनारे वेरिंग जलडमरूमध्य तक जाच-पडताल की।

दिसम्बरी-विद्रोह (१८२६ ई०)—नेपोलियनकी पराजयके बाद जारका प्रभुत्व और प्रभाव बहुत बढ गया। जारने यद्यपि फ्रेंच-क्रांतिके रूपमे ऊपर आनेवाली नई शक्तियोंको दबानेकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले रक्खी थी, लेकिन वह विचारोंको कैसे रोक सकता था? अब रूसमे कल कारखाने भी खुलने लगे थे। १८०४ ई० मे जहा रूस में २४२७ कारखाने और ९५००० मजदूर थे, वहा १८२५ ई० मे ५२६१ कारखाने और २११ हजार मजदूर हो गये थे। पुराने हस्तशिल्प और कुटीरशिल्पकी जगह अब कारखानोंकी चीजें बाजारोमे आ रही थी। उधर १८ वी सदीके मध्यसे ही रूसी कुलीन घरानोंमें फ्रेंच भाषा और साहित्यका जोर हो चला था, और फ्रेंच साहित्यके साथ फ्रेंच-क्रांतिके विचार देनेवाले साहित्यिकोंकी कृतियोंका भी प्रचार हो रहा था। जार साधारण रूसी जनताका ही देवता नही था, बल्कि उसके सामने राजुलों और अमीरोको भी घुटने टेककर दडवत् करनी पडती थी। शिक्षित अमीर तरुण जब फ्रेंच प्रगतिशील साहित्यके प्रकाशमें देखते, तो उन्हे यह असह्य मालूम होता। उनमेंसे कितने ही पश्चिमके देशोको घूमने जाते, और वहाके जीवनके सम्पर्कमे आते, जिससे उन्हें रूसकी पुरानी जारशाही बुरी लगती। फ्रेंच-क्रांतिने फ्रासमे ही एक नये भावको पैदा नहीं किया, बल्कि उससे बल्कान, इताली और स्पेन सब जगह जातीय स्वतंत्रताकी लहर फैली। दिसम्बरी विद्रोहियोंके नेता पेस्तेलने लिखा था—"युरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक वही एक बात घटित हो रही है, पोर्तगालसे रूसतक सभी देशोंमे—जिसके अपवाद इंगलैंड या तुर्की भी नही है। सुधारकी शक्तिया, कालकी मागें चारों ओर आदमीके दिमागको उत्तेजित कर रही है।" चूकि शिक्षाका प्रसार अभी अमीरों और कुलीनोंमें ही था, इसलिये नये विचारोंके वाहक भी वही थे। इन्ही क्रांतिकारी कुलीनोने रूसमें परिवर्तन लानेके लिये गुप्त राजनीतिक समितिया सगठित की। ऐसी पहली समिति १८१६ ई० में स्थापित की गई, जिसका नाम था "पितृभूमिके सच्चे और भक्त पुत्रोंकी सभा", अथवा "मुक्ति सघ"। कर्नल अलेक्सान्द्र मुरावयोफ इस समितिका संस्थापक था। इसके बीस और सदस्य थे। इसका उद्देश्य था—किसानो को अर्ध-दासतासे मुक्त करना और रूसमें वैधानिक राजतंत्रकी स्थापना। इसके जल्दी ही दो दल हो गये, जिनमें एक दल नरम था और दूसरा गरम। गरम दलवालोका नेता कर्नल पावल इवान-पुत्र पेस्तेल (१७९३–१८२६ ई०) था। दो साल बाद (१८१८-२१ ई०) "समृद्धि-सघ" के नामसे एक और सभा स्थापित हुई, जिसकी कितनी ही शाखायें जगह-जगह खोली गई। इनमें सबसे अधिक क्रांतिकारी दक्षिणी शाखा थी, जिसे कर्नल पेस्तेलने उक्रइनके तुल्चिन नगरमें सगठित किया था। समृद्धि-सघने पेस्तेलके प्रभावमें आकर अपनेको गणराज्यके पक्षमें घोषित किया। मास्कोमे जनवरी १८२१ ई० में सघका सम्मेलन हुआ, जिसमें नरमदली सदस्योंने डरकर सघको बद कर देनेकी घोषणा की, लेकिन पेस्तेलने इसे नही स्वीकार किया और उसने "दक्षिणी सम्मिलनी" (१८२१-२५ ई०) के नामसे एक नया सगठन स्थापित किया, जिसमें पेस्तेल, दाविदोफ आदि कई प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। पेस्तेल सुशिक्षित तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। समकालीन महाकवि पुश्किनने उसके बारेमें लिखा था—"पेस्तेल पूरे अर्थोमें चतुर पुरुष है। जहा तक मैं जानता हू, वह सबसे मौलिक विचारोका आदमी है।" पेस्तेल १८१२ ई०में नेपोलियनकी सेनासे लडते बोरोदिनोके युद्ध-क्षेत्रमे घायल हुआ था। १८१३-१५ ई०के विदेशी अभियान में भी पेस्तेल रूसी सेनाके साथ था। वोल्तेर, दिदेरो, रूसो जसे बहुत से युरोपीय विचारकोंके ग्रथोंका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। पेस्तेलने रूसके वैधानिक सुधारका एक प्रोग्राम "रुस्काया प्राव्दा" (रूसी सत्य अधिकार) के नामसे बनाया था, जिसके अनुसार सशस्त्र क्रांति द्वारा रूसका एक अखड गणराज्य कायम करना था। उनका प्रस्ताव था राजवशके सभी आदमियोंको मार डाला जाय, इसके बाद एक कामचालू सरकार घोषित की जाय। शासनके लिये उसने तीन उच्च सस्थाओंका निर्माण होना आवश्यक समझा था विधान-सस्था—नरोदनये वेचे (लोकसभा), प्रशासन-सस्था—देर्झाव्नया दूमा

(राज्यदूमा) और निरीक्षक सस्था—वेर्खोव्नी सबोर (उच्चतम सभा)। वोटका अधिकार सम्पत्ति और शिक्षा दोनोंपर निर्भर है। सभी नागरिकोंको समान अधिकार और समान स्वतत्रताको देते हुये समाजके भीतरके विभाजनको बद किया जाये। "रुस्कया प्रा दा" ने घोषित किया था, कि जमीदारोंको विना क्षति-पूर्तिके दिये किसानों और उनकी जमीनको मुक्त कर दिया जाय। पेस्तेलने जो बात १८१२ ई० मे घोषित की थी, वहा तक अभी १९५५ ई० के भारतीय भूमिसुधारक भी जानेके लिये तैयार नही है।

१८२२ ई० मे पीतरबुगमे भी एक क्रातिकारी सस्था "उत्तरी सम्मिलनी" स्थापित की गई, जो कि १८२५ ई० तक मौजूद रही। इस सम्मिलनीका मुखिया निकिता मुरावयोफ (१७९८-१८२६ ई०) था, जो कि जारकी गारदका एक अफसर था। १८१२ ई० मे तरुण मुरावयोफ घरसे भागकर सेनामे भरती हो रूसी सेनाके साथ दूसरे देशोंमें लडाई लडता रहा। इसने नेपोलियनके खिलाफ लडाइयोंमे भाग लिया था। पेरिसमें रहते उसने निर्वाचन होते देखा। वही उसने क्रातिकारी पुस्तकोंका भी एक सग्रह किया। देश लौटनेपर वह क्रातिके सगठनमें जुट गया। "उत्तरी सम्मिलनी" के सदस्योंमे कवि कोन्द्राती फ्यादोर-पुत्र रिलेयेफ (१७९५-१८२६ ई०) भी था। १८२३ ई०में "उत्तर तारा" नामसे एक पत्रिका निकाली, जिसम उसने जारके कृपापात्र अरक्चेयेफके अत्याचारोंकी खूब खबर ली। जल्दी ही वह और उसका पत्र जनप्रिय हो गया। १८२३ ई० में वह "उत्तरी सम्मिलनी"में शामिल हो १४ दिसम्बर १८२५ ई० के विद्रोहकी तैयारीमें पूरी तौरसे जुट पडा। वह कहता था—"म कवि नही, वल्कि एक नागरिक हू।"

नवम्बर १८२५ ई० में जार अलेक्सान्द्र I एकाएक तगन्रकमे मर गया। इस प्रकार दिसम्बरी विद्रोहकी तैयारी हो जानेपर भी वह अलेक्सान्द्रके समय नही हो सका। अलेक्सान्द्रका कोई पुत्र नही था, इसलिये उसके भाई कन्स्तन्तिनको सिहासन मिलना चाहिये था, लेकिन उसने अलेक्सान्द्रके जीवन-काल ही में अपने अधिकारको त्याग दिया था, इसलिये जारके तीसरे भाई निकोलाइ I को गद्दी मिली।

चीनसे सपर्क—अलेक्सान्द्रको युरोपका ही नही वल्कि पूवमे प्रशान्त महासागर तक फैले अपने साम्राज्यका भी ख्याल था। उसने गोलोउकिनके नेतृत्वमें १८०५ ई०मे एक बडा दूतमडल पेकिङ् भेजा। सीमातपर चीनियों ने वहाना बनाकर देर तक दूतमडलको रोके रक्खा। आगे बढ़नेके पहले रूसी राजदूतसे माग पेश की, कि चीन सम्राट्के चित्रके सामने साष्टाग दडवत् (कौतौ) करो। राजदूतने यह कहकर इसे माननसे इन्कार कर दिया, कि हाल हीमें अग्रेज राजदूतको कौतौ (साष्टाग दडवत्) करनेसे मुक्त कर दिया गया है। इस बहानेसे उन्होंने रूसी दूतमडलको आगे बढने नही दिया और उसे वहींसे लौट जाना पडा। अगले साल १८०६ ई० मे क्रुजेन्स्तनकी अधीनतामें दो रूसी जहाजोंने कान्तन पहुच अपने मालको वहा उतारा। इसकी खबर पाकर राजधानीसे हुक्म आया, कि रूसियोंको स्थलमार्गसे ही व्यापार करनेका अधिकार है, उन्हे सामुद्रिक मार्गसे व्यापार नही करने दिया जा सकता, इसलिये उनके जहाजोंको रोक लिया जाये। लेकिन पेकिङ्की आज्ञाके आनेसे पहले ही रूसी जहाज वहासे विदा हो चुके थे।

रूसके एसियाके विस्तारमें येरमक (१५७९-८४) और खबारोफ (१६५८) दो प्रमुख व्यक्तियोंके बारेमें हम बतला चुके है। १९ वी सदीमें रूसके प्रभावको साइबेरियामे दृढ करनेका काम मुरावेफने किया।

२ निकोलाइ I, पावल I-पुत्र (१८२५-५५ ई०)

एगल्सने "रूसी जारशाहीकी वैदेशिक नीति' पर लिखते हुये १८९० ई० में इस जारके बारेमें कहा था—"एक क्षुद्र मिथ्याभिमानी आदमी था, जिसका दृष्टिक्षेत्र एक जमादार (कम्पनीके अफसर) से अधिक दूर तक नही जाता था। वह ऐसा आदमी था, जो कि क्रूरताको शक्ति, हठधर्मीको मनोबल समझता था। सबसे अधिक जो चीज उसको पसद थी, वह था शक्तिका प्रदर्शन।" निकोलाइ प्रुशियाके सैनिकवादका सभी जारोंसे अधिक पक्षपाती था। उसकी बीबी चार्लोता राज

प्रुशियाका राजा फ्रेद्रिक विल्हेलम III था, जिसका भी उसे आग उसकी वीर्दीका बहुत अभिमान था। सिपाहियोंको निष्ठुरतापूर्वक कवायद-परेड कराके कठपुतली बना देनको वह सैनिक विज्ञानका बहुत भारी कौशल मानता था। उस क्रूर, मदबुद्धि और अभिमानी आदमीने कभी पुस्तक नही पढी। उसने अरक्चेयेफकी शासन-व्यवस्थाको पूरी तौरसे कायम रक्खा। लेकिन, निकोलाइके लिये सर मुडाते ही ओले पडे। उसे बापके समयसे भीतर ही भीतर पकती क्रांतिका मुकाबिला करना पडा। वह इसके बारेमें कहता था—"षड्यन्त्रियों और षड्यन्त्री नेताओ के विरुद्ध (मेरा) यद्ध अत्यन्त क्रूर और निर्दयता-पूर्ण होगा। मै उसके लिये कोई बात उठा नही रखूगा। मेरा कर्तव्य है, कि रूस और युरोपको इसके बारेमे शिक्षा दू।"

उसने क्रांतिकारियोंको निर्मम होकर शिक्षा दी भी, जिसमे उसे इस बातका सुभीता था, कि क्रांतिकारी अभी नौसिखिये थे, अभी वह दृढ़तापूर्वक अपने कामपर डटे नही थे। क्रांतिकारियोने २६ (१४) दिसम्बरको विद्रोह करनेका दिन निश्चित कर रक्खा था, जिस दिन कि नये जारके प्रति शपथ लेनी थी। उस दिन (२६ दिसम्बर १८२५) सवेरे दिसम्बरी अफसरों द्वारा सचालित रेजिमेंट सीनेटके मैदानमें एकत्रित हुई, तीन हजारसे ऊपर विद्रोही सैनिक और नौसैनिक पीतर I के स्मारकके चारो ओर जमा हुये, लेकिन वह निष्क्रिय रहे, क्योंकि अभी विद्रोहके बारेमे क्रांतिके नेता अनिश्चित-से मालूम होते थे। अन्तिम क्षणमें क्रांतिका अधिनायक सेर्गेइ त्रूबेत्स्की मैदानमे नही आया और विद्रोही बिना नेताके रह गये, जिसके कारण उनका सगठित बल खतम हो गया। निकोलाइ I कायर तो था ही, पहले वह हिचकिचाता रहा, लेकिन जब उसको विद्रोहियोंकी अवस्थाका पता लगा, तो अपने विश्वास-पात्र सैनिको और तोपचियोंको बारह बजे मैदानमें भेजा। तमाशा देखनेके लिये कितने ही मजदूर, कारीगर और नगरके गरीब मैदानमे जमा हो गये थे। उस समय रूसका सबसे बडा गिर्जा ईसाइकी सबोर बन रहा था। मजदूरोंमें भी इतना जोश आ गया था, कि उन्होंने जारके सैनिकोंको अपने पास पडे लकडीके कुदो और डडोंसे मारा। लेकिन मालूम हो गया, विद्रोही आक्रमण करनेके लिये तैयार नही है। किसी भी विद्रोहमे आक्रमणकी नीति सबसे लाभदायक होती है, क्योंकि उसमें थोडेसे भी आदमी बहुसख्यक शत्रुको घबराहटमें डाल सकते है। जारके हुक्मपर सवारोने आक्रमण किया। विद्रोही सैनिकोंने गोलियोंकी वर्षा करके उन्हे भगा दिया। गोलियोंके अतिरिक्त समझा-बुझाकर भी शात करनेकी कोशिश की गई। आखिर किसी भी निरकुश शासनकी आधारशिला सैनिक अफसर है। जब उनमें विद्रोहकी भावना पैदा हो गई, तो भविष्यके लिये क्या विश्वास किया जा सकता है? ईसाई सघराजने समझानेकी कोशिश की, लेकिन विद्रोही सैनिक उसकी बातको माननेके लिये तैयार नही थे। फिर पीतरर्बुगके महाराज्यपाल मिलोरदोजिचने जाकर समझानेका प्रयत्न किया, जिसमे उसे विद्रोही अफसर कखोस्कीने मरणासन्न घायल कर दिया। जारको आता देख उसके ऊपर भी सैनिकोंने बन्दूक दागी। जार बहुत घबरा गया और उसको डर लगा, कि देर करनेमे शायद नगरके गरीब भी इस झगडेमें शामिल होकर लूट-मार करने लगे, इसलिये उसने तोप छोडनेकी आज्ञा दी। सीनेट मैदान, नेवा नदीके बाव और सडकोंमें चारों ओर लाशे बिछ गई। नेवा बर्फ बनी हुई थी। रातके वक्त बर्फमे छेद करके बहुतसे हत और आहत लोगोंको उसके भीतर डालकर समुद्रकी ओर बहा दिया गया। विद्रोही नेताओंको पकड लिया गया।

इस प्रकार पीतरबुर्गमें दिसम्बर की क्रांतिको दबा दिया गया। उक्रइनमें चेर्निगोफकी रेजिमेंटने भी १० जनवरी १८२६ ई० (पुराने पचागके अनुसार २९ दिसम्बर १८२५ ई०) को विद्रोह किया, लेकिन उसे भी दबा दिया गया। पेस्तेलको किसी विश्वासघातीने पकडा दिया था। सेर्गेइ मुराव्योफ-अपोस्तोलने वहा विद्रोहका नेतृत्व किया, लेकिन चेर्निगोफने भी आक्रमण न करनेकी गलती की, जिससे वह जारशाहीको बहुत नुकसान नही पहुचा सके। "सयुक्त स्लाव सम्मिलनी" के कुछ दृढ सदस्य चाहते थे, कि एक विद्रोही रेजिमेंट भेजकर कियेफ पर अधिकार कर लिया जाय। इसमें सुभीता भी था, क्योंकि कियेफमें छावनीकी पलटनमें विद्रोहसे सहानुभूति रखनेवाले काफी आदमी थे, लेकिन यहा भी नेताओने ढिलमिलयकीनीका प्रमाण दिया। निकोलाइ I ने विद्रोहको दबाकर विद्रोहियोंके प्रति क्रूरतापूर्वक बदला लेनेका काम शुरू किया।

२५ (१३) जुलाई १८२६ ई०मे पाच विद्रोही नताओ—पस्तल, कनि रिलेयफ, काखोवस्की, मुराव्योफ-अपोस्तोल और वस्तुजफ-र्यूमिनको फासी दे दी गई। फासी देने वक्त रिलेयेफ, कखोवस्की और मुराव्योफ अपोस्तोलके गलेकी रस्सी टूट गई, जिसपर उन्हें दुबारा फासी दी गई। बहुतसे विद्रोहियोंको बन्दी-बडी सजायें दी गई, और कितनोंको साइबेरियामे आजीवन कालापानीका दड देकर भेज दिया गया। सिपाहियोको कितनी यातनाये दी गइ, इसका उदाहरण अनोइर्चेको था, जिसे अदालतने बारह हजार बेंत लगानेकी सजा दी और वेत खाते-खाते वह मर गया।

दिसम्बरका विद्रोह उच्चवर्ग—अमीरो—का विद्रोह था, उसमे साधारण जनताको शामिल करनेकी कोशिश नही की गई, और न ऐसा कोई तरीका इख्तियार किया गया, जिससे जनसाधारण उस ओर खिंचता भारतमे १८५७ ई०के विद्रोहमे भी कुछ ऐसाही हुआ था। इसीलिये विद्रोहके दबते देर नही हुई। लेनिनने उसके बारेमे लिखा था—"क्रातिकारियोका घेरा बहुत छोटा था। जनसाधारणसे उनका कोई सबन्ध नही था। लेकिन उनका काम व्यर्थ नही गया। दिसम्बरियोंकी असफलतासे पीछे रूसके क्रातिकारियोंने शिक्षा ली। उसने प्रगतिशील मस्तिष्कोंमे गर्मी पैदा की, जिसने हर क्षेत्रमे क्रातिके लिये जगह तैयार की।"

निकोलाइ I को राजकाज सभालते ही जिस तरहके खतरेका मुकाबिला करना पडा। वह दिलोदिमागसे कमजोर आदमी था। इसके कारण उसको हर जगह प्राणाका भय मालूम होने लगा। उसने पुलिस-राज्य कायम करते हुये "तृतीय भाग" के नामसे एक राजनीतिक गुप्त पुलिसका सगठन किया। जैसे ही किसी सैनिक या असैनिक अफसर अथवा सरकारी नौकरपर सदेह होता, उसे नौकरीसे निकाल बाहर किया जाता। उसे शिक्षण-सस्थाओंसे भी भय था, क्योंकि सभी विद्रोही नेता नवशिक्षित थे। इसीलिये शिक्षण-सस्थाओंपर भी पुलिसकी निगाह रहने लगी।

पूजीवादी विकास—चाहे इगलैड और फ्राससे पीछे ही क्यो न हो, किन्तु पूजीवादी उत्पादनके साधनों—कल कारखानों—के विस्तारको किये बिना रूस सैनिक तौरसे कैसे सबल रह सकता था? पूजीवादी नफेको देखकर कितने ही रूसी इस तरफ झुके। इनमें काफी सख्या उनकी थी, जिन्होंने छोटे-छोटे व्यापारों या दस्तकारियों द्वारा पैसा जमा किया था। पूजी कम रहनेके कारण अपने कारखानेको बढाने और पूजी जमा करनेके लिय काम भी वह मजूरोंके भीषण शोषण द्वारा करना चाहते थे। निकोल्स्कया फैक्ट्रीका स्वामी मोरोजोफ पहिले अर्धदास किसान था, जिसने १८२० ई० में जमीदारको क्षति-पूर्ति देकर मुक्ति प्राप्त की थी। फिर वह पशुपाल (चरवाहा), बादमें कोचमैन (कोचवान), फिर मिलमजदूर और दर्जीका काम करता रहा। बादम उसने दूकान खोली और अन्तम अपनी फैक्ट्री स्थापित की। १९ वी शताब्दीके और भी कितने ही रूसी पूजीपतियोका यही इतिहास था। १९ वी शताब्दी के पूर्वार्धमें पूजीवादी ढगके धातु-उद्योगका आरम्भ हुआ। यद्यपि उसकी प्रगति मद रही। उक्राइनमे भी लोह-धून मिली, और वहा भी लोहा बनानेका काम शुरू हुआ था, पर मुख्य लौहकेंद्र एसिया सीमापर उराल रहा, जहापर मजदूर बहुत सस्ते मिलते थे। १८३० ई०के बाद साइबेरियाकी सोनेकी खानोंमे—पहले पूर्वी साइबेरिया, येनिसेइ-उपत्यका और फिर प्रसिद्ध लेनाके सुवर्ण क्षेत्रमे—काम शुरू हुआ। १८१५ ई०में रूसकी ४१८९ फैक्ट्रियों और मिलोंमे १७३ हजार मजदूर काम कर रहे थे, जब कि १८५८ ई०में क्रमश उनकी सख्या १२२५९ और ५५९ हजार हो गई। १८६० ई०के बाद ही वाष्पचालित मशीनोका उपयोग होने लगा, जिन्हें रूसी उद्योगपति इगलैड और दूसरे देशोंसे मगाते थे। १८३५ ई० मे इस कामके लिये जितनी मशीने मगाई गई थी, पचीस साल बाद १८६० ई०में वह उससे पच्चीस गुना अधिक मगाई जाने लगी। अभी तक किसानोंकी अर्धदासता बद करनेका प्रयत्न आदर्शवादी भावुकतासे प्रेरित होकर किया जाता था, लेकिन अब अर्धदासताका सबसे बडा शत्रु औद्योगिक पूजीवाद आ गया था, जिसको गैरजिम्मेवार अर्धदास मजूरा की नहीं, बल्कि मजूरीके लिये अपनेको बेचनेवाले कुशल कारीगरोंकी जरूरत थी। इसलिये अर्धदासताके विरुद्ध कानून पास करनसे बहुत पहले ही अर्धदास किसान कारखानामे भाग-भागकर मजदूर बनते जा रहे थे।

यातायातका सुभीता पूजीवादके लिये सबसे आवश्यक चीज है, क्योंकि तभी माल एक जगहसे दूसरी जगह सस्तेमें भेजा जा सकता है। अंग्रेज नही, बल्कि एक रूसीने सबसे पहले रेल-इजन बनाया

था, लेकिन सामन्तशाही रूसमें उसकी कदर नही हुई। इगलैडने पहले उससे फायदा उठाया। उसने १८२५ ई० में अपनी पहली रेल बनाई, जिसके बीस वर्ष बाद कलकत्तासे पश्चिमकी ओर रेलकी पटरिया ही नही बिछी, बल्कि १८४५ ई० में भारतमें रेलोके कामके लिये ईस्ट इडिया रेलवे कम्पनीकी स्थापना की गई, और १५ अगस्त १८५४ ई० में हवडा और हुगलीके बीच रेलका यातायात शुरू हो गया। रूसमें पीतरबुर्ग और जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) के बीच पहली रेलवे लाइन १८३७ ई० में बनी, जिसके लिये सारा सामान इगलैड से आया था। सबसे पहली महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन पीतरबुर्ग और मास्कोकी थी, जो नौ वर्षमें बनकर १८५१ ई० में यात्राके लिये खोल दी गई। तब भी रूसमें रेलोंके प्रसारकी गति बहुत मद ही रही। १८५५ ई० मे रूसी रेलें फ्रासकी रेलवे लाइनो का पचमाश और जर्मन रेलोंका षष्ठाश ही थी। अब भापके इजन और भापसे चलनेवाले जहाजो के महत्त्वको उपेक्षित नही किया जा सकता था, इसलिये रूसमे वाष्पचालित जहाजो के बनानेके कारखाने भी स्थापित हुये। सैनिक हथियार और शक्ति तो लोहेके ऊपर निर्भर करती है, इसलिये उसके उत्पादनकी तरफ जारशाहीका ध्यान जाना जरूरी था। १८ वी शताब्दीके अन्तमे रूस और इगलैंड दोनों ही अस्सी लाख पूद (१ पूद = ३६ पौंड = १८ सेर) लोहा पैदा करते थे, लेकिन १९वी सदीके पूर्वार्धमें जब कि रूसने अपनी लोहेकी उपजको दुगुना ही कर पाया था, इगलैंडमे १८५९ ई०में कच्चे लोहेकी उपज तीस गुना (२३४० लाख पूद) हो गई थी।

निकोलाइ I के शासनकालमें विद्रोहोंकी कमी नही रही। पोलोंने रूसी शासनके विरुद्ध १८३०-३१ ई०में विद्रोह किया था। वहासे विद्रोहकी लहर बेलोरूसिया, उक्रइन और लिथुवानियामे फैली। उक्रइनमें इस विद्रोहने किसानोंके विद्रोहका रूप लिया। १८२६-३४ ई०में १४५ विद्रोह हुये थे, जब कि १८४५-५४ ई०में उनकी सख्या ३४८ हो गई। जारशाही अत्याचारोके मारे कभी-कभी सारे किसान अपने गावको छोडकर भाग जाते थे।

ईरान (१८२६-२८ ई०) और तुर्की युद्ध (१८२७-२९ ई०)—रूसके खिलाफ ईरान और तुर्कीको उकसाना इगलैड और फ्रासकी नीति हो गई थी, और उधर जारशाही भी अपने राज्य-विस्तारके लिये इन देशोकी ओर हाथ बढा रही थी, इसलिये युद्ध होना स्वाभाविक ही था। १८२६ ई० की गर्मियोंमें रूसके काकेशसमें बढावको देखकर ईरानने लडाई शुरू कर दी। ईरानी सेनाने आजुर्बाइजानको लेकर दागिस्तान और चेचनपर धावा किया, लेकिन १८२७ ई० के बसतमें रूसी सेनाने ईरानियोंको हरा दिया। १८२८ ई० के जाडोंतक ईरानको नखचेवान और येरिवानके इलाकोंसे भी हाथ धोकर सधि करनी पडी। इसी समय रूस पश्चिमी काकेशसके लिये तुर्कीसे भी लड रहा था। निकोलाइ I तो कान्स्तन्तिनोपल और दरेदानियलपर भी अपना झडा गाडना चाहता था। यद्यपि रूसके आक्रमणोंका वह फल नही हुआ, जो कि निकोलाइ चाहता था, तब भी १८२९ ई०की सधिके अनुसार कालासागरके सारे काकेशस-तटको रूसने ले लिया, और केवल बातू अब तुर्कीके पास रह गया।

शामिलका विद्रोह—काकेशसमें यद्यपि ईरान और तुर्कीको रूसियोंने दबा दिया, लेकिन वहाके वीर पहाडियोंने आसानीसे जारके शासनको नही स्वीकार किया। इमाम काजी मुल्लाने १८३२ ई०में ईसाइयोंके खिलाफ मुरीदवादके नामसे मशहूर एक सम्प्रदाय स्थापित किया। आरम्भमें यह एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसने काफिरोंके शासनके स्थापित होनेपर राजनीतिक रूप ले लिया। काजी मुल्लाने स्वय अपने अनुयायियोंको लेकर रूसी सेनापर जहा-तहा आक्रमण किया। उसके मरनेपर उसका चेला शामिल नेता हुआ, जिसने १८३४ से १८५९ ई०के पच्चीस वर्षोमें काकेशसमें जारशाही अफसरोको नाकों चने चबवाये। शामिल बडा ही बहादुर और चतुर नेता था। उसने मुरीदोंका सगठन बहुत मजबूत किया। काकेशसकी दुर्गम पहाडियोंसे लाभ उठाकर वह रूसियोंके ऊपर आक्रमण करता रहा। पाच वर्षके सघर्षके बाद अगस्त १८३९ ई० में दागिस्तानके अपने केंद्रको छोडकर उसने चेचनके दुर्गम पहाडियोंका आश्रय लिया। काकेशसके बेग और खान पहले ही जारशाहीके गुलाम बन चुके थे, इसलिये शामिलने उनके खिलाफ भी लडाई जारी रखते साधारण पहाडियोंको अपनी ओर खींचा। १८५९ ई० में दागिस्तानके गूनिब किलेमें शामिलने अन्तिम बार रूसियोंका मुका-

बिला किया। २५ अगस्त १८५९ ई०को रूसी सेनापतिने खबर भेजी—"गूनिव हाथमें आ गया, शामिल वदी कर लिया गया।" शामिलको पकडकर पीतरबुग भेज दिया गया, जहासे उसे ले जाकर कलुगामें बसा दिया गया। पीछे वह हजके लिये मदीना जा वही मरा। काकेशसके मुस्लिम प्रधान इलाकोंमें जारशाहीको चैनसे शासन करनेका मौका नही मिल सकता था, इसलिये एक ओर जहा जारशाही अत्याचारके कारण बाशिंदे अपना गाव और देश छोडकर भागते जाते थे, या उन्हे खास-खास जगहों से हटाया जाता था, तो दूसरी ओर रूसी किसानो और कसाकोंको ले जाकर उत्तरी काकेशसमें बसाया जाता था।

मध्य एसियाकी रियासतें—आगे हम बतलायेंगे, कि कैसे १८ वी शताब्दीके अतमे पश्चिमी मध्य एसियामें खीवा, बुखारा और खोकन्दकी तीन रियासतें कायम हो गई। इन्ही तीनो रियासतोंकी भूमि पर आगे चलकर उज्बेक, ताजिक, किर्गिज और तुर्कमान गणराज्य बने। तुर्कमानोंकी भूमिको नादिर शाहके समयमे ही ईरानके अधीन माना जाता था। तुर्कमान घुमन्तू समय-समयपर बुखारा, अफगानिस्तान और ईरानके भीतर भी जाकर लूट मार किया करते थे। ये तीनों रियासतें भी आपसमें लडती रहती थी। १९ वीं शताब्दीके आरम्भमें खोकन्दका खान ज्यादा शक्तिशाली हो गया था, जब कि उसने ताशकन्द जैसे एक बडे ही महत्त्वपूण व्यापारिक और सैनिक केंद्रको अपने हाथमें कर लिया। ताशकन्दको ले लेनेके बाद कजाकों और किर्गिजोकी बहुतसी भूमिको भी खोकन्दने ले लिया। खोकन्दियोंने इस भूमिमें जहा बहुतसे सैनिक महत्त्वके किले बनवाये, वहा लोगोंको पक्का मुसलमान बना अपनी ओर खीचनेके लिये भिन्न-भिन्न जगहोपर कितने ही मदरसे भी स्थापित किये। अकमेचेत (श्वेत-मस्जिद), औलियाअता विशेषकर इसी समय महत्त्वपूर्ण नगर बने। १९ वी सदीके दूसरे पादमें पहुचते-पहुचते खोकन्द मध्य-एसियाका सबसे बडा राज्य हो गया। वह पश्चिमी चीन और पामीरसे निम्न सिर-दरिया तक फैला हुआ था।

खीवाने भी खोकन्दकी तरह कजाको, तुर्कमानों और कराकल्पकोंकी भूमिपर अधिकार करके १९ वी सदीके आरम्भमें अपनी सीमाका काफी विस्तार कर लिया था। खोकन्द और खीवाके बीचमें बुखाराका खान था, जिसके हाथमें पहले तुर्किस्तान (निम्न और मध्य सिर-उपत्यका) था, लेकिन खोकन्दने उसे छीन लिया। बुखाराके नीचे रहनेवाले तुर्कमानोमेंसे कितनोंको खीवाने ले लिया था। इस प्रकार बुखारा उतना शक्तिशाली नही था, तो भी शताब्दियोंसे बुखारा इस्लामिक संस्कृतिका केंद्र चला आया था, और वहाकी दस्तकारी और शिल्पकी बडी धाक थी, जिसके द्वारा उसे व्यापारमें काफी नफा रहता था। इन रियासतोंके खान (राजा) और बडे अमीर अधिकतर उज्बेक थे, उनके बाद मुल्लाओं और खोजों (सतों) का प्रभाव ज्यादा था।

कजाकोंके बारेमें लिखते हुये हम बतला चुके है, कि १९वी सदीके पूर्वार्धमें उनके लघु, मध्य और महा-ओर्दूके नामसे तीन ओर्दू थे। १८वी सदीके पूर्वार्धमें ही लघु और मध्य-ओर्दूने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, और १८२० ई० के आसपास रूसी प्रवासी भी इनकी भूमिमें जगह-जगह बसने लगे थे। १८३५-३७ ई०में ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल व० अ० पेरोव्स्कीने ओस्क और ओयत्स्कके बीचमें किलोंकी पक्ति बना करके जगल और चरागाहकी दस हजार वर्ग किलोमीतर बडी अच्छी भूमि कजाकोंसे छीन ली, जिसके बाद कजाकोंने विद्रोह किया, इसे हम पहले बतला चुके है।

१८४५ ई० में दश्तेकजाकके गर्भमें जारशाहीने नई खिलाबदिया तैयार की। कजाक लोग सुल्तान केनेसरी कासिमोफके नेतृत्वमें रूसी बस्तियोंपर आक्रमण करते आगे-पीछे हटते जा रहे थे। कासिमोफका पीछा करते रूसी सेना इली नदीकी ओर बढी। अब रूसियोंको उनका रास्ता अल्ताई और त्यान्शानमें चीनी सीमाके पास ले जा रहा था। सबसे पहले रूसियोंका ध्यान खीवाकी ओर गया। यह मालूम ही है, कि खीवा (ख्वारेज्म) बहुत पुराने समयसे रूसके व्यापारकी एक मुख्य शृखला थी। खीवामें भी १९ वी सदीके पूर्वार्धमें बडी अव्यवस्था थी, जिससे रूसियोंको आगे बढ़नेका बहाना और सुभीता मिल गया। महाराज्यपाल पेरोव्स्कीने एक छोटीसी सेनाको लेकर १८३९ ई०की शरद्में ओरेनबुर्गसे खीवाके विरुद्ध अभियान किया। इस सेनामें कप्तान, बाशकिर और कितने ही कजाक सवार भी थे। पद्रह हजार ऊटोंपर सेनाके लिये रसद चल रही थी। पहला

अभियान सफल नही हुआ। बर्फानी तूफान और सख्त सर्दीने बहुतसे घोडों और ऊटोको मार डाला, जिसपर पेरोव्स्कीको पीछे हटना पडा। इस असफलताके बाद पेरोव्स्कीने अपने इरादेको छोडा नही, बल्कि दस्तेकिर्गिजकी तरफसे बढनेका निश्चय किया। भूमिके बारेमें पता लगाया, पानीके लिये कूयें तैयार किये, जगह-जगह किलें बनाये। इस तरह रास्तेको सुरक्षित करनेकी कोशिश की। सिर-दरियाके ऊपर अरात्स्काका किला बनाकर वहा (अराल समुद्रके तटपर) रूसी किसानोकी बस्तिया बसा दी गईं। यही नही, बल्कि वाष्पचालित अग्निबोट भी अराल समुद्र और सिर-दरियाके भीतर चलने लगे। इस तरह ओरेनबुर्ग और अराल समुद्रके बीचके रास्तेको यातायातके लिये सुरक्षित कर दिया गया। इतनी तैयारीके बाद १८५३ ई०के वसंतमें पेरोव्स्की एक बडी सेनाके साथ सिर-दरियाके द्वारा ऊपरकी ओर बढ़ा, और खोकन्दकी राज्यसीमाके भीतर जाकर उसने अकमेचित किलेको घेर लिया। रूसियोंके सामने खोकन्दी कितने दिनों तक ठहरते ? अकमेचित पेरोव्स्कीके हाथमें आई। उसने सिर-दरियाके ऊपर पाच नये किले बनवाये। रूसियोने पिशपेक, तोकमक आदि कितने ह नगरोको ले लिया। ये किले किर्गिजिस्तानकी चूइस्क-उपत्यकोमे थी, जिनके शासक यद्यपि खोकन्दी थे, लेकिन निवासी किर्गिज थे। इसी समय किर्गिजोको पश्चिमके नये स्वामियोसे वास्ता पडा। तो भी वह १८७० ई०से पहले पूरी तौरसे रूसियोंके अधीन नही हो पाये थे। उधर साइबेरियाकी तरफ बढ़ते हुये १८५४ ई०में रूसी वेर्नोयेके किलेको बनानेमें सफल हुये, जहापर पीछे वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) नगर की स्थापना हुई।

इतना कर लेनेके बाद १८५४ ई०में अब फिर पेरोव्स्की खीवाके खिलाफ चला। खानको सधि के सिवा और कोई रास्ता नही दिखलाई पडा, और उसने रूसियोंके पास अपना दूत भेजकर जारकी अधीनता स्वीकार कर खीवामें व्यापार करनेकी रियायतें प्रदान की। निकोलाइ I के शासनके अतिम वर्षोतक कजाक और किर्गिजके दस्त (स्तेपी) पूर्णतया रूसियोंके हाथमें हो गये, और सिर-दरियासे लेकर अल्ताइके उत्तरमें सेमीप्लातिन्स्क तक जगह जगह रूसी किले बना दिये गये। खीवाका खान अब रूसके अधीन था तथा खोकन्द और बुखाराके खान अब खीवाका अनुसरण करनेके लिये प्रतीक्षा कर रहे थे।

निकोलाइ I के शासनकाल ही में फरवरी १८४८ ई०में पेरिसमें क्राति हुई। यद्यपि यह प्रथम क्राति जितनी सबल नही थी, लेकिन इसने जारके दिमागमें खलबली जरूर पैदा कर दी। निकोलाइ उस समय नाचमें था, जब कि उसे इसकी खबर मिली। वह गुस्सेमें पागल होकर अपने दरबारियोंसे बोल उठा—"भद्र पुरुषो, अपने-अपने घोडोंको कस लो, पेरिसमें क्राति हो गई है।" पेरिसकी इस क्रातिके समय ही वीना-आस्ट्रियामे भी क्राति हो गई। दूसरी जगहोंपर भी उसका प्रभाव पड रहा था। निकोलाइने इतालीके राष्ट्रीय स्वतत्रता-आन्दोलनको दबानेके लिये साठ लाख रूबल दिये। लेकिन निकोलाइको क्या पता था, कि उसी समय एक ऐसी सबल ज्वाला तैयार की जा रही है, जिसका शिकार सबसे पहले रूस और उसका पोता निकोलाइ II होनेवाला है ? पेरिसकी इसी क्रातिके समय मार्क्स अपने क्रातिकारी कार्यक्षेत्रमें प्रविष्ट हो चुके थे। उन्होने उस सिद्धान्त और उस सैनिक कौशलका भी पता लगा लिया था, जिसके द्वारा विश्वमें सहस्राब्दियोंसे चला आता मुट्ठीभर धनियोंका राज्य खतम होकर उनकी जगह सर्वहाराके नेतृत्वमें बहुजनका शासन स्थापित होनेवाला था। कार्ल मार्क्सने पेरिसकी इस द्वितीय क्रातिके एक साल पहले १८४७ ई० में प्रथम कम्युनिस्ट पार्टीको कम्युनिस्ट लीगके नाम से सगठित किया था। उसीके लिये मार्क्स और उनके साथी एगल्सने "कम्युनिस्ट पार्टीकी घोषणा" तैयार करके १८४८ ई० में प्रकाशित की थी। निकोलाइको दुनियाके सबसे अधिक शक्तिशाली क्रातिके हथियार इस "घोषणाके" बलका पता नही था। वह नही समझता था, कि उसके दरबारी घोडाको कितना ही कसें, वह घोषणाके पथको रोक नही सकेंगे। पेरिसकी द्वितीय क्रातिके बाद लायोस कोसुतके नेतृत्वमें मगयार (हुगरी) की जनताने आस्ट्रियाके सामन्ती शासनके विरुद्ध विद्रोह किया। निकोलाइने एक लाख चालीस हजार सेना लेकर अपने सेनापति पस्केविचको उसे दबानके लिये भेजा, और १८४९ ई०में विद्रोही मगयारोंकी तेईस हजार सेनाने आत्म-समर्पण किया। रूस अब सिद्ध कर रहा था, कि प्रुशिया हो या आस्ट्रिया, फ्रास हो या इताली, सभी जगह क्रातिको दबानेका सबसे जबर्दस्त

साधन निरकुश जारशाही है, इसीलिये तो नही क्रातिने सबसे पहले रूसके जारको ही खतम किया ?

निकोलाइको अपने शासनके अन्तिम कालमें क्रिमियाका युद्ध (१८५३-५६ ई०) देखना पडा। इस युद्धके लिये भी फ्रास और इगलडने तुर्की सुल्तानको उकसाया था, लेकिन उसके आरम्भ करनेका मौका निकोलाइने दिया। फिलस्तीन उस समय तुर्कीके हाथमें था, जिसके कारण ईसाइयोंके योरोशिलम आदि तीर्थस्थान भी सुल्तानके अधीन थे। १८५३ ई०में एक विशेष दूतमडल कान्स्तांतिनोपल भेज कर निकोलाइने सुल्तानसे माग की, कि फिलस्तीनके बेतलहेमके मदिरकी कुजी रखनेका अधिकार रूसी चर्चको दिया जाय, लेकिन फ्रास और तुर्कीके बीच जो सधि हुई थी, उसके अनुसार यह अधिकार कैथलिक चर्चको मिला था। सुल्तान जानता था, कि इस बातमें फ्रास और इगलड हमारे समर्थक होंगे, इसलिये उसने रूसकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। दोनों देशोका दौत्य सबध तोड दिया गया, और जून १८५३ ई०में अस्सी हजार रूसी सेना तुर्कीकी ओर अभियान करते मोल्दाविया और वलाचियामें दाखिल हुई। समझौतेकी कोशिश की गई, लेकिन उसमें सफलता नही हुई। तुर्की सेनाने कालासागरके पूर्वी और पश्चिमी तटापरसे होकर आक्रमण शुरू किया। सबसे पहला जबदस्त सघर्ष कालासागरके दक्षिणी किनारेपर अवस्थित सीनोपमें हुआ। नवम्बर १८५३ ई०में रूसी नासेनापति नखिमोफने एकाएक वहा आक्रमण करके तुर्कीके जगी बेडेको नष्ट कर दिया। अब इगलड-फ्रास और अधिक पर्देकी आडमें शिकार नही कर सकते थे, इसलिये वह सीधे मैदानमें कूद पडे। प्रुशिया और आस्ट्रियाने भी गाढके समय रूसका पक्ष छोड दिया। रूसको इगलेड और फ्रासके मजबूत जगी बेडेका मुकाबिला करना था, जो उसकी अपेक्षा कही अधिक सबल था। १ अप्रैल १८५४ ई० को फ्रास और इगलेडके जगी बेडेने अदेस्सा नगरपर बम वर्षा की। यही नही, उन्होंने उससे बहुत दूर उत्तर श्वेत-सागरके किनारेके रूसी नगर सोलोवेत्स्कपर जहा गोलाबारी की, वहा प्रशान्त महासागरके कामचत्का प्रायद्वीपमे पेत्रोपावलोव्स्क नगरको भी तोपोंका निशाना बनाया। सबसे अधिक सघर्ष हुआ। कालासागरमें। सितम्बर १८५४ ई०के आरम्भमें अग्रेज और फ्रेंच नौसैनिक सेवस्तापोलको छीनने लेनेके लिये समुद्र-तटपर उतरे। सेवस्तापोलने बडा जबदस्त मुकाबिला किया। यद्यपि अन्तमे जीत उन्हीकी हुई, लेकिन एक अग्रेज कमाडरने इस विजयके बारेमें कहा था—"यदि इस तरहकी एक और विजय प्राप्त हुई, तो इगलैंडके पास कोई सेना नही रह जायेगी।" सेवस्तापोलने ग्यारह महीनेतक बडा जबदस्त प्रतिरोध किया था। इसी समय फवरी १८५५ ई०में निकोलाइ I मर गया। सेवस्तापोलके प्रतिरोधमें भाग लेनेवाले रूसी अफसरोंमे महान् साहित्यकार लेव ताल्स्तोय (तारस्ताय) भी था, जिसने "सेवस्तापोलकी कथायें" को लिखकर इस समयकी रूसियोंकी वीरताका बडा सुदर चित्र खीचा है। इसी समय दाशा सेवस्तापोल्स्कयाने दुनियामें पहिली बार युद्धके घायलोंके नसका काम किया था। अग्रेज इसका श्रेय फ्लोरेन्स नाइटिंगलको देते हैं। इसी प्रतिरोधमे अदमिरल नखीमोफ मारा गया। ३४९ दिन तक भारी मुकाबिला करनेके बाद सेवस्तापोलकी सभी चीजोंको नष्ट करते तथा अपने सभी पोतोंको डुबाते रूसियोंने सिर्फ खडहरोंको शत्रुओंके हाथमे जाने दिया।

निकोलाइके मरनेके बाद १८५६ ई०मे पेरिसमें सधि हुई। अग्रेज और फ्रेंच विजयी हुये थे, लेकिन वहाके शासक भली प्रकार जानते थे, कि हमारे विरुद्ध होनेवाली जबदस्त क्रातियोंमें जार ही हमारा सबसे बडा सहायक होता आया है, इसलिये वह कब पसद करते, कि जारशाही रूसको अधिक निबल कर दिया जाय ? तो भी रूसको कालासागरमें अपने जगी बेडे या तट-भूमिपर किले रखनेके अधिकारसे वचित कर दिया गया। तुर्की साम्राज्यकी रक्षाकी जिम्मेवारी ले ली गई, और रूस और तुर्कीकी पुरानी सीमायें कायम रक्खी गई। सर्बिया, मोल्दाविया और वलाचियाको युरोपियन शक्तियोंके सरक्षणमें दे दिया गया। दरेदानियल और कालासागरमें सभीको व्यापार करनेका समानाधिकार मिला। क्रिमियाके युद्धमें असफल होकर रूसने युरोपकी राजनीतिमें कायम की हुई अपनी प्रधानताको खो दिया, और अब उसका स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें वह नही रह गया, जो कि १८१५ ई०से १८५३ ई० तक था।

साइबेरिया में प्रसार—साइबेरियामें रूसी शक्तिके प्रधान प्रसारक और सस्थापक येमाक और खबारोफके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। मुरावेफ तीसरा और अन्तिम पुरुष था, जिसने साइब-

रियामें जारशाहीकी शक्तिको बढाने और मजबूत करनेमें काम किया। ६ सितम्बर १८४७ ई० को जार निकोलाइ तुलाकी ओर गया हुआ था, जहा उसने तरुण मुरावेफको साइबेरियाका राज्यपाल नियुक्त किया। इसके बादके कितने ही वर्षोंका साइबेरियाका इतिहास मुरावेफके कामोका लेखा है। इस समय रूसी नौसेना-मन्त्रालय अखोत्स्क समुद्रके दक्षिणी छोरपर तुगरकी खाडीमें एक नया बदरगाह बनाना चाहता था। मुरावेफने उसे ठीक नही समझा और उसने सुझाव रक्खा, कि ऐसे बन्दरकी स्थापनाके लिये नेवेल्स्कीके नेतृत्वमें अमूरकी खोज-पडताल की जानी चाहिये। १८४९ ई० में इसपर विचार करनेके लिये जारने एक समिति नियुक्त की, लेकिन इससे पहले ही छ हथियारबद नौसैनिक, एक तोपके साथ एक नावपर आमूरकी जाच-पडतालके लिये चल पडे थे, जिन्होने आमूरके मुहानेसे २५ वर्स्त (४ फरसख) पर जारके नामसे निकोलायेव्स्क नामका एक बन्दरगाह स्थापित किया, और ६ अगस्त १८४९ ई०को पडोसके गिलियक लोगोके सामने रूसी झडा गाडकर एक पौंड-वाली तोपका गोला दागा। नेवेल्स्कीने जल्दी-जल्दी स्वय पहुचकर इस बातकी सूचना मुरावेफको दी। मुरावेफने तुरत इसकी खबर राजधानीमें भेजी। जब इस कामके लिये नियुक्त समितिके सामने यह बात आई, तो उसने बिना आज्ञाके ऐसा करनेका बहुत विरोध किया, और नेवेल्स्कीको कठोर दड देनेपर जोर देते तुरत वहासे हट आनेकी सिफारिश की, लेकिन मुरावेफने इसका विरोध किया। जब यह बात जारके पास निणयके लिये पहुची, तो उसने समितिकी बात माननेसे इन्कार कर दिया, और कहा—"जब एक बार रूसी झडा गाड दिया गया, तो फिर उसे नीचे नही उतारा जा सकता।" युद्ध-मन्त्रालय पसद नही करता था, कि सुदूर-पूव साइबेरियामें बडी सेना रक्खी जाय। इस समस्याका हल मुरावेफने आसानीसे कर दिया। उसने नेर्चिन्स्कके रूसी किसानोंको कसाक सैनिकोके रूपमें परिणत कर दिया, और इस प्रकार पूर्वी साइबेरियाके लिये एक सुसगठित सेना मिल गई। यदि साइबेरियामे जगह-जगह रूसियोंकी बस्तिया कायम न हुई होती, तो मुरावेफको यह सुभीता न मिलता।

नेवेल्स्कीको दड क्यों मिलने लगा? वह फिर सुदूर पूवमें अपना काम करने लगा। १८५२ ई० में प्रशान्त महासागरके भीतर सखालिन द्वीपकी उसने जाच-पडताल की, और सखालिनके देकास्त्री और किजी नामके द्वीपोंको अपनी जिम्मेवारीपर दखल कर लिया। ये दोनों द्वीप तारतारी खाडीके लिये बडे सैनिक महत्त्वके थे। नेवेल्स्कीने पोयारकोफ या खबारोफकी नीतिको छोडकर देशवासियोको अपने अच्छे बर्तावसे जीतनेकी कोशिश की, जिसमे उसे बहुत सफलता मिली।

२२ अप्रैल १८५३ ई०को एक सम्मेलन हुआ, जिसमें मुरावेफने प्रस्ताव किया, कि आमूरके बारेमें चीनसे फैसला कर डालना चाहिये। अभी यह बात विचाराधीन ही थी, और इसमें मुरावेफके विरोधी कितने ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, लेकिन इसी बीचमें रूस और तुर्कीके बीच १८५३ ई०में क्रिमियाका युद्ध छिड गया, जिससे सरकारका सारा ध्यान उधर हो गया, और मुरावेफको पूवमें खुल खेलनेका मौका मिल गया। तुर्कीके साथके युद्धमें युरोपमें रूसको बडी बुरी तरहसे हारना पडा, लेकिन इसी समय प्रशान्त महासागरके तटपर उसे भारी विजय प्राप्त हुई। इस सफलताकी खबर सुनकर निकोलाइ इतना प्रसन्न हुआ, कि ११ जून १८५४ ई०को उसने आदेश दिया, कि सुदूर-पूवके सीमातके सवालोंके बारेमें मुरावेफ सीधे पेकिङ्ग सरकारसे बातचीत कर इन्हें हल करे। इस अधिकारको प्राप्त करके मुरावेफने अब फिर सुदूर-पूवमें अपने कामको नये जोशसे आरम्भ किया, जिसका ही परिणाम था, आमूरका प्रथम प्रसिद्ध अभियान। नावोंके बेडेको लेकर आगे बढ़नेसे पहले मुरावेफने पेकिङ्ग-को इस बातकी सूचना दे दी थी, और उसने कारण बतलाते हुये कहा था, कि युरोपके युद्धके कारण प्रशान्त महासागरकी अपनी अधिकृत-भूमिकी रक्षाके लिये हमें ऐसा करना आवश्यक पड रहा है। १४ मई १८५४ ई० को मुरावेफ आठ सौ सैनिकोंकी एक बटालियन, कुछ कसाक सैनिक, एक पहाडी तोपखाना, पचहत्तर नावोंके बेडेके साथ नौसैनिक जहाज "अरगून" के साथ रवाना हुआ। अट्ठाइसवें दिन मुरावेफ चीनियोंके दुर्गबद्ध नगर ऐगुनम पहुचा। यहा उसने स्थानीय चीनी अधिकारियोंसे यह पता लगानेके लिये अपने आदमी भेजे कि उनके पास पेकिङ्गसे कोई हुक्म आया है, या नही। वहा कोई हुक्म नही आया था, और न स्थानीय चीनी अधिकारीके पास इतनी शक्ति थी, कि मुरावेफको रोकता। मुरावेफ बिना किसी विरोधके आमूर नदीमें आगे बढ़ता प्रशान्त महासागरमें पहुचा, फिर काम्स्चत्काके

पेत्रोपावलोव्स्कमे पहुचकर फ्रेंच और अग्रेजी नौसेनासे सुरक्षित रखनेके लिये उसकी किलाबदी शुरू की। मुरावेफको इसमें सफलता हुई, और शत्रुओंको असफल लौट जाना पडा।

सास्कृतिक और साहित्यिक प्रगति—निकोलाइ जैसे अयोग्य और अल्पपठित अल्प-सस्कृत शासकके समय रूसको बडी-बडी प्रतिभाओंके पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी समय हेजन (१८१२-७० ई०), बेलिन्स्की (१८११-४८ ई०) जैसे विचारक, लोबाचेव्स्की (१७९३-१८५६ ई०) जैसे विज्ञानवेत्ता और रिलेयेफ, पुश्किन, ग्रिबोयदेफ, लेमन्तोफ (१८१४-४१), वेनेवितिनोफ, कोल्तसोफ, बेलिन्स्की, बरातिन्स्की जैसे प्रतिभाशाली कवि और साहित्यकार पैदा हुये, जिन्होंने उस पृष्ठभूमिको तैयार किया, जिसने रूसको बौद्धिक क्षेत्रमें महान् बनाया। यदि निकोलाइ क्रातिको फूटी आखों भी नही देखना चाहता था, तो उससे क्या, रूसकी इन प्रतिभाओंने क्रातिके मार्ग को साफ करनेका काम शुरू किया। जहा रूसी शिक्षामत्री उवारोफ (१८३३-४९ ई०) इस बातका दावा कर रहा था, कि रूसी लोग स्वाभाविक तौरसे धार्मिक है, वह सदासे जारके भक्त रहते आये हैं और किसानोकी अधदासताको वह बिल्कुल प्राकृतिक मानते है, वहा अलेक्सान्द्र इवान-पुत्र हेजन दूसरे ही विचारोका प्रचार कर रहा था।

हेजन (१८१२–७० ई०)—हेजनने दिसम्बरी वीरोंकी कुर्बानीका प्रभाव अपने ऊपर स्वीकार करते हुये लिखा था—"पेस्तेल और उसके सहयोगियोंकी हत्याने अन्तमें अपनी बचपनकी नीदसे मेरी आत्माको जगा दिया।" हेजन १८१२ ई०में एक धनी रूसी जमीदारके घर पैदा हुआ था। उसके बापने एक जर्मन स्त्रीसे शादी की थी, लेकिन शादी वैधानिक नही हुई थी, इसलिये हेजनको बापका कुल-नाम कोवलेफ नहीं प्राप्त हुआ और उसे एक साधारण-सा नाम हेजन (हज, जर्मनमें हृदय) मिला। हेजन मस्तिष्कके साथ बडा ही सहृदय पुरुष था। हेजनके पिताके पास फ्रेंच और जर्मन पुस्तकोंका बहुत अच्छा सग्रह था। उसने अपने फ्रेंच अध्यापकसे फ्रेंच क्राति और गणराज्यके प्रति सम्मान करना सीखा। रिलेयेफकी कविता "ध्यान" से वह उसी वक्त प्रभावित हुआ था। वही रिलेयेफ जब फासीपर लटका दिया गया, तो हेजनके ऊपर उसकी सदाके लिये अमिट छाप पड गई। हेजन अपने क्रातिकारी विचारोको लेकर ज्यादा दिनोंतक निकोलाइके राज्यमें नही रह सकता था। १८४७ ई०में वह देशसे बाहर गया, और क्रातिकारी फ्रास और इतालीको अपनी आखों देखा। १८४८ ई०की क्रातिके समय हेजन पेरिसमें था। पश्चिमी युरोपमे क्रातिकी असफलताको देखकर हेजन निराश हुआ, और उसे आशा बधी, कि शायद रूसी किसान क्रातिको सफल बनायें। इस प्रकार उसने किसानोंके समाजवादका स्वप्न देखना शुरू किया। हेजन कार्ल मार्क्सका समकालीन था। मार्क्सकी तरह ही उसे भी अपनी जन्मभूमिसे भागकर मारा-मारा फिरना पडा, और अन्तमे उन्हीकी तरह उसने लदनमे अपना डेरा डाला। १८५३ ई० मे उसने वहा "स्वतत्र रूसी प्रेस" की स्थापना की, जिससे अपनी क्रातिकारी पत्रिका "पोल्यार्नेया ज्वेज्दा" (ध्रुवतारा) का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिकाके मुख्य मुखपृष्ठपर दिसम्बरी शहीदोंकी तस्वीर रहती थी। १८५७ ई०से १८६७ ई०तक हेजनने "कोलोकोल" (कलकल) के नामसे एक और भी प्रसिद्ध पत्रिका प्रकाशित की। हेजनके विचारोंने रूसी तरुणोंकी समकालीन पीढीपर बहुत प्रभाव डाला, और उसी प्रभावमें आकर बोल्शेविकोसे पहलेके क्रातिकारियोंने किसानोंमें क्रातिका सदेश पहुचानेके लिये भगीरथ प्रयत्न किये।

व ग बेलिन्स्की (१८११–४८ ई०)—बेलिन्स्की हेजनका समकालीन था। वह साहित्य समालोचकके तौरपर लोगोंमें नया भाव पैदा करनेमें सफल हुआ। उसकी आलोचनाओंने रूसी साहित्यमे यथार्थवादकी स्थापना की। उस समय जारशाही सेंसरके कारण कोई भी स्वतत्रतापूर्वक कुछ लिख नही सकता था। बेलिन्स्कीने अपने मित्र प्रसिद्ध लेखक गोगलको लिखा था—"रूसकी मुक्ति उप-देश या प्रार्थनासे नही हो सकती, बल्कि वह अधदासताके उच्छेद तथा लोगोंमें मानवसम्मानके प्रति जागृति और सद्भाव स्थापित करनेमे हो सकती है। बेलिन्स्की अपनी लेखनीसे क्रातिका प्रचार कर रहा था, लेकिन उसके रास्तेमे सभी जगह रुकावटें थी। उसने अपनी इस विवशताको दिखलाते हुये लिखा था—"प्रकृतिने मुझे कुत्तेकी तरह भूकने, सियारकी तरह हुआ-हुआ करनेके लिये मजबूर किया है। कभी-कभी परिस्थितिया बिल्लीकी तरह म्याउ-म्याउ करने और लोमडीकी तरह पूछ हिलानेको

लिये भी मजबूर करती है।" लेकिन वह भविष्यके लिये बडा आशावादी था। उसने मरनेसे थोडा ही पहले लिखा था—"मुझे अपने उन पौत्रों और प्रपौत्रोंपर ईर्ष्या होती है, जो कि १९४० ई०में रूसको शिक्षित दुनियाका मुखिया बनते, विज्ञान और कलाके सिद्धांतोंको स्थापित करते, और ज्ञानवान् मानव-जातिसे सम्मानकी भेंट पाते देखेंगे।" बेलिन्स्कीका भविष्य-कथन सच निकला, इसमें क्या सदेह है ? जारकी सरकार उसे जेलमें बंद करने ही जा रही थी, कि ३७ वर्ष की अवस्थामें १८४८ ई० में विसारियोन ग्रेगोरी-पुत्र बेलिन्स्की तपेदिकके हाथों मारा गया।

वैज्ञानिक—वासिली व्लादिमिर-पुत्र पेत्रोफ (१७६२-१८३४ ई०) प्रसिद्ध रूमी भौतिक शास्त्री था, जिसने दुनियामें सबसे पहले (१८०२-३ ई०मे) आधुनिक विद्युत्-रसायनके आधारभूत एलेक्ट्रोलीसिसका आविष्कार किया। उसने डेवीसे कितने ही वर्ष पहले वोल्ताइक आर्क (प्रदीप) का आविष्कार किया। १८३२ ई०में पीतरबुर्गमें दुनियाका सबसे पहला तार शीलिंगने स्थापित करके सचार-मत्रालय और हेमन्त प्रासादके बीचमें सदेश भेजकर दिखलाया, लेकिन सामन्तशाही रूसने इन आविष्कारोंको आगे बढनेका मौका नही दिया। १८३८ ई०में याकोवी (१८०१-७८ ई०)ने बिजली बनानेका पहला इंजन तैयार किया, और उसकी बिजलीकी नावने नेवाके ऊपर यात्रियोंको ढोया। यह आविष्कार इंगलैंडमें आधी शताब्दी बादमें हुआ, और दुनियाने याकोवीको भूलकर अंग्रेजको इसका आविष्कारक माना। आविष्कार और खोजके क्षेत्रमें रूसी प्रतिभायें इस प्रकार अपने चमत्कारको दिखानेके लिये तैयार थी, लेकिन वहा अभी उनको सहारा देनेवाले नही थे।

साहित्यकार—निकोलाइके कालमें रूसी साहित्य-गगनमें बडे-बडे नक्षत्र उदित हुये, लेकिन उनमेंसे अधिकाश अकालमें ही कालकवलित हुये, जैसे—

रिलेयेफ (कवि)—जारने १८२६ ई०में फासी दिलवा दी।
पुश्किन (कवि)—१८३७ ई० में ३८ वर्षकी आयुमें द्वंद्व-युद्धमे मारा गया।
ग्रिबोयेदोफ (कवि)—तेहरानमें हत्यारेके हाथों मारा गया।
लेर्मन्तोफ (कवि)—द्वंद्व-युद्धमें २७ वर्षकी उम्रमें १८४१ ई० मे मारा गया।
वेनेवितिनोफ (कवि)—२२ वर्षकी उम्रमें मारा गया।
कोल्त्सोफ (कवि)—३३ वर्षकी उम्रमें अपने परिवार द्वारा मारा गया।
बेलिन्स्की—३५ वर्षकी उम्रमे १८४८ ई०में भूख और गरीबीकी बलि चढा।

अलेक्सान्द्र पुश्किन (१७९९-१८३७ ई०)—पुश्किन रूसी साहित्यका कालिदास है। वह "प्रतिभाशाली रूसका सबसे बडा कवि और विश्व साहित्यका प्रतिभाशाली साहित्यकार रूमी यथार्थ-वादका सस्थापक, रूसी साहित्यिक भाषाका निर्माता, रूसी जनताका गर्व और कीर्ति" कहा जाता है। यद्यपि वह उच्चकुलमें पैदा हुआ था, किन्तु गोर्कीके अनुसार "उसके लिये कुलीन वर्गके हितसे ऊपर सारे राष्ट्रका हित था, और उसका व्यक्तिगत अनुभव कुलीनोंके अनुभवसे (कही) विस्तृत और गम्भीर था।" पुश्किन (अलेक्सान्द्र सरगेइ-पुत्र) १७९९ ई०में मास्कोमें एक सामंतवंशमें पैदा हुआ था, जिसकी आर्थिक अवस्था उतनी अच्छी नही थी। कुलीन वर्गके लिये स्थापित जार्स्कोयेसेलोके विशेष स्कूलमें वह भरती हुआ और १८१५ ई०में जब कि वह अभी सोलह वर्ष ही का था, उसने परतंत्रता और दासताके प्रति अपनी घृणा प्रकट की थी। १८१७ ई०में अठारह वर्षकी अवस्थामें उसने स्कूलकी पढाई समाप्त की। जिस वर्गमें पैदा हुआ था, उसके अत्याचारोंसे वह कितना क्षुब्ध था, यह उसकी निम्न पंक्तियोंसे मालूम होगा—

ओ दुष्कर्मी, स्वेच्छाचारी, सुन मेरी घृणाको
जो कि तेरे, राजदंड और तेरे सिंहासनके प्रति है।
तेरे बच्चोंकी मौत, तेरे अपने काले भाग्यको देख
मैं पत्थर जैसे कडे हृदयकी तरह हर्षित होता हूं।

अपने उग्र विचारोंके लिये रूसी साहित्यके कालिदासको पहले दक्षिण (काकेशस) में निर्वासित किया गया, फिर किशिनेफ और अदेस्सामें निर्वासित करके रखा गया। अदेस्सासे उसे अपने पिताकी जमींदारी मिखाइलोव्स्कयो गावमें भेज दिया गया और उसके बापको पुत्रपर निगाह रखनेके लिये हुक्म

दिया गया। यहींपर पुश्किनने अपना महान् काव्य 'एव्गेनी-ओनेगिन" लिखा, और "वोरिस गदुनोफ" दु खान्त नाटकको भी यही उसने रचा। कई सालोंतक जारने "वोरिस गदुनोफ" को निषिद्ध कर दिया था। पुश्किन दिसम्बरी क्रांतिकारियोंके साथ बडी सहानुभूति रखता था। दि म्बरियोंको फांसीपर चढानेके थोडे ही समय बाद जार निकोलाइ Iने पुश्किनको बुलाकर पूछा—"यदि तुम १४ दिसम्बरको पीतरवुर्गमें होते, तो क्या करते ?" पुश्किनने साफ जवाब दिया—"म भी विद्रोहियोंमें शामिल हुआ होता।" इसके वादसे जारने पुश्किनकी रचनाओंके सेंसर करनेका भार अपने ऊपर लिया। जहातक रूसी जाति का सबध था, पुश्किन निराशावादी नही था, लेकिन अपने लिये उसे प्राणोंका जरा भी मोह नही था। उसके ऊपर अत्याचार करनेवालामें जार निकोलाइ I वैसे बहुत अल्प-पठित था, लेकिन तब भी शायद वह महान् कविकी अमरताको जानता था, और इसीलिये वह उसके खूनसे अपने हाथको रगना नही चाहता था, लेकिन और तरहसे उसने और उसके दरवारियोंने पुश्किनके जीवनको दूभर कर दिया था। पुश्किन अडतीस वर्षका था, जब कि अपमान करनेका बदला लेनेके लिये उसने एक सरकारी अफसरको द्वद्वयुद्धके लिये ललकारा और घायल होकर १८३७ ई०म मरा। पुश्किनकी प्रतिभा सर्वतोमुखीन थी। उसके काव्य और नाटक उतने ही सम्मान और दिलचस्पीके साथ पढे जाते ह, जसे कालिदासके। उसके नाटक आज भी रगमचपर बहुत जनप्रिय ह। उसने कहानिया और लघुउपन्यास भी लिखे हैं, जिनमें भाषा और भावोंकी प्रौढता, व्यग, रसाप्लावन अद्वितीय हैं। उसके समयमें अभी फ्रासीसी भाषा और साहित्यको रूसी लोग उसी दास मनोवृत्तिसे अपनाये हुये थे, जसे हमारे देशके नौकरशाह लोग। "कप्तानकी कन्या" में पुश्किनने उनकी खूब खबर ली है। वह अपनी रूसी जातिका परम भक्त था, लेकिन उस जातिकी अपना जौहर पूरी तौरसे दिखानेमें जो वाधायें थी, उनको साफ-साफ कहनेसे वाज नहीं आता था। साथ ही वह वर्ण और देशके भेदोंको माननेवाला नही था। भारतसे गये सिगानों (रोमनियो) पर उसकी मधुर कविता इसका प्रमाण है।

मिखाइल, यूरी-पुत्र लेर्मन्तोफ (१८१४–४१ ई०) पुश्किनका तरुण समकालीन और महान कवि था, जिसने भी द्वद्व-युद्धमें सत्ताईस वर्षकी उमरमें अपने जीवनको समाप्त किया। अपनी प्रभावशाली कविता 'एक कविकी मृत्यु" मे पुश्किनकी प्रशसा और उसके हत्या करनेवाले वर्गकी घृणाको बडे कठोर शब्दोमे प्रकट करनेके लिये उसे कोकेशसमें निर्वासित कर दिया गया। पुश्किनके बाद रूसी कवियोमें लेर्मन्तोफका दर्जा है। निकोलाइ I ने उसकी मृत्युकी खबर सुन बहुत खुश होकर कहा—"कुत्ता, कुत्तेकी मौत मरा।"

निकोलाइके समयका दूसरा महान् अमर साहित्यकार निकोलाइ वासिली-पुत्र गोगल (१८०९-५२ ई०) है। उसके उपन्यास "इन्स्पेक्टर-जेनरल", "मृत आत्मायें" आदि विश्व-साहित्यके रत्न माने जाते हैं। "मृत आत्मायें" को पढ़कर हेजनके अनुसार सारा रूस काप उठा। गोगल महान् कलाकार है। उसकी जैसी सशक्त लेखनी बहुत कम देखनेमे आती हैं। यह महान् साहित्यकार भी तैंतालीस वर्षकी उमरमें मर गया।

इस समयके महान् कलाकारोंमें क० फ० ब्रूलोफ, अ० अ० इवानोफ अद्वितीय हैं। इवानोफने अपनी महान् कलाकृति "ईसाका लोगोंमें प्रकट होना" को अपने जीवनके तीस वर्ष लगाकर बनाया। यथार्थवादके साथ आदर्शवाद या अध्यात्मवादका कितना सुन्दर सम्मिश्रण हो सकता है, इसका यह सुन्दर नमूना हैं। इस चित्रको बनानेके लिये इवानोफने कई साल ईसाकी जन्मभूमि फिलस्तीनमें बिताये।

अभी तक रूसका सगीत लम्बी नाकवालों और गदे ग्रामीणोंकी कलाके रूपमें विभक्त था। उच्च वर्गके लोग पश्चिमी सगीतको सगीत मानते थे, और समझते थे, कि रूसकी भूमिने सगीतके लिये कोई देन नही छोडी है। इसी समय प्रतिभाशाली सगीतकार (उस्ताद) म० ई० ग्लिन्का (१८०९–५७ ई०) पैदा हुआ, जिसने पश्चिमी सगीतका पारगत आचार्य होते भी रूसी जनसगीतको अपनाया, और घोषित किया, कि हमारी राष्ट्रीय सगीत-कला किसीसे कम नही है। ग्लिन्का पहिले ही से प्रसिद्ध सगीतकार हो चुका था, इसलिये उसे तुच्छ नही कहा जा सकता था, लेकिन उसकी कलाको तुच्छ करनेके लिये सम्भ्रान्त वर्गने कोई कसर नहीं उठा रक्खी। उसे "गाड़ीवानोंके गीत" का रचनेवाला कहते थे।

ग्लिन्काने इसकी पर्वाह नही की। "इवान सुसानिन" जैसे देशके लिये मरनेवाले वीरको चुनकर उसने अपने ओपेरा (पद्यनाटक) को रचा, जिसने जल्दी ही लोगोंको अपनी तरफ खींच लिया। जिस तरह काव्य और साहित्यका पिता पुश्किन माना जाता है, वही स्थान सगीत और रगमचमें ग्लिन्काका है। मास्कोका वल्शोइ तियात्र (महानाट्यशाला) यद्यपि १७८० ई०में स्थापित हुआ था, जब उसे पेत्रोफका तियात्र कहते थे। १८०५ ई०में नाट्यशाला आगसे नष्ट हो गई, और बीस साल बाद (१८२५ ई०) मे उसे फिरसे बनाया गया। इसके बाद फिर एक बार आगसे नष्ट होनेपर १८५३ ई० में उसका पुनर्निर्माण हुआ, जब कि "इवान सुसानिन"के निर्माता ग्लिन्काके मरनेमे चार सालकी देर थी। १८२८ ई० हीमें मास्कोमें "माली तियात्र" (लघु नाट्यशाला) की स्थापना हुई, और बडी जल्दी ही उसकी ख्याति चारों ओर फैल गई। पुश्किन, लेमन्तोफ, गोगल, इवानोफ और ग्लिन्का जैसी प्रतिभाओंको पैदा करनेवाला १९ वी सदीका पूर्वार्ध रूसकी कला और साहित्यका सुवर्ण-युग था, इसमें सदेह नही।

१६ अलेक्सान्द्र I, निकोलाइ I-पुत्र (१८५५–८१ ई०)

अलेक्सान्द्र जब अभी युवराज ही था, तभी उसने किसानोंकी अर्धदासताको कायम रखकर अमीरोंके हितको अक्षुण्ण करनेकी प्रतिज्ञा की थी, लेकिन अब रूस १९वी सदीके मध्यको पार कर चुका था। औद्योगिक पूजीवाद बडे जोरसे अपने प्रभावको बढा रहा था, इसलिये सामन्तवादका अक्षुण्ण रहना सम्भव नही था। उसे मजबूर होकर किसानोकी अर्धदासताको खतम करते १८५६ ई० में कहना पडा—"भूमिके स्वामित्वकी वर्तमान प्रथा बिना बदले नही रह सकती। यह बेहतर है, कि किसानी अर्धदासताको नीचेसे अपने आप खतम होने देनेकी जगह ऊपर (सरकारी ओर) से खतम कर दिया जाय।" अलेक्सान्द्रने यद्यपि "१९ फर्वरीके (१८६१ ई०) कानून" द्वारा अर्धदासता प्रथाको खतम किया, लेकिन जमीदारोंके हितोंका पूरी तौरसे ध्यान रखने। किसानोंको पीढियोंसे अपने जोते खेतोंके लिये भारी रकम देनी पडी। किसानोको जो जमीन मिली थी, उसका मूल्य पैंसठ करोड रूबल होता था, लेकिन उसके लिये उनसे नब्बे करोड दिलानेका निश्चय किया गया। यह रकम सरकारने देना स्वीकार किया, जिसे वह उन्चास सालकी किस्तोंमें किसानोंसे ले लेनेवाली थी। १९०५ ई०तक इस मदमें किसानोंसे दो अरब रूबल लिये गये। १९ फर्वरी १८६१ ई०के भूमिसुधारके कानूनने बहुत महगे ढगसे एक करोड किसानोंको जमीदारोंकी दासतासे मुक्त किया। किसानी अर्धदासताका खतम करना रूसमें पूजीवादी व्यवस्थाके विजयकी घोषणा थी। लेकिन यह सुधार रूसके अधीन दूसरी जातिवाले प्रदेशोंमें नही स्वीकार किया गया। कलमकोंके प्रदेशमें पुरानी अर्धदासता प्रथा १८९२ ई० तक रही, और मध्य-एसियामें तो वह बोल्शेविक-क्रातिसे पहले खतम ही नही हुई।

इतनी बडी रकमकी क्षतिपूर्तिमें चुपचाप किसान कैसे दे सकते थे? इसके लिये किसानोंका सघर्ष होना ही था। किसानोंके पक्षको लेकर इसी समय एक खास आन्दोलन शुरू हो गया। चेर्नीशेव्स्कीने "सव्रेमेन्निक" (समकालीन)के नामसे एक पत्रिका निकाली, जो किसानोंके पक्षका बहुत जोरदार ढगसे समर्थन करती थी। रूसी सिपाही किसानोंमेंसे ही आते थे, इसीलिये चेर्नीशेव्स्कीके मित्र और सहकारी न० व० शेलगुनोफने "सिपाहियोंको" नामसे एक घोषणा लिखी थी। घोषणा छप नही पाई थी, कि उससे पहिले ही वह तृतीय विभाग (खुफिया विभाग) के हाथमे पड गई। लेकिन रूसी जनताको आगे बढ़नेसे रोका नही जा सका। १८६२ ई०के वसतमें "तरुण रूस"के नामसे एक घोषणा मास्कोके क्रातिकारी विद्यार्थी जाइच्नेव्स्कीने प्रकाशित कर हथियार लेकर उठ खडे हो शासक-वर्गको नष्ट करनेका आह्वान किया। चेर्नीशेव्स्की इस कालके जन-आन्दोलनका सबसे बडा नेता था। उसकी कलममें अद्भुत ताकत थी। जारशाहीने उसे पकडकर दो साल तक पीतरबुर्गके पीतर-पावल-दुर्गमें बद रक्खा, फिर चौदह वर्षके लिये साइबेरिया निर्वासन (कालापानी) का दड देनेसे पहले १९ मई १८६४ ई० को सार्वजनिक तौरपर उसे नागरिक मृत्युका दड दिया। फासी देनेवालोंने उसे पीतरबुर्गके मित्लिन्स्काया चौरस्ते पर ले जाकर फासीवाले आदमीकी तरह उसे घुटने टिकवाया, और उसकी गर्दनपर एक तलवार रक्खी। जिस समय फासीकी टिकटीपर इस रसमको अदा करनेके बाद उसे ले जाया जा रहा था, उसी समय भीडमेंसे एक लडकीने उस पर कुछ फूल फेंके, जिसके लिये उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

चेर्नीशेव्स्कीको नेर्चिन्स्कके जेलखानेमें रक्खा गया, जहां उसके दंडकालको आधा कर दिया गया, लेकिन कैदकी अवधि पूरा होनेके साथ ही अलेक्सान्द्र II ने उसे फिर सुदूर साइबेरियाके कस्बे विल्युइस्कमें बन्दी कर दिया। १८८३ ई०में वहांसे लाकर उसे अस्त्राखानमें रखा गया, और गिरफ्तारीके सत्ताइस बरस बाद १८८९ ई०में उसे अपने जन्मनगर सरातोफमें रहनेकी इजाजत मिली। अब वह साठ बरसका हो चुका था। जेलमें उसका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया था। अक्तूबर १८८९ ई०में सरातोफमें उसने अपने प्राण छोड़े। चेर्नीशेव्स्कीकी तपस्या व्यर्थ गई, इसे कौन कह सकता है? आज उसका सम्मान रूसके घर-घरमें है, और सारे सोवियत संघके स्कूली विद्यार्थी पढ़ते हैं—"न० ग० चेर्नीशेव्स्की महान् रूसी देशभक्त था, जिसने अपने सारे जीवनको अपने देश और जनताके लिये कुर्बान किया।" अभी चेर्नीशेव्स्की जब तरुण ही था, तभी उसने लिखा था—"अपने देशके अनन्त, और सनातन यशके लिये तथा मानवताकी भलाईके लिये काम करनेसे बढ़कर और कौन-सी बड़ी और सुंदर बात हो सकती है?"

चेर्नीशेव्स्की महान् जनतंत्रतावादी और महान् विद्वान् ही नहीं था, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञानका वह अदम्य प्रचारक था। उसके अर्थशास्त्र संबंधी ग्रंथोंके बारेमें मार्क्स और एंगेल्सने लिखा था—"वह वस्तुतः रूसके लिये सम्मानकी चीज है।"

तुर्की युद्ध (१८७७-७८ ई०)—क्रिमियाके युद्धमें हारकर रूसने युरोपमें अपने प्रभावको खो दिया था, इसे हम बतला चुके हैं, लेकिन रूसने अपने प्रभावको विशेषकर कालासागर और भूमध्य-सागर तटपर बढ़ानेकी कोशिश बराबर जारी रक्खी। अब रूसके हाथमें एक और हथियार आ गया था—बल्कानके लोग पिछली चार शताब्दियोंसे तुर्की-सुल्तानके स्वेच्छाचारी शासनके नीचे कराह रहे थे। उनमें जातीय स्वतंत्रता की लहर फैली हुई थी, और वह नहीं चाहते थे, कि एसियाई मुस्लिम सुल्तान उनकी जैसी युरोपीय जातियोंको अपना दास बनाकर रक्खे। इंगलैंड और फ्रांस रूसके विरुद्ध तुर्कीकी पीठ ठोंकना अपने हितके लिये आवश्यक समझते थे, इसलिये बल्कानकी जातियोंमें नवजागरणमें वह कैसे सहायक हो सकते थे? संयोगसे बल्कानकी यह अधिकांश जातियां रूसियोंकी भांति स्लाव थीं, इसलिये वह अपने स्लाव-भाइयोंकी ओर आशाभरी दृष्टिसे देखती थीं। रूस भी उनका समर्थन कर रहा था। १८७५ ई० में बोसनिया और हेर्जेगोविना (आधुनिक युगोस्लाविया) में लोगोंने सुल्तानके खिलाफ आन्दोलन शुरू कर दिया। अगले साल बुल्गारियोंने विद्रोह कर दिया। तुर्कीने बड़ी कठोरता-पूर्वक विद्रोहोंको दमन किया, कहीं-कहीं तो उसने गांवके गांव निर्जन बना दिये। तुर्की अपनी पुरानी संधिके कारण समझता था, कि रूस लड़ाईके मैदानमें नहीं कूदेगा, लेकिन रूसने सर्बिया (बोसेनिया), हेर्जेगोविनाके निवासियों और मोन्तेनिग्रोको तुर्कीके विरुद्ध युद्ध घोषित करनेके समय १८६७ ई०के ग्रीष्ममें सहायता देना शुरू किया। रूसमें सब जगह तुर्कीके खिलाफ आन्दोलन ही नहीं किया जाने लगा, बल्कि एक रूसी जेनरल चेर्न्यायेफ सर्बियन सेनाका संचालन करने लगा। रूसकी सहायता होनेपर भी अक्तूबर १८७६ ई०में सर्बियन सेनाकी हार हुई। मोन्तेनिग्रोके लोगोंने तब भी अपने संघर्षको अकेले जारी रक्खा। अंग्रेजोंकी शहके कारण तुर्कीके सुल्तानने स्लाव विद्रोहियोंके साथ किसी तरहका समझौता करनेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाने तटस्थताकी नीतिको स्वीकार किया था। अन्तमें १८७७ ई०के वसंतमें रूसने तुर्कीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। रूस अब भी क्रिमियाके युद्धके समयके हथियारों और सैनिक विज्ञानसे लड़ रहा था, जब कि जर्मन कल-कारखानोंसे नये तरहके हथियार तुर्की-को मिल रहे थे। तो भी अपनी बहादुरीके कारण १८७७ ई० के ग्रीष्ममें रूसी सेना दन्यूब पार करनेमें सफल हुई। मुकाबिला कठिन था, लेकिन जब रूसी सेनाका कान्स्तन्तिनोपलमें पहुंचना निश्चितसा मालूम होने लगा, तो अंग्रेज अपने नौसैनिक बेड़ेको मारमोरा समुद्रमें लाकर युद्ध घोषित करनेकी धमकी देने लगे। आस्ट्रिया और जर्मनीने भी रूसके खिलाफ रुख लिया। बल्कानमें युद्ध जारी रखते हुये रूसी सेनाने काकेशससे भी तुर्कीके खिलाफ लड़ाई जारी की थी, जहांपर तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर रूसियोंने अर्दहान और कर्सके किलोंको ले लिया। अन्तमें फर्वरी १८७८ ई०में सान्स्तेफानो (कान्स्तन्तिनोपलके नजदीक) की संधिके अनुसार लड़ाई बंद हुई, और दन्यूबका मुहाना रूसको मिला, बल्कानमें बुल्गारियाकी एक रियासत कायम की गई, तुर्कीको सर्बिया, मोन्तेनिग्रो और रुमानिया-

की स्वतंत्रता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। काकेशसमें अर्दहान, कर्स, बायजिद और बातूम के नगर रूसको मिले, साथ ही तुर्कोंने एकतीस करोड रूबल रूसको क्षतिपूर्ति देना स्वीकार किया। इस प्रकार रूसने अपने खोये हुये प्रभावको फिर सान्स्तेफानो-सधिके अनुसार प्राप्त किया। आस्ट्रिया और इगलैंड इस सधिको पसद नही करते थे, इसलिये १८७१ ई०मे बर्लिन-काग्रेसमें उन्होने रूसको जीती हुई जगहोंमेंसे कितनोको छोडनेके लिये मजबूर किया। बुलारियाके दक्षिणी भागको तुर्कोंके हाथमें लौटा देना पडा, और उत्तरी भागको भी सुल्तानके अधीन एक रियासतका रूप दिया गया।

राजनीतिक आन्दोलन—चेर्नीशेव्स्कीके किसान-आदोलनके बारेमे पहले बतलाया जा चुका है। रूसमें मार्क्सवादके आनेसे पहले जिस राजनीतिक आन्दोलनने गरीब जनताके भीतर काम किया था, वह नरोद्निक (जनवादी) आन्दोलन था, जो कि इसी समय शुरू हुआ था। यह दल किसान और मजदूर दोनोंमें काम करता था, लेकिन वह मजदूरोको उतना महत्त्व नही देता था। उसकी सबसे कमजोर बात यह थी, कि वह मार्क्सवादका विरोधी था। हमारे यहाके कितने ही वामपक्षियोकी तरह नरोद्निक जोर देकर कहते थे, कि (१) रूसके लिये पूजीवाद एक आकस्मिक घटना है, इसका यहा विकास नही होगा, इसलिये सवहारा यहा न बढ सकते न विकसित हो सकते है। (२) नरोद्निक मजूर-वर्गको क्रातिका सबसे अग्रणी वर्ग नही मानते थे। वह विश्वास करते थे, कि बिना सवहाराकी सहायतासे ही समाजवाद स्थापित हो सकता है। वह मानते थे, कि बुद्धिजीवियोके नेतृत्वमे किसान ही क्रातिकारी शक्ति है, और किसानोंका पचायती जीवन ही समाजवादका अकुर तथा नीव होगा। नरोद्निक नही मानते थे कि किसानोकी बिखरी शक्ति सेना और पुलिस द्वारा सुरक्षित और मजबूत शासन-यत्रको नही उखाड फेंक सकती। नरोद्निक तरुण-तरुणी बडी कुर्बानीके साथ गावमे किसान बनकर रहते अपने विचारोका प्रचार करते थे। उन्होने बहुत कोशिश की, कि किसानोको भडकाकर जमीदारोके खिलाफ खडा किया जाय, लेकिन वह उसमें सफल नही हुये। १८७४ ई० में बहुतसे नरोद्निक किसानो-में पहुचे थे, लेकिन १८७६ ई० तक वह भारी सख्यामे पकड लिये गये, और बचे हुओंने "जेम्ला इ-वोल्या" (भूमि और स्वतंत्रता) के नामसे एक गुप्त सगठन किया। इसके सस्थापक ग० व० प्लेखानोफ और उसके साथी थे। मार्क्सवादके विरुद्ध "जेम्ला-इ-वोल्या" सगठनने आगे चलकर बकुनिन (१८१४–७६ ई०) के अराजकतावादको अपनाया, जिसकी माग थी—सब तरहकी सरकारको तुरत बद कर दो। नरोद्निकोंने वैयक्तिक हत्यापर भी बहुत जोर दिया, और रूसी जनतापर जुल्मके पहाड ढानेवाले जारको उन्होने अपना लक्ष्य बनाया। लेकिन यह काम नरोद्निकोंके असफल होनेपर "नरोद्नया वोल्या" (जनता सकल्प) पार्टीने किया। वस्तुत जारके खूनी अत्याचारोने अब क्रातिकारियोंके दिलमें भय नही रहने दिया था। "नरोद्नया वोल्या" ने जार अलेक्सान्द्र II की हत्याके लिये कई बार प्रत्यन किये। फवरी १८८० ई०मे हेमन्त प्रासादमें स्तेपान खलतुरिन नामक एक मजदूर-क्रातिकारीने बम रक्खा, लेकिन उससे जारको कोई चोट नही पहुची, और अब वह ज्यादा सावधान रहने लगा। हेमन्त प्रासादको भी खतरेका स्थान समझकर वह वहा अधिक नही रहता था। अन्तमें १ मार्च १८८१ ई०को "नरोद्-नया वोल्या' के सदस्योने अलेक्सान्द्र II की हत्या करनेमें सफलता पाई, और इसी हत्यामें शामिल होनेके सदेहपर लेनिनके भाईको भी फासीपर चढना पडा।

मध्य-एसियामें प्रसार—निकोलाइ I के समयमें किस तरह अराल समुद्रसे अल्ताई तकके प्रदेशको रूस साम्राज्यमें मिला लिया गया, इसे हम बतला चुके है। खीवाके खानने जारको अपना प्रभु मान लिया था, लेकिन खोकन्द और बुखारा अभी जारशाही जूयेके नीचे नही आये थे। १८६५ ई०में जेनरल चेर्न्यायेफने खोकन्दके खानको हराया, और १८६५ ई०में ताशकन्द जैसे मध्य-एसियाके आर्थिक केंद्रको अपने हाथमें ले लिया। इसके बाद महाराज्यपाल काफमानने १८६८ ई०में बुखाराके विरुद्ध अभियान किया, और जारकी सेनाने अमीरको हराकर समरकन्दको ले लिया। इस पराजयके बाद अमीर-बुखारा अब जारका एक सामन्त भर रह गया। १८७३ ई०के बसतमें रूसी सेनाको फिर खीवा के खानके विरुद्ध जाना पडा, लेकिन खानने बिना लडाईके ही जारके अधीन होना स्वीकार कर लिया। अमीरो और खानोके ऐशोआराममें जारशाही उसी तरह कोई दखल नही देना चाहती थी, जसे भारतके राजा और नवाबोके मौज-मेलेमें अग्रेज बाधा नहीं डालते थे। लेकिन वहाकी जनता चुपचाप रूसियोंके

शासन और शोपणको वर्दाश्त करनेके लिये तैयार नही थी—रूसी मध्य-एसियाको कच्चे मालकी खान मानते थे। १८७५-७६ ई०मे खोकन्दके मुल्लोने रूसके विरुद्ध जहाद घोषित की, जिसे क्रूरतापूर्वक दवा देनेमे रूसियोको देर नही लगी, और साथ ही उन्होने खोकन्दके खानको खतम करके फर्गानाके नामसे उसे रूसका एक प्रदेश बना दिया। अलेक्सान्द्र II के शासनके अन्तिम कालमे तुर्कमानोंपर भी रूसने अपना हाथ फैलाना शुरू किया। १८८० ई०मे जेनरल स्कोवेलेफने तेक्के तुर्कमानोंको अपने अधीन किया, और अगले साल उसने ग्योक्तेपेपर अधिकार करके अश्काबादको ले लिया। १८८४ ई० मे अलेक्सान्द्र III के शासनकालमें मेर्वको भी लेकर सारे तुर्कमानोंमे रूसियोंका शासन स्थापित हो गया, और १८८५ ई०में अफगानिस्तानके किले कुश्कको लेकर रूसने मध्य-एसियाके अपने सीमातको पूरा कर दिया। इस विजयके वाद अव मध्य-एसियामें रूसी डाक्टर, शिक्षक, विज्ञानवेत्ता और वडी सख्यामें मजदूर भी जाने लगे, जिनका प्रभाव मध्य-एसियाके लोगोपर पडने लगा।

साइबेरिया और चीन—आमूर-उपत्यकामे किस तरह मुरावेफने रूसी सीमाका विस्तार अपने प्रथम अभियान द्वारा किया, इसे हम वतला चुके है। निकोलाइ I मर चुका था, लेकिन मुरावेफने अगले जारके शासनकालमे भी अपने कामको जारी रक्खा। पहले अभियानसे भी वडे पैमानेपर अगस्त १८५६ ई०में एक दूसरा अभियान आमूर नदीके साथ-साथ नीचेकी ओर भेजा गया, जिसमें स्त्री-पुरुष सव मिलाकर आठ हजार आदमी थे। अभियानको तीन भागों में विभक्त करके अलग-अलग स्थानासे प्रयाण करने का प्रवध किया गया था। चीनी समझने लगे कि अव रूसी निम्न आमूरको सदाके लिये अपने हाथमे कर लेना चाहते है, इसलिये उन्होने ऐगुनमे आनेपर विरोध प्रकट किया। ९ सितम्बर को मरुस्कमे एक सम्मेलन किया गया। मुरावेफ वीमार होनेसे शामिल नहीं हो सका, और उसने अद्मिरल ज्वोइकोको अपने स्थानपर भेजा। रूसियोंका इसी वातपर वरावर जोर था, कि युरोपीय शत्रुओंसे प्रतिरक्षा करनेके लिये हमें आमूरके मुहानेकी आवश्यकता है, जिन स्थानोंको हमने लिया है, अव वह रूसकी सम्पत्ति है, और आमूरके वाये तटपर हमे रूसी वस्तिया वसानी है, जिसमें नदीका रास्ता सुरक्षित रहे। रूसी विदेश-विभागने चीनसे वातचीत करनेमे कुछ नरमीसे काम लेना चाहा था, यह वात मुरावेफको पसद नही आई, और उसने स्वय पीतरवुर्ग जाकर चीनके साथ नये सधिके वारेमें वातचीत करनेके लिये अपनेको राजप्रतिनिधि नियुक्त करवाया। मई १८६५ ई० के मध्यमें कोर्साकोफके नेतृत्वमे तीसरा अभियान रवाना हुआ। रूसी जहाजोंके आमूरमें आने-जानेपर चीनी कोई रुकावट डालना नही चाहते थे, लेकिन आमूरके वायें तटपर रूसी वस्तियोंका वसाना वह पसद नही करते थे। उन्हे यह देखकर भी वहुत वुरा लगा, कि चीन-अधिकृत नगर ऐगुनके सामने दूसरे तटपर जेया नदीके सगमपर पाच सौ रूसी डेरा डाले पडे हैं। तीसरे अभियानने भी विना किसी रुकावटके अपनी यात्रा समाप्त की।

१८५७ ई० मे नये अधिकार प्राप्त कर मुरावेफ फिर साइवेरिया लौट एक और वडे अभियानकी तैयारी करने लगा। अवकी वार वह चाहता था, कि जगह-जगहपर रूसी वस्तिया वसा दी जाय, इसलिये वह अपने साथ अधिकसे अधिक प्रवासियोंको ले आया था। आदमियोंकी कमीको पूरा करनेके लिये उसने जेलोंमे एक हजार कैदियोंको मुक्त कर दिया, और वह नई वस्तियामें जाकर खेती करनेके लिये तैयार कर दिये गये। उनमेंसे जिनके पास वीविया थी, उन्हें उन्होने अपने साथ ले लिया। जिनके पास वीविया नही थी, उन्हे मुरावेफने शादी कर लेनेके लिये कहा। एक प्रसिद्ध क्रातिकारी प्रत्यक्षदर्शी राजुल क्रोपत्किन ने इसके वारेमें अपने सस्मरणोंमें लिखा है—"मुरावेफने कठोर कैदमें पडी सभी कैदी स्त्रियोंको—जिनकी सख्या करीव एक सौ थी—मुक्त करके पुरुष चुननेके लिये कहा। समय वीता जा रहा था, और नदीका पानी कम हो रहा था, वेडेको जल्दी प्रस्थान करना था, इसलिये मुरावेफने उन्हें जोडे-जोडे तटपर खडा होनेके लिये कहा, और फिर यह कहते हुये आशीर्वाद दिया—"वच्चो, मैं तुम्हारा व्याह कराता हूँ, एक दूसरेके साथ मेहरवानीसे वर्ताव करना। पुरुषो, तुम अपनी वीवियोंसे वुरा वर्ताव नही करना। जाओ आनन्दसे रहो।"

फ्रास और इगलैड इस समय रूसके मुख्य प्रतिद्वद्वी थे। वह पेचिङ (पेकिङ) मे रूसके खिलाफ अपनी कारवाई निरावाध रूपसे करते जा रहे थे, इसलिये रूसका वहा अपने राजदूतको रखनेकी

अवश्यकता थी। जारने अद्‌मिरल पुतियातिनको चीन दरबारमें अपना दूत बनाकर भेजा। अंग्रेजोंकी तरह रूसियोंकी भी धारणा थी, कि पूर्वी लोग तड़क-भड़क से अधिक प्रभावित किये जा सकते हैं। मुरावेफने चीनियों पर प्रभाव डालनेके लिये रूसी राजदूतके आनेपर बयाखतामें भारी स्वागतकी तैयारी की, नगरमें दीपमाला जलाई गई, रूसी सेनाने कवायद-परेड की। लेकिन चीनियोंपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पेकिङसे हुकम आनेका बहाना करके चीनियोंने राजदूतको आगे बढ़नेसे रोके रक्खा। पुतियातिनने इसपर आमूर द्वारा ऐगुन पहुंच और वहांसे पेकिङ जानेकी इजाजत मांगी, लेकिन वहां भी चीनियोंने रास्ता नहीं दिया। पुतियातिन जबर्दस्ती जाना चाहता था, लेकिन मास्कोकी आज्ञा बिना ऐसा करना मुरावेफको पसंद नहीं था। इसपर पुतियातिनने समुद्रके रास्ते पेकिङ जानेका निश्चय किया। आमूरके द्वारा २४ जुलाई १८५७ ई० को वह उसके मुहानेपर पेइ-होमें पहुंचा। वहां भी पेकिङ जानेके लिये चीनी अधिकारियोंसे बहुत माथापच्ची की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वहांसे फिर वह शांघाई पहुंचा, और ब्रिटिश और फ्रेंच नौसेनासे मिलकर उन्हें पेइ-होके मुहानेपर घेरा डालनेका परामर्श दिया। चीन अभी फ्रांस और इंगलैंडको अपने विरुद्ध करके उनकी तोपोंकी मार खा चुका था, इसलिये वह रूसको भी अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहता था।

११ मई १८५७ को मुरावेफ अपने मामूली अभियानोंके दौरानमें ऐगुनमें ठहरा। वहां उसने चीनी सेनापति राजकुमार शानसे भेंट करके अपनी मांग रक्खी। चीनियोंने कुछ आनाकानी करनेके बाद उसे मंजूर किया। छ दिनके भीतर ही बातचीत खतम हो गई, और १६ मई १८५८ ई०को ऐगुन-संधिपर हस्ताक्षर भी हो गया। इस संधि द्वारा चीनने आमूरके वाम तटपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और उसुरीके संगम तक दक्षिण तट चीनका माना गया। उसुरीके संगमसे आगे समुद्र तककी भूमिकी सीमाका निर्णय आगेके लिये छोड़ रक्खा गया। दोनोंने नदी द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार और यात्रा करनेके अधिकारको भी मंजूर किया। मुरावेफने कृपा दिखलाते हुये यह मंजूर किया, कि रूसी तटके ऊपर जेयाके पासमें रहनेवाले मंचू चीनकी प्रजा रहेंगे। इस बड़ी सेवाके लिये जार अलेक्सान्द्र II ने मुरावेफको "काउन्ट (ग्राफ) आमूर्स्की" की उपाधि प्रदान की। मुरावेफने रास्ता साफ कर दिया, इसलिये पुतियातिनको जून १८५८ ई०में तियान्त्सिनकी शांति-मित्रता-व्यापार नौचालन-संधि करनेमें कोई रुकावट नहीं हुई। लेकिन पुतियातिनको ऐगुन-संधिका पता नहीं था। तियान्त्सिनकी संधिने चीनके खुले बन्दरगाहोंमें रूसको व्यापार करनेकी इजाजत दी, और दूसरे राज्योंने जहां अपने वाणिज्य-दूत स्थापित किये हैं, वहां रूसियोंको भी वैसा करनेकी स्वीकृति दे दी। यदि कोई रूसी आदमी चीनमें रहते कोई अपराध करे, तो उसे सबसे समीपवाले रूसी वाणिज्य-दूतके पास या सीमांतके बाहर भेजनेकी बात मानी गई। इस संधिने रूसी ईसाई-मिशनरियों और उनके चीनी अनुयायियोंके लिये भी रक्षाका विशेष अधिकार प्रदान किया। संधिपत्र रूसी, मंचूरी और चीनी तीन भाषाओंमें लिखा गया था और माना गया था, कि यदि किसी वाक्यके बारेमें विवाद हो, तो मंचूरी भाषाका अभिलेख सर्वोपरि प्रमाण माना जायगा।

चीनको नोचनेके लिये इस समय पश्चिमी युरोपके राज्य गिद्धकी तरह चिमटे हुये थे, वह हर तरहसे उसे दबाना चाहते थे। २६ जून १८६० ई०में एक बहाना करके उन्होंने अपनी सेनायें भेज दी, जो लड़ती हुई पेकिङतक पहुंच गई और वहांके कला और सौंदर्यके सुन्दर संग्रहालय युवान-मिङ-युवानके प्रासादको लूट लिया। मालूम हो रहा था, पश्चिमी शक्तियां चीनसे मंचू-वंशको खतम करके छोड़ेंगी, लेकिन निरंकुश राजतंत्रको कायम रखना जारशाहीने अपना कर्त्तव्य मान लिया था। इसी समय रूसी दूत इग्नतियेफ मंचू-वंशका संरक्षक बनकर पेकिङ पहुंचा, जिसने पश्चिमी राज्यों और मंचू-वंशके बीचमें संधि करा दी। इग्नतियेफने पश्चिमी सेनाओंके पेकिङ जानेसे पहले ही फ्रेंच दूतसे तियान्त्सिनमें सुन लिया था, कि पश्चिमी शक्तियां पेकिङमें बराबरके लिये अपनी सेना नहीं रखना चाहतीं। उसने चीनके महामंत्री कुङकोसे यह बात छिपाकर बतलाया, कि मैं कोशिश करूंगा, कि अंग्रेज और फ्रेंच सेनायें पेकिङ छोड़कर चली जायें, लेकिन शर्त यह है, कि चीन ऐगुन-संधिको स्वीकार करे, और उसुरी-संगमसे समुद्र तकके भागको रूसको दे दे। पेकिङको शत्रु-सेनाओंसे मुक्त कराने-के लिये चीन सब कुछ करनेको तैयार था। २४ अक्तूबरको इंगलैंडके साथ और २५ को फ्रांसके

साथ सधि करानेमे इग्नतियेफने तत्परता दिखलाई। ५ नवम्बरको पश्चिमी सेनायें पेक्डि छोडकर चली गई। अब अपने इनामके रूपमें इग्नतियेफने १४ नवम्बरको हस्ताक्षरित होनेवाली चीन-रूस सधिको करवाया, जिसके द्वारा प्रशान्त महासागरके तट तकका एक बहुत भारी भूभाग चीनके हाथसे निकल आया।

येमक और खबारोफके साइबेरियामें उठाये हुये कामको इस प्रकार मुरावेफने पूरा किया। यही तीनो साइबेरियाके लिये जारशाही क्लाइव, हेस्टिंग्स और वेलजली थे।

१७ अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र (१८८१–९४ ई०)

बापकी हत्याके बाद अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा। उसके समयमें घोर अत्याचारके मारे लोग कराहने लगे। अलेक्सान्द्रको हर वक्त मौतका डर लगा रहता था, इसलिये वह पीतरबुग छोडकर गा्चिनामें रहता, जिससे उसके समसामयिक उसे "गा्चिनाका बदी" कहा करते थे। शिक्षित लोग सबसे अधिक जारके निरकुश शासनके प्रति घृणा रखते थे, इसलिये सावजनिक शिक्षाका वह सबसे बडा विरोधी था। तोबोलके राज्यपालने जब उसे सूचित किया, कि साइबेरियामें बहुत कम शिक्षित लोग है, तो उसने जवाबमे कहा—"इसके लिये हमें भगवान्को धन्यवाद देना चाहिये।" उसका कहना था—"गाडीवानों, कोचवानो, नौकरो, धोबियों, छोटे दूकानदारों आदिके बच्चोको सिवाय विशेष प्रतिभाकी अवस्थाके उस स्थितिसे ऊचे उठनेके लिये प्रोत्साहित नही करना चाहिये, जिस स्थितिमें कि वह पैदा हुये।" अभी तक रूसी विश्वविद्यालयोको अपने कुलपति (रेक्तर) और प्रोफेसर निर्वाचित करनेका अधिकार था, लेकिन १८८४ ई०में नया कानून बनाकर जारने उनसे यह अधिकार छीन लिया। अच्छे-अच्छे प्रोफेसर निकाल दिये गये, और स्त्रियोंके लिये उच्च-शिक्षा एक तरहसे वर्जित कर दी गई।

रूस-भिन्न जातियोका शोषण और कठोर शासन और बढता गया। अलेक्सान्द्र III ने यहूदियोंको भूमि खरीदने और गावमें बसनेका निषेध कर दिया। १८८७ ई०में माध्यमिक और उच्च शिक्षण सस्थाओंमें यहूदी विद्यार्थियोंके लिये उसने सख्या निश्चित कर दी। उदमूर्त जैसी कितनी ही जातियोंको ईसाई बनानेके लिये मिशनरियोको प्रोत्साहन दिया गया। जो उदमूत अपने बाप-दादोंके धमको छोडना नही चाहते थे, उन्हें देवताओंके सामने नर-बलि करनेका अपराध लगाकर कठोर दड दिया जाता था।

जारशाहीका ध्यान अब मध्य-एसियाकी ओर विशेष तौरसे गया था। वहासे कपासकी गाठें रूसके कारखानोंमें भेजी जाती थी। पहले वह ऊटोंपर लदकर आती थी, अब उसके लिये रेलके बनानेकी अवश्यक्ता पडी। १८८० ई०के बाद समरकन्दको रेलद्वारा कास्पियन-तटसे मिला दिया गया। कास्पियनके दूसरे तटपर रूससे मिलानेवाली रेल इससे पहले ही तैयार हो गई थी। लेकिन रूस जिस तरह मध्य-एसियामे बढ रहा था, उसे अग्रेज नही पसद करते थे। रूस अब अफगानिस्तानका पडोसी था। हमे मालूम है, कि अग्रेज सरकार रूसका ही डर बतलाकर भारतके वार्षिक बजटका बहुत भारी भाग पश्चिमोत्तर सीमातकी सैनिक तैयारीपर खर्च करती थी। १८८५-८६ ई० मे निश्चित मालूम हो रहा था, कि रूस और इगलैंडमें लडाई छिड जायेगी, लेकिन १८८७ ई०मे रूस और ईरानकी सीमा, और १८९५ ई० में रूस और अफगानिस्तानकी सीमाको ठीक कर देनेसे युद्धकी सम्भावना कम हो गई।

जिस वक्त इगलैंडके साथ रूसके सबध बिगड रहे थे, उसी समय फ्रासके साथ उसके सबध अच्छे हो रहे थे, जिसके कारण फ्रासीसी पूजी बहुत भारी परिमाणमें रूसमें लग रही थी, और फ्रासीसी सरकारने जारशाहीकी बात मानकर रूसी क्रातिकारियोंके ऊपर अपने यहा देख-रेख रखनेका वचन दिया। जर्मनी बिस्मार्कके नेतृत्वमें बहुत एकताबद्ध और शक्तिशाली हो चुकी थी। १८७० ई०में एक बार विजयिनी जर्मन सेना पेरिसमें पहुच चुकी थी, इसलिये फ्रास रूसके साथ घनिष्टता स्थापित करना चाहता था। १८९१-९३ ई० मे फ्रास और रूसके बीच कई सधियां हुई, और जर्मनीके आक्रमण करनेपर आठ लाख सेना भेजनेका रूसने वचन दिया था।

प्रथम मजदूर आन्दोलन—यद्यपि बकुनिन-जैसे बुद्धिजीवी क्रांतिकारी मार्क्सकी अपेक्षा स्वाप्निक (उटोपियन) समाजवादकी तरफ अधिक आकृष्ट हुये थे, लेकिन रूसके मजदूरोंमें मार्क्सके विचार पहले ही पहुंच चुके थे, जैसा कि मार्च १८७० ई०में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय (इन्टर्नेशनल) महापरिषद्में प्रवासी रूसी क्रांतिकारियोंके कार्ल मार्क्सको रूसका प्रतिनिधि बनानेमें मालूम होता है। मार्क्सने उनकी बातको स्वीकार करते हुये जवाबमें लिखा था—"रूसमें जारशाहीका विनाश सिर्फ रूसी जनताके लिये ही आवश्यक नहीं है, बल्कि युरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति भी उसीपर निर्भर करती है।" हम देख चुके है, कि युरोपकी जन-क्रांतियोंको दबानेके लिये रूसी जार हमेशा खुलकर अपनी सेना और पैसा देनेके लिये तैयार थे। १८७१ई०में फ्रांसपर जर्मनीके विजय होनेके बाद पेरिसके कमकरोंने "पेरिस कमून"के नामसे विश्वमें प्रथम कम्युनिस्ट सरकार कायम की, रूसी कमकरोंने उसके साथ अपनी सम्मति और सहानुभूति दिखलाई। १८७८ ई०में पेरिस कमूनके वार्षिकोत्सवके समय अदेसाके मजदूरोंने अपनी सद्भावनाके सदेश भेजे। १८७० ई०के बाद नरोद्निकोंके कार्यक्रमके असफल होनेपर क्रांतिका स्रोत वहीं सूख नहीं गया, बल्कि अब मजदूरोंने क्रांतिके झंडेको अपने हाथमें लिया। मई १८७० ई० में पीतरबुर्गकी नेवा कपडा मिलमें मजदूरोंकी पहिली सबसे बडी हडताल हुई, जिसको तोडने और मजदूरोंको दबानेमें जारशाहीको काफी दिक्कत उठानी पडी। यह पेरिस-कमूनकी स्थापनाके एक साल पहिलेकी घटना है। १८७५ ई० में उक्रइनमें कारखानेके डेढ हजार मजदूरोंने हडताल की। १८७७ ई०में अदेसाके रेलवे मजदूरोंने साढे तीन सप्ताह तक अपनी हडतालको चलाया। मजदूरोंकी माग थी—जुरमानोंका कम करना, बच्चोंसे कम घंटे काम लेना। इस तरह हम देखते है, कि १८७० ई० के बाद रूसके मजदूरोंमें सामूहिक वर्गचेतना प्रारम्भ हो गई थी। सबसे पहला मजदूर वासिली गेरासिमोफ था, जिसे सिपाहियों और मजदूरोंमें क्रांतिकारी प्रचारके अपराधमें नौ वर्षकी सजा हुई, और वह साइबेरिया (याकुतस्क) में १८९२ ई०में मरा। उस समयका दूसरा मजदूर क्रांतिकारी प्योत्र अलेक्सियेफ था। वह स्मोलेन्स्कके एक किसान घरमें पैदा हुआ था, पीछे नरोद्निक दलका सदस्य बना। प्योत्र अपनी शिक्षा और अनुभवसे समझ गया, कि नरोद्निक कार्यक्रमसे सफल क्रांति नहीं हो सकती, इसलिये वह समाजवादी बन कारखानोंके मजदूरोंमें प्रचार करता रहा। मास्कोके मजदूर उसे बहुत प्यार करते थे, और अपने असाधारण स्नेहको दिखलानेके लिये उसे पितुस्का कहकर पुकारते थे। प्योत्रको साइबेरिया (याकुतिया) में दस सालकी कालेपानीकी सजा हुई। १० मार्च १८७७ ई०में अदालतमें भाषण देते हुये उसने कहा था—"मजबूत नसोंवाले लाखो मजदूरोंके हाथ उठेंगे, और सैनिकोंकी सगीनोंसे सरक्षित स्वेच्छाचारिताका जूआ चूर्ण-विचूर्ण हो जायेगा।" लेनिनने इसे "रूसी मजदूर क्रांतिकारीकी महान् भविष्यद्वाणी" कहा था। प्योत्र १९८१ ई०में साइबेरियामें डाकुओंके हाथों मारा गया।

प्रथम क्रांतिकारी मजदूर सगठन १८७५ ई०में अदेस्सामें "दक्षिणी रूसी मजदूर सघ" के नामसे युगेनी जास्लाव्स्की द्वारा स्थापित हुआ। इस सघने मार्क्सके प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंको अपनाया था। इस सघके डेढ-दो-सौ धातु-कमकर सदस्य बने थे। इसकी कई शाखायें खुली, और करीब साल भर तक जीवित रहकर जारशाही अत्याचारोंने इसे छिन्न-भिन्न कर दिया। जास्लाव्स्कीको दस सालकी सजा दी गई, और वह थोडे दिनों बाद जेल हीमें मर गया।

दक्षिणके मजदूरोंके सगठनको देखकर पुलिसके हाथों वहासे भागकर एक मिस्त्री (फिटर) विक्तर अवनोर्स्की उत्तरकी ओर आया, और उसने उस समयके एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्तेपान खलतुरिनके साथ मिलकर १८७८ ई०में पीतरबुर्गमें "रूसी मजदूरोंका उत्तरी सघ" स्थापित किया। इस सघने हडतालोंके सचालनका काम भी अपने हाथमें लिया। वह अपना गुप्त प्रेस खोलकर मजदूर क्रांतिकारी पत्रिका "रबोचया जार्या" (कमकरोंकी उषा) का प्रथम अंक निकालने जा रहा था, इसी समय पुलिसने आकर प्रेसको छीन लिया, और पत्रिका निकल नही सकी। १८८० ई०में पुलिसने उत्तरी सघको छिन्न-भिन्न कर दिया। विक्तर अवनोर्स्कीको दस सालकी सजा हुई, स्तेपान खलतुरिन इधरसे निराश होकर नरोद्निकोंके आतंकवादमें भाग लेने लगा, और १८८२ ई०में अलेक्सान्द्र II को मारनेके प्रयत्न करनेमें उसे फासीपर चढ़ा दिया गया।

शिक्षा और संस्कृति—जार शिक्षा और विज्ञानके प्रचारसे कितने डरते थे, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। लेकिन सरकारके सैनिक और असैनिक विशाल यंत्र को चलानेके लिये शिक्षितोंकी अवश्यकता थी, पर वह उसका कमसे कम प्रचार चाहते थे। लेकिन कालबली के सामने जारोंकी क्या चलती ? अब पूँजीवादी युग आरम्भ हो चुका था, जिसके लिये शिक्षाके अधिक व्यापक रूपमें फैलानेकी अवश्यकता थी। किसानोंकी अर्धदासताके उच्छेदके बाद गाँवोंमें भी शिक्षाकी माग हुई, और ऐसे ही ग्राम-स्कूलोंके संगठनमें विशेष भाग लेनेवाला लेनिनका पिता इलिया निकोलाइ पुत्र उलियानोफ (१८३१-८६ ई०) था, जिसने सिंबिर्स्ककी गुर्वनिया (प्रदेश) में बहुत काम किया। अब १८६० ई०के बाद लडकियोंके भी स्कूल कायम होने लगे, और पीतरबुर्गमें एक महिला विद्यालय और मेडिकल स्कूल (१८७० ई० के बाद ही) खोला गया।

रूसी सामन्तशाहीकी तरफसे यद्यपि विज्ञान-प्रचारके लिये वैसा कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता था, जैसा कि पश्चिमी युरोपमें देखा जाता था, लेकिन रूसी जातिके पास प्रतिभा मौजूद थी, इसलिये वह ऊपर आनेके लिये प्रयत्न किये विना नहीं रह सकती थी। विश्वविख्यात रसायनशास्त्रवेत्ता दिमित्रि इवान-पुत्र मेन्देलेयेफ (१८३४–१९०७ ई०) इसी समय अपनी खोजों द्वारा दुनियाकी विद्वन्मंडलीको चकित कर रहा था। उसकी बनाई "रासायनिक तत्वोंकी युगक्रमिक पद्धति" को सारे ससारने स्वीकार किया। लेकिन अलेक्सान्द्र III ने इस विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ताको उसके स्वतंत्र विचारोंके लिये पीतरबुर्ग विश्वविद्यालयसे निकाल दिया। इस कालके दूसरे विज्ञानवेत्ता शरीरशास्त्री इवान मिखाइल-पुत्र सेचेनोफ और वनस्पतिशास्त्रवेत्ता क० अ० तिमिरियाजोफ (१८४३–१९२० ई०) थे। तिमिरियाजोफकी खोजोंका सम्मान सारी दुनियाने उसके जीवनमें ही किया। लेकिन यह दोनों विज्ञानवेत्ता जारके कोपभाजन हुये। तिमिरियाजोफका यह सौभाग्य था, कि उसने बोल्शेविक क्रातिको अपनी आखोंके सामने सफल होते देखा, और कम्युनिस्ट सरकार और रूसी जनताके महान् सम्मानको प्राप्त किया।

साहित्य—इस कालके प्रगतिशील पत्रकारों और समालोचकोंमें दिमित्रि इवान पुत्र पिसारोफ (१८४०–६८ ई०)का विशेष स्थान है। यह २८ ही वर्षकी उमरमें मर गया, लेकिन इतने ही कालमें उसने स्वेच्छाचारी शासकोंके दिलको दहला दिया। उन्होंने उसे पीतर-पावल-दुर्ग (लेनिनग्राद) में १८६२–६६ ई० में बंद रक्खा। जेलमें रहते हुये भी पिसारोफकी कलम बंद नहीं हुई।

कवि नेक्रासोफ और समालोचक सल्तिकोफ-श्चेद्रिनके सम्पादकत्वमें "अतेचेस्तवेन्नीय जापिस्की" (मातृभूमिकी टिप्पणिया) एक प्रभावशाली जनतत्रवादी पत्रिका निकलती थी, जिसका बहुत प्रचार था, विशेषकर नरोद्निक क्रातिकारियोंमें। उसके बाद इस पत्रिकाका सम्पादक न० क० मिखाइलोव्स्की हुआ, जो क्रातिका पक्षपाती होते हुये भी अपने अवैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रतिगामी दार्शनिक विचारोंके कारण लेनिनकी कडी समालोचनाका पात्र हुआ।

अब रूसके साहित्यकारोंने गोगल और पुश्किनकी कलमको इतना आगे बढाया, कि प्रसिद्ध विचारक एगल्सको लिखना पडा—"रूसी भाषा कितनी सुंदर है, इसमें भयंकर भद्देपन को छोडकर जर्मन भाषाके सभी गुण मौजूद हैं।" इसी कालमें इवान सेर्गेइ-पुत्र तुर्गेनेफ (१८१८–८३ ई०) जैसा रूसका महान् लेखक पैदा हुआ। "एक शिकारीके पत्र" में उसने जमींदारोंके नीचे कराहते अर्धदास किसानोंके जीवनका चित्र खींचा था। "अमीरोंका घोसला", "रूदिन", "सध्याको", "पिता और पुत्र" उपन्यासोंमें उसने १८४० और १८६० ई०के आसपासके रूसके सामाजिक जीवनका स्पष्ट चित्र उपस्थित किया है। अपने "धुआ", "बंजर भूमि" में भी उसने उसी तरहसे अपनी लेखनीका चमत्कार दिखलाया है। तुर्गेनेफ किसानोंकी मुक्ति चाहता था, और अर्धदासताके उच्छेदको अवश्यम्भावी बनानेमें उसकी लेखनीने भी काम किया था। इसी समयका महान् साहित्यिक सूय फ०म० दोस्तोयेवेस्की (१८२१–८१ ई०) था, जिसका उपन्यास "गरीब लोग" १८४० ई०के बाद निकला और जल्दी ही प्रसिद्ध हो गया। उसके दूसरे कथाग्रथ "मृतक ग्रह के संस्मरण", "अपराध और दड", "मूर्ख", "करमाजोफ भाई" जैसी रूसी साहित्यकी अमर कृतिया इसी समय लिखी गईं। ल्येव न्येव तालस्त्वा (ताल्स्ताय १८२८-१९१० ई०) जैसी प्रतिभा इसी समय प्रकट हुई। उसके ग्रथ १८५० ई०

के बाद ही प्रकाशित होने लगे। अपने "युद्ध और शांति", "अन्ना करेनिना" जैसे ग्रंथोंमें रूसी जीवनका उसने अनुपम चित्र खींचा है। "युद्ध और शांति" में १८१२ ई०में रूसियोंके वीरतापूर्ण संघर्षका बड़ा सजीव वर्णन है।

चित्रकला, नाट्यकला और संगीतकलामें भी इस कालमें चित्रकार ई० न० क्राम्स्की (१८३७–८७ ई०), व० ग० पेरोफ (१८३३–८२ ई०), अद्भुत चित्रकार इलिया एफिम-पुत्र रेपिन (१८४४–१९३० ई०) हुये। संगीतकारोंमें म० अ० वलाकिरेफ (१८३६–१९१० ई०), व० व० स्तासोफ (१८२४–१९०६ ई०), अ० प० बोरोदिन (१८३३–८७ ई०) जैसे संगीतकार, और म० न० येर्मोलोवा, और ग० न० फेदोतोवा जैसी अभिनेत्रियां, और प० म० सदोव्स्की जैसे प्रतिभाशाली अभिनेता पैदा हुये।

मार्क्सवादका प्रचारारंभ—मार्क्सके महान् ग्रंथ "पूंजी" के प्रथम जिल्दका रूसी अनुवाद १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ। उस समय अभी मजदूरोंमें वर्गचेतनाका आरम्भ ही हुआ था। पहला मार्क्सवादी संगठन "मजदूरोंकी मुक्ति" (श्रमिकमुक्ति) की स्थापना जनेवा (स्वीजर्लैंड) में १८८३ ई० में प्लेखानोफने की, जिसमें कितने ही रूसी क्रांतिकारी शामिल हुये थे। जार्ज वलेन्तिन-पुत्र प्लेखानोफ (१८५६–१९१८ ई०) पहले नरोद्निक क्रांतिकारी था, पीछे प्रथम मार्क्सवादी महालेखक हुआ। जारशाही अत्याचारोंने उसे देशसे बाहर जानेके लिये मजबूर किया, जहां उसने मार्क्सके ग्रंथोंको पढ़कर उसके सिद्धांतोंको स्वीकार किया। १८८३ ई०में उसने "समाजवाद और राजनीतिक संघर्ष" पुस्तक प्रकाशित की। दो साल बाद "हमारे मतभेद" को प्रकाशित किया। प्लेखानोफने अपनी लेखनी द्वारा अच्छी तरह साफ कर दिया, कि नरोद्निकवादसे कुछ होने-जानेवाला नहीं है। रूसमें पूंजीवाद आकस्मिक घटना नहीं है। रूसके विकासके लिये पूंजीवादी मार्ग छोड़ दूसरा रास्ता नहीं है, और पूंजीवादके विकासके साथ-साथ क्रांतिकारी सर्वहारा वर्गको भी विकसित होनेसे रोका नहीं जा सकता। "मजदूर मुक्ति" संगठनने रूसमें समाजवादी विचारोंको फैलानेका काम किया। इसीने मार्क्स और एंगेल्सके "कम्युनिस्ट घोषणा", "श्रम-वेतन" और "पूंजी" आदि ग्रंथोंको प्रकाशित किया, जिनसे एक पीढ़ीके रूसी क्रांतिकारियोंको शिक्षा मिली। मजदूरोंमें भी अब इन विचारोंका प्रचार होने लगा। पूंजीवादके लिये समय-समयपर मालकी खपत कम हो जाने, मालकी उपज बढ़ जानेके कारण चीजोंका दाम घट जानेसे समय-समयपर आर्थिक संकटका आना स्वाभाविक है। आर्थिक संकटके समय पूंजीपति अपने कारखानोंको बंद करके लाखों मजदूरोंको बाटका भिखारी बना देते हैं। नफा उठानेके समय वह दोनों हाथोंसे लूटते हैं, लेकिन अब वह उनके लिये पैसा कमानेवाले मजदूरोंको भूखा मारनेसे बाज नहीं आते। पर मजदूर चुपचाप कैसे भूखे मरना बर्दाश्त कर सकते हैं? १८८० ई० के बाद जो आर्थिक संकट आया, उसमें और मिलोंकी तरह मोरोजोफ मिलने भी १८८२ ई० में अपने आठ हजार मजदूरोंका वेतन घटाना शुरू किया, और १८८४ ई० तक मिलमालिकोंने एकके बाद एक पांच बार मजूरी घटाई। इसके साथ-साथ मजदूरोंको जरा-जरा-सी बातपर जुरमाना करना अथवा उन्हें कामसे निकाल देना मामूली बात थी। इस समय मजदूरोंमें "उत्तरी संघ" द्वारा क्रांतिकारी विचारोंका प्रचार हो चला था। ७ जनवरी १८८५ ई०को सात बजे सवेरे ही पहले निश्चित संकेतके अनुसार चिल्लाकर कहा गया—"आज छुट्टी है, काम बंद करो, गैस रोक दो, स्त्रियो, बाहर चली जाओ।" उसी समय सारी मिल बंद हो गई। मजदूरोंने उत्तेजित किये जानेपर मिलकी कितनी ही चीजोंको तोड़-फोड़ दिया, मनेजरके मकानको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इसपर जारशाही पुलिस और सेनाने धावा बोल दिया। वह वोल्कोफ आदि बहुतसे हड़ताली मजदूरोंको पकड़कर सीधे जारके सामने ले गये। अलेक्सान्द्र III ने पूछा—"क्या मैं सबके लिये हूं, या तुम सब मेरे लिये हो?" मजदूरोंने जवाब दिया—"हरएक आदमी तुम्हारे लिये है।" लोगोंने कसाकोंसे वोल्कोफको छुड़ानेकी कोशिश की, बहुत भारी प्रदर्शन किया। इसके बाद मजदूरोंके संगठनको दबाने और उनकी हिम्मत तोड़नेके लिये जारने पूरी कोशिश की। इस समयके हड़ताली नेताओंमें एक मजदूर प० अ० मोइसेयंको भी था, जिसे जारशाही अदालतने छोड़ दिया था, लेकिन जार अलेक्सान्द्र III ने अपनी विशेष आज्ञासे उसे कालापानीका दंड दिया। मोइसेयंकोने १९१७ ई०को बोल्शेविक क्रांतिमें भाग लिया, गृहयुद्ध-कालमें लाल सैनिक

वनकर लडा, और १९२३ ई० मे मरा। १८९१ ई० मे पीतरबुर्गमे मार्क्सवादियोने मई दिवसके वहानेसे प्रथम गुप्त क्रान्तिकारी बैठक बुलाई। इसमे एक बुनकर मजदूर अफनासेयेफने उपस्थित मजदूरोंसे पुकारकर कहा—"साथियो, हम जरूर सीखेंगे, जरूर सगठित होंगे, और अपनेको एक मजबूत पार्टीके रूपमें सघवद्ध करेंगे।" लेनिनने पीतरबुर्गके मजदूरोंके इस पहले प्रयासके बारेमें लिखा था—"१८९१ ई०का साल शेलगुनोफकी श्मशानयात्राके प्रदर्शनमें पीतरबुर्गके मजदूरोंके भाग लेनेके लिये विशेष तौरसे उल्लेखनीय है, और वह पीतरबुर्गमें मई-दिवस मनानेके समय दिये गये राजनीतिक व्याख्यानोंके लिये भी विशेष तौरसे उल्लेखनीय है।" न० व० शेलगुनोफ सारे जीवनभर मजदूरों और गरीबोंकी स्वतत्रताके लिये काम करता रहा। मरनेके समय मजदूरोंने उसे अभिनन्दन-पत्र भेंट किया था।

अलेक्सान्द्र III के शासनकालमे पूजीवादी उद्योगका विस्तार बहुत हुआ, रेलोंका भी प्रसार बढा। लेकिन जारशाही कालमें रूसमे विदेशी पूजी सबसे अधिक लगी हुई थी, जिसमें भी फ्रेंच और बेल्जियन पूजीपतियोंका भाग अधिक था। किसानोंकी अर्धदासता खतम हो गई थी, लेकिन अब भी उनका शोषण कम नही हो रहा था।

१८ निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र (१८९४–१९१७ ई०)

रूसका यह अन्तिम जार बहुत कमजोर दिमागका, किंतु बडा ही घमडी और क्रूर था। प्रगतिशील विचारोंके प्रति घृणा उसने अपने बाप-दादोंके खूनमे पाई थी। १८९६ ई०मे सिंहासनारोहणके समय मास्कोमे एक महामेलेका प्रबध किया गया था, जिसमें लाखों आदमी आये, किंतु सरकारकी ओरसे व्यवस्थाका कोई प्रबध नही किया गया, जिससे हजारों नर नारी और बच्चे पैरोंके नीचे दबकर मर गये। उस घटनाके दूसरे दिन सवेरे निकोलाइ II अपनी स्त्री और विदेशी अतिथियोंके साथ घटना-स्थलपर आया। लाशोंको हटा लिया गया था और खूनके दागोंपर बालू डाला जा रहा था। इतनी बडी दुर्घटना हो जानेके बाद भी उस शामको निकोलाइ अपनी बीवी अलेक्सान्द्राके साथ मस्त होकर नाचता रहा, मानो कुछ हुआ ही नही। इसपर यदि रूसी जनता निकोलाइको "खूनी" की उपाधि दे, तो क्या आश्चर्य ?

मध्य-एसियापर रूसके पूजीवादी विस्तारका खास तौरसे बडा प्रभाव पड रहा था, क्योंकि रूसी कपडामिलोंके लिये कपास वहींसे आती थी। खोकन्दके राज्यको अब फरगाना-उपत्यकाके नामसे कपासकी उपजका केंद्र बना दिया गया था। धनी खेत-मालिक अपने असामियोंसे खेती करवाकर नफा उडाते थे, और साधारण जनता भूखों मरती थी। ऊपरसे १८९० ई०के करीब सरकारी कर तिगुना बढ गया था। इन अत्याचारोंको बर्दाश्त करते-करते लोग तग आ गये, और मई १८९० ई० में अन्दिजान नगरमे बलवा हो गया। इसके लिये ईशान (सत, मुल्ला) मुहम्मद अली जैसा एक प्रभावशाली धार्मिक नेता अगुवा बना था। फरगानासे बाहर भी भीतर ही भीतर आन्दोलन और सगठन किया गया था। हथियारोंका भी सग्रह हुआ था, जिसमें अग्रेजी बन्दूकोंको अफगान व्यापारियोंने विद्रोहियोंके पास पहुचाया था। १८ मई १८९८ ई० की रातको दो हजार हथियारबद उज्बेक और किर्गिज अन्दिजानकी छावनीपर चढ आये, और उन्होंने नगरपर अधिकार करना चाहा। "गजवा" (जहाद) की घोषणा पहिले हीसे हो गई थी, इसलिये मध्य-एसियाकी मुस्लिम जनता जारशाहीकी विरोधी तथा विद्रोहियोंकी पक्षपाती थी। लेकिन रूसकी सैनिक शक्तिके सामने ये थोडे-से लोग क्या कर सकते थे ? मुहम्मद अली और उसके उन्नीस साथी फासीपर चढा दिये गये, ३४८ उज्बेकोंको लम्बी-लम्बी सजायें हुई। जारशाही पुलिसने लोगोंपर गजब ढाया, तीन उज्बेक गावोंको उजाडकर वहा रूसियोंको लाकर बसा दिया, दूसरे गावोंपर भारी सामूहिक कर लगाये।

लेनिन—रूसकी इस राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमिमे ब्लादिमिर इलिया-पुत्र उलियानोफका जन्म २२(१०) अप्रैल १८७० ई०को सिम्बिर्स्क (उलियानोव्स्क) नगरमे एक स्कूल-शिक्षकके घरमें हुआ। ब्लादिमिर उलियानोफ लेनिनके नामसे सब समयके सिरमौर महान् पुरुष स्वीकृत किया गया है। इलिया उलियानोफ प्रगतिशील विचारोंका बुद्धिजीवी पुरुष था।

उसके सभी बच्चोंने क्रांतिमें भाग लिया। लेनिनके सबसे बड़े भाई अलेक्सान्द्रको जार अलेक्सान्द्र III को १८८७ ई०में मारनेके प्रयत्नका सगठन करनेके लिये फासीपर चढा दिया गया। अपने प्रिय भाईकी हत्याका प्रभाव लेनिनके ऊपर सदाके लिये पड़ना ही चाहिये था, किन्तु उसकी पैनी बुद्धिने बतला दिया, कि नरोद्‌निकोंका आतंकवाद सफल क्रांतिका रास्ता नही है। बिना साधारण जनताके सहयोग और सहानुभूतिके मुट्ठी भर "वीर" दुनियाको नही बदल सकते। "नही, हम उस पथको नही लेंगे, वह जानेका रास्ता नही है—" लेनिनने अपने १७ वर्षके भाई वोलोद्या उल्यानोफके फासी-पर चढनेकी खबर सुनकर कहा था। १७ वर्षकी उमरमें लेनिन कजानके विश्वविद्यालयमें दाखिल हुआ, लेकिन विद्यार्थियोंके राजनीतिक प्रदर्शनमे भाग लेनेके कारण उसे पकड़कर एक गावमें निर्वासित कर दिया गया। पकड़ते वक्त पुलिस अफसरने लेनिनसे कहा था—"जवान, तुम क्यों विद्रोह कर रहे हो ? देख नही रहे हो, तुम्हारे सामने एक दीवार खड़ी है ?" व्लादिमिरने जवाब दिया—"दीवार, हा वह खड़ी है, लेकिन सड़ी हुई दीवार है, जरा-सा धक्का दो और यह गिर पड़ेगी।" अभी वह व्लादिमिर उलियानोफ ही था, पीछे अपने अन्तर्धान जीवनमे उसे लेनिनका छद्म नाम स्वीकार करना पड़ा। विश्वविद्यालयकी शिक्षासे यद्यपि लेनिन उस समय वंचित हो गया, लेकिन उसने अपने अध्ययनको जारी रक्खा, और जब उसे फिर गाव लौट आनेका मौका मिला, तो उसने मार्क्स और एगेल्सके ग्रंथोंका बहुत गम्भीर अध्ययन किया। समारा जानेपर वहा उसने मार्क्सवादियोंका प्रथम अध्ययन-चक्र सगठित किया। १८९३ ई०की शरद्‌में वह पीतरबुर्ग गया, जहाके मार्क्सवादियोंने जल्दी ही उसे अपना नेता मान लिया। १८९४ ई०में लेनिनने कई व्याख्यान तैयार करके पढे, जो पीछे "जनताके मित्र कौन है और वह कैसे समाजवादी जनतान्त्रिकोंसे लड़ते है ?" के नामसे प्रकाशित हुये। इसे कहनेकी अवश्यकता नही, कि इसमें लेनिनने नरोद्‌निकोंकी खबर ली थी। इस आरम्भिक पुस्तकमें ही लेनिनने भविष्यद्‌वाणी की थी—"जनतान्त्रिक तत्त्वे का मुखिया बनकर विद्रोह करके रूसी मजदूर स्वेच्छाचारिताका अन्त करेंगे और विजयी कम्युनिस्ट रूसी सर्वहाराको क्रांतिके लिये खुले क्रांतिकारी सघर्ष के सरल पथपर ले जायेंगे।"

नरोद्‌निकोंसे सघर्ष करते हुये पीतरबुर्गके मार्क्सवादियोंने "मजदूर वर्गकी मुक्तिके लिये सघर्ष का सघ" के नामसे एक सगठन स्थापित किया था। लेनिन इस सघका जल्दी ही नेता हो गया, जिसने उस समय मार्क्सवादी क्रांतिकारी विचारोंके प्रचारके लिये बहुत काम किया और प्रचारक्षेत्रको बढ़ाया। उसके कार्यमें बाबुस्किन, शेल्गुनोफ और दूसरे कर्मी साथ दे रहे थे। १८९५ ई०की शरद्‌से पीतरबुर्गके "सघर्ष सघ"ने मजदूरोंको सगठित कर हड़तालोंका नेतृत्व करना शुरू किया। १८९६ ई० में राजधानीके तीस हजार जुलाहोंने जारके सिंहासनारोहणके महोत्सवके समय लेनिनद्वारा तैयार की हुई मागोंके लिये हड़ताल कर दी। मजदूरोंके दबावके कारण जारशाही सरकारको कामके घंटोंको कम करनेका वचन देना पड़ा। रूसके मजदूरोंको अब क्रांतिका क्रियात्मक पाठ मिलने लगा, वह अपनी शक्ति अनुभव करने लगे। इससे पहले ही दिसम्बर १८९५ ई०मे लेनिनको गिरफ्तार करके जेलमें बंद कर दिया गया था। लेकिन जेलकी दीवारें लेनिनके प्रभाव और नेतृत्वको रोक नही सकती थी। १८९७ ई०में सरकारने लेनिनको तीन वर्षका कालापानी देकर पूर्वी साइबेरियामें (१८९७ ई०से १९०० ई०तक) येनिसेई गुवर्निया (प्रदेश) के मिनुसिन्स्की उयेज्द (जिले) के शुशेन्स्कोये गाव में बद कर दिया। इसी समय १८९९ ई०में उसने अपने महान् ग्रंथ "रूसमें पूजीवादका विकास" को लिखकर समाप्त किया। जब लेनिन साइबेरियामें बद था, उसी समय मार्च १८९८ ई० में "रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी"की प्रथम कांग्रेस मिन्स्क नगरमे हुई, जिसमें "रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टी"की स्थापना घोषित की गई। सरकारने जल्दी ही पार्टीकी केंद्रीय समितिके लोगों और कार्यमे भाग लेनेवालोंको पकड़ लिया, तो भी वह क्रांतिकारी आन्दोलनको बंद नही कर सकी। मार्क्सवादी विचारोंकी मजदूरों पर गहरी छाप पड़ती जा रही थी, और वह रूसी साम्राज्यके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंमे भी फैलने लगे। २० वी सदीके अन्ततक काकेशसको भी इसकी हवा लगी, जहा किसानोंके विद्रोह अक्सर हुआ करते थे। इसी समय योसेफ विसारियोनोविच जुग-श्विली मार्क्सवादी क्रांतिके प्रभावमें आया, जो कि २१ (९) दिसम्बर १८७९ ई०में गुर्जीके एक

छोटे-से कस्बे गोरीके एक जूते बनानेवालेके घरमें पैदा हुआ था। तरुण योसेफ "होनहार विरवानके होत चीकने पात" के अनुसार संघर्षमें भाग लेनेके लिये छटपटाने लगा। स्वयं अशिक्षित होते हुये भी योसेफके माता-पिताने उसे शिक्षा देनेकी कोशिश की, और चाहा कि वह ईसाई-धर्मका पुरोहित बनकर सम्मानका जीवन बिताये। लेकिन ईसाई-धर्मकी पाठशालाके वातावरणमें भी मार्क्सवादने घुसकर उसे अनीश्वरवादी बना दिया। १८९८ ई०मे ही योसेफ तिफलिसके समाजवादी जनतान्त्रिक संगठनमें सम्मिलित हो गया था, और इसी समय उसे लेनिनकी प्रथम पुस्तक पढनेका अवसर मिला। योसेफ जुगेश्विलीने अपने क्रांतिकारी जीवनमे स्तालिनका छद्म नाम स्वीकार किया था, जो कि उसके गुरु की तरह ही उसका भी नाम बन गया।

संस्कृति, साहित्य और विज्ञान—१९ वी सदीके अन्त और २० वी सदीके आरम्भतक रूसी प्रतिभाका लोहा दुनियामे सर्वत्र माना जाने लगा, यद्यपि अंग्रेजोंके गुलाम भारतको रूस देशका तब तक पता नही लगा, जब तक कि १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रांतिकी खबर बिजलीकी तरह दुनियामें दौडने नही लगी। इसी कालमें इलिया मेचनिकोफ (१८४५–१९१६ ई०) जैसा महान् प्राणिशास्त्री, इवान पीतर-पुत्र पावलोफ (१८४९–१९३६ ई०) जैसा अद्वितीय शरीरमनोविज्ञानशास्त्री हुये। बिजलीके प्रथम आर्क-लैम्पका आविष्कारक प० य० याब्लोचकोफ (१८४७–९४ ई०) भी इसी समय हुआ, जिसके बिजलीके लैम्पकी कदर देशमें नही हुई, तो वह पेरिस चला गया, जहा १८७६ ई०में उसने अपने आविष्कारको पेटेंट कराया, और पेरिसमें पहलेपहल उसकी बिजली-बत्ती जलाई गई। बाहरके लोग अभी भी नही जानते, कि बिजली-बत्तीका आविष्कारक अमेरिकन नही, एक रूसी था। एडिसनने बिजली-बत्तीके आविष्कारक होनेका दावा किया, लेकिन उससे पहले एक दूसरे रूसी आविष्कारक लादिगिनने उस तरह की बिजली बत्ती तैयार कर दी थी, इसलिये अमेरिकन अदालतने एडिसनके दावेको मंजूर नही किया। हा, लादिगिनके आविष्कारकी कदर उसकी मातृभूमिमें नही हुई और उसका विकास अमेरिकनोंने किया। अलेक्सान्द्र स्तेपान पुत्र पापोफ (१८५९–१९०५ ई०) ने १८९५ ई०में बेतारके तारका आविष्कार किया। बेतारके तारको इतालियन मार्कोनिका आविष्कार बतलाया जाता है, लेकिन उससे पहले रूसी पापोफ और भारतीय जगदीशचन्द्र बोस उसका आविष्कार कर चुके थे। इन दोनो देशोंकी सरकारोंकी जडता और पक्षपातके कारण उन्हें आगे बढ़नेका मौका नही मिला। पापोफने १८९५ ई०में युद्धमंत्रीके पास अपने प्रयोगोंके लिये एक हजार रूबल अनुदान करनेके लिये प्रार्थना की थी, जिसका जवाब मिला था—"मै इस तरहके ख्याली पुलावके लिये पैसा देनेकी इजाजत नही दे सकता।"

साहित्य और कला—इस कालके साहित्य-गगनके महान् नक्षत्र है—अन्तोन पावल-पुत्र चेखफ (१८६०–१९०४ ई०), और अ० म० गोर्की (१८६८–१९३६ ई०)। इन दोनो महान् लेखकोंकी कितनी ही कृतियोंसे भारतीय पाठक भी परिचित हैं। इन दोनों ही को जारशाहीका कोपभाजन बनना पडा था। चेखोफ ४४ वर्षकी उमरमें तपेदिकसे मर गया, गोर्कीने नवीन रूसको अपने सामने फलते-फूलते देखा, और उसके निर्माणमें भाग लिया।

इस कालके चित्रकारोमें रूसी ऐतिहासिक चित्रकलाका सर्वश्रेष्ठ आचार्य व० ई० सुरकोफ (१८४८–१९१६ ई०), छवि-चित्रकलाका महान् निर्माता व० अ० सेरोफ (१८६५–१९११ ई०), प्रकृतिचित्रणका जादूगर ई० ई० लेवितन (१८६१–१९०० ई०) हुये। संगीतके अद्भुत कलाकार प्योत्र इलिया-पुत्र चैकोव्स्की (१८४०-९३ ई०) का समय भी यही है।

२० वी सदीके आरम्भ होते-होते सामन्तवादी जमीदारो और उनके स्वार्थोंकी रक्षाकी कोशिश करते हुये भी रूस पूजीवादी युगमें पूरी तौरसे प्रविष्ट हो गया। लेकिन उद्योगीकरणमें पश्चिमी युरोप के पूजीपतियोंका सबसे बडा हाथ था, फ्रांसीसी और जर्मन बैक इसमें खास तौरसे भाग ले रहे थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमी युरोपीय पूजीपतियोंका एक अरब सुवर्ण रूबल रूसके उद्योग-धन्धोंमें लगा हुआ था। यह सब किसी पुण्यके लिये नही किया जा रहा था, इसे कहनेकी जरूरत नही। १८९५ ई०से १९०८ ई० तक अपने इस व्यवसायसे विदेशी पूजीपतियोने तिरासी करोड सुवर्ण-

रूबल नफा कमाया, जो कि उतने समयमें लगाई गई पूजीसे कही अधिक था। जारकी सरकारपर १९०३ ई०में तीन अरब सुवर्ण रुबलका विदेशी कर्ज था, जिसपर तेरह करोड रूबल प्रतिवर्ष सूद देना पडता था। रूसी सामन्त और जमीदार अपने पुराने स्व र्थोको अक्षुण्ण रखनेमे इतने मस्त थे कि उन्हें अपनी पूजीको इकट्ठा करके उद्योग-धघोमें लगानेकी उतनी फिक्र नही थी, जितनी कि पेरिस और दूसरी युरोपकी विलासपुरियोमें गरीब के गाढकी कमाईको उडानेमें।

लेकिन अब इस पुराने रूसको बदलनेके लिये एक ठोस क्रातिकारी शक्ति पैदा हो गई थी। १९०० ई०के दिसम्बरमें "इस्क्रा' (चिनगारी) के नामसे लेनिनने अपना पत्र निकाला, जिसके सम्पादनमें प्लेखानोफ और दूसरे समाजवादी जनतान्त्रिक भी सहायता करते थे। बाहर छपकर वह रूसमें गुप्त रीतिसे भेजा जाता था। अपने मुखपृष्ठपर छपे सूत्र "चिनगारी ज्वाला जलायेगी" के अनुसार सचमुच ही रूसमें ज्वाला जलानेमें उसने बहुत काम किया। पीतरबुर्गके एक जुलाहे पाठक ने इसके बारेमें लिखा था—"जब तुम इस पत्रको पढ़ते हो, तो तुम्हें मालूम होता है कि जारशाही सेना और पुलिस हम कमकरों और हमारे बुद्धिजीवी नेताओंसे क्यो इतना डरते हैं? पुराने समयमें प्रत्येक हडताल एक बडी घटना थी, किन्तु अब हरएक आदमी जानता है कि केवल हडताले कुछ नही हैं, हमें इनके लिये लडते हुये मुक्ति भी प्राप्त करनी है।" १९०० ई० और १९०१ ई०मे भी प्रथम राजनीतिक प्रदशन होने लगे, जिनके द्वारा समाजवादी क्रातिकारियोंके बढते हुए प्रभावका पता लगने लगा। १९०० ई०के मई-दिवसमें खरकोफके मजदूरों और विद्यार्थियोंने लाल झडेके साथ सडकोंपर जलूस निकाला था, जिसमें वह नारा लगा रहे थे—"स्वेच्छाचारकी क्षय"। १९०१ ई० का मई-दिवस सारे देशमें हडतालों और प्रदर्शनोंके साथ मनाया गया। १९०२ और १९०३ ई०में और भी राजनीतिक हडतालें और प्रदर्शन हुये। १९०२ ई०मे किसानोंके भी कई आन्दोलन हुये और उनके पथप्रदशनके लिये लेनिनने "गावके गरीबोंसे" नामकी एक छोटी किन्तु बहुत ही प्रभावशाली पुस्तक लिखी। इस तरह क्रातिकी शक्तिया बढ रही थीं, लेकिन दूसरी तरफ इन शक्तियोंमें कमजोरी पैदा करने के लिये नरमदली क्रातिकारी फूट भी पैदा करने लगे थे। गरमदल के क्रातिकारी प्रोग्रामको लेनिन और उनके समर्थक मानते थे, जिनका समाजवादी जनतान्त्रिक पार्टीमें बहुमत था। इसीलिये लेनिन और उसके अनुयायी बोलशेविक (बहुमतीय) कहे जाने लगे। नरमदली अल्पमतमें होनेके कारण मेन्शेविक (अल्पमतीय) कहे जाने लगे। १९०३ ई०की जुलाई और अगस्तमें ब्रुसेल्स और पीछे लन्दनमें पार्टीकी जो द्वितीय काग्रेस हुई थी, उसी समय उसके यह दो टुकडे हो गये। अपनी सूझ, तत्परता और त्यागसे बोलशेविक मजदूरों और दूसरी शोषित जनतामें अपने प्रभावको बढाते गये, जब कि मेन्शेविक बुद्धि-जीवियोंसें अपनी कलाबाजी दिखानेतक ही अपने कामकी इतिश्री समझते थे।

रूस-जापान-युद्ध (१९०४ ई०)—रूसका प्रसार जिस तरह प्रशान्त महासागर तक हुआ, इसे हम बतला आये हैं। अभी तक उसका प्रतिद्वद्वी चीन था, जिसकी निबल और भ्रष्टाचारपूर्ण सरकार रूसके सामने बराबर दबती रही, अब पूर्वी एसियामें जापान-जैसी एक बडी शक्ति पैदा हो गई थी। १८९४-९५ ई० में जापानने चीनको हराकर अपनी शक्तिका परिचय दिया था, और क्षतिपूर्तिकी बहुत भारी रकम तथा कोरिया, पोर्ट आर्थर, ल्याउतुङ-प्रायद्वीपके साथ मचूरियाके सारे दक्षिणी समुद्रतटपर अपने अधिकारको चीनसे मनवाया था। "कटकेनैव कटकम्" की नीतिको अपनाते हुये चीन चाहता था, कि जापानको रूससे भिडा दिया जाय। १८९६ ई०में जारके वित्तमत्रीने चीनी पूर्वी रेल बनवानेके लिये चीनके साथ एक सधि की। इससे पहले साइबेरियाकी रेलवे बन चुकी थी। इस रेलको बनाकर जारशाही रूस मचूरिया और कोरियापर हाथ साफ करना चाहता था। १८९८ ई० मे ल्याउतुङ प्रायद्वीप और उसके पोर्ट आर्थर बन्दरगाहको भी रूसने ठीकेपर ले लिया, और उसने जल्दी-जल्दी हर्बिनसे पोर्टआर्थर तक रेल बनानेका काम शुरू कर दिया। इस समय गिद्धकी तरह पश्चिमी युरोपकी शक्तिया चीनमें बन्दरबाट कर रही थी। जर्मन कैसरने क्याउ चाउके बन्दगाहको दखल कर लिया। इगलैडने हागकागको तो आधी शताब्दी पहले ही ले लिया था, अब उसने वेई-हाइ वेइ बन्दर-गाहपर भी अधिकार कर लिया। फ्रास क्या पीछे रहने लगा? उसने भी अपने हिन्दचीन अधिकृत प्रदेशकी सीमाको चीनके भीतर बढ़ाया। सयुक्त राष्ट्र अमरीकाने सबके लिये "खुला दरवाजा"

माग करके पूजीपति घडियालोंको चीनमे खुल खेलनेकी माग रक्खी। पश्चिमी शक्तियोंकी इस लूटके कारण चीनी जनतामें बहुत असतोप हुआ, और १९०० ई० में बक्सरका भयकर विद्रोह हो गया, जिसके दवानेमे पश्चिमी शक्तिय के साथ रूमने भी भाग लिया। निकोलाइ II की सरकारने कोरियाकी सीमात नदी यालू-उपत्यकाके जगलोंकी लकडीका ठेका एक रूसी कम्पनीको दिलवाया, जिसका अर्थ केवल यही था, कि उसके द्वारा रूसी सेनाको आसानीसे कोरियामें पहुचाया जा सके। पोर्टआर्थरको भी रूसी नौसैनिक अड्डेके रूपमे परिणत कर दिया गया। जापान यह सब देखते हुये चुप नहीं रह सकता था और न रूसके प्रतिद्वद्वी अग्रेज ही मौकेसे चूकनेवाले थे। दूसरोंका लडाकर अपना उल्लू सीधा करना अग्रेजोंकी पुरानी नीति थी। उन्होने १९०२ ई० में रूसके विरुद्ध जापानसे सनिक सधि की, जिससे जापानको बहुत बल मिला।

रूसमें अब भी सामन्ती मनोवृत्ति काम कर रही थी, उद्योग धन्धोंको पश्चिमके पूजीपतियोंके सहारे खडा किया गया था, जो इस बातका पूरा ध्यान रखते थे, कि औद्योगिक वस्तुओंके लिये रूस हमसे स्वतत्र न होने पाये। और तो और, सैनिक हथियारोंमे भी रूस परमुखापेक्षी था। शासक वर्गकी अदूरदर्शिता और अयोग्यताके कारण किसी क्षेत्रमें भी प्रतिभायें आगे नही बढने पाती थी। रूसी सेनापतियों और युद्ध-सचालकोंको चुस्ती किसे कहते है, यह मालूम ही नही था। सुवारोफ, कतुजोफके समयसे सैनिक प्रतिभाओंकी उपेक्षा करके खुशामदी एरे-गैरे नत्थूखैरे सामन्त-पुत्रों और जारके कृपापात्रोंको आगे बढ़ाया जाता था। रूस अभी युद्धके लिये तैयार नही है, यह जापानियोंको पता था। सारे मचूरियामें उसके गुप्तचर फैले हुये थे, जिनसे जापानियोको सारे भेद मालूम थे। इसी समय २६ जनवरी १९०४ ई०की रातको बिना युद्ध घोपित किये जापानी ध्वसक पोतोने अधेरेमे छिपकर पोर्ट आर्थरपर आक्रमण कर दिया। इस समय मुख्य सेनापति अद्मिरल स्तार्ककी जयन्ती मनाते हुये रूसी नौसैनिक अफसर नाचमे मस्त थे। जापानियोंने रूसके सर्वश्रेष्ठ तीन युद्धपोतोंको डुबा दिया, और २७ के सवेरे बम-वर्षा करके उन्होंने चार और युद्धपोतोंको नुकसान पहुचाया। आरम्भ रूसियोंके लिये बहुत बुरी तरह हुआ, और उसके बाद जारशाही सेना हारपर हार खाती गई। अपने हथियारों और वीरताकी अपेक्षा ईसाकी मूर्तियोपर मुख्य सेनापति जेनरल कुरोपात्किनका अधिक विश्वास था। उसने गाडियोंमें भर-भरकर युद्ध-क्षेत्रमें ले जा इन मूर्तियोको बटवाया। रूसी नौसनिकों और सैनिकोंने लडनेमें अपनी आनुवशिक बहादुरीको दिखलाया, लेकिन हथियारोके अभाव और सेनापतियोंकी अयोग्यताके कारण वह जापानियोंके खिलाफ पासा नही पलट सके। फवरी १९०४ ई० में रूसी ध्वसक "स्तेरेगुश्चीने" चार जापानी ध्वसकों और क्रूजरोंका मुकाबिला किया, जिसमेंसे एकको उसने डुबा दिया। आत्मसमर्पण करनेके लिये कहनेपर रूसी नौसैनिकोने साफ इन्कार कर दिया। और जब उन्होंने देखा, कि हमारा जहाज जापानियोंके हाथमें जाना चाहता है, तो गोलोकी वर्षाके भीतर दो अज्ञात नौसैनिकोंने नीचे जाकर पानी आनेके रास्तेको खोल दिया, और इस प्रकार अपने जहाजके साथ समुद्रतलमें बैठकर उन्होंने अपनी वीरताका परिचय दिया। पोर्टआर्थरने कुछ समय तक जापानी घिरावेमें रहते हुये प्रतिरोध किया, लेकिन उसे अन्तमें आत्मसमर्पण करना पडा।

१९०५ ई०में जारशाही रूसने जापानके हाथों बुरी तौरसे हार खाई, लेकिन रूसकी सनिक पराजयने क्रातिके आरम्भ करानेका काम दिया।

१९०५ ई० की क्रांति—रूस जापान युद्धके कारण रूसकी आर्थिक अवस्था बहुत ही बिगड गई। खर्चकी सीमा नही थी। बडे-बडे सूदपर विदेशमे कर्ज लेना पडा, जिसके लिये कर बढ़ाना जरूरी था, इस प्रकार जीवनोपयोगी सभी चीजोंका दाम बढ़ गया। उधर भारी सख्यामें किसानोंकी सेनामें भरती करनेके कारण खेतीको भी बहुत नुकसान पहुचा। कारखानोंमें पूजीपतियोने मजूरी कम करनी चाही, जिसका परिणाम हुआ हडतालें। नवम्बर और दिसम्बर १९०४ ई०में ही पीतरबुग, मास्को और दूसरे नगरोंमें बोल्शेविकोंने सडकोंमें जलूस सगठित किये, जिनका नारा था, "स्वेच्छाचारिताका क्षय, युद्ध बद करो।" लोगोंके असतोषको शात करनेके लिये १२ दिसम्बर १९०४ ई०को घोषणा निकालकर जारने कुछ हलके-से अधिकारोंको देनेका वचन दिया।

३ जनवरी १९०५ ई० को पुतिलोफ (आधुनिक किरोफ) कारखानेमें चार मजदूरोको निकाल दिया गया, जिसका परिणाम हुआ अगले ही दिन बारह हजार मजदूरोंकी हडताल। पीतरबुगके दूसरे कारखानोंके मजदूरोंने भी उनकी सहानुभूतिमें हडताल की और ८ जनवरीको डेढ लाख मजदूरोंने काम छोडकर उसे सार्वजनिक हडतालका रूप दे दिया। इतनी बडी सख्यामें उत्तेजित और बेकार मजदूर कोई और बडा कदम न उठा ले, इसके लिये ईसाई पादरी गपोनने सलाह दी, कि मजदूरोकी ओरसे जारके पास आवेदन पत्र भेजा जाय। अभी भी जारके प्रति लोगोकी सद्‌भावना बनी हुई थी, और वह इसके लिये तैयार हो गये। उधर गपोनने इसकी सूचना खुफिया पुलिसको दे दी थी, और जारशाहीने खुलकर गोली चलानेकी तैयारी कर रक्खी थी। आवेदन-पत्रके कुछ वाक्य थे—"हम पीतरबुगके मजदूर, हमारी बीबिया, हमारे बच्चे और हमारे असहाय बूढे मा-बाप, हे प्रभु, तेरे पास सहायता और रक्षा पानेके लिये आये है। हम गरीबीसे पीडित, अत्याचारके मारे असह्य मेहनत के बोझसे दबे जा रहे है। हमें अपमान सहना पडता है। हमारे साथ मानवोचित बर्ताव नही होता। हमारा धैर्य टूट रहा है, हम गरीबीके दल्दलमें और नीचे डूबते जा रहे है। हम अधिकार और ज्ञानसे वचित है। स्वेच्छाचारिता और क्रूरताने हमारा गला घोट रक्खा है। हमारा धैर्य खतम हो रहा है। वह भयकर घडी आ गई है, जब कि इस असह्य पीडाको और अधिक सहनेकी जगह मरना हमारे लिये अच्छा है।" इसमें कुछ आर्थिक और राजनीतिक मागोंके साथ सविधान सभाके बुलानेके लिये माग की गई थी। बोल्शेविकोंने बहुत समझाया, कि जारके पास प्रार्थनापत्र देनेसे स्वतत्रता नही मिल सकती, लेकिन अब भी बहुत-से मजदूर कह रहे थे—"हम तजर्बा करके देखेंगे। जार हमारी उचित मागोको अस्वीकार नही करेगा।"

२२ (९) जनवरी १९०५ ई० रविवारका दिन था, जब कि एक लाख चालीस हजार मजदूर जारके चित्र, झडे और ईसाई मूर्तिया लिये प्रार्थनाके गीत गाते हेमन्त प्रासादकी ओर चले। जारकी सरकारको मजदूरोका स्वागत गोलियों और सगीनोंसे करना था। हेमन्त प्रासादकी सडकोंपर जगह-जगह पलटन तैनात थी, लेकिन तो भी बहुत-से मजदूर प्रासादके मैदानमें पहुचनेमें सफल हुये। निहत्थी जनता पर गोलियोंकी वर्षा होने लगी, एक हजार मजदूर मारे गये, दो हजार से अधिक घायल हुये। बोल्शेविकोंने यद्यपि पहले मना करनेकी कोशिश की, लेकिन न माननेपर उन्होंने मजदूरोंका साथ नही छोडा, और वह भी साथमें जाकर गोलीके शिकार हुये। मजदूरोने ९ जनवरीके दिनको "खूनी-रविवार" का नाम दिया, उनके हृदयसे आवाज निकलने लगी—"हमारा कोई जार नही है।" उन्होने अपने घरोंमें टागे हुये जारके चित्रोको फाडकर फेंक दिया, और उसके बाद जबतक बोल्शेविक क्राति नही हुई, "खूनी रविवार" मजदूरोंके लिये शहीदोंका स्मारक पर्व-दिन बन गया। बोल्शेविकोने पुस्तिकायें निकालकर कहा—"हथियार, साथियो।" इसपर मजदूर बन्दूककी दूकानो और मिस्त्री-खानोंपर टूट पडे, वहासे उन्होंने हथियार लेकर अपनेको हथियारबद किया। उसी ९ जनवरीके अपराह्न में पीतरबुगके एक मुहल्ले वासिलियेव्स्की द्वीपमें लोगोंने लडनेके लिये सडकपर बाढे खडी की। चारों ओर "स्वेच्छाचारिताकी क्षय" की आवाज गूजने लगी। सडकोंपर कई जगह पुलिसके साथ जनताकी मुठभेड हुई। इस दिन जो पाठ रूसके मजदूरवर्गको पढ़ाया गया, उसके बारेमें लेनिनने लिखा था—"अपने महीनों और वर्षोंके दरिद्र, दुखी और उदास जीवनमें जिसे नही सीख सकते थे, वैसी क्रातिकी शिक्षा सर्वहारोंने एक दिनमें पाई।" "खूनी रविवार" जारशाहीके लिये जलियानवाला बाग सिद्ध हुआ। हडतालका जोर और बढ़ा। जनवरी ११ (२४) १९०५ ई०को मास्कोमें भी हडताल हुई, और इसके बाद पोलन्द, फिनलन्द, उक्राइन, काकेशस और साइबेरिया सभी जगह हडतालोंका तूफान आ गया।

१९०५ ई०के ग्रीष्ममें सर्वहारोंका क्रातिकारी सघर्ष चारों ओर फैल गया। प्रथम मईके महोत्सव में दो लाख बीस हजार मजदूरोने पीतरबुर्गमें काम छोड दिया। मजदूरोंके सघर्षने किसानोंपर भी प्रभाव डाला और गावोंमें आन्दोलन बढ चला। रूसके केंद्रीय इलाको, गुर्जी और बाल्तिक प्रदेशोंमें एक ही साथ किसानोंने जबर्दस्त आन्दोलन शुरू किया। फर्वरी १९०५ ई०में कितनी ही जगहोंपर किसानोने जमीदारोंके खुदकाश्त खेतोको छीनना शुरू किया, और उस सालके वसततक रूसकी

देहातमें सर्वत्र किसान सघर्ष शुरू हो गया। किसानोंने जमीदारोंके महलो और मकानोंको नष्ट कर दिया, उनके खेतो और चरागाहोपर अधिकार करके मनमाना जोतना शुरू किया। इतने व्यापक पैमानेपर हो रहे विद्रोहको दबाना जारशाहीके लिये आसान काम नही था, पर अभी सेनामें उतना असतोष नही था।

अब उसमें भी लक्षण दिखलाई देने लगे। १९०५ ई०में ही, जब कि अभी जापानसे लड़ाई चल रही थी, कालासागरके नौसैनिक बेड़ेमें असतोष फैल गया, और १४ (२७) जून १९०५ ई०को युद्धपोत "पोतोम्किन" के नौसैनिकोंने विद्रोह कर दिया, जिसका तुरन्तका कारण था, सड़े-गले कीड़े पड़े हुये अधपके मासको सिपाहियोंमें परोसना। नौसैनिकोंने उसे खानेसे इन्कार कर दिया। कमाडरने मुखियोंको गोली मारनेका हुक्म दिया, जिसके विरोधमें सारे जहाजके सिपाहियोंने विद्रोह कर दिया। यद्यपि बड़े नौसैनिक अफसरोंने विद्रोही नेता वकुलिन्चुकको मार दिया, लेकिन तुरन्त मत्युशेंको नामक दूसरे नाविकने नेतृत्वको सभाला। नाविकोंने बहुतसे अफसरोंको मारकर युद्ध पोतको अपने हाथमें कर लिया। लाल झडा उड़ाते हुये जब वह अदेस्सा शहरके सामने पहुचे, तो वहाके मजदूरोंमें बिजली दौड़ गई, लेकिन नरमदली समाजवादी मेन्शेविकोंने उलटा समझा बुझाकर लोगोंको रोका। "पोतम्किन" कितने ही दिनोतक लाल झडा उड़ाते हुये कालासागरमें इधरसे उधर घूमता रहा, लेकिन जब तटके किसी नगरसे सहायता नहीं मिली, और उधर गोला-बारूद भी कम होने लगा, तो रूमानियाके तटपर जाकर नाविकोंने आत्मसमर्पण कर दिया। रूमानियन सरकारने पीछे १९०६ ई० में क्रातिकारियोको जारकी सरकारके हाथमें दे दिया, जिसने उनमेंसे बहुतोंको फासीपर चढाया और बहुतोंको कालापानीकी सजा दी। यह पहली बार था, जब कि एक विशाल युद्धपोतके सारे सैनिकोंने जारके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह किया। इतिहासमें हम दूसरे तरहके विद्रोह देख चुके है। प्रभुवर्गमे ही किसी एक व्यक्ति या दलके विरुद्धमे दूसरे दलका हथियार उठाना पहले भी देखा गया था, लेकिन यह विद्रोह बिल्कुल नये तरहका था, जिसमें दरिद्र और निरीह वर्ग सहस्राब्दियोंसे शासक दलके खिलाफ खुल्लमखुल्ला उठ खडा हुआ, मानो जिन ईटोंसे प्रासाद बना था, वही अब प्रासाद को ढानेके लिये हिलने-डुलने लगी।

जापानसे सधि—जारशाही सेनापतियोंकी अयोग्यता और रूसके पिछडेपनके कारण जापान हारपर हार दे रहा था। इसी बीच "खूनी रविवार" और मजदूरों, किसानों तथा नौसैनिकोंके विद्रोह ने ऐसी हालत पैदा कर दी, कि जारशाहीके लिये और अधिक दिनतक जापानके साथ लड़नेका मतलब था घरमें ही तख्ता उलट जाना। चूशिमाकी खाडीमें रूसी जगी बेड़ेका जब जापानियोंने सहार कर दिया, तो विदेशी पूजीवादियोंको भी भय लगने लगा, कि कही पेरिसकी आवृत्ति बड़े पैमानेपर रूसमें न होने लगे, इसीलिये उन्होंने जारकी सरकारपर युद्ध बद करके जापानके साथ सुल्ह कर लेनेके लिये जोर देना शुरू किया, और यह भी कि जारको भीतरी शाति बनानेके लिये कुछ वैधानिक सुधार देकर लोगोंको अपनी तरफ खीचना चाहिये। उधर जापानकी भी भीतरी हालत अच्छी नही थी, क्योंकि युद्धमें अपार धन और जनका सहार हो रहा था, जिससे वहाके लोगोंमें भी असतोष फैलनेका डर था। जापानके कहनेपर सयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्रपति थ्योडोर रूजवेल्टने बीचमे पड़ना स्वीकार किया। जारशाही युद्धपरिषद्ने ६ जून (२४ मई) १९०५ ई०को जारकी अध्यक्षतामें बहुमतसे शातिके पक्षमें फैसला किया, क्योंकि "हमारे लिये विजयसे भी अधिक महत्त्वकी चीज है घरेलू शाति हम असाधारण स्थितिमे आज पड़े हुये है। हमें रूसके भीतर शातिको पुन स्थापित करना है।" जारशाही ने सुल्ह करना स्वीकार किया। जापानकी शर्तें बहुत कडी थी, लेकिन रूजवेल्टने भी दबाव डाला, और अन्तमें ५ सितम्बर (२३ अगस्त) १९०५ ई०को पोर्टस्मिथकी सधिपर हस्ताक्षर हुये। रूसने कोरियामें जापानके सैनिक, राजनीतिक तथा आर्थिक हितों और अधिकारोंको स्वीकार किया। पोर्ट-आर्थर और दलनीके अपने ठेकेवाले प्रदेशको उसने जापानके हाथमें सौंप दिया, सखालिन द्वीपका दक्षिणार्ध और पासके द्वीपोंको भी जापानके हाथमें दे दिया, एव पूर्वी चीनी रेलको केवल व्यापारिक दृष्टिसे चलाना स्वीकार किया।

जापानने जारशाही गर्वको चूर-चूर कर दिया। इस युद्धमें रूसके चार लाख आदमी हत, आहत

या वदी हुये और तीन अरब रूबल धनका नाश हुआ। रूसी जनतापर इसका बुरा प्रभाव पडना ही चाहिये था, लेकिन जारशाही अब पूरबके झगडेसे छुट्टी पाकर क्रांतिको कुचलनेमें समर्थ थी, तो भी संधिपर हस्ताक्षर होनेके सत्ताईस दिन बाद २ अक्तूबर (१९ सितम्बर) १९०५ ई०में मास्कोके प्रेसकर्मियोंने आम हडताल कर दी, जिनका साथ वहाके रोटी बनानेवालों, तम्बाकू-मजदूरों तथा दूसरे कमकरोंने दिया। पुलिस और कसाक सैनिकोंने उनके प्रदर्शनोंको बलपूर्वक छिन्न-भिन्न करना चाहा, इसपर मजदूरोंने भी पुलिसके ऊपर तमचे चलाये। छ दिन बाद २५ सितम्बर (पुराना पचाग) को मास्को की एक सडकपर मजदूरों और जारके कसाकोमे बाकायदा लडाई हुई। दो मजदूर मारे गये, आठ घायल हुये और १९२ गिरफ्तार हुये। ७ अक्तूबरको मास्को-कजान्सकया रेलवेके मजदूरोंने हडताल कर दी, जिनका साथ ८ अक्तूबरको दूसरी रेलोंके मजदूरोंने भी दिया। ११ अक्तूबरको रेलवे हडतालने सारे राष्ट्रमें आम हडतालका रूप लिया, जिसमें स्कूलके अध्यापक, आफिसोंके कर्मचारी, कानूनपेशा लोग, इजीनियर और विद्यार्थी भी सम्मिलित हुये। उन्होने सविधान-सभाके बुलानेकी माग की। जारने बहुत चाहा, कि गोलियोकी वर्षासे विद्रोहको दबा दिया जाय, लेकिन वह उसमें आसानीसे सफल कैसे हो सकता था? अक्तूबर महीनेकी इन हडतालोने सरकारी शासन-यत्रको अकर्मण्य बना दिया था।

इसी समय विद्रोहियोंने अपने सगठन, सघर्ष और शासनको चलानेके लिये एक नये यत्रका आविष्कार किया, जिसने १९०५-६ ई०की क्रांतिमें ही बहुत काम नही किया, बल्कि १९१७ ई०की बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलतामें भी उसका बहुत बडा हाथ था। यह सगठन था मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियत। सोवियत शब्दका वही अर्थ है, जो हमारे यहा पचायतका, लेकिन शासन और सैनिक अधिकारोंके भी हाथमें लेनेसे सोवियतको मामूली पचायत नही कहा जा सकता। १३ (२६) अक्तूबरको, जब कि हडताल चल रही थी, पीतरबुर्गके कमकरोने अपने कारखानोंमें सभायें की, और हडतालका नेतृत्व करनेके लिये मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतके लिये अपने आदमी चुने। यद्यपि इसका आरम्भ हडतालकी सयुक्त समितिके रूपमें हुआ था, लेकिन क्रांतिने जल्दी ही उसे शक्तिको सभालनेके लिये मजबूर किया। पीतरबुर्गके मजदूरोंकी देखादेखी रूसके सभी बडे-बडे नगरोमें मजदूर प्रतिनिधि सोवियतें १९०५ ई० के अक्तूबरसे दिसम्बर तक कायम होती रही। मास्को सोवियत बोल्शेविकों के प्रभावमें थी, इसलिये वह हथियारबद विद्रोहकी तैयारीका सगठन बन गई। काकेशस, लतविया और त्वेर एव मास्को गुबर्निया जैसे कितने ही केंद्रीय रूसके इलाकोंमें सैनिक प्रतिनिधि भी सोवियतके सदस्य बने।

रूसके भिन्न-भिन्न जगहोंमें क्रांति और विद्रोहकी जो लहर फैली हुई थी, उसका प्रभाव बोल्गा-प्रदेश तथा दूसरे इलाकोंकी एसियाई जातियोंपर भी पडे बिना नही रहा। बोल्गासे अल्ताइ और अफगानिस्तानतक जारकी हुकूमत मुसलमानोंके ऊपर थी। वहा अभी राजनीतिक जागृति इतनी नही हुई थी, कि वहाके लोग धर्म और साम्प्रदायिकतासे ऊपर उठते। बोल्गा-प्रदेश और बाशकिरियामे राष्ट्रीयतावादी मध्यमवर्गने मुस्लिम लीग कायम की। लीगने धीरे-धीरे मध्य-एसिया और काकेशस के मुसलमानोको भी प्रभावित करना शुरू किया। साम्प्रदायिकतापर निर्भर आन्दोलन और सगठनका नेतृत्व मुल्लोंके हाथमें जाना जरूरी था, और मुल्ला रूसियोंके खिलाफ जहाद करनेका ही तरीका पसद कर सकते थे, लेकिन बहुतसे एसियाई इलाकोंमें रूसी उनके पडोसी किसान और मजदूर बनकर बस गये थे, जो विशाल दृष्टिपूर्वक सचलित राष्ट्रीय आन्दोलनमें एसियाई जातियोंके स्वतंत्रताके युद्धमें सहायक बन सकते थे। लेकिन अभी यह काम बारह साल बाद होनेवाला था। १९०५ ई०के अन्तमें तारतार मध्यमवर्गीय राजनीतिक नेताओंने कजानमें प्रथम मुस्लिम काग्रेस बुलाई, जिसने हमारे यहा के पुराने काग्रेसियो की तरह जारसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कि मुसलमानोंको भी वही अधिकार मिलने चाहिये, जो कि बादशाहकी रूसी प्रजाको प्राप्य हैं। १९०५ ई०में चुवाशोंमें भी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हुआ, लेकिन वह शुद्ध किसान आन्दोलन था, जो चाहता था, कि किसानोंको धरती और मुक्ति मिले। चुमाश और मारी लोगोंके भीतर हो रहे किसान आन्दोलनको अखिल रूसी किसान सघके सदस्योंने सचालित किया था। किसानोंने जमींदारोंसे जमीन छीनने और अपनी भाषामें स्कूलोंके खोलनेकी माग की। साइबेरियाके बुरियत मगोल भी जारशाही अफसरोंके अत्याचारसे तग आ गये थे, उन्होंने

साइबेरीय जातियोंकी लीग स्थापित की। १९०५ ई० ही मे याकूतोमे भी जागृति हुई, और उन्होंने याकूत लीग कायम की, जिसे जारशाहीने जल्दी ही दवा दिया।

दिसम्बरका विद्रोह—रूसी कमकर समझने लगे थे, कि केवल राजनीतिक हडतालोंमे काम नही चल सकता। अक्तूबरकी हडतालोंके बाद सबसे पहले हथियारबद विद्रोह करनेवाले थे क्रोन्स्तात नौसैनिक अड्डेके नाविक और तोपची। २६ और २७ अक्तूबर (पुराना पचाग) के दो दिन और दो रातातक रूसका यह मशहूर नौसैनिक अड्डा विद्रोहियोंके हाथोंमे रहा, लेकिन अभी उनका भीतर-बाहरका सगठन इतना मजबूत नही था, इसलिये २८ अक्तूबरको जारशाही सेनाने उसे दवा दिया। दो सौ विद्रोहियों तथा उनके नेताओंको फौजी अदालतद्वारा बडे दड दिये गये।

इस समय रूस-अधिकृत पोलैंडमे फौजी कानून घोषित किया गया था। उसके उठा लेने तथा क्रोन्स्तातके नाविकाको मुक्त करानेके लिये १८(१) नवम्बर १९०५ ई०की पीतरबुर्गकी मजदूर प्रतिनिधि-सोवियतने एक आम हडताल घोषित की। जारकी सरकारको मजबूर होकर उनकी मागाको स्वीकार करना पडा, पोलैंडमे मार्शल ला (फौजी कानून) उठा दिया गया, और क्रोन्स्तातके नाविका पर फौजी अदालतमे कोर्ट मार्शल द्वारा फासीका दड दिलानेकी जगह साधारण सैनिक अदालतमें मुकदमा चलाया गया, जिसने ८३ विद्रोहियोंको छोड दिया, १२३ को जेलकी और केवल नौ को कालापानीकी सजा दी। इसमे शक नही, पीतरबुर्गके कमकरोंकी हडतालने क्रोन्स्तातके बहुतसे विद्रोहियोंके प्राणाकी रक्षा की। क्रातिकी इस दूसरी लहरने कालासागरके नौसैनिकोंको प्रभावित किया। २७ (१४) नवम्बरको क्रूजर "ओचाकोफ के नाविकोंने विद्रोह किया। "पोतेम्किन' के नाविकाकी जो गति हुई थी, उससे ये नाविक हताश नही हुये थे। २८ (१५) नवम्बरको दूसरे सैनिक पोता और सेवस्तापोलके दुर्गमे काम करनेवाले सैनिका और कमकरोंने ओचाकोफके विद्रोहियोका साथ दिया। "पोतेम्किन" का नाम "पतेलेइमोन ' रखकर जारशाहीने उसे सुरक्षित समझा था, लेकिन पोतेम्किनके ऊपर फिर लाल झडा फहराने लगा। अभी भी दूसरे युद्धपोत और सैनिक जारशाहीके भक्त थे। २८(१५)नवम्बर को ही तट और जहाजकी तोपोने "ओचाकोफ" पर गोलाबारी शुरू की, जिससे उसमें आग लग गई। नाविकोंने समुद्रमें कूदकर बचनेकी कोशिश की, लेकिन उन्हे मशीनगनोकी गोलियासे भून दिया गया। विद्रोहियोंका नेता लफटेनेंट स्मिथ और दूसरे नेताओंको कोटमार्शल करके गोलीसे उडा दिया गया। इस प्रकार कालासागरका विद्रोह दवा दिया गया।

नवम्बर और दिसम्बरके महीनोमें अबकी किसानोंके विद्रोहने और भी जोर पकडा। युरोपीय रूसके एक तिहाईसे अधिक इलाकोमें किसान जमीदारोको भगाकर उनसे खेतोको छीन रहे थे, उनके मकानो और महलोंको लूटते बरबाद कर रहे थे।

क्रातिकी प्रगतिको लेनिन अपने निर्वासित स्थान (जेनेवा)से गम्भीरतापूर्वक बराबर देख रहे थे। नवम्बर (१९०५ ई०)मे क्रातिकारी सघर्षका नेतृत्व करनेके लिये उन्होने रूसमे आना जरुरी समझा। दिसम्बर १९०५ ई०में फिनलैंडमें तम्मेरफोस नगरमे बोल्शेविकोका एक सम्मेलन हुआ। यहीपर स्तालिनको लेनिनको देखनेका सर्वप्रथम सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेनिनके सुझावपर सम्मेलनने सदस्योको अपने-अपने इलाकेमे विद्रोह-सचालन करनेका आदेश दिया। लेकिन दिसम्बरके आरम्भ तक जारशाहीने अपनी शक्तिको पहलेसे अधिक दृढ कर लिया था। मचूरियाके युद्धक्षेत्रसे कितनी ही सेनायें लौटकर युरोपीय रूसमें पहुच गई थीं। अबकी मास्कोका नम्बर पहला था। वहाकी सोवियतके नेता बोल्शेविक थे। उन्होंने हथियारबद विद्रोहकी तैयारी बडे जोर-शोरसे शुरू की। उनके प्रयत्नसे मास्कोकी छावनीमे भी विद्रोहकी लहर फैल गई, जिसमें रस्तोफ रेजिमेंट पहिले रही। १५ (२) दिसम्बरको सिपाहियोंने अपने अफसरोंको गिरफ्तार कर लिया, और रेजिमेंटके कामके सचालनके लिये सिपाहियाकी एक समिति निर्वाचित की। लेकिन मास्कोकी दूसरी रेजिमेंटाने उनका अनुसरण नही किया, इसलिये १७ (४) दिसम्बरको इन सैनिकोंको दवा दिया गया। अगले दिन मास्कोके बोल्शेविकोने एक सम्मेलनमे मास्को सोवियतपर जोर दिया, कि वह हथियारबद विद्रोहका बढानेके लिये आम हडताल घोषित करे। २० (७) दिसम्बरके सवेरे आम हडताल शुरू हुई। बन्दूकें-पिस्तौल पर्याप्त नहीं थ, इसलिए मजदूरोने अपने मिस्त्रीखानामे कामचलाऊ हथियार बनाये। दो हजार मजदूर-जिसमें दूरीव आ'

वोल्शेविक थे—लडनेवाले दलमें शामिल हुये। सडकोमें प्रदर्शन हुये, और मजदूर मुहल्लोमें पुलिसके साथ मुठभेड हुई। सारी अस्नाखानी रेजिमेंट अपने पूरे सामानके साथ विद्रोहियोंकी मददके लिये तैयार हो गई, लेकिन जारभक्त कसाकोने उन्हें घेरकर अपनी वारकोमें लौटनेके लिये मजवूर किया। दूसरी कितनी ही सदिग्ध रेजिमेंटोंको भी अपनी वारकोमे ही रखा गया। सचमुच मास्को-स्थित उस समयके पन्द्रह हजार सिपाहियोंमे तेरह सौ नव्वे ही ऐसे थे, जिनपर जारशाही विश्वास कर सकती थी। मास्कोके महाराज्यपालने राजधानीमें सेना भेजनेके लिये सदेशपर सदेश भेजे थे। लेकिन क्रातिकारी इस स्थितिसे पूरा फायदा नही उठा सके। २२ (९) दिसम्वरको सरकारी सेनाका पल्ला भारी हो गया, और उन्होंने जगह-जगह आक्रमण करके विद्रोहियोंको दवाना शुरू किया। स्थितिको प्रतिकूल देखकर मास्कोकी पार्टी कमीटी और मजदूर-प्रतिनिधि सोवियतने ३१ (१८) दिसम्वरकी रातको विद्रोहको वद करनेका निश्चय किया। सव जगह विद्रोहियोंने लडाई वद कर दी। क्रातिकारियोंको मौतसे कैसे वचाया जाय, इसका भार उख्तोम्स्की नामक इजन-ड्राइवरने अपने ऊपर लिया, और ट्रेनमें क्रातिकारियोंको बैठाकर वह मशीनगनो और राइफलोकी गोलियोंकी वर्षाके बीचसे ट्रेनको वडे वेगसे भगा ले गया। इस प्रकार उसने कितने ही क्रातिकारियोको फासी पानेसे बचा लिया। जारकी सेनाने मजदूरों और उनके परिवारके ऊपर भयकर अत्याचार किये, सैंकडोको विना मुकदमा चलाये ही गोलियोंसे ठडा कर दिया।

मास्कोके वाहर दूसरे कितने ही शहरोमे भी हथियारवद विद्रोह हुये। दक्षिणमें गोरलोवकामें विद्रोहियोंने जारके राज्यको खतम करके मजदूर-प्रतिनिधियो का शासन आरम्भ कर दिया। मजदूरोके पास अपने हाथकी बनाई तलवारो, छुरों तथा थोडेसे तमचोंके सिवा और हथियार नही थे, तो भी चार हजार क्रातिकारियोने जारके कसाकोंके साथ पाच घटे तक वडी वहादुरीसे लडाई की, जिसमें उनके तीन सौ आदमी काम आये। दोनेत्स-उपत्यकामें सभी जगह पुलिस और सेनाके साथ विद्रोहियोंकी लडाई हुई। लुगान्स्कमें सशस्त्र विद्रोह और हडतालका नेतृत्व क० ई० वोरोशिलोफने किया। १९०५ ई० के ग्रीष्ममें वोरोशिलोफको गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन दिसम्वरमें हजारो मजदूरोने जाकर "अपने लाल जेनरल' को जेलसे छुडा लिया। वोरोशिलोफकी सगठन शक्ति और सैनिक सूझ-बूझको देखकर एक सभामें एक मजदूरने कहा—"हम तुम्हें अपना लाल जेनरल नियुक्त करते है।" जिसका जवाव वोरोशिलोफने हसते हुये दिया—"तुम वहुत दूरकी वातकर रहे हो, मुझे सैनिक विद्याका कुछ भी पता नही है।" उस समय सचमुच ही किसको पता था, कि वोल्शेविक-क्रातिके समय वह अपनी सैनिक प्रतिभाका सुन्दर परिचय देगा, और अन्तमें रूस-जैसी दुनिया की एक शक्तिशाली सेनाका फील्ड-मार्शल और आज सोवियत सघ का राष्ट्रपति वनेगा।"

इसी प्रकार नवोरोसिस्कमे भी मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियतने शासन अपने हाथमें सभाल लिया। कालासागर-तटवर्ती नगर सोचीमें भी यही वात हुई। साइवेरियाके क्रास्नोयास्क और चीता नगरोंकी सेना विद्रोही मजदूरोंसे मिल गई और यहा सिपाहियोंके भी प्रतिनिधियोंने मजदूर प्रतिनिधियोकी सोवियतोंमें शामिल होकर विद्रोहका सचालन किया।

१९०५ ई०का विद्रोह खूनी हाथोंसे दवा दिया गया। प्लेखानोफ अव नरमदली समाजवादी हो गया था। उसका कहना था—"उन्हें हथियार उठाना नही चाहिये था।" जिसका जवाव लेनिनने दिया—'इसके विरुद्ध हमें सारी शक्तिके साथ और दृढतापूर्वक आक्रमणात्मक रूपमें हथियार उठाना चाहिये था।" दिसम्वरकी क्रातिके असफल होनेके कारण थे—किसानोंसे मदद नही मिलना, सेनाके भी अधिक भागका जारशाहीके साथ होना, विद्रोहियोंका अच्छी तरह सगठित न होना और एक साथ उठनेकी जगह विद्रोह का भिन्न-भिन्न जगहोंमें भिन्न-भिन्न समयोंमें आरम्भ होना। विद्रोहियोंके पास काफी हथियार नहीं थे, उन्होने आक्रमण करनेकी जगह प्रतिरोध करना पसद किया, तो भी इस क्रातिको असफल नही कहा जा सकता, क्योकि क्रातिकारियोने जो भूले इस समय की थी, अपनेमें जो कमिया पाई थी, उन्हें हटानेमें सफल होकर ही वह १९१७ ई०की क्रातिमें विजयी हुये। इसीलिये इस क्रातिको १९१७ ई० की क्रातिका रिहर्सल कहा जाना विल्कुल ठीक है।

शासन-सुधार—जारशाहीने क्रातिको दवा दिया, लेकिन वह जानती थी, कि लोगोंको सतुष्ट

करने या धोखेमें रखनेके लिये कुछ सुधार देना भी जरूरी है। ११ सितम्बर १९०५ ई०का इसीलिये राज्यदूमा (ससद)के चुनावकी घोषणा की गई। लेकिन यह पहिले ही निश्चय कर लिया गया, कि निर्वाचनमें राजभक्तोका ही पलडा भारी रहे, इसीलिये जहा जमीदारोंको दो हजार मतदाताओं पर एक प्रतिनिधि और नगरोके सम्पत्तिवालोको सात हजार वोटरोंपर एक प्रतिनिधि भेजनका अधिकार दिया गया था, वहा तीस हजार किसान और नब्बे हजार मजदूर वोटरोपर एक प्रतिनिधि भेजनेका नियम बनाया गया था। निर्वाचन भी सीधा नही था। प्रत्येक गावके वोटर वोलास्त (जिले) के लिये निर्वाचक चुनते। ये निर्वाचक हरएक जिलेसे दो प्रतिनिधियोको कमिश्नरीके लिय चुनते। कमिश्नरियोंके चुने हुये निर्वाचक गुबर्नियो (प्रदेशो)के लिये निर्वाचक चुनते, और गुबर्नियोंके यह निर्वाचक दूमा (ससद) के लिये प्रतिनिधि चुनते। वोट भी गुप्त नही देने थे। जारकी सरकारने इस प्रकार समझ लिया था, कि हम ऐसे आदमियोको ही ससदमें आने देंगे, जो कि हमारी हामें हा मिलायें। मार्च और अप्रैल १९०६ ई०में राज्यदूमाके लिये निर्वाचन हुये। उस समय पुलिसके अत्याचारोसे सब जगह त्राहि-त्राहि मची हुई थी। वोल्शेविकोने निर्वाचनके बायकाट करनेका निश्चय किया था। इसी समय १९०६ अप्रैलमे स्टाकहोममें समाजवादी जनतान्त्रिकोकी काग्रेस हुई। जारशाही अत्याचारोंसे सबक सीखकर वोलशेविक और मेन्शेविक दोनों इस काग्रेसमें सम्मिलित हुये, और समाजवादी जनतान्त्रिक पार्टीके भीतर अलग अलग दो गुटोंको रखते हुये भी वह एक हो गये।

नवनिर्वाचित दूमाके उद्घाटनसे तीन दिन पहले अप्रैल १९०६ ई०के अन्तमें जारशाहीने "आधारिक राज्यविधान" प्रकाशित किये, जिसके द्वारा "सभी रूसोके सम्राट्में सर्वोच्च परमस्वतन्त्र राज्यशक्ति निहित है" को घोषित किया गया। साथ ही दूमापर अकुश रखनेके लिये एक राज्य परिषद् बनाई गई, जिसकी स्वीकृतिके बिना कोई भी कानून दूमा द्वारा पास होकर जारके पास भेजा नही जा सकता था। परिषद्में आधे सरकारी उच्च अधिकारी थे, जिनकी नियुक्ति जार करता, बाकी आधेमे स्थानीय बोर्डों (जेम्स्त्वो), अमीरो, पादरियों और विश्वविद्यालयोंके प्रतिनिधि लिये जानेवाले थे।

इतने छद-बदके बाद निर्वाचित दूमा भी पूरी तौरसे जारशाहीके अनुकूल सिद्ध नही हुई। उसके ५२४ सदस्योमे २०४ किसान थे, जोकि वैसे किसान नही थे, जिन्हें जारका सलाहकार प्रधान मन्त्री काउट वित्ते चाहता था। समाजवादी जनतान्त्रिक समूहके अठारह प्रतिनिधि दूमामें पहुँचे थे। वैधानिक जनतान्त्रिक या नरमदलियोंकी सख्या १७९ थी।

यद्यपि विद्रोहका वेग दब गया था, लेकिन वह बिल्कुल खतम नही हुआ था। १९०६ ई०में मईमे अगस्ततक देशके आधे भागमें किसानोंके आन्दोलन और बलवे चलते रहे। दूमा जनताके हितके लिये नही बनाई गई थी, इसलिये वह लोगोंको शात करनेमें कैसे समर्थ होती? जब भूमि-सबधी समस्याके बारेमें किसान-प्रतिनिधियोंने अपने अनुकूल प्रस्ताव पास करना चाहा, तो घबडाकर सरकारने ८ जुलाई १९०६ ई०को दूमाको खतम कर दिया।

उसी साल दूसरी दूमाका निर्वाचन हुआ। प्रथम दूमाका वोल्शेविकोंने बायकाट किया था, लेकिन प्रथम दूमाके तजर्बेसे उन्हें पता लग गया, कि दूमाको अपने विचारोंके प्रचारके लिये एक अच्छा प्रभावशाली भाषणमच बनाया जा सकता है, इसीलिये लेनिनके परामर्शके अनुसार वोल्शेविकोंने अबके निर्वाचनमें भाग लेनेका निश्चय किया। वामपक्षी दलने भी भाग लिया, जिसके कारण द्वितीय दूमा जारशाहीके लिये प्रथमसे भी अधिक कडवी साबित हुई। नरमदली सर्वैधानिक जनतान्त्रिक पहलेकी अपेक्षा आधे ही (१७९ ९८) आ पाये। किसान गुट तथा नरम समाजवादी क्रातिकारी जहा पहली दूमामें ९४ थे, वहा अब उनकी सख्या बढकर १५७ हो गई। समाजवादी जनतान्त्रिक अब अठारहकी जगह पैसठ थे। यद्यपि द्वितीय दूमामें प्रगतिशील विचारोका प्रतिनिधित्व ज्यादा था, लेकिन अब क्रातिका वेग उतारपर था, इसलिये वह जनताके किसी भी हितको करनेमें असमर्थ थी, ३ जून १९०७ ई०को प्रतिगामी जारके पिट्ठुओने कानूनके दिखावेको भी छोडकर चारों ओर अत्याचार करना शुरू किया। उसी साल १५९ मजदूर सभाओंको भग कर दिया गया, १९०८ ई०मे नौ और १९०९ ई०में छानवे मजदूर-सगठन निषिद्ध कर दिये गये। द्वितीय दूमाने

खतम कर देनेके बाद भी निकोलाइ II अपनेमें इतनी शक्ति नही पाता था, कि दूमाके बिना ही शासनको जारी रखे, इसीलिये वह तृतीय दूमाके निर्वाचन करनेकी घोषणा करनेके लिये मजबूर हुआ। अबकी बार जारशाहीने चुनावके नियम और भी अनुकूल बनाये जमींदार २३० वोटरोंपर एक, बूर्ज्वा (पूजीवादी) हजारपर एक, किसान साठ हजारपर एक और मजदूर सवा लाखपर एक प्रतिनिधि भेज सकते थे। रूसी प्रजाको जहा दूमामें अपना प्रतिनिधि भेजनेका इस प्रकार अधिकार प्राप्त था, वहा मध्य एसियाके लोगोंको एक भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार नही दिया गया था—युरोपीय रूसके जहा ४०३ थे, वहा सीमाती इलाकोंके ३९ ही लिये जानेवाले थे, जिनमें बारह रूसी-पोलन्दके प्रतिनिधि थे। इस निमयके अनुसार जो निर्वाचन हुआ, उसमें २०२ अथवा ४६ प्रतिशत सदस्य जमींदारोके थे। वामपक्षी दलोंको केवल ७ प्रतिशत जगहे मिली थी, लेकिन जारशाही तो दूमाको केवल दिखावेकी चीज रखना चाहती थी। वह दूसरी तरहसे भी विरोधी शक्तियोंको कुचलनेके लिये तैयार थी। विद्रोही किसानोकी शक्तिको सवथा नष्ट कर देनेके लिये उसने यह तरीका निकाला था—गावकी पचायती सत्ताका नष्ट कर देना, देहातमें भूमिपर सामूहिक अधिकार रखनेकी जगह किसानोंको वैयक्तिक तौरसे खेतोंपर अधिकार देना, एव किसानोको विद्रोही गावों और इलाकोंसे ले जाकर दूसरी जगह बसाना। इसकी वजहसे वह कुछ समयके लिये किसानोंकी शक्तिको तोडनेमें सफल हुई। गावकी जमीनपर सामूहिक अधिकार होनेपर धनी और गरीब किसानोंके बीच भारी भेद नही कायम किया जा सकता था, लेकिन अब गावोंमें कुलक (धनी किसान) पैदा होने लगे।

जारशाही समझने लगी थी, कि लेनिनके रूपमें उसे एक बडे शत्रुसे मुकाबला पडा है। १९०७ ई०के जाडोंमें सरकारने लेनिनकी गिरफ्तारीका हुक्म निकाला। लेनिन फिनलन्दमें गुप्त रीतिसे रहते थे। पार्टीकी सलाहपर लेनिनको देश छोड जाना पडा। गुप्त रीतिसे जिस जहाज द्वारा उन्हें बाहर जाना था, उसे पकडनेके लिये पुलिसकी आख बचाकर फिनलन्दकी बर्फ जमी खाडीके ऊपरसे चलना पडा। एक जगह कमजोर बर्फके कारण लेनिन मौतसे बाल-बाल बचे। आखिर वह जहाज द्वारा देश छोडकर प्राय दस सालके लिये विदेशमें जीवन बिताने चले गये। क्रातिके असफल होनेका एक प्रभाव यह हुआ, कि क्रातिके साथ सहानुभूति रखनेवाले बुद्धिजीवियोंमें निराशा और उसीके कारण विचारोंमें गडबडी पैदा हो गई। लेकिन तब भी बोल्शेविकोने अपनी पार्टीको नष्ट होनेसे बचानेके लिये पूरी कोशिश की। जनवरी १९१२ ई०में बोल्शेविकोंने स्वतत्र बोल्शेविक पार्टी स्थापित करनेके लिये प्राहा (चेकोस्लोवाकिया) में अपना सम्मेलन किया, जिसका बहुत भारी ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योंकि इसीके निर्णय द्वारा स्थापित बोल्शेविक पार्टीने पाच वर्ष बाद रूसमे सफल क्राति की। इस वक्त जो केन्द्रीय समिति नियुक्ति की गई थी, उसमें लेनिन, स्तालिन और य० म० स्वेद्लोफ मुख्य थे। इसी समयसे पार्टीके पुराने नाम "रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी"के साथ-साथ ब्रेकेटमें "बोल्शेविक" भी लिखा जाने लगा। इसी सम्मेलनके समय से बोल्शेविक नेताओंने दृढतापूर्वक कार्य आरम्भ किया। इन नेताओंमें लेनिन सर्वोपरि थे। उनके सहायकोंमें याकोव मिखाइल-पुत्र स्वेर्द्लोफ भी एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता था, जिसने कजान और उरालमें बहुत काम किया और पीछे साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया था। सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद यही रूसका प्रथम राष्ट्रपति हुआ। मिखाइल वासिली-पुत्र फ्रुजे दूसरा जबर्दस्त बोल्शेविक क्रातिकारी था, जिसने बोल्शेविक क्रातिके समय अपनी सैनिक सूझ और सगठनका बहुत अच्छा परिचय दिया। आज मध्य एसियाके किर्गिजिस्तान गणराज्यकी राजधानी फ्रुजेके नामपर मशहूर है। सेर्गेई मीरन-पुत्र किरोफ १८ वर्षकी उमरमें बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हुआ, और १९०५ ई०की क्रातिमें उसने जबदस्त भाग लिया। क्रातिके सफल होनेके बाद उसने बहुत-से जवाबदेह पदोंको सभाला, और द्वितीय पचवार्षिक योजनाके समय दुश्मनकी गोलीका शिकार हुआ। स्तालिनकी जन्मभूमि गुर्जीका ग्रिगोरी कान्स्तान्तिनो पुत्र ओर्जोनीकिद्जे १९०३ ई०में बोल्शेविक पार्टीमे शामिल हुआ। १९०५ ई० की क्रातिमें इसने बडी तत्परतासे भाग लिया। जब क्रातिके असफल होनेपर गिरफ्तारिया होने लगी, तो वह विदेशमें भाग जानेमें सफल हुआ। १९०९ ई०में वह ईरानमें था, और वहाकी क्रातिमें भी

उसने भाग लिया था। पीछे ईरानमे रहना असम्भव देखकर वह लेनिनके पास पेरिस चला गया। प्राहा (प्राग)के सम्मेलनके बाद वह फिर गुप्त रीतिसे रूसमे लौटकर काम करने लगा। व्याचिस्लाव मिखाइल-पुत्र मोलोतोफ १९०६ ई०में पार्टीमें सम्मिलित हुआ, जब कि अभी वह १६ वर्षका विद्यार्थी था और कालेजकी पढाई समाप्त नही कर पाया था। इसी समय १९ वर्षकी उमरमें उसे वलोग्दाम भेजकर नजरबन्द कर दिया गया, लेकिन तो भी उसने अपने कार्यको जारी रक्खा।

प्रथम क्रातिके असफल होनेके बाद चारो ओर राजनीतिक शिथिलता छा गई। उस समय गुप्त रहकर क्रातिकारी आन्दोलनको जारी रखनेवालोमे मिखाइल इवान-पुत्र कलिनिन और क्लिमेंती एफरेम-पुत्र वोरोशिलोफ भी थे। कलिनिनने कई साल जारशाही जेलोंमें विताये, और वह कई सालोतक सोवियतका राष्ट्रपति रहकर मरा। वह एक मामूली किसानका लडका था, जो चरवाही, साईसीके जीवनसे मजदूर और फिर क्रातिकारी बना। वोरोशिलोफके बारेमें हम बतला चुके है। वह १९०३ ई०में पार्टीमें शामिल हुआ, और १९०५ ई०में लुगान्स्कके विद्रोहका "लाल जेनरल" बना। उसे पकडकर १९०७ ई०में तीन सालके लिये साइवेरियामें निर्वासित कर दिया गया, लेकिन वह वहासे तीन वार निकल भागनेमें सफल हो अपने काममें जा डटा।

वैदेशिक सबध—उत्पादनके बेहतर साधनोंके कारण पूजीवादी व्यवस्था सामन्तवादी व्यवस्थासे कही अधिक समृद्धि और शक्तिकी वाहक है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम २० वी सदीके आरम्भमें इगलैण्ड और फ्रासका रूससे मुकाबिला करके देख सकते है। रूस यद्यपि जनसख्या और प्राकृतिक स्रोतोमें पश्चिमी युरोपके इन दोनो देशोके सम्मिलित साधनोंसे भी कही वेहतर स्थितिमे था, लेकिन पूजीवादी प्रगति अतएव उद्योग-धधोके विकासमें पिछडा होनेके कारण वह परमुखापेक्षी था। इसीके कारण जापानके साथ उसे बुरी तौरसे हारना पडा। लेकिन इस समय पश्चिमी युरोपमें जर्मनी आस्ट्रिया और इग्लैण्ड-फ्रासके दो प्रतिद्वद्वी पैदा हो चुके थे। जबतक जर्मनी छिन्न-भिन्न अवस्थामें था, तबतक फ्रास और इगलैण्ड अपने उपनिवेशिक स्वार्थोके कारण एक दूसरेके शत्रु बन रहे, लेकिन १८७० ई०में सयुक्त जर्मनीकी सेनाये पेरिसमें घुसकर फ्रासको यह समझानेमें सफल हुई, कि अब उसे खतरा ब्रिटिश चेनल पार पश्चिमसे नही, बल्कि पूरबसे है। इसका निश्चय होते ही अब फ्रास और इगलैण्ड एक दूसरेके नजदीक हो गये। उद्योग धधो तथा दूसरे खर्चोंके लिये जारशाहीको इगलैण्ड और फ्रासका मुह देखना पड रहा था। यदि पश्चिमी युरोपके इन दोनो देशो और जारशाही रूसमें मेल न होने देनेका कोई कारण हो सकता था, तो वह था तुर्की और ईरानके भीतर उनका स्वार्थ। लेकिन समझौता करना जरूरी था। बिस्मार्क जर्मनीकी एकता स्थापित करनेके बाद हट गया और अब हिटलरका पूर्ववर्ती कैसर विल्हेल्म II सारे विश्वपर नजर दौडाने लगा। जिस वक्त पश्चिमी युरोपकी दोनो शक्तिया दुनियाके बाजारो और राजनीतिक प्रभुत्वको आपसमे बांट रही थीं, उस समय जर्मनी सोता रहा। सैनिकवाद जर्मनीकी पुरानी परम्परासे चला आया था। सैनिक दृष्टिसे मजबूत होनेके लिये भी उद्योग धधोंके बढानेकी बडी अवश्यकता थी, इसलिये जर्मनीने बडी तेजीके साथ अपने कल-कारखानों और वैज्ञानिक खोजोको आगे बढाया। लेकिन जर्मनीके कल-कारखानोंकी चीजोको दुनियाके बाजारोंमे भेजकर नफा कमानेमें फ्रास और इगलैण्ड पग पगपर बाधक थे, इसलिये अब उसे अपना रास्ता निकालनेके लिये तलवार छोडकर दूसरा कोई साधन नहा रह गया था। कैसर विल्हेल्मने देखा, कि रूसका पश्चिमी गुटमे शामिल होना हमारे लिये अच्छा नही है। उधर निकोलोइ II भी देख रहा था, कि जर्मनीसे समझौता हो जानेपर तुर्की और ईरानमें हमारे लिये रास्ता खुल जायेगा। जार और कैसरने व्योकमें एक गुप्त सधिपत्रपर हस्ताक्षर भी किया, लेकिन सधिपत्रपर अमल करनेपर फ्रास और इगलैण्डसे वित्तीय सहायता बन्द हो जाती। फ्रास और इगलैण्डने १९०६ ई०में ढाई अरब फ्रॉकका ऋण देकर जापानी युद्धके परिणामस्वरूप दिवालिया बननेसे जारशाहीको बचा लिया था। उन्होंने पोर्ट्स्मौथ सधिमे भी शर्तोंको रूसके अनुकूल बनवानेमें सहायता दी थी। फ्रासका ईरान और तुर्कीके बारेमें भी रूससे समझौता हो गया। ईरानको इगलैण्ड और रूसने अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रोंमें बाट लिया—उत्तरी ईरानको रूसके प्रभावमें रखा गया और पेट्रोलवाले दक्षिणी क्षेत्रको

इंगलैण्डने अपने हाथमें रक्खा, बीचके थोड़ेसे भभागको तटस्थ क्षेत्रके तौरपर रहने दिया गया। इंगलैंड और रूसके साथ समझौता हो जानेपर फ्रांस और रूसके बीचमें भी समझौता होना आसान था। वस्तुत यह त्रिगुट समझौता १९०४ ई० ही में हो गया था, जिसके अनुसार इंगलैण्ड, फ्रांस और रूस जर्मनीके विरुद्ध एक होकर तैयार थे। अपने पिछड़ेपनके कारण रूस फ्रांस और इंगलैण्डके लगू-भगूकी स्थिति रखता था। उसके पश्चिमी दोस्तोंने अब भी रूसी नौसेनाको बासफोरस और दरेदानियाल द्वारा जाने-आनेकी स्वतन्त्रता नहीं दी थी। १९०८ की मई और जूनमें जार और इंगलैण्डके राजा एडवर्ड सप्तमने रेवेलमें मुलाकात कर जर्मनीके विरुद्ध मिलकर तैयारी करनेका समझौता किया। उन्होंने मकदूनियाको तुर्कीसे अलग करनेकी बातको भी मान लिया, लेकिन दरेदानियालके रास्तेको रूसी नौसेनाके लिये मुक्त करनेपर अभी भी समझौता नहीं हो पाया। उधर जर्मनी भी आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर अपने शत्रुओंकी चालोको व्यर्थ करनेके लिये तैयार था, जिसके लिये सबसे पहले बल्कानमें अपनी स्थितिको मजबूत करना जरूरी था। मई-जूनकी मुलाकात रूसको निश्चित तौरसे पश्चिमी गुटके साथ मिलानेमें सफल नहीं हो पाई थी, इसीलिये रूस अभी दूसरे पक्षकी ओर भी हाथ बढ़ानेकी कोशिशमें था। १९०८ ई० के वसंतमें आस्ट्रिया और रूसके विदेश-मंत्रियोंने आपसमें बातचीत करके निश्चय किया, कि आस्ट्रियाके बोसनिया और हेर्जेगोविनाके अधिकारपर जारशाही कोई आपत्ति नहीं करेगी, जिन्हें कि बर्लिन कांग्रेसके समय (१८७८ ई०)से ही आस्ट्रियाने तुर्कीसे छीनकर अपने हाथमें कर लिया था। बदलेमें आस्ट्रियाने दरेदानियाल्से रूसी युद्धपोतोंके स्वतन्त्रतापूर्वक आने जानेके दावेको मंजूर किया। लेकिन इस बातको इंगलैंड माननेके लिए तैयार नहीं था। आस्ट्रियाने उधर अपने वचनको बिना पूरा किये ही बोस्निया और हेर्जेगोविनाके सर्वोको अपने राज्यमें मिलानेकी घोषणा कर दी। जारशाही बल्कानके स्लावोंको अपने प्रभावक्षेत्रमें मानती थी, जिसके लिये बहुत समयसे बृहत्तर स्लाववादको प्रोत्साहन दे रही थी। १९०८-९ ई०में आस्ट्रियाके इस कामसे युद्ध घोषित होनेमें कोई कसर नहीं थी, लेकिन जापानसे हार खानेके बाद अभी रूस इस स्थितिमें नहीं था, कि युद्ध छेड़कर आस्ट्रियाको जवाब देता।

जापानसे रूसके हारनेपर एसियाकी परतंत्र जातियोंमें स्वतन्त्रताकी भावना बहुत बढ़ गई, और एक एसियाई जाति द्वारा युरोपके सबसे शक्तिशाली साम्राज्यके पराजित किये जानेके बाद वह यह माननेके लिये तैयार नहीं थी, कि युरोपकी जातियोंको काली जातियोंपर शासन करनेका अधिकार भगवान्की ओरसे मिला है। उधर १९०५-७ ई०में रूसमें क्रांतिकी जो प्रचंड आंधी आई थी, उसके कारण भी उसकी धाक ईरानके ऊपरसे हट गई। स्वतन्त्रता-प्रेमी ईरानी देख रहे थे, कि जब तक पुराने शाही शासनमें सुधार नहीं किया जाता, तबतक हम अपने देशको अंग्रेजों और रूसियोंके चंगुलसे नहीं निकाल सकते। २० वीं सदीके आरंभमें ईरानमें जो राष्ट्रीयताकी लहर फैली, उसका परिणाम १९०६ ई०की ईरानी क्रांति थी। शाहने पहले गोलियों और जंजीरोंद्वारा स्वतन्त्रताकी भावनाओंको दबाना चाहा, लेकिन अन्तमें उसमें असफल हो जनताकी संसद (मजलिस) को स्थापित करनेकी मांगको स्वीकार किया। लेकिन जारशाही इसे कब पसंद कर सकती थी? १९०८ ई०के ग्रीष्ममें कर्नल ल्याखोफने कसाकोंके ब्रिगेडको लेकर तेहरानमें पहुंच मजलिसपर तोपके गोले बरसाये, और शाहको मजलिस तोड़ देनेके लिये मजबूर किया। नवस्थापित मजलिसके कितने ही सदस्योंको फांसी दी गई, और कितनोंको जेलमें डाल दिया गया। इससे भी शाह लोगोंको दबा नहीं सका, और एक बच्चेको सिंहासनका अधिकारी बना रूसमें भाग गया। क्रांतिकारी ईरानको आगे न बढ़ने देनेके लिये इंगलैण्ड और रूसने मिलकर उसके चारों ओर आर्थिक घिरावा डाल दिया। दूसरी ओर ईरानी प्रतिगामियोंको सहायता और प्रोत्साहन दे १९११ ई०में प्रति क्रांतिके सफल होनेमें मदद दी। ईरानी क्रांति समाप्त कर दबा दी गई, और उत्तरी ईरानमें रूस और दक्षिणी ईरानमें इंगलैंडने अपनी-अपनी सेना रखनेके अधिकारको बनाये रक्खा।

ईरानमें जिस समय वहांके मध्यवर्गी राष्ट्रीयतावादी देशको नवजीवन देना चाहते थे, उसी समय पहलेसे चली आती राष्ट्रीय भावनाके प्रसार द्वारा अपनेको मजबूत देख तरुण तुर्कोंने १९०८ ई०में सैनिक विद्रोह द्वारा तुर्कीमें सफलता प्राप्त की। इस सफलताके फलस्वरूप तुर्कीकी सरकारमें वैधानिक

की। कंपनीके स्थानीय इंजीनियर तुलचिन्स्कीने बड़ी अच्छी तरह बातचीत करके मेंशेविक प्रतिनिधियोंको हड़ताल उठा लेनेपर राजी किया, लेकिन हड़ताल कमेटीके बोल्शेविक विचार रखने वाले सदस्योंने हड़तालके पक्षमें प्रचार जारी रखना चाहा। इसपर तै हुआ, कि हड़तालके बारेमें गुप्त मतदान द्वारा कमकरोंमे राय ली जाय। २५ मार्चके सवेरे दो बड़े-बड़े पीपे हरएक क्षेत्रमें रख दिये गये, जिनमेंसे एकपर लिखा था—"कामपर लौट जायेंगे", और दूसरेपर "कामपर नहीं लौटेंगे।" मजदूरोंको एक-एक कंकड़ अपने मतको प्रकट करनेके लिये पीपोंमें डालना था। जल्दी ही "काम पर नहीं लौटेंगे" वाला पीपा पत्थरोंसे भर गया, जब कि दूसरे पीपेमें केवल सत्रह पत्थर मिले। इसपर २७ मार्चको छ हजार कमकरोंने आम हड़ताल कर दी।

१७ (४) अप्रैलको हड़ताली प्रदर्शन करते हुये जब नदेज्दिन्स्क सुवर्ण-क्षेत्रके पास पहुंचे, तो सेनाने रास्ता रोक दिया। इंजीनियर तुलचिन्स्कीने कमकरोंको बिखर जानेके लिये कहा, जिसपर कुछ लोग रुक गये, लेकिन दूसरे एक छोटे रास्तेसे आगे बढ़े। इसी समय धड़ाधड़ गोलियां चलने लगीं। दो सौ पचास कमकर निहत हुये और दो सौ सत्तर आहत। यहां भी "खूनी रविवार" की तरह जारशाही अत्याचारने मजदूरोंमें भारी विद्रोहकी भावना पैदा कर दी, और सचमुच ही लेनाके गोलीकांडने अकर्मण्यताके बर्फको तोड़ दिया।

लेनाके गोलीकांडकी खबर सारे देशमें फैल गई। बोल्शेविकोंने फिर अपनी तत्परता दिखलानी शुरू की। इसी समय बोल्शेविकोंने अपने दैनिक "प्राव्दा" (अधिकार, सत्य) के निकालनेकी तैयारी की। "प्राव्दा" रूसी मजदूरोंका पत्र था। उसमें उन्हींकी भाषामें सरल लेख होते थे। यह कुछ मध्यमवर्गके शिक्षितोंके लिये पराई भाषामें कठिन शब्दोंके साथ अपनी मार्क्सवादकी पंडिताई दिखलानेके लिये नहीं निकाला गया था। १९१२ ई०के जनवरीमें "प्राव्दा" के लिये चन्दा होने लगा, जिसमें रूसके सभी भागोंके मजदूरोंने पैसा भेजे। चंदेमें इतनी सफलता हुई, कि लेनिनने उसके बारेमें लिखा—"प्राव्दाका निर्माण रूसी कमकरोंकी एकता, वर्गचेतना और शक्तिका सबसे बड़ा प्रमाण है।" "प्राव्दा"का प्रथम अंक स्तालिनके सम्पादकत्वमें ५ मई (२२ अप्रैल) १९१२ ई० को निकला, इसीलिये आज भी रूसमें ५ मईको कमकर-प्रेस-दिवस मनाया जाता है।

चतुर्थ दूमाका चुनाव—१९१२ ई० में तृतीय राज्यदूमाका कार्यकाल समाप्त होनेपर उसे तोड़ दिया गया, और चतुर्थ दूमाके निर्वाचनका निश्चय हुआ। कई सालोंसे स्तोलूपिनके हाथमें रूसी राज्यकी बागडोर थी। वह अपने अत्याचारोंके कारण लोगोंकी भारी घृणाका पात्र था। १९११ ई०में उसकी हत्या हो जानेपर फिर सभी जगह पुलिस अत्यचार होने लगा। दूमाका निर्वाचन ऐसे ही वातावरणमें हो रहा था। बोल्शेविकोंने दूमाके भाषणमंचके फायदेको अच्छी तरह समझ लिया था, इसलिये उन्होंने निर्वाचनका बायकाट नहीं किया। लेनिन उस समय पेरिसमें रहते रूसके भीतर राजनीतिक कार्यका संचालन कर रहे थे। उनको और नजदीक आनेकी जरूरत महसूस हुई, इसलिये १९१२ ई०के ग्रीष्ममें पेरिस छोड़कर वह पोलन्दके नगर क्राकोमें चले आये। निर्वाचनके बाद १९१२ ई०के अन्तमें चतुर्थ राज्यदूमाकी पहली बैठक हुई। इसमें प्रतिगामियोंकी संख्या और बल अधिक था—४१० सदस्योंमें १७० दक्षिणपथी थे, अक्तूबरियोंकी संख्या भी थी, जो दक्षिणपथके अनुयायी थे। कादेतोंकी संख्या पचास थी, इनमें और अक्तूबरियोंमें इतना ही अन्तर था, कि कादेत वामपक्षकी बातोंको इस्तेमाल करते थे, यद्यपि दूमाके भीतर उनका गठजोड़ा अक्तूबरियोंसे था। निम्न मध्यमवर्गके सदस्योंमें दस त्रुदोविकी और सात मेन्शेविक थे। मेन्शेविकोंने बोल्शेविकोंके साथ दूमाके भीतर एकता रखनेका प्रयत्न किया, लेकिन बोल्शेविक छ थे, इसलिये अपने एकके बहुमतका फायदा उठाकर मेन्शेविक बोल्शेविकोंको दूमामें बोलनेसे रोका करते थे, इसपर बोल्शेविक अलग हो गये। ४१० सदस्योंमें ६ की संख्या नगण्य है, लेकिन बोल्शेविक जनताके हितोंके पक्षपाती तथा जारशाही क्रूरताको नंगा करनेके लिये वहां पहुंचे थे, इसलिये उनके भाषणोंका असर लोगोंपर बहुत पड़ता था। अपने प्रचारका यहां बहुत अच्छा अवसर था, और शांतिसे पहलेके वर्षोंमें लेनिनके दलने इसका सब फायदा उठाते जनताके भीतर जारशाहीके विरुद्ध भारी घृणा पैदा करनेमें सफलता पाई। बोल्शेविक अपनी

शांतिको केवल रूसियोंके ही लाभके लिये नही चाहते थे, बल्कि उनका लक्ष्य था रूसके भीतर रहनेवाले सभी लोगोंको शोषण और उत्पीडनसे मुक्त करना। ऐसी हालतमे अ-रूसी जातियोके बारेमें अपने रुखको स्पष्ट कर देना बहुत जरूरी था, इसीलिये १९१३ ई० में दो महत्त्वपूर्ण कृतिया प्रकाशित हुई—लेनिनका "राष्ट्रीय प्रश्नपर समालोचनात्मक टिप्पणिया" और स्तालिनका "मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"। इन दो ग्रथोंने सारी जनताके सामने साफ कर दिया, कि साम्यवादी रूसमें "सभी जातियोंको आत्मनिर्णयका पूरा अधिकार होगा, और वह अपनी इच्छानुसार चाहें तो रूसी सघसे बाहर भी जा सकेंगी।"

विश्व-युद्धकी तैयारी—आनेवाले विश्व-युद्धमें रूसको अपनी ओर शामिल करनेके लिये पश्चिमी युरोपके दोनो गुटोंने किस तरह कोशिश की, इसके बारेमे हम बतला चुके हैं। युद्ध कैसर विलियम (विल्हेल्म)की सनकके कारण नही हुआ, बल्कि उसका ठोस कारण परस्पर विरोधी साम्राज्यवादी आर्थिक स्वार्थ थे। जर्मन साम्राज्यवादने तुर्कीकी ओर बढना चाहा। जर्मन बकने रेल द्वारा जर्मनीको तुर्कीसे मिलाना चाहा। जर्मन सैनिक अफसर तुर्की सेनाको सगठित और शिक्षित करके उसे रूस और इगलैण्डके विरुद्ध तैयार कर रहे थे। जर्मनीके पास नाममात्रके थोडेसे उपनिवेश (अफ्रीकामे) थे। जर्मनीकी सामरिक शक्तिसे भयभीत इगलैण्ड नही चाहता था, कि उसके उपनिवेशोंके बीचमें जर्मनीको कही भी पैर रखनेको मिले। वह चाहता था, कि जर्मनीकी नौसेना और व्यापारिक बेडेको नष्ट कर जर्मन उपनिवेशको अपने हाथमे कर ले। तुर्कीको मसोपोतामिया (इराक) और फिलस्तीनसे वचित करके मिस्रपर अधिकार करनेके लिये भी वह उतारू था। फ्रास जर्मनीकी सैनिक शक्तिको दबाकर अलसस्-लोरेन प्रदेशको जर्मनीसे छीनकर राइन नदीके बायें तटपर अधिकार करना चाहता था, और तुर्की-साम्राज्यकी बदरबाटमें इगलैण्डका सहभागी भी होना चाहता था। जारशाही रूसकी योजना थी बासफोरस और दरेदानियालपर अधिकार, तुर्कीके भीतरकी अर्मेनियापर हाथ साफ करना, तथा आस्ट्रिया-हगरी साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करते हुये बल्कान प्रायद्वीपपर अपने प्रभावको स्थापित करना। जापान भी चीनमे अपनी मनमानी करनेके लिये एक ऐसे बडे मौकेकी खोजमे था। लेकिन विश्वयुद्धका पहले एक छोटे-से युद्धमें रिहर्सल हुआ, यह था बल्कान-युद्ध।

बल्कान-युद्ध (१९१२-१३ ई०)—बोस्निया और हेर्जेगोविनाम आगे बढकर आस्ट्रियाने रूसको बहुत क्रुद्ध कर दिया था। जारशाही सर्बिया, बुल्गारिया, मोन्तेनिग्रो और ग्रीसको बल्कान-सघके रूपमें एकताबद्ध करके उन्हें तुर्कीके विरुद्ध तैयार करना चाहती थी। फ्रास भी इसमे उसका पृष्ठपोषक था, क्योंकि पश्चिमी देशोंके सामने सबसे बडी समस्या थी जनबल या सिपाहियों-की सख्या। वह समझता था, कि इस प्रकार बल्कानकी दस लाख सगीने हमे आसानीसे मिल जायेंगी। जर्मनी और आस्ट्रिया तुर्कीकी पीठपर थे। प्रथम बल्कान-युद्ध १९१२ ई०के शरद्में आरम्भ हुआ। १९११ ई०से ही इतालीके साथ तुर्कीकी लडाई छिडी हुई थी, इसलिये बल्कान-सघ उसीको आगे बढाते हुये युद्धमें कूदा। तुर्क नये हथियारोंसे सुसज्जित नवसगठित पूर्वी युरोपके सिपाहियोंके सामने जल्दी ही परास्त हो गये, लेकिन फिर विजेताओंमें आपसमें झगडा खडा हो गया, जिसके कारण अगले साल १९१३ ई०के ग्रीष्ममें दूसरा बल्कान-युद्ध विजेताओंके भीतर हो गया। बुल्गारियाने सर्बियापर आक्रमण कर दिया, जिससे नाराज होकर दूसरे बल्कान राज्य बुल्गारियाके विरुद्ध हो गये। फलत बुल्गारियाकी हार हुई, और उसे अगस्त १९१३ ई० में बुखारेस्त-सधिपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सधिके अनुसार बुल्गारियाके अपने कितने इलाके पडोसियोंको देने पडे, और अद्रियानोपोल बुल्गारियाके हाथसे निकलकर फिरसे तुर्कीके हाथमें चला गया। इसी युद्धमें सर्बियाने अल्बानियापर अधिकार कर लिया, लेकिन जब आस्ट्रियाने मैदानमें आनेकी धमकी दी, तो उसे छोडना पडा।

इन युद्धोंने बल्कानके स्लावोंको तुर्कीकी अधीनतासे मुक्ति प्रदान की, लेकिन अब युरोपकी बडी शक्तिया उनपर प्रभाव डालनेके लिये कशमकश कर रही थी। बर्लिन-बगदाद रेलवेके लिये जर्मन और फ्रेंच दोनों पूजी लगा रहे थे, और इन विरोधी स्वार्थोंके सघर्षने बल्कानको सचमुच ही

की। कंपनीके स्थानीय इंजीनियर तुलचिन्स्कीने बडी अच्छी तरह बातचीत करके मेन्शविक प्रतिनिधियोको हडताल उठा लेनेपर राजी किया, लेकिन हडताल कमेटीके बोल्शेविक विचार रखने वाले सदस्योंने हडतालके पक्षमे प्रचार जारी रखना चाहा। इसपर तै हुआ, कि हडतालके बारेमें गुप्त मतदान द्वारा कमकरोंमे राय ली जाय। २५ मार्चके सवेरे दो बडे-बडे पीपे हरएक क्षेत्रमें रख दिये गये, जिनमेंसे एकपर लिखा था—"कामपर लौट जायेंगे", और दूसरेपर "कामपर नही लौटेंगे।" मजदूरोको एक-एक कंकड अपने मतको प्रकट करनेके लिये पीपोमें डालना था। जल्दी ही "काम पर नहीं लौटेंगे" वाला पीपा पत्थरोसे भर गया, जब कि दूसरे पीपेमें केवल सत्रह पत्थर मिले। इसपर २७ मार्चको छ हजार कमकरोने आम हडताल कर दी।

१७ (४) अप्रैलको हडताली प्रदर्शन करते हुये जब नदेज्दिन्स्क सुवर्ण-क्षेत्रके पास पहुंचे, तो सेनाने रास्ता रोक दिया। इंजीनियर तुलचिन्स्कीने कमकरोको बिखर जानेके लिये कहा, जिसपर कुछ लोग रुक गये, लेकिन दूसरे एक छोटे रास्तेसे आगे बढे। इसी समय धडाधड गोलियां चलने लगी। दो सौ पचास कमकर निहत हुये और दो सौ सत्तर आहत। यहा भी "खूनी रविवार" की तरह जारशाही अत्याचारने मजदूरोंमे भारी विद्रोहकी भावना पैदा कर दी, और सचमुच ही लेनाके गोलीकांडने अकर्मण्यताके बर्फको तोड दिया।

लेनाके गोलीकांडकी खबर सारे देशमें फैल गई। बोल्शेविकोंने फिर अपनी तत्परता दिखलानी शुरू की। इसी समय बोल्शेविकोने अपने दैनिक "प्राव्दा" (अधिकार, सत्य) के निकालनेकी तैयारी की। "प्राव्दा" रूसी मजदूरोका पत्र था। उसमें उन्हीकी भाषामें सरल लेख होते थे। यह कुछ मध्यमवर्गके शिक्षितोंके लिये पराई भाषामें कठिन शब्दोके साथ अपनी मार्क्सवादकी पंडिताई दिखलानेके लिये नही निकाला गया था। १९१२ ई०के जनवरीमें "प्राव्दा" के लिये चन्दा होने लगा, जिसमें रूसके सभी भागोंके मजदूरोने पैसा भेजे। चंदेमें इतनी सफलता हुई, कि लेनिनने उसके बारेमें लिखा—"प्राव्दाका निर्माण रूसी कमकरोंकी एकता, वर्गचेतना और शक्तिका सबसे बडा प्रमाण है।" "प्राव्दा"का प्रथम अंक स्तालिनके सम्पादकत्वमे ५ मई (२२ अप्रैल) १९१२ ई० को निकला, इसीलिये आज भी रूसमें ५ मईको कमकर-प्रेस-दिवस मनाया जाता है।

चतुर्थ दूमाका चुनाव—१९१२ ई० मे तृतीय राज्यदूमाका कार्यकाल समाप्त होनेपर उसे तोड दिया गया, और चतुर्थ दूमाके निर्वाचनका निश्चय हुआ। कई सालोंसे स्तोलपिनके हाथमें रूसी राज्यकी बागडोर थी। वह अपने अत्याचारोंके कारण लोगोंकी भारी घृणाका पात्र था। १९११ ई०में उसकी हत्या हो जानेपर फिर सभी जगह पुलिस अत्यचार होने लगा। दूमाका निर्वाचन ऐसे ही वातावरणमें हो रहा था। बोल्शेविकोने दूमाके भाषणमंचके फायदेको अच्छी तरह समझ लिया था, इसलिये उन्होंने निर्वाचनका बायकाट नहीं किया। लेनिन उस समय पेरिसमें रहते रूसके भीतर राजनीतिक कार्यका संचालन कर रहे थे। उनको और नजदीक आनेकी जरूरत महसूस हुई, इसलिये १९१२ ई०के ग्रीष्ममें पेरिस छोडकर वह पोलंडके नगर क्राकोमें चले आये। निर्वाचनके बाद १९१२ ई०के अन्तमें चतुर्थ राज्यदूमाकी पहली बैठक हुई। इसमे प्रतिगामियोंकी संख्या और बल अधिक था—४१० सदस्योंमें १७० दक्षिणपंथी थे, अक्तूबरियोंकी संख्या सौ थी, जो दक्षिणपंथके अनुयायी थे। कादेतोकी संख्या पचास थी, इनमें और अक्तूबरियोमें इतना ही अन्तर था, कि कादेत वामपक्षकी बातोंको इस्तेमाल करते थे, यद्यपि दूमाके भीतर उनका गठजोडा अक्तूबरियोंसे था। निम्न मध्यमवर्गके सदस्योंमें दस त्रुदोविकी और सात मेन्शेविक थे। मेन्शेविकोने बोल्शेविकोंके साथ दूमाके भीतर एकता रखनेका प्रयत्न किया, लेकिन बोल्शेविक छ थे, इसलिये अपने एकके बहुमतका फायदा उठाकर मेन्शेविक बोल्शेविकोंको दूमामें बोलनेमे रोका करते थे, इसपर बोल्शेविक अलग हो गये। ४१० सदस्योंमें ६ की संख्या नगण्य है, लेकिन बोल्शेविक जनताके हितोंके पक्षपाती तथा जारशाही क्रूरताको नंगा करनेके लिये वहा पहुंचे थे, इसलिये उनके भाषणोंका असर लोगोंपर बहुत पडता था। अपने प्रचारका यहा बहुत अच्छा अवसर था, और क्रांतिसे पहलेके वर्षोंमें लेनिनके दलने इसका खूब फायदा उठाते जनताके भीतर जारशाहीके विरुद्ध भारी घृणा पैदा करनेमें सफलता पाई। बोल्शेविक अपनी

जातिको केवल रूसियोंके ही लाभके लिये नही चाहते थे, बल्कि उनका लक्ष्य था रूसके भीतर रहनेवाले सभी लोगोंको शोषण और उत्पीड़नसे मुक्त करना। ऐसी हालतमें अ-रूसी जातियोंके बारेमें अपने रुखको स्पष्ट कर देना बहुत जरूरी था, इसीलिये १९१३ ई० में दो महत्त्वपूर्ण कृतियां प्रकाशित हुई—लेनिनका "राष्ट्रीय प्रश्नपर समालोचनात्मक टिप्पणियां" और स्तालिनका "मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न"। इन दो ग्रंथोंने सारी जनताके सामने साफ कर दिया, कि साम्यवादी रूसमें "सभी जातियोंको आत्मनिर्णयका पूरा अधिकार होगा, और वह अपनी इच्छानुसार चाहें तो रूसी संघसे बाहर भी जा सकेंगी।"

विश्व-युद्धकी तैयारी—आनेवाले विश्व-युद्धमें रूसको अपनी ओर शामिल करनेके लिये पश्चिमी युरोपके दोनों गुटोंने किस तरह कोशिश की, इसके बारेमें हम बतला चुके है। युद्ध कैसर विलियम (विल्हेल्म)की सनकके कारण नही हुआ, बल्कि उसका ठोस कारण परस्पर विरोधी साम्राज्यवादी आर्थिक स्वार्थ थे। जर्मन साम्राज्यवादने तुर्कीकी ओर बढ़ना चाहा। जर्मन बगदाद रेल द्वारा जर्मनीको तुर्कीसे मिलाना चाहा। जर्मन सैनिक अफसर तुर्की सेनाको संगठित और शिक्षित करके उसे रूस और इंगलैण्डके विरुद्ध तैयार कर रहे थे। जर्मनीके पास नाममात्रके थोड़ेसे उपनिवेश (अफ्रीकामें) थे। जर्मनीकी सामरिक शक्तिसे भयभीत इंगलैण्ड नही चाहता था, कि उसके उपनिवेशोंके बीचमें जर्मनीको कहीं भी पैर रखनेको मिले। वह चाहता था, कि जर्मनीकी नौसेना और व्यापारिक बेड़ेको नष्ट कर जर्मन उपनिवेशोंको अपने हाथमें कर ले। तुर्कीको मसोपोतामिया (इराक) और फिलस्तीनसे वंचित करके मिस्रपर अधिकार करनेके लिये भी वह उतारू था। फ्रांस जर्मनीकी सैनिक शक्तिको दबाकर अलसस्-लोरेन प्रदेशको जर्मनीसे छीनकर राइन नदीके बायें तटपर अधिकार करना चाहता था, और तुर्की-साम्राज्यकी बंदरबांटमें इंगलैण्डका सहभागी भी होना चाहता था। जारशाही रूसकी योजना थी बासफोरस और दरेदानियालपर अधिकार, तुर्कीके भीतरकी अर्मेनियापर हाथ साफ करना, तथा आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करते हुये बल्कान प्रायद्वीपपर अपने प्रभावको स्थापित करना। जापान भी चीनमें अपनी मनमानी करनेके लिये एक ऐसे बड़े मौकेकी खोजमें था। लेकिन विश्वयुद्धका पहले एक छोटे-से युद्धमें रिहर्सल हुआ, यह था बल्कान-युद्ध।

बल्कान-युद्ध (१९१२-१३ ई०)—बोसुनिया और हेर्जेगोविनाम आगे बढ़कर आस्ट्रियाने रूसको बहुत क्रुद्ध कर दिया था। जारशाही सर्बिया, बुल्गारिया, मोन्तेनिग्रो और ग्रीसको बल्कान-संघके रूपमें एकताबद्ध करके उन्हें तुर्कीके विरुद्ध तैयार करना चाहती थी। फ्रांस भी इसमें उसका पृष्ठपोषक था, क्योंकि पश्चिमी देशोंके सामने सबसे बड़ी समस्या थी जनबल या सिपाहियों-की संख्या। वह समझता था, कि इस प्रकार बल्कानकी दस लाख संगीनें हम आसानीसे मिल जायेंगी। जर्मनी और आस्ट्रिया तुर्कीकी पीठपर थे। प्रथम बल्कान-युद्ध १९१२ ई०के शरद्में आरम्भ हुआ। १९११ ई०से ही इतालीके साथ तुर्कीकी लड़ाई छिड़ी हुई थी, इसलिये बल्कान-संघ उसीको आगे बढ़ाते हुये युद्धमें कूदा। तुर्क नये हथियारोंसे सुसज्जित नवसंगठित पूर्वी युरोपके सिपाहियोंके सामने जल्दी ही परास्त हो गये, लेकिन फिर विजेताओंमें आपसमें झगड़ा खड़ा हो गया, जिसके कारण अगले साल १९१३ ई०के ग्रीष्ममें दूसरा बल्कान-युद्ध विजेताओंके भीतर हो गया। बुल्गारियाने सर्बियापर आक्रमण कर दिया, जिससे नाराज होकर दूसरे बल्कान राज्य बुल्गारियाके विरुद्ध हो गये। फलतः बुल्गारियाकी हार हुई, और उसे अगस्त १९१३ ई० में बुखारेस्त-संधिपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। इस संधिके अनुसार बुल्गारियाके अपने कितने इलाके पड़ोसियोंको देने पड़े, और अद्रियानोपोल बुल्गारियाके हाथसे निकलकर फिरसे तुर्कीके हाथमें चला गया। इसी युद्धमें सर्बियाने अल्बानियापर अधिकार कर लिया, लेकिन जब आस्ट्रियाने मैदानमें आनेकी धमकी दी, तो उसे छोड़ना पड़ा।

इन युद्धोंने बल्कानके स्लावोंको तुर्कीकी अधीनतासे मुक्ति प्रदान की, लेकिन अब युरोपकी बड़ी शक्तियां उनपर प्रभाव डालनेके लिये कशमकश कर रही थीं। बर्लिन-बगदाद रेलवेके लिये जर्मन और फ्रेंच दोनों पूंजी लगा रहे थे, और इन विरोधी स्वार्थोंके संघर्षने बल्कानको सचमुच ही

बारूदका ढेर बना दिया था, जिसमें एक चिनगारी पड जानेसे भीषण विस्फोटक हो जानेका भय था। सभी युरोपीय शक्तिया हथियार बढानेपर आख मूदकर खर्च कर रही थी। जारशाहीने १९१४ ई०मे साढे सत्तानबे करोड स्वर्ण रूबल सेनाके लिये रक्खा था। १९०७ ई० से १९१३ ई० तक उसने इस मदमें चार अरब रूबल खर्च किये। इगलैण्ड भी अपनी शक्तिको इसी तरह बढानेमें लगा हुआ था। अपने नौसैनिक बलको बढानेके लिये १९०६ ई०में उसने प्रकाड ड्रेडनाट युद्धपोत बनाया, जिसका अनुकरण करते जर्मनी और फ्रासने भी अपने-अपने ड्रेडनाट बनाने शरू किये। फ्रासीसी पूजीकी मददसे जारशाहीने भी नौसैनिक निर्माणके लिये बहुत बडा प्रोग्राम रक्खा, लेकिन उसकी मद गतिके कारण अभी एक भी युद्धपोत तैयार नही हुआ था, जब कि १९१४ ई०का विश्वयुद्ध छिड गया। प्रोफेसर न० ई० जूकोव्स्की पहला आदमी था, जिसने विमान-क्रियाका आविष्कार किया, लेकिन जारशाहीने उससे लाभ नही उठाया। प० न० नेस्तोरोफने पहिली बार कलैया मारकर अपने हवाई जहाजको उडाया, लेकिन जारशाही इसके महत्वको नही समझ पाई। यही नही, वैसा करनेमें एक छोटे से पुर्जेके खो जानेके लिये नेस्तोरोफको "अनुशासनहीनता" के लिये जुरमानेका दड दिया गया।

जैसे-जैसे युद्ध-घोषणाके दिन नजदीक आ रहे थे, वैसे ही वैसे रूसके भीतर जनतामें असतोष भी फैलता जा रहा था। १९१४ ई० के आरम्भमें सर्वहारोंके क्रातिकारी सघर्ष जगह-जगह होने लगे। ९ जनवरीको "खूनी रविवार"के वार्षिकोत्सवको ढाई लाख मजदूरोंने हडताल करके मनाया। १९१४ ई० के पूर्वार्धमे पद्रह लाख मजदूरोंने हडताल की। १९१४ ई० के ग्रीष्ममे बाकूके तैल क्षेत्रमें भी एक बडी राजनीतिक हडताल हुई, जिसे तोडनेकी जारशाहीने बहुत कोशिश की। बोल्शेविकोंके अपील करनेपर बाकूके हडतालियोंकी सहानुभूतिमें पीतरबुर्गके नब्बे हजार कमकरोंने काम छोड दिया, और ११ जुलाई को तो राजधानीके दो लाख मजदूरोंने हडताल करके अपनी सभाओंमें नारा लगाया—"बाकूके साथियो, हम तुम्हारे साथ है।" "बाकूके कमकरोंकी विजय हमारी विजय है।"

प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०)—बल्कानका बारूदका ढेर तैयार ही था। एक ओर जर्मनी और आस्ट्रिया, दूसरी ओर इगलैण्ड, फ्रास और रूस नखसे शिखतक हथियारोंसे लैस होकर खडे थे। सेराजिवाम आस्ट्रियाके युवराजकी हत्याने बारूदमें चिनगारी डालनेका काम किया, और जुलाई १९१४ ई० में जर्मनीके भडकनेपर महायुद्ध छिड गया। इस युद्धके दो दलोंमें एक था चतुर्दलीय पक्ष, जिसमे जर्मनी, आस्ट्रिया-हगरी, बुल्गारिया और तुर्की शामिल थे, दूसरा त्रिदलीय पक्ष, जिसमें इगलैण्ड, फ्रास और रूसके साथ सर्विया और बेल्जियम भी सम्मिलित थे। १९१४ ई० म ही जापान भी त्रिदलीय गुटमें शामिल हो गया, इताली १९१५ ई०में युद्धमें कूदा, और अन्तमें १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिकाने भी शामिल हो इसे विश्वयुद्ध बना दिया। प्रथम विश्वयुद्धमें छोटे-बडे तेंतीस देश शामिल हुये, ७४० लाख सैनिक युद्धके लिये चालित किये गये, जिनमें तीन करोड प्राणोकी हानि हुई—इनमें लाखो भारतीय भी थे। पैसेके रूपमें इसमें तीन अरब रूबल धन स्वाहा हुआ।

त्रिदलीय गुटमें पहले ही निश्चय हो गया था, कि युद्ध छिडते ही रूसको पूर्वमे आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण करना होगा। युद्धके आरम्भ होते ही युरोपमें तीन मोर्चे बन गये। पश्चिमी मोर्चा उत्तर समुद्रसे स्वीजलैण्ड तक फैला हुआ था, जिसपर इगलैण्ड और फ्रासकी सेनायें जर्मन सेनाओंका मुकाबिला कर रही थी। पूर्वी मोर्चा वस्तुत रूसी मोर्चा था, जो बाल्तिक समुद्रमे रूमानिया तक फैला हुआ था। इनके अतिरिक्त एक बल्कान-मोर्चा था, जो दन्यूब नदीके किनारे-किनारे चला गया था। रूसी मोर्चा उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दो भागोमें विभक्त था। उत्तर-पश्चिमी मोर्चा बाल्तिक समुद्रमे बुग नदीके निम्न भागतक चला गया था, और दक्षिणी-पश्चिमी मोर्चा रूस-आस्ट्रियाके सीमातको लेते रूमानिया तक फैला हुआ था। इन्ही दोनों मोर्चोंमें रूसको आक्रमण करना था। बल्कान मोर्चेपर आस्ट्रियाकी सेनाका मुकाबिला सर्वियाकी सेनाको करना था। जर्मनीने अपने सुभीतेको देखकर फ्रासकी राजधानी पेरिसकी ओर जल्दी बढनेके लिये बेल्जियमकी तटस्थता भग कर दी, और इसके कारण फ्रास और इगलैण्डकी सेनाके लिये मुकाबिला बहुत जबदस्त हो गया।

रूसी सेनाने जर्मन सेनाओंको पश्चिमकी ओर बढनेसे रोकनेके लिये उसके पूर्वी सीमान्तपर आक्रमण किया। पश्चिममें प्रगति जारी रखते हुये जर्मनोंने इसी समय जेनेरल समसानोफकी रूसी सेनाको मसूरी झीलों—दलदली भूमिमें घेर लिया। लाखों रूसी मारे गये। समसानोफने लज्जाके मारे आत्म-हत्या कर ली। जारशाहीके लिये यह कोई अच्छा सगुन नहीं था। समसानोफकी सेनाको हरानेके बाद जर्मनोंने रेनेनकाम्फकी अधीनतामें लडती रूसी सेनापर आक्रमण किया, और वह भी एक लाख दस हजार आदमियोंको खोकर पीछे हटी। रूसियोंने इतनी भारी क्षति उठाई, लेकिन इसके लिये जर्मनीको अपनी सेनाका काफी भाग पूर्वकी ओर भेजना पडा, जिसके कारण पेरिस बच गई। पश्चिमी साम्राज्यवादियोंकी मनोकामना पूरी हुई, रूसने सारी चोटें अपने ऊपर लेकर फ्रांसको पराजित होनेसे बचा दिया।

उत्तर-पश्चिमी मोर्चेपर रूसी सेनाके असफल आक्रमण करते समय ही अगस्त १९१४ ई० में चार रूसी अक्षौहिणियोंने दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर आस्ट्रियाके विरुद्ध आक्रमण किया। यहां सफलता मिली, और शत्रुओंको हराकर उन्होंने ल्वोफ और गलिचपर अधिकार कर लिया, करीब-करीब सारी गलिसिया रूसी सेनाके हाथमें आ गई, लेकिन सितम्बरके अन्तमें जर्मन सेनायें आ धमकी, जिससे दिसम्बर १९१४ ई० के मध्य तक रूसी सेनाओंकी प्रगति रुक गई। अब दोनों ही पक्ष एक दूसरेको ढकेलनेमें असमर्थ थे। लेकिन १९१४ ई०के आरम्भमें काकेशसका एक नया मोर्चा तैयार हो गया था। दो जर्मन युद्धपोत "गोयेबेन" और "ब्रेस्ला" भूमध्यसागरसे कारासागरमें घुस आये। तुर्क जर्मनीके पक्षमें थे, इसलिये उन्हें दरेदानियाल पार होनेमें कोई अडचन नहीं हुई। तुर्कोंने रूसके विरुद्ध जर्मनीसे संधि की थी, इसलिये उसने रूसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। "गोयेबन' और "ब्रेस्ला"ने अदेसा और फ्योदोसियापर बमवर्षा की, तुर्क सेनाने भी अपना प्रभुत्व दिखलाना चाहा, लेकिन दिसम्बर १९१४ ई०में सरिकामिशके युद्धक्षेत्रमें उसे रूसियोंने बुरी तरह हराया। दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर कितने ही समय तक दोनों पक्षोंकी प्रगति रुके रहनेके बाद १९१५ ई०के अप्रैलके अन्त और मईके आरम्भमें एक जर्मन सेना गोर्लिच और तरनोफके बीच रूसी मोर्चे-का भेदन करनेमें सफल हुई, जिसके कारण रूसी सेना जल्दीसे पीछे हटनेके लिये मजबूर हुई। अब सारे रूसी मोर्चेपर जर्मन छा गये। आस्ट्रियन सेनाने पर्जेमिसल और ल्वोफको ले लिया, जुलाईमें एक जर्मन सेनाने इवानगोरदके किलेपर अधिकार किया, जुलाईके अन्तमें वारसा (वरसावा) और ब्रेस्त-लितोव्स्क जर्मनोंके हाथमें चले गये, फिर आगे बढते हुए उन्होंने ग्रोद्नो और विल्नोसूपर अधिकार किया। १९१५ ई०के शरद्में इस प्रकार पोलन्द, लिथु-वानिया और बाल्तिक प्रदेशोंके कितने ही भाग जर्मन और आस्ट्रियन सेनाके हाथमें चले गये। १९१५ ई० के मईसे अक्तूबरके छ महीनेमें डेढ लाख रूसी सैनिक मारे गये, और दस लाख आहत या बंदी हुये। इस प्रकार १९१४-१५ ई०में पूर्वी मोर्चेपर रूसी सेनाकी भारी हार हुई। रूसके लिये अब कोई आशा नहीं थी। लोगोंमें युद्धके भीषण संहार, पराजय तथा जारशाही शासनके अत्याचारोंके विरुद्ध भारी असंतोषकी आग भडक उठी। बोल्शेविक पहलेसे ही युद्धके विरोधी थे। जिस वक्त युद्ध छिडा, उस वक्त लेनिन आस्ट्रियामें थे। आस्ट्रियनोंने लेनिनको पकडकर अपने देश से निकाल दिया, और वह स्वीजर्लेण्ड चले गये। बोल्शेविक इस युद्धको अनुचित युद्ध कहते थे, क्योंकि वह परतंत्र देशोंकी मुक्ति या स्वतंत्र देशोंकी प्रतिरक्षाके लिये नहीं लडा जा रहा था, बल्कि उसका उद्देश्य था विदेशी राज्यों और जातियोंको जीतकर गुलाम बनाना।

रूसमें चारों ओर आर्थिक अव्यवस्था फैली हुई थी। उसकी पिछडी हुई आर्थिक-व्यवस्था तथा उद्योग-धंधोंकी निर्बलताके कारण जर्मनोंसे हारनेके सिवा रूसकी सेनाओंके लिये और कोई रास्ता नहीं था। युद्धके कारण कोयलेका अभाव-सा हो गया, जिससे फैक्टरियों और मिलोंने कामको कम कर दिया। १९१६ ई०में धौंकू भट्ठोंने लोहा तैयार करना बन्द कर दिया—फौलादके कारखाने देशके लिये आवश्यक धातुका आधा ही पैदा करते थे। रेलें युद्ध-कालीन यातायातको ठीकसे कायम नहीं रख सकी। सेनायें ऐसी अस्त व्यस्त अवस्थामें पीछे हटी, जिसके कारण बहुतसे इंजन और गाडियां दुश्मनोंके हाथोंमें आनेसे नहीं बचाई जा सकी। सैनिकोंके सेनामें भर्ती होनेके कारण

कृषिकी उपज भी पहलेसे बहुत कम हो गई, वयस्क पुरुषोमेंसे ४७ प्रतिशत (१४० लाख) सेनामें भर्ती किये गये थे। खेतीके लिये उपयोगी घोड़ोमें पचास लाखकी कमी हो गई थी, फिर कृषिकी उपज क्यो न कम होती? १९१६ ई०मे १९०९ ई०की अपेक्षा पचासी प्रतिशत ही खेत बोये गये। लड़ाईके लिये सामान खरीदनेके वास्ते इगलैण्ड, फ्रास और युक्त राष्ट्र अमेरिकाको ७७६९० लाख रूबल देना था, यह चोट सबसे भयकर थी। युद्धक्षेत्रमें घोर पराजय और देशके भीतर आर्थिक प्रलय दोनोने मिलकर रूसी शासकों और पूजीपतियोका होश बिगाड दिया। रूसी सैनिकोंके खूनकी गिनती न करके जारशाहीके मित्र अपने कर्जोको जल्दी उगाहना चाहते थे। इगलैण्डका तीन अरब रूबल कर्जा हो गया था, जिसके बदलेमे उसने जारशाही सरकारसे उसकी सरक्षित सुवर्ण निधिको लदन भेजनेके लिये माग की, और साथ ही वह इसपर जोर दे रहा था, कि रूस और भी ताजी सेनायें युद्धक्षेत्रमें भेजे। १९१६ ई०में फ्रासने अपने प्रतिनिधि भेज चार लाख रूसी सेना फ्रासके भीतर लड़नेके लिये मागी। यदि क्राति न हो गई होती, तो जारशाही रूस फ्रासकी मागको ठुकरा नही सकता था।

इस तरहकी आर्थिक अराजकता और सकटको बर्दाश्त करना जनताकी शक्तिके बाहर था। जनताके सबसे जागरूक भाग मजदूरोंने अपने मनोभावको १९१५ ई०के बसतसे ही जगह-जगह हड़ताल करके प्रकट करना शुरू कर दिया था। ९ जनवरी १९१६ ई०का "खूनी रविवार" उन्होंने एक बड़ी राजनीतिक हड़तालके रूपमे मनाया। अक्तूबर १९१६ ई०में ऐसी हड़ताल और प्रदर्शन बड़े जोरदार होने लगे, और कमकरोने नारा लगाना शुरू किया—"युद्ध बन्द करो", "स्वेच्छाचारिता का क्षय।"

सेनाका मनोभाव कैसा था, इसका पता सिपाहियोंके अपने घरोमे भेजे पत्रों द्वारा मिलता था। एक सिपाहीने लिखा था—"आजके सिपाही वह सिपाही नही है, जो कि जापानी-युद्धके समय थे। दासताभरी आज्ञाकारिताके बाहरी परदेके भीतर उनके दिलोंमे भारी गुस्सेकी आग धधक रही है, एक छोटी-सी दियासलाई जलाने भरकी देर है, और वह भड़क उठेगी।" और दियासलाई जलानेका काम बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे कर रहे थे। उनमेंसे कितने ही सेनामे काम कर रहे थे। म० व० फ्रुजे जैसा युद्धकौशल पटु क्रातिकारी १९१५ ई०मे जेलसे भाग निकला था। उसने मिन्स्क नगरमें एक बोल्शेविक सगठन कायम करके पश्चिमी मोर्चेके सिपाहियोंके साथ घनिष्ठ सबध स्थापित किया। अ० अ० ज्दानोफ सेनाके लिये चालित किया गया था। वहा जाकर उसने सेनामे बोल्शेविक प्रचार शुरू किया। व० व० विवविशियेफ और स० म० किरोफ काकेशस और समारामें विद्रोह फैला रहे थे। ल० म० कगानोविच पहले कियेफ और बादमें एकातेरिनोस्लावमे मजदूरो और सैनिकोंके बीचमें प्रचार कर रहा था। इस प्रकार मालूम होगा, कि बोल्शेविक इस स्थितिसे फायदा उठानेके लिये तैयार थे।

मध्य एसियामें युद्धका प्रभाव—युद्धके कारण जो आर्थिक कठिनाइया युरोपीय रूसमे पैदा हुई थीं मध्य-एसिया उसके प्रभावसे मुक्त कैसे रह सकता था? चीजोंके दाम महगे हो गये थे, करके भारसे लोग वैसे ही दब हुये थे, और अब युद्धके कारण उसे और बढा दिया गया था। रूसी पूजीपतियोको कपासकी जरूरत थी, इसलिये मध्य-एसियाकी कृषि-भूमिमे कही-कही आधेसे ज्यादाको कपासके खेतोंमें परिणत कर दिया गया था, जिसके कारण पर्याप्त अनाज पैदा नही हो सकता था, और देशमें अन्नका अकाल फैला हुआ था। रूसी सरकार और उसके गोरे अफसर किर्गिज और कजाक घुमन्तुओंको उनकी चरागाहोंसे वचित करके वहा रूसी किसानोंको बसा रहे थे। १९१५ ई०में पैंतालीस लाख एकड बढिया जमीन कजाकों और किर्गिजोसे छीनकर रूसी जमीदारो, सरकारी अफसरो और कुलकों (धनी किसानों) को दे दी गई। युद्धके लिये रिसालाके वास्ते घोड़ों और खानेके लिये पशुओंको छीन-छीनकर मध्य एसिया और कजाकस्तानके चरवाहोकी अवस्थाको और भी बुरा बना दिया गया। लोग पहले हीसे "त्राहि मा, त्राहि मा" कर रहे थे। इसपर जून १९१६ ई०मे राजाज्ञा निकली, कि १९ से ४३ वर्षके उमरवाले पुरुषोंको फौजमे भर्ती होना पड़ेगा, और उन्हें युद्धक्षेत्रमे खाइया खोदने तथा दूसरे कामोंमें लगाया जायेगा। इससे पहले कानूनके अनुसार रूस-भिन्न जातियोंसे सैनिक सेवा नही ली जा सकती थी। भला जारशाही द्वारा स्थापित अ

पीडित उज्बेक, कजाक, किर्गिज, तुर्कमान क्यो सैनिक सेवा करनेके लिये तैयार होते ? सो भी ऐसे समयमे, जब कि खेतमे फसल काटनेके लिये तैयार थी। उज्बेक और कजाक विद्रोह करनेमे पहले थे। ताशकन्द और समरकन्द जिलेके गावो और कस्बोमे उज्बेकोने सरकारी कचहरियो और दफ्तरोंपर आक्रमण किया, और सैनिक भरतीकी सूचीको जला दिया। जुलाई १९१६ ई० के मध्यमें विद्रोह सारे फरगानामें फैल गया। समरकन्द जिलेमे जीजकके पास जारशाही सेनाके साथ बाकायदा लडाई हुई, जिसमे रूसी सेनाने तोपोका इस्तेमाल किया। विद्रोहियोने वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) और ताशकन्दके बीचके यातायातको काट दिया, और उनके विरुद्ध भेजी गई हथियारोकी ट्रेन लूट ली। इन हथियारोसे हथियारबन्द होकर किसान रूसी सेनासे लडनेके लिये तैयार हो गये, और अक्तूबरसे पहले जारशाही उनके विद्रोहको दबा नही सकी। तुरगाई (आधुनिक अकत्यूबिन्स्क) जिलेके कजाकोका विद्रोह सितम्बर १९१६ ई० में शुरू हुआ। उसके दबानेमें जारशाहीको काफी कठिनाई उठानी पडी। इस विद्रोहका नेता अमनगेल्दी ईमानोफ था। जब जिलेके कजाकोने सेनामे भरती होनेसे इन्कार कर दिया, तो रूसी राज्यपालने स्वय जाकर उन्हें समझाना चाहा, इसपर अमनगेल्दीने उससे पूछ दिया—"इजाजत दीजिये सरकार, एक प्रश्न पूछनेकी। अपने अज्ञानके कारण हम समझ नही पाते, कि इस युद्धमे शामिल हो हम किसकी प्रतिरक्षा करेंगे ?" राज्यपालने अमनगेल्दीको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया, लेकिन वह वहासे अन्तर्धान हो गया, और थोडे ही समयमे उसने काफी संख्यामे विद्रोहियोको सगठित कर जारशाही सेनाका मुकाबला पहलेपहल किजिलकुल (लाल सरोवर) मे किया। लडाई सारे दिन होती रही, सेनाको पीछे हटना पडा। अक्तूबर १९१६ ई०के अन्तमे अमनगेल्दी और उसके साथियोने तुरगई नगरको घेर लिया, लेकिन वह उसके ऊपर अधिकार नही कर सके। वहासे हटकर अमनगेल्दीने बतबकरा गावमे किलेबन्दी करके उसे अपना केंद्र बनाया। वहा उसने हथियारोंके बनानेके लिये एक मिस्त्रीखाना स्थापित किया, जिसमे कारीगर रात-दिन लगकर तलवार और दूसरे हथियार बनाने लगे। उसने कजाकोंको बन्दूक चलाना और फौजी कवायद सिखाना भी शुरू किया। फरवरी १९१७ ई०के मध्यमें एक काफी बडी सेना अमनगेल्दीके विरुद्ध भेजी गई, जिसने बतबकरापर अधिकार कर लिया, लेकिन विद्रोहियोंको उनके बाप-दादोका दश्त (निर्जन भूमि) शरण देनेके लिये तैयार था। बोल्शेविक-क्रांतिके अब आठ ही महीने रह गये थे। उतने दिनों तक किसी तरह लडते और आत्मरक्षा करते अमनगेल्दी और उसके आदमियोंने बिताया। बोल्शेविक-क्रातिके समय अमनगेल्दी बोल्शेविकोमें शामिल हो गया, और बोल्शेविक पार्टीका सदस्य बन क्रातिके लिये लडते हुये उसने वीरगति प्राप्त की।

तुर्कमानोमें भी सघर्ष देरतक रहा। तुर्कमान प्राय सारे घुमन्तू थे, इसलिये अपने विरुद्ध भेजी सेनासे आसानीसे बचते हुये वह तुर्कमानिस्तानकी विस्तृत तथा बहुत कुछ निर्जन और रेगिस्तानी भूमिमें घूमते रहे, और कही-कही विद्रोही ईरानकी सीमाके भीतर भी चले गये। जारशाही सैनिकोने जहा भी मौका मिला, तुर्कमानोंके डेरोको जला दिया, उनकी सम्पत्ति और पशुओको छीन लिया। इस अत्याचारके कारण कितने ही इलकोमें जनसख्या आधी रह गई। महाराज्यपाल कुरोपत्किनने ३४७ विद्रोहियोंपर मुकदमा चला ५१ को फासी दिलवा दी। जारशाहीने इस तरह अपने अन्तिम दिनोंमें मध्य-एसियाके लोगोपर भीषण अत्याचार किये। जहा दक्षिणवाले अपने परिवारों और पशुओको लेकर ईरान और अफगानिस्तानमें भागनेके लिये मजबूर हुये, वहा कितने ही हजार किर्गिज और कजाक चीनी तुर्किस्तानके भीतर भाग गये। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद उनमेंसे अधिकाश फिर अपनी जन्मभूमिमें लौट आये।

फर्वरी-क्रान्ति—अन्तिम दिनोंमें जारशाही शासन सचमुच ही जिन्दा मही लाश था। ऊपरसे नीचेतक सारे शासक आकठ भ्रष्टाचार और अत्याचारमें मग्न थे। मिथ्या विश्वासकी यह हालत थी, कि एक ढोंगी बदमाश ग्रेगोरी रस्पुतिन जारका गुरु बन गया। रस्पुतिन साइबेरियाका एक किसान तथा भूतपूर्व घोडाचोर था। ईसाई साधु बनकर मठोंमें इधर-उधर घूमते उसने देख लिया, कि लोगोंकी अंधश्रद्धासे बहुत फायदा उठाया जा सकता है, इसीलिये वह त्रिकालज्ञ महात्मा बन गया।

देहातसे उसकी प्रसिद्धि जल्दी ही राजधानीमें पहुची। जारिना सतों और सिद्धोंकी वडी भक्तिन थी। उसके इकलौते पुत्रको डाक्टरोने असाध्य रोगी बतला दिया था, इसलिये वह किसी सतकी करामातसे अपने पुत्रकी रक्षा कराना चाहती थी। रस्पुतिनके किसी गणने जारिनाके पास उसकी लम्बी-चौडी तारीफ की। जारिनाने उसे राजमहलमें बुला लिया, और घोडाचोरने ऐसा जादू चलाया, कि जारिना इस ढोंगीको दूसरा ईसा मसीह समझने लगी। घरके काममें ही नहीं, बल्कि राजके कारबारमें भी रस्पुतिनकी राय ली जाती। उसकी कृपाके बलपर कितने ही लोग बडे-बडे दर्जोंपर पहुचे। इस निरक्षरप्राय ढोंगीके कहनेपर जार मत्रियों तकको नियुक्त और बर्खास्त करता था, जैसा अभी हाल ही में पजाबके एक मुख्यमत्रीके यहा देखा गया। जिस वक्त युद्धक्षेत्रमे रूसी सेनाये हारपर हार खा रही थीं, उस समय जार-परिवार रस्पुतिनकी भविष्यद वाणियोंका तिनकेका सहारा ले रहा था। उसके हदसे ज्यादा बढे हुये प्रभावको देखकर जारवशी महाराजुल तथा उच्चकुलीन लोग भी रस्पुतिनको खतरेकी चीज समझने लगे। उनके ख्यालमें सारी बुराइया और विपदाओंका कारण वही बदमाश था। उसके विरुद्ध षडयत्र करके जारके अपने सबधियो तथा दूसरोने १७ दिसम्बर १९१६ ई०को रस्पुतिनको मार डाला, और उसे बर्फ जमी हुई नेवा नदीमें छेद करके बहती धारामे डाल दिया। लेकिन जारशाहीके राजनीतिक और सैनिक ढाचोंको निबल करनेका कारण रस्पुतिन नही था, और न उसकी वजहसे मजदूरो और किसानोमे देशव्यापी असतोष फैला था। पिछडा हुआ रूस एक आधुनिक महायुद्धके भारको उठाने योग्य नही था। बहुसख्यक सैनिक बिना बन्दूकोंके थे। वह कैसे लडते? रेलोंका यातायात बन्द-सा हो गया था, कारखानोको कच्चा माल और ईधन नही मिलता था। आहार मिलना मुश्किल हो गया था, फिर लोग क्यों न विद्रोह करनेके लिये तैयार होते, और उस अवस्थामें, जब कि सुसगठित क्रातिकारी व्यापक रूपमे उनमे प्रचार करते मुक्तिका रास्ता दिखला रहे थे? ९ जनवरी १९१७ ई० को "खूनी रविवार"का पर्व-दिन पडा। उस दिन राजधानी पेत्रोग्रादमें युद्धके विरुद्ध भारी प्रदर्शन हुआ। मास्को, बाकू, निजनी-नवोगोरद तथा दूसरे नगरोंमें भी लोगोंने अपने विरोधी भावोंको "खूनी रविवार"के विशाल जलूसोंद्वारा प्रकट किया। मास्कोमें लाल झडा लेकर "युद्ध बन्द करो" का नारा लगाते हजारों कमकर सडकोंपर निकल पडे, जिन्हे सवार-पुलिसने जबदस्ती तितर-बितर कर दिया। कितने ही नगरोंमे हडतालें हुई। मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी शासनमे परिवर्तन करना चाहते थे, लेकिन इस समय युद्धके पक्षमें होना वह अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानते थे। १४ फर्वरी १९१७ ई० को दूमाके उद्घाटनके दिन बोल्शेविकोंकी प्रेरणासे भारी सख्यामे मजदूर सडकोमे "स्वेच्छाचारिताकी क्षय", "युद्ध बन्द करो" के नारे लगाते निकल आये। फर्वरीके उत्तरार्धमे पेत्रोग्रादमे क्रातिकारी आन्दोलन बडी तेजीसे बढा। १८ फर्वरीको पुतिलोफके कारखानेमें तीस हजार मजदूरोंने हडताल कर दी, और २३ फर्वरीके सवेरे जब उन्होने अपना जलूस निकाला, तो दूसरे कारखानोंके भी बहुतसे मजदूर शामिल हो गये।

पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक पार्टीकी कमीटीने लोगोंसे कहा, कि ८ मार्च (२३ फर्वरी)को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरिनोका दिवस राजनीतिक हडताल और प्रदर्शनोंके साथ मनाना चाहिये। उस दिन ९०००० स्त्री-पुरुषोने काम छोड दिया। अगले दिन ९ मार्च (२४ फर्वरी) को दो लाख मजदूरोने हडताल कर दी, और नगरके सभी भागामे क्रातिकारी सभाये होने लगी। पुलिसने सावधानी करते हुये नेवा नदीके सभी पुलोंपर अधिकार कर रक्खा, लेकिन नेवा उस वक्त बर्फ बनी हुई थी, इसलिये मजदूरोंको शहरमे आनेके लिये पुलोंकी आवश्यकता नही थी। १० मार्च (२५ फर्वरी) को राजनीतिक हडतालने सार्वजनिक हडतालका रूप ले लिया। पेत्रोग्रादके सेनापतिको जारने हुक्म भेजा—"मै तुम्हे हुक्म देता हू, कि कलसे पहले ही राजधानीकी दुर्व्यवस्थाका अन्त कर दो।" इसपर पुलिसने प्रदर्शनकारियोंकी छतोंपर रखी मशीनगनोंसे गोलिया भूनना शुरू किया। सडको और चौरस्तोंमे नगरके केन्द्रीय भागके सभी जगहोंमे सनिक तैनात हुये थे। मजदूरो और बोल्शेविकोंको पकड-पकडकर अधाधुन्ध जेलोंमें बन्द किया जा रहा था। पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक कमीटीके सदस्य जेलोंमे बन्द कर दिये गये थे। इस समय सारोवोंपर

नेतृत्वमें केन्द्रीय कमीटीका ब्यूरो विद्रोहका संचालन कर रहा था। यहां यह याद रखना चाहिये, कि अभी तक रूसमें पुराना पंचांग चल रहा था, जिसकी तारीख तेरह दिन बाद पड़ती थी—२३ फर्वरी वस्तुतः ८ मार्च थी। प्रथम क्रांति मार्चमें हुई थी, लेकिन पुराने पंचांगके अनुसार उसे फर्वरी-क्रांति कहा जाता है। इसी तरह आठ मास बाद होनेवाली बोल्शेविक-क्रांति वस्तुतः नवम्बरमें हुई थी, लेकिन पुराने पंचांगके अनुसार अक्तूबरमें होनेसे उसे तबसे आजतक अक्तूबर-क्रांति कहा जाता है।

२७ फर्वरी (१२ मार्च)को पेत्रोग्रादमें सेनापर क्रांतिका प्रभाव पड़ने लगा, सैनिक समझने लगे, कि उनका हित जारशाहीके साथ रहनेमें नहीं, बल्कि विद्रोहियोंका साथ देनेमें है। इसी दिन दो रेजीमेंटोंने वीबोर्ग मुहल्लेमें कमकरोंका साथ दिया। मजदूरोंने एक हथियारखानेपर अधिकार करके वहांसे चालीस हजार बन्दूकें और दूसरे हथियार लेकर अपनेको हथियारबन्द किया। उन्होंने जेलोंसे राजनीतिक बंदियोंको छुड़ा लिया। इसी दिन जेनरल खबारोफने राजधानीमें मार्शल-ला घोषित कर दिया। लेकिन जब सेनामें ही विद्रोह फैल रहा हो, तो मार्शल-ला क्या कर सकता था? उस समय जार नगरसे बाहर डेरा डाले हुये थे, और जारिना राजधानीमें बैठी अपने पतिके पास बराबर आशापूर्ण संदेश भेज रही थी। उसने अपने एक पत्रमें लिखा—"यह गुण्डोंका आन्दोलन है। तरुण लड़के-लड़कियां चारों ओर चिल्लाते फिर रहे हैं, कि रोटी नहीं है—यह केवल लोगोंको भड़कानेके लिये।" जारने युद्धक्षेत्रपर हुकम भेजकर सेनाको पेत्रोग्राद भेजनेके लिए कहा। एक सेना भरी हुई ट्रेन जेनरल इवानोफके नेतृत्वमें मुश्किलसे जार्स्कोयेसेलो (पेत्रोग्रादके पास जारग्राम) में पहुंची भी, किंतु सैनिकोंने क्रांतिकारी सिपाहियोंसे मेल मिलाप बढ़ाकर अपने जेनरलको पकड़वाना चाहा। जारने अब जार्स्कोयेसेलोको भी अरक्षित देखकर पेत्रोग्रादके लिये ट्रेनपर प्रस्थान किया, लेकिन वहां भी उसे खतरा मालूम हुआ, और ट्रेनको प्स्कोफकी ओर मोड़ दिया गया। सभी जगह सेना क्रांतिकी ओर हो रही थी।

१९०५ ई०की क्रांतिमें हम देख चुके हैं, कि किस तरह अपने आप मजदूरोंने संगठित रूपसे जारशाहीका मुकाबिला करनेके लिये कमकर-प्रतिनिधि-सोवियतें संगठित की। अब इस क्रांतिमें भी उस तजर्बेसे फायदा उठाकर मजदूर सिपाही प्रतिनिधियोंकी सोवियतें कायम हुई, जिनमें सबसे पहले कायम हुई थी पेत्रोग्राद सोवियत। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को क्रांतिकी विजय हुई। हथियारबन्द मजदूरों और सैनिकोंने राजनीतिक बंदियोंको जेलोंसे छुड़ा लिया। इस प्रकार हम देखते हैं, कि जारशाही शासनयंत्रका स्थान लेनेके लिये सोवियतका पहला तजर्बा तुरन्त काममें आया। अभी सड़कोंमें गोलियां चल रही थीं, इस वक्त भी करखानोंके मजदूर सोवियतके लिये अपने सदस्य निर्वाचित कर रहे थे। फर्वरी १९१७ ई० की सोवियतें केवल मजदूरों ही नहीं, बल्कि सैनिकोंके प्रतिनिधियों द्वारा भी संगठित की गई थी। २७ फर्वरी (१२ मार्च) तक निर्वाचन हो गया था,। उसी शामको पेत्रोग्राद सोवियतकी प्रथम बैठक हुई। पेत्रोग्रादमें क्रांतिके सफल होनेकी खबर मिलते ही सारे देशमें क्रांति फैल गई। २७ फर्वरी (१२ मार्च) को ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीके संगठनोंने वहांके मजदूरों और सैनिकोंसे पेत्रोग्रादकी क्रांतिका समर्थन करनेकी अपील की। अगले दिन बड़े-बड़े कारखानोंके मजदूर हड़ताल करके सड़कोंपर निकल आये, और वहींपर मास्को छावनीके सैनिक उनमें आ मिले। १ मार्च (१४ मार्च)को मजदूरोंने बोल्शेविक बंदियोंको मुक्त किया, जिनमें प्रसिद्ध क्रांतिकारी तथा पीछे गृहमंत्री फ० ई० जेर्जिन्स्की भी था। निजनी-नवोग्राद (आधुनिक गोर्की) में भी क्रांतिकी विजय हुई। २ (१५) मार्च को तुलाके हथियारके कारखानोंके मजदूरोंने विद्रोह कर दिया, और वहांके जारशाही अफसरोंको पकड़कर अपनी सोवियत (पंचायत) स्थापित की। यद्यपि क्रांति सफल हुई थी मजदूरों और सिपाहियोंकी कुर्बानी और बलपर, लेकिन उससे प्रथम लाभ उठानेवाले थे अवसरवादी समाजवादी क्रांतिकारी और मेन्शेविक। १ मार्चकी रातको उन्होंने बोल्शेविकसे बिना पूछे ही दूमाके प्रतिगामी सदस्योंके साथ समझौता करके सरकार बनानेके लिये समझौता कर लिया। २ मार्चके सबेरे राजुल ल्वोफके नेतृत्वमें अस्थायी सरकार घोषित कर दी गई। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि अस्थायी सरकारके सभी सदस्य

पुरानी व्यवस्थाके समर्थक थे। ल्वाफ बहुत बडा जमीदार था। मिल्यूकोफको विदेश-मन्त्री बनाया गया। गुचकोफ अक्तूबरी दलका नेता तथा मिलमालिक और बैंकर था, जिसे युद्ध उद्योग-समितिका युद्ध मन्त्री बनाया गया था। प्रगतिशील पार्टीका सदस्य तथा कपडामिलका मालिक कोनोवलाफ व्यापार उद्योग-मन्त्री बनाया गया, और चीनी कारखानोंका मालिक करोडपति तेरेस्चेंको वित्त मन्त्री नियुक्त किया गया। ग्यारह मन्त्रियोंमें केवल एक जनसमाजवादी दल (पीछे समाजवादी क्रांतिकारी दल) का सदस्य वकील केरेन्स्की था, जिसे न्याय-मन्त्री बनाकर टरका दिया
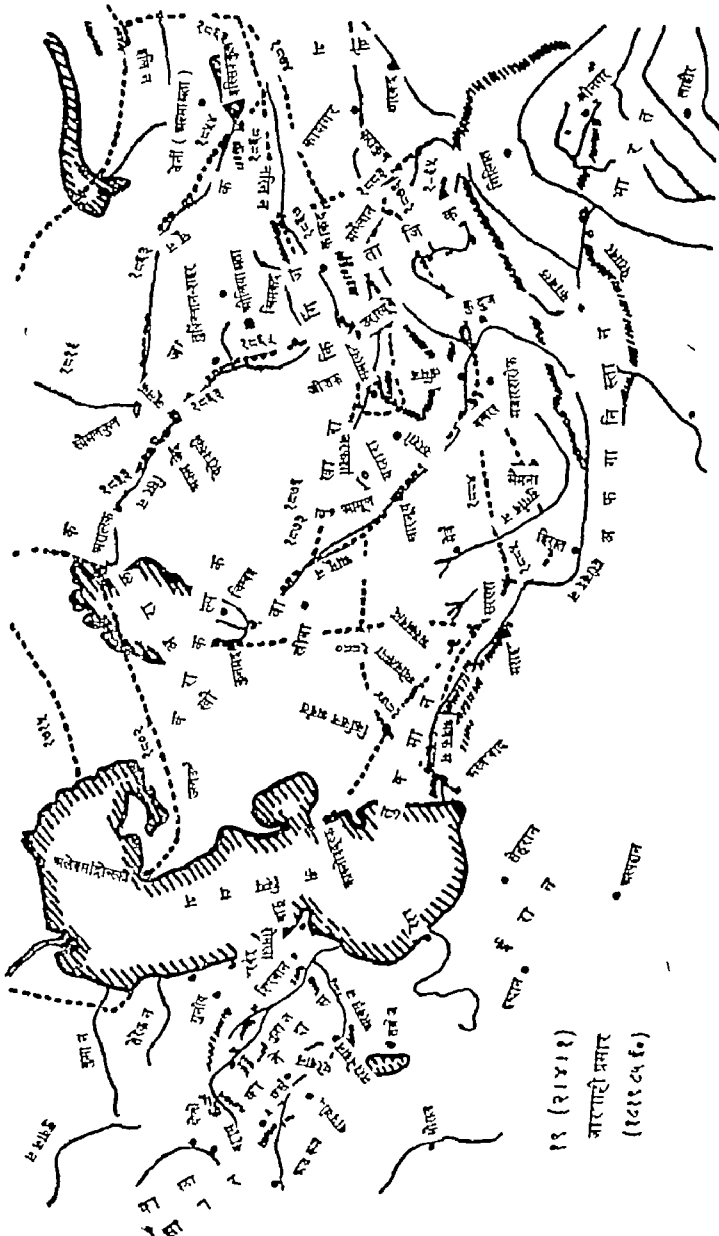
गया। इस मंत्रिमंडलके बारेमें लेनिनने अपने एक पत्रमें लिखा था—"हितवारी व्यक्तियोंका समूह नही है यह सरकार। यह रूसमें राजनीतिक शक्ति हथियानेमे सफलता पानेवाले एक नय वर्गके प्रतिनिधि है। यह पूंजीपति जमींदारो और पूंजीवादियों (बूर्ज्वा वर्ग) के प्रतिनिधि है, जो कि लम्बे अर्सेसे हमारे देशका आर्थिक तौरसे शासन कर रहे थे।"

अस्थायी सरकारका पहला प्रयत्न यह हुआ, कि राजमुकुटकी रक्षा कैसे की जाय? जार पहले ही अधिकार वंचित होकर प्स्कोफमें बैठा हुआ था। गुचकोफ और शुल्गिनने अस्थायी सरकार के नामसे वहा पहुंचकर जारपर जोर दिया, कि वह अपने पुत्र अलेक्सीके पक्षमें सिंहासन त्याग दे। लेकिन जारने अपने भाई मिखाइलके पक्षमें सिंहासन-त्याग करना स्वीकार किया। पेत्रोग्राद लौटनेपर दूमा सदस्य गुचकोफने मजदूरोंके सामने भाषण देते हुये निकोलाइ II के सिंहासन-त्यागको घोषित करते हुये अन्तमें "सम्राट् मिखाइल जिंदाबाद" के साथ अपने व्याख्यानको समाप्त किया। इसपर मजदूरोंने तुरन्त गुचकोफके गिरफ्तार करनेकी माग पेश की। अस्थायी सरकारने बहुत जल्दी देख लिया, कि राजवंशकी रक्षा नही की जा सकती, और उसने एक प्रतिनिधिमंडल भेजकर मिखाइल रोमानोफसे सिंहासन त्यागकर सारी शक्ति अस्थायी सरकारके हाथमे द देनेकी प्रार्थना की। ३ मार्च को मिखाइल रोमानोफने भी सिंहासनसे इस्तीफा देनेके पत्रपर हस्ताक्षर किया, और लोगोंको अस्थायी सरकारकी आज्ञा माननेके लिये कहा।

इस प्रकार रूसका अंतिम राजवंश खतम हो गया, लेकिन क्रांतिसे फायदा उठाकर प्रजाके नामसे जिस गुटने शासन अपने हाथमें लिया, वह साधारण जनताके हितोंकी पक्षपाती नही, बल्कि उसने पश्चिमी यूरोपकी तरह सम्पत्तिशाली पूंजीवादी वर्गके लिये शासनयंत्रको अपने हाथमें संभाला था। लेकिन हिन्दीकी पुरानी कहावत क्या झूठी हो सकती है—"जो शालिग्रामको भूनकर खा गया, उसे बैगन भूनकर खाते कितनी देर लगेगी?" जिन कारणोंने जारशाही जैसे शक्तिशाली शासन यंत्रको तोड़कर फेंक दिया, वह अब भी मौजूद थे।

स्रोत ग्रन्थ

१ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्रुत्रेर आदि मास्को १९१०)
२ पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (न म फेदोरोवृस्की, मास्को १९३७ ई०)
३ पुतेशेस्त्वियें व् जापद्नीइ किताइ (ग ये और म ये ग्रूझिमाइलो, पेतेरबुर्ग १९०१)
४ इस्तोरिया दिप्लोमातिइ (३ जिल्द, व प पोतेम्किन्, लेनिनग्राद १९४५)
५ यजीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (म ग विलिन्स्की आदि मास्को १९१४)
६ इस्तोरिया रोस्सिइ (२९ स मोलोवियेफ्, पेतेरबुग, १८७९-८५)
७ तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द १८८०)
८ History of U S S R (A M Pankratova)
९ Heart of Asia (E D Ross)
१० Manuel historique de politique etrengere (E Boureois, Paris 1927)
११ La rivalite anglo-russe on xix siecle on Asie (A M F Roure, Paris 1908)
१२ Europe and China (G F Hundson London 1931)
१३ Russo-Chinese Diplomacy (Ken Shen-Feigh, Shanghai 1928)
१४ Histoire de Russie (N Brian-Chaninov Paris 1929)

खोकन्दके खान

(१७४७–१८७६ ई०)

अस्त्राखानियोंके शासनके निर्बल होनेपर उत्तरके कजाकोंने नोच-खसोट शुरू कर दी। इससे पहले जुगर-कलमक अपने प्रभुत्वको बढ़ाते चले आये थे। १७४० ई०तक ताशकन्द और तुर्किस्तान शहरके इलाकोंपर कजाकोंका पूरा अधिकार हो गया था, और पलासीके युद्धके समय (१७५७ ई०) चीनने जब जुगरोंकी शक्तिको खत्म कर दिया, उसी समय अन्तर्वेदमें शक्तियोंका फिर बटवारा हुआ—मंगितोंने बुखारा और अन्तर्वेदकी भूमिको अपने हाथमें किया, फरगाना और ताशकन्दपर एक नये वंशकी स्थापना हुई। इस इलाकेके नगरोंमें प्रभावशाली खोजा (सैयद) शासन कर रहे थे, जिन्होंने केंद्रके निर्बल होनेपर अपनेको स्वतंत्र शासक बना लिया। फरगानाका शासक यादगार खोजा भी ऐसा ही था, जिसकी लड़कीसे शाहरुख बेकने शादी की, जिसके वंशमें निम्न खान हुये थे—

क्रम	खान	वर्ष
१	शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद	१७४७ ई०
२	रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
३	अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र	
४	एरदनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र	—१७७० ,,
५	नरबुले, नरबुते, अब्दुलकरीम-दौहित्र	१७७०-१८०० ,,
६	आलम खान, नरबुले-पुत्र	१८००-९ ,,
७	उमर, नरबुले-पुत्र	१८०९-२२ ,,
८	मुहम्मद अली, मदली, उमर-पुत्र	१८२२-४२ ,,
९	शेरअली, हाजिबी-पुत्र	१८४२ ,,
१०	मुराद, आलिम-पुत्र	१८४२ ,,
११	खुदायार, शेरअली-पुत्र	१८४२-५७ ,,
१२	मुल्ला, शेरअली-पुत्र	१८५७-५९ ,,
१३	शाहमुराद, सरिसक-पुत्र	१८५९ ,,
	खुदायार (पुनः)	१८५९ ,,
१४	सैयद सुल्तान, मुल्ला-पुत्र	१८५९-६५ ,,
	खुदायार (पुनः)	१८६५-७५ ,,

१ शाहरुख बेक, यादगार खोजा-दामाद (१७४७ ई०)

जैसा कि कहा, अस्त्राखानियोंकी निर्बलतासे फायदा उठाकर इसने अपना वंश स्थापित किया। वोल्गाके पास रहनेवाले तुर्कोंके किसी कबीलेका यह एक अमीर किंतु राजवंशी नहीं था। १८ वीं सदीके आरम्भमें यह वोल्गा-तटसे फरगाना पहुँचा, और सुम्ममरायके शासक यादगार खोजाने इसे अपनी लड़की दे दी। वह अपने अनुयायियोंके साथ खोकन्दसे बारह मील पश्चिम, गूरगान (कूरधान) स्थानमें बस गया। शायद शाहरुख मंगोली था और खोकन्दमें प्रधानता रखनेवाली खास्बोंसे संबंध रखता था। शाहरुखने ममुरगा मारकर उसके राज्यको हाथमें कर उसे आगे बढ़ाया। चाहे यह छिद्ध-गिम् मजरा न भी रहा हो, लेकिन अपनी धाक जमानेमें

लिये छिङ्-गिस्के खूनका दावा करना फायदेकी बात थी, जैसा कि उससे एक सौ वर्ष पहले बावर और उसके वंशजोंने भारतमें किया था।

२ रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र

बापके मरनेपर बेटा उत्तराधिकारी हुआ, लेकिन अभी राज्य छोटा होनेसे वह खान न होकर बेक (अमीर) ही रहा।

३ अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र

रहीम बेकके मरनेपर उसका भाई अब्दुलकरीम गद्दीपर बैठा, जिसके समयसे खोकन्दका प्रताप बढ़ने लगा। इसीने वर्तमान खोकन्द नगरको आबाद करके उसे अपनी राजधानी बनाई।

४ एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र (–१७७० ई०)

नही कहा जा सकता, एर्दनी बेक अब्दुल-करीमका पुत्र था या भाई। इसने फरगानाके सभी बेकोंको अपने अधीन किया। १७५८ ई०में ताशकन्द चीनके हाथमें चला गया था। चीनी जेनरल चाउ-हो-येइ ने खोजी जानका पीछा करते अपनी एक सैनिक टुकड़ीको बुरुतो (करा किर्गिजों) को दबानेके लिये भी भेजा। एर्दनी बेकने मास और शराबसे उनका सत्कार किया, और लौटते वक्त उनके साथ गया। उसने अपने एक अफसरको सम्राट् च्यान्-लुङ (काउ-चुङ १७३७–१७९५ ई०) के दरबारमें अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा। अन्दिजानके शासक तुकतू मुहम्मद, मरगिलानके इलास पिङ लीने भी बाज और दूसरी भेंटोंके साथ चीन-दरबारमें अपने दूत भेजे। १७६० ई०मे तोकतू मुहम्मद स्वय पेकिङमें उपस्थित हुआ। एर्दनीने ओश (अजीवी) के इलाकेपर आक्रमण किया, लेकिन चीनी जेनरलके हुक्मपर उसे लौट जाना पड़ा। १७६३ ई० में बुरुतोंकी भूमिपर चीनियोंने दूसरी बार आक्रमण किया। इस तरह १७७० ई० में जब एर्दनी मरा, उस समय चीनका प्रभाव मध्य-एसियामें जोरोंपर था और उसकी इच्छाके विरुद्ध स्थानीय शासकोंको मनमानी करनेकी हिम्मत नही थी।

५ नरबुते, नरबुले, अब्दुलकरीम-दौहित्र (१७७०-१८०० ई०)

अब्दुलकरीम बेककी लड़की अर्थात् एर्दनी बेककी बहिनको बावर-वंशज अब्दुरहीम बेकने शादी की थी, जिससे नरबुते बी पैदा हुआ। इस प्रकार वह बाबरके प्रतापी वंशका उत्तराधिकारी होनेका भी दावा कर सकता था, यद्यपि इस समय भारतमें इस वंशकी भी दशा बहुत बुरी थी। नरबुतेके गद्दीपर बैठनेसे पहले सुलेमान बेक और शाहरुख बेक बारी-बारीसे कुछ महीनो तक खोकन्दकी गद्दीपर बैठ चुके थे। नरबुलेका बाप अब्दुरहीम बातिर (बहादुर) उज्बेकोंके मिंग-कबीलेका और इसफाराके इलाकेका शासक था। दूसरी परम्परा यह भी है, कि यह यामच बी (बाबर)का वंशज था। इसफारा लेनेके लिये एर्दनीने अब्दुर्रहमान (अब्दुरहीम) को धोखा देकर मार डाला, लेकिन उसके पुत्र नरबुतेको बच्चा समझकर छोड़ दिया। एर्दनीके उत्तराधिकारियोंके भी विच्छिन्न या भाग जानेपर खोकन्दियोंने नरबुतेको लाकर गद्दीपर बैठाया। यह बुखाराके अमीर शाह-मुरादका समकालीन था, और शायद उसकी अधीनता भी स्वीकार करता था। नरबुतेके पास पचास हजार सेना थी। चीन-सम्राट्ने उसे "पुत्र" की उपाधि प्रदान की थी। हर दूसरे साल घोड़ों, समूरी खालों आदिकी भेंट लेकर खोकन्दका दूत चीन जाता था, और बदलेमें लाखो रुपयोंकी बहुमूल्य चीजें इनाम मिलती थी। उस समय चीनी सीमांतसे आगे सवारीके लिये सदूकनुमा घोड़ागाड़ी चढ़नेको मिलती, जिसमें दो घोड़े जुतते। खाना-पीना सारा सामान इसी गाड़ीमें रक्खा जाता। जगह-जगह मुसाफिरोंके लिये पड़ाव बने हुये थे, जहा पाच सौ चीनी सैनिक रहते थे, यात्री इन्ही पड़ावोंमें रातको ठहरते। रास्ता ऐसे इलाकोंसे जाता था, जहां आबादी बहुत कम थी। चीनकी सीमासे एक मासके करीब पेकिङ था। चीनी दरबारके अपने कायदे थे। दूतको काउ-ताउ

(दडवत्) करनी पडती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमें कुछ बोलता, जिसका अर्थ था "सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं, कि मेरा पुत्र नरबुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है ?" दूत फिर दडवत् करता, और पहलेसे सिखलाये हुये वाक्योंमें उत्तर देता—"नरबुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नही है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।" भेंट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया, जिसे घोडागाडियों में रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरबुतेके बारेमें लिखा था—"नरबुतेने अपने लिये एक बडा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारें चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी) से ढकी हैं। वह दस हजार सिपाहियोंके साथ शुक्रवारकी नमाज पढ़ता है।" उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरबुतेने खोजन्द छोड सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमें थे। खोजन्दके शासक फाजिल बी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगडा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरा तिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरबुतेने ताशकन्दके शासक यूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलबसके मारे जानेके बाद १७४० ई०में ताशकन्द जुगर कलमकोंके हाथमे चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक बी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोंने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनों छोटे छोटे अमीर जहा तहा राज्य करते रहे, फिर खलीफा अबूबकरके वशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमे कर लिया, और इसने आसपासके इलाकेको दबाकर १७९८ ई०मे महाओर्दूके कजाकोंको भारी दड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरबुतेकी पहली भिडत हुई। १८०० ई० में नरबुतेको यूनसने पकडकर मार डाला।

६ आलम खान, नरबुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरबुतेके मारे जानेके बाद उसके बडे बेटे आलमने अपने भाई रुस्तम बेक और दूसरे सबधियोंको मारकर गद्दी सभाली। खोकन्दके खानोंमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतबा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढ़ा, खुदायार पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनों सेनाओंने गोलाबारी की, किन्तु अन्तमें यूनसको खाली हाथ लौट जाना पडा। १८०३ या १८०५ ई०में आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथों हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहासे भगा दिया। आलमने कजाकोंको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार असफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहाका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काशगर न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत दे रक्खी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नही दिया, जिसपर आलमने खोकन्दमे काशगरकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने पर चीनने पेंशनकी बाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बड़ा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लडकिया उसके मारे सुरक्षित नहीं थीं। निरपराध लोगोंको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरको और मामा तुगाईके सचालनमें भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, फिर भी कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसा क्या [illegible] आलम खानने उसे गाली देकर फिर बडी क्रूरतासे नरसहार करनेके लिए लौटा दिया। उमरने

(दडवत्) करनी पड़ती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमें कुछ बोलता, जिसका अर्थ था "सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं, कि मेरा पुत्र नरवुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है?" दूत फिर दडवत् करता, और पहलेसे सिखलाये हुये वाक्योंमें उत्तर देता—"नरवुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नही है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।" भेंट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया, जिसे घोडागाडियामें रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरवुतेके बारेमें लिखा था—"नरवुतेने अपने लिये एक बडा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारें चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी)से ढकी है। वह दस हजार सिपाहियाके साथ शुक्रवारको नमाज पढता है।" उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरवुतेने खोजन्द छोड सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमंगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमे थे। खोजन्दके शासक फाजिल बी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगडा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरातिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरवुतेने ताशकन्दके शासक यूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलबसके मारे जानेके बाद १७४० ई०मे ताशकन्द जुगर कल्मकोंके हाथमें चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक बी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनो छोटे छोटे अमीर जहा तहा राज्य करते रहे, फिर खलीफा अवूवकरके वंशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमें कर लिया, और इसने आसपासके इलाकको दवाकर १७९८ ई०में महाओर्दूके कजाकोंको भारी दड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरवुतेकी पहली भिडत हुई। १८०० ई० में नरवुतेको यूनसने पकडकर मार डाला।

६ आलम खान, नरवुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरवुतके मारे जानेके बाद उसके बडे बेटे आलमने अपने भाई रुस्तम बेक और दूसरे सबधियोंको मारकर गद्दी सभाली। खोकन्दके खानोमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतबा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढा, खुदायार-पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनों सेनाओंने गोलाबारी की, किन्तु अन्तमें यूनसको खाली हाथ लौट जाना पडा। १८०३ या १८०५ ई०में आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथों हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहासे भगा दिया। आलमने कजाकोको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार असफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहाका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काश्गर न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत दे रक्खी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे-तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नही दिया, जिसपर आलमने खोकन्दसे काश्गरकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने-पर चीनने पेंशनकी वाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बडा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लडकिया उसके मारे सुरक्षित नही थी। निरपराध लोगोको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरबेक और मामा तुगाईके सचालनमें भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, कि मैंने कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसी दया दिखलानेके लिये आलम खानने उसे गाली देकर फिर बडी क्रूरतासे नरसहार करनेके लिये लौटा दिया। उमरने

जाकर देखा, कि उसके पास दस हजार सेना है, जो इतने बडे कामके लिये पर्याप्त होगी, इसमें सदेह था। उसने तुगाई तथा दूसरे अफसरोंसे सलाह ली। सबने कहा, कि हमारे घोडे लौटाग ताशकन्द जानेकी शक्ति नही रखते, ऊपरसे मौसिम भी बहुत खराब है, साथ ही कजाक मुसलमान और निरपराध हैं, उनका कत्ल-आम करना ठीक नही है, रेगिस्तानमे बिखरे हुये कजाकोंको पाउ पाना भी सभव नही है। उमरने पूछा--"फिर क्या करना चाहिये ?" इसपर मामाने जवाब दिया—"उमरबेकको खान बनना होगा। हम आलम खान-जैसे अत्याचारीकी आज्ञा नहीं मान सकते।" वहीं उसने उमरके लिये राजभक्तिकी शपथ ली। सेनाने खोकन्दके भीतर पहुचकर उमरको खान घोषित किया। आलमके साथ तीन सौ आदमी रह गये थे। उसने अपने अनुयायियोंमें खूब इनाम बाटे, और अपने खजाने, हरम, अन्त पुर, पुत्र शाहरुखके साथ ताशकन्दसे खोकन्दके लिये प्रस्थान किया। रास्तेमें एक किलेमें घिर गया, और आत्मसमपण करनेमे भी इन्कार कर दिया। रातको वही मुकाम रहा। सवेरे उठकर देखा, तो उसके तीन सौ अनुयायी भी साथ छोडकर खोकन्द चले गये थे। आखोंमें आसू भरकर आलमने अपने पुत्रको हजार तिला (पाच सौ गिन्नी) दे अमीर हैदरके पास बुखारा भेज दिया। अपनी बेगमों तथा खजानोंको गावके एक मुखियाके हाथमें सौंप बीस सवारो तथा अपने दीवानबेगी (वजीर) के साथ दर्राकोह चला गया। इस दर्रा (पहाडी डाडे) से खोकन्द नगर दिखलाई पडता था। दीवानबेगीने खानको खोजन्द चलनेकी सलाह दी, जहापर चार हजार खोकन्दी सैनिक रहते थे। लेकिन आलम खान अब भी अपनी राजधानीमें जानेका हठ कर रहा था। इसपर उसके और भी साथी हट गये और सिर्फ तीन आदमियोंके साथ वह चला। शत्रु सैनिकोंने उसका पीछा किया, और खानका घोडा दलदलमे फस गया। उसने दीवानबेगीसे घोडा मागा, किन्तु उसने उसे न दे स्वय दौडाते शहरका रास्ता लिया। उमरके सिपाहियोमेंसे किसीने खानकी पीठमें गोली मारकर रातमें दफना दिया। यह १२२४ हि० (१६ II १८०९-७ I १८१० ई०) की बात है। पहले उमरने दीवानबेगी मुहम्मद जहूरका स्वागत किया, पीछे उससे सारा धन छीन लिया। जहूरका अन्तिम समय भक्ति-पूजामें बीता।

मध्य-एसियाके शासकोंमें एक बडी कमजोरी यह थी, कि वह शेखों-खोजोंके बड़े भक्त होते थे, उनकी दिव्य शक्तिपर बहुत विश्वास करते थे, लेकिन आलम इसे नही मानता था। खोकन्दमें एक बहुत बडा शेख रहता था, जिसके बहुत से मुरीद (चेले) थे, और जिसकी दिव्य शक्तिकी बडी प्रसिद्धि थी। आलमने एक बार उस शेखको बुलाया, और तालाबके किनारे रस्सी तानकर कहा—"ओ शेख, कयामतके दिन निस्चय ही तुम अपने चेलोको पुलेसिरात (स्वर्ग और नकके बीचकी पतली दीवार) को पार कराओगे, मै चाहता हू, कि इस रस्सीसे जरा तुम इस तालाबको पार हो जाओ।" शेखने बहुत कहा, कि कुरानमें दिव्य शक्ति दिखलाना मना है। आखिर शेखको जबर्दस्ती रस्सीपर चढाया गया। गिरना तो था ही, इसपर लोगोंने डडे मार-मारकर उस ढोंगीके प्राण ले लिये। उसने बहुत-से दरवेशों और साधुओंको पकडकर ऊटबानी करनेके लिये मजबूर किया था। आलम खानके जारी किये हुये सिक्के चादी मिले हुये कासेके थे।

७ उमर खान, नरबुते-पुत्र (१८०९-२२ ई०)

आलम खानने अपने बेटे शाहरुखको बुखारा भेजा था, लेकिन वह वहा न जाकर ताशकन्द चला गया। पहले वहाके कुशबेगी (सेनापति) ने खानजादेका स्वागत किया, लेकिन आलम खानके मरनेकी खबर पाकर उसने उसे खोकन्द रवाना कर दिया, और चाचाके पास पहुचनेसे पहले ही वह रास्तेमें मार डाला गया। उमर कमजोर दिलो-दिमागका आदमी था। शासन वस्तुत मामा मुहम्मद रजाबेक तुगाईके हाथमें था। उमरके शासनकालमें खोकन्द एक बहुत बडा व्यापार-केंद्र बन गया। इसीके समय उरातिप्पा भी खोकन्दके हाथमें चला आया। यही नही, तुर्किस्तान-शहरको भी उसने छीन लिया और वहाके अन्तिम कजाक खान तोगाईने बुखारामें भागकर शरण ली, और वहीं मारा गया। मुहम्मद रजब कराजा बुखारामें भागकर ठहरा हुआ था। आलम खानके बाद वह खोकन्द लौटा। उस समय मामा मुहम्मद रजाबेक और उसके मित्र सेनापति कित्तकी कराकल्पक

(दडवत्) करनी पडती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमें कुछ बोलता, जिसका अर्थ था "सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं, कि मेरा पुत्र नरबुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है ?" दूत फिर दडवत् करता, और पहलेसे सिखलाये हुये वाक्योंमें उत्तर देता—"नरबुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नही है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।" भेंट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया, जिसे घोडागाडियों में रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरबुतेके बारेमें लिखा था—"नरबुतेने अपने लिये एक बडा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारे चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी) से ढकी है। वह दस हजार सिपाहियोंके साथ शुक्रवारकी नमाज पढता है।" उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरबुतेने खोजन्द छोड सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमें थे। खोजन्दके शासक फाजिल बी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगडा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरातिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरबुतेने ताशकन्दके शासक यूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलबसके मारे जानेके बाद १७४० ई०में ताशकन्द जुगर कल्मकोंके हाथमें चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक बी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोंने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनों छोटे छोटे अमीर जहा तहा राज्य करते रहे, फिर खलीफा अबूबकरके वंशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमें कर लिया, और इसने आसपासके इलाकेको दबाकर १७९८ ई०में महाओर्दूके कजाकोंको भारी दड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरबुतेकी पहली भिडत हुई। १८०० ई० में नरबुतेको यूनसने पकडकर मार डाला।

६ आलम खान, नरबुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरबुतके मारे जानेके बाद उसके बडे बेटे आलमने अपने भाई रुस्तम बेक और दूसरे सबंधियोंको मारकर गद्दी सभाली। खोकन्दके खानोंमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतबा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढ़ा, खुदायार-पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनों सेनाओंने गोलाबारी की, किन्तु अन्तमें यूनसको खाली हाथ लौट जाना पडा। १८०३ या १८०५ ई०में आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथों हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहासे भगा दिया। आलमने कजाकोंको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार असफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहाका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काशगर न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत द रक्खी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे-तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नही दिया, जिसपर आलमने खोकन्दमे काशगरकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने पर चीनने पेंशनकी बाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बडा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लडकिया उसके मारे सुरक्षित नही थीं। निरपराध लोगोंको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरबेक और मामा तुगाईके सचालनमें भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, कि मैंने कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसी दया दिखलानेके लिये आलम खानने उसे गाली देकर फिर बडी क्रूरतासे नरसहार करनेके लिये लौटा दिया। उमरने

जाकर देखा, कि उसके पास दस हजार सेना है, जो इतने बडे कामके लिये पर्याप्त होगी, इसमें सदेह था। उसने तुगाई तथा दूसरे अफसरोंसे सलाह ली। सबने कहा, कि हमारे घोडे लौटकर ताशकन्द जानेकी शक्ति नही रखते, ऊपरसे मौसिम भी बहुत खराब है, साथ ही कजाक मुसलमान और निरपराध हैं, उनका कत्ल-आम करना ठीक नहीं है, रेगिस्तानमे बिखरे हुये कजाकोंको पकड पाना भी सभव नहीं है। उमरने पूछा--"फिर क्या करना चाहिये?" इसपर मामाने जवाब दिया—"उमरबेकको खान बनना होगा। हम आलम खान-जैसे अत्याचारीकी आज्ञा नहीं मान सकते।" वहीं उसने उमरके लिये राजभक्तिकी शपथ ली। सेनाने खोकन्दके भीतर पहुचकर उमरको खान घोषित किया। आलमके साथ तीन सौ आदमी रह गये थे। उसने अपने अनुयायियोंमें खूब इनाम बाटे, और अपने खजाने, हरम, अन्त पुर, पुत्र शाहरुखके साथ ताशकन्दसे खोकन्दके लिये प्रस्थान किया। रास्तेमें एक किलेमें घिर गया, और आत्मसमर्पण करनेमे भी इन्कार कर दिया। रातको वहीं मुकाम रहा। सबेरे उठकर देखा, तो उसके तीन सौ अनुयायी भी साथ छोडकर खोकन्द चले गये थे। आखोंमें आसू भरकर आलमने अपने पुत्रको हजार तिला (पाच सौ गिनी) दे अमीर हैदरके पास बुखारा भेज दिया। अपनी बेगमों तथा खजानोंको गावके एक मुखियाके हाथमें सौंप बीस सवारों तथा अपने दीवानबेगी (वजीर) के साथ दर्रा-कोह चला गया। इस दर्रा (पहाडी डाडे) से खोकन्द नगर दिखलाई पडता था। दीवानबेगीने खानको खोजन्द चलनेकी सलाह दी, जहापर चार हजार खोकन्दी सैनिक रहते थे। लेकिन आलम खान अब भी अपनी राजधानीमें जानेका हठ कर रहा था। इसपर उसके और भी साथी हट गये और सिर्फ तीन आदमियोंके साथ वह चला। शत्रु सैनिकोंने उसका पीछा किया, और खानका घोडा दलदलमें फस गया। उसने दीवानबेगीसे घोडा मागा, किन्तु उसने उसे न दे स्वय दौडाते शहरका रास्ता लिया। उमरके सिपाहियोंमेंसे किसीने खानकी पीठमें गोली मारकर रातमें दफना दिया। यह १२२४ हि० (१६ II १८०९-७ I १८१० ई०) की बात है। पहले उमरने दीवानबेगी मुहम्मद जहूरका स्वागत किया, पीछे उससे सारा धन छीन लिया। जहूरका अन्तिम समय भक्ति-पूजामें बीता।

मध्य-एसियाके शासकोंमें एक बडी कमजोरी यह थी, कि वह शेखो-खोजोंके बडे भक्त होते थे, उनकी दिव्य शक्तिपर बहुत विश्वास करते थे, लेकिन आलम इसे नही मानता था। खोकन्दमें एक बहुत बडा शेख रहता था, जिसके बहुत से मुरीद (चेले) थे, और जिसकी दिव्य शक्तिकी बडी प्रसिद्धि थी। आलमने एक बार उस शेखको बुलाया, और तालाबके किनारे रस्सी तानकर कहा—"ओ शेख, कयामतके दिन निश्चय ही तुम अपने चेलोंको पुलेसिरात (स्वर्ग और नर्कके बीचकी पतली दीवार) को पार कराओगे, मै चाहता हू, कि इस रस्सीसे जरा तुम इस तालाबको पार हो जाओ।" शेखने बहुत कहा, कि कुरानमें दिव्य शक्ति दिखलाना मना है। आखिर शेखको जबर्दस्ती रस्सीपर चढ़ाया गया। गिरना तो था ही, इसपर लोगोंने डडे मार-मारकर उस ढोंगीके प्राण ले लिये। उसने बहुत-से दरवेशों और साधुओंको पकडकर ऊटवानी करनेके लिये मजबूर किया था। आलम खानके जारी किये हुये सिक्के चादी मिले हुये कासेके थे।

७ उमर खान, नरबुते-पुत्र (१८०९-२२ ई०)

आलम खानने अपने बेटे शाहरुखको बुखारा भेजा था, लेकिन वह वहा न जाकर ताशकन्द चला गया। पहले वहाके कुशबेगी (सेनापति) ने खानजादेका स्वागत किया, लेकिन आलम खानके मरनेकी खबर पाकर उसने उसे खोकन्द रवाना कर दिया, और चचाके पास पहुचनेसे पहले ही वह रास्तेमें मार डाला गया। उमर कमजोर दिलो-दिमागका आदमी था। शासन वस्तुत मामा मुहम्मद रजाबेक तुगाईके हाथमें था। उमरके शासनकालमें खोकन्द एक बहुत बडा व्यापार-केंद्र बन गया। इसीके समय उरातिप्पा भी खोकन्दके हाथमें चला आया। यही नही, तुर्किस्तान-शहरको भी उसने छीन लिया और वहाके अन्तिम कजाक खान तोगाईने बुखारामें भागकर शरण ली, और वही मारा गया। मुहम्मद रजब कराजा बुखारामें भागकर ठहरा हुआ था। आलम खानके बाद —खोकन्द लौटा। उस समय मामा मुहम्मद रजाबेक और उसके मित्र सेनापति कितकी कराकल्पक

मे वैमनस्य हो उठा। एक दिन महलमे भोजनके लिये निमंत्रित मुहम्मद रजाको पकड़कर जेल मे डालकर मार डाला गया। इसपर मितकीको भी बोटी-बोटी करके मरवाकर उसकी संपत्ति जब्त कर ली। मुहम्मद रजब काराजा अब खोकन्दका राज्यपाल तथा दरबारमें बहुत प्रभावशाली अमीर बन गया।

उमरने अपने दूत भेजकर रूसियाको खोकन्दमे अपने कारवा भेजनके लिये कहा, और यह भी वचन दिया, कि यदि हमारी ओरके आधे रास्तेमे कारवांको लूटा गया, तो म व्यापारियाकी क्षतिपूर्ति दूगा। इसपर कारवा आने-जाने लगा। किजिलजारमें एक खोकन्दी दूतका रूसी सनिकसे झगडा हो गया, जिसे रूसी सिपाहीने मार डाला। रूसियाने एक हजार तिला (पाच हजार गिन्नी) जुरमानाके रूपमे दूतके मारे जानके लिये दिया। १८१३-१४ ई० मे कनल नजारोफने खोकन्दकी यात्रा की, और रूसी सीमातपर खोकन्दी दूतके मारे जानके लिये अफसोस करते हुये बहुत समझाया। नजारोफ रक्षक सैनिको और बीस हजार रुबल्के मालके साथ गया था। उसे महलके बगीचेमे ठहराया गया, आदमियों के लिये सफेद रोटी, चावल, चाय, खरबूजा आदि खानकी ओरसे मुफ्त दिया जाता था, और जानवरोंको घास चारा भी। बारह दिनकी प्रतीक्षाके बाद नजारोफसे खानने मुलाकात की। नजारोफ घोडेपर सवार था, लेकिन उसके समाक पैदल थे। महलके पास जाकर नजारोफ घोडेसे उतर गया। रूसियोको देखनके लिये सडका और मकानोकी छतोपर तमाशबीनाकी भीड थी। खान दर्शन देनेके लिये झरोखेपर बैठा था। नजारोफसे कहा गया, कि जैसे अपने बादशाहको सलाम करते हो, वैसे ही यहा भी करो। इसपर नजारोफने अपने सिरको नगा कर दिया, और सिरपर जारके पत्रको रखकर खानको प्रदान किया। खानकी ओरसे रूसी दूतको एक भोज दिया गया, जिसमें गुलाबी रगका चावल और घोडेका मास भी सम्मिलित था। नजारोफने घोडके मासको धर्म-विरुद्ध कहकर नही खाया। उसके साथी कसाकोको खलअत और इनाम देकर लौटा दिया गया, लेकिन नजारोफको रोककर उससे माग की गई—या तो हमारे दूतकी मौतका हरजाना दो, या मुसलमान बनो, नही तो तुम्हे फासीपर चढाया जायगा। यह धमकी वस्तुत दिखावटी थी। नजारोफके साथ खानका बरताव बहुत अच्छा था, कितने ही भोजोमें निमंत्रित कर उसकी नाच-गानेसे खातिर की जाती थी। सिर्फ यही खयाल रक्खा जाता था, कि वह भागने न पाये। खान उसे अपने साथ शिकारमें मरगिलान ले गया, जहापर काफिर होनेके कारण नजारोफको मुसलमानोने पत्थर भी मारा। कुछ समय बाद खानने नजारोफको छोड दिया, क्योकि रूसका व्यापार बडे नफे की चीज थी। उमर १८२२ ई० में अपनी मौत मरा, या शायद भाई मुहम्मद अलीने उसे मार डाला। उसके सिक्कोंपर, "सैयद मुहम्मद उमर सुल्तान" और "मुहम्मद खान सैयद उमर" अंकित रहता है।

८ मुहम्मदअली, मदली खान, उमर-पुत्र (१८२२–४२ ई०)

उमरके उत्तराधिकारी मदलीके बारेमे नही कहा जा सकता, कि वह उसका भाई था या बेटा। इसने अपने कई संबंधियोको देशसे निकाल दिया, जिसमे उसके एक भाई महमूद सुल्तानने शहरसब्ज (किश) जाकर वहाकी राजकुमारीसे शादी की, पीछे बुखाराके अमीर नसरुल्लाका कृपापात्र बन खोजन्द और कुरमीतानका राज्यपाल भी रहा। शायद महमूदको शरण देनेके लिये बुखारासे मदलीका १८२५ ई० में झगडा हो गया, और उसी समय जीजकको बुखारियोंने ले लिया। १८२६ ई० मे काश्गर-राजवंशके जहागीर खोजाने चीनियोंके विरुद्ध असफल विद्रोह कर दिया, फिर किर्गिजोंसे भी झगडा कर लिया और अन्तमें भागकर मदलीके हाथमे पडा। मदलीने उसे कुछ दिनोंतक नजरबन्द-सा रक्खा, फिर वह भागकर किर्गिजोमे चला गया। जहागीरने उन्हे चीनपर आक्रमण करनेके लिये राजी किया। चीनी काफिरोंका जूआ मुसलमानों के ऊपर रहे, इसे पूर्वी-तुर्किस्तानके अमीर, जहागीर खोजा और खुद मदली कैसे पसद करते ? मदलीने मुसलमानोके साथ बुरे बरताव करनेका बहाना लेकर एकाएक आक्रमण करके बहुतसे चीनियोंको मार डाला। जहागीर खोजा काश्गरपर चढा और मदली खानने सारे चीनी-तुर्किस्तानको

दवा लिया। मदली गाजीका झडा अब यारकन्द, अक्सू और खोतनपर फहराने लगा। जहागीर खोजा इसे क्यों पसद करने लगा? लेकिन इसी बीच चीनी सेना आ गई, मदली भाग गया, और जहागीर खोजा पकडकर पेकिङ भेजा गया, जहा उसे फासी मिली। चीनियोंने मदलीसे सुलह करके उसे यह अधिकार दिया, कि उसका प्रतिनिधि काशगरके मुसलमानोंके धर्मकी देख-भाल और चीनको वहाके शासनमें सहायता करेगा।

१८२८-२९ ई० में इतिहासकार मिर्जा शम्स खोकन्दमें था, जब कि जहागीर खोजाका भाई यूसुफ खोजा भी वहीपर रहता था। यूसुफ खोजाके मागनेपर मदलीने शाही सरअत और पच्चीस हजार आदमी देकर उसे काशगरके लिये रवाना किया। वह खुद भी ओश तक साथ-साथ गया। ओशसे बीस दिनके रास्तेपर चीनी सीमातकी फौजी चौकी थी, जिसमें एक सौ पचास सैनिक रहते थे। लेकिन खोजाको भी विकट आदमियोंसे मुकाबिला पडा था। चीनियोंको निष्ठुर शत्रुओंसे दयाकी आशा कहा हो सकती थी? उन्होंने बढियासे बढिया कपडे पहन, खूब शराब पी और इसके बाद बारूदकी मेगजीनमें आग लगा दी। खोजन्दियोंने पीछे वहा पचास साठ जली हुई लाशें पाई। केवल पद्रह जीते बदी मिले, जिन्हे खोजाने मदलीके पास भेज दिया। पद्रह वर्स्त (२½ फर्सख) और आगे बढ़नेपर पाच सौ चीनी सैनिकोंकी छावनी मिली, जिसके पास ही ७८०० सेना पडी थी। उनके साथ लडाई हुई, जिसमें खोकन्दी जीते। चीनी सैनिकोंमेंसे एक-एक या तो मारे गये, या उन्होंने आत्महत्या कर ली। अब यूसुफ खोजा मूमी और लियागरके रास्ते काशगरसे दस वर्स्त (१⅔ फरसख) पर पहुचा। वहापर उस समय काले और सफेद खोजोंका झगडा चल रहा था। सफेद खोजे यूसुफके पक्षपाती थे और काले चीनियोंके। सफेद खोजोंने शहरसे निकलकर गाजियोंका विजयीके तौरपर स्वागत करके बाजे-गाजेसे शहरके भीतर प्रवेश कराया। इस समय काले खोजोंका नेता इसहाक बेक अपने तेरह सौ साथियोंके साथ गुलबागके किलेमें था। यूसुफ स्वय एक सौ पचास वर्स्त (८⅓ फर्सख) आगे बढकर यगीहिसार पहुचा, फिर वहासे यारकन्द जा अपने पुत्र मिर्जा शम्सको शासक बना काश्गर भी छोडकर लौट गया। राजधानी काशगर छोडनेके चार महीने बाद खबर आई, कि लाखों चीनी सेना फैजाबाद पहुच गई है। इसपर मिर्जा शम्स अपने बहुमूल्य खजानेकी साठ सदूकोंमें बन्द करके भागना चाहा, लेकिन काले खोजोंने उसे लूट लिया, खोकन्दी चीनी-बाढके सामने बडी तेजीसे भागने लगे। उनके साथ उनके पक्षपाती सफेद खोजा भी भगे, जिनकी सख्या पचाससे साठ हजार तक बतलाई जाती है—स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी पैदल, घोडों और गदहोंपर सवार होकर खोकन्दकी ओर भाग रहे थे। उस समय मौसिम बहुत ठढा था, त्यान्शानके पहाडोंमें बर्फ और सर्दीके मारे उनमेंसे बहुत तो रास्तेमें मर गये। पाच महीने बाद यूसुफ भी खोकन्दमें मर गया। पूर्वी-तुर्किस्तानसे भागे मुसलमान शरणार्थियोंके लिये मदली खानने शेभीखाना नगर बसाया, तथा खोकन्दके नीचे सिर-दरियापर भी उनके बसनेका प्रबन्ध किर दिया।

खोकन्द बहुत दिनों तक चीनको नाराज नही रख सकता था। रूस अभी उसकी सीमासे बहुत दूर था, इसलिये उसकी अधीनता स्वीकार करके चीनको टरकाया नही जा सकता था। १८३१ ई० में खोकन्द और चीनके बीच सधि हुई, जिसके अनुसार "खोकन्दको अक्सू, ओश, तुर्फान, काशगर, यगी हिसार, यारकन्द और खोतनमें आयात किये जानेवाले सभी विदेशी मालपर कर पानेका अधिकार मिला, और कर उगाहनेके लिये इन सभी नगरोंमें अकसक्काल (शब्दार्थ श्वेत दाढी, अफसर) रखने तथा मुसलमानोंकी रक्षा करनेका दायित्व मिला। इसके बदलेमें खोकन्दको चीनकी ओरसे यह सेवा करनी थी, कि खोजा राज्यको छोडने न पाये, और यदि कोई छोडना चाहे, तो उसे दड दे।" इससे मालूम होगा, कि १९ वीं शताब्दीके पूर्वार्धके समाप्त होते समय काशगरपर खोकन्दियोंका काफी प्रभाव था।

उत्तरके कजाक विशेषकर महा-ओर्दूवाले अधिक सख्यामें इसी समय खोकन्दके भीतर भागे। इसपर सीमाके लिये रूसियोंके साथ खोकन्दका झगडा हो गया।

रूसियोंसे झगडा—आपसी झगडेको बातचीतसे तै करनेके लिये १८२७ या १८२८ ई०में ओरेनबुर्गसे रूसी दूत भेजे गये, जो अपने साथ खानके लिये भेंटके तौरपर कितने ही बडे-बडे

दर्पण, एक भारी घडी, कुछ बदूके और पिस्तौल ले आये थे। बातचीतके बाद निश्चय हुआ, कि कोक्सू नदी सीमा रहे, जिसके उत्तरकी भूमि रूसियाकी और दक्षिणकी खोकन्दकी। सीमाको पहिचानके लिये वहा चिह्न खडे किये गये, लेकिन रूसियोने इस समझौतेको देरतक नही माना, और अपनी सीमामे दक्षिणमे भी किले बनाये। इसके विरोधमे खानने एक हाथी तथा कुछ चीनी गुलामोंकी भेटके साथ अपना दूत सीधे राजधानी पीतरबुर्गमें भेजा।

यह ऐसा समय था, जिस वक्त अंग्रेजो और रूसियोंके सबध अच्छे नही थे, और मध्य-एसियामें अपन प्रभाव को बढानेके लिये अग्रज हर तरहकी कोशिश कर रहे थे। इसके लिये उन्होंने कर्नल स्टुअर्टका बुखारा भेजा और कप्तान कोनोली खीवाके खानके पास पहुचा। कोनोलीको हुक्म दिया गया था, कि खीवामे वह खोकन्द जाये और दोनो राज्योंके रास्तेकी जाच-पडताल करे। कोनोली अल्तून-कला, अकमस्जिद, अचकियान हो छ सप्ताहके बाद खोकन्द पहुचा। रूसकी जबदस्तीसे मदली जला-भुना बैठा था, इसलिये उसे अपनी तरफ करना कोनोलीके लिये मुश्किल नही हुआ। कोनोली बहुत मूल्यवान् बन्दूकें और दूसरे हथियार कश्मीरी दुशाले तथा कीमती भेंटें, खान और प्रभावशाली दरबारियोमे बांटी। अपने दबदबेको दिखलानेके लिये वह अस्सी नौकरोंके साथ यात्रा कर रहा था, और उसके पास बहुत भारी परिमाणमें असबाब था। जिस-जिस इलाकेमे वह गुजरा, वहाके मुखियों और सरदारो अफसरोको उसने दिल खोलकर इनाम और भेंटे दी। यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि यह सारा "परमुडे फलाहार' भारतके मत्थे हो रहा था। कोनोलीकी इस मुक्तहस्तताके कारण खोकन्दमें उसके बहुतसे समर्थक हो गये थे। लौटते वक्त अमीरने उसे मार्ग-पत्र दिया। लेकिन जीजक में बुखाराका अमीर कोनोलीसे बडे रूखे तौरसे पेश आया, जिससे उसे पता लग गया होगा, कि खीवा और खोकन्दकी सफलताके बाद आगे उसे कैसे दिन देखने पडेंगे।

१८३९ ई०में रूसियो और चीनियोंके दबावके कारण मदलीने बुखाराके प्रभुत्वको स्वीकार कर लिया था, लेकिन कोनोलीकी चाटुकारितासे उसका दिमाग आसमानपर पहुच गया और उसने बुखारासे झगडा कर लिया। कोनोलीने दोनों खानोंसें थोडे दिनोंके लिये समझौता करानेमें सफलता पाई। अंग्रेज रूसके प्रभावको आगे बढनेसे रोकनेके लिये यही चाहते थे, कि खीवा-बुखारा-खोकन्द मेलसे रहे। कोनोलीको खोकन्दके मित्रोंने बुखारा जानेसे मना किया, लेकिन हिंदुस्तानके मालिकोंका हुक्म था, इसलिये वह बुखारा गया, और वहा कर्नल स्टुअटके साथ कैसे उसे अपने प्राणोंको खोना पडा, यह आगे बतलायेंगे।

अपनी तरुणाईके जमानेमें मदली सैनिक-जीवनको अधिक पसद करता था। उसने कोहिस्तानकी ओर अपनी सीमाको बढाया—करातगिन जीता, कूल्याब, दरवाज और शुगनानने उसकी अधीनता स्वीकार की। लेकिन १८४० ई०के करीब उसके स्वभावमें भारी परिवर्तन हुआ। अब वह मदिरा और मदिरेक्षणाके सेवनमें दिन-रात डूबा रहने लगा, जिसके कारण शासन-केंद्र कमजोर हो चला। ताशकन्दके कुशबेगी-लश्कर काजी कलियान, महासेनापति ईसा खोजा आदिने खानके खिलाफ षड्यंत्र शुरू किया और चाहा, कि उसको हटाकर आलम-पुत्र शेरअली, या नरबुतेके भाई हाजी बी पुत्र, मुराद बीको गद्दीपर बैठायें। शेरअली बहुत समयसे भागकर किपचक-कजाकोंमें रहता था, और मुरादबी खीवामें, जहा अल्ला कुल्लीखाने उसे अपनी लडकी ब्याह दी थी। षड्यत्रकारियोंने मदलीके विरुद्ध बुखाराके अमीर नसरुल्लाको बुलाया। दूसरी बारके निमन्त्रणपर अप्रैल १८४२ ई० मे वह अठारह हजार सेना ले खोकन्दसे पद्रह-सोलह मीलपर पहुचा। डरके मारे मदलीने अपने पुत्र मोहम्मद अमीन और कुशबेगी लश्कर (सेनापति) काजी कलियनको भेजकर अधीनता स्वीकार करते हुये नसरुल्लाके नामसे खुतबा और सिक्का चलाना मजूर किया। नसरुल्लाने मदलीके पुत्र और काजी कलियानको लौटाकर कुशबेगीसे एकातमें पूछा, तो मालूम हुआ, कि खोकन्दके लोग आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार हैं। इसपर नसरुल्लाके पास जानेका क्या परिणाम होता, यह मदलीको मालूम था, इसलिये उसने बहुमूल्य वस्तुओं और खजानेको सौ गाडियोंपर लदवाकर हजार आदमियोंके साथ नमगानका रास्ता लिया। राजधानीके बडों द्वारा निमंत्रित हो नसरुल्ला बडे सज-धजके साथ खोकन्द नगरमें प्रविष्ट हुआ और नागरिकोंमें भय सचार तथा अपने सैनिकोंको सतुष्ट करनेके लिये नगरको चार घटे लूटनेकी

आज्ञा दी। मुल्लोंकी किताब तक भी लुटे विना नही रही, बच्चो और स्त्रियोंपर अमानुषिक अत्याचार हुये। सोना-चादी छोडकर बाकी लुटे मालको दूसरे दिन खोकन्दके नागरिकोंमे बेच दिया गया।

उधर मदलीकी गाडियोंको लेकर उसके अनुयायी चम्पत हो गये, और उसके पास सिर्फ तीन सेवक रह गये। मा, बीबियो, बेटों और भाईके साथ आत्म-समर्पण करनेके लिये वह आ रहा था, उसी समय रास्तेमें पकड लिया गया। चालीस गाड़ियोंपर उसके हरम (अन्त पुर) को सवार कर बुखारा रवाना कर नसरुल्ला अब मदलीके मरवानेकी सोच रहा था। इतना सब हो जानेके बाद कुशबेगी, काजीकला और एरन्दिचकी आखें खुली और उन्होने खोकन्द-वशके किसी राजकुमारको अपने हाथकी कठपुतली बना अमीर नियुक्त करनेके लिये नसरुल्लासे कहा। इसपर बुखाराके काजीकलान विरोध करते हुये कहा—"मदलीने अपनी सास या नानी (उमर खानकी विधवा) को शरीयतके विरुद्ध व्याहा, इसलिये इस काफिरको उसके परिवारके साथ मृत्युदड मिलना चाहिये।" नसरुल्लाने मदली, उसकी मा, भाई तथा ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद अमीनको परिषद्के सामन उपस्थित करके कत्ल करवाया। खोकन्दी अमीर और प्रभावशाली मुखिया षड्यत्र करनेके लिये न रह जाये, इसलिये परिवार सहित उनमेंसे ढाई सौ आदमियोंको पकडकर बुखारा भेज दिया गया। खोकन्दके सारे राज्यमें नसरुल्लाके विजयकी घोषणा की गई। अमीर-बुखाराने छ सौ सैनिकोंके साथ समरकन्दके राज्यपाल इब्राहीम दादग्वाको अपनी ओरसे खोकन्दका उपराज नियुक्त किया।

९ शेरअली, हाजी बी-पुत्र (१८४२ ई०)

बुखारियोंकी विजय देरतक नही रही। तीन ही महीने बाद खोकन्दियोने विद्रोह कर दिया, और शेरअलीको तख्तपर बैठानेके लिये किपचक-कजाकोको बुलाया, जिन्होने बुखारी-सैनिकोंको मार डाला। इब्राहीम जान लेकर भागा, जिसपर नाराज होकर नसरुल्लाने उसे मरवा दिया। अब शेरअली खोकन्दकी गद्दीपर बैठा। नसरुल्ला फिर बीस हजार सेनाके साथ खोकन्दपर चढा। नसरुल्लाके हाथमें पडे खोकन्दियोंमें मुसलमानकुल चूलाक (लुज) नामक एक व्यक्ति नसरुल्लाका विश्वासपात्र बन गया था। उसे खोकन्दके सैनिकोंको समझानेके लिये भेजा गया, लेकिन वहा उसने उन्हे भडकाना शुरू किया और बुखारी अमीरोंके नामसे जाली चिट्ठी भेजी, जिसे पढकर नसरुल्ला अपने अमीरोंसे नाराज हो गया। इसी समय खीवावालोंने बुखारापर चढाई की। नसरुल्लाको खबर मिली, कि वह हमारे बहुत-से आदमियोको पकड ले गये। इसपर नसरुल्ला दूसरे जामिनोंको भी छोडकर बुखारा लौट गया।

शेरअलीने मदलीकी लाशको निकलवाकर उसे बडे सम्मानके साथ दफनाया, मुल्लोने शवक्रिया कराई। शेरअलीको किपचक-कजाकोकी सहायतासे तख्त मिला था। इससे पहले खोकन्दमें सर्त (फारसी-भाषी, ताजिक) बडा प्रभाव रखते थे। अब वहा किपचकोंकी तूती बोलने लगी। उनका नेता यूसुफ मिंगबाशी खोकन्दका हाकिम (राज्यपाल) बना और मुसलमानकुल चूलाक अन्दिजानका। किपचकों और सर्तोंका झगडा उठ खडा हुआ। सर्तोंका मुखिया शादी था, जिसपर खानका विश्वास था। उसने यूसुफ मिंगबाशीको मरवाकर उसके अनुयायियोंको खतम करनेका हुक्म दिलवाया। फिर मुसलमानकुलको खोकन्द आनेके लिये सदेश भेजा। मुसलमानकुलने यूसुफ मिंगबाशीके आदमियोको अपने पास जमा किया। शादीने कुछ हत्यारे भेजकर अन्दिजानमें चूलाकका काम खतम कराना चाहा, लेकिन चूलाक बहुत चालाक निकला। उसने शादीके आदमियोंको पकडकर मरवा दिया। इसके बाद किपचकों (तुर्कों) और सर्तोंका खुला युद्ध हुआ। सर्तोंको हार खानी पडी। शादी मारा गया और उसका पृष्ठपोषक शेरअली खान किपचकोंके हाथमें बन्दी बना। लेकिन किपचकोंको तख्तके लिये दूसरा आदमी न मिला, इसलिये उन्होंने शेरअलीको ही खान रहने दिया। यूसुफ मिंगबाशी और शादीके पदको भी मुसलमानकुलने अपने हाथमें रक्खा। चारों ओर किपचकोंकी तूती बोलने लगी। सर्तोंके दो नेता रहमतुल्ला और मुहम्मद करीमने शहरसब्ज जा आलम खाके पुत्र मुरादको तख्तके लिये तैयार किया। बुखाराने भी सेनाकी सहायता दी। १८४५ ई० में जब मुसलमानकुल सेना-सहित किर्गिजोंमें कर उगाहने गया हुआ था, उसी समय सर्तोंने चढ़ाई कर दी और उन्हें खोकन्द

शहरपर अधिकार करनेमें बहुत दिक्कत नहीं हुई। मुरादने अपनेको बुखाराके उपराज घोषित किया।

१० मुराद, आलम-पुत्र (१८४२ ई०)

मुरादका शासन भी दृढ़ नही हो पाया, क्योंकि अमीर नसरुल्लाके अत्याचारोंके कारण खोकन्दी उससे बहुत घृणा करते थे। इसीलिये मुसलमानकुलने फिर बड़ी आसानीसे खोकन्दपर अधिकार कर लिया। मुराद शायद मारा गया या भाग गया।

शेरअलीके पाच पुत्र थे, जिनमें सिरम्साक किपचक-खान तोख्तानजरकी पुत्री जारकिनका बेटा बाईस सालका था। उसका दूसरा पुत्र खुदायार मर्गिलानका बेक तथा मुसलमानकुलका दामाद था। मुसलमानकुल सिरम्सकको पसद नही करता था और उसे खुदायारकी मुहरसे पत्र भेज बुलाकर मरवा डाला। फिर अपने सोलह सालके दामादको खोकन्दकी गद्दीपर बैठाया। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि राज्यकी सारी शक्ति चूलाकके हाथमे थी। इसी समय किपचक-दलके भीतर भी झगडा उठ खडा हुआ। खासकर ताशकन्दका राज्यपाल नूर मुहम्मद मुसलमान कुलसे ईर्ष्या करने लगा था। चलाकके विरुद्ध १८५१ ई०मे किया गया पहला षड्यन्त्र विफल रहा। इसी समय खजानेसे भारी रकम गायब हो गई। खजाचीने उसे अपने मित्रों और नूर मुहम्मदमे भी बाटा था। जब मिगबाशी (वजीर) मुसलमानकुलने जवाब तलब किया, तो अपराधी अफसरोंने तलवार निकाल ली, फिर वह ताशकन्द भाग गये। मिगबाशीने ताशकन्दके राज्यपाल नूर मुहम्मदको उन्हे समर्पण करने तथा खुद आनेके लिये लिखा। उसके इन्कार करनेपर मुसलमानकुल चालीस हजार सेना ले ताशकन्दके ऊपर चढ़ा, लेकिन मर्गिलानके बेकके विश्वासघात करनेसे उसे सफलता नही मिली। जून १८५२ ई० मे उसने तीस हजार सेनाके साथ फिर चढाई की। उधर नूर मुहम्मदने भी पूरी तैयारी कर रक्खी थी, और आसपास के नगरोमे अपने हाकिम नियुक्त कर दिये थे। इसलिये मिगबाशी मुसलमानकुलको नूर मुहम्मद नही, बल्कि औरोंसे भी लोहा लेना था। ताशकन्दपर जल्दी अधिकार न होते देख कुछ सेना वहा छोड मिगबाशी, ने तुर्किस्तानपर सेना भेजी, और स्वय कुछ सेनाके साथ चिरची नदीके उद्गमके पास बने नियाजबेग किलेको सर करने गया। उसकी मनशा थी, कि नियाजबेगको लेकर ताशकन्दकी ओर पानी लाने-वाली नहरको तोड दिया जाय। नहर तोडनेमें सफल हो उसने ताशकन्दके उत्तर चिमकन्तके किलेको जाकर भी दखल कर लिया। इसी बीच ताशकन्दियोंने छापा मारकर नियाजबेगमें छोटी सेनाको हरा नहरको फिर जारी कर दिया। वह ताशकन्दियोंसे भिडनेके लिये लौट पडा, लेकिन युद्धके आरम्भमें ही खुदायारखा उसका साथ छोड दुश्मनोंमें जा मिला। खानके इस तरह हट जानेपर सेनामे भगदड मच गई। उनमेंसे कितने ही मारे गये, कितने ही चिरचिक नदीमे डूब मरे। मुसल मानकुल बडी मुश्किलसे भागकर करार्किगिजोंमें पहुचा—उसकी मा करार्किगिजोंकी लडकी थी।

इस समय खोकन्दमें तीन राजनीतिक दल थे, जो शक्ति हथियानेके लिये दूसरेसे मिलकर या अलग ही बराबर प्रयत्न करते रहते थे। किपचकोंमें मुसलमानकुल और नूर मुहम्मदकी दो पार्टिया थी, तीसरी पार्टी थी सर्तोकी। उक्त घटनाके दो महीने बाद सर्तोने किपचकोंके विरुद्ध एक सफल षड्यन्त्र किया। उतेनबी और दूसरे कितने ही किपचक नेता मारे गये, और उनका स्थान सर्तोने लिया। खानने अपने भाई मुल्लाबेकको नूर मुहम्मदकी जगह ताशकन्दका हाकिम (राज्यपाल) नियुक्त किया। खुदायारने किपचकोको बहुत नाराज कर लिया था, इसलिये उसे हमेशा उनसे डर लगा रहता था। उसने अपने राज्यमें अक्मस्जिद (पेरोव्स्की बन्दर)से खोकन्द और काशगरको अलग करने-वाले पहाडोंतक सभी जगह किपचकोंको कत्लआम करनेका हुक्म दे दिया। किपचिक जहा भी, बाजारों, सडकों, गावों या मैदानोंमें मिले, मारे गये। १८५३ ई०में बीस हजार किपचिकोंको इस तरह तलवारके घाट उतारा गया। खुदायारकी मा स्वय किपचकानी थी, लेकिन उससे क्या? अपने किपचक मुख्य-सेनापति सफर बीको और भी सासत देकर मरवाया—पहले उसके हाथ-पैर तोड डाले गये, फिर उसके सरपर सीसेका इतना भारी भार रक्खा गया, कि आखें अपने गोलकसे बाहर निकल आई। फिर उसके शरीरपर लेई लपेटी गई, और ऊपरसे कडकडाता हुआ तेल डाला गया। अन्तमें उसकी बोटी-बोटी

काट गई। इसके वाद मुसलमानकुल भी गिरफ्तार करके खोकन्द लाया गया। एक खुली जगहमें सिरपर लंबी टोपी पहिना उसे जंजीरोंमें जकड-बन्द करके लकडीके ऊंचे चबूतरेपर रखा गया। तीन दिन तक उसी जगह रखकर उसके सामने छ सौ किपचक जवह किये गये, फिर उसे फासी दे दी गई। खोकन्दको दो वार बुखारियोंसे बचानेवाले इस नीतिकुशल प्रसिद्ध उज्वेकके जीवनका इस प्रकार अन्त हुआ।

किपचकों (उज्वेकों) को इस तरह दवा देनेके वाद अब सर्तों और उसके नेता कासिम तथा मिर्जा अहमदका वोलावाला हुआ। उनका मल्लावेकसे झगडा हो गया। इसपर उससे ताशकन्दकी राज्यपालता छीन ली गई, और उसका पद मिर्जा अहमदको मिला। मल्ला भागकर बुखारा चला गया।

१८५७ ई० में नये राज्यपाल मिर्जा अहमदने चिमकन्द और औलियाआताके कजाकोंको अपना दुश्मन बना लिया, लेकिन पीछे अपनी कमजोरी देखकर उसने उनकी मांगोंको पूरा करके सुलह कर ली। उधर मल्लाने भी खोकन्दमें लौटकर किपचकों (कजाकों) और काराकिर्गिजोंको मिलाकर अपनी पार्टी बनाई। उज्वेक-नेता आलमकुल उसका सहायक था।

१२ मल्ला खान, शेरअली-पुत्र (१८५७-५९ ई०)

विद्रोहियोंने आक्रमण किया। समचीके युद्धमें हारकर खुदायार बुखारा भाग गया और उसकी जगह मल्ला खान घोषित किया गया।

रूसी अभियान—१८१४ ई०में खोकन्दियोंने जब तुर्किस्तान शहरको जीता, तबसे वह इस इलाकेके कजाकोंसे कर मांगने लगे। लेकिन निम्न सिर-दरियाके कजाक अपनेको रूसकी प्रजा कहते थे, इसलिये रूसने खोकन्दियोंका विरोध किया। खोकन्दियोंने अपनेको मजबूत करनेके लिये तुर्किस्तान-शहरसे नीचे यानी कुर्गान, जूलेक, कूनिशकुर्गान, ताशकुर्गान, चिमकुर्गान आदि कई स्थानोंमें अपने गढ बनाये, जिनमेंसे सबसे महत्त्वका था अकमस्जिदका गढ, जिसे खोकन्दियोंने १८१७ ई०में पहलेपहल सिरनदीके वायें तटपर बनाया था, लेकिन अगले ही साल उसे दाहिने तटपर परिवर्तित कर दिया। अकमस्जिदमें खोकन्दियोंका वेक (बडा हाकिम) रहता था, जिसके अधीन निम्न-सिरके दूसरे किले भी थे। वेक स्वयं ताशकन्दके उपराजके अधीन माना जाता था। गढोंको बना मजबूत हो खोकन्दियोंने कजाकोंपर भारी कर लगाये। प्रति किबित्का (तम्बू या परिवार) सालाना चार भेडें, जिसका तिहाई कर उगाहनेवाले (जकातची) को देना पडता। इसके अतिरिक्त लकडी-कोयले-भुसपर भी प्रति किबित्का चौबीस बोरा कोयला, चार बैल सखसौल (फरास ईंधन), हजार पूला नरकट देना पडता था। प्रत्येक किबित्काका एक आदमी अपने खर्चपर वेगार करनेके लिये जाता था। ये वेगारू खोकन्दियोंके वगीचोंमें काम करते, किलेकी मरम्मत या भीतरके अस्तवलोंकी सफाई आदि करनेके लिये सालमें एक वार जाते। लडनेके समय हरएक हट्टे-कट्टे कजाकको अपने घोडे और हथियारके साथ सिपाही बनना पडता था। खोकन्दी कजाकोंपर सचमुच ही बहुत पाशविक अत्याचार करते थे—विना कलीम (भेंट) दिये वह कजाक औलों (गांवों) से औरतें ले जाते, और शरीयतके विरुद्ध उनकी वेइज्जती करते।

निम्न सिर-दरियापर खोकन्दियोंके बहुत सैनिक नही थे, लेकिन तब भी उनकी धाक जमी हुई थी। अकमस्जिदमें सबसे बडा किला था, जहांपर पचास सिपाही रहते थे। उनके अतिरिक्त वहां सौ बुखारी और खोकन्दी व्यापारी बसे हुये थे। कूनिशकुर्गानके गढ़में पचीस सिपाही, खोशकुर्गानमें चार, जूलेक (१८५३ ई०) में चालीस, और यानीकुर्गानकी आयताकार चार-पांच फुट ऊंची दीवारोंके भीतर दो या तीन खोकन्दी सैनिक रहते थे।

अपनी प्रजा कजाकोंके साथ ऐसा वरताव होते रूसी देख नही सकते थे। इसलिये १८४६ ई० में कप्तान शूल्जको सिरके मुहानेकी पडतालकर वहां किला बनानेके लिये भेजा गया। अरालस्कके नामसे मशहूर राइमस्क किलेकी नींव अगले साल पडी। १८५० ई० में कजाकोंका मन बिगडते देख खोकन्दियोंने उन पर आक्रमण कर दिया, और पहली वार वह उनके छब्बीस हजार तथा दूसरी वार तीस हजार पशु और १८५१ ई० में पचहत्तर हजार पशु छीन ले गये। इसपर अरालस्कके

रूसी कमांडरने कोशकुर्गानपर अधिकार कर लिया। रूसी आगे बढ़नेके लिये निश्चय कर चुके थे। अराल समुद्रमें गिरनेवाली सिर नदी हमारे यहाँ की गंगा जैसी बड़ी नदी है। उसकी धाराको सैनिक यातायातके लिये इस्तेमाल किया जा सकता था। इसके लिये स्वीडनमें बने दो स्टीमरोंको पुर्जे पुर्जे अलग करके अराल समुद्रमें पहुँचा जोड़कर मई १८५२ ई०में तैयार कर लिया गया। उसी सालकी गर्मियोंमें कर्नल ब्लारम्बेगने अकमस्जिद तक सिर दरियाकी सर्वे की, और वहाँसे फौजी चौकी हटानेके लिये खोकन्दियोंको कहा। कर्नलके साथ चार सौ सैनिक और दो नौपौंडी तोपें अकमस्जिद आईं। टोकनेपर कर्नलने जवाब दिया, कि हम रूसी तटपर चल रहे हैं, और तुम सिर नदीके दाहिने किनारेपर अपने किलेको नहीं रख सकते। किलेके पास पहुँचनेपर खोकन्दियोंने कर्नलसे चार दिनकी मोहलत माँगी। उन्हें आशा थी, कि इसी बीच कुमक आ जायेगी, लेकिन वह नहीं आई। दिन पूरा होनेपर रूसियोंने ग्रेनेड (हथ-बम) फेंके। खोकन्दियोंने बन्दूकों और दीवारोंपर लगी तोपोंसे जवाब दिया। रूसियोंने उनकी तोपें जल्दी ही चुप कर दी, लकड़ी-का फाटक तोड़ दिया, लेकिन किलेकी दीवार मजबूत साबित हुई। रूसियोंने भीतर पहुँचकर आग लगा दी। इस लड़ाईमें पंद्रह रूसी मारे गये और पचहत्तर घायल हुये। लौटते समय उन्होंने कूनिशकुर्गान, चिमकुर्गान और कोशकुर्गानकी चौकियोंको भी नष्ट कर दिया।

१८५३ ई०में रूसियोंका अभियान और भी बड़ी सेनाके साथ हुआ, जिसमें २१३८ सैनिक, २४४२ घोड़े, २०३८ ऊँट, और २२८० बैल, बारह तोपें और एक चलता-फिरता लकड़ीका पुल था। अरालस्कके किलेको छोड़नेसे पहले ही रास्तेके चारेकी रक्षाके लिये अबकी गर्मियोंमें कजाकोंको वहाँ डेरा न डालनेका हुक्म दे दिया गया था। यात्रा बहुत रक्षित तौरसे होने लगी, मदद करनेके लिये स्टीमर "पेरोव्स्की" नदीमें साथ-साथ चल रहा था। कराउजियक होते २ जुलाईको रूसी सैनिक अकमस्जिद पहुँचे। इस बीचमें खोकन्दियोंने किलेको काफी मजबूत कर लिया था। उसके चारों तरफ गहरी खाई खोद दी थी, महीने भरकी रसदके साथ तीन सौ खोकन्दी सैनिक वहाँ तैनात थे। दीवारोंपर उन्होंने तीन तोपें भी लगा रक्खी थीं। लेकिन रूसी सेना और तोपोंके सामने वह कितने दिन तक ठहरते? खोकन्दियोंने आत्मसमर्पण करनेके लिये पंद्रह दिनकी मुहलत चाही। इसी बीच तीन दिनके बाद एक सैनिक टुकड़ी और आगे ताशकन्दकी ओर भेजी गई। जूलेकके सैनिक भाग गये और रूसी वहाँके किलेको ध्वस्त कर बीस तोपों और बहुत-से गोला-बारूदके साथ अकमस्जिद लौट गये। अकमस्जिदवालोंके आनाकानी करते देख बारूदकी सुरंगसे दीवारके एक भागको उड़ा दिया गया, किलेदार मुहम्मदअली अपने ढाई सौ आदमियोंके साथ मारा गया। रूसियोंके हाथमें घोड़ेकी पूँछोंवाले दो झंडे, दो भालेवाले झंडे, दो कांसेकी तोपें, ६६ छोटी और अधिकतर टूटी-फूटी तोपें, १५० तलवारें और दो कवच हाथ आये। रूसियोंने कजालाका ऊपरी धारपर पहला किला, कमकचीपर दूसरा, कूनिशकुर्गानमें तीसरा किला बनाया, और अकमस्जिदका नाम बदलकर पेरोव्स्की कर दिया।

रूसके इस खतरनाक अभियानके समय खोकन्दियोंमें घोर गृहयुद्ध चल रहा था। १८५३ ई० के शरद्में सवदान ख्वोजाके नेतृत्वमें ७००० सेना ताशकन्दसे अकमस्जिदकी ओर भेजी गई, जिनके मुकाबिलेके लिये दो तोपें ले २७५ रूसी सैनिक गये, जो बड़ी बुरी तौरसे पिटे और बानवे ऊँटोंपर घायलोंको लिये रातको १९३ लाशें पीछे छोड़ भाग आये। जाड़ा आनेपर फिर अभियान शुरू हुआ। १४ दिसंबरको १२-१३ हजार सैनिकों और सत्रह पीतलकी तोपोंके साथ खोकन्दियोंने आकर पेरोव्स्कीके सामने मुकाबिला किया। नवीन और प्राचीन हथियारोंका मुकाबिला क्या? दो हजार खोकन्दी मारे गये, जब कि रूसी अठारह हत और उन्चास आहत हुये।

अब तैयारी करना और आगे बढ़ना जारशाही रूसका हर सालका काम हो गया। बड़े परिश्रमके साथ १८५४ ई०में फिर रूसियोंके विरुद्ध खोकन्दियोंने भी तैयारी की। तुर्किस्तानसे तोप ढालनेवाले कारीगर लाये गये। ताशकन्दके बेकने लोगोंके घरोंसे सारे पीतलके बर्तन ले लिये। उधर रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने अकमस्जिदके किलेको और मजबूत किया, और कमजोर अतएव बेकार समझकर किला नम्बर दोको छोड़ दिया। इसी समय उनपर बुखारावालोंने आक्रमण

कर दिया था, इसलिये खोकन्दी नहीं आये। उन्होंने खीवाको भी अपनी ओर मिलानेकी कोशिश की, लेकिन काफिरोंकी चपतपर चपत खाकर भी मध्य-एसियाके खानोंको होश नहीं आया था, कि वह एक हो जायें।

यह मालूम ही है, कि मल्ला खानके गद्दी सँभालते समय खुदायार खान भागकर बुखारा चला गया था। अमीर नसरुल्लाने पहले उसे समरकन्दमें फिर जीजकमें रक्खा। खुदायारको अपना तन चलानेके लिये माके भेजे पैसेसे व्यापार करना पड़ता था। दो सालके शासनके बाद उज्बेक (किपचक) अमीरोंने मल्ला खानको मार डाला। बड़ा प्रभावशाली अमीर आलमकुल अन्दिजानका बेग नियुक्त हुआ था। उसकी अनुपस्थितिका फायदा उठाकर षड्यन्त्रियोंने महलमें घुसकर मल्ला खानको सोनेमे मार डाला—षड्यन्त्रियोंका नेता शादमान खोजा था।

१३ शाह मुराद, सरिन्सक-पुत्र (१८५९ ई०)

खुदायारको भगा षड्यन्त्रियोंने पद्रह सालके लड़के शाह मुरादको गद्दीपर बिठाया था। निहल मल्ला खानका यह भतीजा था। मल्लाखान का पुत्र सैयद सुल्तान भागकर अन्दिजानके स्वामी आलमकुलकी शरणमें गया, और ऊपरसे शाहमुरादकी भक्तिका दिखावा किया। खोकन्दके भीतर पार्टियोंका संघर्ष चल रहा ही था। तुर्किस्तानके बेग खनायत शाहने खुदायार खाको जीजकमे बुलाया। ताशकन्द उसके हाथमें चला गया। शाहमुराद सेनाके साथ आया, लेकिन एकतीस दिनके मुहासिरेके बाद खाली हाथ लौट रहा था, इसी बीच आलमकुलने अन्दिजानसे आकर चार षड्यन्त्रियोंको मरवा डाला। खुदायार फिर गद्दीपर बिठाया गया, और आलमकुल उसका अभिभावक बना। खुदायारने भागती हुई सेनाका पीछा करके पहले खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) और फिर खोकन्द ले लिया। आलम-कुल मर्गिलानके पीछेके पहाड़ोंमें भाग गया। खुदायारने शाहमुरादको मार डाला।

खुदायार पुन (१८५९ ई०)

इस समय खोकन्दमे दो दलोंमें खूनी संघर्ष चल रहा था। सर्त और नगरनिवासी खुदायार के समर्थक थे और किपचक (उज्बेक और करावल्पक) आलमकुलके दोनो दलोंमें सेना ही नहीं, बल्कि नागरिक भी मौका पाते एक दूसरेके ऊपर टूट पड़ते। उज्बेक दल अपने तीन उम्मीदवारों—शाहरुख, सादिक बेग और हाजीबेगमें बटा हुआ था। आलमकुलने तीनोंको पकड़-कर ओश नगरमें कत्ल करवा डाला, जहा ही तख्त-सुलेमान पहाड़की बगलमें तीनो की कब्रें है। इसके बाद आलमकुलने सुल्तान सईदको खान घोषित किया। मर्गिलान और अन्दिजानपर नये खानका अधिकार रहा। खुदायारकी सेना वहा दो बार हारी, इसपर खुदायारने बुखाराके अमीर मुजफ्फर खासे मदद मागी। मुजफ्फरके आनेपर आलमकुल कराकुल्जाकी पहाड़ियोंमें हट गया। इसी बीच खुदायारसे मुजफ्फरका झगड़ा हो गया। आलमकुलको खुश करनेके लिये सोना मढ़ी छड़ी, एक टोपी, एक सुनहला कमरबन्द और एक बहुत ही सुन्दर हस्तलिखित कुरान भेजकर वह बुखारा लौट गया। बुखाराके पीठपर न रहनेपर खुदायार कमजोर हो गया। आलमकुलने आकर खोकन्दपर आसानीसे अधिकार कर लिया और खुदायार फिर अन्तर्वेदकी ओर भागा।

१४ सैयद सुल्तान, मल्ला-पुत्र (१८५९-६५ ई०)

यह नाम का ही खान था, सारी ताकत आलमकुलके हाथमें थी। अपने विरोधियोंपर आलमकुलने खूब हाथ साफ किया, और चार हजार आदमियोंको मरवा डाला। लोगोमे असतोष पैदा होना ही था, अब उनकी नजर जीजकमें बैठे खुदायारपर थी।

रूसियोंसे छेड़छाड़—१८५९ ई० में ओरेनबुर्गके राज्यपालकी रायमें पेरोव्स्कीका किला सुरक्षित नहीं था, इसलिये रूसियोंने जूलेक किलेपर अधिकार करके दो साल बाद १८५१ ई० में वहा एक मजबूत किला बनाया। उन्होंने यानीकुर्गानके किलेको भी ध्वस्त कर दिया। निम्न सिर-दरियाके कजाक रूसी प्रजा थे, किन्तु मध्य सिरके कजाक खोकन्दियोंके हाथमे थे। रूसियोंने आगे

बढते खोकन्दियोंके तोगमक, पिशपेक आदि किलोंपर अधिकार कर लिया। अब उन्होंने खोकन्दकी भूमिपर दो तरफसे प्रहारकी योजना बनाई। एक सेना औलियाआता या तलसपर उत्तरकी ओरसे चढ़ी और दूसरी पश्चिमसे तुर्किस्तान शहर (यस्सी) पर। इसी समय पोलन्दमें विद्रोह हो गया और पश्चिमी युरोपमें युद्धकी आशंका बढ गई थी, इसलिये खोकन्दपर चढाईकी योजना १८६४ ई० मे स्थगित कर दी गई। तो भी कराताउ और बोगेलदाईताउकी पहाड़ियोंके खोकन्दी किले एकके बाद एक रूसी लेते गये। तुर्किस्तान शहर और औलियाआताके रास्तेपर अवस्थित चिमकन्दके किलेको खोकन्दी मजबूत करने लगे, जिसकी खबर पाकर निम्न-सिरका रूसी कमांडर जेनरल चेर्नयेफ सितम्बर १८६४ ई०मे रवाना हुआ। चन्द दिनोंके मुहासिरेके बाद चिमकन्दपर उसने अधिकार कर लिया। दस हजार युद्धबंदी और बहुत सा लूटका माल हाथ आया। चिमकन्दके हाथमें आ जानेपर अकमस्जिदसे वेर्नोये (अल्माआता) का रास्ता साफ हो गया, और खोकन्दका एक बहुत महत्त्वपूर्ण इलाका—चू-उपत्यका—खानके हाथसे निकल गया।

खोकन्दी चुप कैसे रह सकते थे? ९ मई १८६५ ई० को ताशकन्दके पास जेनरल चेर्नयेफकी सेनासे लडते हुए आलमकुल घायल हुआ। डाक्टर अमदुल्ला उसकी चिकित्सा कर रहा था। डाक्टर आलमकुलकी पोशाकको एकके बाद एक उतरवा रहा था, जिसमें कि मरणासन्न आहत पुरुषको कुछ स्वच्छ हवा मिले। उधर उतारे कपडोंको उज्बेक लेकर चम्पत हो रहे थे। अलीकुलको बिल्कुल नंगा देख दूसरा कपडा न होनेसे डाक्टरने अपनी खलअतसे उसे ढाक दिया।

ताशकन्द प्राचीनकालसे ही भारी व्यापारिक महत्त्वका नगर था। यहींपर बुखारा, खीवा, खोकन्द और रूसके कारवा-पथ मिलते थे। अब वह अधिक देर तक रूसियोंके हाथसे बाहर नहीं रह सकता था। रोज रोजके खूनी संघर्ष और अशांतिसे परेशान हो वहाके धनी व्यापारियोंने रूसके दृढ शासनको ही पसंद किया। अगस्त १८६५ ई० मे शहरके रईसों और मुल्लाओंने चादीकी तस्तरीमें नमक-रोटीकी भेंट जेनरल चेर्नियेफके सामने रखकर अभिनन्दनपत्र देते हुये अपनेको जारकी प्रजा घोषित किया—"तुम एक समुद्रको दो समुद्रमें नही विभक्त कर सकते, और न एक राज्यके भीतर दूसरा राज्य ही बना सकते।" रूसियोंने तुर्किस्तानका एक नया प्रदेश (गुबर्निया) बना दिया, जिसका शासन-केंद्र ताशकन्द बना।

खुदायार खान पुन (१८६५-७५ ई०)

अभी भी खोकन्दका कितना ही भाग रूसियोंके हाथमें नही था। खुदायार ताकमें था। ताशकन्दमें रूसियोंके जम जानेपर उसने बुखारी सेना ले खोजन्दको जीतते खोकन्द पहुचकर अपनी गद्दी सभाल ली। बुखारियोंने अपनी सेवाओंके बदलेमें १८६५ ई० में खोजन्दको अपने अधिकारमें कर लिया। यही नही, बुखारी अमीर मुजफ्फरने रूसियोंको हुक्म दिया, कि खोकन्दी इलाकेसे हट जाओ, नही तो हम जहाद घोषित करेंगे। और भी आगे बढते हुये मुजफ्फरने बुखारामें रूसी व्यापारियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली, जिसके बदले रूसियोने ओरेनबुर्गमें बुखारी व्यापारियोंके साथ भी वैसा ही किया, और मुजफ्फरके दूतको ओरेनबुर्गमें रोककर उसे पीतरबुर्ग नही जाने दिया। सीमाके झगडोंके निर्णयके लिये मुजफ्फर खानके बुलानेपर जो रूसी अफसर स्त्रूवे तथा कितने ही इंजीनियर आये थे, उन्हें अमीर-बुखाराने गिरफ्तार कर लिया। इस अपमानको रूसी कैसे बर्दाश्त करते? मुजफ्फरकी गोशमालीके लिये ११ फर्वरी १८६६ ई०को दो हजार सेना ले जेनरल चेर्नियेफ सिर पार हो सीधे समरकन्दकी ओर बढा। रेगिस्तानके रास्ते सात मजिलें पारकर वह जीजक पहुच गया, लेकिन बुखारियोंके सैनिक संख्याबलको देखकर उसने लौट जाना ही पसंद किया। बुखारी इसे अपनी विजय समझकर रूसियोंका पीछा करते हुए सिर दरिया पार कर गये। इसपर मेजर जेनरल रोमानोव्स्कीने आक्रमण कर ८ अप्रैलको बुखारियोंको हरा खोजन्दकी ओर भगा दिया। अब सिरपर रूसी स्टीमर सेना और रसद ढो रहे थे। मुजफ्फरने सारे अन्तर्वेदमें रूसियोंके विरुद्ध जहाद घोषित करके धार्मिक जोश पैदा कर दिया था, इसलिये गाजियोंकी कमी नही थी। वह चालीस हजार सेना ले ताशकन्दपर आक्रमण करने गया, जब कि वहा रूसियोकी संख्या

३६०० थी। खोजन्दसे उत्तर-पश्चिम कुछ ही मीलोंपर सिर तटपर इरजारमें २२ मईको भयंकर युद्ध हुआ। आधुनिक हथियारोंसे लैस रूसियोंने बुखारियोंको घास-मूलीकी तरह काट डाला, और अमीर मुजफ्फर एक हजार सरवाजो (सैनिकों) के साथ प्राण लेकर भागा। उसके डेरेमें "चूल्हेपर रक्खे खानेसे भाप निकल रही थी, और हुक्का पीनेके लिये तैयार था।" अमीरका डेरा, उसकी कितनी ही तोपें, बहुत भारी परिमाणमें गोलाबारूद और रसद रूसियोंके हाथ आई। खुदायारने मनमें घृणा रखते हुये भी विजयके लिये रूसियोंको बधाई दी।

बुखाराकी यह जबदस्त हार थी, और मध्य-एसियाकी उस समय बुखारा ही सबसे बडी शक्ति थी। रूस जैसे जबर्दस्त साम्राज्य के सिरपर पहुच जानेपर भी खुदायारकी अकल ठिकाने नही हुई। वह अपनी प्रजापर अत्याचार करता, मनमाना कर लगाता, या ऐसे ही उनकी सम्पत्तिको जब्त कर लेता। घुमन्तू कजाको और किपचकोंके ऊपर उसने पहलेपहल खास कर लगाये। इस समयकी अवस्थाका वर्णन एक मध्य-एसियाई लेखकने निम्न शब्दोंमें किया था—

'सडकोंकी मरम्मत, राजमहलोंके निर्माण, खानके बागोंके जोतने-खोदने और नहरोंकी सफाईके लिये सारे देशसे आदमियोंको पकडकर जबर्दस्ती काममे लगाया जा रहा है। मजूरी क्या उन्हे खाना भी नही दिया जाता। साथ ही यदि गावके आधे लोगोंको कामपर लगाया गया है, तो दूसरे आधे से दो तका (बारह आना) जबदस्ती कर उगाहा जा रहा है। कामसे भागने या इन्कार करनेपर कोडोंसे खबर ली जाती है। कभी-कभी कोडोसे मार-मारकर लोगोंके प्राण ले लिये जाते है, और कितनोंको प्राण रहते ही कामकी जगहमें ही दबा दिया जाता है। ऐसी बेगार पहले खानोंके समय में भी ली जाती थी, लेकिन उन्हें खाना तो मिल जाता था। पहले खानको बिना कर दिये लोग घास, नरकट और ईंधनकी लकडी जमा कर सकते थे, लेकिन अब उसमेंसे आधी खानको देनी पडती है, जिसे सरकार निश्चित दामपर बेंच देती है। इसके साथ ही ईंधन या सरकडेकी गाडी जब शहरके फाटकपर पहुचती है, तो आधा तका वहा और फिर एक तका बाजारमे महसूल देना पडता है। पहले झाडियोंकी लकडी (लीच) कर-मुक्त थी, लेकिन अब खानने प्रत्येक पर चार चेका (दो पैसा) चुंगी देनेके लिये मजबूर किया है। चुंगीवाले जोंकोंके तालाबके पास रहते है। पशुओंके बेचनेपर साधारण जकात (शुल्क) के अतिरिक्त खानके लिये प्रति ढोर एक तका, प्रति भेड आधा तका, प्रति ऊट दो तका और प्रति घोडा-गदहा एक तका महसूल देना पडता है—उस समय खोकन्दी सिक्का सोनेका तिला, जिसमें साठ चादीका तका होता और तकेमें चौवालीस चेका या ताबेके पैसे होते। आयात मालपर मूल्यका चालीसवा भाग जकात और ऊपरसे बीसवा भाग और खानके लिये अमीनियाना देना पडता था। निर्यातके मालोमें रेशम और रूईपर प्रति ऊट दस तका देना पडता। बाजारमें बिकनेवाली स्त्री-पुरुषोंकी पोशाक, तोशक, रेशमी कपडो तथा दूसरी मूल्यवान् चीजोंपर एक तका एक थान, और कम कीमती मालपर आठवेंसे चौथाई तका कर देना पडता। दूकानोंकी हिफाजतके लिये पहरा देनेके लिये रातको सिपाही आते। उनके खर्चके लिये भी हर दूकानको हर चौथे महीने दोसे दस तका देना पडता। बाजारोंमें बिकनेवाले अनाजपर प्रति चारयक (दो मन दस सेर) पर चार चेका देना पडता। सब्जी, खरबूजा और अनाजपर प्रति बोझ एकसे तीन तका तक कर है, जिसे तेकजाई (बाजारमें बेचनेका हक) कहा जाता है। इनके अतिरिक्त खराज और तनाव (भूकर) अलग है। दूध, खट्टी मलाई आदिपर प्रति प्याला दो चेका कर है। बत्तक या तालकी चिडियोंमें हर जोडेमें एक खानका होता, और पालतू मुर्गे-मुर्गियोमें प्रत्येकपर दो चेका, दस अडेपर एक चेका देना पडता।

भारतीय सिरकीवालोंने शताब्दियों पहले भारतकी पश्चिमी सीमासे बाहर अपना घुमन्तू-जीवन बिताना शुरू किया, और धीरे-धीरे पश्चिमकी ओर मध्य-एसिया ही नही, युरोप तक फैल गये। इन्हे अंग्रेजीमें जिप्सी, रूसीमें सिगान और उनकी अपनी भाषामें रोमनी या रोम कहा जाता है। विद्वानोंने निश्चित किया है, कि रोम वस्तुत हमारे डोम शब्दका ही अपभ्रंश है। रोमनी लोगोंकी भाषाको देखनेसे इसमें सदेह नहीं रह जाता, कि वह भारतीय है। ईरान और मध्य-एसियामें

रोमनी लोगोंको लोली या ल्यूली कहते हैं। बहुत पुराने समयसे यह भारतके मदारियोंकी तरह बन्दर, भालू और बकरे लिये नगरों और गावोंमे तमाशा दिखलाते अपनी जीविका करते थे। "खुदायारने इन गरीबोंको भी चैनसे नही रहने दिया। उसने उनके ऊपर भी अपने कारिन्दे नियुक्त किये, जिन्होंने उनके जानवरोंकी सख्या बढाकर बतलाई। हर बाजारके दिन और बडे शहरोंमे सप्ताहमें तीन बार लोली अपने पालतू भालुओं, भेडियो, बन्दरो, बकरियो, लोमडियों और सूअरोंके साथ बाजार होकर निकलते, और प्रत्येक दूकानको चार चेका उन्हे देना पडता। खानके विदूषक भी बाजारमें फिरते, और उन्हे भी दूकानदारोको पैसा देना पडता। यह पैसा खानके रसोईखानेके खर्चके लिये जाता। मजिस्दका इमाम नियुक्त करते वक्त उसे खानको दस तका देना पडता, सूफी (मुअज्जिन) को पाच तका। यदि खानको मालूम हो जाय, कि किसी परिवारमें दावत, शादी या खतना है, तो वह अपने गायकोंको भेज देता। गृहपतिको उनमेंसे हरएकको एक चोगा, और दाम पाच तिला (अशर्फी) तक खानके लिये देना पडता। प्रति बसत खोकन्द शहरसे बाहर दरवेश-खानाका भारी मेला लगा करता। उस समय हर एक पेशेवालेको खानके सामने अपनी क्षमताके अनुसार नजर भेंट करनी पडती, जो सौसे हजार तिला तक होती। अगर इसमें जरा भी गफलत होती, तो पच लोग पीटे जाते। अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमीसे जमीन या बगीचा लेना चाहता, तो खान उसे उसको मूल कीमतपर ही बेचनेके लिये मजबूर करता, और इसका जरा भी ध्यान नही रखता, कि नये मालिकने उसमे मेहनत और खाद-पानीसे कितनी तरक्की की है। खान अपने लिये सभी चीजें सस्तेमे लेना चाहता है। राज्यसे बाहर अगर कोई जाना चाहता, तो दो तकाके साथ आवेदनपत्र देना पडता। यह पत्र फिर महरम (एक अफसर) के सामने रक्खा जाता, जो उसके लिये एक तका लेता। जानेवालेकी जान इतनेसे ही नही बचती, उसे सडककी हर मजिलपर अलग कर देना पडता। घास, ईंधनके कर, प्रतिपशु प्रतिमास बारह चेका हैं। चराईका ठेका खानने सिदीक कुइचीको बीस हजार तिला सलानापर दे रक्खा है। खराज या फसलके महसूलके रूपमें दो लाख चारयक (एक चारयक=दो मन दस सेर) अनाज मिलता, जिसे बेच दिया जाता। इसके प्रबधके लिये हर किलेमें विशेप अफसर नियुक्त है। शरिखाना जिलेसे नौ हजार चारयक अनाज मिलता है, बालीकिचीसे एक लाख, सोखसे चौदह हजार, मेरकेन्दसे बारह हजार चारयक। बगीचो और मेवाके बागोंके करको तनाब कहते हैं, जिसमे साठ हजार तिला आता। बालीकिची और चिल महरमके बीचमें सिर नदीपर चुगी कर लगता। विवाहकी लिखाई-पढाईपर भी कर था, जो कि आधा तिला तक होता है। वरासत (उत्तराधिकार) पर सम्पत्तिका चालीसवा हिस्सा मृत्यु-करके रूपमें खान लेता है। नमक बनानेके लिये करसे खानको बीस हजार तिला प्राप्त होता। देहाती लोगों और घुमन्तू कबीलोंपर अलग जकातका कर लगा, जिसका ठेका ग्यारह हजार तिलापर चेर्चीबाशीको दिया गया। व्यापारियोंसे जकात उगाहनेवाला मेहतर पैंतीस हजार तिला, खानकी कारवासरायों और हजार दूकानोंका ठेकेदार ईसाइया तीस हजार तिला देता है। कपास कर और दलाली करसे दस हजार तिला राजकोषमे जाता। तेलके कोल्हू, अनाजमडी, रेशम बाजार, घासहट्टा, दूधहाटसे प्रति वर्ष पाच हजार तिला, ब्याह और मुल्ला आदिकी नियुक्तिसे भी पाच हजार तिला प्रति वर्ष मिलता है।"

लेकिन डडेके सामने खानकी अकल ठीक रहती, इसलिये रूसियोंको व्यापार करनेमें कोई बाधा नही दी जाती थी। इतने भारी करके बोझसे कराहते लोग कब तक चुपचाप रहते ? १८७१ ई० में लोगोंने विद्रोह कर दिया, लेकिन उसे जल्द ही दबा दिया गया। काले किर्गिजोंपर प्रति परिवार एककी जगह तीन भेंडें तथा पहाडपर जोते उनके खेतोंपर खानने नया कर लगाना चाहा। किर्गिजोंने कर देनेसे इन्कार कर दिया और खानके तहसीलदारोको पीट भी दिया। सेनाके आनेपर वह पहाडोंपर भाग गये। इसी समय मुसलमानकुल्का बेटा तथा खानका साला आफताबचा अब्दुरहमान हाजी मक्काकी हज करके खलीफाके नगर कान्स्तन्तिनोपल (कुसतुन्तुनिया) होते लौटा था। वह स्वय भी किर्गिज था, लेकिन खानका सबधी होनेके कारण दूसरे वर्गमे सबध रखता था। खानने उसे सेना देकर किर्गिजोंको दबानेके लिये भेजा। उसने किर्गिजोंसे कहा—अपनी

तकलीफको कहनेके लिये खानके पास अपने पचास प्रतिनिधि भेजो, हम उन्हे बिना नुकसान पहुचाये जामिनके तौरपर रखेगे। लेकिन वहा आनेपर खुदायारने बडी क्रूरताके साथ किर्गिज प्रतिनिधियोंको मरवा डाला। आफतावचाको इसके लिये बडी शर्म आई और वह किर्गिजोकी भूमि छोडकर खोकन्द लौट गया। किर्गिजोंने बदला लेनेके लिये हथियार उठाया और उजकन्द तथा सुकको ले लिया—सुकमें एक छोटा-सा किला था, जिसमें खानका खजाना रहता था। पहाडी इलाकोंमें सफल होते ही मैदानी इलाकेमें जानेपर किर्गिज आक्रमणमें असफल रहे, उनके बहुत-से आदमी खानके हाथमें बदी बने, जिनमेंसे पाच सौको खोकन्दकी बाजारोंमें फासीपर चढा दिया गया। किर्गिजोंने मदलीखानके पुत्र मुजफ्फरको अपना खान बनाया था। खुदायारने उसकी जिंदा खाल खिचवा ली। लेकिन विद्रोहियोंकी शक्ति बढती गई, और उसकी क्षीण। इसपर खानने रूसियोंसे मदद चाही, लेकिन वह इस नरराक्षसको क्यो मदद देने लगे? लोगोंकी भी सहानुभूति विद्रोहियोंके साथ थी। खुदायारको अपने बेटे तथा अन्दिजानके बेक (राज्यपाल) नासिरुद्दीनपर भी सदेह हुआ। चारों तरफसे आशाकी एक भी झलक न देखकर खुदायारने खजाने और परिवारको लेकर अपने पदको छोड दिया। विद्रोहियोंने बहुत जल्दी ही ओश, अन्दिजान, सूजक, उचकुर्गान और बालिकचीको अपने हाथमें कर लिया। बालिकचीके बेगने विरोध करना चाहा, इसपर मुहके रास्ते डडा घुसेडकर उसे जमीनमें गाड दिया गया। खानके बहुतसे सिपाही विद्रोहियोंकी ओर मिल गये और उनके कमाडर तथा खानके साले आफतावचाने नमगानके पास तुराकुर्गानके किलेमे अपनेको बद कर आगे कोई भी कारवाई करनेसे इन्कार कर दिया। १८७३ ई० के जाडोमें विद्रोहियोंकी शक्ति कुछ निबल हुई, और कुछ शहर फिर खुदायारको मिल गये, लेकिन १८७४ ई० के बसतमें खुदायार पुत्र अमीनको आगे करके विद्रोहियोंने फिर बगावतका झडाउठाया। अमीनकी बहुत अधिक बात करनेके स्वभावने परदा फाश कर दिया। उसके चचा बातिरखान तुरा सोलह और षड्यन्त्रियोंके साथ राजमहलमें बुलाये गये, जहासे वह फिर नही लौटे। तरुण खानजादेको निगरानीमें रक्खा गया। मेहतर मुल्ला कामिलने सूचना देकर सावधान नही किया था, इसलिये खुदायारने उसे जहर देकर मरवाया। इसके बाद फिर दूसरा षड्यन्त्र खुदायारके चचा फाजिलबेगके पौत्र अब्दुल करीम बेकको खान बनानेके लिये किया गया। रूसियोने अब्दुल करीमको पकडकर ताशकन्दमें और उसके मुख्य सलाहकार अब्दुल करीमको चिमकन्दमें रख दिया। खानको अब हरएक आदमीपर सदेह होने लगा। उसे आखोंके सामने मौत नाचती दिखाई पडती थी, इसलिये वह काफी समय तक महलसे बाहर नही निकला। हबशी गुलाम नसीम तोगा खानका बडा ही विश्वासपात्र सेवक था, जो हर वक्त महलके द्वारकी रक्षा करता। उसे भी अपने बीबी बच्चोंको भीतर न आने देनेका हुक्म था। जब शका और सदेहका इतना बाजार गर्म हो, तो हर जगह गुप्तचरोका जाल बिछना स्वाभाविक था।

रूसी खोकन्दकी सारी हालत बडे गौरसे देख रहे थे। १८७५ ई०में तुर्किस्तान-प्रदेशका शासक जेनरल काफमान था। उसने खोकन्द होते रूसी सैनिक टुकडीको काश्गार भेजनेके लिये सहमति लेनेके वास्ते अब्दुल करीमको खोकन्द भेज दिया। इधर आफतावचा भी अपने पिता मुसलमान-कुलकी हत्याका बदला लेना चाहता था, इसलिये खुदायारके खिलाफ नये विद्रोहका अगुवा बना। सारी सेना उसकी तरफ हो गई। खुदायारके भाई और पुत्र भी उससे आ मिले। खान अपनी बेगमों और दस लाख गिन्नी खजाना लेकर ताशकन्द भागा। रूसियोने उसे बडी खुशीसे आश्रय दे नजरबन्द कर दिया। फिर थोडे समय बाद उसे ओरेनबुर्गमें रहनेके लिये भेज दिया।

१५ नासिरुद्दीन, खुदायार-पुत्र (१८७५ ई०)

खुदायारके भाग जानेपर विद्रोहियोंने उसके पुत्र नासिरुद्दीनको खान घोषित किया। अब्दुर्रहमान आफतावचा मुखिया था—आफतावचाका अर्थ है हाथ धोनेके आफतावा या गडवेका उठानेवाला। मुल्ला ईसा औलिया और हाकिम नजर परमाचीने जेनरल काफमानके पास अनुनय-विनयके पत्र भेजे, और खुदायारकी गलतियोंको दुरुस्त करनेका वचन देते हुये काफमानकी ओर मित्रताका हाथ

बढ़ाया। काफमानने इस शर्तपर बात स्वीकार की, कि नासिरुद्दीन बापकी की हुई संधियोंको स्वीकार करे, रूसी प्रजाके नुकसानोंकी क्षतिपूर्ति दे। नये खानसे रूसी बहुत आशा करतेथे, क्योंकि वह रूसियोंकी चाल-ढालको पसंद करता और रूसी जातीय पेय वोद्का (शराब) का बहुत प्रेमी था।

लेकिन खान अकेला क्या करता? खोकन्दी मुसलमान काफिर रूसियोंके विरुद्ध जहाद करनेकी तैयारी कर चुके थे। उन्होंने राजधानीमें घोषणा की, कि सभी रूसी मुसलमान हो जाय, नहीं तो इसका नतीजा उनके लिये बुरा होगा। लेकिन यह कब होनेवाला था? अन्तमें विद्रोह उठ खड़ा हुआ। ताशकन्द और खोजन्दके बीचके तीन और खोजन्द तथा समरकन्दके बीचके कई रूसियोंके डाक-स्टेशन लूटकर जला दिये गये। डाकमास्टर और मेल ढोनेवाले मारे या बन्दी बनाये गये। यात्रियोंकी भी वही दशा हुई। कुछ समय तक खोजन्दके लिये भी भारी खतरा पैदा हो गया।

रूसियोंके लिये इससे सुनहला मौका और कब मिल सकता था? काफमानने भारी तैयारी की, और जेनरल गलबाचेफके नेतृत्वमें एक सेना भेजी, जिसने विद्रोहियोंको हराकर कुरामा जिलेको उनसे मुक्त कर लिया। ३१ अगस्तको वह खोजन्द पहुंचा। विद्रोही वहांसे हट चुके थे। रूसी सीमांत और खोकन्दके बीचमें महरमका बड़ा किला था, जहां विद्रोहियोंसे मुकाबला हुआ। एक घंटासे कम हीमें किला सर हो गया। ग्यारह सौ गाजियोंकी लाशें वहीं गाड़ी गईं। इस इलाके को भी रूसके तुर्किस्तान-प्रदेशमें मिला लिया गया। ७ सितंबरको रूसी सेनाने खोकन्दकी ओर कूच किया। नासिरुद्दीनने मुल्ला ईसा औलियाको भेजकर क्षमा मांगनी चाही। रूसियोंने उसे पकड़कर अपनी विजययात्रा जारी रखी। सर्वत्र रूसी सेनापतिके सामने लोग रोटी-नमक पेश करते अधीनता स्वीकार करते जा रहे थे। खानने अब एक दूसरा दूतमंडल भेजा, जिसके साथ भेंटके अतिरिक्त डाक-स्टेशनोंमें पकड़े बंदी भी थे। उन्होंने बतलाया कि हमारे सिरको मुड़ा दिया गया, लेकिन और तरहसे कोई बुरा बर्ताव नहीं किया गया। रूसी स्त्रियों और बच्चोंको खानके अन्तःपुरमें रखा गया था। बिना प्रतिरोध किये ही अन्तमें खोकन्दने रूसियोंके हाथमें आत्मसमर्पण किया। खान स्वयं जेनरल काफमानसे मिलने के लिये आया। जेनरल काफमान अपने स्टाफके साथ कुछ दूर तक जाकर खानके साथ अपने डेरेमें लौट आया। रूसियोंने कुछ समयके लिये वहां डेरा डाल दिया। लोगोंपर धाक जमानेके लिये नगरमें बराबर रूसी सेनाका प्रदर्शन होता रहा। जेनरलने दूसरे स्थानोंको भी आत्म-समर्पण करनेके लिये घोषणा निकाली। आफताबचाने मर्गिलानमें काफी सेना जमा कर रक्खी थी। यह सुनकर १७ सितम्बरको काफमान मर्गिलान पहुंचा। आफताबचा किपचकों (उज्बेकों) के साथ वहांसे खिसक गया और मर्गिलानने अधीनता स्वीकार की। आफताबचाका पीछा करते स्कोबेलेफ ओश तक गया—अन्दिजान, बलिकची, सरीखाना और ओशने उसके हाथमें आत्म-समर्पण किया, विद्रोहियोंके तीन नेताओंमेंसे एक खालिक नजरने भी प्रतिरोधको बेकार समझकर आत्मसमर्पण कर दिया। नासिरुद्दीनको संधि करनेके लिये काफमानने मर्गिलान बुलाया। समझौतेके अनुसार सिर नदीसे उत्तरका इलाका नमगान रूसियोंके हाथमें चला गया, साथ ही नासिरुद्दीनने छ सालमें तीस लाख रूबल (चार लाख दस हजार पौंड) हरजाना देना स्वीकार किया। और लोगोंको क्षमादान कर दिया गया, लेकिन विद्रोहियोंके जबर्दस्त नेताओं—ईसा औलिया, जुल्फेकार बी और मुहम्मदखान तुरा—को साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया।

लौटते समय नमगानकी नई बनी रूसी प्रजाने जेनरल काफमानके स्वागतार्थ एक बड़ा तम्बू गाड़कर एक सौ बीस गाड़ी रसद और चालीस हजार रोटियोंकी भेंट पेश की। नदीसे तम्बू तक जेनरलके चलनेके लिये रेशमी पावड़े बिछाये गये, और उसके ऊपर चांदीके सिक्के बरसाये गये।

लेकिन यह अधीनता स्थायी नहीं रही। थोड़े दिनों बाद फिर विद्रोह हो गया और आठ तोपोंके साथ चौदह हजार आदमी विद्रोह दबानेके लिये अन्दिजान भेजे गये, जहां साठ-सत्तर हजार आदमियोंको आफताबचाने जमा कर रक्खा था। किर्गिजोंने भी पूलादबेकको खान घोषित कर अपने पन्द्रह हजार योद्धा जमा किये थे। रूसियोंको जबर्दस्ती नगरपर अधिकार करना पड़ा, और उनकी गोलाबारीमें बाजार और बहुत से मकानोंमें आग लग गई। शत्रुओंकी संख्या अधिक होनेके कारण रूसी रातके

गावोको जलाते नमगान लौटे। शत्रु उनका पीछा कर रहे थे। यद्यपि असफल होकर ही जनरल श्रौत्स्कीको लौटना पडा था, लेकिन फिर भी जारशाहीने उसे सम्मानित किया।

खान नासिरुद्दीनने रूसियोंकी कडी शर्तोको मानकर अपनी प्रजाको जल्दी ही असन्तुष्ट कर दिया और उसे उनके क्रोधके मारे भागना पडा। पूलादके समर्थक तथा उरातिप्पाके भूतपूर्व वेकने राजधानी (खोकन्द) पर अधिकार कर लिया। खोकन्दियोंका पलडा भारी होते देख नमगानवालोंने भी रूसियोंके खिलाफ विद्रोहका झडा उठाया, और उसपर भी क्पिचकों (उज्बेकों) का अधिकार हो गया। इस विद्रोहको दबानेके लिये जेनरल स्कोबेलेफने बडी निष्ठुरताका परिचय देते अधाधुध तोपोंसे गोलाबारी की। खोकन्द राज्यमें इस वक्त चारो ओर अराजकता फैली हुई थी, लेकिन रूसके विरुद्ध सभी एक थे। इस्लामके नामपर वह सर्वस्व-त्यागके लिये बेकरार थे। रूसी सेनाके खूनी अत्याचारोंसे उनकी हिम्मत नही टूटी थी। सिर और नरिन नदियोंके बीचमें उस समय लडाकू किपचक रहा करते थे। स्कोबेलेफको हुक्म हुआ, कि इस इलाकेको उजाड दे। जनवरी १८७६ ई०में उसने प्रस्थान किया। जाडेके कारण किपचक घुमन्तू इस समय अपने हेमन्त निवासोंमें जमा थे। सिरके उत्तरी तटसे बढते हुये रूसियोंने किपचकोंकी मुख्य बस्ती पैताग्री नष्ट किया, और हराकर उन्हें भागनेके लिये मजबूर किया। आगे सरखावा तक हर चीजको जलाते बरबाद करते रूसी बढे। शत्रुको भयकर हत्या और हानि पहुचाकर अन्दिजान सर किया गया। दूसरी विजय थी अस्साकीकी, जहा शहरेखान और मर्गिलानके लोगोने अधीनता स्वीकार की। अन्तमें पहली फवरीको आफतावचाने भी बिना शर्तके आत्म-समर्पण कर दिया। उसके साथ बातिर न्यूरा, इसफन्दियार और दूसरे सरदार भी थे।

रूसमें विलयन—खोकन्दवाले पूलादबेकसे उकता गये थे। उन्होने खोजन्दसे नासिरुद्दीनको बुला भेजा था। लेकिन पूलादके समर्थकोने उसपर आक्रमण कर दिया, और बडी मुश्किलसे नासिरुद्दीन जान बचाकर महरम भाग सका। फिर प्रहार करनेपर पूलादबेकने भागकर उच-कुर्गानके पास अलई पहाडमें जाकर शरण ली, उसके बहुत से आदमी पकडे गये और नासिरुद्दीन अभियानमें सफल हो खोकन्द लौटा। लेकिन रूसी देख चुके थे, कि कैसे खान और मुल्ला आसानीसे लोगोंमें जहादका प्रचारकर विद्रोह खडा कर सकते है, इसलिये अब और खानको कायम रखना वह अच्छा नही समझते थे। जेनरल स्कोबेलेफको हुक्म हुआ और उसने २० फवरी १८७६ ई०को खोकन्दपर अधिकार कर लिया। नासिरुद्दीन, आफतावचा और दूसरे नेता बन्दी बनाकर ताशकन्द भेज दिये गये। जारने अपने सिंहासनारोहणके वार्षिकोत्सवके समय २ मार्च १८७६ ई० को एक उकाज़ (राजादेश) निकाला, जिसके अनुसार खोकन्दके राज्यको फरगानाके प्रदेशके नामसे रूसी साम्राज्यमें मिला लिया गया। पूलादबेक भागा-भागा फिरता रहा। उसे भी किर्गिजोंने पकडकर दे दिया और बारह रूसी सिपाहियोंकी हत्याके अपराधमें उसे मर्गिलानमें फासीपर चढा दिया गया। इस प्रकार बाबरकी प्रिय जन्मभूमि फरगाना जारके राज्यकी अग बन गई, और वहाकी प्रजा प्राय आधी शताब्दीके लिये निरीह बना दी गई।
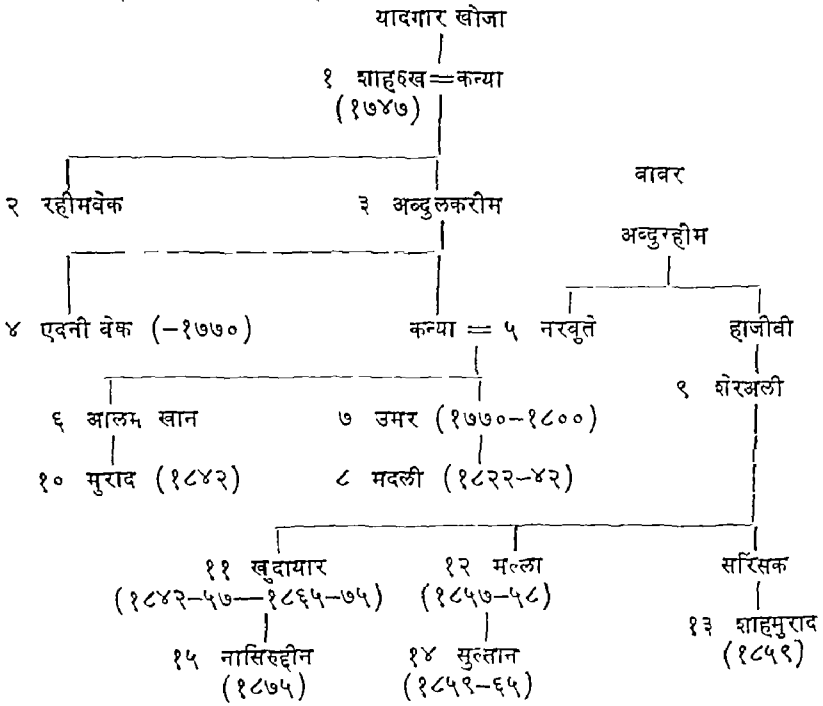
स्रोत ग्रन्थ

१ इस्तोरिया सससर (अ म ४ जिल्द, व इ रव्दोनिकस्)
२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
३ Heart of Asia (E D Ross)
४ History of Mongol (H H Howorth)
५ ओचक पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिविर (मास्को १९४६)
६ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
७ इस्तोरिया रोस्सिइ (स सोलोवियेफ् पेनेरबग १८७९-८५)
८ आजियातकया रोस्सिया (अ क्वेर आदि, मास्को १९१०, पृ० २८९-५८)

अध्याय ३

बुखाराके अमीर

(१७४७–१९२० ई०)

अस्त्राखानी-वंशका स्थान किस तरह अतालीकवंशी मगीतोंने लिया, इसका वर्णन हम पहले* कर चुके हैं। खुदायार अतालीकके पुत्र मुहम्मद रहीम और दानियाल बी थे। रहीम बी अस्त्राखानी अमीर सैयद अब्दुलफैजका दामाद था। सैयद अब्दुलफैजकी लडकी शम्सवान् आइम दानियाल बीके लडके शाह मुराद (अमीर मासूम बेगीखान) की बीबी थी, जिससे सैयद अमीर हैदर पैदा हुआ था। यद्यपि अब्दुर्रहीम बीके समयसे ही राज्यशासन नये खानदान (मगीत-वंश) के हाथमें चला गया था, लेकिन अमीर हैदरके समय तक अस्त्राखानी-वंशके खानको खतम नहीं किया गया। मगीती-वंश बुखाराका अन्तिम राजवंश था, जिसका उच्छेद बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलताके बाद १९२० ई० में हुआ।

राजावली—इस वंशमें निम्न अमीर हुये—

१	मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालीक खुदायार-पौत्र	१७४७ ई०
२	दानियाल बी, खुदायार-पुत्र	–१७७० "
३	शाहमुराद, अमीर मासूम, दानियाल-पुत्र	१७७०-९९ "
४	हैदर, शाहमुराद-पुत्र	१७९९-१८२६ "
५	हुसैन, हैदर-पुत्र	१८२६ "
६	उमर, हैदर-पुत्र	१८२६ "
७	नसरुल्ला, हैदर-पुत्र	१८२६-६० "
८	मुजफ्फरद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र	१८६०-६७ "
९	अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र	—१८९४ "
१०	मीर आलम, अहद-पुत्र	—१९२० "

१ मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालिक खुदायार-पौत्र (१७४७ ई०)

मगीत-कबीलोंको छिङ-गि। खानने मगोलियाके उत्तर-पूर्वसे लाकर वक्षुके मुहाने और बुखारासे एक सौ चालीस मील दक्षिण-पूर्व करशीमें बसा दिया था। मूलतः यह चाहे मगोलोंके बंधु-बांधव रहे हों, लेकिन आगे तुर्कोंमें मिलकर ये उज्बेकोंके मुखिया बन गये। अस्त्राखानियोंकी प्रभुताके समय ये उनके बड़े भक्त थे। अब्दुर्रहीम उज्बेकोंके मगीत कबीलेका मुखिया था। इसके दादा खुदायारने अतालीक (मुख्य परामर्शक) होकर अपनी शक्तिको बहुत बढ़ा लिया था, लेकिन प्रभुताको पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेमें उसके पोते मुहम्मद रहीमबीने ही सफलता पाई। इसने अपने चचा दानियालको समरकन्दका शासक बनाया। अस्त्राखानियोंकी कमजोरीके कारण शहरसब्ज, हिसार (ताजिकिस्तान) और ताशकंद बुखारियोंके हाथसे निकल गये थे। अपने पक्षको मजबूत करनेके लिये रहीमको अफगान अहमदशाह अब्दालीसे मदद लेनेकी जरूरत पड़ी, जो दिल्ली तककी लूट-मार करके काफी प्रसिद्ध हो चुका था। इस मददके बदले उसे वक्षुके दक्षिणके

* यही जिल्द २।५।१३

भूभागको गिल्जइयों (अफगानों) के हाथमें देना पड़ा। अब्दुरहीमने अस्त्राखानी खानको मारकर ही संतोष नहीं किया, बल्कि उसके तरुण पुत्र तथा अपने दामाद अब्दुल मोमिनको एक महफिलमें दावत करके मनोरंजनके लिये कुएके गहरे जलको देखते वक्त ढकेलकर मार दिया। अब्दुरहीम बुढ़ापेमें ईरानी गुलाम तथा अपने वजीर दौलत बीके हाथमें खेलता रहा, जो अपने दुःशासनके लिये बदनाम था। रहीम इस वक्त बहुत विचित्र स्वभावका हो गया था। एक दिन वह दर्वेश बन संसारकी असारतापर व्याख्यान देता, और दूसरे दिन मौज-मेलेमें अपनेको भुलाना चाहता। इसी तरहके जीवनमें वह बीमार होकर मर गया। उसके कोई पुत्र नहीं, बल्कि दो लड़कियां थीं। मरते समय उसने अपने चचा दानियाल बीको अपना उत्तराधिकारी बनाया।

२ दानियाल बी खुदायार-पुत्र (–१७७० ई०)

रहीमके मरनेपर उसकी इच्छानुसार वजीर दौलतबीने दानियालको सिंहासन संभालनेके लिये बुलाया। दानियालने स्वयं खान न बन अतालीक ही रहना चाहा, और गद्दीपर उसने अस्त्राखानी अबुल्गाजीको खान बनाकर बैठाया। दौलत बी अब भी राजकाज चलानेमें सर्वेसर्वा था। यही समय है, जब कि बुखाराके बाजारोंमें कलियान (हुक्के) और तम्बाकूका प्रचार बढ़ा, साथ ही काफिर रबातमें रंडीखाने खुले। दानियालका ज्येष्ठ पुत्र शाहमुराद इनके लिये बहुत अफसोस करता था, क्योंकि वह कट्टर इस्लामका प्रचार करना चाहता था। उसने शाह सफर नामक एक सूफीके यहां जाकर शिक्षा लेनी चाही। शेखने उसे फटकारते हुये कहा—"अत्याचारीका पुत्र कैसे भले काम कर सकता है?" फिर परीक्षा लेनेके लिये उसने कहा—"जाकर पल्लेदारी करते बोझ ढो।" मुराद गंदे कपड़े पहिनकर तुरन्त बाजारमें चला गया, और अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार कितने ही महीनों तक पल्लेदारी करता रहा। बापके टोकनेपर मुरादने जवाब दिया—"इल्म और धर्मकी खान बुखारा आज अन्याय और दुराचारमें कितना डूबा हुआ है? जहां तुम्हारे पुत्र व्यसनमें पड़े हुये हैं, जब कि दौलत कुशबेगी जैसा एक दास देशका स्वामी बन बैठा है।" यह कहते हुये मुरादने कहा, कि मैं तो दर्वेश (साधु) बनूंगा। एक साल तक हम्माली (पल्लेदारी) करनेके बाद शेख सफरने मुरादको अपना मुरीद (चेला) बनाया। अब वह अपना सारा समय आलिमों और दर्वेशोंकी सेवामें बिताने लगा। लेकिन साथ ही खोकन्दके दूतकी स्वागतकी तैयारीके लिये उसने कुशबेगीको बुला चुपचाप जल्लादोंको भेजकर उसका काम तमाम किया, और उसकी धन-सम्पत्तिको जब्त कर लिया। अब मुरादकी चलने लगी। उसने एक काजीको हुक्का पीनेके अपराधमें चाल सुधारनेके लिये साल भरका समय देकर उसे मरवा डाला। उसके डरके मारे भाइयोंने भी अपनी चाल बदली। बुरे साथियोंको मारनेमें उसने जरा भी आनाकानी नहीं की, और रंडीखानेको भी जल्दी ही बन्द करवा दिया। बुखारा फिर "स्वर्ग" बन गया। दानियाल बीने शाह मुरादके आगे बढ़नेमें कोई रुकावट नहीं पैदा की, और बेटा भी अपने बापकी बड़ी इज्जत करता था। मृत्युके समय दानियालने शाह मुरादसे प्रतिज्ञा करवाई—"भाइयोंको न मारना न निर्वासित करना, मेरी विधवाओंको व्याह करनेके लिये मजबूर न करना, ख्वाजासरा खोजा सादिकके साथ अच्छा बर्ताव करना, भाइयों-बहनोंको काफी धन देना और मुझे शाह नक्शबंदकी कब्रके पास दफन करना।"

दानियालका शासन इस प्रकार बहुत कुछ उसके बेटे शाह मुरादका शासन था। उसने उरगंज (खीवा), खोकन्द और मेवके शासकोंके साथ मित्रता रक्खी। सिक्का और खुतबा उसने अपना नहीं चलाया। दानियालके मरनेके बाद भी अभी तख्तपर अबुलगाजी अस्त्राखानी ही रहा, यद्यपि शाह मुरादको यह पसंद नहीं था।

३ शाह मुराद, अमीर मासूम बेगीखान, दानियाल-पुत्र (१७७०-९९ ई०)

शाह मुराद बड़ा ही ढोंगी था। वह अपनेको संत सूफी प्रकट करना चाहता था। बापके मरनेपर वह बुखाराके लोगोंसे पिताके दुष्कर्मों तथा कसूरोंके लिये क्षमा मांगता फिरता रहा। बापकी

वरासतमें मिली सम्पत्तिको उसने स्वय न लेकर खैरातके कामोंमें दे दिया। पहलेसे ही वह अपने पल्लेदारीके जीवन तथा दूसरे विचित्र कामोंके कारण कट्टर मुसलमानोंमें सर्वप्रिय हो चुका था, लेकिन उसका अपना भाई तख्तामिश उससे सख्त घृणा करता था, और चाहता था कि किसी तरह गद्दी अपने हाथमें ले लें। उसने शाह मुरादकी हत्याके लिये फरीदून नामक एक आदमी को नियुक्त किया। फरीदूनने शयनकक्षमें जाकर तलवार चलाई, जिससे मुहसे कानतक घाव लग गई, लेकिन इसी समय जागकर शाह मुरादने हत्यारेकी दाढी पकड ली, पर वह किसी तरह जान छुडाकर भागनेमें सफल हुआ। सवेरे उसी तरह घावपर पट्टी बाघे शाह मुराद दरवारमें आया। फरीदूनको मृत्युदड हुआ, भाईको उसके कसूरके लिये देशनिकाला मिला। वापको दिये हुये वचनपर ख्याल करके मुरादने उसको और कोई कठोर दड नही दिया। जब उसके दूसरे भाई सुल्तान मुराद—जो कि कर्मिनियाका हाकिम था—ने विद्रोह किया, तो उसे भी वन्दी बनाकर बुखारामें रख दिया।

मेव इस समय ईरानी काजार-वशके सस्थापक वहराम अली खाके हाथमें था, जिसने १७८१ ई०में इस महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगरको लेकर उसे अपनी राजधानी बना पुराने मेवके ध्वसावशेषपर एक किला बनाया। वहराम स्वय भी तुर्कमान था, इसलिये तुर्कमानोपर सत्ता जमानेमें उसे बहुत कठिनाई नही हुई। शीया होनेसे धर्मांध शाह मुराद मेवपर काजार-शासनको फूटी आखो नही देख सकता था। उसके लिये यह धर्मयुद्धका अच्छा मौका था। दानियाल वीके मरनेपर वहराम अलीने अपनी भक्ति दिखाते हुये यद्यपि कुरान-पाठ करके दान-खैरात दी थी, लेकिन इसका सुन्नी दर्वेश शाह मुरादपर कोई असर नहीं हुआ। १७८५ ई०में शाह मुराद छ हजार सवारों के साथ मेवकी ओर चला। छापा मारकर पहले ही हल्लेमें उसने वहराम अलीको मार डाला। लेकिन उसकी राजधानी आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार नही थी। वहराम अलीने सुल्तान सजर सल्जूकी द्वारा बनवाये मुर्गाब नदीके बाध—जोकि मेवसे तीस मील ऊपर था—की सुरक्षाके लिये उसपर बने किलेका तोड दिया। बाधका हाकिम अपनी स्त्रीके लिये वहराम अलीके पुत्र मुहम्मद खानसे नाराज था। इसी कारण उसने किलाबन्द महलको शाह मुरादको अर्पित कर दिया। शाह मुरादने बन्दको तोडकर दुनियामें अत्यन्त उर्वर मेर्वकी हरितावली और नहरोंको खराव करके बरबाद कर दिया। इससे भयकर अकाल पडा, जिसके कारण मर्ववाले आत्मसमर्पणके लिये मजबूर हुये। अधिकाश निवासियों—तेरह हजार परिवार—को गुलाम बनाकर शाह मुराद बुखारा ले गया। इसके बाद उसने खुरासानपर धावा करके लूटमार मचाई। शीया ईरानियोंको मारना या गुलाम बनाना सुन्नी धर्मांध शाह मुरादके लिये पुण्यार्जनका सबसे अच्छा उपाय था। तारीफ यह कि इसपर भी इस समय क्रूरकर्मा शासकको अमीर मासूम (निष्पाप शासक) कहा जाता था। अपने सुन्नी धर्म-भाइयोंकी दृष्टिमें वह ऐसी खून-खराबी और लाखों आदमियोंको गुलाम बनाकर कोई पाप नही कर रहा था। उसके सालाना हमलोंके कारण खुरासानके गाव और नगर उजड गये। ईरानी गुलामोंकी अधिकताके कारण बुखाराकी बाजारोंमें गुलामोंका दाम गिर गया।

मेर्व शहरको वहरामअलीके पुत्र मुहम्मद करीम खाने बडी बहादुरीसे बचाया था। उसके बाद उसके भाई मुहम्मद कुल्ली खाने भी शाह मुरादसे मेर्वकी रक्षा की थी। बाधके सरक्षकने एक वेश्याके प्रेममें अधे धोखा दिया। हुसेन खा मेवका राज्यपाल था, उसने जबर्दस्ती उसकी वेश्याको पकड मगवाया था।

अफगानिस्तानके अहमद शाह अब्दालीसे शाह मुरादके बापका अच्छा सबध था। सुन्नी होनेसे वह शाह मुरादकी सहायता करनेके लिये कुछ करना पुण्यकी बात समझता था। इस समय अहमदशाह अब्दालीका पुत्र तेमूरशाह कावुलकी गद्दीपर था। उसने लश्करीशाहके साथ एक सेना शाह मुरादकी सहायताके लिये भेजी। लश्करीशाहका पुत्र खजर खा मेवके राज्यपालकी बहिनके प्रेममें फस गया। हुसेन खाने उसे पकडकर घायल किया, और वह उसी घावसे मर गया। फिर उसने अपनी बहिनको भी मरवा दिया। लश्करीशाह दो हजार परिवारोंके साथ अपनी सेना ले हिरात लौट गया। हुसेनने दूत भेजकर बुखारासे शांति-भिक्षा मागी, और बादमें स्वय बुखारा गया। उसे चहारबागमें बडी अच्छी तरह ठहराया गया। उसके बाद उसका भाई मुहम्मद करीम खा भी मशहदसे शाह मुरादके

दरवारमें गया । करीम खाके परिवार तथा मेवसे लाये सत्रह हजार परिवारोंमेंसे बहुतोंको हुमेन खा, लौटा ले जानेमें सफल हुआ । अन्तमें मेवके तीन हजार सुन्नी और दो हजार शीया-परिवार बुखारामें रह गये । शाह मुरादकी उस चोटके बाद मेव तब तक नही सभल सका, जब तक कि बोल्शेविक-क्रातिने उसे एक आधुनिक ढगके उद्योगप्रधान नगरमें परिणत नही कर दिया ।

१७५१-५२ ई०से ही वक्षु (आमू-दरिया) के दक्षिणवाले इलाकेके स्वामी अफगान बन गये-यह वही इलाका है, जहा वलख, कुदुज जैसे महत्त्वपूर्ण नगर है, और जिसे पहले वाह्लीक, फिर दक्षिण तुखारदेश कहा जाता था और १८ वी सदीसे आजतक जहा के रहनेवाले अधिकतर उज्वेक ह । शाह मुरादके बापने अपनी निवलताके कारण इस इलाकेको अफगानोंके हाथमें दिया, लेकिन शाह मुरादको यह पसद नही था । अहमदशाह अब्दालीका पुत्र शाह तेमूर १७८६ ई०में सिंधके अभियानमें फसा हुआ था। इसी समय उज्वेक सरदारोंने लोगोंको भडकाकर वलख और अक्सी मे विद्रोह कर दिया । शाह मुरादने भी सहायताके लिये सेना भेजी और इस इलाकेसे अफगान हाकिमोंको मार भगाया गया । तेमूर अब्दालीने शाह मुरादको सख्त पत्र लिखकर कहा—"बाहरसे नम्रता दिखलाते हुये तुम इस तरह आक्रमण करते हो ? मेवमें हमसे यह कहकर सहायता ली, कि हम शीयोंको सच्चे धर्ममें लायेंगे, और कहा था, कि मेवके शीयोंको असली मुसलमान बनानेकी जिम्मेवारी हम ले लेगें और इस प्रकार हिन्दुस्तानको हिन्दुओं, यहूदियों, ईसाइयों और दूसरे काफिरोंसे मुक्त करनेके लिये अफगान स्वतत्र रहेंगे । लेकिन, तुमने शहरसब्ज, खोजन्दके सुन्नियोंको तग किया । अब हम तुर्किस्तानके लिये कूच करनेका निश्चय कर चुके हैं । हिम्मत हो, तो तुम मैदानमे आओ ।

तेमूरशाह अब्दाली १७८९ ई०में एक लाख सेनाके साथ काबुलसे रवाना हुआ । हिन्दूकुश पार हो पहले उसने कुदुजपर अधिकार किया । फिर अक्सी गया । शाह मुराद भी तीस हजार सेनाके साथ किलिफमे वक्षु पार हुआ । लेकिन तेमूरशाहकी सेनाके सामने अपनी शक्तिको निर्बल देखकर उसने नम्रताकी नीतिसे काम लेना चाहा । मुल्ला बीचमे पडे और उन्होंने कहा, कि दो सुन्नी बादशाहोंको आपसमे लडकर अपनी शक्तिको बरबाद नही करना चाहिये । शाह मुरादने अपने पुत्रको तेमूरके डेरेमें भेजा और किसी तरह तेमूरशाहकी मृत्यु तकके लिये शाति स्थापित हो गई ।

१७९६ ई०मे तुर्कमान सरदार आगा मुहम्मदने मशहदको नादिरशाहके पौत्र अधे शाहरुख से छीन लिया । काजार-वशका—जिसने ईरानपर २० वी सदीके प्रथमपाद तक शासन किया-- वास्तविक सस्थापक आगा मुहम्मद था । यह हिजडा था । मशहदसे वचित हो जानेपर शाहरुखका बडा बेटा नादिर काबुल-दरबारमें गया और उसने अपने भाइयों तथा सरदारोंको मदद मागनेके लिये बुखारा भेजा । अबुलफैजने अस्त्राखानीकी लडकीके वध और रहीमपर दिखलाई अपनी दया, तथा सुन्नी धर्मके नामपर सेना मांगी । उसने शाह मुरादसे यह भी कहा, कि सफलता प्राप्त करनेपर हम बुखाराके अमीरके नामका खुतवा पढवायेंगे । १२ मास तक प्रतीक्षा करके कोई सफलता न देखकर वह हिरातकी ओर लौटे । नदीमें धोखेसे डुबानेके लिये पुरानी नावपर चढाया गया था, लेकिन राजकुमार किसी तरह नदी तैरकर चारजूइ पहुच गये । असफल होनेपर ख्वारेजमके एल्बर्स खानके पौत्र तूरा कजाकको नादिरके दामादके मारनेका बदला लेनेके लिये भेजा गया । तुरा कजाक चारजूइके हाकिमके घर ठहरा । बात खुल गई, तो उसने बहुत गिडगिडाकर कहा, कि हम सुन्नी ह, और तुम्हारे मेहमान है । लेकिन उनको क्षमा न करके तुरा कजाकने नादिरशाही राजकुमारोंको मार डाला ।

अबुलगाजीके जीवन भर उसीके नामका खुतबा और सिक्का बुखारामें जारी रहा । शाह मुरादने खानकी गद्दीपर बैठ अपनेको केवल "नवाव" या "वली-निअम" ही बनाकर रक्खा । शाह मुराद बडे ही नाटकीय ढगसे अपने त्याग और तपस्याको दिखलाता था । दरबारमे जितने ही वकरीके छाले रक्खे रहते थे, वह उन्हीमेंसे किसीपर बैठ जाता और अपनेको दूसरोंसे बडा नही समझता था । छोटे-से-छोटे कामोंको भी वह अपने हाथसे करनेमे नही हिचकिचाता था । उसके रसोईघरमें एक लकडीका कटोरा, एक लोहेकी कडाही और कुछ मिट्टीके बरतन थे । वह स्वय बाजारसे चीजे खरीद लाता और अपने हाथसे खाना पकाता । मेहमानोंका हाथ धुलानेके लिये स्वय पानी डालता

और उनके जूठे कटोरोंमें खाता। एक बहुत सस्ते गदहेपर विना नारजामाके ही बैठकर बुखाराके बाजारोंमें चलता। वह अपनेको फकीर कहता था। अपने खर्चके लिये राजकोषसे प्रतिदिन एक तका लेता। अपने बावर्ची, चाकर और मुल्लाके लिये भी एक-एक तका देता। बीवी शाही खानदान की थी, इसलिये उसे प्रतिदिन तीन तका दे, ऊपरसे शिक्षा देता—"खातून थोड़ेसे सतोष करो, जिसमें कि अल्ला तुमपर सतुष्ट हो।" लेकिन जब खातूनको पुत्र पैदा हुआ, तो खुश होकर मा-बेटेके लिये पाच तिला (अशर्फी) प्रतिदिन देने लगा। दूसरे दो पुत्रोंके पैदा होनेपर उतना ही और देता रहा। इस प्रकार अपने परिवारको यद्यपि उसने सुखपूर्वक रक्खा, लेकिन स्वय एक बिल्कुल बिना सजाई छोटी-सी कोठरीमें रहता, जहांपर हर वर्गके आदमी उसके पास हर समय जा सकते थे। फकीरोंकी तरह उसकी पोशाक बडी मोटी-झोटी होती। न्यायालयमें उसने चालीस मुल्ला रक्खे थे, जिनका अध्यक्ष स्वय था। डाका डालनेके अपराधके लिये मृत्युदड, चोरीके लिये हाथ काटना, शराबीको खुलेआम कोडे लगाना, तमाकू पीनेके लिये भी कडी सजा होती थी। लोगोंको नमाजमें भेजनेके लिये पुलिस डडा लिये तैयार रहती। विद्यार्थियोको राजकोषसे खर्च मिलता, जिससे बुखारा-के मदरसोंमें एक समय तीस हजार विद्यार्थी रहते थे। विदेशी मालपर छोडकर और किसी तरहका शुल्क नही था। गैर-मुस्लिमोंसे इस्लामी शरीयतके अनुसार जजिया ली जाती थी, और सिपाही शीयोंको लूटकर जो माल लाते, उसका पचमाश शाही खजानेमें देते।

उज्बेक उसे सचमुच ही अल्लाका वली मानते। जब वह जहादियोंकी सेना लेकर खुरासानपर लूटके लिये जाते, तो भारी रसदके सामानको कई मंजिल पीछे छोड देते, हरावलमें केवल सवार-सैनिक होते। गाजियोंकी सेना इलाकेमें छा जाती, और लूटमार तथा लोगोंको बदी बनानेका काम शुरू कर देती। हरएक जहादी (धर्मयोद्धा) को अपने और अपने घोडेके लिये सात दिनका आहार साथ ले जाना पडता। अभ्यासके साथ शाह मुरादके मुजाहिद (धर्मयोद्धा) इतने अभ्यस्त हो गये थे, कि बे-रोक-टोक एकाएक किसी किले, प्राकारबद्ध गाव, नगर या काफिलेपर टूट पडते। बदी बनाये हुये आदमियोंके लिये मुक्ति-धन मागते, जिसके न मिलनेपर उन्हें दास बनाकर बेच देते। शाह मुराद ईरानियोंके विरुद्ध धर्म-युद्धोंमें स्वय अपने आदमियोंके आगे-आगे रहता। फकीरोंकी पोशाक पहने एक छोटे-से टट्टूपर बैठा वह गाजियोका सचालन करता। उसके अनुशासन बडे कडे थे। नमाज, रोजा आदि धार्मिक कर्त्तव्योंकी बडी कडाईसे पालन कराता। सभी इस्लामी देशोंमें "रईस शरीयत" (धर्माधिकारी) पदको उठे बहुत दिन हो गये थे, लेकिन शाह मुरादने बुखारामें फिरसे इस पदकी स्थापना की। चोरो और वेश्याओंको वह सीधे जल्लादके हाथमें दे देता, लेकिन इन सारी धार्मिक कडाइयोका परिणाम बुखारावालोंके लिये उलटा ही पडा।

चिन्नरनके सरदार मएश खानने शाह मुरादके बहनोई तथा जीजकके हाकिम ईशान मखदूम-पुत्र ईशान नकीबके नाम चिट्ठी देकर दूत भेजा। दूतने अपने कामका इस प्रकार वर्णन लिखा है—"मुझे ईशान नकीबके सामने पेश किया गया। वह एक बडे ही सुदर तम्बूके दूसरे छोरपर बैठा था। अभी हमें बैठे देर नही हुई थी, कि एक अफसर तम्बूमें आया और उसने ईशान नकीबको कहा, कि बेगीजान (शाह मुराद) की इच्छा है, कि आप अपने मेहमानके साथ आवें। हम खडे हो गये और अपने-अपने घोडोंपर चढकर ईशान नकीबके साथ चले। कुछ दूर जानेके बाद हमें एक बासका तम्बू मिला, जिसकी शकल-सूरत और फटी हालतको देखकर मैंने समझा, कि किसी बावर्ची या भिस्तीका तम्बू होगा। एक बूढ़ा आदमी धूपसे बचनेके लिये उसीकी छायामें घासपर बैठा हुआ था। सब घोडेसे उतर पडे और हरे तथा अत्यन्त गदे कपडे पहने हुये बूढ़े आदमीकी तरफ बढे। उसके पास जाकर खडे हो सबने अपने दोनों हाथोंको छातीपर रखकर आदरके साथ सलाम किया। उसने हरएक आदमीको सलामका जवाब दिया, और अपने सामने बैठनेके लिये कहा। वह ईशान नकीबके लिये बहुत मेहरबानी दिखलाता मालूम होता था, और उसे अपनी बातचीतमें उतखुर सूफीके नामसे सबोधित करता था। मैंने अपना पत्र ईशान नकीबके हाथमें दिया। उसने उसे हरे कपडेवाले बूढ़ेके हाथमें थमा दिया, जिसके बारेमें अब मुझे पता लगा, कि वह बेगीजान (शाह मुराद) है। उसने चिट्ठीको खोलकर पढ़ा और फिर अपनी जेबमें डाल लिया।

..हमारी बातचीत होने लगी। इसी बीच बहुत-से दरबारी अमीर आये और मैं उनके असाधारण भडकीले, तथा मूल्यवान् हथियारो तथा पोशाकको देखता रहा। उनके आनेके थोडी देर बाद उनका सरदार (शाह मुराद) एक गहरे ध्यानमें डूब गया और जब तक कि शामके नमाजकी घोषणा नही हुई, तब तक वह उसी ध्यानमें लीन रहा। दूसरे दिन विदाईकी बात होते समय उसका रसोइया कमजोर आखोंवाला एक नाटा आदमी तम्बूके भीतर आया। वेगीजानने कहा—"क्यों नही तुम खानेका प्रबध करते हो? जल्दी ही नमाजका समय होनेवाला है।" नाटा रसोइया तुरन्त एक बडा काला बर्तन लाया और पत्थरोंको रखकर चूल्हा बना उसने चार-पाच तरहके अनाज और थोडासा सूखा मास डालकर उसे चूल्हेपर चढा बर्तनको पानीसे गले तक भरकर, आग जला उसे पकनेके लिये रख दिया। फिर वह तश्तरिया ठीक करने लगा। यह लकडीकी तश्तरिया वैसी ही थी, जैसी कि अत्यन्त गरीब लोग इस्तेमाल करते है। उसने तीन तश्तरी रखकर पकी हुई चीजको उसमें उडेल दिया। वेगीजान रसोइयेकी ओर नजर लगाये हुये था। उसकी नजर के सकेतसे रसोइया जानता था, कि कितना कमबेसी तश्तरीमें डालना चाहिये। जब सब ठीक हो गया। उसने एक गदे कपडेको लेकर फैला दिया, फिर उसके ऊपर एक पुरानी जौकी रोटीका टुकडा रख दिया, अल्ला ही जानता होगा, कि हिजरीके कौनसे सनमें उसे पकाया गया था। वेगीजान ने रोटीको पानीके प्यालेमें भिगोया। पहली तश्तरी उज्बेकोंके शासक (शाह मुराद) को दी गई दूसरी तश्तरी मेरे और ईशान नकीबके बीचमें रक्खी गई, और तीसरीको रसोइया ले अपने स्वामीके सामने खानेके लिये बैठ गया। मैं पहले ही खा चुका था, इसलिये अपने सामने रखी चीजको सिर्फ चख भर लिया। बडी ही दुस्स्वादु थी, गोश्त तो करीब-करीब सडा हुआ था लेकिन तो भी भीतर आये बहुत-से अमीरोने हमारे छोडे हुये खानेको खाकर खतम कर दिया, उनके देखनेसे मालूम होता था, कि वह भोजन उन्हें बहुत पसद आया, लेकिन शायद वह अपने पवित्र नेताको प्रसन्न करनेके लिये ही ऐसा कर रहे थे।

४ हैदर, शाह मुराद-पुत्र (१७९९–१८२६ ई०)

अब हम उस समयमें आ गये, जब कि अग्रेज कपनीका शासन भारतमें दृढता पूर्वक स्थापित हो चुका था और १९ वी सदीका आरम्भ होनेवाला था। शाह मुरादने रहीम खानकी विधवा तथा अस्त्राखानी अबुलफैजकी लडकी शैम्सबानू आयमसे व्याह किया था। इसीसे शाह मुरादका सबसे बडा बेटा हैदर तुरा (कुमार हैदर) पैदा हुआ। मुरादके मरनेपर तख्तके लिये उमर बी, फाजिल बी, महमूद बीके बीच झगडा हुआ, लेकिन नागरिक अपने औलिया फकीर बादशाहके अधभक्त थे, वह क्यों चाहने लगे, कि तख्तसे औलियाके बेटेको वचित करके चचा शासन करें। बुखारावाले उमरके लोगोंपर टूट पडे। उमर किसी तरह जान लेकर भागा, लेकिन लोगोंने उसके घरको लूट लिया, बीवी-बच्चोंको कपडा छीन नगा करके छोड दिया। शाह मुरादकी लाश तीन दिनसे महलमें पडी हुई थी। हैदर बडी तडक-भडकवाले अनुचरोंके साथ गद्दीपर बैठा। पीछे बच्चों सहित उमर बी और फाजिल बी भी पकडकर मार डाले गये। महमूद बी भागकर खोकन्द चला गया। अभी सिंहासनपर बैठे देर नहीं हुई थी, कि भाई मुहम्मद हुसेनपर भी षड्यत्रमें शामिल होनेका सदेह हुआ। इसपर समरकन्द छीनकर ईरानी दौलतकुश बेगीको वहाका हाकिम बना, भाईको पेंशन दे नजरबन्द कर दिया। इसके बाद हैदरकी निगाह मेर्वके हाकिम हाजी मुहम्मद खा तथा उसके सबधी करीम खा और बहरामअली खांपर पडी, और इन बारह राजकुमारोको पकडकर भेड बकरियो की तरह मरवा डाला। उनकी बीवियों और बच्चोंको भेंटके रूपमें लोगोंमें बाट दिया। किस कसूरपर उन्हें यह दड मिला, इसे कोई नही जानता। हैदरकी हत्याओंसे डरकर उसका भाई नासिरुद्दीन परिवार-सहित मेर्वसे मशहद भाग गया।

अब हैदरने अपनी दिग्विजयोंको शुरू किया। १८०४ ई०तक उरातिप्पा, खाजन्द और ताशकन्दको उसने ले लिया। इसी साल हैदरने अपना दूत रूसी जारके पास पीतरबुर्ग भेजा, जो मास्को, अस्त्राखान, खीवा और उरगजके रास्ते लौटा। खीवाके खान इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें आकर

लूट-मार की, जिसपर नियाज बीके नेतृत्वमें तीस हजार बुखारी-सेनाने जाकर इल्तजारको हराया, और वक्षु पार हो जान बचानेके प्रयत्नमें डूबकर इल्तजारने अपने प्राण खोये। लूटके मालमें खीवावालोंका बहुत-सा खजाना बुखारियोंके हाथमें आया, जिसके साथ एक तुक (घोडेकी पूछ वाला) झडा भी था। सेना वदियोंके साथ लूटका माल लिये बुखारा लौटी। हैदरने हथियार छीनकर वदियोंको छोड दिया और अफसरोको खलअत भी दी। इल्तजारकी जगहपर उसके भाई कुतलीमुराद बेकको ईनककी पदवी देकर हैदरने खीवाका हाकिम नियुक्त किया, लेकिन वहा पहुचनेसे पहले ही उसके छोटे भाईको लोग खान बना चुके थे।

हैदरने यद्यपि आरम्भमें अपने सबधियों, और जिससे भी खतरेका डर मालूम हुआ, उसे बुरी तरहसे मारा और बरबाद किया, किन्तु पीछेके जीवनम वह नरम स्वभावका, उदार, न्यायप्रिय आदमी बन गया। उसकी भी इस्लाम-भक्ति बापकी तरह धर्मान्धता तक पहुच गई थी। यद्यपि बापके इतना नही, तो भी वह सादगीसे रहता था। उसके कपडे सीधे-सादे तथा प्राय सफेद रगके होते थे। रोटी और सब्जी यही उसका भोजन था। अपने खर्चके लिये वह यहूदियोंपर लगाये करको इस्तेमाल करता था। उसका दरबार किसी दर्वेश या मुल्लाका दरबार था। वह मेम्बरपर खडा हो व्याख्यान देना बहुत पसद करता था। वह लम्बा और सुन्दर था, उसका रग कुछ पीला लिये हुये अधिक गोरा था। मुहपर भरी हुई दाढी थी। अपनेको सदाचारी दिखलानेका बहुत शौक था और इस्लामी शरीयतके अनुसार चारसे अधिक बीबिया नही रखता था। हा, यदि दूसरी कोई सुन्दरीको बीबी बनाना चाहता, तो एकको घर और पेंशन दे तलाक दे देता था। दासियोंकी सख्यापर शरीयतने कोई प्रतिबध नही रक्खा है, इसलिये हर महीने कोई न कोई सुन्दरी दासी उसके हरममें दाखिल होती रहती। अपनी दासियोकी कन्याओंको वह मुल्लाओ या सैनिकोंको प्रदान करता।

शासन-प्रबध—बुखाराका राज्य उस समय सात तुमानोमें बटा हुआ था। हरएक तुमान-का हाकिम नकीम और उसका सहायक वजीर होता, जिन्हे अमीर नियुक्त करता। हर तूमानमें बहुत-से गाव होते, जिनके लिये ग्रामकी जनता अपना अक्सक्काल (श्वेत दाढी) नामक ग्रामपति निर्वाचित करती। अक्सक्काल एक मर्तबे निर्वाचित होकर, यदि किसी अपराधके कारण हटाया न जाय, तो जिन्दगीभर अपने पदपर रहता, बल्कि अक्सर उसका पद पैतृक हो जाता। अक्सक्कालका काम था—आपसी झगडे तै करना, कर उगाहना और राज्यके लिये सिपाही देना। गांवमें हर ब्याहमें कुछ भेंट और भोजमें उसे निमत्रण मिलता, साथ ही फसलके अनाजमें भी उसका हिस्सा बधा था। जमीनपर कर दहयक (दशाश), गल्लेपर चालीसवा हिस्सा, और सौदेपर भी चालीसवा हिस्सा देना पडता। नायब नकीमके सहायक होते, जो अधिकतर मुल्ला थे। गावोंके शासनमें उनका भी अधिकार था। धनी और प्रभावशाली उज्बेकोंको बेग या बाय कहा जाता। बुखाराके पास चालीस हजार सेना थी, जिसे आवश्यकता पडनेपर नये रगरूटों-का भर्ती करके बढ़ाया जा सकता था। सैनिकोंके पास भाला, ढाल-तरवारके अतिरिक्त थोडी सख्यामें पलीतेवाली बन्दूकें भी थी।

वैदेशिक सबध—१८२० ई०में रूसका एक दूतमडल बुखारा आया। इसका नेता नैगरी था, जिसके साथ बोरोन मेयेंदोफ भी था। १८१६ ई० और १८२० ई०में बुखाराके दूत दो बार जारके दरबारमें जा चुके थे, उसीके जवाबमें यह रूसी दूतमडल आया था। दूतमडलके साथ कुछ कसाक सैनिक भी थे। कई सौ ऊटोंपर रसद और सामान ले दूतमडलने १०० अक्तूबर १८२० ई० को ओरेनबुर्ग छोडा। दश्त-कजाक (दश्ते किप्चक) पार हो अगतमामें पहुचा। बुखाराकी सीमापर उसका बडा स्वागत हुआ। बस्तियोमें उन्होंने बुखारियोंके बीचमें सफेद पगडीवाले रूसी गुलामोंको भी अपनी आखों देखा। दूतमडल २० दिसम्बरको बुखारा नगरमें दाखिल हुआ। वह अमीरकी भेंटके लिये अपने साथ समूरी छाल, चीनी बर्तन, बढिया काचके बर्तन, घडिया और बदूकें लाये थे। शहरके एक दरवाजेसे सैनिक ढगसे दाखिल हो महलके पास पहुच रूसी घोडोंसे उतर पडे। वहा करीब चार सौ सैनिक बन्दूक लिये दो पातियोंमें खडे थे, जिनके बीचसे

दूतमंडल आगे बढा । एक महलके आगनमें तीन-चार सौ सफेद पगडीवाले बुखारी स्वागतके लिये खडे थे । अन्तमें वह दरबार-हाल में पहुचे । खान वहा एक सुनहली किनारेवाली लाल गद्दीपर बैठा था । उसकी बाईं ओर उसके दो पुत्र थे, जिनमें बडा पद्रह सालका था, दाहिनी ओर कुशबेगी (प्रधानसेनापति) था । रूसियोंने अपना प्रमाणपत्र पेश किया । इसके बाद अमीरने कसाक सैनिकोंको देखना चाहा । जब कसाक हालमें लाये गये, तो अमीर हैदर बच्चोंकी तरह खिलखिलाकर हसा ।

बुखारामें यहूदी काफी संख्यामें रहते थे, लेकिन वह सिर्फ तीन महल्लोंमें ही बस सकते थे । अधिकतर उनमें दस्तकार, रगरेज और कुछ रेशमके व्यापारी थे । उनसे जजियाके रूपमें प्रतिवर्ष अस्सी हजार रूबल वसूल किया जाता । नगरके भीतर कोई यहूदी न घोडेपर चढकर निकल सकता था, न रेशमी पोशाक पहन सकता था । अपना परिचय देनेके लिये एक खास तरहकी चौडी टोपी काले मेमनेके चमडेकी पट्टी लगाकर उन्हें पहिननी पडती । वह अपने लिये नया मंदिर नही बनवा सकते थे । बुखारा और रूसका व्यापार पुराने जमानेसे चला आता था । पहले इसके लिये एक बहुत भारी मेला मकरियेफमें लगता था, जिसे १८१८ ई०में निज्नीनवोगोरद (आधुनिक गोर्की) में बदल दिया गया । ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमें बुखारी व्यापारके लिये जाते, जिन्हें रास्तेमे कजाक अक्सर लूट लिया करते थे । रूसियोंने अपनी यात्राका जो वर्णन लिख छोडा है, उससे मालूम होता है, कि वहां चारों तरफ लूट-खसूटका बाजार गर्म था, और कोई अपनी सम्पत्तिका दिखावा करनेसे डरता था । शौकीनी, और विलासिताके जीवनका भी आकर्षण काफी था, यद्यपि बाहरसे अपनेको बडा सदाचारी दिखलाया जाता । खान अपने निजी जीवनमें किसी तरहकी पाबन्दी नही रखता था । उसको डर था, कि कही कोई विष न दे दे, इसलिये उसके खानेको पहले बावर्ची चखता, फिर कुशबेगी भी चखकर उसे ढाककर अपनी मुहर लगा देता । शहर छोडते समय वह पुत्रको भी छोड जाता । रूसियोंके कथनानुसार हैदरके हरममें दो प्रकारकी स्त्रिया थी, जिनमें चार ब्याही थी—हिसारी, समरकन्दखोजाकी पुत्री, अफगानके शाहजमाकी पुत्री ।

हैदरका पुत्र नसरुल्ला करशीमें रहता था । १८२६ ई० में वह बेटेके पास गया, जहासे लौटते समय बीमार हो बुखारामें पहुच ६ अक्तूबर १८२६ ई० को मर गया ।

इन दो पीढियोंमें लाठीके जोरसे लोगोंको जो सदाचारी बनानेका प्रयत्न किया गया था, उसका परिणाम अब अप्राकृतिक व्यभिचारके रूपमें बहुत बुरी तौरसे फैला । शराब और तम्बाकू वर्जित कर दिये गये थे, लेकिन उनका स्थान अब अफीम और भगने ले लिया था ।

५ हुसेन, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

पिताके मरनेपर हुसेन बुखारामें था, इसलिये वह झट गद्दीपर बैठ गया, लेकिन तीन मास बाद ही वह मर गया । फिर उसके भाई मीर उमरने गद्दी सभाली ।

६ उमर, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

मीर उमरने गद्दी सभाली, लेकिन नसरुल्ला ताकमें था । उसने २४ अप्रल १८२७ ई० को आकर बुखारा ले लिया ।

७ नसरुल्ला, हैदर-पुत्र (१८२६-६० ई०)

अपने शासनके आरम्भिक कालमें नसरुल्ला नेक और न्यायप्रिय था । उसे "अमीरुल् मोमिनीन" (मुसलमानोंका अमीर), "हजरत" और "इस्लामके खलीफा (तुर्कीके सुल्तान) का धनुधर" कहा जाता । लेकिन पाच-छ वर्षसे अधिक वह इस जीवनको नही बिता सका । इसी समय १८३२ ई०के आस पास तब्रेजमें पैदा हुआ अब्दुसमद खा नामक ईरानी बुखारा दरबारमें पहुचा । उसने जेनरल कोट (एक अग्रेज अफसर) के नीचे रहकर कुछ पश्चिमी सैनिक-विद्या सीखी थी । मुहम्मदअली

मिर्जाने उसे कुछ समय किरमानशाहका हाकिम बनाया था, जहा किसी कसूरमें उसके कान काटे गये। फिर भारत और पेशावरमें कितने ही समय रहकर वह काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मद खाकी सेवामें रहा। तब अंग्रेजोंके प्रति भारी घृणा लेकर वह बुखारा पहुचा। कुशबेगी हाकिमबेग अब्दुस्समदसे बहुत प्रसन्न हुआ, और उसे अपना नायब बना सेनाको फिरसे सगठित करनेके काममे लगा दिया। अब्दुस्समद बुखारामें अंग्रेजोकी कोई बात चलने नही देता था।

उबेज्क कहावतके अनुसार "राजा उस युगका दर्पण होता है" मान लिया जाय, तो नसरुल्लाके रूपमें बुखारा दुराचार और अत्याचारमें अपनी पराकाष्ठामें पहुचा था। नसरुल्ला हैदरका पुत्र था, लेकिन अपनी कुटिल नीतिमें अपने दूसरे भाइयोंसे कही आगे बढा हुआ था। कुशबेगी (सेनापति) हाकिम बी और ससुर आयाज तोपची बाशी (तोपखानाका जेनरल अयाज) उसके पक्षमें थे। जब हैदरके मरनेपर बडा भाई हुसेनखा गद्दीपर बैठा, तो नसरुल्लाने अपनी बडी गर्मा गम वफादारी दिखलाई, लेकिन साथ ही करशीसे वह आगेके लिये तैयारी भी करता रहा, जिसमें उसका प्रधान-सहायक मीर अमीन बेग दादखा था। तीन ही महीनेके शासनके बाद भाई मर गया—कहा जाता है कुशबेगीने उसे जहर दे दिया। करशीके प्रधान काजीने नसरुल्लाके पक्षमें अपना फैसला दे समरकन्दके काजीको भी वैसा ही करनेके लिये कहा, लेकिन इसी बीच दूसरे भाई उमरखाने बुखारापर अधिकारकर समरकद को किसी हालतमे भी न देनेके लिये हुक्म दिया। लेकिन नसरुल्लाके आनेपर दरवाजा खोल दिया गया, क्योंकि समरकन्दके मुल्ला उसके पक्षमें थे। कोकताश (नील-पाषाण) के ऊपर तेमूरके जमानेसे ही गद्दी देनेकी रसम पूरी की जाती थी। वही नसरुल्लाके सिरपर ताज रक्खा गया। कत्ताकुर्गान, करमीना आदि नगरोंने उसका शासन स्वीकार किया, फिर बुखाराको उसने घेर लिया। घेरावेके कारण लोगोंकी हालत बुरी हो गई। आध सेर मास चादीके सात तकेमें बिकने लगा। बाहरसे कोई खानेकी चीज आने नही पाती थी। उन्हे लोग लाशोंके साथ जनाजेमें छिपाकर लाते। नहरके पानीमें भी असह्य सडाद आने लगी थी। भीतरसे कुशबेगी और ससुर अयाज नसरुल्लाके पक्षमें थे ही। उनको बहाना मिल गया। बडी तोपको दागकर फोड दिया गया था। नसरुल्लाने २२ मार्च १८२६ ई० को दो तरफसे शहरपर आक्रमण कर दिया। चारों ओर विश्वासघात देखकर उमर जान लेकर भाग गया, लेकिन उसके तीन भाइयों और बहुत-से अनुयायियोंको पकडकर नसरुल्लाने मरवा डाला। अपनेको काफी मजबूत कर लेनेपर अपने सहायक कुशबेगीको पहले करशी और फिर समरकन्दमें निर्वासित कर दिया। अपने ससुर तोपची बाशीको बुलाकर सुन्दर घोडेपर सवार कर समरकन्दका हाकिम बनाकर भेजा, लेकिन तुरन्त ही बुखारा लौटनेका हुक्म देकर उसे जेलमें कुशबेगीके साथ बन्द कर दिया। फिर जिनके विश्वासघातके बलपर उसे गद्दी मिली थी, उन दोनोंको उसने १८४० ई०में कत्ल करवा दिया। सैनिक अफसरोंमेंसे भी उसने चुन-चुनकर बिना मुकदमा किये कितनोंको मरवाया और कितनोंको निर्वासित कर दिया। अन्तमें मुल्लोंके ऊपर पडा और उन्हें हर तरहसे दबाकर शरीयतकी जगह अपने हुक्मको सर्वोपरि बनाया।

कुशबेगी तोपची बाशीको १८४० ई०के बसतमें मरवानेके बाद अब नसरुल्लाके सामने कोई बाधा देनेवाला नही रह गया। तुर्कमान रहीमबर्दी माजूमको हथियार बनाकर वह अपना काम लेता था। किसी समकालीन लेखकने उसके शासनके बारेमें लिखा है—"नमाज पढनेके लिये लोगोंको डडोंसे पीटा जाता, सिपाही जबर्दस्ती किये जाते या जान बचाकर भागनेके लिये मजबूर होते।"

लेकिन कुशबेगी और तोपची बाशीके मरनेसे पहले ही १८३९ ई०में माजूम तुर्कमानका समय बीत चुका था। अब सभी पदोंको अमीरने अपने हाथमें रखना चाहा। वजीरके लिये कोई चाहिये, तो वह अपने प्रिय छोकरोंमेंसे किसीको तीन-चार सालके लिये बैठा देता, उसके बाद फिर किसी दूसरेको लाता—हटाते वक्त उनके सारे धनको छीन लेता।

ऐसे अत्याचारी, क्रूर और पतित आदमीको सब जगहसे भय होना जरूरी था। इसके लिये उसने नगर, बाजारों, मदरसों, मस्जिदों, हम्मामोंको अपने गुप्तचरोंसे भर रक्खा था।

पिशागरमें किलेको न ढानेसे नाराज होकर वह खोजन्दके खान बेगलर बेकके विरुद्ध

चढ़ा। तीन सौ सरवाजों और नायब समदकी ढाली कुछ तोपोंके साथ जा अगस्त १८४० ई० में खोकन्दियोको हराया। १८४१ ई०की शरद्में खोकन्दियोंकी लूट-मारका बदला लेनेके लिये वह फिर हजार सरवाजों (सिपाहियों), ग्यारह तोपों और दो मारतोलोंके साथ गया। २१ सितम्बर को याम, और २७ को जमीनपर अधिकारकर वह उरातिप्पाको लूटते ८ अक्तूबरको खोजन्द नगरमें दाखिल हुआ। खोकन्दके खानने मजबूर होकर सुलह की और भारी हर्जानेके साथ खोजन्द तकका प्रदेश नसरुल्लाको देकर नसरुल्लासे सुलह की, साथ ही अधीनता स्वीकार करत उसके नामका खुतबा और सिक्का चलाया। नसरुल्ला खोकन्दके खानके भाई तथा प्रतिद्वद्वी सुल्तान महमूदको खोजन्दका हाकिम बनाकर बुखारा लौट गया। लेकिन उसके लौटते ही सुल्तान महमूदने अपने भाईसे मेल कर लिया। जब इसकी खबर नसरुल्लाको लगी, तो वह फिर दड देनेके लिये आया, और २ अप्रैल १८४२ ई०को खोजन्दको हाथमें करके राजधानी खोकदको भी आसानीसे सर कर लिया। खोकन्दी खान मदली दस दिन बाद मर्गिलानमें पकडा गया, और अपनी खास माके साथ व्यभिचार करनेका अपराध लगाकर उसे, उसके भाई, स्त्री तथा दो पुत्रोंके साथ मरवा डाला गया—मदलीकी गर्भिणी स्त्रीके भी प्राणोको नही छोडा गया।

अग्रेजोंकी चालें—१७ वी सदीमें पीतर I के समयसे ही रूसने बुखाराके साथ अपना सबध स्थापित किया था, और तबसे जब-तब दूतमडल आते-जाते रहे। १८३४ ई०में डाक्टर देमेसोन मुल्ला बनकर बुखारा गया। १८३५ ई०में वित्कोविच कजाकका भेष बनाकर पहुचा। १८ वी सदीमें ही पहला अग्रेज कप्तान बार्निस बुखारा गया। ओरेनबुर्ग बुखारी व्यापारियोंके लिये एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जिसके जरिये १९ वी सदीके पूर्वार्धसे रूस और बुखारामें व्यापार होने लगा था। उस समय खीवावालोंसे रूसका सबध जितना बिगडा हुआ था, उतना बुखारियोंसे नही। १८३४ ई०में ओरेनबुर्गके राज्यपालने अमीर नसरुल्लाके पास पत्र लिखकर शिकायत की, कि खीवावाले रूसियोंके साथ बुरा बर्ताव करते है, और उन्होंने कितने ही रूसियोंको दास बना रक्खा है, खीवावाले रूसी प्रजा कजाकोंपर लूटमार करते है, इसीलिये जारने हुक्म दिया है, कि जबतक खीवावाले रूसी प्रजाको नही छोडते, तबतक खीवाके व्यापारियोंको रोक रक्खा जाय। १८३६ ई०में ही कुर्बान बेक अशुरबेक अमीर-बुखाराका वकील बनकर ओस्क होते पीतरबुग पहुचा।

बुखारामें अपनी कारवाई शुरू करनेसे पहले कितने ही सालोंसे ईरानी दरबारमें अग्रेज और रूसी अपने दाव-पेंच चला रहे थे। अग्रेजी राजदूतने बुखारासे सबध पैदा करनेके लिये १८३८ ई०में कर्नल स्टोडटको भेजा। इसी समय बुखाराके दूतमडलने बीस आदमियोंके साथ एक हाथी, कश्मीरी शाल और कुछ रूसी बन्दियोंको छुडाकर साथ लिये ओस्क होते हुये पीतरबुग पहुच जारके दरबारमें कहा—"मेरे स्वामी रूसियोंके साथ मित्रतापूर्ण सबध स्थापित करना चाहते हैं। अग्रेजोंने बुखारामें अपने एजेंट भेजकर व्यापार करनेकी कोशिश की है। रनजीतसिंहके खतरेमे परेशान हो काबुलके अमीरने भी हमारे मालिकसे सधि करनेका प्रस्ताव किया है।"

इस प्रकार उसने जारकी मित्रता और सदिच्छा प्राप्त करनेकी कोशिश करते हुये सोना तथा दूसरे मूल्यवान् धातुओका पता लगानेके लिये अपने यहा एक इजीनियर अफसरको भेजनेके लिये प्रार्थना की। बुखाराके राजदूतको लौटते वक्त जारकी ओरसे बहुत-सी भेंट मिली। अप्रैल १८३९ ई०में अमीरके बुलावेके अनुसार धातु-इजीनियर कप्तान कोवालेव्स्की और कप्तान हेर्नगियोस, एक दुभापिया, एक मुख्य खनक, चार कसाक सैनिकों तथा कुछ और आदमियोंके साथ बुखाराकी ओर रवाना हुये। उनको यह भी भार दिया गया था, कि अमीरसे बुखारामें एक रूसी कोसल रखनेके लिये बातचीत करे। यद्यपि अभी पजाबपर रणजीतसिंहका अधिकार था, लेकिन सिंध अग्रेजोंके हाथमें था, जहासे वह काबुलमें अपने प्रभावको बढ़ानेकी कोशिश कर रहे थे। रूस भी वहा अपने प्रभावको बढाना चाहता था। इस प्रकार अफगानिस्तानमें दोनों साम्राज्योंकी जोरकी प्रतिद्वद्विता चल रही थी। दिसम्बर १८३७ ई० में वित्कोविच काबुल पहुचा। अग्रेजोंके मनमें सदेह बैठ गया, कि अमीर दोस्त मुहम्मदको रूसियाने अपनी ओर मिला लिया है। अग्रेजोंने दोस्त मुहम्मदके विरुद्ध उसके प्रतिद्वद्वी शाह शुजाकी पीठ ठोंकी, और रणजीतसिंहको भी

काबुल तक चढ दौडनेके लिये उभाडा। इतनेसे भी सतुष्ट न हो काबुलसे रूसियोंके प्रभावको बिल्कुल खतम करनेके लिये १८३९ ई०के वसतमें अग्रेजी सेना अफगानिस्तानकी सीमामें दाखिल हुई, और ७ अगस्तको काबुलमें पहुचकर शाह शुजाको गद्दीपर बैठानेमें सफल हुई। दोस्त मुहम्मद अपने परिवार तथा तीन सौ पचास परिचारकोंके साथ भागकर बुखारामें नसरुल्लाके पास चला गया। नसरुल्लाने पहले उसका बडा स्वागत किया, लेकिन जब उस पतितने दोस्त मुहम्मदके सुन्दर पुत्र सुल्तान जानको अपनी कामुकताका शिकार बनाया, तो मनमुटाव हो गया। अब नसरुल्ला अग्रेजोंसे मेल करना चाहता था, और शाह शुजासे भी मिलकर उसके भाई तथा अपने मेहमान दोस्त मुहम्मदको खतम करना चाहता था। इसपर दोस्त मुहम्मदकी ओरसे ईरानके शाहने धमकी दी, जिसके डरके मारे नसरुल्लाने दोस्त मुहम्मदको मक्का जानेकी इजाजत दे दी, साथ ही चुपके-चुपके मल्लाहोको भी हुक्म दे दिया, कि वक्षुमें नावको डुबा देना। इसकी खबर पहले ही लग गई, इसलिये स्त्री-भेसमें दोस्त मुहम्मद पहले शहरसब्ज फिर खुल्म और अन्तमें काबुल लौट गया।

कर्नल स्टोडट हिरातके हाकिमके परिचय-पत्रके साथ रमजानके आरम्भ होनेसे दो दिन पहले बुखारा पहुचा। अफगानोंसे अच्छा सबध न होनेके कारण पत्रने सदेहको और बढानेका काम किया। कर्नलको पैदल जाकर रेगिस्तान नामक मैदानमें अमीरसे भेंट करनेके लिये कहा गया, लेकिन उसने घोडेपर चढकर जानेकी जिद्द की। बुखारामें मुसलमान छोडकर कोई घोडेपर चढकर निकल नही सकता था, फिर इस ईसाईको कैसे वैसे करने दिया जाता? और रेगिस्तानके मैदानमें तो सिर्फ अमीर ही घोडेकी सवारी कर सकता था। कर्नल घोडेपर चढ़कर वहा पहुचा और अमीरके आनेपर भी उसने घोडेपर चढ़े ही सैनिक सलाम दिया। अमीरने इसे अपना अपमान समझा। उसे महलमें बुलाया गया। प्रतिहारने "अर्ज बदेगान" (सेवकोंका निवेदन) जब कहा, तो कर्नलने इसका भी विरोध करते कहा "परमभट्टारक" सिर्फ भगवान्के लिये कहा जाता है। "आपका अत्यन्त नम्र सेवक" कहनेपर भी उसने आपत्ति की। दरबारी प्रथाके अनुसार दो आदमियोको बगलमें सहारा देकर चलनेसे भी इन्कार कर दिया। जब हथियारकी पडताल करनेकी रसम अदा करनेके लिये दरबारी अफसर आये, तो उन्हे भी कर्नलने मुक्का मारकर गिरा दिया। चुपचाप अर्ज करनेकी जगह स्टोडर्टने बडे ऊचे स्वरसे फारसी भाषामें भगवान्के लिये प्रार्थना करनी शुरू की। अमीर उस समय अपने तख्तपर बैठा इस ढीठ विदेशीके प्रति अपार घृणासे जलता भुनता दाढ़ीपर हाथ फेर रहा था। अमीरने प्रमाणपत्र मागा, तो उसने अग्रेज राजदूत जान मेकनेलका पत्र दिया, जिसमें रूसियोंके भीतर न आने देनेपर ईस्ट इडिया कपनीकी ओरसे सहायतार्थ धन देनेका वचन दिया गया था। अमीरने उत्तरमें कहा—"बहुत खूब, मै जानता हू, तुम लोग मुझे अपना गुलाम बनाना चाहते हो। बहुत अच्छा, मैं तुम्हारी खिदमत करूगा," और उठकर चला गया

इसके दो दिन बाद कर्नलको वजीरके घरमें बुलवा कुछ आदमियोंने पकडकर उसके हाथ-पैर बाध दिये, फिर वजीरने उसकी गर्दनपर तलवार रखकर कहा—"अभागे भेदिया, काफिर कुत्ते, तू अपने अग्रेज-स्वामियोंकी ओरसे आकर बुखाराको भी उसी तरह खरीदना चाहता है, जैसे कि काबुलको खरीदा? लेकिन यहा तुम सफल नही हो सकते। मै तुझे मार डालूगा।' इसके बाद वजीरके आदमी अमीरके समूरी चोंगेके साथ लाशकी तरह स्टोडटको लिये शहरकी सुनसान सडकोंमेंसे गुजरे, और उन्होंने एक अधेरे घरमें उसे ले जाकर बन्द कर दिया। नौकर साथमें रोशनी लिये थे। उनकी आखें भर खुली थी। "यदि ऐसा ही करना था, तो मुझे बुखारा न आने देना चाहिये था, अब मुझे जाने दो" —कर्नलने मीरशब (कोतवाल)से जब यह कहा, तो उसने इतना ही जवाब दिया, कि मै अमीरसे कहूगा। कर्नलके सारे कागजोंको लेकर उसके सामने जला दिया गया। उसके घोडेको भी बेंच दिया गया। इसके बाद उसे स्याहचाह (अघकूप) नामक एक उन्नीस फुट गहरे गदे गड्ढेमें रस्सीके सहारे डाल दिया गया। इसी कुएमें दो चोर और एक हत्यारा भी बन्द थे। कुएमें छिपकलिया, खटमल, पिस्सू भरे हुये थे। उसमें स्टोअर्ट दो महीने रहा। खानेके लिये रस्सीसे रोटिया लटका दी जाती थी। इसके बाद उसे निकालकर कहा गया, कि अगर जान

बचाना चाहता है, तो मुसलमान हो जा। अफसरने रनाने अपने मारे गर्व और अभिमानको ताकपर रखकर भारी भीडके सामने कलमा पढा और एक चौरस्तेपर ले जाकर उसका खतना किया गया।

रूसियोंने कनलको मुक्त करानेकी बडी कोशिश की। अफगानिस्तानमे जब अग्रेजोकी सफलता हुई, तो कनलने हिम्मत करके इस्लामको छोड दिया, और अमीरसे भी कहा, कि तुम्हे अपनी भलाईके लिये मुझे अपने पास रखना चाहिये, जैसा कि रणजीतसिंहने कितने ही अग्रेजोंको अपने पास रक्खा है। अमीरकी ओरसे कनलको कहा गया, कि रूसी दूतमडलके साथ तुम पीतरबुर्ग चले जाओ, लेकिन उस बेवकूफने जानसे इन्कार करते हुए कहा कि हमारी सरकारका हुक्म है, कि मै बुखारासे न जाऊ। इससे सदेह और बढ़ गया। इसी समय कनलने कुछ पत्र लिखकर खुरासानिया, कुर्दों, ईरानिया और यहूदियोंके हाथ भेजे। इसके बाद फिर उसे बन्दीखानेमें बन्द कर दिया गया। तुर्कीके सुल्तान, खीवाके खान और जारने भी उसे छोडनेके लिये अमीरको बहुत लिखा। एक अग्रेज लेखकने कनल स्टोडटके बारेमे लिखा है—"वह अपनी शिक्षा और स्वभावसे किसी भी दौत्यकार्यके लिये बिल्कुल अयोग्य था। उसके रूखे और ढिठाई भरे हुये व्यवहारने अमीरको बहुत ही अपमानित और कुपित कर दिया।" स्टोडटको दुबारा जेलमें बन्द करके उसे बहुत-बहुत यातनाये दी जाने लगी। १८४० ई०में कप्तान आर्थर कोनोली खीवा और खोकन्द होते बुखारा पहुचा। उसने बुखाराके अमीरको रूसके विरुद्ध हो अग्रेजोके साथ मैत्री करनेके लिये उभाडा। नसरुल्लाने कोनोलीको भी पकडकर उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली, और बन्दी बना स्टोडटके पास भेज दिया। इसी बीचमे नसरुल्लाको अपनी ओर करनेके लिये १८५० ई०में रूसने मेजर बतानियेफको व्यापार-मैत्री सधिके लिये भेजा। इससे पहले १८२० ई० में प्रथम रूसी दूत रेगनी गया था, और अग्रेज बार्नेसके जवाबमे १८३८ ई०में वित्कोविच पहुचा था। मेजर बतानियेफका अमीरकी ओरसे बडा गर्मागर्म स्वागत हुआ। जारने बहुमूल्य भेंट भेजी थी, उसने भी प्रभाव डाला, लेकिन सधिकी बात करनेपर अमीरने टाल-मटोल कर दिया। इस प्रकार १८४१ ई०में बतानियेफको खाली हाथ लौटना पडा।

प्रथम अफगान-युद्धके समय जनवरी १८४२ ई०मे १६५०० अग्रेजी सेना काबुल पहुची थी, जिनमे अधिकाश हिन्दुस्तानी थे। लेकिन काबुलमें अफगानोने उन्हे घेरकर खतम कर दिया और सिर्फ उनका एक आदमी किसी तरह जान बचाकर खबर देनेके लिये जलालाबाद पहुच सका। अग्रेजोकी इस जबरदस्त हारसे नसरुल्लाकी हिम्मत बढ़ी। उसके हुक्मसे १७ जून १८४२ ई०को स्टोडट और कोनोलीको कैदखानेसे निकालकर बाहर लाया गया। स्टोडट प्राण बचानेके लिये मुसलमान बन चुका था, लेकिन उसकी गर्दन पहले काटी गई, फिर कोनोलीको मुसलमान बन प्राण बचानेके लिये कहा गया, लेकिन उसने इन्कार कर दिया और उसे भी मार डाला गया। इसके बाद सात और अग्रेज कत्ल किये गये, लेकिन इनका बदला अग्रेज कभी न ले सके।

१८४४ ई० मे दोनों अग्रेज बन्दियोंका हाल जाननेके लिये डाक्टर वोल्फ बडी कोशिशके बाद बुखारा गया। तब तक दोनों अग्रेज मारे जा चुके थे। वोल्फको भी लौटनेमें बडी मुश्किलका सामना करना पडा। उसने एक चिट्ठीमें लिखा था—"बदनाम नायब अब्दुस्समद खाके बगीचेमें उसके लुटेरे डाकुओंसे घिरा तथा मजबूर होकर छ हजार तिला देनेके लिये आपको यह नोट लिख रहा हू।"

पामीरसे लगे हुये पहाडोंमें केश (शहरसब्ज) का एक छोटा-सा राज्य बहुत दिनोंसे अपनी स्वतन्त्रताको कायम रक्खे हुये था—यह वही शहरसब्ज था, जहा तमूर लग पैदा हुआ। जब कभी भी बुखारावाले शहरसब्जपर आक्रमण करते, तो वहावाले बहादुरीसे लडते साथ-साथ बधोंको तोड़कर आसपासकी भूमिको जलमग्न कर देते। बुखाराके पडोसी राज्य खोकन्दका शासक बाबरकी बेटीकी सतानोंमेंसे था। खोकन्दी खान मदलीको नसरुल्लाने किस तरह मरवाया, इसके बारेमें हम अभी कह चुके है। नसरुल्लाका सबसे बडा सलाहकार अब्दुस्समद था।

नसरुल्लाका सबध खीवासे भी बहुत बुरा था। जब रूसी जेनरल पेरोव्स्कीने खीवापर अभियान किया, तो नसरुल्लाने भी उसपर हमला बोल दिया। अपने राज्यकी सीमाको बढ़ानेके लिये

नसरुल्लाने बहुत हाथ-पैर मारे, लेकिन बलख, अन्दखूय और मेमनाकी छोटी-छोटी रियासतों-पर कितनी ही बार आक्रमण करनेके बाद वह सफल हुआ और मरते वक्त ही १८२६ ई०में उसे खबर मिली, कि शहरसब्जपर बुखारियोंका अधिकार हो गया। उसने उसी समय वहांके अमीर तथा अपने सालेको स्त्री-बच्चों सहित अपने सामने कत्ल कर देनेको हुक्म दिया।

नसरुल्ला इन्सानियतसे गिरा हुआ निरा पशु था, तो भी उसकी धाक बुखारामें इतनी थी, कि जब वह अपने महलसे निकलता, तो पासमें कोई शरीर-रक्षक नही होता। बाजारोंमे हफ्तेमें दो-तीन बार दर्वेशका कपडा पहने, केवल एक नौकरके साथ उसे घूमते देखा जा सकता था। उसने बनियोंको कह रक्खा था, कि ऐसे समय कोई उसके लिये सम्मान प्रदर्शित न करे, और उसे एक साधारण आदमी-सा जाने। इसीलिये कोई उसके लिये रास्तेसे हटता भी नही था। वह एक दूकानसे दूसरी दूकानमें जा अनाज या दूसरे सौदेके भावके बारेमें पूछता और जहा-तहा कोई चीज भी खरीदता।

८ सैयद मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र (१८६० ई०)

मुजफ्फरुद्दीनकी जवानी करशीमें बीती थी। अपने बापसे वह अधिकतर अलग ही रहा। वह एक ईरानी दासीका पुत्र था। उसे चौदह सालकी उमरमें ही नसरुल्लाने करशीका हाकिम और अपना युवराज बना दिया। अडतीस सालकी उमरमें मुजफ्फर अमीर हुआ। बापके सारे दुर्गुण इसमें भी मौजूद थे। उसने पहले मुल्लोंको हाथमें करनेका प्रयत्न किया।

नसरुल्लाके मरते समय यद्यपि शहरसब्ज सर हो गया था, लेकिन इस दुर्गम पहाडी इलाकेके लोग अब भी बगावत किये हुये थे, इसलिये मुजफ्फरका ध्यान उधर जाना जरूरी था। उसके बाद उसने खोकन्दपर चढाई की, जहाका खान इस समय मदलीका पौत्र खुदायार था, और जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा नसरुल्लाके दरबारमें हुई थी। रूसने १८५३ ई०में अकमस्जिद (सफेद मस्जिद) पर, तथा ग्यारह साल बाद तुर्किस्तान और चिमकन्दपर भी अधिकार कर लिया। १८६४ ई०में ताशकन्दमें असफल होनेपर उसका बढ़ाव रुका। खुदायारने चाहा, कि तुर्किस्तान शहरको भी लौटा ले, लेकिन उसमें विफल होकर उसे राजधानी लौटना पड़ा। किपचकोंने वहा उसके छोटे भाई मुल्लाखाको गद्दीपर बैठा दिया था, इसपर अमीर खुदायार मदद लेने मुजफ्फरके पास आया। मुल्लाको कत्ल करवा मुजफ्फरने खोकन्दमें जा खुदायारको स्वय तख्तपर बिठाया। किपचक (उज्बेक) अब भी फरगानामें विरोध करते रहे, और उन्होंने खुदायारके आधे राज्यको छीन भी लिया, लेकिन, रूसियोंने इसी समय उनके नेताको ताशकन्दमें मार डाला, जिसके कारण मुजफ्फरको १८६५ ई०में अपने आक्रमणके वक्त बहुत सुभीता हुआ। चेर्नियेफ ताशकन्दको ले चुका था, खोकन्द भी उसकी दयापर था। मुजफ्फर जहादके नामपर सारे मध्य-एसियाको शत्रु बनाकर एक करना चाहता था। खोकन्द, बुखारा और खीवाको राजनीतिक तौरसे एकताबद्ध करनेका यह अच्छा मौका था, क्योंकि तीनों ही राज्य अपनेको रूसी राहुके मुखमें देख रहे थे। मुजफ्फर समझता था, कि धर्मांध मुल्ला मध्य-एसियाकी सबसे बडी शक्ति है। वह रूसके सबसे जबदस्त शत्रु भी थे, इसलिये मुजफ्फरने उनके ही हाथोंमें खेलना पसद किया। तीनों राज्योंके शहरों और बाजारोंमें जहादका धुआधार प्रचार हो रहा था। इससे मुजफ्फरको एक भारी सेना तैयार करने में देर न हुई। उसके बलपर मुजफ्फरने अभियान करके समरकन्दसे उत्तर-पूर्व तथा रूसी तुर्किस्तानकी राजधानी ताशकन्दसे सिर्फ सौ मीलपर अवस्थित खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) को दखल कर जेनरल चेर्नेयेफको ताशकन्द खाली करनेके लिये अल्टीमेटम दे दिया।

रूससे युद्ध—चेर्नेयेफ चौदह पैदल कपनी, छ कसाक स्वाड्रेन और सोलह तोपोंके साथ समरकन्द से साठ मीलपर अवस्थित जीजकके किलेपर चढ़ आया। प्रतिरोध जबर्दस्त हुआ और रसदकी भी कमी थी, इसलिये उसे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सफलतासे प्रोत्साहित हो चालीस हजार सेना ले मुजफ्फर ताशकन्दपर चढा। चेर्नेयेफने रूसी सरकारके हुक्मके बिना ही ताशकन्दको

ले लिया था, इसलिये उसे हटा युद्ध बन्द करनेका हुक्म देकर जेनरल रोमानोव्स्कीको भेजा गया, लेकिन सैनिक परिस्थितिने उसे भी सरकारी हुक्मके विरुद्ध जानेके लिये मजबूर किया। ताशकन्दसे सिर्फ तीनी मंजिलपर बुखारी सेना रह गई थी, और सत्तर हजार आबादीका नगर रूसियोंको फूटी आंखों भी नहीं देखना चाहता था। रोमानोव्स्की चौदह पैदल कंपनी, पांच कसाक स्क्वाड्रेन और बीस तोपोंके साथ सिर नदीके बायें तटसे होते आगे बढ़ा। जैसा कि पहले बतला चुके हैं, जीजक और खोजन्दके बीच इजर्में २० मई १८६६ ई०को मध्य-एसियाकी पलासीकी लड़ाई हुई, और ३६०० रूसियोंने बुखारियोंकी पांच हजार पैदल, ३५०० सवार और दो तोपोंवाली सेनाको बुरी तरहसे हराया। हारी हुई सेना अस्त-व्यस्त होकर भगी। आठ दिनके मुहासिरेके बाद ६ जूनको खोजन्द भी रूसियोंके हाथमें चला गया। रूसी अल्टीमेटमकी पर्वाह न करके मुजफ्फरने युद्धकी तैयारी जारी रक्खी, जिससे रूसियोंको फिर आगे बढ़नेके लिये मजबूर होना पड़ा। अक्तूबर तक वह उरातिप्पा और जीजक ले जरफ्शा-उपत्यकाके ऊपरी भागके स्वामी बन गये। १८६७ ई०के वसंतमें यानीकुर्गानपर भी रूसियोंका अधिकार हो गया, जिसे लौटानेके लिये ४५ हजार बुखारी सेनाने दो बार कोशिश की। इस प्रकार १८६७ ई० के मध्य तक सिर और जरफ्शाकी उपत्यकायें जारके साम्राज्यमें चली गईं। ओरेनबुर्ग शासन-केंद्र बहुत दूर पड़ता था, इसलिये २३(११) जुलाई १८६७ ई०के उकाज़े (राजादेश) के अनुसार तुर्किस्तानका एक अलग प्रदेश बना दिया गया, और ताशकन्दको तुर्किस्तानके महाराज्यपालकी राजधानी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्किस्तान-सूबा (गुबर्निया)में सिर-दरिया, सप्तनद (सेमीरेचिन्स्क अर्थात् इस्सिकुल और बल्काशकी द्रोणिया) तथा जरफ्शाके इलाके थे। जेनरल काफमान प्रथम महाराज्यपाल नियुक्त हुआ। बुखारा अब भी जब-तब रूसी सीमांत-चौकियोंसे छेड़छाड़ करता था। काफमानने मुजफ्फरके सामने सुलहके लिये निम्न शर्तें पेश की—मौजूदा सीमांतको स्वीकार किया जाय, व्यापारमें रूसी और बुखारी प्रजाके समान अधिकार हों, युद्धके हरजानास्वरूप सवा लाख तिला (पांच लाख रूबल या तिरपन हजार गिन्नी) रूसको मिले। मुजफ्फरने इसके जवाबमें खीवाकी ओरसे अपनी सेनाको बुलाकर जीजकपर आक्रमण करनेके लिये तैयारी की। रूसी अब समरकंद लेनेके लिये तैयार हो गये। ३६०० सेनाके साथ १७ मई १८६८ ई०को उन्होंने खीवा और बुखाराकी चालीस हजार सम्मिलित सेनापर धावा बोल दिया, और उयली नदी पार हो समरकन्दसे पन्द्रह मीलपर जरफ्शाके बायें किनारेकी ऊंचाईपर एकत्रित शत्रु-सेनापर आक्रमण कर दिया। बुखारियोंकी भीषण पराजय हुई। अगले ही दिन समरकन्दने आत्मसमर्पण कर दिया, और नगरके सर्तों (ताजिकों) ने विजेताओंका खूब स्वागत किया—आखिर उज्बेकोंके जूयेको वह प्रसन्नतापूर्वक नहीं ढो रहे थे। यहूदियोंने रूसियोंका और भी अधिक विश्वास प्राप्त किया, और उन्होंने सर्तोंसे सजग रहनेकी सलाह दी। जेनरल काफमानने अपने घायलोंको नगरके बीचमें अवस्थित किलेमें साठ-बासठ गारदके साथ छोड़ शत्रुका पीछा किया। रूसियोंके कुछ ही दूर जानेपर शहरसब्जवाले बीस हजार सैनिक चुपकेसे भीतर घुस गये, उन्होंने किलेको घेर लिया। एक सौ नवासी रूसी प्रतिरक्षक हताहत हुये और किला भारी विपद्में पड़ गया। काफमान शत्रुको फिर करारी हार दे चुका था, जब कि उसे समरकन्दकी खबर मिली, और उसने लौटकर बड़ी बुरी तरहसे नागरिकोंके साथ बदला लिया। एक अंग्रेज लेखकके अनुसार—"जैसे गिलेस्पीने वेल्लोरके विद्रोहियोंके साथ बदला लिया था। उनके चूतड़ों और जांघोंपर कोड़े लगवाये, हजारोंको बड़ी निष्ठुरताके साथ मरवाया। सर्तोंके विश्वासघातका बदला आत्मसमर्पणके बाद सेना द्वारा नगरको लगातार तीन दिन तक लुटवाकर लिया।"

मुजफ्फरका सारा अभिमान अब चूर-चूर हो चुका था। उसने रूसी जेनरलसे तख्त छोड़कर मक्का जानेकी इजाजत मांगी, लेकिन रूसी उसे अपनी गुड़िया बनाकर बुखाराकी गद्दीपर रखना चाहते थे। आखिर वह रूसी लोहेको देख चुका था, और अपने जीवन भर फिर सिर उठानेकी हिम्मत नहीं रखता था। दूसरा अमीर उसकी जगहपर शायद फिर नया तजर्बा करना चाहता। रूसियोंने उसीको अमीर स्वीकृत किया, समरकन्दको तुर्किस्तानमें मिला वहांपर

उपराज्यपाल बनाकर अन्नामोफको भेजा। मुजफ्फरके बाद १७ सालके युवराज अब्दुल् अहदने बापसे बगावत करके करकीके किलेपर अधिकार कर लिया, लेकिन जनरल अन्नामोफने विद्रोहको आसानीसे दबा दिया। यही नहीं, उसने मगीत-राजवशके मूल-स्थान करशीको भी ले लिया और करकीपर गोलाबारी की। युवराज बुखारा राज्यकी मध्य पहाडियोमे भागा, जहासे भी उसे समरकन्दके पश्चिमी छोरपर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। विद्रोहोंमे सफलताकी तो आशा नही थी, ऊपरसे प्रजाको सारी आफत सहनी पड रही थी, इसलिये कोई आश्चर्य नही, यदि एक किसानने अहदको पकडवा दिया। मुजफ्फरके पास लाये जानेपर उसने उसके सिरको काटकर महलके दरवाजेपर लटकानेका हुक्म दिया। इस विद्रोहके समय अन्नामोफने पीढियोंसे स्वतन्त्रताकी लडाई लडनेके अभ्यस्त शहरसब्जवालोंको भी अपने अधीन कर लिया। मुजफ्फर अब परम जारभक्त था। हिन्दुस्तानमें रहते अग्रेज इसके लिये अफसोस कर रहे थे, कि मुजफ्फरने अपने पूर्वजोंके भव्य दायभागको इतना जल्दी खो दिया। लेकिन मुजफ्फरने दस-दस पद्रह-पद्रह गुनी अधिक सेनाके साथ भी लडकर देख लिया था, कि आधुनिक हथियारोंके सामने उसके जहादियोंकी भीड टिक नहीं सकती। जरफशाकी ऊपरी उपत्यका और ऐतिहासिक नगर समरकन्द रूसियोंके हाथमें होनेसे बुखारा उनकी दयापर निर्भर करता था। रूसी जरफशाके पानीसे किसी समय भी वचित कर बिना एक गोली खर्च किये ही बुखारियोको मरनेके लिये मजबूर कर सकते थे। अपने जीवनभर मुजफ्फरको मौज करनेमें कोई बाधा नही थी, और हमारे रियासती राजाओंकी तरह वह अपनी प्रजाके साथ चाहे जो भी कर सकता था।

९ अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र (–१८९४ ई०)

मुजफ्फरके उत्तराधिकारी अहदने भी अपने बापका पदानुसरण किया। शरीरमें वह लबा हट्टा-कट्टा और बहुत सुन्दर था। हर साल वह काकेशसके गम चश्मोमें विहारके लिये जाता और अक्सर जाडे भी उसके क्रिमियामें बीतते थे, अर्थात् उसके जीवनका ढग और विलास-प्रेम वैसा ही था, जैसा कि हमारे यहा पिछली पीढीके राजा-नवाबोंका।

१० मीर आलम, अहद-पुत्र (–१९२० ई०)

युवराजकी अवस्थामें इसे शिक्षाके लिये पीतरबुर्ग भेजा गया, जहा रहते अपनी शिक्षा-दीक्षासे वह बिल्कुल युरोपीय बन चुका था, लेकिन दुराचारमें वह अपने परदादा नसरुल्लाका भी कान काटता था। जबतक जारशाही मजबूत रही, तबतक वह उसका अनन्य भक्त बना रहा, और अपना काम केवल विलासमय जीवन बिताना समझता था, लेकिन बोल्शेविक-क्रातिके समय सब जगह अशाति मची देख एक बार फिर उसने बुखारामें अपनी तानाशाही शुरू की। शासन-सुधार चाहनेवाले अपने यहा के सुधारवादी जदीदों (नवीनतावादियों) के खूनसे इसने अपने हाथोंको खूब रगा, लेकिन जैसा कि हम आगे देखेंगे, क्रातिके सामने इसे देश छोडकर अफगानिस्तान भागना पडा। मुजफ्फरुद्दीनके समयसे बुखारा एक देशी रियासतके रूपमें चला आया था। क्रातिने उसे मिटाकर मध्य-एसियाकी जातियोंको उनकी सीमाओंके अनुसार उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, कजाकस्तान, किर्गिजिस्तान और ताजिकिस्तानके गणराज्योंमें परिणत कर दिया।

शासन-प्रबध—बुखारा समुद्रतलसे १२०० फुट ऊपर मेवसे १४० मीलपर अवस्थित है। १९ वीं सदीके चतुर्थ पाद हीमें रेल द्वारा इसका सबध हो गया था, यह हम आगे बतलायेंगे। बुखारा मुसलमानोंके आनेसे पहले ही एक प्रसिद्ध सास्कृतिक नगर बन चुका था। सामानी बादशाहोंके जमानेमें इसकी बहुत तरक्की हुई। इसकी जामा मस्जिदका २१० फुट ऊचा मीनार (मीनारकला) बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी गोलाई नीचे छत्तीस फुट है।

बुखाराके शासकोंमें सूबा (प्रदेश) के अधिकारीको बेक कहा जाता था, जिसके नीचे जिलेके अफसर होते थे, जिन्हें अमलाकदार कहते थे। किसानोंसे दशाश (दहयक) कर लिया जाता था, जिसे मिल्की-खराज कहते थे। कितने ही गाव मस्जिदों और मदरसोंकी देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)

थे। फसल तैयार होनेपर अमीरके अफसर खेतोंमें जाकर भ्करके लिये हरएक खेतका अलग-अलग कूत करते थे। बुखाराका काजी (न्यायाधीश) काजीकला था, जिसके दो नायब होते थे। अदालतकी मुहर मुफ्तीके हाथमें होती थी। धार्मिक बातोंका अधिकारी रईस था।

४ (३ बुखारा अमीर-वंशवृक्ष)
(१७४७–१९२० ई०)
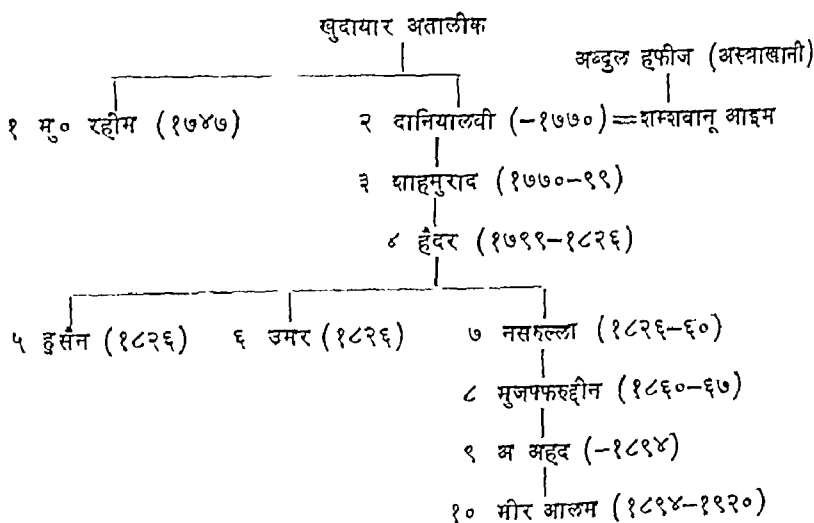
स्रोत ग्रन्थ

१ पो स्रद्नइ आज़िइ (ल ये द्मित्रियेफ-कव्काज्स्की, पेतेरबुग १८९४)
२ ना ग्रानित्साख् स्रेद्नेइ आज़िइ (द न लोगोफेत्, पेतेरबुग १९०९)
३ इस्कुस्स्त्वो स्रेद्नेइ आज़िइ (व व वेइमान, मास्को, १९४०)
४ रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (म य मस्सोन्, ताशकन्द १९२६)
५ आज़ियात्स्कया रोस्सिया (अ क्रवेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७७–२२६, २९३–९९)
६ History of U S S R (Moscow 1947)
७ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
८ History of Mongol (3 Vols H H Howorth, London 1876–88)
९ History of Bokhara (A Vambery, London 1873)

अध्याय ४

छोटे-छोटे राज्य

१ उरातिप्पा और जीजक

उरातिप्पा—अस्त्राखानी-वशकी समाप्तिपर बुखारामें बहुत-सी छोटी-बडी रियासतें अस्तित्वमें आई, जिनमें उरातिप्पा भी था, जो समरकन्द, खोजन्द और खोकन्दके रास्तोंके सगम तथा जीजक, समरकन्द और ताशकन्दके रास्तेपर था। उज्वेकोंके उज कबीलेके लोग जीजकमें अपने डेरे डाला करते थे। फजल बी नामक उज-सरदारने १८ वी सदीमें उसपर अधिकार कर लिया। खोकन्दके नरबुते और बुखाराके रहीम बीने बहुत कोशिश की, लेकिन फजल बीने उन्हें सफल नही होने दिया, और शत्रुओंके सिरोंको काटकर उनका मीनार चुनवाया।

फजल बीके बाद उसका लडका खुदायार बी स्वामी हुआ, वह १७९४ ई०में एक लाख परिवारोंका शासक था। बुखाराके अमीर शाह मुरादने जब उसकी ओर कदम बढाया, तो खुदायार बीने उसे बुखाराके फाटकों तक खदेडा। वह दिन भर सोता और रातको जाग कर काम करता। शरीरसे पूरा देव था, और एक पूरी भेड अकेले ही खा जाता था, तब भी कहता कि भूख अभी पूरी तरह नही गई। उसका भाला इतना भारी था, कि किसी दूसरेके लिये उठाना भी मुश्किल था। लडाईमें बडा बहादुर होनेसे घुमन्तू-कबीलोंका वह आदर्श नेता था।

बाबा बेक, बेकमुराद—खुदायार बीके मरनेपर उसका भाई बाबा उरातिप्पापर और बेटा बेकमुराद खोजन्दपर शासन करने लगे। उमरखान खोकन्दीकी मददसे बाबाने अपने भतीजेको खोजन्दसे भगा पीछे उसे मरवा डाला। बापका बदला लेते हुये बाबाबेकके लडकेने समरकन्दमें मुरादको मार डाला और कुछ समयके लिये उरातिप्पा बुखारामें रहा। फिर खोकन्दके अमीर आलम खाने कुछ समय तक उसपर अधिकार रक्खा, लेकिन जल्दी ही खुदायार बेकके भान्जे तथा प्रसिद्ध खोजा हिरातके वशज खोजा महमूद खाने खोकन्दी हाकिमको भगा उरातिप्पाको बुखाराके नामसे अपने हाथमें कर लिया। १८१२ ई०में खोजा महमूद उरातिप्पाका शासक था। उमर खाने आक्रमण करके महमूदको पकड लिया, लेकिन तीन महीने बाद उसने फिर भागकर अपने सघर्षको जारी रक्खा। इसी समय जीजक बुखारामें और उरातिप्पा खोकन्दमें शामिल कर लिये गये, और इस प्रकार उरातिप्पाकी स्वतत्र सत्ता खतम हो गई। महमूदका पुत्र तुराबेक यिरुबाकी खोकन्द-दरबारके अमीरोंमेंसे था। जिस समय उरातिप्पाने अपनी स्वतत्रता खोई, उस समय यहाके उज कबीलेके बहुत-से लोग दक्षिणकी पहाडी काफिरनिहा-उपत्यकामें जाकर बस गये।

२ शहरसब्ज

किश या शहरसब्ज तेमूर लगकी जन्मभूमि थी। बुखारासे जानेपर रास्तेमें दुर्लंघ्य रेगिस्तान पडता था, और समरकन्दसे दुगम पहाडी, इस प्रकार उसे प्रकृतिने प्रतिरक्षाके सुन्दर साधन दे रक्खे थे। १८ वी सदीमें मगीत रहीम बी (१७४७ ई०) ने शहरसब्जपर अधिकार किया, लेकिन पाच ही साल तकके लिये। भारी लडाकू कैरोसली उज्बेक-कबीलेके डेरे इस इलाकेमें रहा करते थे। उनके सरदारने रहीम बीसे शहरसब्जको मुक्त करा लिया।

(१) **दानियाल अतालीक** (१८११-३६ ई०)—शहरसब्जके शासकोंमें यह बडा शक्तिशाली था। इसने अमीर हैदर और उसके पुत्र नसरुल्लाके सारे प्रयत्नोंको निष्फल कर दिया।

दानियालने "वलीनिअम" की पदवी धारण की थी। उसके दो पुत्रोंमें खोजाकुल शहरसब्जमें और वावा दादखाह कितावमें शासन करते थे।

(२) खोजाकुल (१८३६-४६ ई०)—वापके मरनेपर दोनों भाई आपसमें झगड पड़े, जिससे अमीर नसरुल्लाने फायदा उठाकर आक्रमण कर दिया। लेकिन नसरुल्लाके पहुचनेसे पहले ही खोजाकुलने अपने भाईको मार भगाया, इसलिये वुखारी सेनासे लडनेके लिये वह स्वतत्र था। उसने नसरुल्लाकी सेनाको वुरी तरहसे हराया। नसरुल्लाने अजेय शहरसब्जकी भूमिपर हथियारसे विजय पानेकी आशा नही देखी। इसके वाद वह सालमें दो वार वहांकी भूमिको तवाह करने लगा। सुलह क्षणिक ही हो पाती थी। अपनी मृत्युके समय (१८४६ ई०) तक खोजाकुल वुखारियोंसे लडता रहा। उसने अपने भाई इस्कन्दरको किताव देकर सतुष्ट करना चाहा था।

(३) अशुर वेक (१८४६ ई०)—खोजाकुलके पुत्र अशुरवेकको वापकी गद्दीपर अधिक दिनोंतक वैठनेका अवसर नही मिला, और चचाने भतीजेको खदेडकर गद्दी सभाल ली।

(४) इस्कन्दर (१८४६-५६ ई०)—इस्कन्दर "वली-निअम" की उपाधि धारण कर, दस साल तक वरावर नसरुल्लासे लडता रहा, लेकिन अन्तमें घिरावा डाल तथा खेतों और गावोंको वरवाद करके भूखा मारकर नसरुल्लाने शहरसब्जको सर किया। इस्कन्दरने कितावमें जाकर अपना प्रतिरोध जारी रक्खा, और अन्तमें अनुकूल शर्तोंके साथ वुखाराकी अधीनता स्वीकार कर वह वुखारा चला गया, जहा कराकुलकी सारी आमदनी उसे जागीरमें मिली। इस्कन्दरकी वहिन केनिगेज आइम अपने सौंदर्यके लिये वहुत मशहूर थी। वह व्याही हुई थी। उसपर नसरुल्लाकी नजर पड गई। उसने पतिको चारजूइ भेज आइमको अपने हरममें डाल लिया और शहरसब्जके मुख्य-मुख्य खानदानोंको ले जाकर चारजूइ, करशी आदिमें वसा दिया। नसरुल्लाने मरनेसे पहले इस्कन्दर और उसकी वहिनके खूनसे अपने हाथको रगा। एक प्रत्यक्षदर्शीने इस घटनाके वारेमें लिखा है—

"इस्कन्दर और उसका भाई चुमचू खान रोज एक वार अमीरको सलाम करने जाते थे। उनके जानेके वाद अमीरने मुझे उन्हें वुला लानेके लिये कहा। लाकर उन्हें अलग कमरोंमें वैठाया गया। उन्होने कहा—'वुखारामें किसीको पता नही, कल क्या होनेवाला है। आज तुम जिन्दा हो और कल तुम्हारा सिर कटा दिखाई पडे।' कुछ प्रतीक्षाके वाद एक वादाचा आया, जिसमें इस्कन्दर और वहा आनेवाली स्त्रीका गर्दन काट लेनेका हुकुमनामा लिखा हुआ था। वादाचा वादामके आकारकी एक मुहर हुआ करती थी। मृत्युदडका हुक्म देते समय अमीर इसी मुहरका इस्तेमाल करता था। दूसरे कामोंके लिये इस्तेमाल होनेवाली मुहर वडी होती थी। जैसे ही हमने हुकुमनामा पाया, तुरन्त इस्कन्दरको ववस्थानपर लानेको कहा। अमीरके किलेमें एक कूयें जैसी गहरी तथा तख्तोंसे ढकी जगह है। काटनेके वाद लाश इसी कुएमें फेंक दी जाती है। वहा वहुत-सी लाशें पडी थी। वधिक हमारी प्रतीक्षामें था। हमारे आते ही उसने तुरन्त इस्कन्दरको जमीनपर पटक दिया। इस्कन्दरके दाढ़ी नही थी। वधिकने अपनी अगुलियोंको उसके नथुनोंमें डाल सिरको पकडे गलेको काट दिया। इसके वाद लोग एक औरतको लाये। जैसे ही उसने इस्कन्दरके मृत शरीरको देखा, वह अमीरको वुरा-भला कहते रोने लगी। तव हमें मालूम हुआ, कि वह इस्कन्दरकी वहिन तथा अमीरकी वीवी आइम केनिगेज है। वह केनिगेज-परिवारकी लडकी थी, इसीलिये सभी उसे "मेरी केनिगेज चाद" कहते थे। जल्लादने उसके हाथोंको वाध दिया, फिर पिस्तौलसे सिरके पीछेसे गोली चलाई—हमारे लोगोंमें स्त्रियोंका गला नही काटते, वल्कि उन्हें गोली मार देते है। एक ही गोलीमें वह उसे नही मार सका। वह गिरकर कुछ देर तक छटपटाती रही। वधिकने उसके स्तनों और पीठपर वारह वार ठोकर लगाई, तव वह मरी।"

(५) वावा वेक—केनिगेज-परिवारका यह सरदार अमीरकी अरदलीमें था। नसरुल्लाके मरते साथ वह शहरसब्ज लौटा। छ महीने वाद अमीर मुजफ्फर शहरसब्ज आया।

उसी समय उसने बाबा बेक से उसकी बहिन मागी, जो कि पहले ही उसके बापकी कामुकताको तृप्त कर चुकी थी। मुजफ्फरके ऐसी माग करनेपर बडा हल्ला मचा, और उसने बुखारा लौटकर बहुत बडे-बडे आदमियोको जेलमें डाल दिया। लेकिन लोगोने उन्हें बन्दीखानेमे मुक्त करके बाबा बेकको शहरसब्जका और जरा बेकको किताबका शासक नियुक्त किया। बुखाराके अफसर वहासे मार भगाये गये। मुजफ्फरने चढाई की, किंतु खोकन्दके झगडेके कारण मुहासिरा उठा लेना पडा। पीछे बाबा बेकने वार्षिक भेंट और सैनिक सहायता देकर मुजफ्फरकी अधीनता स्वीकार की, पर राज्यके भीतरी मामलोमें वह स्वतन्त्र था।

१८६६ ई०में रूसियो द्वारा मुजफ्फरके हराये जानेपर बुखारामे दो दल हो गये। मुजफ्फर-का पुत्र केत्तात्युरा विरोधी और मुजफ्फरका भतीजा सईद खान समर्थक था। समयकोका मुखिया जुरा बेक था, जो अमीरके रूसियोपर चढाई करके हारनेके बाद शहरसब्ज भाग गया। रूसियोने समरकन्दको लेकर अमीरसे बदला लिया। जब अमीर बुखारा रूसियोका विरोधी बना, तो उसकी सहायतार्थ शहरसब्जके बेकोने तीस हजार सेना लेकर समरकन्दपर चढ़ाई की। इससे पहले वह जेनरल कॉफमानसे अलग समझौता करनेकी बातचीत कर रहे थे, लेकिन जब जेनरलने उन्हें मुलाकातके लिये बुलाया, तो उनके मनमें सदेह होने लगा, और मुजफ्फरकी ओर होकर लडनेके लिये तैयार हो गये। अमीरने विवादास्पद नगर चिरागचीको देनेका वचन दिया था, इसलिये भी शहरसब्जवाले उसके पक्षमें हुए। रूसी सैनिकोको समरकन्दके किलेके भीतर घेरकर शहरसब्जवालोने बडी विपदमें डाल दिया था, लेकिन इसी समय जुरा बेकको कॉफमानके आनेकी झूठी खबर लगी, और उसके एक अफसरने अपने आदमियोको हटा लिया। इसी सहायता देनेके लिये अमीर मुजफ्फरने जुरा बेकको "दादखाह"की उपाधि तथा दस हजार तका इनाम दिया था।

१८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ इस्कन्दरकुलके खिलाफ चढा था। उस वक्त कर उगाहनेके लिये गये राजुल उरुसोफको कुछ विद्रोहियोंने मार भगाया। ये आदमी जुरा बेकके पक्षपाती हैदरखोजाके अनुयायी बतलाये जाते थे। जुरा बेकको हैदरको समर्पण करनेका हुक्म हुआ, लेकिन उसने कहा कि हैदर कही दूसरी जगह है। इसपर जेनरल कॉफमानने शहरसब्जको खतम करनेका निश्चय कर लिया। जेनरल अब्रामोफने किताबको आक्रमण करके ले लिया, फिर शहरसब्जको आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर किया। बेक भागकर खोकन्द चला गया। रूसियोने शहरसब्ज-के इलाकेको अमीर-बुखाराके हाथमे दे दिया। विश्वासघाती कहकर खोकन्दके खानने शहरसब्ज-वाले बेकोको रूसियोके हाथमें दे दिया। कुछ समयतक वह ताशकन्दमें नजरबद रहे, फिर बुखारासे दो हजार रूबल पेंशन मिलने लगी। जुरा बेक इसके बाद रूसियोका बहुत जबर्दस्त पक्षपाती हो गया और वह उसे बहादुर, ईमानदार और निष्कपट कह कर तारीफ करते थे।

३ कोहिस्तान

समरकन्दसे पूर्वका पहाडी इलाका अर्थात् जरफशाकी ऊपरी उपत्यका कोहिस्तानके नामसे प्रसिद्ध थी। १८७० ई०में वहा फाराब, मागियान, कश्तुत, फान, यग्नान, माचा और फलगर-के छोटे-छोटे सात शासक (बेक) थे। ये पहाडी बेक (ठाकुर) कुछ गावोके शासक थे, और बुखाराको थोडा-सा कर दे अपने लोगोके ऊपर मनमाना शासन करते थे।

उरगुत—उरगुतका बेक खानदानी राजा था। मागियान, कश्तुत और फाराबके बेक अपनेको इसके अधीन मानते थे। १९वीं शताब्दीके आरभमें अमीर हैदर उरगुतको जीतकर उसके बेक युल्दाश परमाचीको बदी बना बुखारा ले आया। बाकी तीनो बेकोने बुखाराकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कुछ समय बाद युल्दाशके पुत्र कत्ता बेकने उरगुतको फिर अपने हाथ-में कर लिया, और दूसरे बेकोसे नाराज होकर उसने अपने भाई सुल्तान बेकको मागियान और कश्तुतका शासक बनाया। अब बुखारासे झगडा छिड गया। पहाडियोने समरकन्दको खतरा पैदा कर दिया। लेकिन अमीर-बुखाराके सामने तलवार उठाकर खडे रहनेमें बहुत दिनो

तक लाभ नही था, इसलिय उरगुतका बेक नसरुल्लाखानको अपनी बेटी दे बुखाराके सरदारके तौरपर उरगुतोंका शासक बना रहा। कत्ता बेकके मरनेके बाद उसके पुत्र आदिल परमाची उरगुतपर और उसका भाई अलायार दादखाह् मागियानपर शासन करने लगे। मरनेसे थोडे ही समय पहले अमीर नसरुल्लाने उन्हें बुखारा बुलाकर सपरिवार चारजूयमें निर्वासित कर दिया। रूसियोके समरकन्द ले लेनेपर अमीर द्वारा नियुक्त अफसर उरगुत छोडकर भाग गया। इसपर चारजूयमें निर्वासित कुमारोंमेंसे एक हुसेन बेकने खोकन्द होते वहां पहुचकर उरगुतको ले लिया। रूसियोने जब वहासे भगाया, तो वह स्वय मागियानमे और अपने छोटे भाई शादीको कश्तुत और चचेरे भाई सईदको फारावपर नियुक्त करके शासन करने लगा। इन छोटी-छोटी पहाडी रियासतोंका बुखारी कर उगाहनेवालोंसे बराबर लडाई-झगडा होता रहता था। १९वी सदीके आरभमें ही फलगरके बेक अब्दुश्शकूर दादखाह्ने सारे पहाडी इलाकेको अपने अधीन कर कितने ही दुगम पहाडी स्थानोको सुगम बनानेके लिये रास्ते और पुल बनवाये। अमीर हैदर (१७९९–१८२६ ई०) के समय इन इलाकोमें बुखाराने अपने बेक नियुक्त किये और किले बनवाये। यही हालत नसरुल्लाके शासनके अन्ततक रही।

समरकन्दके रूसियोंके हाथमें जानेपर वहासे बुखारी बेक (हाकिम) भाग गया। उसी समय बेक अब्दुल गफ्फारने उरातिप्पाके पूव उर्मितानको ले अपनेको फलगरका बेक घोपित किया, लेकिन माचाके लोगोने शासक मुजफ्फरशाह्की अधीनता स्वीकार की, जिसने अपने भतीजे रहीमखानको अपनी ओरसे शासक नियुक्त किया। रहीमखानने फलगरसे अब्दुल गफ्फारको मार भगाया और उसकी सहायताके लिये आये कश्तुतके शादीबेकको भी हराया। इसने यग्नान और फानको भी जीत हिसारपर चढाई की। रास्तेमें सेना बिगड गई, और उसने रहीमको भगाकर पाचा खोजाको अपना नेता बनाया। ये पहाडी लोग बहुत पिछडे हुये थे, लेकिन फलगर-वाले अपनेको माचावालोंसे अधिक सस्कृत समझते थे। उन्होंने फिर अब्दुल गफ्फारको अपने यहा बुलाया, किन्तु उसने हार खाकर समरकन्दमें जा रूसियोकी अधीनता स्वीकार की। इस अशातिसे लाभ उठा मई १८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ एक छोटी-सी सेना ले पहाड़ोंके भीतर घुसा। १२ मईको उसने उर्मितान ले लिया, २१ को वरसामिनार भी उसके हाथमें चला गया। यह दोनो जगहें फलगरके बेकके अधीन थी। माचाका बेक पाचा खोजा बहुत जनप्रिय था। वह धमकीके पत्र लिखता रहा। अब्रामोफने माचाकी ओर बढकर २८ मईको आबुदनको ले लिया। पाचा खोजा भाग निकला। रूसियोने फलगरके किलेको तोड दिया, जिसे कि बुखारियोने पहाडी लोगोको दबा रखनेके लिये बनाया था। अब्रामोफ आगे बढते-बढते अलई पर्वतमालाकी उस हिमानीके पास पहुचा, जो कि जरफशां (प्राचीन सोग्द) नदीका उद्गम है। लौटकर उसने फान नदीपर अवस्थित सबदा, फिर यग्नान-उपत्यकाको जीतते इस्कन्दरकुल (महासरोवर)तक गया। वहासे पश्चिमी कोहिस्तानकी ओर घूमकर उसने दस हजार फुट ऊचे कश्तुतके डाडेको पार किया, जिसके पश्चिमी पहाडियोमें एक जबर्दस्त सघर्ष हुआ। कश्तुतको अपने हाथमें करके अब्रामोफ पजकन्द होते समरकन्द लौट गया।

शहरसब्जकी विजयके बाद रूसियोकी एक टुकडी कश्क-उपत्यकासे हो फाराब और मागियान-पर पडी। इन दोनों इलाकोंके बेक रूसके विद्रोहियोंके साथ हो गये थे। रूसियोने यहाके दोनो किलोको तोड दिया और वहाके बेकों—सईद और शादीबेक—ने आत्मसमर्पण किया। मागियानका बेक हुसेन कुछ महीनेतक हाथ नही आया। रूसियोने फाराब और मागियानको उरगुत जिलेमें मिला लिया। कितने ही समयतक बाकी पहाडी लोग रूसियोंके साथ विद्रोही बने रहे, लेकिन कब तक इतनी बडी शक्तिका मुकाबला करते ?

४ हिसारके इलाके

आजकल यह पहाडी इलाका ताजिकिस्तान गणराज्यका एक बडा भाग है। ऊपरी जरफशा उपत्यकाकी तरह यहांपर भी उस समय कितने ही छोटे-छोटे राजा थे, जैसे —

(१) करातगिन—वक्षु नदीकी मुख्य पहाड़ी शाखा सुरखाव करातगिनके इलाकेसे बहती है। यहाके शासक अपनेको ऐतिहासिक ग्रीक सम्राट् अलिकसुन्दरका वंशज बतलाते थे। कोई आश्चर्यकी बात नही है, यदि ग्रीक या शक-शासनके पतनके बाद वहाके कुछ राजकुमारोने इन दुर्गम पहाड़ियोमें शरण लेकर अपने लिये स्थान बनाया हो। लेकिन यह साबित करना मुश्किल है, कि सचमुच ही ये छोटे-छोटे शाह और बेक यूनानी सम्राटोके वंशज थे। दरवाजवालोने कुछ समयतक करातगिनको जीतकर उसे अपने हाथमें रक्खा, लेकिन जल्दी ही वह फिर स्वतंत्र हो गया। १८३९ ई०में खोकन्दने करातगिनको जीतकर अपने अधीन कर लिया।

(२) दरबाज—करातगिनसे दक्षिणमें यह छोटा पहाडी राज्य था, जिसके शासक भी अपनेको सिकन्दरवंशी कहते थे—यह उज्बेक नही ताजिक थे। खोकन्दके मदली खानने १८३९ ई०में करातगिनके साथ इसे भी अपने अधीन बना लिया था।

(३) कुल्याब, (४) शगनान—यह भी दो छोटी-छोटी पहाडी रियासतें थी, जो कि पीछे तबतक खोकन्दका अंग बनकर रही, जबतक खोकन्दको रूसियोने हजम नही कर लिया।

(५) हिसार—करातगिन, दरवाज और शगनानकी पहाडी रियासतोंके पश्चिममें हिसार और कुल्याबके इलाके हैं, जिनमें उज्बेकोंके कबीले ककुरत और कतगन रहते थे। उन्होने इन इलाकोको अपने हाथमें करके बहुत-से पुराने वाशिंदो—ताजिको—को भगा दिया था। बुखारावाले उस समय हिसारके इलाकेको उज्बेकिस्तान कहते थे। जान पडता है, १८वी सदीके मध्यमें हिसारका इलाका बुखाराके हाथसे निकल गया था।

हिसार और कुल्याबके पडोसमें कई और छोटे-छोटे उज्बेक राजा थे, जिनमें कुरगानका अल्लाबर्दी जौज १८वी सदीके अन्तमें पडोसियोके लिये काल बन गया था। उसने हिसारको घेरा था, जब कि बेक अल्लायार और करशीके राजुलने उसे मारकर हिसार और कुरगानपर अधिकार कर लिया। तब भी प्राचीन वंशका शासक सईद हिसारका बेक, यदि कामके लिये नही तो नामके लिये, माना जाता था। बुखाराके अमीरने सईद बेककी लडकीसे ब्याह किया था, और इस प्रकार वह अमीरका कृपापात्र था। कुरगानको हिसारमें मिला लिया गया था। इज्ज तुल्लाके समय हिसारमें सईद बेक और कुरगानमें अल्लायार बेकका शासन था। पडोसी कबादियान इलाकेके बेक थे दोस्त मुहम्मद और मुराद अली। इन छोटी-छोटी रियामतोको हिसारने हजम कर लिया। १९वी सदीके उत्तरार्धमें कुल्याब हिसारका शासक कतगन अमीर सरीखान था, जिसके डरके मारे करातगिनके शासकको १८६९ ई०में खोकन्दकी शरण लेनी पडी थी, लेकिन इसी समय बुखाराने उसे अपने अधीन कर लिया। १८७२ ई०में हिसारमें सात जिले थे, जिनके अपने-अपने बेक थे, कुल्याबमें भी दो जिले थे। ये सभी बेक बुखारा द्वारा नियुक्त होते थे। इन जिलोंके नाम थे—शेराबाद, बाइसून, देहनौ, युर्ची, हिसार (कुर्गानत्यूबे, कबादियान), बल्जुवान और कूल्याब। इनके अतिरिक्त दरबन्द, सरेजूय और फैजाबादपर अमीरका शासन स्थानीय बेकों द्वारा नही बल्कि सीधे बुखारासे होता था।

५ तुखारिस्तान

प्राग्-मुस्लिम तुर्कोंके शासनकाल तथा स्वेन्-चाड्की यात्राके समय पहाडोसे उतरकर पश्चिमी-भिमुख बहनेवाली पहाडोतक फैली वक्षुके दोनो तटकी समतल-सी मैदानी भूमिको तुषार या तुखार कहा जाता था। पीछे यह उज्बेकोकी भूमि हो आजतक है। यहाके निवासी अधिकतर उज्बेक है। वक्षुके उत्तरवाला तुखारिस्तान अब सोवियत उज्बेकिस्तानका अंग है, पर दक्षिणी तुखारिस्तान उज्बेक होते हुये भी काबुलके शासनमें है। १८वीं सदीके मध्यमें ही, जब कि अफगानोका सितारा ऊंचा होने लगा था, दक्षिण तुखारिस्तानमें कितनी ही छोटी-छोटी रियासतें थी —

(१) खुल्म—१७५१-५२ ई०में अफगानोने दक्षिणी वक्षु-उपत्यकाको बुखारासे छीन लिया।

१७८६ ई०में अमीर शाहमुरादने उसे लौटानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सफल नही हो सका। पीछे यहापर खिलिच अलीने अपनी प्रभुता जमाई।

खिलिच अली (--१८१७ ई०)—खुल्म बलखसे उत्तर-पूर्वमें है। यहांके उज-कबीलेका सरदार खिलिच अली धीरे-धीरे बहुत शक्तिशाली हो गया, और उसने अपने पडोसी इलाको ऐवक, गोरी, माजूर, दर्रागूजको अपने अधीन कर लिया, तथा कुरगानतेप्पाके उज्बेक सरदार अल्लावर्दी तौजको हजरत इमामसे मार भगाया। कुन्दुजका उज्बेक सरदार खिलिच अलीका ससुर था, जिससे उसने मित्रता स्थापित की। काबुलमें भी उसका प्रभाव बढा और वहासे उसे "अतालीक"की उपाधि मिली। बलखके अफगान राज्यपाल हुकूमतखान-पुत्र सरदार नजीबुल्ला खानपर भी उसका काफी रोब था। तालिकान छोडकर बाकी सभी जगहोपर अफगान राज्यपाल नही, बल्कि खिलिच अलीकी तूती बोल रही थी। यहाके तीस हजार रुपयाके करमेंसे एक तिहाई काबुल जाता, बाकी पुराने नौकरो, मुल्लो और शासकोंके खर्चमें आता। खिलिच अपने प्रभावको बढा लेनेके बाद अफगानोका भक्त रहा। उसके पास बारह हजार सवार सैनिक थे, जिनमेंसे दो हजारका वेतन वह खुद देता, बाकीको उनकी सेवाओंके लिये भूमि और जागीर मिली हुई थी। कुन्दुजवाले भी उसे पाच सौ सैनिक दिया करते थे। सेनाका खर्च करनेके बाद उसकी आमदनी उन्नीस हजार गिन्नीके बराबर थी। खिलिच अलीके ज्येष्ठ पुत्रको नौ हजार गिन्नी वार्षिक वृत्ति मिलती। उसे काबुलसे "बलखका वली" (बलख-राज्यपाल)की उपाधि मिली हुई थी। खिलिच अलीका रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। वह १८१७ ई० के करीब मरा। इसके बाद उसके पुत्रोमें झगडा हो गया, जिसमें कुन्दुजके मुराद बीने आगमें घी डालनेका काम किया। खिलिचके दो पुत्रोमें एकको खुल्म और दूसरेको ऐवक मिला। बलख भी ऐवकवालेके हाथमें था, लेकिन अब दोनो भाई कुन्दुजके अधीन अमीरमात्र रह गये थे।

(२) कुन्दुज (५) मुराद बी (१८१२–४० ई०)—उज्बेकोंके कतगन कबीलेका कुन्दुज प्रधान नगर था। चिङ्-गिस खानके समयमें भी नगरका यही नाम था। १८वी सदीके अन्तमें कतगन-अमीर खोकन्द बेक शक्तिशाली होकर बहुत कुछ स्वतत्र हो गया और उसने अपने पूर्वी इलाके बदख्शाको लूटमारकर उजाड दिया। उसके बाद उसका पुत्र मुराद बी उत्तराधिकारी बना। अपने समयमें यह मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली शासकोमें था। इतिहासकार इज्जतुल्लाके समय यह कुन्दुजपर शासन करता था। खिलिचके जिन्दा रहनेतक यह अपनी शक्तिको बहुत आगे नही बढ़ा सका, लेकिन इसके बाद बडी तेजीसे अपने राज्यको बढाया। अग्रेज यात्री मूरक्राफ्टने अपनी यात्राके प्रबन्धके लिये कुछ आदमी भेजे थे, जिनपर वहावालोने गुप्तचर होनेका सदेह किया—"अग्रेज एसियाके किसी भागमें इसके सिवा और किसी मतलबसे प्रवेश नही करते, कि अन्तमें वह वहाके स्वामी बन जाय।" पीछे मूरक्राफ्ट स्वय वहा गया। उस समय मुराद बी खुल्म, कुन्दुज, तालिकान, अन्दराब, बदख्शा और हजरत-इमामका स्वामी था। मूरक्राफ्टने ऐवकसे आगे पहाड़ोंके भीतर बहुत-से कस्बे उजडे देखे थे, जिसका कारण मुराद बी था। वहाके निवासियोको वह

आये। मुराद बीके कोपका भारी शिकार बदख्शाकी सुन्दर भूमि हुई, जहाके अधिकाश लोगोको पकडकर वह कुन्दुज ले गया, और वहाके सिकन्दर-वंशी शासनको राज्यसे वचित कर दिया। १८२३ ई०में किला-अफगानमें मीरयार बेग खानने मुराद बीके दस हजार सवारोंसे नौ हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। १८२९ ई०में यहाके बाशिन्दोको भी उसने कुन्दुज भेज दिया। वूड अपने यात्रा-ग्रथ (१८३८ ई०)में लिखता है—"इस प्रकार इस अस्वास्थ्यकर दलदली भूमिमें १८३० ई०से लेकर आज (१८३८ ई०) तक उज्बेकोने करीब-करीब पच्चीस हजार परिवार या प्राय एक लाख विदेशियोको लाकर बसा दिया है, इसमें सन्देह है, कि १८३८ ई०में उनमेंसे छ हजार परिवार भी जिन्दा है। इन पिछले आठ वर्षोमें उनमेंसे बहुतेरे मर गये। कहावत है—'अगर तुम मरना चाहते हो, तो कुन्दुज जाओ।' हमारे वहा पहुचनेसे बारह महीने पहले कुल्याबके निवासी बहुत भारी सख्यामें अपने पहाडी इलाकेसे लाकर हजरत इमाममें बसाये गये। डाक्टर लार्ड और मै उस भूमिसे गुजरे, जहापर कि उनके घर थे, जिनमेंसे कुछ अब भी खडे थे, लेकिन चारो ओर नीरवता छाई हुई थी, और चारो ओर फैली बहुसख्यक कब्रें उनके बहुसख्यक निवासियोकी आपबीती बतला रही थी।" वक्षुके उत्तर कुल्याबसे लेकर दक्षिणमें सिगान (हिन्दूकुशके दो डाडोंके परे तथा बामियानसे तीस मील भीतर) तक और वखान भी मुराद बीका था। मुराद बी १८४० ई०के आसपास मरा।

(ख) **मुहम्मद अमीन, खिलिच-पुत्र, खुल्म (१८४०-४५ ई०)**—मुराद बीके बाद उसका स्थान खिलिच अलीके पुत्र मुहम्मद अमीनने लिया, जिसको "मीरवली"की उपाधि मिली थी। वह १८४५ ई०में शासन कर रहा था। उसका पुत्र गजअलीबेग बदख्शाका शासक था। कुन्दुजमें मुराद बीका पुत्र मीर रुस्तम खान शासन करता था, किन्तु वह मुहम्मद मीरवलीके अधीन था। मीरवली बुखारा और काबुल दोनोको खुश रखता था। उसने अन्दखुदको भी अपने अधीन कर लिया था। १८४५ ई०में ऐबकमें उज्बेकोका कगली कबीला रहता था। मीरवलीका शासन सरीपुल, अन्दखुद, कुल्याब और वखानसे हिन्दूकुश और बलखतक फैला हुआ था। खिलिच अलीके समय ही तुखारिस्तानमें काबुलका नाममात्रका प्रभाव था, लेकिन अफगानोकी आखें इस ओर लगी हुई थी, जिसमें उन्हें १८५० ई०में जाकर सफलता प्राप्त हुई। काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने बुखाराके अमीर नसरुल्लाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। मीरवलीको दोस्त मुहम्मदने राह देनेके लिये कहा, लेकिन मीरवलीके इजाजत देने या न देनेकी कोई बात नही थी। दोस्त मुहम्मदका पुत्र अकबर खान निर्वासित होकर खुल्ममें रहता था, जहासे वह मीरवलीकी एक दासीपर मुग्ध होकर उसे काबुल भगा ले गया। दासी किसी तरह भागकर खुल्म पहुच गई। काबुलसे मागकर आनेपर मीरवलीने उसे देनेसे इनकार कर दिया। इस प्रकार दोस्त मुहम्मदके लिये आक्रमण करनेका अच्छा बहाना मिल गया। १८४५ ई०में अफगानोने चढाई की, लेकिन लडाईमें तुरन्त सफलता नही मिली, जिसमें सबसे बडी बाधा हिन्दुकोह (हिन्दूकुश) की दुर्गम पहाडिया थी। १८५० ई०में अफगानोने हिन्दूकुश पार करके बलखको जीत लिया। १८५९ ई०में कुन्दुजको भी लेकर वह दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके अपनी आजकी सीमाको स्थापित करनेमें सफल हुये—अफगान अपने इस इलाकेको तुखारिस्तान नही तुर्किस्तान कहते हैं।

दोस्त मुहम्मदके बाद उसके पुत्र अफजलखाने—जो बलखका राज्यपाल था—१८५४ ई०में अपने भाई शेरअलीके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। १८६४ ई०में फिर उसे अपने पदपर बहाल कर दिया गया। अफजलके पुत्रने बुखारा भागकर अमीरकी लडकीसे ब्याह किया। फिर वह अपने ससुरकी सहायता तथा दूसरोकी मददसे विद्रोह करके १८६६ ई०में शेरअलीको हटा खुद काबुलकी गद्दीपर बैठा। शेरअलीका तब भी कन्दहार और हिरातपर अधिकार रहा। शेरअलीने फिर १८६८ ई०में तैयारी करके मुकाबिला किया, और अन्तमें सिंहासन पानेमें सफल हुआ। अफजल-पुत्र अमीर अब्दुर्रहमान मशहद भागा, जहासे मार्च १८७० ई०में ताशकन्दमें रूसियोंके पास गया। उन्होने उसे पचीस हजार रूबल वार्षिक पेंशन दे समरकन्दमें रख दिया।

१७८६ ई०में अमीर शाहमुरादने उसे लौटानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सफल नही हो सका। पीछे यहापर खिलिच अलीने अपनी प्रभुता जमाई।

खिलिच अली (—१८१७ ई०)—खुल्म बलखसे उत्तर-पूर्वमें है। यहाके उज-कवीलेका सरदार खिलिच अली धीरे-धीरे बहुत शक्तिशाली हो गया, और उसने अपने पडोसी इलाकों ऐवक, गोरी, माजूर, दर्रागूजको अपने अधीन कर लिया, तथा कुरगानतेप्पाके उज्वेक सरदार अल्लावर्दी तौजको हजरत इमामसे मार भगाया। कुन्दुजका उज्वेक सरदार खिलिच अलीका ससुर था, जिससे उसने मित्रता स्थापित की। काबुलमें भी उसका प्रभाव बढा और वहासे उसे "अतालीक"की उपाधि मिली। बलखके अफगान राज्यपाल हुकूमतखान-पुत्र सरदार नजीबुल्ला खानपर भी उसका काफी रोब था। तालिकान छोडकर बाकी सभी जगहोपर अफगान राज्यपाल नही, बल्कि खिलिच अलीकी तूती बोल रही थी। यहाके तीस हजार रुपयाके करमेंसे एक तिहाई काबुल जाता, बाकी पुराने नौकरो, मुल्लो और शासकोंके खचमें आता। खिलिच अपने प्रभावको बढा लेनेके बाद अफगानोका भक्त रहा। उसके पास बारह हजार सवार सैनिक थे, जिनमेंमे दो हजारका वेतन वह खुद देता, बाकीको उनकी सेवाओंके लिये भूमि और जागीर मिली हुई थी। कुन्दुजवाले भी उसे पाच सौ सैनिक दिया करते थे। सेनाका खच करनेके बाद उसकी आमदनी उन्नीस हजार गिन्नीके बराबर थी। खिलिच अलीके ज्येष्ठ पुत्रको नौ हजार गिन्नी वार्षिक वृत्ति मिलती। उसे काबुलसे "बलखका वली" (बलख-राज्यपाल)की उपाधि मिली हुई थी। खिलिच अलीका रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। वह १८१७ ई० के करीब मरा। इसके बाद उसके पुत्रोमें झगडा हो गया, जिसमें कुन्दुजके मुराद बीने आगमें घी डालनेका काम किया। खिलिचके दो पुत्रोमें एकको खुल्म और दूसरेको ऐवक मिला। बलख भी ऐवकवालेके हाथमें था, लेकिन अब दोनो भाई कुन्दुजके अधीन अमीरमात्र रह गये थे।

(२) कुन्दुज (क) मुराद बी (१८१२–४० ई०)—उज्वेकोंके कतगन कवीलेका कुन्दुज प्रधान नगर था। चिङ्गिस खानके समयमें भी नगरका यही नाम था। १८वी सदीके अन्तमें कतगन-अमीर खोकन्द बेक शक्तिशाली होकर बहुत कुछ स्वतन्त्र हो गया और उसने अपने पूर्वी इलाके बदख्शाको लूटमारकर उजाड दिया। उसके बाद उसका पुत्र मुराद बी उत्तराधिकारी बना। अपने समयमें यह मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली शासकोंमें था। इतिहासकार इज्जतुल्लाके समय यह कुन्दुजपर शासन करता था। खिलिचके जिन्दा रहनेतक यह अपनी शक्तिको बहुत आगे नही बढ़ा सका, लेकिन इसके बाद बडी तेजीसे अपने राज्यको बढाया। अग्रेज यात्री मूरक्राफटने अपनी यात्राके प्रबन्धके लिये कुछ आदमी भेजे थे, जिनपर वहावालोने गुप्तचर होनेका सदेह किया—"अग्रेज एसियाके किसी भागमें इसके सिवा और किसी मतलबसे प्रवेश नही करते, कि अन्तमें वह वहाके स्वामी बन जाय।" पीछे मूरक्राफ्ट स्वय वहा गया। उस समय मुराद बी खुल्म, कुन्दुज, तालिकान, अन्दराब, बदख्शा और हजरत-इमामका स्वामी था। मूरक्राफटने ऐवकसे आगे पहाडोंके भीतर बहुत-से कस्बे उजडे देखे थे, जिसका कारण मुराद बी था। वहाके निवासियोको वह गुलाम बनाकर ले गया था। मुराद बीका वजीर आत्माराम दीवानबेगी मूलत पेशावरका निवासी था। आमतौरसे हिन्दुओको वहा बहुत नीची निगाहसे देखा जाता था, लेकिन आत्मारामने अपनी योग्यतासे मुराद बीका कृपापात्र बनकर ऐसे ऊचे पदको प्राप्त किया। उसके पास बहुत सम्पत्ति और चार सौके करीब दास-दासी थे।

मुराद बी बडा ही कमठ आदमी था। वह स्वय अपनी सेनाका सचालन करता और बलख तथा हजाराके शीयोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें दास बनाकर बेच देता था। चित्रालका मेहतर भी डरके मारे मुराद बीको करके रूपमें गुलाम देता। हिन्दूकुशकी पहाडियोंमें सियापोश काफिर आज भी कुछ मुसलमान न बन अपने बाप-दादोंके धमको मानते चले आ रहे हैं। मुराद बीने १८३० ई०में दास-दासी बनाकर बेचनेके ख्यालसे उनपर आक्रमण किया, लेकिन उसे सफलता नही मिली, काफिरोने उसे आगे बढनेसे रोक दिया। इसी समय बर्फानी आधी आई, जिससे फायदा उठाकर सियापोशोंने आक्रमण कर दिया, और बीके चार हजार सवार काम

आये। मुराद बीके कोपका भारी शिकार बदख्शाकी सुन्दर भूमि हुई, जहाके अधिकाश लोगोको पकडकर वह कुन्दुज ले गया, और वहाके सिकन्दर-वशी शासनको राज्यसे वचित कर दिया। १८२३ ई०में किला-अफगानमे मीरयार बेग खानने मुराद बीके दस हजार सवारोंसे नौ हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। १८२९ ई०में यहाके वाशिन्दोको भी उसने कुन्दुज भेज दिया। वूड अपने यात्रा-ग्रथ (१८३८ ई०)में लिखता है—"इस प्रकार इस अस्वास्थ्यकर दलदली भूमिमें १८३० ई०से लेकर आज (१८३८ ई०) तक उज्वेकोंने करीब-करीब पच्चीस हजार परिवार या प्राय एक लाख विदेशियोंको लाकर बसा दिया है, इसमें सन्देह है, कि १८३८ ई०में उनमेंसे छ हजार परिवार भी जिन्दा है। इन पिछले आठ वर्षोमें उनमेंसे बहुतेरे मर गये। कहावत है—'अगर तुम मरना चाहते हो, तो कुन्दुज जाओ।' हमारे वहा पहुचनेसे बारह महीने पहले कुल्याबके निवासी बहुत भारी सख्यामें अपने पहाडी इलाकेसे लाकर हजरत इमाममें बसाये गये। डाक्टर लार्ड और मै उस भूमिसे गुजरे, जहापर कि उनके घर थे, जिनमेंसे कुछ अब भी खडे थे, लेकिन चारो ओर नीरवता छाई हुई थी, और चारो ओर फैली बहुसख्यक कब्रें उनके बहुसख्यक निवासियोकी आपबीती बतला रही थी।" वक्षुके उत्तर कुल्याबसे लेकर दक्षिणमें सिगान (हिन्दूकुशके दो डाडोंके परे तथा वामियानसे तीस मील भीतर) तक और बखान भी मुराद बीका था। मुराद बी १८४० ई०के आसपास मरा।

(ख) **मुहम्मद अमीन, खिलिच-पुत्र, खुल्म (१८४०-४५ ई०)**—मुराद बीके बाद उसका स्थान खिलिच अलीके पुत्र मुहम्मद अमीनने लिया, जिसको "मीरवली"की उपाधि मिली थी। वह १८४५ ई०में शासन कर रहा था। उसका पुत्र गजअलीबेग बदख्शाका शासक था। कुन्दुजमें मुराद बीका पुत्र मीर रुस्तम खान शासन करता था, किन्तु वह मुहम्मद मीरवलीके अधीन था। मीरवली बुखारा और काबुल दोनोको खुश रखता था। उसने अन्दखुदको भी अपने अधीन कर लिया था। १८४५ ई०में ऐबकमें उज्वेकोका कगली कबीला रहता था। मीरवलीका शासन सरीपुल, अन्दखुद, कुल्याब और वखानसे हिन्दूकुश और बलखतक फैला हुआ था। खिलिच अलीके समय ही तुखारिस्तानमें काबुलका नाममात्रका प्रभाव था, लेकिन अफगानोकी आखें इस ओर लगी हुई थी, जिसमें उन्हें १८५० ई०में जाकर सफलता प्राप्त हुई। काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने बुखाराके अमीर नसरुल्लाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। मीरवलीको दोस्त मुहम्मदने राह देनेके लिये कहा, लेकिन मीरवलीके इजाजत देने या न देनेकी कोई बात नही थी। दोस्त मुहम्मदका पुत्र अकबर खान निर्वासित होकर खुल्ममें रहता था, जहासे वह मीरवलीकी एक दासीपर मुग्ध होकर उसे काबुल भगा ले गया। दासी किसी तरह भागकर खुल्म पहुच गई। काबुलसे भागकर आनेपर मीरवलीने उसे देनेसे इनकार कर दिया। इस प्रकार दोस्त मुहम्मदके लिये आक्रमण करनेका अच्छा बहाना मिल गया। १८४५ ई०में अफगानोने चढाई की, लेकिन लडाईमें तुरन्त सफलता नही मिली, जिसमें सबसे बडी बाधा हिन्दुकोह (हिन्दूकुश)की दुर्गम पहाडियां थी। १८५० ई०में अफगानोने हिन्दूकुश पार करके बलखको जीत लिया। १८५९ ई०में कुदुजको भी लेकर वह दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके अपनी आजकी सीमाको स्थापित करनेमें सफल हुये—अफगान अपने इस इलाकेको तुखारिस्तान नही तुर्किस्तान कहते है।

दोस्त मुहम्मदके बाद उसके पुत्र अफजलखाने—जो बलखका राज्यपाल था—१८५४ ई०में अपने भाई शेरअलीके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। १८६४ ई०में फिर उसे अपने पदपर बहाल कर दिया गया। अफजलके पुत्रने बुखारा भागकर अमीरकी लडकीसे ब्याह किया। फिर वह अपने ससुरकी सहायता तथा दूसरोंकी मददसे विद्रोह करके १८६६ ई०में शेरअलीको हटा खुद काबुलकी गद्दीपर बैठा। शेरअलीका तब भी कन्दहार और हिरातपर अधिकार रहा। शेरअलीने फिर १८६८ ई०में तैयारी करके मुकाबिला किया, और अन्तमें सिंहासन पानेमें सफल हुआ। अफजल-पुत्र अमीर अब्दुर्रहमान मशहद भागा, जहासे मार्च १८७० ई०में ताशकन्दमें रूसियोंके पास गया। उन्होंने उसे पचीस हजार रूबल वार्षिक पेंशन दे समरकन्दमें रख दिया।

अफगानिस्तान ब्रिटिश और जारशाही साम्राज्यके बीचमें था। उसपर दोनो महाशक्तिया अपना प्रभाव डालनेकी कोशिश करती थी, इसलिये रूसियोका अब्दुर्रहमानको समरकन्दमें या अंग्रेजोंका अमीर याकूबको लाकर मसूरी (१८८३ ई०)में रखना कोई व्यर्थका सिर-दर्द नही था। अफगानोंने दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके बदख्शामें फिर एक स्थानीय शासकको नियुक्त किया।

(३) **बदख्शां**—१३वी सदीमें पसिद्ध यात्री मार्कोपोलो बदख्शाके रास्ते चीन गया था। उस समय वहाका शासक अपनेको ग्रीक-सम्राट् अलिकसुन्दरका वशज बतलाता था। बाबरके समय भी उनके बारेमें यही ख्याति थी। कोई आश्चर्य नही, यदि ग्रीक-बाख्तरी साम्राज्यके नष्ट होनेपर कोई राजकुमार वहा जाकर शासक बना हो, या कोई कुषाणवशी राजकुमार जाकर रहने लगा हो, जिसके उत्तराधिकारी ग्रीको और शकोमें भेद करना भूल गये हो। उज्बेकोने बदख्शाको जीतकर बुखाराके अधीन कर लिया था। बुखाराके शासनके निबल होनेपर १८वी सदीमें बदख्शा स्वतन्त्र हो गया। अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्ट १८३२ ई०में इधरसे गुजरा था, उस समय तत्कालीन राजवशको स्थापित हुये सौ साल हो चुके थे।

सुल्तानशाह बदख्शाके राजवशका सस्थापक था, जिसकी राजधानी फैजाबादको भी उसीने बसाया था।

(क) **सुल्तानशाह (१७६५ ई०)**—जिस साल चीनने वहाके शासक खान खोजासे काशगरको जीता, उस समय बदख्शाका शासक सुल्तानशाह था। खान खोजाने भागकर चालीस हजार आदमियों के साथ बदख्शामें शरण ली थी। उसके धन और बेगमोंके लोभसे सुल्तान शाहने उसपर आक्रमण कर दिया। खान खोजाने हार खाते समय शाप दिया, कि बदख्शा तीन बार निर्जन बनेगा, और वहा एक कुत्ता भी जिन्दा नही रह जायगा। कुछ साल बाद १७६५ ई०में अफगान अमीर अहमदने बदख्शा जीत लिया, जिसमें सुल्तानशाह मारा गया। उस समय बदख्शामें पैगम्बर मुहम्मदका कुर्ता बडी पवित्रताकी चीज समझा जाता था, जिसे अफगान फैजाबादसे काबुल ले गये।

(ख) **मीर मुहम्मद शाह (१७६५-१८१२ ई०)**—सुल्तानकी जगहपर उसके पुत्र मीर मुहम्मदको बैठाया गया। १८१२ ई०में जब इज्जतुल्ला इधरसे गुजरा, तो यही बदख्शाका शासक था।

(ग) **मीर यारबेक खान (१८२३ ई०)**—मुराद बीने इसे १८२३ ई०में किला-अफगानमें हराया, और १८२९ ई०में बदख्शां बिलकुल मुराद बीके हाथमें चला गया। वह यहाके बाशिन्दो को कुन्दुज ले गया। मीरयार बेकका भाई मीर मुहम्मद रजाबेक तालिकानमें भाग गया।

(घ) **जहांदारशाह (१८५९-६१ ई०)**—अफगानोनें बदख्शापर अधिकार करके १८५९ ई० में पुराने वशके जहादारशाहको फिर अपनी ओरसे गद्दीपर बैठाया। चित्रालके मेहतरने इक्कीस दास-दासियोको भेजकर अपनी लडकीका व्याह जहादारके लडकेके साथ किया। १८६१ ई०में इसे गद्दीसे हटा दिया गया।

(ङ) **महमूदशाह (१८६१ ई०)**—जहादार अमीर शेरअलीके प्रतिद्वद्वीका पक्षपाती था, इसीलिये उसे हटाकर उसके भतीजे महमूदशाहको गद्दीपर बैठाया गया। इस समय बदख्शा कई इलाकोमें बटा हुआ था, जिनमें फैजाबाद और गर्म सीधे महमूदशाहके शासनमें थे, और दराइम, शहरसब्ज (दक्षिणी), गुम्बज, फराखर, किश्म, रुस्तक, इशाकासिन, वखान, जेबक, मिन्जान, राग, दौग और आसियाबीमें खानदानी अमीर महमूदशाहकी अधीनतामें शासन करते थे।

तुखारिस्तानके पश्चिमी भागमें कई और छोटे-छोटे राज्य थे, जो अन्तमें अफगानिस्तानके हाथमें चले गये थे।

(४) **मेमना**—नादिरशाहकी मृत्युके बाद वहांके राज्यपाल हाजीखानने अपनेको स्वतत्र घोषित कर दिया। उसके बाद उसका छोटा लडका अहमद १७९८ से १८०९ई० तक शासन करता रहा। फिर उसका चचेरा भाई अलायार खा १८१० से १८२६ ई०तक मेमनाका स्वामी रहा। इसके बाद मिजराब खान गद्दीपर बैठा, जिसे उसकी एक बीबीने जहर दे दिया। उसके पुत्रोमें उत्तराधिकारके लिये झगडे शुरू हो गये, जिसका फैसला हिरातके अफगान-राज्यपाल यारमुहम्मदने किया—बनियो और किसानोका शासक उकमेत और किलेकी सेनाका कमांडर शेरखांको

बनाया गया। शेर खा १८५३ ई०तक शासक रहा। उकमेत खानको उसके भाई मिर्जा याकूबने किलेकी दीवारसे गिराकर मार दिया, जिसके बाद उकमेतका पुत्र हुसेन खा गद्दीपर बैठा, किन्तु सारी शक्ति उसके चचा याकूबके हाथमें थी। याकूब जुरमानाकी जगह आदमियोंको बुखारामें गुलाम बना बेंचनेके लिये भेज देता था। हुसेन खा काबुलका नही, वल्कि बुखाराका पक्षपाती था। उसने लम्बे केशोवाली अफगानोकी तीन सौ खोपडियोसे अपने किलेके दरवाजेको सजाया था, और १८६३ ई०में काबुलपर चढाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन इसके बाद ही उसके सरक्षक अमीर-बुखाराको भी रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करनी पडी।

(५) अन्दखुद (अन्दखोइ)—यह बुखारा और हिरातके बीचमे खुरासानका एक भाग है जो देरतक अफगानिस्तानके हाथमें रहा। यहा[1] अहमदशाह अब्दालीके पुत्र तेमूरशाहके नामका खुतबा और सिक्का चलता रहा। तेमूरशाहकी ओरसे अफशार कबीलेका सरदार रहमतुल्ला यहाका शासन करता था। बुखाराके अमीर शाह मुरादसे लडते वक्त वह मारा गया। इसके बाद इल्दुज खान शासक था। १८४० ई०में अन्दखुदको बुखाराने ले लिया। यहाके बाशिन्दे मुख्यत तुर्कमान हैं। अन्दखुदको वास्तविक नर्क कहा जाता था—यहाका पानी खारा और कडुवा है, रेगिस्तानमें बालू तपती है, और जहरीली मक्खिया और बिच्छू यहा बहुत मिलते थे। लेकिन अब तो वह कलका नर्क सोवियत तुर्कमानिस्तानका भाग बनकर वास्तविक स्वर्ग बननेके रास्तेमें है।

(६) शाबिरगान—१८१२ ई०में यहा इरज खान फिर रुस्तम खान शासक रहा। १८५३ ई० में इसे अफगानोंने ले लिया, और तबसे अफगानिस्तानमें है।

(७) सरीपुल—महमूद खान यहाका शासक था, लेकिन काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने १८५३ ई०में जब शाबिरगानको लिया, उसी समयसे सरीपुल भी काबुलके हाथमें चला गया।

१९वी शताब्दीके उत्तरार्धमें एक अग्रेज लेखकने अफगानी तुर्किस्तानके बारेमें लिखा था—"इन उज्बेक रियासतोंका अधिकाश, चाहे नामके लिये ही हो, अब अफगानोकी प्रजा है, लेकिन अभी हाल हीमें अफगानोंने इन्हें जीता है, और वह अफगानी जूयेको खुशीसे उठानेके लिये तैयार नही है। यह अग्रेजोके लिये कहातक बुद्धिमानीकी बात है, जो कि वह आजतक इन रियासतोंको अफगानिस्तान-का अभिन्न अग मानने पर जोर दे रहे हैं। अग्रेजोंका ऐसा करना राजनीतिक बात हो सकती है, लेकिन नृवश और इतिहासकी वह बात नही है। इसे असदिग्ध रूपसे कहा जा सकता है, कि नसल और इतिहास दोनोकी दृष्टिसे यहाके सबसे अधिक निवासी काबुल नही बुखारासे सबध रखते हैं।"

अग्रेजोंके बलपर अफगानोने इस शुद्ध उज्बेक इलाकेको अपने हाथमें बनाये रक्खा। पहले तो अमीरों-अमीरोंका सवाल था, लेकिन अब वक्षु नदीके उत्तरमें मध्य-एसियाके बहुत शक्तिशाली, तथा विद्या और उद्योग-धधेमें आगे बढी उज्बेक जातिका अपना गणराज्य है। वक्षुके दक्षिण तटके उज्बेक परले पार तेर्मिज नगरीको रातको हजारों बिजलीके चिरागोसे जगमगाते और दिनको कारखानोकी चिमनियोंसे धुआ उगलते देखकर ठढी आह लेकर कहते है—"कबतक हम अपने उत्तरी भाइयोसे अलग रक्खे जायगे ?"

स्रोत-ग्रन्थ

१ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्रूबेर आदि, १९१० ई० पृष्ठ २३६–४८)
२ इस्तोरिया सससर (अ म र दोनिकन् ४ जिल्द)
३ तुर्केस्तास्काओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (३ जिल्द, १८८०)
४ ओत्चेत् ओ कोमेन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व व वेर्तोल्द, "इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, जिल्द १ पृष्ठ १–२२)
५ La rivalite anglo-russie on XIX siecle en Asie (A M F Roure, Paris 1908)
६ History of Mongol (H H Howorth, London (1876 88)

अध्याय ५

खीवाके खान (१७००--१८८१ ई०)

खीवा अर्थात प्राचीन ख्वारेज्ममें किस तरह उज्बेकोंके खान शासन करने लगे, इसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं। १८वीं सदीके आरम्भमें पहला उज्बेक-वंश खतम हो गया, लेकिन मध्य एसियामें अब भी चिङ्ग-गिस् खानवाले राजकुमारोंकी बडी माग थी, इसलिये उन्हें ढूढ-ढूढकर लाकर खान बनाया जाता था। ऐसे ही बाहरसे लाये हुये खानोंने प्राय सौ सालोंके लिये खीवाको अपने हाथमें रखा, जिसके बाद अन्तिम ककुरत-वंशने शासन किया।

§१ बाहरी वंश (१७००--१८०४ ई०)

अधिकारच्युत वंशके राजकुमार अब भी ढूढनेसे मिल जाते, लेकिन अन्तिम खानोंके अत्याचारोसे तग आकर खीवाके प्रभावशाली आदमियोंने उन्हे लेना पसद नही किया, और बुखाराके राजवंश एव कजाकों और कल्मकोंमें दूत भेजकर किसी राजकुमारको ढूढना चाहा। इस समय पुराने राजवंशके कितने ही लोग अरालके एक द्वीपमें रहते थे। पहला खान अरक बनाया गया, जो कराकल्पकके खानोंसे संबंध रखता था।

१ अरक, एवरक, अवरग खान

बादशाह औरगजेबका ही नाम इस खानका भी था, और शायद यह औरगजेबका अन्तिम समकालीन था। लेकिन यह या इसके वंशने बहुत दिनोंतक शासन नही किया और लोगोंने इसके बाद शेरगाजीको खान बनाया।

२ शेरगाजी (--१७१३ ई०)

खीवाका खान बननेसे पहले शेरगाजी बुखारामें रहता था, वहीसे इसे लाया गया। १७१३ ई०में तुर्कमान सरदार खोजा नफस अस्त्राखान गया था। वहा वह राजुल समानोफसे मिला। समानोफ गेलानका निवासी था, लेकिन पीछे रूसमें ईसाई बनकर बस गया था। खोजाने उसे समझाया, कि तुर्कमानोंको मिलाकर निम्न-वक्षुके जिलोंको रूसियोंको ले लेना चाहिये, वहा बहुत सोना है। उसने यह भी बतलाया, कि उज्बेक-शासकोंने रूसियोंके भयसे ही बाध बाधकर वक्षुको कास्पियनसे हटा अराल समुद्रमें डाल दिया, उसे फिर कास्पियनमें डाला जा सकता है, उसके बाद आसानीसे वोल्गाके जहाज कास्पियन होकर वक्षुके भीतर जा सकेंगे। खोजाकी यह बात यद्यपि अब २०वी शताब्दीके उत्तरार्द्धमें सच्ची होने जा रही है, लेकिन उस समय उसने इसे रूसियोंको लोभमें डालनेके लिये कहा था। इसी समय राजुल गागरिनसे पीतर I को पता लगा, कि यारक-दके पास सोनेकी खानें हैं। पीतरको अपने युद्धोंके लिये सोनेकी बडी अवश्यकता थी। ऐसे समय कितने ही शासक कीमियागरोंके जालमें पडते देखे गये हैं, इसलिये यदि सोनेकी खानोंकी ओर पीतर असाधारण रूपसे आकृष्ट हुआ हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। खोजाको अपने साथ ले राजुल समानोफ राजधानी पीतरबुर्ग गया। उस समय गारद-कप्तान तथा मुसलमानसे ईसाई बना राजुल बेकोविच चेर्कास्की सम्राट्का बहुत प्रिय दरबारी था। उसने दोनोंको जारसे मिलाया। पीतरबुर्गमें रहते खीवाके दूत अशुरबेक (१७१३-१५ ई०)

ने उनकी वातका समर्थन करते हुये कहा, कि रूसियोको वक्षुके कास्पियनमें गिरनेके पुराने स्थान (शायद क्रास्नोवोद्स्क)को दस हजार सैनिकोके रखने लायक बनाना चाहिये । यदि रूसी वक्षुको उसकी पुरानी धारमें डालना चाहेगे, तो हमारा खान (शेरगाजी) विरोध नही करेगा । अशुर-बेक बहुत-सा भेंट-उपहार पाकर १७१५ ई०में अपने खानके पास लौटा, लेकिन अरग और शेरगाजीके सिंहासनारोहणके समय हुई गडवडीके कारण वह अस्त्राखानमे रुक गया । इसी समय पीतरने अशुरबेकको भारत जा वहासे तोता और चीता लानेके लिये कहा । राजुल वेकोविच चेर्कास्की (चेरकास-राजकुमार) ने ईरानके शाह हुसेनके शासनकी गडवडियोके समय रूसमें शरण ली थी । उसक मरनेपर उसके पुत्र अलक्सान्द्रने ईसाई बन राजुल वोरिस अलक्सान्द्र-पुत्र गालितजिनकी लडकीसे व्याह किया, और पीतरका गारद-अफसर बना । इसी अलक्सान्द्रके नतृत्वम पीतरने खीवाके लिये एक अभियान भेजा । उसके जिम्मे काम दिया गया था—वक्षुकी पुरानी धाराकी सर्वे करना, ख्वारेज्मके खानसे रूसकी अधीनता स्वीकार कराना, और उपयुक्त स्थानोपर किले बनवाना । यह सब काम कर लेने पर बुखारा के अमीरसे वातचीत करना, फिर लेफ्टिनेंट कोजिनको भेजकर स्थलमार्गमे भारत जानेके रास्ते-का पता लगाना, और एक दूसरे आदमीको यारकन्दक सोनेकी खानोंके बारेमें जाननेके लिये भेजना ।

पीतरने उज्वेक-खानो और दिल्लीके वादशाहके लिये चिट्ठिया दी थी । १७१६ ई०की गर्मियोमें राजुल वकोविच चार हजार आदमियोंके साथ रवाना हुआ । उसने कास्पियन तटपर करागन, अलक्सन्द्रोवयेस्क और क्रास्नोवोद्स्कके किले बनाये, जिनमें अन्तिम उसी जगह बनाया गया, जहापर पहले वक्षु कास्पियनमें गिरती थी । इन किलोमें सैनिकोको रखकर वेकोविचने खीवाके खानको अपने आनेकी खबर देनेके लिये किरियक (ग्रीक) वोरानिनको भेजा । वोरानिन अस्त्राखानम बसे ग्रीकोमेंसे था । राजुल स्वय वोल्गाके तटपर लौट आया । कजानसे पाच सौ स्वीड युद्धबदियोको भर्ती करके मेजर फ्राकेनवर्गको उनका अफसर बना वेकोविचने फिर वोल्गातटसे १ जुलाई १७१७ ई०को प्रस्थान किया । अबकी उसने ग्रेवेन्स्कके रूसी कसाको और नोगाइयोंके इलाकेमें होते स्थलमार्गसे यात्रा की । वेकोविचके साथ अस्त्राखानके रहनेवाले तीन सौ तारतार, कितने ही और बुखारी कारीगर आदि भी थे । गुरियेफमें पहुचनेपर उरालके पद्रह सौ कसाक आ मिले । दो दिन बाद यम्बा नदीके तटपर पहुच वेडोका पुल बना उसे पार किया । वेकोविचने भारतका रास्ता ढूढनेके लिये मिर्जा तौकेलेफको भेजा, लेकिन उसे ईरानियोने अस्त्रावादमें रोक लिया, जहासे पीछे उसे अस्त्राखान भेज दिया गया । यद्यपि उस समय अस्त्राखान, बाकू, बुखारा, समरकन्द आदिमें काफी सख्यामें भारतीय व्यापारी रहते थ, जिनसे भारतका रास्ता आसानीसे मालूम हो सकता था, लेकिन पीतर सैनिक दृष्टिसे भी सुभीतेका कोई रास्ता ढूढना चाहता था ।

यहा वेकोविचको कल्मक थैंची आयुका और पहले भेजे दूत वोरानिनने बतलाया, कि खीवावाले अभियानका विरोध करेंगे । यम्बा तटसे दो दिन चलनेके बाद वह बगचनोक और पाच दिन और चलकर इरकितश-गिरि (उस्तउर्त या चिक) पहुचा । उस्तउर्तकी ऊंची अधि-त्यकाको पार करक वह अराल समुद्रके तटपर गया । अब वह ऐसी भूमिमें थे, जहा इतने आदमियोके लिये पानी मिलना आसान नहीं था । इसके लिये उन्हे जगह-जगह नये कुए खोदने पडे, और कितने ही पुराने कुओकी मरम्मत करनी पडी । इस प्रकार पानीका प्रबन्ध करके वह सात सप्ताहतक चलते गये । जब खीवा चार दिन रह गया, तो खानके दूत घोडो, चोगो आदिकी भेंट ले वकोविचके पास आये । यद्यपि उन्होने एक ओर बाहर से इस तरह शिष्टा-चार दिखलाया, दूसरी ओर खीवाके घुडसवार वेकोविचके ऊपर आक्रमण करते रहे । वेकोविचके आदमियोने भी अपने बारूदी हथियारोंसे मुकाबिला किया, जिसपर लोग अपने कस्बो और गावोको छोडकर खीवाकी ओर भागने लगे । खानने शत्रुकी शक्तिका अदाजा लगा चाल चलते हुये कहा—"गलतीके लिये हम क्षमा मागते हुये आपका स्वागत करते

अध्याय ५

खीवाके खान (१७००--१८८१ ई०)

खीवा अर्थात् प्राचीन ख्वारेज्ममें किस तरह उज्बेकोंके खान शासन करने लगे, इसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं। १८वीं सदीके आरम्भमें पहला उज्बेक-वंश खतम हो गया, लेकिन मध्य एसियामें अब भी चिङ्-गिस् खानवाले राजकुमारोंकी बडी माग थी, इसलिये उन्हे ढूढ़-ढूढकर लाकर खान बनाया जाता था। ऐसे ही बाहरसे लाये हुये खानोंने प्राय सौ सालोंके लिये खीवाको अपने हाथमें रखा, जिसके बाद अन्तिम ककुरत-वशने शासन किया।

§१ बाहरी वश (१७००--१८०४ ई०)

अधिकारच्युत वशके राजकुमार अब भी ढूढनेसे मिल जाते, लेकिन अन्तिम खानोंके अत्याचारोंसे तग आकर खीवाके प्रभावशाली आदमियोंने उन्हे लेना पसद नही किया, और बुखाराके राजवश एव कजाको और कल्मकोंमें दूत भेजकर किसी राजकुमारको ढूढना चाहा। इस समय पुराने राजवशके कितने ही लोग अरालके एक द्वीपमें रहते थे। पहला खान अरक बनाया गया, जो कराकल्पकके खानोंसे सबध रखता था।

१ अरक, एवरक, अवरग खान

बादशाह औरगजेबका ही नाम इस खानका भी था, और शायद यह औरगजेबका अन्तिम समकालीन था। लेकिन यह या इसके वशने बहुत दिनोंतक शासन नहीं किया और लोगोंने इसके बाद शेरगाजीको खान बनाया।

२ शेरगाजी (--१७१३ ई०)

खीवाका खान बननेसे पहले शेरगाजी बुखारामें रहता था, वहींसे इसे लाया गया। १७१३ ई०में तुर्कमान सरदार खोजा नफस अस्त्राखान गया था। वहा वह राजुल समानोफसे मिला। समानोफ गेलानका निवासी था, लेकिन पीछे रूसमें ईसाई बनकर बस गया था। खोजाने उसे समझाया, कि तुर्कमानोंको मिलाकर निम्न-वक्षुके जिलोंको रूसियोंको ले लेना चाहिये, वहा बहुत सोना है। उसने यह भी बतलाया, कि उज्बेक शासकोंने रूसियोंके भयसे ही बाध बाधकर वक्षुको कास्पियनसे हटा अराल समुद्रमें डाल दिया, उसे फिर कास्पियनमें डाला जा सकता है, उसके बाद आसानीसे वोल्गाके जहाज कास्पियन होकर वक्षुके भीतर जा सकेंगे। खोजाकी यह बात यद्यपि अब २०वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें सच्ची होने जा रही है, लेकिन उस समय उसने इसे रूसियोंको लोभमें डालनेके लिये कहा था। इसी समय राजुल गागरिनसे पीतर I को पता लगा, कि यारकन्दके पास सोनेकी खानें हैं। पीतरको अपने युद्धोंके लिये सोनेकी बडी आवश्यकता थी। ऐसे समय कितने ही शासक कीमियागरोंके जालमें पडते देखे गये हैं, इसलिये यदि सोनेकी खानोंकी ओर पीतर असाधारण रूपसे आकृष्ट हुआ हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नही। खोजाको अपने साथ ले राजुल समानोफ राजधानी पीतरबुर्ग गया। उस समय गारद-कप्तान तथा मुसलमानसे ईसाई बना राजुल बेकोविच चेर्कास्की सम्राट्का बहुत प्रिय दरबारी था। उसने दोनोंको जारसे मिलाया। पीतरबुर्गमें रहते खीवाके दूत अशुरबेक (१७१३-१५ ई०)

ने उनकी बातका समर्थन करते हुये कहा, कि रूसियोको वक्षुके कास्पियनमे गिरनेके पुराने स्थान (शायद क्रास्नोवोद्स्क)को दस हजार सैनिकोके रखने लायक बनाना चाहिये । यदि रूसी वक्षुको उसकी पुरानी धारमें डालना चाहेगे, तो हमारा खान (शेरगाजी) विरोध नही करेगा । अशुरबेक बहुत-सा भेंट-उपहार पाकर १७१५ ई०में अपने खानके पास लौटा, लेकिन अरग और शेरगाजीके सिंहासनारोहणके समय हुई गडबडीके कारण वह अस्त्राखानमें रुक गया । इसी समय पीतरने अशुरबेकको भारत जा वहासे तोता और चीता लानेके लिये कहा । राजुल बेकोविच चेर्कास्की (चेरकास-राजकुमार) ने ईरानके शाह हुसेनके शासनकी गडबडियोंके समय रूसमें शरण ली थी । उसके मरनेपर उसके पुत्र अलक्सान्द्रने ईसाई बन राजुल बोरिस अलक्सान्द्र-पुत्र गालितजिनकी लडकीसे व्याह किया, और पीतरका गारद-अफसर बना । इसी अलक्सान्द्रके नतृत्वम पीतरने खीवाके लिये एक अभियान भेजा । उसके जिम्मे काम दिया गया था—वक्षुकी पुरानी धाराकी सर्वे करना, ख्वारेज्मके खानसे रूसकी अधीनता स्वीकार कराना, और उपयुक्त स्थानोपर किले बनवाना । यह सब काम कर लेने पर बुखारा के अमीरसे बातचीत करना, फिर लेफ्टिनेंट कोजिनको भेजकर स्थलमार्गसे भारत जानेके रास्तेका पता लगाना, और एक दूसरे आदमीको यारकन्दके सोनेकी खानोंके बारेमें जाननेके लिये भेजना ।

पीतरने उज्बेक-खानो और दिल्लीके बादशाहके लिये चिट्ठिया दी थी । १७१६ ई०की गर्मियोंमें राजुल बकोविच चार हजार आदमियोके साथ रवाना हुआ । उसने कास्पियन तटपर करागन, अलक्सन्द्रोवयेस्क और क्रास्नोवोद्स्कके किले बनाये, जिनमें अन्तिम उसी जगह बनाया गया, जहापर पहले वक्षु कास्पियनमें गिरती थी । इन किलोमें सैनिकोको रखकर बेकोविचने खीवाके खानको अपने आनेकी खबर देनेके लिये किरियक (ग्रीक) बोरानिनको भेजा । बोरानिन अस्त्राखानम बसे ग्रीकोमेंसे था । राजुल स्वय वोल्गाके तटपर लौट आया । कजानसे पाच सौ स्वीड युद्धबदियोको भर्ती करके मेजर फ्राकेनबगको उनका अफसर बना बेकोविचने फिर वोल्गातटसे १ जुलाई १७१७ ई०को प्रस्थान किया । अबकी उसने ग्रेबेन्स्कके रूसी कसाको और नोगाइयोंके इलाकेमें होते स्थलमार्गसे यात्रा की । बेकोविचके साथ अस्त्राखानके रहनेवाले तीन सौ तारतार, कितने ही और बुखारी कारीगर आदि भी थे । गुरियेफमें पहुचनेपर उरालके पद्रह सौ कसाक आ मिले । दो दिन बाद यम्बा नदीके तटपर पहुच बेडोका पुल बना उसे पार किया । बेकोविचने भारतका रास्ता ढूढनेके लिये मिर्जा तौकेलेफको भेजा, लेकिन उसे ईरानियोने अस्त्राबादमें रोक लिया, जहासे पीछे उसे अस्त्राखान भेज दिया गया । यद्यपि उस समय अस्त्राखान, बाकू, बुखारा, समरकन्द आदिमें काफी सख्यामें भारतीय व्यापारी रहते थ, जिनसे भारतका रास्ता आसानीसे मालूम हो सकता था, लेकिन पीतर सैनिक दृष्टिसे भी सुभीतेका कोई रास्ता ढूढना चाहता था ।

यहा बेकोविचको कलमक थैची आयुका और पहले भेजे दूत बोरानिनने बतलाया, कि खीवावाले अभियानका विरोध करेंगे । यम्बा तटसे दो दिन चलनेके बाद वह बगनोफ और पाच दिन और चलकर इरकितश-गिरि (उस्तउर्त या चिक) पहुचा । उस्तउर्तकी ऊची अधित्यकाको पार करके वह अराल समुद्रके तटपर गया । अब वह ऐसी भूमिमें थे, जहा इतने आदमियोके लिये पानी मिलना आसान नहीं था । इसके लिये उन्हे जगह-जगह नये कुए खोदने पडे, और कितने ही पुराने कुओकी मरम्मत करनी पडी । इस प्रकार पानीका प्रबन्ध करके वह सात सप्ताहतक चलते गये । जब खीवा चार दिन रह गया, तो खानके दूत घोडो, चोगो आदिकी भेंट ले बकोविचके पास आये । यद्यपि उन्होंने एक ओर बाहर से इस तरह शिष्टाचार दिखलाया, दूसरी ओर खीवाके घुडसवार बेकोविचके ऊपर आक्रमण करते रहे । बेकोविचके आदमियोने भी अपने बारूदी हथियारोंसे मुकाबिला किया, जिसपर लोग अपने कस्बो और गावोंको छोडकर खीवाकी ओर भागने लगे । खानने शत्रुकी शक्तिका अदाजा लगा चाल चलते हुये कहा—"गलतीके लिये हम क्षमा मागते हुये आपका स्वागत करते

है, लेकिन आपकी सेनासे लोग भयभीत हैं। सेनाको वहीं रखकर आप मामूली आदमियोंके साथ पधारिये।" इसपर पाच सौ आदमियोको साथ ले बेकोविच खीवा शहरमें पहुचा। खानने पीछे छोडे सैनिकोके नाम बेकोविचसे जबदस्ती या जाली चिट्ठी लिखवाई, जिसमें कहा गया था कि अपने हथियारोको खानके अफसरको दे दो और एक नगरमें जाकर डेरा डालो। रूसियोको क्या पता था? उन्होने चिट्ठीको सच्ची मानकर हथियार दे दिये, और भिन्न-भिन्न जगहोमें जाकर डेरा डाला। इसी समय खीवावालोने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया। जो मारे जानेसे बचे उन्हे उन्होने दास बना लिया। कुछ रूसी सैनिक और तोपखानेके आदमी डरके मारे खानकी सेनामें भी भर्ती हो गये। बेकोविचको लाल कपडा पहनाकर खानके तम्बूके सामने ला उसे सिज्दा करनेके लिये हुक्म दिया गया। इन्कार करनेपर पहले उसके पैर काट डाले गये, फिर बडी क्रूरतासे उसके प्राण लिये गये। उसकी खालमें भूसा भरकर बुखाराके खानके पास भेज दिया गया, लेकिन उसने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, और खीवाके दूतको यह कहकर भगा दिया, कि तुम मनुष्यका खून पीनेवाले नरभक्षक हो। राजुल समानोफ और दूसरे प्रमुख व्यक्तियोके सिरोको काटकर खीवाके दरवाजेपर भालेसे लटका दिया गया, जो बहुत सालो तक वैसे ही लटकते रहे। तुर्कमानोने उस समय उज्बेकोसे खरीदे दो रूसी गुलामोको हेन्बे नामक एक युरोपीय सरदारको बेचना चाहा। कहते हैं, बेकोविचके बच्चे और बीबी वोल्गामें डूब मरे थे, जिसके कारण भी उसका दिमाग ठीकसे काम नहीं कर रहा था, और वह इतनी बडी गलती कर बैठा।

पीतरने फिर भी मध्य-एसियाको छोडा नहीं। उसने तुर्की-फारसी जाननेवाले अपने एक इतालियन नौकर फ्लोरियो बेनेवेनीको भेजा, जो ईरानके रास्ते नवम्बर १७२१ ई०में बुखारा पहुचकर वहा चार साल रहा। अबुल्फैज मुहम्मद खाने बेनेवेनीकी बहुत खातिर की थी।

शेरगाजीको पहिले कितने ही उज्बेक बुखाराके तख्तपर बैठाना चाहते थे, लेकिन उसमें सफल न हो वह जब खीवाकी गद्दीपर बैठा, तो उसके आदमी बुखारामें लूटमार करने लगे। इसपर बुखारियोने खीवाके पुराने वश अरालियोका पक्ष लेना चाहा। उन्होने १७०७ ई०में अबुलगाजीके वशज तेमूर सुल्तानको शेरगाजीका प्रतिद्वद्वी खडा किया—वह मूसाखानका पुत्र था, जो बापके मरनेपर बुखारामें रहता था। तेमूरका बडा भाई बलखका राज्यपाल था। बडे भाईको अरालियोंने अपना खान चुना था। बुखारियोकी मददसे तेमूर सुल्तानने दो बार खीवापर आक्रमण किया। शेरगाजीको बुखारा और तेमूरसे ही मुकाबिला नहीं करना था, बल्कि उसे रूसियोसे भी बहुत भय था। उसने पीतरको प्रसन्न करनेके लिए रूसी बदियोको छोड दिया और बेनेवेनीको खीवा आनेके लिये बहुत आग्रह किया। इस समय बुखारामें बडी अराजकता फैली हुई थी। वहांके खान अबुल्फैजके खिलाफ यह भी इल्जाम लगाया जाता था, कि उसने एक काफिर (बेनेवेनी) को अपने पास रख रक्खा है। पीतरने ईरानपर जो सफल अभियान किया था, उसकी खबर पा उज्बेकोका दिमाग कुछ ठढा हुआ, लेकिन शेरगाजीकी परेशानी कम नहीं हुई। १६ मार्च १७२५ ई० को बेनेवेनीने अपनी सरकारके पास पत्र लिखा था, कि बुखाराकी हालत बहुत डावाडोल है, सारे रास्ते लुटेरोंके हाथमें है। बलखके पुराने शासकने तेमूरके भाईसे उस इलाकेको छीनकर उसे मार डाला। शेरगाजीके लिये दो साल बहुत मुसीबतके थे। तेमूर सुल्तान और उसके सहायक अरालियो और कराकल्पकियोने दो बार खीवापर चढाई की। रजीम खानके समरकन्दसे आकर बुखारापर चढाई करनेकी खबर आई, जिससे लोगोंमें बडी घबराहट मच गई। जिस समय बुखाराकी यह हालत थी, उसी समय बेनेवेनीने मशहदका रास्ता लेना चाहा। तब खीवाका पल्ला भारी हो गया था। १० फर्वरी १७२५ ई०को बेनेवेनी चुपकेसे निकल पडा और किसी तरह तुर्कमानोंके खतरेसे बचते खीवा पहुचा। लोग कहीं गुप्तचर न समझ लें, इसलिये उसने युरोपीय छोड एसियाई पोशाक पहिन दाढी रख ली थी। खीवा-खानने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया, और गुलाम रूसियोके छोड देनेका वचन दिया। बेनेवेनीके खीवा पहुचनेसे पहले ही तेमूर सुल्तान खीवापर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहा था, इसलिये भी शेरगाजी बहुत परेशान था। पीतरका दूत खीवाके राजदूत सुमानकुल्लीको ले वहासे अगस्तमें रवाना हुआ,

और रूसकी सीमामें सुरक्षित पहुंच गया। इस समय ख्वारेज्म मध्य-एसियामें गुलामोका सबसे बडा बाजार था। वहा दस हजार रूसी और ईरानी गुलाम खेतो और नहरोपर काम करते थे। रूसी तो ईसाई होनेके कारण काफिर थे ही, ईरानियोको शीया होनेकी वजहसे मुल्लोने काफिर होनेका फतवा दे दिया था, इसलिये उनके बेचने-खरीदनेमे कोई रुकावट नही थी। खीवाकी बाजारोंसे इन अभागे गुलामोको कजाक, तुर्कमान और कल्मक खरीद ले जाते थे। १७२८ ई०में रूसी और ईरानी गुलामोने शेरगाजीको मारकर तेमूर सुल्तानको खान बनानेकी योजना बनाई थी, लेकिन पहिले ही भडाफोड हो गया। बहुतसे षड्यन्त्रकारी मार डाले गये, और अरालके खानको दो दिन बाद आकर खाली हाथ लौटना पडा।

१७३१ ई०में रूसकी शासिका रानी अन्ना (१७३०-४० ई०) थी। उसने कर्नल एर्दवेगको दूत बनाकर खीवा भेजा, लेकिन रास्तेमें ही डाकू उसपर टूट पडे, और सब माल गवाकर उसे पीछे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा।

३ इलबर्स (--१७४० ई०)

शेरगाजीके तुरन्त ही या कुछ साल बाद इलबर्स खीवाका खान बना। यह कजाकोके खानवशका था। १७३९ ई०में दिल्लीकी सडकोपर खूनकी नदिया बहा नादिरशाह जब लौटा, तो बुखाराके अमीर अबुल्फैजने उसे स्वागतका न्योता दिया। उसने इलबर्सको भी इसकी खबर दी, जिसपर उसने जवाब दिया—"एक पापी आत्माको जबर्दस्ती तुम स्वर्गमें नही प्रविष्ट करा सकते।" नादिर जिस वक्त भारतमें लूटमार करनेके लिये गया था, उसी समय मैदान खाली पाकर इलबसने खुरासानको लूटा। भारतसे लौटनेपर चारवेकरसे नादिरने इलबर्सको अपने पास आनेके लिये सदेश भेजा, लेकिन जाकर नादिरके सामने कोर्निश करनेकी जगह इलबर्सके तीन हजार यामूद चारजूयपर चढ आये, जिन्हे नादिरके हाथों पिटना पडा। अबुल्फैजने बीचमें पडकर क्षमादान दिलानेका प्रयत्न किया, और इसके लिये अपने तीन दूत इलबर्सके पास भेजे। इलबसने दो दूतोको मरवा दिया और तीसरेको नाक-कान काटकर लौटाया। नादिर भला खीवाके खानकी इस गुस्ताखीको कैसे सह सकता था? उसने अपनी सेनाको दो भागोमें बाटकर खीवापर चढ़ाई की। एक सेना वक्षुके बायें तटसे बढी, और दूसरी दाहिनेसे। साथमें बहुतसी नावोंका बेडा भी चल रहा था। नादिरकी सेना जल्दी ही हजारास्प पहुंच गई। इलबर्स भी तैयार था। नादिरने हजारास्पसे आगे बढकर एक सेनाको खानकाह जानेका हुक्म दिया—इलबस उस समय खानकाहमें था। नादिरने आत्म-समर्पण करनेके लिये तीन दिनकी मुहलत दी। इसपर इलबर्स गर्दनमें तलवार और रस्सी बाधे नादिरके सामने आया, जिसने उसे माफ कर दिया। लेकिन इलबर्सने किसी खोजा (सैयद) का सिर कटवा लिया था। खोजाके पुत्रोने खूनका बदला लेनेकी माग की, जिसपर नादिरके हुक्मसे इलबर्स और उसके बीस अफसर मारे गये। खीवा छोड ख्वारेज्मके बाकी शहरोने नादिरके सामने आत्म-समर्पण किया। इस सघर्षके समय इलबर्सने लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरसे सहायता मागी थी, और उसने आकर खीवापर अधिकार कर लिया था। इसी समय अबुल्खैरके बुलानेपर रूसी सैनिक इजीनियर ग्लादिशेफ, मुराविन और नजिमोर सिर-दरियाके मुहानेपर रूसी किला बनाने आये थे। वह दश्ते-कजाककी सर्वे कर चुके थे। खानको उसके डेरेमे न पा वह भी खीवा गये। अबुल्खैरने कुछ सुल्तानोंके साथ मुराविनको नादिरके पास भेजा, जिसने उनका अच्छा स्वागत किया। उसने अबुल्खैरको बुला भेजा, लेकिन वह नादिरपर क्यो विश्वास करने लगा? नादिरकी कृपासे खीवाको हाथमें रखनेकी जगह अबुल्खैरने देश लौट जाना ही अच्छा समझा। खीवाके नागरिकोने चार दिनतक नादिरके आक्रमणको विफल करनेकी कोशिश की, लेकिन अन्तमें आत्म-समर्पण करना पडा। नादिरने चार हजार तरुण उज्बेकोको अपनी सेनामें भर्ती करके खुरासान, और बारह हजार रूसी तथा ईरानी गुलामोको मुक्त करके अपने घर भेज दिया। उन्हीके बसनेके लिये नादिरने अबीवर्दके पास एक नया शहर बसाया।

४ ताहिरखान (१७४०–४१ ई०)

इलवर्सके मारे जानेके बाद बुखारा-खानके सबधी ताहिरको खीवाका खान बना नादिर चारजूयकी ओर लौट पडा । ताहिर बहुत समयतक राज्य नही कर पाया । अगस्त १७४१ ई०में नादिर कास्पियनके पश्चिमी तटवर्ती दागिस्तानमें लडाईमें फसा था । इसी समय उज्बेक अरालियोने अबुल्खैरके पुत्र नूरअलीको बुलाया, जिसने खीवा पहुचकर ताहिरको मार डाला । थोडी देरके लिये नूरअलीने शासन सभाला, लेकिन जब नादिरशाहके फिर आनेकी खबर मिली, तो वह कजाकोमें भाग गया । नादिरकी सेना नसरुल्ला मिर्जाके नेतृत्वमें मेव पहुची । विद्रोही नेता एर्तुक ईनकने वहा जाकर क्षमा मागी, नादिरने उसे माफ कर दिया ।

५ अबुल् मुहम्मद, इलबर्स-पुत्र (१७४१ ई०)

इलवसका पुत्र अबुल् मुहम्मद नादिरकी शरणमें था । नादिरने उसीको खीवाका खान और एर्तुकको उसका वजीर बनाया । एर्तुकको बहुत जल्दी उज्बेक और यामूद विद्रोहियोने मार डाला और खान अबुल् मुहम्मद भी खीवासे लुप्त हो गया ।

६. अबुलगाजी II (१७४५ ई०)

विद्रोहियोने अब अबुलगाजीको अपना खान बनाया । इस समय उज्बेकोंके साथ-साथ तुर्कमान यामूद कबीलेका भी खीवा-राज्यमें बहुत जोर था । उधर ईरान नही चाहता था, कि खीवावाले उसके हाथसे निकल जाय । विद्रोह होते ही रहते थे । ईरानी जेनरल अलीकुल्लीने १७४५ ई०में ख्वारेज्मपर आक्रमणकर उरगजके पास यामूदोको हराकर बलखानकी पहाडियोकी ओर भगा दिया, और नये खानको नियुक्त करके ईरानका रास्ता लिया ।

७ काइप, बातिर-पुत्र (१७५० ई०)

बातिर शायद कराकल्पकोका खान था । १७५० ई०में इरबेक नामक एक दूतन रूसमें जाकर कहा था, कि खीवा जानेवाले कारवाको बातिरके राज्यके भीतरसे आना चाहिये, नूरअलीके राज्यके भीतरसे आना सुरक्षित नही है । इसी समय कजाक अरालियोपर आक्रमण करके उनके बहुतसे आदमी और पशु पकड ले गये । ये नूरअलीके आदमी थे, इसलिये खीवामें नूरअलीके प्रजाजनोको पकडकर उन्हें लूटका माल लौटानेके लिये मजबूर किया गया । बातिरका पुत्र काइप खीवामें आनेसे पहले लघु-ओर्दूके एक कबीलेका खान रह चुका था । काइपने नूरअलीके राज्यसे ओरेनबुग जानेके रास्तेको बद कर दिया—रूसियोंके व्यापारका केंद्र होनेके कारण ओरेनबुर्गसे व्यापारियोको बहुत फायदा था । काइपके हुक्मका बदला लेनेके लिये १७५३ई०में नूरअलीने खीवाके कारवाको लूटा और रूससे कहा, कि यदि तोपखानेके साथ दस हजार सेना मिले, तो रूसके लिये हम खीवाको जीत सकते है । लेकिन रूसियोने उसे माननेसे इन्कार ही नही कर दिया, बल्कि हुक्म दिया, कि लूटे मालको उसके मालिकोंको लौटा दो । रूस इस तरह खीवासे निरबाध व्यापार होने देना चाहता था, लेकिन मध्य-एसियाके शासको और अमीरोंके लिये लूट तो एक वैध आय थी । १७५४ ई०में काइपने खीवामें आये एक रूसी कारवाको रोक लिया, और साल भर बाद उसे छोडा । काइपके दूतने रूसमें जाकर कहा, कि उज्बेक हमारे खानको पसद नही करते, इसलिये उसकी मददके लिये रूसको हाथ बढाना चाहिये । रूसने इन्कार कर दिया,। नूरअली और उसके पुत्र एरलीके पकडे जानेपर मुक्ति-धन देकर छुडानेका वचन देते हुये सेना एकत्रित की । सेनाको आशीर्वाद देनेके वक्त खोजाने ऐसा करनेमे मना कर दिया ।

काइप विद्वान और साथ ही अत्यन्त क्रूर आदमी था । उसकी क्रूरताके कारण लोगोने विद्रोह करके उसे लघु-ओर्दूके कजाकोमें भागनेके लिए मजबूर किया, जिनके ही भीतर रहते

१७७० ई०में वोल्गा तटके तोरगूत मगोलोंके प्रस्थानके समय उसने उनपर आक्रमण करके "गाजी" (धर्मयोद्धा)का नाम पाया। पीछे १७८६ ई०में लघु-ओर्दूके एक कबीलेने उसे अपना खान भी चुना। काइपने अमीर-बुखारा अबुल्फैज खांकी लडकी व्याही थी। उसकी मृत्यु १७९१ ई० के आसपास हुई।

८ अबुलगाजी III (--१७५५ ई०)

खीवामें अब वास्तविक शक्ति ईनकों (प्रधान-मंत्रियो)के हाथमें थी। उज्बेकोंमें ककुरत (कुनगरद) कबीलेका प्रभाव छिङ्-गिस् (चिंगिस) खानके समयसे ही बहुत था, यह हम पहले बतला आये हैं। मूलत यह मगोल कबीला था, जो पीछे तुर्क बन गया। ककुरतोंके बी (बेग या अमीर) वंशानुवंश क्रमसे ईनक (वजीर) तथा हजारास्पके राज्यपाल होते आये थे। १८वीं सदीमें बुखारा और खीवा दोनोंमें हालके नेपाल और पिछली सदी तकके जापानकी तरह दो राजा हुआ करते थे। खानको बस अच्छा-अच्छा खाना और सुनहला जामा पहनकर मौज करनेकी छुट्टी थी। उसके दरबारमें सलाम करनेके लिये प्रति दिन ईनक और बडे-बडे दरबारी जाते थे। राज्यका सारा काम ईनकके हाथमें था। प्रत्येक शुक्रवारको दरबारी महलमें जाते, जहा खानके पास ईनक बैठता। जब नमाजका वक्त आता, तो ईनक खानको उठनेमे सहारा देता, उसे मस्जिद ले जाता, और नमाजके बाद लौटा लाता। खीवाके खान इसी तरहके गुडिया खान थे, जिनका काम था ईनकोंके हाथमें नाचना। इसी गुडिया-खानकी जगह लेनेके लिये कजाकों या कराकल्पकोंमेंसे किसी छिङ्-गिस्-वंशीको लाया जाता, और जबतक पसद आता, रखकर उसे निर्वासितकर किसी दूसरेको खान बनाया जाता। इशमद बी सबसे पुराने ईनकोंमेंसे था। पता लगता है, कि उसके बाद उसका पुत्र मुहम्मद अमीन १७५५ ई०में ईनक बन सत्रह साल-तक शासन करता रहा। इसके शासनकालमें खीवाकी समृद्धि बढी। उस समय खीवाका अपना कोई सिक्का नही था, ईरान और बुखाराके सिक्के ही वहा भी चलते थे। शुक्रवारकी नमाजके खुतबेमें गुडिया-खानका नाम लिया जाता था। मुहम्मद अमीनकी मुहरपर खुदा हुआ था—"अल्लाह और पैगम्बरकी मेहरबानी, खानका एक दास, जिसपर वह विश्वास कर सकता है।" जिस तरह खीवामें ईनकोंकी चलती थी, उसी तरह बुखारामें इसी समय अतालीकोंकी चल रही थी। बुखाराका अतालीक दानियाल बी ईनक मुहम्मद अमीनका गहरा दोस्त था, जिसने हाथसे निकल गये अधिकारको पानेमें अमीनकी मदद की थी। मुहम्मद अमीनके बाद उसका पुत्र एवज ईनक बना। यह बडा ही समझदार और सादगीसे रहनेवाला आदमी था। इसके समय यामूदो (तुर्कमानो), मगिशलको (तुर्कमानो) और कजाकोंने विद्रोह किया, जिसमें उसके अपने सबंधी तथा अरालके ककुरतोंके नेता तुरासूफीने भी विद्रोहियोका साथ दिया।

अक्तूबर १७९३ ई०में रूसी डाक्टर मेजर ब्लाकेन्नागेल् खीवा पहुचा। गुप्तचर समझकर उसे शहरके नजदीक एक घरमें नजरबन्द करके मारना चाहते थे, किन्तु ईनकके भाई, बुढापेके कारण अंधे फाजिल बीको डाक्टरकी दवासे फायदा हुआ, जिससे उसका मान बढ गया। डाक्टरने बहुत समझाया, कि खीवावालोको मगिशलकमें जा रूसियोंके साथ व्यापार करनेसे बहुत फायदा होगा, लेकिन आम एसियाइयोकी तरह खीवावाले भी यूरोपियोपर विश्वास नही करते थे। डाक्टरके लिखे-अनुसार उस समय खीवाके राज्यमें एक लाखसे अधिक आदमी नही थे, जिनमें उज्बेक ४१ प्रतिशत, सर्त (फारसीभाषी) १५ प्रतिशत, कराकल्पक १० प्रतिशत, यामूद ५ या ६ प्रतिशत थे। बाकी १८ या १९ प्रतिशत दास थ। खीवाकी सेनामें बारह या पद्रह हजार सिपाही थे, जिनमेंसे दो हजारके पास ही बन्दूकें थी, बाकी तलवार, भाला, तीर, कमानवाले थे। यामूद और करा-कल्पक सबसे अच्छे सिपाही माने जाते थे, जिनके बाद उज्बेकोका नम्बर आता था। उस समय काइपका पुत्र अबुलगाजी खान था, जो एकातमें रक्खा जाता, और साल भरमें तीन बार ही प्रजाके सामने आने पाता था।

१८०४ ई०में ईनक एवज मर गया। भाइयों और दूसरे अमीरोंने कुथमुराद बेकको ईनक

बनाया, लेकिन उसने अपने भाई इल्तजारके लिये पदको लेनेसे इन्कार कर दिया। इल्तजारने छ महीनेतक ईनकके तौरपर काम किया। वह रोज खान (कजाक)के पास मुजरा करने जाता। एक रात उसने अपने भाई कुतुलुक मुरादको बुलाकर कहा—"तेमूर लंग, नादिरशाह और बुखारा अमीर मुहम्मद रहीम कौनसे छिङ्ग-गिस्-वंशके खानोंके पुत्र थे, उन्होंने अपन भाग्यको अपने आप बनाया। अल्लाहकी मेहरबानी है, कि मेरे पास निर्णय करनेकी शक्ति, साहस और सिपाही है। कबतक मैं इस गुडियाको सम्हाले बैठा रहूंगा? मैं स्वयं खान बनना चाहता हूं। इसके बारेमें तुम्हारी क्या सलाह है? मैं कजाक खानको कुछ पैसा देकर उसे उसके घर भेज दूंगा, और फिर यामूदोंसे पिंड छुड़ाऊंगा।" भाईने उसकी बातका समर्थन करते हुये फातेहा पढा। दूसरे दिन इल्तिजारने गुडिया-खानको किलेसे निकालकर कजाकोंमें भेज दिया और फिर अपने गद्दीपर बैठते हुये ककुरत राजवंशकी स्थापना की।

§२ ककुरत-वंश (१८०४-८१ ई०)

इस वंशमें निम्न खान हुये—

१	इल्तजार, ईरज-पुत्र, एवज-पुत्र	१८०४-६ ई०
२	मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र	१८०६-२५ "
३	अल्लाकुल, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८२५-४२ "
४	रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र	१८४२-४५ "
५	मुहम्मद अमीन, अल्लाकुल-पुत्र	१८४५-५५ "
६	अब्दुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
७	कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र	१८५५ "
८	सैयद मुहम्मद, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८५५-६५ "
	(मुहम्मद फना, तुरासूफी-भतीजा)	१८६५ "
९	सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र	१८६५ "

१ इल्तजार, इराज-पुत्र, एवज-पुत्र (१८०४-६ ई०)

जानेवाले खानसे इल्तजारने कहा था—मैं दूसरे खानको बुला रहा हूं। उसने अपनी सेना बढा दस हजार उज्बेकोको कवचबद्ध किया, फिर मौलवियो, दूसरे धार्मिक नेताओ, अतालीको, ईनकोको बुलाकर कहा, कि दूसरे कजाक-खानके बुलानेकी जरूरत नही। उइगुर अतालीक बेक फुलाद सहमत नही हुआ, बाकी सबने फातेहा पढकर दुआ मागी। इल्तजार उस समय चुप रहा। बड़े दरबारियो, आलिमो और कबीलोंके अकसक्कालो (ज्येष्ठो)में उसने खलअत और इनाम बांटे, उसके नामसे खुतबा पढा गया। यामूदोको छोड उज्बेको, कराकल्पको और तुर्कमानोने नये खानको बधाई दी। इल्तजार जानता था, कि अन्तमें मेरे भाग्यका फैसला तलवार द्वारा होगा, इसलिये उसने अपना सारा ध्यान सेनाको बढ़ाने और मजबूत करनेमें लगाया। तैयारी हो जानेपर वह सरकश यामूदोके ऊपर पडा, जो कि उस समय अस्त्राबाद (ईरान) और गूरगानके इलाकोंमें रहते थे। उसने उनसे माग की—लूटपाटके जीवनको छोड दो, ऊंट-भेड-फसलपर कर दो, नही तो हमारे राज्यसे निकल जाओ। उज्बकोको लूटनेवाली यामूदोंकी एक टोलीके मुखियाको नाकमें रस्सी डालकर बाजारमें घुमाया गया, लेकिन यामूद घुमन्तुओका लूटना तो पीढ़ियोंसे व्यवसाय था, उसे वह भला कैसे छोडते? इल्तजार भी निश्चय कर चुका था। उसने एक बार आक्रमण करके पाच सौ यामूदोको मारा, पाच सौको कैदी बनाया, बाकी प्राण लेकर रेगिस्तानमें भाग गये। अराल द्वीपवाले भी लूट-मारसे तंग कर रहे थे, इसलिये इल्तजार उनके नेता तुरासूफीके ऊपर पडा, पर उसे असफल होकर ही खीवा लौटना पडा। उसने बुखारामें लूट-मार करके धन जमा करना चाहा, लेकिन बेक फुलादने इसे बुद्धिमानीकी बात नहीं कही। इसपर वह फुलादसे नाराज हो गया, और दरबार छोडते समय उसे मरवा दिया। फुलादके

परिवार तथा कबीले (उइगुर)ने विद्रोह किया, इसपर इल्तजारने उइगुर-उज्बेकोका भीषण हत्याकाड किया। जो कत्ल होनेसे बचे, वे भाग गये, बाकियोने 'भेडिये द्वारा जबर्दस्ती लादी शाति'के सामने सिर नवाया। इल्तजारने अपने राज्यकी सीमाको बढानेकी कोशिश की। उस समय उरगजमें एक बडा पुराना खानदानी सैयद अस्तेखोजा रहता था। इल्तजारने बिना बापकी मर्जीके उसकी लडकी ब्याह ली। इसपर खोजाने बुखारा भाग गये यामूदोको लूटका प्रलोभन देकर बुलाया, और उरगजमें उन्हें रहनेके लिये जमीन दी। अब खान लोगोपर पहलेसे भी ज्यादा खुलकर अत्याचार करने लगा। बाहर अब भी इल्तजारके अभियान चलते रहे। १८०५ ई०में वह बुखाराके ऊपर चढा। उस समय अमीर-बुखाराका दूत अब्दुल करीम जारके दरबारमें जाते हुये उरगज आया था। उसे जल्दी ही करशी पहुचकर राज्यपाल बननेका प्रलोभन दे तैयारी करनेके लिये कहा। महीने बाद इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें घुसकर लूट-मार की, और वहासे पचास हजार भेडें तथा हजारो ऊंट लूट लाया। अमीर-बुखाराने तैयारी करके मुहम्मद नियाज बीको तीस हजार सेना देकर रवाना किया। इधर इल्तजार भी तेक्के, यामूद, सलार, चन्दोर, अमीरअली, बूजेजी, ककरत, ककली, मगित आदि तुर्कमान और उज्बेक कबीलोके बारह हजार जवानोको लिये वक्षुके किनारे-किनारे चला। उसने बुखाराकी पहली टुकडीपर अकस्मात आक्रमण कर बुखारी बादशाहके पुत्रको खतमकर पाच सौ आदमियोको मारा या पकड लिया। बदी रस्सीमें बधे इल्तजारके तम्बूपर लाये गये। खीवाकी सेनाने बुखारियोके लौटनेके रास्तेको भी काट दिया था, अत बुखारियोके लिये लडने-मरनेके सिवा कोई रास्ता नही था। वह खूब लडे। खीवावाले हार गये। उनके बहुतसे आदमी भागते वक्त नदीमें डूब गये। इल्तजारने नावमें बैठकर भागना चाहा। उसके बहुतसे साथी भी प्राण बचानेके लिये उसी नावपर सवार हो गये, और बोझके मारे नाव डूब गई—बहुतसे आदमियों-के साथ इल्तजार भी वक्षुमें डूब मरा। उसके भाई हसनमुराद और जानमुराद भी डूब मरे। मुहम्मद रहीम बुखारियोके हाथमें बन्दी बना और सिर्फ कुतुलुक मुराद बक बचकर खीवा पहुचा। यह घटना १८०६ ई०की है।

२. मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र (१८०६--२५ ई०)

बुखारामें उस समय अमीर हैदरका शासन था। खीवावालोसे निर्दयतापूर्वक व्यवहार करके खूनी झगडेको और बढाना उसने पसद नहीं किया, और बदियोको क्षमा करके उन्हे खलअत और इनाम दे मुक्त कर दिया। इस दयाके लिये कुतुलुक मुरादने अपने भावोको प्रकट करते हुये कहा—"मैं अमीर हैदरका कुत्ता, दास हू, उसका हुक्म माननेके लिये तैयार हू।" कुतुलुक मुरादको ईनककी पदवी देकर अमीर हैदरने खीवाका राज्यपाल नियुक्त किया था, लेकिन उसके आनेसे पहले ही ख्वारेजिमयोने उसके छोटे भाई मुहम्मद रहीमको खान बना दिया था। कुतुलुकने भी उसे स्वीकार किया, और बुखाराके अमीरके पास लिखकर अपनी मजबूरी प्रकट की। अरालियोने इसी समय उज्बेकोको लूटा-मारा। नये खानके चचा मुहम्मद रजाबेकने उइगुरोंके विद्रोहके समय उनका साथ दिया था। उसने अब भी विद्रोह करना चाहा, लेकिन उसे हारना पडा। कजाकोके कई साल लूट-मार करनेका जवाब खानकी ओरसे था, जाडोमें रजाबेकका चेकली, तुर्त-कारा (शेरगाजी), चूमेके, जलैर (बुल्की-सुल्तान)के कजाकोको लूटने जाना। कजाकोने मजबूर होकर सौ भेडोंपर एक भेड खानको देना मजूर किया। शेरगाजी स्वय १८१९ ई०में खीवा-दरबारमें आया, और वही मरा। उसके बाद रहीम खानने अपने बेटेको उसके स्थानपर नियुक्त किया, जिसे कजाकोने भी मान लिया। अगले साल तुर्तकारा और ओई कजाकोंके ऊपर भी वैसी ही बीती। जाडोमें सरकश ककुरतोके अरालद्वीपपर बर्फके ऊपरसे चढाई की, लेकिन आक्रमण उतना सफल नही रहा, तो भी खीवाके एक शरणार्थी और उसके पुत्रने तुरासूफी मुरादके सिरको काटकर बोरेमें ला खानके सामने पेश किया। मुहम्मद रहीमने खुश होकर बाप-बेटेको नौकर रख लिया। जब अराली ककुरतोको अपने नेताके मारे जानेकी खबर लगी, तो

उन्होने खीवाके सुल्तानकी अधीनता स्वीकार की। तुरामुरादके परिवार और खजानेको ले खानने खीवा लौटकर मुरादकी लडकीसे ब्याह किया। पुराने खानके वंशसे ब्याह करनेके कारण अब वंशका सम्मान बढ गया। रहीमने इल्तजारकी सैयद-पुत्री विधवाको भी ब्याहा। अब्दुल्करीमने अब्दुरहीमको क्रूरतामें शैतान लिखा है। उसने गर्भिणी अराली स्त्रियोका पेट चीर गर्भके बच्चोको टुकडे-टुकडे करके अपनी पशुताका परिचय दिया था। रहीमने अपने विरोधियोको एक-एक करके मार डाला, या उन्हें देशसे बाहर निर्वासित कर दिया। उसके कठोर शासनके कारण यह फायदा जरूर हुआ, कि अब लूट-मार बन्द हो गई, और व्यापारी कारवासे कबीलोने मनमाना कर लेना छोड दिया। उसने कर की दर निश्चित कर दी, और कर उगाहनेके कस्टम (आयातकर) घर बनवाये। अपनी टकसाल स्थापित करके उसने खीवामें चांदी-सोनेके सिक्के ढलवाये।

ईरान शीया था। मध्य-एसियाके सुन्नी मुसलमान शीयोको काफिरसे भी बदतर समझ उनके ऊपर लूट-मार करना पुण्य कार्य समझते थे। १८१३ ई०में खीवावालोने खुरासानपर आक्रमण किया, लेकिन ईरानी सेनाने भी मुकाबिला किया, और चार दिनकी झडपके बाद दोनो सेनायें पीछे हटी। लौटते समय रहीम खान गोकलान तुर्कमानोके ऊपर पडा, और उनमेंसे बहुतेरे बदी बनाये। फिर तेक्के तुकमानोंके ऊपर धावा बोल उनके जीते हुये खेतोको छीनकर दक्षिणके नगे पहाडोमें खदेड दिया। इनमेंसे कुछ पीछे जाकर नहरके किनारेवाले इलाकेमें बस गये। रहीमने मगिशलकके इलाकेमें डेरा रखनेवाले चन्दोर तुर्कमानोको भी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। रहीमने तलवारके बलपर शाति स्थापित की। इससे खीवा और रूसके बीच कारवाका आना-जाना सुगम हो गया, और पूव तथा पश्चिमम व्यापार खूब बढ़ा। रहीमको बिना लडे चैन नही आता था। १८२० ई०में उसने बुखारापर चढाई की, और जाकर चारजूयको एक महीनेतक घेरे रक्खा। इसी बीच उसके सैनिक पडोसमें घुमक्कडी करनेवाले तेक्के तुकमानोंको भी लूटते रहे। खीवावालोंके पास रूसके साथ सबंध होनेके कारण तोप भी थी, जिसने मदद अवश्य की, किन्तु बिना फैसलेके ही दोनो सेनाओको लौट जाना पडा। रहीमका समकालीन अमीर हैदर भी बहुत मजबूत शासक था। अगले साल वह खुद सेनाके साथ आया। खीवाके नावोके बेड़ेको उसकी तोपोने रोक लिया। नदीमें पानी कम था, इसलिये दूर हटकर निकल भागनेका मौका नही मिला। रहीम खानके भाई कुतुलुक मुरादको हैदरने हराया। उसकी बहुतसी नावें नष्ट हो गयी, और खीवा-सेना परा जित हो पीछे लौटी। लेकिन १८२२ ई०में फिर कुतुलुक मुरादने बुखाराके राज्यमें कराकुल तक लूट-मार की। मरते वक्त कुतुलुकने मुसलमान भाइयोपर वार करनेके लिये अमीर-बुखारासे क्षमा मागी—"सचमुच गाजीके लिये यह शोभा नही देता था।"

१९वीं सदीके आरम्भमें काकेशसमे जारका शासन स्थापित हो चुका था, और अब पश्चिमी तटसे ही सतुष्ट न हो वह कास्पियनके पूर्वी तटपर भी अधिकार करनेके लिये व्यग्र था। उधर रहीम खानने पूर्वी तटपर रहनेवाले तुकमानोको बुरी तरहसे दबा रक्खा था, इसलिये रूस उससे फायदा उठाना चाहता था। १८१९ ई०में गुर्जी (जार्जिया)के राज्यपालने पूर्वी कास्पियनके तटपर रहनेवाले तुर्कमानो तथा खीवासे भी सबध स्थापित करनेके लिये मुरावेफको दूत बनाकर भेजा। मुरावेफ १९ सितम्बरको क्रास्नोवोद्स्कमें जहाजसे उतरा, और ६ अक्तूबरको खीवाके पास पहुचा। उस समय खान शिकारमें गया हुआ था। उसके आदमियोने मुरावेफको गुप्तचर समझ नजरबद कर खानने मुरावेफको मेहतर (वित्त-मत्री) आगा यूसुफके घरमें ठहरा दिया। फिर किसी तरह मुरावेफ खानके दरबारमें उपस्थित होनेमें सफल हुआ। मुरावेफने खानके बारेमें लिखा था—"वह अपने सफेद रगमें उज्बेकोसे अधिक रूसी-सा मालूम होता था।" मुरावेफने राज्यपालका सदेश देते हुए कहा—"मंगिशलककी जगह क्रास्नोवोद्स्क द्वारा व्यापार-सबध स्थापित करनेपर तीसकी जगह सत्रह दिनमें ही कारवा समुद्रतक पहुचने लगेंगे। लेकिन क्रास्नोवोद्स्कका इलाका उस वक्त ईरानी काजार-वशके हाथमें था, जब कि मगिशलक

खीवाका था, इसलिये खान कारवा-पथको कैसे वदल सकता था? मुरावेफके लिखनेसे पता लगता है, कि उस समय खीवामें एक शासन-परिषद् थी, जिसका अध्यक्ष मेहत्तर यूसुफ आगा था। यूसुफ सत अर्थात् फारसी-भाषी ताजिक व्यापारीवर्गका प्रतिनिधि था। द्वितीय वजीर कुशवेगी उज्वेक, तीसरा खोजेश मेहरम खानके गुलामका पुत्र था, जो कस्टमका उच्चाधिकारी भी था। परिषद्के सबसे अधिक प्रभावशाली सदस्य थे—खानका भाई कुतुलुक मुराद और काजी (धर्माधिकारी)। परिषद्में चार प्रधान उज्वेक कबीलोके सरदार भी सम्मिलित थे।

यह बतला आये हैं, कि खीवा उस वक्त गुलामोका बहुत भारी बाजार था, जिसमें रूसी गुलामोकी कीमत ज्यादा थी, लेकिन रूसी औरतोकी अपेक्षा ईरानी औरतें ज्यादा महगी बिकती थी।

मुहम्मद रहीम १२४१ हि०* में मरा।

३. अल्लाकुल, रहीम-पुत्र (१८२५-४२ ई०)

रहीमके मरनेपर उसका बडा बेटा गद्दीपर बैठा। इसने बापके जमा किये हुये खजानेको बरबाद करना शुरू किया। १८३२ ई०में मेर्वपर चढाई करके तेक्का तुर्कमानोपर कर लगाया, जिसके लिये खीवासे रेगिस्तान (कराकुम)के बीचसे मेर्व जाते रास्तेपर हर पडावपर कुआ खोदना पडा। सरख्शके सलोरोपर भी जबदस्ती कर लगाया। कर उगाहनेके लिये दोनो जगह कस्टम-गृह बनवाये। सरख्शसे लौटते समय अलमान्सके साथ बारनेस वहा आया था। उसने लिखा है—"नगरसे चद मीलपर लूटके मालको गिना गया—एक सौ पद्रह आदमी, दो सौ ऊंट और उतन ही ढोर थे। उन्होने पहले ही लूटके मालको बाट लिया था, लेकिन पाचवा हिस्सा उरगजके खानको भी दिया।" उस समय किजिलबासो (ईरानी शीयो)के ऊपर लूट करना धर्मयुद्ध माना जाता था, जसा कि स्पेनवाले मेक्सिको और पेरूमें अपने हाथोको खूनसे रंगनको समझते थ, वह भी अपने लूटके मालका पाचवा हिस्सा स्पेनके राजाके पास भजते थे। इस प्रकार उससे कुछ ही शताब्दियो पहले स्पेनके युरोपीय भी उसी सिद्धातको मानते थे, जिसे १९वी सदीके आरम्भमें खीवाके सुन्नी मुसलमान।

बापके समयसे ही लूटपाटके बन्द होनेके कारण ख्वारेज्ममें व्यापार चमक उठा था, और बुखारा उरगज-मगिशलकके बीच स्थलसे, फिर अस्त्राखानतक समुद्र-मार्गसे बराबर व्यापारिक कारवा आते-जाते रहते थे। अराल समुद्रके पूर्वी तटसे एक नया व्यापारमार्ग खोलनेके लिये रहीम खानके समय १८२० ई०में रूसियोने इस इलाकेकी सर्वे की। फिर पाच सौ सिपाहियो और दो तोपोंके साथ एक रूसी कारवा चला। खीवावाले क्यो पसद करते, कि उत्तरका मार्ग खुल जाय, जिससे उरगज और मगिशलकका समृद्ध वणिक्पथ उजड जाय। उनकी शहपर तुर्कमानोंने रूसी काफिलेपर प्रहार किया, लेकिन उन्हें हारकर भागना पडा। तो भी काफिलेको अपने सौदेको जलाकर खाली हाथ पीछे लौटना पडा।

पहली बार असफल होनेके बाद अब अल्लाकुलके शासनकालमें १८३५ ई०में रूसियोंने मगिश-लकके बन्दरगाहके पास अपना किला बना खीवावालोको डराना चाहा, लेकिन खानने उसकी परवाह नही की। इसी समय १२० रूसी इलाकेकी जाच-पडताल कर रहे थे, जिन्हें पकडकर खीवावालोंने बुखाराके बाजारमें बेंच दिया। इसपर १८३६ ई०में जार निकोलाइ I के हुक्मसे ओरेनबुर्ग और अस्त्राखानमें खीवावाले व्यापारियोको पकड लिया गया। उसी साल अगस्तमें निज्नीनवोगोरदके मेलेसे लौटते खीवाके छियालीस व्यापारियोको भी जेलमें डाल दिया गया। यह स्मरण रहना चाहिये, कि वोल्शेविक-क्रांतिसे पहलेतक निज्नीनवोगोरदका मेला दुनियाका सबसे बडा व्यापारिक मेला था। हमारे सोनपुर मेलेका नम्बर उसके बाद आता था। ओरेनबुर्गके रूसी राज्यपाल जेनरल पेरोव्स्कीने खानको कडे शब्दोमें लिखा—"तुम्हारी कारवाई बुरी हैं। बुरे बीजका बुरा फल पैदा होता है। तुम्हें चाहिये, कि रूसी बंदियोंको लौटा दो, और कजाकोंके भीतर दखल देने और लूट-मारको बन्द करो। ऐसा करनेसे रूसियोंके साथ

*१६ VIII १८२५–७VII १८२६ ई०

तुम्हारा जैसा व्यवहार होगा, वैसी ही सुविधायें खीवावालोको रूसमें मिलेंगी।" लिखा-पढ़ी चलती रही, और दो सालमें सौ रूसी बंदी लौटाये गये, लेकिन दूसरी ओर १८३९ ई०में ही खीवावाले दो सौ रूसी मछुओंको कास्पियनसे पकड ले गये।

असफल रूसा अभियान (१८३९ ई०)—खीवाके खानकी गुस्ताखियाको शक्तिशाली रूस भला कबतक बर्दाश्त करता? और यह तो वह समय था, जब कि युरोपमें भी रूसकी धाक जमी हुई थी। जेनरल पेरोव्स्कीने २६ नवम्बर १८३९ ई०के जाडोमें छ हजार पैदल सेनाके साथ दस हजार ऊटोके ऊपर रसद ले ओरेनबुर्गसे प्रस्थान किया, लेकिन रास्तेमें उसे हिमबिन्दुसे ४० डिग्री नीचेकी सर्दीका सामना करना पडा—नीचे बर्फकी ऊची ढेर थी, ऊपरसे भयकर हवा चलने लगी। हजारो सिपाहियोने हिम-आहत हो अपनी अगुलियों, पैरो और हाथोको गवाया, बहुतसे सर्दीमें मर गये। इस स्थितिका मुकाबिला करते हुये जैसे-तैसे रूसी खीवाकी सीमा पर अकबुलाकमें पहुचे। खीवाका कुशबेगी (प्रधान-सेनापति) भी रूसियोंके मुकाबिलेके लिये तैयार था। बर्फ आठ फुट मोटी थी। कजाकोने घोडोके झुडको दौडाकर बर्फमें रास्ता बनाया, जिसके दोनो तरफ बर्फकी दीवार खडी थी। सब कोशिश करनेपर भी आगे बढना सर्वनाशके मुहमें पडना समझ पेरोव्स्की लौट गया।

रूसियोको मध्य-एसियाकी ओर—अर्थात् भारतके सीमातके पास—पहुचनेकी कोशिश करते देख अग्रेज कैसे चुप रह सकते थे? मेजर टाड अग्रेजोंके लिये अफगानिस्तान और बुखारामें अपना जाल बिछा रहा था। उसने हेरातमे काजी मुहम्मद हसनको दूत बनाकर बुखाराके अमीरके पास भेजा। अमीरने मिलकर काजीको बहुत फटकारा, कि वह इस्लामकी भूमिमें काफिरोको घुसाना चाहता है। इसपर काजीने कहा—"अपने हथियारो, अनाज, सोना, खून और अपनी बुद्धिके साथ मुहम्मद शाहके हथियारोंसे ध्वस्त होते प्राचीरकी रक्षा करने अग्रेज आये। उन्होने काफिरोंसे सच्चे मुसलमानोकी रक्षा की।" और फिर अमीर बुखारासे पूछा— "काफिर कौन है? ईरानी किजिलबास है, जिनकी कि आपने रक्षा की, या अग्रेज जिन्होने कि सच्चे मोमिनोकी रक्षा की? बहुत समय नही बीतेगा, कि रूसके आक्रमणको रोकनेके लिये भी उनकी सहायताकी अवश्यकता होगी।" काजीने रूसका भय दिखलाकर बुखाराके अमीरको प्रभावित किया, और सफलताकी सूचना देते जरीके रेशमी थैलेके भीतर मेजर टाडके पास अपना पत्र भेजा।

बुखारामें सफलताकी आशा देखकर टाडने कप्तान एबटको खीवाके सुल्तानके पास भेजा। उसके हुक्मके मुताबिक एबटन खानको रूसी कैदियोंके छोड देने तथा स्वय अस्त्राखानमें जा वहा पकडे गये खीवाके व्यापारियोको छुडानेकी कोशिश की। एबट १८४० ई०के बसतमें चला था, जब कि अभी-अभी जेनरल पेरोव्स्कीका अभियान भयकर आफतमें पडनेके बाद नष्टप्राय होकर लौटा था। उस समय खान एक काले तम्बूमें बैठा था, जब कि एबट उससे मिलने गया। एबटने जूता निकाल परदा उठाकर भीतर प्रवेश किया, फिर अपने हाथोको अदबसे छातीपर रखकर "सलाम् अलेकुम्" कहकर बातचीत की। खानने उसके साथ बडा अच्छा बर्ताव किया। उसके आनेकी खबर सुनकर स्वागत करनेके लिये पहले ही सैनिक भेजे थे। नगरके बाहर वजीरके एक महलमें एबटको टिकाया गया था। एबटने पहलेसे खीवामें बन्दी अग्रेज गुप्तचर कर्नल स्टोडर्टको छोड देनेपर जोर दिया। एबटने यह भी कहा, कि खीवा यदि अग्रेजोंसे मदद पाना चाहता है, तो रूसी बंदियोको छोडना जरूरी है। स्टोडर्ट बुखाराके अमीरके बंदीखानेमें था। खीवा-खानने उसे छोडनेके लिये अपना दूत बुखारा भेजा। कास्पियन और ओरेनबुर्गकी ओरसे जिस तरह रूसका फौलादी पजा मध्य-एसियाकी ओर बढ़ता आ रहा था, और जिस तरह हिन्दुस्तानमें मुस्लिम बादशाहतको खतम करके अग्रेजोने अपना राज्य कायम किया था, उसे देखते हुये मध्य-एसियाके शासकोकी नीद हराम हो गई थी। अग्रेजों और रूसियोंको वह एक तरफ आग और दूसरी तरफ खड्ड-सा देखते थे, इसलिये किसी निश्चय पर पहुचना उनके लिये आसान नही था। तो भी रूसका खतरा बिलकुल सामने था—पेरोव्स्की यद्यपि इस साल सफल नही हुआ था, लेकिन एक बारकी असफलतासे खीवावाले कैसे अपनेको सुरक्षित समझ लेते? इसीलिये अल्लाकुल

समझा-बुझाकर कर्नल स्टोडर्टको छोड देनेके लिये बुखाराके अमीरको तैयार करना चाहता था। एवटने अपनी एक मुलाकातमे फारसी अक्षरोमे लिखे एक नक्शेको अल्लाकुलके सामने रखकर बतलाया, कि इगलैंडका स्वार्थ इसीमें है कि मध्य-एसिया रूसके हाथमें न जाय। हम मध्य-एसियाके राज्योको स्वतत्र और तटस्थ देखना चाहते हैं, और रूसके मनसूबेको असफल करनेमें सहायता देनेके लिये तैयार है। लेकिन खान रूसकी शक्तिको ज्यादा अच्छी तरह जानता था, इसलिये उससे बहुत भयभीत था। उसने चादीकी तरह सफेद चमकत तीन पौंडके एक तोपके गोलेको दिखलाकर एवटको बतलाना चाहा, कि रूसी बहुत जबर्दस्त शक्ति रखते है। एवटने साफ देखा कि जबतक रूसी तोपका यह सफेद गोला खानके तम्बूमें रहेगा, तबतक उसे कुछ भी साहस नही होगा, और मुझे अपने काममें सफलता नही मिलेगी।

एवटके काममें सबसे बाधक मेहतर था, जो रूसी वदियोके छोड देनेपर जोर देनेके कारण एवटको रूसियोका गुप्तचर समझता था। एवटके बहुत कहनेपर मेहतरने कहा—अगर हमारे भाग्यमें यही लिखा होगा, तो फिर क्या चारा ? इसपर एवटने कहा—तो इसका अर्थ है खीवाको रूसियोंके हाथमें दे देना। मेहतरने गुस्सेमें आकर कहा—"आह! अगर हम काफिरोंसे लडते मारे गये, तो सीधे स्वर्गमें जायगे।" इसपर एवटने जवाब दिया—"और तुम्हारी औरतें ? तुम्हारी बीबिया और लडकिया रूसी सिपाहियोकी गोदमें जाकर किस तरहके स्वर्गको प्राप्त करेंगी ?" ईरानसे आये हुये दूतने जब ईरानी गुलामोको छोडनेके लिए कहा, तो अल्लाकुलने जवाब दिया—"मुहम्मदशाहको कहो, कि अभी वह बच्चा है, अभी उसे दाढी भी नही आई है। वह क्यो नही पहले रूसियोको ईरानसे निकालता ?" दरअसल खीवा ऐसी परिस्थितिमें था, कि उसके लिये इस समय कुछ भी निश्चय करना बहुत मुश्किल मालूम होता था। प्रस्थान करते वक्त एवटने खानसे कहा था—बडी सावधानीसे काम करनेकी जरूरत है। खानने जवाब दिया—"यह बहुत मुश्किल है। दुनिया भरमें मेरे राज्यको छोडकर रूसियोंको कोई दूसरा युद्धक्षेत्र नही मिलता।'

एवट सुरक्षित तौरसे कास्पियनके तटपर गुयेदिकके बन्दरगाहमें पहुचा, लेकिन जले-भुने वजीरने ऐसी चाल चली, कि बन्दरगाहपर एवटको जहाज नहीं मिला। फिर वह वहासे चार दिनके रास्तेपर दक्षिणमें अवस्थित रूसियोंकी फौजी चौकी दाशकलाकी ओर रवाना हुआ। चौकीपर पहुचनेमें दस घटेका रास्ता रह गया था, जब कि उज्बेकोंने उसे लूट लिया। एवटकी दो अगुलिया टूटीं, और सिर भी फूटा। फिर उन्होंने उसे ले जाकर घुमन्तुओंके डेरेमें रखकर बहुत बुरा बर्ताव किया। टाडने अखुन्द-जादा नामक अफगानको भेजा, जिसने एवटको छुडाकर रूसकी ओर रवाना किया। हेरातमें टाडके पास एवटके मरनेकी खबर पहुची। जिसपर उसने लेफ्टिनेंट शेक्सपियरको खीवाके साथ फिर बातचीत करनेके लिये भेजा। लेकिन खानने उसकी बातोंपर अविश्वास प्रकट करते हुये कहा—"यह क्या बात है, जो हमारेसे इतनी दूर रहनेवाला तुम्हारा देश हमारे देशके साथ मित्रता करनेके लिये इतना उतावला है?" शेक्सपियरने जवाब दिया—"हमारे पास भारत-जैसा एक विशाल उद्यान है, कही कोई उसपर टूट न पडे, इसलिये हम अपने बगीचेके चारों ओर दीवारें खडी करना चाहते हैं, और वे दीवारें है—खीवा, बुखारा, हिरात और काबुल।" याकूब मेहतरने काफिर कहकर जब ताना मारा, तो उसका जवाब शेक्सपियरने दिया—"हममेंसे कौन काफिर है ? तुम, जो कि कभी न बुझनेवाली ईर्ष्याके कारण रोज गुलामोको सासत देते हो, बापसे लडकियोंको, पतिसे पत्नीको जबर्दस्ती छीनकर अपनी बाजारोंमें सबसे अधिक दाम देनेवालोंके हाथ बेंच देते हो। या हम जो कहते हैं—ये अभागे लोग मुक्त कर दिये जाय। इन्हें इनके देश और परिवारमें भेजनेकी कोशिश करते है।"

शेक्सपियर कुछ सफलताके साथ विदा हुआ। ४२० रूसी बदियोको मुक्त करा पुराने उरगजसे रवाना हो वहा समुद्र तटपर पहुचा, फिर वहासे नाव पकडकर अस्त्राखान, आगे राजधानी पीतरबुर्ग-में गया। जारने उसकी सेवाओंके लिये बहुत सम्मान करते, उसे रूसी 'सर की उपाधि प्रदान की।

जुलाई १८४० ई०में अल्लाकुलीने समझ लिया, कि रूसियोंके साथ झगडा मोल लेना अच्छा नही है। उसने घोषणा करके रूसी दासोंके व्यापारको बद कर दिया, और रूसके राज्यमें लूटपाट मचानेकी मनाही कर दी। लेकिन इसी समय ईरानी गुलामोंको छोडनेके लिये जोर देनेसे झगडा

बढ़नेकी सम्भावना देख ईरानी शाहने अंग्रेज कप्तान कोनोलीको खीवा भेजा। खानने ईरानी गुलामोंको छोडनेसे इन्कार कर दिया। कोनोली खीवामें चार महीना रहा। इसी समय हिरातके राज्यपाल यार मुहम्मदने मेजर टाडके षड्यन्त्रोसे परेशान होकर उसे हिरातसे निकाल दिया, और खीवाको भी लिखा, कि अंग्रेज गुप्तचरको अपने पास न रक्खें। किन्तु खानने यार मुहम्मदकी बात न मान कोनोलीको खलअत दी, और उससे कहा—खीवाको अपना देश समझिये और इस महलको अपना घर। लेकिन याकूब मेहतरने कोनोलीको पसद नही किया। धीरे-धीरे उसने खानपर प्रभाव डाला, और अन्तमें कोनोलीको उसने कहा—"तुम हमारे रास्तेमें बाधक हो। अगर तुम यहासे विदा हो जाओ, तो मुझे इसके लिये दुःख नही होगा।' खीवामे असफल हो कोनोली खोकन्दपर अंग्रेजोका डोरा डालने गया, जहासे बुखारा जानेपर उसने अपने प्राण गवाये, यह हम बतला चुके है।

रूस भी मध्य-एसियाके खानको हर तरहसे अपनी ओर करनेकी कोशिश करता रहा। १८४० ई०में लेफ्टिनेंट आइतोफ मध्य-एसियाकी यात्रासे पीतरबुग लौटा, फिर कप्तान निकिफोरोफ १८४२ ई०में खीवा भेजा गया, जिसने रूस और खीवाके बीच पहली सधि करवानेमें सफलता पाई। अभी वह खीवा हीमें था, जब कि अल्लाकुल मर गया।

४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र (१८४२-४५ ई०)

रहीमकुलके गद्दीपर बैठते ही जमशेदियोने विद्रोह कर दिया। जमशेदी ईरानी कबीला था, जो मुरगाबनदीके बायें तटपर रहते थे। उनमेंसे दस हजारको जबदस्ती ले जाकर ख्वारेज्मके इलाकेमें वक्षुतटपर किलिजबेके पास बसा दिया गया था। जमशेदियोंके विद्रोहसे प्रोत्साहित होकर मेवके पास डेरा रखनेवाले सारिक तुर्कमान भी बिगड उठे। रहीम खानने अपने छोटे भाई मुहम्मद अमीनको पद्रह हजार सेनाके साथ तुर्कमानोको दबानेके लिए भेजा, लेकिन रेगिस्तानमें उसको बहुत क्षति उठानी पडी। उधर अमीर-बुखाराने हजारास्पका मुहासिरा कर रक्खा था। खानके भाईने अमीरकी सेनापर टूटकर उसे हराके सधि की। तीन साल शासन करनेके बाद रहीमकुल मर गया।

५ अमीन, अल्लाकुल-पुत्र (१८४५-५५ ई०)

रहीमके मरनेके बाद उसका भाई गद्दीपर बैठा, जो कि वाम्बेरीके अनुसार आधुनिक कालके ख्वारेज्मके खानोमें सबसे बडा था। अमीनने तख्तपर बैठते ही सारिकोको सर करनेके लिये अभियान किया, लेकिन वह छ चढाइयोंके बाद काबूमें आये। मेर्वके किले तथा पासके योलोतेन किलेको भी उसने ले लिया। उसके लौटनेपर सारिकोने खान द्वारा नियुक्त राज्यपाल और छावनीकी सेनाको मार डाला। लडाई फिर शुरू हो गई। अबकी बार सारिकोंके पुराने दुश्मन जमशेदी और उनका नेता पीर मुहम्मद भी अमीनके साथ थे। विजय करनेके बाद अमीनने बडी तडक-भडकके साथ खीवामें प्रवेश किया। उसने तेक्कोंके विद्रोहको भी दबानेमें सफलता पाई। निम्न सिर-उपत्यकामें कजाक डेरा डाले रहते थे, वह खोकन्दकी प्रजा थे। उनके लिये खोकन्दसे खीवाका झगडा हो गया। १८४६ ई०म खीवाने सीमातपर खोजा नियाज बी किला बनवाया। लेकिन कजाकोको खोकन्दका खान ही नही बल्कि रूसी भी अपनी प्रजा मानते थे, इसलिये दश्ते-कजाक पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेके लिये १८४७ ई०में रूसियोंने दश्तमें कितने ही किले बनाये। इसी साल अराल समुद्रपर राइम्स्क या अरालस्क नामक रूसी किला बना। खीवावाले कजाकोको दबाना चाहते थे। उनके दो हजार सैनिकोंने आक्रमण करके हजारसे अधिक कजाक-परिवारोको पकड लिया, जिसके लिये रूसियोने आक्रमणकर कजाकोको छुडा खीवा-वालोंको दड दिया। १८४८ ई०में इस इलाकेमें कई बार लूट-मार होती रही। निम्न-सिरमें अब खोकन्द, खीवा और रूस तीनोंका झगडा चल रहा था। १८५३ ई०में जेनरल पेरोव्स्कीने आक्रमण करके निम्न-सिरपर बनाये गये खोकन्दियोंके किलोको तोड दिया।

दक्षिणमें तुर्कमान-भूमि अभी भी खीवाके लिये काटा बनी हुई थी। १८५५ ई०में अमीनने सरख्शके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन उधर ईरानी शाह भी निबल नही था। मशहदके राज्यपाल फरीदून मिर्जाने हमला किया। हारकर अमीन लौट रहा था, इसी समय धोखेसे पकड लिया गया। उसके साथके दो सौ ख्वारेज्मियोमेंसे कितने ही मारे गये और कितने ही भग गये। खानको वही काट

दिया गया, और उसके तथा २६९ दूसरे मुडोको शाहके पास तेहरान भेज दिया गया। इन सिरोंके ऊपर पहले एक रौजा बनाया गया, लेकिन इमामजादाकी सतान होनेसे वहा पूजा चल निकली, जिसके डरके मारे ईरानियोने उसे तोड दिया। हम देख चुके है, कि अमीन और उसका वश सैयद-जादियोकी सतान था।

६ अबदुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

ईरानियोंके सामने भागकर लौटी सेनाने खाली गद्दीपर कुतुलुक मुरादके पौत्र तथा इबादुल्लाके पुत्र अब्दुल्लाको बैठाया। गद्दीके लिये आपसमें झगडा हो गया। इस गडबडीसे फायदा उठा पद्रह हजार यामूद तुर्कमानोने आक्रमण कर दिया। खान मुकाबिलेके लिये सेना लेकर गया। किजिलतेकेरमें लडाई हुई। खीवावाले बुरी तरहसे पिटे और उनका खान अबदुल्ला मारा गया।

७ कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

मृत खानकी जगहपर उसका १८ वर्षका भाई २० जिल्हिजा १२७१ हि० (३ सितम्बर १८५५ ई०)को गद्दीपर बैठाया गया, जो हालके युद्धमें घायल हुआ था। यामूदोका विद्रोह चल रहा था। सारे राज्यमें अशाति फैली हुई थी। इसी समय उत्तरके कराकल्पकोने यारलिक तुराको अपना खान बनाकर विद्रोह कर दिया। कुतुलुकने सारे तुर्कमानोको मार डालनेका हुक्म दिया, लेकिन यामूदोका समर्थक नियाज बी मौजूद था, जिसने मुजरा करनेका बहाना करके महलमें जा खान और उसके सात वजीरोंको मार डाला। मेहतरने किलेकी दीवारसे खबर दी, जिसपर तुर्कमानोका भी कत्लेआम शुरू हुआ, और बहुत कम तुर्कमान उज्बेकोकी तलवारसे बच पाये। खीवाकी सडकोपर इतनी लाशें पडी थीं, कि उन्हें हटानेमें छ दिन लगे।

अमीन खानके बाद बहुत जल्दी-जल्दी दो खान हो गये। इस सारे समयमें खीवा राज्यमें विद्रोह और अशाति फैली हुई थी। यामूद, तुर्कमानोका सबसे शक्तिशाली कबीला था, जो खीवाके खान-वशके साथ सर्वस्वकी बाजी लगाकर लड रहा था। १८५५-५६ ई०में उत्तरके कराकल्पकोने भी विद्रोह कर दिया था। यामूदोंने दक्षिणमें और कराकल्पकोंने उत्तरमें खानके विरुद्ध बगावत करके उसकी स्थितिको बहुत खतरनाक बना दिया था। लेकिन, १२ दिसम्बर १८५५ ई० (८ रवि १२७२ हि०)को खीवावाले कराकल्पकोंको हराकर बहुतसे लूटके मालके साथ राजधानी लौटे, जिसमें बहुतसे स्त्री-बच्चे भी थे।

८ सैयद मुहम्मद, रहीम-पुत्र (१८५५-६५ई०)

कुतुलुकके मरनेपर रहीमखानके बडे पुत्र सैयद महमूदको गद्दी दी गई, लेकिन अशात खीवाके इस तीसरे खानको भी अफीमची होनेके कारण गद्दीसे हटना पडा, और उसके छोटे भाई सैयद मुहम्मदने तीस वर्षकी अवस्थामें गद्दी सम्हाली। यामूद तुर्कमानों और कराकल्पकोंके विद्रोह अब भी चल रहे थे। कराकल्पक यारलिकके साथ कुहना-उरगज (प्राचीन उरगज)पर चढे। मुहम्मद खानने उन्हें हरा-कर उनके उम्मीदवार यारलिकको मार डाला। अब कराकल्पकोंका एक कबीला बुखाराकी प्रजा बन गया। गहयुद्धने भयकर रूप लिया था—गाव उजाड दिये गये, कस्बों और नगरोका सत्यानाश हो गया। एक ओर यामूद और उज्बेक आपसमें कट-मर रहे थे, दूसरी ओर मुरगाबसे बढते जमशेदियोने किल्सूसे फितनियेक तकके इलाकेको लूटा। लूटके मालके साथ वह दो हजार ईरानी गुलामोंको भी छुडाकर ले गये। सीमाती किलेके राज्यपाल खोजा नियाजकी जगह उसका पुत्र इरजान बनाया गया था। वह १८५६ ई०में अपनी छावनीके ४० सिपाहियोंके साथ खीवा गया। कजाकोंने अफसरोको मार भगाया, और भयकर अत्याचार करते हुये खीवाकी बहुत-सी सम्पत्ति लूट ली। कजाकोने खीवाके भीतरकी ही लूटसे सतोष नही किया, बल्कि उन्होंने रूमी सीमातके भीतर भी गडबडी मचाई। निम्न-सिर-उपत्यका-में खोकन्दी अपने किलोंके लिये दावा कर रहे थे, और पिछले दस सालोंमें उन्होंने आक्रमण करके उनपर दो बार अधिकार भी कर लिया था। पिछली बार अकमस्जिदके राज्यपालने भारी सख्यामें

पशु देकर खीवियोको विदा किया। तीनो शक्तियोका सघर्ष निम्न-सिर भूमिके लिये चल रहा था। अब निम्न-सिरके खोकन्दी इलाकेपर रूसियोका दृढ़ अधिकार हो गया। खोकन्दियाने अपने किलोको लौटानेके लिये कहा। इन्कार करनेपर उन्होने सैनिक टुकडी भेजी, लेकिन वहा ईंधन-पानी आदिकी बडी कठिनाई थी, इसलिये किलोको तोड-फोडकर खोकदी सेना लौट गई।

खीवा राज्यमें भारी गडवडी मची हुई थी, जिसके कारण वहा अकाल पड गया फिर १८५७ ई०में हैजा भी फैल गया। इसी साल खानने अपने राज्यारोहणकी खबर देते, जार निकोलाइ I की मृत्युके लिये शोक-प्रकाशन करने तथा जार अलेक्सान्द्रके गद्दीपर बैठनेके समय बधाई देनेके लिये शेखुल-इस्लाम फाजिल खोजाको दूत बना पीतरबुग भेजा।

मई १८५८ ई०में जेनरल इग्नातियेफने भी एक दूतमडल खीवा भेजा, जो ईलक येम्बा और अराल तटसे ऐबुगिरकी खाडी, उर्गा अन्तरीप तथा करालियोकी पुरानी राजधानी कुग्रद होते फिर नावसे दस मील प्रति दिनकी चालसे चलते खीवाकी राजधानीकी ओर वढ़ा। गावो और शहरके लोग रूसियोंके आनेकी खबर सुनकर बडे भयभीत थे। रूसियोने देखा, कि वक्षु नदीके दोनो तरफके गाव और शहर उजडे पडे हैं। कराकल्पकोंके औलो (डेरों)में सिर्फ बूढे-बच्चे रह गये हैं, बाकियोको पकडकर खीवा या ईरानी सीमापर ले जाकर बेच डाला गया था। कराकल्पकोंसे किपचको और खोजेइली कबीलोंकी हालत बेहतर नही थी। रूसी दूतमडल जब नवीन उरगजमें पहुचा, जो कि खीवाका दूसरा सबसे बडा शहर था, तो एक वजीरने आकर स्वागत किया। दूतमडलको शहरसे बाहर एक बागमें ठहराया गया। पहले मेहतरने स्वागत किया, राजमहलमें मेहतरके लिये अपना एक खास निवास स्थान था। रूसी खानके पास पहुचाये गये। खान एक ऊची गद्दी पर बैठा था। उसके सामने छुरा और पिस्तौल रक्खा था और पीछेकी ओर राजकीय झडा फहरा रहा था। प्रधान-सेनापति (कुश बेगी), वित्तमत्री (मेहतर) और दीवानबेगी (प्रधान वजीर) खानके सामने बैठे हुये थे, और महाप्रतिहार द्वारपर खडा था।

रूसी दूतमडलने खीवाकी हालतका अच्छी तरह अध्ययन किया, और समझा-बुझाकर खानको अपनी ओर करनेकी कोशिश की।

उस समय खीवाके अपने सिक्के चल रहे थे। दो तरहके सोनेके सिक्के (तिला) थे, जिनमें से एकका मूल्य अग्रेजी गिन्नीसे थोडा कम और दूसरा उससे आधा था। चादीके सिक्केको 'तगा' कहा जाता था, जो अठन्नीके बराबर था। उससे आधेमे कमका चादीका सिक्का 'शाही' था। ताबेके सिक्केको पूल या करापुल कहते थे, जो एक तकेमें अडतालीस होता था।

रूसी मिशनके खीवासे विदा होते ही कराकल्पको और कुग्रदोने तुर्कमान-सरदार अतामुरादके साथ मेल कर कुतुलुक मुरादको उसके कितने ही आदमियोंके साथ मार डाला।

मुहम्मद खानके समयमें ही १८६३ ई०में पर्यटक वाम्बेरी कितने ही हाजियोंके साथ खीवा पहुचा था। उस समय चन्दोर तुर्कमान खुला विद्रोह किये हुये थे। उसने खीवाको बहुत सुदर नगर पाया। शहरके दरवाजेपर जय घोष करते तथा हाजियोंके दामनको चूमते, सूखे मेवे और रोटीकी भेंटके साथ लोगोने स्वागत किया। लेकिन कारवासरायमें टिकानेके बाद बडे रूखेपनसे उनकी तलाशी ली गई। समझते थे, कि ये फिरगियो (अग्रेजों) या उरुसों (रूसियो)के जनसीज (गुप्तचर) हैं। वाम्बेरी यद्यपि एसियाई पोशाकमें हाजी बना हुआ था, लेकिन उसकी युरोपीय शकल-सूरत छिप नही सकती थी। तत्कालीन खानका दूत शुकरुल्ला बी कान्स्तन्तिनोपलमें इस्लामके खलीफाके दरबारमें हो आया था। वाम्बेरी उससे मिला। तुर्की भाषापर अधिकार होनेके कारण वाम्बेरीको इस्ताम्बूलके आफन्दी (मुल्ला) बन जानेमें सफलता मिली। उसने बतलाया, कि अपने पीर (गुरु)के हुक्मसे मैं बुखारा-शरीफकी तीर्थयात्राके लिये जा रहा हू। शुकरुल्ला बीने विश्वास करके उसका स्वागत किया। उसने कान्स्तन्तिनोपलके अपने परिचितोके बारेमें पूछा, जिसका जवाब वाम्बेरीने सतोषजनक दिया। दूसरे दिन खानके बुलानेपर शुकरुल्ला बी वाम्बेरीको साथ लिये दरबारमें गया। वाम्बेरीने वहा सब उमर और सब तरहके बहुतसे आदमियोंकी भीड देखी, जो कि खानके सामने अपना आवेदनपत्र

देनेके लिये आये थे। मी ने जब सुना, कि एक वडा दर्वेश (साधु) हमारे खानको दुआ देने आया है, तो उसने वाम्बेरीके लिये रास्ता दे दिया। मेहतरसे बातचीत करनेसे पहले उसने फातेहा पढा। वहाके दरबारी श्रोताओने 'आमीन' कहकर अपनी दाढ़ियोपर हाथ फेरा। फिर वाम्बेरीने सुल्तानकी मुहर लगे अपने छपे हुये पासपोर्टको पेश किया। मेहतरने इस्लामके खलीफाके प्रति सम्मान दिखलाते हुये मुहरको चूमकर अपने सिरसे लगाया, और उठकर उसे खानके हाथमें दिया। लौटकर फिर वह दर्वेशको दरबार हालमे ले गया। खान ऊची मखमलकी गद्दीपर रेशमी मसनदके सहारे बैठा था। उसके हाथमें एक छोटा-सा सोनेका राजचिन्ह था। वाम्बेरीने उसकी शकलको बिलकुल निस्तेज और सब तरहसे एक बबर अत्याचारी खूसट-जैसी बतलाया है। दर्वेशने सलाम करनेके लिये अपना हाथ उठाया, जिसका जवाब वैसा ही करके खान और उसके दरबारियोने भी दिया। इसके बाद दर्वेशने कुरानके एक छोटे सूरा (अध्याय) का पाठ किया, और 'अल्लाहुम्मा रब्बेना' कहते अन्तमे जोर-की आवाजमें आमीन कहते हुये पाठको समाप्त किया। इसपर चारो ओर 'आमीन कह-कर लोग अपनी-अपनी दाढियोपर हाथ फेरने लगे। अमीन खान अपनी दाढीपर हाथ फेर ही रहा था, कि प्रत्येक दरबारीने 'कबूल बोलगुय (तुम्हारी दुआ स्वीकृत हो) की आवाज लगाई। खानने वाम्बेरीसे यात्राके कुशल-मगलके बारेमें पूछा। दर्वेशने अपना नाम जमाल बतलाया। हजरत जमालको देखकर सब लोग अपनेको कृतकृत्य समझ रहे थे। खानने उसके साथ मुसाफा (हाथ मिलाने) के द्वारा अपनेको धन्य-धन्य समझा। दर्वेशके लिये लोगोने एक सौ सत्तर साल जीनेकी कामना प्रकट की। वाम्बेरीने खानसे खीवाके सुन्नी सतोकी दरगाहोकी जियारत करके जल्दी बुखारा शरीफ जानेकी इजाजत मागी। खानने पैसा देना चाहा, तो दर्वेशने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, किन्तु तीर्थयात्राके लिये सफेद गदहा लेना स्वीकार किया। रास्तेमें भीडके स्वागत-घोषके साथ वाम्बेरी अपने डेरेपर लौटा। उसने अपनी यात्रामें साथी दर्वेशके बारेमें लिखा है—"उनमेंसे हरएकने सेर-सेर भर चावल, दुम्बेकी पूछकी आध सेर चर्बीके अतिरिक्त रोटिया, मूली, गाजर चट किये और पद्रहसे बीस बडे-बडे शोरवाके प्यालोंको गलेके नीचे उतारा। प्यालोंमें हरी चाय डाली जा रही थी।" वाम्बेरीके पास जिज्ञा-सुओकी भीड लगी रहती थी। लोग इस्लामकी राजधानी इस्ताम्बुल (कान्स्तन्तिनोपल) के सतोके बारेमें जानना चाहते थे। कभी-कभी लोग बीमारीसे छूटनेके लिये झाडफूक करानेके लिये भी आते थे। वाम्बेरीने अपनी आखों देखा—खानसे इनाम पानेके लिये बहादुर लोग कटे हुये सिरोको बोरोंमें भरे ले आते थे, जो कभी-कभी आलुओकी तरह रास्तेमें गिर पडते थे। हरएक आदमीको मुर्दोकी सख्याके अनुसार इनाम मिलता था। खीवा छोडनेसे पहले एक बार फिर वाम्बेरीने जाकर खानको आशीर्वाद दिया।

(मुहम्मद फना, तूरासूफी-भतीजा, १८६५ ई०)

मुहम्मद खानको मारकर विद्रोहियोंने मृत तूरासूफीके भतीजे मुहम्मद फनाको गद्दीपर बैठाया। लेकिन अरालियोंकी यह सफलता देरतक नहीं चली। फनाको रूसियोंका समर्थन प्राप्त होनेपर भी साल भर हीमें मार डाला गया, और अरालियोंकी खीवाकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पडा। फनाने ख्वारेज्मका खान बनकर अपना सिक्का चलाया था।

९ सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र (१८६५ ई०)

गद्दीपर बैठते समय सैयद मुहम्मद बीस सालका तरुण था। उसे शासनसे भी ज्यादा बाघके शिकारका शौक था। पैतृक सिंहासनके साथ-साथ उसे लूटमारसे बाजार गर्मवाला राज्य मिला था, और ऊपरसे रूस-जैसी शक्ति सिरपर पहुच गई थी। १८६७ ई०में कॉफमान तुर्किस्तानका राज्यपाल बनकर आया। उसने आते ही अपनी नियुक्तिकी सूचना देते हुये खानको लिखा—सिर-दरियाके पार लुटेरे हमारी भूमिमें बडी गडबडी मचा रहे हैं, इसलिये उनके विरुद्ध हम

अपनी सेना भेजनेका अधिकार रखते हैं। खानने जवाब दिया—सिर-दरियाके दोनो तट हमारे है। लेकिन जबानी दावेको कौन मानता है? उधर रूसी-प्रजा घुमन्तू कजाक जाडोमें बहुत भारी मरूयामें सिरके दक्षिणमें तथा कुवान और यानी-दरियामें अपने डेरे डालते थे। खानकी पर्वाह न करके रूसी सैनिक सिर पार हो डाकुओको दड देने लगे। एक ओर इधर सिरसे दक्षिणकी ओर उन्होने पैर बढ़ाना शुरू किया, और दूसरी ओर कास्पियनके पूर्व तटपर भी रूसी अपने प्रभावको बढाते जा रहे थे। नवम्बर १८६९ ई०में एक रूसी सैनिक टुकडी क्रास्नोवोद्स्कमें उतरकर वहा किला बनाने लगी। उसके बाद उन्होंने दूसरा किला चिकिस्लरमें बनाया। इसी समय वोल्गाकी उपत्यका और उरालभूमिमें दोनकसाकों, कल्मकों तथा कजाकोंके विद्रोह और उनका घोर दमन हो रहा था। भयके मारे लोग अपने गावोको छोडकर भाग रहे थे, जिसके कारण १८७० ई०की गर्मियोंतक कोई व्यापारी कारवा नही गया। रूसी सेना जब दड देने आई, तो पता लगा कि इस विद्रोहमें खीवाके खानका हाथ था। क्रास्नोवोद्स्क किला बनानेके विरुद्ध खानने कुओंमें मुर्दे कुत्तोको फेंककर पानीको विषैला बनाना चाहा था। खीवावाले जानते थे, कि उनकी इस कार्रवाईका जवाब रूसी किस तरह देंगे, इसलिये राजधानी खीवाकी किलाबन्दी कर प्राकारपर बीस तोपें लगा दी गई। खीवाने तलदिक धाराको रोककर वक्षुके प्रवाहको कई धाराओंमें बदल दिया, जिसमें कि उथली हो जानेके कारण रूसी जहाज अराल समुद्रसे वक्षु दरियाके भीतर होकर आगे न बढ़ सकें।

१८७० ई०में जेनरल कॉफमानने कडा पत्र लिखकर धमकी दी, कि अगर बात ठीक-ठाक नहीं की गई, तो हम कडी काररवाई करनेके लिये मजबूर है। खीवाके कुशबेगी (प्रधान-सेनापति) और दीवानबेगी (वजीर)ने उत्तरमे लिखा—"जहा भी उसकी प्रजा ह, वहा रूसी सम्राट्का शासन, इसलिये यानी-दरिया अकचाक् झीलतक—जहापर कि रूसी कजाक घूमत हैं—सम्राट्का है, साथ ही बुकान पहाड, और किजिलकुमसे इकिबई तकके यानी-दरियाके ऊपरका सारा रास्ता बुखाराके साथ की गई सधिके अनुसार सदासे रूसका माना गया है।" लेकिन इस जवाबसे रूसी क्यो सतुष्ट होनेवाले थे? उन्हें तो आगे बढ़ना था, जिसके लिये खीवावाले अपने लूटपाटकी आदतसे मौका देनेको तैयार थे। दश्त (स्तेपी)के विद्रोहको दबानेके लिये रूसियोने उस्तउतमें अपनी सेना भेजी, और तुर्किस्तानके बडे अभियानके लिये सैनिक तैयारी होने लगी। खीवाने रूसियाको कडा देखकर बुखाराको साथ मिलानेके लिये दूत भेजा, जिसे अमीर-बुखाराने रूसियोके इशारेपर जेलमें डाल दिया। खीवाके आदमियोको भी अमीर-बुखाराने बहुत समझाया, कि रूसी बदियोको छोड दो, लूट-मार बद करो और जेनरल कॉफमानके साथ बातचीत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि ताशकन्द भे ो। लेकिन, तरुण खान और दरबारी अपनी अकडमें थे। उन्होंने अमीर-बुखाराकी सीख नहीं मानी।

रूसी अभियान (१८७२ ई०)—१८७२ ई०के वसतमें कर्नल मर्कोजोफके नेतृत्वमें एक मजबूत सैनिक टुकडी कास्पियनमें गिरनेवाली वक्षुकी पुरानी धार—उज्बोइ—की जाच-पडताल करनेके लिये क्रास्नोवोद्स्क बदरगाहसे रवाना हुई। वह आगे बढते हुए बल्खान पर्वतके तीन सौ वेर्स्त पूर्वमें अवस्थित ओतकू चश्मेपर पहुची। फिर वहासे दक्षिणकी ओर मुह करके उशामला इलाकेके सर्कस-तुर्कमानोको दड देते किजिल-अवत किलेपर पहुची। तुर्कमान घुमन्तुओने आक्रमण किया, लेकिन इससे रूसी सेनाको कोई भारी नुकसान नही हुआ। इतनी जाच-पडतालके बाद रूसी पीछे लौट गये। जिस वक्त रूसी सेना कास्पियन तटसे जाकर कराकुम रेगिस्तानके एक भागपर खोज-पडताल कर रही थी, इसी समय वक्षु और सिर-दरियाके बीचवाले महान् रेगिस्तान—किजिलकुम—की भी जाच-पडताल करनेके लिये एक रूसी सेना तुर्किस्तान-शहरसे भेजी गई थी, जिसने मिंगबुलाक और बुकान पर्वतोंकी सर्वे की। दोनो तरफसे रूसियोकी इस कार्रवाईको देखकर सैयद मुहम्मद घबडा उठा। उसने महाराज्यपाल कॉफमानकी उपेक्षा करते अपना एक दूत ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल और दूसरा तिफलिसके महाराज्यपालके पास भेजा, साथ ही महाराजुल मिखाइलको भी लिखा—"कई रूसी अभियान मेरे देशपर चढ़ाई कर रहे हैं। मेरे पास ग्यारह रूसी बदी हैं, जिन्हें मैं

ोजनेके लिये तैयार ह। यदि यह काररवाई रोकी न गई, तो मैं न वदियोको भेजूगा, न लूट-मार
ाद होगी। अगर ये वदी तुम्हारे लिये मेरे विरुद्ध युद्ध करनेका वहानामात्र है, और तुम अपने
राज्यको बढानेपर तुले हुए हो, तो अल्लाहकी जो मर्जी होगी, वही होगा।" खीवाके दूतोको वद
करके रूसी राज्यपालोंने कहा, कि हम कोई चिट्ठी नही लेंगे, जवतक कि रूसी वदी नही छोडे
जाते, और दूतको ताशकन्दके महाराज्यपालके पास नही भेजा जाता। रूसियोसे इस प्रकार निराश
होनेके बाद खीवाके खानने अग्रेजोकी ओर हाथ वढाया और अपने एक प्रतिनिधिको भारतके उप-
राज नार्थबुकके पास भेजकर रूसके विरुद्ध सैनिक सहायता मागी। लेकिन अग्रेज क्या भाग खाये हुए
थे, कि खीवाकी रक्षाके लिये एक महायुद्ध सिरपर लाते। उपराज (वाइसराय)का जवाव था—
'रूसके साथ शाति करो, उनकी मार्गोंको पूरा करो, और उन्हें नाराज होनेका मौका मत दो।"

यद्यपि इस प्रकार खीवाका कोई धनी-धोरी नही था, और केवल अपने वलपर वह रूसियोका मुकाविला नही कर सकता था, लेकिन खीवा (ख्वारेज्म) इतिहासके आरम्भिक कालमे ही अपने पडोसके दो महान् रेगिस्तानो किजिलकुम और कराकुम, तथा निजन अधित्यका उस्तउर्त एव उत्तर-के जनशून्य दश्त-किपचकके कारण बडे-बडे विजेताओके मनोरथको अनेक वार भग करता आया था। अभी भी रूसके लिये अभियान भेजनेमें सवसे कठिनाई इन्ही रेगिस्तानो और निजन भूमियोके कारण थी। वस्तुत ख्वारेज्म एक विशाल रेगिस्तानसे घिरी हुई हरितावली है। ताशकन्द-से ६०० मील, ओरेनवुर्गसे ९३० मील और क्रास्नोवोद्स्कसे ५०० मीलकी यात्रा तै करके खीवा कैसे पहुचा जाय, रूसियोंके लिये यह सबसे वडी कठिनाई थी। यद्यपि अरालमें रूसियोने अपने जहाज तैरा दिये थे, लेकिन उनका बेडा काफी शक्तिशाली नहीं था, और वक्षुकी धार भी उथली थी, जिसमें जहाज नही चलाया जा सकता था। लेकिन खीवाको दड देना आवश्यक था। रूसियोने तीन सेना-स्तम्भ भेजनेका निश्चय किया—(१) प्रधान स्तम्भ तुर्किस्तान शहरसे जेनरल कॉफमानके सचालनमे अपने साथ ३४२० पैदल, ११५० सवार, ६७७ तोपची, बीस तोपें, दो हलकी तोपे, आठ राकेट लिये भेजा गया। इसके दो विभाग थे, जिनमेंसे एक विभागका सचालक जनरल गोलोवात्शोफ जीजकसे चला, और दूसरा विभाग कर्नल गोलोफके नेतृत्वमें कजालिन्स्कसे रवाना हुआ। रसद ढोनेके लिये आठ हजार ऊट—ऊटके मालिकों कजाकोंको एक ऊंटके मरनेपर पचास रूबल देना तै हुआ था, चार स्टीमर भी और इसी सेनाकी महायता करनेके लिये लकडीके बेडोंके साथ वक्षुके ऊपरकी ओर बढ रहे थे।

(२) दूसरा सेना-स्तम्भ कसाक जेनरल आतमन वेरेफ्किनके अधीन ओरेनवुर्ग रवाना हुआ, जो यम्वा पहुचकर अराल समुद्रके पश्चिमी तटपर गया। इस स्तम्भमें ३४६१ सैनिक, १७९९ घोडे, और सात तोपें थीं।

(३) तृतीय सेना-स्तम्भके तीन विभाग थे, जिसमेंसे एक विभागको कर्नल लोमाकिनके नेतृत्व में मगिशलकसे बीशअक्ति, इल्तेइजे, तविनसू होते अइबुगिरकी खाडीमें पहुच ओरेनवुर्गवाले स्तम्भसे मिलना था। बाकी दो विभागोंके दो हजार सैनिक कर्नल मार्कोजोफके सचालनमें क्रास्नो-वोद्स्क और चिकिस्लरसे रवाना हुए थे।

कजालिन्स्कवाला स्तम्भ पहले रवाना हुआ, जो बारह दिनमें यानी-दरियापर अवस्थित इर्किबइमें पहुचा। रास्तेमें इसके कुछ ऊटोंको नुकसान हुआ। वहापर यह सेना ब्लागोवेशृश्चेन्स्क किलेको बना फिर तीन दिन चलकर किजिलकाकमें पहुची। मौसम खराव हो गया, दोपहरको सूयने वरफ-को गला दिया, जिससे ऊटोके लिये चलना मुश्किल हो गया। इस वनस्पतिहीन निर्जन भूमिमें ईंधन-का कही पता नही था। इस मुसीवतमें दो दिन और दक्षिणकी ओर बढनेपर सेना बुकन्दकी पहाडियों-में जा, आगे युसकुदुक कोकपताश, कोपकन्ताश और मिगबुलाक होते तम्दी जा पहुची।

जीजकसे चला प्रधान सेनाग उचमा, फरिश, सि ताव, तिमुरकबुक, वल्तासलदिर चश्मा हो वुखारा सीमापर करातार पर्वतश्रेणीकी ओरसे नूरताउ पहाडीके उत्तरसे प्रदक्षिणा करते आगे बढा। सर्दी वहुत तेज थी, जिससे इस सेनाके भी कितने ही ऊट रास्तेमें मर गये। पानीकी कमीके कारण तेमुरखेकसे जीजकवाली सेनाको दो भागोमें वाटकर आगे वढनेके लिये हुक्म हुआ, इनमेंसे एक भाग विशचगन, यानीकसगन और किदेरीके चश्मोंसे होते आगे वढा, और दूसरे भागने कोशवैगी,

वैमनतती, मस्वी और अरिस्तन्बेल कुदुकका रास्ता लिया। १२ अप्रैलको कुदुकमें दोनो सेनायें मिल गयी। खानने घबडाकर इक्कीस रूसी गुलामोके साथ पत्र लिखकर कजाला भेजा, लेकिन अब तो 'चिडिया चुग गई खेत'वाली बात थी। इतने खर्च और परिश्रमके साथ भेजा गया महाभियान बातो-बातोसे कैसे लौट सकता था? रूसी गुलामोसे पता लगा, कि उनसे बगीचेमें काम लिया जाता और ईरानी गुलामो-जैसा वर्ताव किया जाता था। खानेके लिये उन्हें फल-चावल और कभी कभी गोश्त और चर्बी भी मिल जाती थी। मिगबुलाक और शूरखानासे अच्छा और छोटा समग्र सेनाने खलता और उच्उचकका रास्ता पकड़ा। लेकिन आगे अरिस्तान-बेलकुदुकमें एक पखवारा रुकना पडा। यही रूसियोने ईस्टरके त्योहारको मनाया। किजिलकुमके कजाकोने ८०० नये ऊट दिये, फिर रवाना होकर ६ मईको सेना खलता पहुची। यही कजालासे आनेवाली सेना भी मिल गई। रास्तेमें टूटे-फूटे बुखारी किलोकी मरम्मत करके उसका नाम सत-जाज किला रक्खा गया।

खलता और आमूके बीच ८० मीलका फासला था, लेकिन रास्ता अच्छा नही था। १२० मील तक फैली हुई हवाके झोकेपर इधरसे उधर चलनेवाली बालू सबसे कडी समस्या थी, और पानी भी केवल आदमक्रिल्गान (मनुष्यमार) कूओका था, जो खलतासे २४ मीलपर थे। चारो ओर रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान था, जिसमें कही वनस्पतिका नाम नहीं था—लाल रग-जैसी बालू थी, जिसके कारण इस रेगिस्तानका नाम किजिलकुम (लाल बालू) पडा। रास्तेमें एकाध ही सो भी बुरे कुए थ, जिनसे सेना और उसके पशुओका काम नही चल सकता था। पौने सात घटेके कूचके बाद प्रत्येकको आमू-दरियाके ऊपर उच्उचकमें भेजनेका निश्चय किया गया। लेकिन बालूमें चलना भारी परिश्रमका काम था। ऊपरसे असह्य धूप पड रही थी, इसलिये हरावल सेना १३ मीलसे आगे नही बढ़ सकी, और उसके लिये आदमक्रिल्गनसे मीठा पानी भेजना पडा। एक रूसी लेखकके अनुसार "अवस्था बहुत भयकर हो गई। आगे बढ़ना असम्भव मालूम होता था, और पीछे लौटना भारी शरमकी बात होती। आदमक्रिल्गनमें पानी थोडा था, और मशकोमें भरकर साथ लाया पानी खतम हो चुका था।" अन्तमें सुरक्षाकी एकमात्र आशा वह चिथडाधारी किर्गिज दिखलाई पडा जो कि इर्किबइसे कजालाकी वाहिनीके साथ हो लिया था, और जिसके महत्त्व और गुणका पता जनरल निकोलस और कनल ड्रेश्चेनने पहलेपहल लगाया। किर्गिजने बतलाया, कि रास्तेसे कुछ ही मील दाहिने अल्तीकुदुकके कुए हैं। जेनरल कॉफमानने अपनी जेबी पानीकी कुप्पी देकर कहा, कि यदि इसमें पानी भर लाओ, तो तुम्हे सौ रूबल इनाम दिया जायगा। किर्गिजने वैसा कर दिखलाया, और सेनाकी एक टुकडी अल्तीकुदुक भेजी गई। कुओंकी सख्या कम थी, वह बहुत गहरे नहीं थे, लेकिन उनमें काफी पानी था। पानी निकालकर घोडों और ऊटोंको पिलाया गया, सेनाने भी प्यास बुझाई, फिर कई दिनोतक यहा डेरा डाल दिया गया, और छोटी-छोटी टुकडियोमें दो की जगह ग्यारह दिनमें कॉफमानकी वाहिनी २३ मईको वक्षु (आमू-दरिया)के तटपर पहुची। यात्राकी भीषणताका पता इसीसे लगेगा, कि दस हजार ऊंटोंमें सिर्फ बारह सौ बच रहे। खलतासे आगे सारे रास्तेमें रसदकी चीजें, अफसरोंके असबाब, और गोलाबारूदका सामान बिखरा हुआ था। कई जगहोपर युद्ध-सामग्रीको इस आशासे बालूके नीचे दबा दिया गया था, कि अवश्यकता पडनेपर सैनिकोंको लानेके लिये भेज दिया जायगा। कुछ सप्ताह बाद एक रूसी अफसर इस रास्ते गुजरा, जिसने इसके बारेमें लिखा था—"सारे रास्ते भर ऊटो और घोडोंकी कंकाल तथा सडते हुए शरीर फैले थे। दुर्गन्धसे नाक फटी जाती थी। पडे हुये सामानोके देखनेसे मालूम होता था कि कोई बाजार लगी हुई है।"

खीवावालोंने भी लडनेकी तैयारी की थी, और जबदस्ती लोगोकी भर्ती करके सैनिकोकी सख्या बढाई थी। इस सेनाका एक भाग कुग्रादकी ओर दुर्गा खाडीके पास यानीकलामें गया, जिसका काम था, उस्तउत्तसे आनेवाली रूसी सेनाका प्रतिरोध करना। छ-सात हजार सैनिक अरालके पूर्वी तटसे आनेवाली सेनाके मुकाबिलेके लिये दौकरामें थे। खीवावालोने इन्ही दो जगहोंसे खतरेकी सम्भावना समझी थी। जेनरल कॉफमानके आ जानेकी खबर पा ३५०० तुर्कमानो और कजाकोको उच्उचकमें भेजा गया, जिनमेंसे पद्रह सौका कमाडर दीवानबेगी मुहम्मद नियाज था, और दो हजारका

दीवानबेगी मुहम्मद मुराद। यह सेनायें उच्उचकसे पूर्वमें सरदावाकुल (झील)के परे जाकर जम गयीं, लेकिन पहली ही झडपमें थोडेसे गोले-गोलियोंकी बौछारसे इनके पैर उखड गये। शूरखानसे वक्षुके दाहिने तटसे रूसी सेना चली, और चौथे दिन अककामिश पहुची। वक्षुपार शेखआरिक किलापर थोडेसे गोलोंके छोडनेकी जरूरत पडी, और शत्रु वहासे भी भाग गया। नदी उथली थी, केवल छाती भर पानी था। कितने लोग पैदल ही नदीमें घुसकर पार हो गये, और कुछने दुश्मनसे पकडी नावोंसे या साथ लाये बेडेको बाधकर परले पार जा खीवावालोंके डेरेपर अधिकार कर लिया। वहा उन्हें चावल और नमक भर मिल पाया। रूसियोंके केवल दो घोडे मारे गये, जिन्हे भूखे सिपाहियोंने तुरन्त पकाकर खा लिया।

२८ मईको शूरखानाके आदमियोंके एक प्रतिनिधि-मडलने रूसी सेनापतिसे मिलकर तुर्कमानो और खीवावालोंके अत्याचारकी शिकायत की। व्यवस्था कायम करनेके लिये कसाक सैनिकोंकी एक टुकडी भेजी गई, जो वहा चार दिनतक रही। रूसियोने अभयदानकी घोषणा करके निवासियोमें ऐसा विश्वास पैदा कर दिया, कि लोग सेनाके खानेके लिए ढोर, अगूर आदि फल, तथा जानवरोंके लिये चारा लाने लगे।

आगे शेखआरिकमें थोडीसी झडप हुई। यहीपर खानका पत्र मिला, जिसमें कहा गया था, कि मै जेनरलकी आज्ञा-पालन करनेके लिए तैयार हू। लेकिन जेनरल कॉफमानने कहा, कि अब बात खीवामें ही होगी। ५ जूनको फिर सेना आगे रवाना हुई, और शेखआरिकसे चन्द घटा चलनेपर हजारास्प पहुच गई। यहा भी कुछ गोले छोडने पडे, और खीवावाले सैनिक भाग खडे हुये। खीवाका यह सबसे मजबूत किला था। इतिहास बतलाता है, कि हजारास्प (सहस्राश्व) ने कितने ही विश्वविजयी शत्रुओंके दात खट्टे कर कितनी ही बार ख्वारेज्मको बचाया था। लेकिन अब हम बारूदके युगमें आ गये थे, जब कि हजारास्प अपनी करामातको तीर-धनुषके युग हीमें दिखला सकता था। खीवाके छोटेसे राज्यके हाथमें शक्तिशाली आधुनिक हथियार नही थे, इसलिये वह रूसियोंका कैसे मुकाबिला करता? हजारास्पके किलेके तीन तरफ पानीसे भरी गहरी खाई थी, और एक तरफ तीन फैदम (३×६=१८ फुट) मोटी दीवार। यहा अवश्य कडा प्रतिरोध किया जा सकता था, लेकिन नागरिकोंने सर्वनाशके डरसे किलेको समर्पण कर दिया। रूसियोने वहा कासे-पीतलकी चार अच्छी तोपें, कुछ गाडिया, गोला-बारूदके एक बडे ढेरके साथ हजार पूद (४०० मन) गेहू, ६०० पूद (२७२ मन) चावल और घोडोंके लिये ८०० पूद (३२० मन) बाजरा पाया।*

६ जूनको जेनरल कॉफमानको खबर मिली, कि ओरेनबुर्गकी वाहिनी भी आ गई। अगले दिन अमीर-बुखाराने कॉफमानके पास बधाई भेजी। ९ जूनको फिर सेना कूचकर अगले दिन यगीआरिक झीलके तटपर पहुच गई।

कर्नल मार्कोजोफको बुगदैली और ऐदिनके रास्ते उज्बोइ (कास्पियनकी ओर जानेवाली वक्षुकी सूखी धार)से होते तोपियातान, इगदी, ओर्ताकुया, ददुरसे आनेपर जामुकशिरका ध्वस्त किला मिला, जो कि खीवासे चालीस मील पश्चिम है। यहा पहुचकर मार्कोजोफको तुर्किस्तानसे आनेवाले सेना-स्तम्भकी प्रतीक्षा करनी थी। कर्नल मार्कोजोफकी सेना करीब आधे रास्तेपर इगदी-तक सुरक्षित पहुची, और तेक्के-तुर्कमानोको हराकर उसे बहुतसा लूटका सामान मिला। लेकिन इगदी और ओर्ताकुयाके बीचमें भयकर बालुकाराशिसे मुकाबिला पडा। इस दुर्गम रास्तेसे गुजरकर सबसे पहले पहुच खीवा जीतनेकी जल्दी थी, जिसका श्रेय काकेशसकी सेनाको मिला, जो कि कास्पियनके पूर्वी किनारेकी बन्दरगाहोंसे रवाना हुई थी। लेकिन बीचकी रेगिस्तानी भूमिकी भयकर धूप और जलके अभावने सेनाके बढावको रोक दिया। ओर्ताकुयासे आगेके रेगिस्तानकी भीषणताको जानकर सेनाको क्रास्नोवोद्स्क लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। उस समय सैनिक भारी सख्यामें बीमार होकर ऊटोपर ढोये जा रहे थे, और उधर तेक्के-तुर्कमानोने हमला शुरू कर दिया। सारे सैनिक किसी-न-किसी बीमारीमें फसे थे, जिनमें साठ तो लूसे भर गये। सेना

* २॥ पूद=१ मन

बिना हथियारके समुद्र तटपर लौटी। ऊटोको तुर्कमान लूट ले गये, और रसदका बोझा हलका करनेके लिये रेगिस्तानमें फेंक दिया गया था। काकेशसकी सेनाकी क्या दशा हुई थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि एक स्टाफ-अफसरने अपने सारे चादीके प्लेटोंके सेटको फेंक दिया था। कुछ तोपोंको बालूके नीचे गाड दिया गया। बन्दूकोंमेंसे कितनी ही पीछे कजाको और तुर्कमानोने लौटाईं। यद्यपि यह अभियान असफल रहा, लेकिन बुखाराकी सेनापर अपनी धाक जमाकर इसने उसे खीवाकी मददके लिये जानेसे रोक दिया।

कास्पियन तटसे कर्नल लोमाकिनने उस्तउर्तके रास्ते कूच किया। यह सेना कास्पियन तटपर अवस्थित किंद्रेली किलेसे तीन भागमें बटकर आगे-पीछे २७, २८ और २९ अप्रैलको रवाना हुई। धूप और पानीकी इसे और भी तकलीफ हुई। इसका रास्ता कौनदी, सेनेकसे, बिशअक्ति, कमिस्ती, करस्त्चिक, सइकुयु, बुस्साग, कराकिन, किनिर, अल्पइमास, अकमेचेत, इल्तेइजी, वाइलियर, किजिलअगिर, बैचगिर, मेन्दली, अलान, इलिबइ (ऐंबुगिर खाडीके दक्षिण-पश्चिम)से था। बिशअक्तिमें कजाकोको आक्रमण करके पिटना पडा। अलानके पास सेना राजुल बेकोविचके बनवाये किलेके ध्वसावशेषके पाससे गुजरी। जेनरल वेरेत्किन ओरेनबुगसे अपनी सेना लेकर आ रहा था। उससे बातचीत करके ऐबुगिरसे आगे बढ़ कुग्राद पहुची, और चन्द घटो बाद ओरेनबुर्गकी सेना आ मिली। इस सेनाको उस्तउर्तकी चार सौ मील लम्बी रेगिस्तानी अधित्यकाको रसद-पानीकी कमीके साथ पार करना पडा, लेकिन उन्तीस दिनोमें उसने यह यात्रा पूरी कर ली।

ओरेनबुगकी बाहिनी ११ अप्रैलको वहासे रवाना हुई थी। ओरेनबुगसे अराल-समुद्र तकका रास्ता अब रूसियोकी भूमिमे होनेके कारण सुपरिचित था, इसलिए इस सेनाको अपनी यात्रा पूरी करनेमें कम तकलीफ हुई। पहले यह पूबकी ओर बढती बरसुककी बालुकाराशितक गई, फिर वहासे मुडकर अरालके पश्चिम उर्गाकी खाडीपर पहुची। जेनरल वेरेव्किनने घोषणा निकाल दी थी, कि कराकल्पक और तुर्कमान घुमन्तू अपने-अपने डेरो और घरोमें रहे, तथा सेनाके साथ केवल रूसी कसाक शरणार्थी ही चलें। कबीलोंके कितने ही सरदार रूसी सेनाके साथ आ मिले थे, जिन्होंने यात्रामें बडी सहायता की। जेनरल वेरेव्किनकी सेना ऐबुगिर पार हो यानीकलाको सर और ध्वस्तकर कुग्रादमें पहुची। यहा खीवावालोकी काफी सेना थी, लेकिन रूसियोंके आते ही वह भाग खडी हुई, और शहरपर निर्विरोध अधिकार हो गया। शहरके प्राकार और घर पहले हीके सघर्षमें ध्वस्त हो चुके थे। रूसी जेनरलने खानके प्रासाद और जेसाउल मामितके घरको तुडवा दिया। शहरमें सिर्फ एक हजार पूद (४०० मन) चावल और ज्वारकी रोटिया मिली। लोग पहले ही भाग गये थे, लेकिन रूसियोंके अच्छे बर्तावकी खबर पाकर वह जल्दी ही लौट आये।

यहीपर जेनरलको रूमी बेडेके बारेमें बुरी खबर मिली। २९ अप्रैलको बेडेने सिरके मुहानेको छोड दो दिन बाद तकमकअता द्वीपके आगे ऐंबुगी खाडीमे पहुच लगर डाला। कुछ दिन ठहरनेके बाद ९ मईको वह उलकुम-दरियाकी पश्चिमी शाखा किर्चाकिन-दरियामें घुसा, और अककला नामक एक छोटेसे किलेके सामने आया। जहाजी तोपोने बमवर्षा करके किलेके भीतर रहनेवाली सेनाको भगा दिया। फिर बेडा उलकुन-दरियामें होकर ऊपरकी ओर चला। कुग्राद नगर ५० वेर्स्त (८७ फर्सख) के करीब था, किन्तु नदीमें पर्याप्त पानी नहीं था, इसलिए वहीं लगर डालना पडा। कुछ आदमी जहाजोंसे उतरकर आसपासकी भूमिके बारेमें पता लगानेके लिये भेजे गये, जिन्हे दुश्मनोने धोखेसे पकडकर मार दिया। इनकी लाशें पीछे कुग्रादमें दफनाई गयी। अब फिर बेडा आगे चला। कुग्रादसे ३० वेर्स्त पहले ही खोजेइलीमें खीवाके चार-पाच हजार सैनिकोंके साथ मामूली झडप हुई। आगे मगितमे पहले यामूद तुर्कमानोंसे लडाई हुई। रूसी शहरपर अधिकार करके शत्रुओको पीछा करते ही रहे। एक टुकडी किताई (करागोसकी नहर)की ओर बढ़ी, और दूसरीने कर्नल स्कोबेलेफके नेतृत्वमें किलिज-नियाजबीकी ओर पीछा किया। आगे बढनेपर गुरलान आया। यही मानवी मुख्य

ेना थी, जिसपर खीवावालोकी सारी आशाये केंद्रित थी। लेकिन इस सेनाने भी रूसियोका ामममात्र ही प्रतिरोध किया। खानने जेनरल वेरेव्किनके पास चिट्ठी भेजकर तीन-चार दिनकी विराम-संधिकी वात करते हुये कहा, कि हमने जेनरल कॉफमानके पास भी इसके वारेमें निवेदन किया हैं। लेकिन जेनरलने अपने वढावको जारी रक्खा। कात और काशकुपिरके रास्ते वह आगे बढ़ा। वहा कितनी ही वार दुश्मनसे झडप करते वहुत-सी नहरोको पार करना पडा। रूसियोने चौवीस घटेके भीतर किलिज नियाजवी नहरपर १८९ फुटका वेडेवाला पुल तैयार किया। ७ जूनको खीवा तीन मीलसे भी कम रह गया था। वहा खानके वागमें जेनरल वेरेव्किनने डेरा डाला। किलेसे तोपें दगने लगी। एक फटे गोलेसे जेनरलके सिरमें भारी चोट आई। रूसी तोपखानेने भी जवाव दिया। नागरिकोका प्रतिनिधिमडल रूसी सेनापतिसे मिलने आया। उसने वतलाया, कि खान भाग गया है, नगरमें वडी वदअमनी फैली हुई है। वेरेव्किनने तुरन्त गोलावारी वन्द कर दी, तथा दूतमडलको कहा, कि जेनरल कॉफमान ही शाति दे सकते है, उन्हीके पास जाओ। साथ ही यह भी धमकी दी, कि किलेकी तोपोको वन्द करो, नही तो दो घटेके भीतर हम नगरपर गोलावारी करने लगेंगे। दूसरे नागरिक-मडलने आकर कहा, कि तुर्कमान सैनिक हमारी वात माननेके लिये तैयार नही हैं। दस वजे राततक गोलवारी होती रही। उधर कॉफमानका पत्र आया, कि हम खीवासे सिर्फ १६ वेर्स्त (२ ७ फर्संख) पर यगीआरिकपर है, पूवद्वारसे तीन मीलपर अवस्थित पुलपर आकर मिलो।

जेनरल कॉफमानने ६ जूनको ही ओरेनवुर्गकी सेनाके आनेकी खवर सुन ली थी। यगीआरिकमें उसके पास खानका चचेरा भाई ईनक इरताश अली खानका पत्र लेकर आया, जिसमें कहा गया था, कि मैं जारकी प्रजा हू, यामूद मेरे हाथमें नही है, कल मैं स्वय सेवामें आ रहा हू।

शहरमें सचमुच ही अराजकता फैली हुई थी। प्रतिरोध और समर्पणके लिये तैयार लोगोके दो दल हो गये थे, जिनके बीच भीषण सघर्ष हो रहा था। ईनकके लौटकर आनेसे पहले ही खान राजधानी छोडकर भाग गया था। दीवानवेगी मतमुराद प्रतिरोध-पार्टीका अगुवा था। खानका भाई अताजान तिमूर, जो सात महीनेसे वदीखानेमें पडा था, अव खान वनाया गया था। उसका चचा सैयद अमीरुलउमरा सयुक्त शासकके तौरपर काम कर रहा था। दोनो चचा-भतीजे समर्पण-पक्षपातियोंके मुखिया थे। अगले दिन सबेरे ईनक इर्तसली और दूसरे अमीरोने जेनरल कॉफमानके पास जाकर अधीनता स्वीकार की।

जेनरल वेरेव्किनने अपनी सेनाके एक वडे भागको तुर्किस्तानी सेनासे मिल जानेके लिये भेजा, वाकियोंके ऊपर किलेसे गोलावारी होने लगी। रूसियोने भी तोपोंको छोडकर उसका जवाव दिया। वह खीवाके उत्तरी दरवाजे शाहवादको तोडकर नगरके भीतर घुस गये। कर्नल स्कोवेलेफ सडकसे महलकी ओर चला। उधर जेनरल कॉफमानने हजारास्प दरवाजेपर पहुचकर विजयीके तौरपर नगरमें प्रवेश किया। उस समय नगरमें झडे-पताके फहरा रहे थे, वाजे बज रहे थे। खानके अन्तःपुर (हरम) और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये रूसियोने गारद नियुक्त कर दिया और सैनिकोंने नगर-प्राकारपर अधिकार कर लिया। जेनरलके हुक्मपर लोगोंके हथियार छीने जाने लग। नगरके बडे मैदानमें रूसी सेनाने जमा होकर सम्राट्के लिये दुआ और धन्यवादकी रसम अदा की। कॉफमान खानके दरवार-हालमें पहुचा, जहा नागरिकोंके कितने ही प्रतिनिधि वधाई देनेके लिये आये। सैयद मुहम्मद खान भागकर यामूदोंमें चला गया था, इसलिये रूसी जेनरलने अताजान त्युराको अस्थायी खान बनाया। उसने सैयद मुहम्मदके पास सदेश भेजा, कि मैं तुम्हें खान पदपर पुन स्थापित करनेके लिये तैयार हू, इसपर चन्द घटों बाद खान आ मौजूद हुआ।

खान जडाऊ जीन लगे घोडेपर चढकर अपने महलके वगीचेतक आ जेनरल कॉफमानके तम्बूकी ओर जानेवाले रास्तेके छोरपर उतर पडा। फिर अपनी टोपी उतार पासमें पहुचकर उसने कॉफमानके सामने घुटने टेक दिये। कॉफमान उस वक्त एक कुर्सीपर बैठा रहा। उसने अपने पराजित शत्रुके साथ वीरोचित वर्ताव नही किया। खान घुटना टेके कालीनपर वैठ गया। वह तीस वर्षका

तरुण था। उसका चेहरा असुन्दर नहीं था। चौड़े चेहरेपर मगोलायित आखें कुछ तिर्छी थी, लेकिन नाक तोते-जैसी थी। वह मुखपर छोटी पतलीसी काली दाढ़ी-मूछ थी। कदमें वह छ फुटका लम्बा-तगडा जवान था। उसके सीधे-सादे-जीवनका बुखाराके अमीरसे मुकाबिला करनेपर आश्चय होता था। उसका सबसे बडा शौक था--सुन्दर तुर्कमान घोडोसे अपने अस्तबलको भरे रखना, और कभी-कभी नई बीबी लाना। एक सौ रखेलियोंके अतिरिक्त इस्लामी शरीयतके अनुसार उसकी चार बीबिया राज्यकी चारो जातियोकी थी। खानके राज्यकी आमदनी उस समय नब्बे हजार रूबल (पैंतालीस लाख पौंड) थी। किजिलकुमके घुमन्तुओको छोडकर उसके राज्यमें पाच लाख आदमी बसते थे। उसे पढने-लिखनेका भी शौक था, और उसके पुस्तकालयमें तीन सौ जिल्द हस्तलिखित ग्रथोंके थे, जिनमेंसे अधिक इतिहासपर, सो भी फारसीसे तुर्कीमें अनुवादित थे।

जेनरल कॉफमानने खानकी सहायताके लिये एक शासन-परिषद् कायम कर दी, जिसमें तीन रूसी (लेफ्टिनेंट-कनल इवानोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल पोशारोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल खोरोशिन) और तीन खीवावाले सदस्य (दीवानबेगी मतनियाज, ईनक इतसअली और मेहतर अब्दुल्ला बी) थे। मतनियाज इनमें सबसे योग्य था। इस परिषद्का अध्यक्ष नामके लिये खान था, नहीं तो असली अध्यक्ष कनल इवानोफ था। इस्लामी शरीयत और स्थानीय राज्यपालोकी नियुक्तिका अधिकार खानको दिया गया था। रूस-विरोधी मतमुराद और रहमतुल्लाको बंदी बनाकर पहले कजाला, फिर रूस भेज दिया गया। अताजान रूसी सेनामें शामिल हो गया।

रूसियोने खीवापर विजय प्राप्त करके वहाके तीस हजार गुलामोको मुक्त कर दिया। उन्हे पाच-छ सौके दलमें क्रास्नोवोद्स्क भेजकर वहासे जहाजोपर ईरान भेज दिया जाता। पहले जो दो दल भेजे गये थे, उनमेंसे एकपर तुर्कमानोंने प्रहार करके कितनो हीको मारा और कितनोको पकडकर फिर गुलाम बना लिया। रूसियोके खीवा छोडनेपर मुक्त होकर वहा रहते सैकडो गुलाम मार डाले गये।

अन्तमें खीवाने सधिपत्रपर हस्ताक्षर किया, जिसमें खानने अपनेको जारका वफादार सेवक रहनेका वचन दिया और यह भी स्वीकार किया, कि मैं किसी भी दूसरी विदेशी-शक्तिसे व्यापार आदिकी सधि नहीं करूगा, न रूसियोकी स्वीकृति या जानकारीके बिना कोई सैनिक अभियान सगठित करूगा।

राज्यकी सीमा निर्धारित हुई थी--अराल समुद्रतक वक्षुकी सबसे पश्चिमी धारा। अरालके तटसे होते उर्गा अन्तरीप तथा उस्तउर्तके उत्तरी छोरतक--वक्षुकी पुरानी धारासे दाहिने तटकी सारी भूमि रूसको मिली, जिसके कुछ भागको इच्छा होनेपर रूस बुखाराको दे सकता था। वक्षुमें नौसचालनका अधिकार सिर्फ रूसको था, व्यापार और कारखाना बनानेकी भी उसे पूरी स्वतत्रता थी। रूससे भागे हुये अपराधीको लौटा देना खीवाने स्वीकार किया। दासता-प्रथा बन्द कर दी गई। हरजानेमें बाईस लाख रूबल (दो लाख चौहत्तर हजार पौंड) देना तै हुआ, जिसमें पहले दो सालोतक लाख-लाख रूबल, फिर १८८१ ई०तक क्रमश बढाते हुये दो लाख सालाना अदा करना था।

खीवाके साथ जो सधि हुई थी, उसे पीतरबुर्गमें प्रकाशित होनेसे पहले ही जेनरल कॉफमानने "तुर्किस्तान गजेत" में प्रकाशित कर दिया था। इससे मालूम होगा, कि रूसके दूर-दूरके महाराज्यपालोंको कितने विशेष अधिकार प्राप्त थे।

इस प्रकार १८७२ ई०में खीवाकी स्वतत्रता समाप्त हुई। खीवाके राज्यमें सत, उज्बेक, कराकल्पक और तुर्कमान चार जातिया रहती थी, जिनमेंसे सत (फारसीभाषी) अधिकतर व्यापारजीवी थे, और सैनिक तौरसे उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं था। बाकी तीन जातिया लड़ाकू और बहुत कुछ घुमन्तू थीं। वही उज्बेक यहा भी थे, जो कि बुखारा और खोकन्दके राज्योंमें रहते थे। कराकल्पक निम्न-वक्षु-उपत्यकामें अराल समुद्रतक फैले हुये थे। बोल्शेविक-क्रांतिके बाद जब जातियोंके अनुसार राजनीतिक इकाइयां बनने लगीं, तो सभी उज्बेकोकी भूमिको मिलाकर उज्बेकिस्तान गणराज्य बना दिया गया, जिसकी राजधानी ताशकन्द हुई। कराकल्पकोंकी सख्या

थोड़ी थी, लेकिन उन्हें भी उज्बेकिस्तान गणराज्यमें कराकल्पकियाके नामसे अपना स्वायत्त गणराज्य बनानेका मौका मिला। ईरानकी सीमातक तुर्कमान—यामूद, तेक्के आदि—कबीले रहते थे, जिन्होंने पीछे अपना तुर्कमानिस्तान गणराज्य स्थापित किया, लेकिन खीवाके सर होनेके बाद ही तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार नहीं की।
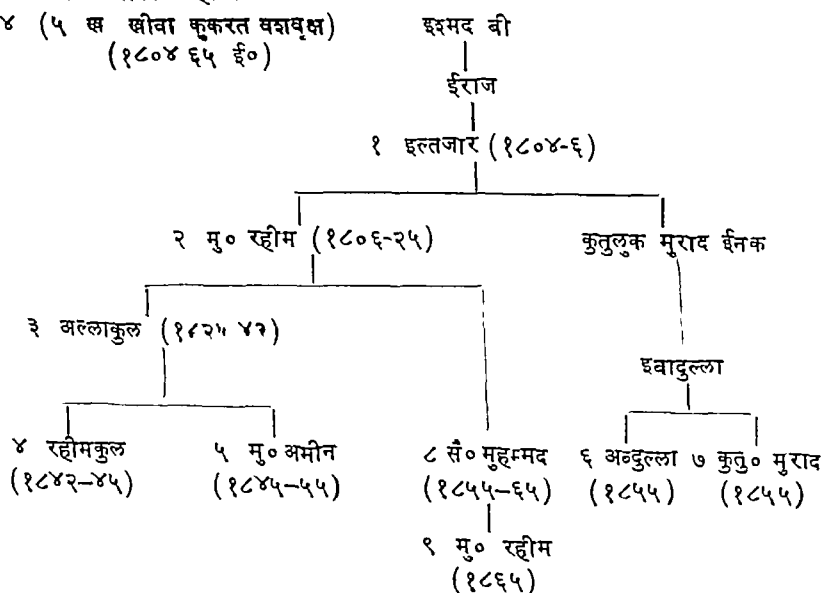
स्रोत-ग्रंथ

१ ओत्चेत ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्केस्ताने (व व व वर्तोल्द, "ज० रोस्० अकद० इस्त० मतेरि० कुल्तुरी" जिल्द २, पृष्ठ २०)
२ History of Mongol (3 vols, H H Howorth, London 1876-88)
३ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
४ La rivalite anglo-russie an XIX siecle en Asie (A M F Rouire, Paris 1908)

अध्याय ६

तुर्कमान

१ तुर्कमान-भूमि

१८७३ ई०में खीवाने जारकी अधीनता स्वीकार कर ली, इससे चार साल पहले १८६९ ई०में कास्पियनके पूर्वी तटपर क्रास्नोवोद्स्कका प्रसिद्ध बन्दर स्थापित हुआ था। जारशाहीने क्रास्नोवोदस्कसे मंगिशलक प्रायद्वीपतक बीच-बीचमें रूसियोंकी बस्तिया और किलेबंदिया कायम कर दी थी। खीवाके पतनके बाद मध्य-एसियामें रूसी साम्राज्यकी सीमा वक्षुकी धाराके साथ-साथ थी। लेकिन कास्पियन और वक्षुके बीचकी भूमिपर अभी भी रूसियोंका अधिकार नही हुआ था। वहा अधिकतर घूमन्तू-जीवन वितानेवाले तुकमान रहते थे। यह भूमि एक त्रिकोणकी शकलमें है, जिसके सिरेपर खीवा है, और दो भुजाओमें एक कास्पियन तट और दूसरी वक्षुकी धारा। इस त्रिकोणका आधार बलखसे दक्षिण-पश्चिमसे लेकर कास्पियनके कोनेतक चला गया है। यह सारी भूमि दो लाख चालीस हजार वर्गमील होनेके कारण बहुत विशाल है, लेकिन इसके उत्तरी भागकी सबसे अधिक धरती कराकुमका रेगिस्तान है। यद्यपि इस भूमिको बिलकुल बालूकी भूमि नही कह सकते, क्योकि कही-कहीपर इसकी वज्र जैसी भूमिपर घोडोकी टाप पडनेपर जोरकी आवाज सुनाई देती है, हा दूसरी जगहोपर केवल बालू-ही-बालू है, जिसका कराकुम या कालाबालू नाम रगकी समानताकी वजहसे पडा। वसतमें वर्षा होनेपर इस भूमिमें जगह-जगह हरियाली, लम्बी घास तथा तरह-तरहके फूल दिखाई पडते है। इस भूमिको इस अवस्थामें केवल पानीके अभावने पहुचाया है। यदि पानी होता, तो यहा की चरागाहोमें असख्य भेडें और दूसरे जानवर पल सकते थे। यह रेगिस्तान किसी समय मध्य-एसियाके विशाल समुद्रके भीतर था। उस समय आसपासके पहाडोसे निकलनेवाली नदिया इस महासागरमें गिरती थी, लेकिन अब वह हमारी पुरानी सरस्वतीकी तरह सूखे बालूमें विलीन हो जाती हैं। मुर्गाब और ताजन्दकी नदियां अफगानिस्तानके पहाडोमे निकलकर उत्तरकी ओर बहते कराकुमके रेगिस्तानमें गायब हो जाती है। कितनी ही और भी छोटी-छोटी नदिया इसी तरह अपने अस्तित्वको खोती हैं। पुराने समयमें इस मरुभूमिके पश्चिमी भागको वक्षुकी धारा सिंचित करती थी, जब कि वह कास्पियनकी मिखाइलोव्स्की खाडीमें गिरती थी। हम जानते है, चिङ्गिस् के हमलेके समय १३वी सदीमें वक्षुकी एक शाखा कास्पियनमें गिरने लगी। वसतके थोडेसे समयको छोडकर यह सारी भूमि प्राय वनस्पतिहीन हो जाती है, और केवल थोडेसे कटीले वृक्ष, ऊटोके खाने लायक कुछ छोटी-छोटी झाडिया और फरास (झाऊ)के कितने ही वृक्ष जहा-तहा दिखलाई पडते हैं। जगली जानवरोमें यहा क्याग (जगली गदहे), कई तरहके हरिन, जिनमें कुछ भेडोंके बराबर छोटे-छोटे मिलते हैं।

रेगिस्तानमें कारवाके रास्तोपर जहा-तहा कुयें हैं, या यो कहिये कि कुआके जलके सुभीतेके कारण उधरसे कारवा पथ जाता है। ऐसे ही पानीके स्थानोंपर कितने ही पक्षी उडते और चहचहाते मिलते हैं, नहीं तो चारो ओर असह्य नीरवता छाई रहती है। बालूके न उडते समय आकाश शुद्ध रहता है, और दूरका क्षितिज नजदीक दिखलाई पडता है। गर्मीमें मृगतृष्णाकी हिलती हुई लहरें पथिकको मृत्युकी ओर आह्वान करती हैं। कराकुममें दिसम्बर और जनवरीमें सख्त सर्दी पडती है, जब कि तापमान हिमबिन्दुसे ५० से० नीचे चला जाता है। गर्मी भी वहा हद

र्जेकी होती है—लू आदमियोकी जान ले लेती है, और बालूके अधडमें पडनेपर साम लेना मुश्किल हो जाता है। इस मरुभूमिमें मनुष्यके लिये बहुत प्राचीन कालसे जीवनका रास्ता रुका हुआ है। यदि इससे कोई फायदा था, तो यही, कि ख्वारेज्म बहुत दिनोतक बाहरी शत्रुओके आक्रमणसे बचा रहा। लेकिन जान पडता है, अब कराकुममें विराजती मृत्युकी नीरवता अधिक दिनोंतक नही रह सकेगी। खीवाके पास वक्षुसे उज्बोई होते कास्पियनमें मिलनेवाली नहरके बनानेमें आधुनिकतम यत्रोका उपयोग किया जा रहा है, और कुछ ही वर्षोमें वक्षुका बहुतसा पानी कराकुमके एक बहुत बडे भागको सरसब्ज बनानेमें सफल होगा। लेकिन सोवियत रूस इतने हीसे सतुष्ट नही है, बल्कि जैसा कि पहले हम बतला चुके है, वह चार सौ फुट ऊचे बाधको बना कर ओब और येनिसेइके अधिकाश पानीको ध्रुवीयमहासागरमें जानेसे रोककर कजाकस्तान और कास्पियन तटतक फैले एक समुद्रके रूपमें बदलना चाहता है। बलकाश, और अराल समुद्रको अपने गर्भमें लेते यह महासमुद्र कास्पियनतक जब फैल जायगा, तो मध्य-एसियाके विशाल रेगिस्तानोका पता भी नही रहेगा। इस योजना से पहले ही सोवियत कालमें कराकुमके कुछ भागोको अच्छी चरागाहोमें बदल दिया गया। जाडेके महीनोमें तापमानका हिमबिन्दुसे दर्जनो डिग्री नीचे जाना इसमें सहायक हुआ। कराकुमके रेगिस्तानमें जहा-तहा उगनेवाले वनस्पति और घासें बतलाती है, कि धरतीके नीचे वहा पानी भी है। लेकिन पानी अधिकतर बहुत खारा है, जिसे पशु और प्राणी पी नही सकते। रूसी वैज्ञानिकोने इस खारे पानीको मीठे पानीमें बदलनेके लिये जगह-जगह कूओपर सीमेंट किये हुये बडे-बडे तालाब बनाये, और जाडोमें बर्फ जमा कर मीठे पानीको नमकसे अलग करके पशुओ और प्राणियोके लिये जमीनदोज तालाब स्थापित किये, इस प्रकार वहा लाखो पशु पलने लगे।

लेकिन, तुर्कमानोकी भूमिका कुछ दक्षिणी भाग ऐसा भी है, जहा रेगिस्तान नही है। कास्पियनके दक्षिण-पूर्वमें गूरगान और अतरक नदियो द्वारा सिंचित भूमि है, जो यद्यपि समुद्रके पास दलदली है, लेकिन ऊपरकी ओर बडी सुन्दर उपत्यकायें है। एक पश्चिमी यात्रीने इस भूमिमें चलते हुये लिखा था—"हमारा मार्ग हरे-भरे खेतों और सुन्दर स्वाभाविक चरागाहोके भीतरसे था, जिनकी पहाडियोमें बडे कोमल रगके बाज (ओक)के किसलय शोभा दे रहे थे। जहा-तहा हरा मखमली फर्शसा बिछा मालूम होता था।" कराकुमकी नीरव और निर्जीव भूमिके अतिरिक्त ऐसी भूमि भी थी, जिसमें तुर्कमान घूमा करते थे। ईरान और तुर्कमानिस्तानकी सीमापर कोपेकदाग पर्वतमाला है, जिससे निकलनेवाली नदियोने किजिल अरबतसे लेकर गियाउर-तककी एक सौ सत्तासी मील लम्बी और पद्रहसे पचीस मील चौडी भूमिको बहुत ही उर्वर बना दिया है। इस प्रदेशको अक्कलकी हरितावल (ओसी) कहा जाता है। जहासे मुगाव पहाडोको छोडकर रेगिस्तान ओर बढती है, वहीपर मेवकी प्रसिद्ध हरितावल है, जिसे दुनियाकी अत्यन्त उर्वर भूमियोमें माना जाता है। ऐतिहासिक कालमें मेवके महत्त्वको हम देख चुके है। बुखाराके अमीर मुरादकी सेनाने १७८४ ई०में जब आक्रमण करके मेर्वके इलाकेको बरबाद कर दिया, तबसे इस उजडी भूमिके स्वामी तुर्कमान हो गये। मेव-हरितावल ईरानकी उत्तरी सीमासे बहुत थोडी ही दूरपर है, दोनोके बीचमें एक छोटी-सी पर्वतशृखला है, जिसको पार करनेमें कभी किसी आक्रमणकारीको रुकावट नही हुई। इस पहाडकी चढ़ाई इतनी धीरे-धीरे है, कि आदमीको ऊपर पहुचनेमें वह नही-सी मालूम होती।

२ तुर्कमान कबीले

पीछे हम बतला चुके है, कि तुर्कमानोके मूल पुरुष गूज या आगूज बहुत पुराने समयमें अल्ताईकी तरफसे अराल और कास्पियन समुद्रकी ओर आये थे। सल्जूकियोके नेतृत्वमें इनका प्रभाव बहुत बढा और ये उत्तरी ईरान तथा मेर्वसे कास्पियनतक फैल गये। १९वी सदीके आरम्भमें भी इनमेंसे अधिकाश अभी घुमन्तू ही थे। करा और येली इन्ही तुर्कमानोंके पूर्वज थे, जिन्होने सुल्तान सजरको ११५३ ई०में अन्दखूय और मेमनामें हराकर बन्दी बनाया

था। पिछली शताब्दियोंमें इनके कुछ कबीले मगिशलक प्रायद्वीपमें घूमा करते थे। अपने घुमन्तू और लड़ाकू जीवनके कारण ये बाहरी प्रभावसे बहुत कम प्रभावित हुये। कभी इन्होंने ईरानी शाहोंकी अधीनता स्वीकार की, और कभी खीवाके खानोंकी। शाह अब्बास (१५८५-१६२६ ई०) ने इन्हें कोपेतदागकी उर्वर उपत्यकासे भगाकर वहां पंद्रह हजार लड़ाकू कुर्दोंको ला बसाया, जिसमें कि वह तुर्कमानोंको घुसने न दे। लेकिन तुर्कमान अपने स्वभावसे लाचार थे। नादिरशाह खूनसे स्वयं तुर्कमान था। २०वीं सदीके आरम्भतक चले आये ईरानके काजार राजवंशका संस्थापक आगा मुहम्मद (१७९६ ई०) स्वयं तुर्कमान था। उसने सभ्यताके महत्त्वको समझकर तुर्कमानों को भी उस रास्ते ले जाना चाहा, लेकिन उसमें सफल नहीं हुआ। उसके उत्तराधिकारी फतेहअली ने १८१३ ई०में जब उन्हें दबाना चाहा, तो तुर्कमानोंने रूसकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन नेपोलियनके आक्रमणसे रूसको कहां होश था, कि इस अधीनता-स्वीकृतिसे लाभ उठाता। १८३१ ई०में अंग्रेज यात्री बार्नेस मध्य-एसियामें गया था। उसने अपनी पुस्तक "बुखाराकी यात्रायें"में तुर्कमानोंका जिक्र किया है। बार्नेसके समय सबसे अधिक संख्या उनमें तेक्के कबीले-की थी, यद्यपि अभी तुर्कमानोंमें उसकी प्रधानता नहीं मिली थी। अपने इतिहासके आरम्भमें तेक्के लोग कास्पियनके पूर्वी तटपर मगिशलक प्रायद्वीपमें रहते थे। १७१८ ई०में जब कल्मक मंगोलोंका इनपर बार-बार आक्रमण हुआ, तो तेक्कोंने किजिल अरबतसे यामुदों और कोपेतदाग-की उर्वर उपत्यकावाली अक्कल हरितावलीसे कुर्दों और येलियोंको भगाकर वहां अपना अधिकार जमाया। तेक्केका अर्थ तुर्कमानी भाषामें है पहाड़ी बकरी, जो कि सिद्धहस्त पहाड़ी घुड़सवार होनेके कारण इनके लिये उपयुक्त नाम था। खीवाके खानको यह मानते थे और प्रत्येक ग्राम (तम्बुओंका झुंड) सालमें एक ऊंट कर देता था। नादिरशाहने भी इन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया था। जबतक इनकी संख्या बहुत बड़ी नहीं थी, तबतक ये किजिल अरबत और अक्कलमें रहते रहे। संख्या बढ़नेपर १८३० ई०में इनके दस हजार परिवार पूर्वकी ओर जा ताजन्द-उपत्यकामें बस गये, और वहांपर अपने सरदारके नामसे उन्होंने अराज खानकला बनाया। बार्नेसके समय (१८३१ ई०में) तेक्कोंके चालीस हजार परिवार (तम्बू) थे। इस समय ऊपरी मध्य-वक्षुपर सारिकोंके बीस हजार तम्बू थे, जो कि मेवपर हाल हीमें अधिकार करनेवाले खीवियोंसे लड़ रहे थे। संख्यामें उन्हींके बराबर यामूद कबीला खीवा और अस्त्राबादके बीच चरवाही जीवन बिताता था। गोखलान तुर्कमानोंकी एक शाखा थी, जो कि अतरक और गुरगानके बीच ईरानी प्रजा होकर रहती थी। सलोर कबीला भी लड़नेमें बहुत बहादुर था, किन्तु उसकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक नहीं थी। सलोर सरख्शके नजदीक ऊपरी ताजंद-उपत्यकामें रहते थे। इनकी बार-बारके लूट-मारसे तंग आकर ईरानी शाह फतहअलीके पुत्र अब्बास मिर्जाने भारी सेनाके साथ १८३२ ई०में इनपर आक्रमण किया। बहुत खून-खराबीके बाद सरख्शपर ईरानियोंने अधिकार कर लिया, और मारे जानेसे बचे हुये सलोर भागकर मेर्वके दक्षिण योलेतानकी हरितावली में बस गये।

ताजन्दके ऊपरी भागमें बसे हुये तेक्के उत्तरी-ईरानमें बराबर लूट मार किया करते थे ईरान बराबर प्रतिरोध करता था, लेकिन कास्पियनसे हिरातके पासतक फैली अपनी सारी उत्तरी सीमाको तुर्कमानोंसे सुरक्षित रखना सम्भव नहीं हुआ। १८४८ ई०में खुरासानके ईरानी राज्यपाल आसफुद्दौलाने तेक्कोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें बरबाद कर दिया, किन्तु घुमन्तुओंका इतनी जल्दी सर्वनाश नहीं किया जा सकता। बचे-खुचे तेक्कोंने अपने भाई-बन्दोंके पास अक्कलकी हरितावली-में शरण लेनी चाही, लेकिन वहां पहले हीसे जनसंख्या अधिक थी, इसलिये जगह न मिली और फिर वह आसफुद्दौलाकी शरणमें गये, जिसने उन्हें सरख्शके उजड़े हुये इलाकेमें रहनेकी इजाजत दी। यह इलाका तेरह साल पहले सलोरोंके हाथमें निकलकर वीरान हो गया था। अब तेक्के खीवाके इलाकेमें लूट-मार करने लगे, इसलिये खीवाके खान मुहम्मद अमीनने सरख्शको जीत वहां राज्यपाल नियुक्त-कर छावनी बैठा दी। लेकिन खानके हटते ही तेक्कोंने उन्हें तलवारके घाट उतार दिया। खानने फिर लौटकर चढ़ाई की, लेकिन एक टेकरीपर तुर्कमानोंने घेरकर उसका काम तमाम कर

उसके मुंडको काटकर ईरानी शाहके पास भेज दिया, केवल धड़ ले जाकर खीवामें दफनाया गया। तेक्कोंने अब ईरानके भीतर भी लूट-मार शुरू की। जिस खुरासान-राज्यपालने इन्हें इस भूमिमें बसाया था, उसीने सरख्शको जलाकर तेक्कोंको उत्तरमें मेर्वकी ओर भगा दिया। १७८४ ई०के पहलेसे मेर्वमें सारिक कबीला रहता आया था। अब सारिकों और तेक्कोंका खूनी संघर्ष चला। सारिकोंने अपने पक्षको कमजोर देखकर खुरासानके ईरानी राज्यपालको बुलाया, जो अठारह बटालियन पैदल और सात हजार सवार सेनाके साथ आया। तेक्कोंने अन्तमें ईरानकी अधीनता स्वीकार करके राज्यपालको बहुत मूल्यवान् भेंटें दीं। फिर वह अपने शत्रु सारिकोंके ऊपर टूट पड़े, और उन्हें मेर्वकी हरितावलीसे निकालकर ऊपरी मुर्गाब-उपत्यकामें योलेतान और पंजदेहकी ओर खदेड़ दिया, जहाँसे जाकर उन्होंने ईरानके हुक्मसे हरीरूद नदीके बायें तटपर जराबादसे सलोरोंको बेदखल किया।

कई शताब्दियों बाद मुर्गाबकी उवर उपत्यकाके स्वामी अब सारिक थे। उनकी शक्ति इतनी अधिक थी, कि इन्होंने खीवाकी सेनाको हरा दिया। तेक्कोंने खेतीके फायदेको भी समझकर उसके प्रचार-की कोशिश की, लेकिन सिंचाई यहाँकी सबसे बड़ी समस्या थी। इसके लिये पुराने समयमें बड़े-बड़े बाँध बना जल-निधियाँ स्थापित की गई थीं, जो कि लड़ाइयोंमें बनती-बिगड़ती रहीं। मेर्वके स्वामी बनकर तेक्कोंने मेर्व नगरसे पचीस मील ऊपर एक ऊबड़-खाबड़-सा बाँध बना पचीस मील लम्बी नहर खोदी, जिसके सहारे अड़तालीस हजार परिवार खेती करने लगे। बाँध और नहरकी मरम्मतके लिये हर पचीस परिवार एक आदमी देता। १८८० ई०में अंग्रेज यात्री ओडोनोवेन इधरसे गुजरा था। उसने इस बाँधके बारेमें लिखा था—"नदी-तटके दोनों तरफ बीस गजतक बड़े-बड़े नरकटोंकी घनी पंक्ति है। पानीकी धाराके लिये मुश्किलसे दस फुट चौड़ी जगह छोड़ी गई है। इस संकरे मार्गसे पानी जोरसे आवाज करता बहता है। पचास गजतक यह पानीका रास्ता चला जाता है। इस दूरीमें भी नरकटोंके बाँधको और समेटकर पानीको रोकनेकी कोशिश की गई है।"* लेकिन कृषि-जीवनके लिये जैसी शांतिकी अवश्यकता थी, अभी वह तेक्कोंमें नहीं आ पाई थी। दक्षिणमें सारा खुरासान उनके शिकारकी जगह बना हुआ था, फिर वह क्यों लूट-मारसे हाथ खींचते? वह मशहदसे साढ़े चार सौ मील दक्षिणतक धावा मारते। उनसे प्रतिरोध करनेके लिये १८६० ई०में ईरानने नवीन सरख्शमें एक किला बनाया, फिर अगले साल ईरानी मुख्य-सेनापतिने बारह हजार पैदल, दस हजार घुड़सवार सेना तथा तेंतीस तोपोंके साथ चढ़ाई की। तेक्कोंने सुलह करनी चाही, लेकिन इन लड़ाकुओंकी सुलहकी बातपर कौन विश्वास करता? तेक्के भी जानपर खेलकर लड़े, और सारी ईरानी पैदल-सेना मारी या उनके हाथमें बंदी बनी, केवल सवार अपने कायर सेनापतिके साथ भागनेमें सफल हुये। इस लड़ाईमें इतने अधिक ईरानी गुलाम तेक्कोंके हाथ आये, कि मध्य-एसियाके बाजारोंमें गुलामोंकी कीमत एक गिन्नी कम हो गई। तेक्कोंको अपने अधीन बनानेका ईरानका यह अन्तिम प्रयास था। अपनी इस सफलताके बाद तेक्के अक्कल और मेर्वमें जम गये, जहाँसे वह बराबर ईरानमें लूट-मार किया करते। मेर्व हरितावलके पूर्वी भागमें तेक्कोंकी तोकतामिश-शाखा रहती और पश्चिममें ओतामिश पूर्वी छोरपर बेक रहते। इन शाखाओंके अतिरिक्त उनके कुछ और भी छोटे-छोटे विभाग थे।

३ तेक्कोंका शासन

तेक्के घुमन्तू कबीलेशाही अवस्थामें थे, इसलिये उनका शासन जन-सत्ताको छोड़ और हो ही क्या सकता था? अंग्रेज यात्री वोल्फने × इनके बारेमें लिखा है—"इन लुटेरे कबीलोंमें रहनेके बाद मैं इस निश्चयपर पहुँचा हूँ, कि भीड़की इतनी बुरी स्वेच्छा-चारिता कहीं नहीं हो सकती। इससे बढ़कर बुरी बात क्या हो सकती है, कि अपने पागलपनके ही कारण यह अशिक्षित और असभ्य भीड़ अपनी शान दिखलाती है।" लेकिन वोल्फ यह

* मेर्वकी कहानी।　　× बुखारा

एकतरफा फैसला था। राजकाजकी वातोंपर निर्णय करनेके लिये सारी जनताकी सभामें वह वहस करते। इन्हीं सभाओंमें वह अपना खान चुनते, जो कि शासनका उच्च पदाधिकारी होता। लेकिन जवतक जनता उसे स्वीकार करती, तभीतक वह खान रहता। इस पदके लिये कोई आकर्षण नहीं था, क्योंकि खानको शिष्टाचार और सम्मान पानेके अतिरिक्त कोई लाभ या अधिकार नहीं था। उसके पास चालीस जिगित (वहादुर) रहते, जो सरकारी आज्ञाको पालन करवाते, लेकिन खजाना खानके हाथमें नहीं था। कोई विशेष काम आनेपर कवीला इख्तियार नामक एक विशेष प्रतिनिधि चुनता। सम्मतिदाता कवीलेके सारे लोग होते। १८८१ ई०में ओडोनोवेनके मेर्वमे जानेपर उसे वहां एक 'इख्तियार' मिला था, जिसे तेहरानमें शाहके पास सुलहकी वातचीतके लिये भेजा गया था। ओडोनोवेनके अनुसार पिछले कुछ समयमें तेक्के अव एक साधारण राज्यपद्धतिकी ओर बढ़ रहे थे, जिसमें जनतंत्रताका स्थान खानदानी राजतंत्र लेने जा रहा था। यह परिवर्तन नूरवर्दी खानके समयसे होने लगा, जो कि खीवा, ईरान और सारिकोंके युद्धोंकी विजयामें नेता रहा—सफल नेता राजा वन जाता है। उसने अपने पुत्र मखदूम कुलीको अवकलके तेक्कोंका मुखिया वनाया, और वह स्वयं मेर्वका खान रहा। उसे इतना आगे वढनेमें रूसकी ओरसे पैदा हुये खतरेने भी सहायता की। अगर इतना भय न होता, तो शायद घुमन्तू इतनी एकतंत्रताके लिये भी तैयार न होते। तेक्के खीवामें रूसकी प्रभुता स्थापित होते देख चुके थे, उन्हें अपने भविष्यके लिये डर मालूम होने लगा था।

सभी तुर्कमानोंकी तरह तेक्के सुन्नी मुसलमान थे, लेकिन वह धर्ममें कट्टर नहीं थे, और न मुल्लोंकी पर्वाह करते थे। वोल्फके समय (१८४३ ई०में) खलीफा अब्दुर्रहमान नामक मुल्लाकी वडी इज्जत थी। अपनी वहादुरी और वुद्धिके लिये प्रसिद्ध आदमियोंके हाथमें सैनिक जिम्मेवारी दी जाती थी। वह ऐसे आदमीको अपना सरदार (सेनापति) वनाते, जिसे कि आक्रमण की जाने-वाली धरतीका सूक्ष्म ज्ञान होता। इस लूटमें उन्हें जहां माल हाथ आता, वहां वहुतसे नर-नारी भी मिलते। यदि मुक्ति-धन चुकानेके लिये कोई तैयार होता, तो तुर्कमान अपने वंदियोंको छोड देते, नहीं तो खीवा या वुखाराके वाजारोंमें उन्हें गुलाम वनाकर वेच देते। तुर्कमान वहादुर होने-के लिये तीन वातोंकी अवश्यकता थी—अच्छा घोडा, हथियार और मृत्युसे निर्भयता। कहावत मशहूर थी—"जिसने अपनी तलवारकी मुट्ठीपर हाथ रख दिया, उसे और किसी तककी अवश्यकता नहीं।" और "घोडेकी पीठपर सवार तेक्का न वापको समझता, न माको।" युद्धका निश्चय हो जानेपर स्वाभाविक नेता अपने किवित्का (तम्बू)के सामने झंडा गाडता, और अल्ला और रसूलके नामपर भले मुसलमानोंको शीया काफिरोंके ऊपर हमला करनेके लिये वुलाता। थोडे ही समयमें उसके तम्बूके चारों ओर सैकडों योद्धा जमा हो जाते, जो अपने सरदारके हुक्मपर आगमें कूदनेके लिये तैयार रहते। निश्चित दिनपर अनुचर सुशिक्षित घोडेपर सवार हो रसद लिये सरदारके पास पहुंचते। यदि अभियान खुरासानकी ओर करना होता, तो कोपेतदाग पर्वत श्रेणीके तीन डांडोंमें-

चल पाते, तो तुर्कमानकी तलवार उनके दु खोका अन्त करनेके लिये तैयार थी । कारवापर जब ाक्रमण करना होता, तो वह किसी रेगिस्तानी कुयेंके आसपास छिपे रहते, और जब कारवा विश्राम रने लगता, तो चारो ओरसे उसके ऊपर टूट पडते । यदि तुकमान अपनी सख्या पर्याप्त नही देखने, ो यात्रामें पीछे रह गये ऊटोपर हमला करते । तुर्कमानोकी सफलताकी कुजी थी, उनके तेज और ज़बूत घोडे, तथा यकायक फुर्तीसे आक्रमण ।

कितनी ही बार अपने दासो और दासियोको बेचनेके लिये तेक्के स्वय खीवा और बुखारा जाते । लेकिन इसकी उन्हें इतनी जरूरत नही थी, क्योकि गुलामोके सौदागर उनकी बस्तियोमे आकर गुलामोको थोक दरपर खरीद ले जाते । रूसियोने जबतक मध्य-एसियामे अपना प्रभुत्व नही जमाया, तबतक वहा गुलामोकी यह लूट और बेच ऐन इस्लामी शरीयतके अनुसार मानी जाती थी । पीतर I को इतालियन यात्री फ्लोरियो बेनेवेनीने सूचित किया था, कि बुखारामे तीन हजार रूसी गुलाम हैं, और उतने ही खीवामें भी । अंग्रेज-यात्री वोल्फके अनुसार बुखारामें दो लाख ईरानी गुलाम थे, और उसी समय गये मेजर एबटके अनुसार खीवामें साव लाख थे, जिनमें बच्चो और तरुण लडकियोका मूल्य सयानोंसे दुगुना था ।

तेक्के अपने घोडेका महत्त्व सरदारसे भी बढकर मानते थे । उनके घोडे बहुत समयसे अच्छी जातिके माने जाते थे । कहा जाता है, तेमूर लगने पाच हजार अरब घोडोको लाकर तेक्के घोडो- की नसलको बढिया बनाया था । शाह नासिरुद्दीनने पिछली शताब्दीमें पाच सौ अरब घोडे तेक्कोके पास भेजे । लेकिन जान पडता है, तुकमान घोडोंके लिए अरबी प्रभावकी अवश्यकता नही थी, और न वह अपने रूप और ढाचेमें अरब घोडो-जैसे होते हैं । वह कदमें बडे, लबे पैर, सकरी छाती, और लम्बे सिरवाले होते हैं। प्रशिक्षित तथा खास चारेपर रक्खे तुर्कमान घोडे एक दिनमें साठ मीलका रास्ता तै करते, इस तरहकी यात्रा वह बहुत दिनोतक जारी रख सकते थे । तेक्के-सवारो- को भी इतना अभ्यास था, कि वह चौबीस घटा घोडेकी पीठपर बिता सकते थे । तेक्कोंके घोडोका चारजामा वही था, जो कि चीनी दीवारके उत्तरके मगोल घुमन्तुओमें पाया जाता है । तुकमान अपने घोडोंसे इतना प्यार करते, कि वह अपने पीनेके पानी, या जौकी आखिरी रोटीको भी घोडेको दिये बिना नही खाते । उनके हाथोंमे चाबुक केवल शोभाके लिए रहता, नहीं तो घोडोके लिये लगामका इशारा काफी था । सोवियत शासनने तुर्कमान घोडोकी इस बढिया नसलको सुरक्षित रखते हुये उसको बहुत बढाया, और अश्काबादसे मास्कोतककी दौड करके देख लिया, कि उनकी प्रसिद्धि झूठ नहीं है । तेक्कोंके ईरानमें जा लोगोको लूटकर गुलाम बनानेका बडा ही सजीव चित्रण मध्य- एसियाके महान् उपन्यासकार सदरुद्दीन एलीने अपने ग्रथ 'गुलामानमें' किया है ।*

१९वी सदीके उत्तरार्धमें तुर्कमानोंमें बस्तीवासी भी काफी हो गये । बस्तीवासियोको 'चरवा' और घुमन्तुओको 'चोमरी' कहा जाता था । चोमरी तीन दिनसे अधिक शायद ही कभी एक जगह रहते । उनका धन केवल पशु थे । चोमरी-तुर्कमान सालके कुछ भागमें 'कला' (दुर्ग)में एक स्थान पर रहते, लेकिन इस किलेका साधारण किलेसे कोई सबध नही । एक खुली जगहमें तुक- मानोंके तम्बू खडे होते, जिसके चारो तरफ कच्ची मिट्टीकी दीवार होती, जिसमें खतरेके देखनेके लिए सतरीके वास्ते मीनार बने होते । 'चरवा'के अपने औल (ग्राम) होते, जिनकी चारो ओर गाव- वालोंके खेत और बाग रहते । वहा जौ, ज्वार और चावलकी खेती ही ज्यादा थी । फलोमे अगूर, सेब और सबसे अधिक तरबूज होते । तुर्कमानोंके 'कला'में सिर्फ एक दरवाजा होता । पश्चिमके किजिल अरवतसे पूर्वमें अश्काबादतकके औलोंमें प्रसिद्ध 'कला' ग्योक-तेप्पेकी उपत्यकाके सबसे चौडे भागमें अश्काबाद था, जिसमें आठ औल सम्मिलित थे ।

४ पोशाक और रूपरेखा

तुकमान शरीरमें मझोले कदके होते । उनका रग गेहुआ तथा गालकी हड्डी मगोलायितोंकी तरह उभडी हुई होती । आखें भी उसी तरह बादामी, नाक चौडी—जो सिरे-

*"जो दास थे" (राहुल)

एकतरफा फैसला था। राजकाजकी बातोंपर निर्णय करनेके लिये सारी जनताकी सभामें वह बहस करते। इन्ही सभाओमे वह अपना खान चुनते, जो कि शासनका उच्च पदाधिकारी होता। लेकिन जबतक जनता उसे स्वीकार करती, तभीतक वह खान रहता। इस पदके लिये कोई आकर्षण नही था, क्योंकि खानको शिष्टाचार और सम्मान पानेके अतिरिक्त कोई लाभ या अधिकार नही था। उसके पास चालीस जिगित (बहादुर) रहते, जो सरकारी आज्ञाको पालन करवाते, लेकिन खजाना खानके हाथमे नही था। कोई विशेष काम आनेपर कबीला इख्तियार नामक एक विशेष प्रतिनिधि चुनता। सम्मतिदाता कबीलेके सारे लोग होते। १८८१ ई०मे ओडोनोवेनके मेवर्में जानेपर उसे वहा एक 'इख्तियार' मिला था, जिसे तेहरानमे शाहके पास सुलहकी वातचीतके लिये भेजा गया था। ओडोनोवेनके अनुसार पिछले कुछ समयमे तेक्के अब एक साधारण राज्यपद्धतिकी ओर बढ़ रहे थे, जिसमें जनतंत्रताका स्थान खानदानी राजतंत्र लेने जा रहा था। यह परिवर्तन नूरवर्दी खानके समयसे होने लगा, जो कि खीवा, ईरान और सारिकोंके युद्धोकी विजयोमें नेता रहा—सफल नेता राजा बन जाता है। उसने अपने पुत्र मखदूम कुलीको अक्कलके तेक्कोका मुखिया बनाया, और वह स्वयं मेवका खान रहा। उसे इतना आगे बढनेमें रूसकी ओरसे पैदा हुये खतरेने भी सहायता की। अगर इतना भय न होता, तो शायद घुमन्तू इतनी एकतंत्रताके लिये भी तैयार न होते। तेक्के खीवामें रूसकी प्रभुता स्थापित होते देख चुके थे, उन्हें अपने भविष्यके लिये डर मालूम होने लगा था।

सभी तुर्कमानोंकी तरह तेक्के सुन्नी मुसलमान थे, लेकिन वह धर्ममें कट्टर नही थे, और न मुल्लोंकी पर्वाह करते थे। वोल्फके समय (१८४३ ई०में) खलीफा अब्दुर्रहमान नामक मुल्लाकी बडी इज्जत थी। अपनी बहादुरी और बुद्धिके लिये प्रसिद्ध आदमियोके हाथमें सैनिक जिम्मेवारी दी जाती थी। वह ऐसे आदमीको अपना सरदार (सेनापति) बनाते, जिसे कि आक्रमण की जाने वाली बस्तीका सूक्ष्म ज्ञान होता। इस लूटमें उन्हे जहा माल हाथ आता, वहा बहुतसे नर-नारी भी मिलते। यदि मुक्ति-धन चुकानेके लिये कोई तैयार होता, तो तुर्कमान अपने बंदियोको छोड देते, नही तो खीवा या बुखाराके बाजारोमे उन्हे गुलाम बनाकर बेच देते। तुर्कमान बहादुर होने के लिये तीन बातोंकी अवश्यकता थी—अच्छा घोडा, हथियार और मृत्युसे निर्भयता। कहावत मशहूर थी—"जिसने अपनी तलवारकी मुट्ठीपर हाथ रख दिया, उसे और किसी तककी अवश्यकता नही।' और "घोडेकी पीठपर सवार तेक्का न बापको समझता, न माको।' युद्धका निश्चय हो जानेपर स्वाभाविक नेता अपने किबित्का (तम्बू)के सामने झडा गाडता, और अल्ला और रसूलके नामपर भले मुसलमानोको शीया काफिरोंके ऊपर हमला करनेके लिये बुलाता। थोडे ही समयमे उसके तम्बूके चारो ओर सैकडो योद्धा जमा हो जाते, जो अपने सरदारके हुक्मपर आगमें कूदनेके लिये तैयार रहते। निश्चित दिनपर अनुचर सुशिक्षित घोडेपर सवार हो रसद लिये सरदारके पास पहुचते। यदि अभियान खुरासानकी ओर करना होता, तो कोपेतदाग पर्वत श्रेणीके तीन डाडोंमें से किसी एकसे पार होते। पहाड पार करके दूसरी ओरके पर्वतसानुपर चन्द सवारोकी रक्षामें रसदको छोड, गाजी (धर्मयोद्धा) सारे दिन आगेकी तैयारीमें लगे रहते। दूर उपत्यकामें ईरानके शात गाव बसे हुये हैं शाम नजदीक आ रही है। दरख्तोंके बीच सफेद घरोंसे चूल्हेका धुआ निकलकर आकाशमें मडरा रहा है। बूढे गप कर रहे हैं, तरुणिया चरागाहोंसे अपने पशुओंको ला रही हैं। यह समय है, तेक्कोंके शिकारका। चन्द मिनटोंमें ही गावकी गलियोमें तुर्कमान छा जाते। वे अपने धनुष-बाणो और तलवारोंको आख मूदकर दाहिने-बायें चलाते, कितनोको मारते और सारे गावको भयभीत कर देते। फिर बचे-खुचे लोगो, उनके ढोरो और कीमती चीजोको इकट्ठा करके जितनी जल्दी आये थे, उतनी ही जल्दी अन्तर्धान हो जाते। यदि पीछा किये जानेका डर होता, तो बिना लगामको रोके सौ-सवा-सौ मीलतक भागते चला जाना उनके लिये साधारणसी बात थी। लड़के और बच्चे ज्यादा कीमती समझे जाते, जिन्हे सवार चारजामोंसे बाधकर दूसरे घोडोपर लाद लेते। ये घोडे तुर्कमान सवारके घोडेसे बधे होते, इसलिये पीछे-पीछे भगते जाते। दौड सकने-वाले आदमियोको कभी-कभी जजीरोंसे बाधकर घोडोंके साथ भगाया जाता। यदि वह थककर

ा चल पाते, तो तुर्कमानकी तलवार उनके दुःखोका अन्त करनेके लिये तैयार थी । कारवापर जब आक्रमण करना होता, तो वह किसी रेगिस्तानी कुयेंके आसपास छिपे रहते, और जब कारवा विश्राम करने लगता, तो चारो ओरसे उसके ऊपर टूट पडते । यदि तुर्कमान अपनी सख्या पर्याप्त नही देखते, तो यात्रामें पीछे रह गये ऊटोंपर हमला करते । तुर्कमानोकी सफलताकी कुजी थी, उनके तेज और मजबूत घोडे, तथा यकायक फुर्तीसे आक्रमण ।

कितनी ही बार अपने दासो और दासियोको बेचनेके लिये तेक्के स्वय खीवा और बुखारा जाते । लेकिन इसकी उन्हे इतनी जरूरत नही थी, क्योकि गुलामोके सौदागर उनकी बस्तियोमें आकर गुलामोको थोक दरपर खरीद ले जाते । रूसियोने जबतक मध्य-एसियामे अपना प्रभुत्व नही जमाया, तबतक वहा गुलामोकी यह लूट और बेच ऐन इस्लामी शरीयतके अनुसार मानी जाती थी । पीतर I को इतालियन यात्री फ्लोरियों बेनेवेनीने सूचित किया था, कि बुखारामें तीन हजार रूसी गुलाम हैं, और उतने ही खीवामें भी । अग्रेज-यात्री वोल्फके अनुसार बुखारामें दो लाख ईरानी गुलाम थे, और उसी समय गये मेजर एबटके अनुसार खीवामें साव लाख थे, जिनमें बच्चो और तरुण लडकियोका मूल्य सयानोंसे दुगुना था ।

तेक्के अपने घोडेका महत्त्व सरदारसे भी बढकर मानते थे । उनके घोडे बहुत समयसे अच्छी जातिके माने जाते थे । कहा जाता है, तेमूर लगने पाच हजार अरब घोडोको लाकर तेक्के घोडो-की नसलको बढिया बनाया था । शाह नासिरुद्दीनने पिछली शताब्दीमें पाच सौ अरब घोडे तेक्कोके पास भेजे । लेकिन जान पडता है, तुर्कमान घोडोंके लिए अरबी प्रभावकी अवश्यकता नही थी, और न वह अपने रूप और ढाचेमें अरब घोडो-जैसे होते हैं । वह कदमें बडे, लबे पैर, सकरी छाती, और लम्बे सिरवाले होते हैं । प्रशिक्षित तथा खास चारेपर रक्खे तुर्कमान घोडे एक दिनमें साठ मीलका रास्ता तै करते, इस तरहकी यात्रा वह बहुत दिनोतक जारी रख सकते थे । तेक्के-सवारो-को भी इतना अभ्यास था, कि वह चौबीस घटा घोडेकी पीठपर बिता सकते थे । तेक्कोंके घोडोका चारजामा वही था, जो कि चीनी दीवारके उत्तरके मगोल घुमन्तुओमें पाया जाता है । तुर्कमान अपने घोडोसे इतना प्यार करते, कि वह अपने पीनेके पानी, या जौकी आखिरी रोटीको भी घोडेको दिये बिना नहीं खाते । उनके हाथोंमें चाबुक केवल शोभाके लिए रहता, नही तो घोडोके लिये लगामका इशारा काफी था । सोवियत शासनने तुर्कमान घोडोकी इस बढिया नसलको सुरक्षित रखते हुये उसको बहुत बढाया, और अश्काबादसे मास्कोतककी दौड करके देख लिया, कि उनकी प्रसिद्धि झूठ नहीं है । तेक्कोंके ईरानमें जा लोगोको लूटकर गुलाम बनानेका बडा ही सजीव चित्रण मध्य-एसियाके महान् उपन्यासकार सदरुद्दीन एलीने अपने ग्रथ 'गुलामानमें' किया है ।*

१९वी सदीके उत्तरार्धमें तुर्कमानोंमें वस्तीवासी भी काफी हो गये । वस्तीवासियोको 'चरवा' और घुमन्तुओको 'चोमरी' कहा जाता था । चोमरी तीन दिनसे अधिक शायद ही कभी एक जगह रहते । उनका धन केवल पशु थे । चोमरी-तुर्कमान सालके कुछ भागमें 'कला' (दुर्ग)में एक स्थान पर रहते, लेकिन इस किलेका साधारण किलेसे कोई सबध नही । एक खुली जगहमें तुर्क-मानोंके तम्बू खडे होते, जिसके चारो तरफ कच्ची मिट्टीकी दीवार होती, जिसमें खतरेके देखनेके लिए सतरीके वास्ते मीनार बने होते । 'चरवा'के अपने औल (ग्राम) होते, जिनकी चारो ओर गाव-वालोंके खेत और बाग रहते । वहा जौ, ज्वार और चावलकी खेती ही ज्यादा थी । फलोमें अगूर, सेब और सबसे अधिक तरबूज होते । तुर्कमानोके 'कला'में सिर्फ एक दरवाजा होता । पश्चिमके किजिल अरवतसे पूवमें अश्काबादतकके औलोमें प्रसिद्ध 'कला' ग्योक-तेप्पेकी उपत्यकाके सबसे चौडे भागमें अश्कावाद था, जिसमें आठ औल सम्मिलित थे ।

४ पोशाक और रूपरेखा

तुर्कमान शरीरमें मझोले कदके होते । उनका रग गेहुआ तथा गालकी हड्डी मगोलायितोंकी तरह उभडी हुई होती । आखें भी उसी तरह बादामी, नाक चौडी—जो सिरे-

*"जो दास थे" (राहुल)

पर उठी, होंठ मोटा, मूछ-दाढी नाममात्र, कान बहुत बड़े—इस प्रकार पता लगेगा कि तुर्कमानोंने शताब्दियोंसे मध्य-एसियामें रहके भी अपने मगोलायित-खूनको बहुत कुछ शुद्ध रक्खा। ईरानकी लूटी हुई गुलाम स्त्रियोंको अपने पास रखनेकी जगह वह बेंच देना ही ज्यादा पसद करते थे। लेकिन तो भी पिछली शताब्दियोके यात्रियोका कहना था, कि तुर्कमान स्त्रियोकी रूपरेखा मगोलायित कम होती है। उनके बाल छोटे, मोटे और रूखे होते हैं। तरुणाईमें वह लम्बी और सुगठित दीख पडती हैं। मोजेरने लिखा था—'मध्य-एसियामें तेक्के ही ऐसी स्त्री है, जो कि जानती है कि कैसे चलना चाहिये। जब कोई तेक्के लडकी पानी भरनेके लिये अपने कधेपर पानीका कूजा लिये कुयेंपर जा रही हो, तो उससे सुदर दृश्य देखनेको नही मिलेगा।" तरुणाईमे इनके गाल गुलाबी होने है, लेकिन मध्यवयके शुरू होते ही मुहपर झुरिया पड जाती है।

तुर्कमान पुरुषोके सिरपर एक बहुत ऊची और देखनेमे भारी काली भेड़के खालकी टोपी (कल्पक) होती है। टोपीके नीचे आधा सिर ढका होता है। देखनेसे तो मालूम होता है, कि कल्पक पाच सेरसे कमकी न होगी, लेकिन वह बहुत हलकी होती है। लाल रगका पायजामा और ऊपरसे एडी-तक लटका हुआ काले रगका जब्बा (चोगा) तुर्कमानोकी पोशाक है। गर्मियोमें वह सूती कपडेका व्यवहार करते और जाडोमें ऊटके ऊनके बने हुये कपडोका। पैर जूते और मोजेसे ढका रहता। औरतोंकी पोशाक लम्बे-चौडे घाघरेकी होती, जिसका रग लाल या नीला और कपडा कभी-कभी रेशमका भी होता। उनकी छातीपर चादीके सिक्को या दूसरी चीजोका हमेल पड़ा रहता। ब्याहता स्त्रिया जूड़ा बाधती, कुमारियोंके बाल कधेपर लटकते रहते। मुह ढाकनेके लिये बरजक वह बहुत कम इस्तेमाल करती। तुर्कमानिया अपरिचित आदमीमे भी बातचीत करती। उनके हाथका बनाया कालीन बहुत प्रसिद्ध था। बहु-विवाह यद्यपि विहितया, लेकिन व्यवहारमें बहुत थोड़े ही आदमी अनेक बीबिया रखते। तुर्कमान वैसे लुटेरे थे, लेकिन अपने पूर्वजोके वक्तसे चले आते अतिथि-सेवाधर्मको वह बहुत मानते थे। कोई भी परदेशी तेक्केके घुर्ये भरे किबित्कामें पहुचने-पर तन्दूरी रोटी, मट्ठा, चाय, हुक्का, पनीर, मट्ठेमें पके चावलमें भागीदार बन जाता। स्वागतके बाद फिर वह शतरज और बासुरीसे मनोरजन कर सकता। तेक्के डाकू थे, लेकिन चोर नही। वह गाली देना नही जानते थे, उनके यहा सबसे बडी गाली थी 'कायर' कहना।

५ रूससे युद्ध

खीवाको रूस दबा चुका था, लेकिन तुर्कमान घुमन्तू अपनी शानमें मस्त थे। १८७३ ई०में जब रूसी सेनायें खीवामे आई, तो यामूद-तुर्कमानोंने रूसियोंका जबदस्त मुकाबिला किया था, इसे हम देख आये हैं। कॉफमानने यामूदोंको पाठ पढाना चाहा, और इसके लिये सारी दक्षिणी मरुभूमिमें सर्वनाशका युद्ध छेड दिया, क्रूरतामें जारशाही घुमन्तुओको भी मात करने लगी। ईरानी राज्यपालने १८६९ ई०मे अतरक नदीकी उपत्यकामें रहनेवाले गोखलान-तुर्कमानोका दबाना चाहा। कास्पियन समुद्रमें नावो और जहाजोको लूटनेवाले गोखलानोको रूसी नौसेनाने दबा दिया। खीवा-विजयके बाद १८७६ ई०में कास्पियनका पूर्वी तट काकेशसके महाराज्यपालके अधीन रहा, जिसकी सेना यहा रक्षाका काम करती थी। तेक्कोने अपनी उत्तर-पूर्वी सीमातमें इस प्रकार रूसियोकी जबदस्त दीवार देखी। यही हालत पूर्व दिशामें भी थी। खीवा और बुखाराने सधि करके रूसकी बातको मान अपने यहा दासताको निषिद्ध कर दिया था, इसलिये तेक्काके लाये गुलामोके बेचनेके लिये अब मध्य-एसियाके बाजार बन्द हो गये थे। उन्होने रूसियोंसे भी छेडखानी जारी रक्खी। १८७५ ई०में एक रूसी-कारवा क्रास्नोवोद्स्कमे खीवाकी ओर जा रहा था, जिसे उन्होने बीचमें लूट लिया। इसी तरह १८७७ ई०में अतरकके उत्तरमें भी एक कारवाको लूटा। रूसी इसका बडी कठोरतासे जवाब देने लगे। तेक्कोंको मालूम होने लगा, कि अब हमारी भी वही हालत होनेवाली है, जो कि खीवाकी चार साल पहले हुई। १८७७ ई०में उन्होंने ईरानकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन अब रूस उसकी इजाजत नही दे सकता था। तुर्कमानोकी लूटमारके कारण इधर तुर्कमान-मरुभूमिमे खीवा-बुखारका

ापार बन्द हो गया, और सुरक्षित समझकर ओरेनबुर्गके बहुत फेरवाले रास्तेमे कारवा ाने लगे। पीतरके समयसे ही रूसियोके दिमागमें समाया था, कि वक्षुको कास्पियनमे ालाकर वोल्गा-उपत्यकासे जलमार्ग द्वारा व्यापार करें, लेकिन यह काम जारशाही नही र सकी।

खीवाके विजयके बादके तीन-चार वर्षोमे तेक्कोने अपनी लूट-मारसे रूसियोको बहानेका ास्ता दे दिया, और १८७७ ई०में जेनरल लोमाकिनको हुक्म हुआ, कि तेक्कोके किले किजिल ारबतपर अधिकार कर लो। किजिलअरबत कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्क बन्दरगाहसे ो सौ मील पूब था। जेनरल लोमाकिन १२ अप्रैलको नौ कपनी पैदल, दो स्क्वाड्रेन कसाक और ाठ तोपें लेकर रवाना हुआ। भला आधुनिक हथियारोके सामने तेक्के कैसे डटते? वह पहली ही मुठभेडमे भाग गये। इसके बाद अक्कर-उपत्यकाके प्रत्येक औल (गाव)के प्रतिनिधि रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आये, लेकिन लोमाकिन इससे पहले ही डरकर पीछे हट गया था। इसी बीच तुर्कीसे सका युद्ध (१८७७—७८ ई०) छिड गया, जिसके कारण तुकमानोके साथ युद्धको स्थगित करना पडा। १८७८ ई०में तुर्कीके युद्धके खतम होते ही फिर जारशाहीने तेक्कोंकी ओर ध्यान दिया। १८७८ ई०में एक रूसी सेना अतरक नदीके मुहानेके पास अवस्थित चिकिस्ल्यरसे चली। बेन्देसेन डाडेसे कोपेतदाग पवतश्रेणीको पारकर ९ मितम्बरको उसने दगिल-तेप्पेपर आक्रमण किया। वहा पद्रह हजार तेक्के योद्धा अपने पाच हजार स्त्री-बच्चोंके साथ मिट्टीकी दीवारसे घिरे स्थानमें लडनेके लिये तैयार थे। तोपके सामने यह मिट्टीकी दीवारें क्या बचाव करती? वह प्राण बचाकर भाग निकले। रूसी सवार उन्हे पीछे पडकर घेरने लगे। चारों ओरसे उन्हें मौत-ही-मौत दिखलाई पड रही थी। अपने स्त्री-बच्चोको दुश्मनके हाथमें पडते देख "मरता क्या न करता" पर उतर आये, और उन्होने शैतानकी तरह लडाई लडी। लोमाकिनका मनोरथ भग हुआ, साढे चार सौ रूसी हताहत हुये, और बाकी सेनाको लेकर उसे चिकिस्ल्यर लौट जाना पडा। इस विजयकी खबरसे सारे मध्य-एसियामें आशाकी किरण दौड पडी। अब और भी लूट-मार होने लगी। १८८० ई०में तीन हजार तुकमानोंने वक्षु-तटपर बुखाराकी भूमिमे अवस्थित चारजूय-किलेके पासतकके कितने ही गावोको लूटा। मध्य-एसियासे जारका रोब उठते देखकर जेनरल स्कोबेलेफने पीतरबुर्ग लिखा था—"यदि हम अपनी पिछले पाच सालकी स्थितिपर विचार करते हैं, तो सामने भयकर खतरा दिखलाई दिये विना नही रहता, क्योकि वह साम्राज्यकी आर्थिक और राजनीतिक स्थितिको अस्त-व्यस्त कर सकता है। अग्रेजोने एसियाइयोको विश्वास दिलाना चाहा है, कि उन्होने कान्स्तन्तिनोपलके सामने रूसियोको रोक दिया, और उन्हें बल्कान प्रायद्वीप छोडनेके लिये मजबूर किया। बर्लिनकी सधि जो हमारे अनुकूल नही हुई, उसकी भी खबर उन्होंने सारे एसियामें फैलाई है।"

जनवरी १८८० ई०में जार अलेक्सान्द्र II ने पीतरबुर्गमे युद्ध-परिषद्की। सबसे कठिन समस्या थी यातायातकी। और देरतक रुका नहीं जा सकता था, इसलिए उसी साल तेक्को (तुकमानो)के विरुद्ध अभियान भेजा गया। बारह हजार ऊट रसद ढोनेके लिये रक्खे गये, जिनमें हजारो रास्तेमें मर गये। रेगिस्तानमें रसद पहुचाना बहुत मुश्किल था, इसीलिये ग्योक-तेप्पेका मुहासिरा हटाना पडा था, लेकिन अब रेलोंके प्रचारसे यातायातकी समस्या उतनी मुश्किल नही थी, यद्यपि उसपर खर्च बहुत पडता था। रूसियोंने रेलवे लाइन बनानेके लिये एक खास बटालियन सगठित की, और १८८० ई०के अन्ततक कास्पियनके पूर्व उजुनअदासे मुल्लाकारीतक तेरह मीलकी रेलकी सडक बना दी। काकेशसके सेनानायकके अधीन जेनरल स्कोबेलेफ अभियानका मुख्य-सचालक था। दगिल-तेप्पेके तजर्बेसे मालूम हो चुका था, कि तुर्कमानोंके नमदेके तम्बुओंपर आग जल्दी असर नही करती। इसके लिये स्कोबेलेफने पेट्रोल भरे गोले तैयार किये। क्रास्नोवोद्स्कमें यद्यपि पासमें समुद्र लहरें मार रहा था, लेकिन उसके खारे समुद्रपर पशु-प्राणी गुजारा नही कर सकते थे। इसके लिये वहापर एक बहुत बडा कारखाना बनाया गया, जिसका काम था पानीको भाप बना फिर जलके रूपमें परिणत करके प्रतिदिन साढे सात लाख गैलनके मीठा पानी देना। स्कोबेलेफ

मई १८८० ई०में ही फास्नोवोद्स्क पहुचकर तैयारी करने लगा। काकेशससे वारह हजार सेना और सौ तोपें आयी । सितम्बर १८८० ई०के आरम्भतक तैयारी प्राय पूरी हो गई ।

रूसियोने १८ दिसम्बरको वामिर, एगमनवातिर (समुर्स्क) पर अधिकार किया। पता लगा, कि शत्रुका मुख्य जमाव दगिल-तेप्पेमें है । दगिल-तेप्पा प्राय एक वगमीलमें फैली आयताकार भूमि थी, जिसके चारो ओर अठारह फुट मोटी और दस फुट ऊची दीवार थी, जो बाहरसे दस फुट होते हुये भी भीतरसे पद्रह फुट ऊची थी। दीवारके बाहर चार फुट गहरी खाई थी । तेप्पेके पश्चिमोत्तरमें गोल टीला था, जिसे तुर्की भाषामें "दगिल-तेप्पा' कहते है, उसीके कारण इस स्थान का यह नाम पडा। इसी गोल टीलेपर ईरानियोंमे पकडी पुराने ढगकी एक तोप रक्खी हुई थी। तीस हजार तेक्के योद्धा अपनी स्वतत्रताके लिये प्राण देनेको तैयार थे। पानीका यहा कोई दुख नही था, क्योकि पाससे एक नदी वहती थी। रूसी पानीकी धारको चाहते, तो वदल सकते थे, लेकिन तव उन्हे इतनी भारी सख्यामें शिकार एक जगह नहीं मिलता। एक सप्ताहतक आगे बढना रोककर २४ दिसम्बरको रूसियोने जाच-पडताल भर की। १८८१ ई०के नववर्षके दिन यगीकलापर भीषण आक्रमण शुरू हुआ। कला एक पहाडीकी जडमें था। आठ हजार रूसी सैनिक तीन स्तम्भोमें विभक्त हो बावन तोपो और ग्यारह मशीनगनोको लिये आगे बढे । दक्षिणवाले स्तम्भने पीछे और सामने दो ओरसे भयकर गोलाबारी की, जिससे तेक्के यगीकला छोड दगिल-तेप्पेकी सेनामें जाकर मिलनेके लिये मजबूर हुये। उन्होंने रातको फिर यगीकलाको लेनेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी तोपोने उन्हे मार भगाया। ३ जनवरीको रूसियोन अपने कैम्पको यगमनबातिरसे यगीकलामें परिवर्तित कर दिया। अगले दिन शत्रुओंके सामने आठ सौ गजपर रूसियोकी पक्ति खडी थी। रूसियोंके घिरावेको तोडनेके लिये मेवसे पाच हजार और तुर्कमान आये, जिन्होंने रूसियोंकी पक्तिपर छापा मारा। पागलकी तरह वह रूसी सनिकोपर पडे और गोलियोंसे जलते-भुनते भी कितनोने एक हाथसे रूसी सैनिकोंकी वन्दूकोको पकडा और दूसरे हाथसे अपनी तेज तलवारो द्वारा शत्रुओकी गर्दनें काटी। सारी भूमि लोगोंके मुडो और कटे हुये अगोंसे ढक गई। चारों तरफ "अल्लाह"की आवाज या रूसियोका "उरा" सुनाई पडता था। रूसियोंके दाहिने पक्षपर तीन सौ तेक्के बहादुरोंकी लाशें पडी थीं। लेकिन, आधुनिक हथियारोंके सामने अल्ला या यह वीरता क्या कर सकती थी ?

४ जनवरी १८८१ ई०को दूसरी पक्ति तैयार की गई, जिसमें छब्बीस सौ सैनिक थे। सध्या के समय तेक्कोंने छापा मारा तथा बाहरी खाइयोपर अधिकार कर लिया, और तोपचियाको काट कर चार पहाडी तोपें, और रेजिमेंटके तीन झडे भी अपने साथ ले गये। लेकिन, तुरन्त ही यगीकलासे कुमक आ गई, और तोप छोड बाकी चीजोपर फिर रूसियोने अधिकार कर लिया। झडप इसी तरह चलती रही। १० जनवरीको रूसी सेना तेक्कोकी बाहरी चौकियापर अधिकार करनेमें सफल हुई। लेकिन आध घटे बाद ही तेक्कोंने जबदस्त प्रत्याक्रमण किया। तोपचियोंकी एक कपनीके टुकडे-टुकडे करके वह दो तोपोको खाइयोकी ओर खीच ले गये। रूसियोंने भी नई कुमक पाकर उनके आक्रमणको निष्फल कर दिया। रातके अधेरेमें तेक्के रूसियोपर आक्रमण करते। १६ जनवरीकी रातको उन्होंने अपना अन्तिम जवदस्त आक्रमण किया, जिसे रूसियोने वेकार कर दिया। १६ जनवरीको अपनी किलाबन्दीके पूर्वी छोर-पर चौबीस गजके पासतक तेक्के ढकेल दिये गये। २० जनवरीमे उनका किला तोडा जाने लगा। किलेके भीतर नमदेके किबितकोंपर पेट्रोलके गोले फेंके जा रहे थे। इन्ही तम्बुओमें सात हजार बच्चे और स्त्रिया थीं। तब भी बहादुर तेक्के तीन सप्ताहतक डटकर लडते रहे। अन्तिम आक्रमणके दिन जेनरल स्कोबेलेफने अपने सैनिकोको आदेश देते हुये कहा था—"हमें एक बडे ही बहादुर और भारी आत्मसम्मानवाले लोगोंसे मुकाविला करना पड रहा है।" अतिम प्रहारके समय रूसियोने औरतो और बच्चोंको हटानेके लिये कहा। तेक्कोने समझा, ये हमारी स्त्रियो और बच्चोंको अपने लिये लेना चाहते हैं, इसलिये उनका जवाब था—"अगर तुम हमारी स्त्रियो और बच्चोको लेना चाहते हो, तो हमारी लाशोपरसे होकर ही उन्हें पा सकते हो।" २४ जनवरीके ७ बजे

६ अंग्रेजोंसे तनातनी

ग्योक-तेप्पेकी लड़ाईके बाद रूसियोंको फिर हथियार इस्तेमाल करनेकी जरूरत नहीं पड़ी। दिसम्बर १८८१ ई०में उन्होंने एक सैनिक प्रदर्शन किया। ३१ जनवरी १८८४ ई०को मेर्वकी भिन्न-भिन्न बस्तियोंके एक सौ चौबीस प्रतिनिधियोंने अपने चार खानोंके चार सरदारोंकी प्रधानतामें एकत्रित हो महाराज्यपाल कमारोफके सामने जारके प्रति भक्तिकी शपथ ली। एक अफगान साहसीने तुर्कमानोंमें विद्रोह फैलाना चाहा, जिसे ३ मार्चको रूसियोंने दबा दिया। अगली मईमें कावेशसके महाराज्यपालने जीते हुये इलाकेका निरीक्षण किया। फिर थोड़े ही दिनों बाद मेर्वसे ३६ मील दक्षिण योल्तन-उपत्यकाके पचास हजार सारिकोंने अधीनता स्वीकार की और उसके बाद गियाउर और सरख्शके बीचके कबीले भी रूसी-प्रजा बन गये। रूसकी दक्षिणी सीमा इस तरह आगे बढ़ अफगानिस्तानसे मिल गई। हिरातमें अंग्रेजोंने अफगानोंको एक मजबूत किला बनानेमें मदद दी थी। वह कैसे रूसके इस बढ़ावको पसंद करते? एक अंग्रेजी लेखकने रूस और इंगलैण्डके इस समयके संघर्षके बारेमें लिखा है* —

"भारतीय प्रायद्वीपकी ऐसी भौगोलिक स्थिति है, कि कोई भी युरोपीय शक्ति तबतक इसपर अधिकार नहीं कर सकती, जबतक वह समुद्रपर प्रभुत्व न रखे। हमारी प्रतिष्ठाके लिये यह जरूरी है, कि हम ऐसे साम्राज्यपर अधिकार रक्खें, जो दुनियाके लिये आश्चर्य और ईर्ष्याकी चीज है। उसपर अधिकार करके हम नफा भी खूब उठा रहे हैं, हमारे कारखानोंके लिये वहां बाजार है, और हमारे मध्यवर्गकी बेकार शक्तिके लिये वहां काम रक्खा है।

"इंगलैण्डने रूसके कान्स्तन्तिनोपलके रास्तेको रोका। १८८४ ई०में दुनियाकी कुंजी दरे-दानियालको तुर्कोंके हाथोंमें रखनेके लिये इंगलैण्डने रूसके खिलाफ तलवार उठाई और उसके एक-चौथाई शताब्दी बाद, जब कि रूसियोंके हाथमें यह भव्य शिकार जाने ही वाला था, जारकी विजयिनी सेनाको इंगलैण्डने पीछे हटा दिया। मानवता (?) का हरएक मित्र 'इंगलैण्ड और रूस'की दो शक्तियोंके बीचमें विरोधकी भारी खाईको देखकर अफसोस किये विना नहीं रहेगा।

*"जार और इंगलैण्ड मित्र या शत्रु"

यदि दोनो एक हो जाय, तो वह एसियाको सभ्यता और दुनियाको शाति प्रदान कर सकते हैं।

"एसियाके लोग काम्पियनसे चीनतक, और साइबेरियासे ईरान तथा अफगानिस्तानकी सीमा-तक उससे कही अधिक सुख और स्वतन्त्रताको भोग रहे हैं, जितना कि भारतीय राज्यके किसी भागके लोग। लेकिन वहा (रूसी एसियामें) अब भी २०वी सदीके आरम्भमें, भारी रक्षात्मक आयकर, अग्रेजी व्यापारकी रक्षाके लिये वाणिज्य-दूतोकी नियुक्ति, तथा यूरोपियनोंके आने-जानेके ऊपर भारी रुकावट मौजूद है। सिवाय मगीनोंके बलपर हम सदा भारतके स्वामी नहीं रह सकते हैं, उसीपर हमारा सिहासन खडा है। हमारा राज्य यहा (भारतमें) कभी गहरी जड नही जमा सकता। मगीनोके बिना हमारे पूर्वगामियोकी तरह हमारा भी शासन खतम हुये बिना नही रहेगा। लेकिन मध्य-एसिया उतना घना नही बसा है, और वहाके लोगोका जीवनतल 'भारत की अपेक्षा अधिक ऊचा है।

"हमें विश्वास है, कि यदि 'हमारे इगलैण्ड और रूस ––एसियाकी दोनो महाशक्तियो–– के बीच खुले दिलमे कोई समझौता हो जाय, तो इससे सभ्यताको आगे बढनेमे सहायता मिलेगी।"

इन उद्धरणोंसे मालूम होगा, कि अग्रेज रूसियोके दक्षिणी बढावको पसद नही करते थे, लेकिन साथ ही वह जानते थे, कि दोनोके सघर्ष के कारण एसियामें कही युरोपियनोका शासन खतम न हो जाय, इसीलिये सीमाके निश्चित करनेके लिये दोनोकी ओरसे जुलाई १८८४ ई०में एक सयुक्त कमीशन नियुक्त हुआ। रुसियोने पचदेहके सारिकोंके रूसी-अधीनता स्वीकार करनेका हवाला दे माग पेश की, कि तुर्क जातिकी सीमा हमारी सीमा है, और अफगान-बस्तियोसे अग्रेजोका प्रभावक्षेत्र माना जाय। लेकिन अग्रेज इसे माननेके लिये तैयार नही थे। अपने दावेको मजबूत करनेके लिए अग्रेजोके शहपर इसी बीच अफगानोने आक्रमण करके बालामुर्गाब और पचदेह दोनो वादिया (उपत्यकाओ)को दखल कर लिया। इसके जवाबमें जेनरल कमारोफने पुले-खातून, जुल्फिकार डाडा और अक-रबातपर रूसी झडा गाड दिया, और फरवरी १८८५ ई०में पचदेह-वादीके छोरपर पुले-कश्तीको भी ले लिया। इगलैंडमें इसपर बडा गुस्सा प्रकट किया जाने लगा, और हिरातके किलेको मजबूत करनेके लिये अग्रेज इजीनियर भेजे गये, अफगानिस्तानमें हथियार और गोला-बारूद बडे परिमाणमे भेजा जाने लगा, और भारतके पश्चिमोत्तर सीमातपर जेनरल राबर्टकी अधीनता-में भारी सेना जमा की गई। पार्लयामेंटने एक करोड दस लाख पौंड सैनिक तैयारीके लिए मजूर किये। उधर रूसने भी एक भारी नौसेना जमा की, और चाहा कि भूमध्यसागरके अग्रेजी-व्यापार-मार्गको नष्ट कर दे। लेकिन दोनो साम्राज्योको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि आपसकी लडाईसे अतमें भारी क्षति उठानी पडेगी। अग्रेजोने अफगानिस्तानको रोका, और अप्रैल १८८६ ई०में दोनो देशोंके प्रतिनिधि पीतरबुर्गमें जमा हुए। रूसियोको हरीरूदका दाहिना किनारा जुल्फिकार डाडेतक और पचदेहसे दक्षिण बागी-उपत्यका, जिसमें पचदेह हरितावली भी शामिल थी, मिली।

सर नहीं उठा सकती है। अब एक अंग्रेज यात्री कास्पियन तट से सारे रेगिस्तान सीमांततक, बिना जरा भी भयके यात्रा कर सकता है। (महामान्य) ज़ारके राज्यका सबसे बड़ा समर्थक है, जिसने बाद रूपक है। विशेष अब मुल्लाओंसे छुटकारा मिल गया है।"

७ रेल-निर्माण

तेक्कोंके साथ युद्ध करनेके लिए तेरह मीलकी रेल लाइन प्रथम कास्पियन तटसे रेलोंका जाल शुरू हुआ। रेल-निर्माणके लिए ज़ार नौसेने संगठित सहायिता १८८० ई०में अततक उसे कास्पियनसे १२५ मीलपर किजिल अर्वाततक बना दिया। मेर्वके ऊपर अधिकार हो जानेपर रेल बनानेमें और भी उत्साह हुआ, और अप्रैल १८८५ ई०में ज़ार (राजादेश) द्वारा रेलको आगे बढ़ानेकी स्वीकृति दी गई। २० जनको काम शुरू हुआ। इस रेलके बनानेमें लगातार बाइस हजार तेक्के मजदूर काम करते रहे, और चौदह महीनेमें रेल किजिल अर्वातसे ३१२ मील मेर्वतक पहुँच गई। मेर्वसे चारजूयकी लाइनपर काम अगस्त १८८६ ई०में आरंभ हुआ। इस लाइनको साठ मील रेगिस्तानमेंसे जाना था। चार मासमें १८० मील लम्बी रेल भी तैयार हो गई। कास्पियन तटसे चारजूय तक कास्पियन चारजूय-तक अब ६६४ मील लम्बी रेल बनकर तैयार हो गई। वक्षु इस मार्गकी सबसे बड़ी नदी है, जिसका पाट चारजूयमें सवा मीलका है। नदीके दोनों ओर दोनों किनारोंपर रेगिस्तान है, जो कि कराकुम और किजिलकुमके महान् रेगिस्तानके भाग हैं। आमू (वक्षु)पर पुल बनानेके लिए लकड़ियोंके ३३३० बेड़े रूससे लाये गये। पहला पाया जून १८८७ ई०में बैठाया गया और काम इतनी तत्परतासे हुआ, कि छ महीनेके बाद जनवरी १८८८ ई०में उसको पुल यातायातके लिये खोल दिया गया। यह पुल १६०० गज लंबा था जिसमें २२७० गज बारी जलधारा बहती थी। सितंबर १८८७ ई०में वक्षु तटसे २१६ मीलपर अवस्थित समरकंदतककी लाइन-पर काम शुरू हो गया, जिसे २८ मीलका रेगिस्तान पार करके बराकुलसे जरफ्शा-सिंचित उपत्यका में पहुँचना था। अंतमें मई १८८८ ई०में कास्पियनसे समरकंदतक १७९ मीलकी रेल तैयार हो गई। इस रेलवे लाइनपर प्रति मील औसत खर्च ६१८४ पौंड (अस्सी हजार रुपया) आया था जब कि हिंदुस्तानमें अंग्रेजी कंपनियोंने रेलोंपर प्रति मील अठारहसे बीस हजार पौंड खर्च किये। १८९५ ई०में समरकन्द और ताशकंदके बीच रेल बननी शुरू हुई। उसके बाद अंदिजान (फर्गाना)की लाइन भी तैयार की गई। मेर्वसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्क तक १९२ मीलकी रेल बनी। कुश्कसे हिरात, गीरिश्क, कंधार और चमन होते मध्य-एसियाकी रेलोंको क्वेटामें पाकिस्तानी रेलोंसे आसानीसे मिलाया जा सकता था, इस रास्ते कुश्क और चमनके बीच सिर्फ ४५० मीलकी लाइन बनानी थी। इस सारे रास्तेमें कोई दुर्लंघ्य बाधा नहीं है सिर्फ खुम्बान (चश्मेसब्ज) डाँडेको पार करते लाइनको समुद्र तलसे ३४०० फुट ऊपर उठना पड़ता। चश्मेसब्जके डाँडेसे तीस मीलपर ही सब्जवार है।

८ अश्काबाद

कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्कसे ३२२.२५ मीलपर अवस्थित अश्काबादको रूसियोंने अपना शासन-केंद्र बनाया, जिसकी स्थापना १८८३ ई०में अक्कल हरितावलीके सबसे चौड़े तथा कोपेतदाग पर्वतमालाके सानुपर है। १८९९ ई०में इसकी जनसंख्या सोलह हजार थी, जिसमें दस हजार सैनिक थे। अश्काबादसे नातिदूर कोपेतदागके पहाड़ोंमें २४०० फुटकी ऊँचाईपर फीरोजा और ३००० फुटकी ऊँचाईपर खैराबाद मसूरी-शिमला-जैसे ठंढे पहाड़ी नगर हैं, जहाँपर रूसी अफसर अपनी गर्मियाँ बिताया करते थे। अश्काबादका अर्थ आँसुओंकी नगरी या इश्काबादसे प्रेमनगरी भी हो सकता है।

यदि दोनो एक हो जाय, तो वह एसियाको सभ्यता और दुनियाको शाति प्रदान कर सकते है।

"एसियाके लोग कास्पियनसे चीनतक, और साइबेरियामे ईरान तथा अफगानिस्तानकी सीमा-तक उससे कही अधिक सुख और स्वतन्त्रताको भोग रहे है, जितना कि भारतीय राज्यके किसी भागके लोग। लेकिन वहा (रूसी एसियामे) अब भी २०वी सदीके आरम्भमें, भारी रक्षात्मक आयकर, अग्रेजी व्यापारकी रक्षाके लिये वाणिज्य-दूतोकी नियुक्ति, तथा युरोपियनोंके आने-जानेके ऊपर भारी रुकावट मौजूद है। सिवाय सगीनोंके बलपर हम सदा भारतके स्वामी नही रह सकते है, उसीपर हमारा सिहासन खडा है। हमारा राज्य यहा (भारतमें) कभी गहरी जड नही जमा सकता। सगीनोंके बिना हमारे पूर्वगामियोकी तरह हमारा भी शासन खतम हुये बिना नही रहेगा। लेकिन मध्य-एसिया उतना घना नही बसा है, और वहाके लोगोका जीवनतल भारत की अपेक्षा अधिक ऊचा है।

"हमें विश्वास है, कि यदि हमारे इगलैण्ड और रूस—एसियाकी दोनो महाशक्तियो—के बीच खुले दिलसे कोई समझौता हो जाय, तो इससे सभ्यताको आगे बढनेमे सहायता मिलेगी।"

इन उद्धरणोंसे मालूम होगा, कि अग्रेज रूसियोके दक्षिणी बढावको पसद नही करते थे, लेकिन साथ ही वह जानते थे, कि दोनोके सघर्षके कारण एसियामे कही युरोपियनोका शासन खतम न हो जाय, इसीलिये सीमाके निश्चित करनेके लिये दोनोकी ओरसे जुलाई १८८४ ई०मे एक सयुक्त कमीशन नियुक्त हुआ। रूसियोने पचदेहके मारिकोंके रूसी-अधीनता स्वीकार करनेका हवाला दे माग पेश की, कि तुर्क जातिकी सीमा हमारी सीमा है, और अफगान-बस्तियोसे अग्रेजोका प्रभावक्षेत्र माना जाय। लेकिन अग्रेज इसे माननेके लिये तैयार नही थे। अपने दावेको मजबूत करनेके लिए अग्रेजोंके शहपर इसी बीच अफगानोने आक्रमण करके बालामुर्गाब और पचदेह दोनो वादियों (उपत्यकाओ)को दखल कर लिया। इसके जवाबमे जेनरल कमारोफने पुले-खातून, जुल्फिकार डाडा और अक-रबातपर रूसी झडा गाड दिया, और फरवरी १८८५ ई०में पचदेह-वादीके छोरपर पुले-कश्तीको भी ले लिया। इगलैंडमें इसपर बडा गस्सा प्रकट किया जाने लगा, और हिरातके किलेको मजबूत करनेके लिये अग्रेज इजीनियर भेजे गये, अफगानिस्तानमें हथियार और गोला-बारूद बडे परिमाणमें भेजा जाने लगा, और भारतके पश्चिमोत्तर सीमातपर जेनरल राबर्टकी अधीनतामें भारी सेना जमा की गई। पालयामेंटने एक करोड दस लाख पौंड सैनिक तैयारीके लिए मजूर किये। उधर रूसने भी एक भारी नौ-सेना जमा की, और चाहा कि भूमध्यसागरके अग्रेजी-व्यापार मार्गको नष्ट कर दे। लेकिन दोनो साम्राज्योको यह समझनेमें देर नही लगी, कि आपसकी लडाईसे अतमे भारी क्षति उठानी पडेगी। अग्रेजोने अफगानिस्तानको रोका, और अप्रैल १८८६ ई०में दोनो देशोके प्रतिनिधि पीतरबुर्गमें जमा हुए। रूसियोको हरीरूदका दाहिना किनारा जुल्फिकार डाडेतक और पचदेहसे दक्षिण बागी-उपत्यका, जिसमें पचदेह हरितावली भी शामिल थी, मिली। इस प्रकार रूसी सीमा हिरातसे ५३ मीलपर पहुच गई, जिसके और हिरातके बीचमें कोई प्राकृतिक बाधा नही थी। लेकिन दूसरी तरफ रूसको अमीर-बुखाराके हाथमें वक्षुके बायें तटपर अवस्थित ख्वाजासालेके दक्षिणके सुन्दर चरागाहोको अफगानिस्तानको दिलवाना पडा। सयुक्त कमीशनने जितनी सफलतापूर्वक अपना काम किया था, उससे उत्साहित होकर १८९५ ई०में दूसरा सीमात कमीशन नियुक्त किया गया, जिसने पामीरमें अग्रेजी और रूसी प्रभावक्षेत्रोकी सीमा निर्धारित की। यह सीमा विक्टोरिया (जोर कुल) झीलके दक्षिणी किनारेसे शुरू होकर सरिकोल पर्वतमालाके मेरुदण्डपर होते चीनी सीमाततक पहुच सारिकोल पर्वतमालाकी एक ऊभड-खाभड और दुर्गम बाहीसे ६ मीलपर सनातन हिमवाले प्रदेशमें जाती है, जहापर कि कई पर्वतश्रेणिया आकर मिलती है। "इसी निर्जन एकात स्थानमें समुद्र तटसे बीस हजार फुटके ऊपर मनुष्योकी पहुचसे बिलकुल बाहर तीन साम्राज्य—भारत (अग्रेजी), चीन और रूस मिलते है।"

२५ नवम्बर १८९७ ई०में जनरल क्रोपत्किनने अश्कावादमें अग्रेज यात्रियोंके सामने भाषण करते हुए कहा था—"भीतरी लडाई-झगडेकी सभावनाको खतम करनेके लिए हमने देसियोको बिना हथियारकर उन्हें शातिपूर्ण जीवन स्वीकार करनेके लिए मजबूर करनेमें कोई

सर नही उठा रक्खी है। अब एक अकेला यात्री भी कास्पियन तटमे साइबेरियाके ोमाततक, बिना जरा भी भयके यात्रा कर सकता है। (यहाका) व्यापारीवर्ग सरकारका बसे बडा समर्थक है, जिसके बाद कृषक है। विरोध अब मुल्लाओंके षड्यत्र हीका रह गया है।"

७ रेल-निर्माण

तेक्कोंके साथ युद्ध करनेके लिए तेरह मीलकी रेलवे लाइन बनकर कास्पियन तटसे रेलोंका जाल शुरू हुआ। रेल-निर्माणके लिए खास तौरसे सगठित बटालियनने १८८३ ई०के अततक उसे कास्पियनसे १३५ मीलपर किजिल अरबततक बना दिया। मेवके ऊपर अधिकार हो जानेपर रेल बनानेमें और भी उत्साह हुआ, और अप्रैल १८८५ ई०के उकाजे (राजादेश) द्वारा रेलको आगे बढानेकी स्वीकृति दी गई। ३० जूनको काम शुरू हुआ। इस रेलवे लाइनके बनानेमे बाइस हजार तेक्के मजदूर काम करते रहे, और चौदह महीनेके भीतर रेल किजिल अरबतसे ३५२ मील मेवतक पहुच गई। मेवसे चारजूयकी लाइनपर काम अगस्त १८८६ ई०मे आरभ हुआ। इस लाइनको साठ मील रेगिस्तानमेंसे जाना था। चार मासमे यह एक सौ एकतालीस मील लबी रेल भी तैयार हो गई। कास्पियन तटमें वक्षुके बायें किनारेपर अवस्थित चारजूय-तक अब ६६४ मील लबी रेल बनकर तैयार हो गई। वक्षु हमारी गगाकी तरह एक बडी नदी है, जिसका पाट चारजूयमें सवा मीलका है। नदीमे थोडा ही हटकर दोनो किनारोपर रेगि-स्तान है, जो कि कराकुम और किजिलकुमके महान् रेगिस्तानके भाग है। आमू (वक्षु)पर पुल बनानेके लिए लकडियोंके ३३३० बेडे रूससे लाये गये। पहला पाया जून १८८७ ई०में बैठाया गया और काम इतनी तत्परतासे हुआ, कि छ महीनेके बाद जनवरी १८८८ ई०मे वक्षका पुल यातायातके लिये खोल दिया गया। यह पुल ४६००गज लबा था, जिससे २२७० गज चौडी जल-धारा बहती थी। सितबर १८८७ ई०में वक्षु तटसे २१६ मीलपर अवस्थित समरकदतककी लाइन-पर काम शुरू हो गया, जिसे २८ मीलका रेगिस्तान पार करके कराकुलमें जरफ्शा-सिंचित उपत्यका में पहुचना था। अतमें मई १८८८ ई०में कास्पियनसे समरकदतक ८७९ मीलकी रेल तैयार हो गई। इस रेलवे लाइनपर प्रति मील औसत खर्च ६१४४ पौड (अस्सी हजार रुपया) आया था जब कि हिंदुस्तानमें अग्रेजी कपनियोने रेलोपर प्रति मील अठारहसे बीस हजार पौंड खर्च किये। १८९५ ई०में समरकन्द और ताशकदके बीच रेल बननी शुरू हुई। उसके बाद अदिजान (फरगाना)की लाइन भी तैयार की गई। मेवसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्क तक १९२ मीलकी रेल बनी। कुश्कसे हिरात, गीरिश्क, कधार और चमन होते मध्य-एसियाकी रेलोंको क्वेटामे पाकिस्तानी रेलोंसे आसानीमे मिलाया जा सकता था, इस रास्ते कुश्क और चमनके बीच सिर्फ ४५० मीलकी लाइन बनानी थी। इस सारे रास्तेमें कोई दुर्लघ्य बाधा नही है सिर्फ खुम्बान (चश्मेसब्ज) डाडेको पार करते लाइनको समुद्र तलसे ३४०० फुट ऊपर उठना पडता। चश्मेसब्जके डाडेसे तीस मीलपर ही सब्जवार है।

८ अश्काबाद

कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्कसे ३२२.२५ मीलपर अवस्थित अश्काबादको रूसियोंने अपना शासन-केंद्र बनाया, जिसकी स्थापना १८८३ ई०मे अक्कल हरितावलीके सबसे चौडे तथा कोपेतदाग पर्वतमालाके सानुपर है। १८९९ ई०में इसकी जनसख्या सोलह हजार थी, जिसमे दस हजार सैनिक थे। अश्काबादसे नातिदूर कोपेतदागके पहाडोमे २४०० फुटकी ऊचाईपर फीरोजा और ३००० फुटकी ऊचाईपर सॅगबाद मसूरी-शिमला-जैसे ठडे पहाडी नगर है, जहापर रूसी अफसर अपनी गर्मिया बिताया करते थे। अश्काबादका अर्थ आसुओंकी नगरी या इश्काबादसे प्रेमनगरी भी हो सकता है।

९ मेर्व

यद्यपि यह ऐतिहासिक नगरी, ध्वसावशेपके रूपमे ही सही, मौजूद थी, लेकिन इसके पहले ही इश्कावादको शासन-केंद्र वनाया जा चुका था, इसलिये मेव एक छोटा-सा कस्वा ही रह गया, और उमे बोल्शेविक-क्रातिके वाद ही आगे वढनेका मौका मिला ।

स्रोत-ग्रन्थ

१ ओचेक इस्तोरिइ तुकमान्स्कओ नरोदा (व व वर्तोल्द, १९२८)
२ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ श्वेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७२-७७)
३ तुकमानिया इ येये कुरोत नया वगात्स्वा (व अ अलेक्सन्द्रोफ, मास्को, १९१०)
४ Heart of Asia (E D Ross, London, 1899)
५ History of Mongol (H H Howorth, London, 1876-88)
६ La rivalite anglo russie en xxi siecle en Asie (A M F Rouire Paris, 1908)

भाग ५

बोल्शेविक-क्रांति

अध्याय १

रूसमें क्रांति

१. लेनिन रूसमे (१९१७ई०)

यद्यपि जार अव तख्तसे उतार दिया गया था, और लोग वडी-वडी आशा कर रहे थे, लेकिन फवरी क्रातिके परिणामस्वरूप जिन लोगोके हाथमे शासन गया, वह अव पुराने स्वार्थोको उसी तरह सुरक्षित रखना चाहते थे, जिस तरह जारशाही करती आ रही थी। औद्योगिक पूजीवादकी स्थापनाके वाद भी रूसमें अभीतक सामन्तशाही स्वार्थके हाथमें ही सैनिक और असैनिक शक्ति थी। फवरी-क्रातिने पूजीपतियो और मध्यवर्गको ऊपर आनेका मौका दिया, जो पश्चिमी युरोपकी तरह शुद्ध पूजीका शासन मजवूत करना चाहते थे। लडाईने लोगोकी जैसी आर्थिक अवस्था कर डाली थी, और किसानो और मजदूरोंके सवर्षोने जो भावनायें पैदा कर दी थी, उनके लिये अस्थायी सरकारने कुछ नही किया। लेनिनके अनुसार अस्थायी सरकार "रूसके लोगोंको न शाति दे सकी, न रोटी, न पूर्ण स्वतत्रता", वल्कि जारशाहीके हट जानेसे पश्चिमी दोस्त कही कोई दूसरा अर्थ न लगाने लगें, इसलिये अस्थायी सरकारने युद्धको पहले हीकी तरह सरगर्मीके साथ चालू रखनेका विश्वास दिलाया। यही नही, वल्कि उसीके लिये छ अरव रूवलके 'स्वतत्रता-ऋण'के उठानेका प्रयत्न किया। भूमि अव भी जमीदारोंके हाथमें अछूती रही, पूजीपतियोंके हाथसे कारखानोको जरा भी इधर-उधर करनेकी कोशिश नही की गई। कुर्स मोगिलेफ और पेमकी गुर्वानियो (प्रदेशो)में किसानोने कुछ करना चाहा, तो मार्चमें उनके ऊपर सेना भेजी गई। जारशाही अफसर और पुराना शासन-यत्र वैसा ही अक्षुण्ण रक्खा गया, जिस तरह भारतसे अग्रेजोंके जानेके वाद हिन्दुस्तानमें। वडे-वडे जमीदार और पक्के राजभक्त अव भी सर्वेसर्वा थे, समाजवादी क्रातिकारी दलका वकील करेन्स्की न्यायमत्री वना था। उसने जारशाही समयके सरकारी वकीलोको अपनी जगहपर कायम रक्खा। और तो और, पुरानी उपाधियो—राजा, कौण्ट, वारोन आदि—को भी जैसे-का-तैसा ही बनाये रक्खा। नई सरकारने जारके परिवारको सुरक्षित रखनेके लिये उसे इगलैड भेजनेकी कोशिश की, लेकिन जबर्दस्त विरोध देख वैसा नही कर पायी। फवरी-क्रातिके वाद जो मूर्तिया सामने आई और उन्होंने जो रवैया अख्तियार किया, उसने वतला दिया, कि इनसे साधारण जनताका कोई हित नही हो सकता।

लेनिनको जैसे ही फवरी-क्रातिकी खवर मिली, वैसे ही वह रूस पहुचनेके लिये वेकरार हो गये। लेकिन उनका नाम मित्रशक्तियोंके खुफिया-विभागकी काली-सूचीमें दर्ज था। अग्रेज अपने प्रदेशमे होकर जानेकी आज्ञा देनेके लिये तैयार नही थे। सोवियतोकी मागसे मजबूर होकर अस्थायी सरकारके वैदेशिक विभागने सभी निर्वासित रूसियोको देश लौटनेके लिये मित्रशक्तियोको लिखा, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया, कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादियोको न आने दिया जाय। इस प्रकार लेनिनका लौटनेका रास्ता वन्द था। वह लौटनेका कोई उपाय सोच रहे थे। उनको यह भी ख्याल आया, कि स्वीडनका पासपोर्ट लेकर जर्मनीके रास्ते जाय, लेकिन उन्हे स्वीडिश भाषाका एक शब्द भी मालूम नही था। तव उन्होने गूगा वननेकी भी सोची। सब देखकर अन्तमें उन्हे यह साफ मालूम होने लगा, कि जर्मनीके रास्तेसे ही लौटा जा सकता है। रूसी निर्वासितो—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादियो

---के रूसमे लौटनेसे जर्मन अपना नुकसान नही समझते थे। इमीलिये स्वीजरलैंडके समाज वादी प्लातेनके बहुत लिखा-पढी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने देशके भीतरसे लेनिन को जानेकी आज्ञा दी, कि वह उसी खास ट्रेनमें जाय, जिससे दूसरे निर्वासित रूसी जायगे। वह न रास्तेमे उतरे, और न किसीसे बातचीत करे। लेनिनको तो रूसमें पहुचनेसे मतलब था, उन्होने इस शर्तको स्वीकार कर लिया और मुहरबन्द ट्रेनपर बैठ गये। जब फिनलैंड और रूसकी सीमापर उनकी ट्रेन पहुची, तो बोल्शेविक नेताओने उन्हे देशकी परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्रादके पास बेलोअस्त्रोफ स्टेशनपर १६ (३) अप्रैल १९१७ ई०को उन्हे उनके साथियाने देशकी परिस्थिति समझाई। जब वह पेत्रोग्रादके फिनलैंड रेलवे स्टेशनपर पहुचे, तो हजारो फौजी सिपाही अपने प्रिय नेताके स्वागतके लिये पातीसे खडे सलामी दे रहे थे, सैकडो लाल झडे फहरा रहे थे। पताकोपर बडे-बडे अक्षरोमे "स्वागत लेनिन" लिखा था। एक हथियारबन्द गाडीपर खडे होकर लेनिनने एक छोटा-सा भाषण दिया, जिसको समाप्त करते हुये "समाजवादी क्राति जिन्दाबाद"का नारा लगाया। १७ (४) अप्रैलको बोल्शेविकाकी एक बैठकमें लेनिनने अपने प्रसिद्ध निबध "वर्तमान क्रातिमें सर्वहारोके सामने काम" को रक्खा, जिसमे लेनिनने बतलाया, कि यह सक्रातिकी अवस्था है, जिसके द्वारा शक्ति पूजी वादियोंके हाथमें चली गई है। अब शक्तिको सर्वहारो और गरीब किसानोंके हाथमें करते क्रातिकी दूसरी सीढीको पार करना है। लेनिनने यह भी कहा, कि लडाईसे हमे अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिये। इसे उनके सहयोगियोमेंसे भी कितनोने पसन्द नही किया। उनका कहना था---तब तो जर्मन बेधडक सारे रूसको दखल कर लेंगे और हम जारशाहीके फदेसे निकलकर जर्मनशाहीके हाथमें चले जायगे। लेकिन लेनिन अपने निश्चयपर दृढ थे---"अब जब कि रूसमे भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त है, तो हमारा सबसे पहला काम है शासनको कमकरों और गरीब किसानोंके हाथमें लानेकी कोशिश करना। अस्थायी सरकारको हमें कोई मदद नही करनी चाहिये। यह पूजीवादियोकी सरकार साम्राज्यवादी छोड और हो ही क्या सकती है? सोवियतोको भी कमकरो और किसानोके हाथमें होना चाहिये। जमीदारोकी जमीदारीको छीनकर किसानोको दे देना चाहिये। अलग-अलग बैंकोका मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिये। यद्यपि समाजवादकी स्थापना तुरत नहीं हो सकती, लेकिन राष्ट्रकी उपज और उसके वितरणके साधनोको सोवियता (पचायतो)के हाथमे होना चाहिये। जनतात्रिक समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) कर देना चाहिये जिसमे मालूम हो कि हम पैरिसकम्यून (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते है।" लेनिनके यह विचार रूसके तत्कालीन राजनीतिज्ञोके ऊपर बमकी तरह पडे। बोल्शेविक नेता भी घबडा उठे--"यह शेखचिल्लीका महल है। वास्तविकतासे इसका कोई सबध नही है। लेनिन दस साल तक रूसको नही देख पाये, इमीलिये वह इस तरहकी ऊल-जलूल बातें करते है।"

लेकिन लेनिनकी बातें ऊल-जलूल नही थीं, और न वह रूसी जनताकी नब्ज पहचाननेमें गलती कर सकते थे। उन्हे जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हे अच्छी तरह समझानेमें सफल हो रहे थे। उस समय बोल्शेविक पार्टीका केन्द्र क्शेसिन्स्की भवनमे था, जिसकी सामनेकी सडकपर लेनिन रोज व्याख्यान देते थे। तीन महीनेतक लगातार उनकी कलम और जबान चलती रही। कुछ ही समयमे लेनिन अपनी बातोको मनवानेमें समर्थ हुये। पेत्रोग्रादके कमकर तो पहले हीसे उनपर अद्भुत विश्वास रखते थे, अब बोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुये। वह देख रहे थे, कि अस्थायी सरकारके जोर देनेपर भी सैनिक मैदान छोडकर भागते जा रहे है, जर्मन फौजे आगे बढती आ रही है। ऐसी अवस्थामें अच्छी शर्तोपर जर्मनीसे सुलह कर लेना ही अच्छा है। अप्रैलमें बोल्शेविक पार्टीकी सातवीं अखिल रूसी कान्फ्रेंस हुई, जिसमें भी एक प्रस्ताव पास करके माग की गई, कि जमींदारासे जमीन छीनकर किसान-कमेटियोंके हाथमें दे दी

जानी चाहिये। इसी काफ्रेसमे स्तालिनने जातियोकी समस्यापर प्रकाश डालते हुए कहा था, कि सभी जातियोको आत्म-निणयका अधिकार मिलना चाहिये, यदि वह रूससे अलग होना चाहें, तो उसके लिये भी उन्हे स्वतत्रता मिलनी चाहिये। ३ और ४ मई (२० और २१ अप्रैल)को अस्थायी सरकारकी साम्राज्यवादी नीतिके विरुद्ध पेत्रोग्रादमे एक लाख आदमियोने प्रदर्शन किया। इसके विरुद्ध पूजीवादियोंने सैनिक अफसरो, विद्यार्थियो, दूकानदारोका जलूस निकाला, जिसका नारा था "अस्थायी सरकारमें विश्वास"। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्रके कमाडर जेनरल कोर्निलोफने हुक्म दिया था, कि मजदूरोके प्रदशन पर सेना गोली चलाये, लेकिन सिपाहियोने वैसा करनेसे माफ इन्कार कर दिया।

२ करेन्स्की सरकार

१५ (२) मईको अस्थायी सरकारमे कुछ परिवतन हुआ, और अब मत्रिमडलमे मेन्शेविकों और समाजवादी क्रातिकारियोकी प्रधानता थी। समाजवादी क्रातिकारी नेता करेन्स्की अब युद्धमत्री था। उसने जमनीके खिलाफ युद्धको और भी जोरसे चलानेका प्रयत्न किया, लेकिन रूमी जनता इसके लिये तैयार नही थी, प्राचीनपथी अत्याचारी जारशाही गुलामोकी बातोमें पडकर वह और लडनेके लिये सन्नद्ध नही थे। बोल्शेविक इस वक्त वही कर रहे थे, जिसे रूसी जनता चाहती थी। अवतक बोल्शेविकोका प्रभाव पेत्रोग्रादके मजदूर-सगठनोमें बहुत बढ गया था। इसका परिणाम यह हुआ, कि मजदूरोने सोवियतोंके नये चुनावमें मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारी प्रतिनिधियोको हटाकर बोल्शेविकोको निर्वाचित किया। सोवियतोमे ही नही, मजदूर सभाओमें भी, विशेषकर फैक्ट्री कमेटियोमें, बोल्शेविकोकी प्रधानता हो गई। १२ जून (३० मई) को पेत्रोग्रादमें फैक्ट्री कमेटियोकी पहली काग्रेस हुई, जिसके तीन चौथाई प्रतिनिधियोने बोल्शेविकोके पक्षमें अपनी राय दी। गावो और शहरोसे लेनिन और बोल्शेविक पत्रिका 'प्रावदा'के पास हजारो पत्र आते रहते थे। सिपाहियोने अपने एक पत्रमें लिखा था—"साथी, मित्र लेनिन, याद रखो, कि हममेंसे एक-एक आदमी जहा हैं, वहा तुम्हारा अनुगमन करनेके लिये तैयार है। तुम्हारे विचार ठीक किसानो और मजदूरोंके सकल्पको प्रकट करते हैं। सोवियतोकी प्रथम अखिल रूसी काग्रेस जून १७ में हुई जिसके हजार प्रतिनिधियोमें एक सौ पाच ही बोल्शेविक थे, लेकिन अब वह इतने प्रभावित हो गये थे, कि उन्होने बोल्शेविकोकी नीतिका समथन किया। जिस समय काग्रेस हो रही थी, इसी समय बोल्शेविक पेत्रोग्रादके मजदूरो और सैनिकोके एक भारी प्रदशनकी तैयारी कर रहे थे। इसके नारे थे—"सभी शक्ति सोवियतोंको", "पूजीवादी दसो मत्री मुर्दाबाद", "रोटी, शाति और स्वतत्रता"। मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोको भय लगा, कि इससे बोल्शेविकोका प्रभाव और भी बढ जायगा, इसलिये उन्होने तीन दिनतक सभी तरहके प्रदर्शनोको बद रखनेका प्रस्ताव पास कराया, साथ ही पेत्रोग्राद सोवियतकी कायकारिणी समितिने १ जुलाई (१८ जून) को एक साधारण प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा वह "अस्थायी सरकारमें विश्वास"का नारा लगवाना चाहते थे। बोल्शेविकोने प्रदर्शन करना मजूर किया, लेकिन उसमें उन्होने अपने नारे लगवाये। उस दिनके प्रदर्शनमें चार लाखसे अधिक कमकरोने भाग लिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी जो चाहते थे, वह नही हुआ और प्रदर्शनने अस्थायी सरकारमे अविश्वासके जलूसका रूप ले लिया।

अप्रैल १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्धमें शामिल हो गया था, लेकिन तबतक इगलैंड और अमेरिकाकी हालत बुरी हो गई थी। यदि पूर्वी मोर्चेपर रूमी भी प्रतिरोध बन्द कर देते, तो वह कुछ नही कर सकते थे। इसीलिये वह करेन्स्कीपर जोर दे रहे थे। जुलाईमें मत्रिमडलमें परिवर्तन होकर करेन्स्की प्रधान-मत्री बन गया। केरेन्स्कीने जोर देकर आक्रमण करवाया, लेकिन रूसी सेनाको तार्नोपोलमे बुरी तरहसे हारकर जल्दी ही हटनेके लिये मजबूर होना पडा। दस दिनके आक्रमणमे साठ हजार रूमी हताहत हुये। लेकिन इससे क्या? रूमी पूजीवादी अपने पश्चिमी भाई-बन्दोके दामनको पकडे रहना चाहते थे। अभीतक अस्थायी

—के रूसमें लौटनेसे जर्मन अपना नुकसान नहीं समझते थे। इसीलिये स्वीजरलैंडके समाजवादी प्लातेनके बहुत लिखा-पढ़ी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने देशके भीतरसे लेनिनको जानेकी आज्ञा दी, कि वह उसी खास ट्रेनमें जाय, जिससे दूसरे निर्वासित रूसी जायगे। वह न रास्तेमें उतरें, और न किसीसे बातचीत करें। लेनिनको तो रूसमें पहुचनेसे मतलब था, उन्होंने इस शर्तको स्वीकार कर लिया और मुहरबन्द ट्रेनपर बैठ गये। जब फिनलैंड और रूसकी सीमापर उनकी ट्रेन पहुची, तो बोल्शेविक नेताओंने उन्हें देशकी परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्रादके पास बेलोअस्त्रोफ स्टेशनपर १६ (३) अप्रैल १९१७ ई०को उन्हें उनके साथियोंने देशकी परिस्थिति समझाई। जब वह पेत्रोग्रादके फिनलैंड रेलवे स्टेशनपर पहुचे, तो हजारों फौजी सिपाही अपने प्रिय नेताके स्वागतके लिये पातीसे खड़े सलामी दे रहे थे, सैकड़ों लाल झंडे फहरा रहे थे। पताकोंपर बड़े-बड़े अक्षरोंमें "स्वागत लेनिन" लिखा था। एक हथियारबन्द गाड़ीपर खड़े होकर लेनिनने एक छोटा-सा भाषण दिया, जिसको समाप्त करते हुये "समाजवादी क्रांति जिन्दाबाद"का नारा लगाया। १७ (४) अप्रैलको बोल्शेविकोंकी एक बैठकमें लेनिनने अपने प्रसिद्ध निबंध "वर्तमान क्रांतिमें सर्वहारोंके सामने काम" को रक्खा, जिसमें लेनिनने बतलाया, कि यह सक्रांतिकी अवस्था है, जिसके द्वारा शक्ति पूजीवादियोंके हाथमें चली गई है। अब शक्तिको सर्वहारों और गरीब किसानोंके हाथमें करते क्रांतिकी दूसरी सीढ़ीको पार करना है। लेनिनने यह भी कहा, कि लड़ाईसे हमें अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिये। इसे उनके सहयोगियोंमेंसे भी कितनोंने पसन्द नहीं किया। उनका कहना था—तब तो जर्मन बेधड़क सारे रूसको दखल कर लेंगे और हम जारशाहीके फंदेसे निकलकर जर्मनशाहीके हाथमें चले जायगे। लेकिन लेनिन अपने निश्चयपर दृढ़ थे—"अब जब कि रूसमें भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है, तो हमारा सबसे पहला काम है शासनको कमकरों और गरीब किसानोंके हाथमें लानेकी कोशिश करना। अस्थायी सरकारको हमें कोई मदद नहीं करनी चाहिये। यह पूजीवादियोंकी सरकार साम्राज्यवादी छोड़ और हो ही क्या सकती है? सोवियतोंको भी कमकरों और किसानोंके हाथमें होना चाहिये। जमीदारोंकी जमीदारीको छीनकर किसानोंको दे देना चाहिये। अलग-अलग बैंकोंको मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिये। यद्यपि समाजवादकी स्थापना तुरंत नहीं हो सकती, लेकिन राष्ट्रकी उपज और उसके वितरणके साधनोंको सोवियतों (पचायतों)के हाथमें होना चाहिये। जनतांत्रिक समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) कर देना चाहिये, जिसमें मालूम हो कि हम पैरिसकम्यून (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते हैं।" लेनिनके यह विचार रूसके तत्कालीन राजनीतिज्ञोंके ऊपर बमकी तरह पड़े। बोल्शेविक नेता भी घबड़ा उठे—"यह शेखचिल्लीका महल है। वास्तविकतासे इसका कोई संबंध नहीं है। लेनिन दस साल तक रूसको नहीं देख पाये, इसीलिये वह इस तरहकी ऊल-जलूल बातें करते हैं।"

लेकिन लेनिनकी बातें ऊल जलूल नहीं थीं, और न वह रूसी जनताकी नब्ज पहचाननेमें गलती कर सकते थे। उन्हें जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हें अच्छी तरह समझानेमें सफल हो रहे थे। उस समय बोल्शेविक पार्टीका केंद्र क्शेन्स्की भवनमें था, जिसकी सामनेकी सड़कपर लेनिन रोज व्याख्यान देते थे। तीन महीनेतक लगातार उनकी कलम और जबान चलती रही। कुछ ही समयमें लेनिन अपनी बातोंको मनवानेमें समर्थ हुये। पेत्रोग्रादके कमकर तो पहले हीसे उनपर अद्भुत विश्वास रखते थे, अब बोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुये। वह देख रहे थे, कि अस्थायी सरकारके जोर देनेपर भी सैनिक मैदान छोड़कर भागते जा रहे हैं, जर्मन फौजें आगे बढ़ती आ रही हैं। ऐसी अवस्थामें अच्छी शर्तोंपर जर्मनीसे सुलह कर लेना ही अच्छा है। अप्रैलमें बोल्शेविक पार्टीकी सातवीं अखिल रूसी कान्फ्रेंस हुई, जिसमें भी यह प्रस्ताव पास करके मांग की गई, कि जमींदारोंसे जमीन छीनकर किसान-कमेटियोंके हाथमें दे दी

जानी चाहिये। इसी काफ्रेममे स्तालिनने जातियोकी समस्यापर प्रकाश डालते हुए कहा था, कि सभी जातियोंको आत्म-निणयका अधिकार मिलना चाहिये, यदि वह रूससे अलग होना चाहें, तो उसके लिये भी उन्हें स्वतत्रता मिलनी चाहिये। ३ और ४ मई (२० और २१ अप्रैल)को अस्थायी सरकारकी साम्राज्यवादी नीतिके विरुद्ध पेत्रोग्रादमे एक लाख आदमियोने प्रदशन किया। इसके विरुद्ध पूजीवादियोने सैनिक अफसरो, विद्यार्थियो, दूकानदारोका जलूस निकाला, जिसका नारा था "अस्थायी सरकारमें विश्वास"। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्रके कमाडर जेनरल कोर्निलोफने हुक्म दिया था, कि मजदूरोके प्रदशन पर सेना गोली चलाये, लेकिन सिपाहियोंने वैसा करनेसे साफ इन्कार कर दिया।

२ करेन्स्की सरकार

१५ (२) मईको अस्थायी सरकारमे कुछ परिवतन हुआ, और अब मत्रिमडलमें मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोकी प्रधानता थी। समाजवादी क्रातिकारी नेता करेन्स्की अब युद्धमत्री था। उसने जमनीके खिलाफ युद्धको और भी जोरसे चलानेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी जनता इसके लिये तैयार नही थी, प्राचीनपथी अत्याचारी जारशाही गुलामोकी बातोमे पडकर वह और लडनेके लिये सन्नद्ध नही थे। बोल्शेविक इस वक्त वही कर रहे थे, जिसे रूसी जनता चाहती थी। अबतक बोल्शेविकोका प्रभाव पेत्रोग्रादके मजदूर-सगठनोमें बहुत बढ गया था। इसका परिणाम यह हुआ, कि मजदूरोने सोवियतोंके नये चुनावमे मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारी प्रतिनिधियोको हटाकर बोल्शेविकोंको निर्वाचित किया। सोवियतोमें ही नही, मजदूर सभाओमें भी, विशेषकर फैक्ट्री कमेटियोमें, बोल्शेविकोकी प्रधानता हो गई। १२ जून (३० मई) को पेत्रोग्रादमें फैक्ट्री कमेटियोंकी पहली काग्रेस हुई, जिसके तीन चौथाई प्रतिनिधियोने बोल्शेविको-के पक्षमें अपनी राय दी। गावो और शहरोंसे लेनिन और बोल्शेविक पत्रिका 'प्रावदा'के पास हजारो पत्र आते रहते थे। सिपाहियोने अपने एक पत्रमें लिखा था—"साथी, मित्र लेनिन, याद रक्खो, कि हममेंसे एक-एक आदमी जहा है, वहा तुम्हारा अनुगमन करनेके लिये तैयार है। तुम्हारे विचार ठीक किसानो और मजदूरोंके सकल्पको प्रकट करते हैं। सोवियतोकी प्रथम अखिल रूसी काग्रेस जून १७ में हुई जिसके हजार प्रतिनिधियोमें एक सौ पाच ही बोल्शेविक थे, लेकिन अब वह इतने प्रभावित हो गये थे, कि उन्होने बोल्शेविकोकी नीतिका समथन किया। जिस समय काग्रेस हो रही थी, इसी समय बोल्शेविक पेत्रोग्रादके मजदूरो और सैनिकोके एक भारी प्रदशनकी तैयारी कर रहे थे। इसके नारे थे—"सभी शक्ति सोवियतोको", "पूजीवादी दसो मत्री मुर्दाबाद", "रोटी, शाति और स्वतत्रता"। मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियोंको भय लगा, कि इससे बोल्शेविकों-का प्रभाव और भी बढ जायगा, इसलिये उन्होने तीन दिनतक सभी तरहके प्रदशनोको बद रखने-का प्रस्ताव पास कराया, साथ ही पेत्रोग्राद सोवियतकी कार्यकारिणी समितिने १ जुलाई (१८ जून) को एक साधारण प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा वह "अस्थायी सरकारमें विश्वास"का नारा लगवाना चाहते थे। बोल्शेविकोने प्रदशन करना मजूर किया, लेकिन उसमें उन्होंने अपने नारे लगवाये। उस दिनके प्रदशनमें चार लाखसे अधिक कमकरोने भाग लिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी जो चाहते थे, वह नही हुआ और प्रदशनने अस्थायी सरकारमें अविश्वासके जलूसका रूप ले लिया।

अप्रैल १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्धमे शामिल हो गया था, लेकिन तबतक इगलैंड और अमेरिकाकी हालत बुरी हो गई थी। यदि पूर्वी मोर्चेपर रूसी भी प्रतिरोध बन्द कर देते, तो वह कुछ नहीं कर सकते थे। इसीलिये वह करेन्स्कीपर जोर दे रहे थे। जुलाईमे मत्रिमडलमें परिवर्तन होकर करेन्स्की प्रधान-मत्री बन गया। करेन्स्कीने जोर देकर आक्रमण करवाया, लेकिन रूसी सेनाको तार्नोपोलमें बुरी तरहसे हारकर जल्दी ही हटनेके लिये मजबूर होना पडा। दस दिनके आक्रमणमें साठ हजार रूसी हताहत हुये। लेकिन इससे क्या? रूसी पूजीवादी अपने पश्चिमी भाई-बन्दोके दामनको पकडे रहना चाहते थे। अभीतक [illegible]

मन्त्रिमंडलका काम बहुत कुछ मेल-जोलके साथ चल रहा था, लेकिन अब प्रधान-सेनापति कोर्निलोफ और प्रधान-मंत्री करेन्स्कीमें झगडा हो गया। सितम्बरके आरम्भमें कोर्निलोफ कई दूसरे सेनापतियाकी सहायतासे करेन्स्कीको अल्टीमेटम दे सेना ले पेत्रोग्रादपर कब्जा करनेके लिये चल भी पडा। करेन्स्की जनतासे डरता था, लेकिन अब उसकी मदद लिये बिना कोई चारा नही था। कोर्निलोफसे मुकाबिला करनेके लिये सबसे आगे थे बोल्शेविक। करेन्स्कीने अपना नया मन्त्रिमंडल बनाया, इसमें भी नरमदली ही अधिक थे, जिनमें जेनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल वेर्देव्स्की भी थे। यह दोनो समाजवादी नहीं थे, तो भी उन्होंने अपने साथी मन्त्रियोंसे कहा, कि सेना और नहीं लड सकती, इसलिए लडाई बन्द कर देनी चाहिये और सैनिकोंको युद्धक्षेत्रसे हटा लेना चाहिये। लेकिन मित्रशक्तियोंके पिटठू करेन्स्की और उसके साथियोंने उनकी बात नही मानी।

युद्धसे प्रति दिन चार करोड रूबलका खर्च देशके मत्थे पड रहा था। यह पैसा कहासे आये? सरकारने अन्धाधुन्ध कागजके नोट छापकर उसे पूरा करना चाहा, जिसका परिणाम हुआ सभी चीजोंके दामका अप्रत्याशित रूपसे बढना—मुद्रास्फीति। लोग अपने वेतनसे जीविका नही चला सकते थे। साथ ही कारखानोंके लिये कच्चा माल और ईंधन तथा मजदूरोंके लिये रोटी मिलनी मुश्किल हो गई। रेल और यातायातके दूसरे साधन भी ठप हो गये। मिलें और कारखाने बेकार हो गये। मईमें १०८ कारखाने जिनमें ८७०० मजदूर काम कर रहे थे, जूनमें १२५ कारखाने (३८४५५ आदमी), जुलाईमें २०६ कारखाने जिनमें ४७७५४ मजदूर काम करते थे, बन्द हो गये। इस प्रकार मईमें जहा कारखानोंके बद होनेसे ८७०० मजदूर बेकार थे, वहा जूनमें ३८४५५ और जुलाईमें ४७७५४ मजदूर बेकार हो गये। इस बेकारीने अस्थायी सरकारके विरुद्ध लोगोंके भावोंको और भडका दिया। इसीलिये कोई आश्चर्य नही, यदि १७ (४) जुलाईको पाच लाख मजदूरोंने अस्थायी सरकारके विरुद्ध जबर्दस्त प्रदर्शन किया। मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी देख रहे थे, कि वह लोगोंपर अपने प्रभावको खोते जा रहे है, और अधिक समयतक वह शासनको अपने हाथमें नही रख सकेंगे। इसलिये उन्होंने गोलीसे लोगोंकी हिम्मत तोडनेकी कोशिश की। १७ (४) जुलाईको युद्धक्षेत्रसे लौटाकर मगाये गये सैनिक अफसरो और कसाकोंने प्रदर्शनकारियोंपर गोलिया चलाई, अगले दिन भी वह गोलिया चलाते रहे। उन्होंने बोल्शेविक पत्रिका 'प्रवदा'के कार्यालयपर आक्रमण करके उसे तोड-फोड दिया। वह लेनिनको पकडनेके लिये उनकी जगहपर भी पहुचे, लेकिन तबतक लेनिनको वहासे हटा दिया गया था। वह पत्रोग्रादसे दूर एक जगलमें झोपडीके भीतर रहते थे। बोलशेविक पार्टी अब आधी गैरकानूनी हो चुकी थी। करेन्स्कीकी सरकार लेनिनपर 'देशद्रोह'का अपराध लगा रही थी। रूइकोफ, कामेनेफ और त्रोत्स्की-जैसे ढिलमिलयकीन क्रातिकारियोंने जोर दिया, कि लेनिनको आकर अदालतमें अपनी पैरवी करनी चाहिये, लेकिन बोल्शेविकोंने इसका विरोध करते हुये कहा—"यह लेनिनको पकडकर जेल नही ले जायगे, बल्कि रास्तेमें ही मार डालेंगे।" इस दूरदर्शिताका समर्थन इतिहासने किया। बोल्शेविक क्राति लेनिनके बिना बहुत निर्बल हो जाती, उस महान् प्रतिभाके प्राणोंकी रक्षा उस समय इसी दूरदर्शितासे हो सकी। ८ अगस्त (२६ जुलाई)का बोल्शेविक पार्टीकी छठी काग्रेस पत्रोग्रादमें शुरू हुई। पुलिसके डरके मारे काग्रेस गुप्त रीतिसे हो रही थी, तब भी लेनिनका उसमें आना खतरेसे खाली नहीं था, इसलिये वह नहीं आ सके। इसी काग्रेसने स्तालिनके प्रस्तावको स्वीकार करते हुये बोल्शेविकोंके आर्थिक प्रोग्रामका समर्थन किया—जमीदारोंकी जमीदारियोंको जब्त किया जाय, सभी भूमिको राष्ट्रीय, सभी बैंको और बडे-बडे उद्योग-धधोंको राष्ट्रीय बना दिया जाय, और उत्पादन और वितरणपर मजदूरोंका अंकुश हो। इसी काग्रेसने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारीका काम किया।

२५ (१२) अगस्त १९१७ ई०को राज्यपरिषद्की बैठक मास्कोमें बुलाते हुये सरकारने चाहा कि उसके द्वारा सैनिक अधिनायकत्व कायम करके अपने शासनको मजबूत कर लिया

जाय। बोल्शेविक भी कच्चे गुड्डे नही थे। मास्को बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिने उसी दिन चार लाख मजदूरोका प्रदशन सगठित किया, सभी जगह मजदूरोने हडताल कर दी। राज्यपरिषद्को बिजलीकी रोशनी बिना अपनी वैठक करनी पडी। अगले दिन जेनरल कोर्निलोफ मास्कोमें आया। वहाके पूजीपतियोने उसका सरकारी तौरसे स्वागत करनेका प्रबन्ध किया, लेकिन राज्यपरिषद्वालोने खतरेको समझ लिया, इसलिये सैनिक अधिनायकत्वकी घोषणा करनेकी उन्हे हिम्मत नही हुई, और कोर्निलोफको खाली ही हाथ लौट जाना पडा।

रूसकी इस स्थितिको देखकर मित्रशक्तिया घबरा रही थी। वह कभी करेन्स्कीकी पीठ ठोकतीं, और कभी प्रधान-सेनापति कोर्निलोफकी। उन्होने कोर्निलोफका पाच अरब रूबल कर्ज देनेका वचन इस शर्त पर दिया, कि रूसमें एक मजबूत सरकार कायम हो जाय। लेकिन मजबूत सरकार कायम करना कोर्निलोफके बसकी बात नही थी। कोर्निलोफने जब पेत्रोग्रादको हाथसे बाहर जाते देखा, तो १ सितम्बर (१९ अगस्त)को उसने रीगाको जर्मनोके हाथमें समर्पण कर दिया, जिसमें कि उनकी सेनायें सीधे पेत्रोग्राद पहुच जाय। करेन्स्कीसे कोर्निलोफने यह भी माग की, कि सारी सैनिक और असैनिक शक्ति हमारे हाथमें दे दो, फिर हम पेत्रोग्रादके कमकरोको ठीक कर लेंगे। करेन्स्कीको अब जनताके गुस्सेका भी ख्याल करके और अपने लिये उपस्थित डरकी वजहसे भी कोर्निलोफको प्रधान-सेनापतिके पदसे हटाना पडा, लेकिन कोर्निलोफने आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया और ७ सितम्बर (२५ अगस्त)को उसने पेत्रोग्रादके विरुद्ध एक सेना जेनरल क्रीमोफकी अधीनतामें भेजी। अब घबराये हुये करेन्स्की और उसके सहयोगियोको बोलशेविकोके सामने सहायताके लिये हाथ पसारनेके सिवा कोई रास्ता नही रह गया। बोल्शेविकोने इस वक्त अपनी सूझ और सगठनका परिचय दिया, जिसके कारण कोर्निलोफकी बुरी हार हुई। जेनरल क्रीमोफने आत्महत्या कर ली। कोर्निलोफ, देनिकिन और कितने ही दूसरे जेनरल गिरफ्तार कर लिये गये, लेकिन करेन्स्की बोल्शेविकोंसे और भी ज्यादा डरता था, इसलिये इन देशद्रोही जेनरलोके भाग जानेमें कोई दिक्कत नही हुई। कोर्निलोफके पराजयके बाद बोल्शेविकोका लोहा शत्रु, मित्र और उदासीन सभी मानने लगे। मजदूरो और गरीबोमे उनका प्रभाव बहुत बढ गया। सोवियतोके सगठन उनके हाथमें आने लगे। १३ सितम्बर (३१ अगस्त)को पेत्रोग्रादके कमकरो और सैनिकोके प्रतिनिधियोकी सोवियतने बहुमतके साथ बोल्शेविक प्रस्तावको पास किया। १८ (५) सितम्बरको मास्कोकी सोवियतने भी वैसा ही किया। इस प्रकार राजनीतिक राजधानी पेत्रोग्राद और औद्योगिक राजधानी मास्को दोनोकी सोवियतें बोल्शेविकोके हाथमे आ गई। सितम्बर-अक्तूबरके बीचमे सदस्योकी सख्या और प्रभाव दोनोमे लेनिनकी पार्टी दिन-दूनी रात-चौगुनी जनताके विश्वासको पाती गई। अप्रैल १९१७ ई०मे जहा उसके सदस्योकी सख्या अस्सी हजार थी, वहा अगस्तके अन्तमें वह ढाई लाख और अक्तूबरके मध्यमें चार लाख हो गई। कही भी हडताल करा देना या बडे-बडे प्रदर्शन निकाल देना उनके बायें हाथका खेल था। देशमे जो क्राति मची हुई थी, उसमें सैनिक भी शामिल थे। वह अपने गावोमें सबधियोको उसके बारेमे चिटठी लिखते, जिससे किसानोने जमीदारीके खेतोको छीनना शुरू कर दिया। करेन्स्कीकी सरकारने जमीदारोकी रक्षाके लिए अपने कमजोर हाथोको बढाते हुये किसान-समितियोके सदस्योको गिरफ्तार करनेकी कोशिश की, लेकिन उसके पास इतनी शक्ति कहा थी?

विद्रोहकी तैयारिया—सितम्बरमें लेनिन हेलसिंकी (फिनलैंड)में छिपकर रहे थे, **जहासे** वह बराबर बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिके पास अपने सुझाव भेजा करते थे। २५ (१२) और २७ (१४) सितम्बरको लेनिनने केन्द्रीय समितिको दो बडे ही महत्त्वपूर्ण पत्र भेजे थे—"बोल्शेविकोको अवश्य अधिकार हाथमें लेना चाहिये" और "मार्क्सवाद और विद्रोह"। पहले पत्रमें लेनिनने बतलाया था, कि पेत्रोग्राद और मास्कोकी सोवियतोमें अपना बहुमत

स्थापित हो जानेपर वोल्शेविकोंके लिये अधिकार हाथमें लेना मुश्किल नहीं है। "पार्टीके कर्तव्यको अच्छी तरह साफ कर देना चाहिये। पेत्रोग्राद और मास्कोमें सशस्त्र विद्रोह, अधिकारको हाथमें लेना और सरकारको निकाल बाहर करना—यह काम आजका हमारा प्रोग्राम होना चाहिये।" लेकिन अभी भी वोल्शेविक नेताओंमें कुछ ऐसे लोग थे, जो इतने बड़े कदमको उठानेमें भारी खतरा समझते थे। लेकिन खतरा लिये बिना क्या कभी कोई बड़ा काम किया जा सकता है? केन्द्रीय समितिने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारियां बड़ी तेजीसे शुरू कर दी। पेत्रोग्राद-सोवियतकी एक क्रांतिकारी सैनिक समिति स्थापित की गई, जो विद्रोह का संचालन केंद्र थी। पेत्रोग्रादमें उस समय बारह हजार हथियारबंद लाल गारद मौजूद थे। निश्चय हुआ, कि उनकी सहायताके लिये हेलसिंकीसे बाल्तिक नौसैनिक बेड़ेके नाविकोंको भी बुलाया जाय। सिर्फ पेत्रोग्राद हीमें नहीं, दूसरी जगहोंपर भी विद्रोहकी तैयारियां करना जरूरी समझा गया। दोनेत्स-उपत्यकामें वोरोशिलोफ, खार्कोफमें अर्त्योम सेर्गेयेफ, वोल्गा-प्रदेशमें कुइबिशियेफ, उरालमें ज्दानोफ, पोलेसियेके इलाकेमें कगानोविच, इवानोवो-वोज्नेसेन्स्कमें म० व० फ्रुन्जे, उत्तरी काकेशसमें म० म० किरोफ सशस्त्र विद्रोहके संचालक नियुक्त हुये।

जिस समय इस तरह जबर्दस्त तैयारी की जा रही थी, उसी समय त्रोत्स्की और कुछ दूसरे ढिलमिलयकीन वोल्शेविक-नेताओंने अस्थायी सरकारको यह जाननेका मौका दे दिया, कि ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) १९१७ ई०को—जिस दिन कि सोवियतोंकी दूसरी कांग्रेस शुरू होनेवाली थी—विद्रोह शुरू होनेवाला है। करेन्स्की सरकारने उसे दबा देनेका निश्चय किया। वोल्शेविक पार्टीकी केंद्रीय समितिका केन्द्र स्मोल्नी प्रतिष्ठान था। प्रति-क्रांतिके संचालकोंने योजना बनाई कि स्मोल्नीपर अधिकार करके वोल्शेविक नेताओंको पकड़ लिया जाय।

३ राजधानीपर अधिकार

६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)को एक खुली मोटर लारीपर सरकारपक्षी कादेतोंकी टुकड़ी 'रबोची-पुत' (कमकरपथ)की नई कापीको जब्त करनेके लिये उसके आफिसमें पहुंची—'प्रावदा' इस समय इसी नामसे निकल रही थी। खबर लगते ही क्रांतिकारी सैनिक एक सशस्त्र कारमें वहां पहुंच गये, और उन्होंने कादेतोंको भागनेके लिये मजबूर किया। 'रबोची-पुतमें' उस दिन "हमें क्या चाहिये"के हेडिंगसे स्तालिनका एक लेख छपा था, जिसमें कहा गया था—"अब वह समय आ गया है, जब कि और देरी करना क्रांतिके लिये खतरनाक होगा। जमींदारों और पूंजीपतियोंकी वर्तमान सरकारकी जगह हमें मजदूरों और किसानोंकी सरकारको अवश्य कायम करना है।" अगले दिन सोवियतोंकी कांग्रेसके उद्घाटनके शुरू होते ही कारवाई करनेका निश्चय करके क्रांतिकारी सैनिकोंको तुरन्त विद्रोह करनेकी हिदायत दी गई। ६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)के सबेरे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अपनी सैनिक टुकड़ियोंको कारवाईकी तैयारीके लिये आज्ञा दे दी, और यह भी, कि राजधानीकी ओर आनेवाली हरएक सैनिक टुकड़ीपर निगाह रक्खी जाय। उसने बाल्तिक नौसैनिक बेड़ेके युद्धपोतों और नौसैनिकोंको मददके लिये बुलानेका भी निश्चय कर लिया, और हेलसिंकीमें बाल्तिक नौसैनिक बेड़ेकी सोवियतोंकी केंद्रीय समितियोंको पुराने संकेतके अनुसार तार दे दिया—"नियमोंको भेजो", जिसका अर्थ था विद्रोह आरम्भ हो गया, पोतों और आदमियोंको भेजो। ६ नवम्बरको ही एक और भी जबर्दस्त सैनिक शक्ति क्रांतिकी सहायताके लिये राजधानीके भीतर प्रविष्ट हुई, जब कि लेनिन मजदूरके भेसमें चेहरा बांधे, एक साथीके साथ स्मोल्नीमें पहुंचे। स्मोल्नीकी रक्षाके लिये पूरा इन्तिजाम कर लिया गया था, क्योंकि वही क्रांतिका प्रधान संचालकमंडल, क्रांतिके दिमागका केंद्र था।

उसी दिन पीतर-और-पालके किलेके हथियारखानेसे हथियार लेकर कितने ही सैनिक बोल्शे-

विकोकी तरफ चले आये थे। आधी रातसे थोडी देर बाद केन्द्रीय टेलीफोन-आफिस, राज्यबैंक, बडा डाकखाना, सभी रेलवे-स्टेशन और मुख्य सरकारी कार्यालय बोल्शेविक क्रांतिकारियोंके हाथमे थे। क्रांतिकारी सैनिक समितिने आज्ञा दी, कि सैनिकपोत (क्रूजर) आरोरा नेवामें ऊपरकी ओर बढकर हेमन्त-प्रासादके पास जाये। आरोराके कमाडरने यह कहकर हुक्म माननेसे इकार किया, कि नेवा नदीमें पानी पर्याप्त नही है। इसपर नौसैनिकोंने थाह लिया, तो पानी काफी गहरा देखा। उन्होने कमाडरको गिरफ्तार कर लिया और वह युद्धपोतको अस्थायी सरकारके अतिम शरण-स्थान जारके भव्य महल हेमन्त-प्रासादके पास ले गये। आरोराकी तोपें अब उस प्रासादकी ओर मुह किये तैयार थी। विद्रोह पहलेसे बनाई हुई सूक्ष्म योजनाके अनुसार चल रहा था। ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के ९ बजे सबेरे विद्रोही पलटनोंने हेमन्त प्रासादकी ओर जानेवाले सभी रास्तोपर अधिकार कर लिया। अस्थायी सरकारका मन्त्रि-मडल उस वक्त प्रासादमें अपनी बैठक कर रहा था। अब साफ मालूम हो गया, कि अस्थायी सरकारकी मददके लिये एक भी सैनिक टुकडी नही है। करेन्स्कीको कसाकोंने सहायता देनेका वचन दिया, किन्तु वह रेडक्रासकी नसका भेस बना उसी दिन सबेरे युक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी झडेवाली एक मोटरपर बैठकर राजधानीसे भाग गया।

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)के १० बजे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अस्थायी सरकारके उलट देनेकी घोषणा की। यह घोषणा लेनिनने तैयार की थी, जिसमें लिखा था—

"अस्थायी सरकार उलट दी गई। राज्यशक्ति पेत्रोग्रादके कमकर-सैनिक-प्रतिनिधियोंकी सोवियत और क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली गई। वही पेत्रोग्रादके सर्वहारा और सैनिकोंकी मुखिया है।

"जनताके इस सघर्षके उद्देश्य निम्न है—तुरन्त ही जनतान्त्रिक-सधिका प्रस्ताव रखना, जमीदारीको खतम करना, उत्पादनपर कमकरोका अकुश स्थापित करना और सोवियत सरकारका निर्माण करना।

"मजदूरो, सिपाहियो और किसानोकी क्रांति जिन्दाबाद।"

उसी दिन पेत्रोग्राद सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमें लेनिन भी उपस्थित थे। लोगोंने बडी गर्मागर्म तालिया बजाकर अपने नेताका स्वागत किया। लेनिनने इस बैठकमे भाषण देते हुए कहा—"साथियो! बोल्शेविक जिसकी अवश्यकताके बारेमें बराबर कहते थे, वह मजदूरो और किसानोकी क्रांति हो गई। अबसे रूसके इतिहासमें एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। यह क्रांति, तीसरी रूसी क्रांति, अन्तमे समाजवादके विजयकी ओर ले जायगी।"

पेत्रोग्राद सोवियतने प्रस्ताव पासकर क्रांतिका स्वागत किया। इस समयतक हेमन्त प्रासाद छोडकर सारा पेत्रोग्राद नगर बोल्शेविकोंके हाथमें था। आज ही सोवियतोंकी काग्रेस शुरू होनेवाली थी, लेकिन उसके शुरू होनेसे पहले ही हेमन्त-प्रासाद पर अधिकार करनेके लिए लेनिनने हुक्म दिया था। अस्थायी सरकारको तुरत आत्मसमर्पण करनेके लिए अल्टीमेटम दिया गया, लेकिन उसने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर ९ बजे शामको हेमन्त-प्रासादपर आक्रमण शुरू कर दिया गया। पूर्व सकेतके अनुसार पीतर-और-पाल किलेसे एक तोप दागी गई। आरोराने कुछ गोले चलाये। इसके बाद बोल्शेविकोंके नेतृत्वमें नौसैनिको और सैनिकोंने जारके हेमन्त-प्रासादपर हल्ला बोल दिया। अस्थायी सरकारको बाहरसे मदद मिलनेकी आशा थी, लेकिन वह कहा आनेवाली थी?

सोवियतोंकी द्वितीय काग्रेस स्मोल्नीमें उस दिन (७ नवम्बर) पौने ११ बजे रातको शुरू हुई। हेमन्त प्रासादके ऊपर इस वक्त भी हमला हो रहा था। काग्रेसमें भाग लेनेवाले कितने ही प्रतिनिधि सघर्षमें भाग लेकर यहा आये थे। काग्रेस शुरू होते समय मेन्शेविको, दक्षिणपक्षी समजवादी क्रांतिकारियो और कुछ दूसरे प्रतिनिधियोंने कहा, कि सैनिक और बिना पार्टीवाले प्रतिनिधि काग्रेस छोडकर चले चलें, लेकिन उनका साथ देनेवाले मुट्ठीभर आदमी थे। उनके हाल छोडनेके समय रोष प्रकट करते हुए प्रतिनिधियोंने चिल्लाकर कहा—'कौर्निलोफी', 'भगोडे'। बारहवी सेनाके एक प्रतिनिधिने उठकर

कहा—"हमें अधिकार अपने हाथमें लेना है। जाने दो इन्हें। सेना उनके साथ नहीं है।"

रातके २ बजकर १० मिनटपर हेमन्त प्रासादको बोल्शेविकोंने दखल कर लिया और अस्थायी सरकारके मन्त्रियोंको गिरफ्तार करके पीतर-और पालके किलेमें बंद कर दिया।

आधी रातके बाद (अब ८ नवम्बरकी तारीख हो गई थी) ५ बजे सोवियतोंकी कांग्रेसने घोषित किया, कि सारी शक्ति सोवियतोंके हाथमें आ गई। तेरह दिन पीछे होनेके कारण पुराने रूसी पंचांगके अनुसार उस दिन २५ अक्तूबरका महीना था, इसलिए इसे अक्तूबर-क्रांति कहते हैं। ८ नवम्बरकी शामको ८ बजकर ४० मिनटपर कांग्रेसकी दूसरी बैठक हुई, जिसमें लेनिनने शांति घोषणा, भूमि-घोषणा पढ़ी। शांतिकी घोषणामें कहा गया था—युद्धमें पड़ी सभी जनता और उनकी सरकारें यथोचित जनतान्त्रिक सुलहनामा करें, न किसीकी जमीन छीनी जाय, न किसीसे हरजाना मांगा जाय, और सभी उत्पीड़ित जातियोंको आत्म-निर्णयका अधिकार मिले। भूमिकी घोषणा द्वारा किसानोंको पन्द्रह करोड़ हेक्तर (प्रायः चालीस करोड़ एकड़) जमीन दी गई और पचास करोड़ सुवर्ण-रूबल वार्षिक मालगुजारीसे मुक्त कर दिया गया। इस घोषणाने किसानोंको बतलाया, "गांवोंमें अब कोई जमींदार नहीं रह गया"। उसी दिन ढाई बजे सवेरे कांग्रेसने प्रथम सोवियत सरकार जन कमीसरोंकी परिषदके कायम होनेकी सूचना दी, जिसके अध्यक्ष व्लादिमिर इलिच (उलियानोफ) लेनिन बनाये गये और जातियोंके जनकमीसर (मन्त्री) का पद योसेफ विसारियोन-पुत्र स्तालिन हुए। सोवियतमें दूसरे विश्वयुद्धके कुछ समय बादतक भी मन्त्रियोंको जनकमीसर कहा जाता था। पहली सोवियत सरकारके सभी सदस्य बोल्शेविक थे, दूसरोंको अभी उतना साहस भी नहीं था, कि उसमें शामिल हों, लेकिन पीछे वामपक्षी समाजवादी क्रांतिकारी भी मन्त्रिमंडलमें सम्मिलित हुए। ९ नवम्बर (२७ अक्तूबर) को ५ बजे सवेरे कांग्रेसकी बैठक समाप्त हुई, और लोगोंने "क्रांति चिरजीवें", "समाजवाद चिरजीवें" के गगनभेदी नारे लगाये।

करेन्स्कीने हेमन्त-प्रासादसे भागकर कसाक-जेनरल क्रास्नोफसे मिलकर फिर अधिकार प्राप्त करनेकी कोशिश की। क्रास्नोफने १० नवम्बर (२८ अक्तूबर) को पेत्रोग्रादके नजदीक जार्स्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) पर अधिकार कर लिया, लेकिन राजधानीके कमकर भला यह क्यों होने देने लगे। वह बड़ी तादादमें क्रांतिकारी सैनिकोंके साथ लड़नेके लिए गये। जिस समय क्रांतिकारी उधर फंसे हुए थे, उसी समय १० नवम्बरकी रातको क्रांति विरोधियोंने तख्ता उलटनेके लिए षड्यन्त्र किया। लेकिन उन्हें सफलता नहीं हुई। १३ नवम्बरको क्रास्नोफके कसाकोंको पुलकोवोके पास क्रांतिकारियोंने बुरी तरहसे हराया, और उससे भी ज्यादा वह कसाक सैनिकोंको समझानेमें सफल हुए, कि क्रांतिका विरोध करना अपने हितोंका विरोध करना है। कसाकोंने अपने जेनरलकी आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया। गत्चिनामें सोवियत नौसैनिकोंके प्रतिनिधिने कसाकोंसे मिलकर उन्हें कहा, कि अगर तुम सोवियतोंसे लड़ना बंद कर दो, तो तुम्हें घर जानेकी छुट्टी मिल जायगी।

पेत्रोग्रादके विद्रोहकी खबर सुनकर ७ नवम्बरको ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने भी विद्रोह आरम्भ कर दिया। उसी रातको क्रेमलिनके विद्रोही सैनिकोंको विद्रोह कर देनेकी आज्ञा देनेकी जगह वहांकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके नेताओंने क्रांति विरोधी सैनिक हेडक्वार्टरसे समझौता करनेकी बातचीत शुरू की। ८ नवम्बरकी शामको मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमेटीने समझौतेकी बातचीत बंद करनेकी मांग की। इस सुस्तीके कारण क्रांति-विरोधियोंको मौका मिल गया और उन्होंने ९ नवम्बरको मास्को नदीके ऊपरके सभी पुलोंको अपने अधिकारमें कर लिया। इसके बाद क्रेमलिनको भी उन्होंने घेर लिया। देरी करना गलती थी। क्रांतिकारी शक्तियां मास्कोमें भी संगठित और सशक्त थीं। १३ नवम्बरको मास्कोके बड़े डाकखाने, केन्द्रीय तारघर और रेलवे स्टेशनोंपर क्रांतिकारियोंका अधिकार हो गया। दो दिन बाद उन्होंने क्रेमलिनपर गोलाबारी शुरू की। १५ नवम्बरको ९ बजे शामको ६ दिन की लड़ाईके बाद क्रांति-विरोधियोंने हार खाकर आत्मसमर्पण किया और उसी दिन सारी शक्ति मास्को सोवियतकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली आई।

मास्को और पेत्रोग्रादमें बोल्शेविक सरकारके स्थापित हो जानेपर अब और जगहोमे भी क्रातिका वेग जोरसे फैला। क्राति-विरोधी हजार कोशिश करते रह गये, लेकिन वह बोल्शेविकोकी बाढ रोक न सके। फर्वरी-क्रातिकी तरह पुराने शासनयत्रके बलपर बोल्शेविक शासन नही कर सकते थे, इसलिए उन्होने सबसे पहले उस यत्रमे परिवर्तन किया। पुराने शासन-सबधी बडे-बडे अफसरोका स्थान सोवियतो और उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोने लिया, और शासनयत्रके भीतर रहकर षडयत्र करनेका मौका पुराने स्वार्थोके लिए नही रह गया। १२ नवम्बरको सोवियत सरकारने घोषित करके मजदूरोके लिए आठ घटेका कामका दिन निश्चित कर दिया। २७ दिसम्बरको सभी निजी बैंकोको राष्ट्रीय बनाकर उन्हें राज्यबैंकमें मिला देनेकी सरकारी घोषणा निकली।

सशस्त्र विद्रोहके समय स्मोल्नी पार्टीका तथा सैनिक-असैनिक शासनका केन्द्र रही। अब मत्रालयोको अपने-अपने कामको और सुव्यवस्थित रीतिसे करनेके लिए पुराने कार्यालयोमें परिवर्तित कर दिया गया। २८ नवम्बरको जनकमीसर परिषद् (मन्त्रिमडल)ने आज्ञा दी, कि सभी मत्रालय अपनी-अपनी इमारतोमें चले जाय और मत्री केवल शामके वक्त स्मोल्नीमें एकत्रित हो।

१५ नवम्बर १९१७ ई०का वह महत्त्वपूर्ण घोषणा की गई, जिसके द्वारा जारके राज्यमें रहनेवाली सभी जातियोको बिना किसी भेदभावके समानाधिकार दिया गया —

(१) रूसमें रहनेवाली सभी जातिया समानता और पूर्ण प्रभुत्व रखती है, (२) रूसकी जातियोको स्वतन्त्रतापूर्वक आत्मनिर्णय तथा अलग होकर अपना स्वतन्त्र राज्य कायम करनेका अधिकार है, (३) किसी जाति या जातीय धर्मके विशेषाधिकार या हस्तक्षेपको उठा दिया जाता है, (४) रूसकी भूमिमें रहनेवाली अल्पसख्यक जातियो और वंशिक समूहोको स्वतन्त्र विकासका अधिकार है।

इस घोषणाने जारशाही साम्राज्यकी सभी जातियोको एक सूत्रमें बाध दिया, उनके भीतर फूट पैदा करनेके सारे प्रयत्न सदाके लिये निकम्मे हो गये।

४ दास जातियोकी मुक्ति

मध्य-एसियामें क्रातिके बारेमें आगे हम कहनेवाले है। यहा इतना जान लेना चाहिये कि जिस समय पेत्रोग्रादमें सशस्त्र विद्रोहकी सफलता और उसके बादके विरोधोको हटानेके लिये सघर्ष हो रहा था, उस समय ताशकन्दके बोल्शेविक भी चुप नही थे। हमें मालूम ही है, कि जारशाही मध्य-एसियाका शासनकेन्द्र ताशकन्द था। १० नवम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविकोको दबानेके लिये कसाक और कादेतोने ताशकन्द सोवियतको घेरकर वहाकी क्रातिकारी समितिके सदस्योको पकड लिया। इसकी सूचना कारखानेके भोपूको बजाकर दी गई, इसपर तीन हजार हथियारबन्द रूसी और उज्बेक मजदूरोने बोल्शेविक बदियोको छुडानेके लिये युद्ध छेड दिया। कसाक और कादेत ताशकन्दके किलेमें जमा थे, जहासे नगरपर प्रहार करनेके लिये वह हथियारबन्द मोटरें भेजते थे। क्रातिकारी कमकरोने रास्तेको रोकनेके लिये जगह-जगह बाडें खडी कर दी थी। चार दिनतक लडाई होती रही। खबर मिलनेपर आसपासके गावोंके उज्बेक और किर्गिज मजदूर भी मदद करनेके लिये आ गये। जबर्दस्त सघर्षके बाद १३ नवम्बरको राजशक्ति सोवियतोंके हाथमें चली गई, क्रातिकारी समितिके सदस्य जेलसे निकाल लिये गये, और उसी दिन तुर्किस्तानकी सोवियत सरकार ताशकन्दमें स्थापित हुई। सोवियत शक्तिको मध्य-एसियासे खतम करनेके लिये पूजीवादके पक्षपाती, राष्ट्रीयतावादी मध्य-एसियाई तथा रूसी क्राति-विरोधी एक हो गये। अग्रेजोने भी उन्हें मदद पहुचाई। राष्ट्रीयतावादियोने नवम्बर १९१७ ई०में खोकन्दमें अपनी सरकार कायम की। उसका नाम रक्खा "खोकन्द स्वशासन"। इसीने मध्य-एसियामें गृहयुद्ध आरम्भ किया। फर्वरी १९१८ ई०में खोकन्दकी सरकारको तुर्किस्तानके लाल गारदने खतम कर दिया। लाल गारदमें जहा नगरके रेलवे और कारखानोके रूसी मजदूर थे, वहा बहुत-से उज्बेक, किर्गिज, कजाक और तुर्कमान कारीगर और किसान भी थे।

बाल्शेविक क्रातिने जारशाही रूसके भीतर ही अपने प्रभावको नही दिखलाया, बल्कि सुदूर बाह्य मगोलियाके लोगोको भी समाजवादके पथपर आरूढ किया। जारशाही सेनाके भगोडे जेनरलोने वहापर अड्डा जमाकर क्रातिका विरोध करनेका मनसूबा बाधा था, लेकिन उन्हे उसमे विफल होना पडा।

दूसरे पूजीवादी और सामतशाही सरकारोकी तरह जारशाहीके भी शासनका स्रोत नीचे नही ऊपर था। जार सर्वेसर्वा था। वह अपनी ओरसे महाराज्यपाल और राज्यपाल नियुक्त करता, जो अपने प्रदेशके छोटे जार होते। इसकी जगह बोल्शेविक-क्रातिने शासनयत्रके ढाचेको सोवियतोपर आधारित किया। सोवियतका अर्थ वही है, जो हमारे यहा पचायतका, यदि अन्तर है, तो यही कि सोवियत प्रभुत्व-सम्पन्न पचायत है। ग्रामोके शासनका काम ग्राम सोवियतोने लिया, और जिलोके शासनका काम वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित जिलाकी सोवियतोने, इसी तरह प्रदेशोके शासनका काम वहाकी सोवियतोने। अपने कामोको सफलतापूर्वक करनेके लिये, तथा जनताको क्रियात्मकरूपसे यह दिखलानेके लिये, कि सरकार उनकी है, अब जारशाही गुर्बनियोका अनुकरण नही किया जा सकता था। उसकी जगह क्रातिके दो साल ही बाद १९२० ई०के आरम्भमे रूसका विभाजन जातियोके अनुसार हुआ, और १९२०-२२ ई०के बीचमे इस तरहके कितने ही स्वायत्त सोवियत समाजवादी गणराज्य कायम किये गये, जिनके सघको रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्य कहा जाने लगा। इन स्वायत्त गणराज्योमे बाश्किर भी था, जिसकी स्थापना मार्च १९१९ ई०मे हुई थी। रूसी जमीदारो और कुलकोने जारशाहीके जमानेमे बाश्किर-किसानोसे जो जमीन छीन ली थी, अब उसके मालिक बाश्किर किसान हो गये। अभीतक बाश्किर अधिकतर घुमन्तू थे, लेकिन अपना खेत मिल जानेपर अब वह अपने गाव बसाने लगे। उनमे शिक्षाका प्रचार भी बढने लगा। बोल्शेविकोने अच्छी तरह समझ लिया, कि सोवियत शासनकी मजबूतीके लिये यह जरूरी है, कि लोग लिखना पढना जाने। तभी वह बोल्शेविकोके उद्देश्यको समझ पायेगे, और मुल्लो तथा क्रातिविरोधी सत्ताधारियोके हाथमे नही खेलेगे। इसीलिये उन्होने मातृभाषाको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करके उसीमे लोगोको जल्दी-से-जल्दी शिक्षित बनानेका प्रयत्न किया। अपनी भाषाको सीखनेकी अवश्यकता नही थी, उसके लिये जरूरत थी लिपिकी। सोवियत रूसके भीतरकी अधिकाश भाषाये अभी न अपनी लिपि रखती थी, न लिखित साहित्य। ऐसी भाषाओको रोमन लिपिमे पहले लिखा जाने लगा, पीछे (१९४१ ई० में) लोगोने रूसी लिपि अपना ली। शिक्षाकी वृद्धि कितनी जल्दी हुई, इसके लिये इतना ही कहना काफी है, कि प्राय पचीस लाखकी आबादीवाले बाश्किर गणराज्यमे १९२४ ई०मे ही दो हजार स्कूल खुल चुके थे।

१९२० ई०के वसन्तमे बाश्किरोके पडोसमे तारतारोका स्वायत्त सोवियत गणराज्य कायम हुआ। अक्तूबर १९२० ई०मे कजाकस्तानकी सोवियतोकी प्रथम काग्रेसमे किर्गिज स्वायत्त गणराज्यकी स्थापनाकी घोषणा हुई। इस प्रकार सोवियत रूस सोवियत गणराज्यो के सघका रूप धारण करने लगा। पहले रूसके अतिरिक्त उक्राइन-जैसे गणराज्य कायम हुये थे। दिसम्बर १९२० ई०मे उक्राइन सोवियत समाजवादी गणराज्य और रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्यने आपसमे एक सैनिक और आर्थिक मित्रताकी सधि की। इसी तरहकी सधि बेलोरूसिया, आजुर्बाइजान, अर्मनिया और गुर्जीके गणराज्योमे भी हुई। तबतक निम्न की सात स्वतत्र सोवियत गणराज्य बन चुके थे —

काग्रेस हुई, जिसने निश्चय किया, कि अबसे भारे बहुजातिक राज्यका नाम सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ रखकर उसे एक केन्द्रीय राष्ट्रका रूप दिया जाय। सभी जातियोकी समानताको अक्षुण्ण रखनेके लिये यह विधान स्वीकार किया गया, कि सोवियत ससद्के "प्रतिनिधि-सदन"में जहा सख्याके अनुसार प्रतिनिधि भेजे जाय, वहा "जाति सदन"में सभी स्वतत्र गणराज्योको उनकी सख्याका कोई भी ख्याल किये विना बराबर सख्यामे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार है।

इस प्रकार सफल क्रांति और सफल सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद २१ जनवरी १९२४ ई०को लेनिनका देहान्त हुआ।

स्रोत-ग्रन्थ

१ History of Civil War in U S S R (2 vols , G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
३ La Revolution russie (4 vols , Cloude Anet, Paris 1918 20)
४ La reign de Raspoutine (Rodzianko, Paris 1928)
५ La revolution russie (Al Ular, Paris 1905)
६ इस्तोरिया ससर (अ म स्वदोनिकस्, ४ जिल्द)

उज्बेकिस्तानमें क्रांति

१ उज्बेक जाति

उज्बेक गणराज्यका क्षेत्रफल १८८००० वर्गमील, तथा आबादी बासठ लाखसे ऊपर है। उज्बेक जाति तुर्कोंकी ही एक शाखा है। सुवर्ण-ओर्दू के मगोल खान उज्बेकके नामपर तुर्कोंके बहुत से कबीलोंने यह नाम धारण किया। उज्बेक कबीलोंमें कितने ही कजाकोंमें भी मिलते हैं, इसलिए उज्बेकों और कजाकोंका पहले एक होना सिद्ध है। उज्बेकोंके सबसे बड़े चार विभाग है—(१) उइगुर-नैमन, (२) कगली-किपचक, (३) कियात-कुंग्राद, (४) नोकुस-मगित। और छोटे-छोटे विभाग मिलकर उज्बेक कबीलोंकी संख्या ९७ होती है, जिनके नाम निम्न प्रकार हैं —

उज्बेक कबीले—

१ मगुत (मगित)(करशी-बुखारा, जुक मगुत, जुकअकरा)
२ मिंग
३ युज
४ किर्क
५ उग
६ उगाचित
७ जलैर
८ सराय (समरकन्द और करशीके रास्तेपर)
९ कुंग्राद (करशी और शहरसब्जमें)
१० येलचित्त
११ अरगन
१२ नैमन
१३ किप्चक (कत्ताकुर्गान और समरकन्दके बीच)
१४ चीचक
१५ थअवरत
१६ कल्पक
१७. कर्तू
१८ बरलस
१९ बसलक
२० सेमारचिम
२१ कतगन
२२ कलेची
२३ कुनेगज
२४ बतरेक
२५ उजोय
२६ कबात
२७. खिताई (बुखारा और करमीनाम)
२८ कगली
२९ उज
३० चपलेनी
३१ चपची
३२ उतार्ची
३३ उपुलेची
३४ जूलून
३५ जिद (आमू-दरियापर)
३६ जुयुत
३७ चिलजूयत
३८ बुइमौत
३९ उएमौत
४० अरलत
४१ किरेइत
४२ उगुत
४३ कगित
४४ खलेउअत
४५ मसद
४६ मेरकत
४७ बेर्कूत
४८ कुरालस
४९ तगलान
५० करी
५१ अरबत (करशी और बुखारामें)

५२. उलेची
५३ जूलेगन
५४ किशलिक
५५ गेदोई
५६ तुकमान (आमू-दरिया)
५७ दुर्मेन
५८ ताविन
५९ तामा
६० रिनदान
६१ मूमिन
६२ उइशुन
६३ वेरोई
६४ हाफिज
६५ किनगिज
६६ उइरुची
६७ जुइरेत
६८ वजाची
६९ सिहतियान
७० बेताश (बुखारा)
७१ यागरिनी
७२ शुल्दुर
७३ तुमाई
७४ तलेउ
७५ किरदार
७६ किरफिन
७७ उलगान
७८ गुरग्लेत
७९ इगलान
८० चिलकेम
८१ उइगुर
८२ अगिर
८३ यावू
(बुखारा और मियानकुलमें)
८४ नरगिल
८५ यूजक
८६ कहेत
८७ नचार
८८ कूजालिक
८९ वूजन
९० शोरिन
९१ नखरिन
९२ तूमें
९३ नीकुज
९४ मुगुल
९५ कयान
९६ तारसार

किसी-किसीके अनुसार उज्बेकोके पाच विभागोमे निम्न कबीले है —

I **उइगुर चौदह—**

१ उरुस
२ कराकुरसक
३ चुल्लिक
४ उयान
५ कुल्दोर्ली
६ मिल्तेक
७ कुरतुगी
८ गाले
९. तुपकारा
१० कारा
११ करावुरा
१२ नोगाई
१३ बिलकेलिक
१४ बुसतनिक

II **ओमली नौ —**

१ अखताना
२ कारा
३ चुरान
४ तुर्कमान
५ कुउक
६ विसबाला
७ कराकल्पक
८ कचाई
९ हजवेचा

III **कुश्तमगली नौ —**

१ कुलअत्री
२ बरमक
३ कुजहुर
४ कुल
५ चुबुरगान
६ कराकल्पक-कुश्तमगली
७ सफरबीज
८ दिलवेरी

उज्बेकिस्तानमें क्रांति

१ उज्बेक जाति

उज्बेक गणराज्यका क्षेत्रफल १८८००० वर्गमील, तथा आबादी बासठ लाखसे ऊपर है। उज्बेक जाति तुर्कोंकी ही एक शाखा है। सुवर्ण-ओर्दू के मंगोल खान उज्बेकके नामपर तुर्कोंके बहुत से कबीलोंने यह नाम धारण किया। उज्बेक कबीलोंमें कितने ही कजाकोंमें भी मिलते हैं, इसलिए उज्बेकों और कजाकोंका पहले एक होना सिद्ध है। उज्बेकोंके सबसे बड़े चार विभाग हैं—(१) उइगुर-नैमन, (२) कंगली-किपचक, (३) कियात-कुंग्राद, (४) नोकुस-मंगित। और छोटे-छोटे विभाग मिलकर उज्बेक कबीलोंकी संख्या ९७ होती है, जिनके नाम निम्न प्रकार हैं —

उज्बेक कबीले—

१ मंगुत (मंगित)(करशी-बुखारा, जुक मंगुत, जुकअकरा)
२ मिंग
३ युज
४. किर्क
५ उग
६ उगाचित
७ जलैर
८ सराय (समरकन्द और करशीके रास्तेपर)
९ कुंग्राद (करशी और शहरसब्जमें)
१० येलचिन
११ अरगन
१२ नैमन
१३ किप्चक (कत्ताकुर्गान और समरकन्दके बीच)
१४ चीचक
१५ थअवरत
१६ कल्पक
१७ कर्तू
१८ बरलस
१९ बसलक
२० सेमारचिम
२१ कतगन
२२ कलेची
२३ कुनेगज
२४ बतरेक
२५ उजोय
२६ कबात
२७ खिताई (बुखारा और करमीनाम)
२८ कंगली
२९ उज
३० चपलेनी
३१ चपची
३२ उतार्ची
३३ उपुलेची
३४ जूलून
३५ जिद (आमू-दरियापर)
३६ जुयुत
३७ चिलजूयत
३८ बुइमौत
३९ उएमौत
४० अरलत
४१ किरेइत
४२ उगुत
४३ कगित
४४ खलेउअत
४५ मसद
४६ मेरकत
४७ बेर्कूत
४८ कुरालस
४९ उगलान
५० करी
५१ अरबत (करशी और बुखारामें)

५२. उलेची
५३ जूलेगन
५४ किशलिक
५५ गेदोई
५६ तुर्कमान (आमू-दरिया)
५७ दुर्मेन
५८ ताविन
५९ तामा
६० रिनदान
६१ मूमिन
६२ उइशुन
६३ बेरोई
६४ हाफिज
६५ किनगिज
६६ उइरुची
६७ जुइरेत
६८ व्जाची
६९ सिहतियान
७० बेताश (बुखारा)
७१ यागरिनी
७२ शुल्दुर
७३ तुमाई
७४ तलेउ
७५ फिरदार
७६ फिरफिन
७७ उलगान
७८ गुरलेत
७९ इगलान
८० चिलकेम
८१ उइगुर
८२ अगिर
८३ याबू
(बुखारा और मियानकुलमें)
८४ नरगिल
८५ यूजक
८६ कहेत
८७ नचार
८८ कूजालिक
८९ बूजन
९० शोरिन
९१ अस्वगिन
९२ तूमे
९३ नीकुज
९४ मुगुल
९५ कयान
९६ तारतार

किसी-किसीके अनुसार उज्बेकोंके पाच विभागोमे निम्न कबीले हैं —

I उइगुर चौदह—

१ उरुस
२ कराकुरसक
३ खुल्लिक
४ उयान
५ कुल्दौली
६ मिल्तेक
७ कुरलुगी
८ गाले
९ तुपकारा
१० कारा
११ करावुरा
१२ नोगाई
१३ विलकेलिक
१४ दुसतनिक

II ओमली नौ —

१ अखताना
२ कारा
३ चुरान
४ तुर्कमान
५ कुचक
६ विसखाला
७ कराकल्पक
८ कचाई
९ हजवेचा

III कुश्तमगली नौ —

१ कुलअबी
२ बरमक
३ कुजहुर
४ कुल
५ चुबुरगान
६ कराकल्पक-कुश्तमगली
७ सफरबीज
८ दिलवेरी

९ चचकली

IV यकतमगली सात —

१ तर्तुगू
२ अगामइली
३ इशिकली
४ किजिनजिली
५ उयुगली
६ बूकजली
७ कैगली

V फिर पांच —

१ जुजिली
२ कूसउली
३ तिस
४ नलिकली
५ कूबा

इतिहासकार वाम्बेरीने उज्वेकोके बत्तीस कबीलोको मुख्य माना है, जो कि निम्न प्रकार हैं —

१ अकवेत
२ अचमइली
३ अलचिन
४ अज
५ इशकिली
६ उइगुर
७ उशुन
८ कनली
९ कराकुरमक
१० कजिगली
११ किपचक
१२ कुग्राद कीयेत
१३ कूलन
१४ केत्तेकेसेर
१५ केनेगुज
१६ खिताई
१७ जगताई
१८ जेलेर
१९ ताज
२० इशकिली
२१ तिर्किश
२२ दुमेन
२३ नैमन
२४ नोक्स
२५ नोगाई
२६ बागुर्लू
२७ वलगली
२८ बिरकुलक
२९ मगित (ओगुत)
३० मिग
३१ मितन
३२ सायत

इन कबीलोंके नामोंको देखनेसे मालूम होगा, कि इनमें ऊसुन-जैसे शक कबीले, कुग्राद-जैसे मंगोल, किपचक-जैसे पुराने तुर्क, खिताई-जैसे चीनी, बमक-जैसे खुरासानी कबीलो और जातियोंका भी नाम है। इसीलिये तुर्की अशकी प्रधानता रहते भी उज्वेक जातिमें बहुतसी दूसरी जातियोंका सम्मिश्रण है। उसकी भाषामें व्याकरणका ढांचा तुर्की होते भी शब्दकोष और मुहावरे अधिकतर ईरानी (फारसी) हैं।

उज्वेक जातिका निर्माण—उज्वेको, तुकमानों तथा किर्गिजो का ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ —

काल		सिर-उपत्यका	सोग्द	तुखार	ख्वारेज्म
ई० पू० १०००००			मुस्तेर	मुस्तेर	
,, ५००००	–		मदलेन		
,, ४०००		फिनो-द्रविड	फिनो	फिनो-द्रविड	फिनो द्रविड
,, ३५००		,,	,,	,,	,,
,, ३०००	नवपाषाण	शक-आर्य-द्रविड	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०	शकार्य-द्र०
,, २५००	–	शक	आर्य	आर्य	आर्य
ई० पू० १५००	पित्तल	शक	सोग्दी	ईरानी	ईरानी
,, ७००	–	शक	सोग्दी	ईरा०	शक

ई०पू०	५५०	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
"	३२६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
"	२०६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
"	१३०	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
"	१००	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
ईसवी	१०० कुषाण	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०-शक	शक
"	४२५ हेथता	हूण-कगली	सो०-शक	ईरा० शक	हेपताल-कग
"	५५७ तुर्क	तुर्क-कगली	सो०-तुर्क	ईरा०-शक	सो०-तुर्क
"	६७३ अरब	तुर्क	सो०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	सो०-तुर्क
"	८९२ सामानी	तुर्क	ईरानी-तुर्क	ईरा०-तर्क	ईरा०-तर्क
"	१२२० मगोल	तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
"	१५००	तुर्क (उज्वेक)	उज्वेक-ईरा०	ईरा०-उज्वेक	उज्वेक-ईरा०
"	१७४७	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
"	१८६५	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
"	१९१७	उज०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०

२　उज्वेकभूमि

वर्तमान उज्वेकिस्तान खोकन्द, खीवा (ख्वारेज्म), और बुखारा रियासतोंकी भाग सम्मिलित है, जिनमें बुखाराका तो करीब-करीब सारा ही भाग उज्वेकिस्तानमें है। उज्वेकोंकी वर्तमान राजधानी ताशकन्द बिलकुल एक छोरपर कजाकोंकी भूमिके पास पड़ती है, लेकिन रूसियोंके आनेसे पहले ही वह प्रसिद्ध नगर उज्वेकोंकी भूमिके साथ सबद्ध था। तुर्किस्तानकी राजधानी बननेपर जहा वहा रूसी काफी सख्यामें आये, वहा एसियाइयोंमें सबसे अधिक उज्वेकोंकी आबादी थी, इसलिये वह पहले तुर्किस्तान गणराज्य, फिर उज्वेकिस्तान और ताजकिस्तानके सम्मिलित उज्वेक गणराज्य और अन्तमें उज्वेकिस्तानकी राजधानी रह गया। मध्य-एसियाके समरकन्द और बुखारा-जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी उज्वेकिस्तानमें ही पड़ते हैं।

३　क्रांतिकी लपट

रूसमें फर्वरी-क्रांति होनेपर भी उस समय बूर्ज्वा रूसी शासकोंने मध्य-एसियाकी जातियों—उज्वेकों, कजाकों, किर्गिजो, ताजिकों, तुर्कमानो—के ऊपर होते आये जारशाही शासनमें कोई परिवर्तन करनेकी अवश्यकता नही समझी। अप्रैल १९१७ ई०में शचेप्किनकी अध्यक्षतामें एक तुर्किस्तान समिति बनाकर भेजी गई, जिसको तुर्किस्तानके सूबेके शासनका पूरा अधिकार दे दिया गया था। जब पेत्रोग्रादमें अस्थायी सरकारमें थोड़ा और परिवर्तन हुआ, और वैधानिक जनतांत्रिकोंकी जगहपर मेन्शेविकोंकी प्रधानता हुई, तब तुर्किस्तान कमेटीमें नाममात्रका ही परिवर्तन किया गया। यह कमेटी पुराने जारशाही अफसरों और सफेद क्रांति-विरोधियोंके प्रभावको कम करना नही चाहती थी। क्रांतिका एक फल यह हुआ, कि मार्च १९१७ ई०से मध्य-एसियाइयोंमें शूरा-इस्लामिया और शूरा-उलेमा जैसे धार्मिक या अर्धधार्मिक राजनीतिक सगठन अस्तित्वमें आये। उज्वेक राष्ट्रीयतावादी मध्यवर्गने शूरा-इस्लामिया नामकी पार्टी स्थापित की थी, और मुल्लाओंने हमारे यहाकी जमायतुल-उलमाकी तरह उलमाओ (धर्माचार्यों) की एक पार्टी खड़ी की थी, जिसके पोषक बड़े-बड़े जमींदार और दूसरे सामन्त थे। दोनो सस्थाओंने अस्थायी सरकारके प्रति अपनी भक्ति कई बार प्रकट की थी।

तुर्किस्तान-कमेटी क्रांतिके और युद्धके कारण उठ खड़ी हुई समस्याओंमेंसे किसीको भी हल करनेमें समर्थ नही हुई। एसियाई जातियोंके ऊपर पहलेकी तरह ही शासन और अत्याचार होता रहा। किसानोंकी अवस्था वैसी ही रही। कारखानेके मजदूरोंकी ओर भी ध्यान नही दिया

गया। १९१७ ई०के सितम्बरमें तुर्किस्तानके मजदूरोंको अब भी बारह घंटे काम करना पड़ता था, जब कि रूसमें वह आठ घंटेका कर दिया गया था। तुर्किस्तान-कमेटीको आगे बढ़नेकी कोई जरूरत नही थी, क्योंकि इस इलाकेमे १९१७ ई०के अन्ततक बोल्शेविकोंके अपने स्वतंत्र संगठन नही थे। ताशकन्द, समरकन्द, पेरोव्स्की (किजिल ओर्दा), नवीन-बुखारा आदिमें जो बोल्शेविकोंके भिन्न-भिन्न गिरोह थे, वह रूसी समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टीसे सम्बद्ध थे। इस पार्टीकी द्वितीय स्थानीय कांग्रेस २१-२७ जूनको ताशकन्दमे हुई थी, जिसमें मेन्शेविकोंकी प्रधानता थी, जिसके कारण कांग्रेसने अस्थायी सरकारमें अपना विश्वास प्रकट किया। ताशकन्दमें बोल्शेविकोका अपना कोई पत्र नही था, इसलिये समाजवादी जनतान्त्रिक मजदूर पार्टीके अखबार "रवोचेये देलो" (मजदूरोका काय) पत्रमे ही उन्हे भी अपने विचारोको प्रकट करना पड़ता था, जिन्हें मेन्शेविक कितनी ही बार छापनेसे इन्कार कर देते थे। बोल्शेविक-नेता स्वेदलोफने ओरेनबुर्गके बोल्शे-विको द्वारा तुर्किस्तानके बोल्शेविकोंके पास कभी-कभी संबंध स्थापित करनेकी कोशिश की, लेकिन उसमें बहुत सफलता नही हुई। लेकिन जब मध्य-एसियाके लोगोंको मालूम हुआ, कि रूसमें बोल्शे-विक क्या कर रहे हैं, तो वहाके लोगोमें भी बोल्शेविकोंका प्रभाव जल्दीसे बढ़ने लगा। ई० प० बाबुश्किनके नेतृत्वमें खोकन्दमे बोल्शेविकोंकी एक मजबूत जमात कायम हो गई—बाबुश्किन १९०३ ई०से ही बोल्शेविक था, और खोकन्दके मजदूर-सैनिक प्रतिनिधियोकी सोवियतका उस समय अध्यक्ष था। समरकन्दमें समाजवादी जनतान्त्रिकोंके भीतर रहते हुये बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे काम करने लगे। अक्तूबर (बोल्शेविक) क्रांतिके समय नवीन बुखारामे पोल्तरोत्स्कीके नेतृत्वमें एक बोल्शेविक गिरोह काम करने लगा था। पोल्तरोत्स्की १९१८ ई०में समाजवादी क्रांतिकारियोंके हाथ मारा गया, जिनका मुखिया करेन्स्की था।

ताशकन्दके बोल्शेविकोंका नेता अ० पेर्शिन रेलवे मजदूर, और न० शूमिलोफ कारखानेमें मिस्त्री था। शूमिलोफ १९१८ ई०में ताशकन्द सोवियतका अध्यक्ष बनाया गया।

इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि तुर्किस्तानके बोल्शेविक अधिकतर रूसी थे, लेकिन उनको वहाके मुसलमान मजदूरोंके "इत्तिफाक" (लीग)का सहयोग प्राप्त था। स्कोबेलेफमें मार्च १९१७ ई०में फरगानाके मुसलमानोंका प्रथम मजदूर संगठन स्थापित हुआ था—मध्य-एसियाई लोगोंको रूसी मुसलमान कहा करते थे। फरगानाके बाद इस तरहके संगठन ताशकन्द, समरकन्द, खोकन्द, मर्गिलान, कत्ताकुर्गान, खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) तथा दूसरे नगरोंमें भी स्थापित हुये। १९१६ ई०में जारशाहीने बहुतसे एसियाइयोंको मजदूर-सेनामें भर्ती करके युद्धपंक्तिके पीछे काम करनेके लिये भेजा था। यही मजदूर जब लौटकर तुर्किस्तान आये, तो रूसमें बोल्शेविकोंका काम देखे होनेके कारण उन्होंने यहा भी "मजदूर-इत्तिफाक" (मजदूर लीग)को संगठित करनेकी घोषणा करते हुये अपने उद्देश्यके बारेमें कहा—"तातार (मंगोलायित) और सर्त (ताजिक) गरीब किसानों और मजदूरोंका एक परिवार बनाना है, जो कि पूंजीवादके खिलाफके संघर्षमें मजदूरवर्गका समर्थन करेगा और सच्चे जनतान्त्रिक सिद्धान्तोंके आधारपर नये समाजके निर्माणमें सहायता करेगा।" इस उद्देश्यसे ही मालूम हो जायगा, कि मध्य-एसियाके देहकान (किसान) और मजदूर रूसमें रहते वक्त बोल्शेविक पार्टी और वहाके मजदूरोंके सम्पर्कमें आकर कितने प्रभावित हुये थे। आरम्भमें इत्तिफाकी दलवाले मेन्शेविकोंके जबर्दस्त प्रभावमें रहे, लेकिन जल्दी ही उन्हे मालूम हो गया, कि मेन्शेविको और जारशाही साम्राज्यवादियोंमें बहुत अन्तर नही है, इसलिये वह बोल्शेविकोंके नजदीक आने लगे। स्थानीय सरकारी संस्थाओ और संविधान-सभाके चुनावोंके समय उन्होंने बोल्शे-विकोंसे मिलकर अपने उम्मीदवार खड़े किये। शूरा-इस्लामिया और उलमाके साथ इत्तिफाकियोंका संघर्ष दिन-पर-दिन बढ़ता गया। मुल्लों और मुस्लिम साम्प्रदायिक नेताओंने हर तरहसे लोगों-को यह समझानेकी कोशिश की, कि मुसलमान-मुसलमानमें कोई अन्तर नही, सभी मुसलमानोंको एक हो जाना चाहिये। लेकिन मध्य-एसियाके मजदूर-किसानोंको यह समझनेमें देर नही लगी, कि उनकी भलाई इस्लामके नारा लगानेवालोंके साथ रहनेमें नही, बल्कि बोल्शेविकोंका साथ देने-में है। सितम्बर १९१७ ई०में मजदूरी बढ़ाने और आठ घंटा काम करनेकी मांगके लिये

ताशकन्द, समरकन्द, नमगान, अन्दिजान, कत्ताकुर्गान और नवीन-बुखाराके मजदूरोंने हड़तालें कीं। देहातमें किसानोंने भी जमींदारोंके विरुद्ध सघर्ष छेड़ दिया।

रूसमें फवरी-क्रांतिके होनेके बाद तुर्किस्तान-प्रदेशमें उतना भी परिवर्तन नहीं किया गया, जितना कि रूसके पासवाले इलाकोंमें। सेना और शासनमें अब भी यहा जारशाही जमानेके ही अफसर थे। जब करेन्स्की प्रधान-मत्री हो गया, तो एस्-एर् (समाजवादी क्रांतिकारी) दल अपनेको सरकारी दल समझने लगा, और उसकी यहा प्रधानता हो गई। लेकिन इससे पहिले १९१६ ई०मे जो विद्रोह मध्य-एसियाके लोगोंने किया था, यद्यपि उसे दबा दिया गया था, तो भी उसके प्रभावसे लोगोंके हृदयोंमें शासनके प्रति विद्वेषका भाव अब भी कम नहीं हुआ था। बल्कि अब उसने एक नया रूप लिया था, जिसमें उज्बेक मध्यवर्गने अपने पुराने खोये हुये राज्य खोकन्दके नाम-पर "खोकन्द स्वायत्तता"की माग पेश की। अभीतक बुखाराका अमीर अपनी जगहपर बना हुआ था। जारशाही अफसरों और पूजीपतियोंने भी स्वायत्ततावादियोंके पक्षका समर्थन करना आरम्भ कर दिया, और जब रूसमें बोल्शेविक-क्रांति हो गई, तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला उनका साथ देना शुरू किया। यद्यपि स्वायत्ततावादियोंने अपना काम ताशकन्दमें शुरू किया था, लेकिन वहा उनको उतनी सफलता नहीं हुई, इसलिये उन्होंने खोकन्दको अपना केन्द्र बनाया।

४　बोल्शेविक-प्रभाव-वृद्धि

ताशकन्दमें पहले मेन्शेविकों और एस-एर्-दलका ही जोर रहा। ताशकन्द एसियाका सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र था। वहाके कारखानोंमें रूसी मजदूर बड़ी सख्यामें काम करते थे। इनके ऊपर पहले नरमदली समाजवादियोंका प्रभाव होना स्वाभाविक था, क्योंकि रूसी मजदूरोंको एसियाई मजदूरोंकी अपेक्षा ज्यादा रियायतें मिली हुई थीं, लेकिन धीरे-धीरे मजदूरोंकी आखें खुलने लगीं, जब कि उन्होंने देखा कि यह दक्षिणपक्षी दल उनका हित-साधन नहीं कर सकता। वामपक्षकी ओर झुकाव देखकर एस्-एर् (समाजवादी क्रांतिकारी) दलमें फूट पड़ गई। वामपक्षी उनसे अलग हो गये, जो कितने ही समयतक बोल्शेविकोंके साथ मिलकर काम करते रहे। जून (१९१८ ई०)के अन्तमें बोल्शेविकोंकी पहली काग्रेस हुई, जिसमें चालीस-पचास प्रतिनिधि शामिल हुये थे, लेकिन जब १९-२९ दिसम्बर (१-१० जनवरी) १९१९ ई०को द्वितीय काग्रेस हुई, तो उसमें एक सौ अस्सी प्रतिनिधि थे। इस समयतक अग्रेजोंकी मददसे वर्तमान तुर्क-मानिस्तानपर क्रांति-विरोधी रूसियोंकी प्रभुता कायम हो गई थी, इसलिये वहांके प्रतिनिधि इस काग्रेसमें शामिल नहीं हो सके, लेकिन सप्तनदके प्रतिनिधि आये थे। इस काग्रेसके प्रधानमडलमें जूराबयेफ, बेदीलोफ जैसे स्थानीय (एसियाई) बोल्शेविक भी निर्वाचित हुये थे, जिससे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामें रूसी बोल्शेविक कहातक अपनेको एसियाइयोंके साथ एकताबद्ध करनेमें सफल हो चुके थे। नरम समाजवादियों और बोल्शेविकोंके बीच किसका साथ देना चाहिये, इसका निर्णय करनेमें एसियाई कमकरोंको दिक्कत नहीं हुई, जिसका पता काग्रेसमें एसियाई बोल्शेविकोंकी सख्याकी वृद्धिसे मालूम है।

ताशकन्द—पहली काग्रेसतक बोल्शेविक पार्टीके २६१ सदस्य थे, जिनमें २८ स्थानीय (प्राय उज्बेक) थे। इनके अतिरिक्त पुराने ताशकदमें भी १२५ व्यक्ति पार्टीके साथ थे। दूसरी पार्टी के समयतक बोल्शेविक पार्टीमें २००० सदस्य हो गये थे, जिनमें ९०० स्थानीय, ७०० रूसी और ४०० विदेशी कमकर थे। विदेशियोंमें लत्वियन, उक्रइनी, ईरानी, तारतार और किर्गिज जातियों-के भी लोग थे। १२ अक्तूबर १९१८ ई०में सारे ताशकद नगरकी पार्टी-कार्फ्रेंस हुई।

समरकद—१९१७ ई०के सितबरके अतमें यहा बोल्शेविककी पहली जिला-कार्फ्रेंस हुई थी। अक्तूबरके मध्यतक समरकन्द जिलेमें अट्ठाइस शाखायें और पैंतीस सौ सदस्य थे।

खोकद—१९१७ ई०के अक्तूबरमें यहा बोल्शेविकोंकी तीस-पैंतीस जमातें थीं। पहली काग्रेस-तक सदस्योंकी सख्या दो सौ हो गई और रूसियोंसे बाहरके कमकरोंमें भी काम होने लगा था। १९१८ ई०के अततक पार्टीके सदस्योंकी सख्या ७५० थी। आगे हम देखेंगे, कि मध्य-एसियाके

पूजीवादियाकी सगठित शक्तिका मुकाबला सबसे ज्यादा खोकदके बोल्शेविकोको करना पडा था। यहाके ७५० सदस्योमें २५० स्थानीय लोगोमें से थे।

खोजन्द (लेनिनाबाद)—सिर नदीके तटपर अवस्थित इस ऐतिहासिक नगरमें भी बोल्शेविकों और नरम-दलियोका सघर्ष रहा। १९१८ ई०के अप्रैलतक यहा बोल्शेविकोका सगठन हो गया था, और उनकी प्रथम काग्रेसमे यहासे बीस प्रतिनिधि शामिल हुए थे। खोजन्दमें पार्टी-मेम्बराकी सख्या २४६ थी, और इलाकेके दूसरी जगहामें भी बोल्शेविक थे, जिनमेंसे २१६ खोजन्द नगरमें, पचीस खोजन्द रेल स्टेशनमें, छत्तीस द्रागोमिरोफ स्टेशनमे, तीस कोपीमें, अस्सी पर्लाविकामें, ८०० सरी-दुगानमें, ३१२ उरालके जिले (वोलोस्त)में, पैतीस चपकुल जिलेमे, पच्चीस बोकल वेदगनमें, साठ इनफान इलाकेमे थे। १९१८ ई०के जून और दिसबरके छ महीनामें बडी तेजीसे बोल्शेविकोकी शक्ति और सख्या बढी। उन्होंने तबतक अपनी लाल सेना भी सगठित कर ली। पीछे प्रतिगामी हो गया शेख एरगस, एक समय बोल्शेविकोके साथ था।

अन्दिजान—फरगानाका मशहूर औद्योगिक केंद्र होनेके कारण यह बोल्शेविकोंका भी गढ था। दूसरी काग्रेसके समय (१९१८ ई०के अत)तक यहा दो सौ पार्टी-मेम्बर थे। लेकिन यहापर जनतान्त्रिक सगठन औरोकी अपेक्षा बहुत पीछे हुआ था और १९१८ ई०के अतमें ही नगर-दूमाकी स्थापना हुई।

फरगाना—फरगाना-उपत्यका रूसी कारखानोंके लिये कपास पैदा करती थी। इसके कारण वहा अन्दिजान, फरगाना तथा दूसरे शहरोमें छोटे-छोटे कारखाने खुल गये थे, जिनमें रूसी मजदूर भी काम करते थे। १९२८ ई०की जुलाईमें अर्थात् रूसमे बोल्शेविकोके राज्य सभालनेके नौ महीने बाद यहा पार्टीका सगठन हुआ और इस सालके अततक २३७ पार्टी-सदस्य हो गये।

नमगान—यहा १९१७ ई०के दिसबरमे सात पार्टी-सदस्य थे। अप्रैल १९१८ ई०में १८० और द्वितीय काग्रेसके समय सदस्योंकी सख्या छ सौ थी, जिनमें दो तिहाई स्थानीय और केवल दो सौ रूसी थे।

किजिलकिया—१९१८ ई०की फरवरीमें सात सदस्योको लेकर बोल्शेविकोंका यहा काम शुरू हुआ, लेकिन दिसबरतक उनकी सख्या ४५१ हो गई।

मर्गेलान—यहा १९१८ ई०के अगस्तमें पार्टीकी टुकडी स्थापित हो गई, और द्वितीय काग्रेसके समयतक बोल्शेविकोकी सख्या १७० पहुच चुकी थी।

कत्ताकुर्गान—१९१८ ई०के अतमें द्वितीय काग्रेसके समय यहा सदस्योकी सख्या करीब तीन सौतक पहुच गई थी, और यहाके तीन प्रतिनिधि द्वितीय काग्रेसमें शामिल हुए थे।

जीजक—यहा १२६ सदस्य १९१८ ई०के अंततक हो गए थे।

चारजूय—आम-दरियाके बायें तटपर अवस्थित इस महत्त्वपूर्ण स्थानमें १९१८ ई०के दिसबरमें बोल्शेविकोका सगठन हो चुका था और द्वितीय तुर्किस्तान पार्टी काग्रेस जब ताशकन्दमें हुई, तो यहाके बोल्शेविक सदस्योकी सख्या सौतक पहुच चुकी थी। लेकिन इस इलाकेमें अग्रेजोकी मददसे क्रांति-विरोधियोंका बल बढ गया, इसलिये यहाके बोल्शेविकोको उनका सख्त सामना करना पडा।

इन आकडोसे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामें बोल्शेविकोंका प्रभाव कितनी जल्दी बढा। इस समय तुर्किस्तान-प्रदेशकी आर्थिक स्थिति बडी खतरनाक हो गई, तेल और कोयला मिलना मुश्किल हो गया, रेलका यातायात बिगड गया था। कपासका उद्योग मध्य-एसियाकी आयका सबसे बडा साधन था और उसको कोई पूछनेवाला नहीं था। ऊपरसे अन्नका अकाल पडा हुआ था। साथ ही क्रांतिके कारण सघर्ष बहुत उग्र हो रहा था। मेन्शेविका और दक्षिणपथी एस्-एर् इन कठिनाइयोके लिये कोई रास्ता निकालनेमें असमर्थ थे। ऊपरसे काशगर, ईरान, अफगानिस्तान आदिके रास्ते क्रांति-विरोधी शक्तियाको अग्रेज पूरी तौरसे मदद दे रहे थे।

५. खोकन्द स्वायत्ततावादियोका अन्त

प्रथम विश्व-युद्धके समय एसियाकी बहुतसी पिछडी जातियोंमें राजनीतिक स्वतन्त्रताके भाव

जगे। मध्य-एसियामे तो १९१६ ई०मे उसने खूनी विद्रोहका रूप लिया था। इसी समय भारतमे प्रथम विश्वयुद्धके बाद देशकी परतन्त्रताको और भी कडा करनेके लिये अग्रेज रोलेट-कानून बनाने जा रहे थे। अग्रेज मध्य-एसियामे 'खोकन्द स्वायत्तता'को सहायता देनेके लिये पूरी कोशिश कर रहे थे। जारशाहीके उच्छेद, क्रातिकारियोकी निर्बलता और अग्रेजोकी शहमे मध्य-एसियाके मध्यवर्ग-ने इस आदोलनको खडा करके नवबर १९१७ ई०मे खोकन्दमें अपनी सरकार भी कायम कर ली, जो तीन महीने बाद (फवरी १९१८ ई०)तक शासन करती रही। जिस समय ताशकन्दमें ग्यारह दिन (११ जनवरी १९१९ ई०)तक बोल्शेविकोकी पार्टी काग्रेस होती रही, उसी समय खोकन्दके क्राति-विरोधी अपने शासनको कायम करके आगेके लिये बडे-बडे स्वप्न देख रहे थे। लेकिन खोकन्दके इस आदोलनमे खोकन्दसे बाहर सारे तुर्किस्तानके मध्यमवर्गकी सहानुभूति रहते भी उनसे सहायता उतनी नही मिल सकी। नवबर १९१७ ई०मे बोल्शेविक-क्राति रूसमे सफल हो चुकी थी, इसलिए मध्य-एसियामे कारबार करनेवाले रूसी पूजीपति बदहवास हो गये थे। अन्दिजानका सबसे बडा रूसी पूजीपति खोकन्द-स्वायत्तताका सबसे जबर्दस्त समर्थक था, और वहाका एक बडा रूसी वकील नेन्सबेग उसमे खास तौरसे भाग ले रहा था। लेकिन सभी जगहके क्राति-विरोधी बूर्ज्वाजीके भीतर एकता नही थी, समरकन्दवाले खोकन्दियाके साथ नही हुये। खोकन्दके इस आन्दोलनमें सबसे बडा हाथ फरगानाकी बूर्ज्वाजीका था, जिन्हे ताशकन्दके देशी और रूसी बूर्ज्वाजीसे भी पूरी सहायता मिली। ताशकन्द तो वस्तुत इस आन्दोलनका उद्‌गम स्थान ही था, और पहले वही उसका केन्द्र भी रहा। लेकिन सबसे पिछले खानकी राजधानी खोकन्द थी, इसलिये वहा सामन्तशाही तत्त्वोकी अब भी कमी नही थी। खोकन्दके नामपर राष्ट्रीय भावनाके जगानेमे आसानी थी, इससे भी लाभ उठानेके लिये इसी नगरको प्रतिगामियोंने अपना अड्डा बनाया।

खोकन्द स्वायत्तताका आन्दोलन समरकन्दके मध्यवर्गमें भी बढा, और वहा उन्होने 'इत्तिफाक' के नामसे अपना सगठन मजबूत किया। किर्गिज-मध्यवर्गने भी इस आन्दोलनमे अपने लाभकी आशा देखी, और वह भी इसमें क्रियात्मक रूपसे भाग लेनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यही नही, वर्तमान तुर्क-मानिस्तानमें कास्पियन तटतक खोकन्दकी 'स्वायत्तता'की गूज सुनाई देने लगी। सब होते हुए भी इस आन्दोलनका केन्द्र ताशकन्द या समरकन्द न होकर खोकन्द रहा। खोकन्द फर-गानाका सबसे बडा नगर होनेके कारण आर्थिक केन्द्र भी था, लेकिन वह औद्योगिक केन्द्र नही था। कमकरोकी कमजोरीके कारण खोकन्द क्राति-विरोधी स्वायत्ततावादी इसे अपना केन्द्र बना सके। यहापर जहा मिलें और फैक्टरिया बहुत ही कम थी, वहा सैनिक महत्त्वका स्थान न होनेसे रूसी सैनिकोंकी सख्या कुछ दर्जनोंसे अधिक नही थी, जो भी घर लौटनेमे सफल न होनेके कारण खोकन्दके किलेमे रह गये थे। प्रतिगामियोने इस्लाम धर्मकी भी आड लेकर जहादका प्रचार शुरू कर दिया था। यद्यपि इससे उनके पृष्ठपोषक रूसियोंको खतरा था, लेकिन तब भी वह इस समय बोल्शेविकोके खिलाफ उनकी सहायता करनेके लिये तैयार थे। स्वायत्तता-वादियोंका नेता मुस्तफा चोकायेफ था। लेकिन जैसा कि ऊपरकी बातोंसे मालूम होगा, असली सूत्रधार रूसी पूजीपति और अफसर थे, जिनमें पीछे मेन्शेविक और दक्षिणपन्थी समाजवादी क्रातिकारी भी शामिल हो गये। खोकन्द स्वायत्तता-विधानके निर्माणमे नेंसबेग-जैसे कितने ही रूसी वकीलोंका मुख्य हाथ था। कजखोफ स्वायत्ततावादियोंकी सेनाका मुख्य शिक्षक था। करेन्स्कीकी पार्टी (समाजवादी क्रातिकारी)का खोकन्दके आन्दोलनमें खास हाथ था। ताश-कन्दके शिक्षकोंके सघने भी प्रस्ताव द्वारा १० (२३) दिसम्बर १९१७ ई०के अपने सम्मेलनमें स्वायत्तताका समर्थन किया था। खोकन्दकी स्वायत्ततावादी सरकारने गाववालोको अपने हाथमे करनेके लिये शिक्षितों और मुल्लोंको तैनात किया था। मदरसो, मस्जिदो, चायखानों, बाजारोमें जहा देखो तहा 'स्वायत्तता'का घनघोर प्रचार हो रहा था, उसी तरह जैसे कि इसके साल-डेढ साल बाद भारतमें असहयोग आन्दोलन देशके कोने-कोनेमें। लेकिन जहा हमारी राष्ट्रीयताको अग्रेजोकी सडी-गली व्यवस्थासे भिडना था, वहां मध्य-एसियामें वहाके नब्बे प्रतिशत लोगोंके

हितोंके जबर्दस्त समर्थक बोल्शेविकोंके साथ संघर्ष जारी हुआ था। इसलिये मध्य-एसियाके मुल्ला और शिक्षित बहुत दिनोंतक लोगोंको धोखेमें नहीं रख सकते थे। वह प्रचारके साधनके तौरपर लोगोंकी भुखमरीका उदाहरण दे रहे थे, लेकिन उसके कारण बोल्शेविक नहीं थे। वह बोल्शेविकोंके अत्याचारोंकी मनगढन्त बातें सुनाते थे, लेकिन मध्य-एसियामें जो थोड़े से बोल्शेविक देखे जाते थे, वह गरीबोंके सबसे गहरे मित्र छोड़ और कुछ नहीं थे। यह भी कहा जाता था, कि बोल्शेविक काफिर इस्लाम और अल्लाहको यहांसे उखाड़ फेंकना चाहते हैं, लेकिन इस झूठको वह तभीतक लोगोंमें फैला सकते थे, जबतक कि रक्त-बीजकी तरह बढ़कर बोल्शेविक अपने उद्देश्योंके प्रचारके लिये सब जगह फैल नहीं गये। बोल्शेविक भी दूसरे रूसियोंकी तरह साम्राज्यवादी हैं, इस प्रचारको वहांके लोग अपनी आंखों देखकर झूठा समझ सकते थे, जब कि स्वायत्ततावादी नेताओंको जारशाहीके बड़े-बड़े अफसरों और पूंजीपतियोंके साथ घुलते-मिलते देख रहे थे।

ओरेनबुर्गमें आतमन दूतोफके विद्रोहके कारण उधरसे रूसका मध्य-एसियाके साथ संबंध कट गया था, और इधर कास्पियनके पूर्वी तटमें अंग्रेजी षड्यंत्रने कुछ समयके लिये सफलता प्राप्त की थी। ताशकन्दपर बोल्शेविकोंका अधिकार हो जानेसे उनका विरोधी दूतोफ ओरेनबुर्गसे अनाज आने देनेके लिये कैसे तैयार हो सकता? सारे झूठे प्रचारके होनेपर भी मध्य-एसियाके कमकर-किसान बोल्शेविकोंके कामको देख रहे थे। उन्होंने किसानोंको अपनी जोती जमीन देकर अपनी तरफ कर लिया था। मजदूरोंमें काले-गोरे दोनोंको मिलाकर कल-कारखानोंके प्रबन्धमें भागीदार बना दिया था। धीरे-धीरे स्वायत्ततावादियों और बोल्शेविकोंके कामोंकी तुलना करनेसे इस्लाम और जातीय स्वतंत्रताके नाम पर होते हुये प्रचारका प्रभाव घटने लगा, और समझदारोंको यह समझनेमें दिक्कत नहीं हुई, कि खोकन्दके स्वायत्ततावादकी आड़में बड़े-बड़े रूसी स्वामी, पूंजीपति और पुराने शासक शिकार खेल रहे हैं।

फर्वरीतक फरगानामें भी वर्ग-संघर्ष उग्र रूप ले चुका था और खोकन्दमें अब क्रांति विरोधियोंका प्रभाव बहुत घट चुका था। उनका शासन केवल पुराने नगरमें रह गया था। नये शहरमें बोल्शेविकोंने सोवियत-शासन स्थापित कर दिया था। किलेमें जो १६ रूसी सैनिक रह गये थे, वह भी बोल्शेविकोंके साथ हो गये थे। खोकन्द सोवियतका अध्यक्ष बाबुश्किन था। क्रांति-विरोधियों (जिसमें सफेद रूसी भी थे) ने पहरेदारको मारकर बाबुश्किनके घरपर आक्रमण किया। उसके बीवी-बच्चे भी साथ थे, लेकिन बाबुश्किन पिस्तौलसे लड़ता रहा। क्रांतिविरोधियोंने योजना बनाई कि पहले किलेको हाथमें किया जाय, फिर टेलीफोनके स्टेशनको, और अन्तमें सोवियत-अध्यक्ष बाबुश्किनको। लेकिन इसी समय फरगानाके पूर्वी भागमें बोल्शेविकोंने सफलता पाई। उन्होंने अन्दिजानको लेकर सारे फरगानापर बोल्शेविक-शासन स्थापित कर लिया।

खोकन्दके पुराने नगरमें सजोनोफ और निकोलायेको खोकन्द स्वायत्त-सरकारके साथ बात चीत करने गये। १२ फर्वरीके सबेरे दिन बहुत अच्छा था। बोल्शेविकोंका संगठन मजबूत था। १३ फर्वरीको सबेरे स्कोबेलेफ और अन्दिजानसे १२० आदमियोंकी सहायता आ गई। स्वायत्ततावादियोंने बोल्शेविकोंकी बढ़ी हुई शक्तिको देखकर अपनी योजनाको आगे बढ़ानेकी हिम्मत नहीं की, बल्कि लड़नेकी जगह सुलहकी बातचीत करनेको ही ठीक समझा। १७ फर्वरी (२ मार्च) को दोनों ओरके प्रतिनिधि बात करनेके लिये जमा हुये, जिसमें सोवियतके सत्ताइस और स्वायत्तियोंके चौबीस प्रतिनिधि थे। लेकिन स्वायत्ती अपनी इच्छासे कैसे अपना खातमा कर देते? इसपर बोल्शेविकोंने उन्हें अल्टीमेटम दे दिया। समझौतेमें सबसे बाधक एगस और तानीशेफ थे। समझौता होते न देखकर उस दिन १० बजकर ३० मिनटका बैठककी कारवाई रोक दी गई, और तानीशेफके पाससे उत्तरके आनेकी प्रतीक्षा की जाने लगी। अगले दिन तानीशेफने अपनी सहमति दे दी, लेकिन एगस मुल्लाओंके बलपर मस्त रहा था। जिस समय समझौतेके लिए बातचीत हो रही थी, उसी समय खोकन्दकी सभी

मस्जिदोंमे मुल्ला जहादपर व्याख्यान दे रहे थे। समझौता न होनेपर अब शक्ति मुल्लोंके हाथमे चली गई थी, जो कि किसी तरहके सुधारको माननेके लिये तैयार नही थे। उनके लिये सुधारवादी उज्बेक भी काफिर थे, इसलिये उनके एक भागको मुल्लोने गिरफ्तार कर लिया, और दूसरा भाग भागनेके लिये मजबूर हुआ। खोकन्दके सेठोंमेंसे कुछ तटस्थ हो गये और कुछने एगस तथा मुल्लोका पक्ष लिया। जहातक देहकाना (किसाना)का सवाल था, वह समूहरूपेण सोवियत-सरकारके पक्षपाती हो गये थे। इस प्रकार एगसको भारी जनसंख्याका वल प्राप्त नही हो सका। खोकन्दमे मजदूरोकी भी स्थिति डावाडोल रही, उनकी सभा (इत्तिफाक) एक वार मुल्लोके प्रचारके प्रभावमें इतनी आ गई थी, कि उसने सोवियतके विरुद्ध प्रस्ताव पास करके अपनेको स्वायत्तियोंके पक्षमे घोषित किया, लेकिन जब एगस और मुल्लोकी सरकारका मजा चखा, तो उनकी आखे खुली। उन्होने "मुसलमान कमकर सघ" नामक वोल्शेविक-पक्षपाती सघ वनाया, फिर 'इत्तिफाक' भी सोवियत शासनका समर्थक वन गया। व्यापारियोमें जरूर काफी भाग ऐसा था, जो मुल्लोकी तरफ था।

खोकन्दकी ऐसी स्थिति थी, जब कि वोल्शेविकोने स्वायत्ततावादियोंको खतम करनेका निश्चय किया। अबतक ताशकन्दसे भी उन्हे सहायता मिलने लगी थी। सोवियत कमाडरने १९ फवरी (४ मार्च) १९१८ ई०के १० वजकर १५ मिनटपर एगसको अल्टीमेटम दिया। दिनके १ वजे अल्टीमेटमका समय वीतनेवाला था। पौने वजे एगसका जवाव मिला। उसने सोवियत-कमाडरकी माग पूरा करनेमे इन्कार कर दिया। १ वजेसे वीचमे कभी-कभी रुककर शामके अधेरेतक तोपें पुराने नगरपर गोला-वर्षा करती रही। २० फवरीको सवेरे लाल सैनिकोने पुराने नगरपर धावा वोल दिया। एगस अपने आदमियोको लेकर पहली ही झडपमें भाग खडा हुआ, इसलिये नगरपर अधिकार करनेमे अधिक प्रतिरोधका सामना नही करना पडा। एगसके भाग जानेपर अव पुराने खोकन्दके प्रतिनिधि सुलह करनेके लिये आये। सुलह-सम्मेलन २१-२२ फवरी (८-९ मार्च) १९१८ ई०को रूसी-एसियाई वैंकके मकानमे हुआ। सुलहकी शर्तोंके अनुसार हथियारोंको सोवियत कमाडरके हाथमे दे देना पडा, खोकन्दमें स्वायत्ती सरकार तोडकर प्रादेशिक सोवियत जनकमीसर मडलके शासनको स्वीकार किया गया। इस प्रकार खोकन्दपर किसानों-मजदूरोका राज्य स्थापित हुआ। एगसने यद्यपि यहा असफलता पाई, लेकिन आगे वासमची (डाकुओ) वन अपनी निष्ठुर खून-खरावियो द्वारा उसने तथा मध्य-एसियाके और भी कितने ही अधिकारच्युत धनियो और अमीरोने वोल्शेविकोको हटाकर अपनी तानाशाही स्थापित करनेका असफल प्रयत्न किया।

खोकन्द स्वायत्तीय आन्दोलन और सरकारके जीवनका चिट्ठा पुराने रूसी पचागकी तारीखों (जो कि तेरह दिन पहले पडती थी)के अनुसार निम्न प्रकार है —

दिसम्बर	६-७,	१८१८ ई०	फरगाना जिलेकी सोवियतोकी काग्रेस
,,	९-११,	,,	मुसलमानोंकी काग्रेस
,,	११,	,,	खोकन्द स्वायत्तताका आरम्भ
,,	२१-२८,	,,	खोकन्दमे अखिल तुर्किस्तान समाजवादी क्रांतिकारी काग्रेस
दिसम्बर	२७,	१९१८ ई०	ताशकन्दमें वोल्शेविकोका प्रदर्शन
फर्वरी	१२,	१९१९ ई०	खोकन्द दुर्ग वोल्शेविकोंके हाथमें और खोकन्दमें सैनिक क्रांति-समितिका सगठन
,,	१३,	,,	स्कोबेलेफ और अन्दिजानसे खोकन्दमें कुमक आई, खोकन्द स्वायत्ती सरकारसे प्रथम वातचीत
,,	१४,	,,	स्वायत्ती सरकारसे द्वितीय वातचीत
,,	१४-१६,	,,	एगसका किलेपर आक्रमण करनेका प्रयत्न
,,	१५,	,,	स्कोबेलेफ नगरकी दूमाका खोकन्दके शांति-

			सम्मेलनोमें एक प्रतिनिधि भेजनेका निश्चय
फर्वरी	१७,	,,	शाति-सम्मेलनका उद्घाटन
,,	१८,	,,	मुल्लोका स्वायत्ती सरकारको अपने हाथमें ले लेना
,,	१९,	,,	ताशकन्दसे खोकन्दमे सेना आनेपर सोवियत कमाडरने अल्टिमेटम भेजा, पुराने नगरपर गोला-बारी शुरू
,,	२०,	,,	एगाम खोकन्द छोडकर भागा
,,	२२,	,,	सुलहनामेपर हस्ताक्षर

६ समरकन्द-विजय

खोकन्द स्वायत्तियोपर विजय प्राप्त करना मध्य-एसियामें साम्यवादकी जबदस्त विजय थी। उसके बाद यह निश्चय-सा हो गया, कि नगरोमें बोल्शेविकोको हटाना बहुत मुश्किल है। १९१८ ई०में बोल्शेविकोका शासन सिर्फ नगरोपर था। नगरोंके आसपासके कुछ किसान भी उनके प्रभावमें आये थे। खासकर सिर-दरियाके आसपासवाले इलाके, फरगाना जिला और समरकन्दके जिलोके किसानोपर बोल्शेविकोका प्रभाव बढता जा रहा था, लेकिन उधर मुल्लाओका सगठन 'शूरा-इस्लामिया" (इस्लामी लीग) भी काफिरोंके विरुद्ध धुआधार प्रचार करके मुस्लिम-जनसाधारण-को रूसियोके, खासकर बोल्शेविकोंके, विरुद्ध खूब भडका रहा था। दिसम्बर १९१७ ई०के अन्त और जनवरी १९१८ ई०के शुरूमें समरकन्दमें क्रातिकारियोंने विरोधियोको दबा दिया। वहा बोल्शेविकोका सगठन भी हो गया और रेव-कम (रेव्यूल्यूशनरी कमेटी, क्राति-समिति)ने बोल्शेविक सेनाके सगठनका भी सूत्रपात कर दिया। लेकिन इसी समय कजाकोने समरकन्दको खतरेमे डाल दिया। मध्य-एसियाकी जातियोमें कजाक सबसे ज्यादा लडाकू और अभी भी बहुत कुछ घुमन्तू जीवन बिताते थे। साइबेरियामें क्राति-विरोधियोने अपने पक्षको मजबूत किया था, और इन कजाकोंका उनसे सीधा सबध था। समरकन्दके आसपासको घेरनेवाले कजाकोंके साथ बात करनेके लिये बोल्शेविकोने अपना प्रतिनिधि-मडल भेजा। किजिल तेप्पेमे दोनो ओरके प्रतिनिधियोने बातचीत की। फिर क्रांति-सरकारके नामसे अल्टीमेटम दिया गया, और कुछ अफसरो और प्रतिगामी कजाकोको छोड सबके हथियार ले लिये गये।

अक्तूबर-क्रातिके तुरन्त ही बाद समरकन्द-जैसे मध्य-एसियाके महत्त्वपूर्ण नगरमे क्रातिकी सशस्त्र सेना तैयार करनेमे कैसे ढिलाई की जा सकती थी? इस सेनामें रूसी और एसियाई दोनो ही जातियोंके आदमी थे। जारकी सेनामें काम किये हुये सिपाहियोंके अतिरिक्त काफी सख्यामें नये आदमी भर्ती हुये। इस प्रकार जनवरी १९१८ ई०में लाल सेनाका प्रथम सगठन यहा हो चुका था। समरकन्दकी रूसी गैरिसनके सिपाही पहलेसे सैनिक शिक्षा पाये हुये थे, नये क्रातिके सिपाहियोने भी सैनिक-शिक्षा तेजीसे ली। साथ ही पुराने सिपाहियामे राज नीतिक चेतना लानेके लिये पूरी कोशिश की गई। कजाक कत्ताकुर्गान शहरपर अधिकार किये हुये थे। अभी भी उनसे खतरा दूर नही हुआ था। प्रदेश (क्राइ)की सरकारने पोल्तरत्स्कीको उनसे बात करनेके लिये नियुक्त किया। कजाकोके भी प्रतिनिधि आये। समरकन्दमें दोनोंकी बातचीत होते समय क्रातिकारी कमेटीने उनसे हथियार रखनेकी माग की, लेकिन कोई निश्चय नही हो सका। फिर बोल्शेविक-प्रतिनिधि सीधे कजाक सैनिकोसे बात करनेके लिये समरकन्दसे दस वस्त (१६ फसख)पर अवस्थित जूमा रेलवे स्टेशनपर गये, लेकिन कजाक किसी बातको सुननेके लिये तैयार नही थे। वह समरकन्दपर आक्रमण करनेके लिये उतारू थे। समरकन्दमें भी कमकरोंने बडी तेजीसे सैनिक तैयारी की। मजदूरोने अपने परिवारको छोड-कर बन्दूक उठाई और कजाकोको जीजक स्टेशनमें ही रोकनेका प्रयत्न किया। बोल्शेविक पार्टीका एक भाग सेनाके लिये बाहरी तैयारीपर नियुक्त हुआ। बहुतसे पार्टी-मेम्बर सिपाही

रक्षामें लगे और कितने ही युद्धक्षेत्रमें गये। एसियाई और युरोपीय दोनों ही मजदूर और बोल्शेविक-कर्मी एक-दूसरेसे मिलकर कजाकोंसे समरकन्दको बचानेके लिये बड़ी तत्परतासे काम कर रहे थे। कजाक अपनेको करेन्स्की की अस्थायी सरकारका सैनिक बतलाते थे, जब कि वह सरकार रूसमें खतम हो चुकी थी। सारा प्रयत्न करनेपर भी कजाक सफल हुये। वह मुक्ति-दाताके तौरपर समरकन्द शहरमें दाखिल हुये। रूसी और एसियाई बूर्ज्वाजीने उनका भारी स्वागत किया, बढ़िया शराब पिलाई, भोज और उत्सव मनाया। क्रांतिकारियोंमेंसे जो भी हाथ आये, उन्हें कजाकोंने बड़ी निष्ठुरतासे मारा। लेकिन अधिकांश बोल्शेविक अन्तर्धान हो चुके थे। उनका संगठन भी नष्ट न हो, अन्तर्हित हो गया था। इस समय कमजोर दिलवाले अपने आप पार्टीसे अलग हो गये, लेकिन पक्के बोल्शेविक और मजबूतीके साथ अपने संगठनको चलाते रहे। बोल्शे-विकोंकी कार्य-तत्परता, कुर्बानी और बर्तावने एसियाई गरीबों और मजदूरोंके दिलमें और भी उनके प्रति विश्वास पैदा कर दिया।

लेकिन, समरकन्द थोड़े ही दिनोंके लिये बोल्शेविकोंके हाथसे गया। ताशकन्दमें बोल्शे-विक शासन मजबूत हो गया था। खोकन्दमें भी शत्रुओंको दबा दिया गया था। अब समरकन्दको फिरसे लेनेके लिये उन्होंने तैयारी शुरू की। ताशकन्दने भी सेना भेजी, समरकन्दके मजदूरो-ने भी बहुतसे सैनिक दिये। समरकन्दके पुराने सैनिकोंमेंसे बहुतसे उनके साथ थे, और कुछ ओरेनबुर्गमें क्रांतिविरोधियोंसे लड़कर अभी लौटे थे। बोल्शेविकोंके सब मिलाकर तीन हजार पैदल और सवार दोनों ही तरहके सैनिक कजाकोंके मुकाबिलेके लिये तैयार थे, लेकिन इनके पास एक ही मैदानी तोप थी। उधर क्रांति-विरोधियोंके पास ७७०० सैनिक थे, जिनमें ईरान और खीवाके युद्धक्षेत्रसे आये हुए भी कितने ही थे। उनके पास दो मैदानी तोपें और दो दूसरी तोपें थीं। यह बतला चुके हैं, कि ओरेनबुर्गमें आतमन दूतोफ साइबेरियाके क्रांति-विरोधी जेनरलोंके साथ था, और उसका प्रभाव खीवा होते कास्पियनके पूर्वी तट तथा ईरानकी सीमातक पहुंच रहा था। बुखाराका अमीर यद्यपि अभी सीधे तौरसे बोल्शेविकोंके विरुद्ध होनेकी हिम्मत नहीं रखता था, लेकिन उसके अफसर वहांके पूंजीपति क्रांति-विरोधियोंकी हर तरहसे सहायता कर रहे थे। युद्धके दो दिन पहलेतक कजाकोंके साथ उनकी बराबर बैठकें होती रहीं। अंतिम आक्रमणके पहले जीजक स्टेशनके पास एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसमें एसियाई मजदूर बड़ी संख्यामें शामिल हुये थे। तुर्किस्तान गणराज्य सोवियत जनकमीसर-परिषद्के अध्यक्ष कोलेसोफने अपने भाषणमें गणराज्यकी सारी स्थितिपर प्रकाश डाला। इसी सभाके बाद योजना बनाई गई। फिर क्रांतिकी सेना दक्षिणवाले रास्तेसे रेलवेके साथ-साथ लाइनसे दाहिने और बायें होते आगे बढ़ी। गोस्तोव्त्सेवो स्टेशनोंमें पहुंचनेपर गोलाबारी शुरू हुई। कजाक समर-कन्दकी ओर पीछे हटे। बोल्शेविक आगे बढ़ते गये। अन्तमें सोवियतकी क्रांति-विरोधियोंपर विजय हुई, और लाल सेनाके हाथमें बहुतसा गोला-बारूद और दूसरे हथियार आये। पेरफिल्येफ लाल सेनाका कमाण्डर था। दूसरे अफसर थे--फेदोर कोलेसोफ, पोल्तारात्स्की, फ्रोलोफ, पोनोमारेफ, पेन्द्रो, दूनायेफ, मिखाइलोफ, पेस्पेलोफ, एसाउलेंको, बेग, शुस्तोफ, बारकुस, ओर्लोफ, इसायेफ आदि। क्रांति-विरोधियोंकी तरफ थे--कजाची, कर्नल जायित्सेफ, स्लिको, सिबको, स्तेपानोफ, गिंजबुर्ग, सियानोफ, तोकारेफ, गोरेलोफ, गपेयेफ आदि जारशाहीके पुराने सैनिक अफसर तथा दूसरे।

जनवरी १९१८ ई०के आरम्भमें हुई समरकन्दकी इस विजयने फरगाना, समरकन्द और ताश-कन्दके बीचकी भूमिको बोल्शेविकोंका एक दृढ़ केन्द्र बना दिया।

लेकिन, अभी भी बोल्शेविक निश्चिंत नहीं बैठ सकते थे, क्योंकि अफगानिस्तान और ईरानके रूसी सीमान्तपर अंग्रेजोंका षड्यंत्र बड़े जोरसे चल रहा था, और चर्चिल सारी शक्ति लगाकर रूससे बोल्शेविकोंको उखाड़ फेंकनेके लिये तैयार था।

७ बुखारा-अमीर भगा (१९२०ई०)

मध्य-एसियामें रूसका शासन स्थापित हो जानेके बाद भी बुखाराके अमीरका शासन हमारे यहांकी बड़ी रियासतोंके ढंगपर हो रहा था। मध्य-एसियाके लोग भी तुर्क हैं, और

तुर्कीके लोग भी। मध्य-एसियाके तुर्क सुन्नी होनेसे तुर्कीके खलीफाको अपना सबसे बडा धर्माचार्य मानते हैं। इस प्रकार भाषा और धर्मके घनिष्ठ संबंधके कारण मध्य-एसियाके शिक्षितोंका तुर्कीके साथ घनिष्ठता होनी स्वाभाविक थी। इसीलिये जिस तरहके आन्दोलन तुर्कीमें होते, उसका कोई न कोई रूप मध्य-एसियामें उठ खडा होता। तुर्कीमें नवीन-तुर्क दलने सुधारके लिये बहुत जद्दो जहद की, और वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें उसने इतनी सफलता पाई, कि तुर्कीके सुल्तानको अनवर पाशा और दूसरे नवीन तुर्क-नेताओंको शासनमें साझीदार बनानेके लिये मजबूर होना पडा। नवीन-तुर्क पुराने जमानेकी कितनी ही बातोंको हटाकर तुर्कीको सामन्तशाहीसे पूँजी वादी समाजमें लाना चाहते थे। इन्हीं नवीन-तुर्कोंकी नकलपर मध्य-एसियामें 'जदीद' (नवीन) आन्दोलन शुरू हुआ, जिसका केन्द्र बुखारा था। रूसी इलाकेमें अक्तूबर-क्रांतिके बाद खोकंदी स्वायत्तियोंने शक्तिको अपने हाथमें लेना चाहा, लेकिन जदीदोंने इतना जोर नहीं दिखलाया। जदीद मुल्लाशाहीके भी खिलाफ थे, इसलिये मुल्ला उन्हें फूटी आंखों देखना नहीं चाहते थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भसे ही जदीदवादका प्रचार बुखारामें होने लगा था। १९१७ ई०के मार्च अप्रैलमें जदीदोंका नारा 'हुर्रियत' (स्वतन्त्रता) बडे जोरोंपर था। फर्वरी-क्रांति द्वारा जारके सिंहासनसे हटा दिये जानेके बाद बुखाराका अमीर आलमखान भी डर गया, और उसने एक बार तुर्कीके सुल्तानका अनुगमन करते हुये जदीदोंकी बहुतसी मांगें मान लीं। लोगोंको मालूम होने लगा, कि यहांपर भी अब जदीदोंका शासन स्थापित होगा। लेकिन सालभर बीतते-बीतते अमीरको फिर इतनी हिम्मत हो गई, कि मार्च १९१८ ई०से उसने जदीदोंका कत्लेआम शुरू कर दिया। चारों ओर मुल्लोंका जोर था। बडे-बडे पगडवाले मुल्ला जदीदोंके खूनकी नदी बहते देखकर दाढी फडफडाते कह रहे थे—"देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत!" बुखारामें सैकडों आदमी बुरी तरहसे पकड-पकडकर तलवारके घाट उतारे जा रहे थे, खूनसे भरी खाइयोंके पास बीसों मुर्दे दम तोड रहे थे।

जदीदोंके प्रभावके जमानेमें नसरुल्ला कुशबेगीने जदीदोंके साथ सहानुभूति दिखलाई थी, जिसके लिये उसे अपने बीबी-बच्चों और संबंधियोंके साथ बुखारासे निर्वासित करके करमीनामें नजरबन्द कर दिया गया, और उसकी जगहपर मिर्जा उरगंज महामंत्री बनाया गया। जदीदोंने पुराने ढंगके मकतबोंकी जगहपर लडकोंके पढनेके लिये नये ढंगके स्कूल स्थापित करना चाहा। मुफ्ती हाजी अकरामने उनके कामका समर्थन किया था, इसलिये उसे भी गुजारमें निर्वासित कर दिया गया। बुखारा-शरीफका रईस अब्दुस्समद खां जदीद होनेके कारण पदच्युत कर दिया गया। इसी तरह मिर्जा शहबाई और हाजी दादखाह-जैसे प्रभावशाली दरबारी जदीद होनेके इल्जाममें निर्वासित करके कबादियान भेज दिये गये। जिस तरह खोकन्दमें मुल्लोंने अन्तमें सारी शक्ति अपने हाथमें ले ली थी, वही बात अब १९२० ई०में बुखारामें दुहराई जा रही थी। चारों तरफ जहाद (धर्मयुद्ध)का नारा घोषित हो रहा था। मुल्लाने फतवा दे रक्खा था, कि जदीदोंका खून हलाल और उनकी जोरू हलाल।

लेकिन अमीर और मुल्लोंकी यह धींगा-धींगी छ महीने भी नहीं चल पाई। २० अगस्त १९२० ई०को बुखाराकी हालत परेशान देखी जाने लगी। बुखाराके आर्क (किले)से अमीरका सामान घोडा-गाडियोंपर ढोया जा रहा था, और उधर बोल्शेविक तोपें समय-समयपर भूमिको कंपाते हुये गुम्-गुमकी आवाज कर रही थीं। अमीर आर्क छोडकर सितारामुखासा नामक बागमें ठहरा हुआ था, जहांपर उसकी बेगमें और उसकी कामुकताके शिकार छोकरे गाडियोंपर चढा-चढा करके भेजे जा रहे थे। बोल्शेविक केवल तोपके गोले ही नहीं छोड रहे थे, बल्कि उनके कागजी गोले और भी शक्तिशाली रूपमें लोगोंके बीचमें फेंके जा रहे थे, जिनकी आखिरी पंक्तियां—"बुखाराके मेहनतकश जिन्दाबाद, बोल्शेविक पार्टी जिन्दाबाद, सोवियत-सरकार जिन्दाबाद, अमीर और उसकी सरकार नेस्तबाद" को पढ़ सुनकर बुखाराके गरीब बडे उत्साहसे साथ नये दिनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उधर जनाब आली अमीर-बुखारा मीर आलम खान भागनेकी फिकरमें परेशान थे।

३०-३१ अगस्त और १ सितम्बर (१९२० ई०)के सोमवार, मगल और बुधके तीन दिनामे सारा बुखारा उलट-पलट गया। नगरमे आग लगी हुई थी। आक (किले)के अन्दर हर जगह, खासकर अमीरके गद्दीघर और रनिवासमें, आगकी ज्वालाये लपलपा रही थी।

अमीरके लिये अब सुरक्षित जगह अपने देशके भीतर नही रह गई थी। जब उसकी प्रजामे सबसे अधिक सख्या रखनेवाले गरीब किसान और मजदूर बोल्शेविकोंके फेरमे पड गये थे, तो उसे कैसे त्राण मिल सकता था? उसे अब अफगानिस्तानके भीतर ही जान बचानेकी जगह दिखलाइ पडने लगी। लेकिन, वह उज्बेकोके मैदानी इलाकोंमे गुजरना खतरेकी बात समझता था, इसलिये उसने पहाडी रास्ता लिया। बाइसूनमें जाकर उसने डेरा डाला। मुल्लोके धुआधार जहादी व्याख्यानोसे, और उससे भी अधिक लूटके लोभमे पूर्वी बुखारावाले हिसार, कुल्याब, बलजुवान, दरवाज और करातगिनके इलाकोमे बहुतसे गाजी आये थे, लेकिन आधुनिक हथियारोंसे सुसज्जित और सुशिक्षित बोल्शेविकोंके सामने भला यह शिवजीकी पलटन क्या कर सकती थी? अमीरको बाइसूनसे भी भागकर दुशाम्बा जाना पडा। वहापर एक ही यूरोपीय ढगकी इमारत 'दोस्तरखाना' थी, जिसे अमीरने अपना महल बनाया। जब लुटेरोकी पलटन उसके आसपास आकर जमा होने लगी, तो अमीरको विश्वास हो गया, कि अब बुखारा तो गया, दुशाम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) राजधानीमे ही शायद मै मगीतोके शासनको मजबूत करनेमें सफल होऊ। लेकिन फवरी १९२१ ई०में फिर अमीरका पैर कापने लगा। पासके खजानेको कही गाजीके नामसे इकट्ठा हुये यह डाकू न छीन ले, यह भी उसको डर था। इसलिये निराश हो कुल्याब होता वह कुछ समय बाद पज (वक्षुकी ऊपरी शाखा)के किनारे पहुच दरकदके घाटसे वक्षु पार हो अफगानिस्तान चला गया। जाते-जाते वह डाकुओ (बासमचियो)के सरदारोको अपना प्रतिनिधि बनाकर छोड गया, जिन्होंने १९२१ से १९२६ ई० तकके पाच वर्षोतक पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)में बहुत लूट-पाट मचाई, गरीबोके खूनमे हाथ रगा, लेकिन अतमें उन्हें सोवियत-शासनने खतम कर दिया। बोल्शेविक क्रांतिके बाद सारा रूसी मध्य-एसिया तुर्किस्तान गणराज्यके नाममे सगठित हुआ था। इसके बाद उज्वेकिस्तानका गणराज्य स्थापित हुआ, जिससे १९२४ ई०में ताजिकिस्तान पहले स्वायत्त गणराज्य फिर पाच साल बाद १९२९ ई०में स्वतत्र गणराज्य होकर अलग हो गया।

स्रोत-ग्रन्थ*

१ स्पिसोक् नरोद्नोस्तेइ तुर्केस्तान्स्कओ क्राया (इ इ जारुबिन्, लेनिनग्राद १९२५)
२ रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३ "वोस्तोको वेदेनिया" (१९४५/३, पृष्ठ ५९-७९, लेनिनग्राद)
४ नसेलेनिये समरस्क दस्कोइ ओब्लास्ति (इ इ जारुबिन्, लेनिनग्राद, १९२६)
५ दाखुन्दा (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४८)
६ जो दास थे (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४९)
७ बुखारा (सस्मरण, सदरुद्दीन ऐनी, अनुवादक स बोरोदिन्, मास्को, १९५२)

अध्याय ३

कजाकस्तानमें क्रांति

१ कजाक-जाति

इतिहासके आरम्भसे वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमें किस तरह मानव जातियोंका आगमन, निस्सरण और सम्मिश्रण होता रहा, इसे हम जगह-जगह कह चुके हैं। आज जो विशाल भूमि कजाकस्तान गणराज्यके नामसे प्रसिद्ध है, वह भौगोलिक तौरसे इतिहासकी दृष्टिसे साइबेरिया, किपचकभूमि, अल्ताई और सप्तनदके भिन्न-भिन्न भागोंमे विभक्त रही। मध्य-पाषाण-युग (ई० पू० ४०००)से पहलेकी पुरापाषाणयुगीन मुस्तेर आदि जातियोंमें से कौन इस भूमिमे रही, इसके बारेमें हमारे पास पुरातात्विक प्रमाण नही हैं। तुलनात्मक नृवंश-तत्त्व और भाषा-तत्त्वके अध्ययनसे हम यह कह सकते हैं, कि मध्य-पाषाणयुगमे दश्तकिपचकमें फिनो-द्रविड थे और वही जाति सप्तनदमे भी थी, अर्थात् तुर्किस्तान शहर और जम्बुल जिलेके इलाकोंमें किसी समय वही फिनो-द्रविड जाति रहती थी, जिसके अवशेष भारतमें द्रविड तथा सोवियतमें कोमी स्वायत्त गणराज्य, और एस्तोनिया तथा फिनलैंडके लोगोके रूपमे अब भी मौजूद है। लेकिन उससे हजार वर्ष बाद नव-पाषाण-युगमे हम यहा विशेषकर अराल और निम्न-सिर-दरियाकी उपत्यकाओमे आर्य घुमन्तुओंके आनेका पता पाते हैं। २५०० ई० पू०में फिर किपचक-भूमि और अल्ताईमें उनका स्थान उन्हीके भाई-बन्द शक लेते है। सारे पित्तल-युग और लौह-युगमें घुमन्तू पशुपाल और कुछ थोडेसे खानोमें काम करनेवाले शक, किपचक, सप्तनद और अल्ताईके निवासी थे। हम देख चुके हैं, कि ई० पू० ५वी शताब्दीमें भी, जब कि दुनियाके बहुतसे भागोंमें लोहेका प्रचार हो चुका था, अभी ये शक पीतलके हथियारोंका ही इस्तेमाल करते थे। ई० पू० ४थी सदीमें कजाकस्तान (उस समय शक-भूमि)के पूर्वी भाग अर्थात अल्ताई-प्रदेशके पडोसी हूण थे, जो ई० पू० २री शताब्दीमें शक-भूमिके ऊपर टूट पडे, और उन्होने शकोंकी प्रभुता वहासे खतम कर दी। उस समयसे शक-आर्य शरीराकृतिका स्थान मगोलायित आकृतिने लेना शुरू किया। जो शक इस भूमिमें रह गये, वह मगोलायितामें मिल गये। ईसाकी ५वी सदीके पूर्वार्धमें किपचक-सप्तनद-अल्ताईकी भूमिमे रहनेवाले हूण-वंशज मगोलायित अपनी सामान ढोनेवाली गाडियोंके कारण कगली कहे जाते—वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिममे आनेवाले घुमन्तू सिरकी वालोको पूर्वी उत्तरप्रदेशमें कगडा कहा जाता था। ६ठी सदीके उत्तरार्धमें फिर तुर्कोंका प्रभुत्व स्थापित होनेके बाद इस भूमिके निवासी तुर्क नामसे प्रसिद्ध होने लगे। तबसे मध्य-एसियाके और भागोंकी तरह आज भी तुर्क जाति यहा रहती हैं, जो भाषाके थोडे भेदके कारण कहीं कजाक, कही किर्गिज, कही उज्बेक और कही तुर्कमानके नामसे पुकारी जाती हैं। यदि हम आजकी कजाक जातिके ऐतिहासिक विकासको देखते है, तो हमे उनके भीतर निम्न क्रममें जातियोंके स्तर मिलते है —

कजाक जातिका निर्माण —

काल	किपचकभूमि	सप्तनद	अल्ताई
ई० पू० ४००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड (अराल-सिर)	फिनो-द्रविड (जम्बुल)	
,, ३५००	,,	,,	
,, ३००० (नवपाषाण)	शकार्य	,,	

"	२५००	शक	शक	शक
"	१५०० (ताम्र-युग)	श०	श०	श०
"	७००	श०	श०	श०
"	५५०	श०	श०	श०
"	३२६	श०	श०	श०-हूण
"	२०६	श०	श०	श०-हूण
"	१३०	हूण	हूण-श०	हूण
"	१००	हूण	हूण-श०	हूण
ईसवी	१००	हूण	हूण-श०	हूण
"	४२५	कगली	कगली	कगली
"	५५७	तुर्क	तुर्क	तुर्क
"	६७३	तुर्क	तुर्क	तु०-किर्गिज
"	८९२	तुर्क	तुर्क	किर्गिज
"	१२२०	तुर्क	तुर्क	किर्०-मगोल
"	१५००	तु० (कजाक)	तु० (कजाक-किर्०)	किर्०-मगोल
"	१७५७	कजाक	कज-किर्०-मगोल	किर्०-मगोल
"	१८६५	कजाक	कज०-रूस	कज०-रूस
"	१९१७	कज०-रूस	कज०	कज०-रूस

कजाक

अक्तूबर-क्रांतितक कजाक लोग अब भी बहुत कुछ घुमन्तू पशुपाल थे। हम यह देख चुके हैं, कि इन घुमन्तू जातियोका पशुपाल-अवस्थामें रहना उनके सामन्ती समाजके विकसित होनेमें बाधक नही था। इस प्रकार वर्गके तौरपर कजाकोंके मुखिया और शासक सामन्ती जीवन व्यतीत करते सामन्ती संस्कृतिसे भी परिचित थे। घुमन्तू जातियोंमें दूसरी घुमन्तू जातियोका हजम होना बहुत आसान है, और अपने सरदारों या वीरोंके नाम स्वीकार करनेके कारण उनके प्राचीन नामोंका पता लगाना भी मुश्किल है। कजाकोंके बारेमे हम देख चुके है, कि पहले इन्हे उज्बेक या उज्बेक-कजाक कहा जाता था। सुवर्ण-ओर्दूका नाम एक शक्तिशाली उज्बेक खान (१३१३-४० ई०)के अधीन होनेके कारण पडा। कजाकका शब्दार्थ चाहे अरबी भापामें डाकू हो, लेकिन यहापर तुर्कोंने इसका इस्तेमाल साहसी लोगोके लिये किया। किर्गिज-कजाक और उज्बेक-कजाक नामके अन्तके कजाक और किर्गिज नाम अब रह गये, जो अपनी-अपनी जातिके परिचायक है। कजाक कबीलोंके नामोंके देखनेसे हमें पता लगता है, कि पुराने कौन-कौन-से कबीले या जातिया आकर इस भूमिमें मिश्रित हो एक जातिके रूपमें परिवर्तित हुई। कबीलोंके ये नाम कजाको और उज्बेको में बहुत-कुछ एक-से मिलते हैं, जिससे इस बातकी पुष्टि होती है, कि मूलत कजाक और उज्बेक एक ही कबीलेके अंग थे। दोनों जातियोंके कुछ कबीले है —

कजाक	उज्बेक	आनका काल
कुग्राद (सुवर्ण-ओर्दू)	कुंग्राद	मगोल-काल
किपचक (मध्य-ओर्दू)	किपचक	तुर्क-काल
किताई (लघु-ओर्दू)	खिताई	
नैमान (मध्य-ओर्दू)	नैमान	मगोल काल
उजुन (मध्य-ओर्दू)	ओशुन	शक-काल
उसिउन (सुवण-ओर्दू)	"	
तजलर (लघु-ओर्दू)	ताज	
तरी-उइगुर (मध्य-ओर्दू)	उइगुर	मगोल-काल

कजीगली (मध्य-आदू)	कजीगली	
जलैर (सुवण-आदू)	जलैर	मगोल काल
कगली (सुवण-ओदू)	इचकिली	
अलचिन (लघु-ओदू)	जलचिन	

इतिहासमे इन कबीलोमेसे कितनोका हमे पता लगता है। कगली (ककली, कग) बहुत पुराना नाम है, जो यहा आये हूणाके पुराने वशजाको दिया गया। नैमन किसी समय इतिशमे मगोलियाकी पुरानी राजधानी कराकोरमतक—अर्थात् पीछेकी उत्तरी जुगारियामें बसते थे, जहासे मगोल विजेताओंके ओदूका भाग बनकर यह मध्य-एसियामे आये।

जलैर बैकाल-प्रदेश तथा दौरियाके बीचमे किसी समय रहते थे, जहासे ये मगोलोके साथी बने।

उइगुर लोगोंका केन्द्र भी किसी समय विशबालिग था। एक बार तुर्कोंके स्थानमें इन्होने अपनी प्रभुता स्थापित की थी, फिर मगोलोके अनुयायी हो उनकी विजयोमे शामिल हो गये।

कुकुद या कुग्राद मगोलोका एक बहुत प्रतिष्ठित कबीला था, जो किसी समय दोलेनोर सरोवर, निम्न केरलोन तथा अर्गुनकी उपत्यकाओमे रहता था।

अलचिन पहले खिगन पर्वतमालाके वासी थे।

कजाक कबीलोको आजके कजाकस्तानके भिन्न-भिन्न भागोमें हम निम्न प्रकार वितरित देखते है—

(१) **महा-ओर्दू**—इसके उइसुन और सीखिम कबीले ताशकन्दके जिलेमे मिलते है। औलियाअता (जम्बुल)में इसके जानी, तेमिर, चीमिर और बोतपाई (खिनन) कबीले रहते हैं। तुर्किस्तान-शहरके पास और चू-उपत्यकामें सिरगिली, उस्ती, ओतकची, जलैर, चपराच कबीले बसते है। कगली ताशकन्दके पासमे रहते है।

(२) **मध्य-ओर्दू**—इस ओर्दूका किपचक कबीला ताशकदके पास रहता है। कुग्राद भी वही बसते है। इनके अतिरिक्त ताशकन्दके आसपास मध्य-ओर्दूके अल्तीअता, कोकतुनगुलू अल्तीअता, कोकतुनचुई, अर्गुन, नैमन भी बसते हैं।

२ १९१६ ई० का विद्रोह
(जारशाहीसे)

जारशाहीके प्रसारके बारेमें लिखते वक्त हम यह बतला चुके है, कि किस तरह अपने शासनको दृढ करनेके लिये साइबेरिया और दूसरी जगहोपर रूसी किसानों और व्यापारियोंकी औपनिवेशिक बस्तिया बसानेकी कोशिश की गई। कजाकस्तानकी भूमिमें ये बस्तिया अधिकतर उसके उत्तर तथा उत्तर-पूर्वमें है। लेकिन, आगे चलकर वह ओरेनबुर्गसे सिर-दरियाके किनारे ताशकन्द, और फिर सप्तनद तथा अल्ताई होते साइबेरियाके ओम्स्क आदि नगरोतक चली गई। पीछे ओरेनबुर्गसे अराल समुद्रके तटतक और फिर ताशकन्द होते वेर्नीतक रेल बन गई। तुर्किस्तानको साइबेरियासे मिलानेवाली रेलवे लाइन बोल्शेविक-क्रातिके बाद बनी, लेकिन इससे पहले भी ओरेनबुर्ग, अराल्स्क, अरिस, चिमकन्द, वेर्नी (अल्माअता), बुर्ल्युन्तुबे, आयागुज, सेमीपलातिन्स्क, बर्नोल, नवोसिबिर्स्कके आधुनिक रेल-मार्गपर जहा-तहा रूसियोंकी बस्तिया बस चुकी थी। जारशाहीने पूरी कोशिश की, कि गोरोंके साथ विशेष रियायत करके उन्हे किर्गिजोंसे अलग रक्खा जाय। भारतमें अंग्रेजोंके लिये ऐसा करनेमें सुभीता था, क्योंकि यहापर अंग्रेज किसान और मजदूर आकर बसने नही पाते थे, और भारतीयोंके लिये सभी अंग्रेज साहेब (स्वामी) थे, लेकिन कजाकभूमिके लोग साहेब-रूसियोको ही अपने पास नही, बल्कि लाखोकी सख्यामें रूसी मूजिकों (गरीब किसानों)को भी देखते थे। उपनिवेशोंमे आकर बसे रूसियाकी हालत कुछ बेहतर जरूर थी, और मूजिक या मजदूरकी शक्लमें आये रूसी भी कुलक (धनी किसान) बननेमे

सफल हो जाते थे, इसलिये भी वह स्थानीय कजाकोके साथ भाईचारा स्थापित नहीं कर सके। घुमन्तू पशुपाल कजाकोंको कृषि-भूमिकी उतनी अवश्यकता नहीं थी जितनी कि गोचर-भूमिकी, इसलिए वह अपनी भूमिके साथ उतनी घनिष्ठताका भाव नहीं रख सकते थे, जितना कि किसान। जारशाही सरकारकी बराबर कोशिश रहती थी, कि खेतीके लिये उपयुक्त भूमि कजाकोंसे छीनकर रूसियोंको दे दी जाय। ९ नवम्बर १९०६ ई०को इसके बारेमें बल्कि भूमि-सबंधी एक नया कानून बनाकर कजाकोंको उनकी भूमिसे वंचित करनेका भारी उपक्रम किया गया। कजाकोंकी जमीनपर रूसी कलकोंके पलनेकी यही कथा है।

कजाकोंकी सांस्कृतिक अवस्था बड़ी हीन थी। उनमें निरक्षरताका अखंड राज्य था, और केवल उनके बाय (सामन्त) और मुल्ला पढ़-लिख सकते थे। स्त्रियोंकी अवस्था तो इस्लाम-की रुकावटोंके कारण और बुरी थी। कजाक अपने पूर्वजोंके स्वतंत्रता-संघर्षको बहुत-कुछ भूल चुके थे। अगर उनमें कोई संघर्ष होता था, तो आपसी कबीलोंका, जिसको जाग्रत रखनेके लिये जारशाही शासक पूरी कोशिश करते थे। एक प्रकारसे कजाक गहरी नींदमें सोये थे, या किस्मत-की बदनसीबी समझकर निष्क्रिय-से हो गये थे। इसी समय १९०६ ई०का अन्यायपूर्ण भूमि-संबंधी कानून जारी हुआ, और उधर १९०५-६ ई०की रूसी-क्रांतिकी प्रतिध्वनि कजाकस्तानके रूसी मूजिकों द्वारा कजाकोंमें भी पहुंची। यहां आकर बसे रूसी सरकारी अफसरों, व्यापारियों या कुलकोंको उस क्रांतिसे कोई सहानुभूति नहीं थी, लेकिन तो भी उसकी चर्चा तो होती ही थी, इसलिये रूसकी सुनी-सुनाई खबरोंने कजाकोंमें फिर कुछ चेतना पैदा की। ऊपरसे जारशाहीकी न तृप्त होनेवाली लालचने थप्पड़ लगाकर उन्हें जगानेकी कोशिश की। १९१३ ई०में सप्तनदके राज्यपाल फोलबौमने लिखा था—रूसी सरकारके प्रति कजाक गरीबोंमें शत्रुताके भाव देखे जाते हैं।

प्रथम विश्वयुद्धमें कजाकोंके ऊपर और भी संकट पैदा हुआ। उनसे बड़ी भारी संख्यामें घोड़े, ऊंट ले लिये गये, फौजोंके खानेके लिये बकरी, भेंड और दूसरे जानवरोंका मांस लाखों टन भेजा जाने लगा। अनाज भी ढो-ढो कर सेनाके खानेके लिये भेजा गया। जीवनोपयोगी सभी चीजों-का अभाव तो होना ही था, ऊपरसे जारशाही अफसरों, देशी-विदेशी व्यापारियों और जमींदारोंने चीजोंके दामको मनमानी और सट्टेबाजीसे बहुत चढ़ा दिया, जिसके कारण कजाक जन-साधारणकी अवस्था दुस्सह हो गई। फिर २५ जून १९१६ ई०को जार निकोलाइ II का उकाज़ (राजादेश) निकला, जिसके अनुसार १९ से ४३ वर्षके पुरुषोंको जबदस्ती भर्ती करके युद्ध-पंक्तियोंके पीछे काम करनेके लिये भेजा जाने लगा। कितने ही वर्षोंसे भीतर-ही-भीतर सुलगती हुई असंतोषकी आग १९१६ ई०के विद्रोहके रूपमें भड़क उठी और सप्तनद तथा तुरगाईके जिलोंमें सब जगह बगावत फैल गई। ३ अगस्तका पहलेपहल बेर्नी (आधुनिक अल्माअता) के उयेज्द (जिले)के किज़िल बुरकोव्स्की मंडलमें विद्रोह शुरू हुआ, और १० अगस्ततक वह सारे इलाकेमें फैल गया। १९१६ ई०के सितम्बरके उत्तरार्धमें तुरगाई ओब्लास्त (तहसील)में विद्रोह शुरू हुआ। इस विद्रोहका नेता एक गरीब मां-बापका लड़का अमनगेल्दी इमानोफ था, जिसने अपनी वीरता और सूझ-बूझसे विद्रोहियोंका इतना अच्छा नेतृत्व किया, कि जारशाही सरकार वर्षों तक उससे परेशान रही और केवल अपने खातमेके साथ ही उसे उससे छुट्टी मिली, यह पहिले बतला चुके हैं। १९१६ ई०के अक्तूबरमें हजारों विद्रोही जत्थे जारशाहीसे लोहा ले रहे थे, जिनमें कभी-कभी पन्द्रह हजारतक आदमी शामिल थे। उनको दबानेके लिये जेनरल लावरे-न्तेफके अधीन सैनिक अभियान भेजा गया लेकिन विद्रोह दबनेकी जगह, उस सालके नवम्बर महीनेतक सभी कजाकोंमें फैल गया, तुरगाई ओब्लास्तके पचास हजार आदमी उसमें शामिल थे। यह विद्रोह गरीबोंके विद्रोहका रूप ले चुका था, जिसके कारण कजाक धनियों और सामन्तोंको, उससे डर लगा और वह जारशाहीको विद्रोह दबानेमें पूरी तौरसे मदद करने लगे। बाइतुरसुनोफ, दुलातोफ आदि ऊपरी वर्गके कजाक-नेताओंने उस समय रूसी सरकारके प्रति अपनी क्रियात्मक राजभक्ति दिखलानेमें कोई कसर उठा नहीं रक्खी। नवम्बरके उत्तरार्धमें रूसी सेनाओंके प्रहारके कारण अमनगेल्दी इमानोफको तुरगाईसे भागकर बतपक-कराके इलाकेमें शरण लेनी

पडी, और खुली लडाईकी जगह उसने छापामारी स्वीकार की । १९१७ ई०की जनवरीमें इमानोफने फिर तुरगाईमे आकर विद्रोहको भडकाया । जनरल लावरेन्त्येफने फवरी १९१७ ई०मे वतपक-करापर चढ़ाई करके इमानोफकी शक्तिको खतम करनेका निश्चय किया, और २४ फवरीको उसने इमानोफके प्रतिरोध-केन्द्र वतपक-करापर अधिकार कर लिया। इमानोफ अपने बहुतसे सहकारियोंके साथ दश्त (स्तेपी)की ओर भाग गया। विद्रोहको दमन करनमें जारशाहीने बडी क्रूरताका परिचय दिया। सप्तनदके निवासियोंमेंसे एक-चौथाई—तीन लाख स्त्री-पुरुष—भागकर चीनके इलाकेमे चले गये, कितने ही गाव-के-गाव उजड गये। १९१६ ई०के विद्रोहको यद्यपि जारशाहीने दबा दिया, किन्तु उससे कजाकोको जो शिक्षा मिली थी, उनके मनमे जारशाहीके विरुद्ध जो घृणा पैदा हुई थी, उसने बोल्शेविक-क्रातिको मदद पहुचाई। अपने सघपमें उन्होने निम्न श्रेणियोंके रूसियोको उतना क्रूर नही पाया था । उनका नेता इमानोफ जल्दी ही समझ गया, कि अब सभी गरीबो और कमकरोकी भलाई बोल्शेविक क्रातिमें हो है । वह अन्तमे बोल्शविक पार्टीमें शामिल हो क्रातिके लिये लडा। आज अमनगेल्दी इमानोफ कजाकस्तानका सबसे बडा यशस्वी वीर है ।

फवरी-क्रातिके हो जानेके बाद १९१७ ई०की मईके अन्तमें भी तुरगाईमे अभी पूरी तरहसे शाति स्थापित नही हुई थी । अस्थायी सरकारने तुरगाई ओब्लास्तके लिये अलीखान बुकेइखानोफकी सहायतामे बहुत-से कजाक-विद्रोहियोको गिरफ्तार किया, जिनमें इमानोफ भी था । अक्तूबर क्राति सिरपर आई, जिसने सप्तनदमें भी रूसियोको क्रातिकारी और क्राति-विरोधी दो दलोमें विभक्त कर दिया। उधर बोल्शेविक सरकारने जातियोंके आत्म-निर्णयका अधिकार देकर कजाकोके हृदयमे अपने प्रति विश्वास और भक्ति भर दी, जिसके लिये १९१६ ई०के विद्रोही अब क्रातिके सिपाही बन गये । इसी समय दूतोफके नेतृत्वमें ऊपरी वर्गके कजाकोने ओरेनबुर्गमें अपनी सरकार कायम करके लोगोकी आखोमे धूल झोककर अपनी ओर करना चाहा, लेकिन उसमें उन्हे सफलता नही हुई। नवम्बर १९१७ ई०से मार्च १९१८ ई०तक क्राति और प्रतिक्रातिका सघर्प होकर अन्तमें सारा कजाकस्तान जारशाहीके अवशेषोंसे मुक्त हो गया ।

कजाकस्तान उस समय जारशाही नीतिके कारण एसियाई और यूरोपीय दो प्रकारकी जमातोंमें बटा हुआ था, इसलिये क्रातिके लिये सघर्ष भी दोनों जमातोंमें अपने-अपने तौरसे हुआ। सप्तनदके क्रातिके रूसी नेताओमे से एक ग० फेदेरोफ भी था। उसने वहाके बारेमें लिखते हुये बतलाया है, कि फवरी-क्रातिके होनेतक वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) मे सिर्फ एक तरुण सगठन था, जिसके सदस्य रूसी सरकारी अफसरो और व्यापारियो-पूजीपतियोंके लडके-लडकिया होते थे, और जिनका नेतृत्व जारभक्त अध्यापकोके हाथमें था। फवरीके बाद अल्माअताके स्कूलके विद्यार्थियोने "नौजवान विद्यार्थी सघ"के नामसे एक सगठन कायम किया । लेकिन, फवरी क्रातिके पक्षपाती जारको हटा कर भी जारशाहीकी हरएक बातको कायम रखना चाहते थे, इसलिये इस विद्यार्थी सघका काम था वनभोज, नाच-गान और पान-गोष्ठियो द्वारा मनोरजन करना—आखिर, उसके सदस्योंमेंसे ९९ फीसदी अफसरो, सेठों और कलर्कोकी सतानें ही तो थी।

३ क्राति-सघर्ष

अक्तूबर-क्रातिके होते समय यहापर क्राति-विरोधियोका बोलबाला था। वह हर तरहसे कोशिश करते, कि यहा सोवियतका प्रभाव स्थापित न होने पावे । लेकिन अब समाजवादकी बातें अल्माअतामे भी पहुचने लगी थी । मार्च-अप्रैल (१९१८ ई०) तक तरुणोंने अपने कितने ही अध्ययनचक्र तथा दूसरे सगठन कायम कर लिये। अब गृहयुद्ध साफ दिखलाई पड रहा था, इसलिये कमकरो और तरुणोके जबदस्त सगठनकी जरूरत पडी। फेदेरोफने लिखा है—एक दिन मै अपने एक साथीसे मिला । उसने इर्कुत्स्कके छपे एक समाचारपत्रको दिया। मने उसे पढकर देखा, कि साइबेरियाके तरुण क्रातिके लिये कितना काम कर रहे है। इसके बाद हमने इर्कुत्स्कके नमूनेपर तरुणोका सगठन करना शुरू किया । इस प्रकार तरुण-विद्यार्थी समाजवादी-

संघ अस्तित्वमें आया। फेदेरोफ और उसके साथियोंने जब अपने संगठनको मजबूत करके प्रचार करना शुरू किया, तो उनके एक सहकारी अध्यापकने कहा—"हम बोल्शेविकोंके साथ काम नहीं करना चाहते। लेकिन अब प्रवाहको रोका नहीं जा सकता था।" लाल सेनाकी सफलताओंकी खबरें भी क्रांति-पक्षियोंमें उत्साह और क्रांति-विरोधियोंमें निराशा पैदा कर रही थीं। फेदेरोफने एक दिन अपने क्लासमें कहा—क्रांति-विरोधी पथ सेठोंके हितका पथ है, हमको क्रांतिका पथ लेना चाहिये। इसपर अल्माअताके एक रूसी सेठके पुत्रने उसे मार डालनेकी धमकी दी। संघर्ष और ज्यादा बढ़ता गया। फेदेरोफ-जैसोंको गुप्त गुटोंका संगठन करना पड़ा। जनवरी १९१९ ई०तक अभी सप्तनदमें क्रांति-विरोधियोंका ही पल्ला भारी था, लेकिन जब ताशकन्दपर श्रम-करोंकी विजय हो गई, तो अल्माअतामें भी उसका प्रभाव बढ़ा, और वहां बोल्शेविक विद्यार्थी संघ स्थापित हुआ, जिसका निर्वाचन करनेके लिये २५ जनवरी १९१९ ई०को सौ सदस्य एकत्रित हुये।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि अक्तूबर १९१७ ई०तक अल्माअतामें कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी। मार्क्सवादी साहित्यका वहां मिलना भी मुश्किल था, और कुछ तरुण गुपचुप केवल क्रांतिके बारेमें विचार-विनिमय भर कर लिया करते थे। कजाकों और रूसियोंको इस तरह अलग-अलग रक्खा गया था कि वह एक-दूसरेके साथ अभी विचारों द्वारा भी सहयोग नहीं कर पाते थे। लेकिन, ताशकन्दमें लालझंडा गड़ जानेपर सप्तनदमें भी क्रांतिके लिये रास्ता साफ था। जून १९१९ ई०में पार्टीके संबंधमें लोगोंको शिक्षा देनेके स्तेल्माशेस्की लिये आया। इससे पहले यह लाल सेनामें राजनीतिक प्रचारका काम कर चुका था। फेदेरोफ १९१९ ई०में साइबेरियाके क्रांति-विरोधियोंके साथ लड़नेके लिये युद्धक्षेत्रमें चला गया था, लेकिन जब वह नवम्बर १९१९ ई०में वहांसे लौटा, तो उस समयतक सप्तनदके क्रांतिकारियोंने बहुत बड़ा संगठन खड़ा कर दिया था, और किसानों और मजदूरोंमें से तीन सौसे अधिक तरुण क्रांतिके प्रचारमें पूरा भाग ले रहे थे। इस संगठनका नाम "लाल समाजवादी तरुण संघ" था। इसके प्रचारक अब रूसी गावों और कजाक औलोंमें भी पहुंच चुके थे। इस समयतक काराकोल, पिशपेक (आधुनिक फ्रुंजे) और जारकेन्द आदि नगरोंमें भी संगठन हो चुका था। "यूनी कम्युनिस्त" (युवक कम्युनिस्ट) पत्र भी निकलने लगा था, जिसमें और जगहोंमें क्रांतिके लिये क्या हो रहा है, इसकी खबरें मिलने लगीं, और अल्माअता तथा सप्तनदके तरुण समझने लगे थे, हम अकेले नहीं हैं, क्रांति सब जगह सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। इसके कारण लोगोंमें उत्साह बढ़ना जरूरी था। दिसम्बर १९१९ ई०में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें रूसी और कजाक दोनों जातियोंके तरुण रायन (जिले) के भिन्न-भिन्न भागोंसे आकर शामिल हुये। इसीमें ताशकन्दमें होनेवाली तुर्किस्तान-प्रदेश-तरुण-कम्युनिस्ट कांग्रेसके लिये प्रतिनिधि चुने गये। प्रदेश कमेटीके अब्दुरहमानोफ, जीय-कुलोफ जैसे कजाक तरुण भी मेम्बर चुने गये। कजाकों और रूसियोंके बीचमें खड़ी की गई दीवार ढह गई थी, इसलिये दोनों एक होकर काम करने लगे। यसमोफ, खुदायफ, बेन्धुकोफ, यार मुहम्मदोफ, इसायेफ-जैसे तरुण कजाक आगे बढ़े। उस समय लेनिनग्राद और मास्कोमें गृहयुद्धके कारण खाद्यका अकाल पड़ा हुआ था, जिसमें सहायता देनेके लिये तरुणोंने अन्न जमा करना शुरू किया। पिशपेककी तरुण कम्युनिस्ट कमेटीने अपने कार्यालयकी छतको अन्नसे भर दिया था।

अप्रैल १९२० ई०के अन्तमें प्रथम सप्तनद तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस हुई, जिसमें अल्माअता, पिशपेक, फ्रुंजे, जारकेन्द और काराकुलके प्रतिनिधि शामिल हुये। इन प्रतिनिधियोंमें दस कजाक थे। एक सालके भीतर ही दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें सभी तहसीलों तथा बहुतसे औलोंके भी एक सौ पचास तरुण शामिल हुये।

अल्माअताके अतिरिक्त कजाक भूमिमें किजिलओर्दा (भूतपूर्व पेरोव्स्की), कजालिन, तुर्किस्तान शहर, औलियाअता आदिमें क्रांतिके पक्षपातियोंने सबसे पहले अपने संगठन मजबूत किये। १९१८ ई०में ताशकन्दमें जो कांग्रेस हुई थी, उसमें किजिलओर्दाके तीन प्रतिनिधि शामिल हुये थे। १९१८ ई०में यहांके अधिकांश पार्टी-मेम्बर बन्दूकें लेकर युद्धक्षेत्रमें क्रांति-विरोधियोंसे लड़ने चले

गये थे। १९१८ ई०के अन्ततक किजिलओर्दाकी पार्टीमें चार सौ मेम्बर थे, जिनमें दो सो रूसी और दो सौ कजाक थे। राजनीतिक जागृतिके साथ-साथ कजाकोंमें पढ़नेके लिये ज्यादा उत्साह होना स्वाभाविक था, जिसके लिये कजाक भाषामें पुस्तकें और पत्र छापे जाने लगे।

कजालिनमें बोल्शेविकोंका पहला सगठन जून १९१८ ई०में हुआ। यहांके लोगोंको भी क्रांति विरोधियोंके साथ लड़कर अपनी निष्ठाका परिचय देना पड़ा।

तुर्किस्तान शहरमें नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीका सगठन पहलेपहल अप्रैल १९१८ ई०में हुआ, और औलियाअतामें वह उसी सालके अगस्तमें। औलियाअताकी पार्टीमें सालके अन्ततक एक हजार कजाक मेम्बर थे। वामपक्षी क्रांतिकारी समाजवादी पहले पार्टीके साथ सहयोग देते रहे, लेकिन पीछे उन्होंने विरोध शुरू कर दिया, और इस प्रकार वह क्रांतिसे भी दूर हो गये।

अल्माअताके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। तरुणोंके सगठनके बाद जनवरी १९१८ ई०में वहां पार्टीका सगठन हुआ। अगस्तमें कराकुल, जुलाईमें जारकेन्दमें भी सगठन हुये।

४ सोवियत-शासनकी स्थापना

१९१८ ई०में मध्य-एसियामें सोवियतका शासन स्थापित हो चुका था, और उसी सालके अप्रैल में ताशकन्दमें प्रदेश-सोवियतोंका सम्मेलन हुआ। इसीमें तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत गणराज्य का निर्माण हुआ, जिसमें अल्माअता, औलियाअता (जम्बुल), दक्षिण-कजाकस्तान, और किजिल ओर्दाके जिलोंको मिलाकर कजाक-सोवियत-समाजवादी-गणराज्यकी स्थापना हुई, और कजाक भाषाको गणराज्यकी मुख्य भाषाके तौरपर स्वीकार किया गया। वसन्त १९१८ ई०से १९१९ ई०की समाप्तितक कजाकस्तानमें भीषण गृहयुद्ध होता रहा। क्रांति-विरोधी रूसी और कजाक दोनों ही तरुण सोवियत सरकारको उखाड़ फेंकनेके लिये हर तरहकी कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनका सघर्ष जितना ही सख्त होता गया, उतना ही रूसी सर्वहारोंका कजाक सर्वहारोंसे भ्रातृभाव दृढ होता गया, और रूसी क्रांतिकारियोंने अपने आचरणसे दिखला दिया, कि सर्वहाराके राज्यमें काले-गोरेका कोई भेद नहीं है। गृहयुद्धके समय १९१८ ई०की जुलाईके आरम्भमें कई भागोंको क्रांति-विरोधियोंने छीन लिया था, तो भी अल्माअता, जम्बुल, दक्षिण-कजाकस्तान, किजिलओर्दा, अक्त्युबिन्स्कके जिले सोवियत शासनमें रहे। १९१९ ई०में क्रांति-विरोधी जेनरल कोलचेकसे आखिरी लड़ाई हुई, जिसमें कजाकस्तानके क्रांतिकारियोंने पूरी तौरसे भाग लिया। कोलचेकके हारनेके बाद ४ अप्रैल १९१९ ई०को कजाकस्तानकी सोवियतोंकी कांग्रेस हुई, जिसमें किर्गिजोंके बारेमें भी विचार करके किर्गिज क्रांतिकारी कमेटी सगठित की गई। अभीतक किर्गिज और कजाक दोनों एक ही गणराज्यमें थे, बल्कि यह कहना चाहिये, कि मध्य-एसिया-की सभी जातियां अभी एक तुर्किस्तान स्वायत्त गणराज्यमें मानी जाती थीं। लेकिन आगे जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार किर्गिजोंको भी अपने स्वतंत्र गणराज्यके कायम करनेका अवसर मिला। बोल्शेविक-क्रांतिने सोवियत सघके क्षेत्रफलमें दूसरे नबरके सबसे बड़े गणराज्य कजाकस्तानको स्थापित किया। अनेक पचवर्षीय योजनाओंने कजाकोंके आर्थिक और सांस्कृतिक तलको बहुत ऊंचा कर दिया। र्तिश नदीके जलको ध्रुवीय समुद्रसे हटाकर दक्षिणकी ओर मोड़नेकी जो विशाल योजना बनाई जा रही है, उसके कारण तो मनुष्य अपनी महान शक्तिका उपयोग करके इस भूमिको एक-दूसरा ही रूप देने जा रहा है।

स्रोत-ग्रंथ

१ History of Civil War in U S S R (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
३ रेवोल्युत्सिया व स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द, १९२९)
४ द्वादत्सत् लेत् कजाखस्ताना (लेनिनग्राद १९४०, पृष्ठ ७–१५)

अध्याय ४

किर्गिजिस्तानमें क्रांति

१. किर्गिज

किर्गिजिस्तान मध्य-एसियाके सबसे ऊचे पहाडो त्यानशान्का देश है। यहींपर सात हजार मीतरसे भी अधिक ऊचे लेनिन्स्क और खानतिंगरीके सनातन हिमाच्छादित पर्वतशिखर हैं। इसकी कितनी ही हिमानिया ८० किलोमीतर (६० मीलसे ऊपर) लम्बी है, और मध्य-एसियाकी सबसे बडी नदिया सिर-दरिया, आमू-दरिया (वक्षु), चू, तलस और जरफशा यहींसे निकलती है। हमारे यहाके हिमालयके सबसे अधिक सुन्दर दृश्य यहा देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक सौंदर्यके अतिरिक्त किर्गिजिस्तान (किर्गिजिया)मे कोयला, पेट्रोल, रागा, सुरमा, सोना, चादी आदि धातुओंकी बडी-बडी खानें हैं। चू-उपत्यका, फरगाना, तलस-उपत्यका और इस्सिक्कुलकी द्रोणी-जैसी खेती और बागवानीके लिये बहुत ही उर्वर भूमि यहापर मौजूद है। प्रकृतिने इतना समृद्ध इस भूमिको बनाया था, लेकिन यहाके निवासी किर्गिज बोल्शेविक-क्रांतिसे पहले मध्य-एसियाकी सबसे पिछडी हुई जातियोंमेंसे थे, और घुमन्तू तथा अर्ध-घुमन्तू रहते अपने भेड-बकरियो तथा घोडो-ऊटोंको लिये जगह-जगह चराते फिरना ही उनकी जीविकाका साधन रखते थे। जारशाही शासन यद्यपि १९वीं शताब्दीके उत्तरार्धके शुरू हीमें स्थापित हो गया था, लेकिन उसने यहाके लोगोंको चूसना छोड और कोई काम नहीं किया।

किर्गिज साइबेरियासे मध्य-एसियामें सबसे पीछे आनेवाली जातियोंमेंसे है। घुमन्तू होनेकी वजहसे उनके लिये पूर्वमे इर्तिश और पश्चिममें वोल्गाको भी अपनी विचरणभूमि बनाना कोई मुश्किल नहीं था। लेकिन मूलत यह अल्ताईके उत्तर-पूर्वके रहनेवाले थे जहापर उनके भाई-बन्द खकाश अब भी रहते है। अलाताउ १७१६-१९ ई०में ओब और इर्तिशके बीचकी भूमिके रूसके हाथमें चले जानेके समय इनको अपनी मूलभूमिसे हटना पडा, नहीं तो पन्द्रह सौ मीलतक साइबेरियाकी दक्षिणी सीमा किर्गिजोकी भूमिसे मिलती थी। घुमन्तू किर्गिज लूट-मार किया करते थे, जिसके कारण रूसी बस्तियोंको खतरा रहता था, इसलिये रूसियोंने इन्हें तितर-बितर करना आवश्यक समझा। किर्गिजोंकी परम्पराके अनुसार इनके किसी पौराणिक खान अलशने इन्हे तीन ओर्दुओंमें बाटा था, जिनमें महा-ओर्दू बल्काश महासरोवरके आसपास सप्तनद और चीनी तुर्किस्तानमें घूमा करता था, मध्यओर्दू अरालके उत्तर-पूर्वी तटपर और लघु-ओर्दू तोबोल नदी और अरालके बीचमें पशुचारण करता था। रानी अन्ना (१७३०-४० ई०)के शासनकालमें मध्य- लघु-ओर्दूका महा-ओर्दूके साथ-झगडा हुआ। बाकी दोनों ओर्दुओंने महा-ओर्दूसे अपनी रक्षाके लिये १७३२ ई०में रूससे अधीनताके लिये प्रार्थना की। इससे बढकर जारशाहीके लिये और अवसर क्या मिलता? ओरेनबुर्गका व्यापारिक नगर इस वक्ततक स्थापित हो चुका था। मध्य और लघु-ओर्दूके हाथमें आ जानेपर साम्राज्यके बढानेमें बडी सहायता मिली, और इसके बाद मध्य-एसिया और ईरानकी सीमातक पहुचना रूसके लिये आसान हो गया। १८२२ ई०के राजादेशके अनुसार किर्गिज लघु-ओर्दूको ओरेनबुर्गकी सरकारमें डाल दिया गया, और मध्य-ओर्दू या पश्चिमी किर्गिजोंकी भूमिको पश्चिमी साइबेरियाके प्रदेशमे। किर्गिजोको रूसका बल मिलनेसे, अब वह बुखारा, खीवा या खोकन्दकी पर्वाह नहीं करते थे, और उनके कारवाको लूटा करते थे। यही नहीं, वह रूसी कारवाको भी लूटनेसे बाज नही आते थे। इसके लिये रूसको कई

सैनिक गढ़िया बनानी पड़ीं। किर्गिज रूसियोंको लूटते तो दक्षिणवाले खान उनकी सहायता करते और खानोंसे झगड़ा होनेपर वह रूसकी शरण लेते। वह रूसी नर-नारियोंको भी गुलाम बना कर मध्य-एसियाके बाज़ारोंमें बेच दिया करते थे।

किर्गिज जातिका निर्माण--किर्गिजोंका ऐतिहासिक विकास—निम्न प्रकार हुआ

काल		ख्वानशान	पामीर
ई०पू० २५००		शक	आर्य
″ १५००		शक	सोग्दी
″ ७००		शक	सोग्दी
″ ५५०		शक	सोग्दी
″ २०६		शक	सोग्दी
″ १३०		शक-हूण	सोग्दी
ईसवी १००		हूण-शक	सोग्दी
″ ५५७	तुर्क	तुर्क	सोग्दी
″ ६७३	अरब	तुर्क	ताजिक
″ ८९२		तुर्क	″
″ १२२०		तुर्क	″
″ १५००		किर्गिज	″
″ १७८७		किर्गिज	किर्गिज-ताजिक
″ १८६५		किर्गिज-रूसी	किर्गिज-ताजिक
″ १९१७		किर्गिज	किर्गिज ईरा०
″ १९४७		किर्गिज	

२ १९१६ ई०का विद्रोह

वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमें कई जगह बिखरे हुये किर्गिज कजाकोंमें मिल गये, बाकी भी बोल्शेविक-क्रांतिके बाद कितने ही दिनोंतक कजाकोंमें सम्मिलित थे। जब पता लगा, कि किर्गिजों की संस्कृतिमें कुछ अपनी विशेषताएं हैं, इस पर जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार उनका गणराज्य बना। १९१६ ई०में कजाकोंमें भी जबर्दस्त विद्रोह हुआ था, लेकिन किर्गिजोंका विद्रोह उनसे भी बढ़ा हुआ था, जिसके कारण पहले जहां जारशाहीको बहुत क्षति उठानी पड़ी, वहां बादमें किर्गिजोंको भी जारशाहीके भयंकर अत्याचारोंका सामना करना पड़ा।

विद्रोहके कारण--एसियामें अपने राज्यका विस्तार अंग्रेजों और रूसियों दोनोंने किया लेकिन दोनोंके ढंगोंमें अन्तर था। अंग्रेज हिन्दुस्तानसे बहुत दूरके वासी थे, वह अपनी जन्मभूमिसे समुद्रके रास्ते ही संबंध स्थापित रख सकते थे। पर, एसियासे रूसकी भूमि मिली हुई है। रूसी झंडेके आगे बढ़नेके साथ-साथ जहां रूसी सैनिक-असैनिक अफसर, व्यापारी और जमींदार आगे बढ़कर अच्छे-अच्छे पदों और भूमिपर अधिकार करते थे, वहां रूसी किसान और मजदूर भी अपने अपने गांव बसानेमें लग जाते थे। यह रूसी गांव आत्मरक्षाके लिये रूसकी सेनाका एक अंग बने हुये थे। रूसी अफसर अपने किसानों-मजदूरोंका सब तरहसे विशेष ख्याल रखते थे, और स्थानीय लोगोंकी उपयुक्त जमीनको किसी-न-किसी बहाने छीनकर रूसियोंको दे देते थे। १८७८ ई०में पहिले पहिल सप्तनद और पासकी भूमि (पिशपेक, औलियाअता, चिमकेन्द आदि जिलों)में रूसियोंके गांव बसने शुरू हुये, जो तेजीके साथ आगे बढ़ते स्थानीय लोगोंकी पैतृक-भूमियोंपर हाथ साफ करते रहे। वर्तमान शताब्दीमें १९१५ ई०तक १८ लाख एकड़ (७१२०८९ हेक्तर) भूमि केवल पिशपेकके जिलेमें किर्गिजोंके हाथसे छिन गई। उसी साल किर्गिजोंवाले फरगानाके इलाकेमें ८०००० हेक्तर जमीन छीनकर रूसी किसानोंको दे दी गई। पर इतनेसे भी संतोष नहीं हुआ, और

९ जुलाई(२५ जून) १९१६ ई०को (प्रथम विश्वयुद्धके समय) जारने जलेपर नमक छिडकते हुए एक राजादेश निकाला, जिसके अनुसार किर्गिजो और दूसरी एसियाई जातियोको जबर्दस्ती सैनिक सेनाके पीछे काम करनेके लिये भर्ती किया जाने लगा। किर्गिजोने कौन-सा सुख जारशाही शासनमें पाया था, कि वह सेनाके पीछे कुलीका काम करनेके लिये अपनी जन्मभूमि छोड दूर देशमें जाते? उन्हे यह भी क्या विश्वास था, कि वहा जाकर कुलीका काम करना पडेगा या सिपाही बनकर मरना पडेगा। इस राजादेशके निकलनेपर मध्य-एसियाकी सभी जातियोमे तहलका मच गया। किर्गिज सबसे ज्यादा शोषित, थे क्योकि ये सबसे पिछडे हुये घुमन्तू पशुपाल थे, लेकिन जारने इनके मनापों (सरदारो)को अपने हाथमे कर रक्खा था। धनी मनाप जारशाही-का विरोध करके पहले देख चुके थे, कि इससे वह रूसके जूयेको हटा नही सकते। इस समय सारा तुर्किस्तान एक रूसी प्रदेश था जिसमें त्यानशान्के पहाडो—सप्तनदमे ताशकन्द लेते अराल समुद्र तकके इलाके भी सम्मिलित थे। तुर्किस्तानका महाराज्यपाल करोपत्किन था और सेना अध्यक्ष फोलबौम वेर्नी (अलमाअता)का सैनिक सेनापति था।

राजादेश निकलते ही लोगोने उसके प्रतिरोधके बारेमें सोचना शुरू किया। ११ (२४) जुलाईको जारकेन्तके किर्गिजों और कजाकोने इसके प्रतिरोधके लिये अपनी सभाये की। किर्गिजो-कजाकोंके भीतर दुगान (चीनी मुसलमान) भी रहते थे, जो अधिकतर धनी बनिये और महाजन थे। किर्गिजो-कजाकोंमें अशातिके लक्षणको देखकर सबसे पहले २६ (१३) जुलाईको उन्होने चीनी इलाकेकी ओर भागना शुरू किया। ५ अगस्त (३० जुलाई)को पिशपेक जिलेके किर्गिजों-ने विरोध-प्रदर्शन किया।

६ (१९) अगस्तको पिशपेक जिलेके अतेकिन इलाकेमे किर्गिजोने पहले पहल सशस्त्र विद्रोह आरम्भ किया। उसी दिन बतबयेफ इलाकेके किर्गिजोने भी विद्रोह कर दिया।

७ (२०) अगस्तको तोकमकके किर्गिजोने हथियार उठाया, उसी दिन सरीबागिसेफ इलाके-वालोंने भी विद्रोहका झडा फहरा दिया।

९ (२२) अगस्तको कराकेचिन, जम्बल्, उरमान जोजिन, पोचकर, आबेलदिनके इलाकोमें विद्रोह फैल गया।

१० (२३) अगस्तको पिशपेक जिलेके बेलोवद्स्क इलाकेके किर्गिज विद्रोही हुये। उसी दिन जमानसरतोफ, तलेउबेर्दिन, बाकिन, तलदीबुलाकके इलाकोमें बगावत हो गई, और औलिया-अताके करालतिन इलाकेके किर्गिज भी विद्रोहमें शामिल हो गये।

११ (२४) अगस्तको प्रझेवाल्स्क जिलेके मारिन्स्क गावके दुगान (चीनी, मुसलमान) भी विद्रोहमें शामिल हुये।

१२ (२५) अगस्तको प्रझेवाल्स्कके जेलखानेमे बदियोपर रूसियोने गोली चलाई, जिसमें उनसठ किर्गिज मारे गये और बहुतसे घायल हुये।

१३ (२६) अगस्तको तोकमकमें किर्गिजोंपर रूसी सेनाने प्रहार किया, उसी दिन बेलोवद्स्कमें भी विद्रोहियोंको सैनिकोंने दबानेका प्रयत्न किया, और १३८ किर्गिज मारे गये।

१४ (२७) अगस्तको किर्गिजोंने तोकमकको घेर लिया।

२२ अगस्त (४ सितम्बर) को रूसियोंने तोकमकमें किर्गिजोंपर प्रहार करके उन्हे तितर-बितर कर दिया।

१६(२९) अक्तूबरतक रूसी विद्रोहपर काबू पा सके।

इस विद्रोहमें किर्गिजोंके मनाप (धनी) अधिकतर जारशाहीके साथ रहे और सबसे ज्यादा आगे किर्गिज जनसाधारण थे। कितना भीषण जनसहार हुआ, यह इसीसे मालूम होगा, कि विद्रोहसे पहले जहा ६२३४० किर्गिज रहते थे, उसी जगह जनवरी १९१७ ई०में उनकी सख्या २०३६५ रह गई, अर्थात् ४१९७५ आदमी मारे गये, कितने ही जगहोंपर ६६% किर्गिज मारे गये। इस अत्याचारके मारे यदि बहुत भारी सख्यामें किर्गिज भागकर चीनी इलाकेमें चले गये, तो इसमें आश्चर्य क्या? कुरोपत्किनने इस मौकेसे फायदा उठाते हुये चाहा था, कि किर्गिजोंकी छोडी भूमिमें

रूसियोंको बसा दिया जाय। लेकिन, किर्गिजोंके विद्रोहको दबाते देर नही हुई, कि जारशाही ही खतम हो गई। यद्यपि उसका स्थान लेनेवाली पूजीपतियोंकी करेन्स्की-सरकारने पुरानी नीतिको जारी रखना चाहा, लेकिन उसे भी सात महीनेके भीतर ही खतम हो जाना पड़ा।

जैसा कि अभी बतलाया, उस समय किर्गिज कजाकोंसे अलग नही समझे जाते थे, और सप्तनद तथा सिर-उपत्यकाके कजाकोंकी तरह किर्गिज भी तुर्किस्तान-प्रदेशके माने जाते थे। इसलिये विद्रोहके बाद जो घटनायें घटी और स्थितियोंमें जिस तरह परिवतन हुआ, वह वही था, जो कजाकस्तान-उज्बेकिस्तानमें हुआ। जब बोल्शेविक-क्रातिने किर्गिज भूमिमें कदम रक्खा, उस समय वहाके किर्गिज धनी पहले हीसे धनी रूसियोंके समर्थक हो चुके थे।

किर्गिज शिक्षा और संस्कृतिमें बहुत पिछड़े हुये थे, जिसके कारण राजनीतिक तौरसे भी उनका पिछड़ा होना स्वाभाविक था। इनकी भूमिमें ओश, उज्गेंद, पिशपेक, प्रभेवाल्स्क जैसे कुछ नगर थे, लेकिन वहांपर भी किर्गिजोकी अपेक्षा दूसरोकी सख्या या प्रभाव अधिक था। ताशकन्दमें बोल्शेविकोंके आ जानेके बाद किर्गिज भूमिके कस्बोंमें भी क्राति फैलने लगी। यहाके रूसियोंमें अधिकतर मेन्शेविक और एस् एर् (समाजवादी क्रातिकारी) ही जारशाहीके विरोधी थे, और वह पुराने आर्थिक ढाचेमें नाममात्रका परिवर्तन करना चाहते थे, तथा एसियाइयोंको समानताका अधिकार देनेके पक्षपाती नही थे। ओशमें दिसम्बर १९१७ ई०में दो सौसे अधिक एस् एर के सदस्य थे, जब कि बोल्शेविकोको अगुलियोंपर गिना जा सकता था। पिशपेक (आधुनिक किर्गिज-राजधानी फुजे) में मार्च १९१८ ई०में अब भी एस् एर् का प्रभाव था। लेकिन जब बोल्शेविकोंके उद्देश्यका पता लगा, तो गरीब किर्गिजोंने बडी तेजीके साथ आगे बढ़कर उनका साथ देना शुरू किया। वह देखते थे, कि बोल्शेविक दिलसे और व्यवहारसे भी समानताके पक्षपाती हैं, सचमुच वह गरीबोंके राज्यको कायम करना चाहते हैं। क्राति सफल हुई। आगे १९२६ ई०में किर्गिजोकी भूमिका अलग स्वायत्त गणराज्य कायम हुआ, जिसे १९३६ ई०में स्वतत्र गणराज्यके तौरपर सोवियत सघका अग बननेका मौका मिला।

किर्गिजिस्तानका क्षेत्रफल ७८००० वर्गमील तथा जनसख्या इस वक्त पन्द्रह लाखसे ऊपर है। आज वह मध्य-एसियाकी सबसे पिछडी जाति नहीं है, बल्कि रूसियोंकी तरह आगे बढी हुई जाति है।

स्रोत-ग्रथ

१ रेवोल्युत्सिया व्स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
२ किर्गिजिया (व वित्कोविच, १९३८)
३ वोस्तानिये १९१६ गदा व् किर्गिजिस्ताने (ल व लेस्नोइ, मास्को १९३७)
४ किर्गिजिया (त्रुदी पेर्वोइ कान्फ्रेन्त्सिइ, लेनिनग्राद १९३४)
५ तुर्केस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक्रुग् (जिल्द १, पृष्ठ ३३८-५१)
६ तेमिर (उपन्यास, तो तुर्गेलबाइ सिदिकबेकोफ अनु० व रोझ्देस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
७ History of civil war in U S S R (2 vol, G F Alexandrov and others, Moscow 1946)

अध्याय ५

ताजिकिस्तानमें क्रांति

१ सोग्दियोंके वंशज

हम देख चुके हैं, कि किसी समय सिर-दरियासे वक्षु-दरियातक, पामीरसे कास्पियन तटतक सोग्द और ख्वारेज्मकी ईरानी जातिया बसती थी, जिनके समयमें यहाका सामाजिक और सास्कृतिक विकास बहुत हुआ। ईसाकी पाचवी सदीतक यद्यपि शक और हेफ्ताल-जैसी जातिया बाहरसे आकर इस भूमिमें बसती गई, किन्तु वह हिन्दी-यूरोपीय जातिकी होनेकी वजहसे इनके भीतर आसानीसे घुल-मिल गई और पुरानी सांस्कृतिक परम्पराके आगे चलते रहनेमें बाधक नहीं हुई। छठी शताब्दीमें तुर्क मंगोलायित भाषा और मुखमुद्रा लिये यहा आये, जिन्होने भी यद्यपि मुखमुद्रामें कुछ परिवर्तन किया, लेकिन सास्कृतिक तौरसे बहुत भेद नही पैदा किया। ७वी सदीका अन्त होते-होते अरब इस भूमिमें छा गये, और कुछ ही समयमें यहाके सभी लोग मुसलमान हो गये। लेकिन पुराने सोग्दियोंने अपने संघर्षको जारी रक्खा, इसका परिणाम यह हुआ, कि अरब-शासकों और उनके अनुचर खुरासानी मुसलमानोने सोग्दी वीरो और उनकी भाषाको दुर्गम पहाडोमें शरण लेनेके लिये मजबूर किया। १९वी सदीसे बहुत पहले ही पुराने अन्तर्वेदकी भाषा तुर्की हो गई, केवल शहरो और कुछ गावोंके रहनेवाले सर्त या ताजिक ईरानी भाषा बोलते थे, लेकिन यह ईरानी भाषा सोग्दी नही, बल्कि खुरासानी मुसलमानोंके साथ आई उनकी फारसी थी। पहाडोमें भाग गये सोग्दियोंके पीछे एकके बाद एक दूसरे भी फारसीभाषी शरणार्थी आते रहे, जिनके कारण धीरे-धीरे सोग्दी भाषाका स्थान वहा भी फारसीकी स्थानीय बोली ताजिकी लेती गई। आज तो पुरानी सोग्दी भाषाकी बोली गलचा या यग्नावी केवल जरफ्शाकी एक शाखा यग्नाब नदीके किनारेके कुछ थोड़ेसे गांवोमें रह गई है। वहापर भी ताजिकी भाषा कितनी घुस गई है, यह १९३४ई०के वहाके गावोंके आकडोंसे मालूम होगा —

ग्राम	यग्नावी	ताजिक
नवाबाद	१५१८	६३४
यग्नाब	६४०	१७७०
दोनो गावोंमें	२१५८	२४०४

इस प्रकार पुराने सोग्दियोंकी भाषा और उनके प्राचीन समाजके कुछ अवशेष वर्तमान ताजिकिस्तान गणराज्यमें जरफ्शा नदीकी शाखा यग्नाब और बरजावके किनारेके कुछ गावोमें अब मौजूद हैं। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद इन प्राचीन सास्कृतिक अवशेषोंके जांच-पडतालकी काफी कोशिश की गई। रूसी वैज्ञानिकोने वहापर प्राचीन सघवादी पारिवारिक जीवनके चिह्न पाये। कितने ही गावोंमें कई परिवारोंके रहने लायक एक-एक घर उन्हें मिले, जिनकी बडी-बडी शालायें केवल यग्नाबियोंमें ही मिलती। कोकतेपा, जूमान, गराव, आबेसफेद-जैसे कितने ही गावोंको उन्होंने देखा। देहबुलन्द ऊपरी यग्नाबमें सामूहिक परिवारोंका आलाखाना और मेहमानखाना इस बातका प्रमाण था।

यग्नावी भाषा—यग्नाबी भाषाको कोई-कोई ईरानी और भारतीय आयभाषा-वशोंसे अलग बतलाते हैं, लेकिन यह बात सही नहीं मालूम होती। वस्तुत सोग्दीकी पुत्री यग्नाबी ताजिकी और पारसीसे कितनी ही बातोमें अन्तर रखते भी ईरानी-भाषावशकी ही है। सोवियतके भाषा-शास्त्रियोने यग्नावी भाषाके बहुतसे नमूने कहानियो आदिके रूपमें जमा किये है। बाइस वर्षीय इब्राहिम सफर

द्वारा कही गई एक जनकथाका कुछ अंश हम यहाँपर देते हैं। गाँवके 'मेहमानखाने' (सामूहिक घर) में जमा हो ऐसी कहानियोंके कहनेका यग्नाबियोंमें बहुत रवाज है* —

इकम्पिरओइ । ईकल ज़ूतश् ओइ । के ई मेत् कलि व अवोफ—"अने दाँदो-त् बिसियार पैदागर खोइ। यक् तग अवारिश्त् सत् तगा अकुन अउर।" के कल् यक् तगा अनोस् अनीज अतेर अशौ इयो कइ इ मूसफेदे तीरक अस्त् खरे वोरा ई वुज चि खरे दुम् बस्तगी। कल् ऑस्ताक् अशौ वीत पक्क अकुन् वूजे अनोस् अवोउ वूजे अउर कोये अखश्। तिक् अमोन अतेर अशौ मूसफेदे अवियोर *अवोय ये बॉबो वीत जाम् कुन्।* अख् अगोर अवोव अने वीत-म् ई वुज ओइ वुज् नख। खरे अवोव् इगुम् चक् दॉर मन सोउम वूजे कोवॉम्। कल अवोय बॉबो दर वॉउ खरे लॉइ खस्ते। मूसफेद अतेर। कल खरे गूश दुम श पक्क अकुन् अवार ई कोये अखश गूश दुम्-श अउर लोइ नुत् अनीदोन् के अवोव ए बॉबॉ वॉऊ खरे लोइ अखश्।

(एक बुढ़िया थी। उसका एक दुष्ट लड़का था। एक दिन उसने अपने दुष्ट लड़केको कहा—"तेरा बाप बहुत पैदा करनेवाला था। एक तगा ले जाता और अभी सौ तगा ले आता।" फिर दुष्ट लड़का एक तगा लेकर बाहर गया। एक जगह एक गदहेके ऊपर सवार एक श्वेतकेश (बूढ़े) को आते देखा, गदहेकी दुममें एक बकरी बंधी हुई थी। दुष्ट लड़का आहिस्तेसे गया, और रस्सीको काटकर बकरीको ले गया। पीछे बूढ़ेको आकर कहा—"हे बाबा, रस्सी समेट लो।" उसने देखकर कहा—"मेरी रस्सीमें बकरी थी, किन्तु बकरी नहीं है।" दुष्ट लड़केने कहा—"जल्दी जाओ बाबा ।" बूढ़ा चला गया। दुष्ट लड़केने गदहेके दुम और कानको काट लिये। फिर आकर उसने बूढ़ेसे कहा—"हे बाबा, चलो, गदहा कीचड़में फँस रहा है।" बूढ़ा चला गया।)

इस भाषाको देखनेसे मालूम होगा, कि फारसी समझनेवालेके लिये भी इसका समझना मुश्किल है। एकके लिये यहाँ ई और थीके लिये आई शब्दका प्रयोग हुआ है। दिनके लिये मेत्का शब्द पुरानी सोग्दीमें 'मुद' था, जिसका फारसीमें कहीं पता नहीं। इसी प्रकार गदहेकी पूछके लिये दुमे-खरकी जगह खरे दुम (खर-पुच्छ) आया है। हिन्दीकी समीपता देखनेके लिये यग्नाबी भाषाके गरीब ताजिक "करके" (करके) रोइ्-के (रोकर) शब्दोंको भी देखें। †

बुखारा और खोकन्दके पिछले इतिहासके बारेमें लिखते हुये हम बतला चुके हैं, कि ताजिकिस्तानका पहाड़ी प्रदेश कभी अलग-अलग छोटे-छोटे सामन्तोंके स्वतंत्र राज्योंमें बटा रहता और कभी उसे खोकन्दके मदली खान-जैसे बाहरी शासकोंके अधीन बनना पड़ता। यह पहाड़ी इलाका अपनी खनिज और दूसरी सम्पत्तियोंको रखते हुये भी उस समय बहुत गरीब था। यहाँके लोग सुन्नी मुसलमान थे, इसलिये उनके लड़के लड़कियोंको गुलाम बनाकर बेंचा नहीं जा सकता था। तो भी अपने सौंदर्यके लिये प्रसिद्ध यहाँकी लड़कियोंकी अमीर और उसके सामन्तों के हरमोंमें बड़ी माँग थी। यहाँके पुरुष मजदूरी करनेके लिये बुखारा, समरकन्द, खोकन्द आदि शहरोंमें चले जाते। पुरुष जब वर्षोंके वास्ते रोटीके लिये धक्का खाने चले जाते, तो उनकी स्त्रियाँ बेचारी घर और खेतीको सँभाले बाट जोहा करतीं। इस समयकी अवस्थाका वर्णन बहुतसे लोकगीतोंमें पाया जाता है। एक लोकगीतमें कहा गया है —

बुलबुल बागमें रोती हुई आई,
गुलाबकी सूखी डालीपर जाकर बैठी।
बुलबुल अपने मुँहसे बोली—
"यह वियोगका घाव कितनोंके दिलपर है।"

× × ×

*"भूदि ताजिकिस्तास्कोइ श्राजा", इस्तोरिया-यज़ीक लितेरातुरा (अकदमी नाउक ससमर १९४० मस्क्वा)

† कितनी ही बातोंमें फारसी या ताजिकीसे विलक्षण है, यह उसके गाउ (गाय) कुतर (कुत्ता) और ओर्ता (आटा) शब्द भी बतलाते हैं।

जगत्‌के कर्ता तेरी विचित्र महिमा,
तेरे बन्दे सोये और तू खुद जागा।
अमृत-भोजन दुनियाके सामने फेंककर,
चुगने और जानेका तू तमाशा देखता,

× × ×

अपने सफेदेके लिये अपनी हरनीको खोया,
लोगोंके द्वारपर अपनेको फेंका।
लोग कहते कि तू दीवाना हुआ,
दीवाना हूं, क्योंकि मैंने अपनी प्रियाको खोया।

× × ×

हे पथिक, किसीके साथ मैं नहीं हंसी,
न केश धोया न कुर्ता पहना।
बहुतेरे कारवां आये, पूछनेपर
उन्होंने कहा— "मैंने न देखा न जाना।"

इसी अवस्थामें ताजिकिस्तानके पहाड़ी लोग अमीर-बुखाराके पूर्वी इलाके (पूर्वी बुखारा) में रह रहे थे, जब कि बोल्शेविक-क्रांति हुई।

ताजिकिस्तान भाषाके तौरपर पुराने सोग्दियोंकी विस्तृत भूमिका अवशेषमात्र है, जिसके दक्षिणी सीमांत वक्षु नदी और उत्तरी टेढा-मेढा होता सिर-दरियाके उत्तरतक पहुंच गया है। आजकल इसका क्षेत्रफल पचपन हजार वर्गमील और जन-संख्या पन्द्रह लाख है। ताजिक भाषा-भाषियोंकी बस्तियां वैसे वक्षुसे बहुत दक्षिण काबुल नगरके पासतक चली आई हैं, लेकिन अभी अफगानिस्तानमें रहनेवाले ताजिक उतने सौभाग्यशाली नहीं हैं, जितने कि क्रांतिकी अग्निमें तपकर निकले उत्तरी ताजिक। मध्य-एसियाकी और किसी जातिको क्रांतिके समय नरपिशाच बासमचियों की निष्ठुरताका उतना शिकार नहीं होना पड़ा, जितना कि कश्मीरके उत्तरी-पूर्वी सीमान्तके पासके इन पहाड़ियोंको।

ताजिक जातिका निर्माण—ताजिकोंका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ—

काल		पामीर	सिर-उपत्यका
ई० पू०	४००० (मध्य-पाषाण)		फिनो-द्रविड
"	३५००		शकार्य-द्रविड
"	३००० (नव-पाषाण)		"
"	२५००	आर्य	शक
"	१५०० (पित्तल-युग)	ईरानी	श०
"	७००	ईरा०	श०
"	५५०	ईरा०	श०
"	३२६	ईरा०	श०
"	२०६	ईरा०	श०
"	१३०	ईरा०	हूण-श०
"	१००	ईरा०	हू०-श०
ईसवी	१०० (कुषाण)	ईरा०	हू०-श०
"	४२५ (हेफ्ताल)	ईरा०	हूण-कंगली
"	५५७ (तुर्क)	ईरा०	कंगली-तुर्क
"	६७३ (अरब)	ईरा०	तुर्क
"	८९२ (सामानी)	ईरा०	तुर्क
"	१२२० (मंगोल)	ईरा०	तुर्क

ईसवी	१५००	ईरा०	तुर्क (उज्बेक)
"	१७४७	तुर्क-ईरा०	तुर्क-उज्०
"	१८६५	ईरा०तुर्क	उज्०-ईरा०
"	१९१७	ईरा०-तुर्क	उज्०-ईरा०
"	१९४७	ताजिक	

२ बासमची-उत्पीडन

खोकन्दके स्वायत्तियोंके हार खानेके बाद बासमचियो (जहादी डाकुओ)ने जोर पकड़ा। १९१९ ई०के वसन्तमें ओश नगर और पामीरके बीचका रास्ता सफेद रूसियो और बासमचियोंके हाथमे था, जिनका मुखिया मुखानोफ और एरगेशताम थे। पीछे कर्नल तिमोफियेफ नामक एक शाही अफसरने यहा नेतृत्व करना शुरू किया। बुखारा की कमजोरियो को देखकर अब यहाके पहाडी सामन्त स्वय बादशाह बननेका स्वप्न देखने लगे। जब १९२१ ई०के फर्वरीमें आलम खान (बुखारा-अमीर) दुशाम्बे होकर अफगानिस्तानकी ओर भाग गया, तो यहाके कुछ लोगोने अफगानिस्तानके अमीरको भी राज्य सभालनेके लिये लिखा, लेकिन ताजिकिस्तानके पहाडोंके लिये काबुलको न उतना प्रलोभन हो सकता था, न उसमें उतनी शक्ति ही थी। हा, मीर आलम खान ताजिकिस्तानमें लूट-मार मचानेवाले बासमचियोंसे पैसा पाता और उसके बदलेमें कुछ हथियार जरूर भेज देता था। जब-तब अग्रेजोने भी हथियारसे मदद की, लेकिन उस वक्त असहयोग का आन्दोलन सारे भारतमें चल रहा था, जिससे अग्रेजोंका दिमाग बहुत परेशान था, और वह बासमचियोको खुलकर मदद देनेके लिये तैयार नहीं हो सकते थे।

(१) अनवर पाशा—अमीरके जानेके बाद एक तरफ बासमची भिन्न-भिन्न गिरोहोमें बटे लूट-मार मचा रहे थे, दूसरी तरफ क्रातिकारियोंने भी गरीबोको सगठित करनेका काम शुरू किया। लेकिन, बुखारा अभी पूरी तौरसे बोल्शेविकोंके हाथमे नही आया था। उनकी ओरसे जो आदमी शासनका भार देकर भेजे गये थे, वह उच्चवर्गके होनेसे अपने पुराने स्वार्थोंको छोडने के लिये तैयार नही थे, इसीलिये उन्होने क्रातिके साथ विश्वासघात किया। बासमचियोमें जिस तरहके पत्र-व्यवहार हो रहे थे, उनसे उस समयकी स्थितिका कुछ पता लगेगा। एक पत्रमें मुल्लोने लिखा था—

अमीरुल्-मोमिनीन् अल्लमल्लाह सआला
वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-बादशाह, लश्करबाशीको दुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके दुआ-याचक परमभक्त आलिम (पडित) लोगोंने सुल्तानाबादमें पुण्य ईद पर्वके समय इकट्ठा हो आपसमें मत्रणा की। कुछ लोगोंके बारेमें हमने सुना, कि यह जनाबअली (अमीर-बुखारा) और श्रीमान्के विरोधी और बागी है। श्रीमान उनके बारेमें हमें सूचित करें। जो कोइ अनवरका अनुयायी है, उसे कुरान और हदीस (स्मृति)के अनुसार काफिर सिद्ध कर सभी यहाँ एकत्र हुये हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करा देंगे। जो लके (किर्गिज) ताजिक या कर्लुक अनवरका अनुसरण करते है, उनके बारेमें सूचित कीजिये। उनको भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेंगे। हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेंगे। यह सब (काम) हम लोगोंके सिरपर है, यदि यह श्रीमानको उचित जान पडे। आगे आप स्वय भली भांति जानते है। अस्सलामु व अलेकुम्।

पत्र भेजनेवालों की मुहर और हस्ताक्षर

मुल्ला अहमद सलीमी मुदर्रिस मुल्ला अली महमदी मुदर्रिस

खलीफा मुल्ला अल अजर मखदूम	मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम
मुल्ला मुराद मुरादी मुदरिस	मुल्ला अब्दुर्रहमान मखदूम
	मखदूम महमदी तुकसाबा

इस पत्रसे मालूम है, कि उस समय अनवरपाशा इन पहाडोंमे अपनी भाग्य-परीक्षाके लिये आया हुआ था। प्रथम विश्व-युद्धके बाद जर्मनोंके पक्षपाती अनवरका प्रभाव तुर्कीमे उड गया, जब कि मुस्तफा कमाल नवीन तुर्कीका नेता हुआ। इसके कारण अनवरको तुर्की छोडकर भागना पडा। कुछ समयतक वह बुखारामें रहा, फिर वहासे भी भागकर इन पहाडोंमे आ गया। अनवर नवीन तुर्कीका नेता था, जिससे बुखाराके जदीदोंको भी प्रेरणा मिली थी। लेकिन बुखाराके मुल्ले जदीदोंके खूनके प्यासे थे, इसीलिये वहा अनवर और उसके अनुयायी कुछ नही कर सकते थे।

इन पहाडोके सभी लोग क्रांति-विरोधी मुल्लोकी तरह अन्धे नही थे, वह अनवरकी योग्यता और प्रभावसे पूरा फायदा उठाना चाहते थे। इसीलिये अनवरको यहापर काफी समर्थन प्राप्त हुआ। लेकिन तो भी महत्त्वाकाक्षी बासमची तथा दूसरे सरदार अनवरकी सैनिक योग्यताको अपने मतलबके लिये इस्तेमाल करना चाहते थे, इसलिये स्वनिर्वाचित 'अमीर-लश्कर-इस्लाम, नायब-अमीर-बुखारा व दामाद खलीफा-मुसलमीन अनवर" को सफलता प्राप्त करनेका मौका नही मिला और अगस्त १९२२ ई०में बल्जुवान इलाकेके एक गावमें ४२ वर्षकी उम्रमें वह मरा। और चगन गाममे दफनाया गया।

(२) ईशान सुल्तान*--ताजिकिस्तानमे क्रांतिका एक और जबदस्त विरोधी ईशान सुल्तान था। ईशान मध्य एसियामें पीर या गुरुको कहते है, जिनका कई शताब्दियोंसे वहापर जबदस्त प्रभाव रहा है। १९वी सदीमें दरवाज कला-खुम्बके शाहोंका बहुत प्रभाव था। यह अपने खानदानको सिकन्दर और दूसरे पुराने राजाओसे मिलाते थे। सीधे-सादे पहाडी लोगोमें राजवशके होनेसे इनका बहुत मान था। इन्हींके इलाकेमें १८वीं सदीके अन्तमें सागिद दश्तसे डेढ मीलपर अवस्थित सैदान गावमें सैयद-वशमें एक आदमी पैदा हुआ, जो कि आगे ईशान औलिया (मृत्यु १८६७ ई०)के नामसे प्रसिद्ध हुआ। ईशान औलिया या मिर्जा रहीम पहले कन्दहारमें जाकर किसी पीर ईशान आखुनसाहेबकी सेवामें रहा, जहा उसने ईशानोंके सभी हथकडे सीखे। फिर लौटकर कुछ दिनों वह अपने गाव सैदानमें रहा, फिर सफेदारान और बादमें दराजमें रहने लगा। उसकी ख्याति दिन-पर-दिन बढ़ती गई और बहुतसे लोग उसके मुरीद हो गये। ईशानके लिये अमीरो और सामन्तोंकी तरह बीबी-बच्चोंके रखनेमें कोई दिक्कत नही थी। ईशान औलियाकी कई बीबिया थी, जिनसे उसके सात पुत्र हुये। उनमें शेख मिर्जाको दरवाजके शाह याकूब खाने अपनी लडकी दी थी। ईशान औलियाको कई गाव बिर्त-बधानमें मिले थे। औलियाके मरने (१८६७ ई०)के बाद उसके सातो पुत्र भी ईशानगिरीसे धन और सम्पत्ति जमा करने लगे। उनमें ईशान शेख अपने समयमें इन पहाडोंमें बडा ही सम्पत्तिमान तथा प्रभावशाली आदमी था। उसके मुरीदों (चेलो)की सख्या बहुत थी, और बहुतसे गाव भी उसे मिले थे। चिहकाका, सैदानके अतिरिक्त ईशान शेखकी हवेलिया सफेदारान, याहकपस्ते, याजगद और दरा-ज्में भी थी। इसीका लडका ईशान सुल्तान था, जो पूर्वी बुखाराका सबसे बडा धनी सामन्त था। इसका जन्म याहकपस्तेमें हुआ था, जहा दस सालकी उमरतक रहा। इसके बाद याजगन्द चला गया। जिस वक्त १९१७-१८ ई०में क्रांतिकी लहर पहाडोंमें पहुची, उस समय ईशान ४५ वर्षका बहुत तजुर्बेकार और शक्तिशाली आदमी था। बापके बाकी भाइयोमें सबसे बडा होनेसे उसका प्रभाव सबसे ज्यादा था। उसकी जागीरमें याजगन्द, याहकपस्त, यानकुर्गान आदि बहुतसे गाव थे। अमीर-बुखाराकी तरफसे वह अपने इलाकेका 'हाकिम' (सरकारी अफसर) था। ईशान सुल्तानकी धनसे भी ज्यादा धार्मिक प्रभुता थी। आसपासके इलाकोके लोग उसकी

*"नूदि ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजि (९), इस्तोरिया-यजीक-लितेरा तुरा" (अकदमी, नाउक १९४०, पृष्ठ ३-२७)

आज्ञाको खुदाकी आज्ञा मानते थे। भूमिका मालिक और बहुत बड़ा जमीदार होनेकी वजहसे प्रजाको भी कष्ट हुये बिना नही रहता था। याहकपस्तेके एक किसान परिवारको इसने बुरी तौरसे सताया था। जब वह लोग दुशाम्बेमें फरियाद करने लगे, तो काजी मुल्ला कामिलको इतनी हिम्मत कहा थी, कि प्रभावशाली ईशान सुल्तानके विरुद्ध फैसला देता। वहांसे बुखारा दाद-फरियाद करने गया, तो वहापर भी वही हालत हुई। फिर रूसियोंके पास ताशकन्द-तक पहुचा, लेकिन कही सुनवाई नहीं हुई। ईशान सुल्तानकी जागीरदारीमें लोगोंसे बेगारमें काम लिया जाता था। उसके लगरखानेमें भक्तों और मुरीदोंके खानेके लिये दरवाजा खुला था, बराबर सत्सग और ज्ञान-ध्यान चलता रहता था। ईशानकी कई स्त्रियां थी, जिनमेंसे एक याजगन्दमें, दूसरी याहकपस्तेमें, तीसरी हिसारमें, बाकी और जगहोपर रहती थी, लेकिन सतानोंमें उसे सिर्फ एक लड़की था।

जब बोल्शेविकोने फरगाना और ताशकन्दमे सफलता पाई, और क्रांतिकी लपट पूर्वी बुखाराके पहाड़ोंमें भी पहुचने लगी, तो ईशान सुल्तानको अपनी जागीर और धनके लिये डर पैदा हो गया। १९२१ ई०के जाड़ोंमें बुखारा-अमीर सैयद आलम खा जब भागकर दुशाम्बे आया, तो उसने यहाके पहाड़ी सामन्तोको सगठित करनेका प्रयत्न किया, और ईशान सुल्तानको 'सुद्दूर' (अध्यक्ष) की पदवी प्रदान की। २१ फर्वरी १९२१ ई०को जब अमीर दुशाम्बेसे अफगानिस्तान भागा, तो ईशान सुल्तान बोल्शेविकोंसे लड़नकी तैयारी करनेके लिये याजगन्द चला आया। दुशाम्बे (आधुनिक स्तालिनाबाद) में ईशानको कुछ हथियार मिले। तविलदरा और चिहलदराके इलाकोमें काजी कुर्गान, नियाज तुकसाबा, अकबर तुकसाबा, सैयद अली उराक आदि स्थानीय अफसरोंको इकट्ठा करके उसने 'गजा' (धर्मयुद्ध) करनेका निश्चय किया। अपने मुरीदोंमेंसे उसने पचासको हथियारबन्द 'गाजी' बनाया। दुशाम्बा और गरमपर अधिकार हो जानेके बाद मेर्कुलोफकी अधीनतामें ओरेनबुगसे सवार-सेना आ गई, जिसके कारण बोल्शेविकोंका पलड़ा इन पहाड़ोंमें भारी हो गया। लेकिन सुरखाबकी उपत्यका और गरम उस समय बासमची सरदार फुजैल मखदूम और लायकपसदके हाथमें थे, और पीतर दर्रेसे बखियातक को ईशान सुल्तानने अपने हाथमें किया था। लाल सेनाने ईशान सुल्तानको तवील दर्रासे भागनेके लिये मजबूर किया, तो वह सागिरदश्त चला गया। जब फुजैल मखदूम हारकर अफगानिस्तान भाग गया, तो ईशान सुल्तानने बोल्शेविकोंके साथ सुलह करने हीमें अपनी भलाई समझी। इसपर वह इस्लामके गाजियोमें बदनाम हो गया, जैसा कि अपनेको अनवरका उत्तराधिकारी बतलानेवाले एक तुर्की अफसर सामी पाशाके १९ नवम्बर १९२२ ई०के निम्न पत्रसे मालूम होगा—

"ईशान सुल्तान खोजा सूबा दरवाजके हाकिम और अस्कर बाशी सेनानायकका विश्वासघात

"अफगानिस्तानकी भूमिमें विराजमान जनाबआली अमीर बुखाराशरीफ सैयद अमीर आलमकी सेवामें अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्तानने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाकेको जुवान, आवस्तू अधिकृतकर बलजानोनिल्ला और फुलावदराको दबाकर तरह-तरहके झगड़े फसाद और अत्याचार किये। जनाबआलीकी ओरसे नियुक्त नायब और राजप्रतिनिधि दिवगत शहीद अनवरपाशाके सैनिक और नागरिक शासनके खतम करनेके लिये ईशान सुल्तानने इस्लामके मुजाहिदोंके भीतर उक्त सेनापतिके सामने फूट डाल दी, जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदोंकी छ हजार सेना बायसून इलाकेसे घबड़ाकर भागी और दुश्मनसे लड़नेकी जगह परस्पर हत्याकाड मचाया, जिसमें सैकड़ों मुसलमान कुर्बान हुये। ईशानकी मददसे फरगानावालोंने उसके प्रतिद्वद्वियोंको कत्ल किया, जिससे देशवासियोंको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालों और दूसरे कबीलोंके आपसी झगड़ेसे फायदा उठा (ईशानने) उजबेकों और ...

एक दूसरेसे लड़ा अपने विश्वासघातका परिचय दिया, साथ ही इस्लामके मुजाहिदोंसे तीन सौ बन्दूकों और दो सौ मशीनगनें देकर रूसियोंके साथ सुलह की, जिसके कि कागज-पत्र हमारे हाथ लगे।

"फरगानियों और किगिजोंमें झगड़ा डालकर इस्लामी मुजाहिदोंकी शक्तिको निर्बल करनेकी मशासे उसने रूसियोंके साथ मेल किया। इस तरह इस्लामी उद्देश्यको हानि पहुंचाने और लोगोंके युद्ध करनेके उत्साहको दबानेके लिये वहांके प्रबन्धालयोंको खतम कर दिया, और इस तरह निराशा फैल गई। अल्लाके रास्तेमें लड़नेवाले मुहम्मद अकबर तुकसाबाको (इशानने) अपने घरमें ले जा दस्तरखानपर बैठाकर उसे कत्ल करवा दिया, उसके मालको ले बाल-बच्चोंको नगा कर बाटका भिखारी बना दिया। इसके अतिरिक्त (उसने) कितने ही नामवर सेनानायकोंको कत्ल कराया। फिर फरगानावाले शेरमहम्मद (शेरमत) बेकोको खबर दे तुर्की और करातगिनके स्वामी फुजैलुद्दीन मखदूमको पराजित करनेका निश्चय किया। हमारे ऊपर भी उसने आक्रमण किया, लेकिन हमने सैनिक तरीकेके अनुसार उसके हमलेका मुकाबिला किया और ईशान सुल्तानकी फौजको भागना पड़ा। पहले हमने शेरमहम्मदको रोकनेके लिये वहलदरकि रास्तेको खराब किया था। इशानने खराब रास्तेको फिरसे तयारकर शेरमहम्मदकी फौजको रास्ता दिया और हमारी फौजको न जाने देनेके लिये रास्तेको खराब कर दिया। फिर अपने भाई ईशान सुलेमानको हमारे मुकाबिलेके लिये भेजा, इस प्रकार शेरमुहम्मदको दरवाजके रास्ते निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त दरवाजवाले गैरतशाह बी बादशाह, दिलावरशाह बी लश्करबाशी और कितने ही दूसरोंको कत्ल करवाया। हमारी फौजोंका पीछा करते हुये इशान सुलेमान तवीलदर्रा और सगीरदश्तमें बन्दूकवाले सैनिकोंको जमाकर शेरमुहम्मदकी सेनासे मिलकर हमारे ऊपर हमला किया। जब हम दरवाजमें थे, उसी समय दर्रासे होकर उसने फूलाबवाले महम्मद अशरबेक बी बादशाह लश्करबाशीको कत्ल कराया। अब हमारी फौजको आगेसे घेरकर दरवाजे-में मुझे मार आत्म-समर्पण करने या अफगानिस्तान भागनेके लिये मजबूर करना चाहता है। उसकी इस तरहकी योजनायें और पत्र हमारे हाथमें आये हैं, इसलिये उसके इन कामों अपराधों और विश्वासघातोंके लिये शरीयत और सैनिक कानूनके अनुसार उसे मृत्युदंड देनेका निश्चय किया गया है।

२८ माह रबीउल अव्वल सन् १३४१ (२१ नवम्बर १९२२ ई०)
मम्बर सेनापति मुसलमान जन-सेना सामीपाशा"

लेकिन ईशान सुल्तान अनवरपाशाका बहुत कदरदान दोस्त था। अगस्तको अनवरपाशा जब मारा गया, तो इसका ईशानको बहुत भारी दुख हुआ। अनवरके सहायक सामीपाशा (ख्वाजा सलीम बी) का भी वह बहुत सहायक रहा। सामीपाशा १९२२ ई०के शरदमें सीमान्तपर गया, तो कलाखुमके पास उसे दरवाजके बासमची नेताओं दिलावरशाह और हैरतशाहने पकड़ लिया। पता लगते ही ईशान सुल्तान स्वयं वहां गया और सामीपाशाको छुड़ाकर अपने साथ याजगन्द ले आया। ईशानने और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये याजगन्दकी एक ७-८ वर्षकी लड़कीसे सामीपाशाका व्याह करवाया—लड़की पहले ही किसी दूसरेको दी जा चुकी थी। लड़कीके बापने इसका विरोध किया, तो उसे गिरफ्तार करवा लिया।

बोल्शेविकोंके साथ प्रतिरोधको बेकार तथा बासमची सरदारोंके आपसके विश्वासघातोंके कारण जब ईशान सुल्तानका विचार बदलने लगा, तो फुजैल और सामीपाशाने अफगानिस्तान भागनेसे थोड़ा पहले ईशानको मारनेका निश्चय किया, जैसा कि उपर्युक्त पत्रसे मालूम होगा। फिर सामीपाशाने ईशान सुल्तानको गिरफ्तार कर लिया और फुजैलके आदमियोंने उसके भाई ईशान सुलेमानको भी पकड़ लिया। यही नहीं सामीके आदमियोंने याजगन्दमें ईशानोंके घरोंको ध्वस्त कर दिया, वहांकी सभी कीमती चीजें तथा स्त्रियोंको लूट लिया और ईशानके तीसरे भाई

शाह रहमतुल्लाको भी पकड लिया। इसके बाद बासमची सरदारो सामीपाशा, फुजैल और दानियाल ने तवील दरकि सभी अफसरो, मुल्लो, काजियो, मुफ्तियोको जमा करके शरीयतके अनुसार अभियोग लगाया कि ये ईशान लाल बोल्शेविकोंसे मिले हैं, इन्होंने एक बासमची सरदार अकबरको मारा। इसपर उन्हें मृत्युकी सजा हुई, और दोनो भाइयोंको १९२२ ई०की शरदमें मौतके घाट उतारा गया।

(३) फजल मकसूम—बासमचियोंके सरदार फुजैल मकसूमने १९२३ ई०में उत्तरी ताजिकिस्तानके पहाडोंमें लूट-पाट करते अपना दृढ शासन स्थापित कर लिया था। गरमका इलाका अच्छे समयमें भी जीविकाके लिये स्वावलम्बी नही था। वहाके बहुतसे लोग नेपालियोकी तरह फरगानामें जाकर मजदूरी किया करते थे। बासमचियोंके उपद्रवके कारण अब वह रोजी कमाने बाहर नही जा सकते थे, इसलिए सारे इलाकेमें भुखमरी फैली हुई थी, जिससे गरीबोमे बोल्शेविकोका प्रभाव बढ रहा था। इसी साल लाल सेनाने वहा पहुचकर फुजैलको बुरी तरहसे हराया, जिसके बाद फुजैल फिर नहीं सभल सका। मजार गावमें एक बार फिर उसने मुकाबिला करनेकी कोशिश की, लेकिन उसका घोडा मारा गया, फिर दूसरा घोडा लेकर वह सीधे अपने गाव मोतीनान गया, और सब तरफसे निराश होकर नकद और मालको ले उसने अपने हाथसे घरमें आग लगा दी, फिर चोपचाकके रास्ते वखेया इलाकेमें होते पज(वक्षु) नदीके किनारे पहुचा। रक्षियोने पकडना चाहा, लेकिन वह अपने दो-तीन आदमियोंके साथ नदी पार हो अफगानिस्तान निकल जानेमें सफल हुआ।

बोल्शेविकोने कुछ ही महीनोंमें करातेगिन, दरवाज और वखेयामे बासमचियोंका उच्छेद कर दिया। १८ जुलाई १९२३ ई०को गरम बोल्शेविकोंके हाथमें आ गया, ११ अगस्तको कला-खुम्ब (दरवाज) पर भी अधिकार हो गया, इस प्रकार ताजिकिस्तानपर क्रातिकी विजय हुई। लेकिन अभी भी ताजिक जन निश्चित नहीं हो पाये।

(४) इब्राहीम गल्लू—बासमचियोंके सरदार पुराने डाकू इब्राहीम गल्लूने बहुत सालोतक ताजिकिस्तानके पहाडोंमें लूट-पाट मचाकर लोगोको तग किया, लेकिन अन्तमें जून १९२६ ई० में उसे भागकर अमीरकी तरह अफगानिस्तानमें शरण लेनेके लिये मजबूर होना पडा। उस समय तक वह "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमबेक, दीवानबेगी, तोपचीबाशी, लश्करबाशी, चक्कबे, तुकसाबा पुत्र"की बडी-बडी उपाधियोंसे विभूषित तथा अमीर-बुखाराका नायब था।

३ ताजिकिस्तान गणराज्य

पूर्वी बुखारा या ताजिकिस्तान पहले तुर्किस्तान गणराज्यका अग था। १९२४ ई०में वह स्वायत्त गणराज्य बना और १९२९ ई०में सघ गणराज्य बनकर सोवियत सघके स्वतन्त्र गणराज्योंमें से एक हो गया।

स्रोत-ग्रथ

१ History of civil war in U S S R (2 vols , G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२ रेगोलुन्सिया व् स्रेदनेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
३ नुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजी इस्तोरिया यजीक–लितेरातुरा (लेनिनग्राद १९४९)
४ सोवियत्स्कया एत्नोग्रफ़िया (लेनिनग्राद १९३६/६, पृ० १११)
५ दाखुन्दा (उपन्यास, स० ऐनी, अनु० राहुल, प्रयाग १९४८)
६ गुलामान (उपन्यास, स० ऐनी, अनुवाद "जो दास थे" राहुल, प्रयाग १९४९)

अध्याय ६

तुर्कमानिस्तानमें क्रांति

१ तुर्कमान कबीले

तुर्कमान कबीलोंने किस तरह अपनी स्वतंत्रता कायम रखनेके लिये रूसियोंसे अंतिम लडाई लडी, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। तुर्कमानोंके मुख्य-मुख्य कबीले थे —

१ चौदार	उस्त-उतर्में
२ यामूद	चौदारोंके दक्षिण कास्पियन और निम्न वक्षुके बीचमें
३ गोकलान	ईरानकी सीमापर
४ तेक्के	सबसे अधिक शक्तिशाली मुर्गाब-उपत्यका और पासके रेगिस्तानोंमें
५ सरिक	मेवमें
६ सलार	मशहदके पूर्व बुखाराके रास्तेमें
७ एरसारी	
८ करदाखली	बुखारा-राज्यकी सीमापर वक्षुके किनारे

आठ सौ वर्ष पहले महमूद काशगरीने और इतिहासकार रशीदुद्दीनने भी तुर्कमान कबीलोंके बारेमें लिखा है। उनके कथनानुसार पौराणिक आगूज खानके छ लडके थे, जिनमेंसे प्रत्येकके चार-चार लडकोंके अनुसार तुर्कमानोंके चौबीस कबीले बने। इन दोनो लेखकोंके अनुसार वह कबीले निम्न प्रकार है —

महमूद काशगरी	रशीदुद्दीन
१ कीनिक	कीनिग
२ काईइग	काइई
३ बायोन्दुर	बायोन्दुर
४ ईवे	ईइवे
५ सल्गुर	सल्गुर
६ अफशार	अवशा
७ बेकतिली	केबदिली
८ ब्युकद्युज	ब्युकद्युज
९ बयात	बयात
१० याजगिर	याजिर
११ येएम्युर	येइम्युर
१२ करायुल्युक	कराएवली
१३ इगदेर	ईइगदेर
१४ यूरेकी, यूरेकिर	यूरेकिर
१५ तूतिरगा	दुदुरगा

१६ उला-इओन्दलुग	उला-इओन्तली
१७ त्युकेर	थुकेर
१८ पेचेनेत	बीजने
१९ जूवाल्दर	जावुल्दुर
२० जेबनी	चेवनी
२१ जारूकलुग	
	याचिर ली
	कारिक
	कार्किन
	तमगी

दोनो सूचियोका एक-दूसरेसे न मिलना, यही बतलाता है, कि कितने ही पुराने तुर्कमान कबीलोने नये नाम धारण किये और कुछ दूसरे तुर्कोमे विलीन हो गये ।

तुर्की भाषाए उराल-अल्ताई भाषा-जातिसे संबंध रखती है, जिसके भेद है —

१ **तुगुरू**—जिसमे मंचू भाषा भी सम्मिलित है।

२ **समोयद**—उत्तरी साइबेरियावालोकी भाषा ।

३ **फिनी**—फिन (सूओमी) तथा मगयार (हुगरी) भाषा।

४ **मगोल**—इसमें खलखा, कल्मक और बुरयत मगोलोकी भाषाए सम्मिलित है ।

५ **तुर्की**—इसकी एक शाखा (क) चगताई, जिसकी शाखायें उइगुर, तुर्कमान, उज्बेक, कजानकी तारतारी भाषाए है, (ख) शुद्ध तारतार-भाषा, जिसमे किर्गिज, बाश्किर और कराकल्पक भाषाए हैं, (ग) शुद्ध तुर्क-भाषा, जिसमें ईरानी और उस्मानी तुर्कोकी भाषायें सम्मिलित है। भाषाकी दृष्टिसे तुर्कमानी भाषा पश्चिमी तुर्की अर्थात् तुर्की और आजुर्बाइजानकी भाषाके समीप है।

तुर्कमान जाति-निर्माण—तुर्कमानोका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ —

काल	ख्वारेज्म	मेव	कास्पियन-तट
ई०पू० ५००००			मदलेन
,, ४००० (मध्य-पाषाण)	फिनो द्रविड		फिनो-द्रविड
,, ३५००	द्र०		द्रविड
,, ३००० (नव-पाषाण)	आय-द्र०	आय-द्र०	आय-द्र०
,, २५००	आय	आय	आय
,, १५००	ईरानी	ईरानी	ईरानी
,, ७००	शक	ईरानी	ईरानी
,, ५५०	शक	ईरानी	शक
,, ३२६	शक	ईरानी	शक
,, २०६	शक	ईरानी	शक
,, १३०	शक	ईरानी-शक	शक
ईसवी १०० कुषाण	शक	ईरा०-श०	शक
,, ४२५ हेफ्ताल	ईरानी-हूण	ईरा०-श०	श०-हूण
,, ५५७ तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०	ईरा० तुर्क
,, ६७३ अरब	ईरा०-तु०	ईरा०	तुर्क
,, ८९२	तु०-ईरा०	ईरा०-तुर्क	तुर्क
,, १२२० मगोल	तु०-ईरा०	ईरा०-तु०	तुर्क
,, १५००	तुर्क	तुर्क	तुर्क

१६	उला-इओन्दलुग	उला-इओन्तली
१७	त्युकेर	द्युकेर
१८	पेचेनेत	बीजने
१९	जूवाल्दर	जावुल्दुर
२०	जेवनी	चेवनी
२१	जारूकलुग	
		याचिर ली
		कारिक
		कार्किन
		तमगी

दोनो सूचियोका एक-दूसरेसे न मिलना, यही बतलाता है, कि कितने ही पुराने तुर्कमान कबीलोने नये नाम धारण किये और कुछ दूसरे तुर्कोंमें विलीन हो गये।

तुर्की भाषाएं उराल-अल्ताई भाषा-जातिसे संबंध रखती हैं, जिसके भेद हैं —

१ तुंगुस—जिसमें मंचू भाषा भी सम्मिलित है।

२ समोयद—उत्तरी साइबेरियावालोकी भाषा ।

३ फिन्नो—फिन (सूओमी) तथा मगयार (हुंगरी) भाषा।

४ मंगोल—इसमें खलखा, कल्मक और बुरयत मंगोलोंकी भाषाएं सम्मिलित हैं ।

५ तुर्की—इसकी एक शाखा (क) चगताई, जिसकी शाखायें उइगुर, तुर्कमान, उज्वेक, कजानकी तारतारी भाषाएं हैं, (ख) शुद्ध तारतार-भाषा, जिसमे किर्गिज, बाश्किर और कराकल्पक भाषाएं हैं, (ग) शुद्ध तुर्क-भाषा, जिसमें ईरानी और उस्मानी तुर्कोकी भाषायें सम्मिलित हैं। भाषाकी दृष्टिसे तुर्कमानी भाषा पश्चिमी तुर्की अर्थात् तुर्की और आजुर्वाइजानकी भाषाके समीप है।

तुर्कमान जाति-निर्माण—तुर्कमानोका एतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ —

काल	ख्वारेज्म	मेव	कास्पियन-तट
ई०पू० ५००००			मदलेन
,, ८००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड		फिनो-द्रविड
,, ३५००	द्र०		द्रविड
,, ३००० (नव-पाषाण)	आय-द्र०	आय-द्र०	आय-द्र०
,, २५००	आय	आय	आय
,, १५००	ईरानी	ईरानी	ईरानी
,, ७००	शक	ईरानी	ईरानी
,, ५५०	शक	ईरानी	शक
,, ३२६	शक	ईरानी	शक
,, २०६	शक	ईरानी	शक
,, १३०	शक	ईरानी-शक	शक
ईसवी १०० कुषाण	शक	ईरा०-श०	शक
,, ४२५ हेफ्ताल	ईरानी-हूण	ईरा०-श०	श०-हूण
,, ५५७ तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०	ईरा० तुर्क
,, ६७३ अरब	ईरा०-तु०	ईरा०	तुर्क
,, ८९२	तु०-ईरा०	ईरा०-तुर्क	तुर्क
,, १२२० मंगोल	तु०-ईरा०	ईरा०-तु०	तुर्क
,, १५००	तुर्क	तुर्क	तुर्क

१९१८ई०के अन्तमें मध्य-एसियामें बोल्शेविकोंकी अवस्था बहुत खतरनाक हो गई थी। रूससे यातायातका सबंध टूट गया था। उस समय पारे-कास्पियामें (समाजवादी क्रांतिकारी) दलका जोर था और बोल्शेविक निर्बल थे। क्रांति-विरोधियोंके नेता जारशाहीके पुराने सैनिक और असैनिक अफसर थे। खोकन्दके स्वायत्तियाके खतम कर देनेपर वहां बासमचियों (जहादी डाकुओं)का जोर बढ़ा, जिसके कारण बोल्शेविक उनको दबानेमें लग पड़े, और महीनों कहींसे कोई सहायता नहीं मिली। यहांके कम्युनिस्तोंमें अभी न उतना तजर्बा था, न अनुशासन और उनमें निम्न-मध्यमवर्गके अराजकतावादी भाव ज्यादा दिखाई पड़ते थे। लेकिन तो भी उच्च आदर्शके प्रति प्रेम और सर्वस्व-त्यागका भाव उनमें काम कर रहा था, जिसके बलपर शत्रुके कितने ही शक्तिशाली होनेपर भी वह लड़नेके लिये तैयार थे। १९१८ ई०के अन्तमें मास्कोसे रेडियोग्राम आया, कि सारी पूंजीवादी दुनिया—फ्रांस, इंगलैंड, अमेरिका आदि—ने सफेद (क्रांति-विरोधी)-रूसियोंकी सेनाको सक्रियरूपसे मदद देनेका निश्चय कर लिया है। वह और हथियार ही नहीं देंगे, बल्कि अपनी सेना भी भेजेंगे। इस बेतारके तारने जहां अवस्थाकी भीषणताको स्पष्ट करके सामने रख दिया, वहां यह भी बतला दिया, कि पूरी तौरसे अनुशासनकी पाबंदी करते हुये हथियारबन्द होकर लड़ना ही एकमात्र रास्ता रह गया है। उस समय बोल्शेविकोंकी कांग्रेस हो रही थी, जिसने निश्चय किया, कि सफेद गारदोंसे हमें ऊपरका अनुशासन मानते हुये लड़ना है। अन्नका अभाव था, कारखाने बन्द थे। मगर इसका एक फायदा यह भी था, कि मजदूरोंको काम नहीं करना था। रेलवे लाइनें भी बेकार पड़ी थीं।

३ केर्की कांड (१९१९ ई०)

मध्य-एसिया पहुंचनेके यातायातके बड़े रास्तोंमें एक स्थल-मार्ग ओरेनबुर्गसे होकर था, और दूसरा बाकूसे जहाज द्वारा कास्पियन पारकर वर्तमान तुर्कमानिस्तान होकर। ओरेनबुर्गको दूतोफने लेकर उधरका रास्ता बन्द कर दिया था, और कास्पियनके पूर्वी और पश्चिमी दोनों तटोंपर अंग्रेज आ गये थे। इस प्रकार मध्य-एसियाके बोल्शेविक केन्द्रसे बिलकुल अलग-अलग अपनी लड़ाई लड़ रहे थे। उनका मुकाबिला भी केवल सफेद (क्रांति-विरोधी) रूसियों और स्थानीय उच्च और मध्यवर्गसे ही नहीं था, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीपतियोंकी दुनिया भी उनकी शक्तिकी परीक्षा कर रही थी। बोल्शेविकोंका सबसे ज्यादा बल था—स्थानीय गरीब और मजदूर जनता, जिसके हितोंके लिये वह सब तरहकी कुर्बानियां दे रहे थे। १९१९ ई०के वसन्तके आनेतक अब अमीर बुखारा भी ज्यादा हिम्मतके साथ क्रांति-विरोधियोंकी सहायता करने लगा था। कास्पियनके पूर्वी तटसे आगे बढ़ते हुये सफेद-रूसियोंने आमू-दरियाके किनारे तथा बुखारासे नातिदूर चारजूयके महत्त्वपूर्ण स्टेशनको अपने हाथमें कर लिया था। लेकिन उनकी हिम्मत नहीं हुई, कि आमू (वक्षु) दरिया पारकर सीधे बोल्शेविकोंपर प्रहार करें। बुखारा राज्यके भीतर बुखारा नगरसे कुछ ही मीलपर कगानका रेलवे-जंकशन जारशाहीने अपने हाथमें कर रक्खा था, जो अब बोल्शेविकोंके हाथमें था। सफेद रूसियोंने सीधे बुखाराकी ओर बढ़नेकी जगह पहले केर्कीको लेनेका निश्चय किया था, जिसके बाद वह बुखाराके अमीरसे मिलकर तुर्किस्तान-प्रदेशसे बोल्शेविकोंको खतम करना चाहते थे। मेव (बैराम अली)में कुछ उच्च अमरीकी अधिकारियोंने सफेद रूसियोंसे मिलकर योजना बनाई। १९१९ ई०की मईके मध्यतक उन्होंने अलग-अलग टोलियोंको बनाकर उनके लिये काम निश्चित किया। ऐरापेतोफ एक टोलीका कमांडर नियुक्त किया गया, जिसे केर्कीपर अधिकार करनेका काम दिया गया। वह खर्कोफसे आकर बाकूमें सेनाके साथ शिक्षकका काम करता रहा। इससे पहले वह जारकी सेनामें अफसर रह चुका था, लेकिन इससे पहले कभी उसने सैनिक अभियानमें नेतृत्व नहीं किया था।

२४-२५ अप्रैलको कप्तान ऐरापेतोफने अपनी सैनिक टुकड़ी संगठित की। पैसेकी कमी थी। पैसे हीके लिये तो क्रांति-विरोधियोंको सिपाही मिल रहे थे। यदि केर्कीपर अधिकार

कर ले, तो अमीर-बुखारा तीस हजार रूवल देनेके लिये तैयार है, कहकर उसने लोभ-लालच दिखला पैंसठ आदमियोको इकट्ठा किया, जिनमें चार रूसी, तीन ईरानी और कुछ आर्मेनियन भी थे। अंग्रेजोंके दिये हुये हथियारोंकी कमी नहीं थी। उनके साथ दो सौ वन्दूके, काफी गोली-बारूद भी थी, इनके अतिरिक्त कुछ मशीनगनें भी थी, लेकिन तोप नहीं थी।

सैनिक टुकडीने सगठित हो जानेके वाद वैराम अलीसे कूच किया। पहले वह ताशके-परी फिर तख्तबाजार पहुचे। मेवंसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्कतक आई रूसी रेलवे लाइन पकडकर वह पहले दक्षिणकी ओर चले। तख्तबाजारमे ८ (२१) मईको, वह उत्तर-पूवकी तरफ केर्कीकी ओर बढने लगे। रास्ता रेगिस्तानका था। यदि ऐरापेतोफके सनिकोको रास्तेके बारेम अच्छी तरह मालूम होता, तो शायद उनमेंसे कितनोकी हिम्मत टूट जाती, लेकिन एक वार जब रेगिस्तानमें पड गये, तो पीछे हटनेका सवाल कहा था? ऐरापेतोफने उन्हे वतलाया था, कि तख्तबाजारसे केर्की दूर नही, सिर्फ तीन दिनका रास्ता है। वह नौ दिन वाद १४ (२७) मईको रेगिस्तानी रास्ता खतमकर केर्कीसे चार फसखपर एक वागमें ठहरे। कुछ ही समय वाद अमीर-बुखाराका अफसर नूरुद्दीन निराखुर और नासिरुद्दीन कराउलवेगी मिलने आये। केर्कीके बेग (राज्यपाल)ने सौ हथियारवद स्थानीय तुर्कमान ऐरापेतोफकी सेनाके लिये भेजे, और जल्दी ही सैनिक कारवाई करनेके लिये जोर दिया। रेगिस्तानके रास्तेसे आकर थके-मादे पडे ऐरापेतोफके आदमी अभी उसके लिये तैयार नही थे। इसपर बुखारी अफसरोकी सलाहसे ऐरापेतोफ अपने सैनिकोको लिये केर्कीसे चालीस फसख दूर किजिलअयाकमें चला गया। यहा डेढ सौ तुर्कमान सवार और आ मिले, इस प्रकार ऐरापेतोफकी सारी सेना अब तीन सौ पैंतालीस थी। केर्कीका वेग वरावर ऐरापेतोफसे लिखा-पढी कर रहा था। कपासका वहुत वडा व्यापारी मलिक-कपामेंस समसोन क्राति-विरोधियोकी सहायता कर रहा था। फर्वरी (१९१७) ई० क्रातिके समय वह नगरके आर्थिक कमीशनका अध्यक्ष था, लेकिन अक्तूबरकी क्रातिके वाद वह बोल्शेविकोके साथ सहानुभूति पैदा करके अपनेको सोवियत सगठनका सदस्य वनानेमें सफल हुआ। उसने एक पत्र केर्कीके बेगके पत्रके साथ ऐरापेतोफके पास भेजा। पत्र पकडा गया, फिर समसोन भी गिरफ्तार कर लिया गया।

केर्की अफगान-सीमाके नातिदूर वक्षु नदीके तटपर व्यापारिक और राजनीतिक महत्त्वका स्थान था, जहा १८८९ ई०में जारशाहीने एक किला वनाया था। इसके व्यापारिक महत्त्वका पता इसीसे लग जायगा, कि १९१० ई०में यहा बाइस लाख रूवलका व्यापार हुआ था। बुखाराके पासके कगान जक्शनसे करशीको एक रेलवे लाइन लाई गई थी। यह कपासकी बहुत बडी मडी तो थी ही, साथ ही अफगानिस्तानके साथके आयात और निर्यात का भी यह वहुत वडा द्वार था। यहापर दो कपास ओटनेकी मिलें भी थीं। अक्तूबर-क्राति द्वारा जब ताशकन्दपर सोवियत-शासन कायम हो गया, तो यहाके गैरिसनके सिपाहियोंने भी लाल झडा फहराया। मजूर और निम्नमध्यम-वर्गके लोग सोवियत-शासनके पक्षमें थे। ऐरापेतोफके आक्रमणसे पहले यहा बोल्शेविक पार्टीके सौ मेम्वर वन चुके थे।

१२ (२५) मईको केर्कीकी सोवियतको खवर मिली, कि सफेद-गारदके तीन हजार सैनिक आठ तोपों और सोलह मशीनगनोंके साथ आ गये हैं। अगले दिन यह भी पता लगा, कि सफेद-गारदका कुछ भाग किजिलअयाकमें पहुच गया है। इसी दिन शामको सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमें प्रतिरक्षाके लिये तैयारी करनेका निश्चय किया गया। इसके लिये एक परिषद् (कलेगियो) बनाई गई, जिसका अध्यक्ष नस्तेरोफ और सदस्योंमें शीरियानेत्स (सोवियत-अध्यक्ष), बवायेफ, वासिलेव्स्की और बर्जानोफ थे। बर्जानोफ युद्धके विशेषज्ञके तौरपर लिया गया। १३ (२६) मईके १० बजे अमीरके पास रहनेवाले सोवियतके रेजीडेंटके पास केर्कीसे शीरियानेत्स, नेस्तेरोफ, और लादोगोने खवर भेजी, कि अश्कावादियोकी पलटन यहासे अट्ठाईस वेर्स्तपर आ पहुची है। हो सकता है, हम आपके साथ यह अन्तिम वार्तालाप कर रहे हैं। जो हो सके, मदद हमारे पास भेजें। आज ही शामको युद्ध शुरू होनेकी सभावना है। वेग और

१३ (२६ ") युद्ध-परिषदका सगठन, और नगरकी प्रतिरक्षाकी तैयारी।
१४ (२७ ") ऐरावेतोफकी सेना केर्कीके नजदीक पहुची।
१५ (२८ ") ऐरावेतोफने अल्टीमेटम दिया, स्वाम्की और शिर्निकोफ बात करने गये। परिषदने अल्टीमेटम स्वीकार नही किया।
१६ (२९ ") युद्ध-परिषदने केर्कीबगको हथियार रख देनेके लिये अल्टीमेटम दे पुराने नगरपर गोलाबारी की।
१७ (३० ") पुराने नगरके प्रतिनिधि बात करने आये। वेग और उसके अफसरोको गिरफ्तार करके पुराने बेर्की नगरको बोल्शेविकोने ले लिया।
१९ मई (१ जून) मस्कोकी सोवियत सेना समसोनोफ स्टेशनपर आई। तुर्कमानोंने वेर्कीका मुहासिरा शुरू कर दिया।
२-३ (१५-१६") तुर्कमान नेताओंके साथ प्रथम बातचीत।
३ (१६ ") केर्की-सोवियतने अपनेको खतम करके सारी शक्ति युद्ध-परिषदके हाथमें दे दी।
४-६ (१७-१८") तुर्कमानोने आक्रमण करके केर्की नगरको लेना चाहा।
१० (२३ ") बुखारासे बोडल्केविच तथा अमीरके आदमी सुलह करानके लिये केर्की पहुचे।
१२ (२५ ") तुर्कमानोके साथ सुलहकी बात शुरू हुई।
१९ जून (२ जुलाई) सुल्हनामे पर हस्ताक्षर।
२८ सितम्बर (११ अक्तूबर) अपने अपराधोके लिये बजानोफ शिरियानेत्स और नेतेरोफको गिरफ्तार किया गया।

४. ईरानका दावा

१९०७ ई०में इगलैंड और जारशाही रूसका जो समझौता हुआ था, उसमें दोनों राज्योने बीचके थोडेसे स्थानको छोडकर ईरानको अपने प्रभावक्षेत्रमें बाट लिया था, और बहुतसे राजनीतिक और आर्थिक सुभीते अपने लिये प्राप्त किये थे। क्रातिके बाद सोवियत सरकारने इस तरहके साम्राज्यवादी सधिपत्रोको फाडकर फेंक दिया। २६ फवरी १९२१ ई०को मास्कोमें ईरानके साथ नये सधिपत्रपर हस्ताक्षर करते हुए सोवियतने ईरानके साथ हुई अन्यायपूर्ण शर्तोको खतम कर दिया धातु—धुनो, पेट्रोल आदिके सबधमें जो रियायतें ईरानसे जारशाहीने ली थी, उन्हे छोड दिया। जुल्फा तब्रेज और दूसरी जगहामें जारशाहीने जो रेलवे लाइनें बनाई थी, उन्ह ईरानको दे दिया। उरमिया (रजाइया) महासरोवरमें चलनेवाले रूसी स्टीमरोको ईरानके हवाले कर दिया। तेलीग्राफ, बिजली-स्टेशन, बैंकोकी इमारतो आदिपर से भी अपना अधिकार छोड दिया। कुल मिलाकर प्राय सात करोड सुवर्ण रूबलकी अपनी सपत्तिको देते रूसियोके बाह्य राज्यमें विशेष अधिकार को भी छोड दिया। एक ओर रूसके नये शासक इस तरहकी उदारता दिखला रहे थे, दूसरी तरफ बख्तियारी सामन्त समसामुस्सल्तनतके नेतृत्वमे ईरान सरकार मार्च १९१९ ई०में पेरिसके अत र्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसमें कौरोश और दारयोशके समयकी ईरानी सीमाको फिरसे कायम करना चाहती थी। समसामुस्सल्तनत उसी बख्तियारी कबीलेका सरदार था, जिसने १९१६ ई०में इगलैंडके साथ समझौता करके ईरानके प्रसिद्ध तेल-क्षेत्रको अग्रेजोके हवाले किया था। इसीके शासनके समय इगलैंडने ईरानपर पूरी तौरसे अपना अधिकार जमाया, इसलिये अग्रेजोकी सम्मतिके बिना वह ऐसी मागोको रखनेकी हिम्मत नही कर सकता था। उस समय एक ओर अग्रेज जेनरल डेन्स-टरविलकी सेना बगदादसे बाकू पहुची थी, वहा दूसरी सेनाका कर्नल रोलिसनके अधीन अस्काबाद आई थी। अग्रेजी सेनाओंके बलपर ईरानकी मागे यदि लबी हो जायें, तो आश्चर्य क्या? वस्तुत यह नई सीमा ईरानकी नही, बल्कि अग्रेजी साम्राज्यकी होती। ईरान सरकारने अपने स्मारक पत्रमें माग की—बाकू नगरके साथ सारा आजुर्बाइजान, एरेवान, नखचेवान, कराबख आदि नगरो-को साथ रूसी आर्मेनिया, दरबेंदके साथ दागिस्तान (अर्थात् प्राय सारा काकेशस) ईरानको मिलना

चाहिए। पारे-कास्पियाको लेते हुये ईरानकी सीमा आम-दरिया, अराल समुद्र और पूर्वी कास्पियन-तट माना जाय, अर्थात् अश्काबाद, मेर्व, खीवा आदिपर ईरानका अधिकार होना चाहिये। कुल मिला पाच लाख सत्तर हजार वर्ग किलोमीतर सोवियतकी भूमिपर ईरानका दावा था। ईरानने बोल्शेविकोको इतना कमजोर समझा था, और अपने सहायक पश्चिमी साम्राज्यवादियाको इतना मजबूत, कि उसने सोवियत-शासकोंके सात करोड स्वर्ण रूबल्के स्वार्थ-त्यागको उनकी कमजोरी समझा।

लेकिन ईरान और उसकी पीठ ठोकनेवाले ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंके सारे मनसूबोको मध्य-एसियाके बोल्शेविको, उनके लाल-गारद और लाल-सेनाने विफल कर दिया। रूसियोंके दात खट्टे करनेवाले तुर्कमानोको यह समझनेमें दिक्कत नही हुई, कि उनके भाग्यका सितारा बोल्शेविको के साथ फिर उगनेवाला है। दूसरी जगहोकी तरह तुर्कमानोमें भी उच्चवर्ग और मुल्ला क्रांति-विरोधी सफेद-गारदोके साथ हुये, और अधिकाश गरीब जनता बोल्शेविकोंके साथ। इसी जनशक्ति-के बलपर तुर्कमानियामें १९२४ ई०में किसान-मजदूर-राज्य जातियोंके आत्मनिर्णयके अनुसार एक लाख सत्तासी हजार वर्गमील भूमिपर कायम हुआ। यद्यपि इस भूमिका अस्सी सैकडा कराकुम (कालाबालू)का महारेगिस्तान है, लेकिन तेरह लाखके आबादी के लिये बाकी बीस सैकडा भूमि भी कम नही है। अब तो वक्षु (आमू दरिया)को कास्पियनसे मिलानेके लिये ग्यारह सौ कलोमीतरकी जो नहर खोदी जा रही है, उसके कारण इस रेगिस्तान- का बहुत बडा भाग उर्वर भूमिमें परिणत हो जायगा। तुर्कमान घुमन्तू कबीले, और उनके लूट-पाट और लडते-भिडते रहनेके जीवनका अत हो चुका है, उनमें शत प्रतिशत आधुनिक शिक्षा से शिक्षित नर-नारी है। वह जीवनके हर क्षेत्रमें बडी तेजीसे आगे बढे है।

स्रोत-ग्रंथ

१ रेवोल्युत्सिया स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
२ History of civil war in USSR (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1947)
३ La revolution russe (4 vols, C Anet, Paris 1918-20)
४ La revolution russe (Al Ular, Paris 1905)

परिशिष्ट

रूसी भाषा और भारत

१ ऐतिहासिक सिंहावलोकन

सिकन्दर (मृत्यु ३२३ ई० पू०) से पहिलेके भी भारतीय युनानियोको जानते थे। 'माज्झिम-निकाय'के एक सूत्रमें बुद्धने कबोज (उत्तरी अफगानिस्तान) और यवन (यूनान) का नाम लिया है। पाणिनि (ई० पू० ४थी शताब्दी)को भी यवनोका नाम मालूम था। उसके बाद तो बहुत भारी सख्यामें यवन हिन्दुस्तानमें आये, और ईसा-पूर्व दूसरी और तीसरी शताब्दीमें उत्तरी भारतके कितने ही हिस्सोपर यवनोका राज्य रहा। ई० पू० पहली शताब्दीसे ईस्वी तीसरी शताब्दीतक उत्तरी भारतका बहुत-सा भाग शकोके हाथमे था, और पजाब तो पाचवीं शताब्दीतक शकोके शासनमें रहा, जब कि इतिहासमे गलतीसे श्वेत हूणके नामसे प्रसिद्ध किन्तु वस्तुत शकोंकी ही एक शाखा हेफतालो (तोरमान-मिहिरकुलके वश)ने उनको हटाकर अपना राज्य स्थापित किया। मिहिरकुलको मालवाके यशोधर्माने भगाया, जिसके साथ अतिम शकोका राज्य भारतसे लुप्त हुआ। इसी समय बाह्लीक (बाख्तर या बलख), तुखार और सोग्दको भी उनसे तुर्कोंने छीन लिया। आठ-आठ शताब्दीतक यवनो और शकोका भारतसे इतना घनिष्ठ सबध रहा, वे लाखोकी सख्यामें हमारे देशमे आकर बस गये, और आज वह शाकद्वीपी ब्राह्मण, चौहान, बनाफर-जैसे बहुतसे राजपूतो और जाट-गूजर जैसी जातियोके रूपमें हिन्दुओंके अभिन्न अग बन गये। तो भी हमारे यहा इस तरफ ध्यान आकृष्ट नही हुआ, कि उनकी भाषाओका हमारी भाषासे बहुत घनिष्ठ सबध है, और उससे ऐतिहासिक परिणाम निकाले जा सकते है।

१८वी शताब्दीके अतम युरोपके विद्वानोंका ध्यान सस्कृतकी तरफ खास तौरसे आकृष्ट हुआ, जब कि उन्होने देखा कि सस्कृत और युरोपीय भाषाओमें आपसमें कितनी ही जगह अद्भुत समानता है। इसका श्रेय जर्मन अध्यापक बॉपको है, जिसने अपने विस्तृत अनुसधानके बल-पर इस समानताको दिखलाया और हिन्दी-युरोपीय भाषा-तत्त्वकी नींव डाली। अब यह सर्वसम्मत बात है, कि सस्कृत तथा युरोपीय भाषाओकी समानता आकस्मिक नही है, जैसे —

सस्कृत——ददामि	दास्यमानस्	दातर्
ग्रीक——दिदोमि	दोमोमेनोस्	दोतेर्

इसी तरह —

सस्कृत—वाक वाचस् वाचाम् वचस् वाग्भ्यस्
ग्रीक——वोक्स् वोकिस् वोकेम् वोकेस् वोकिबुस्

इन समानताओंने सिद्ध कर दिया कि "हिन्दी-युरोपीय भाषाए सभी एक ही मूल-भाषा की सतानें हैं।"*

हिन्दी-युरोपीय भाषाओंकी इस एकताके सिद्धातको स्वीकार कर लेनेपर रूसी भाषाका भी सबध सस्कृतसे है, यह मान ही लिया जाता है। किन्तु इससे एक भ्रम पैदा होता है, कि रूसी भाषा भी उतनी ही दूरसे सस्कृतके साथ सम्बन्ध रखती है, जितनी कि ग्रीक और अग्रेजी भाषा। फारसी भाषा-का भी सस्कृतसे सबध है, हिन्दी-बगलाका भी सस्कृतसे सबन्ध है, लेकिन यहा तारतम्य एक समान

* अन्थ्रोपौलोजी (सर एडवर्ड टेलर) जिल्द १, पृष्ठ ८

नही है। फारसी भाषा अग्रेजीसे तुलना करनेपर सस्कृतकी सगी बहन-भतीजी मालूम होती है, उसी तरह युरोपकी दूसरी भाषाओंसे तुलना करनेपर रूसी और उसकी स्लाव बहनें सस्कृतकी बिलकुल भागिनेयी और प्रभागिनेयी सिद्ध होती है। वस्तुत रूसी भाषा युरोपीय भाषाओंके वर्गकी नहीं है, बल्कि वह सस्कृत-ईरानी भाषा-वर्गसे सबध रखती है। १८वी सदीके आरभतक रूसी भी अपने को युरोपसे अलग समझते थे। आज भी उनके मुखसे जब-तब अपनेसे पश्चिमके देशोको 'युरोपा' कहकर पृथक् करनेकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

ईरानियो और हिन्दी-आर्योका घनिष्ठ सपर्क भाषाके अतिरिक्त उनकी देवावली और पूजा-प्रकारसे भी सिद्ध होता है। रूसी भाषाका सस्कृतसे कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके बारेमें हजारों उदाहरण हम यहा देने जा रहे हैं, इसलिये बहुत लिखनेकी अवश्यकता नही है। लेकिन मूल-भाषा और उसके बोलनेवालोंसे इतिहास-शृखला कैसे जुडती है, इसे यहा सक्षेपमे दिखलानेकी जरूरत है।

हम आसानीके लिये उस भाषाकी "प्राक्हिन्दी-युरोपीय भाषा" मान लेते है, जिसे भारत और ईरानके आर्यो और रूसी तथा युरोपीय जातियोके पूर्वज एक कबीला होनेके वक्त बोला करते थे। यहा यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि भाषा बोलनेसे यह मतलब नही, कि वह अपने पूर्वजोके विशुद्ध वशज है। मानव-जातिया स्थावर नही, जगम है। कभी वह स्वय दूसरी जातियोके देशोमें गई और कभी दूसरी जातिया उनके देशोंमें आई। यदि भिन्न-भिन्न भागों में भारतीय आर्योके रक्तमे द्राविड, किरात और मगोल जातियोका प्रचुर रुधिर है, तो युरोपकी जातिया भी प्राचीन भूमध्यीय जातियो, और रूसी जाति हूणो, तुर्को और मगोलोके रक्तसे बची नही है। हा, यह कहा जा सकता है, कि हिन्दी-युरोपीय भाषा-भाषी जातियोंमें उनके प्राक्-हिन्दी युरोपीय पूर्वजोका रक्त अधिक है, परन्तु पश्चिममें यह बात केवल युरोपमे रहनेवालोपर ही लागू है।

प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिके निवास और कालको ढूढते-ढूढते हम नवपाषाण-युगतक पहुचते हैं। उनके आधुनिक वशधरोकी शब्दावलीसे तुलना करनेपर इतना पता लगता है, कि अभी वह कृषिको नही जानते थे। इसका अर्थ यह भी हुआ, कि वह नवपाषाण-युगके आरभिक कालमे थे। यह समय ईसा-पूर्व तीसरी-चौथी सहस्राब्दी या कुछ आगे-पीछे हो सकता है। मानव-तत्त्ववेत्ताओ में इस सम्बन्धमें मतभेद है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति एसियाकी रहनेवाली थी या युरोपकी। बहुतसे विद्वान् कहते है, कि अतिम हिम-युगकी समाप्तिके बहुत देर बाद एसियाकी एक जातिने युरोपपर धावा बोला और वही प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी। दूसरी तरफ ऐसे भी विद्वान् है, जिनका कहना है कि हिम-युगके बाद जिन जातियोंका युरोपमे पता लगा है, उन्हींकी वशज यह प्राक-हिन्दी-युरोपीय जाति थी।* हमें अभी इस विवादमें नही पडना है। यदि प्राक-हिन्दी युरोपीय जाति एसिया—मध्य-एसिया—से यूरोपमें गई, तो उसकी पूर्वी शाखा गोबीकी मरुभूमिसे कार्पाथीय पर्वतमालातक फैली हुई थी। पीछे इसके विभाग हुये—आर्य और शक। आसानीके लिये हम पूर्वी शाखाको 'शत वश' या 'शकाऽऽय' कह लेते है। पश्चिमी शाखा 'केन्ट' या पश्चिमी युरोपीय जातियोके पूर्वज थे। लेकिन यहा हम यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि हालकी ख्वारेज्म (निम्नवक्षुनदी)की खोजोने बतलाया है, कि वहांकी सस्कृति सिन्धु उपत्यकाकी सस्कृतिसे सम्बद्ध थी, अर्थात् सिन्धु-उपत्यकाकी जाति और प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति-की सीमा अराल-समुद्र और सिर-दरिया थी।

यदि हम यह मान ले, और जिसकी सभावना भी अधिक है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति हिम-युगके बादकी युरोपीय जातियोंसे निकली थी, तो उसके विचरण-स्थानकी सीमा वोल्गा या एम्बा नदी रही होगी, अर्थात् विशाल 'भूखे बयाबान' (कजाकस्तान)से पश्चिम ही। इसी विशाल

* 'स्केलेटेन रिमेन्स ऑफ अर्ली मैन' (हूरद्लिच्का), स्मियसोनियन् मिसलेनियस् पब्लिकेशन जिल्द ८३ (१९३०) पृष्ठ ३४७-४९

भू-भागके पूर्वीय अंशमें पूर्वी शाखावाले शकार्य रहते थे। शकाय-काल में भी संस्कृतिके तलमें बहुत अन्तर नहीं पडा था। कृषिकी संभावना कम है। शिकारके साथ पशुपालन भी वह करते थे। समाज जन-सत्ताक था, यानी व्यक्तिकी जगह जनकी प्रधानता थी।

शकाय जातिका सम्मिलित वासस्थान कार्पाथीय पर्वतमालासे पूरब रहा होगा, जिसके पूर्व में आय रहा करते थे और पश्चिममें शक। जनसंख्याकी वृद्धि या प्राकृतिक विपत्तिके कारण शको और आर्योंमें संघर्ष हुआ। परिणामत आर्योंको अपना मूल स्थान छोडना पडा। उनका एक भाग कास्पियनके पश्चिम काकेशस पर्वत-मालासे होते क्षुद्र-एसिया (तुर्की) और उत्तरी ईरानके तरफ बढते असीरियाके सभ्य देशकी सीमापर पहुचा, और दूसरा भाग कास्पियनसे पूरबकी तरफ अराल समुद्रके किनारे होते ख्वारेज्मकी भूमिमें पहुच वहाकी सभ्यताके सम्पर्कमें आया। काकेशससे होकर जानेवाले आर्योंका पता हमें ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमें बोगजकुई (अंकराके पास)मे मितन्नी आर्योंके अभिलेखसे मिलता है। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि इसी सहस्राब्दी में हिन्दी-युरोपीय ग्रीक ग्रीस देशमें दाखिल हुए।

अराल-समुद्र और ख्वारेज्ममें पहुचे आर्योंका वहाकी संस्कृत जातिसे संघर्ष हुआ होगा, इसमें सदेह नही। ख्वारेज्मकी सभ्य जाति उसी तरह घुमन्तू आर्योंके समक्ष नतमस्तक हुई, जिस तरह हजार वर्ष बाद ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमें हिन्दी आर्योंके सामने सिन्धु-उपत्यकाकी संस्कृत जाति परास्त हुई, और वहा आर्योंका अधिकार जमा। शकोंसे आर्योंके प्रथम अलग होनेका काल ईसा-पूर्व ३००० वर्षके आसपास था। आगे मध्य-एसियामें आर्य कस्पियनसे पामीर तक फैल गये। वक्षु (ख्वारेज्म) सभ्यताने उन्हें कृषि और संस्कृतिकी दूसरी बातें सिखलाई। आगेके लिये यह भूमि आर्यो का बीजस्थान (आर्याना वेइजा) बन गई। ईसा-पूर्व २५०० के आसपास आर्योंके भाई—शक संख्या-वृद्धि, दैवी उत्पात या अच्छी चरागाहोंकी भनक पा पूरबकी ओर बढे। संभव है, अराल-समुद्र और सिर-दरियाके उत्तरके पशुपाल आर्य-जनोंसे उन्हे लडना पडा हो। कुछ भी हो, वह धीरे-धीरे पूरब-में बढते त्यानशान् और अल्ताईकी उपत्यकाओंको लेते गोबी और क्विनलुन् पर्वतमालातक पहुच गये।

ईसा-पूर्व १५०० में तरिम, इली और चूकी समृद्ध उपत्यकायें शकोंके निवासस्थान थे। संभव है, वहा वे कुछ खेती भी करते हों, अल्ताईकी खानोंसे सोना तो वह जरूर निकालते थे। लेकिन शक अपनी जीविकाके लिये मुख्यतया निर्भर थे पशुओंपर—घोडा, गाय और भेडें उनके मुख्य धन थे, ऊटो-से उनका प्रेम न था। इस प्रकार ईसा-पूर्व १५ वी सदीमें गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक शक-जातिका वासस्थान था। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ग्रीक इतिहासकार दुनाइ (डैन्यूब)के उत्तर तथा अराल-तटपर शको (स्कुथ, सिथ)के होनेकी बात करते हैं। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ईरानी शाहंशाह कोरोस-को शकोंसे बचनेके लिये दरबन्द (बाकूसे उत्तर)की किलाबंदी करनी पडी थी। सिर-दरियाके किनारे भी उसे शकोंसे लडना पडा था और एक शक योद्धाके हाथ ही घायल होकर उसे मरना पडा। ईसा-पूर्व ४थी सदीमें अलिकसुन्दरको दुनाइ और सिरदरियाके तटपर फिर शकोंसे मुकाबला करना पडा। इस तरह स्पष्ट है, कि ईसा-पूर्व २००० से अलिकसुन्दर (सिकन्दर)के समयतक कारपाथीय पर्वतमालासे गोबीतककी भूमि शक घुमतुओंकी विचरण-भूमि रही, और यही महाशक-द्वीप था। यह भी स्मरण रखना चाहिए, कि अराल समुद्रके पास मगेसगेत् (महाशक) नामकी एक शक जाति का वर्णन हेरोदोतने किया है। ई० पू० २०६ में जब कि ग्रीक-बाल्हीक राजा युथिदेमोने सिर-दरियापर चढ़ाई की थी, उस वक्त भी वहा शक लोगों हीका निवास था। कितने ही पश्चिमी विद्वानो-का विचार है, कि वहा (महाशकद्वीपमें) रहनेवाली शक जाति वस्तुत एक जाति नही थी, अर्थात् वह भिन्न-भिन्न भाषाए बोलते थे, और उनके रक्तमें भी भिन्नता थी। भिन्न-भिन्न भाषाका मतलब यदि यह है, कि उनमें कई बोलिया थीं, शब्दोंके उच्चारणमें कुछ अंतर था, तो इसमें किसीको आपत्ति नही। किन्तु यदि इसका यह अर्थ है, कि वहा 'शतम्' वंशकी भाषासे बिलकुल ही अलग, अथवा हिन्दी-युरोपीय भाषासे भी बिलकुल अलग भाषा बोलनेवाले कबीले रहते थे, और रक्तसे भी वे शकार्य या हिन्दी-युरोपीय जातिसे भिन्नता रखते थे, तो इसके लिये कोई आधार नही है। वस्तुत भाषाके

मामूली स्थानीय भेदके साथ भी इस सारे महाशक-द्वीपमें शक जातिका अक्षुण्ण आधिपत्य १७२ ई० पू० तक रहा।

गोवीसे उत्तर, और पूरबमें मगोल-वशीय जातिया निवास करती थी, जिनमें सिन् (चीनी) और हूणका इतिहासमें सबसे पहले नाम आता है। २५० ई० पू०में तूमन् शन्-यूके नेतृत्वमें हूण बहुत प्रबल हुये और चीनको उनके सामने झुकना पडा। ये हूण—जिनके ही वशज पीछे चिगिज खाके मगोल थे—आधुनिक मगोलियामें रहा करते थे। इनके आतक और आक्रमणोंके मारे चीनी परेशान थे और इसीलिये उनसे बचनेके लिये विश्वविख्यात चीनकी दीवार बनी। हूणोके पश्चिमी पडोसी शक थे। तूमन शन्-यूके बाद उसका पुत्र माउ-दुन् हूणोका राजा हुआ, और वह १८३ ई० पू०में मौजूद था। इसने चीनको कई बार बुरी तरह परास्त किया, और उससे अपनी शर्तें मनवाई। इसके समय हूण राज्य पश्चिममें अल्ताईतक पहुच गया, और पूवमें कोरियातक। अल्ताई और बलखाशसे पूवके शकोने माउ-दुन्की अधीनता स्वीकार की, और शायद इससे पहले ही बापके समयमें ही अल्ताईके उत्तरकी सोनकी खानें हूणोंके हाथमें चली गई थी। सभव है, अब भी वहा काम करनेवाले शक ही रहे हो। जो भी हो, माउ-दुनने शकद्वीपके कुछ भागपर अधिकार करके भी उसने अपनी तरहके घुमतू शकोके उच्छेद करनेकी अवश्यकता नही समझी। उसके पुत्र ची-युइ (मृत्यु १६२ ई० पू०)ने शकोके साथ पिता जैसा बर्ताव नहीं करना चाहा और उसने १७२ ई० पू०में शकोंके उच्छेदका काम शुरू किया। उसने तरिम्-उपत्यकामें बस गये शको (यू-ची)के राजाको मारकर उसकी खोपडीका मद्य-चषक बनाया। इस समयमें शकों और हूणोका सघर्ष शुरू हुआ, और शकद्वीपके पूर्वी भागमें खलबली मच गई। शक अपने पुराने स्थानको छोडकर दक्खिनकी तरफ भागने लगे। दक्खिनकी तरफ भागनेवालोमें सबसे पहले थे यू-ची, जिन्होने ई० पू० १३० में बाल्तर (बलख)में ग्रीक बाल्हीक राज्यको समाप्त कर अपने राज्यकी स्थापना की, और इस तरह हिंदुकुशतकका भूभाग शकोंके हाथमें चला गया।

हूणोके दक्षिणी पडोसी चीनी उनसे तग आये हुये थे। हूण उन्हे दुधार गाय समझते थे, और चीनी किसान एव शिल्पी जो कुछ धन जमा करते, हूण सवार आक्रमण कर लूट ले जाते। जब हूणों-का शकोंमें भी सघर्ष हो गया, तो उनसे मिलकर एक साथ हूणोंपर आक्रमण करनेके लिये चीनने अपने एक सेनापति और महापयटक चाङ्-क्यान्को १३८ ई० पू०में शकोके पास दूत बनाकर भेजा। चाङ रास्तेमें हूणोंके हाथमें पड गया और दस सालतक उनका बदी रहा। इस वक्त त्यान् शाङ और अल्ताई पवत-मालाओके बीच इली-उपत्यकामें वू-सुन् शक रहा करते थे। किन्ही-किन्हीं विद्वानोका कहना है, कि वू-सुन् कुषाण शब्द हीका चीनी रूपान्तर है। जब वू-सुनोंने १२८ ई० पू० में हूणोसे अपनेको स्वतत्र कर लिया, तो चाङ-क्यान्को मुक्ति मिली और वह फर्गानाके रास्ते सिर तटपर खोकद नगरमें पहुचा। वह पहला चीनी यात्री था, जिसने इन देशो और निवासियोंका सुदर वणन किया, जिसका पीछेके दूसरे चीनी यात्रियोंने अनुकरण किया। चीनने यू-ची सरदारोंसे मिलकर उन्हें चीनके सहयोगसे पश्चिमकी तरफसे हूणोपर हमला करनेके लिये प्रेरित किया। लेकिन यू-ची इसके लिये तैयार नही हुये। उन्हें अपना देश छोडे ३० सालसे अधिक हो गया था। यद्यपि वह अब भी सोग्द, तुषार और बाल्तरमें घुमतू जीवन ही बिता रहे थे, लेकिन उनके लिये नगरो और गावोंके रहने-वाले सोग्दी (ताजिक) सारी भोग-सामग्री जुटाते थे। यद्यपि चाङ शकोंको हूणोंके विरुद्ध नहीं कर सका, तो भी चीनने अपने ही बलपर एक विशाल सेना हूणोके विरुद्ध १२१ ई० पू०में उनकी भूमि (आधुनिक मगोलिया)पर भेजी। चीनियोकी भारी विजय हुई, लेकिन घुमतू जातियापर विजय टिकाऊ नही हुआ करती। पीछे फिर हूण लूट मार करने लगे। लौटते वक्त चाङ्-क्यान् फिर एक साल हूणोंका बदी रहा। उसने चीन-सम्राट्से सारी बात सुनाते हुये जे-नुआनके रास्ते भारतसे सबध स्था-पित करनेके लिये कहा। चीन-सम्राट्ने फिर उसे इली-उपत्यकाके वू-सुन् शकोंके पास साथ मिलकर हूणोपर आक्रमण करनेकी बात करनेके लिये १२१ ई० पू०में भेजा।*

*देखो जिल्द १, हूण भी।

साथ-साथ यू-चियोने भी अंतमें (चाङ-क्यान् की मृत्युके दो वर्ष बाद) चीनकी अधीनता स्वीकार की। यही समय है, जब कि शक-राजाओंने चीनी उपाधि 'देवपुत्र' धारण की।

माउ-दुन्से परास्त यू-चियोने लोबनोरके तटको छोड भागकर वाख्तरके ग्रीक-राज्यको हाथ-में ले लिया था, लेकिन वह उतने हीसे सतुष्ट नही हुये। सीस्तान (उन्हींके नामसे शकस्तान) और बिलोचिस्तान होते ११० ई० पू०में सिंध पहुचे, फिर धीरे-धीरे समुद्र-तटके भागपर अधिकार करते ई० पू० ८० में तक्षशिला और गाधारके स्वामी बन गये, और उन्होंने एक शताब्दीमे जड जमाये यवन-राज्यका उच्छेद कर दिया। इससे पहले ८७ ई० पू० में यू-ची काबुलको भी ले चुके थे। यू-ची सरदार मोग भारतका प्रथम शक राजा था। ११०-८०ई०तक गुजरातभी शकोंके हाथमे चला गया था। ६० ई० पू०तक मथुरामें भी शक-क्षत्रपी कायम हो गई। मोग (Maus) की मृत्यु ५८ ई० पू०मे हुई, जिसके बाद शकोंके भिन्न-भिन्न कबीलोमें झगडा हो गया और राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। तब शकोंके कुषाण कबीलेके यवगू (सरदार) कजुल कद्फिस् I की शक्ति बढी। उसने हिंदुकुश पार हो वाख्तर और तुषारपर भी अधिकार कर लिया। कजुलके पुत्र वीम कद्फिस् द्वितीय (७५-७८ ई०), ने सारे उत्तर भारतको जीता। इसीका पुत्र 'बसीलेउस् बसीलेउन् कनेर् कोस्'(राजाधिराज कनिष्क)हुआ जिसने शक-सवत् चलाया और ७८-१०३ ईसवीतक राज किया। इसके सिक्के अराल-समुद्रमे विहार तक मिलते हैं। शकोंमें यह सबसे बडा राजा था। इसे बौद्ध धर्ममें नये तौरसे दीक्षित होनेकी अवश्य-कता नही थी, क्योंकि यू-ची शकोंकी मूल-भूमि तरिम्-उपत्यकामें ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें ही बौद्ध धर्म पहुच चुका था और शक ही नही, हूण सामन्तोमें भी बौद्ध धर्मके माननेवाले थे।

शकोके भिन्न-भिन्न कबीले ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें इस प्रकार थे–(१) लोब्नोरके आसपास यू-ची, (२) इली-उपत्यकामें वू-सुन्, (३) इस्सिक्कुल् झीलके तटपर सइ-वाङ (४) ऊपरी तरिम्-उपत्यकामें—जहा आजकल काशगर्-यारकन्द् नगर हैं, —में कस या खश, (५) मध्य सिर-दरिया तटपर शक, (६) सिर-दरियाके मुहाने तथा अरालके पश्चिमी किनारेपर भी मसगेत (महाशक) रहते थे। जान पडता है, काशगरवाले कश नामी शकोंका ही एक उपनिवेश काश्मीरमें था, जिससे उसका यह नाम पडा। उधर हूण और चीनका द्वन्द्व जारी रहा। अतमें ईसवी प्रथम शताब्दीके मध्यमें हूण चीनके प्रहारसे जर्जर होकर उसकी अधीनता स्वीकार करनेको मज-बूर हुए। इसपर सारा हूण-जन उत्तरी और दक्षिणी दो भागोमें विभक्त हो गया। यद्यपि विभाजन अधीनता स्वीकार करनेके विरुद्ध ही हुआ था, किन्तु स्वतंत्रतावादियोंके लिए वह बहुत महगा पडा। चीन और अपने भाइयोंकी सम्मिलित शक्तिके सामने अब निर्बल हो गये और ७३ ई०में उत्तरी हूणोंका पश्चिमाभिमुख महा-अभियान आरम्भ हुआ। धीरे धीरे शकद्वीपसे शकोंको हटाकर वह उनकी जगह लेने लगे, लेकिन सिर-दरियाके दक्खिन उन्होने हाथ नही बढ़ाया। ३७० ई० में अराल और कास्पियन-तटपर रहनेवाले आलानोंका उन्होंने ध्वस किया—यह भी शकोंका ही एक कबीला था। ३७५ ई०में अपने सरदार बालामेरके नेतृत्वमें दोन–तटपर पहुच उन्होंने माओस्त-गत (जाट)को छिन्न-भिन्न किया। फिर द्नियेपर पहुच गार्थोका ध्वस किया। आगे भी उनका प्रभुत्व बढ़ता ही गया और हूण सरदार अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०)के समय मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक हूणों के हाथमें आ गया।

मगोलियासे आरम्भ हो मध्य-दुनाइतक पहुच गये पौने पाच सौ सालके इस भयकर हूण-तूफानने सबसे अधिक क्षति शकोंको पहुचाई, और वोल्गासे गोबीतकके शकद्वीपको शकोंसे खाली करवा लिया। सबसे आखिरमें शकद्वीप छोडकर भागनेवाले शक हेफ्ताल थे, जिन्हें गलतीसे भारतमें हूण और पश्चिममें श्वेत-हूण कहा जाता है। ३६० ई०में हूणोंके एक कबीले अवार (ज्वेन्-ज्वेन्)ने शक्ति सम्पन्न हो पश्चिमकी ओर बढना शुरू किया। इन्हींके प्रहार से उत्पीडित हो हेफ्ताल भगे और धीरे-धीरे ४२५ ई०में उन्होंने सारे मध्य-एसियाको सिर-दरिया से हिन्दुकुशतक लेकर अपने पूर्ववर्ती कुषाण-राज्यका उच्छेद किया। इनका सगठन कबीलाशाही था, कितु सरदारोंका बहुत प्रभाव था। किदार इनका प्रथम महान् नेता था। इसीके नामसे

हेफ्तालोका दूसरा नाम किदारीय हूण पड़ा। यहा यह स्पष्ट हो जाता है कि हेफ्तालो (किदारियों) का नाम हूण इसीलिये पड़ा, कि वह हूणोके शासनमे चिरनिवासके बाद वहासे भागकर आये थे। किदारका पुत्र ४५५ ई०मे श्वेत हूणोका राजा था। सभवत इसीका पुत्र तोरमान था, जिसने ग्वालियर और सागर दमोहलकको जीत लिया था। ५०२ ई०में इसकी मृत्युके बाद इसका पुत्र मिहिरकुल राजा बना। मिहिर मित्र(सूर्य)का ही प्राचीन फारसी रूप है मित्र—मित्र> मिथ्र> मिहिर। पीछे शकद्वीपियोके प्रयाससे मिहिर भी उसी प्रकार शुद्ध सस्कृत बन गया, जिस प्रकार शक द्वीपीय ब्राह्मण शुद्ध भारतीय ब्राह्मण बन गये। कुल—यह हूणी शब्द गुल या ग्युलका अपभ्रंश है, जिसका अर्थ राजकुमार या दास होता है। तोरमान ने ग्वालियरमे सूर्य–मन्दिर बनवाया था, यह उसके शिलालेखसे पता चलता है। मिहिरकुलने मगधपर आक्रमण किया था, किन्तु मगधराज बालादित्यने उसे बुरी तरह हराया। ५३२-३३ ई०के आसपास मालवाके विजयी राजा यशोवर्मा विक्रमादित्यने मिहिरकुलको हराकर उसे कश्मीरकी ओर खदेड दिया। हूण नामसे प्रसिद्ध, किन्तु वस्तुत शक मिहिरकुल अंतिम शक राजा था, जिसे भारतीय इतिहास जानता है। हेफ्तालोकी राजधानी बुखाराके पास वरख्शा में थी, जहा हालकी खुदाईमें कितने ही भारतीय शैलीपर बने भित्तिचित्र मिले है।

हमने शकोको ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीके आरम्भमें गोबीसे कारपाथिय-पर्वतमालातक अपने महाशकद्वीपमें बसे देखा। फिर उनकी एक शाखा यू-चीको मध्य-एसिया, तुषार, सीस्तान, सिंध, काबुल, तक्षशिला होते मथुरा और उज्जैनतक फैलते देखा। फिर यू-चीकी एक शाखा कुषाणोको कनिष्कके रूपमे अराल-समुद्रसे बिहारतक राज करते पाया और अतमें फिर तोरमान और मिहिरकुलके रूपमें शकद्वीपसे सबसे पश्चात् निकले 'श्वेतहूण' नामधारी शकोंको मगधतक धावा मारते देखा। शकोंके सबसे प्रबल जातीय देवता सूर्य थे। मिहिरकुल (सूर्यदास)का नाम भी इसी बातका परिचायक है।

शकद्वीपीय ब्राह्मणोके उद्गमके बारेमे यह सर्वमान्य कथा है कि वह शकद्वीपसे आये और सूर्यपूजा उनका मुख्य कार्य था। शकद्वीप कहां था, इसे ऊपरके वर्णनसे अच्छी तरह समझा जा सकता है—अर्थात् वह गोबीसे वोल्गा और, पश्चिम कारपाथियातक फैला शकोंका मुख्य निवास था। दक्षिणकी ओर भारततक भागकर आनेवाले शक पूर्वीय-शकद्वीपके थे।

शकद्वीपी ब्राह्मण और सूर्य-पूजाका घनिष्ठ सम्बन्ध है, इससे शक-द्वीपियोकी सारी परम्परा सहमत है। शकद्वीपी-प्रधानतावाले इलाकोमें अधिकाश सूर्य-मूर्तिया द्विभुज मिलती हैं। इनके कधेके ऊपर सिरकी दोनो तरफ सूर्यमुखीके फूल कुछ असाधारणसे जरूर मालूम होते हैं, क्योंकि भारतीय परम्परामें सूर्यमुखी फूलका कोई स्थान नहीं। लेकिन आश्चर्यकी बात तो यह है, कि सूर्यके पैरोमें दो बूट होते हैं—बूटधारी हिन्दू देवता दूसरा कोई नहीं, और, यह बूट भी घुटनोतक पहुंचते हैं। इसकी व्याख्या करते पडित लोग कहते हैं, सूर्यके चरणके दर्शनसे आदमीका अमगल होता है, इसीलिये सूर्यके पैरोको ढाक दिया गया है। परतु उसे बूटसे ही ढांकनेकी क्या अवश्यकता? और, फिर वही बूट हमें मथुरासे मिली कनिष्क-प्रतिमाके पैरोमें दिखाई पडता है। यहा कनिष्क, शक, सूर्यमूर्ति और सूर्यपूजक शकद्वीपी ब्राह्मणोका पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। साथ ही यह भी जानना कुतूहलजनक होगा, कि आज भी रूसी लोग जाडोमें उसी तरहके घुटनेतकके बूटों को पहनते हैं, जिन्हे कि हम कनिष्क और सूर्यकी प्रतिमाओंके पैरोमें देखते हैं।

इस समानताका क्या कारण है? इसके लिये आइये, हम शकद्वीपमें रह गये शकोकी सुध लें। हूणोने वोल्गासे पूरबके शकद्वीपको शकोंसे खाली करा लिया और वोल्गासे मध्य-दुनाइ (डेन्यूब) तक भी वह अपनी एक चौडी पट्टी खींचते चले गये। इन्ही हूणोंके वंशज तुर्क, उइगुर और पीछे मगोल हुए। फिर ५५७ ई०के लगभग तुर्कोंने मध्य एसियासे अवारों (हेफ्तालों)का राज्य खतमकर वहा अपना अधिकार जमाया और पीछे तो मध्य-एसियामें न शकोका नाम रहा, न आर्यवंशी सोग्दो (थोडेसे ताजिकोको छोडकर) का।

लेकिन, वोल्गासे पश्चिमकी कहानी दूसरी है। दोन और द्नियेपर तटपर जिन जातियोंका हूणोने ध्वस किया, वह शक-वशकी थीं। ईसाकी ४थी-५वी सदीमे-मध्य द्नियेपर और क्रिमिया में शकोके बहुत-से पुराने नगर-ध्वस मिले है। यद्यपि उत्तरके घने जगलोमें अब भी घुमन्तू शक पशुपाल रहा करते थे, लेकिन द्नियेपर और क्रिमियाके तटपर वह गावो और शहरोमें रहने लगे थे, और ग्रीक सभ्यतासे बहुत प्रभावित हुए थे। हूणोने अपनी ध्वस-लीला मचाकर सभ्यताकी इस प्रगतिमें बाधा डाली। ६ठी सदीमें हम पश्चिमी शकोके कबीलोमें वेन्द (वेनेत्), अन्त, स्लाव, और सरमात् नामके कबीले पाते है। अकदमिक् देर्झाविनके अनुसार इनमे पहले तीन एक ही जातिके नाम थे, और सरमात् भी शकोकी ही जाति थी। आगे चलकर पश्चिमी शकद्वीपके ये सारे शक स्लावके नामसे मशहूर हुए।

शकोकी पुरानी नगरियोकी खुदाईमे निकली चीजें भी बतलाती हैं, कि आधुनिक स्लाव उन्हींके वशज है। शकोंके रेखाचित्र, दीवार और पात्रोके अलकरण अभीतक उक्रइनके गावोमें प्रचलित है। उनके आभूषण रूसी किसानोमे तवतक प्रचलित थे, जबतक कि उनम पश्चिमी सभ्यता भीतरतक नहीं घुस गई। उनके गोखरूवाले सोनेके कुडल और हसलिया तो आजके भारतमें भी देखी जाती है। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा, हूणोंके तूफानने काकेशस और कालासागर तटसे शकोका सबध तोड दिया। अब वहा हूण कबीले पशु-चारण करने लगे। यही हूण कबीले पीछे पेचेनगा अथवा वोल्गा-तटपर वोल्गार, काकेशसके पास खजार (काजार) आदि नामसे मशहूर हुए। हूण-उपद्रवके कारण शक अपनी दक्षिणी भूमिसे ही वचित नहीं हुए, बल्कि उनका उन्मुक्त सभ्यता प्रवाह भी रुद्ध हो गया, और एक बार फिर वे केवल घुमन्तू-जीवन बितानेपर मजबूर हुए। इतना ही नहीं, इसी परिवर्तनके साथ शक या स्किक नाम भी इतिहाससे लुप्त हो गया और आगे हम अन्त, वेन्द नामवाले कबीलोको पाते हैं। अरबोके प्रभावसे जिस तरह ८वी शताब्दीमें पहुचते-पहुचते सारा ईरान और मध्य एसिया मुसलमान हो गया, इसी तरह खजार, बुल्गार आदि हूण-जातियोंने भी इस्लाम स्वीकार किया (बुल्गार आजकल चुवाश के नामसे पुकारे जाते हैं, उनका आजकलके बुलगारिया देशसे कोई सबध नहो। बुलगारियावाले स्लाव है, जब कि वोल्गावाले बुल्गार हूण-वशज)।

अभी भी रूमी ईसाई नहीं हुए थे, और बहुतसे पुराने देवी-देवताओको मानते थे, जिनमें सूर्य सबसे बडा देवता था। सूर्यके एक खास पर्वपर वे लोग घीमें पके लाल चीले उसी तरह खाते थे, जैसे बिहारमें आज भी कार्तिककी सूर्य-षष्ठीके दिन लाल ठकुआ खाया जाता है। आज भी यद्यपि उस दिन रूसी लोग मीठे चीले खाते हैं, पर अब उनमे पुराने धर्मका माननेवाला कोई नहीं है। ९वीं शताब्दीके एक अरब पर्यटकने वोल्गाके किनारे खरीद-बेंचके लिये आये रूसियोंको देखा था। वहा एक रूमी मर गया। लोगोंने लकडीकी चिता बनाई और पतिके साथ पत्नी भी सती हो गई।

आगे चलकर इन सभी शक कबीलोका स्लाव (स्क्लाव <शकल) या श्रव नाम पड गया। जिस तरह हमारे यहा उपनिषद्-कालमें सोमश्रवा आदि श्रवान्त नाम बहुत होते थे, उसी तरह स्लावोमें स्लावान्त (स्वेत-स्लाव, व्याचिस्लाव) नाम अब भी होते हैं—मोलोतोफका नाम व्याचिस्लाव है। स्लाव जाति आज दो भागोमें विभक्त है—(१) पश्चिमी स्लाव जिनमें पोल, चेक और स्लावक हैं, और (२) पूर्वी स्लाव, जो दक्षिणी और उत्तरी दो भागोमें विभक्त है। दक्षिणी स्लावोमें बुलगर, सर्ब और क्रोवात (क्रोत) सम्मिलित है और उत्तरी स्लावोंमें रूसी, उक्रइनी तथा वेलोरूसी है। पोल-चेक् भाषाओका रूमीसे उतना ही अतर है, जितना अवधीका बगलासे। दोनो एक-दूसरेकी भाषाको कुछ कठिनाईसे समझ सकते हैं। रूसी-उक्रइनी भाषाए भोजपुरी और मैथिलीकी तरहकी हैं, और रूसी-बुलगारीमें उतना ही अतर है, जितना मैथिली और अवधीमें। सारे पूर्वी स्लाव एक-दूसरेकी भाषा समझ सकते है। पश्चिमी स्लावोंके उच्चारणमें अंतर कुछ अधिक हो गया है, जिससे वे एक-दूसरेकी भाषाको सुगमतासे नहीं समझ सकते।

स्लावोमें सबसे पहले बुलगारोंने सभ्यतासे सबध स्थापित किया और ग्रीसके ईसाइयोंके सपर्क में आ ईसाई-धर्मको स्वीकार किया। छठी-सातवीं सदीमें हुगर या मजार (अत्तिलाके हूणोंके वशज)

के यलका ताडनेम बलगारोने बहुत काम किया, और वे बढते-बढते ग्रीसके पडोसी बन गये। यद्यपि उन्होने ग्रीसको सास लेनेकी फुर्सत दी, किन्तु स्वय काटेकी तरह चुभने लगे। लडाका घुमन्तुओंको पालतू बनानेके लिये सस्कृतिमें उन्नत धर्म बहुत अच्छे साधन होते हैं। बुल्गारोपर भी ग्रीसने वही शस्त्र चलाया। स्लाव जातियोका सबसे प्राचीन लिखित साहित्य बल्गारियाकी भाषामें ही मिलता है। उस वक्त पश्चिममे ईसाई-धर्म रोम और ग्रीक दो सम्प्रदायोमें विभक्त हो चुका था। दोनो सम्प्रदायों में जहा क्रिया-कलाप और मतमतान्तरका कितना ही अतर था, वहा दोनोकी लिपिया भी अलग थी। लिपिहीन असभ्य जातिया जिस चर्च (सम्प्रदाय)से धर्मकी दीक्षा लेतीं, उसीकी लिपिको स्वीकार करती है। स्लाव-जातियोमे पोल, चेक, स्लावक यानी सारे पश्चिमी स्लाव तथा पूर्वी स्लावोमें क्रोवात रोमन-चर्च द्वारा ईसाई बनाये गये, इसलिये उन्होने रोमन लिपि स्वीकार की। बाकीने ग्रीक चर्चका अनुयायी बन ग्रीक-लिपि स्वीकार की।

बुल्गारियाके ईसाई होनेका यह मतलब नही था, कि सारे पूर्वी स्लाव भी जल्दी ही ईसाई बन गये। स्लावो की मूल भूमिमें अब भी पुराने देवी-देवताओका जोर था। ये उस समय बहुत लडाके भी थे। हूणी कबीलोका जब-जब प्रहार ग्रीसपर होता, तो वह स्लावोसे मदद मागता। क्रिमियामें ग्रीक लोगो की बहुत-सी व्यापारिक बस्तिया थीं और यहा हर वक्त उनका हूण-वशज पेचेनेगोसे झगडा रहता था। अभी इन स्लावोमे राजा नही थे, कबीलाशाहीका जोर था। सारा काम जन-सभा (वेचे) कबीले का जिम्मा करता था। लेकिन जैसे-जैसे बाहरके राज्योंसे लडने-भिडने और लूट-पाटकी प्रवृत्ति बढती गई, वैसे-ही-वैसे सरदारोका अधिकार बढा।

९वीं सदीके अन्तमे एक स्वीडिश राजकुमार रूरिक् आकर उनका शासक बन गया। रूरिकके पुत्र ओलेग(९११ ई०) और ईगर(९११-५७ ई०)ने अपनी लडाकू प्रजाको खूब सगठित किया और दूर-दूरतक विजय यात्राए कीं। ईगरने काकेशसके खजारोके खान और ग्रीस (बिजन्तीन)के सम्राट दोनोको नतमस्तक किया। ग्रीकोंने उसे एक किला और बहुत सा धन क्षतिपूर्तिके तौरपर दिया, साथ ही सधिद्वारा ईगरको वचनबद्ध किया, कि तुर्की घुमन्तुओंके आक्रमणके वक्त वह ग्रीक-साम्राज्यकी रक्षा करेगा। ईगरने अपनी शक्ति बहुत बढाई। उसका पडोसियोपर बहुत आतक रहा। ईगर के पुत्र स्व्यातोस्लाव (९५७-७३ ई०)ने पिताकी शक्तिको और आगे बढाया। उसने हूणी बुल्गारोंके वोल्गा-तटवर्ती तथा उनके सबधी चेकामोंके कूबन-तटीय नगरोको लूटा, और अपने पूर्वज शकोंके खोये काला-सागर तटपर फिर प्रभुत्व जमाते हुए कियफको एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानीमें परिणत कर दिया। स्व्यातोस्लाव जब विजय-यात्रा करते (९६९-७१ ई०) दनाइ (डैन्युब)के तटपर पहुचा, तो ग्रीस-सम्राट् घबडा उठा और उसने कालासागरके उत्तरी तटके बयाबानके निवासी पेचेनेगा घुमन्तुओं और दुनाइ-तटवर्ती बुलगारोको मिलाकर स्व्यातोस्लावका मुकाबला करना चाहा। लेकिन ग्रीसको स्व्यातोस्लावके साथ सधि करनेको मजबूर होना पडा। स्व्यातोस्लाव अपने समयका महान् विजेता था। ग्रीक ऐतिहासिक उसके आकार-प्रकारके बारेमें कहते हैं—"उसका आकार मझोला, नाक उभडी हुई, दाढी भरी और लबी, शिर बिलकुल नगा, सिर्फ एक ओर कुछ छुटा बाल(शिखा)था, जो कि कुलीनताका परिचायक था। उसकी गर्दन मोटी, कधे चौडे, सर्वांग सतुलित शरीर। उसके एक कानमें दो मोतियो और पद्मराग-जटित सोनेका कुडल था।" स्व्यातोस्लावने विजयीके तौरपर गर्वके साथ बिजन्तिन (ग्रीस)की राजधानी कन्स्तन्तिनोपोलमें प्रवेश किया। लौटनेपर पेचेनेगा घुमन्तुओंने दनिप्रेपरके जल-प्रपातोंके पास धोकेसे उसे मार डाला।

स्व्यातोस्लावका पुत्र ब्लादिमिर (९७८-१०१५ ई०) पिताकी ही तरह बहादुर निकला और नतमस्तक शत्रुओको उसने शिर उठानेका मौका नही दिया। उसने अपने राज्यका विस्तार पश्चिममें बाल्तिक समुद्रतक किया और पोलो तथा लियुवानियोके कितने ही नगरोको छीन लिया। बिजन्तिनका तो वह सरक्षक ही था। जब ग्रीक सेनाने विद्रोह किया, तो सम्राट्की गुहारपर ब्लादिमिर ने जाकर उसे दबाया। सम्राट्ने पारितोषिकमें अपनी बहनसे ब्लादिमिरका ब्याह कर दिया। बिजन्तिन् दरबारकी तडक-भडक, उसके सामती विलास, कला, सगीतने ब्लादिमिरको मुग्ध कर दिया, और

९८८ ई०में उसने ईसाई-धर्म स्वीकार करनेका निश्चय किया। उसने अपनी प्रजाको हुक्म दिया, कि कल द्निपेपरजो धर्माभि-षेक (वप्तिस्मा)के लिये नहीं पहुँचेगा, वह मेरी कृपाका पात्र नहीं होगा। किसकी मजाल थी, राजाकी कृपाका अभाजन हो। इस तरह प्राय सारी राजधानी एक दिनमें ईसाई बन गई। ईसाई-पुरोहितोंने परामर्श दिया और व्लादिमिरकी आज्ञासे कियेफके सारे देवालय स्लावोंके पुराने देवताओंसे खाली हो गये। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि लोगोंने अपने हजारों वर्षोंसे चले आये धर्म और देवताओंको आसानीसे छोड़ दिया। उसके लिये कितनी ही जगह विद्रोह हुए।

कियेफके रूसोंने इस तरह अपनी प्राचीन संस्कृतिकी बहुतसी निधियोंको खोया। पुराने देवताओं-की मूर्तियों और पूजा-प्रकारोंके साथ उनके हजारों शब्द भी लुप्त हो गये। लेकिन अब उसकी जगह उन्हें एक उन्नत संस्कृतिसे संपर्क स्थापित करनेका मौका मिला, अपनी भाषाके लिए लिपि मिली, ग्रीक-साहित्य, ग्रीक-कलाके सीखनेका रास्ता खुल गया।

१०१५ ई०में व्लादिमिरके मरनेपर उसके लड़कोंमें झगड़ा हो गया और तीन पुश्तोंके परिश्रमसे एकताबद्ध कियेफ-रूस-राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। इसमें सन्देह नहीं, कि प्राचीन परम्परासे अत्यंत विच्छेद होना भी इसका एक कारण हुआ। ग्यारहवीं सदीमें रूस बहुतसे राजलोंमें विभक्त हो गया। तेरहवीं सदीके मध्यमें पहुँचनेतक छिङ्गिस् खानके मंगोल उसके पौत्र बातूखानके नेतृत्वमें पहुँचे और फिर प्राय डेढ़ सौ वर्षोंतक रूसियोंको सिर उठानेका मौका नहीं मिला। हाँ, मंगोलोंके शक्तिशाली शासनसे लाभ उठाकर मास्कोके राजुलने अपने प्रभावको बढ़ाया—मंगोलखानके कृपापात्रके तौरपर ही। तेमूरने दिल्ली लूटने (१३९८ई०)से तीन साल पहले जब (१३९५ई०) मास्कोके पास तकका धावा करके मंगोल-खान तोक्तामिश्की शक्तिको क्षीण कर दिया, तो मास्कोके महाराजुलोंको रूसको एकताबद्ध करनेका मौका मिला। यह काम वासिली प्रथम (१३८९-१४२५ई०)के कालमें आरम्भ हुआ, और उसे पाँचवें उत्तराधिकारी तथा प्रपौत्र महाराजुल (पीछे जार) क्रूर ईवान चतुर्थ (१५३३-ई०) ने पूर्णताको पहुँचाया। उसके पुत्र फेदोर (१५८४-९८ई०) के साथ रुरिक-वंशकी समाप्ति हो जाती है। लेकिन, वह अपने कर्तव्यको पूरा कर चुका था। अब रूसी रियासतें मिलकर एक ही नहीं हो गई थीं, बल्कि रूसी राज्य कास्पियनके तटपर पहुँचकर वोल्गा और उरालसे भी पूरबकी तरफ पैर बढ़ा चुका था। यह अकबरका समय था, जबकि भारतने भी देशकी एकतामें कम सफलता नहीं प्राप्त की थी।

हमने देखा, हूणोंके प्रहारके बावजूद भी पश्चिमी शक-द्वीपके रहनेवाले शक एक बार जंगलों की तरफ भागे। फिर स्लावोंके रूपमें प्रगट हो अंतमें आधुनिक रूसियों और दूसरी स्लाव जातियोंकी शक्लमें अस्तित्वमें आये, और आज भी मौजूद हैं। शकद्वीपसे भागकर पूर्वी शक दूसरे कितने ही देशोंमें बिखरने भारतके शकद्वीपी ब्राह्मणों, कितने ही राजपूतों, गूजरों, जाटों आदिके रूपमें हिन्दुओंमें मिल गये। इस सारे इतिहासपर गौर करनेसे स्पष्ट हो जायेगा, कि क्यों रूसी भाषासे संस्कृतका इतना घनिष्ठ संबंध है। यह इसीलिए कि रूसी उन्हीं शकोंके वंशज हैं, जिनके भाई-बंद आर्य पुराने कालमें आकर हिन्दुस्तान और ईरानमें बस गये, और उनका पारस्परिक संबंध वहीं नहीं टूट गया, बल्कि सहस्राब्दियां बीतनेपर फिर बहुतसे शक हिन्दुस्तानमें आये। संस्कृत और रूसी भाषाओंमें जो घनिष्ठ संबंध मालूम होता है, वह उसी पुराने संबंध ही के कारण।

स्लाव भाषा—रूसी भाषाकी संस्कृतसे कितनी समीपता है, इसके लिये शब्दकोष और शब्द-विश्लेषणको देनेसे पहिले यहाँ दो शब्द कहनेकी आवश्यकता है। यह एक मान्यता बन गई है, कि लियुवानी भाषा संस्कृतके बहुत समीप है। रामानंद और कबीरके समयतक लियुवानी लोग ईसाई धर्ममें दीक्षित न हो अपने प्राचीन धर्मपर आरूढ़ थे, उनके कितने ही देवता वैदिक देवताओंमेंसे थे। उनकी भाषाका विकास भी बहुत मंद गतिसे हुआ था। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं, कि लियुवानी भाषा रूसीकी अपेक्षा संस्कृतके बहुत समीप है। हिन्दी-युरोपीय भाषाओंके 'शतम्' और 'केन्तम्' दोनों भाषा समुदायोंमें स्लाव-भाषायें संस्कृत और ईरानीके साथ 'शतम' वंशकी हैं, जब कि लियुवानीकी समीपता 'केंतम'

से है। उच्चारण भी उसके रूसीकी अपेक्षा संस्कृतसे कितना दूर है, इसे निम्न तालिका में देखिये —

लिथुवानी	प्राचीन स्लाव	रूसी	संस्कृत
केतुरि	चेतुरे	चेतीरे	चतुर्
केत्वितम्	चेत्वरेते	चेत्वेत	चतुर्थ
भ्रोतेरेलिस्	भ्राते	भ्रात्	भ्रातृ
मोते	माति	मात्	मातृ
गुवम्	झिवे्	झिव्	जीव

रूसी भाषा स्लाव-भाषा-वंशकी पूर्वी शाखाकी एक भाषा है। पूर्वी स्लाव-भाषायें हैं—रूसी, बोल्गारी और सेर्बी। उक्रइनी और बेलोरूसी भाषायें यद्यपि अब स्वतंत्र साहित्यिक भाषायें हैं, किन्तु वह रूसीके अत्यंत समीप हैं। इसलिये तालिकामें उनके शब्द पृथक् नहीं दिये जा रहे हैं। पूर्वी और पश्चिमी स्लाव-भाषाओंका आपसका सम्बन्ध निम्न तालिकासे मालूम होगा —

पूर्वी स्लाव				पश्चिमी स्लाव		
प्राचीन स्लाव	रूसी	बोल्गारी	सेर्बी	स्लोवानी	चेकी	पोली
बेल् (था)	विल्	विल्	वियेन्	बेल्	बेलु	ब्यलु
दिम् (धूम)	धिम्	दिम्	दिम्	दिम्	दूम	दूम्
द्न् (दिन)	देन्	देन्	दन	दन	देन्	जिएन्
सन (सूनु)	सोन,सिन्	सन्	सन	सन्ज	सेन्	सेन
म्लेको (दूध)	मोलोको	म्लाकु	म्लियेको	म्लेको	म्लेको	म्लेको
ग्लवा (गल)	गोलोवा	ग्लवा	ग्लवा	ग्लव	ग्लव	ग्लोवा
स्म्रत् (मृत्यु)	स्मेर्त	स्म्रत्	स्म्रत्	स्म्र्त	स्म्र्त्	श्मिएर्ते
मृत्व (मृत्यु)	मेर्त्विइ	म्रत्व्	म्रत्	म्रतेव	म्रत्व्	मर्त्वु
प्ल न् (पूर्ण)	पोल्न	प्लन्	पुन्	पोल्न	[illegible]	पेल्नु
पत् (पञ्च)	प्यत्	पेत्	पेत्	पेत्	पे[illegible]	पिएत्स
रउका (कर)	रुका	(रका)	रुका	रोका	रुका	रेका
मेझ्दा (मध्य)	मेझ्दा	मेझदा	मेह	मेया	मेझे	मिएउजा
ज्रेम्ल्यु (ज्मा)	ज्रेम्ल्या	ज्रेम्या	ज्रेम्ला	जेम्ल्या	जेमे	जिएम्लिए

हम रूसी शब्दों* को नागरी अक्षरमें दे रहे हैं, जिसमें कुछ नये संकेतोंकी आवश्यकता है। ओ का उच्चारण रूसीमें कभी ओ और कभी अ होता है, किन्तु संदेह उत्पन्न हो जानेके डर से हमने यहां उच्चारणका विचार न कर लिखे जानेवाले अक्षर (ओ)का ध्यान रखा है। रूसी स्वरोंका ह्रस्व-दीर्घ उच्चारण ऐच्छिक है, इसलिए नागरी स्वरोंमें ह्रस्व-दीर्घको ध्रुव नहीं समझना चाहिये। रूसीमें उदात्त संकेत लगानेकी प्रथा है, जिससे उच्चारणमें ही अंतर नहीं हो जाता, बल्कि अर्थमें भी भेद हो जाता है। हम यहां उदात्त संकेतको विस्तार और दुरूहताके कारण नहीं दे सके।

*रूसी शब्दोंके संग्रहमें हमने व क म्युलर, स क बोयानुस्के कोश (रुस्को-आंग्लिइ-स्किइ स्लोवार, मास्को १९३५) के ६०,००० शब्द, तथा व फ गेतश्ताइनके कोश (मास्को १९३८)का उपयोग किया है।

परिशिष्ट (१)

रूसी शब्द-कोश

(१) शब्द

अ—अ (निधार्थ)
अजर्न—अज्वाल, ताप
आ—आह !
वेग्—वेग (दौड)
बेगत् —वेजति (दौडना)
बेग्लेत्स—त्रेगक (भगेलू)
बेग्स्त्व—वेगकत्व (भगेलुत्व)
बेगून्— वेगकत्व (भागून, भग्गू)
वेजात् —वेजति (भागना)
बेज्—विना (विना)
बेज्-वोज्निक्—वि-मगक (आनीश्वरवादी)
वेज्-वेत्रेन्निइ—वि-वातीय (विना (वायुका)
वेज्-वोलोसिइ—वि-वाल, (केशरहित)
बेज्-ग्लविइ—वि-गल (शिर बिना)
बेज्-गोलोविइ-वि-ग्रीव (शिर बिना)
बेज्-दोज्दिए—विदुह (वर्षा विना)
बेज्-दिम्निइ—वि-धूम (धूम-रहित)
बेज्-जिज्नेविइ—वि-त्र-जीवन (जीव विना)
बेज्-नोसिइ—वि-नास, (नासिका विना)
बेजो—वि (विना)
वेज-रोगिइ—विश्रृंग (श्र ग बिना)
वे र्योजा—भुज (वृक्ष)
वेस्—वि (बिना)
वेस्-प्रि-मेस्नि—वि-प्र-मिश्रण (मिश्रण-रहित)
वेस्-मेर्देच्नोस्त् —वि-हृदयत्व (हृदयहीनता, श्रद्-हीनत्व)
वेस्-स्लावियें—वि-श्रवी (कीर्तिहीन)
बेस्-स्लावेस्निइ—वि-श्रवणक (वाणी-हीन)
वेस-स्मेर्तिये—वि-मयता (अमरत्व)
बेस्-स्नेज्निइ—वि-स्नेही (हिम-हीन), स्नेह्-स्नेज (वफ)
बेस्-सो-ज्नातेल्-निइ—वि-स-ज्ञातर (चेतना-हीन)
बेस्-सोन्नित्सा—वि-स्वप्नता (निद्राहीनता)
बेस्-स्त्राशिनइ—वि-त्रास्नु (त्रास-हीनता)
बिर्युक—वृक (भेडिया)
बिस्—द्विस् (फिरसे)
बित् —भिद् (तोडना, ताडना)
बित् स्या—भिद् (ताडना, भिडना)
वत् यो—भिद् (तोडना, भिडना)
ब्लागो—मर्ग (अच्छा, आशी)
ब्लागो-दात —भगदाति (आशी-र्दान)
ब्लागो-देतेल् —भगदात् (उपकारक)
ब्लागो-देयानिये—भग दान (आशीदान)
ब्लागोइ—भग (अच्छा, सुखी, उपयोगी)
ब्लागो-प्रियात्निइ—भग प्रियत्नु, (प्रिय)
ब्लागो—रोद्निइ—भग रोघ्नु (सुजात)
ब्लागो-स्लोवेनिय—गभ-श्रवण! (मगल सुनना, आशीवचन)
ब्लागो-त्वोरीतेल्—भगत्वष्टर (उपकारक)
वोग्—भग (भगवान्)
वोगातेइ—भगत (धनी पुरुष)
वोगात्स्त्वो—भगत्व (धनाढयता)
वोगाच्—भगक (धनाढ्य)
वोगी-निया—भगिनी (भगवती)
वोगो-मातेर् —भगमातर् (भगवान्‌की मा, मरियम)
वोगो-पोची-नियेभग-पूजा
वोगो-रोदित्सा—भग-रोहिणी (मरियम)
वोगो-स्लाविये—भगश्रवणा (भगवान्‌की भक्ति, धर्म-शास्त्र)
बोगो-स्लुज़ेनिये—भगश्रूषणा (भगवान्‌की सेवा)
बोज़े मोइ—भग मे ! (मेरे भग वान्)
वोजेस्त्वो—भगत्व (भगवत् तत्त्व)
वोक्—पक्ष, वक्षशरीर-पार्श्व)
वोकोवाइ—पक्षत (शरीर-पार्श्वसे)
बोकोम्—पक्षेण (शरीरपार्श्वसे)
बोले—भूरि (बहु, अधिक)
बोलेये—भूरि (बहु अधिक)
बोल्लात् —बोल्लति (बोलना)
बोल्तोव्न्या—बोल्लति (बोलना)
बोल्तिइ—बोल्लन्त (बोलक्कड)
बोल्तून्—बोलतू (बोलक्कड)
बोल्शे—भरिश (बहुत—सा) कुस्क्या
बोल्शेविक—भरिक (बहुमतिक)

बोल्शिइ—भूरिश (अधिकतर)
बोल शे—भूरिश (अधिकतर)
बोल शिन्स्त्वो—भूरित्व (बहुमत)
बोल शोइ—भूरिश (बहुतर)
बोयाज्न—भयान (भय, आतंक)
ब्रात्—भातृ
ब्रतानिये—भ्रातृना (भाई बनना)
ब्रात्वा—भ्रातक (भैयवा)
ब्रात्स्कइ—भ्रातृकीय (भाई-चारा)
ब्रात्—भरति, हरति (लेजाना)
ब्रात् स्या—भ(ह)रति (ले जाया जाना)
ब्रेम्या—भर (भार)
ब्रोवि—भ्रू (भौं)
ब्रोव्—भ्र (भौं)
ब्रोदित—बधति (उठना, हटाना)
ब्रोस(सि)त् (स्या)—भ्रशति (फेंकना, फिकाना)
बुदुचि—भूति (होना)
बुदुश्चिइ—भविष्यति (होने वाला)
बुद्—भूति (हो सकना)
बिवात्—भवति (हो जाना)
बिक—वृप (बैल)
बिलो—भूत (भइल, भोजपुरी)
वित्—भूति (होना)
वाम्—वा (तुमको)
वामि—वा (तुम्हारे द्वारा)
वस्—व (तुम, तुम्हारा)
वश्—व
व्-वेगात्—वि-वेजति (भीतर भागना)
व्-वेदेनिये—वि-वेदना (निवेदना, भमिका)
व्-वेस्ति—विविशति (भीतर लाना)
व्-व्यज़गात-वि-वधति (भीतर बाधना)
व-ग्लुबद्—वि-गभ (हृदयमें)
व-दलेके—विदीघ (दूर)
व्-द्वोये—द्वि (दो बार)
व्दोवो—विधवा
व्दोव्स्त्वो—विधवात्व
वेदत्—वेत्ति (जनाना)
वेदेनिये—वेदना (जाना विद्या)
वेलीकान्—वरक (बडका)
वेलीकिइ—वरक (बडा)
वेलिचाइशिइ—वरेण्य (सबसे बडा)
वेर्नुत्—वतयति (लौटाना)
वेर्तेत्—वतयति (घुमाना)
वेर्तूश्का—वर्तक, (लट्टू, परेता)
वेसेन्निइ—वासतिक
वेस्ना—वसत
वेस्—स्वे (सारे)
वेतेर—वात (हवा)
वेतेरोक्—वातक (हवा)
वृज्-वेगात्—विवेजति (दौड जाना)
वेशात्—विशति (लटकना)
वयात्—वयति (फूक लगाना, फटकना, बुनना)
विवात्—भवति (वो, दीघ जीयो)
विद्—विदि (देखना, प्रकट होना)
विदेनिये—वेदना (दर्शन)
वीदेत्—वेत्ति (देखना)
विद्नेत स्या—वेन्ते (दिखाई देना)
व्-लेतात्—वि-डयति (उडना)
व्-ल्युबित्—वि-लोभति (प्रेम में पडना)
व्-ल्युबन्योन्नोस्त्—विलोभित्व (प्रेम-परायणता)
व्-ल्युब्ल्यत्—विलोभति (प्रेम करना)
व-ल्यपत् स्या—वि-लिपति (चिपकाना)
व्-माजत्—विमापति (चिपकाना)
व्-मेशातेल—विमिश्रयितर (बीचमें पडनेवाला)
व् मेशिवात्—विमिश्रति (मिलाना)
व्-नीज़—वि-नीचैं (नीचे)
व् नीज़ु—नीचैस (नीचेकी जगह)
व-निकात—(निगाह करना)
व्-नोवे वि-नव (नया)
व-नोसित्—वि-नेपति (भीतर लाना)
व्-नुत्रि—अन्तरीय (भीतरमें)
वोदा—उद (पानी)
वोदापाद्—उदपात
वोद्निक—उदनिक (जलकल)
वोज्—वाह (गाडीका बोझ)
वोज्—बुदित्, वोज्-बुज्दात् } वि-बोधिति (जगाना, तेज करना, बढाना)
वोज्-वेदेनिये—विबोधना (यशोगान करना)
वोज़-व्रात्—वतति (लौटाना)
वोज्-विसिल्—वि-विशति (उठाना)
वोज़ित्—वहति, वोहित (लेजाना)
वोज्का—वाहक (गाडी ढोना)
वोज़ोक्—वाहक (ढोनेवाले)
वोज़ोपित्—वि-हवति (पुकारना
वोज्-रादोवात स्या—वि-राधति (आनन्द मनाना)
वोल—वैल (बैल)
वोल्क—वृक (भेडिया)
वोलोस्—वाल (केश)
वोलचोनोक—वृक शाव (भेडियेका बच्चा)
वोप्रोस्—वि-प्रश्न (प्रश्न)
वो-प्रोमित्, वो प्रोसान् } वि-पृच्छति (पूछना)
वोर—हार (चोर)
वोसेम्—अष्ट (आठ)
वोसेम-न-देस्यत्—अष्टादश (अठारह)
वोसेम-देस्यत—अशीति (अस्सी)

वोम्-पोल्नित्–विपूर्णयति (अदर भरना)
वोस्-सेदात् —वि-सीदति (बैठना)
वोम्-स्तवात्–वि-स्थाति (विद्रोह में उठ खडा होना)
वोस्-ख्वलेनिये–वि-स्वरति (प्रशसा करना)
वोत्–वत् (यहा, हा)
व् पदात् –विपतति (गिरना)
व्-पिवत् –विपिवति (पीना)
व्-प्लाव् - वि-प्लाव (तैरना)
व्-प्लिवात् -वि-प्लवति, (भीतर तैरना, नौयात्रा करना)
व्-पोल्ने- वि-पूर्ण (पूर्णतया, सारा)
व्रात् –भ(ह)रति (लेटना)
व्-रेजात् –विरेजति (रेज़ीदन्-फ़ारसी)
व्-रेजक-वि-रेजक (काटना, भीतरी काट)
व्-सदीत्–विशातयति (भीतर कुतरना)
व्-सादूनिक–वि-सादनिक (घोडे पर बैठने वाला, सवार)
व्स्यो–स्वे (सारे)
व्स् क्रिचात् –वि-क्रोशति (चिल्लाना)
व्-स्लुख्–वि-श्रू (जोरसे बोलना)
व्-स्लूश्(इव)त् स्या–वि-श्रूपति (सुनना)
व्स्-पाचेइवात्–विपाययति
व्स्-पोइत् (पिलाना)
व्स्-प्लि (वा) त् –विप्लवति (उतराना, तिरना)
व्स्-पो-म्नित् –विप्र मनुति (सोचना, स्मरण करना)
व्-स्तवानिये-स्थापना (उठना)
व्-स्ताव्का–वि-स्थापका (अदर रखना)

व-स्तव्ल्यात्–वि-स्थापयति (भीतर डालना)
व्म्-व्याखिवात् –वि-श्रासयति (हिलाना)
व्-तिकात् –वि-टीकति (टिकाना भीतर डालना)
व्-शि(वा) त्–वि-सीव्यति (सीना)
वि–व (तुम
वि-वेगात् वि-वेजति (दौडना)
वि-वेज़ात्
वि-बिवात् –वि-भवति (मार गिराना)
वि-बिरात् –वि-भरति (चुनना)
वि-बोर–वि-भर (चुनाव)
वि-ब्रोर्का -विवरक। (चुनना)
वि-ब्रासिवात्–वि-भ्र शयति (फेंक देना)
वि-ब्रोसित्–वि-भ्र शति (फेंक देना)
वि-वारिवात् वि-बालति (उबालना)
वि-वेदिवात् –वि-विंदति (पा-जाना)
वि-व्रेज्ति } –वि-वहन्ति (बाहर
वि-वोजित् } ले जाना)
वि-व्यजात् –वि- वधति (बाधना, गूथना)
वि-इग्रात् –वि-क्रीडति (जोतना, खेलना)
वि-गोवारिवात् –वि-गवति (बोलना)
वि-दबित् –वि-दावति (दाबना)
वि-दिरात् –वि-दारयति (बिदारना, फाडना)
वि-ज़िताव् –वि-छिनत्ति (काटना)
वि-ज्ञोव् –वि-हृवि (पुकारना)
वि-कज़ात् –वि-काशवति खिलाना)
वि -कपिवात्–वि-कल्पि (खोदना)
वि-क्लिकात् –वि-किलकति (चिल्लाना)

वि-मिरानिये –वि-मरण (मरना)
वि-नुदित् –विनोदयति (जोग-डालना)
वि-पाद्–वि-पात (भीतर डालना घुसेडना)
वि-पदेनिये–वि-पतना (गिरना)
वि-पिलिवानिये–वि-पीडना (चीरना)
वि पिसात्–वि-पिंशति
वि-पिसिवात्– ,, (लिखना)
वि-पोल्नेनिये–वि-पूणना (पूरना)
वि-रेज़ेनिये–वि-राजना (प्रकाशन)
वि-रुगात् –(रिगाना, गाली-देना, चिढाना)
वि-स्लुशात् –वि-श्रूपति (खब सुनना)
वि-स्तवका-वि स्थापका (प्रदर्शन)
वि स्तुपात् –विस्तोति (बोलना)
वि- सुशिवात्–वि-शुष्यति (सुखाना)
वि-सिपात् स्या–वि-स्वपिति (खूब सोना)
वि-सिखात् –वि-शुष्यति (सूखना)
वि-तिरात् –वि-तिरति (झाडना पोछना)
वि-त्योचिपात्–वि-तक्षति (आकार काटना)
वि-तोपित्-वितपति (गमकरना)
वि-त्यसात्-वि श्रासमति (हिला देना)
वि- त्रिखात्–तृष
वित् –भिद् (काट गिराना)
वि-यनुत्स्या–वि-तनोति (फैलाना)
वि-ठब्नेनिक्–त्रि -श्रावनिक
वि-उचार् (शिक्षित)

वि-चितात् –वि-चितयति (पढना)
वि-श्चुपात् –वि-छुवति (छूना)
व्यज न्का–वधका (बोझवाधना)
व्यजात् –वधति (बाधना)
गदाल्का–गदका (भाग्य भाखना)
गदानिये–गदना (भाग्यभाखना)
गलेरा } -(गली, गलियारा)
गलेर्का }
गर्–ज्वर (जलन)
गल्-स्तुक्–गल-बधनी (टाई)
गृदे–कुत्र (कहा)
गेइ–हे (संबोधनार्थ)
गिर्या- गुरु (भार)
ग्लवा–गल (शिर)
ग्लवाव्–गलक (सरदार)
ग्लोतात् –गिलति (निगलना)
ग्लोत्का–गल (कठ)
ग्लुबीना–गर्भीणा (गहराई)
ग्लुबोकिइ–गर्भिक, गभीरक (गहरा)
गोवोर् (गवार्)–गवति (बोलना)
गोवोरित् (गवरित्)–गवति (बोलना)
गोव्यादिना (गव्यादिना)–गव्यादनीय (गोमास)
गोलोवा (गलवा)–गल (शिर)
गोलोस्-गलक–(स्वर)
गोलिइ–नग्न (नगल)
गोरा (गरा)–गिरि (पहाड)
गोरेल्का ज्वरक (ज्वालक, वनर)
गोरेनिये (गरेनिये)–ज्वरणा (जलना)
गोर्लो (गर्लो)–गल (कठ)
गोर्किइ (गर्की)–ज्वर (जलनवाला, कडआ)
गोर्युचिये (गर्युचिये) ज्वरक (जारन, इधन)
गोर्याचिइ (गर्याची)– ज्वलक (गम)
ग्रब्योज्–ग्राम (ह)क (लूटनेवाला)

ग्रवीतेल्–गृभी (ही) तर् (लुठक)
ग्रेन् –ज्वलन (गर्माना, तपाना
ग्रीवा –ग्रीवा (गदन)
ग्रोजित् –कु यति (धमकाना)
गुबा –जिह्वा (ओठ)
गुबित् –क्षुभति (नष्ट करना)
दवात् –दाति (देना)
दविलो (दाबल, भार, दबाव)
दवित् – (दाबत, दबाना)
दव्का–दाबक (दबाव)
दालेये–दूर
दाल्योकिइ–दीघक (दूरका)
दालेको–दीघक (दूरका)
दाल् –दीर्घ (दूर)
दाल् नि–दीघ (दूर)
दाल्नो-विदेनिये–दीघवेदना (दूरदर्शक)
दाम्का–दामा (राजा, रुद्रदामा)
दान्निइ–दान (भेंट, दिया)
दात् –दान (भेंट)
दार्–दान
दरेनिये–दान (दान देना)
दरोवानिये–दान (दान देना)
दरोवोइ–दान (भेंट)
दात् –दाति (देन)
दावा–दान
दयानिये–देय
द्वा–द्वौ (दो)
द्व-द्त्सत् –द्वाविंशति (बीस)
द्वाजिद–द्वि (दोबार)
द्वेना-द्त्सत् –द्वादश (बारह)
द्वेर्नोइ–द्वारीय (द्वार)
द्वेर् –द्वार
द्वे-स्ति–द्विशत (दो सौ)
द्विगात् –वेगति (चलना)
द्वोये–द्वौ (दो)
द्वोइत् –द्वितयति (दूना करना)
द्वोइका–द्विक (जोडा)
द्वोर्–द्वार (आगन)
द्वोरेत्स–द्वारक (महल, दर्बार)

द्वो्यानि–द्वारीय (राजाबाबू)
द्वोयु-रोद्निइ–द्विरोधनीय (चचेरा भाई)
देवेर्–देवर
देवा–देवी (कुमारी)
देवित्सा–देविका (कन्या, चेरी)
देव्का–देविका (कन्या, षोडशी, श्यामा)
देवोमातेर् –देवमातर् (कुमारी मरियम्)
देवोच्का–देविका (बच्ची)
देवस्‌वेन्निक्–देवत्विक (ब्रम्हचारी)
देव्चका–देविका (कन्या)
देवुश्का–देविका (कन्या, कुमारी)
देव्चाता–देविका (कन्या, कुमारी)
देद्–पितामह (दादा)
देद्,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देदुश्का–पितामह (दादा)
देदुश्का,-प्रे-,–प्रपितामह (परदादा)
देका-द्निक–दश-दिनक
देलत् –दारयति (करना)
देलित् –दरति (विभाजित करना)
देलो–दर, घर, धम (काम)
देन् –दिन
देरेवा–दारु (वृक्ष)
देरेवत्सो–दारुक (छोटा वृक्ष)
देर्झाव्–दृहति (शक्ति)
देर्झानिये–दृहना (रोकना, थामना)
देर्झातेल् –दृहितर् (थामनेवाला)
देर्झात् –दृहति (थामना)
देस्यत् –दश (दस)
देस्यातिइ–दशम (दसवा)
देस्यत्का–दशक (दस)
दे (वा) त् –धाति (रखना)
देयातेल् –धातर् (कर्ता, चाकर)
दृलिन्ना–दीर्घ (लंबाई)
दृलिन्निइ–दीघ (लंबा)

द्नेब्निक्–दैनिक (डायरी)
दो–तावत् (तक)
दो-वावित् –तावद् भवति (जोडना)
दो-बूदित् –तावद्-बुध्यति (जागना)
दो-गोवोर् (दगवार्)–(समझौता)
दोदात् –ददाति (जोडना, बढाना)
दो-एदात् –तावद् अत्ति (खा डालना)
दोएनिये–दुहति (दूहना)
दोझ्द–द्रुहति (बरसना)
दो-झि(वा)त् –तावद् जीवति (तबतक जीना)
दो-ज्वोनित् स्या–तावद् ध्वनति (द्वार पर ध्वनि करना)
दो-ज्न(वा) त्स्या –तावद् जानाति (जानना, चाहना)
दोइत् –दुहति (दूहना)
दोइनिक्–दुहनिक (दूहनीबतन)
दो-कज़ात् –तावत् काशति (प्रकाशना)
दो-कुदा–कुत्र यावत् (कहातक)
दोल्गिइ–दीर्घ (दूर)
दोलेये–द्राघीय (दीघतर)
दोलिना (दलिना)–द्रोणी, (उपत्यका, दून)
दोल्-शे–द्राघीयस् (दूरतर)
दोम्–दम (घर)
दोम्ना–घ्मक (भट्ठा)
दोच् (का)–दुहितर् (पुत्री)
द्राज़्नित्–त्रासयति (चिढ़ाना)
दात् –दरति (चीरना)
द्रात् स्या–दरति (लडना)
द्रोवा–दारु (ईंधन, लकडी)
दुनुत् –धुनोति (फूकना, हवा देना)
दुर्नेत –दुर् नीति (कुरूप होना)
दुर्-नोइ–दुर् (बुरा)
दिम्–धूम (धुआ)
दिरा–दरी (छिद्र, चीर)
द्याद्या–दादा (चाचा, मामा)
द्यादेन् का–(चाचा, मामा)
एदा–अद (भोजन)
एदोक् (एदक्)–आदक (भक्षक)
एझे-गोद्निक्–एकवार्षिक (वषपत्र)
एझे-देकाद्नो–एकैकदशदिन (प्रतिदशाह)
एझे-नेदेल् निक्–एकैकसप्ताह (साप्ताहिक)
एस्त् –अस्ति (हैं)
एस्त्–अश्नोति (खाना)
एस्म् –अस्मि (मैं हू)
एस्तेस्त्वो–अस्तित्व, (स्वभाव,) द्रव्य)
एस्त् –अत्ति (खाना)
एखात् -एगति (हटाना, चढना, जाना)
झार–ज्वल (जलन, तपन)
झारा–ज्वाला (तपन, गर्म)
झरेनिये–ज्वलन (जारना, भूजना, तलना)
झरेन्निइ–ज्वलित (जारी, भुनी, तली)
झार्किइ–ज्वालक (गरम, मुस्तैद)
झे –हि (किंतु, और)
झे वानिये–चर्वणा (चबाना, जेंवना)
झ्योल्तेन्किइ–हरितक (पीला-सा)
झे ल्तेत्–हरितामति (पीला करना)
झे ल्तोक्–हरितक (अंडे का पीला)
झे ल्तिइ–हरित (पीला, जर्द)
झे ना–जनि (स्त्री)
झे नित् (स्या)–जनीयति (व्याहना)
झे नित्बा –जनितव्य (व्याह)
झे निख्–जनिक (वर)
झे योन्का–जनिका (वधू)
झे नोल्युबिविइ–जनिलोभी (स्त्रीप्रेमी)
झे न्स्किइ–जनिका (स्त्री)
झे नुश्का–जनिका (मेहरिया)
झे न्श्चिना–जनि (स्त्री)
झे र्त्वा–ज्वलत्व (यज्ञ)
झे च् –दह, धक्ष, दाग (जलाना)
झि व्–जीव (जीता, जिंदा),
झिवितेल् निइ–जीवयितर् (जीता)
झिवोइ–जीव (सजीव)
झि वो.नये–जीवन्त (प्राणी, पशु),
झिवुश्चिइ–जीवक (जीता)
झिव्चिक्–जीवन (जीवटवाला)
झिव्-योम–जीवक (जीता)
झिज़न–जीवन (ज़िंदगी)
झिलित्स–जीवस्थ (निवास-स्थान)
झिलोइ–जीवल (बसल, बसा)
झितेल्–जीवितर् (रहनेवाला)
झितिये–जीवन (जीवन-चरित्र, जीवन)
झिवु –जीवति-(जीना, रहना)
ज़ा–पश्चात्, आ, ता (बाद, आगे)
ज़ा-विरात् –आ-भ(ह)रति (ले जाना)
ज़ा-ब्रोलतात् –आ-ब्रोल्लति (बहुत बोलना)
ज़ा-ब्रसिवात् –आ-भ्रशति (फेंकना)
ज़ा-ब्रात् (स्या)–आभ(ह) रति (ले जाना)
ज़ा-बोसत् –आ-भ्रशति (फेंकना)
ज़ा-विवात् आ–भवति (भूलना)
ज़ा-वर्नोइ–आ-वारित (उबाला)
ज़ा-वेदेनये–आ-वेदना (उच्च-शिक्षणालय)
ज़ा-वेर्तेत् (स्या)–आवर्तति (घूमना, फिरकना)
ज़ा-विदेत् –आ-विदति (देखना)
ज़ा-वाज़िन्–आ-वहति (लेजाना, खींच ले जाना)

जा-व्यज्का—आ-वधक (वधन)
जा-व्यज़िनात्—आ-वधति (बाधना)
जा-गार्—आ-ज्वल (धूपमें जला)
जा-ज्लाविये—अ-गल (उपाधि, पदवी)
जा-गोरानिये—आ-ज्वालन (आतपतप्त, भरा)
जा-गोरेन्निइ—आ-ज्वल (धूपमें जला)
जा दाचा—आ-द न (समस्या)
जा-दोतोक्—आदत्त, आधत्त (रखना, निधि)
जा-द्रात्—आ दरति (भेड़ियेका भेड़ खा जाना)
जा-एदात्—पश्चाद् अत्ति (पीछे खाना)
जा-झियानिये—पश्चाद् जीवन (घाव पूरना)
जा-झिवो—यावज्जीव (जीवन-भर)
जा-झिगाल्का—जाज्वलक (सिगरेट जलावक)
जा-काज्—आ-काश (आज्ञा)
जा-कोनो-दातेल्—०धातर्—दातर् (विधाता, दाता, कर्ता)
जाल्—शाल, हाल
जाला—शाला
जा-लिज़ात्—आलिहति (चाटना)
जानिमात्—आ-जानाति (पढ़ना)
जा-मेर्न—मृत (मरा)
जा-मोरित्—मरति (भूखा मरना)
जा-ओब्लाच्निइ—आ-अभ्रक (बादलोंसे परे)
जा-पद—पश्चात्-पद (पश्चिम)
जापिस्—आपिश (अभिलेख)
जा-पो-वेद्—आ-प्र-वेद (आना, विधि)
जा-प्रोस्—आपृच्छ (पूछना)
जा-रेज़ (इब)ात्—आ-रिहति, आ-रेतति (हनन करना)
जा-रेकात् स्या—आ-रेचति (त्यागना)
जा-रुबात्—आ-रुभति (कुठार से गढ़ना)
जा-सद्का—आ-सीदना (बैठाना, बीज बोना)
ज.-स्वेतित्—आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
जा-सुखा—सूखा (जल-अकाल, सूखापन)
जा-सुशेन्नेइ—सुखान (सख गया)
जा-सिखात्—आ-शोषयति (सूख जाना)
जा-ताल्वित्—आतपति (आग जलाना)
जा-तेम्नेनिये—आ-तमना (अंधकार करना)
जा-तिखात्—आतुष्यति (शांत होना)
जा-तोपित्—तोपना (जहाज डुबाना)
जा-तुमानित् स्या—आ-धूमति (अंधेरा होना)
जा तुखानिये—आ-नो ायति (बुझाना)
जा-शिपेत्—आ-शपति (सिसकारना)
ज्वानिइ—ध्वनीय (पुकारा गया)
ज्वेनेत्, ज्वोनित्—ध्वनति (घंटी बजाना)
ज्योनोक्—ध्वनक (घंटी)
ज़ेवात्—जमति (जम्हाई लेना)
ज़ेलेनेत्—हरितायति (हरित होना)
ज़ेलेन्नोइ—हिरण्य (हरा)
ज़ेल्योनिइ—हरित (हरा)
ज़ेलेन्—हरित (जद, हरा)
ज़ेम्लेवेदेनिये—ज्मावेदना (भूविद्या, भू-गोल)
ज़ेम्ल्या—ज्मा (भूमि)
ज़ेम्ल्याक—ज्माक (देश-भाई)
ज़ेम्ल्यानिका, ज़ेम्ल्यान्का—ज्मालिका (स्ट्राबरी)
ज़ेम्नोवोद्निइ—ज्मोदकीय (जल-थलका जीव)
ज़ेम्नोइ—ज्मानीय (भूमीय)
ज़िमा—हिम (जाड़ाऋतु)
ज़िमोवानिये, ज़िमोव्का—हिमानना (जाड़ा बिताना)
ज़िमोइ हिमीय (जाड़ा, हेमन्त)
ज़्लातो—हरित (सोना)
ज़्लित्—हेति (सिहराना, चिढ़ना)
ज़्नाकवात्—जानाति (जानना)
ज़्नाक—ज्ञानक (चिह्न)
ज़्नाकोमित्—जानापेति (परिचय करना)
ज़्नाकोम्स्त्वो—जानकत्व (परिचय, ज्ञान)
ज़्नाकोमया—जानक (परिचय)
ज़्नामेनिये—जानना (चिह्न)
ज़्नामेनितोस्त—ज्ञानित्व (प्रसिद्धि)
ज़्नामेनोवात्—जानापेति (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज़्नात् निइ—ज्ञान (प्रसिद्ध)
ज़्नात्नोस्त्—जातीयत्व (कुलीनता, सामन्तता)
ज़्नातोक्—ज्ञाता (जज, विशेषज्ञ)
ज़्नात्—जानाति (जानना)
ज़्नाचेनिय—जानना (महत्त्व, अर्थ)
ज़्नाचितेल्—ज्ञातर् (जानने वाला)
ज़्नाचितेल्नोस्त्—ज्ञातृत्व (महत्त्व)
ज़्नाचित—जानाति (जानना, अर्थ लेना)
ज़ोव्—हव (पुकार, निमंत्रण)
ज़ोलोता—हरित, जद (सोना)
ज़ोलोताइ—हरितीय (स्वर्ण-मुद्रा)
ज़ुब्—जिह्वा, जबान (दांत)
ज़ुबोक्—जिह्वक (छोटा दांत)
ज़्यात्—जामाता, दामाद

इ—च, अ (और, अपि)
इबो—इव (जैसे, लिये)
इगो—युग (जुआ)
इदृति -एति (जाना, आना)
इज—अत्, अज्‌ (से)
इज्-ब्रानिये—आ वरणा (चुनाव)
इज्-ब्रात् —आवरति (चुनना)
इज्-दवात् — (प्रकाशन)
इज् दानिये—(सस्करण)
इकात् —हिक्कति (हिचकियाना)
इस्-पोल्नेनिये—आपर्णना (पूरा करना)
इस्-पोल्निनेल् —आ-पूर्णयितर् (पूरा करनेवाला)
इस्-प्राझ्नियॆ—अपराजयना (दोप, खाली करना)
इस्-प्राशिवात् —आपृच्छति (मागना, पूछना)
इस्-स्यकात् — (सेंकना,सुखा देना)
इस्-तोपित् — (तोपना)
इतक्-इतिक (ऐसे, तैसे, और)
इत्ति-एति (जाना, चलना)
इख्— (इसका)
क— (को, से, लिये, प्रति)
कज़ात् स्या—काश्यते (प्रका-शित होना, दिखाई पडना)
काक्-कय (कैसे, जैसे, यथा)
ककोइ—कय (किस भातिका)
कनोव—खनुवा, कंदन् (खाई)
करात् —कारयति (दड देना, सासत देना)
केमु—केन (किसके द्वारा)
कोये—कहा (कहीपर)
कोझा—कोश (चमडा)
कोइ—क (कौन)
कोमु (कमु)—कम् (किसको)
कोलेसो—चक्र, चर्ख (पहिया)
कपानिये—कापना (खोदना)
कोपित् (कपित्) -गोपायति (रक्षा)
कोरोचे—क्षुद्र, खुद (जटा)
कोचान्—गुच्छ (गोभी फूल)
क्रसित् —कृषति (अलकार करना, रगना, चित्रित करना)
क्रस्नेत् —कृणोति (लाल करना)
क्रन् —ग्रसति (चुराना)
क्रिचात् —क्रोशति (चिल्लाना)
क्रोव् —कुभा (गुहा, छत, घर)
क्रोव् —क्रव्य (रुधिर)
क्रोइका—कृन्तन (काट डालना)
क्रोइत् —कृन् (कटाना)
क्रुग्—चक्र (चर्ख—फारसी), गोल
क्रुझित् स्या—वक्रीयते (चक्कर काटना)
क्रुझोक्—चक्रक (वृत्त)
क्रित्—कृनी (ढाकना)
क्तो—कतर (कौन)
कुवोक्—कुभक, कुप्पक (प्याला, गिलास)
कुवशिइ—कूपिका (लोटा)
कुदा—कदा (कहा)
कुर्तका—कुर्ता
कुसात्—कुस (काटना)
कुचा—गुच्छा (समूह, ढेर)
कुचूका—गुच्छक (छोटी ढेरी)
कुशात —ग्रसति, घसति (खाना)
लजित् —लघति (लाघना)
ल्योग्किइ- लघुक (हल्का, आसान)
लेग्को—लघुक (हल्का,आसान)
लेग्चे—लघीयस् (आसानतर)
लेझात्—लेटना
लेन्यइका—लेनक (आलसी)
ल्योत्—डयन (उडन)
लेतात् —डयति (उडना)
लेतो—ऋतु (ग्रीष्म)
लिज़ानिये—(चाटना)
लिज़ात् —लिहना (चाटना)
लिप् किइ—लेपकी (चिपकना, उलझना)
लिप्नुत्—लिपति (लगाना, चिपकाना)
लोब्ज़ानिये—लोभना (चूमना)
लोबिज़ात्—लोभति (चूमना)
लोवित् (लवित्) —लोभति (लुब्धक, कमाना, शिकार करना)
लोव्ल्या—लोभाना (शिकार करना)
लोवुश्का—लोभका (जाल, फसाव)
लोवचिइ—लोभिक, लुब्धक (शिकारी)
लोद्का—रोधका (नाव)
लोदि रुद्र (लदभेसर,आलसी)
लोझित् स्या—लोटत (लोटना, गिरना)
लोपत् स्या (लोप्नुत्)—लोपत (तोडना, फोडना)
लुच्—रोचि (किरण)
लुच्शे—रोचीय (बेहतर)
ल्युबिनेल् —लोभितर् (कुत्ता शिकारी)
ल्युबित् —लोभति (प्यार करना)
ल्युबोव्—लोभ, लभ (प्यार)
ल्युबोव्निक्—लोभिक (प्रिय, प्रेमी)
ल्युब्याश्चिइ—लोभीय (प्रेमी)
ल्युद्—रोध (लोग, जनता)
माज़त् (माज़नुत्)—मापत (माखना, माजना)
मज़्न्या—माषना (तेल माखना, माजना)
मज् —माप (माखना, माजना)
मस्लो—मसका (मक्खन)
मातृका—मातृका (माता)
मातुश्का—मातृका (माता)

मत्–मा (माना)
मखार्–महति, मिहति (मापन, हिलाना)
म्योद–मधु (शहद)
म्योद्रेद्–मव्वद (भाल)
मेद्निड–(ताकि)
मदारनिक–माध्वीक (अमृतीय, मधुर)
मदोक–मधूक (अमृत, मदिरा)
मेद–मधु (तावा)
मेझ, मेझद } –मध्य (वीचमें)
मया–मे (मुझ)
मेरेत्–मरति (मरना)
म्योर्त्विइ–मृत (मरा)
मेस्त्म–मास (महीना, चन्द्र)
मेतिज्–मति (चिह्नित करना, लक्ष्य करना)
मेशात्–मिश्रयति (मिश्रित करना)
मिगातिये–मलकाना
मीलोस्त्–मेल (कृपा, अनुकंपा)
मीलोच्का–मिलक (मेली, प्रिय)
मीलिइ–मेत्री (मधुर, दयालु)
मने–मे (मुझे)
म्नेनिये–मनन (विचार, मनन)
म्नित्–मनुते (सोचना)
म्नोगो–महा (बहुत, बड़ा)
मोइ, मोयु–मया (मेरे द्वारा)
मोगवेस्त–महत्त्व, महिष्ट (शक्ति)
मोगूचिड–महान् (शक्तिशाली)
मोयो, मोइ–मे (मेरा)
मोइका–मोक्षत (भोजपुरी) (धोना)
मोल्निया (मल्निया)–विद्युत् (मेघकी)
मोलीत–मदति (पीनना)
मोलोत्वा–मर्दन (दवना)
मोरित–मरत (भूखे मरना, मारना)
मोचा–मूच (पेशाब)
मोचित्–मेहति (भिगोना, नम करना)
मूझ–(मनुष्य, पति)
मुरायद–मूर (फारसी), चींटी भक्षक
मुखा–मक्षी, मगस (फा०) (मक्खी)
मुश्का–मगस (मक्खी)
मी–हम
मित्–मोइत् (धोना)
मिश्का–मूषक (चूहा)
मिश्–मूषक (चूहा)
म्यासो (म्यास)–मास
म्यत–मथनि (मथना)
न–नि, परि (ऊपर, द्वार)
नवेग–निर्वेग (दौड़, आक्रमण)
नवेलो–न अविल (परिशुद्ध साफ)
नवोर नि हार (एकत्रित करना)
नवश् (इवात्)–निवेशयति (टाँगना)
नविसात्–निवेशयति (टागना)
नवोजित्–नि वहति (ले आना ले जाना)
नव्यज् (इव) ात्–निवघति (बाधना)
नगिशोम्, नगोइ } –नग्न (नगा)
नगोलो–नग्नल (नगा)
नगोवा (रेत)–नि ज्वलति (जलना)
न रेगो–नि गिरि (गिरि पर)
नग्रवित्–नि-गृभीति (लूट लेना)
नाद्–परि, उपरि (ऊपर)
ना-दोल्गो–नि-दीघ (चिर-कालसे)
ना-एखात्–नि-एपति (आना)
न-झिनात्–नि छिनत्ति (फसल काटना)
न-काज्–नि-काश (शासन पत्र, आज्ञा)
न-लगात्–नि-लगत (ऊपर रखना, लागू करना)
न-लेगात्–निलगत (आश्रित होना)
न-लेपित्–निलिंपति (चिप काना, लेपना)
नामि–न (हमारे द्वारा)
न-पदेनिये–निपातना (आक्रमण करना)
न-पेकात्–नि-पचति (पकाना, भूनना)
न-पिवात् स्या–नि-पिवति (पीना)
न-पिरात्–नि-पीड्यति (दबाना)
ना-पितोक–निपीतक (पान)
न-पोकाज–नि-प्रकाश (दिखाने के लिये)
न-पोल्नेनिये–नि-पूरणा (पूरा करना)
न-पोस्लेदोक (न-पस्लेदक्)–नि-पश्चात्तन (पीछे, अंतमें)
न-रोद्–नि-रोध (जनता)
नोस् (नस्)–नासिका, नासा
न-सादित–नि-सादयति (रोपना)
न-स्दात्–नि-सादयति (रोपना)
न-सेदानिये–निपीदका (बहु-संख्यकोंका बैठना)
न-सेद्का–निपीदका (बैठकी)
न-स्लिश्का–नि-श्रूपका (सुनना)
न-स्मेखात स्या–निस्मयति (हँसना)
न-स्तावित्–नि-स्थापयति (रखना)
ना-सुख–नि-शुष्क (सूखा)
नाम्–न (ह...

ने—न (नहीं)
ने-ब्लागो-प्रियत्निइ—न-भग-प्रियत्न् (अशुभ, अननुकूल)
ने-वेदेनिये—न-वेदना (अविद्या, अज्ञान)
ने-वीदल्—न-वित्त (अनदेखा, अद्भुत)
ने-ग्दा—नकुत्र (कही नही)
ने-पोच्तेनिये—न-पूजना (असम्मान)
ने-प्रियातेल—नप्रियतर् (शत्रु, अमित्र)
न-प्रियत्न—न-प्रिय (अप्रिय)
ने-प्रोवद्निक्—न-प्रबोधक (बिजली-रोधक)
ने-प्रोशेन्निइ—न-प्रश्नीय (बिना पूछा)
ने-स-वेदुश्चिइ—न-सवेदीय (अज्ञ)
ने-सो-ज्नातेल्—न-स-ज्ञातर् (अचेतन, अनभिज्ञ)
नेस्ति—नेपति (लेजाना, ढोना)
नेत् / नेत्तो —नेति (नही)
ने-उच्—अन्—अनूचान (अपठित)
ने-चेगो—न-किं (कुछ नहीं)
ने-याव्का—न-आयान (अप्रकाशन)
नि—न (नही)
नि-ग्दे—नकुत्र (कही नहीं)
निझइशिइ—नीचीयस् (बहुत छोटा, बहुत नीच)
निझे—नीचैस् (नीचे)
निझ्—नीच (सबसे नीचे)
निझ्किइ—नीच (नीचे)
झनि निइ—नीचीय (नीचेका)
निज्—नीच (सबसे नीचे)
निज्ञात्—नहति (बाधना)
निज़ीना—नीचीय (निम्नस्थान, नीचा)
निज़्किइ—नीचक (नीचा, छोटा, तुच्छ)
निज़ोस्त्—नीचत्व (नीचता)
निज़्शिइ—नीचीयस् (बहुत नीचा)
नि-काक्—न कथ (किसी तरह नही)
नि ककोइ—न क (कोई नही)
नि-कोग्दा—न कदा (कभी नही)
नि-क्तो—न क (कोई नही)
नि-कुदा—न कुत्र (कही नही)
निस्—निम् (नही)
निस् पदात्—नि-पतति (गिरना)
नो—नु (किंतु)
नोवेइशिइ—नवीयस् (नवीनतम)
नोवो (नवो)—नव (आधुनिक)
नोवोस्त्—नवत्व (समाचार)
नोगोत्—नख (नर)
नोस् (नस्)—नासा (नाक)
नोसिक—नासिका (नाक)
नोसितेल्—नेष्टर् (ले जानेवाला)
नोसित्—नेपति (लेजाना, ढोना)
नोसो-रोग—नासा-शृंग (गैंडा)
नोचेव्का—निशीयिका (रात को रहना)
नोच्—निशा (रात)
नु—नु (सचमुच, हा, क्यो ?)
नुत्रो—अन्तर, अदर (फारसी) (भीतर)
ओ—अ (निषेध)
ओबा—उभौ (दोनों), अभि (उपसर्ग)
ओव्-वि-नितेल्—अभि-वि-नेतर् (अपराध लगानेवाला)
ओब्-वि-नित्—अभि-वि-नेति (दोषारोपण करने वाला)
ओव-विसात्—अभि विशति (लटकाना)
ओबे—उभे (दोनों)
ओव्-एद्—अभि-अद (भोजन)
ओब्-झिगानिये—अभिजागरण (जगाना, बालना)
ओव्लक—अभ्रक, अब्र (फारसी) (बादल)
ओवो-रोना—अभि-र क्ष (रक्षार्थ युद्ध)
ओवो-रोन्यत्—अभि-रुजति (फटकारना, रिगाना, गाली देना)
ओव्-रुगात्—अभि-रजति (रिगाना)
ओव्-ससिवात—अभि-चूषति (स्तन पीना)
ओव्-स्लुझिवात्—अभि-श्रूषति (सेवा करना)
ओवेन्—अवि (मेष, भेड)
ओव्चिइ—अविक (भेडक)
ओव्का—अविका (भेडी)
ओग्ने—अग्नि (आग)
ओग्ने-विद्निइ—अग्निविध (आग-जैसा)
ओग्ने-स्लुझेनिये—अग्नि-श्रूषण (अग्नि-पूजा)
ओग्ने-तुशीतेल्—अग्नि-तोष्टर् (आग-बुझावक)
ओगो—अहो!
ओगोन्योक्—अग्निक (प्रकाश)
ओदिन् (अदिन्)—(एक)
ओद्नो—आदि (एक बार)
ओ-झिवात्—आ-जीवति (फिर जिलाना)
ओ-झोग्—आ-ज्योति (जलन)
ओझोर—आज्वर, अजोर (जलाना)
ओको—अक्षि (आख)
ओलेन्—हरिण
ओन्—एषत् / ओना—एषा / ओनो—एनत् } यह
ओ-पिवात् स्या—आ-पीयते (पी-पीकर अपनेको मारना)
ओप्यत् (अपेत्)—अपि

ओ-प् यामेनिये—आ-पीवना (शराव पीना)
ओसादा—आ-साद (दुगवद्ध करना)
ओ-स्वेतित्—आ-श्वेतति (प्रकाश करना)
ओ-स्लुशानिये—अवश्रूपणा (आज्ञा न मानना)
ओ-स्लिशात् स्या—अवश्रूषति (ठीक न सुनना)
ओ-स्मेनिवात्—आ स्मयत (परिहास करना)
ओस्—अक्ष (धुरा)
ओस्मि-नोग्—अष्टनख (अठपैरा)
ओत्—आत् (से)
अत्-वेचात्—उद्-वचति (उत्तर देना)
ओत्-व्यजात्—उद्-बधति (बधन खोलना)
ओत्-दानिये—उद्-दान (प्रति-दान)
ओ-त्योसिवात्—आ-तक्षति (गढ़ना, पत्थर छाटना)
ओत्-झिवात्—अ-जीवति (मरजाना)
ओत्-कजात्—प्रति कथयति (इन्कार करना)
ओत्-कुदा (अत् कुदा)—कुत (कहासे)
ओत् मिरानिये—उत्-मरण (मर जाना)
ओतो—आत् (से)
ओत्-पदात्—आ-पतति (गिर जाना)
ओत्-रझात्—आ-राजते (प्रतिबिंबन करना)
ओत् तोचित्—उत्-तीक्ष्णति (तेज करना)
ओत्-तुदा—तत (वहासे)
ओख्—आह !
ओखोता—आखेट (शिकार)
ओचरोवानिये—आश्चर्य करना, जादूमें होना

ओचि—अक्षि (आख)
पा—पाद (पग)
पदात्—पतति (गिरना)
पदेनिये—पतना (गिरावट)
पाइ—पाद (भाग)
पल्का—फलक (डडा)
पार—बाष्पर (भाप)
परेनिये—परायणा (पलाना)
पास्तुख—पातुक (मेमपाल, चरवाहा)
पतेर्—पितर् (पिता)
पखात्—(जुती भूमि)
पेना—फेन
पेर्विइ—पूर्व (पहिला)
पेरे—प्र, परि, प्राग्
पेरे-विरा(ब्रा)त्—परि-भ(ह) रति (हटाना)
पेरे-वोझित्—परिवहति
पेरे-व्यज्का—परिबंध
पेरे-प्रिजात्—परि-प्रसति (काट डालना)
पेरे-देल्—परिदार (पुनर्विभाजन)
पेरे-एदात्—प्र-अत्ति (बहुत खाना)
पेरे-झिवानिये—परि-जीवना (अनुभव)
पेरे-झोग्—प्रजाग (बहुत गरमाना, दीप सजोना)
पेरे-लेजात्—प्र-लधते (ऊपर चढना)
पेरे-पइवात्—प्र-पिवति (पान-मत्त होना)
पेरे-पिवात्—प्र-पिवति (पान-मत्त होना)
पेरे-प्लिवात्—परि-प्लवति (तैर जाना)
पेरे-पोइत्—प्र-पिवति (पान-मत्त होना)
पेरे-पुत् ये—प्रपथ (चौरस्ता)
परे-रोदित्—प्र-रोहति (पुन-रुज्जीवन करना)
पेरे-रुवात्—प्र-रुभति (मारना, काटना)

पेरे सीदेत्—प्रसीदति (बैठ जाना)
पेरो—पक्ष, पर (फारसी), पख (लेखनी)
पेचेनि(न्)ये—पचना (पकाना)
पेच्का—पचक (चूल्हा)
पेचुर्का—पचक (छोटा चूल्हा)
पेच्—पच (भूनना, तलना, झुलसना)
पिव्नया—पिवनिया (मद्यशाला)
पीवा—पान (हलकी शराब)
पीला—पीडा (आरा)
पीलित्—पीडयति (चीरना)
पिसानिये—पिशना (लिखना)
पिसातेल्—पिशयितर् (लेखक)
पिसात्—पिशति (लिखना)
पित्—पीति (पीना)
प्लवानिये—प्लवना (तैराकी)
प्लाव(वि)त्—प्लवति (तैरना)
प्लावेत्स्—प्लावक (तैराक)
प्लोद—फल (सतान)
पो—प्र, परि (द्वारा, ऊपर, भीतर, को)
पो-बेग—प्र-वेग (भागना)
पो-बेझात्—प्रवेजति (भागना)
पो-ब्(वि)रात्—प्रभ (ह) रति (ले जाना)
पो-बुदीतेल्—प्र-बोधितर (भड़कानेवाला)
पो-बुदीत्—प्र-बोधति (भड़काना, उठाना, उत्तेजित करना)
पो-बेदेनिये—प्र-वेदना (प्रवृत्ति, चाल-चलन)
पो-वेसित्—प्रविशति
पो-व्योर्तिवानिये—प्र-वर्तना (घुमाना)
पो-वोज्का—प्रवहका (प्रवहण, यान)
पो-व्यज्का—प्र-बधक (सिर बद)

पो-गोलोव्निइ–प्र-गल (सरदार जेनरल)
पोद्–पद (अन्तर, नीचे)
पो-दवात्–प्रदाति (देना, भेंट देना)
पो-दारित्–प्रदाति (देना, भेंट देना)
पो-दारोक–प्रदारक (भेंट)
पो-दात्–प्रदाति (कर देना)
पो-दाचा–प्रदाक (देना, सेवा)
पोद्–वोद्नया–पद्-उदीय
पोद्-व्यजका–पद्-वधक
पोद्-भारित्–पजारत (तलना)
पो-दिरात्—प्र-दरति (चीरना, फाडना)
पोद्-तचिवात्–प्र-तीक्ष्णति (तेज करना, धार लगाना)
पो-दुर्नेत्–प्रदुर्नेति (कुरूप होना)
पो-एज्द्–प्र-एत् (ट्रेन)
पो-एजिदत्–प्र-एति (चलना, फिरना)
पो-भार–प्रज्वार (आग लगना)
पो-झार्निइ–प्रज्वारनिक (आग-बुझावक)
पो-झिरात्–प्र-जीर्यति (खा डालना)
पो-ज्योविवात्–प्र-जम्भति (जम्हाई लेते रहना)
पोज्झे–प्रहि
पो-ज्न (वा) निये–प्रजानना (ज्ञान, प्रज्ञान)
पोइत्–पिबति (पीना)
पो-इती–प्र-एति (जाना)
पो-काज्–प्रकाश (दिखलाना)
पो-कजानिये–प्रकाशना (गवाही)
पो-कुशात्–कोशीदन् (फारसी–कोशिश करना, यत्न करना)
पोल्नेत्–पूर्णति (भरना, पूरा करना)
पोल्नो–पूण (पूर्णतया, भरा)
पोल्नो-वोद्निइ–पूर्णोदिनी (गहरी नदी)
पोल्नोस्त् यु–पूर्णत्व (पूणता)
पोल्नोता–पूर्णता
पो-मज़ात्–प्र-माखत (तेल लगाना)
पो-माज्रोक्–प्र-मार्जक (झाड, ब्रुश)
पो-मेस्यच्नो–प्रतिमास
पो-नीझे–प्र-नीचै (कुछ नीचे)
पो-पदानिये–प्र-पतना (गिरना)
पो-प्लवोक्—प्रप्लावक (तिरने-वाला, काग्)
पो-पोइत्–प्र-पाययति (घोड़ों को पिलाना)
पो-पोइका–प्रपायिका (प्रपा, नौका)
पो-प्रोसित्–प्र-पृच्छति (पूछना)
पो-राझे निये–पराजयना (पराजय)
पो-रझात्–पराजयत
पो-रेज्–प्र-रिह, रेज (फारसी-काटना, घायल करना)
पो-रोदा–प्ररोह (सतान, जाति, रुधिर)
पो-रोझ दात्–प्र-रोहति (जन्म देना)
पो-सादित्–प्र-सादयति (बैठाना)
पो-सीदेत्–प्र-सीदति (थोडा बैठना)
पोस्ले–पश्चात्, पस् (फारसी)
पोस्लेद्निइ–पाश्चात्तन (पिछला)
पोस्ले-दोवातेल्–पश्चाद्-धावितर् (अनुगामी)
पो-स्लुशानिये–प्रश्रूषणा (आज्ञाकारिता, तपस्या)
पोस्-मेर्त निइ–पश्चात्-मृत्यु (पोस्टमार्टम्)
पो-स्मेशित्–प्र-स्मयत (हसाना)
पो-स्पात्—प्र-स्वपिति (थोडा सोना)
पो-स्तावित्—प्रस्तावयति (रखना, उपस्थित करना)
पो सुखु—प्र-शुष्क, खुश्क (फारसी,-सूखे मार्गसे)
पो-तुखानिये–प्र-तोपण (बुझाना)
पो-तुशित्–प्र-तुपति (बुझाना)
पोचितात्–पूजति (सम्मान करना)
पो-चिनित्–प्रचिनोति (मरम्मत करना)
पोचूतेन्निइ–पूजनीय (मान-नीय)
पो-शिव्का–प्र-सीव्यक (सिलाई)
प्र्–प्र
प्र– प्र (महा)
प्राविलो–प्रभूत
प्रावितेल्–प्र-भवितर (शासक)
प्रावितेल् स्त्वो–प्र-भवितृत्व (सरकार, राज्य)
प्रावो–प्रभु (कानून, अधिकार)
प्रावो-वेद–प्रभु-वेद (कानूनदा)
प्र-देद्, प्र-देदुष्का –परदादा
प्र-मातेर्–प्र-मातर् (जग-न्माता)
प्र-रोदितेल्–प्र-रोधितर् (पुरखा), वंश-पिता,
प्रेदो–प्रति (सामने, सम्मुखे)
प्रेद् (पेरेद्)–प्रति, प्राग् (सम्मुख, सामने)
प्रे-दातेल्–प्रति-धातर् (विश्वास-घाती, देशद्रोही)
प्रेद्-वे (वि) देनिये–प्राग्वेदना (पहिले जानना, भविष्य-दर्शिता)
प्रेद्-गोर् ये–प्रति-गिरि (पहाड़को जड, सानु)
प्रेद्-सेदातेल्–प्र-सीदितर् (प्रेसीडेंट, प्रसीदन्त)

प्रेद्-स्कज़ानिये–प्राक्-कथना (भविष्यद्-वाणी)
प्रेद्-गदात्–प्राग्-गदति (भाखना, दूर-दर्शिता)
प्रेम्द्दे–प्रागदा (पूवत)
प्रि–प्र
प्रि-वेगात् –प्र-वेजति (लेजाना, करने जाना)
प्रि वेभ्भात् –प्र-वेजति (दौड़ना)
प्रि-वोज्–प्र-वह (लाना)
प्रि–ज्नाक–प्र-ज्ञक (चिह्न, सूचन)
प्र-ज्नानिये–प्र-जानना (स्वीकारना)
प्रि–काज्–प्र-काय (आज्ञा)
प्रि-नदित्–प्र-नुदति
प्रि-न्यातिये–प्र-नीति (स्वीकार, स्वागत)
प्रि-पादोक्–प्र-पातक (आक्रमण)
प्रि-रोद–प्र-रोह (प्रकृति)
प्रि-रोस्त्–प्र-रोह (उगना, बढ़ना)
प्रि-रुचात् – प्र रोचति (पालतू बनाना)
प्रि-सोस्का–प्र-चू (शो) षक (चूसनेवाला)
प्रिसिलात् –प्रेषयति
प्रि-त्यनुत्– प्र-तनोति (तानना)
प्रि-चितानिये–प्र-चितना (शोक करना)
प्रियातेल्–प्रियतर् (मित्र)
प्रियत्निइ–प्रियत्न् (प्रिय)
प्रो–प्र (लिये, के)
प्रोवेग्–प्रवेग (दौड़ना)
प्रो-ब्लेस्क–प्र-भ्राज (प्रकाश)
प्रो-वुदित्–प्र-वुध्यति (जागना, उठाना)
प्रो-वोज्–प्र-वह (शकट, ढोने का साधन)
प्रो-दयात्–प्र-दापयति (बेंचना)

प्रो-दाझ–प्र दाक (बेंची, विक्रय)
प्रो-दाभ्रिइ–प्रदत्त (बिका)
प्रो-दिरात्–प्र-दरति (चीरना)
प्रो-प्रो-वेदिनक–प्र-प्र-वेदनिक (उपदेशक)
प्रोसित् –पृच्छति (पूछना, मागना)
प्रो सिपात् स्या -प्र-स्वपिति (जगाना)
प्रो स्पात् –प्र-स्वपिति (सो जाना)
प्रोस् बा–प्र-श्न (मागना)
प्रोतिव्–प्रतीप (विरुद्ध)
प्रो-चितात् प्र-चितयति (पढना)
प्राच् प्राच् (दूर, दूर जाना)
प्रो शि (वा) त् –प्र-सीव्यति (सीना, टाकना)
प्रोश्लोयें–पश्चा (पिछला)
पुत्निक–पथिक (यात्री)
पुत्योव्का–पथीयिका (यात्रा)
पुतेशेस्त्विये–पथिकत्व (यात्रा)
पुत् -पथ (मार्ग, सड़क)
पुन् यानित्सा–पानका (मदिरा-मत्ता)
प् यानिस्त्वो-पानकत्व (मत्तता)
पिशात् –पिशति (प्रकाशना)
प्यातोक्–पचक (पांच)
प्यत्-ना-द्त्सत् –पच-दश (पाच ऊपर दस)
प्यातो–पच (पाच)
प्यातया–पचतय (पाचवां)
प्यत् –पच (पाच)
प्यत् -देस्यत्–पचाशद (पाच-दस, पचास)
राव्–लाभ (दास)
रवोता–लाभता (काम, श्रम)
राद्–राध, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)
रादोवात् –ह्लादति (हर्षित होना)

रादोस्त् –ह्लादिन्व (खुशी)
राझ्–राग (क्रोध)
राज़ } रास् } -प्रति, —वि (विना, दूर)
रज्-बेग्–वेग (दौड़ना)
रज्-बोर–वर (चुनना, बाटना)
रज्-बुदित्–वुध्यति (जागना)
रज्-वेद्का–वेदका (खोजना)
रज-वेद्-चिक्–वेदक (ढूढने वाला, स्काउट)
रइ–रै (स्वर्ग)
रन्–रण (घाव)
रस्ति–रोहति (उगना, बढ़ना)
रत्-निक्–राति (योद्धा)
रत् –व्रात (सेना)
रुदेनिये–रोहणता (लालपन)
रेब्योनक्–ऋभुक (लड़का)
र्योव्–रव (शोर, गर्जन)
रेवेत् –रवति (शोर करना)
रेज़त्–रिहति, रेतति (काटना)
रेज़्निक–रेतक, रिहक (कसाई)
रेका–रेखा, लेखा (नदी)
रेच् –ऋक् (भाषण)
रिसोव्का–लेख, रेख (रेखांकन)
रोग्–शृग (सीग)
रोद्–रोध (परिवार, वंश)
रोदिना–रोधिनी, रोहिणी (जन्मभूमि)
रोदिनेलि–रोधितर (माता-पिता)
रोदित् –रोहति (पैदा करना, जन्म देना, फारसी, रोईदन्)
रोझात् } रोझ् दात् } रोदिन् स्या– } —रोधति (प्रसव करना)
रोझ्देनिये–रोहणा (जन्म)
रोझ्क्–शृगक (छोटी सीग)
रोस्त्–रोह (वृद्धि)
रब्का– रम्भा (काटना)

रुगात् –(रिगाना, गालीदेना, शाप देना, चिढना)
रुगान् –(गाली, देना, शाप देना, चिढ़ना)
रुसिइ–ऋषि (पिंगल, श्वेत)
रिदात् –रोदति (रोना-सिसकना)
रिझिइ–रोह, लोह (लाल)
रिचान् –ऋचति (शोर करना, चिल्लाना)
स्–स, सम् (सह, लिये, मे, ऊपर)
सद्–सद् (उद्यान)
सदिन् स्या } सझात् } —सीदति (बैठना)
साम्–स्वय
सामो –वार्-स्त्र वाल (समावार चूल्हा)
सामो ले त्–स्वयडयन (विमान)
पामिइ–स्वय
साखर–शर्करा
स्-बेगान् –स-वेगति (दौडजाना)
स्-बोर–स-वर, स-भर (सभा)
स्-त्रेदेनिये–सत्रेदना (ज्ञात, सचना)
स्-त्रेदुश्चिइ–स-विद्वस् (विद्वान्, निपुण)
स्त्योकोर– श्वशुर (ससुर)
स्त्रेक्रोवि–श्वश्रू (सास)
स्-त्रेर्ख–स्वर्ग (ऊपर)
स्त्रेत्–श्वेत (सफेद, ससार, प्रकाश)
स्वेतन् } स्त्रेतित } –श्वेतति (प्रकाशना)
स्त्रेत्लो–श्वेतल (प्रकाशमान)
स्त्रेतोच्–श्वेतक (मशाल, दीपक)
स्-विदानिये—स-विदना (मिलना)
स्-विदेतेल् –स-वेत्तर् (गवाह)
स्योयो } स्वोइ } –स्वीय (अपना)

स्त्रोइस्त्रो– स्त्रीयत्व (गुण)
स्त्रोयाक्–स्त्रीयक (बहनोई)
स्-व्यजका–स-बधक (मुट्ठा)
स-व्यज्.–स-वध (बधन)
स्–देर्झात् –स-दृहति (पकडना)
सेबे } सेत्रे } सेम्या } —स्वीये (अपने लिये)
सेगो-द्नया–स्वक-दिन (आज)
सेदेत् –श्वेतति (बाल सफेद होना)
सेदोइ–श्वेत (सफेद बालवाला)
सेइ } सिया } सिओ } –स (यह)
सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात सौ)
सेम्-ना-द्त्सत् –सप्त-दश (सात ऊपर दस, सत्रह)
सेम्–सप्त (सात)
सेम्–देस्यत्–सप्त–दशत् (सत्तासी)
सेम्-सोत्- सप्त-शत (सात सौ)
सेर्द्त्से–श्रद, हृत् (हृदय)
सेस्त्रा–स्वसर् (बहिन)
सेस्त् –सीदति (बैठना)
सिदेन् –सीदना (घर बैठना)
सिदेन् –सीदति (बैठना)
सीला–शील (बल)
स्-कज्–स-कथा (कहानी)
स्-कजात् –स-कथयति (कहना)
स्-कज्का–स-कथका (कहानी)
स्-कुचात् –स-कुचति (उदास होना)
स्लवा–श्रव (यश)
स्लाविन् –श्रवति (यश बखानना, श्लोक करना)
स्लाव्निइ–श्रवणीय (यशस्वी)

स्लेग्का–स-लघुक (हल्का)
स्लुगा–श्रूपक (सेवक)
स्लुझान्का–श्रूपणिका (सेविका)
स्लुझ्बा–श्रूपा (सेवा)
स्लुझेनिये–श्रूपणा (सेवा करना, काम करना)
स्लुझित् –श्रपति (सेवना, काम करना)
स्लुख्–श्रूपा (सुनना, कान)
स्लुशानिये–श्रूपणा (सुनना)
स्लु (स्लि) शात् –श्रपति (सुनना)
स्-मेझा (झि) त् —स-मेचति (आख मीचना)
स्-मेर्त् –स-मर्त (मृत्यु)
स्-मेस्–स-मिश् (मिश्रण करना)
स्मेख्–स्मय (हसना)
स्मेयात् स्या–स्मयति (हसना, मुसकराना)
स्नेग्–स्नेह (हिम, बफ)
स्नोवा–स-नव (नया, ताजा)
स्नोखा–स्नुषा (नोह, पुत्रवधू)
सो–सम्, स
सोबाका–श्वक (कुत्ता)
सो-विरानिये–स-हरणा (सभा एकत्रित होना)
सो-विरात् –स-हरति (एकत्रित करना)
सो-वेत्–सवेत (सभा, मत्रणा)
सोवेत्लिक्–सवेतक (कौंसलर, परामर्शदाता)
सोव्-पदत् –स-पतति (सपात, एक साथ पडना)
सो-ज्नानिये–सजानना (चेतना, ज्ञान, स्वीकार)
सो-ज्नातेल् –स-ज्ञातर् (जानने वाला)
सो-इति–स-एति (जाना)
सोल्न्त्से–सूर्य

प्रेद्-म्कजानिये-प्राग् ज्ञान
(भविष्यद्-वाणी)
प्रेद्-गदात्-प्राग् गदति (भागना,
दूरदर्शिता)
प्रेभ्ठ्दे-प्रागुदा (पूवत)
प्रि-प्र
प्रि-ब्रेगात्-प्र-वेजति (भगाना,
मारने जाना)
प्रि वेभ्कात्-प्र-वेजति (दौडना)
प्रि-वोज़-प्र-वह (लाना)
प्रि-स्नाक-प्र-ज्ञा (चिह्न,
सूचना)
प्र-ज्नानिये-प्र-जानना (स्वी-
कारना)
प्रि-काज़्-प्र-काय (आज्ञा)
प्रि-नदित्-प्र-नुदति
प्रि-न्यातिये-प्र-नीति (स्वीकार,
स्वागत)
प्रि-पादोक्-प्र-पातक (आक्रमण)
प्रि-रोद-प्र-रोह (प्रकृति)
प्रि-रोस्त्-प्र-रोह (उगना,
बढना)
प्रि-रुचात्-प्र रोचति (पालत
बनाना)
प्रि-सोस्का-प्र च् (शो) षक
(चूसनेवाला)
प्रिसिलात्-प्रेषयति
प्रि-त्यनुत्-प्र तनोति (तानना)
प्रि-चितानिये-प्र-चितना (शोक
करना)
प्रियातेल्-प्रियतर् (मित्र)
प्रियत्निइ-प्रियत्न् (प्रिय)
प्रो-प्र (लिये, के)
प्रोबेग्-प्रवेग (दौडना)
प्रो-क्लेस्क-प्र-काज (प्रकाश)
प्रो-बुदित्-प्र-बुध्यति (जागना,
उठाना)
प्रो-वोज़्-प्र-वह (शकट, ढोने
का साधन)
प्रो-दवात्-प्र-दापयति (बेंच-
ना)

प्रो दात-प्र दाक (बेचो,
विक्रय)
प्रो दावित्-प्रदत्त (बिका)
प्रो दिरात् प्र-दरति (चीरना)
प्रो प्रो वेदिवक-प्र प्र-वे दिर
(उपदेशक)
प्रोसित-पृच्छति (पूछना,
मांगना)
प्रो सिपा स्या-प्र-स्वपिति
(जगाना)
प्रो-स्पात्-प्र-स्वपिति (सो
जाना)
प्रोस् वा-प्र शा (मांगना)
प्रोतिव्-प्रतीप (विरुद्ध)
प्रो-चितान् प्र चितयति (पढना)
प्राच् प्राच (दूर, दूर जाना)
प्रो शि(वा)त्-प्र-सीव्यति
(सीना, टांकना)
प्रोश्लोये-पश्चा (पिछला)
पुत्निक-पथिक (यात्री)
पुत्योव्का-पथीयिका (यात्रा)
पतेशेस्त्विये-पथिकत्व (यात्रा)
पुत्-पथ (मार्ग, सडक)
पुन यानित्सा-पानका (मदिरा-
मत्ता)
प् यानिस्त्वो-पानकत्व (मत्तता)
पिशात्-पिशति (प्रकाशना)
प्यातोक्-पाचक (पांच)
प्यत् ना-द्त्सत्-पच-दश (पाच
ऊपर दस)
प्यातो-पच (पांच)
प्यातया-पचतय (पाचवां)
प्यत्-पच (पाच)
प्यत्-देस्यत्-पचाशद (पाच-
दस, पचास)
राब्-लाभ (दास)
रबोता-लाभता (काम, श्रम)
राद्-राध, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)
राधोवात्,-हलादति (हर्षित
होना)

रादास्त-हलादित्व (खुशी)
राज़-राग (क्रोध)
राज़ } -प्रति, -वि (वि,
राम् } दूर)
रज़्-बग-वेग (दौडना)
रज़-बोर-वर (चुनना, छांटना)
रज़्-बुदित्-बुध्यति (जागना)
रज़्-वेद्का-वदका (खोजना)
रज़-वेद् चिक-वेदक (ढूंढने
वाला, स्काउट)
रइ-रै (स्वर्ग)
रन्-रण (घाव)
रस्ति-रोहति (उगना, बढ़ना)
रत्-निक्-राति (योद्धा)
रत्-व्रात (सेना)
र्देनिये-रोहणता (लालपन)
रेब्योनक्-ऋभुक (लडका)
र्योव्-रव (शोर, गर्जन)
रेवेत्-रवति (शोर करना)
रेज़त्-रिहति, रेतति (काटना)
रेज़्निक-रेतक, रिहक (कसाई)
रेका-रेखा, लेखा (नदी)
रेच्-ऋक् (भाषण)
रिसोव्का-लेख, रख (रखा
कन)
रोग्-शृंग (सींग)
रोद्-रोध (परिवार, वंश)
रोदिना-रोधिनी, रोहिणी
(जन्मभूमि)
रोदितेलि-रोधितर (माता
पिता)
रोदित्-रोहति (पैदा करना,
जन्म देना, फारसी, रोईदन)
रोझात् } -रोधति
रोझ दात् } (प्रसव
रोदित् स्या- } करना)
रोझ देनिये-रोहणा (जन्म)
रोझोक्-शृंगक (छोटी सींग)
रोस्त्-रोह (वृद्धि)
रुम्का-रंभका (काटना)

रुगात् –(रिगाना, गालीदेना, शाप देना, चिढना)
रुगान् –(गाली, देना, शाप देना, चिढ़ना)
रुसिइ–ऋषि (पिंगल, श्वेत)
रिदात् –रोदति (रोना-सिसकना)
रिझिइ–रोह, लोह (लाल)
रिचात् –अर्चति (शोर करना, चिल्लाना)
स्–स, सम् (सह, लिये, से, ऊपर)
सद्–सद् (उद्यान)
सदिन् स्या, सझात् —सीदति (बैठना)
साम्–स्वय
सामो –वार्-स्त्र वाल (समावार चूल्हा)
सामो-लेत्–स्वयडयन (विमान)
सामिइ–स्वय
साखर–शर्करा
स्-बेगात् –स-वेगति (दौडजाना)
स्-बोर–स-वर, स-भर (सभा)
स्-व्रेदेनिये–सव्रेदना (ज्ञात, सूचना)
स्-व्रेदुश्चिइ–स-विद्रस् (विद्वान्, निपुण)
स्व्योकोर– श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि–श्वश्र् (सास)
स्-व्रेर्ख–स्वर्ग (ऊपर)
स्वेत्–श्वेत (सफेद, ससार, प्रकाश)
स्वेतत्, स्वेतित –श्वेतति (प्रकाशना)
स्वेत्लो–श्वेतल (प्रकाशमान)
स्वेतोच्–श्वेतक (मशाल, दीपक)
स्-विदानिये—स-विदना (मिलना)
स्-विदेतेल् –स-वेत्तर् (गवाह)
स्वोयो, स्वोइ –स्वीय (अपना)

स्वोइस्त्वो– स्वीयत्व (गुण)
स्वोयाक्–स्वीयक (बहनोई)
स्-व्यजका–स-वधक (मुट्ठा)
स-व्यज् –स-बध (बधन)
स्–देर्झात् –स-दृहृति (पकडना)
सेबे, सेब्रे, सेन्या —स्वीये (अपने लिये)
सेगो-द्नया–स्वक-दिन (आज)
सेदेत् –श्वेतति (बाल सफेद होना)
सेदोइ–श्वेत (सफेद बालवाला)
सेइ, सिया, सिओ –स (यह)
सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात सौ)
सेम्-ना-द्त्सत् –सप्त-दश (सात ऊपर दस, सत्रह)
सेम्–सप्त (सात)
सेम् –देस्यत्–सप्त–दशन् (सत्तासी)
सेम्-सोत्- सप्त-शत (सात सौ)
सेर्द्त्से–श्रद, हृत् (हृदय)
सेस्त्रा–स्वसर् (बहिन)
सेस्त् –सीदति (बैठना)
सिदेन् –सीदना (घर बैठना)
सिदेन् –सीदति (बैठना)
सीला–शील (बल)
स्-कज्–स-कथा (कहानी)
स्-कजात् –स-कथयति (कहना)
स्-कज्का–स-कथका (कहानी)
स्-कुचात् –स-कुचति (उदास होना)
स्लवा–श्रव (यश)
स्लाविन् –श्रवति (यश बखानना, श्लोक करना)
स्लाव्निइ–श्रवणीय (यशस्त्री)

स्लेग्का–स-लघुक (हल्का)
स्लुगा–श्रूपक (सेवक)
स्लुझान्का–श्रूपणिका (सेविका)
स्लुझ्बा–श्रूपा (सेवा)
स्लुझेनिये–श्रूपणा (सेवा करना, काम करना)
स्लुझित् –श्रपति (सेवना, काम करना)
स्लुख्–श्रूपा (सुनना, कान)
स्लुशानिये–श्रूपणा (सुनना)
स्लु (स्लि) शात् –श्रपति (सुनना)
स्-मेझा (झि) त् —स-मेचति (आख मीचना)
स्-मेर्त् –स-मत (मृत्यु)
स्-मेस्–स-मिश् (मिश्रण करना)
स्मेख्–स्मय (हसना)
स्मेयात् स्या–स्मयति (हसना, मुसकराना)
स्नेग्–स्नेह (हिम, बर्फ)
स्नोवा–स-नव (नया, ताजा)
स्नोखा–स्नुषा (नोह, पुत्रवधू)
सो–सम्, स
सोबाका–श्वक (कुत्ता)
सो-विरानिये–स-हरणा (सभा एकत्रित होना)
सो-विरात् –स-हरति (एकत्रित करना)
सो-वेत्–सवेत (सभा, मत्रणा)
सोवेत्निक्–सवेतक (कौंसलर, परामर्शदाता)
सोव्-पदत् –स-पतति (सपात, एक साथ पडना)
सो-ज्नानिये–सजानना (चेतना, ज्ञान, स्वीकार)
सो-ज्नातेल् –स-ज्ञातर् (जानने वाला)
सो-इति–स-एति (जाना)
सोल्न्त्से–सूर्य

प्रेद्-स्कज्ञानिये–प्राक्-कथना (भविष्यद्-वाणी)
प्रेद्-गदात्–प्राग्-गदति (भाखना, दूरन्दर्शिता)
प्रेक्ह्दे–प्रागुदा (पूवत)
प्रि–प्र
प्रि-वेगात्–प्र-वेजति (लेजाना, करने जाना)
प्रि वेभात्–प्र-वेजति (दौड़ना)
प्रि-वोज्–प्र-वह् (लाना)
प्रि–ज्नाक–प्र-ज्ञक (चिह्न, भूचन)
प्र-ज्नानिये–प्र-जानना (स्वीकारना)
प्रि–काज्–प्र-काय (आज्ञा)
प्रि-नदित्–प्र-नुदति
प्रि-न्यातिये–प्र-नीति (स्वीकार, स्वागत)
प्रि-पादोक्–प्र-पातक (आक्रमण)
प्रि-रोद–प्र-रोह् (प्रकृति)
प्रि-रोस्त्–प्र-रोह् (उगना, बढ़ना)
प्रि-रुचात्–प्र रोचति (पालतू बनाना)
प्रि-सोस्का–प्र-चू (शो) षक (चूसनेवाला)
प्रिसिलात्–प्रेषयति
प्रि-त्यनुत्–प्र-तनोति (तानना)
प्रि-चितानिये–प्र चितना (शोक करना)
प्रियातेल्–प्रियतर् (मित्र)
प्रियत्लिद्द–प्रियरन् (प्रिय)
प्रो–प्र (लिये, के)
प्रोवेग्–प्रवेग (दौड़ना)
प्रो-ब्लेस्क–प्र-भ्राज (प्रकाश)
प्रो-बुदित्–प्र-बुध्यति (जागना, उठाना)
प्रो-वोज्–प्र-वह (शकट, ढोने का साधन)
प्रो-दवात्–प्र-दापयति (बेंचना)

प्रा-दाज–प्र-दाक (बेंचो, विक्रय)
प्रो दान्निद्द–प्रदत्त (विका)
प्रो-दिरात्–प्र-दरति (चीरना)
प्रो-प्रो-वेदिनक–प्र-प्र-वेदनिका (उपदेशक)
प्रोसित्–पृच्छति (पूछना, मांगना)
प्रो सिपात् स्या–प्र-स्वपिति (जगाना)
प्रो-स्पात्–प्र-स्वपिति (सो जाना)
प्रोस् वा–प्र-श्न (मांगना)
प्रोतिव्–प्रतीप (विरुद्ध)
प्रो-चितात् प्र चितयति (पढ़ना)
प्राच् प्राच् (दूर, दूर जाना)
प्रो शि (वा) त्–प्र-सीव्यति (सीना, टांकना)
प्रोश्लोये–पश्चा (पिछला)
पुत्निक–पथिक (यात्री)
पुत्योव्का–पथीयिका (यात्रा)
पुतेशेस्त्विये–पथिकत्व (यात्रा)
पुत्–पथ (मार्ग, सड़क)
पुन् यानित्सा–पानका (मदिरा-मत्ता)
प्यानिस्त्वो–पानकत्व (मत्तता)
पिशात्–पिशति (प्रकाशना)
प्यातोक्–पचक (पांच)
प्यत्-ना-द्त्सत्–पच-दश (पांच ऊपर दस)
प्यातो–पच (पांच)
प्यातया–पचतय (पांचवां)
प्यत्–पच (पांच)
प्यत्-देस्यत्–पचाशद (पांच-दस, पचास)
राबू–लाभ (दास)
रबोता–लाभता (काम, श्रम)
राद्–राध, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)
रादोवात्–ह्लादति (हर्षित होना)

रादोस्त्–ह्लादिम्ब (खुशी)
रास–राग (क्रोध)
राज्, रास् –प्रति, –वि (बिना, दूर)
रज्-वेग्–वेग (दौड़ना)
रज्-बोर–वर (चुनना, काटना)
रज्-बुदित्–बुध्यति (जागना)
रज्-वेद्का–वेदका (खोजना)
रज-वेद्-चिक्–वेदक (ढूढने वाला, स्काउट)
रइ–रै (स्वर्ग)
रन्–रण (घाव)
रस्ति–रोहति (उगना, बढ़ना)
रत्-निक्–राति (योद्धा)
रत्–व्रात (सेना)
रुदेनिये–रोहणता (लालपन)
रेब्योनक्–ऋभुक (लड़का)
र्योव्–रव (शोर, गर्जन)
रेवेत्–रवति (शोर करना)
रेज़त्–रिहति, रेतति (काटना)
रेज़्निक–रेतक, रिहक (कसाई)
रेका–रेखा, लेखा (नदी)
रेच्–ऋक् (भाषण)
रिसोव्का–लेख, रेख (रेखांकन)
रोग्–शृग (सींग)
रोद्–रोध (परिवार, वंश)
रोदिना–रोधिनी, रोहिणी (जन्मभूमि)
रोदितेलि–रोधितर (माता पिता)
रोदित्–रोहति (पैदा करना, जन्म देना, फारसी, रोईदन्)
रोझात्, रोम्न दात्, रोदित् स्या– —रोधति (प्रसब करना)
रोम्न् देनिये–रोहणा (जन्म)
रोम्नोक्–शृगक (छोटी सींग)
रोस्त्–रोह (वृद्धि)
रुब्का–रुभका (काटना)

रुगात् –(रिगाना, गालीदेना, शाप देना, चिढ़ना)
रुगान् –(गाली देना, शाप दना, चिढ़ना)
रुसिइ–ऋषि (पिंगल, श्वेत)
रिदात् –रोदति (रोना-सिसकना)
रिझिइ–रोह, लोह (लाल)
रिचात् –ऋचति (शोर करना, चिल्लाना)
स्–स, सम् (सह, लिये, से, ऊपर)
सद्–सद् (उद्यान)
सदिन् स्या, सझात् –सीदति (बैठना)
साम्–स्वय
सामो –वार्-स्व वाल (समावार चूल्हा)
सामो-लेत्–स्वयडयन (विमान)
सामिइ–स्वय
साखर–शर्करा
स्-बेगात् –स-वेगति (दौड़जाना)
स्-बोर–स-वर, स-भर (सभा)
स्-वेदेनिये–सवेदना (ज्ञात, सूचना)
स्-वेदुश्चिइ–स-विद्वस् (विद्वान्, निपुण)
स्व्योकोर– श्वशुर (ससुर)
स्वेक्रोवि–श्वश्रू (सास)
स्-वेर्ख–स्वर्ग (ऊपर)
स्वेत्–श्वेत (सफेद, ससार, प्रकाश)
स्वेतत्, स्वेतित –श्वेतति (प्रकाशना)
स्वेत्लो–श्वेतल (प्रकाशमान)
स्वेतोच्–श्वेतक (मशाल, दीपक)
स्-विदानिये—स-विदना (मिलना)
स्-विदेतेल् –स-वेत्तर् (गवाह)
स्वोयो, स्वोइ –स्वीय (अपना)
स्वोइस्त्वो– स्वीयत्व (गुण)
स्वोयाक्–स्वीयक (बहनोई)
स्-व्यजका–स-बधक (मुट्ठा)
स-व्यज् –स-वध (बधन)
स्-देर्झात् –स-दृहति (पकड़ना)
सेबे, सेबे, सेब्या —स्वीये (अपने लिये)
सेगो-द्नया–स्वक-दिन (आज)
सेदेत् –श्वेतति (बाल सफेद होना)
सेदोइ–श्वेत (सफेद बालवाला)
सेइ, सिया, सिओ –स (यह)
सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात सौ)
सेम्-ना-द्त्सत् –सप्त-दश (सात ऊपर दस, सत्रह)
सेम्–सप्त (सात)
सेम्–देस्यत्–सप्त–दशन् (सत्तासी)
सेम्-सोत्- सप्त-शत (सात सौ)
सेर्द्त्से–श्रद, हृत् (हृदय)
सेस्त्रा–स्वसर् (बहिन)
सेस्त् –सीदति (बैठना)
सिदेत् –सीदना (घर बैठना)
सिदेन् –सीदति (बैठना)
सीला–शील (बल)
स्-कज्–स-कथा (कहानी)
स्-कजात् –स-कथयति (कहना)
स्-कज्का–स-कथका (कहानी)
स्-कुचात् –स-कुचति (उदास होना)
स्लवा–श्रव (यश)
स्लाविन् –श्रवति (यश बखानना, श्लोक करना)
स्लाव्निइ–श्रवणीय (यशस्वी)
स्लेग्का–स लघुक (हल्का)
स्लुगा–श्रूपक (सेवक)
स्लुझान्का–श्रूपणिका (सेविका)
स्लुझ्बा–श्रूपा (सेवा)
स्लुझेनिये–श्रूपणा (सेवा करना, काम करना)
स्लुझित् –श्रूपति (सेवना, काम करना)
स्लुख्–श्रूपा (सुनना, कान)
स्लुशानिये–श्रूपणा (सुनना)
स्लु (स्लि) शात् –श्रूपति (सुनना)
स्-मेझा (झि) त् —स-मेचति (आख मीचना)
स्-मेर्त् –स-मर्त (मृत्यु)
स्-मेस्–स-मिश् (मिश्रण करना)
स्मेख्–स्मय (हसना)
स्मेयात् स्या–स्मयति (हसना, मुसकराना)
स्नेग्–स्नेह (हिम, बर्फ)
स्नोवा–स-नव (नया, ताजा)
स्नोखा–स्नुषा (नोह, पुत्रवधू)
सो–सम्, स
सोबाका–श्वक (कुत्ता)
सो-विरानिये–स-हरणा (सभा एकत्रित होना)
सो-विरात् –स-हरति (एकत्रित करना)
सो-वेत्–सवेत (सभा, मत्रणा)
सोवेत्निक्–सवेतक (कौंसलर, परामर्शदाता)
सोव्-पदत् –स-पतति (सपात, एक साथ पड़ना)
सो-ज्नानिये–सजानना (चेतना, ज्ञान, स्वीकार)
सो-ज्नातेल् –स-ज्ञातर् (जानने वाला)
सो-इति–स-एति (जाना)
सोल्न्त्से–सूर्य

सो-म्नेनिये—स-मनना (सदेह)
सोन्—स्वप्न
सोप्निक्—स्वप्नक (स्वप्न, जोतिसी)
सो-रात्निक्—स-अरातिक (सह-योद्धा)
सोसानिये—चूषणा (चूसना)
सो-सेद्—स-सद् (पड़ोसी, फारसी—हम्सद)
सोसोक्—चूपक ((स्तनमुख)
सो-स्ताव्—स-स्ताव (जोडना, गु फना)
सो-स्तोयानिये—स-स्याना (स्थिति, अवस्था)
सोसून् (रोक्)—चषण (चूसना, स्तन पीना)
सोत्—शत (सौ)
सोतिया—शती (सौ)
सोतिइ—शतीय (सौवा)
सोखनुत्—शुष्णति (सूखना)
स्-पदानिये—स-पतना (गिरावट, पतन)

स्-पोइवात्—स-पाययति (मदिरामत्त बनाना)
स्पाल्-न्या—स्वापालय (शयन-गृह, शयन-यान)
स्पानियो—स्वपना (सुलाई)
स्पात्—स्वपिति (सोना)
स्प्यच्का—स्वपका (नीद)
स्रम्—(शम फारसी, लज्जा)
स्रेदे—श्रद्, हृद् (मध्य)
स्रेदस्त्वो—हृत्त्व (मध्यता)
स्तवित्—स्थापयति (रखना)
स्तान्—स्थान (कैंप, आकार)
स्तानोवित्—स्थानयति (रखना)
स्तानोक्—स्थानक (वेंच)
स्तानित्स्या—स्थानका (स्टेशन)
स्-त्योसिवात्—स-तक्षति (काटना)
स्तो—शत (सौ)
स्तोइत्—स्थिति (ठहरना)

स्तोइ—स्थाहि (ठहर)
स्तोइकिइ—स्थायुकीय (दृढ़)
स्तोल्—(टेबुल)
स्तोल्—स्थाल (स्थाणु, खम्भा)
स्तोयानियो—स्थानि (खड़ा होना)
स्तोयात्—स्थायति (खडा होना)
स्-त्राख्—स-त्रास (भय, लडाई)
स्-त्राशित्—स-त्रस्यति (भय-खाना, आतंकित होना)
स्-त्रशानिये—स-त्रासना (डराना)
सु-दार्-न्या—सु-दाना (महिला)
सु-दर्—सु-दान (भद्र पुरुष)
सुत्—सत् (सत्त, सार)
सुखो—शुष्क (सूखा)
सुखोवेइ—शुष्कीय (सूखा, सूखी हवा)
सुखो-पुत्निइ—शुष्क-पथ (खुश्की का माग, स्थल-पथ)
सुखोस्त्—शुष्कत्व (सूखाई, सूखा सा)
सुशा—शुष्क (सूखी भूमि)
सुशे—शुष्कीयस् (अधिकतर सूखा)
सुशेनिये—शोषणा (सुखाई)
सुशित्—शुष्यति (सूखना)
सुश्का—शुष्का (सूखना)
सूप्—सूप (मास-रस)
स्-चितात्—स-चितति (गिनना)
सिन्—सूनु (पुत्र)
स्-युदा—इह (पाली— इध, यहा)
स्-यक—एतादृक् (ऐसा)
स्-यम्—तत्र (यहा)
ता—सा (वह)
तोत्—स (वह)
तो—तद् (वह)
तइत्—तायति (छिपाना, शरण देना)
तइना—तायना (रहस्य, भेद)

ताक्—तादक (ऐसा)
ताक-झे—सादृक हि (भी, ही)
त्वोइ, त्वोया, त्वोयो—त्वदीय (तेरा)
तेम्नेत्—तमस्यति (अंधेरा करना)
तेम्नो—तमम् (अंधेरा, अस्पष्ट)
तेप्लेत्—तप (ल) ति (गम होना)
तेपलो—तपल (गम)
तेप्लोता—तपलता (फैलती आच)
तेर्जानिये—तजना (सताना, चीरना)
तेर्जात्—तजति (चीरना, छिन्न करना)
तेसानिये—तक्षणा (काटना, फाडना)
तेसात्—तक्षति (काटना)
तेस्नित्—तीक्ष्णोति (दबाना, गारना)
तेतिवा—ततुव (धनुषकी ज्या)
त्योत्का—ताती (चाची, बुआ)
त्योत्या—ताती (चाची, बुआ)
तिखिइ—तुषी (शात, नीरव)
तो—तद् (वह, नपुसक)
तोग्दा—तदा (तब)
तो एस्त्—स अस्ति (यह है, अर्थात्)
तोनिन्का, तोन्किइ—तनुका, तन्वी (पतली)
तोपित्—तपति (तपाना, पिघलाना)
तोप्का—तपका (लालटेन की बत्ती, गर्माना)
तोत्—स (वह, पुलिंग)
तोचेनिये—तक्षणा, तीक्ष्णना (घिसना, तेज करना)
तोच्योनिइ—तीक्ष्ण (छेनी किया)
तोचिल्का—तक्षलिका (घिसने का पत्थर)

तोचिल्नया—तक्षलका (घिसने की चक्की)
तोचित्—तक्षति (घिसना, तेज करना)
त्रवा—दूर्वा, तृण (घास, बूटी)
त्राव्का—दूर्वका (पत्ती, घास)
त्रेतिइ | —तृतीय (तीसरा)
त्रेत् |
त्र्योख्—त्रिक (तिन-)
त्रिअदा—त्रिधा (त्रिप्रकार)
त्रि-दत्सत्—त्रि-शत् (तीस)
त्रिझ्दि—त्रिधा (तीन बार)
त्रि-ना-द्त्सत्—त्रयोदश (तीन ऊपर दस, तेरह)
त्रि-स्ता—त्रि-शत (तीन सौ)
त्रोइका—त्रिका (तीनवाली)
त्रुसित—त्रस्यति (भय खाना)
त्र्यसेनिये—त्रसना (कांपना, हिलना)
त्र्यस्ति—त्रस्यति (कांपना, डोलना)
तुदा—तत्र (वहां)
तुमान्—धूमन् (भाप, कुहरा, धुआं, फारसी—दूदमान्)
तुशित्—तुषति (बुझाना)
ति—ते (तू)
त्मा—तम (अंधकार)
त्फु—थू (थूकना)
त्यानुत्—तनोति (तानना, खींचना)
उ—उद्, अव, वि
उ-बेगात्—उद्-वेजति (भाग जाना)
उ-वेदित्—उद्-वेदयति (समझाना)
उ-वित्—उद्-भिदति (मार डालना)
उ-वितोक्—उद्-भितक (क्षति, हानि)
उ-वझात्—उद्-भजनि (सम्मान करना)
उगोल्—इंगाल, अंगार (कोयला)
उ-दाल्—उद्-दार (साहस)
उ-दार—उद्-दार, विदार (चोट, आघात, फारसी—दरीदन्)
उ-दारित्—उद्-दारयति (मारना, चोट करना)
उ-झे—उद्हि (पहिले ही)
उ-इति—एति (जाता है)
उ-काज—उत्-कय (आज्ञा)
उ-लेतात्—उद्-डयति (उड़ना है)
उ-निझेनिया—अव-नीचना (नीचा दिखाना)
उस्त—उत्स (मुंह, ओंठ)
उस्त्यें—ओष्ठ (मुंह, ओंठ)
उख्—(उह, ओह, आह)
उचेनिये—ऊचना (पढ़ाना, सिखाना)
उचीतल—ऊचितर् (शिक्षक)
उचित्—ऊचति, वक्ति (सीखना, सिखाना)
फु (इ)—थू (धिक्कारना)
ख्वाला—स्वर (प्रशंसा,)
ख्वालित्—स्वरति (प्रशंसा करना)
खोलोद्—शरद (सर्दी)
खुदेनिये—क्षुद्रणा (पतला होना)
खुदोइ—क्षुद्र (बुरा)
खुदिश्का—क्षुद्रिका (पतली तरुणी)
त्स्वेत्—श्वेत (रंग, फूल)
त्सेलो—सकल (सारा, सियल)
त्सेन्त्र—केन्द्र
चशा—चष (प्याला)
चशेच्का—चषक (प्याली)
चश्का—चषक (प्याली)
चेइ—कस्य (किसका, जिसका)
चेरेप्—कर्प (र) (खोपड़ी)
चेत्वेरो—चत्वारि (चार)
चेत्वेर्—चतुर्थ (चौथाई)
चेतिर्—चत्वारि (चार)
चेतिरेझ्द्—चतुर्धा (चार बार)
चेतिरेस्त—चतु शत (चार सौ)
चेतिर्-ना-द्त्सत्—चतुर्दश (चौदह)
चिनित्—चिनोति (मरम्मत करना, पैवंद लगाना)
चितातेल्—चितयितर् (पाठक)
चितात्—चितयति (पढ़ना)
चिखानिये—छिक्कणा (छींकना)
चिखात्—छिक्कति (छींकना)
च्मोकात्—चुंवति (चूमना)
च्तो—कति (किं) (क्या, फारसी, चि)
शकाल्—शृगाल (गीदड़, फारसी, शग़ाल)
शेप्तात्—शपति (पुकारना)
शेस्ति-द्नेत्का—षट-दिनक (पंद्रह)
शेस्तोइ—षष्ट (छठा)
शेस्त्—षट् (छ)
एइ—अयि
एता—एता (यह, वह)
एतत्—एष (यह पुंल्लिंग)
युनोस्त्—युवत्व (जवानी)
युनिइ—यून (जवान)
यावित् } —आयाति (दिखलाना)
याव्ल्यात् }
याव्का—(आवक, वर्तमान)
याव्लेनिये—(आवना, प्रकट होना)

(२) शब्दानुकरण

मर्गात्—आंख मलकाना
आख्—आह
खाखा—हाहा
चप्कात्—चप्चप् (खाना)
इकात्—हिक्कति (हिचकी लेना)
चिखात्—छिक्कति (छींकना)
त्फु—थू
फु—फू
कश्ल्यात्—खांसना
गेइ—हे (संबोधन)

(३) उपसर्ग

रूसी भाषामें उपसर्गोंका महत्त्व बहुत अधिक है। समाजके विकासके साथ नये शब्दोंकी अवश्यकता होती है। नये शब्दोंके निर्माणमें उपसर्गोंको जोड़नेका जितना अधिक प्रयोग रूसी भाषामें हुआ है, उतना किसी दूसरी हिन्दी-यूरोपीय भाषामें नही देखा जाता। वैसे सस्कृतमें भी माना गया है—"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहार-वत।" किन्तु इस बारेमें रूसी भाषा बहुत दूरतक गई है।

रूसी उपसर्ग (अव्यय भी)

अ—अ (निषेधार्थ)
बेज्, बेज़ो, बेस् —वि (विना)
व्—(अन्तर्)
वो, वोज, वोस्, वि —वि
दो—तावत् (फारसी—ता, तक)
दुर् (नोह)—दुर् (बुरा)
जा—आ, पश्चा (पीछे, परे)
इज्, इस् —अत्, आ (से, फारसी-अज्)
क्—(के, लिये, प्रति)
ना—नि (ऊपर, द्वार)
ने, नि —निर्, न (निषेधार्थ)
निस्—निस् (निषेधार्थ)
ओ—आ, अ (निषेधार्थ), अव
ओब्—अभि (चारो ओर)
ओबेज्, ओबेस् —वि (विना)
ओत्—आ, आत्, उत् (से, के, परे, लिये)
ओतो—अत्
पेरे—प्र, परि, प्राग्, पुनर्
पो—परि, प्र (ऊपर, द्वारा, अतर्, को)
पोद्—पद (नीचे)
पोरा—परा (पोराक्ष नियेपरा-जय)
पोस्ले—पश्चात् (फारसी—पस्)
प्रा—प्र (बडा)
प्रे—प्र
प्रेद्, प्रेदो —प्रति, प्राक (सामने)
प्रि, प्रो —प्र
राज्, रास् —(प्रति, पुनर्, वि, दुर्, अभाव, विकार)
स, सो —म, स (द्वारा, लिये, से, ऊपर, फारसी—हम्)
उ—उत्, अव

(४) रूसी धातु

पसात्रेत्, पो,—प्रभवति (जोड़ना)
वेदित्, उ-, वेक्ष्दात् उ, —वेदयति (जतलाना)
वेगत्—, वेगत, उ- —वेगति (भागना)
विवात्, दो—भवति, तावद् (मारना)
विरात्—चुनना,
विरात्, वि-, —चुनना,
विरात् इज्-, —चुनना,
विरत्, आ, —भ(ह) रति, फ्यीमक् (लेजाना)
विरात्, ना-, —हरति, नी—(सचय करना)
विरात् -, सो, —हरति, स—(सचय करना)
विरात्, उ-, —हरति, अव—(हटाना)
वित्—भिद् (मारना)
वित्, उ-, —√भिद्, उद् (मार डालना)
वीवात्, प्रो-, —प्रभवति—(परीक्षण करना, जाचना)
बोल्तात्—वोल्लति (बोलना)
बोयात् स्या—भय (डरना)
ब्रसि (वा) त्—भ्रश (फेंकना)
ब्रसि, वि—वि + √भ्रश (फेंकना)
ब्रात् स्या—भर्, √हर (लेजाना)
ब्रदित्— √बध (उठना, उभड़ना)
ब्रोस (सिवा) त् (स्या)— √भ्रश (फेंकना)
बुदित्, बुदित्, वोज्-, बुदित्, पो-, —वि + √ बुध (उत्तजितकरना, भड़काना (प्र √ बुध् (भड़काना)
वज़ दात् विज्-, —वि + √बुध (भड़काना)
विवात्—√भव (आना)
वित—√भव (होना)
वज़्स्, उ, —प्र + √भज (भजन करना, सम्मान करना)
वरित्—√वल् (उबालना, पकाना)
वरित्, प्रद्, —प्रति + √वल् (खबरदार करना)
वेदि (व) त्—√विद् (जानना)
वेदि, वि—√ विद् (पाना, ढूंढना)
वेदोमित्, उ-, —अव + √विद

मज़ोक, पो-,–प्रvमार्ज (झाड़ना)
मरत्, वि-,–विvमर (घात करना)
मचिवात्, ज़ा-,–vमिह (भिगोना)
मेझ (झि)त्, स्-,–सv मिष (आख मीचना)
मेरेत् –vमर(मरना)
मेरेत् वि-,–विvमर् (मर जाना)
मेरित् –vमा (नापना)
मेतत् –vमथ (ढकेलना)
मेशिवत् व्-,–विvमिश्र (मिश्रण करना)
मीलोस्त्–vमिल (मेल करना, कृपा करना)
मितात् –vमिष (आख मलकाना)
मिगनुत् –vमिष (आख मलकाना)
मिरत् ,वि-,–विvमर (मर जाना)
म्नुत् –vमनु (सोचना, मनन करना)
मोकात् वि-,–विvमुच् (निकल जाना)
मोलोत्,–vमर्द (घिसना, मलना)
मोरित् –vमर (हत्या करना, भूखा मरना)
मोचित् –vमेह् (भिगोना)
मि(वा) त् –vमोना (धोना)
नामेकात् –vनाम (इगित करना)
नशिवात् ज़ा-,–आvनश्(जीर्ण करना)
निज़ात्–vनह (बाधना, सूत पिरोना)

निज़ि (झि) त्, उ-,–अवv नीच (अपमानित करना)
निमात्, वि-,–विvनय (ले जाना)
नित्, ओव-,वि-,–अभि-विvनय (अपराध लगना)
निच्तोझित्, उ-,–उद्vछिद् (नष्ट करना, बद करना)
नोस्ति –v नेव (ले जाना, ढोना) (तेल्)
नोसि्, ज़ा-,–आvनेप (लिख छोड़ना)
नोचिवात् –vनिश् (रात बिताना)
नुदित्, वि-,–विv नुद (बाध्य करना)
नुझ्दात् ,-वि-,–विvनुद (वाध्य करना)
पदत् –vपत (गिरना)
पदत्, नस्-,–निस्vपत् (गिरना)
पदत् व्स-,–सvपत (एक समय एक स्थान में होना)
पइवात् व्स्-,–विvपा य (पिलाना, पोषण करना)
पेइवात् पेरे-,–परिvपाय (मद्यपान में अति करना)
पेरेनिये—पलायना (भागना)
पास्त् –vपा (पास्तुख् मेषपाल)
पास्त् –vपत (गिरना)
पेकात्, दो-,–आvपच् (पकाना)
पेच् –vपच् (पकाना, तलना, भूजना)
पिवात् ज़ा-,–आvपिव् (पीना)
पिवात् वि-,–विvपिव (पीना)

पिलित् –v पीड (चीरना)
पिलिवात् –v पीड (चीरना)
पिसात् –v पिश (लिखना)
पिसिवोत् –पिश (लिखना)
पित् –v पिव (पीना)
प्लवात्–v प्लव (तैरना)
प्लवित्, वि-,–विvप्लव (पिघलना)
प्लिवात्, व्-,– विvप्लव (तैरना, नावपर चलना)
पोइत् –vपिव (मद्यप बनना)
पोल्नोत् –vपूण (भरा पूरा होना)
पोल्नोत्, निस्-,–विv पूर्ण (भरना)
पोल्नित्, वि-,–विvपूर्ण (पूरा करना)
पोतेत्, व्-,–विvपोन (पसीने में नहाना विvस्विद्)
पोचितात् –vपूज (समान करना)
प्रशिवात्, वि-,–विv पृच्छ (पूछना)
प्रियुतित् (स्या)–v प्रिय (?) (शरण देना व पाना)
प्रोसित–v पृच्छ (पूछना, मागना)
प्रोप्तत्, वो-,–विvपृच्छ (पूछना)
पुखात्, ना-,–निvपुष् (फूल जाना)
पुख़ात्, प्रि-,–प्रvपुप् (फूल जाना
पिशात् –v पिश (दहकना)
राद्दोवात् –vलाद (आवादित होना)
रादोवात् स्या, वेज्-,–विv हलाद
रझात्, ओत्-,–आ v राज

बजाना)
ज्योमित्—v घंटी बजाना)
जेवत् — v जृभ (जभाई लेना)
जेवत् पो, ओ —प्र v जह (त्यागना, छोड देना)
ज्योविवात्, पो-,— प्र v जृभ (जभाई लेते रहना)
जेलेनेत् — v हरित (हरा होना)
जनात् } v ज्ञा (जानना
जनवात् }
जनवात् सो-,—स v ज्ञा (पहिचानाना, स्वीकार करना)
ज्नाकोमित् – v ज्ञाप् (परिचय कराना)
ज्नामेनोवात् — v ज्ञाप् (दिखलाना, सिद्ध करना)
ज्नोचित् —v ज्ञा (समझना, नैमिक, जताना)
ज्ञालोतित् वि,–वि-, v हरित (सोना लगाना, मुलम्मा करना)
ज्यम्नुत् -इज-,–आ,, v हिम (बर्फ बनना, ठिठुरना)
इद्ति—v एत् (जाना, आना)
इकात् – v हिक्क (हिचकी लेना)
इत्ति–v एत (आना, जाना, टहलना)
कज़ात् (स्या)—v काश (प्रकट होना, जान पडना)
कज़ात् विस्-,–वि v कथ }
वि v काश }
(प्रकट करा)
कज़ात् स्—स v कथ (कहना)
कजिवात्—कथ,
कहना, दिखलाना, इंगित करना)
कज़ात्, ना –नि v कथ (काश) (इंगित करना)
कज़ात्, प्रि,–प्र v कथ (काश) इंगित करना
क्लिकात्, वि-,–दि v क्लिक (क्रुश) (पुकारना)
क्लिक्नुत् –वि v क्लिक क्रुश (पुकारना)
करत् – v कार (दंड देना)
क्रसी (शी) वत्, प्रिज्ञ कृप (पुन रगना, मोमियाना)
क्रसित्, पेरे-,–परि v कप (पुन रगना)
क्शात्, उ-,–उत् v कप (सजाना, अलकृत करना)
क्रिकिवात्, व्स्-,–वि v क्रुश् (चिल्लाना, हल्ला करना)
क्रिसात्, व्स्-,–वि v क्रुश (चिल्ला उठना)
कोपात् — v कल्प (कापना, खोदना)
क्रोइत् –v कृत् (काटना)
क्रुशात्, स्-,– स v कृप (तोडना, विचूर्ण करना)
क्रित् –v कृत (ढाकना)
कुचात्, स्- –स v कुच (थूकना)
कुचित्, प्रिस्-,– प्र v कुच् (थूकना)
कुशात् पो-,–प्र v कुश (कोशिश करना)
लगात्, ना-,–नि v लग (लगाना)
लदत्, स्-, स v ह्लद (ह्लादित होना)
लगात् –v लग (लेजाना)
लेगात् ना,–नि v लग (लेजाना)
लेझात्— v लेट (लेटना, विश्राम करना)
लेज़ात्—v लघ (१) चढना, लेज़ात्-, पेरे –परि लघ v (चढ जाना)
लेपित् वि,–वि v लिंप (लेपना, चिपकाना)
,, , जा, —आ v लिंप (चिपकाना)
लेतात् – v डय (उडना)
लिज़ात् – v लिह् (चाटना)
लिपात् – v लिप् (चिपकाना)
लोविज़ात् – v लुभ (चूमना)
लोवित् –v लुभ् (लुब्धकी करना, फसाना, आहत करना)
लोगत्, पो-,–प्र v लग् (रखना, लगाना)
लोझित् (स्या)– v लोट (लेटना, गिरना)
लोपत् स्या–v लोप (फटना, टूटना)
लुपित्, ओत्-, उत् v लोप् (मारना)
लुचत्, इज़-, —आ v रोच् (प्रकाशित होना)
लुचत्, ओत्–अव v रोच् (बहिष्कृत करना)
लुचशात्, उस-,–उद् रोच् (धारना, बेहतर बनाना)
ल्युवित् – v लोभ (प्यार करना)
ल्युबित्, रज-,–वि v लोभ (प्यार करना)
मज़ात्, मज़्नुत् – v माष (माखना, चुपडना लगाना)
मज़ात्, वू-,–वि v माष (चाटना)
मज़ात्, पो-,–प्र v माष (तेल लगाना)

मज़ोक, पो-, –प्रvमाज (झाड़ना)

मरत्, वि-, –विvमर (घात करना)

मचिवात्, ज़ा-, –vमिह (भिगोना)

मेझ (क्षि)त्, स्-, –सv मिष (आख मीचना)

मेरेत् –vमर (मरना)

मेरेत् वि-, –विvमर् (मर जाना)

मेरित् –vमा (नापना)

मेतन् –vमथ (ढकेलना)

मेशिवत् व्-, –विvमिश्र (मिश्रण करना)

मीलोस्त्–vमिल (मेल करना, कृपा करना)

मिसात् –vमिष (आख मलकाना)

मिगनुत् –vमिष (आंख मलकाना)

मिरत् ,वि-, –विvमर (मर जाना)

मनुत् –vमनु (सोचना, मनन करना)

मोकात् वि-, –विvमुच् (निकल जाना)

मोल्'ोत् –vमर्द (घिसना, मलना)

मोरित् –vमर (हत्या करना, भूखा मरना)

मोचित् –vमेह (भिगोना)

मि (वा) त् –vमोना (धोना)

नामेकात् –vनाम (इंगित करना)

नशिवात् ज़ा-, –आvनश् (जीर्ण करना)

निज़ात्–vनह (बाधना, सूत पिरोना)

निज़ि (क्षि) त्, उ-, –अवv नीच (अपमानित करना)

निमात्, वि-, –विvनय (ले जाना)

नित्, ओव-,वि-, –अभि-विvनय (अपराध लगना)

निच्तोक्षित्, उ-, –उद्vछिद् (नष्ट करना, बद करना)

नोस्ति –v नेष (ले जाना, ढोना) (तेल्)

नोसि्, ज़ा-, –आvनेष (लिख छोडना)

नोचिवात् –vनिश् (रात बिताना)

नुदित्, वि-, –विv नुद (बाध्य करना)

नुझ्दात्, वि-, –विvनुद (वाध्य करना)

पदत् –vपत (गिरना)

पदत्, नस्-, –निस्vपत् (गिरना)

पदत् व्स-, –सvपत (एक समय एक स्थान में होना)

पइवात् व्स्-, –विvपा य (पिलाना, पोषण करना)

पेइवान् पेरे-, –परिvपाय (मद्यपान में अति करना)

पेरेनियें—पलायना (भागना)

पास्त् –vपा (पास्तुख् मेषपाल)

पास्त् –vपत (गिरना)

पेकात्, दो-, –आvपच् (पकाना)

पेच् –vपच् (पकाना, तलना, भूजना)

पिवात् ज़ा-, –आvपिव् (पीना)

पिवात् वि-, –विvपिव (पीना)

पिलित् –v पीड (चीरना)

पिलिवात् –v पीड (चीरना)

पिसात् –v पिश (लिखना)

पिसिवोत् –पिश (लिखना)

पित् –v पिव (पीना)

प्लवात्–v प्लव (तैरना)

प्लवित्, वि-, –विvप्लव (पिघलना)

प्लिवात्, व्-, – विvप्लव (तैरना, नावपर चलना)

पोइत् –vपिव (मद्यप बनना)

पोल्नोत् –vपूर्ण (भरा पूरा होना)

पोल्नोत्, निस्-, –विv पूर्ण (भरना)

पोल्नित्, वि-, –विvपूर्ण (पूरा करना)

पोतेत्, व्-, –विvपोन (पसीने में नहाना विvस्विद्)

पोचितात् –vपूज (समान करना)

प्रशिवात्, वि-, –विv पृच्छ (पूछना)

प्रियुतिन् (स्या)–v प्रिय (?) (शरण देना व पाना)

प्रोसित–v पृच्छ (पूछना, मागना)

प्रोप्तत्, वो-, –विvपृच्छ (पूछना)

पुखात्, ना-, –निvपुष् (फूल जाना)

पुखात्, प्रि-, –प्रvपुष् (फूल जाना

पिशात् –v पिश (दहकना)

राद्दोवात् –vलाद (आदादित होना)

रादोवात् स्या, वेज़्-, –विv ह्लाद

रझात्, ओत्-, –आ v राज

(६) उच्चारण-परिवर्त्तन

संस्कृत—रूमी उदाहरण
अ अ, (निषेधार्थ)
अ ओ, ओस् (अक्ष) ओगोन्
आ ज़ा, ज़ाशिवात्=आमी-ज्यति
या यावित्. स्या
उ वो,वौदा—उद
ओ ओवे—उभे
(ऋ आल्) शकाल—श्रगाल,
ओल् वोल्क—वृक थर् क
येर् देर्ज़ात—द्हति
येल् ज़ितेल्—जीवित्
योर् म्योर्त्विइ—मृत्यु
र् ग्रवित्—गृभीति
रि क्रिन्—कृत्ति
रु रुसिइ—ऋषि, ऋचि
स्त्रुन—तृण
रे रेब्योनोक्—ऋभुक छ्ज़
रो प्रोसित् —पृच्छति
क को कोग्दा—कदा
क ोरिह्—कतर
ग क, शकाल—श्रृगाल
इग्रोज़ित् —कुप्यति
क चेरेप्—कर्प
क्ष स, ओस् —अक्ष
च, ज़ेच्—वक्ष
क्षु खु, खुदेत् —क्षुदति
खुदोइ—क्षुद्र
ख क, कुसात् —खु सति
स, रिसोवात् —लिखति
ग क, ग्रस्त् —ग्रसति
ग ग्रिवा—ग्रीवा
ग्लोतात् —गिलति
नगोइ—नग्न
ज़ वेज़ात्—वेग
दोक्षद —दोग्धि
द् प्रेद्—प्राग्
घ ग दोल्गिइ—दीर्घ
ज लज़ित् —लघति
च क् प्रेद्की—प्राच् (पूर्वज)

च पोचितात्—पूजति
ज निज़ु—नीचे येठ्ज़
ज़ निज़ें—नीचैं
निज़ात् —नीचयति
स प्रिपासी—प्रपाच
(भोजन-सामग्री)
सोरोक—चत्वारिंश
छ च कुचा—गुच्छ
ज़ ज़ेवात्—छीवति
(चबाना)
श प्रशिवात् —पृच्छति
स प्रोसित् —पृच्छति
ज गद वेग—वेज
गोरात् —ज्वलति
ज वेर्योजा—भूर्ज
प्रिज़नाक—प्रिज्ञानक
ज़ेम्ल्या—ज्मला
ज़ ज़ार—ज्वर
पोज़ार—प्रज्वाल
ज़ेना—जनि
द पोबेदा—प्रविजय
ट ज़ लेज़ात् —लेटति
पोलज़िन् —प्र-लेट
ड ल, लेतात्—डयति
पीला—नीडा (आरा)
ढ ल पोलोत् —(लोढना)
ण न पोल्नो—पूर्ण
त त स्त्राख—त्रास
द पदात् —पतति
न ज़ेलेन्—हरति
ज इज़्—अत्
द ज़, ज़ेच्—दह
सज़ात्—सादयति
द द्रोवा—दारु शिज़
दोल्शे—द्राघीय
दोलिना—द्रोणी
ध ज, ज़्वान्—ध्वन
ज़ मेज़दु—मध्य
रोज़ात् —रोधति

द व्दोवा—विधवा
देयातेल - धातर
(नेता)
न न तोन्किइ--तनक।
प्रेम ना--प्रश्न
प प, पनात् --पतति।
पास्तुख्--पातृक
पिमात --पिनति
फ प पल्का--फलक
(लकडी)
व व
भ व बोल्-शोइ--भरिश
अब्रका--अभ्रक
ब्रात्--भ्रात
ब्रोवि--भ्रू
म म, म्यासो--माम
य य युनोस्त् --यूत्वन
र र, ब्रात्--भ्रात
ल लुच्--रोचिष
पोल्नो--पूर्ण
व व, इवा--इव
ओब्रोरोत्--अववृत
वेज़्--वि (विना)
व वोज़--वह
श च, नोच् --निश्
श ख, खोलोदे--शरद
श शकाल--श्रृगाल
च मेशात्--मिश्रयति
स देस्यत्--दश नृ (दस)
मुखात्--शुष्यति
सोबाक--श्वक
स्वेकोर--श्वसुर
ख सिखात् --शुष्यति
सुखोइ--शुष्क (सूखा)
ज,
ज़ कोज़ा--कोष (चर्म)
श स्लुशत् --श्रूषति
स स सज़्दात्--सदयति
सेब्या--स्वीय

ओत्न्या—त्नु, (वेगोत्न्या)
ओनोक्—क (वोव्चोनोक्=वृकक)
ओवानिये ना (जिमोवानिये, हिमना)
ओव्—ईय (इवानोव, इवानीय)
ओन्नया—नीय (वोल्तोन्न्या)
ओस्त्—त्व (स्वेझ ोस्त्, ज्नामेनिमोस्त् =ज्ञातत्व)
किइ—कीय (भ्रातृस्किई=भ्रातीय)
(गोर किइ्=कटुकीय)
का—का (वोजका=वाहक, ढोना) (गोदाल्का–गदका, जोतिस) (ओव्शिव्का—भृल) (व्ल्यश्का)
को—क (उश्को=कनवा)
गा—पा (विस्लुगा=विश्रूषा, सेवा)
ग्दा—दा (स्सेग्दा=सदा)
चा—य (दाचा=देय)
चिइ—(गोर्याचिइ=गरम)
च्—क (ब्रोगाच्=भगक, धनी)
चिक्—क (झिवचिक=जीवक, जीव)
चिक्—क (म्लादेन्चिक्)
चाता—ता (देव्चाता =देवता, तरुणी)
च्न्—आलु (वोदाच्न्=भयालु)
झ्दि—धा (द्वाझ्दि=द्विधा)
ता—ता (पोल्नोता=पूर्णता)
ति—ति (इद्ति=एति)
तिये—ता (वेम्-र्मेतिये=विमृत्युता)
तिई—नीय (वोल्तिई=वोल्लतीय, वोलक्कड)
तून्— (वोल्तून्— वोल-क्कड)
तेइ—तीय (बोगातेई=भगीतीय धनी)
तेल्—तर् (वेस्मोज्नोतेल् वि=विसज्ञातर्, अज्ञानी)
त्—ति (इकात्=हिक्कति, हिचकी मारता है)
त्लिइ—त्नु (प्रियत्लिइ=प्रियत्नु प्रिय)
त्नोये—त्नु (झिवोत्नोय=जीवत्नु जीव)
त्से—इक (न्युद्-त्से)
त्सो—व (पिस्मेत्सो) (ओज्रोर्त्सो) (देरेव्त्सो)
निक्—इक् (वोद्निक=उद-फिक)
(स्साद्निक=सादिन्)
(द्वोर्निक=दौवारिक)
(ज़ेम्ल्यानिका=ज्मालिका)
नो—(स्प्यास्नो)
नोइ—(द्वेर्नोइ)
नोस्प्—(चेस्त नोस्त्)
न्—न (दान् =दान, भेंट, (पोल्न=पूण)
न्का—क (ज़ेम्ल्यान्का)
न्या—(रेजन्या)
बा—(प्ल्यबा) (खुदोबा)
मोस्त्— (द्विझिमोस्त्, =वेजनीय)
(ज्नामेनिमोस्त् =ज्ञातत्व)
यात्—ति (देल्यात्, =दारयति)
यानि—इन् (द्वोर्यानि,=द्वारिन्, बाबू)
यानिये—ईय (दयानिये दानीय)
युत्—न्ति
येचुक्—इका (दोश्च्का=छोटी मेज)
येच्को—इका (कोल्येच्को=कुइया, कूपिका)
ते—थ (स्कजीते=कथयथ)
येत्—(वेग्लेत्स्)
येत्स्—(उरोदेत्स्)
येत्सो—(पिस्-मेत्सो)
येद्—(मेद्वेद्=मध्वद)
येनिक्—इक (उचेनिक=वाचक)
येनिये—(स्लुझेनिये=श्रूषणा)
यम्—आम
येल्—इल (नावेलो=नाविल)
येश्—सि (देलयेश्)
येत्—त्व (स्त्रेझयेस्)
योक्—क (ओगोन्योक् अग्निक)
योझ्—क (ग्रब्योझ्=ग्राभक, लुटेरा)
र—र (ग्लवार्=ग्रीवार, नेता)
र्—न (दार=दान)
लो—न (नगोलो=नग्न)
ल्या—ना (लोव्ल्या=लोभना), आखेट)
वा—का (क्नावा खनुवा=खाई)
वानिये—ना (ज्ञिमोवानिये=हिमना)
विइ—वीक (मेदोविइ=माध्वीक, अमृत-जैसा)
वोस्त्—(लुकावोस्त्)
शिइ—श (वोल् शिइ=भूरिश)
शे—श (वोल्शे=भूरिश, बेहतर)
शोइ—श (वोल्शोइ=भरिश)
शोन—ईय (नगिशोन=नग्नीय, अतिनग्न)
स्त्वये—त्व (देङस्त्वय)
स्त्वो—त्व (वेगृस्त्वो=भगेलुत्य)
स्या—य (अ [illegible] ार्य)

(६) उच्चारण-परिवर्तन

संस्कृत–रूसी उदाहरण
अ अ, (निषेधार्थ)
अ ओ, ओस् (अक्ष) ओगोन्
आ जा, जासियात्—आसी-स्यति
या यावित्. स्या
उ वो, वोदा—उद
ओ ओवे—उभे
(ऋ आल्) शकाल—श्रगाल,
ओल् वोल्क—वृक थर् क
येर् देर्झात—द्. हति
येल् झितेल्—जीवितृ
योर् म्योर्त्विइ—मृत्यु
र् ग्रवित्—गृभीति
रि क्रिन्—कृत्ति
रु रुसिइ—ऋषि, ऋचि
स्त्रुन—तृण
रे रेब्योनोक्—ऋभुक छड
रो प्रोसित् —पृच्छति
क को कोग्दा—कदा
कोरिह्—कतर
ग क, शकाल—श्रृगाल
इग्रोजित् —क्रुध्यति
क चेरेप्—कर्प
क्ष स, ओस् —अक्ष
च, झेच्—वक्ष
क्षु खु, खुदेत् —क्षुदति
खुदोइ—क्षुद्र
ख क, कुसात् —खु सति
स, रिसोवात् —लिखति
ग क, ग्रस्त् —ग्रसति
ग ग्रिवा—ग्रीवा
ग्लोतात् —गिलति
नगोइ—नग्न
झ वेझात्—वेग
दोझ्द —दोग्धि
द् प्रेद्—प्राग्
घ ग दोल्गिइ—दीर्घ
ज लज्रित् —लघति
न म प्रेद्की—प्राच् (पूर्वज)

च पोचितात्—पूजति
ज निजु—नीचे येठड
झ निझे—नीचै
निझात् —नीचयति
स प्रिपासी—प्रपाच
(भोजन-सामग्री)
सोरोक—चत्वारिंश
छ च कुचा—गुच्छ
झ झेवात्—छीवति
(चबाना)
श प्रशिवात् —पृच्छति
स प्रोसित् —पृच्छति
ज गद वेग—वेज
गोरात् —ज्वलति
ज वेर्योजा—भुर्ज
प्रिज्नाक—प्रिज्ञानक
जेम्ल्या—ज्मला
झ झार—ज्वर
पोझार—प्रज्वाल
झेना—जनि
द पोबेदा—प्रविजय
ट झ लेझात् —लेटति
पोलझित् —प्र-लेट
ड ल, लेतात्—डयति
पीला—पीडा (आरा)
ढ ल पोलोत् —(लोढना)
ण न पोल्नो—पूर्ण
त त स्त्राख—त्रास
द पदात् —पतति
न जेलेन्—हरति
ज इज्—अत्
द झ, झेच्—दह
सझात्—सादयति
द द्रोवा—दारु शिङ्ग
दोल्शे—द्राघीय
दोलिना—द्रोणी
ध ज, ज्वान्—ध्वन
झ मेझदु—मध्य
रोझात् —रोधति

द व्दोवा—त्रिधवा
देयातेल् - धातर
(नेता)
न न तोन्किइ—तनक।
प्रेम ना—प्रश्न
प प, पनात् —पतति
पास्तुख्—पातुक
पिमात —पिबति
फ प पल्का—फल्क
(लकड़ी)
ब व
भ व वोल्-शोइ—भरिश
अब्लका—अभ्रक
ब्रात्—भ्रात
ब्रोवि—भ्रू
म म, म्यासो—मास
य य युनोस्त् —युवन्
र र, ब्रात्—भ्रात
ल लुच्—रोचिष
पोल्नो—पूर्ण
व व, इवा—इव
ओब्रोरोत्—अववर्त
वेज्—वि (विना)
व वोज—वह
श च, नोच् —निश्
श ख, खोलोदे—शरद
श शकाल—श्रृगाल
च मेशात्—मिश्रयति
स देस्यत्—दश न् (दस)
सुखात्—शुष्यति
सोबाक—श्वक
स्वेकोर—श्वसुर
ख सिखात् —शुष्यति
सुखोइ—शुष्क (सूखा)
ज,
झ कीझा—कोष (चम)
श स्लुशत् —श्रृषति
स स सझदात्—सदयति
सेब्या—स्वीय

धातुओं और वर्णोंके वाचक शब्दोकी जिस प्रकारकी अनिश्चितता और व्यवस्था है, उससे जान पड़ता है, कि अभी धातुओसे उनका परिचय न था।

हथियारोपर विचारनेसे जान पड़ता है, उनके पास काष्ट और पाषाणके हथियार थे, और ऐसे हथियारोके गढनेके लिये "तक्ष" धातुका प्रयोग होता था। पीछे हम "तक्ष" को संस्कृतमें जहा काठ गढनेके लिये रूढ पाते हैं, वहा रूसी "तेसात्" और "त्योसिवात्" पत्थरके गढनेमें रूढ पाया जाता है।

सब देखनेसे पता लगता है, कि जिस समय आय और शक पृथक् जन (कबीले)के रूपमें परिणत हुए, उस समय वह अभी कृषि और धातु से अपरिचित थे। शिकार (आखेट)के अतिरिक्त वह पशु पालन शायद ही जानते थे, जिसमें श्वक (कुत्ता) उनका अवश्य सहायक था। यह युग मध्य पीषाण या आरंभिक नवपाषाण- युग रहा होगा। वह अपने निवासस्थानो को दम (दोम) कहते थे, जो प्राय पर्वत की दरि (गुह) हुआ करते थे। द्वार गुहाके द्वार और आगन दोनोके लिये प्रयुक्त होता था। दारु, अश्म और अस्थि के हथियारो वाले इन दरी-निवासियो को अग्निकी सहायता मिल चुकी थी, और इसकी मददसे अपना त्राण और भक्षण प्राप्त करते थे। सरदीसे बचनेके लिये अभी वह सलोम चमडे (कोक्षा) का व्यवहार करते थे, जिसे हड्डीकी सूइयोंसे सी भी लेते थे—ऊनी कपडा अभी उन्हें मालूम न था। मास उनका प्रधान भोजन था, जिसका वह पचन करके सूप भी बनाते थे, जिसका अर्थ है, किसी प्रकारका मिट्टी का बर्तन वह बना सकते थे। जगली मधु उनका प्रिय भोजन था।

रुधिर-सबधियोमें नाता दूरतक चला गया था। मा, भाई-बहिन, बेटा-बेटी, देवर और विधवा ही नही स्नुषा (पुत्रवधू), ससुर और सास से भी परिचित थे, इससे यह भी स्पष्ट है, कि समाज मातृसत्ताक नही पितृसत्ताक था। दम केवल घरके लिए ही नही परिवार और जनके लिए भी प्रयुक्त होता था, जिसका अधिपति दमक (दाश्का) भी कहा जाता था। यही राजवाची शब्द दामाके नामसे पीछे के शकों में राजाके लिये व्यवहृत होने लगा था।

आय-शक जनमें देवता (भग) का विचार आ चुका था। यह देवता अधिकतर सूर्य, अग्नि, जैसे प्रत्यक्ष देवता थे।

परिशिष्ट २

स्रोत ग्रंथ (१)

(भाग १ से भाग २ तककी छूट)

भाग १ अध्याय ५

१ जामेउत्तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ स्वोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिक्स्या क् इस्तोरिइ जोल्तोइ ओर्दी (लेनिनग्राद १९४१)
३ History of Mangols, 3 Vols H H Howarth (London 1876-88)
४ जुब्दतुत्-तवारीख हाफिज अवरू (१२२६–८३ई०, अनुवादक के० एम० मैत्रा, लाहौर)
५ तारीख जहागुशा अलाउद्दीन अता मेलिक जुवैनी
६ तबकाते-नासिरी अबू-उमर मिनहाजुद्दीन उस्मान जुजजानी (११९३–१२०० ई०)
७ युआन् चाउ वि शि (१२४० ई०, सपादक ग० अ० कोजिन, लेनिनग्राद १९४१)
८ सल्जूकनामा नासिरुद्दीन यहिया इब्न वीवी (१२८२–८५ ई०)
९ जफरनामा निजामुद्दीन शामी (१३९२–१४०० ई०)
१० शज्रतुल्-अत्राक
११ जोलोतया ओर्दा अ० यु० याकुबोव्स्की
१२ Geschichte des goldeners Horde in Kiptchak Hammer-Purgstall (Budapest 1840)

भाग १ अध्याय ३

१ जामेउत-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ History of Mangols H H Howarth
३ असह्हत्-तवारीख अनोनेम इस्कदर
४ तवारीख जहागुशा जुवैनी

भाग १ अध्याय ४

क सिथ और स्लाव

१ एल्लिनस्त्वो इ इरानस्त्वो ना युगे रोस्सिइ म० इ० रोस्तोव्त्सेफ (पेत्रोग्राद १९१८)
२ Les Sycthes F Bergmann (Halles 1860)
३ ओब्रज़ोवानिये द्रेव्ने रुस्स्कओ गसुदास्त्वां व० ग० माव्रोदिन (लेनिनग्राद १९४५)
४ स्लाव्याने द्रेव्नोस्ती न० स० दे रझाविन (मास्को १९४५)
५ On the Origin of the Antae George Bernadsky (Journal of American Oriental Society Vol 59, PP 56-64

ख सिथ सरमात

६ प्लेमैना येवरोपेइस्कोइ सरमातिइ अ० द० उदाल्त्सोफे, सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया १९४६।२पृ० ४१–५०

७ मतेरिअली क् व्से सो युज्नोमु अर्खेआलोगिचेस्कोम सोवेश्चन्यो (मास्को १९४५)
८ स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये अ० म० मेलिश्चेफ (लेनिन० १९४१)
९ इस्तोरिया वोल्गाइरिइ न० म० देर्झाविन् (लेनिन० १९४६)
१० इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया स० म० सेरेदोन (पीतरबुग १९२६)
११ एन्त्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया द्र० व० यागिचा (पीतरबुग १९०९)

ग कियेफ रूस

१२ कियेव्स्कया रूस व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४४)
१३ प्रोइस्खोझदेनिये रुस्स्कओ नरोदा न० म० देर्झाविन् (मास्को १९४४)
१४ वोर्वा रुसि जा सोज्दानिये वयेवो गसुदास्तर्वा व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४५
१५ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
१६ इस्तोरिया रुस्स्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद १९४१)
१७ Histoire de Russie N Brian Chamnor (Paris 1929)
१८ स्लवो ओ पो॰कु इगोरयेवे (व्याख्या) अ० स० ओर्लोफ (मास्को १९४६)
१९ „ „ (मूल) लेनिनग्राद १९४५)
२० La Lithuanie Michel Pietiewicz (Bruxelles 1832)
२१ History of U S S R 3 Vols (Moscow)
२२ Histoire de l' Empire Byzantin Ch Dihl (Paris 1919)
२३ कियेव्स्कया रूस एम० सी० गुशेव्स्की
२४ द्रेव्नेइशीये अरब्स्कीये इज्वेस्तिये ओ कियेवे अ० य० गर्कावी
२५ इज्वेस्तिया ओ खजाराख वुर्तासाख वोल्गराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साख अबअली अहमद बिन्-उमर इब्न-दस्त

भाग २ अध्याय १

१ जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०)
२ • तवारीख वस्साफ शिहाबुद्दीन, अब्दुल्ला वस्साफ हजरत (१३००–२४ ई०)
३ History of Bokhara Arminus Vambery (London 1873)
४ Heart of Asiea E D Ross (London 1899)
५ History Mongol H H Howarth
६ ओचेर्क स्तोरिइ सेमिरेच्या व वर्तोल्द (वेर्नी १८९८)
७ तारीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत, अनुवाद (London 1888)
७ History of U S S R 3 Vols (Mascow)
९ इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ व० व० वेइमाना
१० "' " " व० व० दनिके, १९२७
११ समरकद प्रि० तिमूरे इ तिमूरिदाख अ० यु० याकूबोव्स्की (लेनिनग्राद, १९३३)
१२ Exploration in Turkistan, 2 Vols R Pumpelly (Washington 1808)
१३ इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्कस्ताना व० व० बर्तोल्द (लेनिनग्राद, १९२७)
१४ इस्स्कुत्वो सोवेत्स्कओ उज्बेकिस्ताना व० य० चेपेलेफ (लेनिनग्राद १९३५)
१५ Voyages d' ibna Batoutah

भाग २ अध्याय २

१ जामेउत्-तवारीख रशीदुद्दीन

२ ,, इस्तोरिइ ज़ोलोतोइ ओर्दी (लेनिनग्राद, १९४१)
३ तवारीख वस्साफ वस्साफ (–३००–२८–)
४ तारीख-गुजीदा हम्दुल्ला कजवीनी (१२८१–१३२९–)
५ तारीख जहांगुशा अलाउद्दीन जुवैनी (१२२६–८३)
६ History of Mangol H H Howarth
७ History of U S S R 3 Vols
८ वोस्तोचूनो-इरान्स्किइ वोप्रोस व० व० वर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्सिस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी तोम II (पेत्रोग्राद, १९२२)

भाग २ अध्याय ३

१ जफरनामा निजामुद्दीन शामी (–१३९२–१४००–)
२ मत्ला सादैन व मज्मा बहैरन अब्दुरज्जाक समरकदी (१४१३–८२)
३ History of Bokhara A Vambery
४ Heart of Asia E D Ross
५ History of Mangol H H Howarth
६ अलीशेर नवाई अ० क० बरोव्कोफ आदि, मास्को, १९४६,
७ Memoire de Baber (बाबरनामा) बाबर (सपादक A Beveridge)
८ खुलासतुल् अखबार खोदमीर
९ The Miniature Painting and Painters of Persia, India and Turkey (London, 1912
१० The Persion Miniature Paintings (London 1933)
११ गिरात्स्केओ इस्कुस्त्वो व् एपोखु अलीशेरा नवाई अ० अ० सेमेनोफ
१२ सफरनामा नासिर खुसरो
१३ मशारेउल्-उश्शाक
१४ नवाई इ निजामी ये० ए० वेर्तेल्स, अलीशेर नवाई पृ ६८–९१
१५ खम्सा *अलीशेर नवाई (ताशकद, १९०५)*
१६ बाबरनामा—सपादक न० इल्मिन्स्की, कजान, १८५७
१७ Histoire des Mongols et des Tatars (Peterburg, 1871)
१८ The Mobaiel-lughat Mirza Mehdi Khan (Calcbtta, 1910)
१९ Literary History of Persia E Browne (London, 1919)
२० Le Meteriel du miniaturiste de l' enlumineur Iranien (Behzaad Taberzadeh)
२१ Musalmanic Painting XIIth–XVIIIth centbry E Blochet Tran M Binijon (London, 1929)
२२ Painting in Islam Th Arnold (Oxford, 1924)
२३ Manuel de' Art Musalman G Migeons (Paris, 1907)
२४ मोनेती उलुगबेका, व० व० वर्तोल्द, इज्वे० रो० अकद० इस्त० म० कुल्तुरी तोम II
२५ तारीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत (लदन १८८८)
२६ रौजतुस्सफा खोदमीर (बबई)
२७ इस्कुस्त्वो स्रेद्नेइ आजिइ व० प० वेइमार्न (मास्को १९४०)
२८ तैमूर अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया १९४०–४५)
२९ इरान्स्कोये इस्कुस्त्वो इ ओर्खेआलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)
२९ उलुगबेक इ येओ व्रेम्या व० व० वर्तोल्द (१९१८)

३० र्युन गोज्देस् दे क्लाविथो
३१ सोवोनया मेचेत तिमूरा बीबी खानम, म० ये० मस्सोन् (ताशकंद, १९२६)

भाग २ अध्याय ४

१ शैबानीनामा मुहम्मद सालेह
२ Heart of Asia E D Ross
३ History of Mangol H H Howarfh
४ तारीख रशीदी मिर्जा हैदर
५ History of Bokhara A Vambery

भाग २अध्याय ५

१ History of Bokhara A Vambery
२ Heart of Asia E D Ross
३ History of Mongol H H Howarth
४ ओचेत् ओ कोमन्दिरोव्के व तुर्केस्ताने व० व० बेर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्स्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरी, तोम II)

भाग २ अध्याय ६

१ किताबुल् हिंद अबूरैहा अल्बेरूनी, अनुवादक सैयद असगरअली (अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली, १९४१)

स्रोत ग्रंथ (२)

अबरू, हाफिज जुब्दुतुत्-तवारीख (अनुवादक के० एम० मैत्र, लाहौर)
अलक्सन्दरोफ, व० अ० तुर्कमेनिया इ येये कुरोत् निये वगास्त्वो (मास्को, १९३०)
अल्बेरूनी, अबूरैहा किताबुल् हिंद (अनुवादक सैयद असगर अली, अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली १९४१)
इब्नदस्ता, अबूअली अहमद बिन-उमर इज्वेस्तिया आ खजाराख, बुर्तासाख, बोल्गाराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रुस्साख
इब्नबीबी, नासिरुद्दीन यहिया सल्जूकनामा (१२८२–८५ ई०)
इस्कन्दर, अनोनेम् असह्-हत्तवारीख
उदाल्सोफ, अ० द० प्लेमेना येव्रापइस्किइ सरमातिइ (सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया, १९४६/२)
ऐनी, सदरुद्दीन गुलामान (जा दास ये, अनुवादक राहुल सांकृत्यायन, पटना, १९४९)
" , दाखुन्दा " " प्रयाग, १९४९
" , बुखारा (अनुवादक—स बोरादिन, (मास्का, १९५२)
ओर्लोफ, अ० स० स्लवा ओ पोल्कु इगोरयेवे- व्याख्या (मास्को, १९४६)
ओस्त्रियाल्तोफ इस्तोरिया स्लाव्यांस्कोवो पेरा येल्किओ, (तोम ५ पीतरबुर्ग, १९०७–११ ई०)

कजवीनी, हम्दुल्ला तारीख गुजीदा (१२८१–१३२९)
कुबेर, अ आजियात्स्कया रोस्सिया (मास्को, १९१०)
क्लाविवो, रुयुन् गोन्ज़ुदेम्
खान, मिर्जा मेहदी मब्निउल्–लुगात (कलकत्ता, १९१०)
खुसरो, नासिर सफरनामा
खोंदमीर रौजतुस्सफा (बबई)
गर्काची, अ० य० द्रेव्नेइशेये अरब्स्कोये इज्वेस्तिये ओ कियेवे ।
ग्रुम गृझिमाइलो, ग ये म ये पुतेशेस्त्विये व् जापदनिइ कितइ (पीतरबुग, १९०१)
ग्रुशेव्स्की, म० म० कियेव्स्कया रूस
ग्रेकोफ, व० ,अ० कियेव्स्कया रूस (मास्को १९४४)
" " वोर्बा रूसि जा मोज्दानिये स्वेयबो गसुदार्स्त्वा (मास्को, १९४५)
जाखविन्, इ० इ० नमेरेनिये समरस्कन्द्स्कोइ ओब्लास्ति (लेनिनग्राद, १९२६)
जुजजानी, मिन्हाजुद्दीन उस्मान (११९३–१२०० ई०) तबकातेनासिरी
जवैनी, अलाउद्दीन अता-मैलिक तारीख जहागुशा
टेलर, अथर अन्थ्रपोलोजी
त्रेवर, क व कोव्रा इज नोइनउला (लेनिग्राद, १९४७)
देनिके, ब प इस्कुस्त्वो स्त्रेद्नेइ आजिइ (१९२७)
दूमित्रियेफ -कव्काज्स्की पो स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुग, १८९४)
देर्झाविन, न स इस्तोरिया बोलगारिइ (लेनिनग्राद, १९४६)
" " पोइस्खोझ्देनिये रुस्कओ नरोदा (मास्को १९४४)
" " स्लाव्याने व् द्रेव्नोस्ती (मास्को, १९४५)
नवई, अलीशेर खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद १९०५)
पोतेम्किन् व प इस्तोरिया दिप्लोमातिइ तोम (लेनिनग्राद, १९४५)
पोलोस्स्कया, न क् वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना रुसि दो व्लादिमीरा (१९१७)
फेदोरोव्स्की, न म पो गरामि पुस्तिन्याम् स्रेद्नेइ आजिइ (मास्को, १९३७)
बरोव्कोफ, अ क अलीशेर नवाई (मास्को, १९४६)
बर्तोल्द, व प इस्तोरिया कुल्तुर्नोइ झिज्नि तुर्किस्तान (लेनिनग्राद, १९२७)
" " उलुगबेक इ येओ व्रेम्या (१९१८)
" " ओचेक इस्तोरिइ नरोदा (१९२८)
" " ओचेर्क इस्तोरिइ सेमिरे च्या (वेर्नी, १८९८)
" " ओत्चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्किस्तान (इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदेमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुल्तुरि, तोम् २, द० १–२२)
वर्तोल्द, व व मोनेती उलुगबेका (इज्वे रो अ इ ह म कु तोम् २, पृ०१९०–२)
" " वोस्तोच्नो-इरान्स्किइ वोप्रोस (,, १९२२ तोम् २ पृ० ३६१–८४)
बाबर बाबरनामा, Memoire de Babar, (edit A Beveridge)
" सपादक न इल्मिन्स्की (कजान १८५७ ई०)
बिल्बस्मोफ इस्तोरिया एकातेरीनि व्तरोय (बर्लिन १९०० ई०)
Bourgeois, E Manuel historique de politiqe etrangere (Paris, 1927)
Bergmann, F G Les Scythes (Halles 1860)

वेतल्स, ये ए नवाई इ निजामी अली शेर नवाई, प० ६८-९१ (लेनिनग्राद)
Browne, E Literary History of Persia (London, 1919)
Blochet, E Musalmanic Painting XII—XVIII century (Tran M Binijon, London, 1929)
मस्सोन, म ये रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (ताशकंद, १९२६)
" " सोबोनया मेचेत् तिमूरा बीबी खानिम् (ताशकंद, १९२६)
मान्रादिन, व व आवरबीवानिये द्रेव्ने रुस्कओ गसुदार्स्त्वा, (लेनिनग्राद, १९४५)
यागिचा, इ व एन्तिसक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया (पीतरबुर्ग, १९०९)
याकुबोव्स्की, अ यु जोलोतया ओर्दा
समरकंद प्रि-तिमूरे इ तिमरिदाख (लेनिनग्राद, १९३३)
रशीदुद्दीन (१२४७–१३१७ ई०) जामेउन् तवारीख
Rouire, A M F La rivalite anglo-russean XIX Siecle en Asie (Paris 1908)
Robzianko, Le regne de Rasputine (Paris, 1928)
Ross, E D Heart of Asia (London, 1899)
रोस्तोव्त्सेफ, म इ एन्लिन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
र्वदोनिकस, व इ इस्तोरिया ससर ४ तोम्
लेस्नेइ, ल व वोस्तानिये १९१६, गदा व् किर्गिजस्ताने (मास्को, १९३७)
लोगोफेन्, द न ना ग्रानित्साख स्रेद्नेइ आजिइ (पीतरबुग, १९०९)
वस्साफ, शहाबुद्दीन अब्दुल्ला तवारीख वस्साफ (१३००–२८ ई०)
वित्कोविच् व किर्गिजिया (१९३८)
विलिस्की, स ग यजीकोज्नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मास्को, १९१४)
वेइमार्न, व व इस्स्कुस्त्वो स्रेद्निइ आजिइ
Vernadsky, G on the Origines of the Antae (Am G D S, Vol II L, pp 56 64)
वोल्खोन्स्की, स आ देकाब्रिस्ताख पो सेमेइनिम् वोस्पोमिनानियाम्
शामी, निजामुद्दीन जफरनामा (१३९२–१४०० ई०)
समरकन्दी, अब्दुर्रज्जाक (१४१३–८२ ई०) मत्ला-सादैन व मज्मा-बहरैन
सालेह महम्मद शैबानीनामा
सिदिकबेकोफ, तुगेलबाइ नेमिर (उपन्यास, अनुवादक व रोझदेस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
सेमेनोफ, अ अ ग्रारात्स्कओ इस्कुस्त्वो व् एपोख, अलीशेर नवाई
मेरेदोन, स म इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया (पीतरबुर्ग, १९०६)
मेलिश्चेफ, अ म स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्नानिये (लेनिनग्राद १९४१)
सोलोवियेफ, स इस्तोरिया रोस्सिइ २९ तोम् (१८७९–८५)
Hanson, G F Europe and China (London 1931)
Hammer Purgstall Geschichte des goldenen Horde in Kiptchaka (Budapest, 1840)
Hardlicka Scaleten remains of Early mecn (Smithsonian M S Pub Vol Lxxiii, pp 34,-49)
Howarth H H History of Mongol, 3 Vols (London, 1876-88)
० इरान्स्कोये इस्कुस्त्वो इ अर्खेलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)

○ इस्तोरिया रुस्स्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद, १९४१)
○ इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
○ ओचेक पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिरि १७ वी-१८ वी शती (मास्को, १९४६)
○ किर्गिजिया, त्रुदी पेर्वोइ कान्फ्रेन्त्सिइ (लेनिनग्राद, १९३८)
○ तुर्केस्तान्स्कआो वोयेन्नओ ओक्रुग ३ तोम् (१८८०)
○ तेमूरी अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया, १९४०, १९४५)
○ त्रुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजी इस्तोरिया यजीक-लितेरातुरा (लेनिनग्राद, १९४०)
○ द्वाद्त्सत् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद, १९४०)
○ Persian miniature Paintings (London, 1933)
○ मतेरिअली क् व्मेसोयुज नोमु अर्खेआलोगिचेस्केमु सोवेश्चन्यो (मास्को, १९४५)
○ मशारेउल् उश्शाक
○ युआन्, चाउ वि शि (सपादक ग अ कोजिन् लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
○ रेवोल्युत्सिया व् स्रेद्नेइ आजिइ (ताशकद, १९२९)
○ वोस्तोकोवेदेनिया (लेनिनग्राद, १९४५)
○ "शजरतुल् अतराक"
○ सोवियत्स्काया एत्नोग्राफिया (१८३६/६ पृ० ११)
○ स्बोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिरस्स्या क् इस्तोरिइ जोल्तोइ ओर्दा (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
Histoir edes Mongolse t lest atares (Petersburg 1871)
History of Civil War in U S S R
History of U S S R 3 Vols (Moscow)

स्रोत ग्रंथ (३)

१ पमपेली, रा एक्सप्लोरेशान इन तुर्किस्तान, २ जिल्द
२ स्वेन्-चाङ यात्रा २ जिल्द
३ स्क्रिन, एफ० एच०, और रास, ई० डी० हार्ट आफ एसिया (१८९९ ई०)
४ बरर्तोल्द, वी तुर्किस्तान डौन टु द मगोल इन्वेजन (१९०० ई०)
५ होवर्थ एच० एस० हिस्ट्री आफ मगोल, ३ जिल्द (लंदन, १८८० ई०)
६ पारकर, ई० एच० ए थौजड यर्स आफ दी टारटर्स (शाघाई, १८९५ ई०)
७ लेम्ब, हेराल्ड जिंगिज खान (लंदन, १९२८ ई०)
८ कार्पिनी, जौन आफ प्लानो ट्रेवल, (हक लइट सोसाइटी लदन १९००)
९ इब्न-बतूता, ट्रेवल, अनुवादक—दफे मेरी और साकी नेती, (पेरिस, १९५३ ई०)
१० मार्को पोलो ट्रेवल, अनुवादक हेनरी यूल (लंदन, १९२१ ई०)
११ रूबरिक, विलियम ट्रेवल टू दी ईस्टर्न पार्टस आफ दी वर्ल्ड (हकलूइट सोसाइटी लदन, १९००)

१२ ईनोस्त्रान्तोफ, क खुभी ई गुभी (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)
१३ वाम्बेरी अर्मिनस, हिस्ट्री आफ बुखारा (लदन, १८६३ ई०)
१४ बारतॉल्द, व ओचेक इस्तोरिइ सेमीरेच्या (लेनिनग्रा, १९२८ ई०)
१५ रियाल गिराद दे मेम्वार सुर ला आजी सान्नाल (पेरिस, १८७५ ई०)
१६ हैदर, मिर्जा तारीख रशीदी ए हिस्ट्री आफ द मोगल आफ सेंट्रल एसिया, अनुवादक एलियम और रास ई दी (लदन, १९९५ ई०')

१७ बरतॉल्द, व व ओचेक इस्तॉरिइ तुकमन्स्कओ नरोद (१९२८ ई०)
१८ बेर्गमान, एफ० जी०, ले सित, (हाल्स, १८६० ई०)
१९ ए हिस्ट्री आफ दी य० एस० एस० आर० ३ जिल्द (मास्को, १९४८ ई०)
२० दमोगन जक, ल' मानिते प्री-इस्तारिक (पेरिस, १९२४ ई०)
२१ मापेरो, जी इस्त्वार आसियान दे प्यूप्ल दे लोरिया (पेरिस, १९०५ ई०)
२२ तान, डब्ल्यू, डब्ल्यू, द ग्रीक्स इन बैक्ट्रिया एड इडिया (कैम्ब्रिज, १९३८ ई०)
२३ पीगुलेवस्कया न सिरिइस्किये इस्तोच्निकी प' इस्तोरिइ नरोदोफ एस० एस० एस० एर० (मस्क्वा, १९४१ ई०)

२४ त्रेवेर, क व पाम्यात्निकी ग्रीको-वाख्त्रिइस्कवो इस्कुस्त्वा (मस्क्वा, १९४० ई०)
२५ त्रेवेर कमीला टेराकोटाज फ्राम अफासियाब, (मास्को, १९३४ ई०)
२६ ई अ ओर्वेली, ई० अ०, और त्रेवेर क व सासानिद्स्किई मेतल (मस्क्वा, १९३५)
२७ ईरान्स्कये इस्कुस्त्वा इ आर्खेओलोगिआ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
२८ सत्यश्रवा, द शकाज इन इडिया (लाहौर १९४७ ई०)
२९ पीगुलेवस्कया न व विजन्तिया इ ईरान (मस्क्वा, १९४६ ई०)
३० रोस्तोव्त्सेफ, म० ई० एलिन्स्त्व इ ईरान्स्त्व ना युग रोसिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
३१ ईरान्स्किये यजीकि, (अकदमिइ नावुक मस्क्वा, १९४५ ई०)
३२ चाइल्ड, गोडन द ब्रौंज एज (कैम्ब्रिज, १९३० ई०)
३३ चाइल्ड, गोडन, प्रोग्रेस एड आर्केआलोजी (लदन, १९४१ ई०)
३४ हैडन, ए० सी०, हिस्ट्री आफ अन्थ्रापोलोजी (लदन, १९४५ ई०)
३५ टेलर, ई० वी०, अन्थ्रापोलोजी, २ जिल्द (लदन, १९४६ ई०)
३६ मार, न य यजीक इ इस्तोरिया (लेनिनग्राद, १९३६ ई०)
३७ योवान चाउ वी सी, अनुवादक कोजिन, स अ (मस्क्वा, १९४१ ई०)
३८ वेईमान व व इस्क्मुस्त्व स्रेदनेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)
३९ गिन्जवुग, व व गोर्नियें ताजिकी (मस्क्वा १९३७, ई०)
४० इस्तोरिय दिप्लोमातिइ, ३ जिल्द (मस्क्वा, १९४५ ई०)
४१ शुनकोफ, व ई ओचेक प इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिबिर (मस्क्वा, १९४६ ई०)
४२ सेरेदोनिन, स म इस्तोरि चस्कया ग्योगराफिया (पेत्रोग्राद, १८१६ ई०)
४३ द्मित्रीयेफ-कफकाजस्की ल ई, प ेद्नेइ आजिआ जापिस्की खुदोजनिका (पीतर्वुग, १८९४ ई०
४४ इस्तोरिआ रुस्कइ लितेरातुरि, अकदमी नाउक (मस्क्वा, १९४१ ई०)
४५ यागिच ई व, एन्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिललोगिया, (सा पेतेर्वुग, १९०९) ई०
४६ यजीकोज्न निये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मस्क्वा, १९१४ ई०)
४७ ग्रुम ग्रजीमाइलो, पुतेशस्त्वये व् जापद्निइ किताई (पीतर्बुर्ग, १९०१ ई०)
४८ प्रजेवाल्स्की, न० म० मगोलिया इ स्त्राना तुगनोफ (मस्क्व १९८६, ई०)
४९ आजीआत्स्कया रोसिया (मस्क्वा, १९१० ई०)

५० ग्रकोफ, ब० द० कियेफ्स्कया रूस (मस्क्वा, १९४४ ई०)
५१, मावरोदिन, व० व०, ओब्राजोवानिये द्रेव्न-रुस्कवो गसुदास्त्व (लेनिनग्राद, १९४५ ई०)
५२ देर्झाविन, न० स० इस्तोरिया बोल्गारिइ, (मस्क्वा १९४६ ई०)
५३ देर्झाविन, न० स०, स्लाव्यिाने व द्रेवनोस्ति (मस्क्वा, १९४५ ई०
५४ स्व निक मातेरियालोफ क-इस्तोरिइ जोलोतोइ ओर्दि, जिल्द २ (मस्क्वा, १९४१) ई०
५५ बोरोफकोफ, अ० क०, सपादक अलीशेर नवाई (मस्क्वा, १९४६ ई०)
५६ हिस्ट्री आफ दी सिविल वार इन दी यू एस एस० आर २ जिल्द (मास्को १९४६ ई०)
५७ बोआस, फ्राज और दूसरे, जेनरल अन्थ्रापोलोजी (न्यूयाक, १९३८ ई०)
५८ बर्किट, एम० सी० आवर अर्ली एन्सेस्टर्स (कैम्ब्रिज, १९२९ ई०)
५९ ग्रेवेर कमीला, ए सक्वेशन्स इन नार्दर्न मगोलिया (लेनिनग्राद, १९३२ ई० १)
६० इस्तोरिया रसिइ, चित्रमय (पीतरबुग, १९०४ ई०)
६१ केन-शेन-वेग, रमो चाइनिज डिप्लोमेसी (शाघाई, १९२८ ई०)
६२ चूइमची ए शाट हिस्ट्री आफ चाइनिज सिविलिजेशन (लदन १९४५ ई०)
६३ रिस्कुलोफ, तु र वोस्तानिये १९१६ ग० व०, किर्गिजिस्ताने
६४ बेनस्ताम अ , तुरोक (मस्क्वा १९४६ ई०)
६५ ग्रेकोफ, व० द० बोर्वा रोसी जा सोज्दानिये स्वोयेवो गसुदास्त व (मस्क्वा, १९४५ ई०)
६६ देर्झाविन, न० स० प्रोइस्खोज्दानिये रुस्कवो नरोदा (मस्क्वा, १९४४ ई०)
६७ लोगोफेत द० न० ना ग्रानित्साख स्रेदनेइ अजीइ (पेतेरबुर्ग, १९०९ ई०)
६८ एफीमेन्को, प० प० पेर्वोवित्नीवे ओव शेस्त्वा (लेनिनग्राद, १९३८ ई०)
६९ स्त्रूवे, व० व० इस्तोरिया द्रेव्नेओ वोस्तोका (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
७० शचनित्सर, या० ब० इस्तोरिया पिस्मेन (पीतरबुर्ग, १९०३ ई०)
७१ वाचिन्स्की, न० म० आर्खिओक्तुनिय पामेत्निकि तुर्कमेनिइ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
७२ अलेक्सन्द्रोफ, ब० अ० तुर्कमनिया इ येवो कूरोर्तनिये बगातुस्त्व (मस्क्वा, १९३० ई०)
७३ वेइमार्न, ब० व० इस्कुस्त्व स्रेद्नेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)

सग्रह और अनुसधान-पत्रिकायें

१ सोव्येत्स्कोये वोस्तोको-वेदनिये जिल्द I–III
२ सोव्येत्स्कया आर्खेओलोगिया
३ सोवेत्स्कया एत्नोग्राफिया
४ वस्तनिक द्रेव्नेइ इस्तोरिइ
५ मतेरियल्नि इ इस्स्लेदोवानिया प आर्खेओलोगिइ एस० एस० एस० एर०
६ क्रत्किये सोओब्श्चेनिया
७ ताजिकस्कया कम्प्लेक्सनया एक्सपेदित्सिया १९३२ ई०
८ ताजिकस्क-पामिस्कया एक्सपेदित्सिया १९३५ ई०
९ कराकल्पकिया
१० इस्तोरिचेस्किये जापिस्की
११ ओजेरो इस्सिक्कुल (मस्क्वा, १९३५ ई०),
१२ किर्गिजिया, अकदमि नाउक (लेनिनग्राद १९३४ ई०)
१३ इजवेस्तिया रोसिइस्कोइ अकदेमिया (पीतरबुग, १९२२ ई०)

१४ नाउच्नये ट्रुदी ताजिक्स्का-पामिर्स्कोइ एक्सपेदिसि (मस्क्वा, १९३६ ई०)

१५ उज्बकिस्तान मतेरियलि पर्वोइ कन्फरन्सिइ प इजुचेनियू प्रोएजवादित्नीख सील उज्बकिस्ताना दताश्क्या १९३३ (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)

१६ मातरियलि प इस्सेलायुज्नोमु आर्खेओलोगिचेस्कोमू गोवश्चेनीयु (मस्क्वा, १९४५ ई०)

१७ नारालनिये समरकन्दस्कोइ आब्लास्ति (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)

१८ एपिग्राफिया वोस्तोका

पारशिष्ट ३

नामानुक्रमणी